जय नानेश　　जय रामेश　　जय ज्ञानेश

श्री राजेश मुनि जी म. सा,
श्री वैभव श्री जी म. सा,
श्री विरल श्री जी म. सा
को शत् शत् वन्दन।

भँवरलाल अनूपचन्द सेठिया
४, हो-ची-मीन सारणी, कलकत्ता-७१
दूरभाष - 282-7405/7408
e-mall samta@vsnl com

नवकार मंत्र
श्री जवाहर विद्यापीठ
भीनासर (बीकानेर)
पुस्तक क्रमांक ५४३
विषय साहित्य
णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ॥

जय नानेश जय महावीर जय रामेश

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना

卐 राम चमकते भानु समाना 卐

श्रमणोपासक

आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषाक

(10 व 25 अक्टूबर 2000)

सयुक्तांक

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ

समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर 334005

□ श्रमणोपासक
आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषाक

□ लोकार्पण
आसोज शुक्ला द्वितीया
सवत् 2057 शुक्रवार 29 सितम्बर सन् 2000 ई

□ प्रतिया 8200

□ मूल्य एक सौ रुपये

□ प्रकाशक श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ
समता भवन रामपुरिया मार्ग,
बीकानेर 334005
फोन 544867/203150 फैक्स 0151-203150

□ मुद्रक
अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
बीकानेर फोन 547073

नोट यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या सघ की सहमति हो।

समर्पण

समता साधक, समीक्षण ध्यान योगी

धर्मपाल प्रतिबोधक चारित्र चूड़ामणि

स्व आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा

की

चिर स्मृति में प्रकाशित

यह अशेष प्रणति

परम श्रद्धेय

व्यसन मुक्ति के प्रेरक

प्रशान्तमना, शास्त्रज्ञ

तरुण-तपस्वी

जप-तप और नियम पालन

के पावन त्रिवेणी सगम

स्व-पर कल्याण

हेतु सकल्पित

नानेश शासन के पट्टधर अभिनव भगीरथ

आचार्य-प्रवर श्री रामलालजी म सा को

सादर, सवन्दन

प्रकाशकीय

कार्तिक कृष्णा ३ संवत् २०५६ को समता विभूति, आचार्य श्री नानेश ने इस नश्वर संसार से महाप्रयाण किया, किन्तु उनका अशेष यश समाज, राष्ट्र तथा विश्व को उनके त्याग तथा तप पूर्ण पावन सन्देशों की धरोहर रूप धरती तल पर जन जन के मन में गुण पूजा के पावन भावो के रूप में आज भी विद्यमान है।

जिन शासन प्रद्योतक आचार्य प्रवर श्री नानेश ने लक्ष लक्ष मानवों के हृदय में समता का भाव जगाया और प्राणिमात्र को सस्कारित करने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

अत उनके महाप्रयाण पर श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ ने उनकी इस पावन धरोहर के प्रति जनमानस में उमड़ रहे श्रद्धा के स्वरों को श्रमणोपासक क आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक के रूप में नियोजित और आकार प्रदान करने का निश्चय किया।

इस निश्चय की क्रियान्विति हेतु श्री संघ की कार्य समिति और मंत्री परिषद् व सम्पादक ने देश भर के प्रमुख विद्वानों और संघ निष्ठजनों तथा स्व आचार्य श्री नानेश के पावन व्यक्तित्व से प्रभावित समाज और राष्ट्र के प्रमुखों से अपने आलेख, संस्मरण और सन्देश प्रेषित करने हेतु आह्वान किया। हमें हर्ष है कि सुधीजनों ने प्रभूत मात्रा में सामग्री भेजकर संघ के आह्वान को सार्थक किया। हम समस्त आलेख प्रदाताओं के प्रति हृदय से आभारी हैं।

संघ ने इस महनीय कार्य सम्पादन हेतु श्रमणोपासक सम्पादक श्री चम्पालालजी डागा और सहयोगियों का एक सम्पादक मंडल गठित किया। हमें हर्ष है कि सम्पादक मंडल ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और कर्मठ समर्पणा से इस विशेषांक को वर्तमान स्वरूप में प्रस्तुत किया है। हम सम्पादक मंडल के प्रति आत्मिक आभार प्रकट करते है।

इस विशाल विशेषांक के प्रकाशन हेतु संघ ने विज्ञापनों के संकलन का निश्चय किया। देशभर के श्री संघों और संघ प्रमुखों ने उदात्त भाव से विज्ञापन के माध्यम से अर्थ सहयोग

प्रदान किया। संघनिष्ठ महानुभावों की एक पूरी ऐसी श्रेणी इस अभियान में उभरकर आई जिसने अर्थ सकलन के क्षेत्र में सचमुच अपूर्व भूमिका निभाई। (इन प्रमुखों की सूची इसी अंक में अन्यत्र सादर प्रकाशित है) हम ऐसे सभी अर्थ सहयोगी, संघ प्रमुखों श्री संघों और विज्ञापनदाताओं के प्रति हृदय से आभारी हैं।

स्व आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक में स्तरीय और सामयिक प्रकाशन कर स्वयं संघ के प्रमोद भाव को भी हम अनुभव करते है तथा उन सभी सहयोगियों के प्रति पुन हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

सादर

शातिलाल साड
अध्यक्ष

सागरमल चपलोत
महामत्री

जयचन्दलाल सुखानी
कोषाध्यक्ष

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर

सम्पादकीय

मानवता के भाल तिलक

समुन्नत ललाट प्रलम्ब बाहु, प्रशस्त वक्ष सुलोचन, तप तेज मंडित मुखमडल धौत धवल खद्दर से आवेष्टित श्यामल सुकोमल, सुपुष्ट देह यष्टि आदि शारीरिक श्री से समृद्ध परम् श्रद्धेय आचाय श्री नानालालजी म सा का समग्र जीवन समत्व साधना, समीक्षण ध्यान एवं कथनी करनी की एक्यता की ऐसी उदग्र ज्योतित मशाल है जिसकी अन्य कोई मिसाल दृष्टिगत नहीं होती ।

जैनागमों में आचार्य क लक्षणों एवं गुणो का वर्णन करते हुए कहा गया है

स समय पर समय बिउ गंभीरो दित्तियं सिवो सोमो,

गुणसय कलि ओ जुत्तो पवयण सारं परिकहेऊं ।

अर्थात् आचार्य स्व पर सिद्धान्त का ज्ञाता, शत सहस्त्र गुणों से युक्त, तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर आचरण कर प्रचार प्रसार करने वाला गंभीर आभायुक्त सौम्य एव कल्याणकारी व्यक्ति होता है ।

शास्त्रकार कहते है कि आचार्य उस दीपक के समान होता है जो दीपक की तरह स्वयं प्रकाशमान रहकर दूसरों को आलाकित करता है ।

जह दीवा दीव सयं पइप्पए सोय दिप्पए दीवो ।

दीव सगा आयरिया दिप्पति परं च ग़ीवेति ॥

एक दीप स्वयं जलकर असख्य दीपकों को जलाता है । वह स्वयं प्रकाशित होता है एवं अनक भविक जीवों को अज्ञानांधकार से निकालकर अपने ज्ञानालोक मे देदीप्यमान बनाता है ।

श्रद्धेय आचार्य प्रवर का सम्पूर्ण जीवन इस कसौटी पर नितान्त खरा उतरा है यह सर्वथा निर्विवाद एवं निसंदिग्ध है । जैसे सोना तेजाब के योग म आग मे तपकर विशुद्ध स्वर्ण बन जाता है वैस ही हमार परमाराध्य का जीवन भी तपाराधना एवं संयम साधना की अग्नि मे

तपकर सौटंच का विशुद्ध स्वर्ण बना है ।

कचणस्स जहा धाऊ जोगेणं मुच्चए मलं,

अणाइए वि संताणे तवाओ कम्म सकरं ।

पंच महाव्रतों से उत्तुंग, स्व पर कल्याण की साधना में अहर्निश निरत धीर वीर गंभीर आचार्य श्री के सान्निध्य, दर्शन एव स्मरण मात्र ने असंख्य प्राणियों का कल्याण किया है व्यसन मुक्त अहिंसक जीवनयापन के लिए प्रेरित किया है । समता समीक्षण की अमृतोपम वर्षा से शान्त, दान्त और निर्मल बनाया है ।

मनुष्यता से रहित व्यक्ति मनुष्य कैसे कहला सकता है, जो आदमी आदमी के काम नहीं आये, वह तो पशुवत है । करुणा रहित मनुष्य तो जड़ होता है । चचेरे भाई देवव्रत के बाण से बिद्ध, घायल हंस को उठाकर अपनी गोद में रखकर सिद्धार्थ अपने करुण अश्रुजल के लेपन से आश्वस्त कर जीवन प्रदान करते हैं एवं करुणा की कुंकुम रोली से मानवता का अभिषेक करते हैं ।

स्थंडिल से लौटते मुनि नानालाल कंटीली झाड़ियों में फंसे रक्त स्नात ममने की चीत्कार सुनकर उसे निकालकर अपने करुण दृष्टि निक्षेप से आश्वस्ति प्रदान करते हैं मृतप्राय में प्राणों का संचार करते हैं । उनका यह अम्लान एवं अग्लान सेवाभाव ही मानवता का चरम उत्कर्ष है, उन्हें भगवत्ता के चरम पद पर प्रतिष्ठित करता है ।

प्रभु महावीर से गौतम ने पूछा कि भगवन् आपकी पूजा उपासना एवं गुण कीर्तन करने वाला श्रेष्ठ एवं महान् है अथवा असहाय, पीड़ित तथा रोगग्रस्त व्यक्ति की शुश्रुषा करने वाला व्यक्ति । तो उन्होंने स्पष्ट कहा है

"जे गिलाणं पडियरई से धन्ने"

जो दीन दु खी, निर्बल असहाय एवं संतप्त व्यक्ति की परिचर्या, सेवा करता है उसके दु ख दर्द को मिटाता है, वह निश्चित ही धन्य है, महान् है श्रेष्ठ है ।

कहना न होगा कि श्रद्धेय आचार्यवर मे बालवय से ही सेवा, सहायता एवं करुणा का यह निर्झर प्रवहमान था । सेवा का यह मूर्तिमंत स्वरूप ही मानवता का चरम उत्कर्ष है जो उन्हें प्रणम्य, पूज्य और वंद्य बनाता है । यह सेवा ही इबादत और पूजा है । एक मशहूर शायर का यह शेर भी यही रेखांकित करता है

यही है इबादत, यही है दीनों ईमां ।

कि काम आये दुनियां मे इंसा के इंसा ॥

वह मनुष्य ही क्या जो मनुष्य के काम नहीं आता । वह पत्थर दिल है जो व्यथित को देखकर न पसीजे । कहा है

वह आदमी ही क्या है, जो दर्द का आशना न हो ।

पत्थर से कम है, दिल शरर गर निहा नहीं ।

यदि कोई दु खी दिल को सान्तवना न दे सके, आहत को देखकर पिघल न जाये एवं करुणावारि से प्लावित न करे तो उसे कैसे इन्सान कहा जा सकता है। यदि मनुष्य के घाव को करुणा जल से धोकर, मरहम पट्टी कर प्रात्साहित न कर सके तो वह मनुष्य कहलाने लायक कहां है और उसके सारे सिद्धान्त, इमानोंकरम एव पूजा उपासना भी व्यर्थ है।

इमा गलत उसूल गलत इद्दुआ गलत ।

ईंसा की दिल दिही गर ईंसा न कर सके ॥

श्रद्धेय आचार्यवर की समता वारि में म्नान कर अनेक भव्यजनों ने अपूर्व शांति एवं सौख्य की अनुभूति की है, अनेक आपादमस्तक उपकृत हुए हैं।

स्व पर उपकारी, समत्वधारी, तत्त्वज्ञानी, परदु खकातर आचार्यवर की अशेष स्मृति में श्रमणोपासक का स्मृति विशेषांक प्रकाशित करने का निश्चय किया ताकि लक्ष लक्ष जनों के हृदयहार परमाराध्य स्व आचार्य प्रवर के प्रति अपनी मनोगत भावनाओं को प्रकट कर सकें। इस घोषणा का सर्वत्र स्वागत हुआ एव कुछ दिनों में ही भारतभर से स्व आचार्य श्री के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख एवं रचनाए प्राप्त होने लगीं।

प्राप्त सभी रचनाओं को सुविधा की दृष्टि से हमने चार खंडों में वर्गीकृत किया है।

जीवन ज्योति

प्रथम खंड जीवन ज्योति है। उसमें आचार्य श्री के संक्षिप्त जीवन एवं महत्त्वपूर्ण घटनाओं का समावेश किया गया है। आचार्य श्री से संबंधित सभी सामग्री जैसे मुनि जीवन से पूर्व अणगार धर्म अंगीकार करने एवं आचार्य पदारोहण करने के पश्चात् चातुर्मास स्थल, दीक्षित साधु साध्वी, चातुर्मासिक उपलब्धियां रचित साहित्य, उद्घोषित नियम, बुद्धिजीवियों एवं अन्य लोगों से भेंट आदि का संकलन किया है। प्रारम्भ में आचार्य श्री के जीवन पर विहंगम दृष्टि मुद्रित है। जन्म स्थान, दीक्षा स्थान जहां संपादक मंडल के सदस्यो ने यात्रा की एवं सबंधित व्यक्तियां से साक्षात्कार किया, उसका वर्णन भी प्रकाशित किया है।

व्यक्तित्व वन्दन

द्वितीय खंड व्यक्तित्व वन्दन है। उसमें आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व स संबंधित आलेख हैं। आचार्य श्री के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं बहुआयामी प्रतिभा पर इन आलेखों में प्रकाश डाला गया है। आचार्य श्री के वैज्ञानिक, साहित्यिक धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं अन्य पक्षों पर रचनाकारों ने अपनी अपनी दृष्टि से विचार किया एवं अपनी श्रद्धा निवेदित की है।

चिन्तन मनन

तृतीय खण्ड चिन्तन मनन है। इसमें जैन धर्म, दर्शन एवं साहित्य स संबंधित कुछ आलेखों के साथ आचार्य श्री के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालने वाले आलेख सम्मिलित किये गये हैं।

वन्दना के स्वर

चतुर्थ खण्ड वन्दना के स्वर है । इसमें श्रद्धेय आचार्य प्रवर के गुणानुवाद करते हुए श्रद्धांजलियों का पकाशन किया है, उसके चार उपखंड है । प्रथम उपखंड में राजनेताओ के सन्देश हैं । द्वितीय उपखंड मे पूज्य मुनिराजों एवं महासतीवर्याजों की श्रद्धांजलियां संकलित हैं । प्राप्त श्रावक श्राविकाओं के वन्दना के स्वरों का नियोजन तृतीय उपखंड में एवं चतुर्थ उपखंड में विभिन्न संघों द्वारा अर्पित श्रद्धांजलियां संकलित हैं । पद्यमय श्रद्धांजलियां भी यथास्थान नियोजित की गई है । अन्तिम खंड विज्ञापन का है । अर्थ सहयोग के बिना इस विशालकाय विशेषांक का प्रकाशन कठिन हो जाता । कहा जाता है, 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' । यही दृष्टि इसमें महत्त्वपूर्ण है एवं यह खंड इसी उक्ति को सार्थक करता है ।

इस विशेषांक के प्राथमिक नियोजन में श्री संदीप जैन 'मित्र' दुर्ग की भूमिका को नगण्य नहीं किया जा सकता । उनका श्रम निश्चित ही रेखांकित करने योग्य है ।

विशेषांक की विशद् सामग्री के संपादन में पर्याप्त सावधानी एवं सजगता के बाद भी त्रुटियां असंभाव्य नहीं हैं । यथासाध्य सम्पूर्ण सामग्री को सम्मिलित किया है फिर भी कोई सामग्री छूट गई हो तो परिशिष्टांक में सम्मिलित की जा सकेगी ।

किसी भी वृहद् एवं महत्त्वपूर्ण कार्य की सफलता अनेक के सहयोग मार्गदर्शन एवं प्रेरणा पर निर्भर करती है । इसके प्रकाशन में प्रारम्भ से ही संघ प्राण श्री सरदारमलजी कांकरिया की विशेष रुचि रही है । किसी भी रचनात्मक एवं सेवाकार्य में उनका सहयोग सदैव असंदिग्ध रहा है । संघ अध्यक्ष श्री शांतिलालजी सांड की अव्याहत प्रेरणा, उत्साह और उमंग ने इस रूप में इसका प्रकाशन संभव किया है । उनके प्रति कृतज्ञता छोटे मुंह बड़ी बात भले ही हो पर अनिवार्य तो है ही ।

इसी तरह श्री केशरीचंद जी गोलछा की प्रेरणा, उत्साह एवं श्रद्धा इस विशेषांक के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण रही है । अस्वस्थ होते हुए भी कभी फोन एवं कभी नोखा से स्वयं आकर इसका निरन्तर लेखा जोखा लेते रहे । इनकी पुष्कल प्रेरणा हेतु अनेकशः आभार । श्री जयचंदलाल जी सुखानी द्वारा समय समय पर इसकी प्रगति का मूल्यांकन हमारा मार्गदर्शन एवं प्रेरणा स्रोत रहा है । हम भूयसी आभारी हैं उनके ।

विशेषांक के स्वरूप निर्धारण में सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी डा. आदर्श सक्सेना की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है । उनका मार्गदर्शन हमारा पाथेय बना एतदर्थ हार्दिक आभार ।

श्री कन्हैयालाल जी भूरा ने भी इसके प्रकाशन में पर्याप्त रुचि ली एवं शीघ्र प्रकाशन हेतु प्रेरित किया एतदर्थ साधुवाद ।

पूज्य संत मुनिराजों एवं महासतियां के प्रति आभार हमारा सहज स्वाभाविक कर्तव्य है । विद्वान लेखकों एवं रचनाकारों के हम अत्यन्त आभारी हैं जिनकी रचनाओं ने इसे समृद्ध किया है ।

नाति दीर्घ समय मे इसका प्रकाशन कदापि संभव नहीं होता यदि अमित कम्प्यूटर्स के श्री अमिताभ एवं श्री प्रमोद नागोरी इसके लिए आगे आकर उत्तरदायित्व ग्रहण नही करते। उनका अथक परिश्रम निश्चित ही अभिनन्दनीय है। उनका सुनहरा भविष्य असंदिग्ध है।

कार्यालय के सहयोगिया के श्रम की अनदेखी कृतघ्नता ही होगी अत उनके प्रति सहज आदराभिव्यक्ति आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। ज्ञात अज्ञात प्रेरक सहयोगी बन्धुओ के प्रति आभार प्रकट करना हम अपना सहज कर्त्तव्य मानते हैं।

बात समाप्त करने से पूर्व यह कहना आवश्यक है कि श्रद्धेय आचार्य प्रवर भीतर बाहर एव बाहर भीतर से एक थे। स्फटिक की तरह निर्मल एवं पारदर्शी। कुछ भी गुह्य नहीं। न दुराव न छिपाव।

'जहा अन्तो तहा बाहि जहा बाहि तहा अन्तो'

वह समत्व साधक आजीवन समता समाज की रचना मे लीन रहा यदि हम उनके अनुयायी उस समता समाज की रचना में आगे बढ सकें तो हमारी यह श्रद्धाजलि प्रणम्य होगी। कई बार दीपक तले अधेरा रह जाता है। हम इस उक्ति को झुठलायेगे एवं सर्वत्र प्रकाश फैलायेंगे ऐसी हमारी कामना है।

प्रयत्न एवं परिश्रम की बड़ी महिमा है। प्रार्थना भी महत्त्वपूर्ण है। हमारा प्रयत्न, परिश्रम एवं प्रार्थना कितनी सार्थक है यह तो सुधी पाठकों पर निर्भर है। जो अच्छा है, वह आपका है, त्रुटियों के लिए हम उत्तरदायी हैं। किमधिकम्।

इस विशेषाक के सम्पादन क्रम में देशभर से प्राप्त श्रद्धा के स्वरों में सर्वत्र यह प्रतिध्वनित हुआ है कि स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में वर्तमान शासन नायक आचार्य श्री रामलालजी म सा के रूप में चतुर्विध संघ को एक अनमोल भेंट दी है। इस उदात्त भावपूर्ण स्वर में अपना स्वर मिलाते हुए हमें यह लिखते हुए गौरवमय हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रशान्तमना शास्त्रज्ञ तरुण तपस्वी, परम् श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा की नेश्राय में यह सघ और शासन नई ऊंचाइयाँ प्राप्त करेगा।

पूज्य पाद आचार्य अमितगति का यह श्लोक जिसे आचार्य भगवन् कई बार सुनाते थे उसी से हम अपनी बात का विराम दे रहे हैं

सत्वेषु मैत्री गुणीषु प्रमोद
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव।

स्व आचार्य प्रवर को हमारी अशेष प्रणति एवं भूयसी श्रद्धांजलि।

चम्पालाल डागा भूपराज जैन
जानकीनारायण श्रीमाली उदय नागोरी

व्यक्तित्व वन्दन

चिन्तन मनन

वन्दना के स्वर

संदेश

अणगार

चिन्तन मनन

वन्दना के स्वर

संदेश

अणगार

आभार

आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक हेतु विज्ञापन संग्रहण मे विशेष योगदान देने वाले महानुभावो की सूची

क्र.	नाम	स्थान
१	श्री अनोपचदजी सेठिया	कलकत्ता
२	श्री प्रकाशचदजी सुराणा	दिल्ली
३	श्री कमलकिशोरजी बोथरा	दिल्ली
४	श्री ज्ञानचदजी हीरावत	दिल्ली
५	श्री सपतलालजी सिपानी	सिलचर
६	श्री सोहनलालजी सिपानी	बैगलोर
७	श्री केशरीचदजी सेठिया	चैन्नई
८	श्री तोलारामजी मिन्नी	चैन्नई
९	श्री मदनलालजी बोथरा	सूरत
१०	श्री प्यारेलालजी भडारी	अलीबाग
११	श्री सुभाषजी कोटड़िया	शहादा
१२	श्री गौतमजी पारख	राजनादगाव
१३	श्री अशोककुमारजी सुराणा	रायपुर
१४	श्री गौतमचदजी बोथरा	दुर्ग
१५	श्री मदनलालजी कटारिया	रतलाम
१६	श्री भोपालसिहजी बाफना	उदयपुर
१७	श्री सपतकुमारजी साड	जयपुर
१८	श्री मोहनलालजी पारख	नोखा
१९	श्री धूड़मलजी डागा	गगाशहर
२०	श्री निर्मलकुमारजी सेठिया	हावड़ा
२१	श्री सुरेन्द्रजी दस्साणी	मुम्बई
२२	श्री नथमलजी तातड़	बीकानेर
२३	श्री बसन्तीलालजी चडालिया	चित्तौड़गढ
२४	श्रीमती कान्ताजी बोरा	इन्दौर
२५	श्री मोहनलालजी गोलछा	नागपुर
२६	श्री कमलचन्दजी डागा	दिल्ली
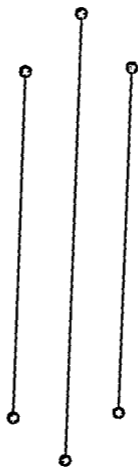
जीवन ज्योति

आचार्य श्री नानेश एक विहगम दृष्टि

जन्म एव जन्म स्थान	दाता, ज्येष्ठ शुक्ला २ वि स १९७७
माता का नाम	शृगार बाई पोखरना
पिता का नाम	मोडीलाल पोखरना
वैराग्यकाल	लगभग तीन वर्ष
दीक्षा	कपासन, पौष शुक्ला अष्टमी, वि स १९९६
अध्ययन	सस्कृत, प्राकृत, मागधी अर्द्ध मागधी, पाली आदि भाषाओं का गहन अध्ययन एव जैन आगमो के साथ वैदिक एव बौद्ध दर्शन का अध्ययन
युवाचार्य पद	उदयपुर आश्विन शुक्ला द्वितीया वि स २०१९
आचार्य पद	उदयपुर, माघ कृष्णा द्वितीया वि स २०१९
प्रथम दीक्षित सत	शासन प्रभावक श्री सेवन्त मुनि, कार्तिक शुक्ला तृतीया, वि स २०१९, उदयपुर
प्रथम दीक्षित महासती	महासती श्री सुशीलाकवर जी म सा प्रथम माघ कृष्णा द्वादशी, वि स २०१९
दीक्षा के बाद प्रथम चातुर्मास	फलौदी (राज) वि स १९७७
आचार्य पद के बाद प्रथम चातुर्मास	रतलाम (मध्यप्रदेश), वि स २०२०
धर्मपाल प्रतिबोधन	सन् १९६३ के रतलाम चातुर्मास के पश्चात् गुराड़िया गाव में बलाई जाति को प्रतिबोध । धर्मपाल' सज्ञा से अभिहित ।
सामाजिक क्रान्ति	बड़ीसादड़ी वर्षावास सन् १९७० सामाजिक क्रान्ति की १९ प्रतिज्ञाओ पर सत्रह गावो क प्रतिनिधियो को उद्‌बोधन ।
ध्वनि विस्तारक यत्र	ब्यावर वर्षावास १९७१ भौतिकी के प्रख्यात विद्वान डा दौलतसिह जी कोठारी द्वारा आचार्य श्री से भेट एव ध्वनि विस्तारक यत्र के बारे मे आचार्यश्री क चितन स पूर्ण सहमति ।
समता दर्शन शखनाद	जयपुर चातुर्मास सन् १९७२
सावत्सरिक एकता	सावत्सरिक एकता के लिए बिना किसी आग्रह क शिष्टमडल का आश्वासन सरदारशहर, वर्षावास सन् १९७४

ऐतिहासिक मिलन	नोखामडी वर्षावास, सन् १९७६ ई के पश्चात् भोपालगढ में आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा से ऐतिहासिक मिलन ।
विद्वत् गोष्ठी को सबोधन	अजमेर वर्षावास, सन् १९७९ ई मे अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के उपलक्ष्य म बाल शिक्षा पर आयाजित विद्वत गोष्ठी को सबोधन।
चिन्तन सूत्रो का प्रवर्तन	सन् १९८० ई, राणावास वर्षावास। चिन्तन के नौ सूत्रो का प्रवर्तन।
आगम अहिंसा समता एव प्राकृत सस्थान की स्थापना की प्रेरणा	सन् १९८१ के उदयपुर चातुर्मास की सफल परिणति रूप आगम अहिसा, समता एव प्राकृत शोध सस्थान की उदयपुर मे स्थापना हेतु प्रेरणा
गुजराती साधु-सतो से मिलन	अहमदाबाद वर्षावास, सन् १९८२ ई
समीक्षण ध्यान पर प्रवचन	अहमदाबाद वर्षावास, सन् १९८२ ई
ध्वनिवर्द्धक यत्र के उपयोग पर मौलिक विचार	घाटकोपर (मुम्बई) वर्षावास, सन् १९८५ ई
सस्कार क्रान्ति अभियान	इन्दौर वर्षावास, सन् १९८७ ई
पच्चीस दीक्षाओ का कीर्तिमान	रतलाम वर्षावास सन् १९८८ ई
सस्कार क्रान्ति की प्रेरणा	कानोड़ वर्षावास, सन् १९८९ ई, बुद्धिजीवियो को सस्कार क्रान्ति हेतु प्रेरणा आगम-पुरुष' की परिकल्पना ।
'आगम पुरुष (ले डा नेमीचद)	उदयरामसर वर्षावास सन् १९९२ ई, आगम पुरुष का लोकार्पण
युवाचार्य घोषणा	जूनागढ बीकानेर ७ मार्च सन् १९९२ ई मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य चादर प्रदान।
कुल दीक्षित सत-सतिया	सत उनसठ (५९), महासतिया तीन सौ दस (३१०)
सथारा प्रत्याख्यान	कार्तिक कृष्णा तृतीया वि स २०५६, प्रातःकाल ९ ४५
स्वर्गारोहण	कार्तिक कृष्णा तृतीया वि स २०५६ रात्रि १० ४१

हे ! नानेश

कवरलाल गुलगुलिया

तू था इन्सान पर दुनिया
तुझे भगवान कहती थी ।
जगत को तारने को तू
खिवैय्या बनके आया था ।
तेरे अरमा के सीने में,
तड़प थी बेसुधाने की ।

पतित पावन महायोगी
महाबलवान कहती थी ।
तुझे निर्धन और निर्दोष
कि दुनियाँ जान कहती थी ।
तेरे पलकों के नीचे वह
दया की खान रहती थी ।

—आसाम

❑ सदीप जैन 'मित्र'

साधु मार्ग के ज्योतिर्मय नक्षत्र

महापुरुषो की आविर्भाव परपरा मे श्री आदिनाथ भगवान की परपरा सर्वत्र अग्रणी रही है। ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से महाश्रमण भगवान श्री आदिनाथ जी की परपरा अति प्राचीन है।

प्रवृत्ति के बधन से मुक्तकर मानव को निवृत्ति मार्ग पर अग्रसर करने वाली यह परपरा अक्षय है, अक्षुण्ण है। सतयुग त्रेतायुग, और द्वापर युग मे क्या कलियुग मे भी इस परपरा की अक्षरता और अक्षुण्णता बनी रही है और बनी रहेगी।

निवृत्ति व्यक्ति को कर्म बध से मुक्त करने वाले मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करती है। निवृत्ति परपरा (प्रकारान्तर स जैन परपरा) व्यक्ति को सासारिक एव भौतिक सुख सुविधाओ को त्याग कर पच महाव्रत धारी, त्यागी, श्रमण बनने हेतु प्रेरित करती है। इस प्रेरणा से व्यक्ति भौतिक सुविधाओ के प्रलोभनो से मुक्त हाकर 'स्व एव 'पर' कल्याण की कामना से अपना जीवन जिन धर्म को समर्पित कर देता है। वह जैन एव जैन श्रमण बनता है। उसका जीवन त्यागमय तप-पूत दिनचर्या से पवित्र होता है।

इस त्रिस्तुतिक देवार्चित परपरा मे पचम गणधर श्री सुधर्मा स्वामी के ७४वे पाट पर महान तपोनिधि क्रियोद्धारक, युग दृष्टा आचार्य श्री हुक्मीचद जी म सा हुए हैं, जिन्होंने ऐसे समय मे क्राति का शखनाद किया जब श्रमण धर्म की मर्यादाओ स विमुख हाकर साधक बाह्य प्रवृतियो मे लिप्त हो रहे थे। ऐसे तत्कालीन शिथिलाचार को दूर कर उन्होंने विशुद्ध शास्त्रीय आचार मर्यादाओ का दिग्दर्शन कराया। विषम समय मे आचार्य देव ने कोटा की पावन भूमि पर क्रियोद्धार करके शुद्ध श्रमण धर्म का प्रतिपादन किया।

इसी समुज्ज्वल गौरवशाली साधुमार्गी परपरा मे अनेक विरल विभूतिया हुई है, जिन्होंने ज्ञान, दर्शन, चारित्र की विशुद्ध आराधना व तप-पूत साधना से भारतीय जनता को सम्यक् पथ का राही बनाया और जैन समाज क समक्ष वीतराग प्रभु का आदर्श प्रस्तुत कर विकसित किया। समय की गति के साथ ही इस यशस्वी पमपरा की शृखला में आचार्य श्री शिवलाल जी म सा हुए जिन्हाने सघीय व्यवस्था को व्यवस्थित करन हेतु ७२ कलमो की समाचारी बनाई। आचार्य श्री उदयसागर जी म सा हुए जो तोरण पर अमगल से मुख मोडकर महामगलमय साधना मे रत हुए। आपके शासन मे क्षमासागर जैसे क्षमाशील, कोदर जी जैसे विनयवान एव पीरदान जी जैसे रसनेन्द्रिय विजेता श्रमण हुए जिन्हे स्वय इतिहास सादर शीश झुकाता है।

चतुर्थ पाट सयम के सजग प्रहरी आचार्य श्री चौथमल जी म सा का रहा है, जिन्होंने इस समाज की नींव को मजबूत किया। अपने अतेवासी शिष्या, सहवर्ती सतो को विद्वान बनाकर इस परम्परा का जीवित रखा। आपकी सयम सजगता की सारे सघ मे धाक थी। आपके शिष्यरत्न पचम पट्टधर महान सयमाराधक व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्री श्री लाल जी म सा ने इस श्रमण परम्परा एव समाज क चतुर्दिक विकास म यागदान दिया। अपनी विलक्षण प्रतिभा से राजा महाराजाओ को भी जैन धर्म म अनुरजित किया। पूज्य आचार्य देव क महाप्रयाण क बाद श्रमण समाज विकट स्थिति मे आ गया। सवत् १९७१ म आषाढ शुक्ला ३ को (आचार्य श्री श्री लाल जी म सा द्वारा घोषित युवाचार्य) मुनि श्री जवाहरलाल जी म सा आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। जिन्हाने अपनी विलक्षण प्रतिभा एव यशस्वी

श्रमण जीवन से भगवान महावीर की श्रमण परपरा को आगे बढ़ाया। जैन जगत के दिव्य नक्षत्र ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचाय के प्रखर पाण्डित्य सूक्ष्म प्रज्ञा, विलक्षण प्रतिभा, गभीर विचारणा, अद्भुत अध्ययनशीलता, अपूर्व तर्कणा शक्ति एव अगाध चारित्राराधना स जैन समाज ही नहीं अपितु बड़े बड़े राष्ट्रनेता (जैस गाधी, नेहरू, तिलक, आदि) भी प्रभावित थे। आपक व्याख्यान राष्ट्रीय चेतना व धर्म क क्षेत्र की निवृत्ति मे सचोट थे, जो आज भी जवाहर किरणावली ५३ भागो के रूप मे प्रस्तुत है। आपकी पाट परम्परा म शातक्राति के अग्रदूत युगद्रष्टा आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा विराजे। जिन्होने शिथिलाचार व अनुशासनहीनता देखकर सवत् २००९ के सादड़ी सम्मेलन म ११११ सत सती के नवनिर्मित "वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण सघ' के उपाचाय के पद का भी त्याग कर दिया। कालातर मे अनेक अनुनय विनती, समाधान तथा एक समाचारी गठन के साथ उनके द्वारा सर्व सम्मति से भावी व्यवस्था हेतु मुनि श्री नानालाल जी म सा को युवाचार्य की चादर ओढ़ायी गई।

नवयुग प्रवर्तक का जन्म

पृथ्वी की गहराई में छिपे हुए बीज को देखकर कोई कैसे कहे कि यह सुविशाल वटवृक्ष की प्रारभिक अवस्था है परतु वक्त बीतने के साथ उचित पोषण मिलने से वही बीज विशाल वटवृक्ष बन जाता है -

कई थके हारे राहगीरो का विश्राम स्थल,
कई पखियो का आश्रय स्थल,
वह बीज बन गया अनेक का छाहदाता बरगद।

करीब ८० वर्ष पूर्व (ज्येष्ठ सुदी २ सवत १९७७) झीलो की नगरी उदयपुर के समीप प्राकृतिक सौंदर्य से ओतप्रोत दाता मे श्रेष्ठीवर्य मोड़ीलाल जी पोखरना का आगन जब नये शिशु की किलकारियो स गूज उठा था, तब किसे पता था कि ये किलकारियां ही आग चलकर सैकड़ो हजारो दिलो म वैराग्य एव समता की सुर लहरिया बनकर गूज उठेगी? उस वक्त शायद किसी ने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि माता शृगारा की गोदी म हसता, खेलता नाना' सा राजदुलारा ही जिन-शासन का एक महान सितारा बनेगा? किसी न सोचा भी नहीं होगा कि अपनी मीठी-मीठी बातो से सबका मन मोहने वाला नाना-सा बालक भविष्य म अनेक का तारक व उद्धारक बनेगा? किसी का स्वप्न में भी यह ख्याल नहीं आया होगा कि सस्कारित पोखरना परिवार की यह काति ही आने वाले कल म जबरदस्त क्राति लाने वाले महान सत बनेगा। दाता की पवित्र मिट्टी की यह काति भविष्य मे शात क्राति का प्रकाशित करने वाला जगमगात भानु के समान चमकेगा। जिन शासन का अनमोल कोहिनूर हीरा बनेगा। किसे पता था कि महान सयमाराधक युगद्रष्टा आत्मद्रष्टा आचार्य श्री श्रीलालजी म सा की भविष्यवाणी दाता का ही तीर्थस्थली और नाना को तीर्थपति बनाने वाली है। पचमाचार्य ने अपनी दिव्यदृष्टि से अष्टम पाट के लिए क्या इसी बालक को चयनित कर लिया था?

बधनमुक्त जन्मा जीव परिस्थितियो के बधन म बधकर अपनी इयत्ता (सीमा) खो बैठता है। उसका अपनापन, उसका स्वाभिमान, उसकी आत्मनिर्भरता सभी मे निरतर हानि होती है। बधना में जकड़ी मानवता करुण स्वर मे दया की पुकार करती है, उसकी गुहार सुनकर पवित्र आत्माओ का आविर्भाव होना प्रकृति का शाश्वत नियम है। इसी नियमातर्गत ही पोखरना कुल क माड़ी और शृगारा की रत्नगर्भा ने धन्यता का वरण किया। बालक का जन्म यों तो घटना मात्र है, साथ ही सृष्टि के सहज नियम का परिपालन भी है।

होनहार बीरवान के, होते चिकने पात

दाता मे जन्मे बालक गोवर्धन का नैसर्गिक रूप से कारुणिक हृदय किसी भी दु खित व्यक्ति को देखकर शीघ्र द्रवित हो उठता था। महापुरुष जन्म स ही सस्कार लेकर आते है। जो बाह्य शिक्षा से बहुत भिन्न और उच्च आदर्शात्मक होते है। आठ वर्ष की बाल्यावस्था मे पितृशोक के वज्रपात क बाद पारिवारिक कर्त्तव्य वहन करते हुए अपने चचेरे भाई के साथ व्यापारारभ किया। व्यवसाय के दौरान मित्रता म व्यवधान न पड़ जाए एतदर्थ

अपने भाई से एक प्रतिज्ञा करवा ली, जो आपकी तात्कालिक मेधा शक्ति और बुद्धिमता की परिचायक ही नहीं, श्रमण जीवन का प्राण भी है। अपने चचेरे भाई से आपने कहा- देखिये व्यवसाय के दौरान कई प्रसग आते है, जहाँ मतभेद के साथ मनोभेद भी खड़ हो जाते है। ऐसी स्थिति मे व्यवसाय ही नहीं जीवन भी सघर्पमय वन जाता है। अतएव यदि किसी प्रकरण मे मुझे क्रोध आ जाए तो आप मौन कर लेवे और आपको आ जाने पर मै वैसा कर लूगा। क्रोध शात हो जाने पर सदर्भित विषय पर विचार-विनिमय कर लेगे ताकि हमारे व्यवसाय के कारण मित्रता एव भातृत्व भावना मे स्खलना न होने पाय। कितनी सूझबूझ थी उस तेरह वर्षीय बालक मे। उस समय से लेकर जीवन के अस्सी वर्ष की आयु मे भी किसी ने कभी उन्ह क्रोध करते नही देखा है! भगवान् महावीर की अप्रमत्त साधना सदेश को जीवन का पर्याय बनाये रखने वाले आचार्य श्री नानेश ने इसके लिए कोई बाहरी शिक्षा नही ग्रहण की। वरन् यह तो बाल्यावस्था से आपका स्वाभाविक गुण एव दिनचर्या रही है।

आमतौर पर शैशव काल आमोद प्रमोद एव बाल सुलभ-क्रीड़ाओ के लिए होता है। शिशु विविध प्रकार के मनोरजक साधनो - खेला म अपने बचपन का समय व्यतीत करता है। उस समय आज की तरह वीडियो गम, स्नूकर आदि तो थे नही। मनोरजन क लिए जो साधन थे वे भी शारीरिक मानसिक आरोग्यता प्रदान करने वाले होते थे। मगर गोवर्धन का स्वभाव नैसर्गिक रूप से कुछ भिन्न था। वह प्रारभ से ही बाल क्रीड़ाओ से सर्वथा दूर रहने का प्रयास करता। बालक जिसे अबोध कहा जाता है अपने समवयस्क साथियो का बाल क्रीड़ा करते देख स्वाभाविक रूप से स्वय को उनस दूर नहीं रख पाता। लकिन गोवर्धन के सदर्भ म ऐसा नही था। यदि कभी मनोरजन का प्रसग बन भी जाता ता उसमे भी समय की सार्थकता का महत्त्व दिया। नाना ने अपने मनोरजन के लिए जो साधन चयन किया, वह था कृषि। कितना महान् चितन! आज बच्चे तो बच्चे अतिम समय की ओर बढ़ रहे बुजुर्गों को भी समय की सार्थकता का चितन नही है। लेकिन आज के विकास की दृष्टि से पिछड़ा माना जाने वाला वह कथित जमाना आज की तुलना मे काफी विकसित माना जा सकता है। वह नाना-सा बालक भी इसी युग का ही तो था, मगर महापुरुष जन्म स ही सस्कार लेकर आते है। जिसे विश्व को नये चितन, नये आयाम देना है वह अपने समय को व्यर्थ चितन मे कैसे जाने दे सकता है? नाना ने अपने मनोरजन क लिए सदैव वही साधन चुना जिसम समय की सार्थकता, कार्य की निष्पत्ति एव मन का रजन तीनो का सपुट हो। शेष समय प्राकृतिक गोद म बैठकर नैतिकता, सामाजिक कर्त्तव्य एव मानव जीवन की सार्थकता व महत्ता विषयक विविध आयामो, गभीर चितन मे व्यतीत करना गोवर्धन नाना की दिनचर्या थी। आचार्य श्री नानेश के अनुयायी उन्हे आज दाता के दातार के सबोधन स सबोधित करते है, लकिन वे ता बचपन से ही इस नाम से प्रसिद्ध थे। अपनी जन्म स्थली मे बाल जीवन व्यतीत करते समय हर किसी का मदद देना उनका नैसर्गिक गुण था। दाता के तेली परिवार की वृद्ध मा आदि अनेक ऐसे शख्स है जा बालक गोवर्धन की निष्काम सेवा स अभिभूत थ। उन सबके मुख से फूटते दाता के घर-घर म उच्चरित होने वाला प्यार भरा नाम 'नाना आज विश्व के लिए चमत्कारी मत्र बन गया है। नाना की सहजता, सरलता, सादगी का द्विगुणीत किया बाल्यावस्था की उनकी चितन शैली ने।

चितन करना नाना का नैसर्गिक गुण था लकिन इसे सही दिशा मिली भादसोड़ा म। शिक्षा का विकास तत्कालीन परिस्थितियो क अनुसार अपर्याप्त था। बचपन म जो शिक्षा एव सस्कार होते हैं वही जीवन का पाथेय बन जाते है। आज का विद्यार्थी पुस्तको क आधार पर ही केद्रित हो गया है। किसी पाठशाला का सकुचित घेरा महापुरुषो की विराट प्रतिभा का सकुचित करने वाला ही होता है। आचार्य देव के स्थायी सस्कार जीवन की प्रथम पाठशाला म ही बन है। शुद्ध धर्म भक्ति क पारिवारिक परिवेश म विकसित हाता जीवन भला धर्म विमुख कैसे

हो सकता है। वैसे आचार्य देव स्वय अपने श्रीमुख से फरमाते हैं कि बचपन मे मै धार्मिक क्रियाओ, सामायिक, त्याग, प्रत्याख्यान आदि को मै एक तरह से ढाग ही समयता था।[1] कारण भी स्पष्ट है कि वे सदा चितन के अभ्यस्त रहे है। जब तक उनका चितन किसी क्रिया की तात्विकता को नहीं जान लता और जिज्ञासाओं का उचित समाधान नही हो जाता, वे उसके अधानुकरण के पथिक नहीं बनना चाहते। इसी पेशापेश म कभी माता शृगारा की सामायिक आदि व्रत भी भग करने की आशातना करने का प्रसग बना। क्योंकि उस समय उनम तद्विपयक ज्ञान का प्राय अभाव ही था और उचित समाधानकर्ता भी नही था।

जवाहराचार्य एव मेवाड़ी मुनि का अनायास सयोग

इस तरह बालक गार्वधन अपने चचेरे भाई के साथ कन्हैयालाल नानालाल नामक फर्म के माध्यम से कपडे के व्यवसाय मे सलग्न हाकर पारिवारिक दायित्वो के निर्वहन मे अपनी मधावी प्रतिभा के साथ कार्य कर रहे थे। इसी व्यापार क चलते व्यावसायिक यात्रा प्रवास के दौरान सयाग से दाता से लगभग ६ मील दूर भोपाल-सागर जाना हुआ। प्रकृति का किस प्रगति का चरण इष्ट है और नियति मनुष्य को कहा ले जाकर खड़ी कर देती है, यह कहना मुश्किल है। इसी शहर मे जैन ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य म सा के महामगलकारी दर्शन ने गावर्धन के अतर म सम्यक्त्व का बीजारोपण किया। यह एक अनजाना, अनियाजित सम्यक्त्व बीज था जा आज जैन सस्कृति म वटवृक्ष के रूप मे सुशोभित है। इस प्रकार गोवर्धन का व्यावसायिक दौर 'जहा लाहा तहा लाहो' की शास्त्रीय उक्ति के तहत विकासोन्मुख हो रहा था तथा अपनी पारिवारिक एव सामाजिक समस्याओ के समुचित समाधान म सफलता प्राप्त करता जा रहा था। किंतु कुदरत का कुछ और ही मजूर था। जिस विराटता के लिए इस नाना का अवतरण हुआ उसे लघुतम घर म कैद रखना कुदरत की फितरत मे नही था। आपके चितन को सही दिशा दन ही कुदरत ने सुखद प्रसग वातावरण देकर मा शृगारा की पुत्री श्रीमती मातीबाई जी लादा को अपूर्व आत्मबल प्रदान कर तपस्या मे अग्रसर कराया। क्योंकि कुदरत को एक कुदरत निर्माता की जरूरत थी और पचमाचार्य श्री श्रीलालजी म सा न जिसके लिए भविष्य वाणी की थी, उसकी आत्मजागृति के लिए व्यवस्था करना भी कुदरत का ही दायित्व था और इस दायित्व के निर्वहन की शुरूआत हुई सवत् १९९४ म।

मेवाड़ी मुनि श्री चौथमल जी म सा क चातुर्मास सयोग से पर्युपण पर्व की महामागलिक वेला मे सपादित श्रीमती माती बाई की पाच की तपस्या म परपरानुसार (धार्मिक अनुष्ठाना की क्रियाआ से अपरिचित) नाना को वस्त्रादि लेकर भादसोड़ा जाना हुआ। वहा दा दिन बाद पर्वाधिराज क अतिम दिवस का प्रसग बनन वाला था। बहनोई श्री सवाईलाल जी लादा की प्रेरणा स उस दिन आवागमन की क्रिया नही कर लोढा जी के आग्रह से ही लोक लज्जा वश मेवाड़ी मुनि की प्रवचन सभा मे गए। प्रसगानुसार छठवे आरे के वर्णन को प्रस्तुत कर मेवाड़ी मुनि जी निमित्त बनकर नाना के सोये हुए देवत्व को जाग्रत एव उसे पूर्णता प्रदान करने मे सहयागी बने। इस छठे आरे के वर्णन ने वृहत्काय घास में अग्नि की छोटी सी चिनगारी का कार्य किया। वर्षा का पानी सभी जगह समान रूप से बरसता है और पात्र की पात्रता अनुसार सग्रहित एव उपयागी होता है। साप के मुह मे जाए तो जहर बन जाता है, वृक्ष की जड़ो म जाए तो फल फूलो के निर्माण मे अपनी भूमिका निभाता है। औंधे पड़े बर्तन मे जाए तो निरर्थक होकर बह जाता है और सीप मे समा जाए तो मोती का रूप ले लेता है। उस प्रवचन सभा मे भी औंधे पड़ बर्तन की तरह के एव छिद्रयुक्त बर्तन की तरह के 'सोता और सीप की तरह नाना जैसे श्रोता' उपस्थित थे। व्याख्यान श्रवण करते समय तथा उसके बाद तक भी नाना सोता ही बना रहा। लेकिन छठे आरे की कल्पना की आहट ने चित्त सोए गावर्धन को करवट तो बदला ही दी थी नींद से आधा तो जगा ही दिया था। प्रवचन श्रवण क बाद सवत्सरी के ही दिन अपना अश्व सजाकर बहन बहनोई की लाख समझाइश के

बावजूद अपनी धुन के पक्के होने का सबूत देते हुए चल पड़े दाता की ओर।

जगल मे मगल

अश्व तो अपनी गति से जा रहा था लेकिन अदर का अश्व (मन) उससे भी तीव्रगति से युगनिर्माण की दिशा मे दौड़ रहा था। चितन की प्रवृत्ति तो नाना म बचपन से ही थी। अपने अनुभव को व्यक्त करते हुए आचार्य श्री नानेश अपने प्रवचना मे फरमाते है कि मन का घोड़ा' जितना दौड़ रहा है उसे दौड़ने दो सिर्फ लगाम हाथ म लेकर उसकी गति सही दिशा की आर मोड़ दो'' । यह अनुभव आचार्य देव ने अपने मन रूपी घोड़ को सही दिशा मे दौड़ाने के बाद प्राप्त सुफल के आधार पर ही व्यक्त किया। अश्व की सवारी करत हुए इस अबोध की बोधता जागृत होने लगी। चितन बाहरी न होकर आतरिक होने लगा। हृदय वीणा के एक-एक तार म छठे आरे का मर्मस्पर्शी वर्णन वैराग्य लहरिया बनकर आत्मप्रदेश को गुजित कर रही थीं। अदर का सारा कलिमल पश्चाताप के आसुओ के माध्यम स जार-जार बह रहा था। पश्चाताप् था माता की साधना में बाधा पहुचाने का व्यापारिक घरेलू कार्यों के निष्पादन निमित्त वनस्पति काय के जीवो की विराधना का, पान की अशातना का। अतरात्मा से होने वाला पश्चाताप उस बियावान जगल मे मगल गीत स्वरूप तीव्र आक्रदन म परिणित हो उठा। इस तरह बहन की तपस्या न केवल इस भाई के लिए वरन समूची मानव जाति के लिए मगलकारी साबित हुई। स्वय तथा लाखा लोगा को छठ आर स बचान एक नई चेतना को जन्म देन वाली यह यात्रा एक महायात्रा के रूप मे इतिहास अकित दस्तावेज है।

मन म वैराग्य की ज्याति जलाए, जीवन का सार्थक करन का भाव लिए गोवर्धन अब सत्य के द्वार तक पहुच गया। ईश्वर का यदि काइ प्रकट अस्तित्व है तो वह सत्य ही है और उस सत्य स साक्षात्कार करन का एकमेव माध्यम अहिसा है। महात्मा गाधी के य शब्द गावर्धन के अतर्हृदय म साक्षात रूप लेने लग। ज्ञानगर्भित वैराग्य की मजबूती एव स्थिरता स वे पारिवारिक माह के सघर्ष का सामना करते हुए शनै - शनै अपनी त्यागवृत्ति मे अभिवृद्धि करने लगे। बहुरगी वस्त्र मे यदि एकाध रग और लग जाए तो विशेष बात नही होती। कोई नजदीक से भी उसे ठीक से देख नही पाता। लेकिन एकदम कोरे वस्त्र पर जरा-सा बिदु भर रग लग जाने से वह दूर स ही दीख जाता है। बचपन म धर्मक्रिया के विपरीत एव उदासीन रहन वाले गोवर्धन का यह त्यागमय हावभाव परिजना को मोहवश सहन नही हुआ। अनेक उपायो साम दाम-दड सभी तरह की युक्तियो,जादू-टोना, यत्र-मत्र सभी तरह के अधविश्वासी प्रक्रियाओ का सामना करते हुए 'कार्य वा साधय देह वा पाते यम क सिद्धात पर अड़िग चाल स चलत रहे। अनेक तरह की विषम परिस्थितिया के बावजूद अतत व निकल पड़े एक सुयाग्य गुरु की खाज म। सत ता कई थे लेकिन गावर्धन अपना जीवन किसी कुशल शिल्पी के हाथ सौपना चाहते थे क्योंकि उन्ह वास्तविक रूप मे अपना जीवन सार्थक करन की ललक थी। जीवन म गुरु का अत्यधिक महत्व है। जिसके जीवन म गुरु नहीं उसका जीवन शुरु नही। मगर गुरु भी निर्लेपी और निर्लोभी ही होना चाहिए। यह चितन का विषय है कि जिस बालक ने कभी गुरु के विषय में जाना ही नही वह किस शक्ति से प्रेरित हाकर गुरु की खाज म निकल पड़ा। दीक्षा लेनी ही होती तो कही भी ल लना।

गुरु की खोज मे चल गोवर्धन को मुनिश्री जवरीलाल जी म सा मेवाड़ी मुनिश्री चौथमल जी म सा (जिनके श्रीमुख से प्रस्फुटित वाणी ने ही गोवर्धन का वैराग्य रजित किया) मेवाड़ी पूज्य श्री मोतीलाल जी म सा आदि सतों का समागम सुलभ हुआ। जिस प्रकार दुकानदार ग्राहका को आकर्षित करन हतु कई प्रलोभन देता है, उसी तरह दीक्षा की अभिलाषा लिए गावर्धन को आकर्षित करन अपनी शिष्य सख्या म वृद्धि करन हतु अनेक प्रलाभन दिए गए। लेकिन अपनी विवेक दृष्टि एव विचक्षण प्रज्ञा से गावर्धन ने मन म निर्णय कर लिया था कि मुझे सुख सुविधा, ऐशा आराम क लिए सयम

स्वीकार नही करता है । ये प्रलोभन देने वाले सच्चे गुरु कभी नहीं हो सकते । हम कल्पना तो करे कैसी होगी उनकी बुद्धि, प्रतिभा ? क्या उस वक्त इस सम्मानजनक पद का मोह उन्हें लुभा नहीं पाया होगा ? एक साधु ने उन्हे फीचर नबर देने की बात कही ताकि बबई जाकर धन कमा सके। अपनी बुद्धि, प्रतिभा के बल पर पैसा तो क्या उच्च पद व प्रतिष्ठा भी वे हासिल कर सकते थे । क्या उनके दिल म यह महत्त्वकाक्षा नही जागी होगी ? आम इसान की महत्वाकाक्षा होती है कि अच्छे पैसे कमाऊ बगले गाड़ी में ऐश करू, सर्वत्र कीर्ति, यश पाऊ । वह वातावरण से प्रभावित होता रहता है । लेकिन महापुरुषो की महत्वकाक्षा तो कुछ और ही होती है । वे वातावरण को स्वय बनाते है ।

१६ साल की भरी युवावस्था । उच्च पद चारो ओर प्रतिष्ठा, लेकिन गोवर्धन को इससे भी ऊचा व प्रतिष्ठित पद परमात्म पद पाने की ललक जाग पड़ी थी । अतर मे वैराग्य का सागर हिलोरें लेने लगा । उसने छोड़ दिया स्वजन परिवार का मोह प्रतिष्ठा का प्रेम पैसो का प्यार ॥

उस वक्त आपके श्रवण पटल पर जैन दर्शन के उद्भट्ट मनीषी आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा की सघीय व्यवस्था की जानकारी ने कुछ हद तक सतुष्टि दी । आपश्री को सघ नायक शात क्रातिदृष्टा युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के विषय मे भी जानकारी मिली । इतने सतो के सानिध्य मगर योग्य सत नही मिल पाने की स्थिति से गुजर रहे गोवर्धन को मुनिश्री गणेश का सक्षिप्त परिचय तो प्रभावित नही कर पाया लेकिन खादी धारण आदि विशेषताओ ने जवाहराचार्य एव गणेशाचार्य की छवि नाना हृदय मे उच्च कोटि के श्रमण के रूप में स्थापित कर दी । सचमुच सच्चे महापुरुषो की वाणी नहीं उनका जीवन बोलता है ।

हृदय मे उत्सुकता लिए पहुच गए, सारे परीषहो को सहन करते हुए, कोटा शहर म, जहा दिव्य शात, मुखमडल के स्वामी अलौकिक शात क्राति के अग्रदूत निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के सजग प्रहरी युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के प्रथम दिव्य दर्शन एव अद्वितीय प्रवचन शैली ने गोवर्धन के अतमन को सर्वताभावेन समर्पित कर दिया । प्रवचनोपरात गोवर्धन ने युवाचार्य श्री के चरण सरोजो म उपस्थित हो अपनी समर्पणा एव दीक्षा की भावना व्यक्त की । धीर वीर, गभीर लेकिन सहज भाव मे युवाचार्य श्री ने फरमाया भाई साधु बनना कोई हसी खेल नहीं है । साधु बनने से पूर्व साधुता को समझने का प्रयत्न करो, ज्ञानार्जन करो, त्याग एव वैराग्य की कसौटी मे स्वय को परखो । चित्त की चचलता के साथ भावावेश म किसी भी मार्ग पर बढ़ जाना श्रेयस्कर नही हो सकता । यदि कल्याण मार्ग का अनुसरण करना है तो गुरु का भी परीक्षण कर लो । न अभी हमने तुम्हें ठीक से देखा है न तुमने हमको जाना है । आत्म साधना के पथ पर वास्तविक वैराग्य भावना म विभूषित तप पूत ही चल सकता है ।' वगैरह, वगैरह । गणेश गुरु की इस निस्पृहता से अवाक् गोवर्धन का चितनशील अतर्मन शायद यही चितन करने लगा - जिस गुरु की छवि कल्पना में बसी थी- परतु प्रत्यक्ष दर्शन कर नही पायी

सुना था आपका नाम, कइयो की जुबान से,
बनी तस्वीर दिल मे, कल्पना से अनुमान से ।
कल्पना लगी बेजान, जब हकीकत मे देखा,
सर ऊचा हुआ तब, फख्र से, अभिमान से ॥

अनेक जन्मो का, वर्षों का इतजार सफल बन गया । और ये ही तो वे गुरुदेव है जिनकी कल्पना एक साधक ससार से पार उतारने वाले सद्गुरु के रूप मे कर सकता है ।

ये ही तो है रगीन दुनिया म वैराग्य की सिहगर्जना करके आत्म दुनिया पर जादू करने वाले, ससार की खाई से बाहर निकालकर अणगार का शृगार सजाने वाले महान जादूगर । ये ही तो है आचार शुद्धता व क्रियाशुद्धि के आग्रही सुविशुद्ध सयम धारक गुरुदेव । ये ही तो है वैराग्य को मजबूत बनाने वाले जीवन निर्माता ।

सचमुच इतनी सारी विशेषताए एक ही व्यक्ति मे होना आश्चर्यकारी ही कहा जाएगा। शायद कुदरत ने चुन-चुनकर सारे के सार गुण युवाचार्य श्री गणेश मे ही भर दिये। ऐस महान् व्यक्ति के साक्षात अस्तित्व का आज सामीप्य मिला, उन्हें सुनने का मौका मिला, क्या यह गौरव का विषय नही ?

द्वितीय जन्म

गुरु की खोज पूर्ण करने के बाद आत्मखोज की तैयारी म लगे गोवर्धन ने सारे सघर्षों, परीषहा, पारिवारिक मोहादि का कठार तपसाधना, दृढ सकल्प के साथ समभाव से सामना कर कपासन शहर के एक सुरम्य सरोवर के किनार आम्रवृक्षो के निकुज के मध्यविशाल आम्रवृक्ष के नीचे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के श्रीमुख से साध्वाचार की तमाम इयत्ताओ, आचार सहिता आदि का सम्यक श्रवण कर विशाल सख्या मे उपस्थित अनुमोदक जनमदिनी की साक्षी मे १९ वर्ष की अल्पावस्था मे पौष सुदी अष्टमी सवत् १९९६ को बाल ब्रह्मचारी व्रत से सुशोभित होते हुए युग प्रवर्तक, आत्म-ज्ञाननिधि ज्योतिर्धर पूज्य श्रीमद् जवाहराचार्य जी म सा के शासन मे अणगार धर्म, दीक्षा अगीकार कर भगवान महावीर के पथ के पथिक बन गए। कपासन की धरती मे, जिनशासन के आगन म इस नवजात शिशु के जन्म की बधाइया चहु ओर गूज उठी। जन्मदाता ने इस नवोदित मुनि का परिचय मुनिश्री नानालाल जी म सा की सज्ञा से कराया।

सेवा एव साधना

मुड़-मुडाना बहुत सरल है मन मुडन आसान नही। '

जब तक मन से राग-द्वेष भोगेच्छा रूपी केश का लोचन नही हो जाता, सिर का मुडन निरर्थक है। मुनिश्री नानालाल जी तो वैराग्य से मुडित मन के साथ साधना कर रहे थे। अब तो वे सारी आतरिक कलुषता को समूल नष्ट कर के ज्ञान दर्शन-चारित्र एव तप की साधना, आराधना में तल्लीन हो गए। सभी प्रकार के आभ्यतर तप, बाह्य तप की साधना उनके सयम जीवन की पर्याय बन गई। ज्ञान की अलौकिक महत्ता को केद्र मे रखते हुये ज्ञानाराधना, सयम साधना एव सेवाभावना का जीवन का त्रिकाण बना लिया। आपका जीवन इसी त्रिकोण मे परिभ्रमण करता रहा।

आजकल दीक्षा लत ही परिचय की सपर्क साधने की, यशोलिप्सा की भावना घर कर जाती है। और यह मानवमन की गहरी भूख भी है। लेकिन नाना मुनि ने तो मनजीत की श्रेणी मे खुद का स्थापित कर रखा था। इनकी पहचान अल्पभाषी, विद्याभिलाषी, अध्ययन प्रमी साधक के रूप मे स्वयमेव निर्मित हाती चली गई। मुणिणो सया जागरन्ति - इस आगम वाक्य का आत्मसात् करत हुए मुनि नाना ने साधना की असिधारा पर ज्ञानाराधना पूर्वक पदन्यास किया। अपनी मर्मभेदक प्रज्ञा शक्ति के बल पर अप्रमत्त भाव से व्याकरण एव साहित्य की जटिल पगडडिया को पार करते हुए न्याय मुक्तावली साख्य कौमुदी वाह्य सूत्र, शाकर भाष्य भामति आदि विविध दर्शनो के गूढ़ ग्रथ, प्रमाण नय तत्त्वालोक, स्याद्वाद मजरी, प्रमाण मीमासा, षट्दर्शन समुच्चय सटीक आदि ग्रथा प्राकृत शौरसेनी अर्द्धमागधी, आदि भाषाओ व्याकरण साहित्य कर्मग्रन्थ, तत्त्वार्थ सूत्र सटीक दिगबर न्याय ग्रथ, विशेषावश्यक भाष्य, आचागगादि आगम गीता, रामायण, पुराण उपनिषद आदि का पैनी दृष्टि एव सूक्ष्म प्रज्ञा स अध्ययन मनन एव सिहावलोकन कर जैन न्याय एव दर्शन के उच्च कोटि के विद्वान बन गए। पूरा जीवन ही आगम-सम्मत बन गया। आचार्य श्री नानेश की साधना को आगम का पर्याय कह दिया जाए तो लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है।

अल्प समय मे ही आप आध्यात्मिक, दार्शनिक एव साहित्यिक विषयो के विशिष्ट ज्ञाता अध्येता एव व्याख्याता हो गए। इद्रिय सयम भाषा समिति की बजोड़ दक्षता के स्वामी जीवन भर भगवान महावीर की अप्रमत्त साधना के सदेश के अनुपालक रहे। अतिम समय तक आप पुस्तक के कीड़े माने जाते रहे। जो भी ग्रथ पुस्तक सामने आयी अध्ययन शुरू। हिन्दी सस्कृत

प्राकृत, राजस्थानी, गुजराती आदि कई प्रांतीय भाषाओ के विद्वान नानेश ने सभी भाषाओ मे उपलब्ध प्राय हजारो ग्रथो का मनन कर डाला और नित नया नवनीत विश्व को देते रहे । इनके मर्मस्पर्शी प्रवचन विश्व समस्याओ का सचोट समाधान करते सदैव प्रासगिक रहेंगे । आचार्य श्री नानेश की सर्वक्षेत्रीय ज्ञान कुशलता ने उन्हे समस्त भारतीय दर्शनो के उच्चतम कोटि का अधिकृत तत्ववेत्ता बना दिया । खान मे कम वक्त बिगड़े और यह बचा हुआ समय ज्ञानार्जन में लगे इस आशय से उत्कृष्ट भाव से आभ्यतर एव बाह्य तप की आराधना करते हुए यह साधना-पूत जीवन दिनोंदिन प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहा । आणाए धम्मो' का पालन करते हुए जितना-जितना विकास करते गए उतने उतने सरल बनते गए । अहकार, ईर्ष्या क्रोध य शब्द नाना मुनिजी के शब्द कोष मे थे ही नही । जोरदार ज्ञान साधना, तीव्र वैराग्य उत्कृष्ट त्याग और सबसे बढ़कर मगलकारिणी गुरु निश्रा फिर तो प्रगति म देर कैसी ?

कस्तूरी की सुगध और सूर्य का तेज प्रगटे बिना कैसे रह सकता है ? मुनि नाना के गुणो की सुगध ज्ञान, दर्शन, चारित्र का तेज सर्व दिशाओ म प्रवाहित, प्रसारित हो गया । कुछ ही वर्षों मे मुनि नानालालजी की बहुमुखी प्रतिभा की सुवास से दिशाए महक उठीं । पूज्य श्री का जीवन स्वय मे एक सुनहरा इतिहास है ।

प्रतिसलीनता तप आदि के साथ मुनि नाना ने अपना प्रथम चातुर्मास सवत् १९९७ मे फलौदी में गुरु गणेश की ही सेवा म किया । प्रथम चातुर्मास म ही अपनी अपूर्व अद्‌भुत समत्व साधना, क्षमाशीलता की सौरभ जिन शासन एव हुक्म सघ की वाटिका म फैलाकर अपने से ज्येष्ठतम सतो के हृदय मे अपना स्थान जमा लिया । शारीरिक व्याधियो को दरकिनार करते हुए उत्कृष्ट सेवाभाव से वृद्ध सतो की अनन्य एव अनूठी भावना से सेवा का आदर्श उपस्थित किया । पचमाचार्य श्री गुरु की वाणी सर्वत्र प्रशसित होती हुई सवत २०१९ मे साकार रूप ले सकी । जिस अष्टम पट्ट की भविष्यवाणी श्री गुरु ने की थी उस पाट पर दाता का दर नना आसीन हुआ । गुरु गणेश ने अपने सघ का उत्तराधिकार सौंपा । उदयपुर का राजमहल जय गुरुनाना के जयघोष स गुजित हो उठा । आश्विन शुक्ला द्वितीया सवत् २०१९ का यह शुभ दिवस सपूर्ण मानव सभ्यता पर प्राणिमात्र पर उपकार करने वाला घोषित हुआ । निरभिमान स्वरूप म अपने गुरु प्रदत्त दायित्वो का निर्वहन करते हुए गुरु की वृद्धावस्था म उनकी सयमाराधना मे, साता पहुचाने की सर्वोत्कृष्ट सेवा का आदर्श उपस्थित कर अतिम समय तक गुरु सेवा म अप्रमत्त भाव स लगे रहे । कालबली के आगे नतमस्तक श्री सघ ने अपने आराध्य द्वारा घोषित युवाचार्य को उनके पाट पर आसीन कराया । श्री गुरु की वाणी को पल्लवित होने का अवसर आ गया ।

<u>व्यक्ति एक, विशेषताए अनेक</u>

आपश्री के आचार्यत्व काल मे अनेक क्रांतिकारी एव ऐतिहासिक घटना प्रसग उपस्थित हुए है । गुरु कृपा के सहारे आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने आचार्य बनकर अनेक जीवो पर उपकारो की वृष्टि की और हजारो लाखो दिलो मे बस गये । गुरु कृपा ऐसी फलीभूत हुई कि स्वय करीब तीन सौ सुशिष्य सुशिष्याओ के गुरुदेव बने ।

<u>जल मे कमलवत् निर्लिप्त जीवन</u>

जान बेले न अपनी पुस्तक ए डायरी ऑफ प्रायवेट प्रेयर मे भगवान से प्रार्थना करत हुए कहा है

O GOD ! LET ME USE

मै इस दुनिया का उपयोग करू परतु दुरुपयोग किए बिना, मै दुनिया मे रहू, परतु दुनिया का होकर नही । मै सब कुछ होते हुए भी अपने पास कुछ न हो ऐसा बनू ।

महापुरुष दुनिया मे रहते है, परतु उन्हे इसम कुछ लेना देना नही । गुरुदेव के पावन चरित्र गहन ज्ञान परमात्म भक्ति चितन, लखन व प्रवचन से आकर्षित होकर विशाल भक्त वर्ग उनका दीवाना बना हुआ था । जल में कमल की तरह निर्लिप्त गुरुदेव सबके थ, परतु किसी के होकर नही रहे । नाम प्रसिद्धि की चाहना से कोसो दूर रहने वाले गुरुदेव का अपनी ज्ञान साधना एव

समता-साधना के अलावा किसी चीज मे दिलचस्पी नही थी। कभी किसी ने आहार नही दिया, कभी स्थान नही मिला, प्रतिपक्ष ने अस्तित्व विलुप्त करने का निश्चय कर लिया था, लेकिन समता के झूले मे झूले इस निराले सत ने जग मे चाहे निदा हो या स्तुति, समता यानी समभाव को ही तमाम विषमता के विष की अचूक औषधि बताया है। अपने अतिम समय तक इन्होंने अपनी समता नहीं छोड़ी। बड़े से बड़ा आदमी आ जाये तो उन्हे कोई फर्क नही पड़ता था। उनका मतव्य था कि गृहस्थो का अनावश्यक परिचय साधु-जीवन के दूध-पाक मे जहर जैसा है।

हा, कोई योग्य आत्मा दिखाई दे तो उसे त्याग व वैराग्य के रग से रगने का भरसक प्रयत्न करते। शिल्पी के हाथ पत्थर आते ही वह यही सोचता है कि सुदर नक्काशी करने के लिए इस पर हथौड़ी से कैसा प्रहार किया जाए? तप पूत जीवन की वैराग्य भरी वाणी हृदय-पत्थर पर सही चोट करती। पिंजरे मे बद पछी को अपनी गुलामी खटकने लगती है तो आजाद होने के लिए वह जी जान से जुट जाता है। दयालु गुरुदेव पिंजरे मे बद पछी की तड़पन भला कैसे देख पाते? अनेक अनगढ़ पत्थरो को सुदरतम कृति मे परिणत किया जो आज भी विश्व मे गुरुदेव की शिल्पकला को प्रसिद्ध कर रहे हैं। सबके लिए समता, वात्सल्य का अखूट भडार खोल रखा था-

कोई तुम्हे माता कहे, क्योंकि तुम वात्सल्य की तस्वीर थे,
कोई तुम्हे पिता कहे क्योंकि तुम कइयो की तकदीर थे।
न जाने लोग तुम्हें कितने नामो से पुकारते थे,
तुम तो कई हृदयो को बाधने वाली वैराग्य की जजीर थे॥

व्याख्यान में विविधता

आचार्य श्री नानेश के व्याख्यान मे कौन सा विषय नही होता था? यही एक सवाल है-

तत्वज्ञान रसिको के लिए ऊची कक्षा का तत्वज्ञान!
परमात्म भक्ति के दीवानो के लिए भक्ति रस की बाते!
वैराग्य-वासित आत्माओ के लिए वैराग्य रस का झरना!
बालकक्षा के जीवो के लिए सुदर कथाओ का आकर्षण।

ससार की मोहवासित आत्माओ से एक वस्तु का भी त्याग करवाना कोई आसान काम नही है। परतु गुरुदेव की वाणी की वेधकता श्रोता के दिल पर ऐसा असर करती है कि वह त्याग और वैराग्य के रग मे रग जाता। आपकी ओजस्वी एव मर्मस्पर्शी व्याख्यान शैली ने न केवल जैन समुदाय वरन जैनेतर वर्ग का भी जीवन परिवर्तन किया। प्रत्यक्ष उदाहरण है - धर्मपाल बधु। अपने नवदीक्षित काल मे चरितनायक आचार्य श्री गणेश की आज्ञा से करौली आदि क्षत्रीय गावो की स्पर्शना करते हुए आगे बढ़ रहे थे। एक छोटे से ग्राम मे प्रवचन समाप्ति पर प्रवचन प्रभावित हरिजनो के मुखिया, जो वैद्यजी के नाम से प्रसिद्ध थे, ने चरितनायक के समीप आकर अपनी सामाजिक स्थिति से परिचित कराते हुए समाजोत्थान का निवेदन किया। स्व पर उत्थान की प्राथमिक कक्षा मे अध्ययनरत मुनिश्री ने तत्काल जल्दबाजी मे तो कोई निर्णय नही लिया लेकिन उनकी विनती झोली मे लेकर अपने गुरुदेव के समक्ष अर्ज करने की भावना व्यक्त कर आश्वस्त किया और जैन धर्म के प्रति जागृत हो चुके वैद्य जी को जवाहर किरणावली के अध्ययन की प्रेरणा दी। आचार्य श्री ने इस विषय पर मुनि नाना को समाज मे भूमिका निर्माण करने का सकेत दिया जिसे चरितनायक ने शिरोधार्य तो कर लिया लेकिन सामाजिक उत्क्राति का विचार बीज उनके दिलो-दिमाग मे रोपित हो गया। जिसने उनके आचार्य काल मे श्री वाणी के साथ वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया। नागदा प्रवास पर प्रवचन सभा मे जैन जैनेतर सभी उपस्थित थे। समवशरण सी अद्भुत छटा, आचार्य देव के व्यक्तित्व एव शात बोधगम्य सरस सरल प्रवचन सुधा ने वहा उपस्थित बलाई समाज के प्रमुख श्री सीताराम जी बलाई की अतश्चेतना का झकझोर कर रख दिया। उच्च पाट पर आसीन इस सर्वोच्च महामहिम मे उन्हे अपने समाज के भविष्य निर्माता की तस्वीर दीखने लगी। बलाई समाज लक्षाधिक सख्या मे इदौर उज्जैन, रतलाम, मदसौर, मक्सी, नागदा आदि शहरो के आसपास मालव प्रात के सैकड़ो छोटे बड़े गावो मे फैला

आचार्य श्री नानेश तीर्थंकरा एव पूर्वाचार्यों के अक्षुण्ण शासन की गरिमा मे आच पहुचान के कृत्यो-अनुशासनहीनता, शिथिलाचार असत्य, के विरूद्ध जीवन भर निर्भीक योद्धा की तरह लाहा लत रहे है और यह प्रस्तुति अस्सी वर्ष की आयु मे भी अविचल अडिग थी। आचार्य श्री उन महापुरुषो उन युगपुरुषो म स है जो स्व-पर कल्याण के लिए धरती पर जन्म लेते हैं। जिनके जन्म पर स्वय यह धरती गौरवान्वित महसूस करती है। अभी भी इस देश मे लाखो साधु-महात्मा हैं, लेकिन सच्चे गुरु की कसौटी क्या है ? जिस तरह हर खान मे हीर जवाहरात नही होते, हर वन म चदन के वृक्ष नही मिलते, हर सीप मे मोती नही होता, उसी प्रकार हर देश मे सच्चा साधु नही मिलता। सच्चा गुरु ता विरला ही होता है। ससार से मुह मोड़कर साधना द्वारा स्व आत्म कल्याण कर लेना अलग बात है लेकिन पाप और अज्ञान की दुनिया मे भटकते हुए लोगो का अपने साथ लेकर मुक्ति की ओर उन्मुख होना कुछ और ही है।

स्वास्थ्य की अनुकूलता न होते हुए भी बीकानेर से ब्यावर आदि क्षेत्रो की स्पर्शना करते हुए उदयपुर पधारे। अपने उत्तराधिकारियो एव सुशिष्यो की जिस सेवा सुश्रुषा की उन्हें आवश्यकता थी वह इन्हे सुलभ हुई। सवत् २०५६ का चातुर्मास भी स्वास्थ्य की दृष्टि से उदयपुर ही रहा। गुर्दे खराब हो चुके थे। दूर-दूर से पूज्यश्री की शाता पूछने नर-नारियो का ताता लग गया। पूज्य श्री की समाधि व मानसिक प्रसन्नता देखकर सब दग रह जाते थे। कहने को तो स्मरण शक्ति ने भी जवाब दे दिया था लेकिन अतर रमण का स्मरण, साधु मर्यादा का स्मरण, सथारा ग्रहण करने का स्मरण जागृत था। बाह्य चक्षु भले क्षीण हो चुके हों लेकिन अतर चक्षु प्रतिपल-प्रतिक्षण जागृत थे। चिकित्सकीय उपचार न लेना, सिटी स्केन की टेबल तक जाते ही शिष्यो को वापस लेकर चलने को कहना क्या काफी नही है अतर शक्ति को पहचानने के लिए ? जीवन भर की समता-सयम साधना, ध्यान समीक्षण का निचोड़ अतिम समय मे साथ रहा। गुरुदेव अस्वस्थता मे भी जागृत थे। अपना कार्य स्वय करने मे ही आनद की अनुभूति करने वाले गुरुदेव कभी मागलिक फरमाकर तो कभी व्याख्यान सभा मे पधारकर सबको रोमाचित कर देते।

जैन शासन के एक महान आचार्य होने पर भी बालको के साथ पूज्य श्री स्वय बालक बन जाते थे। दर्शनार्थी उपस्थित माता पिता को सदैव शिक्षा देते, " छोटे बच्चो को डाटना मारना नहीं।" अपनी वाणी के आकर्षण मे चारो दिशाओ को बाधने वाले गुरुदेव छोटे बच्चो के साथ भी सरलता से बातें करते। मा का वात्सल्य तो सिर्फ बालक के शारीरिक विकास तक ही सीमित रहता है परतु ऐसे परमोपकारी गुरुदेव का वात्सल्य तो आध्यात्मिक विकास की ऊचाइयो तक पहुचाने के लिए अनहद को छून लगता है। इस व्याधि काल मे भी वह मिठास, वह अपनत्व (लेकिन ममत्व से दूर) अखड रहा। गुर्दे की खराबी के समाचार मिलने से सबके हृदय चितामग्न हो गए थे। स्वास्थ्य लाभ की कामना मे देश भर म हजारो तले की आराधना हुई। सभी अन्तर मे एक ही शुभेच्छा हमारे गुरुदेव शीघ्रातिशीघ्र अच्छे हो।

छा गया अधकार

कार्तिक बदी ३ सवत् २०५६ तदनुसार २७ अक्टूबर १९९९ बुधवार भरी सुबह मे आकाश मे तेज जगमगाते सूर्य को मानो चुनौती देते हुए पृथ्वी तल पर सर्वत्र अधकार ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। जगत मे ज्ञान प्रकाश फैलाने वाला महातेजस्वी सूर्य ने आज गगन के सूर्य के यौवन के समय ही (सुबह ९ ३० बजे) अस्त होने की तैयारी (सथारा ग्रहण) कर ली और चे क्षण : चारो तरफ गाव गाव नगर नगर, डगर डगर मे गहरी स्तब्धता छा गई। पता नही कौन सा क्षण क्या समाचार लेकर आये ? आचार्य श्री अपने अतेवासी शिष्यो से कहते रहते, 'देखना मै खाली हाथ न चला जाऊ।' अपने गिरते स्वास्थ्य के प्रति सचेत सजग एव सतत चितनशील रहते हुए आत्मबल सुदृढ बन रहा था। आतरिक एव बाह्य सघर्षो स सदैव गुजरता आचार्य श्री का जीवन श्रद्धानिष्ठो के लिए अमृत है। सयम मर्यादा का

हिमायती आचार्य श्री का जीवन समाज के लिए सजीवनी है तथा विश्व की भटकती जनता क लिए प्रकाश पुञ्ज है। आत्म तज को प्रतिफल प्रवर्धित करते हुए सतत् जागरणा की स्थिति म जन-जन के प्राण आचार्य श्री नानश ने अचानक एक फैसला सुना दिया। जिससे एक क्षण के लिए सैलाब थम गया। वक्त रुक गया। सेवाभावी सुशिष्यो न २७ अक्टूबर को गुरुदेव स पृच्छा की भगवन आपको दूध पीना है ? आचार्य श्री खामाश तदनन्तर पुन प्रश्न भगवन सथारा करना है, प्रत्युत्तर मे आख व गर्दन से स्वीकृति दी। क्या हालत हुई होगी समीपस्थ चतुर्विध सघ की ? ९ ३० बजे पुन निवेदन किया गया भगवन पानी, दूध थोड़ा सा ले ले, पर भगवन ने कुछ भी सकेत नही दिया। तब फिर कहा गया भगवन क्या सथारा पचक्खा दे ? तब उन्होने श्री मुख से फरमाया पचक्खा दो। स्थिति स्पष्ट थी। समता साधक आत्म लोक म लोकोत्तर देहातीत साधना की गहराई मे पहुच चुके थे, जहा उन्हे भावी नजर आ रहा था तब तत्रस्थ उपस्थित चतुर्विध सघ की सहमति पर वज्रपात से भी भीषण प्रहार को सहते हुए मजबूत मन के साथ आचार्य श्री नानेश क उत्तराधिकारी श्री रामलालजी म सा के सकेतानुसार तीन शरीर एक प्राण, के सदस्य स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म सा ने दशवैकालिक सूत्र क चार अध्ययन श्रवण कराते हुए ९ बजकर ४५ मिनट पर तिविहार सथारे का प्रत्याख्यान करवा दिया। शास्त्रानुसार सथारे से पूर्व सलेखना होती है। अपच्छिम मारणतिय सलेहणा भूसणा सथारा करने क पूर्व सलेखना करके शरीर को सुखाते है। यह क्रिया आचार्य प्रवर गत ६ माह से कर रहे थे। अल्प आहार के साथ वे सलेखना की ओर अग्रसर हो गए थे। किसी भी प्रकार की चिकित्सा सुविधा का उपयोग न कर अभौतिकी साधना मे लग चुके थ।

साधारण व्यक्ति शरीर की जरा सी व्याधि म आत्म-तत्व विस्मृत कर देता है। लेकिन शरीर और आत्मा का भेद ज्ञान जिस महान् आत्मा के खून की एक-एक बूद म परिणत हो गया, उनके मुख स शारीरिक अस्वस्थता के भाव कैसे झलक सकत थे। आत्म-साधना मे लीन आचार्य देव क सौम्य शात मुखमडल पर एक अलौकिक प्रभा मडल झलक रहा था। ऐसा लग ही नही रहा था कि उन्हे भयकर वेदना हो रही है। अलौकिक ओज तेज और समताभाव मुख मडल पर विद्यमान था।

शाम चार बजे युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा ने मगलिक के दौरान उपस्थित जनो को तिविहार सथारे की स्थिति से अवगत कराया। भक्त हृदय की स्थिति भक्त ही जान सकता है उसे शब्दो मे बाधना नामुमकिन है। इस समय सागर की गहराइयो को, आकाश की अनतताओ को नापना, शब्दाकित करना सभव हो सकता है लेकिन दिलों मे उमड़ते भावो को भाप पाना असभव है। पौषधशाला नवकार मत्र की धुन से गुजित हो उठी।

आचार्य श्री के उत्कृष्ट भावानुसार सायकाल युवाचार्य श्री ने उन्हे ५ बजकर ३५ मिनट पर चौविहार सथारे के प्रत्याख्यान करवा दिये। प्रतिक्रमण पश्चात् सभी सुशिष्य अपने गुरु को जिन स्तवन आदि श्रवण कराते रहे। रात्रि १० ३० बजे युवाचार्य श्री ने देखा कि नाड़ी ऊपर चली गई नब्ज धीमी चल रही है। न हिचकी, न डकार न उल्टी, न दस्त। १० ४१ बजे दाहिनी आख की पलक गिरी और उठी। नश्वर देह से आत्मा अलग हो गई। अजर-अमर निराकार आत्मा ने नश्वर औदारिक शरीर का परित्याग कर दिया। जन-जन की भावनाए आहत हुईं असहाय वज्रपात ने चतुर्विध सघ को वियोग वेदना से अभिभूत कर दिया।

आचार्य पदासीन

आचार्य प्रवर के नश्वर शरीर को छोड़ने के बाद पौषधशाला म उपस्थित शासन प्रभावक श्री सपत मुनिजी म सा, आदर्श त्यागी श्री रणजीत मुनिजी म सा, स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म सा आदि ने कर स्पर्श करते हुए युवाचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा को आचार्य की चादर ओढा दी और इस तरह नवोदित आचार्य श्री रामलालजी म सा पर सघ का सारा उत्तरदायित्व आ गया। उन्होने स्व आचार्य देव के औदारिक शरीर का श्रावक समाज को सौंप दिया।

गगा-यमुना महात नग्र युगल अपने आचार्य दव के अतिम दर्शन करने लग। पौपधशाला के सभागार मे विराजित यह काया अब भी वैसी ही लग रही थी अब भी आभा मडल पर वही तज था, आज था जैसा चैतन्य युक्त स्थिति म था। सार देश म यह समाचार विद्युत गति से फैल गया, जिस जा मापन मिला वह निकल पड़ा। सारा उदयपुर शहर जन-मग्न हा गया।

२८ अक्टूबर को दापहर करीब १ ३० बजे पौपधशाला से इस महानायक, युगपुरुष, महामनीषी महात्मा की अतिम यात्रा आरभ हुई। रजत विमान मे श्वत परिधान म ध्यान मुद्रा म अलौकिक तेज लिए विराजित यह पावन सयमित देह हजारो हजार जनमेदिनी क कधा पर सवार हाकर श्री गणश जैन छात्रावास प्रागण पहुची जो गुरु गणशाचार्य की स्मृति स्थली के रूप मे जानी जाती है। यात्रा मार्ग सिक्को की बरसात रग गुलाल, केशर की महक स सरोबार था। इससे भी अधिक सुवासित वातावरण था आचाय श्री नानेश के सयम साधना की महक से। अपार जनमेदिनी की साक्षी में जन जन को मोहने वाली मूरत, कचन काया आचार्य देव के ससारपक्षीय भतीजे श्री रतनलाल जी पोखरना, श्री रूपलाल जी पाखरना एव श्री अशाक जी पाखरना द्वारा अग्नि का समर्पित कर दी गई। लक्षाधिक नेत्रो मे आतध्यान की स्थिति का प्रसग था। जिन नेत्रों से इस काया को अपने प्राणा से भी अधिक प्रिय रूप मे देखा जाता था आज उसी काया को राख बनते देख रहे थे।

देश-विदश मे स्व गुरुदेव को श्रद्धाजलिया दी गई। सभी ने गद्य पद्य के माध्यम से भावाभिव्यक्तिया दी सभी ने गुरुदेव के बताए मार्ग पर चलने को सच्ची श्रद्धाजलि बताया। गुरुदेव का मार्ग समता का मार्ग है। उसका अनुसरण कर हम आचार्य प्रवर को कालजयी बना सकग।

-दुर्ग

विश्व शाति की जान थे नानेश

विमल पितलिया

कसाइयों स अपराधियों को जीवन देने वाले नानश कितने महान् थ
बलाई जाति का उद्धार करने वाले नानेश कितने प्राणवान थे।
नानेश कौन थ ? यह जानने क लिए बाहर नहीं जरा भीतर उतरा
लाखों को समता का सिद्धात देने वाले नानश विज्ञान ज्ञानवान थ॥
नानेश श्रमण संस्कृति की शान थ
नानश भारत भूमि की आन थ।
नानश क्या क्या थे, क्या कहूँ,
नानश विश्व शान्ति की ~

मोहन भैया

❑ प ज्ञानदत्त पाण्डेय

नानेश स्तवनम्

प्रान्ते विशाल ललिते च धुरीण पूज्ये,
धीरै गभीर बल शालि जनपदे च ।
यस्मिन् सदा भुवन पाल विराजमाना,
गर्जन्ति सिहमिव साहसिका प्रवीणा ॥१॥

अर्थ- जो प्रान्त विशाल,सुन्दर तथा अग्रणी और आदरणीय है, जहा पर धीर, गभीर और बलशाली लोग उत्पन्न होते हैं तथा जहा राजा लोग साहसी, प्रवीण तथा सिह के समान निर्भीक रहते है ।

राणा प्रतापमिव यत्र परतपाना,
सत्साहसेन जनरक्षण तत्पराणाम् ।
आजीवन हि दधता व्रतपालकाना,
नित्य जयोऽस्तु करुणार्द्र सुचेतनानाम् ॥२॥

अर्थ- जहा पर राणा प्रताप जैसे, शत्रुओ को मार भगानेवाले तथा सच्चे साहस से जनता की रक्षा करनेवाले और आजीवन प्रजापालक के व्रत को धारण करनेवाले एव करुणा से भरे हुए सुन्दर मन वाले (अन्तःकरण) जनो की निरन्तर जय जयकार (विजय) होव ।

रम्या सुरम्य नगरी मनुजाधिपस्य,
नाम्ना पुरेण सतु चोदय राजधानी ।
तत्राभवनरवरो हि, गुरुर्गणेश,
आचार्य दर्य जनता सकलस्य मान्य ॥३॥

अर्थ- सुन्दर, मनोहर, नगरी जो मेवाड़ नरेश की राजधानी है, जिसका नाम उदयपुर है वहा मनुष्या मे श्रेष्ठ गुरु गणेश हुए, जो जैनाचार्य बनकर सम्पूर्ण जनता के परम आदरणीय हुए ।

तस्या धराभुविनोरम ग्राम दाता,
आस्ते हि यत्र सुषमा प्रकृतेर्सुरम्या ।
शृगार मातृ तनयो जनिरत्नतुल्य,
नाना क्रिया हि बहुतस्य जनस्य नाम्न ॥४॥

अर्थ- उसी (मेवाड़ की पवित्र) धरती पर अत्यत ही मनोहर दाता नाम का ग्राम है जिसकी प्राकृतिक सुषमा विलक्षण है । वहा पर शृगार नाम की एक माता ने रत्न के समान एक पुत्र का जन्म दिया, जिसका नाम भी नाना (लाल) था और वह सभी क्रियाओ म निपुण था ।

सौन्दर्य तेज वपुषाऽपि गभीर धीर.
आस्ते जितेन्द्रिय वपु न विकारभाज ।

सप्राप्य ये नरतनु गमयन्ति मूढा,
नाह मचामि खलु नश्वरता विकारम् ॥५॥

अर्थ- वे सौन्दर्य और तेज से युक्त होने पर भी गभीर और धीर थे तथा जितेन्द्रिय और विकार रहित थे। उनका मानना था कि जो लोग मनुष्य शरीर को प्राप्त करके व्यर्थ बिताते हैं, मूर्ख हैं। मैं ससार की नश्वरता (सुख) को कभी नही अपनाऊगा।

श्रुत्वा वचासि ननु षष्ठगतो कुचार,
दु खाय वै सभविता ह्यनगार वाण्या।
विशाब्द मात्रभवजीवन मानवस्य,
हस्त प्रमाण भविता पशु दु खभाज ॥६॥

अर्थ- एक अणगार से छठे आरे का वृतान्त सुनकर दु:खमय ससार से शान्ति मुझे कैसे मिलेगी इस पर विचार करने लगे, क्योंकि छठे आरे म मनुष्य की आयु बीस वर्ष तथा शरीर एक हाथ का और जीवन पशु तुल्य होगा।

सप्राप्य जीवन नरस्य महर्घतायाः,
आत्मोनति न कुरूते य भवाब्धिबद्ध।
तान्प्रेरयामि ननु चात्मसुखाय भव्यान्,
मुक्तौ ममापि गमन ह्यनवद्यकार्यम् ॥७॥

अर्थ- बहुमूल्य मानव जीवन को प्राप्त करके भी जा ससार मे ही बधा रहता है और अपनी आत्मा की उनति (विकास) नही करता है ऐसे भव्य जनो को आत्म-सुख प्राप्त करने के लिए प्रेरित करूगा तथा स्वय भी मुक्ति प्राप्त करन क मार्ग पर गमन करूगा क्योंकि यही निर्दोष मार्ग है।

ससार वास रहितस्य न चास्त्य साध्य,
निर्लेप तिष्ठति जले रूहवन्स धीर।
नाना, त्विारमनस परिवर्तन च,
विद्या सुपात्रमिव रागहत मनोऽभूत् ॥८॥

अर्थ- सासारिकता से अनासक्त जन के लिए कुछ भी असभव नही है क्योंकि ऐसा पुरुष धीर और कमल पत्र क समान निर्लेप हाता है। नाना क भी मानसिक विचारा म परिवतन आ गया तथा सुपात्र को दी हुई विद्या के समान उनका मन भी राग रहित हो गया।

राग विमुच्य स विरागमय वभौच,
दु खार्तिह हि सतत ह्यनगार वान्स।
आत्मोन्नतिर्हि शुचिभाव विना न शक्या,
ध्यान विना न भवितेति विकास बुद्धि ॥९॥

अर्थ- वे राग त्यागकर विरागी तथा अणगारी होकर के निरन्तर दूसरा के दुख को दूर करने मे लग गये, क्योंकि आत्मा की उन्नति शुद्धभाव के बिना नही होती और ध्यान के बिना बुद्धि का भी विकास नही होता है।

पादौ हि यस्य गमनाय पुरस्कृता स्यु,
तस्यात्म चिन्तन सुखेऽमृतधार वर्ष।
स्वस्मिन् रमेऽपि खलु सयम साधकाना,
वाछा भवन्ति सतत गुरुमेलनाय ॥१०॥

अर्थ- जिसके पैर जीवन के उनति मार्ग पर चलने को तत्पर हों, ऐसे व्यक्ति के आत्म चिन्तन में अमृत की धारा बरसती है, इस प्रकार के सयम और साधना म लीन जन अपनी आत्मा मे निरन्तर रमण करते हैं तथा सद्गुरु प्राप्त करने की उत्कठा हमेशा बनी रहती है।

अन्वेष्यमाण पुरुषस्य सदेप्सितार्थि,
साध्य हि साधनविहीन जनस्य लक्ष्यम्।
गुर्वर्थ व्याकुलमति स जगाम कोटा,
शास्त्रज्ञ वन्दनयुताय गणेशनाम्ने ॥११॥

अर्थ- खाजी व्यक्ति को अभिलषित मिल ही जाता है क्योंकि साधनविहीन जन का साध्य (अभिलषित) ही लक्ष्य हाता है, अत. गुरु दर्शना के लिए व्याकुल मनवाले 'नाना (नानेश) कोटा गय जहा सकल शास्त्रो के मर्मज्ञ ज्ञाता एव वन्दनीय गणेश नाम क गुरुश्रेष्ठ विराजमान थ।

दृष्ट्वा गणेश मुनिराज वपु सतेज,
नि ष्यन्द मानवपुष सतत हि तेज।
शान्तिप्रद नियम सयमवान्स तेज,
यश्चाद्वितीय महिमा न तु कोऽपि तुल्य ॥१२॥

अर्थ- मुनिराज गणेश ने तेजस्वी शरीर वाले नाना का देखा जिनके शरीर से निरन्तर तज निकल रहा था, वह तेज नियम और सयम का था तथा शाति प्रदान

करने वाला था, जिसकी महिमा अद्वितीय थी । उसके तुल्य दूसरा कोई भी तेज नही था ।

शिष्योऽस्म्यह गुरुवरस्य च तारकस्य,
दत्वाशिष जिनगुरो दद ध्यान शिक्षाम् ।
शिष्य न वाछति गुरु खलु निस्पृहो य,
लग्ना च ते हि सतत खलु साधनायाम् ॥१३॥

अर्थ- भव को पार कराने वाले गुरु श्रेष्ठ का मै शिष्य हू । हे जिनेन्द्र, मुझे आशीष देकर ध्यान की शिक्षा (विधि) दो, निस्पृह (वीतराग) गुरु शिष्यो की मडली तैयार करने मे अभिलाषा नही रखता है, वह तो निरन्तर अपनी साधना मे ही लगा रहता है ।

योगीश्वरेण ननु नाम गणेश्वरेण,
सम्यग्वचो निगदित ह्यनगार हेतो ।
धारासितीक्ष्णमिव साधुपथो न सह्य,
ध्यानस्य चात्र महिमा गुरुगम्य बोध ॥१४॥

अर्थ- अणगार बनने की भावना से कही हुयी नाना की बात को ठीक से सुनकर योगिराज गुरु गणेश ने कहा कि साधु जीवन का मार्ग कृपाण की तीक्ष्ण धार के समान है तथा उसके परीषह अत्यन्त कठिन और असह्य हैं तथा ध्यान के महत्त्व को बिना गुरु के नही जाना जा सकता है ।

श्रुत्वा विचार गणयस्य पुनर्विचिन्त,
आत्मावबोध जनन न गुरुर्विना वै ।
नात्रास्ति शिष्य जन लोभ गुरुर्वरेण्ये,
सत्य स साधक वर विदुषा वरेण्य ॥१५॥

अर्थ- श्री गणेशाचार्य के विचार को सुनकर नाना चिन्ता मे पड़ गये क्योकि आत्मज्ञान गुरु के बिना नही हो सकता । इस गुरु में शिष्य करने का थोड़ा भी लोभ नही है, क्योंकि ये विद्वानो मे श्रेष्ठ तथा महान् साधक हैं ।

योग्य गुरु समभिप्राप्य मुदा जहर्ष,
ज्ञानेन ध्यान रमण कुरु चात्मशुद्धिम् ।
कार्य विशुद्धिकरण खलु जीवनस्य
ससार तारक गुरुर्हि गणेश वर्य ॥१६॥

अर्थ- योग्य गुरु को प्राप्त करके नाना बहुत प्रसन्न हुए तथा अपने मन को, ज्ञान प्राप्त करते हुए ध्यान मे रमण करके आत्म शुद्धि की प्रेरणा दी । क्योंकि जीवन को शुद्ध करना तथा निखारना प्रमुख कार्य है तथा ससार से तारनहार गुरु गणेश अब मुझे मिल गये हैं ।

कार्षापणेव निकषोपल शुद्ध चित्त,
स्वर्ण प्रभामिव विभाति गुरोर्हि तेज ।
सवीक्षयन्ति पुरुषा अपि श्रावकाख्या,
जाम्बूनद खलु विभाति तथाहि 'नाना' ॥१७॥

अर्थ- श्री गुरु गणेश रूपी कसौटी पर खरे उतर करके सोने के समान शुद्ध (निष्कलक) दोष रहित चित्तवाले नाना सुवर्ण की काति के समान चमकने लगे । मानो उनमे उनके गुरु का ही तेज चमक रहा हो । श्रावक लोगो की दृष्टि इन पर पड़ने लगी, क्योंकि दिनों-दिन नाना, खरे सोने जैसे दीखने लगे ।

आज्ञा विना न शुशुभे स्वजने विरक्त,
आज्ञा यदा मिलितवान् शुशुभे कुमार ।
मेवाड़ प्रान्त रूरूचे हि कपासनश्च,
दीक्षा हि यत्र समभूज्जिन चाष्टमस्य ॥१८॥

अर्थ- दीक्षा की आज्ञा न मिलने पर खिन्न (दुःखी) हो गये । किन्तु आज्ञा मिलते ही कामना से रहित नाना पुन चमक उठे तथा पूरा मेवाड़ प्रान्त और कपासन गाव खिल उठा जहा आठवे जैनाचार्य नाना की दीक्षा हुई ।

शिष्य तदा हि गुरवे मिलित सुयोग्य,
साध्य च साधन सुसाधक सारवस्तु ।
सलोडन च कृतवान् हि जिनागमस्य ॥१९॥

अर्थ- गुरु को योग्य शिष्य मिल गया क्योंकि वास्तव मे श्रेष्ठ साधन और साधक ही साध्य होता है । योग्य स्थान प्राप्त करके तथा शका रहित होकर नाना ने समस्त आगमो का ज्ञान किया ।

न्यायादिभाष्य सहित खलु चूर्णिकाव्य
सम्यक् प्रपठ्य जिन शासन गूढ तत्त्वम् ।
शब्दागमेऽपि कृतवान् महतत्व बोध,
भाषासु देवे रसनासु च गूढ ज्ञानम् ॥२०॥

अर्थ- न्याय, भाष्य तथा चूर्णिका, टीकाओ एव जैनागम ग्रन्थो के गूढ़ तत्त्वो का सम्यक् रूप स अध्ययन किया। साथ ही व्याकरण शास्त्र को पन्ग और अन्य भाषाआ का भी पर्याप्त ज्ञान अर्जित किया।

दृष्ट्वा हि शिष्य विनय गुरवो हि तुष्टा,
योग्य विचारयति योग्यतम हि प्राप्य ।
आराधने हि खलु रत्नमय त्रयस्य,
सम्यग्विहस्य स तु वै सहते च कष्टान् ॥२१॥

अर्थ- योग्य शिष्य को पा करके गुरुदव सतुष्ट हा गये, क्योंकि योग्य को प्राप्त करके योग्य ही विचार किया जाता है। गुरु के निर्देश मे नाना हसत- हसत सभी कष्टो का सह करक रत्नत्रय की आराधना मे लग गय।

भूत्वाकुलालमिव सर्जनमृतिकाख्य,
निर्मापणे स खलु जीवन भव्यताया ।
सम्यक् सुशोभ ननु ज्ञान विचिन्तनेन,
बाधा विमोच्य स हि चात्मसुख चकार ॥२२॥

अर्थ- जिस प्रकार कुलाल (कुम्हार) मिट्टी स जो चाहे आकार द देता है उसी प्रकार नाना ने भी अपने जीवन का भव्य बनाने के लिए अपने को मिट्टी क समान (अकिचन, मुलायम, अभिमान रहित) बना लिया तथा दिन रात ज्ञान चिन्तन स अपनी शोभा को बढ़ा लिया और सभी बाधाआ को दूर करके आत्मसुख प्राप्त किया।

कृत्वा प्रशसित गुरो खलु वै सपर्यां,
तस्मिन्नुवास स हि चोदयनाम पुर्याम् ।
यत्रास्ति वै गुरु गणेश गुरुर्निवास, ,
दर्शार्थिभि सुललित हि भुव तदीयम् ॥२३॥

अर्थ- प्रशसनीय गुरु की सवा करके 'नाना ने उदयपुर म निवास किया जहा गुरु गणश ने स्थिरवास कर रखा था। वहा की धरती दर्शनार्थियो से अति सुन्दर लग रही थी।

भाव्य भविष्यति हि कि खलु सघचिन्ता
दृष्ट्वा गणेश गुरुर्वर्य तदीय शकाम् ।
नानेश शिष्यसुधिय खलु सदिदेश,
सघस्य चोन्नतिरय बहु सकरिष्यति ॥२४॥

अर्थ- भविष्य मे क्या हागा इस तरह की सघ की चिन्ता को देख करके उनकी शका को मिटान क लिए गुरु गणेश ने योग्य शिष्य और विद्वान तथा बुद्धिमान दयालु नाना के तरफ सकत किया तथा कहा कि यह सघ की बहुत उनति करेगा।

एकोनविशतिगते हि सहस्रनेत्रे,
मासे हि चाश्विन सिते द्वितये च तिथ्याम् ।
गर्जन्ति मेघ निवहा जगती सुरम्या,
नानेश वर्य गुरु प्राप्य चमत्कृताभूत् ॥२५॥

अर्थ- दा हजार उन्नीस सम्वत् मे तथा आश्विन शुक्ल मे द्वितीया तिथि को, मेघों से घिरे हुए आसमान के कारण सुन्दर लगने वाली धरती दीक्षा सम्पन्न 'नाना को पाकर धन्य हो गई।

पश्चाद्यथा च जगती शुशुभे च यूना,
कृष्णे च माघतिथि युग्ममये सुपुण्ये ।
आचार्य वर्य पदवी समवाप्या नाना,
स्वीय प्रभाभिरिव यस्तिमिर जहास ॥२६॥

अर्थ- दीक्षा सम्पन्न नाना को पाकर यह धरती बहुत ही सुशोभित हुई, यही नाना' आगे चलकर माघ मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि को आचार्य पद को प्राप्त करके अपने तेज से भगवान सूर्य के समान ससार का पाप रूपी अधकार नष्ट कर दिया।

विश्वस्य शातकरण हि कथ समत्व,
वैषम्य दूर करण च कथ भवेयु ।
भाव हि तस्य मनस खलु सतुतोद,
भाव्य विना न समता जगत प्रतिष्ठा ॥२७॥

अर्थ- विश्व को शाति कैसे मिलेगी, तथा सभी मे समता भाव कैसे आएगा तथा विषमता को दूर कैसे किया जा सकगा? ये सब मन के भाव दुखी करने लग क्योंकि समता क बिना कभी भी इस जगत की स्थिति सभव नहीं हागी।

सिद्धात एव समता खलु विश्व पुष्ट्यै,
अन्तर्भवस्तु परमार्गविदा मनीषा ।

सिद्धात दर्शनमिद खलु जीवनाख्य,
आत्माख्य दर्शन मिद परमात्म साध्यम् ॥२८॥

अर्थ- समता का सिद्धात ही विश्व का पापण करेगा अन्य विद्वानो का मत इसी मे समाया हुआ है। सिद्धात दर्शन और जीवन दर्शन ही जीवन के आधार हैं, तथा आत्म दर्शन और परमात्मा दर्शन ही मुक्ति (परमात्म-साधन) के आधार हैं।

शका न वै किमपि तत्र दुरूहमार्गे,
दृष्टौ मन वपुषि चैव समत्व बुद्धि ।
सभावयन् सुरगवीं सफल श्रमेण,
सस्कार सस्करण सस्कृति मातनोति ॥२९॥

अर्थ- नाना को इस दुरुह मार्ग पर चलने मे तनिक भी शका नही हुई क्योकि उनके मन, दृष्टि और शरीर मे भी समता भाव भर गया था। इसलिए नाना देवभापा और दव सस्कृति को अपने सफल परिश्रम से अपनाते हुण लोगो के भी सस्कार का सस्करण (मार्जन, सशोधन) करते हुए सत् सस्कृति का निरन्तर विस्तार करने लगे।

उद्धारयन् हि खलु भव्यजनानेनकान्,
दीक्षा दिदेश खलु सार्धशतत्रय वै ।
आचार्य वर्य पदवी खलु त्रिश पद्क ,
शान्त्यै गृहस्थ जनमार्ग प्रदो बभूव ॥३०॥

अर्थ- अनेक भव्य जनो का उद्धार करते हुए साढ़े तीन सौ से भी अधिक जनो को शुभ भागवती दीक्षा प्रदान की तथा छत्तीस (३६) वर्ष तक आचार्य पद का सुशोभित किया और गृहस्थो को शाति का मार्ग दिखाया।

सस्कार कार्यकरणाय हि मालवाना,
गत्वाहि तत्र मुनि पुगव ता जगाम ।
तत्र स्थितान्, हि पतितान् च समुद्धरिष्यन्,
तान धर्मपाले करणेन बभौ स्वय स ॥३१॥

अर्थ- मालवावासियो को सुसस्कारित करने के लिए मुनिश्रेष्ठ आचार्य नाना वहा गय और वहा उन पतित जनो का उद्धार किया एव उनको धर्मपाल बनाया और स्वय भी धर्मपाल प्रतिबोधक बन गये।

कि जीवन हि विपये परिपृच्छमाणे,
सम्यक् ददर्श समता खलु मार्ग श्रेष्ठम् ।
नाना' हि बोध वचनेन समानवापु,
सन्दर्शयन् स अतुला ननु चात्मभावम् ॥३२॥

अर्थ- जीवन क्या है ? यह प्रश्न पूछने पर इसके उत्तर मे आचार्य नाना ने समता के श्रेष्ठ मार्ग को ही देखा। इस प्रकार नाना ज्ञान (वोध) मय वचना से सवको प्राप्त कर लिए अर्थात् सवके प्रिय हो गये और नाना न सबके सामने अपने अतुलनीय आत्मा क भाव को प्रस्तुत किया।

अन्त प्रवेशसुखयन् स च योगिराज,
नव्यान् रहस्यमय बोध सुखान् ददर्श ।
ध्यानस्य चापि स परा च विद्या जगाय,
प्राप्नोति चात्मशमन हि समीक्षणेन ॥३३॥

अर्थ- योगियो मे श्रेष्ठ 'नाना ने विलक्षण आत्म-सुख का अनुभव करते हुए नय-नय रहस्य मय वोध सुखो (आत्मा की अनुभूतियो) को देखा (अनुभव किया)। ध्यान की भी एक नयी विलक्षण विद्या का आविष्कार किया तथा उस विलक्षण समीक्षण ध्यान से आत्मशाति को प्राप्त किया।

मेवाड़ मालव तथा खलु मारवाड़े,
सौराष्ट्र गुर्जर गते च कृत प्रचारे ।
विस्तारयन् हि गुरु गौरवता दिगन्ते,
मोहस्य बधनगतो न कदापि नाना ॥३४॥

अर्थ- मेवाड़ मालवा और मारवाड़ सौराष्ट्र तथा गुजरात मे नाना न गुरु के यश का प्रसार किया वह यश दिशाओ क अन्त तक फैल गया किन्तु इतना यश बढ़ने पर भी नाना कभी भी मोह (सासारिक) बधन म नहीं पड़े।

सदीप्यमान जिन शासनखेचरेषु
सदीप्यते हि सुषमा खलु चेतनानाम् ।
वाच प्रमाणयति य जिन पचमस्य,
जैनाष्टमो बहु तनिष्यति साधुमार्गम् ॥३५॥

अर्थ- न्याय भाष्य तथा चूर्णिका, टीकाओ एव जैनागम ग्रन्थो क गूढ़ तत्त्वा का सम्यक् रूप से अध्ययन किया। साथ ही व्याकरण शास्त्र को पढ़ा और अन्य भाषाआ का भी पर्याप्त ज्ञान अर्जित किया।

दृष्ट्वा हि शिष्य विनय गुरवो हि तुष्टा,
योग्य विचारयति योग्यतम हि प्राप्य ।
आराधने हि खलु रत्नमय त्रयस्य,
सम्यग्विहस्य स तु वै सहते च कष्टान् ॥२१॥

अर्थ- योग्य शिष्य को पा करके गुरुदव सतुष्ट हो गये, क्योकि योग्य को प्राप्त करक योग्य ही विचार किया जाता है। गुरु के निर्देश म 'नाना' हसते- हसते सभी कष्टा का सह करक रत्नत्रय की आराधना मे लग गये।

भूत्वाकुलालमिव सर्जनमृतिकाख्य,
निर्मापणे स खलु जीवन भव्यताया ।
सम्यक् सुशोभ ननु ज्ञान विचिन्तनेन,
बाधा विमोच्य स हि चात्मसुख चकार ॥२२॥

अर्थ- जिस प्रकार कुलाल (कुम्हार) मिट्टी से जो चाहे आकार द देता है उसी प्रकार नाना ने भी अपने जीवन का भव्य बनान के लिए अपने को मिट्टी के समान (अकिंचन, मुलायम, अभिमान रहित) बना लिया तथा दिन-रात ज्ञान-चिन्तन से अपनी शोभा को बढ़ा लिया और सभी बाधाआ को दूर करके आत्मसुख प्राप्त किया।

कृत्या प्रशसित गुरो खलु वै सपर्यां,
तस्मिन्नुवास स हि चोदयनाम पुर्याम् ।
यत्रास्ति वै गुरु गणेश गुरुर्निवास, ,
दर्शार्थिभि सुललित हि भुव तदीयम् ॥२३॥

अर्थ- प्रशसनीय गुरु की सेवा करके 'नाना' ने उदयपुर म निवास किया जहा गुरु गणश ने स्थिरवास कर रखा था। वहा की धरती दर्शनार्थियो से अति सुन्दर लग रही थी।

भाव्य भविष्यति हि कि खलु सघचिन्ता,
दृष्ट्वा गणेश गुरुवर्य तदीय शकाम् ।
नानेश शिष्यसुधिय खलु सदिदेश,
सघस्य चोन्नतिरय बहु सकरिष्यति ॥२४॥

अर्थ- भविष्य मे क्या होगा इस त[illegible] चिन्ता को देख करके, उनकी शका को [illegible] गुरु गणश ने योग्य शिष्य और विद्वान [illegible] दयालु नाना के तरफ सकेत किया तथा कहा [illegible] की बहुत उन्नति करेगा।

एकोनविंशतिगते हि सह[illegible]
मासे हि चाश्विन सिते द्वितये च तिथ्या[illegible]
गर्जन्ति मेघ निवहा जगती सुरम्[illegible]
नानेश वर्य गुरु प्राप्य चमत्कृताभूत् ॥२५॥

अर्थ- दो हजार उन्नीस सम्वत् मे तथा [illegible] शुक्ल मे द्वितीया तिथि को, मेघों से घिरे हुए [illegible] के कारण सुन्दर लगने वाली धरती दीक्षा सम्पन्न न[illegible] को पाकर धन्य हो गई।

पश्चाद्यथा च जगती शुशुभे च पूता,
कृष्णे च माघतिथि युग्मये सुपुण्ये ।
आचार्य वर्य पदवी समवाप्या नाना,
स्वीय प्रभाभिरिव यस्तिमिर जहास ॥२६॥

अर्थ- दीक्षा सम्पन्न 'नाना' को पाकर यह धरती बहुत ही सुशोभित हुई, यही 'नाना' आगे चलकर माघ मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि को आचार्य पद को प्राप्त करके अपने तेज से भगवान सूर्य के समान ससार का पाप रूपी अधकार नष्ट कर दिया।

विश्वस्य शातकरण हि कथ समत्व,
वैषम्य दूर करण च कथ भवेयु ।
भाव हि तस्य मनस खलु सतुतोद,
भाव्य विना न समता जगत प्रतिष्ठा ॥२७॥

अर्थ- विश्व को शाति कैसे मिलगी तथा सभी मे समता भाव कैस आएगा तथा विषमता को दूर कैसे किया जा सकगा ? ये सब मन के भाव दुखी करने लगे क्योंकि समता क बिना कभी भी इस जगत की स्थिति सभव नही होगी।

सिद्धात एव समता खलु विश्व पुष्टै,
अन्तर्गवस्तु परमार्गविदा मनीषा ।

सिद्धात दर्शनमिद खलु जीवनाख्य,
आत्माख्य दर्शन मिद परमात्म साध्यम् ॥२८॥

अर्थ- समता का सिद्धात ही विश्व का पोपण करगा, अन्य विद्वाना का मत इसी मे समाया हुआ है। सिद्धात दर्शन और जीवन दर्शन ही जीवन के आधार हैं, तथा आत्म दर्शन और परमात्मा दर्शन ही मुक्ति (परमात्म-साधन) के आधार हैं।

शका न वै किमपि तत्र दुरूहमार्गे,
दृष्टौ मन वपुषि चैव समत्व बुद्धि ।
सभावयन् सुरगवीं सफल श्रमेण,
सस्कार सस्करण सस्कृति मातनोति ॥२९॥

अर्थ- नाना को इस दुरूह मार्ग पर चलन मे तनिक भी शका नही हुई क्योंकि उनके मन, दृष्टि और शरीर मे भी समता भाव भर गया था। इसलिए नाना देवभापा और देव सस्कृति को अपने सफल परिश्रम से अपनाते हुए लोगो के भी सस्कार का मस्करण (मार्जन, सशोधन) करते हुए सत् सस्कृति का निरन्तर विस्तार करने लगे।

उद्धारयन् हि खलु भव्यजनानेनकान्,
दीक्षा दिदेश खलु सार्धशतत्रय वै ।
आचार्य वर्ष पदवी खलु त्रिश पट्क ,
शान्त्यै गृहस्थ जनमार्ग प्रदो बभूव ॥३०॥

अर्थ- अनेक भव्य जना का उद्धार करत हुए साढे तीन सौ से भी अधिक जना को शुभ भागवती दीक्षा प्रदान की तथा छत्तीस (३६) वर्ष तक आचार्य पद को सुशोभित किया और गृहस्थो को शाति का मार्ग दिखाया।

सस्कार कार्यकरणाय हि मालवाना,
गत्वाहि तत्र मुनि पुगव ता जगाम ।
तत्र स्थितान्, हि पतितान् च समुद्धरिष्यन्,
तान धर्मपाले करणेन बभौ स्वय स ॥३१॥

अर्थ- मालवावासियो को सुसस्कारित करने के लिए मुनिश्रेष्ठ आचार्य नाना वहा गये और वहा उन पतित जनो का उद्धार किया एव उनको धमपाल बनाया और स्वय भी धर्मपाल प्रतिबोधक बन गये।

कि जीवन हि विपये परिपृच्छमाणे,
सम्यक् ददर्श समता खलु मार्ग श्रेष्ठम् ।
नाना' हि बोध वचनेन समानवापु,
सन्दर्शयन् स अतुला ननु चात्मभावम् ॥३२॥

अर्थ- जीवन क्या है ? यह प्रश्न पूछने पर इसके उत्तर मे आचार्य नाना ने समता के श्रेष्ठ मार्ग को ही देखा। इस प्रकार नाना ज्ञान (बोध) मय वचनो स सबको प्राप्त कर लिए अर्थात् सबके प्रिय हो गये और नाना न सबके सामने अपने अतुलनीय आत्मा के भाव को प्रस्तुत किया।

अन्त प्रवेशसुखयन् स च योगिराज,
नव्यान् रहस्यमय बोध सुखान् ददर्श ।
ध्यानस्य चापि स परा च विद्या जगाय,
प्राप्नोति चात्मशमन हि समीक्षणेन ॥३३॥

अर्थ- योगियो मे श्रेष्ठ 'नाना' ने विलक्षण आत्म-सुख का अनुभव करत हुए नये-नय रहस्य मय बोध सुखा (आत्मा की अनुभूतिया) को देखा (अनुभव किया)। ध्यान की भी एक नयी विलक्षण विद्या का आविष्कार किया तथा उस विलक्षण 'समीक्षण ध्यान स आत्मशाति को प्राप्त किया।

मेवाड़ मालव तथा खलु मारवाड़े,
सौराष्ट्र गुर्जर गते च कृत प्रचारे ।
विस्तारयन् हि गुरु गौरवता दिगन्ते,
मोहस्य बधनगतो न कदापि 'नाना ॥३४॥

अर्थ- मेवाड़, मालवा और मारवाड़ सौराष्ट्र तथा गुजरात म नाना ने गुरु क यश का प्रसार किया वह यश दिशाओ के अन्त तक फैल गया, किन्तु इतना यश बढ़ने पर भी नाना कभी भी मोह (सासारिक) बधन म नही पड़े।

सदीप्यमान जिन शासनखेचरेषु
सदीप्यते हि सुषमा खलु चेतनानाम् ।
वाच प्रमाणयति य जिन पचमस्य,
जैनाष्टमो बहु तनिष्यति साधुमार्गम् ॥३५॥

अर्थ- जिनशासन का प्रभाव आकाश मे तथा पशु पक्षियो मे भी हुआ, इससे जीवो की शोभा और भी अधिक होने लगी। वास्तव मे नाना ने पाचवे आचार्य की यह भविष्यवाणी सस्त्य बना दी कि आठवा आचार्य साधुमार्ग का बहुत विस्तार करेगा।

पाटे जिनेन्द्र पदवीगत चाष्ट मोऽय,
सम्यक् विभावयति यो हयनिशं बिनेशम् ।
शास्तापि शासिततनुश्च बवर्य सर्प,
ज्ञानेन सेवित गुर्हर्हि दिव जगाम ॥३६॥

अर्थ- जैनाचार्य के आठवे आचार्य पद (पाट) को अलकृत करते हुए नाना निरतर प्रभु के ध्यान मे लगे रहते थे। वे जिनशासक होते हुए भी स्वय पर भी शासन करते थे। इस प्रकार आचार्य नाना गुरु ने साधुमार्गी जैन सघ का प्रभूत विस्तार किया। और अन्त मे आत्म ज्ञान (मुनि) के द्वारा सेवित होकर स्वर्ग लोक का प्रस्थान कर गए।

उदयपुर

सबके हृदय सम्राट थे

कु रुचि मोदी

शासन के सिरताज थे तुम, प्राणों के आधार थे
सबके हृदय सम्राट थे तुम जन जन के सिरताज।
किया एक बार भी जिसने श्रद्धा से तुम्हारा दर्शन।
मान लिया मन से उसने तुमको अपना सर्वस्व आराध्य।
बचपन से ही उच्च चाहत आपकी पहचान थी॥
जन जिनासा शांत करने में शैली बड़ी बलवान थी।
तुम्हारी अद्भुत शिक्षा शैली का क्या गुणगान करूं मैं
दिवाकर को दीपक दिखाने मे यहां असमर्थ हूँ मैं।
प्रलय काल के घोर बादल हुए जब मानवता
तब तुमने प्रभु से मांगे मनुष्य की रक्षा।
फिर शांति मिल जाती थी पास तुम्हारे पहुंचकर
अविस्मरणीय है वो रूप शांत सौम्य सुन्दर।
हर कदम पर पड़े तुम्हारा प्यार तुम्हारा आशीर्वाद
मेरी आत्मा के प्रेरक गुरुवर मन मे स्नेह अपार।

राजनांदगांव

□ डा नेमीचन्द जैन

आचार्य श्री के साथ २४ घटे

मुखातिव हू एक जैनाचार्य से जा एक ऊचे पाट पर, जिस पर एक कुशन है,
अपना दाया चरण लटकाये अत्यन्त अप्रमत भाव से आसीन है
और मेरी प्रणति को धर्मलाभ-के-रूप मे लौटा रहे है। चौड़ा ललाट
सावला रग समदर-से-गहर नेत्र, ऐसे नत्र जिनके भीतर नेत्र है और जिन्होंन
मोतियाबिद के आघात सह है- एक चश्मा माटी फ्रेम का
नाकोनवश आध्यात्मिक, धवल चादर,
मुखपत्ती में-से झाकता सस्मित/अथक चहरा और मन म सीधे गहरे उतर जाने वाली वाणी।

एक-एक शब्द सोचा हुआ। विवक और मुनित्व की तुला पर तुला हुआ।
कोई छुपाव नही है। सब कुछ खुला है/मन क तमाम रोशनदान
उन्मुक्त है- कोई आच्छादन नही है उन पर। साफ-सुथरा जीवन, साफ-
सुथरा मन, सब कुछ विवेक-क-रजोहरण से प्रमार्जित और सम्यक्त्व-की पूजणी
स निर्मल।

जो कहते है, उसे सौ टका जीते है, और जो किया हुआ है, मानिये, उसकी जड़ आचरण म पाताल तक है। बातचीत म कोई झुपलाहट या चचलता नही है। कोई सवाल कीजिय, अक्षुब्ध उत्तर लीजिये। निराकुलता का एक पूरा-का-पूरा दरिया लहर ले रहा है। चाग ओर अखूट वत्सलता की कादम्बिनी (मघघटा) घिरी है और मै उसकी शीतल छाव मे मन्त्रमुग्ध बैठा हू।

तय है कि मुझ लगभग पन्द्रह दिनो तक उनसे जैन धर्म/दर्शन/समाज क विभिन्न पहलुआ पर एक बहुपर्ती बातचीत करनी है और अपन प्रिय पाठका को उनके सड़सठ साला जीवन का अनुभावामृत पान कराना है। साधुमाग विशेषाक के सिलसिले म मै उनके साथ किस्ता मे चौबीस घट बितान की चित्तवृत्ति म हू।

१२ जुलाई/रविवार का पहली उपनिषद् (बैठक) हुई। मेर लिए यह एक बहद उपयागी अध्यात्म-सत्र था सत्सग/समागम का एक अद्वितीय अवसर। मर मित्र गजन्द्र सूर्या मर साथ हैं। उन्होंने मुझे नियमित लाने ले जान का जिम्मा लिया है। वे साधु की चादर की तरह निष्कलक और निर्मल मन क शख्स है। इन उपनिषदा म य सवत्र प्रतिपल/प्रतिपग मरे साथ रह है और उन्होंने दखा है कि मैने किस उत्कण्ठा से प्रश्न किये है और आचार्य श्री न किस विभारता से उनक उत्तर दिये हैं। यदि उन सार चर्चा-क्षणा का लिखन बैठू ता कम से-कम एक दा तीन सौ पृष्ठा की किताब तो बन ही जाएगी किन्तु तीर्थंकर एक विचार मासिक है जिसकी सीमाए है अत मुझ यह सब ८-१० पृष्ठा म ही समटना पड़ रहा है। काम मुश्किल है किन्तु करना ता है ही।

कई कठिनाइया सामने हैं। टेप-रिकॉर्डर काम म नहीं ले सकता और कोई आशुलिपिक साथ में नही है। यद्यपि आचार्य श्री के बोलने मे त्वरा नही है, वे रफ्त रफ्त बोलते है और मुझे मौका देते है कि मै उन्हे नोट लू, किन्तु मेरी भी सीमाए है अत कड़ी बीच बीच मे टूट रही है-जुड़ रही है और मै अपने काम मे जुटा हुआ हू। हाथ अविराम चल रहा है और आचार्यश्री अत्यन्त आश्वस्त स्वर मे मुझे मेरी जिज्ञासाओ के समाधान द रहे है।

कुल मिलाकर ये बैठके मन प्राण को ताजा किये हुए है और एक इस तरह की दीपमालिका मनोपटल पर सजोये हुए है कि कैसा भी अधेरा आय मुझे निराश होने की जरूरत नही होगी। जैन धर्म/दर्शन के ऐसे कितने पक्ष हो सकते है, जिनकी तुलना हम आधुनिक विज्ञान के विविध इलाको से कर सकते है-यह दखकर मै हैरान हू।

मै उनसे मुखातिब हू। लग रहा है मुझे कि यदि साधुमार्गी जैन सघ ने ऐसी कोई व्यवस्था नहीं की कि आचार्यश्री के भीतर खुले ज्ञान-निर्झर जन-जन तक पहुच तो यह एक ऐसी भूल होगी जिसे कभी नही सुधारा जा सकेगा, हम सब एक ऐसे अमृत कुण्ड से वचित रह जायेंगे जो आज के राह भटके आदमी को सही दिशा दे सकता है-उसके तन-मन को ठण्डक पहुचा सकता है।

जैनाचार्य नानालालजी आग्रही बिलकुल नही हैं। वे सहज है। उन्हे कदाच कभी ऐसा लगता है कि उनका पाव किसी भ्रम या त्रुटि पर है तो वे तुरन्त आत्मस्वीकृति या आत्मशोधन के लिए तैयार रहते है।

ऐसे कई मौके आये जब उन्होंने अपनी बात को बड़े आश्वस्त चित्त से रखा और दूसरा के विचारो को खूब धीरज से सुना। उनके सामने छोटा बड़ा कुछ होता नहीं है।

पर का 'नाना किसी की व्यर्थ की हाहा मे नही पड़ता जैसा कि आमतौर पर कुछ साधु सस्ती लोकप्रियता के लोभ मे वैसा करते देख जाते है। वे ना' कह सकते है एक बार, दो बार, किन्तु इसका मतलब यह नही है कि वे हा कभी कहते ही नहीं। सम्यक्त्व और सत्य के लिए उनके मन मे प्रतिपल हा है और मिथ्यात्व के लिए प्रतिपल 'ना । वे सारसी है, सात है निर्ग्रन्थ है।

उनकी गठरी में ग्रन्थ है, ग्रन्थिया नहीं है। मन को ग्रन्थिया स मुक्त करने के लिए उन्होंने 'समता दर्शन और 'समीक्षण-ध्यान जैसी आध्यात्मिक प्रक्रियाओ को आविष्कृत किया है। ये दोनो, भारतीय चिन्तन, विशेषत अध्यात्म को उनका बहुमूल्य योगदान है। वे सत्यान्वेषी है और चाहे जो/चाहे जब उनके पास आये उसे सत्य की खोज म प्रवृत्त करने म रुचि लेते है। चुनौतिया को पचाने म उन्हे आनन्द मिलता है।

सम्यक्त्व के-लिए-पराक्रम और सघर्ष नाना लालजी की एक विशिष्टता है। शाम के पाच बज कर पाच मिनिट हुए है। १२ जुलाई, रविवार का दिन है। इतवारिया धर्मशाला का आचार्यश्री का पड़ाव कक्ष है। मै उनके स्वास्थ्य के बारे मे पूछताछ कर रहा हू। वे कह रहे है अत्यन्त स्निग्ध टोन मे 'डाक्टर साहब' (उनकी उस वात्सल्यमयी टोन को शब्दाकित करना सभव नहीं है)।

मैंने आसन खीच लिया है और मै उनके बिलकुल नजदीक हो गया हू। मन मे नाना जिज्ञासाए है। कई साधु-सतो से मिला हू, कई आचार्यों से भेट हुई है, किन्तु यह अवधूत उन सब से भिन्न है-जुदा है। अपनी जिद पर अड़ा है (इन्हे जिद कहा जाए या शुद्धता, कोई फैसला नहीं कर पा रहा हू) किन्तु जिस रेखा पर ये खड़े है वह सुचिन्तित है, जल्दबाजी म निर्णीत नहीं है। वे ध्वनि विस्तारक या टेप-रिकॉर्डर का उपयोग नहीं करते, क्यों नही करते ? इसके उनके अपने तर्क है। उनका मानना है कि इससे वायुकायिक जीवो की विराधना होती है जैनाचार से इनकी कोई सगति नही है।

दूसरी और उनकी यह दलील भी है कि इनका न करने से अपरिग्रह का अकुश लगातार बना रहता है। कीर्ति की मूर्च्छा कम होती है और श्रोता सावधानी तथा मनोयोग से सुनता है। यन्त्रीकरण की जटिलताओ से भी बचा जा सकता है। यन्त्रो का कोई अन्त नहीं है। आज एक को काम म लीजिये कल दूसरा अनिवार्य हो उठेगा परसो तीसरा दरवाजा खटखटायेगा और आपकी साधना

भग्न, या भुग्न हो जाएगी। आप कुछ कर ही नही पायेंग इसलिए यदि परेशानियो को कम करना हो तो मशीनो के दैत्य से स्वय को बचाना चाहिये। मुझे लगा कि खादी पहिनने के पीछे भी कदाचित् यही सिलसिला है-जवाहरलालजी के मन मे भी यही रहा होगा। मै पूछ रहा हू कि आज स बावन साल पहले जब आपने दीक्षा ग्रहण की थी तब के और आज के श्रावक मे क्या फर्क आ गया है ? बोले-बदलाव हुआ है। वात्सल्य घटा है। पहले गुप्तदान द्वारा बिना कोई अहसान जताये एक श्रावक दूसरे श्रावक की मदद करने मे गौरव समझता था, अब वैसा नही है किंचित् है, किन्तु वह बात/वह रगत नही है। शिथिलताओ से तो हर जमाने मे जूझना पड़ा है। सघर्ष आज भी जारी है-जारी रखना चाहिये इसे ताकि प्रमाद से बचा जा सके और धर्म की मौलिकताओ को बचाया जा सके। साधुओ और श्रावको की भूमिकाए वस्तुत अलग अलग नही है। दोनो पूरक है। स्वाध्याय सेवा और शुद्धाचरण मे हम अपने युग की अनेक समस्याओ का समाधान तलाश सकते है।

१३ जुलाई/सोमवार की उपनिषद् का तेवर/जायका बिल्कुल जुदा था। सिलसिला वही था। प्यास और तड़फ की किस्म भी वही थी, किन्तु रचनात्मक जिज्ञासा जगानी चाहिये। लोग दुनियावी ज्ञान की ओर दौड़ रहे है किन्तु इस भागमभाग में उनका सबसे बड़ा नुकसान हो रहा है सम्यक्त्व का मुट्ठी से खिसकना। बोले-

समता दर्शन और समीक्षण-ध्यान दो ऐसे हथियार है जिनसे हम आज के युग की विषमताओ के महाभारत को जीत सकते है। आचार्य जवाहरलालजी महाराज के कारण स्वाध्याय की वृत्ति लौटी है-पुनरुज्जीवित हुइ है।

स्वाध्याय को हम अपने जीवन का अभिन्न अग फिर बनाना चाहिय और ऐसे प्रयत्न करने चाहिये कि सामाजिक रागद्वेष घटे और साधु तथा श्रावक एक दूसरे के नजदीक आये। वस्तुत उन्हे एक-दूसरे की शोधक इकाइयो के रूप मे विकसित होना चाहिये। समता-दर्शन (द पृ १२५-१३३) के विविध सोपानो की चर्चा करते हुए उन्होंने उसके स्वरूप पर व्यापक प्रकाश डाला।

१४ जुलाई/मगलवार को समता-दर्शन पर चर्चा हुई। बोले- हमे समता-दर्शन क इक्कीस सूत्रो का पालन करना चाहिय। मैंने अनुभव किया है कि सामान्य बातो में से ही विशिष्टता आविर्भूत होती है। इन सूत्रो मे से गुजरते हुए हम एक तरह की सामायिक या समाधि मे स गुजरते है। श्रावक को हक है कि वह किसी भी शिथिलता को चुनौती दे, किन्तु द उसे दूर करने के लिए-किसी को नीचा दिखाने के लिए नही। चुनौती का स्वरूप रचनात्मक हो, उपगूहनात्मक हो, और सद्भावनापरक हो। श्रावक की हैसियत इतनी बड़ी है कि यदि वह आगमोक्त कसौटियो का जानकार है तो आचार्य तक को चुनौती दे सकता है। इन/एसी परम पावन चुनौतियो के कारण ही साधुमार्ग निष्कलक बना हुआ है। हम एक-दूसरे को गलत नही समझते बल्कि एक-दूसरे को परस्पर उपकारक इकाई मानते है। दृष्टि एसी ही होनी चाहिये-विकास करना चाहिये इस तरह के उदार और सहिष्णु व्यक्तित्व का।

जब प्रसगवश प्राकृत भाषा और साहित्य की बात चली तो बोले- उनका भरपूर प्रचार होना चाहिय। प्राकृत सरल है। उसका व्याकरण और वाक्य-विन्यास सरल है। उसे कुछ ही दिनो में सीखा जा सकता है। सघ इसके लिए काम कर रहा है। वास्तव म जैनधर्म को यदि जानना है उसकी तमाम गहराइयो म तो प्राकृत सीखे बिना कोई रास्ता नही है।

जब साधुमार्ग क साधुओ और श्रावको क परस्पर सबधो की चर्चा चली तो बोले-साधुमार्ग बहुत पुराना है। जितना पुराना णमोकार महामत्र है उतना पुराना है साधुमार्ग। साधुमार्ग म गुण और कर्म को महत्त्व दिया गया है। उसमे गुण-पूजा है व्यक्ति-पूजा नहीं है। इसी तरह श्रावक हो या साधु कर्म स ही उसे जाना जा सकता है। भगवान् महावीर का यह वचन कि-

कर्म से ही कोई ब्राह्मण होता है और कर्म स ही शूद्र-जन्म से कोई कुछ नहीं होता। इसी तरह कर्म स ही

कई कठिनाइया सामने हैं। टेप-रिकॉर्डर काम मे नही ले सकता और कोई आशुलिपिक साथ में नही है। यद्यपि आचार्य श्री के बोलने म त्वरा नही है, वे रफ्त रफ्त बोलते है और मुये मौका देते है कि मै उन्हे नोट लू, किन्तु मेरी भी सीमाए है अत कड़ी बीच-बीच मे टूट रही है-जुड़ रही है और मै अपने काम म जुटा हुआ हू। हाथ अविराम चल रहा है और आचार्यश्री अत्यन्त आश्वस्त स्वर मे मुझे मेरी जिज्ञासाओ के समाधान दे रहे है।

कुल मिलाकर ये बैठके मन प्राण को ताजा किये हुए है और एक इस तरह की दीपमालिका मनोपटल पर सजोये हुए है कि कैसा भी अधेरा आये मुझे निराश होने की जरूरत नही हागी। जैन धर्म/दर्शन के ऐसे कितने पक्ष हा सकते है, जिनकी तुलना हम आधुनिक विज्ञान के विविध इलाको से कर सकते है यह देखकर मै हैरान हू।

मै उनसे मुखातिब हू। लग रहा है मुये कि यदि साधुमार्गी जैन सघ न ऐसी कोई व्यवस्था नही की कि आचार्यश्री के भीतर खुले ज्ञान-निर्झर जन जन तक पहुचे तो यह एक ऐसी भूल होगी जिसे कभी नहीं सुधारा जा सकेगा, हम सब एक ऐसे अमृत-कुण्ड स वचित रह जायेंगे जो आज के राह-भटके आदमी को सही दिशा दे सकता है उसके तन-मन को ठण्डक पहुचा सकता है।

जैनाचार्य नानालालजी आग्रही बिलकुल नही हैं। वे सहज है। उन्हे कदाच कभी ऐसा लगता है कि उनका पाव किसी भ्रम या त्रुटि पर है तो वे तुरन्त आतमस्वीकृति या आतमशाधन क लिए तैयार रहते है।

ऐसे कई मौके आय जब उन्होंने अपनी बात को बड़ आश्वस्त चित्त स रखा और दूसरा के विचारो का खूब धीरज से सुना। उनके सामन छोटा-बड़ा कुछ होता नही है।

घर का 'नाना किसी की व्यर्थ की हाहा मे नही पड़ता जैसा कि आमतौर पर कुछ साधु सस्ती लाकप्रियता-के लोभ मे वैसा करते देख जाते है। वे ना कह सकते है एक बार, दो बार किन्तु इसका मतलब यह नही है कि वे हा कभी कहत ही नहीं। सम्यक्त्व और सत्य क लिए उनके मन म प्रतिक्षण हा है और मिथ्यात्व के लिए प्रतिपल ना। वे सारसी है सन्त है निर्ग्रन्थ है।

उनकी गठरी में ग्रन्थ है, ग्रन्थिया नही है। मन को ग्रन्थियो स मुक्त करन के लिए उन्होंने 'समता-दर्शन और 'समीक्षण ध्यान जैसी आध्यात्मिक प्रक्रियाओ का आविष्कृत किया है। ये दोनो, भारतीय चिन्तन, विशेषत अध्यात्म को उनका बहुमूल्य योगदान है। वे सत्यान्वेषी है और चाहे जो/चाहे जब उनके पास आये उसे सत्य की खोज मे प्रवृत्त करने म रुचि लेते है। चुनौतियो को झलन मे उन्हे आनन्द मिलता है।

सम्यक्त्व के लिए पराक्रम और सघर्ष नाना लालजी की एक विशिष्टता है। शाम के पाच बज कर पाच मिनिट हुए है। १२ जुलाई, रविवार का दिन है। इतवारिया धर्मशाला का आचार्यश्री का पड़ाव कक्ष है। मै उनके स्वास्थ्य के बारे मे पूछताछ कर रहा हू। व कह रह है अत्यन्त स्निग्ध टोन मे-'डाक्टर साहब (उनकी उस वात्सल्यमयी टोन को शब्दाकित करना सभव नहीं है)।

'मैंने आसन खींच लिया है और मै उनके बिलकुल नजदीक हो गया हू। मन मे नाना जिज्ञासाए है। कई साधु-सता से मिला हू, कई आचार्यों से भेट हुई है, किन्तु यह अवधूत उन सब से भिन्न है-जुदा है। अपनी जिदो पर अड़ा है (इन्हे जिद कहा जाए या शुद्धता कोई फैसला नही कर पा रहा हू), किन्तु जिस रेखा पर ये खड़े है वह सुचिन्तित है, जल्दबाजी मे निर्णीत नही है। वे ध्वनि विस्तारक या टेप रिकॉर्डर का उपयोग नहीं करते क्या नही करते ? इसके उनके अपने तर्क है। उनका मानना है कि इससे वायुकायिक जीवो की विराधना होती है जैनाचार से इनकी कोई सगति नही है।

दूसरी आर उनकी यह दलील भी है कि एसा न करने स अपरिग्रह का अकुश लगातार बना रहता है। कीर्ति की मूर्च्छा कम होती है और श्रोता सावधानी तथा मनोयोग से सुनता है। यन्त्रीकरण की जटिलताओ से भी बचा जा सकता है। यन्त्रा का कोई अन्त नही है। आज एक को काम म लीजिये कल दूसरा अनिवार्य हो उठेगा परसा तीसरा दरवाजा खटखटायगा और आदमी स्वना

भग्न, या भुग्न हो जाएगी। आप कुछ कर ही नहीं पायेंगे, इसलिए यदि परेशानियों को कम करना हो तो मशीनों-के दैत्य से स्वयं को बचाना चाहिये। मुझे लगा कि खादी पहिनने के पीछे भी कदाचित् यही सिलसिला है-जवाहरलालजी के मन मे भी यही रहा होगा। मै पूछ रहा हू कि आज से बावन साल पहले जब आपने दीक्षा ग्रहण की थी तब के और आज के श्रावक मे क्या फर्क आ गया है? बोले-बदलाव हुआ है। वात्सल्य घटा है। पहले गुप्तदान द्वारा बिना कोई अहसान जताये एक श्रावक दूसरे श्रावक की मदद करने मे गौरव समझता था, अब वैसा नहीं है, किंचित् है किन्तु वह बात/वह रंगत नहीं है। शिथिलताओं से तो हर जमाने मे जूझना पड़ा है। संघर्ष आज भी जारी है-जारी रखना चाहिये इसे ताकि प्रमाद से बचा जा सके और धर्म की मौलिकताओं को बचाया जा सके। साधुओं और श्रावकों की भूमिकाएं वस्तुत अलग अलग नहीं है। दोनो पूरक है। स्वाध्याय, सेवा और शुद्धाचरण मे हम अपने युग की अनेक समस्याओं का समाधान तलाश सकते है।

१३ जुलाई/सोमवार की उपनिषद् का तेवर/जायका बिल्कुल जुदा था। सिलसिला वही था। प्यास और तड़फ की किस्म भी वही थी, किन्तु रचनात्मक जिज्ञासा जगानी चाहिये। लोग दुनियावी ज्ञान की ओर दौड़ रहे है किन्तु इस भागमभाग में उनका सबसे बड़ा नुकसान हो रहा है सम्यक्त्व का मुट्ठी से खिसकना। बोले-

समता-दर्शन और समीक्षण ध्यान दो ऐसे हथियार है जिनसे हम आज के युग की विषमताओं के महाभारत को जीत सकते है। आचार्य जवाहरलालजी महाराज के कारण स्वाध्याय की वृत्ति लौटी है-पुनरुज्जीवित हुई है।

स्वाध्याय को हम अपने जीवन का अभिन्न अंग फिर बनाना चाहिये और ऐसे प्रयत्न करने चाहिये कि सामाजिक रागद्वेष घटे और साधु तथा श्रावक एक दूसरे के नजदीक आवे। वस्तुत उन्हे एक दूसरे की शोधक इकाइयों के रूप मे विकसित होना चाहिये। समता दर्शन (द पृ १२५-१३३) के विविध सोपानों की चर्चा करते हुए उन्होंने उसके स्वरूप पर व्यापक प्रकाश डाला।

१४ जुलाई/मंगलवार को समता-दर्शन पर चर्चा हुई। बोले- हमे समता-दर्शन के इक्कीस सूत्रों का पालन करना चाहिये। मैंने अनुभव किया है कि सामान्य बातों में से ही विशिष्टता आविर्भूत होती है। इन सूत्रों मे से गुजरते हुए हम एक तरह की सामायिक या समाधि मे से गुजरते है। श्रावक को हक है कि वह किसी भी शिथिलता को चुनौती दे, किन्तु दे उसे दूर करने के लिए-किसी को नीचा दिखाने के लिए नहीं। चुनौती का स्वरूप रचनात्मक हो, उपगूहनात्मक हो, और सद्भावनापरक हो। श्रावक की हैसियत इतनी बड़ी है कि यदि वह आगमोक्त कसौटियों का जानकार है तो आचार्य तक को चुनौती दे सकता है। इन/ऐसी परम पावन चुनौतियों के कारण ही साधुमार्ग निष्कलंक बना हुआ है। हम एक-दूसरे को गलत नहीं समझते, बल्कि एक-दूसरे को परस्पर उपकारक इकाई मानते है। दृष्टि ऐसी ही होनी चाहिये-विकास करना चाहिये इस तरह के उदार और सहिष्णु व्यक्तित्व का।

जब प्रसंगवश प्राकृत भाषा और साहित्य की बात चली तो बोले- उनका भरपूर प्रचार होना चाहिये। प्राकृत सरल है। उसका व्याकरण और वाक्य-विन्यास सरल है। उसे कुछ ही दिनो में सीखा जा सकता है। संघ इसके लिए काम कर रहा है। वास्तव मे जैनधर्म को यदि जानना है उसकी तमाम गहराइयो मे तो प्राकृत सीखे बिना कोई रास्ता नहीं है।

जब साधुमार्ग के साधुओं और श्रावकों के परस्पर संबंधों की चर्चा चली तो बोले-साधुमार्ग बहुत पुराना है। जितना पुराना णमोकार महामंत्र है, उतना पुराना है साधुमार्ग। साधुमार्ग मे गुण और कर्म को महत्त्व दिया गया है। उसमे गुण पूजा है व्यक्ति-पूजा नहीं है। इसी तरह श्रावक हो या साधु कर्म मे ही उसे जाना जा सकता है। भगवान् महावीर का यह कथन कि-

कर्म से ही कोई ब्राह्मण होता है और कर्म से ही शूद्र जन्म से कोई कुछ नहीं होता। इसी तरह कर्म से ही

श्रमणोपासक की पहिचान बनती है, वह जिस वश म जन्मता है उसस उसकी पहिचान नही बनती।

१५ जुलाई/बुधवार को धर्म और विज्ञान पर चर्चा हुई, बोले-

शास्त्र की दृष्टि मे जो विज्ञानवान् है वह आत्मा है और जो आत्मा है वह विज्ञानवान् है। विज्ञान वस्तुत आत्मा का मूल गुण है। कही कोई छलावा नहीं है, सब कुछ अनेकान्तात्मक है। हमारा लक्ष्य आत्मा का शुद्ध स्वरूप है तदनुसार ही हमारी सपूर्ण साधना है। हम समझना चाहिये कि धर्म और विज्ञान परस्पर पूरक है, वे एक-दूसर से सघर्षरत नहीं है। असल म जब हम खोजना शुरू करेंगे, तभी कुछ पायेंगे। जैनधर्म विज्ञान का अखूट खजाना है। हम अभागे है कि हमसे बारबार इसकी कुजी गुम जाती है। हमे इस खजाने का न सिर्फ खुद उपयोग करना चाहिय वरन् सारी दुनिया के लिए उसे खोल देना चाहिय।

१६ जुलाई/गुरुवार को तीर्थंकरो के अवदान पर विचार हुआ। मैंने कहा-तीर्थंकर अपने युग के सर्वश्रेष्ठ परमाणुविद् थे। उन्होंने इसे अपनी साधना मे दिगम्बर देख लिया था। सवर-निर्जरा की प्रक्रियाए बिना परमाणु-दर्शन के तीव्रतर नही हो सकती। बोले-तीर्थंकरो की यह विशेषता है कि जिन्होंने अपने पूर्व तीर्थंकरो का न कभी पढा और न कभी सुना बल्कि सृष्टि के निगूढ रहस्यो को तप साधना स जाना तथा जानने के लिए स्वय के जीवन को प्रयोगशाला का रूप दिया।

पदार्थ की जो परिभाषा आज विज्ञान दे रहा है वह तीर्थंकर सदियो पहले दे चुके है। 'उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सत्' और 'गुणपर्ययवद्द्रव्य' क रहस्य को समझ लेने पर पदार्थ की गहराइयो म उतरने में कोई कठिनाइ नही है। आज का वैज्ञानिक यन्त्रो और औजारो में उलझ गया है, आत्मतत्त्व उसकी मुट्ठी से खिसक गया है। हमारी पारिभाषिक शब्दावली का यदि एक अनासक्त और सतुलित विश्लेषण किया जाए तो हम पायेंगे कि धर्म आज भी विज्ञान स दो कदम आगे है। विज्ञान उन्ही दार्शनिक तथ्यो की पुष्टि कर रहा है, जिन्हे आज से सदियो पहले धर्म ने स्थापित किया था। सापेक्षता शुद्ध ज्ञान की माता है। वे अल्बर्ट आइन्स्टाइन का नाम लेते हुए बोले- विज्ञान ने इसे विलम्ब स खोजा और अपनाया किन्तु जबसे भी उसने इसे अपनाया है उसकी जययात्रा अधिक सफल सार्थक सिद्ध हुई है। पता नही अब क्यो हम इस स्वस्थ चिन्तन पद्धति को विस्मृत करना चाहते है? ध्यान रखिये जैनाचार्यों ने भौतिकी जैविकी, गणित जैसी जटिल/सूक्ष्म विद्याओ पर भी काफी गहरा विमर्श किया है।

छह दिन के अन्तराल के बाद आज फिर गजेन्द्र सूर्या आचार्यश्री के पड़ाव पर ले गये है। २२ जुलाई/बुधवार है। पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर चर्चा कर रहा हू। पुनर्जन्म एक जटिल समस्या है। कुछ पुनर्जन्म को मानते है, कुछ नही मानते, किन्तु जो आत्मा का अस्तित्व मानते है उन्हे तो पुनर्जन्म मानना ही होता है। मैंने पूछा कि इस सबध म जैनधर्म की क्या धारणा है? बोले पुनर्जन्म का सीधा सादा अर्थ है एक शरीर को छोड़ कर अगले शरीर म प्रवेश। जैनधर्म का उत्पादव्ययध्रौव्य सिद्धान्त इससे जुड़ा हुआ है।

शरीर अनित्य है, आत्मा नित्य पर्याय अनित्य है, द्रव्य नित्य है। सवेदना का विश्लेषण करने पर भी पुनर्जन्म को जाना जा सकता है। पूर्वस्मृति में भी इसकी पुष्टि होती है। शास्त्रो म जाति स्मरण की अनेक घटनाओ का विवरण आया है, वर्तमान में भी इस तरह की सैकड़ो घटनाए देश विदेश में हुई है/होती रहती है। परामनोविज्ञान ने भी पुनर्जन्म के समर्थन में तथ्यो का आकलन किया है। असल में सफलता की असली कुजी तत्त्वश्रद्धान है-

उसके मिलने पर पुनर्जन्म स्वत सिद्ध दिखाई देता है। ध्यान की प्रक्रिया म से होकर भी पुनर्जन्म की सत्यता सिद्ध होती है।

चूकि सूरज डूबने को था अत पटाक्षेप हुआ और चर्चा को दूसरे दिन के लिए रोक लिया गया।

२३ जुलाई/गुरुवार/शाम लगभग डढ घंटे तक कर्मसिद्धान्त पर चर्चा हुई। चर्चा कुछ गहरी और

तकनीकी थी। आचार्य बोले- डॉक्टर साहब, सपूर्ण जैनदर्शन कार्य-कारण पर टिका हुआ है। यहा किसी तर्कहीन तथ्य को स्वीकार नही किया गया है। कर्मसिद्धान्त की आधार-भूमि कार्य कारण नियम (लॉ ऑफ कॉजेशन) है। इससे भी पुनर्जन्म का सिद्धान्त पुष्ट होता है। जैन कर्मसिद्धान्त जैसा बोना, वैसा काटना तक ही सीमित नही है-वह इससे बहुत आगे और गहर गया है।

२४ जुलाई/शुक्रवार को साधु और साधुमार्ग' टॉपिक छिड़ गया। आचार्यश्री बोले-मै 'साधु शब्द को विशेषण-रूप में ही लेता हू। साधु से साधुत्व बनता है। साधुत्व अच्छाइयो सुकृतो और अदर्शों का महायोग है। वह श्रमणोपासक के लिए मानक है, आदर्श है।

मै द्रव्यसाधुत्व क पक्ष मे तो हू, किन्तु उसे भावसाधुता का साधन मात्र मानता हू। द्रव्यसाधुत्व साध्य नही है साधन है, साध्य भावसाधुत्व ही है। साधना म जब तक अविकलता नही बनती, कुछ घटित नही होता।

इसके लिए आलाचना प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान जरूरी हैं। आलोचना वर्तमान का प्रमार्जन है, प्रतिक्रमण अतीत का धारावाहिक/सावधान अवलोकन और प्रत्याख्यान अनागत मे दृढतापूर्वक कदम उठाते जाने का त्याग-सकल्प है। बुनियादी लक्ष्य समत्व है। जब तक हम विषमताओ और ग्रन्थियो से मुक्त नही होते, सत्य के नजदीक नहीं पहुच सकते। समत्व तक पहुचने या सम मे उतरने का माध्यम है द्वन्द्वमुक्ति। जैसे-जैसे हम समत्व की गहराइयो म गोते लगाते है, वैसे-वैसे उत्तरोत्तर हमारी मूर्च्छा घटती जाती है। साधु वह है जो समता से साक्षात्कार करे। समत्व और सम्यक्त्व एक ही है। दोनो एक-दूसरे मे गड्डमगड्ड है, एक को पाने मे दूसरे की प्राप्ति निश्चित है।

शिथिलाचार और क्रियोद्धार का सक्षिप्त इतिहास बताते हुए उन्होंने कहा-साधुमार्ग न शिथिलाचार का कड़ा मुकाबला किया है यही कारण है कि वह आज भी अक्षुण्ण बना हुआ है और जैनधर्म की मौलिकताओ की अचूक रक्षा कर रहा है।

२५ जुलाई/शनिवार को साधुमार्ग की विशेषताओ पर प्रकाश डालत हुए उन्होंने कहा-मै तो अपने साधु साध्वियो को भाई-बहिन मानता हू। मर यहा छोटे-बड़े का कोई भेद नही है। एक सस्मरण सुनाते हुए बोले- एक बार जब मै सीढ़िया चढ़ रहा था एक साधु ने जो मुझ पहिचान नही पाया पूछा- कौन है ?' मैंन कहा- नाना'। 'आचाय मैंने नहीं कहा, नाना' कहा। आचार्यत्व परिग्रह है। मै इसे सहज लेता हू, इसे अहकार की तरह पर्त-दर-पर्त जमने नही देंता। साधुमार्गी सघ मे कोई छोटा-बड़ा नही है। सब समान हैं।

साधुमार्ग की विशेषताओ को सक्षेप मे बताते हुए उन्होंने कहा- साधुमार्ग निष्कण्टक नही है, वह दीखता सरल है, है कठिन। मर्यादा-पालन, अनुशासन आत्मानुसधान, नि शक/स्वतत्र चिन्तन, अनवरत स्वाध्याय, सत्य-की-खोज, शिथिलाचार का विरोध और उससे बचाव, सम्यक्त्व म निश्चलता, सादगी, सारल्य, निष्कपटता प्रजातान्त्रिक जीवन-पद्धति राष्ट्रीय दृष्टि, लोकहित-के लिए कटिबद्धता, रचनात्मक परिवर्तन के लिए अनुकूलता उदारता विनय, तितिक्षा, सगठन समन्वय, समत्व, विश्वमैत्री इत्यादि साधुमार्ग के मूल आधार है।

समतादर्शन उसकी खास बुनियाद है। व्यक्ति और समूह मे युगयुगा से पड़ी ग्रन्थिया को खोलना इसकी आरम्भिक प्रक्रिया है। खोलना और गलाना, गलाना और निकाल फेकना इस प्रक्रिया के प्रमुख चरण है।

२६ जुलाई/रविवार और २८ जुलाई/मगलवार को अधिक चर्चाए नही हुईं। किन्तु एक महत्त्वपूर्ण वाक्य आज/इस क्षण भी मन पर टिका हुआ है-विकास की ओर हमार ध्यान है। धर्म मे वय की अपेक्षा गुण का अधिक महत्त्व दिया गया है।

फिर एक लम्बा कालान्तर (गैप) आ गया। विशेषाक की तैयारी चल रही थी। प्रेस का मैटर (मुद्रण-सामग्री) देना था, अत मैंने पन्द्रह दिना स कुछ अधिक की छुट्टी ले ली और फिर ११ अगस्त/बुधवार का उनसे मिला। इस बार कषाय पर चर्चा चली। समीक्षण ध्यान

मे इन पर जुदा-जुदा विचार होता है ताकि व्यक्ति के भीतर जो सघन ग्रन्थिया अवस्थित है, उन्हे खोला जा सके। बोले-

कषाय बधन मे डालने वाली दुष्प्रवृत्तिया है। सरल शब्दो में, आत्मा के भीतरी कलुष परिणाम का नाम कषाय है। आत्मा के स्वरूप का घात करने के कारण कषाय सबसे कड़ी हिंसा है। मिथ्यात्व सबमें बड़ी कषाय है। आसक्ति की तीव्रताओ की दृष्टि मे कषाय के चार भेद है- अनन्तानुबधी अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान, सज्वलन। क्रोध, मान, माया, लोभ से गुणा करने पर भेद सोलह हो जाते है। जैसे ही चर्चा ने शास्त्रीय मोड़ लिया मैंने कहा-आप तो कषाय का अर्थ बताइये और बताइये कि यह अहितकर क्यो है ? बोले क्रोध आदि कलुषताए कषाय है। चूकि ये आत्मा के स्वभाव को 'कष'-ती है अर्थात् उसकी हिंसा करती है इसलिए इन्हे कषाय कहते है। इसी सदर्भ में प्रदेश प्रकृति स्थिति और अनुभाग बधो पर भी चर्चा हुई। बोले सब कुछ वैज्ञानिक है। जैनदर्शन में एक भी शब्द फिजूल नही है। वहा सब कुछ सार्थक और प्रासगिक है। निर्मल अन्तर्दृष्टि चाहिये, उसके बिना कुछ नही होगा। मेरे द्वारा पुन प्रस्तुत समीक्षण-ध्यान व्यक्ति और समाज दोनो के लिए उपयोगी है। जब क्रोध, मान, माया और लोभ का समीक्षण करते है, तब मन की ग्रन्थिया आपोआप खुलने लगती है। चित्त निर्ग्रन्थ होने लगता है। रागद्वेष गलने लगते है। राग-द्वेष इस तरह कुछ अनन्य है कि राग मे द्वेष और द्वेष मे-राग गर्भित हुआ है। किसी एक को छोड़ने पर दूसरा अपने-आप विदा हो लेता है।

२० अगस्त/गुरुवार को आचार्यश्री ने समीक्षण ध्यान को ब्यौरेवार समझाया।

२१ अगस्त/शुक्रवार को तप पर चर्चा हुई। बोले- जैन तप भेद-विज्ञानमूलक है। यदि वहा यह दृष्टि नही है तो तप कितना ही क्या न हो व्यर्थ और निष्फल है। तप तप है, उसका विज्ञापन नही किया जाता। तप सम्यक्त्व के लिए की गयी उत्कट साधना का नाम है। तप के प्रचार पर, उससे सबधित जुलूसो और शोभायात्रा पर बराबर अकुश रखता हू। यह साधु ही क्या, जो सत्य कहने मे दिचक अनुभव करता हो। मै तो श्रावक का भी उपकार मानता हू। वे मुझे सदन मे सावधान रखते है। जब कोई श्रावक मुझे मेरी त्रुटि बताता है, तब मै उस त्रुटि की आलोचना करता हू, उस पर ध्यान देता हू और बताने वाले के प्रति कृतज्ञता अनुभव करता हू। दोष जानने चाहिये ताकि उन्हे यथासमय दूर किया जा सके। बोले दवाई तो हम लेते है किन्तु बाद मे प्रायश्चित्त अवश्य करते है। साधुमार्गी सघ मे साधु साध्वी मे कोई भेदभाव नही है। सयम के धरातल पर सब बराबर है। मैं उन्हे गुरु-चेले की नजर से कभी नही देखता बल्कि भाई बहिन मानता हू। मै अपने कार्य मे लगा रहता हू।

मुझे यदि कोई योग्य साधु मिल जाए तो मै पूरी तरह से आत्मान्वेषण में लग सकता हू। आत्मशुद्धि ही साधु का सर्वस्व है। यही उसका मूलधन है। यह कम या नष्ट होता है तो फिर कुछ बच नही रहता।

वैसे ही, क्रोध पर अपने विचार प्रकट करते हुए वे बोले क्रोध एक किस्म की विवेक शून्यता है। मेरे पिता मे क्रोध अधिक था, मा मे बहुत कम था। क्रोध का मूल कारण अज्ञान या गलतफहमी है। क्रोध खतरा रोग है, इससे बचना चाहिए। मौन और क्षमा इसके मुख्य उपाय है।

ईश्वर के स्वरूप पर चर्चा चली तो बोले-ईश्वर क्या है ? दुनिया के सारे प्रकाश यदि जोड़ लिए जाए तो जो जोड़ बनेगा उसका नाम ईश्वर है। ईश्वर प्रकाश का कैवल्य है। ज्ञान और प्रकाश पर्याय है। दोनो का अलग अस्तित्व नही है।

खादी की बात चली तो बोले आचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज खादी धारण करते थे। आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज ने उसे सघ के लिए अनिवार्य बनाया। खादी की पृष्ठभूमि पर अहिंसा और राष्ट्रधर्म दोनो है पावनता भी है। मै/हमारे तमाम साधु साध्वी खादी का ही उपयोग करते है। यह त्याग का प्रतीक भी है।

-सम्पादक-तीर्थंकर इन्दौर

❑ विनोद जैन

साक्षात्कार

बीसवी शताब्दी के महापुरुष, जैन धर्म के महासाधक साधुमार्गी जैन सघ के यशस्वी अष्टम आचाय श्री नानालालजी म सा - आज हमारे बीच मौजूद नही है, लेकिन उनके श्रद्धावान असख्य अनुयायियों के पास जमा है, सुरक्षित है, सग्रहित है- उनके स्थिर अनुशासित धवल आचरण की अनन्त स्मृतिया, उनक पावन सानिध्य की अनमोल घड़िया। चिरकाल तक सजोय रखगे उनके एक निष्ठ श्रावक। महापुरुषो के साथ बिताए क्षण मूल्यवान स्मृतिया हैं, अनमोल धरोहर हैं, जो बार-बार उनके विराट यशस्वी व्यक्तित्व को मन-मस्तिष्क म प्रतिबिंबित करती हैं। आचार्य श्री नानेश के प्रति अटूट निष्ठाभाव रखने वाले के स्मृति कोप मे जमा सुनहरे पल, यादे उनसे बिछुड़ने की घटना पर भ्रम का पर्दा डालती हैं कि सदी के महापुरुष आराध्य देव आचार्य देव श्री नानेश इस ससार में हमारे बीच मौजूद है।

लोक मगल के लिए सपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले आचार्य श्री नानेश से समाचार पत्रो क लिए चर्चा करने का जब भी अवसर मिला, सामयिक विषयबद्ध प्रश्नो के साथ पहुच जाता था। मुझे कभी निराशा नही हुई लक्ष्य मे असफल नही हुआ। हर बार हर अवसर पर एव स्थान पर उनसे खुल कर बात होती थी, लबी चर्चाए होती थीं। हमेशा उनकी विचार शैली मे उन्ही के द्वारा सृजित समता दर्शन का झरना झरता था, तर्कों के समाधान म समता का पुट रहता था। प्रस्तुत है, आचार्य श्री नानेश से लिए गए साक्षात्कारो क प्रमुख अश-

विनोद- वर्तमान युग मे धर्म आपसी विवादो क कारण अभिशाप बनता जा रहा है। तार्किक युग म क्या धर्म को वरदान साबित किया जा सकता है?

आचार्य श्री- धर्म का वास्तविक रूप नही समझने के कारण धर्म विडबना का विषय बना हुआ है। धर्म का सही स्वरूप समझने के साथ ईमानदारी पूर्वक प्राथमिकता से जीवन मे स्थान दे दिया जावे तो जन कल्याण के लिए धर्म वरदान साबित हो सकता है।

विनोद- भगवान महावीर के अनुयायी जैन क्या सैद्धातिक मतभेद भुलाकर एकमत नही हो सकते ?

आचार्य श्री- भगवान महावीर के सभी अनुयायी समता सिद्धात के रगमच पर आरूढ हो जाए तो जो मतभेद मनोभेद चलता है, वह समाप्त हो सकता है और इसी आधार पर व्यक्ति, परिवार समाज राष्ट्र और विश्व विषमता समाहित करने मे सक्षम बन सकता है।

विनोद- पूर्व जन्म की घटनाओ के विषय म आपका मत क्या है ?

आचार्य श्री- वैज्ञानिको द्वारा प्रस्तुत तक जब तक सामने नही आजाते, तब तक इस विषय म मतव्य प्रकट नही किया जा सकता है। इतना अवश्य है कि पूर्व जन्म की मान्यता युक्ति, तर्क, अनुभूति क धरातल पर सही साबित होती है।

विनोद क्या साधुओ को अपनी आत्मा को कष्ट देना जरूरी है ?

आचार्य श्री- आत्मा का कष्ट व्यक्ति की मान्यता पर निर्भर है। मजदूर दिनरात श्रम करने पर भी कष्टानुभूति नही करता, वह सिर्फ रोजी रोटी का यत्न करता है। आत्मसाधक आत्मा की स्वच्छता प्राप्त करने साधना

मे इन पर जुदा-जुदा विचार होता है ताकि व्यक्ति के भीतर जा सघन ग्रन्थिया अवस्थित है, उन्हे खोला जा सक। बोले-

कषाय बन्धन मे डालने वाली दुष्प्रवृत्तिया है। सरल शब्दो में, आत्मा के भीतरी कलुष परिणाम का नाम कषाय है। आत्मा के स्वरूप का घात करने के कारण कषाय सबमे कड़ी हिंसा है। मिथ्यात्व सबमें बड़ी कषाय है। आसक्ति की तीव्रताओ की दृष्टि से कषाय के चार भद है- अनन्तानुबधी, अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान सज्वलन। क्रोध, मान, माया, लोभ स गुणा करने पर भद सोलह हो जाते है। जैसे ही चर्चा ने शास्त्रीय मोड़ लिया मैंन कहा आप तो कषाय का अर्थ बताइये और बताइये कि यह अहितकर क्या है ? बोले क्रोध आदि कलुषताए कषाय है। चूकि ये आत्मा के स्वभाव को 'कष'-ती है अर्थात् उसकी हिंसा करती है इसलिए इन्हे कषाय कहते है। इसी सदर्भ में प्रदेश, प्रकृति स्थिति और अनुभाग बधा पर भी चर्चा हुई। बोल-सब कुछ वैज्ञानिक है। जैनदर्शन में एक भी शब्द फिजूल नही है। वहा सब कुछ सार्थक और प्रासगिक है। निर्मल अन्तर्दृष्टि चाहिये, उसके बिना कुछ नही होगा। मेरे द्वारा पुन प्रस्तुत 'समीक्षण-ध्यान व्यक्ति और समाज दोनो के लिए उपयोगी है। जब क्रोध, मान, माया और लोभ का समीक्षण करत है, तब मन की ग्रन्थिया आपोआप खुलने लगती है। चित्त निर्ग्रन्थ होन लगता है। रागद्वेष गलने लगते है। राग-द्वेष इस तरह कुछ अनन्य है कि राग-मे-द्वेष और द्वेष-मे-राग गर्भित हुआ है। किसी एक का छोड़ने पर दूसरा अपने आप विदा हो लेता है।

२० अगस्त/गुरुवार को आचार्यश्री ने समीक्षण ध्यान को ब्यौरेवार समझाया।

२१ अगस्त/शुक्रवार को तप पर चर्चा हुई। बोले- जैन तप भेद विज्ञानमूलक है। यदि वहा यह दृष्टि नही है तो तप कितना ही क्यो न हो, व्यर्थ और निष्फल है। तप तप है, उसका विज्ञापन नही किया जाता। तप सम्यक्त्व के लिए की गयी उत्कट साधना का नाम है। मै तप के प्रचार पर उससे सबधित जुलूसो और शोभायात्रा पर बराबर अकुश रखता हू। वह साधु ही क्या, जो सत्य कहने मे झिझक अनुभव करता हो। मै तो श्रावक का भी उपकार मानता हू। वे मुझे सयम मे सावधान रखते है। जब कोई श्रावक मुझे मेरी त्रुटि बताता है, तब मै उस त्रुटि की आलोचना करता हू, उस पर ध्यान देता हू और बताने वाले के प्रति कृतज्ञता अनुभव करता हू। दोष जानने चाहिये ताकि उन्हें यथासमय दूर किया जा सके। बोले- दवाई तो हम लेते है, किन्तु बाद मे प्रायश्चित्त अवश्य करते है। साधुमार्गी सघ मे साधु साध्वी मे कोई भेदभाव नही है। सयम के धरातल पर सब बराबर है। मैं उन्ह गुरु-चेले की नजर से कभी नही देखता बल्कि भाई-बहिन मानता हू। मै अपने कार्य म लगा रहता हू।

मुझे यदि कोई योग्य साधु मिल जाए तो मै पूरी तरह से आत्मोन्नयन में लग सकता हू। आत्मशुद्धि ही साधु का सर्वस्व है। यही उसका मूलमन्त्र है। यह कम, या नष्ट होता है तो फिर कुछ बच नहीं रहता।

वैसे ही, क्रोध पर अपने विचार प्रकट करते हुए वे बोले क्रोध एक किस्म की विवेक-शून्यता है। मेरे पिता मे क्रोध अधिक था, मा मे बहुत कम था। क्रोध का मूल कारण अज्ञान या गलतफहमी है। क्रोध छुतहा रोग है इससे बचना चाहिए। मौन और क्षमा इसके मुख्य उपाय है।

ईश्वर के स्वरूप पर चर्चा चली तो बोले ईश्वर क्या है ? दुनिया के सारे प्रकाश यदि जोड़ लिये जाए तो जो जोड़ बनेगा उसका नाम ईश्वर है। ईश्वर प्रकाश का कैवल्य है। ज्ञान और प्रकाश पर्याय है। दोनो दो अलग अस्तित्व नही है।

खादी की बात चली तो बोले आचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज खादी धारण करते थे। आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज ने उसे सघ के लिए अपरिहार्य बताया। खादी की पृष्ठभूमि पर अहिंसा और राष्ट्रधर्म दोनो हैं, पावनता भी है। मै/हमारे तमाम साधु-साध्वी खादी का ही उपयोग करते है। यह त्याग का प्रतीक भी है।

-सम्पादक-तीर्थंकर, इन्दौर

❑ विनोद जैन

साक्षात्कार

बीसवी शताब्दी के महापुरुष, जैन धर्म के महामाधक साधुमार्गी जैन सघ के यशस्वी अष्टम आचार्य श्री नानालालजी म सा - आज हमारे बीच मौजूद नही है, लेकिन उनके श्रद्धावान असख्य अनुयायियों के पास जमा है, सुरक्षित है, सग्रहित है- उनके स्थिर अनुशासित, धवल आचरण की अनन्त स्मृतिया उनके पावन सानिध्य की अनमोल घड़िया। चिरकाल तक सजोये रखगे उनके एक निष्ठ श्रावक। महापुरुषो के साथ बिताए क्षण मूल्यवान स्मृतिया हैं, अनमोल धरोहर हैं, जो बार-बार उनके विराट यशस्वी व्यक्तित्व को मन-मस्तिष्क मे प्रतिबिबित करती हैं। आचार्य श्री नानेश के प्रति अटूट निष्ठाभाव रखने वाले के स्मृति कोष मे जमा सुनहरे पल यादे उनसे बिछुड़ने की घटना पर भ्रम का पर्दा डालती हैं कि सदी के महापुरुष आराध्य देव आचार्य देव श्री नानेश इस ससार में हमार बीच मौजूद है।

लोक मगल के लिए सपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले आचार्य श्री नानेश से समाचार पत्रो के लिए चर्चा करने का जब भी अवसर मिला, सामयिक विषयबद्ध प्रश्नो के साथ पहुच जाता था। मुझे कभी निराशा नही हुई, लक्ष्य मे असफल नही हुआ। हर बार, हर अवसर पर एव स्थान पर उनस खुल कर बात होती थी, लबी चर्चाए होती थीं। हमेशा उनकी विचार शैली मे उन्ही के द्वारा सृजित समता दर्शन का झरना झरता था, तर्कों के समाधान मे समता का पुट रहता था। प्रस्तुत है, आचार्य श्री नानेश से लिए गए साक्षात्कारो के प्रमुख अश-

विनोद- वर्तमान युग मे धर्म आपसी विवादो के कारण अभिशाप बनता जा रहा है। तार्किक युग म क्या धर्म को वरदान साबित किया जा सकता है?

आचार्य श्री- धर्म का वास्तविक रूप नही समझने के कारण धर्म विडबना का विषय बना हुआ है। धर्म का सही स्वरूप समझने क साथ ईमानदारी पूर्वक प्राथमिकता से जीवन मे स्थान दे दिया जाव तो जन कल्याण के लिए धर्म वरदान साबित हो सकता है।

विनोद भगवान महावीर के अनुयायी जैन क्या सैद्धातिक मतभेद भुलाकर एकमत नही हो सकते ?

आचार्य श्री- भगवान महावीर के सभी अनुयायी समता सिद्धात के रगमच पर आरूढ हा जाए ता जो मतभेद, मनोभेद चलता है वह समाप्त हो सकता है और इसी आधार पर व्यक्ति, परिवार समाज राष्ट्र और विश्व विषमता समाहित करने म सक्षम बन सकता है।

विनोद- पूर्व जन्म की घटनाआ के विषय मे आपका मत क्या है ?

आचार्य श्री- वैज्ञानिका द्वारा प्रस्तुत तर्क जब तक सामने नही आजाते, तब तक इस विषय म मतव्य प्रकट नहीं किया जा सकता है। इतना अवश्य है कि पूर्व जन्म की मान्यता युक्ति, तर्क अनुभूति क धरातल पर सही साबित हाती है।

विनोद- क्या साधुआ को अपनी आत्मा को कष्ट देना जरूरी है ?

आचार्य श्री- आत्मा का कष्ट व्यक्ति की मान्यता पर निर्भर है। मजदूर दिनरात श्रम करने पर भी कष्टानुभूति नहीं करता वह सिर्फ रोजी, रोटी का यत्न करता है। आत्मसाधक आत्मा की स्वच्छता प्राप्त करने मान्य

मार्ग पर अग्रसर होता है, उसमे उसको आनदानुभूति होती है। साधना के महत्व को न जानने समझने वाले साधारण प्राणी कष्टानुभूति करत है, ये उनके अज्ञभाव का परिणाम है ।

विनोद- अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के लिए भगवान महावीर की क्या देन है, स्पष्ट कीजिए ?

आचार्य श्री- सारी दुनिया के लिए भगवान महावीर के अहिसा, सत्य और अपरिग्रह आदि तत्व अमूल्य देन हैं । समग्र मानव, परिवार, समाज, देश और दुनिया उन्हे अपनाये । अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे रहने वाले विभिन देशो के प्रतिनिधि इन तत्वो का हृदयगम कर आत्मसात कर लेते है, तो प्रभु महावीर की महत्वपूर्ण अद्वितीय देन सिद्ध हो सकती है ।

विनोद- स्थानकवासी परपरा किस दिशा मे जा रही है ?

आचार्य श्री- स्थानकवासी परम्परा का कुछ विश्लेषण करना होगा । उसमे कई घटक हैं । जिन घटको की आगमानुलक्षी सही पद्धति है, तो वह परपरा सही दिशा मे जा रही है। जिन घटको मे तीर्थंकर देवों द्वारा निर्दिष्ट आत्म शुद्धि के मूल महाव्रतो की सुरक्षा को गौण कर आधुनिक युग के अनुरूप मनकल्पित आचार सहिता को प्रश्रय दिया जा रहा हो, वैसे घटक आत्मशुद्धि क लक्ष्य के प्रतिकूल जा रहे है, एसा कहा जा सकता है।

विनोद- समता महावीर भवन के नामकरण को लेकर विवाद क्या है? उपयुक्त समाधान क्या है?

आचार्य श्री- महावीर शब्द व्यक्तिवाचक है, जबकि समता शब्द सर्वव्यापक है, क्योंकि समता जीवन का चरम लक्ष्य है और सभी तीर्थंकरो व अनन्त केवलियो ने उसे अपने जीवन मे उपलब्ध किया था भविष्य म मुक्ति प्राप्त करने वाली प्रत्येक आत्मा इस समता को प्राप्त करेगी, फिर भी नाम व्यक्ति की पसद है, वह चाहे जो रख सकता है । उसम जब भी विवाद पैदा होता है, तो वह गलत फहमियो से तथ्यातथ्य ज्ञान के, विवेक के अभाव मे होता है । कभी कभी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति भी नाम को विवाद का मुद्दा बना लिया करती है।

विनोद- श्रमण सघ व साधुमार्गी सघ मे सैद्धातिक मतभेद क्या हैं, इन्हे दूर क्यो नही किया जाता ?

आचार्य श्री- श्रमण सघ व साधुमार्गी सघ मे मूलभूत सिद्धातो मे कोई मतभेद नही है, किंतु समाचारी के सम्यक् अनुपालना मे तफावत है । श्रमण सघ के निर्माण के समय जो उद्देश्य व समाचारी सर्वानुमति से निर्धारित हुई उस पर यदि श्रमण सघ के सभी सदस्य कटिबद्ध हो जाए तो मतभेद की स्थिति नही रहेगी ।

विनोद- परिवार नियोजन के बारे मे आपके क्या विचार हैं ? जैन शास्त्र कहते है कि असख्य योनियो मे जन्म लेने के पश्चात् मनुष्य जीवन मिलता है, फिर इसे क्यो रोका जाए ?

आचार्य श्री- कृत्रिम साधना से परिवार नियोजन जीवन के साथ खिलवाड़ है किंतु बच्चे पैदा कर के उनकी सुव्यवस्था नही कर पाना भी योग्य नही है । अत मानवता का तकाजा है कि वैसी स्थिति मे व्यक्ति को स्वय पर कट्रोल रखना चाहिए ।

विनोद- गर्भपात का सरकार कानूनन वैध मानती है । क्या भ्रूण हत्या रुकनी नही चाहिए ?

सरकार अजन्मने वाल मुह को जन्म लन से क्यो रूकवाती है?

आचार्य श्री- भ्रूण हत्या महापाप है। शास्त्रीय दृष्टि स मानववध के तुल्य है भ्रूण हत्या। सरकार चाहे उस कानूनन वैध मानती हो, किंतु नैतिकता की दृष्टि से वैध कैसे कहा जा सकता है । सृष्टि म प्रत्यक प्राणी को जिंदा रहने का हक है उससे इस हक को छीनना नैतिक नही कहा जा सकता है।

विनोद राम जन्मभूमि विवाद मे सवमान्य हल आपके मत से क्या हो सकता है ?

आचार्य श्री राजनीतिक परिस्थितियो के रग से रहित तटस्थ भाव मे सौजन्यता पूर्वक वार्तालाप करने स हल सभव है । इस विवाद मे वस्तु सत्य को जानना पड़ेगा देखना होगा सत्य तथ्य को । सत्य स्वीकार करने मे किसी को एतराज नही होना चाहिए। राजनीति के चक्कर में इस विवाद को अनावश्यक तूल दिया जा रहा है। भूमि विवाद आजादी के पहले का विवाद है । मानवरक्त बहाने की बात पर आचार्य श्री न कहा कि मुझे ता क्या हर धम के सत को दु ख होता है। व्यर्थ खून खराबे से निर्दोष लोग बलि चढ़ाए जाने से इसे रोका जाना चाहिए ।

विनोद- ईश्वरीय शक्ति या काइ आध्यात्मिक अनुभव जो आपन अपने जीवन मे पाया हो ?

आचार्य श्री- ईश्वरीय शक्ति अनुभूति का विषय है, जैसे किसी ने असली घी खाया, यदि उससे उसका स्वाद पूछा जाये ता स्वाद जानते हुए भी शब्दो म नही बता पावेगा। अत इस अनुभूति की व्याख्या नही की जा सकती।

विनोद- कुछ सत राजनीति म या देश की समस्याओ क बारे म दखल दकर अपने विचारो को सार्वजनिक करने लगे है। आपकी विचारधारा क्या है?

आचार्य श्री- जो सत्य तथ्य है उसे जनसाधारण के सामने रखना सता का कर्त्तव्य है। अब उस तथ्य की सत्यता म कौन लपेटे मे आता है ये ता सोचने वाल पर निर्भर है। उदाहरण क लिए मदिरा पान निषध करवा दिया जावे तो यह कार्य जन हितार्थ, पर शराब क ठेकेदारो का यह अच्छा नही लगेगा, यह उनका स्वभाव है ।

भारतीय सत परम्परा क सच्चे प्रतिनिधि, आत्म साधक आत्म धर्मी अखड बाल ब्रह्मचारी, आचार्य श्री नानेश स अतिम साक्षात्कार अनौपचारिक हुआ। साधारण बातचीत म उनके आधी शताब्दी से अधिक समय बीते आध्यात्मिक जीवन के लबे सफर के बारे म पूछने पर बताया कि उन्हे इस जीवन से पूर्ण सतोष है आपने अपनी बात म आगे फरमाया कि आत्म-कल्याण एव लोक मगल के लिए जो मार्ग हमने चुना है उसमे हमे पूर्ण सतुष्टि है । इस मार्ग मे कोई रुकावट और अपूर्णता नही है । हम निरतर अपनी साधना म लगे हुए चल रहे है वस्तुतः आध्यात्मिक जीवन म अपूर्णता का प्रश्न ही नहीं है । इस सफर म बहुत अच्छा अनुभव होता है, क्योंकि इसके बिना शाति मिल ही नही सकती है। अपनी दिनचर्या निर्धारित रहती है । इस जीवन म साधना के लिए पूरे दिन की क्रियाए निर्धारित रहती है । उन्होंने बताया कि वे दिन म साधना करते है चितन करते है प्रवचन देते है । अध्ययन एव अध्यापन करवाते है । जैनाचार्य श्री नानेश ने पाट परम्परा कायम रखते हुए विद्वान, अनुभवी शात गम्भीर अतवासी शिष्य सत श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य की पदवी स विभूषित किया था। इस घटनाक्रम का पूर्वाभास इतने बड़े सघ म किसी को नहीं था कि आचार्य श्री इतना बड़ा निर्णय

एकदम ले लेंगे। अचानक निर्णय पर क्रिया, प्रतिक्रिया तत्काल होना स्वाभाविक थी। अब सब सामान्य और सर्वमान्य हो गया। क्योंकि निर्णय में दृढ़ता थी। उनकी इस घोषणा के विरोध के बारे मे पूछने पर उन्होंने बताया कि युवाचार्य की घोषणा के बाद विरोध जैसी बात मेरे सामने नही आई है। कई हजार किलोमीटर की यात्रा कर आए साधु, साध्वियों ने मुझे रिपोर्ट दी है कि युवाचार्य श्रीराम म सा के प्रति सब जगह सतोष है। हर जगह उनके प्रति उत्साह का सचार हो रहा है। इस चयन को लेकर सबको आशा है कि श्रीराम वीरशासन एव सघ को आनेवाले समय मे यश गौरव दिलवाएंगे।

-राज मेडिकल
हास्पिटल रोड़, नीमच (म प्र)

साक्षात्कार प्रसग

१ २५ दीक्षा क प्रसग पर १५ मार्च १९८४
२ रतलाम चातुमास १९८८
३ महावीर जयती, नीमच, १९८९
४ बीकानेर १९९५

❂

शताब्दी के शिखर सन्त

डा शोभनाथ पाठक

गुरुवर या महाप्रयाण सभी के लिए है असहनीय ।
दाता की अमर विभूति हो गई दुनिया में वंदनीय ।
मोड़ी शृंगार सपूत श्रेष्ठता का जो यश फैलाये हैं ।
उन्नीस वर्ष की आयु में भागवती दीक्षा जब पाये हैं ।
धरती है धन्य कपासन की जो तप विभूति से हर्षित है ।
आचार्य प्रवर गुरु नाना को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है ।
जब उदयपुर में युवाचार्य पद से समलंकृत आप हुए ।
आचार्य पद इसी भूमि पर अर्पित कर सब धन्य हुए ।
हे बाल ब्रह्मचारी गुरुवर सादर प्रणाम स्वीकार करो ।
समता दर्शन के प्रखर प्रणेता इस युग का उद्धार करो ।
विद्या की विविध विधाओं में इतिहास आपका अंकित है ।
आचार्य प्रवर गुरु नाना को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है ।
जिनशासन की प्रभावना का जो कीर्तिमान स्थापित है ।
युग दृष्टा आगम पुरुष आप द्वारा सब कुछ निर्मित हैं ।
हे श्रमण संस्कृति उन्नायक स्वर्णित इतिहास बनाये हैं ।
जब धर्मपाल प्रतिबोधक हो जीवन की राह दिखाये हैं ।
सारी स्मृतिया नेत्र पटल पर क्रमश पुन प्रवर्तित है ।
आचार्य प्रवर गुरु नाना को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है ।
संथारा पूर्वक देवलोक की गमन तिथि सत्ताईस है ।
निन्यानवें का वर्ष स्मृति स्वय समेटे धन्य हुआ ।
हे शिखर संत इस शताब्दी के महाप्रयाण अनन्य हुआ ।
युग को आलोकित करने जीवन ज्योति समर्पित है ।
आचार्य प्रवर गुरु नाना को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है ।

ग्रा पो कनवानी जिला जोनपुर (उ प्र)

नानेश नगर एक दृष्टि

भारत की रत्नगर्भा धरती ने समय समय पर साधु सन्तो एव शूरवीरो का जन्म दिया है, जिन्होने धर्म एव धरती की रक्षा करने मे खुद को खपा दिया। राजस्थान प्रान्त के मेवाड़ अचल मे धर्म एव राष्ट्र प्रमी लागो ने जन्म लेकर लाकहित एव राष्ट्रहित मे सराहनीय कार्य कर इतिहास के पन्नो मे अपना नाम अमर कर दिया। इसी परम्परा मे स्वर्गीय गुरुदेव श्री नानेश ने राजस्थान प्रान्त के चित्तौड़गढ जिले की कपासन तहसील अर्न्तगत दाँता नामक छोटे से गाव म जन्म लिया। गुरुदेव की जन्म स्थली दाँता आज नानेश नगर के नाम से प्रसिद्ध होकर एक तीर्थ-स्थल बन गई।

श्री अ भा सा जैन सघ के भामाशाहो ने समाज सेवी श्री हरिसिहजी राका मुम्बई के अनुरोध पर नानेशनगर, दाँता को समता विकास का मुख्य केन्द्र बनाने हेतु आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट की स्थापना सन् १९९२ मे की। आचार्य श्री के आशीर्वाद से इस ट्रस्ट के अध्यक्ष पद पर श्री हरिसिहजी राका उपाध्यक्ष पद पर श्री रिद्धकरणजी सिपानी एव श्री उत्तमचन्दजी खिवेसरा आसीन हुए।

आचार्य श्री नानेश की जन्म स्थली नानेश नगर - दाँता मे समता विकास ट्रस्ट ने जैन धर्म एव दर्शन के प्रति जागरूकता एव लगाव उत्पन्न कर स्वर्गीय गुरुदेव श्री नानेश द्वारा प्रणीत समता दर्शन के प्रचार प्रसार द्वारा नई पीढी को सही दिशा प्रदान करने युवा वर्ग को आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर करने एव नानेश नगर दाँता क आसपास के ग्रामीण तथा जन समुदाय की चिकित्सा आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु मूलभूत निम्न लक्ष्य निर्धारित किए

१ सामान्य एव उच्च शिक्षा आवासीय सुविधा सहित उच्च स्तरीय प्राथमिक माध्यमिक उच्च माध्यमिक एव महाविद्यालय की स्थापना करना।

२ व्यावसायिक एव रोजगार प्रशिक्षण समाज के युवा वर्ग को कला, उद्योग तथा टक्नीकल (कम्प्यूटर) शिक्षण के माध्यम स रोजगार प्रशिक्षण देकर आत्म निर्भर बनाना।

३ सामान्य एव चल चिकित्सा जन सामान्य के लाभ हेतु सामान्य चिकित्सा प्रसूति गृह चल चिकित्सा इकाई प्राकृतिक चिकित्सा यागासन केन्द्र स्थापित करना।

४ सुसस्कार एव व्यसन मुक्ति शिक्षा आचार्य भगवन श्री रामेश क उपदशो के आधार पर व्यसन मुक्ति का ज्ञान प्रदान करन हेतु सुसस्कार भवन तथा विश्राम गृह स्थापित करना।

५ समता-साधना एव समीक्षण-ध्यान केन्द्र स्वर्गीय आचार्य पूज्य नानेश द्वारा प्रणीत समता दर्शन क आधार पर उच्च साधना हेतु समता साधना एव समीक्षण ध्यान केन्द्र स्थापित करना।

प्रात स्मरणीय स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश के अनन्य भक्त श्री एच एस राका, श्री आर के सिपानी श्री यु सी खिवेसरा ने ५० लाख रुपयो का प्रारम्भिक आर्थिक सहयाग प्रदान कर गुरु भक्ति का परिचय दिया। उक्त तीनो समाज प्रेमी महानुभावो के प्रयास से अब तक ट्रस्ट को १२५ लाख रुपयो का सहयोग प्राप्त हुआ। जैन समाज के भामाशाह श्री उमरावसिह जी ओस्तवाल, श्री घेवरचन्द कानीचन्द गालछा ट्रस्ट गुवाहाटी एव सेठ शेरमल फतेचन्द डागा ट्रस्ट गगाशहर आदि के आर्थिक सहयोग स निर्धारित लक्ष्यो की पूर्ति होन लगी है।

स्वर्गीय नानेश की जन्म स्थली नानेश नगर मे उच्च माध्यमिक विद्यालय, छात्रावास, चिकित्सालय समता साधना एव समीक्षण ध्यान केन्द्र आदि सचालित है। इन सभी योजनाओ मे अलग से स्थायी कोप की स्थापना की गयी है ताकि ब्याज की राशि से इनका सचालन हो सके। ट्रस्ट की समस्त योजनाओ को पूरी करने के लिए चार करोड़ रुपया की आवश्यकता अभी भी है।

सुसस्कार एव व्यसन मुक्ति शिक्षा के अन्तर्गत आचार्य श्री नानेश के स्वप्न को साकार करने हेतु श्रावक, श्राविकाओ तथा आवासीय विद्यार्थियो के लिए विशेष रूप से धर्म ज्ञान, धार्मिक सस्कार एव सात्विक आहार उच्च विचार पर आधारित शिक्षा प्रदान की जा रही है। भविष्य मे व्यसन मुक्ति एव निर्व्यसन जीवन शिक्षा प्रदान करने की व्यापक और विशेष योजना है।

-सचिव आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट
नानेश नगर, दाँता पो भबराना - ३२१२०४

❂

सब तेरे गुण गाते

मोनीषा पारख

हर डिगते प्राणी को, सहारा देने वाले
डगमगाती जीवन नैया को किनारा देने वाले।
ज्ञान दिवाकर गुण रत्नाकर समता रस भण्डारी,
समीक्षण ध्यान के योगी तुम थे ३६ गुण धारी।
सच्चा साया पाया था सबने, तव चरणों में आकर,
महापुण्यशाली बना था जग, तेरा सहारा पाकर।
कैसी विडम्बना आई गुरुवर जो आश्रय तुम्हारा छूटा,
प्रसन्नता और ज्ञान का कोष, रब ने हमसे लूटा।
जन जन के नयन तरसते, तेरे दर्शन को गुरु नाना,
किस दिशा में ढूंढे तुमको, बता दो कोई ठिकाना।
धरती अम्बर पर्वत सागर, सब तेरे गुण गाते,
नवोदित आचार्य राम को, श्रद्धा मे शीश झुकाते।
भावपूर्वक विनती करता, आज सारा जमाना,
आचार्य श्री राम हमारी, नैया पार लगाना।

राजनांदगांव

साहित्य

अ- स्वरचित आ- सबधित

अ- स्वरचित

<u>प्रवचन साहित्य</u>

१ अमृत सरोवर
२ आध्यात्मिक आलोक
३ आध्यत्मिक वैभव
४ आध्यात्मिक ज्योति
५ जीवन और धर्म (हिन्दी एव मराठी)
६ जलत जाए जीवन दीप
७ ताप और तप
८ नव निधान
९ पावस प्रवचन भाग-१ २,३ ४,५
१० प्रवचन पीयूष
११ प्रेरणा की दिव्य रेखाए
१२ मगलवाणी
१३ सस्कार क्रान्ति
१४ शान्ति के सोपान
१५ अपने का समने, भाग १,२,३
१६ एकै साधे मब सधे
१७ जीवन और धर्म
१८ सर्व मगल सर्वदा

<u>कथा साहित्य</u>

१ अखण्ड मौभाग्य
२ कुकुम के पगलिए
३ ईर्ष्या की आग
४ लक्ष्यवेध
५ नल दमयन्ती

<u>चितन साहित्य</u>

१ गहरी पर्त के हस्ताक्षर (हिन्दी गुजराती)
२ अन्तर के प्रतिबिम्ब
३ समता क्रान्ति का आह्वान (हिन्दी मराठी)
४ समता दर्शन एक दिग्दर्शन
५ समता दर्शन और व्यवहार (हिन्दी अग्रेजी, गुजराती)
६ समता निर्झर
७ समीक्षण धारा
८ समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान
९ समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि (हिन्दी, गुजराती)
१० मुनि धर्म और ध्वनिवर्द्धक यत्र
११ निर्ग्रन्थ परम्परा म चैतन्य आराधना
१२ कषाय समीक्षण
१३ क्रोध समीक्षण
१४ मान समीक्षण
१५ लोभ समीक्षण
१६ कर्म प्रकृति
१७ गुण स्थान स्वरूप विश्लेषण
१८ जिण धम्मा
१९ उभरत प्रश्न चिन्तन के आयाम

<u>शास्त्र</u>

१ अन्तकृतदशाग
२ वियाह पण्णति सूत्र प्रथम भाग

<u>काव्य</u>

१ आदर्श माता (खण्ड काव्य)

<u>आ-आचार्य श्री से सबधित साहित्य</u>

१ अन्तर्पथ के यात्री आचाय श्री नानश १९८२
२ अविस्मरणीय झलक आचार्य श्री नानश का सौराष्ट्र प्रवास १९८४
३ अष्टमाचार्य एक झलक
४ अष्टाचार्य गौरव गगा १९८६
५ आचाय श्री नानश एक परिचय (हिन्दी गुजराती)
६ आचाय श्री नानश विचार-दर्शन
७ गुजरात प्रवास एक झलक
८ सफल सौराष्ट्र प्रवास (गुजराती हिन्दी)
९ आगम पुरुष १९९२

एकादश श्रावक दायित्व प्रतिबोध

समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा प्रतिबाधित श्रावक वर्ग का दायित्व बिन्दुवार प्रस्तुत है-

- साधु साध्विया की निर्ग्रन्थता बरकरार रहे, उसम किसी तरह का दोष नही लगे। इसकी पूरी सजगता रखी जाय।
- त्यागी आत्माओ के समक्ष व धार्मिक अनुष्ठानो के समय सासारिक बाते न हो।
- किसी व्यक्ति विशेष के प्रसग को लेकर अपनी आस्था को चलायमान नही होने देना क्योंकि कभी कभी सुनी हुई या देखी हुई बात भी भ्रामक या गलत हो सकती है। यदि सच्ची प्रतीत भी हो तो ही चिन्तन करना चाहिए कि व्यक्ति गलत हो सकता है पर जिनेश्वर देवो का सिद्धान्त गलत नही हो सकता।
- सघ के किसी सदस्य की व्यवस्था विपयक कभी काई अन्यथा बात देखने या सुनने को आवे ता उसकी इधर-उधर चर्चा नही करते हुए शासन-सेवा की भावना से उस बात का सघनायक अनुशास्ता तक पहुचा देनी चाहिए।

  सघ के किसी सदस्य के पास अलग-अलग क्षमताए होती है काई स्नातक-अधिस्नातक आदि शिक्षित, प्रबुद्ध व बुद्धिजीवी हाते है। उनके पास बौद्धिक क्षमता होती है। किसी के पास समय होता है तो किसी के पास शारीरिक क्षमता। इसी तरह किसी मे वाचिक आदि अन्य अनेक क्षमताए हाती है।
- उन्हे अपनी क्षमतानुसार अपनी शक्ति/शक्तियो का समविभागीकरण कर बच्चो, युवाओ और बहिनो आदि के लिए धार्मिक शिक्षण व्यवस्था, स्वधर्मी वात्सल्यता, स्वाध्याय प्रवृत्ति, जरूरतमन्द स्वधर्मियो की अपेक्षित सेवा, अहिंसा प्रसार, ज्ञान प्रसार, असहाय एव पीड़ित मानवता की सेवा, स्वधर्मियो की उन्नति के उपाय आदि विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रा म अपनी क्षमता का सदुपयोग कर धर्म की प्रभावना करना।
- प्रभु महावीर के शासन का अनूठा प्रताप है, जिससे अच्छे-अच्छे घर-घरानो की सतानें भौतिकता के इस युग मे भी भौतिक सुख सुविधाओ से मुख मोड़कर सयमी जीवन अगीकार कर रही हैं। ऐसे सयम साधको के प्रति श्रावक श्राविका वर्ग का जो दायित्व है, उसका निर्वहन करने के प्रति सजग रहना।
- वर्तमान मे साध्विया की सुरक्षा एक गभीर विपय बना हुआ है। उनके परिजन सघ के विश्वास पर आज्ञा प्रदान करते है। उनके विश्वास को अखड रखने की दृष्टि से तथा शासन सेवा की भावना से प्रत्येक व्यक्ति को अपना दायित्व समझकर रक्षा, सुरक्षा के प्रति विशेप रूप से जागरूक रहना।
- धार्मिक क्षेत्रो मे बढ़ रही फोटो आदि प्रवृत्तियो के विषय म समय समय पर निषेध करता रहा हू। उन भावा को ध्यान में रखत हुए जैन आदि के द्वारा स्वागत करने की परम्परा बनती जा रही है। उस पर गभीरता से चितन करना चाहिए। त्यागियो का स्वागत बैनर आदि से नही अपितु तप-त्याग से किया जाना चाहिए।
- धार्मिक अनुष्ठान, सामायिक, पौषध, सवर, व्याख्यान प्रार्थना प्रतिक्रमण ज्ञानचर्चा आदि मे तत्परतापूर्वक भाग लेना। हास्य कवि सम्मलन, लोकरजन आदि आत्म-साधना के अनुकूल नही होने से एस कार्यक्रमो

का वर्जन करना आदि। इस प्रकार से श्रावक-श्राविका वर्ग अपनी क्षमता व शक्ति अनुसार सघ की भव्य सेवा कर सकते है।

आधुनिकता का तूफान जोर पर है। यह तूफान कभी-कभी साधु-साध्वियो को भी विचलित करने वाला बन सकता है। ऐसी स्थिति में श्रावक-श्राविकाओ का कर्त्तव्य है कि वे गभीरता, सतर्कता एव विवेक का परिचय दे अर्थात् विचलित होने वालो को अत्यन्त विनम्र शब्दो में सघ हित से प्रेरित हो निवेदन करे।

❁

बड़ीसादड़ी वर्षावास १९७०/सामाजिक क्रान्ति के सूत्र रूप उन्नीस प्रतिज्ञाएं/ सत्रह गांवों के प्रतिनिधियों का अमल के लिये वचन

१ मौसर या स्वामी वात्सल्य आदि किसी भी नाम से किये जाने वाले मृत्यु भोज में न जीमने जायेंगे और न ऐसा मृत्यु भोज करेंगे।

२ विवाह में तिलक या लेन देन की सौदेबाजी नहीं करेंगे।

३ सगाई (सम्बन्ध) होने के बाद उसे कोई पक्ष नहीं छोड़ेगा।

४ मृत्यु के बाद एक मास से अधिक शोक नहीं रखेंगे।

५ धर्म स्थान पर सादी वेशभूषा में जायेंगे और प्रवचन में मौन रखेंगे।

६ स्वयं यथाशक्ति धार्मिक शिक्षा लेंगे व बालक बालिकाओं को दिलायेंगे।

७ धर्मस्थान पर अथवा सामूहिक स्थान पर प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना करेंगे।

८ विवाह आदि समारोहों पर गंदे गीत गाने पर रोक लगवायेंगे।

९ जाति व धार्मिक रीति रिवाजों में व्यर्थ खर्च नहीं करेंगे।

१० प्रातः उठते समय व सायं सोते समय ११ नवकार मंत्र का जाप करेंगे।

११ दीक्षार्थी भाई बहिनों की दीक्षा भावना में बाधक नहीं बनेंगे बल्कि सहयोग देंगे और सादगी से सम्पन्न करावेंगे।

१२ कोई भी भाई बहिन त्योहारों के दिनों में शोक वाले के यहां खाने व स्नान के लिये नहीं जायेंगे।

१३ विवाह आदि अवसरों पर बैंड बाजों में अनावश्यक खर्च नहीं करेंगे।

१४ प्रतिदिन एक या माह में ३० सामायिक पूर्ण करेंगे।

१५ जाति सम्बन्धी व व्यक्तिगत झगड़ों को धर्म में नहीं डालेंगे।

१६ अनमेल विवाह नहीं करेंगे।

१७ आध्यात्मिक आहार हेतु धार्मिक पुस्तकों का यथाशक्ति पठन पाठन करेंगे।

१८ संत सतियों के यहां जहां भी दर्शनार्थ जायेंगे वहां मौन पालन करेंगे।

१९ नैतिक व चारित्रिक बल बढ़ाने तथा असहायों की सहायता करने हेतु यथाशक्ति तत्परता करेंगे।

समता-विभूति आचार्य श्री नानेश की चिन्तन-मणिया

अक्षय तृतीया के पावन प्रसग पर अक्षय सुख प्राप्ति हेतु प्रारभिक साधना के

❁ नव-सूत्र ❁

१ हे चैतन्य देव ! तू सोच कि ❁ मै कहा स आया हू ❁ किसलिए आया हू ❁ क्या कर रहा हू ❁ और क्या करना चाहिए ?

२ हे चैतन्य पुरुष ! ❁ तू चारगति चौरासी लाख जीव यानि से ❁ भटकता हुआ आ रहा है ❁ तूने ❁ अमूल्य मनुष्य जन्म ❁ पाया है ❁ और तू आर्य कुल आदि ❁ उत्तम सयाग स ❁ सम्पन्न है ❁ अत सोच ❁ तुझे क्या करना है ?

३ ह ज्ञान पुज ! ❁ मनुष्य जन्म का पर्याय में ❁ तेरा परम शान्ति ❁ बाधा रहित अक्षय सुख ❁ एव ज्ञान दर्शन चरित्रादि ❁ आत्मिक गुणो को प्राप्ति के लिए ❁ आना हुआ है ।

४ ह ज्योतिर्मय आत्मन् ! ❁ तू मध्यस्थ भाव से ❁ चिन्तन कर कि ❁ मै क्या सोच रहा हू ❁ क्या बोल रहा हू ❁ और क्या कर रहा हू ? ❁

मै वर्तमान म ❁ सासारिक भौतिक ❁ सुख सुविधाआ का ही ❁ सर्वोपरि मान रहा हू ❁ इन्ही के लिए ❁ झूठ प्रपच आदि ❁ अनेक प्रवृत्तियो में ❁ उलझ रहा हू । ❁ अनभिज्ञता पूर्वक ❁ अमानवीय भावो म ❁ बहता रहा हू । ❁ कटु शब्दादि का ❁ प्रयाग कर ❁ दूसरो क ❁ दिला के टुकड़े ❁ किये जाने की ❁ प्रवृत्ति भी यदा कदा ❁ करना रहता हू । ❁ क्या यह मेरे ❁ शुभागमन के योग्य है ? ❁ उत्तर होगा ❁ कदापि नही ।

५ हे शुद्ध चैतन्य ! तुझे तुच्छ भाव स न सोचना है ❁ न चिन्तन करना है ❁ न बोलना है ❁ और न व्यवहार ही करना है ❁ यही तेरे लिए शोभास्पद है ।❁

६ ह प्रबुद्ध चैतन्य ! ❁ तू साच एव समझ कि ❁ मिथ्या श्रद्धा मेरी नही है । ❁ मिथ्या ज्ञान मेरा नही है । ❁ असत्य मेरा नही है । ❁ पर पदार्थों पर ममत्व भाव मेरा नही है । ❁ कषाय मेरा स्वभाव नही है । ❁ दूसरो की निन्दा करना ❁ सुनना ❁ क्लेश करना ❁ एव मिथ्या दर्शन शल्यादि ❁ मन मे रखना ❁ तथा मोह सबधी ❁ कार्य करना ❁ मेरी आत्मा एव अन्य की आत्मा के लिए ❁ हितकर नही है ।

७ हे विज्ञाता ! तू अविचल ❁ श्रद्धान कर कि ❁ सुदेव, ❁ सुगुरु, ❁ सुधर्म अहिंसा सत्य, ❁ अचौर्य, ब्रह्मचर्य, ❁ अपरिग्रह ❁ एव स्याद्वादादि ❁ सिद्धान्तो पर ही ❁ मेरी दृढ श्रद्धा है ।

८ हे सिद्ध बुद्ध निरजन आत्मन् ! सिद्धावस्था की अपेक्षा से ❁ तू दीर्घ नही है । ❁ तथा ह्रस्वादि लौकिक ❁ विशेषणो स युक्त नही है । ❁ तेरा कोई ❁ वर्ण गध रस ❁ स्पर्शादि युक्त आकार ❁ भी नही है । ❁ न तू स्त्री है ❁ न पुरुष है ❁ न नपुसक है ❁ तो फिर क्या है ?

अरूपी है ✿ शाश्वत है ✿ अशरीरी है ✿ अजर है ✿ अमर है ✿ अवदी है ✿ अखेदी है ✿ अलमी है ✿ अक्षय सुख रूप है ✿ एव ज्ञाता व दृष्टा आदि ✿ सम्परिपूर्ण आत्मीय ✿ गुणा से सम्पन्न है। ✿ अत अपने स्वरूप को समझ। ✿

९ हे सुज्ञान आत्मन् ! तू ध्यान धर कि ✿ समग्र बधनो से विनिर्मुक्त बनू। ✿ आत्मिक स्वरूप के ✿ आदर्शो को सामने रखू। सदा सर्वदा सम्यक् विधि से ✿ जीवन को उन्नत बनाऊ। ✿ यह मेरी शुद्ध अन्तरात्मा की ✿ श्रद्धा प्ररूपणा है ✿ और आचरण की ✿ परिपूर्णता के लिए ✿ शुभ प्रयत्न है।

यह भावना सदैव बनी रहे समत्व भज भूतेषु निर्ममत्व विचिन्तय।
अपाकृत्य मन शल्य भावशुद्धि समाश्रय ॥

नोट उपर्युक्त नव सूत्रो का प्रतिदिन प्रात प्रार्थना के पश्चात् चिन्तन मनन पूर्वक पहले एक बोले फिर सभी सयुक्त रूप से तन्मयता पूर्वक बोले। किन किन शब्दो को कहा तक बोले इस सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर ✿ चिन्ह लगाया गया है।

✿

तुम बिन जीवन शून्य है

प्रतिभा डागा

नाना गुरुवर आराध्य मेरे मेरे जीवन के आधार।
नमूं नमूं नमती चलूं मैं, नमन है मेरा बारम्बार।

श्रद्धा, आस्था और भक्ति के जले दिल में दीप हजार।
गुरु भक्ति में तल्लीन सदा, सदा करूं गुरु का उच्चार।

ज्ञान ध्यान तप संयम सिखाया दिया प्रेम का उपहार।
दीप जलाया इस नन्हे दिल में रोशन बना मेरा संसार।

ना भूल पायेंगे गुरुवर तुमको, मुझपे किये लाखों उपकार।
हे! ईश मेरे हे! मेरे विधाता तुम्हीं मेरे तारणहार।

हर श्वास पे गुरु नाम तुम्हारा गुरुवर मेरे बड़े उदार।
मन मंदिर में तुम्हें बिठाया चढ़ाऊं सदा श्रद्धा के हार।

मेरे हृदय के भावों का इन्य न करो गुरुवर स्वीकार।
तुम बिन जीवन शून्य बना है आओ गुरुवर मन के द्वार।

बीकानेर

चातुर्मास

कुल- ६०, साधुकालीन-२३, आचार्य पदोपरान्त-३७, साधुकाल के चातुर्मास राजस्थान-१९, दिल्ली २, मध्यप्रदेश २, प्रथम फलौदी (राजस्थान) तेईसवा-उदयपुर (राजस्थान)

१	फलौदी (राज)	१९४० ई /वि स १९९७
२	बीकानेर (राज)	१९४१ ई /वि स १९९८
३	ब्यावर (राज)	१९४२ ई /वि स १९९९
४	बीकानेर (राज)	१९४३ ई /वि स २०००
५	सरदारशहर (राज)	१९४४ ई /वि स २००१
६	बगड़ी (राज)	१९४५ ई /वि स २००२
७	ब्यावर (राज)	१९४६ ई /वि स २००३
८	बड़ीसादड़ी (राज)	१९४७ ई /वि स २००४
९	रतलाम (मध्यप्रदेश)	१९४८ ई /वि स २००५
१०	जयपुर (राज)	१९४९ ई /वि स २००६
११	दिल्ली	१९५० ई /वि स २००७
१२	दिल्ली	१९५१ ई /वि स २००८
१३	उदयपुर (राज)	१९५२ ई /वि स २००९
१४	जोधपुर (राज)	१९५३ ई /वि स २०१०
१५	कुचेरा (राज)	१९५४ ई /वि स २०११
१६	बीकानेर (राज)	१९५५ ई /वि स २०१२
१७	गोगोलाव (राज)	१९५६ ई /वि स २०१३
१८	कानोड़ (राज)	१९५७ ई /वि स २०१४
१९	जावरा (म प्र)	१९५८ ई /वि स २०१५
२०	उदयपुर (राज)	१९५९ ई /वि स २०१६
२१	उदयपुर (राज)	१९६० ई /वि म २०१७
२२	उदयपुर (राज)	१९६१ ई /वि स २०१८
२३	उदयपुर (राज)	१९६२ ई /वि स २०१९

आचार्य पदोपरान्त चातुर्मास

कुल-३७, १९६३ ई -१९९९ ई (राज)-२३, म प्र -८, महाराष्ट्र ४ गुजरात-२, प्रथम रतलाम (म प्र) -उदयपुर (राज)

१	रतलाम (म प्र)	१९६३ ई /वि स २०२०
२	इन्दौर (म प्र)	१९६४ ई /वि स २०२१

३	रायपुर (म प्र)	१९६५ ई /वि स २०२२
४	राजनादगाव (म प्र)	१९६६ ई /वि स २०२३
५	दुर्ग (म प्र)	१९६७ ई /वि स २०२४
६	अमरावती (महाराष्ट्र)	१९६८ ई /वि स २०२५
७	मन्दसौर (म प्र)	१९६९ ई /वि स २०२६
८	बड़ीसादड़ी (राज)	१९७० ई /वि स २०२७
९	ब्यावर (राज)	१९७१ ई /वि स २०२८
१०	जयपुर (राज)	१९७२ ई /वि स २०२९
११	बीकानेर (राज)	१९७३ ई /वि स २०३०
१२	सरदारशहर (राज)	१९७४ ई /वि स २०३१
१३	देशनोक (राज)	१९७५ ई /वि स २०३२
१४	नोखामडी (राज)	१९७६ ई /वि स २०३३
१५	गगाशहर-भीनासर (राज)	१९७७ ई /वि स २०३४
१६	जोधपुर (राज)	१९७८ ई /वि स २०३५
१७	अजमेर (राज)	१९७९ ई /वि स २०३६
१८	राणावास (राज)	१९८० ई /वि स २०३७
१९	उदयपुर (राज)	१९८१ ई /वि स २०३८
२०	अहमदाबाद (गुजरात)	१९८२ ई /वि स २०३९
२१	भावनगर (गुजरात)	१९८३ ई /वि स २०४०
२२	बारीवली-मुम्बई (महाराष्ट्र)	१९८४ ई /वि स २०४१
२३	घाटकोपर-मुम्बई (महाराष्ट्र)	१९८५ ई /वि स २०४२
२४	जलगाव (महाराष्ट्र)	१९८६ ई /वि स २०४३
२५	इन्दौर (म प्र)	१९८७ ई /वि स २०४४
२६	रतलाम (म प्र)	१९८८ ई /वि स २०४५
२७	कानोड़ (राज)	१९८९ ई /वि स २०४६
२८	चित्तौड़गढ़ (राज)	१९९० ई /वि स २०४७
२९	पिपलियाकला (राज)	१९९१ ई /वि स २०४८
३०	उदयरामसर (राज)	१९९२ ई /वि स २०४९
३१	देशनोक (राज)	१९९३ ई /वि स २०५०
३२	नोखामडी (राज)	१९९४ ई /वि स २०५१
३३	बीकानेर (राज)	१९९५ ई /वि स २०५२
३४	गगाशहर-भीनासर (राज)	१९९६ ई /वि स २०५३
३५	ब्यावर (राज)	१९९७ ई /वि स २०५४
३६	उदयपुर (राज)	१९९८ ई /वि स २०५५
३७	उदयपुर (राज)	१९९९ ई /वि स २०५६

चातुर्मासिक उपलब्धिया

१९४०-१९९९

एक- फलौदी-१९४०, साधु जीवन का प्रथम वर्षावास, तितिक्षा/क्षमाशीलता का सघन अभ्यास सयम साधना, अप्रमत्त स्वाध्याय, अ-क्रोध तप ।

दो- बीकानेर-१९४१, आत्म शोधन, सेवा, ज्ञान, स्वास्थ्य की साधना, वयोवृद्ध सतो की सेवा परिचर्या, शरीर गौण, साधना मुख्य धृति, विनयशीलता और सहिष्णुता की मौन उपासना ।

तीन- ब्यावर-१९४२, अध्ययन के साथ प्रवचन दृढता और अविचलता का विकास ।

चार- बीकानेर-१९४३, सिद्धान्त कौमुदी का अध्ययन प्रज्ञ/मनीषी सतो का सत्सग ।

पाच- सरदारशहर-१९४४ सिद्धान्त और आचरण की दूरिया अनवरत कम ।

छह बगड़ी-१९४५, कथनी-करनी में एकरूपता का विलक्षण विकास ।

सात ब्यावर-१९४६, गुरु-सेवा, अध्ययन, साधना ।

आठ- बड़ीसादड़ी-१९४७, गुरुसेवा, सयम, स्वाध्याय, सत सत्सग ।

नौ- रतलाम-१९४८, साधु-मर्यादा कसौटी पर, फसी हुई भेड़ को सहारा, चातुर्मास समाप्ति पर इन्दौर मे सर्वोदयी सत विनोबा भावे से भेट, विनोबाजी ने कहा आप सोचते होंगे कि जैनियो की सख्या बहुत कम है, किन्तु मेरी धारणा के अनुसार जैन नाम धरने वालो की सख्या भले ही कम हो, लेकिन जैनधर्म के मौलिक सिद्धान्त दूध-मिश्री की तरह दुनिया की सभी विचार-धाराओ में घुलते जा रहे है।

दस- जयपुर-१९४९, न्याय (तर्कशास्त्र का अध्ययन, सिद्धान्त और व्यवहार में दृढता मूर्च्छा की उत्तरोत्तर अनुपस्थिति, जयपुर-हिण्डौन मार्ग पर करौली के आस पास धर्मपाल प्रवृत्ति का बीजाकुरण) ।

ग्यारह - दिल्ली १९५०, गुरुदेव का सघन सान्निध्य, रूग्णता, जिह्वाविजय ।

बारह- दिल्ली-१९५१, घाणेराव/सादड़ी मे साधु-सम्मेलन का सूत्र सचालन, सब्जीमडी म वर्षावास, पूर्ण स्वास्थ्य लाभ ।

तरह उदयपुर १९५२, इन्जेक्शन लगाना सीखा ताकि सकटापन्न स्थिति में गुरुदेव की परिचर्या मे कोई कमी न हो गुरुदेव का अम्लान वैयावृत्य ।

चौदह- जोधपुर-१९५३, गुरुसेवा अग्लान सेवासुश्रूषा, अनन्य निष्ठा अविचल आस्था, ज्ञान ध्यान ।

पन्द्रह- कुचेरा-१९५४, गुरुदव को सहयोग ।

सोलह- बीकानर-१९५५ आचार्य श्री की सेवा सुश्रूषा ।

सत्रह- गोगोलाव-१९५६ गुरुदव का सान्निध्य, उनकी सन्निष्ठ सेवा, स्वाध्याय ।

अठारह- कानोड़-१९५७, गुरुदेव को सहयोग, सेवा-सुश्रूषा साधना अध्ययन ।

उन्नीस- जावरा १९५८, गुरुदव का सानिध्य उनकी अनन्य सुश्रूषा, स्वाध्याय ।

बीस- उदयपुर-१९५९, निष्काम चित्त से गुरु का वैयावृत्य, अहर्निश जागृत साधना ।

इक्कीस- उदयपुर-१९६०, गुरु की सेवा-सुश्रूषा, सयम-साधना, स्वाध्याय, मनन-चितन ।

बाईस- उदयपुर-१९६१, गुरु द्वारा चतुर्विध सघ की सुव्यवस्था का उत्तरदायित्व प्रदान, १८ अप्रैल १९६१/ अक्षय तृतीया को सार्वजनिक घोषणा, निष्काम मनीषा और अविचल आस्था क धनी पर श्रमण-सस्कृति की रक्षा और उसके अभिभावन की गहन जिम्मेवारी, सयम-साधना के साथ सामाजिक का मौन उद्भव ।

तेईस- उदयपुर-१९६२, आचार्य श्री हुक्मीचद जी की पाट-परम्परा का पुनरूज्जीवन, २२ सितम्बर १९६२ को युवाचार्य घोषित , ३० सितम्बर को युवाचार्य-पद की चादर से अलकृत चादर-प्रदान-समारोह में पूज्या माता श्रीमती शृगार बाई की रोमाचक उपस्थिति, उनका यह अजर-अमर वाक्य अन्नदाता ई घणा भोला टाबर है, या पर अतरो बोयो मती नाको (प्रभो यह बहुत भोला-भाला लड़का है इस पर इतनी बड़ी जिम्मेवारी न डालिये) चादर की गौरव गरिमा को स्पष्ट करते हुए युवाचार्य ने कहा- यह चादर भी उज्ज्वल/खादी की हो कर सादी है'। सादगी स्वतन्त्रता की द्योतक है । पूज्य गुरुदेव फरमाया करते थे कि सादगी स्वतत्रता है और फैशन-फासी अत भारत को इस सादगी की ओर विशिष्ट ध्यान देना चाहिए, विलक्षण, नाड़ी-ज्ञान, ९ जनवरी १९६३ का गुरुदव की नाड़ी मे आशकित परिवर्तन सथारा पच्चखान का आयोजन, आचार्य श्री गणशीलालजी का महाप्रयाण आचार्य-पद' पर प्रतिष्ठित प्रथम शिष्य सेवन्त मुनि जी म सा , अधविश्वास की मिथ्या/अधी परम्पराओ का उन्मूलन ।

चौबीस रतलाम १९६३, जावद जावरा और रतलाम सघो के बीच समरस सबधो की स्थापना, स्वरूप बोध के प्रति विशेष जागृति ऐतिहासिक सामाजिक क्राति का सूत्रपात, गुजराती बलाई समाज के मुखिया सीतारामजी बलाई से भेट, धर्मपाल-प्रवृत्ति का श्री गणेश, गुजराती बलाइयो क छोटे छोटे गावो मे सघन विहार, लगभग १५०० बलाई-कुटुम्बो क लगभग १० ००० व्यक्तियो के जीवन म सामाजिक क्राति की प्रखर किरण का प्रवेश, हृदय परिवतन की जीवन्त मिसाल, आचार्यश्री न कहा- आप मास मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, आत्महत्या आदि दुर्व्यसनो का प्राणपण स पूर्णरूपेण त्याग करे तो उन्नति हो सकती है । बलाई जैन बने और उन्होंने उनका उपदेश मान कर प्रगति की, आज उनकी सख्या लगभग एक लाख है, सब सुसमृद्ध और प्रसन्न है ।'

पच्चीस इन्दौर-१९६४ रचनात्मक/अहिंसक क्रान्ति क प्रवर्तक सत का अभिनव रूप अविस्मरणीय वाक्य-मणि- किसी भी बात को हमे मान-सम्मान का विषय नहीं बनाना चाहिए ।

छब्बीस रायपुर-१९६५, आध्यात्मिक उत्क्रान्ति और आत्म शोधन का चातुर्मास ।

सत्ताईस राजनादगाव १९६६, पाच मास का चातुर्मास, आत्म शोधन, सामाजिक क्रान्ति का सातत्य तीर्थ शब्द की तर्कसगत व्याख्या करा - असली तीर्थ चार है - साधु साध्वी श्रावक श्राविका ।

अट्ठाईस दुर्ग १९६७ श्रावकीय जिज्ञासाओ क सटीक समाधान, आत्म जागृति, सामाजिक क्रान्ति की निरन्तरता कायम ।

उन्तीस अमरावती-१९६८, सम्यक्त्व-प्रतिपादन, उत्पाद व्यय, ध्रौव्य विषय पर गूढ प्रवचन ।

तीस मन्दसौर १९६९, सद्भावना का प्रसार, नये परिवश का सृजन ।

इकत्तीस बड़ीसादड़ी-१९७०, दीक्षाए व्यसन-मुक्ति, सामाजिक क्रान्ति की उन्नीस प्रतिज्ञाओं के अमल क लिए सत्रह गावो के प्रतिनिधियो का चयन, महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाए है क्र २,३ ४,४ ५,१३ और १७ विवाह मे कोई सौदेबाजी नही होगी, मृत्यु के बाद एक मास स अधिक शोक नही रखा जाएगा, धर्मस्थान मे सादा वेशभूषा मे जाएगे - प्रवचन मे मौन रखेगे, विवाह आदि अवसरो हेतु धार्मिक पुस्तकों का यथाशक्ति पठन-पाठन करेंगे ।

बत्तीस ब्यावर-१९७१, विघटन समाप्त एकता स्थापित ध्वनि विस्तारक यत्र' के बारे मे विज्ञान के-ठोस सदर्भो मे जानकारी, भौतिकी के प्रख्यात विद्वान डॉ दौलतसिह कोठारी की सहमति अपने निश्चय पर बरकरार ।

तैतीस जयपुर १९७२, समता दर्शन का शखनाद ।

चौतीस बीकानेर १९७३, क्रान्ति का पुनरीक्षण, आत्म शोधन, मुमुक्षुओ को दिशादृष्टि ।

पैतीस सरदारशहर-१९७४, एकता की ओर नया कदम, कहा- अगर सम्वत्सरी मनाने के बारे मे सपूर्ण जैन समाज' का एक मत बन सके तो बड़ी उपलब्धि हो सकगी, सावत्सरिक एकता की दृष्टि से अगर हम अपनी परम्परा भी छोड़नी पड़े तो मै किसी पूर्वाग्रह को आड़े नही आने दूगा ।''

छत्तीस देशनोक-१९७५, बुद्धिजीवियो को प्रेरणा और दिशादर्शन, आचार-विचार में धर्ममय परिवर्तन की रचनात्मक पहल ।

सैतीस नोखामडी-१९७६, शारीरिक अस्वस्थता, प्राकृतिक उपचार समतादर्शन की व्याख्या, भोपालगढ में आचार्य श्री हस्तीमलजी से ऐतिहासिक मिलन ।

अड़तीस गगाशहर भीनासर-१९७७, दीक्षाए, धर्मोपकार क कार्य ।

उन्चालीस जोधपुर-१९७८, नगर प्रवेश से पूर्व उपनगर सरदारपुरा में पचसूत्री उपदेश, जन-जागृति और सामाजिक क्रान्ति के लिए रचनात्मक दृष्टिकोण की प्रस्तुति, पाच सूत्र- समानता में आस्था गुण कर्म आधारित वर्गीकरण मे भरोसा, व्यक्तिगत जीवन-शुद्धि का अभ्यास गरीब-अमीर की विभाजक सामाजिक कुरीतियो का परित्याग, नियमित दिनचर्या-पूर्वक समता भाव की साधना ।

चालीस अजमेर-१९७९ धार्मिक, सामाजिक आध्यात्मिक सास्कृतिक शैक्षणिक उत्क्राति की ठोस पहल, अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के उपलक्ष्य मे बाल शिक्षा पर अखिल भारतीय सगोष्ठी, लेखक भी सम्मिलित ।

इकतालीस राणावास-१९८०, आध्यात्मिकता का नव प्रस्फुटन, चिन्तन के नौ सूत्रो का प्रवर्तन सूत्र है-चैतन्य चिन्तन यह कि कौन हू, कहा स हू, किसलिए हू, क्या कर रहा हू, मै ज्ञाता-द्रष्टा हू, दुर्लभ मानव देह का लक्ष्य क्या है, समभाव का चिन्तन, अमानवीय भाव और कटु वचनो का त्याग, विभाव त्याग, स्वभाव बोध, सुदेव, सुगुरु सुधर्म अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और स्याद्वाद आत्मोन्नति के मूल है, स्व-रूप की पहचान, सम्यक् विधि से जीवन की उन्नति ।

उदयपुर-१९८१, जन्मभूमि दाता में आगमन, ज्ञान साधना/तपाराधना, समीक्षण ध्यान के प्रायोगिक पक्ष का विकास त्रिमुखीन अभियान की प्रेरणा १ ब्रह्मचर्यव्रत-अभियान २ दहेज-उन्मूलन-

अभियान, ३ आदिवासी जागरण तथा दुर्व्यसन मुक्ति-अभियान, आगम, अहिंसा, समता एव प्राकृत सस्थान की स्थापना ।

तैतालीस — अहमदाबाद-१९८२, गुजराती सम्प्रदाया के आचार्य/सत-सती से मिलन, श्रावको द्वारा छहसूत्री योजना की प्रस्तुति, समीक्षण ध्यान पर प्रवचन लगभग ७ पुस्तके गुजराती भाषा में प्रकाशित, ये है-समता दर्शन और व्यवहार, समीक्षण ध्यान और प्रयोग-विधि, साधना के सूत्र, आचार्य नानेश एक परिचय समता क्रान्ति अनुभूति नो आलोक, आचार्य श्री नानश गुजरात प्रवास एक झलक ।

चवालीस — भावनगर-१९८३, अनुशासन की प्रेरणा, धर्मोत्साह, तपाराधना, कृष्णकुमार सोसायटी और मेहता शेरी के सघा के मनोमालिन्य की समाप्ति, त्याग-तपस्या में वृद्धि, आगमिक विषयो पर सारपूर्ण प्रवचन ।

पैतालीस — बोरीवली-मुम्बई १९८४, उपनगरो में सतत प्रभावी विहार, विश्वशाति, धर्म का सही स्वरूप, श्रमण-सस्कृति की सुदृढ सुरक्षा आदि विषयो पर प्रवचन राणावास वर्षावास (१९८०) से पूर्व बिठोड़ा ग्राम से प्रारम्भ जिणधम्मो' की सम्पूर्ति-इन्दौर से प्रकाशन, स्वाध्याय का शाबाशी ।

छियालीस — घाटकोपर-मुम्बई-१९८५ सिद्धान्तनिष्ठ, मौलिक, यथार्थपरक आध्यात्मिक/धार्मिक विषयो की गूढ विवेचना निर्ग्रन्थ श्रमण-सस्कृति को गहरी नीव दने का प्रयत्न, लाउडस्पीकर के विवादास्पद विषय पर मौलिक/युक्तियुक्त विचार ।

सैतालीस — जलगाव-१९८६, सस्कार-क्रान्ति अभियान की प्राथमिक तैयारी, स्वाध्याय तपाराधना ।

अड़तालीस — इन्दौर-१९८७, सस्कार-क्रान्ति अभियान का सफल सूत्रपात, चातुर्मास को सत्रह हफ्ता (जुलाई से नवम्बर) में बाटकर सस्कार-क्रान्ति के बहुविध पक्षा पर प्रवचन, अभियान के क्षेत्र-महामत्र नवकार, भाषा-विवेक, कर्त्तव्य-पालन, स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य, पर्यावरण-सुरक्षा, सुसस्कार-धन, सौन्दर्य और सुरुपता रक्त-रजित सौन्दर्य प्रसाधन, गर्भपात महापाप, कषाय विसर्जन, प्रत्याख्यान, आत्मशुचिता दान का व्यवसायीकरण, विषमता/कुरीतिया सामायिक, आतिशबाजी, समता-समाज-रचना, तीर्थकर' के साधुमार्ग विशेषाक का प्रकाशन ।

उनपचास — रतलाम-१९८८, सस्कार-क्रान्ति अग्रसर दीक्षाए तपाराधन, ज्ञान-ध्यान ।

पचास — कानोड़-१९८९ बुद्धिजीवियो को सस्कार-क्रान्ति की प्रेरणा, आगम-पुरुष' की परिकल्पना, शाकाहार-अभियान, सस्कार-क्रान्ति पुरस्सर ।

इक्यावन — चित्तौड़गढ-१९९०, जैन तत्त्व ज्ञान स्नातक शिविर, समीक्षण ध्यान क प्रयोग, व्यसन मुक्ति आभयान मे तेजी, बहुविध धार्मिक/सामाजिक विषया पर प्रवचन, स्मरणीय वाक्य- क्षणभगुर शरीर को गौण करे । शरीर पोशाक है, जिसके फटने पर या जीर्ण हाने पर सताप कैसा ? पोशाक पर क्या रोयें ? रूढिया से हटे । आत्मान्मुख बने । परिवर्तन का स्वागत कर ।'

तिरेपन — उदयरामसर-१९९२ 'आगम पुरुष का लोकार्पण वर्षावास जारी ।

चौवन — देशनोक-१९९३, सस्कार क्रान्ति समता समाज रचना समता शिक्षा सवा सस्थान की स्थापना ।

पचपन — नोखामडी-१९९४ धार्मिक सामाजिक सवा ज्ञान का उदय, नवनिर्माण ।

छप्पन — बीकानेर १९९५ समता स विपटन, सहनशक्ति व दूरदर्शी साहस परिचय देते हुए सघ को गतिमान रखा ।

सत्तावन	गंगाशहर १९९६, वीर संघ धर्मोपचार योजना, व्यसन मुक्ति वर्ष की घोषणा, लाखों व्यसन मुक्त हुए।
अठावन	ब्यावर-१९९७, समता से उपसर्ग सहन सामायिक प्रतिक्रमण वर्ष घोषणा ३००० के करीब प्रतिक्रमण
उनसठ	उदयपुर-१९९८, स्वास्थ्य में गिरावट, स्वाध्याय वर्ष की घोषणा, बहुजनों को स्वाध्याय सेवा देकर ज्ञानार्जन।
साठ	उदयपुर-१९९९ समता इंटरनेशनल की घोषणा अमर साधना, महाप्रयाण।

भाव भरी श्रद्धांजलि स्वीकारें

सम्पतलाल सुराना

नाना नाम बहु मोटा काम, मेवाड़ की मणि ।
श्रमणोपासक समता संघ के कहाये धणी ॥

हजारों हजार को दी थी, धर्म की शिक्षा ।
तीन सौ से अधिक मुमुक्षों को दी दीक्षा ॥

अनगिनत को हिंसा से हटा अहिंसा से जोड़ा ।
इकसठ वर्षीय दीक्षा पर्याय क्या यह है थोड़ा ॥

हरदम अतिशयधारी ज्योति को याद करता हूं ।
हर पल अपने पुण्य का घड़ा भरता हूं ॥

हरदम हृदय में होकर भी नहीं पास हमारे ।
भावभरी श्रद्धांजलि गणिवर अब स्वीकारें ॥

इन्दौर

सपर्क/माध्यम

उपाध्याय प्रकाश रतलाम-१९८८
उपाध्याय, सिद्धनाथ धार-१९६३
कान्तिऋषिजी आचार्य, स्था सम्प्र गुज खम्भात, कादावाड़ी, बम्बई-१९८५
कुरैशी मुजीब, नागदा १९८८
कोठारी, दौलतसिह (डा), ब्यावर-१९७१, राणावास-१९८०
कोठारी, सुभाष रतलाम-१९८८
कोठारी, हिम्मतसिह, रतलाम १९८८
गगवाल मिश्रीलाल, इन्दौर-१९६४
चन्द्रा, के (डा) अहमदाबाद-१९८२
चम्पक मुनि आचार्य स्था सम्प्र गुज बरवाला, अहमदाबाद-१९८२
चौपड़ा जसराज नाथद्वारा-१९९०
जैन ए क मन्दसौर-१९८१
जैन नेमीचन्द (डा) अजमर-१९७१
जैन महावीरसरण (डा) अजमेर-१९७१
जैन, प्रमसुमन (डा) अजमर-१९७१
जैन आर सी (डा) उदयपुर-१९८१
जैन ललित इन्दौर-१९८७
जैन सागरमल (डा) रतलाम १९८८
जैन सुरश दादा जलगाव १९८६
जाशी, हरिदेव, नाखामडी १९७६
टाटिया मन्नालाल (डा) शाहदा (महाराष्ट्र) १९८७
देसाई, हितन्द्र अहमदाबाद १९८२
देशलहरा, मूलचन्द रतलाम-१९८८
देवगोड़ा, पूर्व प्रधानमत्री चित्तौड़गढ १९९८
नाहटा, नरेन्द्र, मन्दसौर-१९८९
निलगेकर शिवाजीराव पाटी घाटकापर, मुम्बई-१९८५
पटवा सुन्दरलाल पीपलिया कला-१९९१
पाटस्कर इन्दौर १९६४
पाटील, वसत दादा भिवडी-१९८४
पारीक रामलाल भाई, अहमदाबाद-१९८२
बुन्देला मोहनसिह, नागदा-१९८८
वैद चन्दनमल भीनामर-१९७२
वैरागी बालकवि मन्दसौर-१९६९
भायानी सतीश गाधरा-१९८४

सत्तावन गंगाशहर-१९९६ वीर संघ धर्मोपचार योजना व्यसन मुक्ति वर्ष की घोषणा लाखों व्यसन मुक्त हुए।

अठावन ब्यावर-१९९७, समता से उपसर्ग सहन सामायिक प्रतिक्रमण वर्ष घोषणा, ३००० के करीब प्रतिक्रमण

उनसठ उदयपुर-१९९८, स्वास्थ्य में गिरावट स्वाध्याय वर्ष की घोषणा बहुजनो को स्वाध्याय सेवा देकर ज्ञानार्जन।

साठ उदयपुर-१९९९, समता इंटरनेशनल की घोषणा, अमर साधना, महाप्रयाण।

भाव भरी श्रद्धांजलि स्वीकारे

सम्पतलाल सुराना

नाना' नाम बहु मोटा काम मेवाड़ की मणि।
श्रमणोपासक समता संघ के कहाये धणी॥

हजारों हजार को दी थी, धर्म की शिक्षा।
तीन सौ से अधिक मुमुक्षों को दी दीक्षा॥

अनगिनत को हिंसा से हटा अहिंसा से जोड़ा।
इकसठ वर्षीय दीक्षा पर्याय क्या यह है थोड़ा॥

हरदम अतिशयधारी ज्योति को याद करता हूं।
हर पल अपने पुण्य का घड़ा भरता हूं॥

हरदम हृदय में होकर भी नहीं पास हमारे।
भावभरी श्रद्धांजलि गणिवर अब स्वीकारें॥

इन्दौर

सपर्क/माध्यम

उपाध्याय, प्रकाश रतलाम-१९८८
उपाध्याय सिद्धनाथ, धार-१९६३
कान्तिऋषिजी, आचार्य, स्था सम्प्र गुज खम्भात, कादावाड़ी, बम्बई-१९८५
कुरैशी मुजीव नागदा-१९८८
कोठारी, दौलतसिह (डा) ब्यावर १९७१ राणावास-१९८०
कोठारी सुभाष, रतलाम-१९८८
कोठारी हिम्मतसिह रतलाम १९८८
गगवाल मिश्रीलाल इन्दौर-१९६४
चन्द्रा, के (डा) अहमदाबाद-१९८२
चम्पक मुनि आचार्य स्था सम्प्र गुज बरवाला अहमदाबाद-१९८२
चौपड़ा जसराज नाथद्वारा-१९९०
जैन, ए क मन्दसौर-१९८१
जैन, नेमीचन्द (डा) अजमर-१९७१
जैन महावीरसरण (डा) अजमर-१९७१
जैन, प्रमसुमन (डा), अजमर-१९७१
जैन, आर सी (डा), उदयपुर-१९८१
जैन ललित इन्दौर १९८७
जैन सागरमल (डा) रतलाम-१९८८
जैन सुरेश दादा, जलगाव १९८६
जोशी हरिदेव नोखामडी १९७६
टाटिया मन्नालाल (डा) शाहदा (महाराष्ट्र) १९८७
देसाई हितन्द्र, अहमदाबाद, १९८२
देशलहरा मूलचन्द रतलाम १९८८
देवगोड़ा, पूर्व प्रधानमत्री चित्तौड़गढ १९९८
नाहटा, नरेन्द्र मन्दसौर-१९८९
निलगेकर, शिवाजीराव पाटी घाटकोपर, मुम्बई-१९८५
पटवा सुन्दरलाल पीपलिया कला-१९९१
पाटस्कर, इन्दौर-१९६४
पाटील बसत दादा भिवडी-१९८४
पारीक रामलाल भाई, अहमदाबाद १९८२
सुन्दला, माहनसिह नागदा-१९८८
बैद, चन्दनमल, भीनासर-१९७२
वैरागी, बालकवि, मन्दसौर १९६९
भायानी सतीश, गाधरा-१९८४

महाराजा, करणीसिह (सासद) १९७७
मालवणिया, दलसुख भाई (प) अहमदाबाद-१९८२
व्यास, गिरिजा (डा) उदयपुर, १९९९
विद्यानन्दजी, आचार्य, बोरीवली, मुम्बई-१९८४
बोरा, मोतीलाल, इन्दौर-१९८७
सचेती कान्तिलाल हस्तीमल (डा), पुणे-१९८६
सरूपरिया, हिम्मतसिह (डा), उदयपुर-१९८१
सिघवी, आर वी , अहमदाबाद-१९८२
सिघवी, लक्ष्मीमल्ल (डा), सासद
सुखाड़िया, मोहनलाल (मुख्यमत्री,राज), मन्दसौर-१९६९
सुराना, आर सी (डा), भावनगर-१९८३
सेठी, प्रकाशचन्द्र, इन्दौर १९६४
सोनेजी, अहमदाबाद-१९८२
सोलकी, शिवभानुसिह, मनासा-१९८४
सौगाणी, कमलचन्द (डा), उदयपुर-१९८१
शक्तावत, गुलाबसिह, कानोड़-१९८९
शेखावत भैरोसिह (मुख्यमत्री, राज)-१९९४
शर्मा, गौतम, इन्दौर-१९६४
शर्मा, श्रीवल्लभ, इन्दौर-१९८७
शास्त्री, गजानन (डा), धारा-१९६३
शास्त्री, विष्णुकुमार (वैद्य), बड़नगर-१९६३
शान्तिलालजी, आचार्य, स्था सम्प्र दरियापुरी आठ कोठी, अहमदाबाद १९८२
श्रीमाल, मोहनलाल, कानोड़-१९८२
श्रेणिकभाई कस्तूरभाई, अहमदाबाद १९८२
हस्तीमलजी, आचार्य, स्थानकवासी सम्प्रदाय भोपालगढ-१९७६

कौन हो कैसा

लालचंद सुराना

भाई हो भरत जैसा
माता हो मदालसा जैसी,
पिता हो हरिश्चन्द्र जैसा
पुत्र हो श्रवण कुमार जैसा
भक्त हो हनुमान जैसा
प्रतिज्ञा हो भीष्म पितामह जैसी,
मित्रता हो कृष्ण सुदामा जैसी ।

दानवीर हो कर्ण जैसा
त्याग हो पन्नाधाय जैसा
बलिदान हो दधीचि जैसा,
आत्मबली हो तीर्थंकर जैसा
ज्योतिर्धर हो आचार्य जवाहर जैसा
ममता हो गुरु नानेश जैसी
गुरु हो हमारे रामेश जैसा,
शिष्य हो एकलव्य जैसा ।

आचार्य प्रवर श्री नानेश की नेश्राय मे विचरण करने वाले एव दीक्षित सत सतियाजी म सा

मुनिराज

क्रम	नाम	ग्राम	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थान
१	श्री ईश्वरचन्दजी म सा	देशनोक	स १९९९ मिगसर कृष्णा ४	भीनासर
२	श्री इन्द्रचन्दजी म सा	माड्पुरा	स २००२ वैशाख शुक्ला ६	गोगोलाव
३	श्री सेवन्तमुनिजी म सा	कन्नौज	स २०१९ कार्तिक शुक्ला ३	उदयपुर
४	श्री अमरचन्दजी म सा	पीपलिया	स २०२० वैशाख शुक्ला ३	पीपलिया
५	श्री शान्तिमुनिजी म सा	भदेसर	स २०१९ कार्तिक शुक्ला १	भदेसर
६	श्री कवरचन्दजी म सा	निकुम्भ	स २०१९ फाल्गुन शुक्ला ५	बड़ीसादड़ी
७	श्री प्रेममुनिजी म सा	भोपाल	स २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनादगाव
८	श्री पारसमुनिजी म सा	दलोदा	स २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनादगाव
९	श्री सम्पतमुनिजी म सा	रायपुर	स २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनादगाव
१०	श्री रतनमुनिजी म सा	भाड़ेगाव		सोनार
११	श्री धर्मेशमुनिजी म सा	मद्रास	स २०२३ फाल्गुन कृष्णा ९	रायपुर
१२	श्री रणजीतमुनिजी म सा	कजार्डा	स २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
१३	श्री महेन्द्रमुनिजी म सा	गोगुन्दा	स २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
१४	श्री सौभागमलजी म सा	बड़ावदा	स २०२८ कार्तिक शुक्ला १३	ब्यावर
१५	श्री रमेशमुनिजी म सा	उदयपुर	स २०२९ कार्तिक शुक्ला १३	ब्यावर
१६	श्री वीरेन्द्रमुनिजी म सा	आष्टा	स २०२९ माघ शुक्ला २	दशनाक
१७	श्री हुलासमलजी म सा	गगाशहर	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
१८	श्री विजयमुनिजी म सा	बीकानेर	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
१९	श्री नरेन्द्रमुनिजी म सा	बम्बोरा	स २०३० माघ शुक्ला ५	सरदारशहर
२०	श्री ज्ञानेन्द्रमुनिजी म सा	ब्यावर	स २०३१ जेठ शुक्ला ५	गोगोलाव
२१	श्री बलभद्रमुनिजी म सा	पीपलिया	स २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
२२	श्री पुष्पमुनिजी म सा	मडी डबवाली	स २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
२३	श्री रामलालजी म सा	देशनोक	स २०३१ माघ शुक्ला १२	दशनोक
२४	श्री प्रकाशचन्दजी म सा	देशनाक	स २०३२ आश्विन शुक्ला ५	देशनाक
२५	श्री गौतममुनिजी म सा	बीकानेर	स २०३२ मिगसर शुक्ला १३	बीकानेर
२६	श्री प्रमोदमुनिजी म सा	हांसी	स २०३३ माघ कृष्णा १	भीनासर
२७	श्री प्रशममुनिजी म सा	गगाशहर	स २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
२८	श्री मूलचन्दजी म सा	नाखामडी	स २०३४ मिगसर शुक्ला ६	नाखामडी
२९	श्री ऋषभमुनिजी म सा	बम्बोरा	स २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर

३०	श्री अजितमुनिजी म सा	रतलाम	स २०३५ आश्विन शुक्ला २	जोधपुर
३१	श्री जितेशमुनिजी म सा	पूना	स २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
३२	श्री पद्मकुमारजी म सा	नीमगावखेड़ी	स २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
३३	श्री विनयमुनिजी म सा	ब्यावर	स २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
३४	श्री सुमतिमुनिजी म सा	नोखामडी	स २०३७ पौष शुक्ला ३	भीम
३५	श्री चन्द्रेशमुनिजी म सा	फलोदी	स २०३८ वैशाख शुक्ला ३	गगापुर
३६	श्री धमन्द्रकुमारजी म सा	साकरा	स २०३९ चैत्र शुक्ला ३	अहमदाबाद
३७	श्री धीरजकुमारजी म सा	जावद	स २०४० फाल्गुन शुक्ला २	रतलाम
३८	श्री कातिकुमारजी म सा	नीमगावखेड़ी	स २०४० फाल्गुन शुक्ला २	रतलाम
३९	श्री विवेकमुनिजी म सा	उदयपुर माडपुरा	स २०४५ माघ शुक्ला १०	मन्दसौर
४०	श्री अशाकमुनिजी म सा	जावरा	स २०३४ आसोज सुदी २	गगाशहर भीनासर
४१	श्री रत्नेशमुनिजी म सा	कानोड़	दिनाक ६ ५ ९०	कानोड़
४२	श्री सभवमुनिजी म सा	बीकानेर	दिनाक २ १ ९१	चित्तौड़गढ
४३	श्री इन्द्रेशमुनिजी म सा	चिकारड़ा	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
४४	श्री राजशमुनिजी म सा	फाजिल्का	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
४५	श्री अभिनन्दनमुनिजी म सा	नोखा	दिनाक ६ १२ ९२	बीकानेर
४६	श्री निश्चलमुनिजी म सा	सामेसर	दिनाक २४ २ ९४	देशनोक
४७	श्री विनोदमुनिजी म सा	विल्लुपुरम्	दिनाक २४ २ ९४	देशनोक
४८	श्री अक्षयमुनिजी म सा	असावरा	दिनाक १३ ५ ९४	देशनोक
४९	श्री पुष्यमित्रमुनिजी म सा	बम्बोरा	दिनाक ७ ५ ९५	बम्बोरा
५०	श्री राजभद्रमुनिजी म सा	रठाजणा		प्रतापगढ
५१	श्री हेमगिरीजी म सा	देशनोक	दिनाक ३० ६ ९५	देशनोक
५२	श्री अनन्तमुनिजी म सा	सवाईमाधोपुर	दिनाक २० २ ९७	बीकानेर
५३	श्री अचलमुनिजी म सा	रानीतराई (खीचन)	दिनाक २५ ५ ९७	नीमच

महासतियाजी म सा

क्रम	नाम	ग्राम	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थान
१	श्री सिरेकवरजी म सा	मोजत	स १९८४	साजत
२	श्री वल्लभकवरजी म सा (प्रथम)	जावरा	स १९८७ पौष शुक्ला २	निसलपुर
३	श्री पानकवरजी म सा (प्रथम)	उदयपुर	स १९९१ चैत्र शुक्ला १३	भींडर
४	श्री सम्पतकवरजी म सा (प्रथम)	रतलाम	स १९९२ चैत्र शुक्ला १	रतलाम
५	श्री गुलाबकवरजी म सा (प्रथम)	खाचरौद	स १९९२	खाचरौद
६	श्री केसरकवरजी म सा	बीकानेर	स १९९५ ज्येष्ठ शुक्ला ४	बीकानेर
७	श्री गुलाबकवरजी म सा (द्वितीय)	जावरा	स १९९७	खाचरौद
८	श्री धापूकवरजी म सा (प्रथम)	भीनासर	स १९९८ भाद्रवा कृष्णा ११	भीनासर
९	श्री ककूकवरजी म सा	देवगढ	स १९९८ वैशाख शुक्ला ६	देवगढ
१०	श्री पेपकवरजी म सा	बीकानेर	स १९९९ ज्येष्ठ कृष्णा ७	बीकानेर
११	श्री नानूकवरजी म सा	देशनोक	स १९९० आश्विन शुक्ला ३	देशनोक
१२	श्री धापूकवरजी म सा	चिकारड़ा	स २००१ चैत्र शुक्ला १३	भीलवाड़ा
१३	श्री कचनकवरजी म सा	सवाईमाधोपुर	स २००१ वैशाख कृष्णा २	ब्यावर
१४	श्री सूरजकवरजी म सा	बिरमावल	स २००२ माघ शुक्ला १३	रतलाम
१५	श्री फूलकवरजी म सा	कुस्तला	स २००३ चैत्र शुक्ला ९	सवाईमाधोपुर
१६	श्री भवरकवरजी म सा (प्रथम)	बीकानेर	स २००३ वैशाख कृष्णा १०	बीकानेर
१७	श्री सम्पतकवरजी म सा	जावरा	स २००३ आश्विन कृष्णा १०	ब्यावर पुरानी
१८	श्री सायरकवरजी म सा (प्रथम)	केशरसिंहजी का गुड़ा	स २००४ चैत्र शुक्ला २	राणावास
१९	श्री गुलाबकवरजी म सा (द्वितीय)	उदयपुर	स २००६ माघ शुक्ला १	उदयपुर
२०	श्री कस्तूरकवरजी म सा (प्रथम)	नारायणगढ	स २००७ पौष शुक्ला ४	खाचरौद
२१	श्री सायरकवरजी म सा (द्वितीय)	ब्यावर	स २००७ ज्येष्ठ शुक्ला ५	ब्यावर
२२	श्री चादकवरजी म सा	बीकानेर	स २००८ फाल्गुन कृष्णा ८	बीकानेर
२३	श्री पानकवरजी म सा (द्वितीय)	बीकानेर	स २००९ ज्येष्ठ कृष्णा ६	बीकानेर
२४	श्री इन्द्रकवरजी म सा	बीकानेर	स २००९ ज्येष्ठ कृष्णा ५	बीकानेर
२५	श्री बदामकवरजी म सा	मेड़ता	स २०१० ज्येष्ठ कृष्णा ३	बीकानेर
२६	श्री सुमतिकवरजी म सा	बज्जू	स २०११ वैशाख शुक्ला ५	भीनासर
२७	श्री इचरजकवरजी म सा	बीकानेर	स २०१३ आश्विन शुक्ला १०	गोगोलाव
२८	श्री चन्द्राकवरजी म सा	कुकडेश्वर	स २०१४ फाल्गुन शुक्ला ३	कुकडेश्वर
२९	श्री सरदारकवरजी म सा	अजमेर	स २०१५ आश्विन शुक्ला १३	उदयपुर
३०	श्री शाताकवरजी म सा (प्रथम)	उदयपुर	स २०१६ ज्येष्ठ शुक्ला ११	उदयपुर
३१	श्री रोशनकवरजी म सा (प्रथम)	उदयपुर	स २०१६ आश्विन शुक्ला १५	बड़ीसादड़ी
३२	श्री अनोखाकवरजी म सा	उदयपुर	स २०१६ कार्तिक कृष्णा ८	उदयपुर
३३	श्री कमलाकवरजी म सा (प्रथम)	कानोड़	स २०१६ कार्तिक शुक्ला १३	प्रतापगढ
३४	श्री झमकूकवरजी म सा	भदसर	स २०१७ मिगसर कृष्णा ५	उदयपुर

३५	श्री नन्दकवरजी म सा	बड़ीसादड़ी	स २०१७ फाल्गुन बदी १०	छोटीसादड़ी
३६	श्री रोशनकवरजी म सा द्वि	बड़ीसादड़ी	स २०१८ वैशाख शुक्ला ८	बड़ीसादड़ी
३७	श्री शान्ताकवरजी म सा द्वितीय	गगाशहर	स २०१८ फाल्गुन कृष्णा १२	गगाशहर
३८	श्री सूर्यकान्ताजी म सा	उदयपुर	स २०१९ वैशाख शुक्ला ७	उदयपुर
३९	श्री सुशीलाकवरजी म सा प्रथम	उदयपुर	स २०१९ वैशाख शुक्ला १२	उदयपुर
४०	श्री लीलावतीजी म सा	निकुम्भ	स २०२० फाल्गुन शुक्ला २	निकुम्भ
४१	श्री कस्तूरकवरजी म सा द्वितीय	पीपल्यामडी	स २०२० वैशाख शुक्ला ३	पीपल्यामडी
४२	श्री हुलासकवरजी म सा	चिकारड़ा	स २०२१ वैशाख शुक्ला १०	चिकारड़ा
४३	श्री ज्ञानकवरजी म सा	मालदामाड़ी	स २०२१ आश्विन शुक्ला ८	पीपलियामडी
४४	श्री ज्ञानकवरजी म सा द्वितीय	गणावास	स २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनादगाव
४५	श्री प्रेमलताजी म सा प्रथम	सुरेन्द्रनगर	स २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनादगाव
४६	श्री इन्दुबालाजी म सा	राजनादगाव	स २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनादगाव
४७	श्री गगावतीजी म सा	डोंगरगाव	स २०२३ मिगसर शुक्ला १३	डोंगरगाव
४८	श्री पारसकवरजी म सा	कलगपुर	स २०२३ मिगसर शुक्ला १३	डोंगरगाव
४९	श्री चन्दनबालाजी म सा	पीपल्या	स २०२३ माघ शुक्ला १०	पीपल्यामडी
५०	श्री जयश्रीजी म सा	मद्रास	स २०२३ फाल्गुन कृष्णा ९	रायपुर
५१	श्री सुशीलाकवरजी म सा द्वितीय	मालदामाड़ी	स २०२४ आश्विन शुक्ला २	जावरा
५२	श्री मगलाकवरजी म सा	बड़ावदा	स २०२४ आश्विन शुक्ला १	दुर्ग
५३	श्री शकुन्तलाजी म सा	बीजा	स २०२४ मिगसर कृष्णा ६	दुर्ग
५४	श्री चमेलीकवरजी म सा	बीकानेर	स २०२५ फाल्गुन शुक्ला ५	बीकानेर
५५	श्री सुशीलाकवरजी म सा तृतीय	बीकानेर	स २०२५ फाल्गुन शुक्ला ५	बीकानेर
५६	श्री चन्द्राकवरजी म सा	रतलाम	स २०२६ वैशाख शुक्ला ७	ब्यावर
५७	श्री कुसुमलताजी म सा	मन्दसौर	स २०२६ आश्विन शुक्ला ४	मन्दसौर
५८	श्री प्रेमलताजी म सा	मन्दसौर	स २०२६ आश्विन शुक्ला ४	मन्दसौर
५९	श्री विमलाकवरजी म सा	पीपल्या	स २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
६०	श्री कमलाकवरजी म सा	जेठाणा	स २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
६१	श्री पुष्पलताजी म सा	बड़ीसादड़ी	स २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
६२	श्री सुमतिकवरजी म सा	बड़ीसादड़ी	स २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
६३	श्री विमलाकवरजी म सा	मोड़ी	स २०२७ फाल्गुन शुक्ला १२	जावद
६४	श्री सूरजकवरजी म सा	बड़ावदा	स २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
६५	श्री ताराकवरजी म सा प्रथम	रतलाम	स २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
६६	श्री कल्याणकवरजी म सा	बीकानेर	स २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
७	श्री कान्ताकवरजी म सा	बड़ावदा	स २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
	श्री कुसुमलताजी म सा द्वितीय	रावटी	स २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
	श्री चन्दनाजी म सा द्वितीय	बड़ावदा	स २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर

७०	श्री ताराजी म सा द्वितीय	रतलाम	स २०२९ चैत्र शुक्ला २	जयपुर
७१	श्री चेतनाश्रीजी म सा	कानोड़	स २०२९ चैत्र शुक्ला १३	टोंक
७२	श्री तेजप्रभाजी म सा	अजमेर	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
७३	श्री कुसुमकान्ताजी म सा	जावरा	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
७४	श्री बसुमतीजी म सा	बीकानेर	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
७५	श्री पुष्पाजी म सा	देशनोक	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
७६	श्री राजमतीजी म सा	दलोदा	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
७७	श्री मजुबालाजी म सा	बीकानेर	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
७८	श्री प्रभावतीजी म मा	बीकानेर	स २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
७९	श्री ललिताजी म सा प्रथम	बीकानर	स २०२९ फाल्गुन शुक्ला ११	बीकानेर
८०	श्री सुशीलाजी म सा द्वितीय	मोड़ी	स २०३० वैशाख शुक्ला ९	नोखामडी
८१	श्री समताकवरजी म सा	अजमेर	स २०३० वैशाख शुक्ला ९	नोखामडी
८२	श्री निरजनाश्रीजी म सा	बड़ीसादड़ी	स २०३० कार्तिक शुक्ला १३	बीकानेर
८३	श्री पारसकवरजी म सा	बागेड़ा	स २०३० मिगसर शुक्ला ९	भीनासर
८४	श्री सुमनलताजी म सा	बागेड़ा	स २०३० मिगसर शुक्ला ९	भीनासर
८५	श्री विजयलक्ष्मीजी म सा	उदयपुर	स २०३० माघ शुक्ला ५	सरदारशहर
८६	श्री स्नेहलताजी म सा	सरदारशहर	स २०३० माघ शुक्ला ५	सरदारशहर
८७	श्री रजनाश्रीजी म सा	उदयपुर	स २०३१ ज्येष्ठ शुक्ला ५	गोगोलाव
८८	श्री अजनाश्रीजी म सा	उदयपुर	स २०३१ ज्येष्ठ शुक्ला ५	गोगोलाव
८९	श्री ललिताजी म सा	ब्यावर	स २०३१ ज्येष्ठ शुक्ला ५	गोगोलाव
९०	श्री विचक्षणाजी म सा	पीपलिया	स २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
९१	श्री सुलक्षणाजी म सा	पीपलिया	स २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
९२	श्री प्रियलक्षणाजी म सा	पीपलिया	स २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
९३	श्री प्रीतिसुधाजी म सा	निकुम्भ	स २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
९४	श्री सुमनप्रभाजी म सा	देवगढ	स २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
९५	श्री सोमलताजी म सा	रावटी	स २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
९६	श्री किरणप्रभाजी म सा	बीकानेर	स २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
९७	श्री मजुलाश्रीजी म सा	देशनोक	स २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
९८	श्री सुलोचनाजी म सा	कानोड़	स २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
९९	श्री प्रतिभाजी म सा	बीकानेर	स २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
१००	श्री वनिताश्रीजी म सा	बीकानेर	स २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
१०१	श्री सुप्रभाजी म सा	गोगोलाव	स २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
१०२	श्री जयन्तश्रीजी म मा	बीकानेर	स २०३२ आश्विन शुक्ला ५	देशनोक
१०३	श्री हर्षकवरजी म सा	अमरावती	स २०३२ मिगसर शुक्ला ८	जावरा
१०४	श्री सुदर्शनाजी म सा	नोखामडी	स २०३३ आश्विन शुक्ला ५	नोखामडी

१०५	श्री निरुपमाजी म सा	रायपुर	स २०३३ आश्विन शुक्ला १५	नोखामडी
१०६	श्री चन्द्रप्रभाजी म सा	मेड़ता	स २०३३ मिगसर शुक्ला १३	नोखामडी
१०७	श्री आदर्शप्रभाजी म सा	उदासर	स २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
१०८	श्री कीर्तिश्रीजी म सा	भीनासर	स २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
१०९	श्री हर्षिलाश्रीजी म सा	गगाशहर	स २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
११०	श्री साधनाश्रीजी म सा	गगाशहर	स २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
१११	श्री अर्चनाश्रीजी म सा	गगाशहर	स २०३४ वैशाख शुक्ला १५	भीनासर
११२	श्री सरोजकवरजी म सा	धमतरी	स २०३४ भादवा कृष्णा ११	दुर्ग
११३	श्री मनारमाजी म सा	रतलाम	स २०३४ भादवा कृष्णा ११	दुर्ग
११४	श्री चचलकवरजी म सा	काकेर	स २०३४ भादवा कृष्णा ११	दुर्ग
११५	श्री कुसुमकवरजी म सा	निवारी	स २०३४ भादवा कृष्णा ११	दुर्ग
११६	श्री सुप्रतिभाजी म सा	उदयपुर	स २०३४ आश्विन शुक्ला २	भीनासर
११७	श्री शाताप्रभाजी म सा	बीकानेर	स २०३४ आश्विन शुक्ला २	भीनासर
११८	श्री मुक्तिप्रभाजी म सा	मोड़ी	स २०३४ मिगसर कृष्णा ५	बीकानेर
११९	श्री गुणसुन्दरीजी म सा	उदासर	स २०३४ मिगसर कृष्णा ५	बीकानेर
१२०	श्री मधुप्रभाजी म सा	छोटीसादड़ी	स २०३४ मिगसर कृष्णा ५	बीकानेर
१२१	श्री राजश्रीजी म सा	उदयपुर	स २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर
१२२	श्री शशिकाताजी म सा	उदयपुर	स २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर
१२३	श्री कनकश्रीजी म सा	रतलाम	स २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर
१२४	श्री सुलभाश्रीजी म सा	नोखामडी	स २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर
१२५	श्री निर्मलाश्रीजी म सा	देशनोक	स २०३५ आश्विन शुक्ला २	जोधपुर
१२६	श्री चेलनाश्रीजी म सा	कानाड़	स २०३५ आश्विन शुक्ला २	जोधपुर
१२७	श्री कुमुदश्रीजी म सा	गगाशहर	स २०३५ आश्विन शुक्ला २	जोधपुर
१२८	श्री कमलश्रीजी म सा	उदयपुर	स २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
१२९	श्री पदमश्रीजी म सा	महिन्द्रपुर	स २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
१३०	श्री अरुणाश्रीजी म सा	पीपल्या	स २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
१३१	श्री कल्पनाश्रीजी म सा	देशनोक	स २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
१३२	श्री ज्योत्स्नाश्रीजी म सा	गगाशहर	स २०३६ चै शु १५	ब्यावर
१३३	श्री पकजश्रीजी म सा	बीकानेर	स २०३६ चै शु १५	ब्यावर
१३४	श्री मधुश्रीजी म सा	इन्दौर	स २०३६ चै शु १५	ब्यावर
१३५	श्री पूर्णिमाश्रीजी म सा	बड़ीसादड़ी	स २०३६ चै शु १५	ब्यावर
१३६	श्री प्रवीणाश्रीजी म सा	मन्दसौर	स २०३६ चै शु १५	ब्यावर
१३७	श्री दर्शनाश्रीजी म सा	देशनोक	स २०३६ चै शु १५	ब्यावर
१३८	श्री वन्दनाश्रीजी म सा	गगाशहर	स २०३६ चै शु १५	ब्यावर
१३९	श्री प्रमोदश्रीजी म सा	ब्यावर	स २०३६ चै शु १५	ब्यावर

१४० श्री उर्मिलाश्रीजी म सा	रायपुर	स २०३७ ज्ये शु ३	बुर्सी
१४१ श्री सुभद्राश्रीजी म सा	बीकानेर	स २०३७ श्रा शु ११	राणावास
१४२ श्री हेमप्रभाजी म सा	कसीगा	स २०३७ आ शु ३	राणावास
१४३ श्री ललितप्रभाजी म सा	विनोता	स २०३८ वै शु ३	गगापुर
१४४ श्री वसुमतीजी म सा	अलाय	स २०३८ आ शु ८	अलाय
१४५ श्री इन्द्रप्रभाश्रीजी म सा	बीकानेर	स २०३८ का शु १२	उदयपुर
१४६ श्री ज्योतिप्रभाश्रीजी म सा	गगाशहर	स २०३८ का शु १२	उदयपुर
१४७ श्री रचनाश्रीजी म सा	उदयपुर	स २०३८ का शु १२	उदयपुर
१४८ श्री रेखाश्रीजी म सा	जोधपुर	स २०३८ का शु १२	उदयपुर
१४९ श्री चित्राश्रीजी म सा	लोहावट	स २०३८ का शु १२	उदयपुर
१५० श्री ललिताश्रीजी म सा	गगाशहर	स २०३८ का शु १२	उदयपुर
१५१ श्री विद्यावतीजी म सा	सवाईमाधोपुर	स २०३८ मि शु ६	हिरणमगरी
१५२ श्री विख्याताश्रीजी म सा	विनाता	स २०३८ मा कृ ३	बम्बोरा
१५३ श्री जिनप्रभाश्रीजी म सा	राजनादगाव	स २०३९ चै कृ ३	अहमदबाद
१५४ श्री अमिताश्रीजी म सा	रतलाम	स २०३९ चै कृष्णा ३	अहमदाबाद
१५५ श्री विनयश्रीजी म सा	दुरखखान	स २०३९ चै कृष्णा ३	अहमदाबाद
१५६ श्री श्वेताश्रीजी म सा	केशकाल	स २०३९ चै कृष्णा ३	अहमदाबाद
१५७ श्री सुचिताश्रीजी म सा	रतलाम	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१५८ श्री मणिप्रभाजी म सा	गगाशहर	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१५९ श्री सिद्धप्रभाजी म सा	नागौर	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१६० श्री नम्रताश्रीजी म सा	जगदलपुर	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१६१ श्री सुप्रतिभाश्रीजी म सा	राजनादगाव	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१६२ श्री मुक्ताश्रीजी म सा	कपासन	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१६३ श्री विशालप्रभाजी म सा	गगाशहर	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१६४ श्री कनकप्रभाजी म सा	बीकानेर	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१६५ श्री सत्यप्रभाजी म सा	बीकानेर	स २०३९ चै कृ ३	अहमदाबाद
१६६ श्री रक्षिताश्रीजी म सा	पाली	स २०४० आ शु २	भावनगर
१६७ श्री महिमाश्रीजी म सा	अहमदाबाद	स २०४० आ शु २	भावनगर
१६८ श्री मृदुलाश्रीजी म सा	वैशालीनगर	स २०४० आ शु २	भावनगर
१६९ श्री वीणाश्रीजी म सा	वैशालीनगर	स २०४० आ शु २	भावनगर
१७० श्री प्रेरणाश्रीजी म सा	बीकानेर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१७१ श्री गुणरजनाश्रीजी म सा	उदयपुर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१७२ श्री सूर्यमणिजी म सा	मन्दसौर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१७३ श्री सरिताश्रीजी म सा	बीकानेर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१७४ श्री सुवर्णाश्रीजी म सा	रतलाम	स २०४० फा शु २	रतलाम

१७५	श्री निरुपमाश्रीजी म सा	उदयपुर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१७६	श्री शिवमणिश्रीजी म सा	डाडीलाहारा	स २०४० फा शु २	रतलाम
१७७	श्री विकासप्रभाजी म सा	बीकानेर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१७८	श्री तरुलताजी म सा	चित्तौड़गढ	स २०४० फा शु २	रतलाम
१७९	श्री करुणाश्रीजी म सा	मोड़ी	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८०	श्री प्रभावनाश्रीजी म सा	बडाखेड़ा	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८१	श्री सुयशमणिजी म सा	गगाशहर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८२	श्री चितरंजनाश्रीजी म सा	रतलाम	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८३	श्री मुक्ताश्रीजी म सा	बीकानेर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८४	श्री सिद्धमणिजी म सा	बगू	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८५	श्री रजतमणिश्रीजी म सा	बागमुण्डा	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८६	श्री अर्पणाश्रीजी म सा	कानोड़	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८७	श्री मंजुलाश्रीजी म सा	भीनासर	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८८	श्री गरिमाश्रीजी म सा	चौथ का बरवाड़ा	स २०४० फा शु २	रतलाम
१८९	श्री हेमश्रीजी म सा	नोखामडी	स २०४० फा शु २	रतलाम
१९०	श्री कल्पमणिश्रीजी म सा	पीपल्या	स २०४० फा शु २	रतलाम
१९१	श्री रविप्रभाजी म सा	आवरा	स २०४० फा शु २	रतलाम
१९२	श्री मयकमणिजी म सा	पीपलियामडी	स २०४० फा शु २	रतलाम
१९३	श्री चन्दनबालाश्रीजी म सा	बड़ीसादड़ी	स २०४१ मिगसर सुदी १३	बड़ीसादड़ी
१९४	श्री मिता श्रीजी म सा	गगाशहर	स २०४१ माघ सुदी १०	गगाशहर भीनासर
१९५	श्री पीयूष प्रभाजी म सा	बीकानेर	स २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
१९६	श्री संयमप्रभाजी म सा	शाहदा	स २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
१९७	श्री रिद्धि प्रभाजी म सा	अक्कलकुवा	स २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
१९८	श्री वैभवप्रभाजी म सा	अक्कलकुवा	स २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
१९९	श्री पुण्यप्रभाजी म सा	शाहदा	स २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
२००	श्री लक्ष्यप्रभाजी म सा	जागलु	स २०४३ चैत सुदी ४	इन्दौर
२०१	श्री परागश्रीजी म सा	कपासन	स २०४३ चैत सुदी ४	इन्दौर
	म सा	भीम	स २०४४ वैशाख सुदी ६	बाड़मेर
	श्री [illegible] म सा	बाड़मेर	स २०४४ वैशाख सुदी ६	
२०४	श्री लब्धिताश्रीजी म सा	बाड़मेर	स [illegible] सुदी ६	
२०५	श्री इंगिताश्रीजी म सा	डोंडीलोहारा	स [illegible] सुदी २	
२०६	श्री [illegible]प्रभाजी म सा	उदयपुर	स [illegible] २	
२०७	श्री [illegible]श्रीजी म सा	राजनांदगांव	स २ [illegible] २	
२०८	श्री उज्ज्वलप्रभाजी म सा			

२०९	श्री अक्षयप्रभाजी म सा	बड़ीसादड़ी	स २०४५ जेठ सुदी २	जावरा
२१०	श्री श्रद्धाश्रीजी म सा	उदयपुर	स २०४५ जेठ सुदी २	जावरा
२११	श्री अर्पिताश्रीजी म सा	बम्बोरा	स २०४५ जेठ सुदी २	जावरा
२१२	श्री समताश्रीजी म सा	खडेला	स २०४५ जेठ सुदी २	जावरा
२१३	श्री किरणप्रभाजी म सा	नीमच	स २०४५ माघ सुदी १०	मन्दसौर
२१४	श्री पुनीताश्रीजी म सा	बाड़मेर	स २०४६ वैशाख सुदी ६	बालोतरा
२१५	श्री पूजिताश्रीजी म सा	वायतु	स २०४६ वैशाख सुदी ६	बालोतरा
२१६	श्री विवेकश्रीजी म सा	पाटोदी	स २०४६ वैशाख सुदी ६	बालोतरा
२१७	श्री चारित्रप्रभाजी म सा	विल्लुपूरम	स २०४६ वैशाख सुदी ६	विल्लुपूरम
२१८	श्री कल्पनाश्रीजी म सा	नयागाव	स २०४६ वैशाख सुदी ६	निम्बाहेड़ा
२१९	श्री रेखाश्रीजी म सा	नादगाव	स २०४६ वैशाख सुदी ६	निम्बाहेड़ा
२२०	श्री शोभाश्रीजी म सा	बोल्ठाणा	स २०४६ वैशाख सुदी ६	निम्बाहेड़ा
२२१	श्री गरिमाश्रीजी म सा	नादगाव	स २०४६ वैशाख सुदी ६	निम्बाहेड़ा
२२२	श्री स्वर्णप्रभाजी म सा	उदयपुर	स २०४६ पौष सुदी ७	उदयपुर
२२३	श्री स्वर्णरेखाश्रीजी म सा	ब्यावर	स २०४६ पौष सुदी ७	उदयपुर
२२४	श्री स्वर्ण ज्योति जी म सा	कोटा	स २०४६ पौष सुदी ७	उदयपुर
२२५	श्री स्वर्णलताजी म सा	गगाशहर	स २०४६ पौष सुदी ७	उदयपुर
२२६	श्री नदिताश्रीजी म सा	येवला	दिनाक २७ २ ९०	मद्रास
२२७	श्री साधनाश्रीजी म सा	गगाशहर	दिनाक २७ २ ९०	मद्रास
२२८	श्री प्रमिलाश्रीजी म सा	बीकानेर	दिनाक ६ ५ ९०	कानाड़
२२९	श्री शर्मिलाश्रीजी म सा	बीकानेर	दिनाक ६ ५ ९०	कानोड़
२३०	श्री सुमगलाश्रीजी म सा	चपलाना	दिनाक ६.५ ९०	कानोड़
२३१	श्री पावनश्रीजी म सा	चिकारड़ा	दिनाक ३ ६ ९०	चिकारड़ा
२३२	श्री प्रज्ञाश्रीजी म सा	चिकारड़ा	दिनाक ३ ६ ९०	चिकारड़ा
२३३	श्री मृगावतीजी म सा	पीपाड़	दिनाक २० १२ ९०	रायपुर (म प्र)
२३४	श्री श्रुतशीलाजी म सा	धमतरी	दिनाक २० १२ ९०	रायपुर (म प्र)
२३५	श्री सौम्यशीलाजी म सा	मोयर	दिनाक २० १२ ९०	रायपुर (म प्र)
२३६	श्री सन्मतिशीलाजी म सा	श्रीरामपुर	दिनाक २० १२ ९०	रायपुर (म प्र)
२३७	श्री विवेकशीलाजी म सा	खापर	दिनाक २० १२ ९०	रायपुर (म प्र)
२३८	श्री इच्छिताश्रीजी म सा	रायपुर	दिनाक २५ ३ ९१	बैंग्लोर
२३९	श्री सम्बोधिश्रीजी म सा	जम्मूकश्मीर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२४०	श्री विपुलाश्रीजी म सा	बीकानेर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२४१	श्री विजेताश्रीजी म सा	बीकानेर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२४२	श्री स्थितप्रज्ञाश्रीजी म सा	देशनोक	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२४३	श्री मनीषा श्रीजी म सा	भदेसर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर

२४४	श्री धैर्यप्रभा जी म सा	विरानिया	दिनाक १६ २ ९२	बीकानर
२४५	श्री मणिश्रीजी म सा	बीकानेर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२४६	श्री वैभवश्रीजी म सा	बीकानर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२४७	श्री शालप्रभाजी म सा	जयपुर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानर
२४८	श्री अभिलाषा श्रीजी म सा	देशनाक	दिनाक १६ २ ९२	बीकानर
२४९	श्री नेहाश्रीजी म सा	खडला	दिनाक १६ २ ९२	बीकानर
२५०	श्री कविताश्रीजी म सा	श्यामपुरा	दिनाक १६ २ ९२	बीकानर
२५१	श्री अनुपमाश्रीजी म सा	देशनोक	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२५२	श्री नूतनश्रीजी म सा	देशनाक	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२५३	श्री अंकिताश्रीजी म सा	गगाशहर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानर
२५४	श्री संगीताश्रीजी म सा	बालसर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२५५	श्री जागृतिश्रीजी म सा	देशनाक	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२५६	श्री विभाश्रीजी म सा	श्यामपुरा	दिनाक १६ २ ९२	बीकानेर
२५७	श्री मननप्रज्ञा श्रीजी म सा	भीनासर	दिनाक १६ २ ९२	बीकानर
२५८	श्री चन्दनाश्रीजी म सा	इन्दौर	दिनाक ८ ५ ९२	देशनोक
२५९	श्री सुनीताश्रीजी म सा	रतलाम	दिनाक २८ ९ ९२	उदयरामसर
२६०	श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म सा	उदयपुर	दिनाक २८ ९ ९२	उदयरामसर
२६१	श्री चिन्तनप्रज्ञा जी म सा	राजाजी का करेडा	दिनाक ४ २ ९३	बड़ीसादड़ी
२६२	श्री अर्पणाश्रीजी म सा	बड़ीसादड़ी	दिनाक ४ २ ९३	बड़ीसादड़ी
२६३	श्री शुभाश्रीजी म सा	देशनाक	दिनाक १२ २ ९३	देशनोक
२६४	श्री नमनश्रीजी म सा	नाथद्वारा	दिनाक २५ ४ ९३	गगाशहर भीनासर
२६५	श्री समीक्षाश्रीजी म सा	नाई	दिनाक २ ४ ९३	उदयपुर
२६६	श्री रोशनश्रीजी म सा	उदयपुर	दिनाक २५ ४ ९३	उदयपुर
२६७	श्री रश्मिश्रीजी म सा	कानोड	दिनाक ३ १२ ९३	कानोड
२६८	श्री सुयशाप्रभाजी म सा	राजनादगाव	दिनाक ८ १२ ९३	नागपुर
	श्री सुविज्ञता श्रीजी म सा	रायपुर	दिनाक २३ १२ ९३	रायपुर
	म सा	[illegible]	दिनाक २३ १२ ९३	रायपुर
		सम्बलपुर	दिनाक २३ १२ ९३	रायपुर
२७१	श्री सुयशाजी म सा	नोखा	दिनाक २४ २ ९४	देशनोक
२७२	श्री सुव्रताश्रीजी म सा	रायपुर	दिनाक २४ २ ९४	देशनोक
२७३	श्री सुधाश्रीजी म सा	नोखामडी	दि[illegible] २ ९४	देशनोक
२७४	श्री सुमेधाश्रीजी म सा			
२७५	श्री प्रशान्ताश्रीजी म सा	मोर[illegible]	[illegible] ९४	देशनोक
२७६	श्री अजिताश्रीजी म सा	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७७	श्री अर्चिताश्रीजी म सा	[illegible]		
२७८	श्री [illegible]	[illegible]		

२७९	श्री पुनीताश्रीजी म सा	मद्रास	दिनाक २४ ११ ९४	सूरत
२८०	श्री समीक्षणाश्रीजी म सा	पथारकादी	दिनाक ९ २ ९५	बीकानेर
२८१	श्री लक्ष्य ज्योतिजी म सा	मद्रास	दिनाक ९ २ ९५	बीकानेर
२८२	श्री जयप्रज्ञाश्रीजी म सा	रायपुर	दिनाक २ ५ ९५	बीकानेर
२८३	श्री प्रतिभाश्रीजी म सा	उदासर		
२८४	श्री सुरभिश्रीजी म सा	नगरी	दिनाक ९ २ ९७	दुर्ग
२८५	श्री सुरुचिश्रीजी म सा	धमधा	दिनाक ९ २ ९७	दुर्ग
२८६	श्री सुप्रियाश्रीजी म सा	नोखामडी	दिनाक ९ २ ९७	दुर्ग
२८७	श्री सुरभिश्रीजी म सा	जावद	दिनाक १३ २ ९७	जावद
२८८	श्री अस्मिताश्रीजी म सा	देशनोक	दिनाक २० २ ९७	बीकानर
२८९	श्री अविचलश्रीजी म सा	भदेसर	दिनाक २० २ ९७	भदेसर
२९०	श्री मल्लिप्रज्ञाजी म सा	बालोद	दिनाक १५ ३ ९७	उदयपुर
२९१	श्री सुषमाश्रीजी म सा	कानोड़	दिनाक ९ ५ ९७	चित्तौड़गढ
२९२	श्री प्राजलश्रीजी म सा	खाचरौद	दिनाक ८ ६ ९७	नीमच
२९३	श्री उपासनाश्रीजी म सा	रतलाम	दिनाक ७ ११ ९७	रतलाम
२९४	श्री आराधनाश्रीजी म सा	रतलाम	दिनाक ७ ११ ९७	रतलाम
२९५	श्री ऋजुताश्रीजी म सा	जदिया	दिनाक ९ १२ ९८	ब्यावर
२९६	श्री विरलश्रीजी म सा	कलकत्ता	दिनाक ९ ५ ९८	चित्तौड़गढ
२९७	श्री आस्थाश्रीजी म सा	गगाशहर	दिनाक ९ ५ ९८	चित्तौड़गढ
२९८	श्री अजलिश्रीजी म सा	चित्तौड़गढ	दिनाक ९ ५ ९८	चित्तौड़गढ
२९९	श्री सुरक्षाश्रीजी म सा		दिनाक २९ ११ ९८	चित्तौड़गढ
३००	श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म सा	फलौदी	दिनाक ३ १२ ९८	मगलवाड़
३०१	श्री उन्नतिश्रीजी म सा		दिनाक ३ १२ ९८	मगलवाड़
३०२	श्री विशाखाश्रीजी म सा	कानोड़	दिनाक ७ १२ ९८	कानोड़
३०३	श्री सुशक्तिश्रीजी म सा	अतरिया	दिनाक २२ १ ९९	राजनादगाव
३०४	श्री सुमुक्तिश्रीजी म सा	सम्बलपुर	दिनाक २२ १ ९९	राजनादगाव
३०५	श्री सुभक्तिश्रीजी म सा	सम्बलपुर	दिनाक २२ १ ९९	राजनादगाव
३०६	श्री नीरजश्रीजी म सा	बायुत (बाड़मेर)	दिनाक २८ ४ ९९	उदयपुर
३०७	श्री विराटश्रीजी म सा	गगाशहर	दिनाक २१ ६ ९९	उदयपुर

❑ जानकीनारायण श्रीमाली

रिपोर्ट
समता तीर्थ-दाता

भारतीय सस्कृति की विशेषता है इसकी चिन्तन प्रणाली। चिन्तन प्रणाली के आधार पर भावधारा का निर्माण होता है और भाव के आधार पर जीवन दृष्टि की रचना होती है। सब कुछ बदल जाता है। आध्यात्मिकता और भौतिकता के बीच यही भावधारा सूक्ष्म विभाजक रेखा है। पर्यटन को यही भाव धारा जब तीर्थयात्रा के रूप में बदल देती है तो यात्री का सम्पूर्ण रूपान्तरण हो जाता है। तीर्थयात्री का आचार-विचार-व्यवहार, सब कुछ एक पवित्रता से ओत-प्रोत और प्राणि-मैत्री से अनुप्राणित होता है।

कुछ इसी प्रकार की तीर्थयात्रा के भाव हृदय मे हिलोरे ले रहे थे, जब हम लोग स्वर्गीय आचार्य श्री नानालालजी म सा की जन्मभूमि दाता-ग्राम की यात्रा के लिए तत्पर हुए। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष शासननिष्ठ श्री जयचदलालजी सुखाणी और श्रमणोपासक सम्पादक और सघ प्रमुख श्री चम्पालालजी डागा की पहल पर इस पवित्र यात्रा का अनुष्ठान हुआ। मै बीकानेर से यात्रा के आधार स्थल चित्तौड़गढ पहुचा और वहा श्रावकरत्न श्री भवरलालजी अब्भाणी के निवास पर ठहरा। कलकत्ता से नीमच होते हुए साहित्य साधक, सघ हितैषी श्री भूपराजजी जैन सीधे निम्बाहेड़ा पहुचे और वहा से सघ महामत्री श्री सागरमलजी चपलोत अपनी कार मे उन्हे साथ लेकर दिनाक २३ जून के सुप्रभात मे अब्भाणी निवास पर आ पहुचे। चित्तौड़गढ से सर्वश्री सागरमलजी चपलोत महामत्री भूपराजजी जैन, फोटो ग्राफर श्री शर्मा और मै चारों लोग समता दर्शन प्रणेता आचार्य श्री नानेश की जन्म भूमि दाता और दीक्षा भूमि कपासन के पवित्र स्थानो के दर्शन और वहा के साक्षी जनो से सवाद हेतु रवाना हुए। सघ महामत्री श्री चपलोत की आत्मीयता से हम पूरे समय प्रमुदित रहे।

दीक्षा भूमि कपासन - महापुरुषो की, सत्पुरुषों की सत-पुरुषों की कृपा से दुर्गम भी सुगम हो जाता है। इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति हमने अपनी यात्रा मे की। जून माह की भीषण तपती गर्मी के बीच हमने प्रस्थान किया किन्तु देखते-ही-देखते बादल छा गये और शीतल समीर श्रम का हरण करने लगी।

हम लोग शीघ्र ही कपासन पहुचे। यही गुरुदेव की दीक्षा भूमि है। श्रमणोपासक सम्पादक श्री चम्पालालजी डागा ने अपने स्वभाव के अनुसार सर्वत्र सूचना भेज दी थी तदनुसार कपासन के सुश्रावकगण हमारी प्रतीक्षा कर थे। इस स्थिति से हमे हर्ष हुआ। श्री सघ अध्यक्ष श्री सोहनलालजी चडालिया, युवा सर्वश्री मदनलालजी आदि, अरुणजी बागमार और चादमलजी बागमार आदि स्वतत्र वाहनो पर हमारे साथ हो गए।

स्थानक- हमने सर्वप्रथम उस स्थानक की यात्रा की जहा गुरुदेव ने वैराग्य अवस्था मे मुनि श्री इन्द्रमलजी म सा के पास रह कर साधना की थी। स्थानक भवन वही प्राचीन और गरिमामय। कपासन के सघ अध्यक्ष और सघनिष्ठ जनो ने स्थानक के चप्पे-चप्पे का हम दर्शन कराया। यह स्थानक सकल स्थानकवासी समाज का सयुक्त स्थानक है, यह जानकर विशेष हर्ष हुआ।

दीक्षा स्थल - यहा से हम लोग आचार्य श्री नानेश की दीक्षा स्थली की ओर बढे। कपासन कस्बे के द्वार पर विशाल तालाब के दर्शन करके अपार हर्ष हुआ। मेवाड़ और मारवाड़ के इतिहास और ख्यात ग्रन्थो म इस तालाब

का अनेक बार वर्णन पढ़ा था। आज इस तालाब के दर्शन से चमत्कृत हो उठे। विशाल-मीलो तक फैला जल ग्रहण क्षेत्र ही मानो सिमटते-सिमटते तालाब का रूप धारण करके धरती पर साकार उपस्थित हो गया। तालाब वृक्षो की पक्तिया मन को हरा-भरा कर रही थी। तालाब के किनारे बनी हुए पथवारिया सम्पूर्ण समाजो की एकात्मकता और तालाब के विकास और सुरक्षा की चिन्ता और सजगता को उजागर कर रही थी।

श्री सघ कपासन की सजगता और समय-समय पर यहा विचरते सत रत्नो की अहिसा के प्रति उत्कट समर्पणा के बल पर इस विशाल तालाब मे मछलियो के शिकार पर प्रतिबध लगा और जीवरक्षा का महान् कार्य सपादित हुआ। इस कार्य को स्थायित्व प्रदान करने के लिए जीवरक्षा समिति कपासन अब भी समर्पित है।

इसी तालाब के सम्मुख आम और जामुन के पेड़ो की सघन छाव मे वैरागी नानालाल-सत नानालालजी बने। उनका जीवन रूपान्तरित हुआ। आज भी यह स्थान हरा भरा और सुरम्य वन-उद्यान सा प्रतीत होता है। आज से ६१ वर्ष पूर्व इस स्थल की प्राकृतिक सुषमा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उस इतिहास निर्माणकारी, युगान्तरकारी दीक्षा के साक्षी एक विशाल वट-वृक्ष के तले खड़े होकर हमने उस सम्पूर्ण दृश्य को पुन मन चक्षुओ मे साकार किया। सभी प्रमुदित हो उठे और घूम-घूम कर उस ऐतिहासिक दीक्षा स्थल के स्पर्श की पुलक को अनुभूति मे सजोते रहे।

यहा से हम समीपस्थ गोशाला-आचार्य नानेश रूपरेखा गो सदन को देखने गए। इस गोसदन की स्थापना मे सघनिष्ठ श्री मोतीलालजी सुन्दरलालजी दुगड़ का विशेष योगदान रहा है। श्रीसघ की सेवा और श्री दुगड़ की सहयोग भावना स यह गोसदन एक उल्लेखनीय सेवा प्रकल्प के रूप मे उभर रहा है। इसमें सहयोग की पहल श्री सुन्दरलालजी दुगड़ के स्वर्गीय पिताश्री मोतीलालजी दुगड़ ने अपनी पोतियो के नाम पर की थी। श्री रतनलालजी पोखरणा और श्री मीठूलालजी आदि इस गोसदन की सार सभाल म आतमभाग द रहे है।

यहा से हमने श्री मनोहरलालजी पोखरणा के निवास पर जाकर उनकी वयोवृद्ध माताजी से भेट की और उनके सस्मरण सुने।

कपासन यात्रा की एक और उल्लेखनीय घटना है-वयोवृद्ध श्री मागीलालजी मास्टर साहब से भेट। हमने कपासन मे प्रवेश करते ही सर्वप्रथम उनसे भेट की और उनकी प्रत्यक्ष अनुभूति युक्त सस्मरणो को सुना। उनसे भेट कर हमे अपार हर्ष हुआ।

नानेशनगर-दाता-प्रवेश- कपासन से हम नानेशनगर (दाता) पहुचे। मै पहले भी दाता गया हुआ हू। पहले और आज के दाता मे एक विशेष अन्तर आया है और वह है-आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट के भव्य भवन और शिक्षा-चिकित्सा और बहु आयामी सेवा प्रकल्पो की सरचना और सचालन। इस ट्रस्ट के अधीन उक्त प्रकल्पा के लिये भवनो का निर्माण हो चुका है। उच्च माध्यमिक स्तर का आवासीय विद्यालय प्रगति पर है। चिकित्सा और लोक कल्याण क बहुविध कार्यों हेतु भवनो का निर्माण, चिकित्सा अधिकारियो की नियुक्ति आदि हो चुकी है। दाता और आस-पास के लोग लाभान्वित हो रहे है।

दाता मे प्रवेश करते ही यह भव्य भवन प्रत्येक आगत का ध्यान आकर्षित करता है।

इस सस्थान की गतिविधियो और तेज रफ्तार प्रगति से इसके शीघ्र ही मेवाड़ का शीर्ष सेवा सस्थान बन जाने की आशा है। इस सस्थान की स्थापना म सर्वश्री हरिसिहजी राका मुम्बइ रिधकरणजी सिपानी बैगलोर, उत्तमचन्दजी खिवेसरा मुम्बई की योजकता और अर्थ नियोजन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सघ प्रमुख श्री केशरीचदजी गोलछा और श्री चम्पालालजी डागा के परिवारो का अर्थ सहयोग भी विशेष उल्लेखनीय है।

यह सस्थान समता विभूति आचार्य श्री नानेश की स्मृति मे एक अनूठा और लोक कल्याणकारी प्रयास है। यह प्रयास प्रेरक और स्तुत्य है (सस्थान पर पृथक स आलेख इसी अक म अन्यत्र प्रकाशित)। इस सस्थान

को अवलोकन कर हर्ष हुआ। ग्राम के प्रवेश द्वार पर यह आचार्य श्री नानेश का दिव्य कीर्तिस्तंभ सा प्रतीत होता है।

हृदय स्थल आगे बढ़कर हम दाता ग्राम के हृदयस्थल समता विभूति आचार्य श्री नानेश के जन्म और प्रारंभिक कर्म के साक्षी उनके निवास स्थान पर पहुचे। श्री मोड़ीलालजी के पुत्र रूप म मा शृगारा की कोख से जन्म लेकर जिस घर म शिशु गोवर्धन की किलकारिया गुजित हुई थी जहा गोवर्धन प्यार से नाना और फिर सस्कार से मुनि श्री नानालाल बने, वह घर किसी तीर्थ से कम नहीं। साक्षात् तीर्थस्थल पर पहुच कर हमारा प्रवासी दल अनिवर्चनीय आन्तरिक आनन्द से भर उठा। हमारे साथ समता विकास न्यास से तत्रस्थ श्री मनोहरलालजी पोखरणा और श्री शांतिलालजी जारोली सहित स्थानीय प्रमुख कार्यकर्ता भी नाना के निवास पर पहुचे। दाता ग्राम मे यह पोखरणा परिवारो का छोटा सा मोहल्ला है। इसी मोहल्ले के बीच एक सामान्य ग्रामीण घर ही नाना की कर्मस्थली था। आचार्य श्री नानेश के परिजनो ने यह घर स्मारक निर्माण हेतु भेट कर दिया है और मगलवाड़ के श्री उमरावसिंह ओस्तवाल हाल मुबई इस घर के विकास हेतु सकल्पित है।

घर के उस छोटे से कक्ष मे पहुच कर जहा महापुरुष का आविर्भाव हुआ था हम सभी प्रमुदित हुए। प्रवेश करते ही पार्श्व मे शाल-प्रशाल तथा कुछ खुला भाग। बस यही है नानेश के जन्म का साक्षी यह सामान्य घर।

इस मकान के सामने व्यवसायी श्री नानालालजी की दुकान भी स्थित है। जब उन्हें वैराग्य हो गया और उन्होंने व्यवसाय करना छोड़ दिया, तब परिजनो के कुछ करने के आग्रह पर इसी दुकान म उन्होंने कुछ समय शिक्षक की भूमिका निभाई और विद्यार्थियो के प्रिय गुरु बने तथा कालान्तर मे तो वे गुरुओ के गुरु आचार्य श्री नानेश बन गए।

इस सीधे-सादे परिवेश म एक सहज आध्यात्मिक शांति की अनुभूति हो रही थी। आचार्य श्री नानेश के घर के ठीक पास मे वैरागियो-वैरागी-सन्यासी का एक स्थान भी है जहा सदैव धार्मिक वातावरण रहा करता था। सस्कारित पोखरणा परिवार और सनातनी सन्यासियो का सामीप्य एक पावन वातावरण बनाने मे समर्थ रहा होगा।

यहा हमने पोखरणा परिवार के उन बुजुर्गों से बातचीत की जिन्होंने अपना बचपन नाना' के साथ बिताया था। वे थे सर्वश्री भवरलालजी पोखरणा, फूलचन्दजी पोखरणा और रूपलालजी पोखरणा। ये सभी नाना के बाल्यजीवन के सस्मरण सुनाते हुए भाव विह्वल हो उठे। (सस्मरण सलग्न)

भदेसर- आचार्य श्री नानेश का ननिहाल भदेसर था। उनके वैराग्य भाव जागरण मे भदेसर का महत्त्वपूर्ण स्थान था। भदेसर पहुच कर हम श्री सघ अध्यक्ष श्री राजमलजी सरूपरिया से मिले तथा उनके साथ श्री पृथ्वीराज जी नाहर के घर पहुचे जो कि गुरुदेव का ससारपक्षीय ननिहाल था। वहा हमारी वयोवृद्ध श्रीमती उगमबाई धर्मपत्नी श्री पृथ्वीराजजी से भेट हुई। उन्होंने आचार्य श्री नानेश की समन्वय और आत्मीयता की वृत्ति पर अपनी भाव-भाषा में प्रकाश डाला।

एक पुण्य बोध के साथ प्रकृति की रिमझिम वर्षा और सौम्य सहकारी वातावरण म हम हमारी यात्रा पूर्ण कर अपने गन्तव्यो की ओर लौट चले। दाता और दाता का नाना अभी भी मन मस्तिष्क म छाया हुआ था। सहज सरल ग्राम्य जीवन और उसी ग्राम्य जीवन का उत्स हमारे आराध्य आचार्य श्री नानेश।

भेट वार्ताए

मेवाड के कण-कण मे सुवास

(समता तीर्थ दाता के प्रवास म स्वर्गीय आचाय श्री नानश के प्रारभिक जीवन के प्रत्यक्ष अवलोकनकर्त्ताओ और उनके सहपाठिया आदि से भेट हुई जिनक सक्षिप्त सस्मरण यहां प्रस्तुत किय जा रहे है। ये सस्मरण भेट वार्ताओ के साराश रूप म है। ये भेट वाताए श्रमणोपासक के आचाय श्री नानेश स्मृति विशेपाक हेतु विशेष रूप से सग्रहित की गई।)

श्री मागीलालजी मास्टर साहब, आयु ९० वर्ष, निवासी कपासन

आचार्य श्री नानश अपनी वैराग्यवस्था म यहा हमारी कपासन नगरी मे रहे थे। मुझे वे दिन खूब अच्छी तरह स याद है। वे उन दिना पडित महाराज मुनि श्री इन्द्रमलजी म सा के पास स्थानीय स्थानक मे रहते थे। यह सवत् १९९५ की बात है। एक रात्रि का उन्होंने स्थानक म स्थित बबूल के वृक्ष के नीचे मात्र एक पछेवड़ी मे ही पूरी रात निकाल दी। वे समय-समय पर ऐसी कठोर तपस्याए अन्त प्रेरणा से कर लिया करते थ।

चूकि श्री नानालालजी को दीक्षा की प्रेरणा कपासन से मिली थी। अत दीक्षा के लिये भी कपासन का चयन किया गया। इस दीक्षा के लिये चडालिया कुल के सब श्री छगनलालजी मीठूलालजी और उगमलालजी ने बहुत प्रयत्न किये। मैंने दीक्षा के समय उनके तेज का पहले पहल देखा। वे मानते थे कि शासन सख्त होगा, तभी चमकेगा।

इसका प्रसग भी उपस्थित हुआ। तत्कालीन आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा दीक्षा देने के लिय पधारे। जब उन्हे पता लगा कि दीक्षार्थी श्री नानालालजी की बन्दोली रात को निकलेगी ता उन्होंने कहा कि यदि ऐसा हुआ ता सुबह मै यहा से विहार कर दूगा। इस पर वैरागी श्री नानालालजी ने कहा कि मै जाऊगा तभी तो बन्दोली निकलेगी। सघ का सब बात का पता चला तो फिर बदोली का कार्यक्रम बदला गया और दिन के समय बन्दोली निकाली गई। जहा उन्हे बान बिठाया गया था वहा से स्थानक तक बन्दोली निकाली गई।

अन्य सम्प्रदाया मे दीक्षा के समय कैसा माहोल था ? पूछने पर मास्टर सा भाव विभोर हो उठे। वे बोले कि दीक्षा मे पूरा समाज सम्मिलित हुआ। उस समय सब भली प्रकार मिल जुलकर रहते थे। सम्प्रदाय का कुछ विशेष भेद नही था। ज्योर्तिधर श्री जवाहराचार्य जी ने सभी खेड़ो को एक किया था। श्री गणेशाचार्य जी उस समय सम्प्रदाय के युवाचार्य थ। इसलिय बहुत एकात्म भावा के साथ दीक्षा सम्पन्न हुई। कपासन के तालाब पर दीक्षा का भव्य दृश्य उपस्थित हुआ था।

अपनी स्मृति पर जोर देते हुए मास्टर सा ने कहा कि आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा का ऑपरेशन हान का था। उन्होंने कहा कि मै सघ को एक योग्य उत्तराधिकारी सौप कर जाऊंगा। उन्होंने अपने वचना को सत्य किया और हमे श्री नानेशाचार्य जैसा उत्तराधिकारी सौंपा।

नानेश नगर दाता म आचार्य प्रवर के जन्म के मकान के समक्ष प्रवासी दल के पहुचते ही आसपास के सभी श्रद्धानिष्ठ-जन एकत्र हो गये थे। इनमें सर्व श्री भवरलाल जी पोखरना मिट्ठालालजी पोखरना पूनमचन्दजी पोखरना,

□ रतनलाल जैन

वे अन्तिम क्षण

दाता से भादसोड़ा, भादसोड़ा स दाता और दाता से कपासन की अणु-यात्रा। जो कपासन से विराट यात्रा म तब्दील हुई। इस विराट-यात्रा को विराटता का स्वरूप प्रदान करने मे सहायक दुर्लभ नर तन, जो सयम की साधना मे आमाद कठ सध चुका था, समता की सार्थकता को रोम-रोम से अपना व जी चुका था, अपने मे समाहित ज्ञान भास्कर सहित अस्ताचल की ओर शनै -शनै अग्रसर होता जा रहा था। मुखमडल की आभा, सौम्यता दिनोदिन प्रवर्धित होती जा रही थी। रोग शत्रुओ ने इस वीर-योद्धा को परास्त करने की कड़ी घेरे बदी कर ली थी, मगर समता आत्मबल व सयम के अनूठे एव प्रभावी शस्त्र जो ८० वर्ष से सग्रहीत कर रहे थे इस समय वे आत्म रक्षा मे कारगर सिद्ध हो रहे थे।

अपनी आयुष्य पूर्णता का प्रतिपल चिंतन करते हुए अपने उत्तराधिकारी श्री रामलालजी म सा एव तीन शरीर एक प्राण' सस्था के तीसरे सदस्य स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा से अक्सर फरमाते रहे 'मै खाली हाथ न चला जाऊँ, ध्यान रखना।' ज्यो-ज्यो पौद्‌गलिक देह पिण्ड की अवस्था क्षीण होती गई त्यो त्यो आत्मदीप्ति बढ़ती रही। लोकोत्तर साधनालीन आचाय श्री नानेश की सुख-समाधि के लिये चारो तरफ जप-जप की ऐसी उल्लेखनीय प्रभावना हुई कि यह नूतन वर्ष ही जप-तप नियम वर्ष घोषित कर दिया गया। अतिम समय की बेला मे जहा सुदूर क्षेत्रो मे शासन प्रभावना कर रहे सुशिष्य सुशिष्याये द्रव्य से तत्स्थान रहते हुए भाव से स्वय को सेवा म उपस्थित रखने की भावनालीन थे, वहीं युवाचार्य प्रवर, स्थविर प्रमुख जी म सा , शासन प्रभावक श्री सपतमुनिजी म सा , सेवाभावी श्री चद्रेशमुनिजी म सा , तरुण तपस्वी श्री धर्मेन्द्र मुनिजी म सा सेवाभावी श्री प्रकाशमुनिजी आदि सभी सेवाभावी उपकृत सुशिष्यगण इस महावेला मे स्वय को स्थिर रखते हुए सेवा की उत्कृष्ट मिसाल का प्रस्तुतिकरण कर रहे थे। सवाभावना एव गुरु के प्रति उमड़ते भाव के चलते शासन प्रभावक श्री सपतमुनिजी म सा जा कि हृदय सबधी अस्वस्थतावश पौषधशाला के नीचे कक्ष मे विराज रहे थे, अपन आराध्य की स्वास्थ्य सबधी समाचार मिलने से स्वय को गौण कर शनै शनै तीसरी मजिल पधारकर सेवारत हो गए। शास्त्रो मे कथन है कि सथारे के पूर्व सलेखना भी होती है। इसी कथन को सभी ने समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक, त्रयशताधिक दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री नानेश के जीवन मे स्पष्ट रूप से देखा है। गत ६ माह से आचार्य देव सलेखना की स्थिति मे थे। आहार-उपचार शनै शनै कम करते हुए अतिम समय से कुछ दिनो पूर्व बिल्कुल बद कर दिया। कार्डियोग्राम कराने के लिए आई मशीन को वैरग भेजना पड़ा। चातुर्मास के पूर्व इस अप्रमत्त साधक को सुशिष्यवृन्द डाली मे विराजित सिटी स्केन कराने को बड़ी हास्पिटल ले गये। आधे घटे तक सीटीस्केन मशीन पर बैठ रहे। पर एकदम मना कर दिया कि मुझे नही कराना है ता बिना कराये ही पौषधशाला पधार गए। एक दिन डाक्टर बोलिया एक आवश्यक इजेक्शन लगाने आये तो आचार्य देव ने इशारे से कहा यहा से हटे। मुझे इन्जेक्शन नहीं लगाना है। आचार्य देव लोकोत्तर साधना मे लीन हो चुके थे। इतने वर्षों तक जिस देह के माध्यम से स्वय को साधा इसके पहले कि शरीर धोखा दे जाय स्वय सचेत हो गए और देह की साधना से अलग हाकर देहातीत साधना मे लीन हो गए। दिनाक २६ १० ९९ को रात्रि करीब ३ ३० बजे नवाचार्य प्रवर ने अष्टमाचार्य श्री से निवेदन किया कि 'तबीयत कैसी है ? उस समय आचार्य

श्री ने सभी सत-सतिया आदि से खमत खामणा की बात कही।

२७ १० ९९ बुधवार को सबेरे ८ बजे से ९ ३० बजे के बीच श्री ज्ञानमुनिजी म सा ने विभिन्न रूपों मे आचार्य प्रवर से निवेदन किया। भगवन ! दूध पी ले, पानी पी ले, पर उन्होंने हा नही भरी। गत २-३ दिन से दूध पानी नही ले रहे थे। आज भी सबेरे से कुछ नही लिया। तब उन्हें निवेदन किया- भगवन् ! क्या सथारा करना है,' तो गुरुदेव ने आखो और चेहरे से स्वीकृति दे दी। फिर वापस उन्हे अन्य सन्तो एव साध्वियां तथा उपस्थित श्रावको के सामने आचार्य देव से फिर पूछा गया तो उन्होंने सथारे के लिए स्पष्ट रूप से स्वीकृति दी। फिर भी स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा ने कहा कि- भगवन ! यदि सथारा करना है तो फिर हाथ जोड़िये, तो उन्होंने सबके सामने हाथ जोड़ लिया' जिसे देखकर सबको स्पष्ट लग गया कि आचार्य प्रवर पूरी जागरूकता के साथ सथारा करने के लिए तत्पर है। लेकिन फिर भी सथारा पच्चक्खाने का साहस नही हो रहा था। तब स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा ने एक बार फिर निवेदन किया भगवन ! दूध पी ले, पानी ले ले। पर आचार्य प्रवर ने कुछ जवाब नही दिया। तब उन्हे पूछा-'सथारा करा दू। तब आचार्य प्रवर ने मुख से बोलकर कहा कि-'पच्चक्खा दो'। इतना स्पष्ट सकेत आचार्य श्री का हो जाने पर युवाचार्य प्रवर श्री ने स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा को सथारा पच्चक्खाने के लिए फरमाया और साधु-साध्वी श्रावक श्राविकाओ की उपस्थिति मे सभी की सम्मति पूर्वक स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा ने ९ ४५ बजे सथारा करा दिया। आचार्य प्रवर ने पूर्ण जागरूकता के साथ सथारा ग्रहण किया। उस समय साधु-साध्वियों के अतिरिक्त श्री गुमानमलजी चोरड़िया श्री राजमलजी चोरड़िया श्री धनराजजी बेताला श्री माणकजी नाहर, श्री सग्रामसिहजी हिरण, श्री करणसिहजी सिसोदिया श्री जयचन्दलालजी सुखानी श्री सुशीलजी बैद श्री म[illegible]नलालजी मारू, श्री महेन्द्रजी कावड़िया श्रीमती निर्मलाजी चोरड़िया, श्रीमती कमलाजी बैद और वीरेन्द्रसिह जी लोढा आदि उपस्थित थे। शाम को ५ ३५ बजे युवाचार्य श्री रामलालजी म सा (वर्तमान आचार्य) ने चौविहार सथारा करा दिया। रात्रि १० ४१ बजे आचार्य प्रवर की आत्मा ने पूर्ण समाधि के साथ महाप्रयाण कर दिया। एक दिव्य प्रकाश हुआ और विलुप्त हो गया। यह आश्चर्यजनक था कि जबसे आचार्य प्रवर ने सथारा लिया तब से उसी रूप मे अन्त तक पोढ़े रहे। उन्होंने न तो करवट बदली और न ही हाथ-पैर ही हिलाए। उनका समाधि के परम रूप मे रमण रूप अलौकिक था।

आचार्य प्रवर के देवलोकगमन के तुरन्त बाद युवाचार्य श्री रामलालजी म सा को साधुमार्गी सम्प्रदाय का नवम् आचार्य घोषित कर दिया गया। उसी वक्त सुश्रावक श्री गुमानमलजी चोरड़िया ने सक्षिप्त वक्तव्य मे सबके सामने कहा कि आचार्य श्री के निर्देशो के अनुसार हमें चलना है। स्वर्गीय आचार्य प्रवर ने स्वय को युवाचार्य श्री एव श्री ज्ञानमुनिजी को तीन शरीर एव एक प्राण कहा है अब वे दो शरीर एक प्राण रहे है। इन दोनो महापुरुषो को एकमेक होकर इस सघ को आगे बढ़ाना है। इस सम्प्रदाय की श्रावक-श्राविकाओ की एक सस्था है जिसका नाम श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ है, जिसका मुख्य कार्यालय बीकानेर मे स्थित होकर पजीकृत है।'

आचार्य प्रवर के पार्थिव शरीर को दूसरे दिन २८ अक्टूबर को दोपहर १ बजे भड़भूजा घाटी स्थित पौषधशाला भवन से चादी की डोल मे विराजित कर अन्तिम यात्रा पचायती नोहरे पहुची। यहा से १ २० बजे हजारो लोगो की मौजूदगी मे महाप्रयाण यात्रा शुरू हुई जो बड़ा बाजार घटाघर मोती चौहट्टा [illegible] [illegible] बाजार, शास्त्री सर्कल, अशोक नगर, आदि होते हुए शाम ४ १५ बजे श्री [illegible] जैन छात्रावास पहुची। यहा सायकाल ४ ४५ बजे आचार्य नाना की पार्थिव देह को आचार्य देव के ससारपक्षीय भतीजे श्री [illegible] [illegible] श्री [illegible] पोखरना ने अग्नि को समर्पित

किया। इस अवसर पर श्री अ भा सा जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शांतिलालजी सांड महामंत्री श्री सागरमलजी चपलोत, पूर्व अध्यक्ष श्री गुमानमलजी चोरड़िया, श्री सिद्धकरणजी सिपाणी, उदयपुर संघ के अध्यक्ष श्री संग्रामसिंहजी हिरण, मंत्री श्री करणसिंहजी सिसोदिया प्रचार प्रसार संयोजक श्री वीरेन्द्रसिंहजी लोढ़ा शहर विधायक श्री त्रिलोकजी पूर्बिया, राजस्थान विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री शान्तिलालजी चपलोत, बामवाड़ा के पूर्व सासद श्री प्रभुलालजी रावत उदयपुर शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री शेषमलजी पगारिया सहित विभिन्न गणमान्य नागरिकों, विभिन्न संघ एवं संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित अपार जनसमूह उपस्थित था। तब तक करीब एक लाख से ऊपर श्रद्धालुओं का जमघट लग चुका था। यही नहीं यदि २४ घंटा पार्थिव शरीर रुक जाता तो १-२ लाख श्रद्धालु बाहर से और भी आ जाते पर साधुमार्गी परम्परानुसार बहुतों का आग्रह होते हुए भी पार्थिव शरीर नहीं रोका गया और इसे ६ किमी की लम्बी यात्रा के बाद श्री गणेश जैन छात्रावास के परिसर में तेजोमय बना दिया गया।

-उदयपुर

शत-शत वंदन आज हमारा

स्नेहलता पारख

युगों युगों तक गूंजेगा, जगती में जयनाद तुम्हारा
तिण्णाणं तारयाणं को, शत शत वंदन आज हमारा।
युगपुरुष युगदृष्टा नाना नाना के आदर्श बने
समता दर्शन के प्रबल प्रणेता ध्यान समीक्षण ध्यानश बने
दिव्य सितारे जैसे जग पे आभामय तुमसे आकाश सारा।

मुखमंडल दीप्तिमय तेरा मस्तक पर चमके ब्रह्मकांति
उग्रविहारी तप धारी तपोतेजस्वी सहज शांति
शांत स्वभाव का वह निरंतर, अनुपम अद्भुत व्यक्तित्व तुम्हारा
जब जब लेते हैं नाम तुम्हारा, लहरा उठता श्रद्धा का सागर
सूरत सम्मुख आ जाती प्यारी, गहरा उठता आंसू का बादल।
आंखों में अश्रु लुप्त हुए यह न सह सके विरह तुम्हारा।

गहन आत्मचिंतन कर नाना ने शासन का गुरु राम दिया
संघ बनेगा राम राज्य यह गुरुदेव पैगाम दिया
राम भास्कर बनकर दिखलाये, ऐसा हो दृढ़ संकल्प हमारा॥

बीकानेर

ाण के ... के साथ एक

र्गी जैन संघ

त जी नवम

प्रताप केसरी

Pratap Kesri

समता दर्शन प्रणेता धर्मपाल प्रतिबोधक समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानेश के महाप्रयाण
के पश्चात् पौषधशाला (उदयपुर) में विराजित पार्थिव देह

महाप्रयाण यात्रा का साक्षी रजत विमान

रजत विमान में विराजित पार्थिव देह की
अतिम यात्रा का पौषधशाला से प्रारम्भ

अपने आराध्य की अतिम यात्रा म सम्मिलित अपार भक्त जन।

ाति दीर्घ समय म भारत भर स एकत्रि भक्त जन का सैलाब

महाप्रयाण यात्रा का साक्षी रजत विमान

रजत विमान मे विराजित पार्थिव देह की
अतिम यात्रा का पौषधशाला से प्रारम्भ

अपने आराध्य की अतिम यात्रा म सम्मिलित अपार भक्त जन।

नाति दीर्घ समय म भारत भर से एकत्रित भक्त जन का सैलाब

अन्तिम दर्शन हेतु श्री गणेश जैन छात्रावास
उदयपुर में एकत्रित आबालवृद्ध

अन्तिम संस्कार की तैयारी

चिर विदा अंतिम प्रणाम
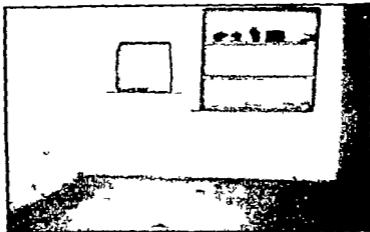
दाता ग्राम में घर का वह भीतरी भाग
जहा "गोवर्धन" ने जन्म लिया

जन्म स्थान का प्रवेश द्वार

परिवार का आवास-स्थल

कपासन का यह धर्मस्थानक जहा से
महाभिनिष्क्रमण यात्रा का प्रारम्भ हुआ

महाभिनिष्क्रमण–अणगार धर्म ग्रहण की साक्षी की सुरम्य स्थली

बचपन के साक्षी एव परिजन

फूलचन्द पोखरणा

भवरलाल पोखरणा

रतनलाल पोखरणा

[illegible] पोखरणा

मांगीलाल मास्टर सा

महाभिनिष्क्रमण का गवाह कपासन का मुख्य बाजार

गणेश गौशाला कपासन–प्रवेश द्वार
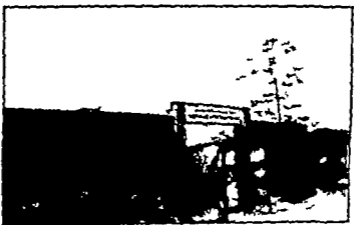
गणेश गौशाला का गोधन
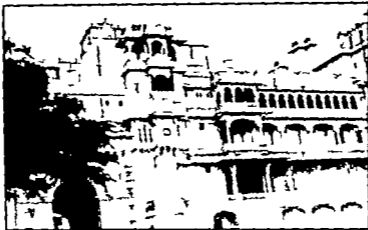
युवाचार्य चादर प्रदान स्थल राजप्रासाद उदयपुर

चादर महोत्सव का स्मृति स्थल—राजप्रासाद का सूरज गोखडा
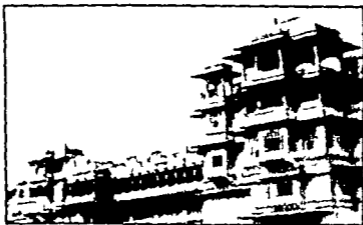
राजप्रासाद का एक विहंगम दृश्य
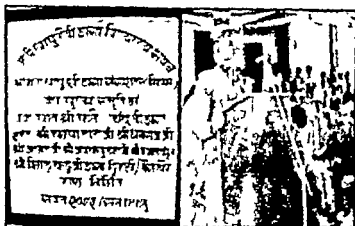
श्रीमती धापूदेवी डागा विद्यालय भवन के
समर्पण का दृश्य गणेश चिकित्सालय

जन्म स्थल जो अब भक्तजनों का
तीर्थ स्थल गणेश समता विद्यालय

गणेश चिकित्सालय

नानेश नगर दाता—सामायिक भवन

गोलछा ट्रस्ट गुवाहाटी द्वारा निर्मित सवाय

ओस्तवाल विंग
पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाकक्ष
श्री उमराव सिंहजी ओस्तवाल (मुम्बई)
के भाई स्व श्री कुन्दनमलजी एवं उनकी
माताजी स्व श्रीमती सुन्दरबाई ओस्तवाल
(धर्मपत्नि श्री पृथ्वीराज जी ओस्तवाल ...)
की पावन स्मृति मे निर्मित

ओस्तवाल विंग प्रस्तर पट्ट
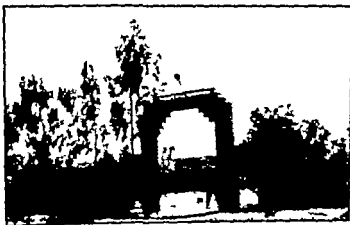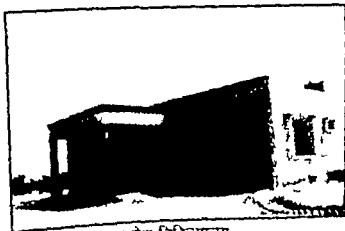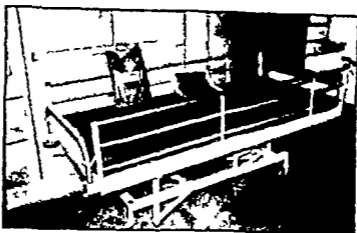
अस्वस्थता के समय प्रयुक्त पर्यंक

अस्वस्थता के कारण विहार के समय प्रयुक्त पालकी

महाप्रयाण के पश्चात् संघ को समर्पित पार्थिव देह

व्यक्तित्व वन्दन

ोरक

ा यागी
समत्व
ावन की
पर भी
के बाद
ने आज
ाज भी

बारे मे
अपने
जिन-
सहज
शासन
नकाल

ा और
साथ
वेशिष्ट
लिए
जीवन
।
स्थान
र का
आग
ा की
स्पके
सभी

1

❑ श्रमण सघीय आचार्य श्री शिव मुनि जी म सा

समता योग के प्रेरक

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के मूर्धन्य सत आचार्य श्री नानालाल जी म सा एक समता योगी महापुरुष थे। आपने अपन जीवन का लक्ष्य समता के माध्यम से जिन-शासन की प्रभावना का रखा था, समत्व योग के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन के महत्वपूर्ण समय को श्रमणाचार म व्यतीत किया, अपने सयमी जीवन की साधना मे तल्लीन रहते हुए अपना पूर्ण जीवन जिन शासन की प्रभावना मे लगाया। जैसे एक पुष्प मिट जान पर भी अपनी सुगध को वायुमडल मे घोलकर अमिट बना रहता है। वैसे ही एक मुनि देह दृष्टि से अदृश्य हो जाने के बाद भी अपनी गुण गरिमाओ के रूप मे सदैव जीवित रहता है। आचार्य श्री नानालाल जी म भले ही देह दृष्टि से आज हमारे समक्ष नही है, परतु गुणो की सुगध रूप मे वे आज भी विद्यमान हैं। उनके सद्गुण, उनके विचार आज भी जन मानस म जीवत हैं।

मुझे अपने जीवनकाल मे आचाय श्री के दर्शन का सौभाग्य तो प्राप्त नही हुआ परतु उनके जीवन के बार मे समय-समय पर सुनता रहा हू, उन्होंने अपन सम्प्रदाय क विस्तार में अपने जीवन का बहुमूल्य समय लगाया। अपने सयम काल में लगभग ३५० दीक्षाए प्रदान कर महान पुण्य का अर्जन किया एव अनेक भव्य आत्माओ को जिन-शासन की सेवा मे समर्पित कर शासन-सेवा का लाभ लिया। जीवन मे कठिन से कठिन क्षणो मे भी वे अपन सरज, समतारूप स्वभाव मे स्थिर रहे। समाज को उन्होंने सम्यक्त्व दीक्षा के नाम पर कट्टरता स बाधा। आप अनुशासन प्रिय थे, अनुशासन के पालन के लिए वे अनेक बार कठोर स कठोर निर्णय भी लेते थे और उन्होंने अपने जीवनकाल मे ऐसे निर्णय लिए, यह उनकी दृढता का ही प्रतीक है।

उन्होंने समीक्षण ध्यान पद्धति का विकास किया और उसे अपने साधु सतों मे प्रसारित कर ध्यान की ओर प्रेरणा करते रहे। वे एक कुशल प्रवचनकार थे। अक्सर वे अपने प्रवचनो मे आगम और अध्यात्म के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन का भी स्पर्श करते थे और उस ही क्रियात्मक रूप देने के लिए उन्होंने दलितोद्धार का विशिष्ट कार्य किया। वर्ग भेद एव जातिवाद के द्वारा होने वाली राष्ट्र की दुर्दशा एव बढती हुई हिंसा पर रोक लगान के लिए दलितोद्धार एव अहिंसक उत्क्राति का कार्य हाथ में लिया। दुर्व्यसनो मे दलित माने जान वाल व्यक्तियो के जीवन को परिवर्तित कर उन्हे एक अहिंसक जीवन की नई दीक्षा प्रदान की, जिन्हे आज धर्मपाल की सज्ञा प्राप्त है।

अपना सपूर्ण जीवन सयम साधना एव समता क साथ व्यतीत करते हुए आपश्री २७ १० ९९ को राजस्थान प्रात के उदयपुर नगर मे अपना औदारिक शरीर छोडकर महाप्रयाण को प्राप्त हुए। उनक गच्छ आपने जिस सघ को अपना पूरा जीवन देकर पल्लवित पुष्पित किया आपक उत्तराधिकारी मैत्री और प्रेम के साथ समन्वय क क्षेत्र म आगे बढे। यह समन्वय का युग है हम आपसी मतभेदो से ऊपर उठकर रचनात्मक कार्यक्रमो क द्वारा जिन-शासन की सेवा कर और विश्व म जैन धर्म को एक अप्रतिम स्थान दिलवाने मे अपने आपको समर्पित कर। सभी सघ सबके साथ मैत्री प्रेम और सौहार्द का वातावरण चाहता है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि २१वीं सदी म हम सभी मिल जुलकर जैन दर्शन को विश्व क कोने-कोने म पहुचाएगे।

अनुपमेय तत्त्वदर्शी

राजस्थान नभोमणि आचार्य प्रवर गुरुवर्य नानेश हमारे जीवन के प्रेरणा स्रोत थे। महान् आचार्य १००८ पूज्य जवाहरलाल जी महाराज की सौराष्ट्र स्पर्शना के बाद गोण्डल गच्छ के साथ साधुमार्गी संघ का गहरा संबंध स्थापित हुआ था, जो उत्तरोत्तर वृद्धिगत होता गया। आचार्य देव पूज्य गणेशीलाल जी महाराज ने जीवन काल में इस संबंध को सींचा और सौराष्ट्र के गोण्डल गच्छ के साधु साध्वी की उत्कट भक्ति आचार्यश्री के प्रति बनी रही। बाद में आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी महाराज गद्दीनशीन हुए तब उन्होंने भी इस संबंध को बरकरार रखते हुए गोण्डल गच्छ को बहुत आदर भाव से देखा। उतना ही नहीं गोण्डलगच्छ का गौरव भी बढ़ाया और हम सब की उनके चरणों में निष्ठा बढ़ी, और वे भी हम पर कृपा वृष्टि करते रहे।

जब जब हमें शास्त्रीय उलझन आती थी तब उनसे समाधान मांगते थे। वे सस्नेह अपनी ज्ञान गरिमा से अद्भुत अमृत सरिता में स्नान कराते हुए उत्तम समाधान देते थे। वे जितने त्याग मूर्ति थे उससे कहीं अधिक ज्ञान मूर्ति थे सिर्फ ज्ञान ही नहीं वे तत्वदर्शी भी थे और कहीं अधिक वे समता के सागर थे। उनकी समन्वय शैली हृदय ग्राही थी। राजस्थान की उफान भरी आपसी विवादों की परम्परा का उपशांत करते हुए उन्होंने उत्तम समता से ऐसे प्रभावित किया कि मानो क्लेश मिट करके गुणात्मक भाव हो गया और राजस्थान के प्रति आचार्यों का जो एक [illegible] था वह मिट करके मानो शासन भक्ति सरिता सब पर बहने लगा। हम मानते हैं कि इसका सारा श्रेय आचार्य प्रवर तत्ववेत्ता गुणसागर श्री नानालाल जी महाराज के चरणों को ही प्राप्त हो रहा है। आडम्बरों का सिलसिला चल रहा था उसका विरोध करते हुए आपने निराडम्बर भावों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। इतना ही नहीं स्वयं आडम्बर रहित सादगी की मूर्ति बन गए और जब हम इन भावों का साक्षात्कार करते हैं तो उनके श्री चरणों में हम नतमस्तक हो जाते हैं। यदि आचार्य श्री नानालाल जी महाराज की तरह साधु समाज के त्यागी नेतृत्व वाले पूज्यनीय महाराज गण इस आदर्श को अपना लें और उनकी सेवाश्रित पदावली पर चलने का प्रयास करें तो जैन शासन और उनकी त्याग प्रणाली कौमुदी की तरह समग्र भारतवर्ष पर अमृत वर्षा कर सकेगी।

✿

❑ राष्ट्र सत कमल मुनि 'कमलेश'

जिनशासन के उज्ज्वल नक्षत्र

जिन शासन की श्रमण परपरा म समय-समय पर अनेक दिव्यात्माओ ने दीक्षित होकर जन-जन के बीच सम्यक् क्राति का उद्घोष कर मानव समाज को नई दिशा प्रदान की जिनका अनत उपकार सपूर्ण सृष्टि पर है, उसी शृखला मे क्रियाद्धारक आचार्य प्रवर पू श्री हुक्मीचद जी म सा की उज्ज्वल परपरा मे समता विभूति, बाल ब्रह्मचारी, आचार्य प्रवर श्रद्धेय श्री नानालाल जी म सा का कार्यकाल इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे अकित किया जाएगा।

आचार्य श्री नानेश जी म सा ने सयम, सादगी और सदाचार रूपी त्रिवेणी का मार्ग अपनाकर एक अनुपम आदर्श प्रस्तुत किया है। इस महान विभूति ने विश्व विख्यात रणबाकुरो की मेवाड़ (राजस्थान) की पावन भूमि दाता (नानेश नगर) ग्राम मे माता श्रीमती सौभाग्यवती शृगार बाई की कुक्षी से वि स १९७७ ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया की शुभ पावन वेला मे जन्म लेकर धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री मोड़ीलाल जी के कुलदीपक बनकर पोखरना परिवार को गौरवान्वित किया।

बचपन अभी पूरा खिल ही नही पाया था कि सिर्फ ८ वर्ष की अल्पायु मे पितृ वियोग का वज्रपात बाल मानस पर हुआ और तभी ससार की असारता, क्षण भगुरता के साथ-साथ आत्मा की अमरता का एहसास हुआ और वही से आत्मा म वैराग्य का अकुर विकसित होने लगा।

इधर रूढ़ियो, परपरागत क्रिया कलापो से ऊपर उठकर आचार्य प्रवर श्री जवाहरलाल जी म सा , जिनका नाम भी राष्ट्र को गुलामी की जजीरो से मुक्त कराने मे क्रातिकारी के रूप मे श्रद्धा से याद किया जाता है, न छुआ-छूत नारी जागरण, राष्ट्र धर्म स्वदेशी आदोलन व खादी प्रचार को भी जीवन मे आत्म साधना के साथ साथ महत्वपूर्ण समय दिया। उनके युवाचार्य प्रवर श्रद्धेय श्री गणेशीलाल जी म सा की अनासक्त जीवन तप साधना स प्रभावित होकर आचार्य श्री नानेश ने शिष्यत्व स्वीकार ही नही किया बल्कि सपूर्ण रूप से समर्पित श्री चरणों म विनय सरलता और विवेक की मिसाल बन गए। जो कि माना जन्म के साथ ही जन्मा जन्मो से आपको विरासत मे मिली है। ज्ञानाभ्यास म अप्रमत्त भावो से निरतर लीन हुए। जैनागमों के साथ साथ न्याय, दर्शन, तर्कशास्त्र व सभी दर्शनो का तल स्पर्शी अध्ययन ही नहीं बल्कि उन्हे आत्मसात भी किया। प्रवचन कला मे निपुणता ओजस्वी प्रखर वक्ता के रूप मे आपकी चारो ओर ख्याति फैली। आपके निर्मल, सरल व गभीरता के साथ साथ दृढ़ता स, विचारो से प्रभावित होकर गणेशाचार्य ने चतुर्विध सघ के समक्ष उदयपुर मे युवाचार्य पद २३ सितम्बर १९६२ (सवत् २०१९) मे प्रदान किया।

आचार्य श्री ने पिछड़े वर्ग की बलाइ जाति म व्यसन मुक्त क्राति का सूत्रपात किया और सुसस्कारो म ओत-प्रोत कर उनको धर्मपाल के रूप मे नई पहचान बनाकर मानव समाज म समानता का आदर प्रदान करवाया। हजारो परिवारो ने नए जीवन की शुरुआत कर अपना अपना सौभाग्यशाली माना। दहेज घूघट प्रथा और अधविश्वास जैसी अनगिनत रूढ़िया के खिलाफ जबरदस्त अभियान प्रारभ किया। मृत्युभोज बाल विवाह पर हृदय परिवर्तन कर इन पर नियत्रण स्थापित किया।

सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय और आर्थिक विषमताओं की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए समता का संदेश देकर मार्ग प्रशस्त किया। स्थानकवासी परम्परा में एक साथ पच्चीस दीक्षा रतलाम में प्रदान कर नया इतिहास बनाया। समीक्षण ध्यान योगी ने वैज्ञानिक ढंग से आध्यात्मिक ध्यान की पद्धति को विकसित कर विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त किया।

देश के कोने कोने में हजारों मील की पद यात्रा कर गरीब-अमीर, ऊंच-नीच की दिवारों से ऊपर उठकर संपूर्ण मानव समाज को ज्ञानामृत का रसपान कराया। निश्छल व्यक्तित्व और निर्मल वचन सिद्धि के वे धनी थे। मुझे भी दर्शन का सौभाग्य मिला। जब मैं वैराग्यवस्था में था तब आप ही ने संसारी माता श्रीमती मनोहर बाई नागोरी से कहा था कि यह भविष्य में होनहार और महान् बनेगा। आपने जिन शासन की महती प्रभावना की। हिन्दी संस्कृत, प्राकृत गुजराती अनेक भाषा के ज्ञाता, गीता, बाइबिल, कुरान आदि धर्म ग्रंथों के मर्मज्ञ बहुश्रुतता के धनी साहित्य सृजन के अक्षय कोष आचार्य श्री ने कई ग्रंथों का सृजन किया। आपके मौलिक प्रवचन गुजराती मराठी भाषा में प्रकाशित हुए हैं। ऐसी दिव्य महान आत्मा ८० वर्ष की उम्र में चाहे शरीर कमजोर था परंतु आत्म शांति का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। शरीर की वेदना को मुख मंडल पर न झलकाते हुए, उस पर अपूर्व शांति रखी थी जो उनकी साधना का अपूर्व चमत्कार था। २७ अक्टूबर को उदयपुर में रात्रि १०.४१ बजे संथारा युक्त पंडित मरण द्वारा हम सब को छोड़कर देवलोक हो गए। संपूर्ण मानव समाज की अनमोल धरोहर का अचानक वियोग, एक वज्रपात के समान है। उस आत्मा को शाश्वत शांति मिले। साथ ही, संपूर्ण आदर्शों और सिद्धांतों का जन जन तक फैलाने का दृढ़ संकल्प लेना ही उनके श्री चरण में सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गुरु बिन घोर अंधेरा

बुद्धिप्रकाश जैन

गुरु बिन घोर अंधेरा, गुरु ही तारणहारा,
गुरुवर की छत्र छाया में होवे भव पारा।

गुरुवर तेरे पुण्य का, कैसा प्रबल प्रताप,
लागा बोध अनित्य का दूर हुए भव ताप।

धर्म दिया गुरुदेव ने, कैसा रतन अमोल,
मृत्युलोक के जीव को, अमृत का रस घोल।

सद्गुरु की संगत मिली, मिला धर्म का सार,
जीवन सफल बना लिया, सिर का भार उतार।

दुर्लभ सद्गुरु का मिलन, दुर्लभ धर्म मिलाप
धर्म शिक्षा सद्गुरु मिले, मिटे सभी संताप।
गुरुवर तेरा आसरा, तेरा ही आधार,
शुद्ध धर्म सिखा दिया, होवे भव के पार।

गुरु बिन घोर अंधेरा, गुरु ही तारणहार,
सच्चा गुरु जो मिल गया, तिर गये संसार।

-भैंसोदा मंडी (मंदसौर)

❑ मुनि नेमीचन्द्र

एक अनूठे व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी

सूर्योदय होता है तो धरती आलोक से अलोकित हो जाती है। तमसावृत धरती का एक-एक कण प्रकाशित हो उठता है। अधकार से मुक्ति दिलाने वाला दिवाकर लाखो करोड़ो मानवो का मननीय और दर्शनीय माना जाता है। किंतु करोड़ो जन समूह के सिर पर आकाश मे चमकने वाला और सुबह उदित होने वाला भास्कर सध्या काल मे अस्त होकर जनता की नजरो से अदृश्य हो जाता है।

इसी प्रकार प्रकृति का यह भी शाश्वत नियम है कि जिसका जन्म होता है, उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। प्रथम क्षण जन्म का है तो इसके अनन्तर द्वितीय क्षण मृत्यु का है। यह तथ्य सामान्य जीवात्माओ के लिए ही नहीं, असाधारण ज्योतिर्मय जीवन जीने वाले तीर्थंकर जैसी महान आत्माओ के लिए भी है। इसमे कोई अपवाद नहीं है। जिस शरीर के साथ वर्षों तक सयोग-सबध रहे, उन महान आत्माओ के समक्ष भी एक क्षण ऐसा आता है जब वह सयोग वियोग के रूप मे परिणत हो जाता है।

दिनाक २७ अक्टूबर ९९ का दिन भी ऐसा ही था कि जैन जगत के देदीप्यमान सूर्य समतानिधि, धर्मपाल-प्रतिबोधक, समीक्षण-ध्यान योगी, जैनाचार्य प्रवर श्री नानालालजी म. दिवगत हो गए। वे भले ही साधुमार्गी सघ के आचार्य कहलाते हो, किन्तु धार्मिक समाज के लिए उनका वियोग निःसंदेह महती क्षति कहलाएगी। क्योंकि सत किसी एकाकी, व्यक्ति-विशेष या किसी एक धर्म सम्प्रदाय अथवा समाज से बधे नहीं होते। वे सभी के और सब उनके होते है। उनके उपदेश या प्रवचन सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय होते है। उनसे सोई हुई मानव जाति को नई दिशा, नई जागृति और नई जीवन-ज्योति मिलती है। वे किसी एक का पक्ष लेकर नहीं चलते जो भी जिज्ञासु मुमुक्षु या आत्मार्थी होते है, उनको उनसे मार्ग-दर्शन मिलता है। जो पक्षपात या तीव्र मोह मे उलझा रहे, वह सत कैसा ? सत तो सत्य से जुड़ा हुआ होता है, समता उसकी बुद्धि मे बसी हुई है। इन सभी तथ्यो पर विचार करते है तो ऐसा प्रतीत होता है कि श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी महाराज मे ये सभी विशेषताएं थीं।

उनके विरक्तिमय जीवन से लेकर अब तक के जीवन पृष्ठो का अवलोकन करते है तो ऐसा प्रतीत होता है कि सासारिक जीवन से विरक्ति की भावना मे उतरने के पश्चात् वे साधुता के इन मूलभूत गुणो का अभ्यास प्रारभ करने लगे थे। ऐसे गुरु की शोध मे वे अपनी वैराग्य यात्रा कर रहे थे। आखिर उन्हे अपनी शोध मे सफलता मिली और परम श्रद्धास्पद महामहिम आचार्य प्रवर (तत्कालीन युवाचार्य) पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज के चरणो मे उन्होंने निर्ग्रन्थ प्रव्रज्या अगीकार की। दीक्षा लेने के पश्चात गुरु सेवा तथा साधुत्व की साधना के अतिरिक्त अध्ययन की ओर आपका विशेष ध्यान गया। अध्ययन काल के दौरान आप व्यर्थ की वार्ता और निरर्थक इधर-उधर की पचायती से दूर ही रहते थे। हमने देखा कि अध्ययन काल के दौरान भी आप आगम के उस स्वर्ण सूत्र कि अधिक बोलने से मनुष्य की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। कई मनुष्य अपनी अनावश्यक बोलने की आदत का त्याग प्रौढ़ वय मे भी अपनी बोलने सोचने की शक्ति को नष्ट कर डालते है और व्यर्थ का कटु वातावरण बना लेते है। अतः स्वर्गीय आचार्य श्री ने अपने दैनदिन व्यवहार मे मौन साधना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया इसी कारण उनकी चिन्तन मनन की क्षमता मे आशातीत वृद्धि हुई।

आगमो के तलस्पर्शी अध्ययन के साथ साथ आपने संस्कृत, प्राकृत जैन न्याय, सांख्य योग नैयायिक वैशेषिक वेदान्त आदि दर्शनो का भी गहराई से अध्ययन किया। अध्ययन काल मे आ० श्री के साथ दो सहपाठी और थे। एक थे उज्जैन निवासी पं० कुन्दनमलजी और दूसरा मै (मुनि नेमिचन्द्र)। आपका अध्ययन केवल पुस्तक रटन तक ही सीमित नहीं था अपितु ठोस अध्ययन के साथ चिंतन का चिराग भी प्रज्वलित रहता था, इससे आपका पाण्डित्य पल्लवग्राही नहीं रहा, वह भी मानव समाज एवं मानवेतर सभी समष्टि की गतिविधि एवं उनके प्रति कर्तव्य निर्धारण करने मे सर्वतोमुखी प्रतिभा का सूचक बना रहा। उसमे उत्तरोत्तर शांत सात्विक बुद्धि और वृत्ति का सिंचन होता रहा। इस प्रकार आप गुरुदेव के सान्निध्य मे रह कर शास्त्रीय दृष्टि से शिक्षा ग्रहण के साथ साथ आसेवनशिक्षा मे निष्णात और परिपक्व हो गए।

इस परिपक्वता की निष्पत्ति सन् १९५२ मे पाली-सादड़ी मे हुए अ भा स्था जैन साधु सम्मेलन मे श्रमण संघ की स्थापना के पश्चात हम उनके जीवन मे पाते हैं। सन् १९५२ मे सर्व सम्मति से आचार्य पद पर श्रद्धेय श्री आत्मारामजी म एव उपाचार्य पद पर श्रद्धास्पद पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म को निर्वाचित किया गया। उस समय उपाचार्य श्री के पास श्रमण संघ से संबंधित जो भी मौखिक या लिखित रूप मे समस्याएं आतीं, उपाचार्य श्री वे आशय को समझ कर पत्राचार द्वारा अथवा प्रत्यक्ष वार्तालाप द्वारा आप (स्व आ श्री नानालालजी म) समाधान किया करते थे। यद्यपि श्रमण संघीय कार्यभार दोनो महापुरुषो पर था परन्तु श्रमण संघ ने आचार्य श्री आत्मारामजी म के अत्यन्त वृद्ध एवं रुग्ण होने के कारण उपाचार्य श्री जी पर ही सारा दायित्व सौंप दिया था। श्रमण संघ कई सम्प्रदायो का विलय होकर बना था। इसलिए कभी कभी कई बार पेचीदी संघीय समस्याएं आती थीं। ऐसी स्थिति मे संघीय एव सामाजिक कार्य भी विशेष होता था। यद्यपि पूज्य गुरुदेव उपाचार्य श्री की सेवा मे हम कई सत थे, परन्तु चिंतन तथा कार्य करने की विशिष्ट क्षमता हर एक साधक मे नहीं होती। उन समय संघीय कार्यों को कुशलतापूर्वक निपटाने तथा संघ की प्रत्येक समस्या का समाहित करने मे एव सुव्यवस्थित कार्य करने मे आप (आचार्य श्री नानालालजी म) का ही प्रमुख योगदान रहता था। उस दायित्व को आपने बहुत ही सुचारु रूप से निभाया।

कालान्तर मे कुछ अपरिहार्य कारणो से गुरुदेव पू श्री गणेशीलाल जी के उपाचार्यपद और श्रमणसंघ से मुक्त होने से आप (आचार्य नानेश) तथा कुछ साधु साध्वी भी अपनी भूतपूर्व सम्प्रदाय मे चले गए। साधुमार्गी संघ बना और उसके युवाचार्य पद पर आपको प्रतिष्ठित किया गया। पूज्य आचार्य श्री गणेशीलालजी म के स्वर्गारोहण के पश्चात् आचार्य श्री गणेशीलालजी म के उत्तराधिकारी के रूप मे आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। साधुमार्गी संघ की बागडोर आपके हाथो मे आने के बाद आपने अत्यन्त साम्य से बहुत ही कुशलता दीर्घदृष्टि और आचार विचार मे समन्वयकारिता के साथ साधुमार्गी संघ का संचालन किया। एक धर्माचार्य मे जो योग्यता और क्षमता होनी चाहिए, वह आप मे थी। धीरता गंभीरता कष्टसहिष्णुता तथा संघ मे प्रविष्ट साधु-साध्वियो की शिक्षा, दीक्षा वृद्ध साधु साध्वियो की सेवा आदि व्यवस्था पर आपने बहुत ध्यान दिया। आपके संघ-संचालन की क्षमता का सबसे बड़ा प्रमाण है रतलाम मे आपके द्वारा २५ विरक्त विरक्ताओ को दीक्षा प्रदान कर एक कीर्तिमान स्थापित करना। इससे पहले और बाद में भी आपके हाथो से अनेक मुमुक्षुओ की दीक्षाएं हुईं। आपने अनेक साधु साध्वियो को उच्च शिक्षा से सुशिक्षित किया। कई विद्वान साधु एव विदुषी साध्वियां को तैयार किया। आपकी प्रेरणा से साधु वर्ग एवं श्रावक वर्ग के सिद्धांत न्याय दर्शन एव धर्म का विशिष्ट ज्ञानाभ्यास के लिए एक परीक्षा बोर्ड के माध्यम से पाठ्यक्रम निर्धारित हुआ। आपकी समतानिष्ठ आचार विचार प्रधान मे युक्त प्रवचनो की कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं।

सामाजिक क्षेत्र मे भी आपने कइ महत्वपूर्ण कार्य किए है। आपके द्वारा सबसे महत्वपूण कार्य हुआ है मालवा मेवाड़ आदि प्रदशा म फैली हुई, सुसस्कारा में पिछड़ी मासाहार, पशुहत्या शिकार आदि दुर्व्यसनो से ग्रस्त नैतिकता और आध्यात्मिकता से दूर बलाई जाति का प्रतिबाध दकर उनके जीवन म आमूलचूल परिवर्तन करना और दुर्व्यसन छुड़ा कर उन्हे धार्मिक सुसस्कारो से सुसस्कृत करने का। आपने सुदूर प्रदेशों म विचरण करके उस कौम को शुद्ध धम सस्कार प्रदान कर धमपाल सज्ञा दी। उनके बालको के शिक्षण सस्कार के लिए आपकी प्रेरणा से जगह-जगह विद्यालय एव केन्द्र बन। इस तरह आपकी प्रेरणा स हजारो धमपाल परिवारो के आहार-विहार एव विचार-आचार शुद्ध हुए।

आपने देखा कि धमप्रधान भारत मे आज अधिकाश परिवार धर्म सस्कारो को त्याग कर अनेक कुव्यसनो कुरूढ़ियो एव कुसस्कारो म लिप्त हो रहे है, उन्हे शुद्ध धर्म सस्कार देने तथा व्यसना से मुक्त कराने हेतु साधु साध्वी वर्ग द्वारा उपदेश प्रदान करने के अतिरिक्त, जिन क्षेत्रो म साधु साध्वी नही पहुच पाते वहा आपके मार्गदर्शन से समता-स्वाध्याय सघ के सदस्य तथा वीर सघ के अन्तगत कुछ विशिष्ट उपासक उन-उन क्षेत्रा मे पहुच कर वहा की जनता म व्यसन मुक्ति एव सुसस्कार प्रदान का आदालन चला रहे है। इसके अतिरिक्त जिज्ञासु धर्म पिपासु जैन जैनतर जनता मे शिविरा द्वारा धार्मिक शिक्षण समीक्षण ध्यान आदि के कार्यक्रम भी आपके मार्गदर्शन से हुए और हो रहे है। आपने विभिन्न प्राता मे विचरण करके बालको, युवका, वृद्धो, समाज-राष्ट्र-सेवको तथा महिला वर्ग को युगानुकूल उद्बोधन दिया है। आपन तथा आपक सघ के साधु-साध्विया न समाज के नैतिक, धार्मिक एव आध्यात्मिक जीवनस्तर का ऊचा उठान के लिए समता दशन और समीक्षण ध्यान का प्रशिक्षण दिया और प्रचार-प्रसार भी किया है।

पिछले लगभग तीन-चार साल स आप बहुत ही अस्वस्थ थे। वृद्धावस्था के कारण आपके शरीर में काफी अशक्ति, दुर्बलता एव रूग्णता व्याप्त हो गइ थी। इस कारण अधिक लम्बा विहार नही हो पा रहा था। शरीर की इस अस्वस्थता को लेकर न चाहते हुए भी आप पिछल लगभग दो वर्षो से उदयपुर में विराजमान थे। इसी दौरान ता २७ अक्टूबर ९९ को सलेखना मयारापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

आपके दिवगत हो जाने से साधुमार्गी सघ के ही नहीं, समग्र जैन-जैनेतर धर्मसघो क एक महान व्यक्तित्व एव कृतित्व के धनी, चारित्रात्मा, मुनिपुगव की भारी क्षति हुइ है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य म होनी कठिन है। हम उन महान समतानिधि आचार्य के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए शासन देव स करबद्ध प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा जहा भी हो, वहा उन्हे शाति प्राप्त हो।

- द्वारा बसतलाल पूनमचद भडारी
२५८५ - नवाकापड बाजार
एम जी रोड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

□ गुमानमल चोरड़िया
पूर्व अध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन संघ

अपने युग के सर्वोपरि आचार्य

आचार्य श्री नानेश का जन्म ग्राम दाता में श्री मोडीलाल जी पोखरना के यहा ज्येष्ठ शुक्ला 2 संवत् 1977 को हुआ। आपकी मातेश्वरी रत्नकुक्षि धारिणी श्रीमती शृंगार कवर बाई गृह कार्यों की कुशल संचालिका, सुश्रद्धा संपन्न, धर्मपरायणा महिला रत्न थीं। आपके २ अग्रज भ्राता एव 5 भगिनिया थीं जिनमें दो भगिनिया- श्री धापू कवरजी एव श्री छगन कवर जी- ने आप श्री का ही अनुसरण कर भागवती दीक्षा अंगीकृत की और दीक्षा पर्याय में जन जन की श्रद्धा बटोर स्वर्गवासी बनीं। परिवार में सबसे छोटे होने के कारण स्नेहवश आपको सब नाना के नाम से ही संबोधित करते थे यद्यपि आपका नाम गोवर्धनलाल था। बचपन में ही आपकी सेवा की भावना प्रस्फुटित हो रही थी अशक्त वृद्ध महिलाओं के पानी का घट उठवाना आदि कई उदाहरण आपकी बाल्यवस्था मे घटित हुए है। बचपन म आपको धार्मिक क्रियाओ के प्रति रुचि कम होने के कारण जहा मातेश्वरी की सामायिक क्रिया म आप बाधक बनने का प्रयत्न करते थे, वहीं आप खेता की मनमोहक हरियाली मे कुए की टेकरी पर बैठ मानव जीवन की सार्थकता पर चिंतन किया करते थे। बाल्यावस्था म सहोदर भाई का वियोग एव 8 वर्ष की अवस्था में पिता श्री का साया उठ जाना आपके अन्त करण को झकझोर गया। आपका व्यावहारिक अध्ययन भादसोड़ा एव चिकारडा में भगिनियो के घर पर हुआ। सदैव माता के साथ ही जीमना एव मातृ आज्ञा बिना कोई कार्य नहीं करना आपकी मातृभक्ति को प्रदर्शित करता है। अपने चचेरे भाई और मित्र श्री कन्हैयालाल जी के साथ आपने व्यवसाय प्रारंभ किया। भोपालसागर मे जैन जगत के ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य का पधारना हुआ। आचार्य जवाहर के तेजस्वी व्यक्तित्व की दाता ग्राम से दर्शनार्थ गए श्रावक श्राविकाओ पर अमिट छाप पड़ी, फलस्वरूप आपको व कन्हैयालाल जी को उनके अभिभावको ने गुरु धारणा दिलवा दी।

मेवाड़ी पूज्य श्री मोतीलाल जी म सा के प्रवचनो से प्रभावित होकर आपने कच्चा पानी नही पीना, चौविहार का पालन, जूते नही पहनना एव हरी सब्जी नहीं खाना ये नियम कुछ आगारो सहित ग्रहण कर निष्ठापूर्वक पालन करने लगे। परिवार वालो को यह सुनकर गहरा आघात लगा। एक समय था जब आप अपनी माताजी को कहते थे मै नहीं मानता त्याग व्याग, मै इसे ढोंग मानता हू और आज माताजी पुत्र में वैराग्य के अकुर को पनपते देख कर मोह वश कहने लगी मै नही मानती इन त्यागो को। आपका वैराग्य पक्का था दूज के चद्रमा की तरह बढ़ने लगा। आपने सुना कि पूज्य जवाहराचार्य अब छाछ पर बचन उपलब्ध दूध दही पर मर्यादा पूर्वक रहते है। आपने केवल पानी पर रहने का मानस बनाना प्रारंभ किया उनोदरी तप चालू किया। शरीर कृश।पर, मुख तेजस्वी होने लगा। मातु श्री ने कहा तुम्हे दीक्षा लेनी है हम आज्ञा देंगे पर सब काम समय पर होगा। भगवान महावीर स्वामी ने माता पिता के समक्ष दीक्षा नहीं ली। तुम यह सोचो- मेरी वृद्धावस्था म सेवा कौन करेगा ? मर पीछे जैसा मन हो वैसा करना। नाना के सामने एक समस्या आई पर प्रतिभावान थे। माता से पूछा पहले आप जाओगे या मै कौन कह सकता है। बड़े भाई सहित अपनी सेवा करेंगे। अभी तो मै ध्यान कर रहा हू मुझे करा दीक्षा लेनी है। जब भर अतःकरण में जब जागेगा तब अनुमति मागूगा मेरे कार्य म आप बाधक नही होंगे मुझे सत्य के मार्ग म जाने देंगे। आपका वैराग्य पक्का था मातेश्वरी भी पिघली। उदयपुर मे आप पूज्य श्री गणेशी आचार्य श्री आत्मारामजी

म सा , युवाचार्य श्री काशीराम जी म सा के पास पहुचे। मुनि श्री जवरीलाल जी म सा ने कहा पहले यह प्रतिज्ञा करो कि काशीराम जी म सा का ही शिष्य बनूगा। आपको जमा नही। भीम मे मेवाड़ी चौथमल जी म सा ने आपको दीक्षा के लिए हतोत्साहित कर धन कमाने के लिए फीचर आक आदि की बात कही। सवत् 1995 मे बदनौर चातुर्मास काल मे 3 महीने मेवाड़ी पूज्य श्री मोतीलाल जी म सा के पास पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण दशवैकालिक, श्रामण्य जीवन की क्रियाओ का अध्ययन किया। उनोदरी तप चल रहा था चौथाई रोटी वाला। शरीर कृश होता जा रहा था पर तपस्वर्या की अनूठी छाप जन जन के मन को मोह रही थी। आपका वहा भी आतम साधना क पूरे लक्ष्य पूर्ण होते नही लगे, अत आप वहा स लौट आए। ब्यावर म आचार्य श्री जवाहर क सतो के दर्शन कर जवाहराचार्य का खादी पहनना एव अन्य दो बात सुनकर आप प्रभावित हुए। कोटा मे युवाचार्य श्री गणेशाचार्य की सवा मे पहुचे। श्री चरणा में सयम आराधना कर आत्म कल्याण की भावना प्रकट करने पर युवाचार्य श्री ने फरमाया। साधु बनना कोई हसी खेल नही है पहले ज्ञान सीखो। यदि सयमवृति अपनानी है तो पहले गुरु का भी परीक्षण कर लो फिर साधु दीक्षा स्वीकार कर आत्मा को तप की भट्टी पर चढा दो।' निस्पृह, अनासक्त उत्तर सुनकर आपने मन ही मन उक्त महापुरुष को गुरु मान लिया, गुरु की परीक्षा ले चुके थे अब शिष्यत्व की परीक्षा देनी थी। योग्य गुरु का सानिध्य प्राप्त हो गया।

19 वर्ष की आयु मे ज्योर्तिधर जवाहराचार्य के शासन मे कपासन मे आपकी भागवती दीक्षा पौष शुक्ला 8 सवत् 1996 मे तत्कालीन युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के मुखारविंद स कपासन शहर के बाहर एक सुरम्य सरोवर के किनारे आम्र वृक्षो क मध्य स्थित विशाल आम्र वृक्ष के नीचे हजारो की जनमेदिनी की साक्षी स सम्पन्न हुई। पूर्व रात्रि की जोरदार वर्षा यद्यपि आयोजको के लिए समस्या बन सकती थी पर प्रकृति ने एक महापुरुष की दीक्षा का पूर्वाभास करवा ही दिया

आप का वैराग्य इतना उत्कृष्ट था, आरभ-समारभ के प्रति इतने अनासक्त थे कि न तो आपने परपरा अनुसार रात्रि मे जुलूस निकलवाया न मेहदी लगवाई, सामायिक व्रत धारण कर साधना म तल्लीन हो गए।

दीक्षा की सार्थकता का मूल मत्र है, ज्ञान आराधना। अत आप श्री ने अपनी साधना के तीन बिंदु- ज्ञान-आराधना, सयम-साधना एव सेवा-भावना का लक्ष्य रखा। आपका समस्त जीवन इन साधनाओ का पर्यायवाची रहा। यद्यपि आपका व्यावहारिक अध्ययन बहुत कम था पर पडितवर्य श्री अंबिकादत्त जी ओझा के सानिध्य मे आप श्री ने यथेष्ट ज्ञान प्राप्त कर मेधावी बुद्धि का परिचय दिया एव आपकी अध्ययन एकाग्रता प्रसिद्ध रही। आपको पूर्ण रूपण विकसित करने हेतु युवाचार्य श्री गणशीलाल जी म सा न एसे मतो के साथ चातुर्मास करवाया जिनकी क्रोध प्रकृति के कारण सता का निभाना मुश्किल होता था पर आप श्री ने विनय एव सवा भावना से उनके मन को जीत कर जहा उनकी प्रकृति को बदला वही उनके मुख स बरबस निकला- 'यह शासन का होनहार रत्न है, इस अल्प अवधि में ही चमत्कार कर दिखाया।'

आप श्री ने सतत् जागरूक प्रिय वाणी से एषणीय प्रवृत्तियो से आचार्य श्री का मन मोह लिया। 24 वर्ष की सयम अवधि म 21 वर्ष श्री गणेशाचार्य की सेवा का लाभ उठाया तथा 3 वर्ष वृद्ध एव रुग्ण सतो की सेवा मे रहकर उनका भी आशीर्वाद प्राप्त किया। आप श्री साधना काल मे मौन साधक एव अल्पभाषी रहे जिससे कइयो की यह धारणा बन गई कि मुनि श्री नानालालजी विकास नही कर सकगे। पर जैसा प्रभु महावीर ने कहा है साधक साधना की उच्च कोटि पर तभी पहुच सकता है जब इन्द्रिय दान्त हो। आप श्री म किसी भी प्रकार की हमी मजाक एव पद-पद पर स्खलन की वृत्ति परिलक्षित नहीं हुई। आप म विनय वृति प्रचुर होने स अत्यल्प [illegible] पर्याय म ही [illegible] के अनन्य [illegible] बन [illegible]। आचार्य श्री ने आपकी प्रतिभा का विकास [illegible] का [illegible]। आपकी दृष्टि पैनी थी अत [illegible] [illegible] सबकी [illegible]

पत्र व्यवहार आप आचार्य श्री के संकेतानुसार करते थे। आप श्री का यह समय गुरु सेवा, स्वाध्याय आत्म जागृति, साधना में ही व्यतीत हुआ। आपकी अन्तर्मुखता समृद्ध हुई।

आचार्य श्री गणेशलाल जी म सा श्रमण संघ से पृथक् हुए एव आश्विन शुक्ला 2 संवत् 2019 को साधुमार्गी संघ की स्थापना हुई। आप श्री को युवाचार्य पद की चादर उदयपुर में रागानी के महला में हजारों की जनमेदिनी के बीच ओढ़ाई गई। जिस समय आपको आचार्य श्री ने युवाचार्य की चादर ओढ़ाई उस वक्त वन्दना के बीच सूर्य की किरणों ने आपके मुख मंडल को प्रकाश से आलोकित किया यह इस बात का पूर्वाभास था कि ये भानु के मानिन्द दुनिया में प्रकाश फैलाएँगे और यही हुआ। आज सब के मुख से एक यही बात उद्घोषित होती है कि आचार्य प्रवर अपने युग की एक विरल विभूति थे।

आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा कैंसर जैसी भयंकर व्याधि से ग्रस्त थे। आप छाया की तरह आचार्य श्री की सेवा में समर्पित रहे। डॉ. शूरवीरसिंह जी की परिचर्या चलती थी। एक समय डॉक्टर साहब ने फरमाया कि आचार्य श्री का स्वास्थ्य ठीक नहीं लग रहा है। आप अपना अवसर (संथारे का) देख सकते हैं पर युवाचार्य नानेश ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का उपयोग कर कहा डॉ साहब मुझे तो ऐसा कुछ भी प्रतीत नहीं हो रहा है। उसके पश्चात् आचार्य प्रवर काफी समय विराजे। मगर उसके पश्चात् आचार्य प्रवर की तबियत ठीक नहीं रही। जो आपको आचार्य प्रवर की तबियत ठीक नहीं लगी तब आपने डॉ. शूरवीरसिंह से पूछा 'कहिये डॉ साहब अब आपका क्या परामर्श है ?' डॉक्टर साहब ने कहा आपके आगे हमारी डॉक्टरी नहीं चलती है।' हमारे चरित्र नायक ने आचार्य प्रवर को चतुर्विध संघ की साक्षी से संथारा पचक्खाया। संथारा का पालन हुआ। गणेशाचार्य भी इतने सजग थे कि उन्होंने संथारा का पुन उच्चारण करने पर फौरन संकेत दिया कि यह हो बोल चुके हो 'आगे चालो।' आचार्य प्रवर देवलोक पधार गये। सारी जिम्मेदारी आपकी बलिष्ठ भुजाओं पर आ गई।

आप श्री ने आचार्य पद ग्रहण किया तब संघ में अन्य संख्या में साधु साध्वियाँ थीं। उनमें भी अधिकांश वृद्ध एवं स्थविर थे। यदि आपका अविर्भाव नहीं होता तो सम्प्रदाय विलीन ही हो जाती।

ज्ञान-आराधना की तरह संघ साधना का भी आपका पक्ष उज्ज्वल रहा है। शांत क्रांति के अग्रदूत सम्प्रदाय समस्त स्थानकवासी समाज के आराध्य जैनाचार्य स्व श्री गणेशीलाल जी म सा की जो अनन्य भक्ति पूर्ण सेवा आपने की है वह अपने आप में विशिष्ट है।

युवाचार्य बनने के पश्चात् प्रथम दीक्षा सेवन्त मुनिजी की हुई, वे आपके प्रथम शिष्य हुए। आचार्य पद ग्रहण करने के पश्चात् श्री मोतीलाल जी कोठारी की सुपुत्री सुशीला कुमारी जी एवं धर्मपत्नी मगी के सुपुत्र चंद जी स्वयमेव दीक्षित हुए फिर विधिवत् दीक्षा हुई। आप श्री यद्यपि प्रेरणा अधिक नहीं करते पर आपका तेजस्वी आभामंडल भविक जीवों को ऐसा आकर्षित करता है कि वे भगवान महावीर के बताए हुए अणगार धर्म को ग्रहण करने हेतु प्रव्रजित हो जाते हैं। आप श्री के कर कमलों से मुखारविन्द से लगभग 350 दीक्षाएँ सम्पन्न हुईं। रतलाम में 25 दीक्षाएँ एक साथ सम्पन्न हुईं जो लोंकाशाह के पश्चात् आप द्वारा ही सम्पन्न हुई।

<u>धर्मपाल प्रतिबोधक</u>

आचार्य पद ग्रहण करने के पश्चात् आपका प्रथम चातुर्मास रतलाम का ऐतिहासिक रहा। रतलाम से विहार कर आप समीपवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए, ग्राम नगर फरसाते हुए नागदा पधारे। नागदा में गुजराती बलाई समाज के प्रमुख एवं ज्ञानसागर बीतरागन जी आपके प्रवचन में उपस्थित हुए। प्रवचन से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्हें लगा कि यहाँ महागुरु हमारे समाज का उद्धार हो सकेगा। प्रवचन पश्चात् उन्होंने कहा कि गुरुदेव हमारी स्थिति बहुत खराब है आज लोग कुत्ते को गोदी में घुमाते हैं प्यार करते हैं गले से लगाते हैं पर हमें दुत्कारते हैं तिरस्कृत करते हैं समझ में नहीं आता कि क्या करें। धर्म परिवर्तन कर लें ईसाई बन जायें या मुसलमान बन जायें या आत्महत्या कर लें। पर भगवन् ऐसा जीवन हमारे वश की बात नहीं रह सके ? यदि आपने हमारा

उद्धार नही किया तो हमारा कभी उद्धार होने वाला नही है। आचार्य प्रवर ने सात्वना दर्शायी और फरमाया कि आप इतन घवराओ मत। आपको न तो आत्महत्या करनी है और न धर्म परिवतन ही करना है। आपके जीवन मे मदिरा और मास सेवन की जो बुराइया व्याप्त है, उन्हे आपको छोड़ना होगा। डूबते का तिनके का सहारा मिला।

गुरुदेव ने फरमाया -

कम्मुणा बम्भुणो होई, कम्मुणो होई खत्तिओ।
वइसो कम्मुणा होई, सुद्दो हवई कम्मुणा।

अर्थात् व्यक्ति अपने कर्म स ही क्षत्रिय, ब्राह्मण वैश्य अथवा शूद्र बनता है जन्म स नही। जैन धर्म मे जन्म की नही कर्म की महत्ता मानी जाती है। यदि आपकी जाति एक सामूहिक क्राति के साथ दुर्व्यवसनों से मुक्त हो जावे तो आर्थिक लाभ के साथ सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़गी। आप कर्मणा उच्च बन सकेगे। आचार्य श्री न सप्त कुव्यसन का विवेचन किया। आचार्य देव की मगलमय पीयुष वाणी से प्रभावित हाकर सीताराम जी एव उनके साथियो ने प्रतिज्ञा की आज से हम सभी सब दुर्व्यसनों से दूर रहेंगे आप हमे गुरु मत्र सुनाकर हमारा नवीन नामकरण कर दीजिए।' आचार्य प्रवर ने गभीर चिंतन क पश्चात् सम्यक्त्व मत्र पाठ द्वारा जैन धर्म म दीक्षित किया एव धर्मपाल (यानी धर्म का पालन करने वाला) से सबोधित किया। इस प्रकार दादा गुरु श्री जवाहर की अछूतोद्धार की मशाल आप श्री ने प्रज्वलित की। आप आहार पानी की परवाह किए बिना, एक दो सतो को साथ लेकर उस क्षेत्र के अन्तरवर्ती गावो मे, दाणियो म पधारे उपदेश दिया। आप श्री के उपदेश के प्रभाव से धर्मपाल बने भाइयो ने गाव के लोगो को एकत्रित कर सम्मेलन किए, एक क्रातिकारी युग का सूत्रपात हुआ। आचार्य श्री एव सन्तवर्य अपनी मर्यादा में ही उपदेश दे सकते है फिर श्रावक सघ ने अपना कर्त्तव्य पहिचाना उन लोगो से सपर्क किया प्रवास किए, सम्मेलन आयाजित किए। विवाह शादी या मोसर पर कार्यकर्ता जाते उन बुराइया छोड़ने के लिए आयाजित सभाओ में प्रेरणास्पद भाषण देते। सुश्रावक स्व श्री गदालालजी एव धमपाल गाधी स्व श्री समीरमल जी काठेड़ की सेवाए इस प्रवृत्ति मे अविस्मरणीय रहीं। स्व उदारमना श्री गणपतराज जी साहब बोहरा एव धर्मपाल माता श्री यशादा देवी जी तन-मन-धन से इस प्रवृत्ति को समर्पित रहे। आज इस प्रवृत्ति मे अथक प्रयत्नो से, अथक परिश्रम से, लाखो लोग व्यसनमुक्त हुए है। हजारा लाग धर्मपाल बने है। इनकी देखा-देखी गूजर समाज ने भी अपनी पचायत म निर्णय लेकर शराब और मास सेवन का त्याग किया। धमपाल भाइयो ने अपना सबध भी, बेटी व्यवहार भी उनसे ही करने का निर्णय रखा जो मदिरा और मास का त्याग कर धर्मपाल बनेगे इसमे दृढ़ता रहेगी। श्रावक श्राविकाओ द्वारा समय समय पर प्रवास, सम्मेलन, पद-यात्राए आयाजित होती हैं। पदयात्राओ के साथ साथ मेडिकल केम्प भी लगाए जाते है। धार्मिक शिक्षण हेतु ग्राम ग्राम में शालाएँ चलती है। बालक बालिकाओ मे धार्मिक विकास बहुत उच्च कोटि का है। अष्टमी, चतुर्दशी को उपवास भी होते हैं, बहिने गीत म गाती हैं है माली तू फूल मत तोड़ फूल की कली मे भी बहुत जीव हैं। प्रथम पद-यात्रा में बगाल के तत्कालीन उपमुख्यमत्री श्री विजय सिह जी नाहर ने अति प्रमुदित भाव से कहा कि, 'लगता है नए युग का क्रातिकारी सूत्रपात हो रहा है।' रतलाम म दिलीपनगर में धमपाल नगर मे धर्मपाल छात्रावास चलता है जिसमे धर्मपाल छात्र व्यावहारिक शिक्षा राजकीय विद्यालयो मे प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा यहा ग्रहण करते है एव सुसस्कारी बनते है।

हे आचार्य प्रवर! आपने हजारो धर्मपाल बना कर, लाखो लोगो को व्यसन मुक्त बनाकर, जैन धर्म म एक अनूठा अध्याय विरचित किया है धन्य धन्य हैं आप! धन्य है आपका अतिशय, धन्य है आपकी निश्छल साधना।

समता-दर्शन प्रणेता

सवत् 2029 क जयपुर चातुर्मास म आपने एक विद्वान मुमुक्षु क एक ही विषय पर चातुर्मास काल में प्रवचन के आग्रह का मान्य कर कि जीवनम् इस सूत्र का गभीर विश्लेषण करते हुए स्व निर्मित सूत्र सम्यक् निर्णायकम् समतामय च यत्तज्जीवनम् के सम्यक म

□ सरदारमल कांकरिया
ट्रस्टी, श्री अ भा सा जैन सघ

महान् यशस्वी कालजयी जीवन यात्रा

महान् क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचद जी म सा ने कठोर सयम साधना के पथ मुक्त जिस साधुमार्गी सघ को गतिमान किया एव स्व आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा ने अपनी शान्त क्रान्ति से वेगवान बनाकर आचार्य श्री नानालालजी म सा को उत्तरदायित्व सौपा उसे स्वर्गीय आचार्य श्री ने अपने जप तप, सयम साधना, समता दर्शन, समीक्षण ध्यान एव धर्मपाल प्रतिबोधन की अभूतपूर्व क्रान्ति द्वारा न केवल अपने लक्ष्य तक पहुँचाया अपितु उसे महिमा मडित भी किया।

एक छोटे-से ग्राम के साधारण परिवार में जन्म लेकर बालक नाना ने मुनि नाना एव आचार्य नानेश के रूप में अपनी अपरिमित मेधा, प्रबल पुरुषार्थ, अदम्य सेवा, करुणा वात्सल्य, कठोर सयम साधना एव अमृतोपम वाणी द्वारा उस शासन को जिस तरह यशस्वी बनाया, वह वामन से विराट की एक अप्रतिम कथा अपने में सजोये है।

आचार्य नानेश का समग्र सयमी जीवन सेवा पुरुषार्थ और समता का त्रिवेणी सगम रहा है। अनेक (लगभग ३५० मुमुक्षु) आत्माओ ने उस त्रिवेणी सगम मे अवगाहन कर आपके चरणो मे श्रमण धर्म स्वीकार किया जो भोग पर योग असयम पर सयम एव रागद्वेष पर वीतरागता की विजय यात्रा का अजर अमर कीर्ति स्तम्भ है।

आचार्य श्री धर्म को व्यक्तिगत अनुभूति एव सपत्ति के रूप मे मानने के कभी पक्षधर नहीं रहे है। उन्होने धर्म को जीवन व्यवहार एव सामाजिक समरसता मे प्रतिफलित करने का जीवन पर्यन्त प्रयत्न किया है। अपनी पद यात्रा एव विहार स्थलो पर इसका अकुठ प्रचार प्रसार उनका लक्ष्य एव साध्य रहा है। आपश्री बलाई जाति को इसी उपदेशामृत का पान कराकर उन्हे व्यसन मुक्त, सस्कारी एव सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा दी एव उन्हे धर्मपाल सज्ञा से अभिहित कर ऐसी क्रान्ति का सूत्रपात किया, जो मानवता का अमिट शिलालेख है।

विषमता का मूल उद्गम मनुष्य के भीतर है, कहीं बाहर नहीं। आचार्य श्री की इस मान्यता ने समता दर्शन का प्रणयन किया एव जीवन व्यवहार मे इसके आचरण की आवश्यकता को समझकर चार सूत्र प्रदान किये सिद्धान्त दर्शन, जीवन दर्शन, आत्म दर्शन एव परमात्म दर्शन। समता के इसी आचरण से आत्मा परमात्म पद की प्राप्ति कर सकती है। व्यथित, अशान्त उद्भ्रान्त एव आतकित विश्व के लिए यह समतारस अमोघ साधन है। विश्व बधुत्व की जन-कल्याणी भावना इसी 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' से ही फलित हो सकती है।

'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' के आचरण के कारण सामाजिक जीवन मे दम्भ दिन दूना हो रहा है कि अधिकाश व्यक्ति इसके शिकार हो रहे है, किन्तु आचार्य श्री ने कथनी और करनी की एकरूपता को अपने जीवन व्यवहार एव आचरण से प्रतिफलित कर जिस एकता भावना का पोषण किया उसी पर चलकर समग्र जैन समाज एकता के सूत्र मे आबद्ध हो सकता है। अपने भेदो को मिटाकर एक सगठन मे सगठित होकर अपनी आवाज को प्रभावशाली बना सकता है।

स्व० श्रद्धेय आचार्य प्रवर के जीवन को मैंने अत्यन्त नजदीक से न केवल देखा है अपितु समझा है और परखा है। साधुमार्गी जैन सघ की स्थापना में ही मेरा योग नहीं रहा है, अपितु उसके विकास उन्नयन मे भी मेरी अहम् भूमिका रही है। आज हम जिन सघर्ष क्षणों से गुजर रहे है उसमे पूज्य आचार्य श्री की [illegible]

एव एक्यता से ही विजयी हो सकते है। विघ्न सतोपिया के षड्यन्त्र से सजग रहकर उस सघनायक के स्वप्नो को हम सफल बना सकते है।

वह कालजयी यशस्वी आचार्य आज भौतिक शरीर स हमारे बीच नही है, किन्तु उनका मार्गदर्शन, आशीर्वाद एव प्यार पाथेय बनकर हमारा मार्ग प्रशस्त करेगा। उनकी दीर्घदृष्टि हम आचार्य श्री रामलालजी म०सा० जैसा अनमोल रत्न देकर गइ है। हम निष्ठापूर्वक उनके हाथ मजबूत करे, यही कामना है।

उस महान् यशस्वी कालजयी साधक को मेरी एव मेरे परिवार की विनम्र प्रणति। वह महान् आत्मा सिद्ध बुद्ध होकर शीघ्र परमात्म पद की प्राप्ति करे, यही मगल मनीषा है।

-२-ए क्वीन्स पार्क, बालिगज, कलकत्ता-१९

गजानन्द के ख्वाब थे

किरण/सीमा पितलिया

१ महावीर संघ की शान थे, जैन जगत के भान थे।
भक्तों के भगवान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

२ जिन शासन के प्राण थे, हुक्म संघ की आन थे।
समता की पहचान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

३ समता के उपदेश थे, समता के संदेश थे।
समता मय अरमान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

४ नाना गुणों की खान थे, सब सन्तों में महान थे।
देते सबको ज्ञान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

५ सम्यक दर्शन दीप दिखा, श्रद्धा की सर्वोच्च शिखा।
देते दिव्य व्याख्यान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

६ समता दर्शन प्रदाता थे धर्मपालों के त्राता थे।
कराते समीक्षण ध्यान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

७ लाखों जपते जाप थे हरते सब संताप थे।
जीवन ज्योति आप थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

८ विनय विवेक से बोलते किन्तु मिश्री सदा घोलते।
विद्वानों के विद्वान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

९ समन्वय पक्षपाती थे साधुता के साथी थे।
शुद्ध संयम श्रद्धान थे आचार्य श्री नानेश जी॥

१० सब तत्त्वों के वेत्ता थे मन इन्द्रिय विजेता थे।
धर्म पूर्ण विज्ञान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

११ महाभारत कुरान का, गीता और पुराण का।
अनुभवी आगम ज्ञाता थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१२ शृंगार मां के लाल थे, पिता मोड़ी के बाल थे।
गणेश गुरु कमाल थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१३ अनाथों के नाथ थे, आचार्यवर सम्राट थे।
भव्यों के सरताज थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१४ तेज के धारी थे, गुरुवर चमत्कारी थे।
सन्तों के सुल्तान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१५ समता थी हर बात में हर क्षण दिन रात में।
हरते अज्ञान थे आचार्य श्री नानेश जी॥

१६ मुस्कराते जब आते थे अनुशासन में आते थे।
श्रमण संस्कृति धारे थे आचार्य श्री नानेश जी॥

१७ लाखों लाख चमत्कार थे, दयामय अवतार थे।
भक्ति पर बलिहार थे आचार्य श्री नानेश जी॥

१८. सादा जीवन उच्च विचार ग्राम ग्राम किया विहार।
समता के [illegible] थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१९ सब सुखी संसार हो स्वस्थ सब नर नार हो।
जीवन समता पैगाम थे आचार्य श्री नानेश जी॥

२० सम्यग्ज्ञान के शृंगार थे दाता व [illegible] उपकार थे।
औसवंश के [illegible] थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

२१ शुभ नाम के चाँद थे गजानन्द के ख्वाब थे।
खिलते ज्यों गुलाब थे आचार्य श्री नानेश जी॥

-मोहन देम

❑ सरदारमल काकरिया
ट्रस्टी, श्री अ भा सा जैन सघ

महान् यशस्वी कालजयी जीवन यात्रा

महान् क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचद जी म सा ने कठोर सयम साधना के चक्र युक्त जिस साधुमार्गी रथ को गतिमान किया एव स्व आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा ने अपनी शान्त क्रान्ति से वेगवान बनाकर आचार्य श्री नानालालजी म सा को उत्तरदायित्व सौपा, उसे स्वर्गीय आचार्य श्री ने अपने जप तप, सयम साधना, समता दर्शन, समीक्षण ध्यान एव धर्मपाल प्रतिबोधन की अभूतपूर्वक क्राति द्वारा न केवल अपने लक्ष्य तक पहुचाया अपितु उसे महिमा मडित भी किया ।

एक छोटे-से ग्राम के साधारण परिवार में जन्म लेकर बालक नाना ने मुनि नाना एव आचार्य नानेश के रूप में अपनी अपरिमित मेधा, प्रबल पुरुषार्थ, अदम्य सेवा, करुणा, वात्सल्य, कठोर सयम-साधना एव अमृतोपम वाणी द्वारा उस शासन को जिस तरह यशस्वी बनाया वह वामन से विराट की एक अप्रतिम कथा अपने में सजोये है ।

आचार्य नानेश का समग्र सयमी जीवन सेवा, पुरुषार्थ और समता का त्रिवेणी सगम रहा है । अनेक (लगभग ३५० मुमुक्षु) आत्माओ ने उस त्रिवेणी सगम मे अवगाहन कर आपके चरणो मे श्रमण धर्म स्वीकार किया, जो भोग पर योग, असयम पर सयम एव रागद्वेष पर वीतरागता की विजय यात्रा का अजर अमर कीर्ति स्तम्भ है ।

आचार्य श्री धर्म को व्यक्तिगत अनुभूति एव सपत्ति के रूप मे मानने के कभी पक्षधर नही रहे है । उन्होंने धर्म को जीवन व्यवहार एव सामाजिक समरसता मे प्रतिफलित करने का जीवन पर्यन्त प्रयत्न किया है । अपनी पद यात्रा एव विहार स्थलो पर इसका अकुठ प्रचार प्रसार उनका लक्ष्य एव साध्य रहा है । अस्पृश्य बलाई जाति को इसी उपदेशामृत का पान कराकर उन्हे व्यसन मुक्त, सस्कारी एव सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा दी एव उन्हे धर्मपाल सज्ञा से अभिहित कर ऐसी क्रान्ति का सूत्रपात किया, जो मानवता का अमिट शिलालेख है ।

विषमता का मूल उद्गम मनुष्य के भीतर है, कहीं बाहर नही । आचार्य श्री की इस मान्यता ने समता दर्शन का प्रणयन किया एव जीवन व्यवहार मे इसके आचरण की आवश्यकता को समझकर चार सूत्र प्रदान किये सिद्धान्त दर्शन, जीवन दर्शन, आत्म दर्शन एव परमात्म दर्शन । समता के इसी आचरण से आत्मा परमात्मा पद की प्राप्ति कर सकती है । व्यथित, अशान्त, उद्भ्रान्त एव आतकित विश्व के लिए यह समतारस अमोघ रसायन है । विश्व बधुत्व की जन-कल्याणी भावना इसी 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' से ही फलित हो सकती है ।

'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' के आचरण के कारण सामाजिक जीवन मे ऐसा विष व्याप्त हो गया है कि अधिकाश व्यक्ति इसके शिकार हो रहे है, किन्तु आचार्य श्री ने 'कथनी और करनी' की एकरूपता को अपने जीवन व्यवहार एव आचरण मे प्रतिफलित कर जिस ऐक्य भावना का पोषण किया उसी पर चलकर समग्र जैन समाज एकता के सूत्र मे आबद्ध हो सकता है । अपने भेदो को मिटाकर एक सगठन मे सगठित होकर अपनी आवाज को प्रभावशाली बना सकता है ।

स्व० श्रद्धेय आचार्य प्रवर के जीवन को मैने अत्यन्त नजदीक से न केवल देखा है अपितु समझा है और परखा है । साधुमार्गी जैन सघ की स्थापना में ही मेरा योग नही रहा है, अपितु उसके विकास, उन्नयन मे भी मेरी अहम् भूमिका रही है । आज हम जिस सक्रमण काल से गुजर रहे है, उसमे पूज्य-पाद आचार्य श्री की दृढता समता

एव एक्यता से ही विजयी हो सकते है। विघ्न सतोषियो के षड्यन्त्र से सजग रहकर उस सघनायक के स्वप्नो को हम सफल बना सकते है।

वह कालजयी यशस्वी आचार्य आज भौतिक शरीर से हमारे बीच नही है, किन्तु उनका मार्गदर्शन, आशीर्वाद एव प्यार पाथेय बनकर हमारा मार्ग प्रशस्त करेगा। उनकी दीर्घदृष्टि हम आचार्य श्री रामलालजी म०सा० जैसा अनमाल रत्न देकर गई है। हम निष्ठापूर्वक उनके हाथ मजबूत करे, यही कामना है।

उस महान् यशस्वी कालजयी साधक को मेरी एव मेरे परिवार की विनम्र प्रणति। वह महान् आत्मा सिद्ध बुद्ध होकर शीघ्र परमात्म-पद की प्राप्ति करे, यही मगल मनीषा है।

-२-ए क्वीन्स पार्क, बालिगज, कलकत्ता-१९

गजानन्द के ख्वाब थे

किरण/सीमा पितलिया

१ महावीर संघ की शान थे, जैन जगत के भान थे।
भक्तों के भगवान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

२ जिन शासन के प्राण थे, हुक्म संघ की आन थे।
समता की पहचान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

३ समता के उपदेश थे, समता के संदेश थे।
समता मय अरमान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

४ नाना गुणों की खान थे, सब सन्तों में महान थे।
देते सबको ज्ञान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

५ समचक दर्शन दीप दिखा, श्रद्धा की सर्वोच्च शिखा।
देते दिव्य व्याख्यान थे आचार्य श्री नानेश जी॥

६ समता दर्शन प्रदाता थे धर्मपालों के त्राता थे।
कराते समीक्षण ध्यान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

७ लाखों जपते जाप थे, हरते सब संताप थे।
जीवन ज्योति आप थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

८ विनय विवेक से बोलते किन्तु मिश्री सदा घोलते।
विद्वानों के विद्वान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

९ समन्वय पक्षपाती थे साधुता के साथी थे।
शुद्ध संयम श्रद्धान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१० सब तत्वों के वेत्ता थे मन इन्द्रिय विजेता थे।
धर्म पूर्ण विधान थे आचार्य श्री नानेश जी॥

११ महाभारत कुरान का, गीता और पुराण का।
अनुभवी आगम ज्ञाता थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१२ श्रृंगार मां के लाल थे, पिता मोड़ी के बाल थे।
गणेश गुरु कमाल थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१३ अनाथों के नाथ थे, आचार्यवर सम्राट थे।
भव्यों के सरताज थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१४ तेज के धारी थे गुरुवर चमत्कारी थे।
सन्तों के सुल्तान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१५ समता थी हर बात में, हर क्षण दिन रात में।
हर रहे अज्ञान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१६ मुस्कराते जब बाग थे अनुशासन में आग थे।
श्रमण संस्कृति धारे थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१७ लाखों लाख चमत्कार थे, दयामय अवतार थे।
भक्ति पर बलिहार थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१८ सादा जीवन उच्च विचार, ग्राम ग्राम किया विहार।
समता के उद्यान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१९ सब सुखी संसार हो स्वस्थ सब हर नर हो।
सीमा सत्य पैगाम थे आचार्य श्री नानेश जी॥

२० सज्जनलाल के श्रृंगार थे, दांता के [illegible] उपहार थे।
औसवंश के उजियारे थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

२१ सुख [illegible] के चांद थे गजानन्द के ख्वाब थे।
[illegible] ज्यों तुलाद थे आचार्य श्री नानेश जी॥

-मोहन देव

❑ शातिलाल साड
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

बलिहारी गुरुदेव की

आचार्य-प्रवर श्री नानालालजी म सा अद्वितीय सस्कार प्रदाता और सन्मार्ग की ओर अग्रसर प्रेरित करने वाले महापुरुष थे, यह मैने प्रत्यक्ष अनुभव किया। मुझे अपने पिता स्व श्री चम्पालालजी साड और माता श्रीमती सुवटी देवी से जो सस्कार प्राप्त हुए, वे धर्माचरण के, सदाचरण के, नैतिकता के और सेवा तथा सहयाग भावना के सस्कार थे। जब-जब भी मै अपने अतीत की ओर निहारता हूँ, जन्म और बाल्यकाल से लेकर अपनी विकास यात्रा पर दृष्टि डालता हूँ तो परिवार के श्रेष्ठ सस्कारो की विरासत पर हर्षित और पुलकित हो जाता हूँ। मेरा परम सौभाग्य रहा है कि सोने मे सुहागे की भाति, पुष्प में सुवास की भाति परिवार के इन सस्कारो मे जिनशासन प्रद्योतक, परम् श्रद्धेय स्व आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा की कृपा प्राप्त हुई। इस प्रकार परिवार के सुसस्कारो में समता विभूति आचार्य श्री नानेश के सम्पर्क से जीवन विकास के अभिनव आयामो का पथ प्रशस्त हुआ। सच कहू तो जीवन का रूपान्तरण हो गया।

अविस्मरणीय-वैसे तो हमारी पारिवारिक मान्यता के सन्दर्भ से जैन सस्कार जैन साधु-साध्वीवृन्द के दर्शन प्रवचन का मुझे सहज अवसर प्राप्त होता था किन्तु सन् १९६६ में धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा के राजनादगाव चातुर्मास मे मैने उनके प्रथम दर्शन किये। वह प्रथम दर्शन अविस्मरणीय है। उनके सौम्य और आत्मीय व्यक्तित्व की असाधारण सस्कार क्षमता के दर्शन मुझे उस प्रथम भेट मे ही हो गए। मै अपने व्यवसाय और कर्म क्षेत्र बगलादश से पहल पहल ही आया था और अपनी मा के साथ राजनादगाव की माहेश्वरी धर्मशाला में हमने चौका लगाया था। पूरे चौमासे मे गुरुदेव की हम पर असीम कृपा रही। एक-एक बालक-जवान वृद्ध, स्त्री पुरुष की जिज्ञासाओ का अगाध शाति से समाधान। व्यष्टि और समष्टि को एक साथ सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करना। सदा शान्त प्रसन्न और अप्रमत्त गुरुदेव का प्रथम दर्शन जो मेरे मन चक्षुओ में समाया वह अपूर्व मानव चित्र आज भी हृदय मे हर्ष की हिलोरे उठाता है।

फिर तो गुरुदेव के दर्शन सेवा की ऐसी प्यास मेरे मन-मानस मे उदित हा गई कि मै उनकी सेवा के प्रत्येक सभव अवसर का लाभ प्राप्त करने लगा।

महान् देन, देशनोक चौमासा- सौभाग्य से १९९३ में परम् पूज्य गुरुदेव का देशनोक मे चातुर्मास हुआ। घर बैठे गगा आ गई। मै उस समय देशनोक श्री सघ का अध्यक्ष था। गुरुदेव का अनेक कारणो से १३ माह देशनोक विराजना हुआ और उन्होंने वहाँ धर्म की गगा प्रवाहित कर दी। स्वय मैने प्रति माह अठाई की तपस्या की और एक महीने मे ९ की तपस्या की। मरे जीवन मे क्रातिकारी परिवर्तन आ गया। उनकी इस महान् देन को मै कभी नही भूल सकता। यह मरे साधना की ओर प्रवृत्त होने का अद्भुत प्रसग है जो गुरुकृपा से ही सभव हुआ।

सघ सेवा गुरुदेव की प्रेरणा से सघ सेवा मे सदैव रुचि रही और सघ ने भी सदा प्रोत्साहन प्रदान किया। श्री अ भा सा जैन सघ मे प्राय कार्य समिति आदि का सदस्य रहा। फिर सघ के विकट कठिन समय और घोर सक्रातिकाल मे सघ ने मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का दायित्व प्रदान किया। मैने एक वर्ष परम् पूज्य नानेशाचार्य जी की सन्निधि मे और यह द्वितीय वर्ष वर्तमान शासन नायक देशाणे की शान, प्रशातमना आचार्य प्रवर श्री रामलालजी

म सा की पावन कृपा दृष्टि के मध्य अध्यक्ष के रूप मे सघ और ममाज के प्रति अपनी भरपूर सामर्थ्य से समर्पित रहकर कार्य किया। मुये सम्पूर्ण देश, सघ और श्री सघो का अथाह स्नेह भी मिला। मै मानता हू कि यह सब गुरु कृपा का प्रसाद है। मुझ पर स्व आचार्य श्री नानेश और वर्तमान आगमज्ञाता आचार्य-प्रवर श्री रामेश की अनुपम कृपा रही है। इसी कृपा-प्रसाद के बल पर यह कठिन दायित्व निर्वहन हो सका है।

मेरा रोम-रोम गुरु कृपा से सिचित है। मैंने स्वर्गीय गुरुदेव की असाधारण सस्कार क्षमता का प्रत्यक्ष अनुभव किया है। समता विभूति आचार्य श्री नानेश व्यक्ति परिवार, राष्ट्र और समाज तथा सम्पूण विश्व के आध्यात्मिक उत्थान को समर्पित रहे। वे दलितो की आशा थे। धर्मपाल प्रवृत्ति के रूप मे अजर-अमर रहेंगे।

उन दिव्य महान् आत्मा को मेरी हार्दिक श्रद्धाजलि।

-'शाति निवास', ५०/७ वा क्रोस,
विल्सन गार्डन, बैंगलोर-५६००२७

हृदयेश ! मेरे नानेश !

गजू भडारी

मुझ सम नाना भवतो के तुम ईष्ट,
दिग् दिगन्त मे व्याप्त दिव्य विभा,
तीन जगत् के ज्योतिर्धर दिनकर,
कैसे करू तुम्हारा वन्दन, पूजन, अर्चन ?
अमर मसीहा महावीर के तुम।
किन शब्दो मे गुथू गौरवगाथा।
तुम्हारे व्यक्तित्व, कृतित्व दायित्व की।
बनकर सूर्य सम तेजस्वी,
अज्ञान तिमिर का हरण किया।
लेकर कुन्द इन्दु की शुभ्रता,
प्रीति सुधा बरसाई तुमने।
पवन की गतिशीलता से,
सरसा आत्म-चेतना को तुमने।
धैर्य धरिणी-सा धरकर,
फैलाया सहज समता का पैगाम।
हे करुणा सागर, हे पुण्य धाम,
कण-कण कृतज्ञ होता हरक्षण,
जन-मानस-मदिर मे प्रतिष्ठापित,
मगल प्रतिमा का महाप्रयाण,
सहन करे कैसे यह वज्रपात ?
जन जन का तन-मन है अधीर।

-सन्ध्या बाजार, हावड़ा-७११००१

❑ सागरमल चपलोत
महामत्री श्री अ भा सा जैन सघ

जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र

जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र, समता योगी, वर्तमान युग को सस्कार सम्पन्न तथा मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत जीवन जीने के उपदेष्टा, सरलमना आचार्य श्री नानेश आज हम से दूर अपनी सयम साधना की सुवास बिखेर कर चले गये।

एक बार बचपन में जैन सत मेवाड़ी मुनि श्री चौथमल जी म सा ने अपने प्रवचन मे फरमाया- नरक की वेदनाए घोरतम और असह्य होती हैं। यह आत्मा इन वेदनाओ को अनेक बार भोगती आई है। मनुष्य भव मिला है अपने आपको जगाने का, उसे सवारने का आत्मा से परमात्मा बनने का, मोक्ष मार्ग की यात्रा का।

इन शास्त्रोक्त वचनो ने बालक नाना के हृदय को झकझोर दिया। चिन्तन ने राह पकड़ी जीवन को सार्थक बनाने की। यात्रा मे घोड़े पर बैठे बैठे ही रो पड़े। सासारिक क्रिया-कलापो से उदासीन वैराग्य की भावना में बह गये। सच्चा मार्ग प्रदर्शन करने वाले गुरु की खोज प्रारम्भ की। जिन खोया तिन पाइया' कहावत सार्थक हुई। गुरु गणेश के दर्शन का योग मिला। पूर्व मे जिन जिन मुनि महात्माओ का योग मिला, वह योग, सयोग नहीं बन सका, कारण कि उन मुनियो ने बालक नानालाल को कई प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाए सुलभ कराने का लोभ-लालच देकर शिष्य बनाना चाहा था। गुरु गणेश ने वैरागी बालक नानालाल को कहा सयम लेना आसान नही है। वीतरागो के मार्ग पर चलना काटो की राह पर चलना है। यह समझो कि तलवार की धार पर चलना तो आसान है, परन्तु सयम पथ पर चलना अति दुष्कर है। पहले तो अपने आपको समझने का प्रयत्न करो, फिर मुझे समझो फिर सोचो कि तुम्हें किस राह पर चलना है।'

वैरागी नानालाल को दिशा मिल गई कि उसे राह बताने वाले सच्चे गुरु मिल गय है। यह योग नही सयोग था गुरु गणेश के श्री चरणो में पहुचने का।

वैराग्य सच्चा है या बनावटी श्रावको ने इसकी जाच आवश्यक समझी। श्रावको ने अच्छे अच्छे कपड़े निकाल कर नानालाल के सम्मुख रखे। नानालाल ने उन्हे यह कहकर स्वीकार करने से मना कर दिया कि मुझे तो अल्प कपड़ो, वे भी साधारण सादे कपड़ो मे रहना है। एक दिन नानालाल एक श्रावक की भव्य कोठी मे भोजन क लिए आमत्रित किये गये। भोजन की व्यवस्था ऊपर की मजिल में थी। जब वह खाना खाकर हाथ धोने उठे तो श्रावक जी ने कहा- " खड़े-खड़े आप यही हाथ धोले" नानालाल ने कहा- ऐसा करने से दो दोष लगेंगे, प्रथम तो ऊपर से पानी डाला जायेगा, उससे वायुकाय की विराधना होगी और दूसरा राह चलते किसी व्यक्ति के छींटे लगने की सभावना है अत नीचे जाकर ही शुद्धि करना अभीष्ट है। वह नीचे आये और हाथ धोकर कुल्ला किया। इस प्रकार वैरागी नानालाल सयम पथ पर चलने की तैयारी पर खरे उतरे।

यह बात जब गुरु गणेश ने सुनी तो उन्हे विश्वास हो गया कि वैरागी नानालाल मे वीतराग मार्ग पर अग्रसर होने की पूरी क्षमता है। वैरागी नानालाल का गुरु गणेश के रूप मे सच्चा उद्धारक गुरु और गुरु गणेश को शिष्यत्व पालने वाला अनमोल शिष्य रत्न मिल गया। नानालाल मुनि बन गये।

दीक्षित हाते ही नानालाल ने अपना जीवन ज्ञानार्जन, गुरु सेवा एव तपस्या का समर्पित कर दिया। गुरु सेवा, ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की उत्कृष्ट साधना न गुरु गणेश का दिल जीत लिया। गुरु को उनम एक विलक्षण प्रतिभा, सत समाचारी पालने और महावीर शासन को दीपान की क्षमता दृष्टिगोचर हुई।

इठलाती झीला की एतिहासिक नगरी उदयपुर के गजमहला का विशाल परिसर, जनमेदिनी का सैलाव। गुरु गणेश की जय जयकार। समोसरण सा दृश्य। सत-सतियो, श्रावक-श्राविकाओ (चतुर्विध सघ) क समक्ष गुरु आचार्य गणेश की घोषणा-

आज मै अपने (आचार्य के) समस्त अधिकार नानालाल को सौपता हू। यह भगवान महावीर के शासन मे साधुमार्गी जैन सघ के अष्टम आचार्य होंगे।'

चतुर्विध सघ हर्ष से उछल पड़ा। सर्वत्र जय जयकार होने लगी। सुयोग्य आचार्य को शासन दीपाने वाला सुयोग्य सत मिल गया। गुरु गणेश के स्वर्गस्थ होने पर पुन वही अवसर उपस्थित हुआ, आचार्य पद की चादर ओढ़ाने का। सतो ने चादर ओढाई-सर्वत्र जय जयकार। प्रात बेला सूर्यदेव ने बादलो को चीर कर रश्मियो बिखेरी मानो उसने भी नानालालजी के आचार्य पद पर चादर समारोह का स्वागत किया हो।

आचार्य पदारोहण के पश्चात् शौर्य शक्ति और भक्ति की त्रिवेणी सगम राजस्थान की पावन धरती मेवाड़ अचल के एक छोटे-से ग्राम दाता (चित्तौड़गढ) का देह दृष्टि से सामान्य कद काठी का, ओसवाल वशीय पोखरना कुल दीपक, मा शृगार का जाया, मोड़ीलाल जी का लाड़ला नाना अतरग से वर्द्धमान महावीर शासन की साधुमार्गी परम्परा रूप मणिमाला का सुमेरू बन गया।

यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि आचार्य श्री नानेश न जहाँ एक ओर अपनी परम्परा की सत समाचारी का दृढता से पालन किया, वहाँ दूसरी ओर मद्य-मास भक्षी और मानव समाज की विपरीत धारा में चलन वाले, कई लोगो को निरामिषभोजी (शाकाहारी) बनाकर समाज की सीधी राह पर चलते हुए मानवोचित जीवन जीने के लिए प्रेरित किया और कई मुमुक्षु आत्माओ को वीतराग मार्ग दर्शाया।

आचार्य नानेश का जीवन एक खुली पुस्तक रहा। कथनी और करनी की एकरूपता के प्रतीक बन वे समता साधक बने। साधक भी ऐसे कि उनके अतरग एव रोम रोम मे समता समा गई। स्वय तो समता साधक बने ही भवि जीवो को समतामय जीवन जीने का सरल, सुगम और सहज मार्ग भी दर्शाया।

जीवन म उतार-चढाव तो आते ही है। चुनौतिया भी मिलती ही है, परन्तु जिस व्यक्ति ने समभाव धारण कर लिया हो, वह कभी अपन ध्येय से विचलित नही होगा। वह शिव की तरह विष को पीकर नीलकठ बन जाता है। आचाय नानेश क जीवन म भी ऐसे कई प्रसग उपस्थित हुए, किन्तु उन्होंने सभी झझावातो को समभाव से सहन किया और समता का आदर्श उपस्थित किया।

वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म सा स्थविर प्रमुख श्री ज्ञान मुनि जी म सा तथा सघ क सभी सत और सतिया आज उन्हीं के पद चिह्न पर चलकर कई भवि-आत्माओ का पथ प्रदर्शन कर रहे है। अत मै आचार्य श्री नानेश को शत शत वदन।

-निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

□ केशरीचन्द गोलछा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

कालजयी आचार्य

आर्य क्षेत्र (भारत) मे राजस्थान प्रदेश मे पहले मेवाड़ राज्य था। वहाँ धर्म प्रेमी राणा शासक राज्य करते थे- हिन्दू गौरव की रक्षा के लिए इनकी जगत प्रसिद्धि थी। उनके ही राज्य मे एक छोटा सा ग्राम दाता (नानेश नगर), जिसमे एक सद्गृहस्थ सेठ मोड़ीलाल जी निवास करते थे। उनकी धर्मशीला पत्नी शृगारा थी। उसीकी कुक्षि से एक महान् तपोतेज बालक ने विक्रम स १९७७ मिती जेठ सुदी २ के मगल प्रभात में जन्म लिया। परिवार वाले प्यार से नाना नाम से पुकारते थे। यह बालक दूज के चन्द्रमा की तरह बढ़ता-बढ़ता जब १८ साल का हुआ तो सयोग से एक दिन इसे छठे आरे का वर्णन जैन महात्मा जी से सुनने को मिला। युवा मन ससार की असारता में डूब गया तथा मथन करते-करते वैराग्य भावना जागृत हुई और गुरु की खोज मे निकल गया। खोजते खोजते सद्गुरु आचार्य श्री जवाहर की शरण म पहुचा और अपने भाव प्रकट किये। आचार्य श्री ने युवाचार्य श्री गणेश की नेश्राय मे शिक्षा-दीक्षा के भाव समझने का सकेत दिया तो युवाचार्य श्री गणेश के पास पहुचे तथा विनयपूर्वक निवेदन किया कि मै आपका शिष्य बनना चाहता हूँ तो युवाचार्य श्री ने कहा- आप हमे परखो, हम आपको परखेगे'। यह सुनते ही दृढ आस्था धर्म पर हो गई तथा गुरु की चरण शरण प्राप्त हो गयी और ज्ञान-ध्यान सीखकर कालान्तर मे मुनि नानालाल, युवाचार्य नानालाल फिर आचार्य नानेश बनकर भगवान महावीर के जिनशासन की छ दशक तक प्रभावी रूप से प्रभावना की और जिनशासन के गौरव को बढ़ाया एव सदा-सदा के लिए कालजयी हो गया। क्यो ? इस महान् चारित्र सम्पन्न आत्मा की कथनी-करनी एकरूपा थी तथा इनकी सयम-साधना मेरु पर्वत के समान अविचल अड़िग थी। छ काया के प्रतिपालक थे। इनकी मगलवाणी मे पूर्व के आगम पुरुषा का सार था अत जनमानस पर जादू-सा असर होता था और जिनशासन की प्रभावना बढ़ती थी इसलिए इनकी नेश्राय म करीब तीन सौ पचास मुमुक्षु चारित्र सम्पन्न आत्माओ ने प्रव्रज्या ग्रहण की और सयम साधना मार्ग पर आरूढ हुए। करीब एक लाख बलाई जाति के लोग व्यसन मुक्त होकर धर्मपाल' बने और इनके अनुयायी बनकर जैन धर्म की साधना मे लग गये। यह इस शताब्दी का एक क्रातिकारी चमत्कार है।

इसी महापुरुष न मन के सम्बन्ध मे जो कहावत है कि -'मन चचल चित्तचोर है मन की गति है और मन के मत्ते मत चलिए पल पल और । उसको एकाग्र करने के लिए समीक्षण ध्यान की पद्धति का स्वरूप दिया जिससे मन को साधा जा सकता है।

समाज की विषमता के स्वरूप को देखकर आचार्य श्री ने समता समाज रचना की आदर्श विवेचना व्याख्या प्रस्तुत की जो आज के समय में अति उपयोगी सिद्ध हुई है।

भगवान महावीर के शासन की निर्ग्रन्थ परम्परा की प्रथम परम्परा के प्रथम आचार्य सुधर्मा स्वामी के ८०वे ' पाट पर महान् क्रान्तिकारी आचार्य हुए है और वीतराग वाणी द्वारा जैन जयति शासनम् मे जनमानस की आस्था को दृढ किया है। भगवान महावीर की २५०० वे निर्वाण शताब्दी पर सवत्सरी एकता के प्रश्न को लेकर जैन डेपुटेशन आपक पास आया ता विनय के साथ आपन अपन अन्त करण से कहा कि समग्र स्थानकवासी जैन समाज जिस

तिथि पर एक मत से राजी होता है, मै अपनी पूर्व परम्परा को छोड़कर उसको मानन के लिए तैयार हूँ। आप मेरी स्वीकृति समयें । इस विलक्षण घोपणा से साधुमार्ग परम्परा के महान् आचार्य न समाज एकता के लिए एक नइ क्रान्ति का सूत्रपात किया, जो जैन इतिहास मे स्वर्णाक्षरो में अंकित हो गई।

रुग्ण तथा वृद्ध अवस्था में भी आप में पूर्ण समता थी अत अन्तरसाक्षी स आपने अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य श्री रामलालजी म सा का चयन करके अपन दृढ मनोबल का परिचय दिया और शासन क पाट की अक्षुण्णता को कायम रखा यह आपकी महान् दूरदर्शिता थी- आपक शासनकाल के ऐसे कितने ही उदाहरण है जिनको मेरी छोटी बुद्धि और कलम से लिखना शक्य नही है। ऐसे कालजयी आचार्य को मेरी कोटि-कोटि श्रद्धाजलि एव प्रणति।

-नोखामडी (राजस्थान)

तव कीरत अमर हमेश

सोहनदान चारण

संत सती उर शोक समाये, अनगिन श्रावक भया उदास।
परमाचार्य धरम प्रति पालक, वसिया जाय अमरपुर वास ॥
भौतिक देह पंच भूता मिलगी, परमातम आतम परवेश।
अवनी पद किणने दूण आग्या, नजर नहीं आवे नानेश ॥
आवे याद सत री उर मे, नैना उमड़ पड़े झट नीर।
नास्ते घड़ी-घड़ी निराशा, धरे नहीं कायर मन धीर ॥
जिन शासन मरजाद जमाई, जोती ज्ञान मशाल जगाय।
दे उपदेश उधारया अनगिण, जुग-जुग सूता जीव जगाय ॥
ध्यान अटल उर समता धारी, तपसी कठिन साधियो तप।
इमरत वाण वखान उचारयो, जपियो मंत्र नवकार जप ॥
जुग-जुग अमर रेवसी तो जग, अमर सदा रहसी उपदेश।
अर्पित शब्द सुमन अंजली, नमो-नमो तपसी नानेश ॥
सत सती सूरा नै सिद्धगण, धरती राजस्थानी धिन।
धिन महावीरम जैन धर्मधारी, निर्मल चित नानेश्वर धिन ॥
जैन अजैन मिल गावे जस, आवे दिये आप उपदेश।
ज्ञानी सत कवि गुण गावे, है तव कीरत अमर हमेश ॥

- देशनोक

❑ सम्पतलाल सिपानी
उपाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

महाज्योति के दर्शन

हमारे आराध्य परम् पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानेश अस्वस्थ चल रहे थे। मुझ पर उनकी अनन्त कृपा थी। मै उनकी अमृतमयी कृपा की वर्षा से सदा प्रमुदित रहता था। चौमासे मे सेवा करने की सदा भावना रहती थी, तद्नुसार स २०५६ के चौमासे में भी गुरुदेव की सेवा हेतु उदयपुर निवास कर रहा था। रात्रि को भी गुरुदेव की पावन सन्निधि बनी रहे, एतदर्थ उनके आवास के समक्ष चौकी पर ही सोया करता था। आचार्य श्री जी की कृपा से आत्मा उनके श्री चरणो में सदा समर्पित रहने की भावना बनी रहती थी।

इ ही भावनाओ के सागर मे मै डूबा हुआ था और अपने कर्म क्षेत्र सिलचर के लिये वापस रवाना हाने की कामना से गुरुदेव से विदा लेने के लिए पहुचा।

एक जुलाई १९९९ का दिन था। विदा भी लेनी थी और गुरुदेव की अस्वस्थता के कारण पुन दर्शन से वचित न हो जाऊ- यह चिन्ता भी हृदय को सता रही थी। इ ही मनोभावो के ज्वार के बीच सहसा मैंने गुरुदेव के समक्ष निवेदन कर दिया कि हे परम् आराध्य ! आप ऐसी कृपा करो कि जब आपकी महायात्रा का समय आ जावे तो मुझे भी कधा लगाने का सौभाग्य मिले।

एक पुत्र की जैसी कामना होती है, वैसी ही गुरु के प्रति शिष्य की कामना और भावना होती है। इसी भावना से प्रेरित हो मैंने सरलता से निवेदन तो कर दिया किन्तु फिर तत्काल ही मन में विचार आया अरे ! मैंने गुरुदेव से यह क्या कह दिया ?

मैं चिन्तन में था, किन्तु गुरुदेव तो चिन्ता मुक्त थे। उन्होंने हास्य और शुभाशीष की वर्षा करते हुए मुझ पर कृपा दृष्टि डाली और मै उसस निहाल होकर सिलचर को चल पड़ा।

पूर्वांचल सघ प्रतिवर्ष चौमासे में आचार्य प्रवर के दर्शन वदन श्रवण हेतु उपस्थित होता रहता है। मैंने श्री अ भा सा जैन सघ के उपाध्यक्ष और पूर्वांचल सघ के अध्यक्ष के नाते सघ सदस्यो से दर्शनो के लिये चलने की तिथि पर विचार-विमर्श करना शुरू किया। काफी भिन्न-भिन्न तिथियो के सुझाव आए। अत में मैंने अपने मन की साक्षी से श्री कमल जी भूरा को तिथि का सुझाव दिया, जिसे सबने स्वीकार किया। पूर्वांचल सघ गुरुदेव के श्री चरणो में उदयपुर पहुच गया। पहुचने की यह तिथि २६ १० ९९ थी। हमारे पहुचने पर सभी ने आश्चर्य प्रकट किया कि आप लोग ऐसे निर्णायक क्षण मे कैसे बिना सूचना के आ पहुचे है ? गुरुदेव का स्वास्थ्य अब बहुत खराब चल रहा है। कभी भी विधान पूर्ण हो सकता है। मुझे गुरुदेव को किया हुआ मेरा निवदन याद हो उठा। सारा दृश्य चित्रपट-सा स्पष्ट दिखाई देने लगा। गुरुदेव की अनन्त कृपा के प्रति हृदय श्रद्धा से भर उठा। मेरे साथ सम्पूर्ण पूर्वांचल सघ पर भी कृपा कर दी।

दिनाक २७ १० की रात्रि की बात है मै मत्र जाप कर रहा था। सहसा कुछ क्षणो के लिये मुझे तन्द्रा सी आई और उसी तन्द्रा मे मैंने एक महाज्योति के दर्शन किये। सर्वत्र एक प्रशान्त प्रकाश छा गया। उसी समय उदयपुर के एक सुश्रावक ने मुझे झकझोर दिया और कहा कि -गुरुदेव का देवलोक गमन हो गया है।

सभी तारो को जोड़ने पर जो दृश्य उभरता है, जो चित्र बनता है, जो सत्य आकार ग्रहण करता है, वह उन महापुरुष की अलौकिक शक्तियों और उनकी महान् कृपा का प्रसाद दिखाई देता है।

स्वय मै तथा पूरा पूर्वांचल सघ उन महापुरुष की महान् कृपा के प्रति हृदय से श्रद्धावनत है। उनकी आत्मा चिरशाति प्राप्ति करे और उनकी सात्विक सामर्थ्य स चतुर्विध सघ सतत प्रगति करे, यही शासन देव स प्रार्थना है।

-अध्यक्ष, पूर्वांचल सघ, सिलचर

✿

प्रेम गगा बहायी थी

मनोहरलाल मेहता

जग को असार जान, सयम की लीनी ठान,
स्वजन विरोध में, ना मन मे कचायी थी।
गुरु की आशीष पाय, ज्ञान भरा हिय माय,
महाव्रत पालन मे, दृढता दिखायी थी।
नाना वन नाना कीनी, भक्ति गुरु नाना विधि,
ना-ना कहते ही रहे, चादर ओढ़ायी थी।
नाना है सयाना, कैसे सघ का चले ना ताना,
सोचि-सोचि भक्तन की मति चकरायी थी।
बाल ब्रह्मचारी नाना, आगमों की पहचान प्रकटायी थी।
मेटा घूत अधियारा, दलित मसीहा प्यारा,
धर्मपाल बना जैन विधि समझायी थी।
कीर्ति शेष नाना की क्या महिमा बखान करूं,
मनहर नाना ने प्रेम गंगा बहायी थी।

- भू पू निदेशक, आ श्री नानेश समता शिक्षण समिति
नानेश नगर (दाता)

❑ दौलत राका
उपाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

धर्म एव आध्यात्मिकता के एनसाईक्लोपीडिया

आचार्य भगवन् को जैन धर्म एव आध्यात्मिकता के एनसाईक्लोपीडिया (महानज्ञाता, विश्वकोष) सबोधित करना अतिशयोक्ति नहीं है। आधुनिक युग के प्रति आचार्यश्री का लगाव एव जागरुकता को नजदीक से मुझे जानने का जो सुअवसर प्राप्त हुआ, उससे मुझे काफी प्रेरणा मिली- वह सबके लिए ज्ञान स्रोत है।

आचार्य भगवन् का होली चातुर्मास पर भीलवाड़ा विराजने का प्रसग बना, उसके पश्चात् गुरुदेव का एक रोज का विश्राम घर पर हुआ। तत्पश्चात् भीलवाड़ा के औद्योगिक क्षेत्र म होते हुए पूर ग्राम पधारने का प्रसग बना। १०-१२ कि मी की इस यात्रा मे प्रथम बार आचार्य भगवन् के साथ पद विहार मैंने तय किया। इस दौरान आचार्य श्री द्वारा आधुनिक युग में पनप रहे नवीनतम उद्योगो की जानकारी के लिए जो वार्तालाप की गई, उससे मै आश्चर्य चकित हो गया एव यह सोचने पर विवश हो गया कि एक व्यक्तित्व जो पुरानी पीढ़ी के है एव आध्यात्मिकता के क्षेत्र मे लीन हैं, भला उन्हे उद्योग एव आधुनिक बातो में कैसे रुचि हो सकती है ? खैर, यह आचार्य श्री के अद्भुत दृष्टिकोण की झलक थी। यह बात वार्ता तक ही सीमित नही रही, विहार के दौरान रास्ते मे आये छोटे मोटे कई उद्योगो मे पधार कर आचार्यश्री ने उन्हे बारीकी से समझा एव पूरी तरह जानकारी ली।

यह बात कुछ वर्षों पूर्व की थी, लेकिन एक-दो वर्ष पूर्व ही उदयपुर पधारने से पूर्व भीलवाड़ा विराजने का प्रसग रहा, इस दौरान स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने पर भी विहार के दौरान कुछ उद्योगो मे रुचि दिखाई उससे जैन ही नही वरन् माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष द्वारा भूरि भूरि प्रशसा की गई व ऐसे प्ररित हुए कि अगले विहारो में उनके साथ पैदल चले।

अपने युग के महान् प्रशासनिक सत शिरोमणी आचार्य भगवन के असख्य गुणो का बखान करना किसी एक व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नही, यही कारण है कि गुरुदेव के शासन से जुड़े हर परिवार का व्यक्ति अपने अपने नजरिये से गुण-गानो की बौछार करने मे लगा हुआ है।

आचार्य श्री के विशिष्ट गुणा मे प्रशासनिक दक्षता एक अद्भुत गुण है। जिसे समस्त आध्यात्मिक जगत आश्चर्य मानता है। इसी प्रशासनिक कला से हमारे गुरुदेव को अपने लम्बे शासन काल में ३५० से अधिक दीक्षाए प्रदान कर अपने युग मे विशालतम शासन के निर्माण करने का श्रेय रहा।

हर बुद्धिजीवी श्रावक की भाति मुझे भी इस रहस्य को समझने एव जानने की उत्सुकता बनी रही कि शासन की सयमीय मर्यादा मे रहते हुए कैसे इस विशाल समुदाय वाले शासन का गुरुदेव ने पहले तो निर्माण किया और फिर लम्बे समय तक एक कड़ी मे पिरोये रखा ? शासन भी भला कैसा- जहा किसी को प्रत्यक्ष मे कोई लाभ नहीं चलने-फिरने को कोई वाहन नही, तत्काल बातचीत का कोई साधन नहीं, ऐसे मे इतने बड़े शासन समुदाय को एक साथ रखना एव इस शासन से जुड़े विशाल श्रावक परिवार को एकजुट रखना वास्तव मे आचार्य भगवन् की एक अद्भुत प्रशासन कला ही है। आज हम इस बात को भली-भाति समझ सकते है कि गृहस्थ जीवन मे परिवार एव व्यवसाय का प्रशासन कितना जटिल है, जहा कि हर प्रकार के प्रलोभन एव व्यवस्था की भरमार है। जैसा कि मुझे आचार्य भगवन् की इस विशेष कला को जानने की उत्सुकता रही- इस सदर्भ मे एक ऐसा अवसर आया, जब गुरुदेव

ने अपने मुखारविन्द से एक सकेत दिया उसकी गहराई को जब समझा तो मुझे गुरुदेव की प्रशासनिक कला के मूलभूत आधार का अहसास हुआ।

यह प्रसग वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म सा से सबधित है। लगभग दो वर्ष पूर्व आचार्य श्री को भीलवाड़ा से विहार करते समय हाईवे पर चलना था, इसके लिए कुछ विशेष व्यवस्थाए की गईं, जिससे कि हेवी ट्राफिक होते हुए भी विहार मे किसी प्रकार का कोई व्यवधान नही पड़ा। इस व्यवस्था को देखकर आचार्य भगवन ने मुझे बुलाकर सकेत दिया कि ऐसी ही व्यवस्था उनके विहार मे होनी चाहिए। कुछ समय तक मै समझ न सका तब फिर से फरमाया कि जब युवाचार्य जी का भीलवाड़ा से विहार हो तब भी इसी प्रकार की व्यवस्था रहे।

इस बात को समझने मे मुझे थोड़ा समय लगा पर जैसे ही आशय की गहराई को समझा एव प्रशासनिक नीति के रूप को देखा, तो रहस्य का अहसास हुआ। गुरुदेव मे हर व्यक्ति का मान रखने की अद्भुत कला है और इसी कला से अपने शासन के हर सदस्य (सत सतियों) की छोटी-छोटी बातो का हर समय ख्याल रखा है, जिससे इतने बड़े विशाल शासन को इतने समय तक एक सूत्र मे पिरोये रखना सभव हुआ जिसमें कि प्रत्यक्ष रूप से प्रलोभन का कोई प्रावधान नही है।

सरल शब्दो मे यह कहें कि गुरुदेव ने शासन के हर सदस्य का मन एव निहित गरिमा को बनाने का विशेष ध्यान रखा। इस प्रकार मेरे दिमाग म जो बहुत बड़ा प्रश्न था कि इतने बड़े शासन को बिना किसी प्रत्यक्ष प्रलोभन के कैसे व्यवस्थित रखा होगा, उसका इस ज्वलत उदाहरण स लगभग निराकरण हो गया एव भली-भाति यह बात मन मे उतर गई कि बिना किसी प्रत्यक्ष प्रलोभन के किस प्रकार आचार्यश्री ने अपनी प्रशासनिक नीति से इस विशाल शासन को सुचारु नेतृत्व प्रदान किया।

इस प्रकार के अनेक प्रसग हैं, जिससे सभी लोग भली-भाति परिचित है। अत सभी की चाह यही होगी कि आचार्य भगवन् द्वारा विकसित किया गया विशाल शासन समुदाय उन्ही की प्रशासन कला क आधार पर चहुमुखी विकास करता रहे, जिससे इस श्री सघ से जुड़े सभी श्रावक परिवार अटूट आस्था रखते हुए श्री सघ क चहुमुखी विकास हेतु हमेशा के लिए सहयोगी बन रहें।

-भीलवाड़ा

पहुचाये मुक्ति ठेठ जी

नेमचद सुराना

एक देव की सेवा करू तो तथास्तु बोल दे,
एक राजा की सेवा करू तो भण्डार सारा खोल दे।
एक सेठ की सेवा करू तो मुनीम बना दे सेठ जी,
गणेश गुरु की सेवा करूं तो पहुचाये मुक्ति ठेठ जी।

-गगाशहर

❑ जयचन्दलाल सुखानी
कोषाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

एक सूत्र, जो जीवन-पाथेय बना

हुक्मसघ के अष्टमाचार्य, अध्यात्म योगी आचार्य श्री नानेश वर्तमान शताब्दी के अलौकिक एव अप्रतिम साधक थे। आपसे मेरा इतना नैकट्य रहा कि समय-समय पर उनसे जो भी जिज्ञासा करता, उसका सम्यक् समाधान प्राप्त होता था। मै स्वय को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानता हू कि मुझे उनका सतत सानिध्य प्राप्त होता रहा और मेरे जीवन मे अध्यात्म की जो लगन लगी, वह दिन-ब-दिन वृद्धिगत रही। गुरुदेव की चिकित्सा व्यवस्था, सघ सबधी विशिष्ट कार्यों एव उनके जीवन-सध्या के कतिपय वर्षों मे जो नैकट्य रहा, उसकी अनुभूतिया का शब्दा म बाधना अति कठिन है।

लगभग तीन दशक पूर्व आचार्य भगवन् के मन्दसौर वर्षावास मे कुछ वैरागी को साथ लेकर सेवा मे पहुचा था। वदन एव रत्न-त्रय आराधना की सुखसाता पृच्छा के अनन्तर वार्तालाप के दौरान मैंने आचार्य भगवन् से निवेदन किया-'मुझे ऐसा कार्य बताने की कृपा करावे, जिससे कम से कम समय मे अधिकाधिक पुण्यवानी का अर्जन किया जा सक। आचार्य श्री जी ने सहजता से सक्षिप्त रूप मे फरमाया कि 'किसी की दीक्षा में अन्तराय नही देना। मैंने चिन्तन किया यह कार्य तो कब सामने आयेगा और कब यह अवसर मिलेगा ? वस्तुत चत्तारि परमगाणि चार दुर्लभ अगो मे सयम अगीकार करना अर्थात् तीन करण, तीन योग से महाव्रता का पालन अति दुर्लभ है। इसी प्रकार पचाचार मे वीर्याचार अर्थात् सयम मे पराक्रम उत्कृष्टतम आचार है। एतदर्थ जो भव्य मुमुक्षु आत्मा इसकी ओर अग्रसर हो, उसमे व्यवधान उत्पन्न न कर सहयोगी बनना अपने आप मे विशिष्ट है। चिन्तन की धारा आगे बढ़ी यह रास्ता तो बहुत दूर है फिर पुण्यावानी की मजिल कैसे हस्तगत होगी ?

आचार्य श्री जी से पुन विचार-विमर्श हुआ तो भगवन् ने पूर्व कथित संदेश को इस बार बहुत ही महत्वपूर्ण ढग से समझाया- दीक्षार्थी भाई-बहिना को परिवार से दीक्षार्थ आज्ञा मिलने मे परिजनो का मोह, ममत्व अन्तराय का कारण बनता है। यदि उनको समझाकर दीक्षा का कार्य सम्पन्न करा सको तो छ काया के जीवो की रक्षा करने मे सहायक बन सकते हो और निश्चित ही इससे पुण्यवानी बहुत आगे बढेगी।' उस दिन का शिक्षा सूत्र मेरे हृदय मे घर कर गया और मेरी प्रसन्नता का पारावार न रहा। जैसे अधे को आखें मिल गई हो। लगता है कोई पूर्व भव का प्रसग रहा होगा। तभी आराध्य देव की मुझ पर कृपा रही और इतना वात्सल्य-सर्पण भी। तब से आज तक मुझे गुरुदेव की कृपा से इस महत् कार्य में आशातीत सफलता मिली। मुझे लगभग ३०० (तीन सौ) से अधिक परिवारो में जाने एव शासन की सेवा मे योगदान करने का अवसर मिला, वह गुरु कृपा का ही सुफल है। आज जब मै सिहावलोकन करता हू तो कतिपय घटनाए स्मृति-पटल पर उभर आती हैं।

बड़ीसादड़ी मे सात दीक्षाओ का प्रसग था, लेकिन भावना थी कि अष्टमाचार्य के आठवे चातुर्मास मे दीक्षाए भी आठ हो। इसके लिए हमने वैरागिन बहिन चेतन श्री की दीक्षा हेतु काफी प्रयत्न किया, जो कानोड़ में गाधी परिवार की थी हमे सफलता न मिल सकी। ब्यावर सघ के कर्मठ सेवाभावी सघ/शासननिष्ठ श्री चादमलजी पामेचा का मुझे पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा था। हम लगभग साथ साथ ही जाया करते थे। बाद म चेतन श्री जी की दीक्षा टोंक मे हुई और मुझे प्रसन्नता है कि आज वे महासती श्री चेतन श्री जी के रूप मे शासन की अपूर्व

सेवा कर रहे है।

तदनन्तर ब्यावर-बीकानेर फिर ब्यावर जाना पड़ा और १० से १५ तक दीक्षाए एक साथ सम्पन्न हुईं। इस कार्य मे प्रमुख रूप से पूर्व मत्री शासनचितक श्री धनराज जी बेताला, श्री भवरलालजी कोठारी, श्री मोहनलाल जी श्रीश्रीमाल सहित सघ गौरव, त्यागमूर्ति श्री गुमानमलजी चोरड़िया, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा, सघप्राण श्री सरदारमलजी काकरिया का अत्यधिक सहयोग रहा। तत्पश्चात् २५ से अधिक दीक्षाओ का प्रयास रहा, जिसमे श्री पी० सी० चौपड़ा, श्री भवरलाल जी अब्भाणी आदि महानुभावो का सहयोग रहा। सर्वाधिक सहयोग यदि किसी का रहा हो तो वह पिपलियामडी के पामेचा परिवार का। आज हमारा सघ इस परिवार का बहुत ही ऋणी है। श्री सुरेश जी पामेचा आदि आज भी इस सघ/शासन की सेवा मे अहर्निश सलग्न है। इस परिवार का यह गौरव रहा है कि पहले शासन की सेवा है बाकी सब बाद मे है। ऐसा ही मेहता परिवार है, उसे भी विस्मृत नही किया जा सकता। दीक्षा सम्पन्न कराने म कितना कुछ करना पड़ा, वे क्षण आज भी मरी आखा के सामने प्रतिपल उभरकर आत है।

श्री धनराजजी सा० बताला और मै दीक्षा की स्वीकृति हेतु निकल थे। तब हमारा ब्यावर जाना हुआ। हम श्री मागीलालजी अमोलकचदजी मेहता के घर पहुचे। जैसे ही हमारी गाड़ी रूकी 'ज्ञानू (श्रद्धेय श्री ज्ञानमुनि जी म० सा०) गाड़ी में आकर बैठ गया। हम अदर गए और उनकी माता जी (सौरम बाई) से मिले। उनसे इस सबध में बात की तो उन्होंने कहा इसे बीकानेर कर्मठ सेवाभावी धायमातृ पद विभूषित श्री इन्द्रचद जी म० सा० की सेवा म ले जावो। फिर हमने सोचा कि सुश्रावक श्री मागीलाल जी एव श्री अमोलकचद जी मे भी मिलकर जाये। अदर गए तो ज्ञात हुआ कि श्री मागीलालजी सा० को पक्षाघात हो गया था। जब तक ७२ घंटे व्यतीत नही हो जाते कुछ भी कहा जाना कठिन था। फिर भी आदर्श सुश्राविका सौरमबाई ने कहा-आप इसे श्री इन्द्र भगवन् की सेवा मे बीकानेर ले जावो। यह हालत देखकर हमे इन्ह ले जाना उचित प्रतीत नही हो रहा था। फिर भी धन्य है श्री ज्ञानमुनि जी की वीर माता जो ऐसे समय मे भी धर्म के प्रति आस्थावान रही। फिर ज्ञानू का बहुत समझाया, परन्तु उसने भी हमारी एक न सुनी और अविलम्ब चलने का आग्रह करते हुए कहा-पिताजी के स्वास्थ्य सबधी ध्यान रखने के लिए यह पूरा परिवार है। भाई साहब आदि पूरी सार-सभल कर भी रहे है। मै तो छोटा हू कुछ कर नही सकता। इस पर उनके अग्रज श्री अमोलकचद जी ने कहा-७२ घंटे निकल जाने के पश्चात् मै इसको बीकानेर भेज दूगा। अत उनकी बात मानकर हम चल आए और उन्होंने तीन दिन पश्चात् ही इन्हे ब्यावर से रवाना कर दिया।

दीक्षाओ का मुहूर्त निकालने मे आदर्श सुश्रावक, दानवीर शासन हितैषी श्री जेसराज जी बैद का सदैव सहयोग रहा है। वे जैन पद्धति से मुहूर्त निकाल दिया करते थे और उन्होंने जितने भी मुहूर्त निकाले, उन सभी मुहूर्त में सम्पन्न हुई दीक्षाए अति सफल रही है। वे भव्य आत्माए शासन की अवर्णनीय सेवा कर रहे है। कर्मठ, सेवाभावी श्री इन्द्रचद जी म०सा० के निर्देशन मे ही हम कार्य करते थे और गुरुदेव का आशीर्वाद हमारे साथ था अत दीक्षाओ में कोई व्यवधान नही आया। इस कार्य म जिन महानुभावो का हमे सहयोग मिला उन्हे कभी भुलाया नही जा सकता। उन सभी महानुभावो ने सुदूर स्थानो तक जाकर मुमुक्षु आत्माओ के परिवारो से व्यक्तिश मिलकर इनकी स्वीकृति दिलाने म महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सघरत्न श्रीमान गुमानमलजी चोरड़िया, सघ भामाशाह श्री गणपतराजजी बोहरा, श्री डूगरसिह जी डूगरपुरिया प० श्री लालचदजी मुणात आदि सुश्रावको का अत्यधिक योगदान रहा है।

दीक्षाओ की दलाली मे अनक खट्टे-मीठे अनुभव हुए। मान-अपमान मारपीट विडम्बिया आदि का सामना करते-करते हम परिपक्व हो गए। यदि चिकने घड़े पर असर हो तो हमारे पर भी असर हो। जब दीक्षा होती है तो ये सारी बात पुन उभरती है, परन्तु फिर शात भी हो जाती है। वस्तुत दीक्षा दलाली का अर्थ यही है कि

परिजनो के मोह को कम करवाकर उनको मुमुक्षु आत्माओ के निकट लाकर आज्ञा दिलाना। हमारा यह सफर बहुत दूर-दूर तक का रहा। उड़ीसा, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मारवाड़, मेवाड़, पूरा राजस्थान, छत्तीसगढ, बगाल, दिल्ली, कर्नाटक आदि राज्यो में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यह सब आचार्य भगवन् की महत्त्वपूर्ण कृपा का ही परिणाम है कि ऐसी पुण्यवानी बाधने का उत्कृष्ट सुअवसर हमे प्राप्त हुआ। हमारे शासननायक और सघनायक की तरफ से हमें शिक्षा-सूत्र मिला, एतदर्थ हम शासन एव सघ के बहुत ऋणी है। पूरा विश्वास है कि आगे भी आप सभी के आशीर्वाद से इस क्षेत्र में आगे बढने का हमे सौभाग्य मिलता रहेगा।

अन्त मे एक बात मै सकोच के साथ और कहूगा- इस दीक्षा दलाली मे श्री इन्द्र भगवन् के साथ साथ मेरे पूज्य पिताजी, पूज्य माताजी और मेरी जीवन सगिनी का भरपूर सहयोग रहा है। अत मै इन सबका भी आभारी हू। एक बार पुन आचार्य श्री नानेश की कृपा को हृदयगम करते हुए उन्हे अशेष नमन करता हू।

-बीकानेर

दीप से दीप जलाओ

आरती सेठिया

भारत भू का दिव्य रत्नाकर
ज्योतिर्मय ज्ञान दिवाकर
वह दीप
जिससे प्रज्ज्वलित था
जन-जन का अन्तर्मानस
उसकी लौ ने दिखाई थी
सयम पथ की सुदृढ़ राह
और प्रत्येक हृदय में जगाई थी
एक नई चेतना, नया विश्वास
डर गया अज्ञान अधकार
डर गया मोह तिमिर
उस प्रकाश पुज के समक्ष
जगमगाता
जो विषम परिस्थितियों में भी
समता का सूत्रधार
जिसने ज्ञान रूप दिव्य तेज से
भवि जीवो का किया उद्धार
करुणामूर्ति धीर गंभीर
आज वो दीप बुझ गया
किन्तु
क्या सचमुच वह दीप बुझ गया ?
क्या उस दीप से नही जला सकते
हम
हजारो लाखो असख्य दीप
दीप से ही दीप जलता है
क्यो न करे
हम इस सच को चरितार्थ
कि हमारी आने वाली पीढ़ी भी
रख सके
उस महान दीप को याद
तो चलो
उस बुझे हुए दीप को जला दो
हा
दीप से दीप जलाओ।

-कलकत्ता

❑ प्यारेलाल भंडारी
उपाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन संघ

चमत्कारी महापुरुष

आचार्य श्री नानेश यद्यपि भौतिक देह-पिण्ड से अब हमारे बीच नही रहे तथापि उनके गुणो की सौरभ से यह धरती सदा सुवासित होती रहेगी जिसकी सुगन्ध स मानव अपना आत्मकल्याण व प्रेरणा प्राप्त करता रहेगा। महापुरुषो का जीवन चमत्कारो से भरा है। आचार्य देव एक अलौकिक महापुरुष थ, जिनकी कृपा व आशीर्वाद का वर्णन सदा मुझे मिलता रहा। वैसे तो मुझे आचार्य भगवन् के सान्निध्य, सेवा मे रहते कई चमत्कार देखने का अवसर मिला है जिनमे अभी विगत दो वर्ष पूर्व का सस्मरण जो मृत्यु से बचाने वाला बना, वह सस्मरण यहा प्रस्तुत है।

आचार्य भगवन् ब्यावर का ऐतिहासिक वर्षावास सम्पन्न कर भीलवाड़ा, चित्तौड़ को पावन करते हुए अपने स्वीकृत चातुर्मास स्थल उदयपुर की दिशा मे श्रीचरण गतिमान थे। भोपालसागर पधारने पर सहसा स्वास्थ्य अत्यधिक नरम हो गया। मुझे स्वास्थ्य की जानकारी मिली। मै व सुश्रावक श्री कुन्दनमलजी नवलखा मुबई दोनो अहमदाबाद पहुचे, वहा स टैक्सी द्वारा हम रवाना हुए, अहमदाबाद से कुछ ही आगे बढे तो बरसात प्रारभ हो गई। राष्ट्रीय राजमार्ग होने स ट्राफिक की आवाजाही अधिक थी, हम जय गुरु नाना का जाप करते हुए चल रहे थे, कभी नींद के झोके आ जात। जब जब तन्द्रा खुलती गुरु गुण स्मरण करते रहत, गर्मी की अत्यधिक स्थिति होने स कार के शीशे खुले थे, मेरी गर्दन कुछ बाहर निकली हुई थी, सहसा सामने से वाहन समीप आता देखकर ड्राईवर ने गाड़ी अपनी साईड मे उतारी, गाडी की स्पीड, वाहन की टक्कर का खतरा व साईड म गहरा खड्डा, तीनो तरफ से खतरा देख ड्राइवर घबरा गया, ब्रेक लगाते लगात गाड़ी खड्ड मे फस गई। सहसा तद्रा टूटी, ड्राईवर भयभीत हुआ कि गाड़ी गिरी और मेरी गर्दन धड़ से अलग हो जाती, किन्तु जिन महापुरुषो का, निरन्तर आशीर्वाद व कृपा जिस व्यक्ति को मिलती रहे, उसके सकट टल जाते है। हुआ यही, जय गुरु नाना के जाप से मै बच गया ड्राईवर कहने लगा-सेठजी आज का खतरा बहुत भयकर था बचना कठिन था, किन्तु लगता है आपके साथ किसी अलौकिक शक्ति का चमत्कार काम कर रहा है। बड़ी मुश्किल से गाड़ी खड्ड स निकलवाकर हम श्री चरणो म भोपालसागर पहुचे, महान् विभूति आचार्य देव के पावन दर्शन कर स्वास्थ्य की सपृच्छा की।

-अलीबाग (महाराष्ट्र)

चम्पालाल डागा
सम्यक्-श्रमणोपासक

मेरे अटूट श्रद्धा केन्द्र

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, जिनशासन प्रद्योतक, परम पूज्य प्रात स्मरणीय आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा एक ऐसे महान् संत, एक ऐसे विशिष्ट योगी थे, जिनके साधनामय जीवन से जो भी इनके निकट आया वह अभिभूत हुए बिना नही रह सका। आचार्य श्री की जीवन-साधना के विभिन्न आयामों से यदि हम उनके जीवन प्रसगो को उद्घाटित करने लगे तो प्रचुर सामग्री हो जाती है।

"परम आधुनिकता के इस युग मे श्रमण संस्कृति के अडिग रक्षक के रूप में आचार्य श्री जी की जीवन साधना युगो युगो तक साधको को प्रेरित करती रहेगी। आज चारो ओर से वैज्ञानिकता को आधार मानकर कई प्रवृत्तियो मे युगान्तकारी परिवर्तन हेतु वातावरण बनाकर प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत किया जाता है लेकिन सयम मार्ग में सिद्धान्तों की सुरक्षा के साथ यदि कोई परिवर्तन की बात सामने आती है तो उस पर आचार्य श्री जी द्वारा मार्गदर्शन व मान्यता प्राप्त हो जाती थी, लेकिन सिद्धान्तो के विपरीत परिवर्तन की बात पर आचार्य श्री जी कभी समझौता स्वीकार नही करते थे। ऐसे विशिष्ट योगी के समक्ष अपनी बात प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति स्वय ही नतमस्तक हो जाता था। आचार्य प्रवर के सान्निध्य के स्मरण मात्र से अनेक सस्मरण प्रस्फुटित हो जाते है जिनको लिपिबद्ध किया जाय तो न मालूम कितने पृष्ठ चाहिए ?

श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के क्षेत्र विस्तार, आचार्य प्रवर के विचरण, आचार्य प्रवर से प्रेरित होकर दीक्षित होने वाले साधक साधिकाओ, आचार्य श्री जी द्वारा मालव प्रान्त मे प्रदत्त उद्बोधन मात्र से सप्त कुव्यसन त्याग कर बने धर्मपाल बन्धुओ के विशाल क्षेत्र, समीक्षण ध्यान विधि के प्रयोग एव उन पर व्याख्यायित अनुभवो को पिरोकर पुस्तकाकार प्रस्तुति इत्यादि, अनेकानेक कार्यों को सम्पन्न करने मे मेरा भी जो योगदान रहा है उसमें कई बार कई स्थलो को यथोचित विधि से न समझ पाने के कारण मेरे एव सघ कार्यालय द्वारा त्रुटिया होती रहती है। उन स्थलो की समीक्षा के समय आचार्य प्रवर जिस समता भाव से मार्गदर्शन प्रदान करते थे, उससे हमे अपनी कार्यविधि का बौनापन नजर अवश्य आता है, लेकिन निराशा के स्थान पर उत्साह का ही सदैव सचार हुआ है। आचार्य प्रवर की वाणी से जो विलक्षणता प्रस्फुटित होती थी, यह तो अनुभव करने वाला व्यक्ति ही समझ सकता था।

मैंने आचार्य प्रवर के सर्वप्रथम दर्शन राजनादगाव चातुर्मास मे अधिवेशन के समय किये। प्रथम दर्शन से मुझ अपार आत्म सतोष हुआ एवं मेरी श्रद्धा प्रगाढ हुई, जिससे मै प्रतिवर्ष दर्शन ... । सघ की गतिविधियों के नजदीक आने पर कई बार समस्याओ से घिर जाने से ... मे ... परन्तु ज्योहि आचार्य प्रवर के दर्शन व सान्निध्य का सौभाग्य मिलता, ... हो अनेक ऐसे अवसर आये, जब व्यक्तिगत, सामाजिक आदि ... बाधा ज्यादा स्वत मन से ही होने लगा। मुझे मेरे ... मे, स्थानक, ... आचार्य प्रवर ... करते थे, भी मुझे अनेक बार सान्निध्य प्राप्त हुआ। ... कोई जो व्यक्ति सही लगता, उस पर वे ...

तो उस पर उन्होंने आखिर तक विश्वास नही किया, ऐसे प्रसग भी बहुत आय ।

साधुमार्गी जैन सघ की विभिन्न गतिविधिया एव कार्यों का सचालन करने हेतु आचार्य प्रवर के चरण कमला म निवेदन करने, समस्या प्रस्तुत करन, मार्गदर्शन प्राप्त करन का सौभाग्य मुझे हर समय प्राप्त हाता रहता था वह हर सम्पर्क मेरे लिए अविस्मरणीय वन गया। इस दौरान कई राजनेता विद्वान व प्रमुख व्यक्ति आचार्यप्रवर के दर्शन विचार विमर्श व मार्गदर्शन हेतु आते तो उस समय मुझ भी साथ म वैठने का अवसर मिलता । ऐसा ही एक विरल दिवस था- दि० ४ अप्रैल, १९९२ का, जव प्रवचन क पश्चात् जैन विद्वान्, तीर्थंकर मासिक के यशस्वी सम्पादक डा श्री नेमीचन्दजी जैन, इन्दौर आचार्य प्रवर क दर्शन व विचार विमर्श हेतु पधार व उसके पश्चात् उन्होंने अपने मासिक पत्र तीर्थंकर अप्रैल-९२ म जो लिखा वह हुबहू मै यहा उद्धृत कर रहा हू-

आचार्य श्री नानालाल जी महाराज के प्रति मरी असीम श्रद्धा है । व आगम पुरुष है । सम्यग्ज्ञानी, अविचल दाता मे जन्मे कपासन मे दीक्षित । जैन दर्शन के असीम मनीषी । जर्रे-जर्रे म ज्ञान की अपूर्व छटा । वाणी मे सौम्य । देह से प्रतिपल दहातीत । आभा की रश्मिये का प्रस्फुटन । ज्योतिपुज । मैंने जब भी उन्ह दखा है मुझे लगा है जैस कोई सुबह का सूरज उदयाचल पर अलथी पलथी में बैठा है । वे सवस्त्र होकर भी अवस्त्र है । अत्यन्त निर्ग्रन्थ । उनके मन पर कोई परिग्रह नही है । क्रोधित तो मैंने उन्ह कभी दखा ही नहीं । धर्म चर्चा में मैंन उन्ह सदैव प्रबुद्ध, सतुलित, आधुनिक और अधीत पाया । इधर-उधर की बात तो वे करते ही नहीं है, जब भी कोई बात करत है- सयत, धर्म पर कन्द्रित । व मौलिक है । पुरातन पथी नहीं है । आग्रही बिल्कुल नहीं है । यदि कोई व्यक्ति उन्हे युक्ति युक्त कुछ कह दता द तो व उस मानते है । हाँ जिसकी पीठ पर कोइ युक्ति न हो उसे भला कैसे मान लेंगे ?

मैंने उन्ह प्रतिपल स्वाध्याय में निमग्न पाया है । उठत-बैठते चलते फिरते सतत् स्वाध्याय में अवस्थित- उनके इस आशातीत स्वाध्याय की दस्तक सुनायी पड़ती है (सुनने वाला चाहिए) ।

ये अस्वस्थ हुए किन्तु अ-अस्वस्थ कभी नहीं हुए उनकी आखे बीमार हुईं, किन्तु भीतर की आख अप्रमत्त बनी रहीं । कुल मिलकर वे एक ऐसे सत है, जा पुराने कभी नही पड़ेंगे-नये के लिए जिनक मन के द्वार खुल रहते है, व पुराने कभी नही पड़ते । आचार्य श्री नानालाल जी के मन के द्वार सार्थकताआ क लिए प्रतिपल खुल रहते है पुराने के लिए उनके मन मे कोई कड़वाहट नही है, और नये के लिए कोई विशष मिठास नही है । वे समता मूर्ति है, जो सार्थक है उसके लिए वे अत्यन्त सवदनशील और सु-सह्य है ।'

उदयपुर विराजने के दौरान निरन्तर आचार्य प्रवर का स्वास्थ्य शिथिल होता गया, दवाए वन्द, परीक्षण, जाच सभी वन्द । साधना मे सतत् लीन जव भी हम उदयपुर जाते, उस सौम्य मूर्ति के दर्शन करके अपने आपको धन्य समझते, और फिर २७ अक्टूबर, १९९९ बुधवार कार्तिक बदी ३ स २०५६ की रात्रि के १० ४१ पर सलेखना सथारापूर्वक देह त्याग । हम उस समय के साक्षी है । एक क्षण के लिए उनकी पलक झपकी, पुन खुली व एक प्रकाश पुन्ज को प्रकट करके गुरुदेव चिर निन्द्रा मे निमग्न हो गये । लगा कि एक ज्योति महाज्योति में मिल गई ।

सघ परम सौभाग्यशाली है कि पूज्य गुरुदव महाप्रयाण के पूर्व प्रतिकृति व द्युति के रूप में श्री रामलालजी म सा का युवाचार्य चयन करके गय ।

एसे युग निर्माता, जीवन निर्माता कथनी व करनी के धनी समताधारी, दीर्घ दृष्टा समीक्षण ध्यान योगी, मेरी श्रद्धा के केन्द्र (जिनकी कृपा मुझ पर हर समय बनी रही) को मेरी मरी धम सहायिका सुन्दर देवी डागा मेरे पूज्य पिताजी फतेहचदजी डागा व मर पूरे परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पित ।

अन्त म यही मगलकामना है कि पूज्य गुरुदेव की आत्मा मुक्तावस्था को प्राप्त करके मोक्ष गमन कर ।

पूर्व महामत्री पूर्व उपाध्यक्ष पूर्व कोषाध्यक्ष
श्री अ०भा०सा० जैन सघ
-बोथरो का चौक गगाशहर (बीकानेर)

❑ सोहनलाल सिपानी
अध्यक्ष, श्री सुरेन्द्रकुमार साड शिक्षा सोसायटी

मधुर स्मृति

आचार्य श्री नानालाल जी म सा की अस्वस्थता के कारण बहुत दिनो से उनके दर्शनो की अभिलाषा बढ़ती जा रही थी, मानस में कई तरगे उठ रही थी, कई भावनाए पनप रही थी। अन्ततोगत्वा मै अपने परिवार के सब १२ अक्टूबर को उदयपुर आचार्य श्री की सेवा मे पहुचा। उस समय वे जीवन और महाप्रयाण से सघर्ष कर रहे थे उनकी शारीरिक व्याधि चिन्ता जनक थी मगर महापुरुष ऐसी स्थिति में भी घबराकर कब हिम्मत हारने वाले होते है ? उनके मुह पर प्रसन्नता झलक रही थी।

मैंने आचार्य श्री से निवेदन किया था कि हमारे लिए क्या सेवा है ? क्या संदेश है ? तब आचार्य श्री ने कहा कि श्री सोहनलाल जी दो बातों की ओर आपका ध्यान देना है

१ साध्वाचार का पालन बड़ी दृढता के साथ हो।

२ सघ म समता के साथ एकता बनी रहे।

दोनो बातें सघ के उत्थान के लिए आवश्यक हैं। अनुशासन के साथ दोनो बातो पर पूर्ण ध्यान दिया गया तो गौरव बढ़ेगा।

साध्वाचार, एकता, अनुशासन और स्नेहपूर्ण वातावरण बनाने के लिए आचार्य श्री के दिल म एक दर्द, पीड़ा और टीस थी। वे चाहते थे सघ के साथ साधु-सन्तो का उत्थान हो, वे अपनी दिनचर्या मे दृढ़ रहें, ताकि वीर शासन गौरवान्वित हो सके।

ऐसे कर्मठ और महाप्रतापी आचार्य के मानस में सघ क लिए कितनी तड़प कितना प्रेम कितनी आत्मीयता और एकता के लिए कितने मर्मस्पर्शी विचार थे।

मुझमे और मेरे परिवार में जो कुछ धार्मिक सस्कार पनपे है जो कुछ मै बन पाया हू, उसमे आचार्य श्री की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मैने आचार्य श्री को निकट स देखा है, घटा उनके सान्निध्य मे रहा हू, उनके अन्तर को जाना है, ऐसे निस्पृह कर्मयोगी की साधना पर मै और मेरा परिवार श्रद्धा भक्ति से अवनत है। उनके प्रभाव से मेरे जीवन मे भारी परिवर्तन आया है, प्रेरणा मिली है।

उनक जीवन की कई अद्भुत स्मृतिया मेरे मानस पटल पर उभर रही हैं।

१९५९ उदयरामसर के चार्तुमास की ऐतिहासिक स्मृतियो मे से एक स्मृति की झलक प्रस्तुत कर रहा हू, जिसमे गणिवर गौतम स्वामी की सी लब्धि होने को साक्षात अनुभूति को पाया।

मूर्ति पूजक समाज मे दादागुरु के मेले का प्रसग था। मेले मे बीकानेर एव बाहर के श्रावको का आगमन हुआ। आचार्य भगवन के दर्शनार्थ जब व पहुचें तो साधर्मी वात्सल्यता की परिधि मे हमने आग्रह किया। आप सब हमे आतिथ्य सत्कार का लाभ देने के बाद ही उत्सव में पधारे। उन्होने हमारा आग्रह स्वीकार किया। हजार बारह सौ तक क व्यक्तियो की भोजन व्यवस्था थी, किंतु उस वक्त जो अखूट भडार हुआ उसे आश्चर्य कहू या लब्धि का चमत्कार। बारह सौ की व्यवस्था मे लगभग पाच हजार व्यक्तियो का आतिथ्य सानद सपन्न हुआ। महान् लब्धि सपन्न गुरु की महिमा, गरिमा का क्या २ उल्लेख करू ?

उन्होने हम जो दिया उसीसे उपकृत है । उनके उपकारो के ऋण से उऋण तो नही हो सकते किंतु आस्था भरी अजली समर्पित करते हुए यही प्रण करते है कि हे गुरु, जो सदेश, दिशा निर्देश आप श्री ने प्रयाण से पूर्व हमे दिये है उनका दृढता पूर्वक पालन होगा ।

तन मन जीवन की एकरूपता मे नवम पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म सा के आदेश-निर्देशो के अनुसार बढते रहेगे ।

-बैगलोर

वो लाल

भारती नलवाया (मीनल)

अहसान न भूले हम उसका, जिसने तुझ पर चादर डाली
वो लाल जवाहर ही का था और लाल थी लाल प ला डाली
भाग्य हमारे अच्छे थे और सूझ उन्हीं की थी ऊंची
देखा नाना कैसा गडिया दांता ग्राम मे माईलाल घर बजी जोर से थी थाली
वो लाल जवाहर का ही था और लाल की (१)

कपासन मे चोला बदला चादर बदल गई महलों में
रण बांकुरे राणा भी थे जनता थी पोलो मे
हिम्मत नही थी गजानंद की फिर भी बैठ गया डाली मे
वो लाल जवाहर का ही था और लाल की (२)

शुद्ध संयम के पालन हार छत्तीस गुणो के धारक हो
मानवता के प्रेमी हम सबके तुम तारक हो,
नैया पार लगा दे नाना बस यही अर्ज है म्हाली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल (३)

पूज्य गणेशी था मेवाड़ी और नाना तू भी मेवाड़
चाहे जितना संकट आया पर ना हिला यह मर्दाना
अरे छिलान डाल उखड़ गये पर तूने प्रीत नही पाली
वो लाल जवाहर का ही था और लाल (४)

ऊंचा मन्तार लेकर आता ना मन्तार हो जाता
अपने आप मिट जाती शंका मन ही मन हरषाता
नाना 'नाना' रटता जाता जात जात जय वाली
वो लाल जवाहर का ही था और लाल (५)

दीक्षाओं का ढेर लगा है जिन शासन की शान बढी है
अल्प समय मे इतनी दीक्षा अब तक कोई ना पाई ।
अब हम वाला पूरी लम्बा गजानंद भर गया झोला
वो लाल जवाहर का ही था और लाल (६)

-नगरपालिका के पास बड़ीसादड़ी

□ धनराज बेताला
महामंत्री श्री सुरेन्द्रकुमार साड शिक्षा सोसायटी

अविस्मरणीय आचार्य

परम पूज्य प्रात स्मरणीय जिन शासन प्रद्योतक, समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक समीक्षण ध्यान योगी, विद्वद्वय शिरोमणि, आचार्य श्री नानालालजी म० सा० एक ऐसे श्रमण सूर्य थे जिनका जीवनवृत्त के विशेषण की व्याख्याओ स स्मरण करे तो जीवनवृत्त अनावृत्त होता जाता है। फिर भी हम उनके जीवनवृत्त के कुछ प्रसगो व उपलब्धिया का ही उल्लेखित कर पाते है। ऐसा श्रमण सूर्य का सलेखणा सथारा पूर्वक स्वर्गवास सभी जैन श्रमण वर्ग के लिए आदर्श एव अनुकरणीय प्रसग था।

आचार्य पूज्य श्री नानालालजी म० सा० को जिनशासन प्रद्योतक उपमा से उपमित किया जाना उनका सार्थक परिचय था। जैन इतिहास में इस कलिकाल मे लगभग ३५० भाई-बहनो को बोधित करके दीक्षित किया, यह एक विश्व कीर्तिमान था। अत व जिनशासन प्रद्योतक के रूप मे घोषित हुए।

आचार्य श्री जी ने जैन दर्शन के सार रूप मे 'समता दर्शन' की जैसी सटीक व्याख्या प्रदान की उसे सुनकर, पढ़कर विद्वद्वर्य चकित हो गया। समता दर्शन की विशद व्याख्या ने आचार्य श्री जी की पूरे जैन जगत मे पहचान बना दी। आज जैन समाज में जहा समता सबोधन आता है तो उस समय आचार्य पूज्य श्री नानालालजी म०सा० का चित्र सामने प्रकट हो जाता है। आपकी समतायोगी समताधारी, समतादर्शी साधक क रूप मे सर्वत्र पहचान हो गई।

आचार्य श्री जी क धर्मपाल प्रतिबोधक सम्बोधन के विषय मे यदि विचारो को लिखना प्रारभ करे तो अपने आप म पुस्तक बन जाती है। हजारो व्यसनी व मास मदिरा आदि कुव्यसनो की सेवन करने वाली बलाई जाति को व्यसनो स मुक्त कर धर्मपाल बनाकर आपने एक अविस्मरणीय इतिहास बना दिया। जीव दया का इतना विशाल कार्य मात्र उपदेशामृत से सम्पन्न करना एक विलक्षण घटना है। राष्ट्रीय धरातल पर हम इसकी समीक्षा करें तो इतना प्रमोद होता है कि आचार्य श्री जी मे कैसा विशिष्ट चमत्कार था। इतना बड़ा कार्य चमत्कारी महापुरुष ही सम्पन्न कर सकते है। आचार्य श्री जी के जीवनकाल की यह घटना अक्षुण्ण रहे यह हम सबकी जिम्मेदारी बनती है। बलाई समाज तो सदा सर्वदा आचाय श्री जी का ऋणी रहेगा ही।

आचार्य श्री जी के विशेषणो मे समीक्षण ध्यान योगी के सम्बोधन के सबध म कितना क्या लिखा जाय कि जिससे यह स्थिति स्पष्ट हो सके ? आचार्य श्री जी ने अपनी प्रज्ञा से जैनागमो से सार तत्वो के रूप म समीक्षण विधा का निरूपण किया और जब यह विधा प्रकाश म आइ तो बुद्धिजीवी महानुभावो को आचार्य श्री जी के अपार ज्ञान की अनुभूति हुई तो कुछ अन्य लोगो का यह असहनीय भी लगी। 'प्रेक्षा ध्यान' पत्रिका म एक मुनि श्री ने तो अन्य प्रचलित ध्यान पद्धतियो से चुराई हुई पद्धति ही उसे लिख डाला। इस पर आचार्य श्री जी से मार्गदर्शन मागा गया। पूज्य आचाय श्री जी ने जो फरमाया उसे लिपिबद्ध करके मूर्धन्य विद्वान स्व० डा० श्री नरेन्द्र भानावत का अवलोकन कराने हेतु मेटर मेरे पास आया। मैंने डा० भानावत को अवलोकन हेतु निवेदन किया। हम दोनो ने उक्त मेटर का अवलोकन किया। पूरे मेटर को देखने के पश्चात् डा० भानावत ने बड़ा सुखद आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि यह मेटर तो आशातीत है। समीक्षण ध्यान पर इतने शास्त्रीय उदाहरण हो सकते है यह भी कल्पना में नही था। उक्त मेटर फिर श्रमणोपासक पत्रिका के अको मे प्रकाशित किया गया जिसने भी पढ़ा वह विभोर

हो गया।

आचार्य श्री जी के अन्य विशेषण विद्वद्वर्य शिरोमणि के विषय मे तो जितना लिखा जाय, कम ही होगा। आचार्य श्री जी का प्रवचन जिस सूत्र वाक्य पर होता उसकी व्याख्या कई दिना तक चलती रहती। आचार्य श्री जी द्वारा उद्घाटित क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण इत्यादि पुस्तको का मेटर एक बार वयोवृद्ध पडित श्री शोभाचन्द जी भारिल्ल को अवलोकनार्थ व सुझाव हेतु प्रेषित किया गया। पडित सा० ने अवलोकन के पश्चात् टिप्पणी की यदि मै इस मेटर का अवलोकन नहीं करता तो मेरी ही कमी रहती। ऐसे अनेक उदाहरण स्मृति पटल पर है। विस्तार भय से प्रस्तुत नही करते हुए मात्र सभी से अपनी-अपनी अनुभूतियो का ही स्मरण करने का निवेदन है।

ऐसे महान् जैनाचार्य का हमारे बीच से उठ जाना सम्पूर्ण जैन जगत ही नही मानव मात्र की क्षति है। आज वे हमारे बीच नही है लेकिन उनके ही उत्तराधिकारी उनके पाट पर विराजित तरुण तपस्वी, परमागम रहस्य ज्ञाता श्री रामलालजी म० सा० आचार्य पद को सुशोभित करते हुए इस शासन को सुसचालन पूर्वक आगे बढाने को तत्पर है।

मेरी शासन देव से यही कामना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को चिर शाति प्राप्त हो।

-नोखा, बीकानेर

क्यो तुम हमको छोड़ गये

सुभाष कोटड़िया (प्रकाश जैन)

बहुत दिया और बहुत किया, लाखों का उद्धार किया
हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर, क्यों तुम हमको छोड़ गये।

१) पूज्य नानेश की पुनवाणी को गुरु श्री ने बताया था।
धर्मपाल का किया उद्धार, नया इतिहास बनाया था।
समता का संदेश पढ़े, रोम-रोम में उनके,
हुक्म संघ के ॥१॥

२) २५ दीक्षा का एक डंका, रतनपुरी में बजाया था।
हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख-इसाई, सभी ने शीश झुकाया था।
बारिश का ये चयन करे, राम मुनिश्वर नाम करे,
हुक्म संघ के ॥४॥

३) पूज्य नानेश के उपकारों को, कभी न हम भूल पाएंगे।
राम गुरु के अनुशासन को, जन जन में ले जाएंगे।
'प्रकाश' में यह बात करे, अंधियारे को दूर करे,
हुक्म संघ के ॥५॥

❑ रिधकरण सिपानी
पूर्व अध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

दृष्टा अन्तरदृष्टा . दूर दृष्टा

अपनी ही अनुभूति की बात कर रहा हू । श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के अध्यक्ष पद का निर्वाह करते हुए आचार्य श्री को अन्तरग कार्य कलापो एव सघीय व्यवस्था के सदर्भ मे मैने पाया वे मात्र दृष्टा ही नही दूर दृष्टा अन्तर दृष्टा भी थे । हम जिस चीज का अनुभव तैराकी दृष्टि से करते थे भगवन् तलस्पर्शता तक पहुच हुए मिलते थे । हम जमीं तक ही देख पाते थे, भगवन भूगर्भ तक पहुचे हुए पाये जाते थे । सयम का विशुद्ध प्रवाह उनकी प्राणधारा थी और इस प्रवाह मे थोड़ा भी भटकाव नामजूर था । जहा कही भी ऐसी विसगति नजर आती तो तुरन्त सम्यक् दिशा निर्देश हो जाया करता था ।

आचार्य श्री दृष्टि से ही नही अन्तरदृष्टि से घटनाक्रम को पूर्व म ही देख लेते थे और सकेत कर देते थे किंतु हम समझ नहीं पाते । बाद म उन श्री जी का निर्णय सर्वोपरि सत्य ही साबित होता था । समय की तस्वीर म जब जब भी सत्य प्रकट हुआ हम मानना पड़ा आचार्य श्री की परख, सोच, निणय शत प्रतिशत सही घटित होते थे। हम तो फोटोग्राफी से ही देख पाते आचाय श्री तो हाई माइक्रोवेव रेस पन्टरी फ्रीक्वेन्सी कैमरे के समान अन्तर्मन की हलचल को अंकित कर लेन वाल थे । धन्य धन्य था चतुर्विध सघ जिनकी रचनात्मक ठोस कार्य शैली का एक एक आयाम जैन समाज को प्रशस्तदिशा म ले जा रहा था । उनकी कार्य शैली सौटच स्वर्ण न बने यह असभव है और यही कारण था उन श्री के पुनीत सानिध्य म जो भी पहुचता श्रद्धा से नत मस्तक हो जाता था। आचार्य श्री एक व्यक्ति रूप मे नहीं रह किन्तु उनकी कृति सचालन कर रही है ।

हम पूरी तरह आश्वस्त है कि वह विभूति एक ऐसी चमत्कारिक शक्ति होगी जो पूर्वाचार्यों की शासन व्यवस्था का सम्यक् समाजन बनाए रखगी । उनके सैद्धातिक विचारो से जन जन प्रभावित होगा । उनके अन्तर मन मे सहृदयता सदाशयता तो कूट- कूट कर भरी हुई थी । त्याग तपोमय जीवन एव व्यक्तित्व म चुम्बकीय आकर्षण था । श्रद्धाजलि क समर्पित स्वरो म कहूगा ह गुरु! आप गरल पी कर अमृत दते रह ।

वक्त की कठोर छैनी से तराशने पर भी आपका समत्व रूप अखडित रहा ।

श्रद्धाभिसिक्त अश्रुओ की अविरल धार मे यही प्रण करते है कि भगवन् आप श्री जी ने हमे जो संदेश निर्देश प्रदत्त किय है, उनका, नवम् पट्टधर आचार्य श्री रामेश क सत्सानिध्य मे दृढ़ता पूर्वक कदम दर कदम पालन करेंगे।

-बैंगलोर

समता की जो खान

सुमेरचंद जैन

श्रद्धाजलि उस योगी को समता की जो खान ।
शुद्ध आचरण पालते, सफल किया अभियान ॥
व्यसनमुक्ति का पाठ दे, तारे हजारो हजार ।
चारित्र चूड़ामणि ध्यानयोगी को, नमन है बारम्बार ॥

-बीकानेर

❑ सुन्दरलाल दूगड
पूव उपाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

महा महनीय, अडिग आस्था केन्द्र

समय की शिला पर वे ही अपने पद चिह्न अकित कर सकते है जो सकल्प के धनी, दीर्घदृष्टा, आत्मबली एव दृढ प्रतिज्ञ हाते है, जिनक वचनो एव करनी में कोइ द्वैत नही होता है, ऐस महापुरषो के सामने समय हाथ बाधकर खड़ रहता है तथा व परिस्थितिया के पीछ नही चलते अपितु परिस्थितिया उनके पीछे चलती है। परम् श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म० सा० भी एस ही दृढ सकल्पी प्रबल आत्मशक्ति सम्पन्न अविचल सयम साधक एव निर्द्वन्द्व निर्ग्रन्थ थे।

मेरे पूज्य पिताजी माताजी एव समग्र परिवार की उनक प्रति अपरिमित श्रद्धा एव अडिग आस्था थी। देशनाक चातुर्मास क समय मेर परिवार न उनकी सवा का यथाशक्य लाभ लिया। मेरे छोटे भाई की धमपत्नी न तो मासखमण तक की तपस्या उनके श्री चरणा मे रहकर की। उनके उपदेशामृत का पानकर किसके कर्ण कुहर पवित्र नही हो उठते थे। उनक अमृतोपम बाल ऐसे प्रतीत होते थ, माना किसी पर्वत शृखला के अन्त कोण स कोई निर्झर कल कल मृदु सगीत ध्वनि करता बह रहा है।

ससार मे व्याप्त अशान्ति, कलह रागद्वेष, हिंसा एव आतक से उनका मन सदैव व्यथित रहता था। व इसका मूल वैषम्य वर्ण एव वर्ग भेद का मानते थे अत अपने प्रवचनो म बहुधा इस पर कड़ा प्रहार करते थे। विश्व शान्ति का अमोघ उपाय उनकी दृष्टि में समता समाज की रचना में निहित था। कर्म से ही व्यक्ति ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एव शुद्र होता है जन्मना नहीं। महावीर की इस वाणी का उद्घोष न केवल उन्ह काम्य था, अपितु वह उनका साध्य भी था। व्यसनो म लिप्त अस्पृश्य कही जाने वाली बलाइ जाति को धम का मम समझाकर अहिंसक जीवन शैली मे ढालकर समता समाज रचना को जो मूर्त रूप दिया, वह एक ऐसी क्रान्तिकारी घटना है, जिसका हजारा वर्षों के इतिहास में कोई मुकाबला नही है।

आचरण की शुद्धता क अभाव म चरित्र बालू या ताश के उस घर क समान है, जो हवा के साधारण झोके में ही तहस नहस हो जाता है। अत श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने आचरण की शुद्धता पवित्रता का अकाट्य एव निर्विकार माना है। इसमें तर्क की कहीं कोई गुजाईश भी नही है। साधुमार्गी जैन सघ का यह महल आचार की शुद्धता और विचार की पवित्रता पर इतनी मजबूती स खड़ा है कि प्रबल स प्रबल आधी और तूफान क झोके भी इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते है।

ऐस महामनस्वी तपी त्यागी समीक्षण ध्यान योगी, समता साधक आचार्य प्रवर का सलेखना सथारापूर्वक सहसा स्वर्गवास समग्र जैन समाज पर तुषारापात है। जाने स पूर्व वे अपन उत्तराधिकारी के रूप मे आचार्य श्री रामलालजी म०सा० रूपी जो बहुमूल्य हीरा द गय है उनके निर्देशन म यह सघ उत्तरोत्तर विकास की ओर उन्मुख रहेगा एव हम उसी आस्था एव दृढतापूर्वक सघनिष्ठ रहेंग, ऐसा मेरा विश्वास है। श्रद्धेय आचार्य प्रवर को मेरे कोटि कोटि वदन एव नमन।

-कलकत्ता

❑ भवरलाल कोठारी
पूर्व उपाध्यक्ष, पूर्व महामंत्री, श्री अ भा सा जैन संघ

अप्रमत्त निर्ग्रन्थ समत्व योगी

आचार्य श्री नानालाल जी महाराज इस युग के आध्यात्मिक जगत की एक विरल विभूति रहे है। मेवाड़ के एक छोटे से गाव दाता मे माड़ीलालजी पोखरना की धर्मपत्नी शृगारदेवी की कुक्षी से सवत् १९७७ मे जन्म लेने वाला बालक नाना', 'अणो र णीयान महतो महीयान के सूत्र के अनुसार अणु से भी सूक्ष्म पर महान् से भी महान् बन सकेगा, कौन जानता था। 'नाना नाम ही विविधता सूचक तथा बहुआयामी है। उसमे निश्च्छल निर्विकार ब्रह्मस्वरूप न हापन भी है और मातृत्व तथा पितृत्व समन्वित वात्सल्य भावों का सर्वमगलकारी विराट रूप भी। नाना ने वस्तुत अपने नाम का पूर्ण सार्थकता प्रदान की। अपने पर दादा गुरु आचार्य श्री श्री लालजी महाराज की भविष्यवाणी, दादा गुरु आचार्य जवाहर और दीक्षा गुरु आचार्य गणेश का आशीर्वाद, सवत् १९९६ से सतत अप्रमत्त निर्ग्रन्थ-सयमी जीवन की प्रखर साधना व कथनी करनी की एकरूपता ही उनके उस हिमालय सदृश्य विराट व्यक्तित्व का मूल आधार बनी।

समता साधक सत नानालाल जी सवत् २०१९ में आचार्य पद पर आसीन हुए। आचार्य पदासीन होते ही सवत् २०२० का प्रथम चातुर्मास रतलाम मे हुआ। रतलाम चातुर्मास अवधि म उन्होंने समता जीवन व्यवहार समता समाज रचना का सूत्र अभियान चलाया। मालवा के सैंकड़ो गावो में बसे उपेक्षित व पिछड़े जनजाति वर्ग के बलाई बधु उनके सम्पर्क मे आए। वे दीन-हीन, दु खी, पीड़ित और प्रताड़ित थे। उनके सामने सवाल थे हम क्या करे ? कहा जाए ? कैसे अपनी पीड़ित-प्रताड़ित स्थिति को बदल '? आचार्य श्री ने उन्हे रास्ता बताया व्यसन छाड़ो। मास मदिरा त्यागो। खान-पान बदलो। अपने आप को सस्कार सम्पन्न बनाओ। धर्मपालक बनो। फिर आप किसी से पीछे अथवा पिछड़ नही रहोगे। नानेश ने कहा-'कोई जन्म से ऊचा या नीचा नहीं होता। व्यसन मुक्ति सस्कार जीवन ही उसे ऊचाइयो तक पहुचाता है। श्री-समृद्धि युक्त बनाता है।

आचार्य श्री के प्रेरक उद्‌बोधन और अत स्पर्शी वाणी का चमत्कारी प्रभाव पड़ा। बलाई जाति में नव जागरण हुआ। मध्यप्रदेश के नागदा, खाचरौद मक्सी, शाजापुर क्षेत्रो के गावो-कस्बो मे बलाई जाति के बड़े बड़े सम्मेलन हुए। औसर-मौसर जैस अवसरा पर हजारो व्यक्तियो ने मास-मदिरा आदि दुर्व्यसना को त्यागने का सकल्प लिया। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ ने व्यसनमुक्त बलाई बस्तियो एव गावो में सस्कार निर्माण शालाओ का सचालन किया। स्वास्थ्य शिविर लगाए। यहा धर्मजागरण एव सस्कार निर्माण पदयात्राआ स जीवन की रूपातरणकारी शृखला प्रारम्भ हुई। धर्मपाल समाज के नाम से एक व्यसनमुक्त सत्सस्कारी समाज की स्थापना हुई। उनकी आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक स्थिति म बदलाव आया। उनमे आए सकारात्मक बदलाव स गाव के अन्य जाति समुदाया में भी नवजागरण का सचार हुआ। धर्मपाल समाज के रूप मे सस्कार क्राति का यह एक युगीन शुभारम्भ था।

सन् १९७२ के जयपुर चातुर्मास के प्रारम्भ में एक जिज्ञासु न आचार्य नानेश से प्रश्न किया किम् जीवनम् ? आचार्य श्री ने सूत्र रूप मे उत्तर दिया- सम्यक् निर्णायकम् समतामय च यत् तद् जीवनम्। सम्यक् निर्णायक समतामय जीवन ही वास्तविक जीवन है। इसी सूत्र की व्याख्या उन्होंने चार माह के चातुर्मासिक प्रवचनों में की। श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ न इस सकलन का प्रकाशन समता दर्शन और व्यवहार शीर्षक से करवाकर उसका लोकार्पण

आचार्य प्रवर के सन् १९७३ के बीकानेर वर्षावास तथा सघ के वार्षिक अधिवेशन पर श्री जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय देहली के कुलाधिपति प्रख्यात शिक्षाविद् कर्मयोगी डा डी एस कोठारी से करवाया। विषमता की गहराती खाइयो को पाटकर समता समाज की सरचना का दिग्दर्शन करानेवाली यह एक अनुपम कृति है। व्यसनमुक्त, सस्कारयुक्त, प्रकृति-सापेक्ष, समता मूलक, एकात्मकता व विश्व बधुत्व के भावो से अनुप्राणित यह ग्रथ आचार्य श्री की अहिंसक समाज रचना की सम्यक् दृष्टि का परिचायक है।

आचार्य प्रवर का लक्ष्य सर्वाधिक रूप से व्यक्ति के रूपान्तरण पर केन्द्रित रहा उन्होंने तनावो, दबावो, प्रतिक्रियाओ मे जी रहे और निरन्तर टूट रहे व्यक्तियो को तनाव-दबाव व रोगमुक्त करने के लिए समीक्षण ध्यान साधना का प्रतिपादन किया। समभाव में, दृष्टाभाव मे अपने सहज स्वभाव मे आने तथा स्व मे स्थित होकर स्वस्थ' होने का रास्ता बताया। क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण, माया समीक्षण, लोभ समीक्षण के सूत्र प्रदान कर अतर शुद्धि प्रदान कर अतर शुद्धि की व्यावहारिक साधना पद्धति का निरूपण किया। आचार्य प्रवर के शब्दो मे - क्रोध आदि कलुपताएँ कपाय है। ये आत्मा के स्वभाव को कपती हैं। सरल शब्दा मे आत्मा के भीतरी कलुष का नाम कषाय है। जब क्रोध मान, माया लोभ का समीक्षण करते है तब मन की ग्रथिया अपने आप खुलती है। चित्त निर्ग्रन्थ होने लगता है। राग द्वेष गलने लगता है। राग और द्वेष परस्पर अनन्य है। राग में द्वेष और द्वेष में राग गर्भित है। किसी एक को छोड़ने पर दूसरा अपने आप विदा होने लगता है। (आगम पुरुष पृ० ९९ लेखक डा नेमीचन्द जैन)

आचार्यप्रवर सत्यान्वेषी थे। सयमी जीवन में किसी भी प्रकार का स्खलन उन्हें स्वीकार नहीं था। आचरण मे दृढ रहते हुए भी विचारो मे वे उदार तथा अनाग्रही थे। अनेक श्रावको के बार बार निवेदन करने पर भी उन्होंने ध्वनि विस्तारक या टेप रिकार्डर का प्रयोग करना स्वीकार नहीं किया। उनकी दलील थी कि इसका उपयोग न करने से अपरिग्रह का अकुश लगातार बना रहता है। कीर्ति की मूर्च्छा कम होती है और श्रोता सावधानी तथा मनोयोग स सुनता है। यत्रीकरण की जटिलताओ से भी बचा जा सकता है। यत्रो का कोई अत नही है। आज इसको काम मे लीजिए, कल दूसरा अनिवार्य हो जाएगा। परसो तीसरा दरवाजा खटखटाएगा और अपनी साधना भग या भुग्न हो जायेगी। आप कुछ कर ही नही पायेंगे, इसलिए यदि परेशानियो को कम करना है तो मशीनो के दैत्य से स्वय को बचाना चाहिए।' (आगम पुरुष, पृ ९३, लेखक- डा नेमीचन्द जैन) एक और ध्वनि विस्तारक का उपयोग नही करने के लिए वे इतने दृढ थे, पर दूसरी और जैन एकता के लिए सवत्सरी एक साथ मनाने के सुझाव पर उतने ही उदार लचीले तथा अनाग्रही थे। इस सबध मे उनसे मिलने आए जैन प्रतिनिधि मडल का बेझिझक अपनी तरफ से ऐसे किसी भी दिन सवत्सरी मनाने की सहमति जताई जिसे पूरा जैन समाज स्वीकार करने को तैयार हो।

आचार्य प्रवर यद्यपि महाआरभी हिंसाकारक यत्रो के पक्षधर नहीं थे पर वे विज्ञान के विरोधी नहीं थे। वे विज्ञान को आत्मा का मूल गुण मानते थे। उनका कहना था-'धर्म और विज्ञान परस्पर पूरक है, वे एक दूसरे से सघर्परत नही है। असल म जब हम खोजना शुरू करेंगे तभी कुछ पायेंगे।' जैन धर्म विज्ञान का अटूट खजाना है। हम अभागे है कि हमसे बार बार इसकी कुजी गुम हो जाती है। हम इस खजाने का न सिर्फ खुद उपयोग करना चाहिए वरन् सारी दुनिया के लिए उसे खोल देना चाहिए। पदार्थ की जो परिभाषा आज विज्ञान दे रहा है वह तीर्थंकर सदियो पहले दे चुके है। उत्पाद व्यय ध्रौव्ययुक्त सत् और गुण पर्ययवद् द्रव्य के रहस्य को समझ लेने पर पदार्थ की गहराइयो म उतरने म कोई कठिनाई नहीं है। आज का वैज्ञानिक यत्रो और औजारो म उलझ गया है। आत्मतत्त्व उसकी मुट्ठी म खिसक गया है। हमारी पारिभाषिक शब्दावली का यदि अनासक्त विश्लेषण किया जाए तो हम पायेंगे कि धर्म अब भी विज्ञान स दो कदम आगे है। विज्ञान उन्हीं दार्शनिक तथ्यो की पुष्टि कर रहा है जिन्हें आज से सदियों पहले धर्म ने स्थापित किया था। साधना शुद्ध ज्ञान की मशाल

है। अल्बर्ट आइस्टाइन ने इसे विलम्ब से खोजा और अपनाया है। जैनाचार्यों ने भौतिकी जैविकी, गणित जैसी जटिल/सूक्ष्म विचारो पर भी काफी गहरा विमर्श किया है। (आगम पुरुष ९५-९६ डा नेमीचन्द जैन)

आचार्य नानेश अहर्निश जागृत, अप्रमत्त समता-साधक, समीक्षण ध्यान योगी के रूप में साधनारत रहे। वे दृढधर्मी, तेजस्वी, चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी थे। व्यक्ति का रूपातंरित करने की उनमे अद्भुत क्षमता थी। उनके सम्पर्क मे आकर व्यसनी व्यसनमुक्त बने। जो नास्तिक थे वे आस्तिक बन गए। श्रद्धाविमुख व्यक्तियो मे देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था के भाव अकुरित हुए। भौतिकता के व्यामोह में फसे युवक-युवतियो में सयम साधना के सम्यक् सस्कार पुष्पित पल्लवित हुए। उनके आचार्य पद के कार्यकाल मे ३५० से अधिक वैराग्य भावना से ओत प्रोत भाई बहिनो ने मुक्ति पथ के राही के रूप मे भागवती दीक्षा अगीकार की। हजारो गृहस्थो ने नियम मर्यादाएँ धारण कर व्रती श्रावक बनने का सकल्प लिया।

आचार्य नानालाल जी का जीवन वस्तुत 'यावत् चद्र दिवाकरौ' के समान विराट तथा बहुआयामी था। वे नन्हे बालक के रूप मे जब एक ओर सदा निर्विकार ब्रह्म स्वरूप स्थिति में रहे, वही दूसरी ओर मातृत्व और पितृत्व दोनो की सवेदनाओ को अपने मे समाये रखकर प्राणि-मात्र पर वात्सल्य की वर्षा करते रहे। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को शब्दो में बाधा नही जा सकता। उनके नाना पक्षो को नाना प्रकार से रेखाकित किया गया है। 'तीर्थंकर एव शाकाहार क्राति के ख्यात सम्पादक और जाने-माने विचारक डा० नेमीचन्द जैन ने आगम पुरुष पुस्तक में जो कहा वह उल्लेखनीय है। वे कहते है- मुझे लगता है यह महापुरुष अपनी तरह का निराला है। सुलझा हुआ है, निष्काम है समतावान है। इसके लिए न कोई छोटा और न कोई बड़ा न कोई अमीर, न कोई गरीब। जो भी इसके जीवन मे है वह सब उसने गहरी खोज-परख के बाद स्वीकार किया है। हर स्वीकृति के लिए इसके पास कोई मजबूत/प्रामा तर्क है। धीमे, सुदृढ, धीरज मे डूबे सुर मे बात करना इसका स्वभाव है। जोर से यह बोलता नहीं है क्रोध इसे कभी आता नही है। इसके रोम-रोम मे आतमराम है। यह आठो याम आत्मलीन बना रहता है। छुई ओढ़ता है। जात पात मानता नही है। जहा कोई प्राण या धड़कन है, वहा इसकी सलाम और सलामती पहुचती है। इसके द्वारा किसी को भी किसी तरह की चोट पहुचे, यह सभव ही नही है। इस/ऐसे विराट मानव से मिलने के नाना अवसर आए और हर अवसर पर मै कुछ न कुछ पाकर ही लौटा। मैने उन्हे अपना श्रद्धाकेन्द्र माना। वे कुछ ही ऐसे है जिन्हे मै अपने श्रद्धा पुष्प अर्पित कर पाया हू। इसमें नर-नारी दोनो है। साधु या गृहस्थ कोई हो यदि वह साफ-सुथरा, निष्कलक है तो वह मेरे लिए सर्वदा पूज्य है। आचार्य श्री मे वह सब है जो श्रद्धा को आकर्षित करता है।'

वस्तुत यही वह श्रद्धा थी जो भारत की दसो दिशाओ से दूर दराज के लक्षाधिक श्रद्धालुओ को आचार्य श्री की महाप्रयाण यात्रा मे उनका अतिम दर्शन प्राप्त करने की अतर भावना दिनाक २८ अक्टूबर, ९९ को उन्हे उदयपुर खीच लाई। आचार्य प्रवर का पार्थिव शरीर सलेखना सथारे की चरम स्थिति में दिनाक २७ अक्टूबर, १९९९ के रात्रि ९ ४५ बजे के लगभग शात हुआ था। दूरभाष, दूरदर्शन आदि सचार साधनो से जिसको जहा सूचना मिली वह वहाँ से बिना एक क्षण गवाए जो भी साधन मिला उसी से भाग दौड़ करके उदयपुर पहुचने के लिए तत्क्षण निकल पड़ा। जन गण का पारावार उमड़ आया। अपार जनमेदिनी अपनी अतस्तल की गहराइयो से उमड़ी अश्रुधारा के श्रद्धासुमन उस महान् प्रज्ञा पुरुष की स्मृति में अनवरत अर्पित करती रही। यह श्रद्धाजलि ही उनके जन वल्लभ स्वरूप तथा मृत्युजयी विराट् व्यक्तित्व का परिचायक है। उन्हे श्रद्धायुक्त नमन।

-ओसवाल कोठारी मोहल्ला बीकानेर

❑ पीरदान पारख
पूर्व महामंत्री श्री अ भा सा जैन मघ

हुकुम शासन के ज्योति-पुज

हुकुम शासन की यह गरिमा रही है कि इसमे आने वाले आचार्य ने पीछे वाला की यशोगाथा को आगे बढाया। इसी कड़ी में अपने समय की एक जाज्वल्यमान ज्योति थे-आचार्य श्री नानेश।

दाता जैसे पिछड़े गाव मे जन्म लेकर भी जिन्होने अपने आचार्य पदकाल म प्रगति के एक से एक नये कीर्तिमान स्थापित किये। सारे जैन समाज मे खासकर स्थानकवासी समाज मे उन्होंने अपनी विशेष पहचान बनाई थी।

जिस समय इनके कन्धो पर युवाचार्य पद का भार आया था, उस समय सघ में श्रमण सख्या बहुत कम रह गई थी, पर आचार्य पद पर आते ही इनका प्रथम चातुर्मास रतलाम मे हुआ। यहीं स इनकी यशस्वी आचाय पद-यात्रा शुरू हुई। इसके बाद इन्होंने पीछे मुड़कर कभी नही देखा।

इन्होंने रतलाम चातुर्मास पश्चात् एक ऐसा दिव्य सदेश समाज को दिया, जो युगों युगों तक स्मरणीय रहेगा। वह कार्य था- पिछड़ी जाति के बलाइ भाइयो को व्यसन मुक्त बनाकर धर्मपाल बनाने का। यह सख्या सामान्य न रहकर हजारो में हुई। व्यसन मुक्त होन के कारण इस जाति क लोगों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया। इनक आचार-विचार, आर्थिक स्थिति, सभी की प्रगति म प्रत्यक्ष दर्शन उस क्षेत्र म जाने वालो को सहज रूप स हो जात है।

इनकी वाणी व सयमी जीवन के प्रभाव से मुमुक्षु आत्माओ की लम्बी सख्या बन गई। आपने अपने आचार्य पदकाल मे ३५० उपरान्त दीक्षार्थी भाई-बहनों को महाव्रतों की दीक्षा देकर अध्यात्म के मार्ग पर आरूढ किया।

जयपुर के चातुर्मास में वहाँ के निवासियो को इनके प्रवचनों में समता दर्शन का अद्भुत सिद्धान्त मिला। यह एक ऐसा विचार दर्शन है, जिसे अपनाकर समाज में अनेक प्रगति के सोपान सर किये जा सक्त है।

इन महापुरुष ने जहाँ समाज को अपने उपदेशो से प्रतिबोधित किया, वही उत्तम कोटि क विचार दर्शन का दर्शाता साहित्य भी प्रदान किया। 'समता दर्शन और व्यवहार, क्रोध समीक्षण, आत्म समीक्षण कुकुम क पगलिये' जैसी कृतिया सिर्फ वर्तमान पीढ़ी ही नही वरन् आने वाली पीढ़िया को भी दिशा-बोध देती रहेगी।

ऐसे जाज्वल्यमान नक्षत्र का विपरीत स्वास्थ्य की स्थिति क कारण तारीख २७ १० ९९ को देवलोक गमन हुआ। हजारो की सख्या मे नर-नारी ने इस महापुरुष क अन्तिम दर्शनों हतु उदयपुर जाकर अपन श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

ऐसे दिव्य ज्योति पुरुष को अन्त करण पूर्वक श्रद्धाजलि के साथ शत शत वदन।

-दागा सेठिया का मोहल्ला बीकानेर

✿

□ श्रीमती कांता बोरा
अध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन महिला समिति

महायशस्वी समता विभूति का अनूठा कार्य

आचार्य पदारोहण होने के पश्चात् श्रमण संघीय चुनौती पूर्ण संघर्ष की स्थिति में जब ये महापुरुष इस पद की बागडोर संभाल रहे थे, तब वे क्षण बड़े नाजुक थे।

एक तरफ श्रमण संगठन के लिए कई स्तरों पर चुनौतियाँ थी, ऐसी स्थिति में घटनाओं के भवर में से सफलता पूर्वक बाहर निकलना तो दूसरी तरफ स्व श्रीमद् जवाहराचार्य एव स्व श्रीमद् गणेशाचार्य जैसे अति प्रभावशाली महापुरुषों की ऐसी कई योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिए कार्य दिशा एव क्रियान्वन दिशा को सुनिश्चित करना कि जिससे समाज के विभिन्न वर्गों के सुधार और कल्याण के कार्यक्रमो का समावेश होता है।

हमारे चरितनायक आचार्य श्री नानेश विचार, उच्चार एव आचार के ऐसे समस्थितिक सामर्थ्यवान साधक थे कि जिन्होंने युग परिवर्तन की ओट में अपनी साधना की कठोर नियमवाली से पराभूत होकर कभी भी वैज्ञानिक सुविधाओं से समझौता नही किया।

आपने अपने जीवन में अनुभूति बोध के आधार पर देख लिया था कि चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर द्वारा दी गई साधना व्यवस्था आध्यात्मिक उन्नयन के लिए सर्वथा निर्दोष एव चुस्त दुरस्त है। शताब्दियों ने उसे सुपरिचित पोषित कर दिया है। आज के सुविधावादी साधको की मन स्थिति देखकर आपके मानस पर अनेक प्रश्न उभरे। क्या ये सुविधाए त्याग तप और साधना के विकास मे सहयोग करेगी। क्या इनके अभाव मे जैन साधको की आत्म साक्षात्कार-साधना मे कोई न्यूनता आई ? क्या भगवान के समय मे ये सुविधाए उपलब्ध नही थी ? यदि नही थी और होतीं तो क्या वे सन्यास में इसके उपयोग का विधान रखते। भला वे तो सर्वज्ञ थे, क्या उन्हे ज्ञात नहीं था कि आनेवाला युग सुविधावादी युग होगा। अत मै अपने साधको के लिए इनकी उपयोगिता का विधान कर दू। प्रत्युत आगमो मे स्थान स्थान पर प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप से परिग्रह का अस्वीकार ही है।

आपने यह स्पष्ट देख लिया था कि सुविधा भोग का आग्रह आगे चलकर शिथिलाचार को प्रोत्साहित करेगा। लोकप्रियता और पूजा लिप्सा के विचार आत्मज्ञान के प्रति अनास्था के ही परिचायक हो सकते है। आपने श्रमण परम्परा के इतिहास को देखा और अनुभव किया कि केन्द्र मे आत्मदृष्टि साधना-निष्ठ गुरु के नही होने से ही संघ में शिथिलाचार और विघटन आता रहा है। उसका लौकिक मूल्य ही संभव है, आध्यात्मिक नही। इसी अनुभूति के आधार पर आपने श्रमण-श्रमणियो एव श्रावक-श्राविकाओ को एक आध्यात्मिक गुरु का नेतृत्व प्रदान करते हुए उन्हे सुपरिचित मूल्यों के साक्ष्य में ही चलने का संदेश दिया था।

हमारे दिवगत शासनेश (परम पूज्य आचार्य श्री नानेश) ने मूल सिद्धान्तो और मूल आदर्शों को आत्मसात् करके संघ शासन को जो उज्ज्वलता प्रदान की और अपने असाधारण कौशल से जो अविस्मरणीय कीर्तिमान संघ में उपलब्ध कराये है वह संघ इतिहास के पन्नो मे स्वर्ण मंडित अक्षरों में सदा अंकित रहेंगे।

प्रभु महावीर की करुणा का अमर संदेश देने वाले इस महापुरुष के आचार्यत्व काल मे एक साथ दीक्षित होने वाले २५ मुमुक्षुओ की संख्या का रेकार्ड, महातपोज्योति साध्वीजी श्री चारित्रप्रभाजी का १०१ दिन का अभूतपूर्व तप एव महाभाग्यवान महासती श्री गुलाबकंवरजी के ८१ दिन संथारे की विस्मयकारी घटना तथा कुल मिलाकर दीक्षित होने वाले मुमुक्षुओ की ३५० की संख्या इस शताब्दी के लिए ऐतिहासिक एव आश्चर्यजनक है।

हमारे चरितनायकजी (आचार्य नानेश) जैन जैनेतर तत्वज्ञान के निष्णात अध्येता ही नही, व्याख्याता और यथायोग्य अनुसर्ता भी थे, उनका समग्र जीवन तत्वनान से निष्पन्न साधनाचार से परिपोपित था। उन्होंने ज्ञानाजन क लिए कठिन सघर्ष किया और भविष्य के लिये ज्ञान-साधना की सशक्त परम्परा स्थापित की और जैन वाङमय के विविध विपयो को अपनी मौलिक प्रतिभा एव सूक्ष्म तार्किक प्रज्ञा के द्वारा अभिव्यक्ति दी जिसमे उनके स्वरचित साहित्य की सख्या ७० के लगभग है और आचार्य श्री स सबधित साहित्य की सख्या करीब १५ है।

इसमे कुछ इस प्रकार से है, जैसे-कर्मप्रकृति, समतादर्शन और व्यवहार, समीक्षण धारा, जिणधम्मो, समता क्राति का आह्वान, समीक्षण ध्यान एक मनाविज्ञान, कषाय समीक्षण, उभरत प्रश्न समाधान के आयाम, उडाण ना हस्ताक्षर, कुकुम के पगलिए ऐसे जिए, जैन मुणि आणि धर्म, प्रेरणा की दिव्य रेखाए, नव-निधान, पावस प्रवचन प्रवचन पीयूप, लक्ष्य वेध, मगलवाणी, समीक्षण ध्यान-एक प्रयोग विधि, समता निर्झर, आध्यात्मिक आलोक आध्यात्मिक वैभव आदि।

आचार्य प्रवर ने जहा अपन कथा साहित्य मे जैन ग्रन्थो की तात्विक एव विकासकारी बातो को समझने के लिए सरस एव प्रेरणाशील कथाआ का उल्लेख करके जैन धर्म का कथा साहित्य प्रकाश म लाकर जो आत्मा परमात्मा, पुण्य पाप, बन्ध-मोक्ष आदि गूढ तत्वो के ज्ञान को सुन्दरता से चित्रित करके सर्वसाधारण के लिए अत्युपयोगी बनाकर साहित्यिक क्षेत्र को अद्भुत योगदान दिया है, वही दूसरी ओर जैन दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तो का सुगमतापूर्वक सर्वसाधारण को समझाने के लिए और जैन तत्वज्ञान के सदर्भ म अपने अनुभूतिगत विचारो को प्राजल भाषा एव सुगम शैली में जिणधम्मो मे प्रस्तुत करके, आगमो के विविध विपयो का समाहित करके, गागर मे सागर भर दिया।

डा सागरमल जैन पूर्व निर्देशक, वाराणसी पार्श्वनाथ विद्यापीठ न इस ग्रन्थ क प्रति अभिव्यक्ति दते हुए कहा कि जिणधम्मो जिन धर्म से सबधित मूलतत्व का सकलन करके पू आचाय श्री नानेश न (जैन धर्म) उसे वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य म विलक्षण अभिव्यक्ति प्रदान की है। यह शोध जिनापदिष्ट धर्म के विविध पक्षो को अपन म समाहित कर जिन धर्म को सम्यक् रूप से प्रस्तुत करती है और इसक अतिरिक्त समीक्षण ध्यान क माध्यम से यह बाध कराया है कि किस प्रकार अजित वृत्तिया की अगीकृति आत्मानुभूति के मूल स्वभाव तक नही पहुचने देती है। किस प्रकार कापायिक वृत्तिया उसके जीवन की विकासशील चेतना को लुप्त कर देती है और अतर चेतना क दबने से आत्मा अपने स्वभाव को कैस भूलती है। आचार्य दव ने मन के भीतर रही वस्तु को पहिचानने की अद्भुत कला को आगमिक परिप्रेक्ष्य स विवेचित किया है।

तीर्थंकर के अभाव में चतुर्विध सघ का सचालन व नेतृत्व एकमात्र आचार्य ही कर सकते है। धार्मिक मर्यादाओ मे योग्य परिवर्तन का अधिकार भी शास्त्रकारो ने उनके हाथो मे दिया है। इन आचार्यों क बहुमत स स्वीकृत नियमावली जीत व्यवहार समझी गई है। शास्त्र का सत्यस्वरूप दिखाने वाले धर्माचाय ही है। शास्त्र मे याग्यता सूचक धमाचार्य के ३६ गुण बताए है जो प्राय प्रसिद्ध है। दशाश्रुतस्कध की चतुर्थ दशा म उनका सक्षेप ८ दशाओ म मिलता है जैसे (१) आचार विशुद्धि (२) शास्त्रा का विशिष्ट और तलस्पर्शी वाचन (३) स्थिर सहनन और पूर्णेन्द्रियता (४) वचन की मधुरता तथा आदेयता (५) अस्खलित वाचन व मूल अर्थ की निर्वाहकता (६) ग्रहण एव धारणा मति की विशिष्टता (७) शास्त्रार्थ म द्रव्य क्षेत्र शक्ति की अनुकूलता से प्रयोग करना (८) समय के अनुसार साधुओ के सयम निर्वाहार्थ साधन सग्रह की कुशलता। इन आठ विशेषताओ के साथ निर्दोष चारित्र धर्म का पालन करना एव आश्रित सघ को ज्ञान क्रिया मे प्रोत्साहित करते रहना यह आचार्य की खास विशषता है। शास्त्र म कहा है कि -

जह दीवो दीवसय पइप्पई जसो दीवो।
दीवसमा आयरिया, दिप्पति पर च दीवति॥

जैसे एक दीपक सैकड़ो दीपको को जलाता है और खुद भी प्रकाशित रहता है उसी तरह [illegible] आचार्य स्वय ज्ञान आदि गुणो मे दीप्त और [illegible] दन

□ श्रीमती काता बोरा
अध्यक्ष श्री अ भा सा जैन महिला समिति

महायशस्वी समता विभूति का अनूठा कार्य

आचार्य पदारोहण होने के पश्चात् श्रमण संघीय चुनौती पूर्ण संघर्ष की स्थिति मे जब वे महापुरुष इस पद की बागडोर सभाल रहे थे, तब वे क्षण बड़े नाजुक थे।

एक तरफ श्रमण सगठन के लिए कई स्तरो पर चुनौतियाँ थी, ऐसी स्थिति मे घटनाओ के भवर मे से सफलता पूर्वक बाहर निकलना तो दूसरी तरफ स्व श्रीमद् जवाहराचार्य एव स्व श्रीमद् गणेशाचार्य जैसे अति प्रभावशाली महापुरुषो की ऐसी कई योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिए कार्य दिशा एव क्रियान्वन दिशा को सुनिश्चित करना कि जिससे समाज के विभिन्न वर्गों के सुधार और कल्याण के कार्यक्रमो का समावेश होता है।

हमारे चरितनायक आचार्य श्री नानेश विचार, उच्चार एव आचार के ऐसे समस्थितिक सामर्थ्यवान साधक थे कि जिन्होंने युग परिवर्तन की ओट मे अपनी साधना की कठोर नियमवाली से पराभूत होकर कभी भी वैज्ञानिक सुविधाओ से समझौता नही किया।

आपने अपने जीवन मे अनुभूति बोध के आधार पर देख लिया था कि चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर द्वारा दी गई साधना व्यवस्था आध्यात्मिक उन्नयन के लिए सर्वथा निर्दोष एव चुस्त-दुरस्त है। शताब्दियो ने उसे सुपरिचित घोषित कर दिया है। आज के सुविधावादी साधको की मन स्थिति देखकर आपके मानस पर अनेक प्रश्न उभरे। क्या ये सुविधाए त्याग तप और साधना के विकास मे सहयोग करेगी। क्या इनके अभाव मे जैन साधको की आत्म साक्षात्कार साधना मे कोई न्यूनता आई ? क्या भगवान के समय मे ये सुविधाए उपलब्ध नही थी ? यदि नही भी और होतीं तो क्या वे सन्यास में इसके उपयोग का विधान रखते। भला वे तो सर्वज्ञ थे, क्या उन्हे ज्ञात नही था कि आनेवाला युग सुविधावादी युग होगा। अत मै अपने साधको के लिए इनकी उपयोगिता का विधान कर दू। प्रत्युत आगमो मे स्थान स्थान पर प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप से परिग्रह का अस्वीकार ही है।

आपने यह स्पष्ट देख लिया था कि सुविधा भोग का आग्रह आगे चलकर शिथिलाचार को प्रोत्साहित करेगा। लोकप्रियता और पूजा-लिप्सा के विचार आत्मज्ञान के प्रति अनास्था के ही परिचायक हो सकते है। आपने श्रमण परम्परा के इतिहास को देखा और अनुभव किया कि केन्द्र मे आत्मदृष्टि साधना-निष्ठ गुरु के नही होने से ही सघ में शिथिलाचार और विघटन आता रहा है। उसका लौकिक मूल्य ही सभव है, आध्यात्मिक नही। इसी अनुभूति के आधार पर आपने श्रमण-श्रमणियो एव श्रावक-श्राविकाओ का एक आध्यात्मिक गुरु का नेतृत्व प्रदान करते हुए उन्हे सुपरिचित मूल्यों के साहय्य मे ही चलने का सदेश दिया था।

हमारे दिवगत शासनेश (परम पूज्य आचार्य श्री नानेश) ने मूल सिद्धान्तो और मूल आदर्शों को आत्मसात् करके सघ शासन को जो उज्ज्वलता प्रदान की और अपने असाधारण कौशल से जो अविस्मरणीय कीर्तिमान सघ मे उपलब्ध कराये है, वह सघ इतिहास के पन्नो मे स्वर्ण मंडित अक्षरो में सदा अंकित रहेंगे।

प्रभु महावीर की करुणा का अमर संदेश देने वाले इस महापुरुष के आचार्यत्व काल मे एक साथ दीक्षित होने वाले २५ मुमुक्षुओ की सख्या का रेकार्ड महातपोज्योति साध्वीजी श्री चारित्रप्रभाजी का १०१ दिन का अभूतपूर्व तप एव महाभाग्यवान महासती श्री गुलाबकवरजी के ८१ दिन सथारे की विस्मयकारी घटना तथा कुल मिलाकर दीक्षित होने वाले मुमुक्षुओ की ३५० की सख्या, इस शताब्दी के लिए एतिहासिक एव आश्चर्यजनक है।

हमारे चरितनायकजी (आचार्य नानेश) जैन जैनेतर तत्वज्ञान के निष्णात अध्येता ही नही, व्याख्याता और यथायोग्य अनुसर्ता भी थे, उनका समग्र जीवन तत्त्वज्ञान स निष्पन्न साधनाचार से परिपोषित था। उन्होंने ज्ञानार्जन के लिए कठिन सघर्ष किया और भविष्य के लिये ज्ञान-साधना की सशक्त परम्परा स्थापित की और जैन वाड्मय के विविध विषयो को अपनी मौलिक प्रतिभा एव सूक्ष्म तार्किक प्रज्ञा के द्वारा अभिव्यक्ति दी जिसमे उनके स्वरचित साहित्य की सख्या ७० के लगभग है और आचार्य श्री स सबधित साहित्य की सख्या करीब १५ है।

इसमे कुछ इस प्रकार से है, जैसे-कर्मप्रकृति, समतादर्शन और व्यवहार, समीक्षण धारा, जिणधम्मा, समता क्राति का आह्वान, समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान, कषाय समीक्षण, उभरते प्रश्न समाधान क आयाम, उडाण ना हस्ताक्षर, कुकुम के पगलिए, ऐसे जिए, जैन मुणि आणि धर्म, प्रेरणा की दिव्य रेखाए नव-निधान, पावस प्रवचन, प्रवचन पीयूष, लक्ष्य वेध, मगलवाणी, समीक्षण ध्यान-एक प्रयोग विधि, समता निर्झर आध्यात्मिक आलोक, आध्यात्मिक वैभव आदि।

आचार्य प्रवर ने जहा अपने कथा साहित्य मे जैन ग्रन्थो की तात्विक एव विकासकारी बातो को समझने के लिए सरस एव प्रेरणाशील कथाओ का उल्लेख करके जैन धर्म का कथा साहित्य प्रकाश मे लाकर जो आत्मा-परमात्मा, पुण्य पाप, बन्ध मोक्ष आदि गूढ तत्त्वो क ज्ञान का सुन्दरता से चित्रित करके सर्वसाधारण के लिए अत्युपयोगी बनाकर साहित्यिक क्षेत्र को अद्भुत योगदान दिया है, वही दूसरी ओर जैन दर्शन के मूलभूत सिद्धान्ता को सुगमतापूर्वक सर्वसाधारण को समझाने क लिए और जैन तत्वज्ञान के सदर्भ म अपने अनुभूतिगत विचारो को प्राजल भाषा एव सुगम शैली में जिणधम्मो मे प्रस्तुत करके, आगमो के विविध विषया को समाहित करके, गागर म सागर भर दिया।

डा सागरमल जैन पूर्व निर्देशक वाराणसी पार्श्वनाथ विधापीठ न इस ग्रन्थ के प्रति अभिव्यक्ति देत हुए कहा कि जिणधम्मो जिन धर्म से सबधित मूलतत्त्व का सकलन करके पू आचार्य श्री नानश ने (जैन धर्म) उसे वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य म विलक्षण अभिव्यक्ति प्रदान की है। यह शोध जिनापदिष्ट धर्म के विविध पक्षा को अपने म समाहित कर जिन धर्म को सम्यक् रूप से प्रस्तुत करती है और इसक अतिरिक्त समीक्षण ध्यान क माध्यम से यह बोध कराया है कि किस प्रकार अजित वृत्तियो की अगीकृति आत्मानुभूति के मूल स्वभाव तक नही पहुचने देती है। किस प्रकार कषायिक वृतिया उसके जीवन की विकासशील चेतना को लुप्त कर देती है और अतर चेतना क दबने स आत्मा अपने स्वभाव को कैस भूलती है। आचार्य देव ने मन के भीतर रही वस्तु को पहिचानने की अद्भुत कला को आगमिक परिप्रेक्ष्य से विवेचित किया है।

तीर्थंकर के अभाव में चतुर्विध सघ का सचालन व नेतृत्व एकमात्र आचार्य ही कर सकते है। धार्मिक मर्यादाआ म योग्य परिवर्तन का अधिकार भी शास्त्रकारो ने उनके हाथो मे दिया है। इन आचार्यों के बहुमत म स्वीकृत नियमावली जीत व्यवहार समझी गई है। शास्त्र का सत्यस्वरूप दिखाने वाले धर्माचार्य ही है। शास्त्र मे योग्यता सूचक धर्माचार्य के ३६ गुण बताए है जो प्राय प्रसिद्ध है। दशाश्रुतस्कध की चतुर्थ दशा म उनका सक्षेप ८ दशाआ मे मिलता है जैस (१) आचार विशुद्धि (२) शास्त्रो का विशिष्ट और तलस्पर्शी वाचन (३) स्थिर सहनन और पूर्णेन्दियता (४) वचन की मधुरता तथा आदेयता (५) अस्खलित वाचन व मूल अर्थ की निर्वाहकता (६) ग्रहण एव धारणा मति की विशिष्टता (७) शास्त्रार्थ मे द्रव्य क्षेत्र शक्ति की अनुकूलता स प्रयोग करना (८) समय के अनुसार साधुओ के सयम निर्वाहार्थ साधन सग्रह की कुशलता। इन आठ विशेषताआ के साथ निर्दोष चारित्र धम का पालन करना एव आश्रित सघ को ज्ञान क्रिया म प्रोत्साहित करत रहना यह आचार्य की खास विशेषता है। शास्त्र म कहा है कि -

जह दीवो दीवसय, पइप्पई बसो दीवो।
दीवसमा आयरिया, दिव्वति पर च दीवति ॥

जैसे एक दीपक सैकड़ो दीपका को जलाता है और खुद भी प्रकाशित रहता है [illegible] आचार्य स्वय ज्ञान आदि गुणो से दीप्त और [illegible]

आदि से दूसरो का भी दीपाते है। इस प्रकार आचार्य पद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि उनसे ही प्रभु के शासन सघ की परम्परा प्रवर्तित और प्रवधित होती है। धर्माचार्य ही चतुर्विध सघ को गति प्रगति प्रदान करते है। जैन संस्कृति ने धर्माचार्य को तीर्थंकर के समान निरूपित करते हुए धर्माचार्य की आराधना भगवान अरिहत की आराधना कहा है।

नमस्कार, महामत्र के पाच पदो मे तृतीय पद इसी बात को ध्वनित करता है कि अरिहन्त और सिद्ध हमारे आदर्श उपास्य है और उपाध्याय एव मुनि उपासनागत साधक आत्माए है, जबकि आचार्य इन दोनो कड़ियो को जोड़नेवाले सूत्रधार है। इसलिये धर्माचार्य को तुला मध्य स्थान दिया गया है। अर्थात् तराजू के दोनो पलड़ो के बीच चोटिया का स्थान आचार्य को दिया गया है। इन महान पुरुषो के जीवन से जो कुछ मिलता है, उसे दीप की भाति प्रकाशमान रखने एव प्रकाश मे जीने मे ही जीवन की सार्थकता है।

मेरू के समान अडिग सागर के समान गम्भीर एव सिंह के समान निर्भीक ऐसे हमारे महान पूज्य गुरुदेव दिवगत आचार्य श्री नानेश ने अपने ही समान एक अनमोल कोहिनूर रत्न के रूप मे पूज्य आचार्य श्री रामेश को उत्तराधिकार प्रदान करके सघ समाज, देश और धर्म संस्कृति पर जो उपकार किया है उस कृतज्ञता को असीम शब्दो मे व्यक्त करने की हमारी क्षमता नही है।

-२०/७, यशवत निवास रोड, इन्दौर (म प्र)

उदयपुर मे गूजी जय जयकार है

छन्दराज 'पारदर्शी'

सेवा से संसार सारा सत्य से सजा संवारा ज्ञान का ही दान दिया विक्षेप मिटाए है।
चित्तौड़ जिले की शान 'दांता' गांव खास जान यहीं लिया जन्म गुरु नानेश कहाए है।
पिता मोडीलाल प्यारे माताजी शृंगार बाई पोकरना गोत्र धार, नाना गुरु आए है।
साहस शक्ति के धनी मानी ध्यानी नाना गुणी 'पारदर्शी' सही राह जग को बताए है।
आठ वर्ष की आयु में पिता साथ छोड़ चले व्यापार संभाला पर मन नहीं भाए है।
गुरु जवाहरलाल मिले कापास नगर दर्शन व्याख्यान सुन वैराग्य सुहाए है।
पुण्य कर्म उदय में गये जब आप कोटा आचार्य गणेशीलाल ज्ञान समझाए है।
उन्नीसौ छियाणु साल पौष शुक्ल द्वितीया को 'पारदर्शी' कपासन दीक्षा गुरु पाए है।
ज्ञान ध्यान तप किया तन को तपाय लिया समता में सार जानो गुरु समझाया है।
दो हजार उन्नीस में आचार्य पदवी पाए जैन शासन की शान मान को बढ़ाया है।
अछूतों को अपनाया सही पंथ बतलाया धर्मपाल नाम दिया व्यसन छुड़ाया है।
गुरुवर उपकारी समता हृदय धारी पारदर्शी सच्चा ज्ञान हमें समझाया है।
राजस्थान गुजरात महाराष्ट्र जैसे प्रान्त मध्यप्रदेश में दर्श पाए नरनारी है।
गांव गांव घर घर पैदल ही घूमकर हटा अज्ञान तिमिर बने उपकारी है।
समता विभूति बन ज्ञान ज्योति क्षमावन्त उपलब्धियां अनन्त नाना गुणधारी है।
'पारदर्शी' गुरुवर समीक्षण ध्यान धर दूर किए आडम्बर बने लोकोद्धारी है।
आचार्य श्री नानालाल चारित्र की थे मिसाल मृदुल स्वभावी गुरु मानता संसार है।
संयम पथ पथिक साहित्य सृष्टा अधिक रत्नत्रयी के पालक ज्ञान के भंडार है।
सत्ताईस अक्टूबर सन् उन्नीसौ निन्याणु संथारे में देह त्याग पाया [illegible] द्वार है।
'पारदर्शी' का वन्दन स्वीकारें श्रद्धा सुमन उदयपुर में गूंजी जय जयकार है।

-२६१ ठाम्बावती मार्ग आयड़ उदयपुर-३१३ ००१

□ गौतम पारख
अध्यक्ष श्री अ भा सा जैन समता युवा सघ

सस्मरण एव सुखद अनुभूति

१ आचार्य श्री के साथ विहार एव स्वय का केशलोचन

आचार्य भगवन् का विहार राजनादगाव से खैरागढ की ओर होना था, उस समय मेरी आयु मात्र ९ या १० वर्ष की ही थी, मै भी वैरागी की तरह आचार्य श्री के साथ विहार कर गया। प्रथम पड़ाव राजनादगाव से ५ कि मी दूर ग्राम बोरी मे हुआ। उस समय तक मैने स्वय अपने ही हाथो मे अपने सिर का लगभग आधे मे अधिक भाग का केश लोचन कर लिया था। उस दिन सायकाल मेरे पिताश्री व माता श्री मुझ लेन वहा आ गये। मै उनके साथ जाने मे मना करने लगा। फिर कुछ देर बाद मेरे दादा श्री आये, तब आचार्य भगवन के ऐसा कहने से कि- तू अभी छोटा है, फिर आ जाना, मै अपने घर राजनादगाव वापस आ गया। दूसरे दिन मेरे दादाश्री मुझ ग्राम बुन्देली ले गये और वहा नाई को बुलाकर मेरे सिर का मुण्डन करा दिया और ऐसा कहने लगे अब क्या लोचन कर पायेगा।

२ सन्तों की वेशभूषा मे

आचार्य श्री के राजनादगाव वर्षावास के समय जब मै बहुत छोटा था, कुछ वैरागी बन्धुओं ने मुझ सादा वेश पहनाकर एव ओघा देकर कहा जाओ सभा मे श्रद्धेय आचार्य भगवन् का वन्दन करके आओ। उस समय सभा में स्वय आचार्य भगवन् प्रवचन फरमा रहे थे। बाल्यावस्था के कारण मै अबोध तो था ही, मैंने बाल सुलभ प्रवृति स ऊपर की सीढ़ी से, तेज गति से नीचे आया, आचार्य श्री का वन्दन किया और तेजी स वापस ऊपर चला गया। प्रवचन सभा म उपस्थित लोग मुझ बालक का सन्त समझकर खड़े होन लग। बचपन की इस घटना से मेरे जीवन की दिशा ही बदल गई।

३ बीकानेर वर्षावास

प्रार्थना के पश्चात् प्रतिदिन गुरुदेव समता दर्शन एव व्यवहार की व्याख्या किया करते थे। मै भी उस व्याख्या मे २ ३ दिन से शामिल हो रहा था। एक दिन डॉक्टर खून की जाच करने प्रात आ गये थे। गुरुदेव व्याख्या करते-करते बीच म उठे, अन्दर गये, खून दिया व वापस हाथ में रुई दबाये तुरन्त बाहर आ गये। मैने कहा भगवन कुछ देर के लिये व्याख्या बन्द कर दे, कल कर देंवे। उन्होने नही माना जिस हाथ स खून निकाला गया था रुई लगातार हाथ माड़े मोड़े ही व्याख्या करते चल गये। मै देखकर अवाक् रह गया।

४ वाक्पटुता नही सयम की निर्मल आराधना महत्वपूर्ण

एक चर्चा मे गुरुदेव सहज ही बाल उठे कि सयमी जीवन मे साध्वाचार का पालन ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। साधक की वाक्पटुता वक्तव्यकला से नही बल्कि साध्वाचार के पालन मे होती है। साधक यदि पढने भी जाता है, पढने का कितना अधिक विवक रखता है, यह ज्यादा महत्वपूर्ण है न कि वाक्पटुता।

५ महिला सुरक्षा के प्रति सजग

एक बार देशनोक से आचार्य श्री का विहार ब्यावर की दिशा म हुआ मार्ग की दूरी का कम समय मे तय करने हेतु श्रावका ने रेतील मार्ग से विहार करना उचित समझा किन्तु मै सीध मार्ग स आ गन्तव्य स्थान पर पहुच

गया। मेरी धर्मपत्नी व भतीजी गुरुदेव के साथ पीछे पीछे आ रही थीं। रेगिस्तानी क्षेत्र होने के कारण मार्ग विकट। रास्ता बिल्कुल वीरान व सुनसान था। गुरुदेव जैसे ही गन्तव्य स्थान पर पहुंचे तुरन्त मुझे बुलवाकर कहा इस प्रकार के रास्ते से महिलाओं को कभी नहीं भेजना चाहिए। महिलाओं की सुरक्षा के प्रति उनकी सजगता का यह संस्मरण आज भी मेरा मार्ग प्रशस्त करता है।

६ <u>विद्रोह करने वाले भी अपने भाई है</u>

घटना बीकानेर की है। कतिपय निष्कासित संतो की वार्ता पूज्य गुरुदेव से चल रही थी। गुरुदेव के समक्ष निष्कासित संतो ने १४ शर्तें रखी। गुरुदेव ने मर्यादाओं के भीतर संघ की एकता की दृष्टि से सभी १४ शर्तें सहर्ष स्वीकार कर ली। गुरुदेव द्वारा सभी शर्तें मान लेने के बाद विगत गलतियों के प्रति प्रायश्चित करने की कुछ बात को लेकर निष्कासित संत अति उत्तेजित हो गये। जबकि जैन दर्शन के अनुसार प्रायश्चित कर लेना सन्त जीवन की पवित्रता का प्रथम चरण है। किन्तु निष्कासित संत आक्रोश पूर्वक उपस्थित श्रावकों को हटाते हुए कमरे से तुरन्त निकल पड़े। गुरुदेव उन्हें आवाज देते रहे पर वे लौटकर नहीं आए। वहां लगभग १५० से २०० लोग एकत्रित थे, उसमें मैं भी था। इस घटना व दृश्य को देखकर हमारे नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। हिम्मत जुटाकर हम सब उस कमरे में गए, जहां गुरुदेव विराजित थे। हमने गुरुदेव को विश्वास दिलाया कि हम सभी आपके साथ हैं व सदैव आपश्री के आदेशों का पालन करने हेतु तत्पर रहेंगे। अन्त में सभी जनों की बाते सुनने के बाद गुरुदेव ने एक पंक्ति में सहज ही उत्तर दिया जाने वाले भी सभी मेरे भाई है, गुरुदेव की समता सहनशीलता व सहृदयता को देखकर हम स्तब्ध रह गए। ऐसा अनूठा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है।

७ <u>स्वभाव में सरलता</u>

प्रवचन में अनेकों बार उद्बोधन किया मैं तो नाना हूं छोटा हूं, छोटे सा आदमी हूं, मैंने तो सांसारिक शिक्षा भी प्राप्त नहीं की है। यह बात बहुत सहजता से वे कहते थे। आगे वे श्रावकों से कहते- आप तो अच्छा पिया है महान् है जब भी आपको लगे नि संकोच भाव से मुझे संशोधन देते रहा कर। आचार्य भगवन् की उक्त वाणी सहज ही श्रावकों को नतमस्तक कर देती है।

८ <u>नोखा की सुखद अनुभूति</u>

शासन व संघ के माध्यम से कुछ सेवन करने का सौभाग्य मुझे भी मिला। एक बार नोखा चातुर्मास के समय मैं सुबह से गुरुदेव के दर्शन व प्रवचन का लाभ किसी कारणवश न ले सका। प्रवचन सभा में मुझे उपस्थित न देखकर गुरुदेव ने एक श्रावक से पूछा गौतम दिखाई नहीं दे रहा है, तुमने उसे देखा क्या? जैसे ही गुरुदेव द्वारा मुझे पूछे जाने की सूचना मिली मैं श्री चरणों में तुरन्त उपस्थित हुआ यह कहकर गुरुदेव ने मुस्कुरा दिया कि सुबह से तुम्हें देखा नहीं इसलिए पूछ लिया अनुपम स्नेह की उस झलक को मैं जीवन भर नहीं भूल सकता।

९ <u>सत्य के प्रति</u>

आचार्य भगवन् रतलाम अलकापुरी से विहार कर आगे बढ़ रहे थे। मैं भी उस गांव में पहुंच गया जहां आचार्य श्री विराजे थे। गांव का नाम मेरे स्मृति पटल पर नहीं है वहां किसी एक ग्रामीण भाई के घर के सम्मुख चबूतरे पर सन्त व्याख्यान दे रहे थे। कुछ देर बाद आचार्य भगवन् स्वयं पधारे और सीधे उस ग्रामीण के घर प्रवेश कर ग्रामीण से पूछा कि बाहर चबूतरे पर वे जिस पाटे पर बैठकर सन्तजन प्रवचन दे रहे है, वह पाटा सदैव यहीं रहता है या प्रवचन हेतु यहां पहुंचाया गया है। ग्रामीण भाई ने स्वाभाविक रूप से कह दिया कि हमने पाटा पहुंचाया है। फिर गुरुदेव बाहर आये और सन्तों से पूछा बिना गवेषणा किये आसन पाटे का उपयोग कैसे कर लिया फिर गुरुदेव ने लगभग उस दिन इसी विषय पर प्रवचन दिया कि सदा सत्य बोलना चाहिए। असत्य बोलकर साधना सन्तों को दोष नहीं लगाना चाहिए। सत्य ही भगवान है।

१० पूज्य गुरुदेव का बच्चो के प्रति अनुराग

आचार्य श्री का बच्चा के प्रति बड़ा स्नेह रहा। वे माताओ से सदैव कहते थे कि छोटे बच्चो को कभी नही मारना चाहिए, बच्चो को युक्ति पूर्वक समझाना चाहिए। बाल्यावस्था ही ऐसी उम्र है जब ये मन के सच्चे व स्वाभाविक होते है। उन्हे प्रारभ से अच्छे सस्कार दीजिए। व ही भारत क भावी भाग्य विधाता है। गुरुदेव सामूहिक प्रत्याख्यान के समय भी नियम दिला देते कि- आज बच्चो को नही मारना है।

पूज्य गुरुदेव के साथ मेरे उक्त सस्मरण जीवन की अमूल्य धरोहर हैं जो जीवन में सदैव मुझे प्रेरणा व उत्साह प्रदान करते है। आचार्य श्री के चरणो मे सेवा का जो भी अवसर मिला, मैंने उसे पुण्य अर्जन माना व उसे अपने जीवन क स्मृति पटल मे सजाकर रखा। उन्होंने इतना अधिक स्नेह प्रेम व प्रोत्साहन मुझे दिया जिसे मै शब्दो मे व्यक्त नही कर सकता। स्व आचार्य श्री का आशीर्वाद सदैव मेरा पथ प्रशस्त करता है।

-राजनादगाव

ओ जिन शासन के दिव्य सितारे

भैरूलाल जैन

ओ जिन शासन के दिव्य सितारे, भव्य जीवों के तारण हारे,
कहा छोड़ चले हमें तुम, जन-जन सब यही पुकारे ॥
ओ हुक्म संघ के अष्टम पट्टधीश तेरा क्या गुण गान करू,
गुण असीम शब्द ससीम कैसे तेरा बखान करू ॥१॥
कई भव्य जनों को तूने तारे, कइयों को राह बताये,
हम सब की नैया के तुम थे, एक मात्र सहारे ॥२॥
जहा कहीं भी हो तुम गुरुवर तुम हमें संभालते रहना
और जहां कहीं भी विराजो दर्शन जरूर देते रहना ॥३॥
तेरे बिन सूनी दुनिया, मुझसे सब कुछ छीना है ।
किससे कहूं यह मुझसे नाता गुरुवर को ही छीना है ॥४॥
चांद धवल की यही भावना सदा ध्यान में है रखना,
जैसा नाम वैसा गुण का काम हमें है सदा करना ॥५॥

- अलीगढ़ (रामपुरा)

□ कालूराम नाहर
पूर्व मंत्री, श्री अ भा सा जैन संघ

समता की प्रतिमूर्ति

आन बान-शान के शौर्य के प्रतीक मेवाड़ प्रान्त के एक छोटे से ग्राम दाता मे जन्मे एक बालक ने महापुरुष के रूप म इतनी ख्याति प्राप्त कर ली यह एक अनोखा अजूबा है।

जेठ सुदी द्वितीया को एक चमकता सूर्य छोटे से बालक के रूप मे वसुन्धरा पर माँ शृगार की कुक्षि से अवतरित होकर नाना से नानेश की पूर्णता प्राप्त कर सारे जैन समाज को नई रोशनी देकर साधुमार्गी संघ को ऊचाइयो के शिखर पर पहुचा कर स्वर्गगमन कर गया।

यथानाम तथा गुण

आपका जन्म नाम गोवर्धन था। उस नाम को चरितार्थ करते हुए जिस प्रकार कृष्ण वासुदेव ने अपनी एक अगुली म गोवर्धन पर्वत को उठाकर ग्वाला (गायो) की रक्षा की, उसी प्रकार इस महापुरुष ने भी अपने शासनकाल में हुक्म संघ की रक्षा कर जो जाहोजलाली की वह अनुकरणीय है। आपने आचार्य काल के प्रथम वर्षावास मे ही समाज को बता दिया कि अपनी अन्तर आत्मा की आवाज पर जो जचा उसे करने मे वे कभी पीछे नही हटे चाहे सामने दिशाशूल हो या अन्य कोई बाधाए। जब उदयपुर से विहार करने लगे तो बड़े बड़े श्रावको ने कहा इधर दिशाशूल है रतलाम की तरफ नही बढे। परतु निश्चय के धनी ने इसकी परवाह न करके जो निश्चय किया, उस पर अडिग रहे। उसका प्रतिफल इतना भव्य हुआ कि मालव प्रदेश म एक क्रान्ति का उद्घोष हुआ जो धर्मपाल के रूप म समाज के समक्ष है। जिस जाति के हाथ खून से सने रहते थ आज उनके हाथ म माला और पुजनी है, मुह पर मुहपत्ती है।

समता की साकार मूर्ति

आप अपने साधु जीवन म किसी स फालतु बोलते नही थे सिर्फ अध्ययन अध्यापन तथा जीवन साधना म तत्पर रहते, दीवार की तरफ मुह कर ध्यान म मस्त रहते थ। जब जब भी आचार्य श्री गणेशाचार्य को श्रावक वर्ग कहते कि भगवन् आप अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करने की कृपा कर, तब तब श्री गणेशाचार्य कहते एक ऐसा तराशा हुआ हीरा दूगा जो अष्टम पाट पर पूर्ण निखार लायेगा और जब आपके नाम की घोषणा हुई तो लोग कहने लग यह गूगा महाराज क्या निहाल करेगे किसी स बोलते तक नही, परन्तु जब आपने आचार्य पद का भार ग्रहण किया और जो ज्योति समाज को दी वह आज सर्व-प्रत्यक्ष है। जैसा कि आचार्य श्री गोतालाल जी म सा ने कहा कि अष्टम पाट पूर्व चमकेगा वह सार्थक नजर आ रहा था।

आपने समाज को समता दर्शन और ध्यान की देन दी है वह सिर्फ अन्यो के लिए नही परतु अपने जीवन पर पूर्ण रूप स चरितार्थ की है। जो पदविया सिर्फ पद लालुपता के लिए लगाते है उन पर आपका विश्वास नही था। जैसी पदवी वैसा ही आचरण आपका स्पष्ट था।

आपने अपने आचार्यकाल म अनेक कीर्तिमान स्थापित किये उनक कुछ उदाहरण है -

१ ३५० से ऊपर मुमुक्षु आत्माओ को विरक्ति मार्ग पर लगाना।

२ एक साथ पच्चीस दीक्षाए प्रदान करना।

३ हुक्म सघ मे आचार्य पद पर सबसे लम्बी अवधि प्राप्त करना।

आपके द्वारा जो युवाचार्यश्री का चयन हुआ वह आपकी दूरदर्शिता का ही स्पष्ट प्रमाण है, जिस प्रकार आपके गुरु गणेशाचार्य ने चयन कर समाज को अचम्भित किया, उसी प्रकार आपका चयन भी एक अनुपम है। सयम के सजग प्रहरी आगम के मसीहा के रूप मे मिले है।

-ब्यावर

दृष्टि सिद्धात रूप थी दिव्य

कमल चंद लूनिया

किधर तुम लुप्त हुए अखिलेश,
दिव्यतम देकर के गणवेश।
कृपाधान दिये हो दिव्य दिशा,
आज क्यो छा गई क्रूर निशा ?

कहा पर खोजे तुझे कृपेश,
रही न जगह कहीं पर शेष।
कहा किस ठौर गये मतिवन्त,
लौट फिर आना धुनिमय संत॥

सरस समता में करे प्रवेश,
रहे न कही दुष्ट अभिनिवेश।
समीक्षण धारा का समगान,
नित हम गावें, दे वरदान॥

विनय का लेकर के आकार,
किये तुम साध्य पूर्ण साकार।
अगम निगम पर दिव्य अवधान,
सतत् किया है अनुसधान॥

लक्ष्य से गये न तुम हो लौट,
कोई दे कितनी गहरी चोट।
दृष्टि सिद्धात रूप थी दिव्य,
सदा अधिगम का था मन्तव्य॥

सफल किया गुणमय अवतार,
एकाग्र दृष्टि की ले पतवार।
सघ को दिया मिली अनुकूल
भला क्यो भविक न पावे कूल॥

पुरानी लागों की पिरोल बीकानेर ३३४००५

□ डा सागरमल जैन
पूर्व निदेशक पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

समता दर्शन प्रवक्ता

आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के जीवन दर्शन को जानने और समझने का सौभाग्य मुझे अपने बचपन के आरम्भिक काल से ही मिला। उस समय आप आचार्य पुगव श्री गणेशीलालजी म सा के अन्तेवासी प्रमुख शिष्य के रूप में थे। सर्वप्रथम आपके दर्शन का सौभाग्य सादड़ी सम्मेलन के अवसर पर हुआ था। किन्तु उस समय की एक धुधली स्मृति के अतिरिक्त मुझे अधिक ज्ञात नही है। वस्तुत मेरी दोनो बहनो, पुत्री एव पौत्री के परिवार आचार्य श्री के परम् भक्त रहे हैं अत उन सबके निमित्त से मुझे आचार्य श्री के निकट सम्पर्क मे आने का सौभाग्य मिलता रहा है। उनकी वाग्मिता, तर्कशक्ति और तर्क कौशल का प्रथम परिचय मुझे तत्कालीन श्रमण सघ के उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म सा के जावरा चातुर्मास के समय मिला, तब आप उपाचार्य श्री के प्रमुख सलाहकार थे। उस समय मै म प्र स्थानकवासी जैन युवक सघ का अध्यक्ष था। उस चातुर्मास म श्री चिमन भाई चकु भाई शाह सस" सदस्य (मालीसिटर-मुम्बई), श्री सौभाग्यमल जी जैन (वकील सा शुजालपुर) और मै श्रमण सघ की किसी समस्या को लेकर जावरा पहुचे थे। उस समय श्री चिमन भाई और सौभाग्यमल जी का कहना था कि इनकी वाग्पटुता के आगे तो हम जैसे कुशल वकील भी पराजितता का अनुभव करते है। ऐसी थी आचार्य श्री की वाग्पटुता और तर्क शक्ति।

उनकी दूसरी विशेषता थी दृढ निर्णय शक्ति। एक बार उन्होने जो निर्णय ले लिया, उस पर अड़िग रहते थे, फिर चाहे परिस्थिति कितनी ही विकट क्या नही हो। मैंने अनेक प्रसगो मे उनकी इस दृढ निर्णय शक्ति का स्वय अनुभव किया है। प्रश्न चाहे श्रमण सघ से अलग होने का हो या मुनि रामलाल जी म सा को युवाचार्य पद देने का रहा हो, उन्होंने एक बार जो निर्णय ले लिया, उस पर अड़िग रहे। समझौतावादी प्रवृत्ति का उनमे सदैव अभाव ही रहा। परिस्थितिया के सामने उन्होंने कभी झुकना नही सीखा। चाहे उन्हे अपनी इस अड़िगता के लिये कितना ही बड़ा बलिदान क्या नही करना पड़ा हो। वे जहा एक ओर उच्च जीवन मूल्यो के प्रति समर्पित थे, वहीं सत्य के लिए सघर्ष करना भी जानते थ। अपने सघ में उन्होंने अनुशासन हीनता को कभी प्रश्रय नहीं दिया। चाहे उसके लिए उन्हे ही शिष्यो के एक वरिष्ठ एव प्रबुद्ध वर्ग को अलग ही क्यो नही करना पड़ा हो। निर्णय लेकर पलटना उनके स्वभाव म नहीं था। उन्होंने चरित्र का जिस निष्ठा से स्वीकार किया था, उसी निष्ठा और प्रामाणिकता से उसका पालन किया। उनकी चारित्र रूपी चादर सदैव निर्मल रही। आधुनिक युग में जैन सघ मे आचार्य तुलसी के पश्चात् वे ही ऐसे एकमात्र आचार्य थे, जिनके स्वहस्त दीक्षित साधु साध्वियो की इतनी विपुल सम्पदा हो। धर्मपाल प्रवृत्ति के जनक समता दर्शन के प्रवक्ता आचाय श्री का जीवन सदैव एसा रहा कि किन्ही प्रश्नो पर उनसे मत वैभिन्य रखने वाले व्यक्ति भी उनके तप त्याग और निर्मल चारित्र धर्म के पालन से प्रभावित हो उनके प्रति श्रद्धावनत ही बने रहे। गुजरात और पजाब की स्थानकवासी सम्प्रदायो मे भी उनके प्रति आदर भाव था।

दाता जैसे एक छोटे-से ग्राम में जन्म लेकर विकट परिस्थितियो से जूझते हुए एक प्रमुख स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के आचार्य तक की उनकी जीवन-यात्रा सीधी और सपाट नहीं रही है। उन्होंने अनेक उतार चढ़ाव देखे है, किन्तु उन सबम उन्होंने अपना सतुलन बनाये रखा, विचलित और उद्वेलित नहीं हुए वस्तुत वे समता दर्शन के मात्र प्रवक्ता नही थे, उन्होंने उसे अपने जीवन म जीने का प्रयास भी किया था।

उन्होंने न केवल समता को जीने का अभ्यास किया है, अपितु सामाजिक समता की स्थापना का प्रयत्न भी किया, उनके द्वारा प्रवर्तित धर्मपाल प्रवृत्ति किस सीमा तक सफल रही, यह एक अलग प्रश्न है, किन्तु उसके पीछे सामाजिक समता की स्थापना, दलितो के उद्धार और व्यसन मुक्ति की जो जीवन दृष्टि रही, वह उनकी दूरदर्शिता और असीम करुणा को ही अभिव्यक्त करती है।

वैसे आचार्य श्री अत्यन्त सहज और सरल थे, किन्तु इतने सजग और सावधान भी कि कोई उनकी इस सहजता का दुरुपयोग नही कर ले। उनमे एक ओर कुसुम-सी कोमलता थी तो दूसरी ओर व वज्र स भी अधिक कठोर भी थे। हृदय मे मृदुता थी किन्तु निर्णय लेने और उन पर अमल करने मे कठोरता एव दृढता भी थी। उनकी सयम साधना, उनकी धवल चादर क समान ही धवल थी। श्रद्धाशील समाज उनके इन गुणो को आशिक रूप मे भी आत्मसात् कर सक तो यही इनक प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

-शाजापुर (म प्र)

नामाक्षरी काव्य

दिनेश ललवानी

जन्म हुआ दाता ग्राम मे नाना जिनका नाम।
मा शृगार देवी, पिता मोड़ीलाल को प्रणाम॥
गुणो की खान नाना गुरू ने लघु वय मे सयम धारा।
रूख बदला बलाइयो का धर्मपाल सघ का भव्य नजारा॥
नाम रोशन किया विश्व मे ३५० दीक्षाओ का कीर्तिमान।
नायक धर्म सघ के आचार्य प्रवर नानेश महान॥
राजस्थान, दिल्ली, गुजरात मे ज्ञान का दीप जलाया।
महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश मे जिन शासन का ध्वज फहराया॥
चमन आपने खुद सवारा सिद्धातो पर रहे अटल।
महक त्याग तप की पावन, सयम जीवन बड़ा सरल॥
कठिनाई मे डिगे नहीं, काटो को फूल बनाया।
तेजस्वी, महाप्रतापी गुरुवर ने पचरवा सथारा॥
भाव बड़े उज्वल आपके, प्रकाश पुन्ज का अतिम नजारा।
नुपुर की ध्वनि जैसे गुंजा नाना का जय जयकारा॥
सबने श्रद्धा सुमन चढाये उदयपुर नगर को किया प्रणाम।
मार्ग आपका सबसे प्यारा मिलकर कदम बढाये।
नाना गुरु के शिष्य आचार्य रामेश को सादर शीश नवाये॥

- सिलीगुड़ी

□ केशरीचन्द सेठिया
पूर्व उपाध्यक्ष श्री अ भा सा जैन सघ

अछूतो के मसीहा

आचार्य श्री नानालालजी म सा के अतिम दर्शन १३ १० ९९ को उदयपुर मे हुए। आचार्य प्रवर की देह दिन दिन क्षीण हो रही थी। उनका मनोबल, तपोबल आत्म तेज प्रखरता से मुखरित हो रहा था। मुखमडल पर एक अपूर्व अलौकिक आभा झलक रही थी।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर के ३७वें अधिवेशन पर जाने का सुअवसर मिला। वे पौषधशाला की ऊपरी मजिल के कक्ष मे एक काष्ठ के तख्ते पर लेटे रहते थे। मौन, शात, चिन्तन की मुद्रा मे। इच्छा होती तो उठकर उपस्थित मुनि का सहारा लेकर या कभी तत्कालीन युवाचार्य श्री रामलालजी म सा या श्री ज्ञानमुनिजी म सा के साथ बाहर बरामदे मे टहलने लगते।

एक दिन आचार्य श्री के विश्राम कक्ष मे चुपचाप आचार्य श्री के तेजवत, शात मुखाकृति को निहार रहा था, कि श्री सपतमुनिजी म सा के पुत्र डा एच सी धाड़ीवाल आये। बातचीत मे बताया कि कल सुबह गुरुदेव का स्कैनिंग कराने के लिये ले जायेंगे।

मैंने कहा वे तो किसी तरह की चिकित्सा, जाच कराना नही चाहते। न औषधि सेवन करना चाहते है। शायद किसी तरह उन्हें मना लेंगे।

मुनिवृन्द जाच करवाने के लिये नर्सिंग होम ले गये। जब उन्हे पता चला तो विचलित हो गये। कहने लगे *डाक्टर साहब यह शरीर तो व्याधियों का घर है। अब इसकी क्या जाच और चिकित्सा करेंगे।*

अब तो मुझे ही स्वय का उपचार करना है और स्कैनिंग कराये बिना पौषधशाला पधार गये।

रण बाकुरो धर्मवीरो की जन्म भूमि मेवाड़ के एक छोटे से गाव दाता मे धर्मनिष्ठ श्रावक श्री मोड़ीलालजी पोखरना व धात्री शृगार बाई के प्रागण में आप का जन्म हुआ। आगे चलकर इस छोटे से गाव का स्थान भारत के मानचित्र पर प्रमुखता से जाना जाने लगा।

दाता की सौंधी माटी मे उन्होंने साथियो के साथ बचपन बिताया। उनकी मोहनी, लुभावनी सूरत को देखकर आपका नाम गोवर्धन रखा। कृष्ण क्रीड़ा पुन सजीव हो उठी। परिवार मे सबसे छोटे, लाड़ले होने के कारण प्यार दुलार से नाना (नन्हा) कहने लगे। किसे पता था यह कर्मवीर, धर्मवीर आगे चलकर महावीर के शासन के विशाल सघ का नायक बनकर सर्वोच्च स्थान को गौरवान्वित करेगा।

आप पर अनेक विपत्तिया बाधाए आईं। किशोरावस्था मे ही गृहस्थी का बोझ आ पड़ा। अपना कर्तव्य समझ कर गृहस्थ धर्म का निभाया पर विधि को और ही कुछ मजूर था।

एक दिन आपको जैन मुनि श्री चौथमलजी म सा का प्रवचन सुनने का सुयोग मिला। सुप्त आत्मा जग गई। आवरण हटा। द्वन्द्व ने जन्म लिया। चिन्तन मनन चलने लगा और गुरु की खोज मे घूमते घूमते तत्कालीन युवाचार्य श्री गणेशीलालजी म सा के सम्पर्क मे आये। कहते है जहा चाह होती है वहां राह मिल जाती है।

गुरु चरणो मे ज्ञानोपार्जन करने लगे। मेधावी शिष्य के रूप मे अल्प समय में ही न केवल जैन शास्त्रो का अध्ययन कर लिया अपितु अन्य धर्म ग्रन्थो का भी तुलनात्मक अध्ययन किया।

गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य कर पृथक रूप से विचरने लगे।

साधु सम्मेलन में अधिकाश साधु-साध्वियो ने अपने पद, सम्प्रदायो आदि को त्याग कर एकता के सूत्र में बध गये। श्रमण सघ बना। सर्वानुमति से श्री गणेशीलालजी म सा को उपाचार्य पद से सुशोभित कर श्रमण सघ की बागडोर सौप दी।

अनुशासन प्रिय, जैन सस्कृति के पक्षधर के समक्ष अनेक समस्याए आ खड़ी हुई। छोटी-छोटी बाता को लेकर वादविवाद, पत्राचार। फिर भी आपने सयम, शाति, धैर्य, प्रेम, क्षमा एव उदारता से काम लिया। किन्तु जब स्वच्छदता अपनी पराकाष्ठा पर पहुच गई तो आपने अपने पद का त्याग कर दिया और पृथक् हो गये। आपने सिद्धान्तो के समक्ष कभी समझौता नहीं किया। उस समय मुनि श्री नानालालजी म सा ने अत्यन्त शालीनता एव दृढ़दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा ने उदयपुर मे आपको अपना उत्तराधिकारी बनाया। आपने जिस लगन से गुरु सेवा की वह एक मिसाल बन कर रह गई।

सवत् २०१९ माघ कृष्णा को राजप्रासाद के प्रागण मे हुकम सघ के अष्टम पट्टधर की गौरवशाली धवल शुद्ध खद्दर की चादर धारण कर आचार्य पद को ग्रहण किया।

अब आप स्वतत्र रूप स शिष्य मडली के साथ पदयात्रा द्वारा महावीर वाणी के प्रचार-प्रसार के लिये निकल पड़े। जहा जहा आपके पावन चरण पड़ते, सैकड़ो हजारो की जनमेदिनी आपकी अमृतवाणी सुनने के लिए एकत्रित होने लगी। उनकी हृदयग्राही, मर्मस्पर्शी आत्मोन्नयनकारी, वैराग्यपूर्ण वाणी का सुनकर गद्-गद् हो जाते। सतप्त मानव को सही दिशा मिली। यही कारण है कि आपके द्वारा ३५० के लगभग मुमुक्षु आत्माआ ने आपसे जैन प्रवर्ज्या ग्रहण कर श्री चरणो म अपने को समर्पित कर दिया। अस्सी वर्ष के यशस्वी जीवन काल मे महावीर क शासन की यह एक अभूतपूर्व घटना थी।

आपाधापी, विषमता से घिरे सतप्त मानव आपक सम्पर्क में आने लग। आप चिन्तित हो उठे। एक ऐसा मार्ग, उपाय ढूढने म आप प्रयत्नशील थे जिससे सतप्त, उत्पीड़ित मानव को उबार सके। गहरे चिन्तन के बाद आपने समता-सूत्र, समीक्षण-ध्यान पद्धति जैसा पच-सूत्री, कार्यक्रम दिया। समता क प्रणेता न भिन्न-भिन्न रूप से उसका सर्वव्यापी दिग्दर्शन करवाया। उसका सर्वव्यापी दिग्दर्शन, जीवन साधना और यथार्थ जीवन मे समता के महत्त्वपूर्ण दर्शन को उजागर किया।

गाव गाव, नगर-नगर पद-यात्रा द्वारा प्रतिबोध देते हुए २२ मार्च १९६४ को अपनी शिष्य मडली के साथ मालव की धरती पर आपके चरण पड़े। गुराड़िया ग्राम मे पधारना हुआ। उनकी यह एक ऐतिहासिक यात्रा रही।

आचार्य श्री का प्रवचन समाप्त हुआ। कुछ लाग थोड़ी दूरी पर करबद्ध खड़े हो गये। आचार्य श्री ने उन्ह नजदीक आने का सकेत किया। झिझकते हुए पास पहुचे। कहने लगे अन्नदाता! हमारे धन्य भाग है आप जैसे महान् सत पधारे है। हम पिछड़े हुए है। अशिक्षित है। लोग हमे अछूत समझते है। आप हमारे लिय भगवान के रूप मे पधार है। हमार लिये कुछ करिये।

उनकी दुखद गाथा को सुनकर आचार्य श्री का मन द्रवित हो गया। आपने देखा इन बलाई भील आदि लोगो मे धार्मिक, सामाजिक, सस्कारा का सत्सग का अभाव है। कुव्यसनो, कुरीतियो, रूढ़ियों से ग्रस्त है। उच्च लोगो की उपेक्षा, धर्मांधता क कारण मानवीय गुणो तक से वचित है।

आपने कहा-

तुम दीन और हीन नही हो। तुममे पुरुषार्थ की अनन्त शक्ति भरी पड़ी है। दुर्व्यसना सामाजिक रूढ़िया ने, कुसस्कारा निरक्षरता ने उस शक्ति को दबा रखा है। इन सबको त्यागो वह शक्ति तुम्हारे पास चली आयगी।

प्रभु महावीर ने ऊँच-नीच का भेद, वर्ण व्यवस्था के रूप में कभी स्वीकार नही किया। जन्म स नहीं कर्म से छोटा बड़ा, अच्छा बुरा होता है। आज स तुम गर्व से अपने को धर्मपाल के नाम स सम्बोधित करो। यह चपल क्रान्ति हवा की तरह फैलने लगी। आज सैकड़ा

हजारा धमपाल भाई गव से सुखी जीवन यापन कर रह रह है। अद्भुतारार क मर्सीहा न उन्हें मसाल दिखाकर नये सिर स सफल जीवन जीन की कला सिखाइ। युगयुगान्तर तक समाज उनक इस जनकल्याणकारी क्रान्ति क लिये ऋणी रहेगा।

एकता क लिये बड़ा मे बड़ा त्याग करने का आप तैयार थ। आपक मन म एक पीड़ा थी कि आज जैन समाज अलग-अलग टुकड़ो मे बिखरा हुआ है। समृद्ध हात हुए भी उपेक्षित हैं। सवत्सरी जैसे महापर्व पर भी हम एक नही हा सक।

आपन कहा-'अगर सवत्सरी मनान के बारे मे सपूण जैन समाज की एक मत बन सके ता बड़ी उपलब्धि हा सकगी। सवत्सरी एकता की दृष्टि से अगर हमे अपनी परम्परा भी छोड़नी पड़े तो मै किसी पूर्वाग्रह को आड़े नहीं आने दूगा। सब एक नहीं हो सकते ता भी अगर स्थानकवासी समाज भी एकता क लिये तत्पर हो जाये ता मै तैयार रहूगा।'

श्रावक श्राविकाओ को अम्मा पिया समझते थे। फरमाते थे- आप लाग मेरे सयमी जीवन पालने मे सहयोगी है। कोई बात देख ता सूचित कर। उनकी उदारता, आत्मियता, विनम्रता, सेवाभाव सरलता देखकर मन आत्म विभोर हो जाता था। श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता था। महान् विभूति की निश्चलता देखकर नेत्र सजल हा जाते। जब जब मेरा दर्शन करन का अवसर आया पूछते मेरे लिय कोई सूचना। मै समझता था उनके इस गूढ रहस्य का। प्रत्युत्तर क्या देता। इस महान् योगी की निर्मलता, उदारता देखकर हृदय गद्गद हा जाता।

आपने अनेक धर्मग्रन्थ विभिन्न विषया पर अनक ग्रन्थो का लेखन सपादन किया। आप द्वारा सृजित विपुल साहित्य प्रबुद्ध एव आमपाठक के लिये वरदान सिद्ध हुआ। इसके अतिरिक्त गुजराती मराठी, अग्रजी अदि मे भी आपका साहित्य उपलब्ध है।

प्रबल क्रान्ति के जन्मदाता ने जब अस्सीवे वर्ष म प्रवेश किया ता सब तरफ से अपना ध्यान खींच लिया। युवाचार्य श्री रामलालजी म सा को विशाल सघ का सम्पूर्ण भार देकर निश्चितता से प्रभु के ध्यान मे, भक्ति रस मे आत्मरमण करने लगे। सब तरह स भौतिक देह का मोह त्याग दिया।

२६ अक्टूबर को निकटवर्ती लागा ने देखा स्वय न ही चैतन्य की ओर देखकर महाप्रस्थान के लिये करबद्ध सलेखना ग्रहण कर ली। एक अद्भुत अलौकिक दृश्य था। अपनी गरिमा के अनुरूप चरम लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर लिया। उनकी चेतना और दृढ सकल्प का एक बेमिसाल उदाहरण।

२७ अक्टूबर ९९ को औपचारिक रूप से चतुर्विध सघ, साधु साध्वी, श्रावक श्राविका की साक्षी स सथारा ग्रहण किया जीवन पर्यन्त का (खानपान का पूर्ण त्याग) प्रायश्चित देने वाले ने प्रभु साक्षी से स्वय की आलोयणा प्रायश्चित कर अपनी आत्मा को विशुद्ध निर्मल बना लिया।

२७ अक्टूबर ९९ को रात्रि के १० ४१ पर नश्वर देह का त्यागकर समाधि पूर्वक आपका महाप्रयाण हा गया। एक युग का अन्त हो गया। जैन जगत का सूर्य अस्त हा गया।

हजारो श्रद्धालुभक्तो ने अश्रुपूरित नेत्रो स श्रद्धाजलि अर्पित की। नतमस्तक है ऐसे युगपुरुष के चरणो मे।

इक्कीसवी सदी के शुभारम्भ पर परम प्रतापी हुक्मगच्छ क नवम् पट्टधर स्व आचार्य श्री नानेश के उत्तराधिकारी आचार्य श्री रामलालजी म सा का स्वागत करते है अभिनन्दन करत है। नत मस्तक है। उनका यह विशाल धर्म सघ आपको पाकर धन्य हुआ है।

चैन्नई

❑ भूपराज जैन

साकार दिव्य गौरव विराट

कभी कभी अत्यन्त साधारण सी घटना विशाल और महद् रूप धारण कर लती है। छोटा-सा बीज हवा, रोशनी और जल का सयोग पाकर विशाल वृक्ष के रूप में अनेक का आश्रयदाता बनकर शीतल छाया और मृदु फल प्रदान करता है। साधारण घर में जन्म लेकर कोई नन्हा-सा बालक कब जन-जन का त्राता, अभय प्रदाता महापुरुष बनकर अक्षय कीर्ति का अधिकारी होगा, नही कहा जा सकता।

किसने जाना था कि अब्राहम लिंकन, वाशिंगटन जैसे व्यक्ति अमेरिका के भाग्यविधाता बनेंगे। मोहनदास गाधी महात्मा गाधी के रूप मे विश्व विख्यात होंगे एव गुलामी की जजीरो में जकड़े तीन चौथाई विश्व को अहिसा एव सत्याग्रह के बल पर स्वातत्र्य के प्रकाश से अलोकित करेंगे यह किसी ने सोचा भी नहीं था। उनके सत्य, अहिसा और असहयोग के सामने भीषण परमाणु अस्त्र-शस्त्र भी सर झुका देंगे, यह अकल्पनीय एव अचिन्तनीय था।

चित्तौड़गढ़ जिले क एक छोटे-से ग्राम के साधारण पोखरना परिवार म जन्मा नन्हा-सा गोवर्धन गोकुल के ग्वाल बालो का रक्षक गोवर्धनधारी बनकर तथाकथित दैवीय शक्तियो को ललकार उठेगा यह उस समय कल्पनातीत था। लेकिन एक राजस्थानी कहावत के अनुसार पूत रा पग पालने मे दीखे' को उस गोवर्धन ने बचपन मे चरितार्थ करना प्रारम्भ कर दिया था।

वृद्धावस्था से जर्जरित अशक्त बुढ़िया का घड़ा उठाकर उसके घर तक पहुचा आना यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त था कि परदु खकातरता एव करुणा का एक असीम सागर उसके हृद देश म ठाठे मार रहा है। राजकुमार सिद्धार्थ ने नर ककाल, असहाय वृद्ध और शव को देखकर जन्म मरण के बधन से मुक्त होने का दृढ निश्चय कर लिया था और एक दिन वह महात्मा बुद्ध बनकर सिद्ध बुद्ध परम् पद का अधिकारी बना। छठे आरे की अगाध पीड़ाओ के वर्णन मात्र से विचलित वह गोवर्धन, वह नाना, मुनि नानालाल बनकर स्व पर कल्याण के मार्ग पर चल पड़ा।

एक शिकारी के बाण से आहत क्रौंच पक्षी के करुण रुदन और विलाप ने तमसा नदी के किनारे स्नानरत महर्षि वाल्मीकि के हृदय को व्यथित कर डाला। करुणा विगलित स्वरों मे जो श्लोक उनक कठ से फूटा वह आदिकाव्य का स्रोत बन गया एव महर्षि वाल्मीकि आदि महाकवि बन गये। कविवर पत ने भी कहा है

> वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
> उमड़कर आखो से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान ॥'

महाकवि शैले की यह पक्ति-

Our sweetest songs are those that tell us shadest thought

और छठे आरे के दु खो का वर्णन सुनकर यदि नानालाल मुनि नानालाल बनकर चारित्र चूड़ामणि धर्मपाल प्रतिबोधक, समता दर्शन प्रणेता समीक्षण ध्यान योगी के रूप म जगत वद्य हुए तो प्रकृति की यह वही लीला है जो सिद्धार्थ को महात्मा बुद्ध महर्षि वाल्मीकि को महाकवि वाल्मीकि और मोहनदास गाधी को महात्मा गाधी के रूप

ो प्रतिष्ठापित करती है।

यह संसार अत्यन्त दुःख एवं अत्यन्त सुख से पीड़ित है यदि सुख दुःख और दुःख सुख समान रूप से बंट जाय तो न कोई भूख से मरेगा एवं न कोई वैभव के अजीर्ण से मरेगा। महाकवि पंत ने कहा है-

जग पीड़ित है अति दुःख से, जग पीड़ित है अति सुख से
मानव बंट जाये दुःख सुख और सुख दुःख से।

यदि सुख दुःख और दुःख सुख का सम विभाजन हो जाय तो न कोई दुःखी रहेगा न कोई सुखी। यह अमीरी गरीबी, गरीबी अमीरी ही मनुष्य के सुख दुःख का कारण है व्यसन का उत्स है, रोगों का स्रोत है। छूत अछूत की विभाजन रेखा है। ऊँच-नीच की आधारशिला है। समता निर्झर में अवगाहन से ही इस वैमनस्य और वैमनस्य के कल्मष को धोया जा सकता है अतः आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने 'कि जीवनम्' के प्रश्न का अचूक समाधान समता दर्शन के प्रणयन से किया। यह समता न केवल सिद्धान्त में अपितु व्यवहार में साकार रूप लेकर ही समता समाज की रचना कर सकती है एवं अशान्त तथा उद्भ्रान्त संसार को शान्ति, आरोग्य और समृद्धि प्रदान कर सकती है। जड़ और चेतन की समता प्राणि मात्र ही नहीं सचराचर जगत के लिए अमोघ औषधि है, राम-बाण दवा है। अखण्ड आनन्द की स्रोतस्विनी है।

कामायनीकार जयशंकर प्रसाद कहते है-

'समरस थे जड़ या चेतन,
सुन्दर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती,
आनन्द अखंड घना था।

'आत्मवत् सर्व भूतेषु', सर्व धर्म समभाव के आदर्श नारों से हमारा सारा धर्म दर्शन चीख चीख कर कह रहा है किन्तु वर्ग, वर्ण की दीवारों ने इसे कभी फलित नहीं होने दिया। इससे परिवार एवं समाज ही बार बार नहीं टूटा है अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र अनेक बार क्षत-विक्षत हुआ है एवं गुलामी की जंजीरों से जकड़ा गया है। अतः जब तक समता की इन समस्त शक्तियों का करुणा प्रीति स्नेह और वात्सल्य का समन्वय नहीं होगा, वैषम्य वैर और मदान्धता का सिर हमेशा उठा उठा रहेगा। इस ज्वाला को समता वारि से सींचकर निर्वेद, अक्रोध और कारुण्य में परिणित किया जा सकता है। इसका सयोजन नियोजन समत्व की आत्मशक्ति और आत्मबल से ही सम्भव है।

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त,
विकल बिखरे हों निरूपाय।
समन्वय उसका करे समस्त,
विजयिनी मानवता हो जाय।'

आचार्यवर नानेश सदैव अपने प्रवचनों में इसी समता रस की धारासार पीयूष वर्षा कर जन-जन को आप्लावित एवं आप्यायित करते रहते थे। साधारणजन की इसी पीड़ा, व्यथा, दारिद्र्य एवं अशक्तता ने उनके मन मस्तिष्क को झकझोर दिया था और तभी समता समाज रचना का यह निर्झर उनकी वाणी से प्रस्फुटित हो उठा था।

समता का स्रोत भी मानव मन से तभी प्रवाहित होता है जब मन की गांठें खुलती है। मन की उन गांठों से ही क्रोध, लोभ मोह, मत्सर, द्वेष ईर्ष्या का जन्म होता है और ये गांठें ही भेदभाव ऊंच-नीच और छूत अछूत की दीवार खड़ी कर देता है। अशान्ति, हिंसा आतंक और भय का वातावरण निर्मित होता है अतः मन का निर्ग्रन्थ होना आवश्यक है। आचार्य ने इस मन को निर्ग्रन्थ बनाने के लिए 'समीक्षण ध्यान' की साधना को आवश्यक बताया। इस समीक्षण ध्यान से ही क्रोध, लोभ मोह और कषायों की आग को शान्त कर करुणा शीतलता और सहिष्णुता में परिणत किया जा सकता है।

हम अपने को देखें दृष्टाभाव से और परखें तथा मन को निर्ग्रन्थ बनाकर समत्व की ज्योति जलायें। इसी ज्योति से सबको ज्योतित एवं आलोकित करें। इसी दीप से सभी दीप जल उठेंगे। अज्ञान और वैषम्य का यह सघन तिमिर समीक्षण तथा समता प्रकाश पुंज से तार तार छिन्न विछिन्न हो जायगा, यह निश्चित है।

उन्नत एव प्रशस्त भाल, उपनयना स झाकते करुणा प्लावित दो नयन, आजानुप्रलम्बित भुजाए, ठिगना कद, गजगति एव खद्दर की शुभ्र धवल चादर से आवेष्ठित श्यामल कान्तिपूर्ण देह यदि कुल मिलाकर यही स्थूल रूप है आचार्य नानालाल का, किंतु शिथिलाचार के प्रति उनका दुर्धर्ष सग्राम, कुसस्कारो और कुव्यसना क समूलोच्छेदन का क्रान्तिकारी शखनाद, क्षमा, औदार्य और औदात्य स जगमग उनका अनाग्रही मन प्रबल तथा प्रभूत आत्मबल से परिपूर्ण साधक नानालाल का एक दूसरा रूप हमारे सामने प्रस्तुत करता है। आभ्यन्तर तप और साधना से उर्ज्जस्वित एकता, शुचिता और निर्मलता की मशाल थामे यह अवधूत काल के थपेड़ो से अव्याहत निर्भीक, निर्द्वन्द्व भाव से चलता रहा है, अकेला ही अपने घोषित मार्ग पर अविचल, अडिग।

अवयव की दृढ मास पेशिया,
उर्ज्जस्वित था वीर्य अपार,
स्फीत शिराए स्वस्थ रक्त की,
होता था, जिनमें सचार।

मार्ग के दुर्दम्य परीपहो से अक्लान्त अभग्न एव अभुग्न रहकर अकेले चलते रहने म भी न कभी हारा, न कभी थका वह शान्त, दान्त महर्षि। रामधारी सिह दिनकर की इस पक्ति के ही साकार रूप लगते है-

साकार दिव्य गौरव विराट,
पौरुष के पुजीभूत ज्वाल।
मेरी जननी के हिम किरीट,
मेरे भारत के दिव्य भाल।
मेरे नगपति मेरे विशाल।

जिस बहुआयामी रचनात्मक सग्राम को उन्होंने परिग्रह तजकर पचमहाव्रत धारण कर स्वाध्याय साधना और समत्व से प्रारभ किया था, उस सतत् गतिमान रखने का दायित्व उनके उत्तराधिकारी आगमज्ञ, विद्वद्वर्य आचार्य श्री रामलालजी म सा एव उनके अनुयायियो पर है। जिस शुभ धवल चादर को उन्होंने ओढ़ा था, उस निष्कलक, पाक, साफ चादर को यत्नपूर्वक सौप दी है। उसकी धवलता, शुचिता एव निर्मलता की रक्षा उनक अनुयायिया को करनी है। उनके लिए तो यही कहा जा सकता है-

आरभ परिग्रह तजिकरि, पचमहाव्रत धार।
अन्त समय आलोचना, कियो सथारो सार॥

सथारा सलेखनापूर्वक आचार्यवर ने यह लोक छोड़कर महाप्रयाण किया, उनकी कालजयी यात्रा का यह तेजोमय समापन है।

व्यसन मुक्ति के सदुपदेश स सहस्त्र, सहस्त्र लोगा को सात्विक अहिंसक जीवन जीने की प्रेरणा देकर लक्ष-लक्ष जीवो की रक्षा के एक ऐसे क्रान्तिकारी इतिहास की रचना उन्होंने की है, जो काल के भाल पर लिखा अमिट लेख है। डा नेमीचन्द जैन के शब्दा म यह घटना मानवता के मस्तक को कुकुम रोली के तिलक से विभुषित करती है। व्यसन मुक्ति अभियान की इस अमिय धार से सतप्त, त्रस्त, पीड़ित, व्यथित, मानवता आपाद मस्त सतृप्त और शीतल हुई है।

ऐसे अनासक्त, स्थितप्रज्ञ, महतो महीयान ध्यान योगी, अप्रमत साधक आचार्यवर का मेरी अशेष प्रणति एव भावोच्छवसित भूयसी श्रद्धाजलि।

-कलकत्ता

✿

धर्मपाल प्रतिबोधक

भारत अर्थात् विश्व को प्रकाशमान ज्ञानवान और उर्जावान करने के अनन्त, अनथक प्रयास को समर्पित राष्ट्र। विश्व बन्धुत्व की सर्वप्रथम और हार्दिक घोषणा भारत और भारतीय ही कर सके। प्रकृति मे प्रथम मानव ने भारत की धरती पर जन्म लिया और उस शिशु ने उदित होते सूर्य के दर्शन किये और उस मनु की सन्तति प्रकाश की आराधना हेतु समर्पित हो गई। विश्व में मनुज मात्र मनु की सन्तति होने से परस्पर भाई है और इसीलिये 'विश्व बंधुत्व' की, 'सर्वे भवन्तु सुखिन की तथा तमसो मा ज्योतिर्गमय' की घोषणा भारतीय मनीषा कर सकी।

इस प्रकार की उदात्त-वसुधैव कुटुम्बकम् की भाव धारा में ही समतामय समाज रचना संभव हो सकती है और जगती के तल पर सर्वप्रथम समता समाज ने भारत मे आकार ग्रहण किया। युग युग तक भारत का समता समाज विश्व का आदर्श बना रहा किन्तु शनै शनै विकृतियो ने समाज व्यवस्था मे प्रवेश किया और योगेश्वर कृष्ण की 'चातुर्वर्ण्य मया सृष्टि गुण कर्म विभाग श ' की घोषणा अथवा भगवान महावीर की- कम्मुणा बम्भुणो होई कम्मुणा होई खत्तिया की उद्घोषणा का अतिक्रमण करते हुए जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था ने विषमता के विष बीज का वपन कर दिया। परिणाम स्वरूप एकरस समाज अनेकानेक वर्गों में विभक्त हो गया। 'कोढ मे खाज और आग मे घी' की कहावत को चरितार्थ करते भीषण, दुर्दान्त विदेशी आक्रमणकारियो ने समाज मे विषमता का बढ़ावा दिया और हमारा प्रिय देश अस्पृश्यता के दावानल मे घिर कर सन्तप्त हो गया।

समाज के शिखर पुरुषो ने, मनीषियो ने इस सामाजिक विघटन की रोक-थाम के समय समय पर गंभीर प्रयत्न किये, उनके कुछ सकारात्मक परिणाम भी दिखाई दिये किन्तु विस्तृत भूभाग मे विस्तीर्ण विराट समाज के अन्त्यज वर्ग मे चेतना की ज्योति अपेक्षित रूप में जग नही पाई।

जैन शासन के ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा ने खादी, स्वदेशी और अछूतोद्धार के मत्र का उद्घोष किया। उनके सुशिष्य शात क्रांति के दाता श्री गणेशाचार्य जी दृढ अनुशास्ता थे और उन्होंने अपने उत्तराधिकारी समता विभूति आचार्य श्री नानेश के अतर्हृदय में उस ज्ञान दीप की स्थापना की जो समाज की समस्याओ को समाधान का पथ निर्देश कर सके।

एक सरल सहज, सौम्य, प्राकृतिक, ग्रामीण परिवेश मे जन्मे और पले श्री नानालालजी मे समाज की समस्याओ को पहिचानने की अद्भुत क्षमता थी। गुरु का पारस स्पर्श पाकर शात जीवन अपना कर वे स्वयं पारस बन गए थे और इसीलिये अपने प्रथम रतलाम चातुर्मास के बाद मालव धरती पर विहार विचरण करते हुए समाज के अस्पृश्य कहे जाने वाले बन्धुओ की दुर्दशा देखकर उनका करुणापूरित मन द्रवित हो उठा।

'सहानुभूति चाहिये, महाविभूति है यही - की कवि वाणी सार्थक हो उठी। सहानुभूति शब्द का प्रयोग सहजता से होता है किन्तु सचमुच सह-अनुभूति होना दुर्लभ है। श्री राम कृष्ण देव ने देखा कि एक धोबी अपने गधे को निर्ममता से मार रहा है। वे सहानुभूति के भाव मे भर कर चीत्कार कर उठे। श्री रामकृष्णदेव की पीठ पर साटी के गहरे गहरे निशान उभर आए थे। ऐसी होती है सहानुभूति तब वह महाविभूति बन जाती है।

आचार्य श्री नानेश भी इसी प्रकार की सहानुभूति से द्रवित हो महाविभूति बन गए। उन्होंने बलाई कहे जाने वाले दलितों को व्यसन मुक्त होकर, सत्सस्कारा को अपना कर सर्वप्रथम अपना आचरण सुधारने की प्रेरणा दी। 'अप्प दीपो भव' के प्रशस्त पथ पर उन बलाई जना को आरूढ कर दिया। फलत स्वत व उन्नति करते चल गये और समाज भी उन्मुक्त मन से बाहें फैला कर उनसे भेटने को आतुर हो उठा।

आचार्य श्री नानेश न बलाई जन समूह को उपदेश देकर 'धर्मपाल' की सज्ञा प्रदान की। बलाई क काले टीके के स्थान पर 'धर्मपाल' का स्वर्णतिलक अकित किया। साथ ही अपने सम्पूर्ण अनुयायी वर्ग को भी इन दलित बाधवो के उत्थान मे जुटने की प्रेरणा दी।

यही था आचार्य श्री नानेश का अद्भुत शिल्प विधान। सर्वप्रथम दलित स्वय उत्कर्ष हेतु सकल्पित होकर सस्कार पथ पर अग्रसर हो और साथ ही साथ अग्रज सस्कारित, समर्थ, समृद्ध समाज चपट कर आगे बढे और अपने पिछड़े भाई को बाहो मे भरकर हृदय से लगा ल। इस स्पर्श की पुलक, हृदयो की ये धड़कने राम भरत मिलाप की भाति समस्त सन्देहो को समाप्त कर अजस्र प्रेम की अश्रुधारा मे समस्त अस्पृश्यताओ को धो डालने मे समर्थ होगी आचार्य श्री का यह भविष्य दर्शन शत प्रतिशत खरा उतरा।

वे सचमुच अद्भुत शिल्पी, अद्भुत कर्मयोगी, अद्भुत प्रेरणाकुज और मानव मनोविज्ञान के निष्णात ज्ञाता अद्भुत समत्व योगी थे। उनमें अपनी शक्तिया को विराट समाज म सक्रात और सवितरित कर दने की अद्भुत सामर्थ्य थी और इसी सामर्थ्य न धर्मपाल समाज रचना क रूप मे विश्व के धर्मों की इतिहास कथा में एक उज्ज्वल अध्याय का सृजन किया।

धर्मपालो के उत्साह और सघ के आनन्द सागर का दर्शन करक मै भी कृतार्थ हुआ हू। आचाय श्री नानेश गजब के सगठन कर्ता थे। उनक नेतृत्व मे चतुर्विध सघ में अपार उत्साह की लहरे प्रतिपल हिलोरें लिया करती थी। उत्साह क इस महासागर का नियोजित करने की तमन्ना लिए श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ रूपी सार्थवाह को सचमुच धर्मपाल बनान क असभव कार्य को सभव बनाने हेतु प्रेरित किया और फिर चला तूफानी प्रवासो और सम्मेलनो का वह दौर जिसने दो को मिलाकर एक कर दिया द्वैध को समाप्त कर एकात्म स्थापित कर दिया। सस्कार क्रान्ति की वह शात धारा ऐसी बही कि धर्मपाल क्षेत्र में धार्मिक सस्कार पाठशालाओ का जाल बिछ गया, धर्मपाल युवक-युवतिया के, आबाल-वृद्ध क सस्कार शिविरो की बाढ आ गई, चिकित्सा सेवाओ, धर्मपाल छात्रावास की स्थापना तथा समता भवनो के निमाण ने धर्मपाल प्रवृति के पावो मे अगद सा सामर्थ्य भर दिया। धर्मपाल पदयात्राओ ने इन पावा म पख लगा दिये।

इस प्रकार आचार्य श्री नानेश ने पतन के पाताल मे पड़े धर्मपालो को बाल हनुमान की तरह उछल कर आकाश म स्थित सूर्य (चरम विकास) को छूने की प्रेरणा और सामर्थ्य प्रदान की तो समृद्धि के शिखर पर बैठे जैन समाज को पाताल की परतो में उतर कर अपने स्वधर्मी बन्धुआ को हृदय से लगाने की प्रेरणा दी। वस्तुत ये दानो ही कार्य असभव थे किन्तु आचार्य-प्रवर के अतिशय ने इस असभव को सभव कर दिखाया।

पश्चिम बगाल क पूर्व उपमुख्यमत्री और प्रसिद्ध विचारक श्री विजयसिंह जी नाहर न धर्मपाल क्षेत्र म प्रथम सस्कार निर्माण धर्म जागरण और व्यसन मुक्ति पदयात्रा में धर्मपाल प्रवृति के विषय मे कहा था कि - यह भारत के धर्मों के इतिहास म अभूतपूर्व है।' सघ न कालान्तर म धर्मपाल क्राति को सम्पूर्ण ग्राम क रूपान्तरण का आधार बनाने म अकल्पनीय सफलता प्राप्त कर, व्यक्ति और ग्राम निर्माण के स्वप्न का साकार किया। मालवा क्षेत्र म धर्मपाल समाज रचना और समता समाज रचना के प्रयोग साथ साथ चल और सफल हुए।

भारत की आज की स्थिति में धर्मपाल समाज रचना का यह सफल प्रयोग धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानेश का अक्षय कीर्ति स्तभ है। धर्मपाल प्रतिबोधक [illegible] समता दर्शन प्रणेता आचार्य श्री नानेश अमर है।

इस महान् प्रयोग के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और समरसता मूलक प्रभावों का अर्थात् बहुआयामी प्रभावों का सम्यक् मूल्यांकन अभी शेष है। ज्यों ज्यों इन दिशाओं में शोध कार्य होगा आचार्य श्री नानेश के अशेष यश की सुवास परिव्याप्त होकर सम्पूर्ण विश्व को आवेष्टित और सुवासित करेगी।

उन कालजयी धर्मपाल प्रतिबोधक, सद्गुण विभूति आचार्य श्री नानेश को मेरी अनन्त श्रद्धाञ्जलि।

-ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर

नानेश गुणाष्टक

वनिता/विमल जैन

१ जिनकी साधना शक्ति आगे,
नत है अखिल जमाना।
समता सुमेरू नाना गुरु की
गुरिकल महिमा गाना॥

२ नाम है नाना काम महाना,
जिनका जग के अन्दर।
उज्ज्वल यशो गाथा से गूंजे,
कण-कण अवनि अम्बर॥

३ सौम्य सुधाकर तेज दिवाकर,
महादेव थे दूजे।
जिनके पावन पद पंकज को
भक्ति भाव से पूजें॥

४ शान्त दान्त गुणी थे,
त्रिलक्षण शास्त्रवेत्ता।
दुनिया को दुर्लभ है मिलना,
ऐसा गुण सम्पन्न नेता॥

५ अपना या पराया है यह,
भेद नहीं था मन में।
राजा रंक फकीर सभी थे,
सम उनके जीवन में॥

६ वचनामृत की छवि अनोखी,
बने पथ अविनाशी।
चातक चकोर पपीया जैसी,
दुनिया दर्शन प्यासी॥

७ यह आस्था का अर्घ्य मेरा
स्वीकारो गुरु भगवन।
श्वास श्वास सदा करेगा,
भक्ति भरा श्रद्धा अर्चन॥

८ समता दर्शन के प्राण,
समता सिद्धांत दिया था।
दुष्कर्मी दानव थे जो,
देव उन्हें बनाया था॥

-गौरव पथ

□ उदय नागोरी
एम ए (दर्शन), जै सि प्रभाकर

अनन्य आत्मसाधना के साकार स्वरूप

वर्तमान सहस्त्राब्दी के सशक्त हस्ताक्षर, चिन्तन-योग-अध्यात्म को नव आयाम प्रदान करने वाले अभूतपूर्व धर्मप्रभावक आचार्य श्री नानेश अनुपम आत्म शक्ति के धारक रूप मे समादृत रहे है। आचार की दृढता, विचार की उदात्तता एव व्यवहार की सहजता समन्वित आपके विशिष्ट व्यक्तित्व से सयम, तप प्रज्ञा, चारित्र, कारुण्य, वात्सल्य का सतत अमिय-वर्षण होता रहता था, जिसमे अवगाहन कर जन-जन ने धर्माभिमुख होकर अपनी चेतना का उर्ध्वारोहण किया। वस्तुत उत्कृष्ट आत्म साधना, यथार्थ तपाराधना एव विशद ज्ञानाराधना द्वारा आचार्य श्री जी दिव्य आत्मदीप (अप्प दीवो) बन गये थे जिन्होंने अगणित भव्यात्माओ को ज्ञानालोक से प्रकाशित कर स्वय को चतुष्मगल (धम्मो मगल मुकिट्ठ) के प्रतीक रूप में प्रतिष्ठित किया। शाश्वत जीवन मूल्यों को युगीन चेतना/चिन्तन से सम्पृक्त करने की अप्रतिम क्षमता, गहन अनुभूति अध्यात्म योग, समीक्षण ध्यान एव तलस्पर्शी अध्ययन के अनन्तर अभिव्यक्ति/ उद्बोधन की सरलता से आपने सुषुप्त साधको को सयम-साधना के राजमार्ग मे अग्रसर होने के लिए सम्यक् राह दिखाई तो श्रद्धालुजनो को आत्मा से जुड़ने का सन्देश भी दिया।

लोकैषणा आकाक्षा/अपेक्षा, पद प्रतिष्ठा से अलिप्त इस अनूठे महासाधक ने देहव्यापी प्रयोगशाला में अथक प्रयोग कर चिन्तन की जो मुक्ता मणिया हस्तगत की उनका सार यही है कि हम बहिर्मुखी गति को परिवर्तित कर केन्द्र मे/आत्मा मे अवस्थित हो भेद-विज्ञान की अनुभूति द्वारा पर पदार्थों से ध्यान हटाए और आत्म साक्षात्कार करले तो पाएगे कि चिरन्तन सुख/आनन्द का अक्षुण्ण भण्डार हमारे भीतर विद्यमान है। आवश्यकता है आत्म ज्योति के प्राकट्य की एव चेतना को विकसित कर परमात्म-पथ मे आगे बढ़ने की। इसका प्रथम सोपान है- अनेक नहीं एक को जाने (जे एग जाणइ से सव्व जाणइ) अर्थात् अपनी आत्मा को जान तथा भीतर को जान कर बाहर को जाने। (जे अज्झत्थ जाणइ, से बहिया जाणइ)। आत्मलक्षी साधना के पुरोधा लोकसंत ने अपने प्रवचनो मे कर्म चारित्र्य आत्मा परमात्मा, समता, शान्ति, धर्म आदि की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया कि स्थूल चेतना द्वारा सूक्ष्म चेतना में प्रवेश करने का ही नाम है स्व-भाव मे रमण करना। यही है आत्म समीक्षण एव समीक्षण ध्यान साधना।

आत्मसाधना के शिखर तक आरोहण करना ही गुरुदेव का लक्ष्य रहा और साधन थे सयम सारल्य एव सजगता। एतदर्थ अध्यात्म गगन के भास्कर ने चित्त की निर्मलता विचारो की विराटता, कषायो की कृशता एव चिन्तन की सूक्ष्मता को मूलाधार मानकर अनवरत मौन साधना, अहर्निश ज्ञानाराधना व उत्कृष्ट समाधि योग द्वारा आत्मस्थ होने के लिए जो आत्मयोग प्रस्तुत किया वह स्तुत्य एव स्पृहणीय है। चेतना के उन्नयन हेतु वे स्वय अन्तिम समय तक विविध प्रयोग करते रहे और अपनी सन्निधि मे आने वालो को विभाव से स्वभाव में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देते रहे। परिणामस्वरूप आपकी तेजस्विता ज्ञान गरिमा एव चारित्रिक ऊर्जा अनेक साधको की प्रेरक बनी। साधना विकसित आत्मशक्ति, ओजस्वी आभामडल अखण्ड बाल ब्रह्मचर्य पालन एव भव्यता के प्रतिरूप व मार्गदर्शी युगाचार्य, युगान्तरकारी विरल विभूति एव परम यशस्वी/ प्रतापी/ अतिशयधारी आचार्य तो वे ही एक [illegible] इतिहास पुरुष व गरिमा मण्डित नर पुगव भी। जहा आपने सार्वभौमिक शान्ति हेतु समता दर्शन का अमोघ साधन प्रदान किया वहीं तनाव मुक्ति व चित्त शुद्धि हेतु समीक्षण ध्यान की अनूठी देन से आत्म [illegible] [illegible]

मनोवैज्ञानिक एव विलक्षण आत्मसाधक भी बन गये ।

आपकी आत्मसाधना विधि जटिल नही वरन् अत्यन्त सरल है । बहिरात्मा से अन्तरआत्मा एव परमात्मा की यात्रा का पथ है अपनी अन्तर्गुहा म प्रवेश कर आत्मा तथा कषायो की समीक्षा करना । बाहर क अधकार को प्रकाश मे परिवर्तित करना और स्वय से जुड़कर सुखाभास से आत्मिक सुख का प्राप्त करना । वस्तुत कषायो क आवरण ही आत्मा के प्रकाश को आच्छादित करते है अत आवश्यक है कर्म बीज रूपी कषायो (रागो य दोसो, दोउ कम्म बीआ) का क्षय करना और यह तभी सम्भव है कि हम इनकी समीक्षा करते हुए आत्मा का जाने पहचाने और अमृत-योग की साधना म प्रवृत्त हो । इस अन्तर्मुखी साधना के दौरान आत्म विश्लेषण, स्व-बोध व आत्म समीक्षण द्वारा जब आत्म साक्षात्कार होता है तो हम जुड़ जाते है शाश्वत सुख व चिरन्तन आनन्द से । अह के विगलन, क्रोध क दमन एव लोभ के शमन से भौतिक सुखो/स्थैतिक दु खो का न कोई अर्थ रह जाता, न अस्तित्व ही । बस अपेक्षित है भारड पक्षी की भाति अप्रमत्त रह कर (भारड पक्खीव चेर अपमत्ते) आत्मा मे स्थित हो जाना अर्थात् देहस्थ रहते हुए भी देहातीत साधना में प्रवृत्त होना ।

अन्तर-प्रवेश कर आत्म साक्षात्कार की कला आपने किशोरावस्था मे ही जान ली थी । आप जब भादसोड़ा से लौट रहे थे उनके मन मे मवाड़ी मुनि श्री चौथमलजी म सा द्वारा सुने गये प्रवचन के शब्द झकृत हो रहे थे । आत्म कर्तृत्व/भावतत्व (अप्पा कत्ता विकत्ता य) आत्म एकत्व (एगे आया), आत्म तुल्यता (आय तुल पयासु) तथा आत्म सघर्ष (अप्पाण मेव जुज्झई) क सूत्र जानकर उनमे विरक्ति क भाव जागृत हो गये थे । मुक्ताकाश सुरम्य प्राकृतिक छटा एव नीरव एकान्त म अश्वारोही गोरधन जैसे स्वप्नलोक म खो गया और रम गया आत्म सरोवर की गहनता मे । बीज रूप में पैठ गइ थी उनके हृदय में समता भद दृष्टि, जीव अजीव की विराटता एव आत्मा की सामर्थ्य । उनका हृदय तड़फ उठा जब उन्होंने जानी छट्ठे आरे की स्थिति और मनुष्य जीवन की दुर्लभता तथा निश्चय कर लिया सान्त दर्शन से अणगार धर्म अगीकृत करने/अणुव्रतो की पगडडी स महाव्रतो के राजमार्ग में अग्रसर होकर आत्मचिन्तन करने का । व्यवहार के धरातल पर बीज मे अदृष्ट श्रद्धा/ सवेदना/प्रभावना को जानना तथा स्थूल/व्यक्त/अव्यक्त की ओर बढ़ने का प्रथम सोपान ही मूलाधार बना गुरुदेव की अखड आत्मसाधना अपूर्व ध्यान योग एव परमात्म दर्शन की उचाइया । कालातर में मुनि युवाचार्य एव आचार्य की यात्रा मे उनका लक्ष्य रहा आत्मदर्शन व उपलब्धि रही नव आयामी अध्यात्म योग की । वे स्वय जागे और लाखो को जगाया तथा जिस आलोक को प्राप्त किया उसे मुक्तहस्त से लुटाया प्राणिमात्र का ।

अपने उद्बोधनो में आपने सदैव इसी पर जोर दिया कि हम आवृत्त/सुषुप्त/सूक्ष्म आत्मशक्ति को देखे/ पहचाने/ स्वभाव रमण करे और ममत्व विसर्जन करे । आत्म विसर्जन करे तो आत्म विशुद्धि सुनिश्चित है । अनन्त, अविनाशी, चिरन्तन आत्म शक्ति के प्राकट्य हेतु देह शक्ति से आगे बढ़ना ध्येय है तो साधन है-विषयो को गलाना कषायो को न्यून करना, पर/ विनाशी तत्वो से ध्यान हटाना एव आत्मा में स्थित/ अवस्थित होना ।

इस शाश्वत सत्य स साक्षात्कार कर आपने इसे जीवन/व्यवहार में भी उतारा । सघ/शासन के सचालन/ सातत्य हेतु यथावसर लिए गए आपके निर्णय आत्मशक्ति प्रेरित व आत्म प्रेरणा आधारित रहे और किसी आग्रह/कदाग्रह/पूर्वाग्रह को स्वय पर हावी नहीं होने दिया । सहवर्ती सत मुनिराजो/स्थानीय सघ पदाधिकारियो को यह ज्ञात नहीं हो पाता कि कल किधर व कब विहार होगा । अन्तर आत्मा से जो सकेत होता तदनुसार ही क्रियान्विति होती । आपके लिए तो जीवन एक सुदीर्घ यात्रा रही पड़ाव नहीं अत शिष्यो को स्पष्ट निर्देश थे कि बस तैयार रहो क्योंकि आदेश है कि [illegible] उसी ओर बढ़ा देना है ।

ऐसे दृढ निश्चयी, अनन्त आत्मधन धारी अपराजेय अन्तर आत्मा सचालित अध्यात्म योगी

रत्नत्रय आराधक का व्यक्तित्व अप्रतिहत एव साधना-तपाराधना-चिन्तन-धमाराधना का दुर्लभ सौम्य रूप था और जीवन म अरुणोदय से स्वणिम सध्या तक ज्योतित रहा । दिव्यता युक्त आदर्श निर्ग्रन्थ दूरदर्शी दार्शनिक एव जीवन्त दर्शन समन्वित इनके जीवन-दर्शन स अनक आत्माओ का आत्मप्रकाश प्राप्त हुआ और आपके प्रज्ञा-सुमेरु रूप आत्मलोक से प्रभावित/आलोकित होकर जन जन की चेतना स्पदित हुई । आपस प्रेरित होकर आपक लाखा अनुयायी धर्म को जीवन से जोड़ने हेतु सकल्पित हुए, जो एक विशिष्ट उपलब्धि है ।

सयम-साधना क कीर्तिस्तम्भ, विचक्षण प्रतिमा के धनी, विरल विभूति पारगामी प्रज्ञापुरुष, अध्यात्म-साधना के आदर्श आचार्य श्री नानेश अपने साध्यकाल में देहातीत आत्मसाधना में लीन रह व सलेखना सथारा पूर्वक मरण का वरण कर उन्होंने अतिम मनारथ हस्तगत कर लिया । उनकी शिक्षाआ का सार यही है कि हम जीवन का कुशाग्र पर ठहरी ओसबिन्दु क समान अस्थिर (कुसग्गे जह ओस बिन्दुए) मान कर क्षण मात्र भी प्रमाद न करे (समय गोयम मा पमायए) और बाहर से भीतर प्रवश करते हुए जीवन के परमानन्द व चरम लक्ष्य की ओर पथारूढ़ रह । अन्तरपथ के यात्री' को यही वास्तविक श्रद्धाजलि है ।

-कार्यालय सचिव, श्री अ भा सा जैन सघ बीकानेर

तेरे पदरज की सेव

वै इन्द्रा गुलगुलिया

द्युम क्षितिज पर थे प्रतिभासित
समताधन करुणामय देव
आज कहा हम कर पाएगे
तेरे पदरज की है सेव ॥

निर्मल निश्चलता का झरना
बहता था प्रतिपल सुस्वरूप
आज अस्त तुम हुए कहा हो
हे दिनकर ज्योतिर्मय रूप ॥

दिशा दिखाई सदा शिव की
की सुखद जीवन की राह
द्वन्द्व भाव के परित्याग की
रही हृदय मे गुणकर चाह ॥

जिन शासन के सवर्धन का
रहा आप मे था मन्तव्य
हमे दिखा दो आओ गुरुवर
शान्त भाव का शुभ गन्तव्य ॥

इन्दु से थे शीतल साधक
भ[illegible] [illegible] मे थे तुम [illegible]
तुम्हें खींचकर कहा ले गया
दुर्दित दल करके यह पाप ॥

❑ इन्दरचन्द बैद
सम्पादक समता सौरभ

चारित्र चूड़ामणि

राजस्थान के दाता गाव की धरती धन्य है, जिसने भारत तथ समस्त विश्व को आचार्य नानेश जैसा धर्मरत्न प्रदान किया। ऐसे महान सत सदियो म यदा कदा ही अवतरित होते हैं। अध्यात्म जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र, जैन जगत के सूर्य, मानव जाति के प्राण, चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री नानालाल जी म सा, अतिशयी व्यक्तित्व के धनी थे। विरल ही होती है ऐसी महान आत्माएँ जो गगन मडल मे सितारो की भाति चमककर अपनी दीप्ति म संसार को आलोकित करती हैं। उनका दिव्य व्यक्तित्व, उज्ज्वल चरित्र, अप्रतिम जीवनशैली तथा प्रखर साधना पद्धति युगो-युगो तक लोगो का मार्गदर्शन करती रहेगी।

आचार्य नानेश का बाह्य जीवन जितना गौरवशाली था उससे कहीं अधिक गरिमामयी थी उनकी अतर्वृत्ति। उनके चुम्बकीय एव प्रभावान व्यक्तित्व मे आकाश की सी विशालता पृथ्वी की क्षमाशीलता और समुद्र जैसी गभीरता समायी हुई थी जिसकी परिधि म प्रवेश मात्र से ही भावो मे मगल परिवर्तन प्रारभ हो जाता था और आत्मा अनायास ही दिव्य साधना के मार्ग की पथिक बन जाती थी। वे केवल सत साधक ही नहीं थे, वरन् मानव समाज के सजग प्रहरी तथा अनुपम युग द्रष्टा भी थे। विचार और आचार की एकरूपता उनके जीवन की ऐसी विशेषता थी कि जो किसी को सहज ही पूज्य बना देती है।

हम ज्ञात है कि विचार और आचार एक दूसरे के पूरक ही नही परस्पर सबद्ध एव आबद्ध भी होते हैं। यदि किसी आचार के पीछे उसे सबल और स्थैर्य देने वाला कोई सम्प्रेरक विचार नही हो तो वह उत्तम होकर भी प्रभावहीन होता है। विचार की उत्कृष्टता अथवा निकृष्टता का प्रभाव आचार पर अवश्य ही पड़ता है। आचार की उत्तमता का परिचय उसके पृष्ठगत विचार से होता है। विचार और आचार मिलकर जीवन एव चरित्र का निर्माण करते हैं। महापुरुषो के चरित्र प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सभी के लिए अनत हितकारी एव प्रेरणादायी होते हैं। आचार्य नानेश तो चारित्र चूड़ामणि की लौकिक उपाधि से सुशोभित थे। सहज ही दी गई इस सज्ञा का विश्लेषण शब्दो मे करना न उचित है, न सरल ही। आचार्य नानेश की चारित्रिक विशेषताए तो इतनी बहुमुखी थीं कि उनको एक सूत्र म गूथ पाना सभव ही नहीं है। फिर भी उनम से कतिपय प्रमुख विशेषताओ का दिग्दर्शन तो कराया ही जा सकता है।

कल्पना कीजिये एक ऐसे व्यक्ति की कि जिसका हृदय कुसुम कोमल स्फटिक सम निर्मल गगाजल सम पवित्र परतु वज्र सम कठोर हो जो जीवमात्र के प्रति करुणापूरित हो स्नेहसिक्त और उदार हो जिसकी बुद्धि और वाणी निर्मल हो जिसका प्रभाव उन सभी आत्माओ के लिए पावनकारी हो जो उसके आभा मडल मे प्रवेश करने को उत्सुक हो, जो सयम साधना धर्माचरण एव अनुशासन पालना म वज्र सम कठोर हो और कल्पना कीजिए उस व्यक्ति से जो नानालाल था परतु वह आचार्य नानेश बन गया। इन्हीं विशेषताओ के कारण आचार्यश्री युग प्रधान सत बन गये। वह सत दूसरो के कष्ट स्वय उठाकर दूसरो को सुख देना चाहता था कठोर वचनो का मधुर वचनो तथा कटु व्यवहार का मृदुल व्यवहार से उत्तर देना जिसका स्वभाव था। विकट परिस्थितियो कठोर शब्दों और समस्याओ के भवजाल म फसकर भी जो धीर गभीर और शात रह सकता था तथा सदा अनवरत सुख-दुख

सम्मान-अपमान, प्रशसा-निन्दा आदि मे समभाव बनाये रख सकता था। यही कारण था कि वह समता के दर्शन का प्रतिपादन कर सका। उसके व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत कर सका तथा अतर और बाह्य की तटस्थ भाव से समीक्षा कर समीक्षण ध्यान-साधना का मार्ग दिखा सका।

ऐसे महापुरुष के महाप्रयाण को जो सयम और चारित्र म सदा दृढ़ रहा हो, ज्ञानीजन महोत्सव ही मानते हैं, शोक का विषय नही। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखा भी है-

जो इद्रियो को जीत कर धर्माचरण मे लीन है,
उनके मरण का सोच क्या, वो मुक्त बधनहीन है।
जो धर्मपालन मे विमुख, जिसको विषय ही योग्य है,
ससार मे मरना उसी का, सोचने के योग्य है॥

आचार्य श्री नानेश का सपूर्ण जीवन ऐसे ही उज्ज्वल चरित्र का दिग्दर्शन कराता रहा। उन्होने जीवन भर धर्म के मार्ग का तो आलोकित किया ही सघ के हित-साधन मे भी कोई कमी नही छोड़ी। ऐसी दिव्य विभूति को आचार्य के रूप मे प्राप्त कर चतुर्विध सघ तो धन्य हुआ ही, सपूर्ण समाज भी गौरवान्वित हुआ। अब अपने निर्वाण के बाद वे उन सिद्ध सतो की उस गौरवशाली परपरा मे सम्मिलित हो गये हैं जो अदृश्य रहकर भी समाज का मार्गदर्शन करती रहती हैं। अपने चरित्र और अपनी साधना के बल पर ही आचार्य नानेश ने यह दिव्य स्थान प्राप्त किया है और इस रूप मे वे निश्चय ही अमर हो गये हैं।

- देशनोक

महा-प्रयाण

भगवन्त राव गाजरे

कार्तिक कृष्णा तृतीया को, सत्ताईस अक्टूबर आया।
आचार्य नानेश ने ले संथारा, छोड़ी अपनी भौतिक काया॥

श्रमण संघ के महानायक वे, राष्ट्र संत आचार्य प्रवर।
श्रमण संस्कृति पालक पोषक, जन-जन के थे गुरु प्रवर॥

शक्ति-भक्ति का मद दाता, उनको जन्म दे धन्य हुआ।
वर्ग-वर्ण से ऊपर उठकर, जन-जन भी कृतज्ञ हुआ॥

महावीर के संदेशों की, घर-घर अलख जगाई नित ही।
जय जिनेन्द्र का मंत्र देकर, दिव्य संदेश सुनाए नित ही॥

संयम, सेवा, त्याग, तपस्या, क्षमा, दया का बहा प्रवाह।
वाणी से अमृत झरता था सूत्रों में ही सदा प्रवाह॥

सरिता बही सत्य-अहिंसा, जन मन ने भी लाभ उठाया।
अंतिम क्षण तक गरिमा रख ली सार्थक सफल जीवन पाया॥

निर्मल ज्ञान प्रसाद से अब तक, मेटा जन का जीवन क्रन्दन।
दिया प्रेरित जीवन पथ में, उनको शत शत मेरा वन्दन॥

निम्बाहेड़ा

□ इन्दरचन्द बैद
सम्पादक-समता सौरभ

चारित्र चूड़ामणि

राजस्थान के दाता गाव की धरती धन्य है, जिसने भारत तथ समस्त विश्व को आचार्य नानेश जैसा धर्मरत्न प्रदान किया। ऐसे महान सत सदियो मे यदा-कदा ही अवतरित होते हैं। अध्यात्म जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र जैन जगत के सूर्य मानव जाति के प्राण, चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री नानालाल जी म सा , अतिशयी व्यक्तित्व के धनी थे। विरल ही होती है ऐसी महान आत्माएँ जो गगन मडल मे सितारो की भाति चमककर अपनी दीप्ति से ससार का आलोकित करती हैं। उनका दिव्य व्यक्तित्व उज्ज्वल चरित्र, अप्रतिम जीवनशैली तथा प्रखर साधना पद्धति युगो-युगा तक लोगा का मार्गदर्शन करती रहेगी।

आचार्य नानेश का बाह्य जीवन जितना गौरवशाली था उससे कहीं अधिक गरिमामयी थी उनकी अतवृत्ति। उनके चुम्बकीय एव प्रभावान व्यक्तित्व मे आकाश की सी विशालता, पृथ्वी की क्षमाशीलता और समुद्र जैसी गभीरता समायी हुई थी जिसकी परिधि मे प्रवेश मात्र से ही भावो मे मगल परिवर्तन प्रारभ हो जाता था, और आत्मा अनायास ही दिव्य साधना के मार्ग की पथिक बन आती थी। वे केवल सत साधक ही नही थे, वरन् मानव समाज के सजग प्रहरी तथा अनुपम युग-द्रष्टा भी थे। विचार और आचार की एकरूपता उनके जीवन की ऐसी विशेपता थी कि जो किसी का सहज ही पूज्य बना देती है।

हमे ज्ञात है कि विचार और आचार एक दूसरे के पूरक ही नही परस्पर सबद्ध एव आबद्ध भी होते हैं। यदि किसी आचार के पीछे उसे सबल और स्थैर्य देने वाला कोई सम्प्रेरक विचार नही हो तो वह उत्तम होकर भी प्रभावहीन होता है। विचार की उत्कृष्टता अथवा निकृष्टता का प्रभाव आचार पर अवश्य ही पड़ता है। आचार की उत्तमता का परिचय उसके पृष्ठगत विचार से होता है। विचार और आचार मिलकर जीवन एव चरित्र का निर्माण करते हैं। महापुरुषो के चरित्र प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सभी के लिए अनत हितकारी एव प्रेरणादायी होते हैं। आचार्य नानेश तो चारित्र चूड़ामणि की लौकिक उपाधि स सज्ञपित थे। सहज ही दी गई इस सज्ञा का विश्लेपण शब्दो म करना न उचित है, न सरल ही। आचार्य नानेश की चारित्रिक विशेपताए तो इतनी बहुमुखी थीं कि उनको एक सूत्र मे गूथ पाना सभव ही नही है। फिर भी उनमे से कतिपय प्रमुख विशेषताओ का दिग्दर्शन तो कराया ही जा सकता है।

कल्पना कीजिये एक ऐसे व्यक्ति की कि जिसका हृदय कुसुम कोमल, स्फटिक सम निर्मल, गगाजल सम पवित्र परतु वज्र सम कठोर हो जो जीवमात्र के प्रति करुणापूरित हो, स्नेहसिक्त और उदार हा, जिसकी बुद्धि और वाणी निर्मल हो, जिसका प्रभाव उन सभी आत्माओ के लिए पावनकारी हो, जो उसके आभा मडल मे प्रवेश करने को उत्सुक हो जो सयम साधना धर्माचरण एव अनुशासन पालना म वज्र सम कठोर हो और कर लीजिए साक्षात्कार उस व्यक्ति से जा नानालाल था परतु वह आचार्य नानेश बन गया। इन्हीं विशेपताओ के कारण जगतवद्य युग प्रधान सत बन गये। यह सत दूसरो के कष्ट स्वय उठाकर दूसरो को सुख देना चाहता था, कठोर वचनो का मधुर वचनो से तथा कटु व्यवहार का मृदुल व्यवहार स उत्तर देना जिसका स्वभाव था। विकट परिस्थितिया, कठोर सकटों और समस्याओ क भयाजाल मे फसकर भी जा धीर-गभीर और शात रह सकता था तथा यश अपयश, सुख दुख

सम्मान-अपमान, प्रशसा-निन्दा आदि मे समभाव बनाय रख सकता था। यही कारण था कि वह समता के दर्शन का प्रतिपादन कर सका। उसक व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत कर सका तथा अतर और बाह्य की तटस्थ भाव से समीक्षा कर समीक्षण ध्यान-साधना का मार्ग दिखा सका।

ऐसे महापुरुष के महाप्रयाण का जो सयम और चरित्र म सदा दृढ रहा हो, ज्ञानीजन महोत्सव ही मानते हैं, शोक का विषय नही। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखा भी है-

जो इद्रियो को जीत कर, धर्माचरण मे लीन है,
उनके मरण का सोच क्या, वो मुक्त बधनहीन है।
जो धर्मपालन मे विमुख, जिसको विषय ही योग्य है,
ससार मे मरना उसी का, सोचने के योग्य है॥

आचार्य श्री नानेश का सपूर्ण जीवन एस ही उज्ज्वल चरित्र का दिग्दर्शन कराता रहा। उन्हान जीवन भर धर्म के मार्ग को तो आलोकित किया ही सघ के हित-साधन मे भी कोई कमी नही छाड़ी। ऐसी दिव्य विभूति को आचार्य क रूप मे प्राप्त कर चतुर्विध सघ तो धन्य हुआ ही, सपूर्ण समाज भी गौरवान्वित हुआ। अब अपने निर्वाण के बाद वे उन सिद्ध सता की उस गौरवशाली परपरा मे सम्मिलित हा गये हैं जो अदृश्य रहकर भी समाज का मार्गदर्शन करती रहती हैं। अपने चरित्र और अपनी साधना के बल पर ही आचार्य नानेश ने यह दिव्य स्थान प्राप्त किया है और इस रूप म वे निश्चय ही अमर हो गये हैं।

- देशनोक

महा-प्रयाण

भगवन्त राव गाजरे

कार्तिक कृष्णा तृतीया को, सत्ताईस अक्टूबर आया।
आचार्य नानेश ने ले संथारा, छोड़ी अपनी भौतिक काया॥

श्रमण संघ के महानायक थे, राष्ट्र संत आचार्य प्रवर।
श्रमण संस्कृति पालक पोषक, जन-जन के थे गुरु प्रवर॥

शक्ति-भक्ति का मद दाता, उनको जन्म दे धन्य हुआ।
वर्ग-वर्ण से ऊपर उठकर, जन-जन भी कृतज्ञ हुआ॥

महावीर के संदेशों की, घर-घर अलख जगाई नित ही।
जय जिनेन्द्र का मंत्र देकर दिव्य संदेश सुनाए नित ही॥

संयम, सेवा, त्याग, तपस्या, क्षमा, दया का बहा प्रवाह।
वाणी से अमृत झरता था, सूत्रों में ही सदा प्रवाह॥

सरिता वही सत्य-अहिंसा जन-मन ने भी लाभ उठाया।
अंतिम क्षण तक गरिमा रख ली सार्थक सफल जीवन पाया॥

जिनके ज्ञान प्रसाद ने अब तक, मेटा जन का जीवन क्रन्दन।
जिया प्रेरित जीवन पथ में, उनको शत-शत मेरा वन्दन॥

निम्बाहेड़ा

□ जसराज चौपडा, पूर्व न्यायाधीश

महान् आचार्यों की शृंखला की एक कड़ी

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, बाल ब्रह्मचारी आचार्य नानालालजी म उन पु पुरुष महान आचार्यों की महत्वपूर्ण शृखला की कड़ी थे जिन्होंने शुद्ध साध्वाचार को जीवन का ध्येय बना सघ सेवा म अपन जीवन का उत्सर्ग कर दिया। वे आचार्य श्री आनद ऋषिजी आचार्य श्री हस्तीमलजी, आचार्य श्री तुलसी, प रत्न श्री समर्थमलजी एव तपस्वीराज श्री चपालालजी महाराज जैस उन महान् आचार्यों की श्रेणी की कड़ी थे, जिन्होने दीर्घ काल तक अपन अपने सघ को नेतृत्व प्रज्ञा व दिशा प्रदान की है। मैंने प आचार्य श्री गणेशीलालजी क नेतृत्व मे जोधपुर मे समस्त श्रमण मघीय (अलावा पू आत्मारामजी महाराज के) मत्रिमडल का सिरपोल का यशस्वी चातुर्मास भी देखा है व उसके बाद श्रमण सघ से अलग हाकर हुक्म सम्प्रदाय का आचार्य पद सभालने का काल भी देखा है। पूज्य आचार्य श्री श्रीलाल जी महाराज ने पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि इस शासन का आठवा पाट तपेगा व उस भविष्यवाणी को सार्थक करते हुए पू आचार्य नानालालजी महाराज न सम्प्रदाय को, ३५० से भी अधिक दीक्षाए प्रदान कर अभिवृद्धि एव एक दीर्घता प्रदान की।

धर्मपाल समाज को प्रतिबोधित कर अनेक परिवारो को मासाहारी से शुद्ध शाकाहारी बनाया एव अहिंसा के रग म उन्हे रगकर जैन बनाया, यह अपने आप मे आचार्य प्रवर की अति विशिष्ट उपलब्धि है। समीक्षण ध्यान एव समत्व की साधना का उपदेश उनके आचार्यकाल की महान उपलब्धिया मे रहा है। उन्होन राजस्थान मे ही केन्द्रित न रहकर आचार्य श्री तुलसी एव आचार्य श्री हस्तीमलजी की तरह सम्पूर्ण देश का भ्रमण कर धर्मजागरणा की थी। अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के आधार पर उन्होंने शुद्ध साध्वाचार एव श्रावकाचार की तरफ जैन धर्मावलम्बियो का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। वे गिनती क उन साधुओ व आचार्यों मे स एक है जिन्हे लब्धियो ने नवाजा। वे एक महान् वचन-सिद्ध सत थे। व करुणा के साक्षात् अवतार थे। हर श्रावक उनके चरणो में पहुच ऐसा महसूस करता था कि आचार्य प्रवर उस पर ही स्नेह की वर्षा कर रहे है एव वही उनका सर्वाधिक कृपापात्र है। जबकि वे करुणानिधि सब पर समान रूप से स्नेह वर्षा करते थे एव सभी समान रूप से उनकी कृपा के पात्र थे।

आचार्य हस्तीमल जी म की सम्प्रदाय से पू आचार्य नानालालजी महाराज व उनके पूर्ववर्ती आचार्य गणेशीलाल जी म एव पूज्य आचार्य जवाहरलालजी म० क बड़े प्रेम सबध थे। एक दूसरे के आचार्यों के प्रति समादर का भाव था एव एक दूसरे के साधुओ एव श्रावको मे भी बहुत मलजोल रहा। अब उस प्रवृति मे कतिपय स्थानों म जो थाड़ा बहुत एकान्तिक वर्चस्व का भाव प्रदर्शित किया जाता है उसे बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिये। मिलकर रहने मे शक्ति का सचार होता, प्रगाढ़ता बढ़ती है। सहिष्णुता सवेदनशीलता एव सम्मान का भाव बढ़ता पाता है, वह एकान्तिक वर्चस्व क प्रदर्शन म सभव नहीं है। सापेक्षवाद एव अनेकान्त का आधार मानकर चलने वाला जैन समाज थाड़ा अधिक सहिष्णु बन तो शायद उसकी सम्मिलित आवाज अधिक गौर से सुनी जायगी व फलवती बन पायेगी। यह मात्र दो सम्प्रदाया की नहीं समस्त जैन समाज के समक्ष वर्तमान युग मे जहा सप शक्ति कलयुगे का घोष है, एक मुर्गीन चुनौती है जिसे स्वीकार कर समाज को सही दिशा प्रदान करना बहुत महत्वपूर्ण है।

आचार्य नानेश जैसी महान विभूति यदाकदा ही इस भूमडल पर अवतीर्ण होती है। उनके व्यक्तित्व एव कर्तृत्व के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम अपने मतभेदो को गौण कर समता एव सहिष्णुता को जीवन मे शीर्ष स्थान प्रदान करे। उनके महाप्रयाण से समाज मे वर्चस्वी आचार्यों की शृखला मे एक ऐसी कमी आइ है जिसे शायद लम्बे अर्से तक पूरी करना सभव न हो।

-जयपुर

❂

ना ना करते रहे मनुज से देव बन गये

डा महेन्द्र भानावत

(१)

अधकार से उठे लड़े आधी अन्धड़ से ।
समतावादी बने प्रकृति से चेतन जड़ से ॥
सप बिछाया सदाचार से धोया मल को ।
ज्योतिर्मय हो गये ज्योति दे गये सकल को ॥
काया छलनी बना कर्म से विमल छन गये ।
ना ना करते रहे मनुज से देव बन गये ॥

(२)

तुम थे तारनहार पार भवसागर कीना ।
सबको दिया बताय परस्पर रहना जीना ॥
दु ख बाटा सुरत सदा मैत्री की मिलनता गुलकी ।
मिट्टी महकी और चाक पर कुलड़ी चहकी ॥
कोटि-कोटि जन के, जन के मन-मेघ बन गये ।
ना ना करते रहे मनुज से देव बन गये ॥

-३५२ श्रीकृष्णपुरा उदयपुर (राज)

❑ मदनलाल जैन, बी ए
सेवानिवृत्त सेशन जज

निस्पृही आराध्य देव

इस विराट् विश्व म आत्मा चार गति चौरासी लाख योनियो म चक्कर लगाने को विवश है, परन्तु कुछ विरल आत्माए भी है जो ससार के चक्र मे न फस कर निरजन निराकार के रूप म बन जाती है। वह आत्मा आत्मा से महात्मा एव फिर परमात्मा के रूप में आसीन होकर ससार के फदे से मुक्त हो जाती है। पच परमेष्ठी मत्र में चार कर्मों क क्षय करने वाले अरिहन्तो को प्रथम नमस्कार किया है, क्योंकि वे उस पद पर व सिद्धावस्था तक पहुचने की राह बताते है। सिद्ध अवस्था दूसरे पद म है जबकि वे तमाम कर्मों को समाप्त कर सिद्ध, बुद्ध होकर अरूपी हो जाती है। इसके बाद आचार्य उपाध्याय एव साधु साध्वी समुदाय की वन्दना है। अरिहन्त प्रभु भी हमे इन चर्म चक्षुओ से दिखाई नही देते। रोज तृतीय पद वाले गुण गरिमा सम्पन्न महापुरुष ही हमे अपने उपदेशा से ज्ञान दान दते है। इसी प्रकार आचार्य देव सघपति होते है तो उपाध्याय ज्ञान प्रदान करने वाले महात्मा। जैन धर्म व्यक्ति विशेष की वदना से दूर विशिष्ट गुण सम्पन्न महात्माओ का उपासक है और इसीलिये गुणो के अनुसार स्मरण का संदेश देता है।

प्रभूत गुण सम्पन्न, अध्यात्म योगी, स्व पर कल्याणकारी, महामनीषी, समता सिन्धु सारस्वती गिरा सम्पन्न समता एव समीक्षण ध्यान प्रणेता हमारे आचार्य श्री नानालालजी म० सा० थे, जो निरन्तर समाज हित की बात को ध्यान मे रखते हुए महावीर देशनानुरूप श्रमण आचार के परिपालन के प्रबल समर्थ रहे। श्रमणाचार में कठोरता के साथ अपने शिष्यो क प्रति अनुराग स कोसो दूर केवल तप सयम एव आचार सहिता की पालना पर सदैव जोर देते रहे।

ऐसे महान् आचार्य श्री का अवतरण राजस्थान की वीर प्रसूता धरती मेवाड़ के दाता गाव मे हुआ। इस छोटे से गाव में पैदा हुआ बालक कौन जानता है कि हुक्म सघ के अष्टम पाट को सुशोभित करेगा ? यह धरती वीरो शूरो एव भक्ति की साधना करने वाले सन्तो की जननी है। स्वर्गीय आचार्य श्री श्रीलाल जी म०सा० की यह भविष्यवाणी कि, 'इस पाट का क्या देख रहे हो आठवे पाट के ठाठ देखना। वह पाट चमत्कारिक एव इससे भी अधिक प्रभावपूर्ण होगा। और सिद्ध हो गया मोड़ीलालजी पोखरणा के सपूत एव मा शृगारा के लाल नाना' क तेजस्वी व्यक्तित्व से जिसने बाल्यकाल से ही समस्याओ से समझौता नहीं किया। पिता का साया अल्पायु मे उठने के बाद आपने व्यापार शुरू किया तो निष्ठा से, परन्तु धर्म भावना के जागरण के उपरान्त तो सब कुछ त्याग कर दीक्षा लेने को उतारू हो गये। परिजनो ने मोह ममतावश आज्ञा नहीं दी तो अहिंसात्मक आन्दोलन भी किया। उन्होने पहले गुरु' परखा। ये जहा गये, वहा तुम्हे प्रेम से रखेंगे, आनद से समय बीतेगा आदि प्रलोभन भी सन्तो ने दिये पर उनकी आत्मा सच्चे गुरु की तलाश म रही। जिससे कि स्व पर कल्याण का मार्ग प्रशस्त होकर सयम की आराधना हो सके। दशवैकालिक सूत्र के अध्ययनोपरान्त तो साधुचर्या से भिन्न भिक्षाओ आदि मे सयम पालन की कमी को देखकर वे सच्चे गुरु की तलाश मे जुट गये।

उनकी दृष्टि खोजते-खोजते जैन जगत क दिव्य नक्षत्र ज्योतिर्धर जवाहरलाल जी महाराज की तरफ गई। ये प्रखर पाण्डित्य के धनी, सूक्ष्म प्रज्ञा एव विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, गम्भीर विचारणा अपूर्व तर्कणा एव अगाध चारित्राराधन वाले आचार्य थे। उन्ही के शिष्य युवाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज की सेवा मे पहुच कर उन्ह य

उनकी परम्परा को उन्होने नजदीक से देखा और सतुष्ट होकर उसी परम्परा मे दीक्षित होने की ठानी ।

लेकिन परिजन कब मानने वाले थे। उन्हे डराया, धमकाया, कष्ट दिया, ताले मे बन्द भी रखा परन्तु हमारे चरितनायक पर कोई असर नही हुआ । उदयपुर चातुर्मास के दौरान धोरी श्रावका की परीक्षा के उपरान्त उनके द्वारा परिजनो को समझाने पर आज्ञा-पत्र मिल गया व चातुर्मास के बाद कपासन मे श्री गणेशीलाल जी महाराज सा० के मुखारविन्द से दीक्षा मत्र लेकर नाना से मुनि श्री नानालाल बन गये । दीक्षा के उपरान्त तो वे ज्ञान, ध्यान, अध्ययन, सेवा एव सयम साधना मे इतने लीन हो गये कि खाने-पीने, आराम की चिन्ता ही नही रखते। हर सेवा कार्य म पहले और इस प्रकार मुनि वेश की धवल चादर की शोभा दिन दूनी रात चौगुनी बढन लगी । साधना, सेवा एव स्वाध्याय के त्रिवेणी सगम एव दशवैकालिक सूत्र की पक्ति जुत्तो सया तव समाहिए (साधक तप समाधि से युक्त रहे) का अनुसरण कर वे खरा सोना बन गय । उनकी चेतना सयम-साधना मे ही निरत रही, जिससे वे आचार्य श्री गणेशीलालजी के परम् कृपा पात्र बन गये ।

एक विशाल श्रमण सघ की योजना बनने का जब अवसर आया, तब आपने भी अपूर्व योगदान दिया, परन्तु ध्वनिवर्द्धक यत्र एव श्रमण शिथिलाचार के कारण श्रमण सघ के उपाचार्य होते हुए भी आचार्य श्री गणेशीलालजी ने पद त्याग कर श्रमण सस्कृति की पालनार्थ दिनाक ३० ११ ६० को पूर्व स्थिति मे आ गये। उनके आदेश के अनुसार हमारे चरितनायक हर समय एकता के पक्षधर रहे । उन्हे १८ ४ ६१ को युवाचाय मनोनीत कर उदयपुर क राजमहला क प्रागण म आसोज सुदी २ को चादर प्रदान की गई । तत्पश्चात् श्री गणेशीलालजी म सा के स्वर्गवासोपरान्त आप अष्टम पाट को सुशोभित करने लगे ।

पाट पर विराजते ही सघ का गौरव बढने लगा। जैन समाज म साधु समाचारी की कठोरता स पालना करने के उपरान्त भी आपक कार्यकाल म सैकड़ो दीक्षाए हुई। ज्ञान ध्यान सयम साधना मे निरत रहकर व समता के प्रणेता बनकर आपश्री अपन सघ का कुशलता से नेतृत्व करते रहे । उनक मन म यह टीस अवश्य रही है कि जिन सन्तो का ज्ञान दान देकर आगे बढाया वे ही पद के मोह म आ गये । उन्होंने काफी कुछ सुपथ पर लान का प्रयत्न भी किया, पर शिथिलाचार के समर्थक नही बने ।

गुरुदेव श्री का मझला कद भरी-पूरी सुडोल काया, कोमल एव कातिमय गहुआ वर्ण, तेजोदीप्त विशाल भाल, गभीर मृदु हास्यमय प्रसन्न बदन एव सामुद्रिक सुलक्षणा युक्त तथा सयम मय आध्यात्मिक तेज का यह चमत्कार रहा कि भारत भर के जान-मान नेतागण भी आपश्री के दर्शन कर धन्यता अनुभव करते रहे । जैन धर्म के अन्य आचार्य भी आपकी धवल कीर्ति से प्रभावित थे । उनके चरण सरोजा म बैठकर हजारा हजार मुमुक्षु आत्माआ ने अमृतवाणी का पानकर जीवन को धन्य बनाया। उन्होंने देश के कोने-कोने म जाकर जैन धर्म का प्रचार कर धर्म का सही रूप जन-जन के समक्ष रखकर दया, दान, परोपकार एव स्व-कल्याण का मर्म समझाया । अन्तिम चातुर्मास भी राजस्थान के मेवाड़ की ही धरती उदयपुर म रहा जहाँ रुग्णावस्था म डाक्टरो ने इस अध्यात्म योगी के आत्मबल स हार मान ली । उनके अनुसार यह देह उनके आत्मबल से ही चल रही थी दिय का तल तो बहुत पहले समाप्त हो गया था और अन्त म उदयपुर चातुर्मास म जन जन क श्रद्धा वन्द अपन भौतिक स्वरूप को त्याग कर ज्योति पुज म समाहित हो गय ।

हमार चरित नायक का जीवन जगमगाते ज्योति-पुज रवि की तरह प्रकाशित रहा । उन्होंने सयम साधना का अच्छा आदर्श रख कर जैन शासन का गौरव बढ़ाया । हजारो हजार नेत्रो की अविरल अश्रुधारा के बीच मौन आशीर्वाद देते हुए आग बढ़न की प्रेरणा दी एस आचार्य श्री को हार्दिक श्रद्धाजलि एव अभ्यर्थना । उनका पथ-[illegible] सर्व बना रह जिससे श्रमण [illegible] रहता हुआ निरन्तर आगे बढ़े ।

-गगापुर

□ मुरारीलाल तिवारी
पूर्व न्यायाधीश, मध्यप्रदेश

शताब्दी की महान् विभूति

इतिहास इसका साक्षी है कि वे कहने को श्रमण भगवान महावीर की अहिंसा धर्म परायण श्री साधुमार्गी स्थानकवासी जैन परपरा के अष्टम पट्टधर थे, इन विभूति को केवल एक सप्रदाय विशेष की परिधि मे रखकर देखना उनके महान् व्यक्तित्व के प्रति न्याय नही कहा जा सकता।

वे निश्चित ही जैन परपरा क प्रसिद्ध आचार्य तो थे किंतु उनके व्यापकत्व को उस परपरा की सीमा तक मर्यादित करना इस महान आचार्य का सही आकलन नही कहा जा सकता।

इस लेख के माध्यम से हम उनकी सजीवनी शक्ति तथा नूतन दृष्टिकोण को उत्कीर्ण करने का लघु प्रयास करना चाहते हैं।

अहिसा धर्म के अनेक आचार्यों की दिव्य वाणी तथा भव्य संदेश से हम परिचित है और इस आधार पर उनका बहुमान करते हैं।

आचार्य श्री नानेश के चिंतन का कद्र बिंदु आम आदमी रहा है, उन्होंने आम आदमी की अवधारणा को अपनी आध्यात्मिक प्रयोगशाला मे नये स्वरूप प्रदान किये है। चितक की दृष्टि से उनकी यह दृढ़ आस्था थी कि मनुष्य स्वभावत दयामय तथा करुणामय हाता है, उसकी क्रूरता का कारण उसका परिवेश है। हृदय परिवर्तन सभाव्य है, उसके पश्चात् उसका सही मानवीय स्वरूप समाज में प्रकट हो सकता है। आवश्यकता है उसके प्रति दृढ़ आस्था तथा सद्‌विचार एव सस्कार जिसके माध्यम से नया मनुष्य जन्म ले सकता है।

आपने जीवन भर एक महान प्रायोगिकी की तरह इस प्रयोग में सिद्ध पुरुष का परम पद प्राप्त किया।

आदिनाथ ऋषभदेव से तीर्थंकर भगवान महावीर तक तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम योगीश्वर श्रीकृष्ण तथा पूज्य महात्मा गाधी तक अनेक प्रयोग इस राष्ट्र मे हुए हैं। आचार्य श्री नानेश के पूर्व महान् आचार्य श्री जवाहराचार्य ने राष्ट्रीय जीवन मे नये रग भरे थे, उनके अधूरे कार्यों को पूर्णता प्रदान करने का सपना हमारे इन श्रद्धेय आचार्य ने सजोया। यह सपना निश्चित ही दर्शन के क्षेत्र मे नवीन था।

उपनिषदो मे कहा है-सब मे ब्रह्म व्याप्त है। महाकाव्य रामचरित मानस म गोस्वामी तुलसीदास ने इसी भावना को विस्तृत करते हुए कहा है, सिया राम मय सब जग जानी, करहु प्रणाम जोरि जुग पानी। परतु यह दर्शन तथा काव्य की भाषा मे सिमटकर रह गया।

आचार्य श्री नानेश ने इस दर्शन एव काव्य की भावना को सगुण रूप प्रदान कर दर्शन और काव्य को प्रामाणिकता प्रदान की है। जैन धर्म के मूल स्वभाव को पहचानने की अद्‌भुत कसौटी इन आचार्य को परमात्मा की देन थी। उन्होंने बहुत सरल तथा सहज ढग से जीवन क अमृत सूत्र का सृजन किया, इसी पवित्र सूत्र का नाम समता दर्शन' है।

विश्व मानवता का यह सद्‌विचार विश्व मानवता के राजतिलक का शुभारभ है।

मानव मात्र के प्रति समता की दृष्टि, समभाव आ जाए तो बंधुत्व जन्म ले सकता है। यदि मानवता के प्रति बंधुत्व का रिश्ता हो जाए तो अन्याय की संभावना समाप्त हो जाए।

प्रत्येक मानव के पास समता के प्रेमबंधन से, मानवता से हिंसक वृत्ति तथा पशुत्व समाप्त करने का स्वतंत्र तथा पूर्ण मानव निर्माण का उनके द्वारा दिया गया यह शिल्प युगो तक हमारी चेतना को जागृत करता रहेगा।

आचार्य श्री नानेश एक तरह से अति संवैधानिक क्रांति के जनक के रूप मे पहचाने जाएंगे। इस राष्ट्र के संविधान रचयिता समता, बंधुता, न्याय तथा स्वतंत्रता का उद्घोष करते हुए भारतीय संविधान के आमुख मे लिखते है तथा संवैधानिक व्यवस्था के माध्यम से समता के सूत्र को स्थापित करना चाहते है, जिसमे लोक प्रशासन, न्याय व्यवस्था संसद तथा विधान सभाए अपनी भूमिका प्रस्तुत करती है, इस विधि सम्मत व्यवस्था मे प्राण प्रतिष्ठा का कार्य आचार्य श्री नानेश अपने समग्र यशस्वी जीवन भर करते रहे। इस कार्य की संपन्नता मे जैन दर्शन का तथा संस्कृति के समन्वय का सूत्र अनेकांत दर्शन तथा स्याद्वाद की भाषा उनके प्रयोग के सहज उपकरण थे।

उनके ये सारे प्रयोग उनके अंतर चिंतन, अंतर मन मे उत्पन्न थे। यह आश्चर्य है कि इस विभूति ने जब योग और ध्यान की ओर अपनी सम्यक् पैनी दृष्टि से देखा तो ध्यान भी समीक्षण ध्यान हो। इसका सीधा अर्थ है कि समता ही सफल जीवन की श्रेष्ठ दृष्टि है।

समता को स्थापित करने के लिए ध्यान भी समीक्षण ध्यान हो चिन्तन के आधार पर जब जानदार लोगो ने इस आचार्य को समता विभूति कहा तब यह अलंकरण अन्य राजनयिक अलंकरणो से सर्वथा भिन्न था। सत्य तो यह है कि जिस समता के प्रयोग धारक के रूप मे पूज्य महात्मा गांधी आचार्य विनोबा भावे तथा लोकनायक जयप्रकाश की परिगणना की जा सकती है तो परंपरा से हटकर आचार्य श्री नानेश इस विभूति दर्शन के महान आचार्य के रूप मे स्मरण किए जाएंगे।

बड़े संकोच के साथ लिखना पड़ता है कि उनका यह प्रयोग मालव भूमि मे उजागर हुआ राजस्थान के शौर्य और धर्मवीर के रूप मे जब मालव भूमि पर उनका विहार हुआ तो उस विहार काल में उनका अंतरमन तथा अंतरचक्षु जो समता के अमृत से प्लावित था, एक करुणा की धारा की तरह, मंदाकिनी का रूप धारण करता है। यह मंदाकिनी पौराणिक गंगा से सर्वथा भिन्न थी। कथानक के अनुसार महाराज सगर के पुत्रो की भस्मी को प्रवाहित करने के लिए महाराज भगीरथ धरती पर गंगा लाए थे। आचार्य श्री नानेश का यह दूसरा भगीरथ प्रयास था कि मद्यपान मांसाहार आचरण विहीन मनुष्य कहलाने वाले हिंसक व्यक्तियो मे अहिंसा की करुणामूर्ति की स्थापना करना, उस पौराणिक युक्ति से जिसमे मुर्दों की भस्मी प्रवाहित करने का उल्लेख हो यह जीवंत हिंसक मनुष्यो मे करुणा और दया की सरिता का प्रवाहित करने का नूतन भगीरथ प्रयास था। इस युग मे एक प्रयोग चम्बल के बीहड़ो मे डाकू उन्मूलन समस्या निदान के रूप मे आचार्य विनोबा तथा लोकनायक जयप्रकाश ने किया था उसके विस्तृत विवेचन की आवश्यकता नही है, परंतु मालवा के जन जीवन मे दैनन्दिन क्रूरता तथा हिंसा का उन्मूलन कर हिंसक जीवन जीने वालो को धर्मपाल मे रूपांतर कर मानवता के नव सृजन मे आचार्य श्री नानेश की भूमिका स्तुत्य है। यह इस राष्ट्र मे चल रहे धर्म परिवर्तन तथा धर्मान्तरण के अभिशाप से सर्वथा भिन्न प्रयोग था।

यहा न पद का लोभ न भौतिक सुखो का लोभ कुछ भी तो नही था केवल आचार्य की मधुर वाणी थी। एक अहिंसक प्रयोग जिसमे अहिंसा कवच बन जाए, ऐसा प्रयोग एक महान् जैनाचार्य मे संभव हो सका यही उनके जीवन का चमत्कार है।

जैन दर्शन में चमत्कारो का कोई स्थान नही है बिना शल्य क्रिया के प्रेम और माधुर्य से हृदय परिवर्तन का यह अद्भुत क्रियात्मक स्वरूप मानव क्रांति नही तो क्या है? इसलिए एक क्रांति के अग्रदूत की तरह यह राष्ट्र जैन तथा जैनेतर [illegible] इन आचार्य [illegible] का वन्दन करता रहेगा उनकी जीवन [illegible] एक [illegible] [illegible] की

यात्रा के रूप में हमारे स्मृति पटल पर चिरस्थायी रहेगी। वे जीवन के शाश्वत मूल्यों के निमित्त जीवित रहे व प्रत्येक मानव को साधुमार्गीय बनाने का प्रयत्न करते रहे ताकि यह राष्ट्र श्रेष्ठ नागरिकों का देश बन सके तथा विश्व मानवता को जहाँ पहुंचना इष्ट है, उसका मार्ग प्रशस्त करते रहे। ऐसे समता विभूति के महाप्रयाण से भारत ने एक आचार्य रत्न को खो दिया।

-उज्जैन

✿

समीक्षण ध्यान

मोतीलाल गौड़

समीक्षण ध्यान की धारा में,
रे मन डुबकी लगाले रे।
समभाव की सीमा में चलता,
सम्यक् दृष्टि बना ले रे॥
रोगों से ग्रसित तन तेरा।
रागों से दूषित मन मेरा॥
कैंसर की व्याधि लोभ बना,
लोभ से पिंड छुड़ाले रे॥१॥

माया में तू यों लिप्त न हो,
लोभ निरन्तर तृप्त न हो।
सब पापों का बाप है यें,
लोभ से दूर हटाले रे॥२॥

तन का पद का धन का भी,
लोभ बुरा है मन का भी।
झगड़े की जड़ को आज मिटा,
साधक पथ अपनाले रे॥३॥

मेरा है ये मेरा मेरापन,
माया में ममता का बन्धन।
जीवन में शान्ति मिल जाए,
समता का पाठ पढ़ाले रे॥

- उपाचार्य, आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति नानेश नगर

☐ प्रो सतीश मेहता

२०वीं शताब्दी के महानतम् आचार्य

वीर शिरोमणि राजस्थान की धरती वीर प्रसूता है। इस धरती ने जहा असीम साहस, शक्ति, शौर्य और वीरता के धनी जोध जवानो को जन्म दिया, वहा अटूट भक्ति, अनवरत साधना और अखड समर्पण की त्रिवेणी में अवगाहन करने वाले सतो, भक्तो तथा तपस्वियो को भी जन्म दिया है।

एक ओर इतिहास पुरुष एव स्वाधीनता क प्रेरक महाराणा प्रताप इसी माटी के पुजीभूत पौरुष की अद्भुत मिशाल बने हुए है। अपनी भक्ति के प्रबल प्रताप से सत शिरामणि मीरा बाई ने गिरधर गोपाल कृष्ण को अपने प्रभुजी के रूप मे धारण कर विष का प्याला पिया था। वही राणा सागा हुए जिन्होंने अस्सी घावो से क्षत-विक्षत शरीर की परवाह किये बगैर मातृ भूमि की रक्षा मे जीवन समर्पित किया।

ऋषि-मुनियो, साधु-महात्माओ तथा सत-सतियो ने अपने तप-बल से धर्म तथा अध्यात्म का जो आलोक दिया, उससे इस प्रदेश का हर गाव, ढाणी, महल मगरी, टेकरी, मालिया तथा घर-गली दीपित है। अत सत्य शिवम् और सुन्दरम् से परिपूरित इस मेवाड़ की धरती ने न केवल राजस्थान वरन् सपूर्ण भारत भूमि के गौरव में चार चाद लगाये है।

इसी धरा पर ऐसा ही एक छोटा-सा गाव है दाता जो ऐतिहासिक चित्तौड़गढ के पास स्थित है। जहा पर एक सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय तथा सर्वोपदेशाय महापुरुष इस भूतल पर अवतरित हुए थे। नि सदेह भारत के मनीषियो और ऋषियो की परम्परा मे उनका नाम स्वर्णाक्षरो में लिखा जाने योग्य है, वे है स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश।

आचार्य श्री नानेश बीसवी सदी के महान् सत थे। वे ज्ञान के सागर थे। उनका व्यक्तित्व व्यापक, विशाल प्रेरक व गौरवपूर्ण था। समता विभूति, अध्यात्म योगी की उपाधि ही उनके व्यक्तित्व की विशालता एव व्यापकता की द्योतक थी। वे अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा किसी विषय विशेष तक ही सीमित नहीं थी अपितु उन्होंने विभिन्न विषयो पर महान् ग्रथो का प्रणयन कर वाङ्मय क प्रत्येक क्षेत्र को अपनी लेखनी एव वाणी से विभूषित और समृद्ध किया। वे एक मूर्तिमान ज्ञान कोश थे। उनमे एक साथ ही वैयाकरण दार्शनिक साहित्यकार इतिहासकार, पुराणकार, धर्मोपदेशक और महान् युग पुरुष का अन्यतम समन्वय हुआ है। केवल साहित्य के क्षेत्र मे ही नही अपितु सामाजिक, धार्मिक व अन्य क्षेत्रो मे भी आचार्य श्री ने अपूर्व योगदान दिया है।

इस महापुरुष ने १९ वर्ष की उम्र मे अपने समय के प्रसिद्ध जैनाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा से साधु दीक्षा कपासन मे ग्रहण की थी। आपने अल्पकाल मे ही जैन शास्त्रो एव आगमो का गहन अध्ययन करके प्रखर पाण्डित्य एव प्रवीणता प्राप्त कर ली।

जैनाचार्य श्री नानेश ने विभिन्न ग्रन्थो कृतियों का लेखन किया था जिनमें जिणधम्मो श्रमण दर्शन और व्यवहार, समीक्षण ध्यान, आत्म समीक्षण, कषाय समीक्षण ऐसे जीए, समता निर्झर पावस प्रवचन प्रवचन पीयूष सस्कार क्रान्ति, समीक्षण धारा, समता क्रान्ति का आह्वान चलते जाए जीवन दीप, कर्म प्रकृति समता दर्शन के हस्ताक्षर, जीवन और धर्म, अमृत सरोवर प्रेरणा की दिव्य रेखाए मगलवाणी, आध्यात्मिक वैभव लक्ष्य वेध कुकुम के पगलिए आदि प्रमुख है।

समता साधक, आध्यात्मिक योगी, श्री नानेश का व्यक्तित्व आकर्षक एव प्रभावशाली था। अत उन्होंने अपने प्रभावी व्यक्तित्व आजस्वी तथा आकर्षक वाणी द्वारा समाज का अपनी ओर आकर्षित किया और छ दशक तक सयमी जीवन एव समतामय साधनारत रहते हुए समाज का नवीन दिशा दी। आचार्य श्री का सस्कृत प्राकृत, अपभ्रश हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओ पर समान अधिकार था।

आपकी दीक्षा एव सयमी जीवन के ५० वष पूरा करने पर देश भर म अर्द्धशताब्दी दीक्षा समारोह सयम सेवा तप-त्याग एव साधना दिवस के रूप मे १९९० मे मनाया गया। जो एक मील का पत्थर साबित हुआ। आप सवत् २०१९ में जैनाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज के देवलाक होने पर आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए एव आचार्यकाल के लगभग चार दशको म आपने धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक आध्यात्मिक क्षेत्र में क्रान्ति की। आपने अपने साधु जीवन मे राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा दिल्ली, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश आदि प्रदेशो के सुदूरवर्ती गावा म पद विहार कर जन साधारण के आत्म चैतन्य को जागृत कर सदाचार, निष्ठा नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा फूकी।

जैनाचार्य श्री नानेश का सयमी जीवन सेवा, पुरुषार्थ और समता का साकार रूप था। बढ़ते हुए भौतिक चकाचौध से परे रहकर आप भगवान महावीर द्वारा श्रमण धर्म के लिए निर्धारित अहिंसा, सत्य अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूप महाव्रतो का मन वचन काया से पूर्णतया कठोरता पूर्वक परिपालन करते थे एव अपने शिष्य परिवार से करवाते थे। पाश्चात्य सास्कृतिक परिवेश के युग म आपके साधनामय समता जीवन से प्रभावित हाकर लगभग ३५० युवक युवतियो ने सासारिक मोहमाया छोड़कर आपके चरणो म दीक्षा ग्रहण कर श्रमण धर्म को स्वीकार किया। जो भाग पर योग असयम पर सयम और रागद्वेष पर वीतरागता की विजय के प्रतीक के रूप मे देखने को मिला।

आज विश्व भर म विविध विषमताओ का बोलबाला है। आचार्य श्री नानेश ने अशाति एव विषमताओ से मुक्ति के लिए राम बाण चिकित्सा के रूप म समता दर्शन का चिंतन किया। समता दर्शन का लक्ष्य है समता विचार म हो दृष्टि और वाणी मे समता हो तथा समता आचरण के प्रत्यक चरण मे हो। जब समता जीवन के हर स्तर में प्राप्त हागी और सत्ता तथा सम्पत्ति के अधिकार मे होगी तो व्यवहार के समूचे दृष्टिकोण म भी परिवर्तन होगा। समता मनुष्य के मन मे होगी तो वह समाज के जीवन मे भी होगी। समता जीवन में आये इस हेतु आपने सामायिक व प्रतिक्रमण जैसी धार्मिक क्रियाए प्रतिदिन करने पर बल दिया है ताकि समता जीवन का अग बन सके।

आपने मन म उठने वाले क्रोध, मान माया लोभ आदि पर नियत्रण पाने के लिए एक साधना पद्धति दी जो समीक्षण ध्यान' के नाम से विख्यात हुई। समीक्षण ध्यान मन को छोटी-मोटी उपलब्धियो में नहीं वरन् परम अध्यात्म परम आनद की सरिता मे गोता लगाने एव कषाय वृति से रहित रखने मे समर्थ है। एक बार उस अतरात्मा की झलक मिली की उसे इन्द्रियो के बाह्य विषय आकर्षित नही कर सकेगे।

इस रूप म समीक्षण ध्यान द्वारा हम न केवल मन की शक्ति को ही पहचानते है अपितु अन्त चेतना म जो-जो शक्तियाँ छिपी है उन्हे भी जान लेते है। इस ध्यान के द्वारा ही हम अन्तरग निधि का साक्षात्कार करके दारिद्रय का मिटाकर परम गभीर, परम श्री सम्पन्न बन जाते है। इसी आधार पर ध्यान को कल्पवृक्ष, कामधेनु जैसे तत्व से सबोधित किया जाता है। जैसे कल्पवृक्ष कामधेनु मनोवाछित फल प्रदान करने वाले है उसी प्रकार समीक्षण ध्यान साधना आनद प्रदान करने वाली प्रक्रिया है।

आचार्य श्री के उपदेशा से प्रेरणा पाकर मालव क्षेत्र के ६०० गावो के एक लाख बलाई अहिंसक एव व्यसन मुक्त जीवन जीने के लिए सकल्पबद्ध हुए है। आपकी प्रेरणा से य बलाई सयम, समता सादगी, सुसस्कारी व्यसन मुक्ति स्वच्छता एव सुस्वास्थ्य का जीवन जी रहे है। यह सामाजिक क्रान्ति आचार्य श्री

नानेश ने की जो 'धर्मपाल अभियान' के नाम से जानी व मानी गयी।

धर्मपाल अभियान एक एसा लोक कल्याणकारी अभियान है जो समूचे जैन समाज ही नही अपितु भारतीय समाज को गौरवान्वित करता है।

आचार्य श्री ने फिजूलखर्ची को राष्ट्रीय अपराध बताते हुए कहा कि भारत जैसे गरीबो के देश मे तो इस अपराध का आकार और अधिक गुरुतर माना जाना चाहिए। जिस देश मे एक ओर करोड़ो लोग भूखमरी के कगार पर है तथा छोटे बच्चो को दूध तक दुर्लभ नही है, उस देश मे आतिशबाजी जैसी निरर्थक प्रवृत्ति पर पानी की तरह पैसा बहाना अपराध ही नही मानवता पर घोर अत्याचार है। आचार्य श्री ने कहा है कि फिजूलखर्चिया पूरी तरह रोक दी जाए बल्कि जो उचित खर्च हैं उन्हें भी कम करके बचत की जाए तथा उस राशि का सदुपयोग गरीबो का दुख दर्द कम करने और मिटाने के हितकारी कामो में किया जाए।

उनका असामयिक स्वर्गवास मानवता पर वज्रा - घात है, एक अपूर्णीय क्षति है।

अध्यात्म योगी, समता साधक, समता विभूति समता के प्रणेता को मेरा शत्-शत् वदन, अभिवदन एव हार्दिक श्रद्धाजलि।

-श्री जैन पी जी कॉलेज, बीकानेर

प्रज्ञा पुरुष को प्रणाम

सुमित्रा मेहता

गुरु नाना तुम्हारे चरणों में
श्रद्धा के फूल चढ़ाते हम।
इतनी शक्ति तुम दो हम का,
समता साधक बन जायें हम॥

सुख शान्ति का आधार है समता
सम भावों में समता का फूल खिलता।
समता और समानता का वृक्ष लगाकर,
वतन के चमन में अमन का फल लगता॥

आप हमें सदा याद आते रहेंगे
चरणों में हम शीश झुकाते रहेंगे।
समता समीक्षण अरु संस्कारों का
ध्वज द्वार द्वार में फहराते रहेंगे।
चिरऋणी रहेगा जैन जगत आपका
प्रज्ञा पुरुष को प्रणाम भव भव का।

-बड़ीसादड़ी (राज)

❑ डा कविता मेहता

समता, सयम, समीक्षण साधना के कल्पवृक्ष

परम् श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म सा भारतीय सन्त परम्परा के आदर्श थे। उनका व्यक्तित्व असाधारण था। अपनी रचनात्मकता और कल्पनाशीलता से उन्होंने न सिर्फ जैन समुदाय वरन् सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। आचार्य श्री के दर्शन एव आशीर्वचन का लाभ मुझे बचपन से मिलता रहा। आचार्य श्री के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना कोई रह नहीं सकता था। जहा समता, साधना एव स्वाध्याय की त्रिवेणी मिलती है, उसमे अवगाहन किये बिना कोई कैसे रह सकता है। आचार्य श्री का व्यक्तित्व करुणा एव समता की प्रतिमूर्ति था, उन्हे म कभी भूला नहीं पाऊगी। आपके हृदय मे करुणा और वात्सल्य का सागर लहराता था। आपकी सहन शक्ति अपरिमित थी। आपके दीर्घ जीवन में ऐसी कई प्रतिकूल परिस्थितिया आईं, लेकिन आपने मुस्कराते हुए उनका सामना किया।

आप एक बार जो निर्णय कर लेते उस पर मेरु पर्वत के समान अडोल व अकम्प रहते। आपका व्यक्तित्व बहुरगी और बहुमुखी था। गम्भीरता धैर्य निस्पृहता सतत जागरूकता का अद्भुत मिश्रण था आपके व्यक्तित्व मे।

आचार्य श्री भारतीय श्रमण परम्परा के महान् आचार्य उच्च कोटि के आध्यात्मिक सन्त, विशिष्ट ज्ञानी ध्यानी साधक, सयम साधना के कल्पवृक्ष, प्रज्ञा पुरुष थे। आप कथनी व करनी की समानता पर सदैव जोर देते रहे। ज्ञान के साथ क्रिया की उत्कृष्टता से ही सार्थक परिणाम मिल सकता है ऐसी मान्यता आप की सदैव रही। इसी परिप्रेक्ष्य म आपने सामाजिक क्रान्ति सस्कार क्रान्ति का शखनाद किया। आपके उपदेशो से प्रभावित होकर मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के एक लाख से भी अधिक, व्यक्ति कुव्यसन त्याग कर व्यसन मुक्त हुए और धर्मपाल कहलाए।

आचार्य श्री का २७ अक्टूबर ९९ को रात्रि के लगभग १० ४१ बजे उदयपुर मे एक दिवसीय सथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। सथारा- जैन विधि से इच्छा मरण की सर्वोत्कृष्ट साधना है। इसम मृत्यु समय निकट जानकर देह और आत्मा की पृथकता का बोध कर पूर्ण जागरुक रहते हुए समस्त जीवो से क्षमायाचना कर, निर्द्वन्द्व निर्लेप और कषाय रहित होकर आत्माभिमुख अन्तर्लीन हुआ जाता है। आहार का पूर्ण रूपेण त्याग कर दिया जाता है। इस अवस्था में किसी के प्रति यहा तक कि अपने शरीर के प्रति भी आसक्ति नहीं रहती। सथारा म मृत्यु मगल महोत्सव बन जाती है वह दु ख का कारण न रहकर आनन्द का धाम बन जाती है।

आचार्य श्री भविष्य दृष्टा थे। उनकी चित्तवृत्ति अत्यन्त निर्मल और व्यक्तित्व पारदर्शी था जिसके फलस्वरूप अपनी मृत्यु का उन्हे पूर्वाभास हो गया था और उसका आलिंगन करने के लिये वे समभाव मे स्थित थे। आप श्रमण भगवान महावीर की परम्परा के ८१वे पट्टधर आचार्य थे। स्थानकवासी परम्परा के महान् आचार्य श्री हुक्मीचद जी म सा के नाम से प्रसिद्ध हुक्मगच्छ शासन के वे आठवे आचार्य थे। साधुमार्गी आचार्य परम्परा का जो इतिहास हमे मिलता है, उसमे आठ आचार्यों की विशिष्ट भूमिका है। साधुमार्गी समाज म इन आचार्यों को लेकर एक अष्टाक्षरी प्रचलित है। यह अष्टाक्षरी चौहत्तरवे आचार्य से लेकर वर्तमान इक्यासीवें आचार्य के प्रथम नाम अक्षरो से बनायी गई है। यह सपूर्ण इस प्रकार है हु शि उ चौ श्री जग नाना।

आचार्य श्री नानेश का जन्म १९२० ई म असहयोग आन्दोलन के जन्म की छाया में हुआ। आप क तीन अप्रतिम अवदान है- सस्कृति के क्षेत्र म समता दर्शन, व्यक्ति क क्षेत्र म समीक्षण ध्यान और समाज के क्षेत्र मे धर्मपाल अभियान। हम उनक अपूर्व व्यक्तित्व की जीवन्त अनुभूति इस त्रिकोण के बीच ही कर सकते है। आप शिथिलाचार के खिलाफ थे, निरभिमानी प्रतिपल जाग्रत रहते थे। आपका साधु सघ और श्रमणोपासक समाज को अप्रमत्त बनाय रखने तथा जैनाचार की मौलिकताआ की रक्षा तथा उनका अनुपालन अमूल्य अवदान था।

आचार्य श्री सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषाआ के अधिकृत विद्वान थे। उनकी जिणधम्मा, समता दर्शन व व्यवहार, समीक्षण ध्यान, आत्म समीक्षण, कषाय समीक्षण, अखण्ड सौभाग्य, अमृत सरोवर, कुकुम के पगलिए, पावस प्रवचन, जलते जाए जीवन दीप, ऐसे जिए, आध्यात्मिक आलोक आध्यात्मिक वैभव, प्रवचन पीयूष आदि आदि प्रमुख कृतिया प्रकाशित हुइ है। आप श्री की लगभग ६० से अधिक कृतिया प्रकाशित है, जो प्रवचन, काव्य, उपन्यास कथा साहित्य आदि के रूप म है। आचार्य श्री का प्रवचन साहित्य हिन्दी धार्मिक, दार्शनिक साहित्य की अमूल्य धरोहर है। इनम तपोनिष्ठ साधक की अनुभूतियाँ और उच्च कोटि क आध्यात्मिक सन्त की आचरणशीलता अभिव्यजित हुई है। प्राकृत सस्कृत के प्रकाण्ड पडित होते हुए भी आचार्य श्री के प्रवचन कभी भी उनके पाडित्य से बाधित नहीं हुए।

उनकी प्रवचन सभा से हजारो भक्तजना का अज्ञानाधकार मिटा है निराश मन मे आशा का सचार हुआ है। खोई हुई दिशाए गन्तव्य की आर अभिमुख हुई है। थकान मुस्कान मे बदली है और आग मे अनुराग का नन्दन वन महक उठा है। आचार्य श्री पार्थिव रूप से हमारे बीच नही है, पर उनका संदेश जन-जन म व्याप्त है। वे प्रेरणा बनकर युगो तक हमे अनुप्राणित करते रहेंगे, स्फुरणा बनकर हमे जगाते रहेगे। हम पर उनके अनन्त उपकार है, हम उनसे उऋण नही हो सकते।

आचार्य श्री क प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजलि तभी होगी जब हम सब मिलकर समाज को आगे बढाए उनके दिये उपदेशो को ग्रहण करे तथा उनके समता फरमान को घर-घर तक पहुचाये। उस प्रभा पुरुष को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

-रजिस्ट्रार, साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

मानव कल्याण कर गए

वै श्रद्धा वैद

देकर सद् उपदेश जगत को
तुम मानव कल्याण कर गए।
मानव को मानवता देकर
जग के लिए महान बन गए।

ऐसे आचार्य नानेश को
अर्पित शत-शत वन्दन
इस युग के मानव होकर
इस युग के वरदान हो गए॥

आप हमारी आस मे जिन्दा हो।
आप हमारी श्वास मे जिन्दा हो॥
शरीर से भले ही विलग हो गए
पर हमारे विश्वास मे जिन्दा हो।

-मण्डलपुर (म०प्र०)

□ प्रो एच एस वर्डिया

युग-दृष्टा योगी

स्व आचार्य नानेश बीसवीं सदी के महामानव थे जिन्होंने धर्म स्थापना का उच्चतम आदर्श प्रस्तुत कर जैन धर्म में कीर्तिमान स्थापित किया। आचार्य श्री नानेश जीवन पर्यन्त सजग प्रहरी के रूप में प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समता, समीक्षण-ध्यान व तप आराधना करके अपने आत्म कल्याण के प्रति समर्पित रहे। स्व आचार्य श्री ने अपने जीवन काल में धर्म को सामाजिक परिवर्तन का अभिकरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। *पाश्चात्य विचारकों (मैक्सवेबर दुर्खइम एव टायलर) ने धर्म को सामाजिक नियंत्रण का अभिकरण माना है।* इन विचारकों के अनुसार धर्म परंपराओं का प्रहरी है परंतु आचार्य श्री ने धर्म को सामाजिक परिवर्तन व नैतिक उत्थान के लिए उपयोगी व सार्थक बनाने में अपनी धर्म-साधना को प्रमुखता प्रदान की। पूज्य गुरुदेव की मान्यता थी कि धर्म के द्वारा बुराइयों को अच्छाई में परिवर्तित किया जा सकता है, अत. दलितों व अनुसूचित जनजातियों में जहां निर्धनता, दुर्व्यसन व शोषण का ताण्डव नृत्य उनकी जीवन की नियति का प्रमुख अंग है उनमें सुधार की परम आवश्यकता है, ऐसा सोचकर व उनको सुसंस्कारित बनाने के उद्देश्य के निमित्त आचार्य श्री ने नगरों व महानगरों की अपेक्षा आचार्य काल के प्रथम दशक में अपेक्षाकृत छोटे स्थानों पर चातुर्मास किये जहां पर निम्न जाति बहुल क्षेत्रों में सघन पदयात्रा करके उनके जीवन में सुधारात्मक व सकारात्मक परिवर्तन लाने का क्रांतिकारी कार्य किया जा सके। उज्जैन, मन्दसौर, नागदा आदि (म प्र) के जन जाति बहुल क्षेत्र में आपने एक सकारात्मक ध्येय के साथ ही उनके हृदय पटल पर अमिट छाप छोड़ी। परिणामस्वरूप वहां के लाखों आदिवासियों ने शराब एवं मांस का सर्वथा त्याग कर अपनी आर्थिक स्थिति को सामान्य व उन्नत बनाया एवं भारत की मुख्य धारा में सम्मिलित हुए। *आदिवासी जो ईसाई धर्म ग्रहण कर रहे थे। जैन धर्म को अंगीकार करने लगे जिनके जीवन में हिंसा एक सामान्य नियमित कृत्य था,* वे अहिंसा के अनुयायी बन गये। सारे दुर्व्यसनों से अपने आपको मुक्त किया व जैन धर्म के प्रमुख आचार विचार उनकी जीवन शैली के प्रमुख अंग बन गये। उनके अल्प समय के प्रयास में अछूत जातियों में इतना बड़ा सुधारात्मक, सृजनात्मक एवं सकारात्मक परिवर्तन देखकर तत्कालीन मध्यप्रदेश सरकार अचंभित हो गई। प्रसिद्ध समाज शास्त्री डॉ इन्द्रदेव ने इस परिवर्तन को अलौकिक कहा। उनके अनुसार परिवर्तन विशेषकर मूल्यों में परिवर्तन का कार्य सरकार दस वर्षों में भी नहीं कर पाती, *यह* कार्य आचार्य श्री ने सहजता के साथ एक-दो वर्षों में ही करके राष्ट्र व अस्पृश्य समाज का बड़ा कल्याण किया। इनको कुव्यसनों का त्याग करवाकर उन्हें सुसंस्कारित करके एवं सम्मानित जीवन जीने की भावना जागृत कर आचार्य प्रवर ने अनुसूचित जातियों के सामाजिक परिवर्तन हेतु पदार्पण किया। खटीक व ऐसी ही कुछ अनुसूचित जातियों को अहिंसा के संस्कारों से शृंगारित करके उन्हें जीवन के परम्परागत व्यवसाय (पशु वध व्यवसाय) का त्याग करने की सकारात्मक प्रेरणा प्रदान की। इन जातियों ने जैन धर्म को सामूहिक रूप से स्वीकार किया एवं उनमें से कुछ अहिंसा के प्रचारक बन गए। *ऑगबर्न का कथन है कि अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन भौतिक संस्कृति की अपेक्षा काफी मंदगति से होते हैं।* जिन्सबर्ग की मान्यता है कि परंपराओं को समाप्त करना दुसाध्य कार्य है। परंतु स्व आचार्य नानेश ने पाश्चात्य विचारकों की इस धारणा को अपने व्यक्तित्व साधना व सतत सदुपदेशों द्वारा गलत सिद्ध कर दिखाया।

सामाजिक परिवर्तन के सार्थक वाहक के रूप म स्व आचार्य श्री ने कुव्यसनो से मुक्ति दिलवाने की दिशा म एक पहल की जो आज एक आदोलन बन गया है। स्व आचार्य श्री के सुयोग्य उत्तराधिकारी वर्तमान आचार्य श्री रामश व्यसन मुक्ति आदोलन को जन जागरण के द्वारा घर-घर पहुचा रहे हैं।

विश्व म आर्थिक, सामाजिक व अन्य विषमताए सदैव रही हैं। परिणाम स्वरूप सामाजिक शोषण को शक्ति प्राप्त होती है। १९वी-२०वी शताब्दी म साम्यवाद के द्वारा शोषणमुक्त समाज व्यवस्था की कल्पना की गई। साम्यवाद मे हिंसा व घृणा को महत्व दिया गया है एव व्यक्ति की सत्ता को नकारा गया है। इस सदी में महात्मा गाधी ने सर्वोदय सिद्धात दिया जो प्रमुख रूप से आर्थिक उद्देश्य परक था। सर्वोदय सिद्धात के द्वारा महात्मा गाधी सभी को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी होने की बात करते हैं एव शोषणमुक्त समाज सरचना की सकल्पना प्रस्तुत करते हैं। परतु आचार्य श्री ने समता समाज की सरचना का ध्येय बनाया जिसम समता मात्र आर्थिक ही नहीं होकर सामाजिक व भावात्मक भी हो। देश मे जातिया व्यवसायो के नाम पर असमानता दृष्टिगत है। समता समाज जातिगत दूरियो, आर्थिक दूरियो एव भावात्मक दूरियो को समाप्त कर बधुत्व व साहचर्य की समान भावना के विकास की एक अनवरत प्रक्रिया है। जो मानव मन व भावनाओ म शुद्ध सकारात्मक परिवर्तन का सदेश देती है। समता समाज रचना आडम्बर दिखावे, जातिगत भावना से परे सबको समान समझने का उद्देश्य प्राप्त करने की योजना है। समता समाज के कुछ मौलिक अश मात्र स विश्व मे तनाव हिंसा, अपराध मे कमी लाई जा सकती है। यह विश्व बधुत्व की प्रयोगात्मक विधि है।

इस प्रकार पूज्यवर स्व आचार्य नानेश का प्रत्येक क्षण पीडित मानवता का सुसस्कारित बनाने जातिविहीन समाज की स्थापना दुर्व्यसना से मुक्ति की दिशा मे प्रयास करने अनुसूचित जातिया व अनुसूचित जनजातिया म अहिंसक क्राति करने एव आडबर व प्रचार प्रसार स दूर हटकर आत्मकल्याण का कार्य करन म लगा, जो अपने आप मे एक उदाहरण है। वर्तमान युग म जैन साधु भी प्रचार-प्रसार से अछूते नही हैं। वहा राजनेताओ को आमत्रित किया जाता है, परतु आचार्य श्री स्व नानेश इन सबस दूर, विरल व्यक्तित्व थे जो यश-मान, सम्मान से कोसों दूर थे। जहा पर बड़े स बड़ा व्यक्तित्व व सामान्य व्यक्ति गुरुदेव के लिए बराबर होते थे। याद नही आता कि गुरुदव से सबधित किसी समारोह म किसी व्यक्ति को उसकी राजनैतिक या आर्थिक परिस्थिति के कारण निमत्रित किया गया हो। समता के सागर मे सभी समान हैं। यही आचार्य श्री का मूल मत्र था एव उन्होंने अपने जीवन काल मे अक्षरश पालन किया जो आज समस्त धार्मिक आचार्यों क लिए अनुकरणीय है।

योगी वही है जो सुख व दुख में समान व सहजता का अनुभव, व्यवहार करे। आचार्य श्री ने प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी सरलता व सहजता का जीवन जिया एव वे अपनी साधना से इच्छा मुक्त व्यक्तित्व हो गये। यह अनुभव जन्य है कि इच्छाओ से मुक्त होने पर मै शरीर नही हू, मै प्रभु का अश हू, प्रभु ही मेरे अपने हैं मेरा उन्ही के साथ नित्य सबध है। आप अपने म सतुष्ट होकर स्थितप्रज्ञ हो गये। श्रीमद्भगवद्गीता म श्रीकृष्ण कहते हैं -

प्रज हाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आतमन्ये वात्मना तुष्ट स्थित प्रज्ञस्त दोच्यते ॥
(अध्याय २ ५५)

यही कारण था कि उनके अतिम दिनो म शारीरिक वेदना व अस्वस्थता की स्थिति म भी कहीं कोई किसी प्रकार की वेदनामयी अभिव्यक्ति का आभास भी किसी को नहीं मिला। शारीरिक वेदना को वे समभाव स सहते रहे यह चिकित्सकों के लिए भी आश्चर्यजनक था। परतु गुरुदेव महान् योगी थे जो अपने अतिम श्वास तक आत्मोत्सर्ग म तल्लीन रहे ऐसे योगी को मेरा कोटिश नमन।

-७९-सी अम्बामाता स्कीम,
उदयपुर (राज)

□ डा सुरेन्द्रसिंह पोखरना
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में वरिष्ठ वैज्ञानिक

वैज्ञानिक युग के एक बड़े वैज्ञानिक

आचार्य १००८ श्री नानालाल जी महाराज साहब भौतिक रूप से आज हमारे बीच नहीं पर हमारे मन मे वे आज भी बसे हुए हैं। आचार्य भगवन के त्याग, ध्यान ज्ञान संघ के प्रति समर्पित भाव व समता दर्शन के प्रणेता के रूप मे काफी लिखा गया है तथा लिखा जाएगा परंतु इस लेख मे उनके वैज्ञानिक चिंतन के बारे मे कुछ विचार प्रस्तुत है।

इस विषय पर आगे बढ़ने से पहले मै आचार्य भगवन से मेरे संबंध के बारे में लिखना उचित समझता हू क्योंकि बालपन के जो संस्कार बनते हैं तथा बालक जो बचपन मे अपने चारों ओर के वातावरण से सीखता है वह उसके पूरे जीवन को प्रभावित करता है तथा ये संस्कार व्यक्ति को जीवन के संघर्ष मे गंभीर समस्याओ और तीव्र विरोधाभासो की स्थितियो मे सही व उचित निर्णय लेने मे सहायक होते हैं तथा महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसलिए आचार्य भगवन कई बार अपने व्याख्यानो मे बालपन के संस्कारो पर जोर देते हैं।

आचार्य श्री से मेरा संपर्क लगभग ४० वर्ष पुराना है। हमारे घर के सभी लोग स्वर्गीय आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के जीवन काल से ही संघ से जुड़े हुए हैं। जहां तक मुझे याद है मेरी माताजी बचपन मे मुझे चातुर्मास के दौरान सुबह वाली प्रार्थना मे ले जाती थी। उनका उत्साह खुशी व उमंग, आज भी मुझे खुशी देती है तथा उस समय की एक प्रार्थना 'यह सतसंग वाला प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला' से मुझे सतसंग का अर्थ तथा महत्व का पता लगा। बाद बालमन मे सोचता था कि क्या इन सभी लोगो को धर्म मे इतना आनंद आता है। बड़े होकर जब विज्ञान मे स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा बाद मे भौतिक शास्त्र मे स्नातकोत्तर तथा पी एच डी की उपाधि ली तब मै विज्ञान के गूढ़ रहस्यो को समझने लगा व धर्म को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने लगा। आचार्य श्री द्वारा दिये गये व्याख्यानो की बातो को भी मै विज्ञान की दृष्टि से देखता था तथा बाद मे जब ज्यादा आनंद आने लगा तो लगभग नियमित रूप से (मौका मिलने पर) शाम को प्रश्नोत्तर वाले कार्यक्रम मे जाने लगा।

इन शाम वाली सभाओं मे कई प्रकार के व्यक्ति आते थे तथा कई प्रकार के प्रश्न पूछे जाते थे। साधारणतया शुरू के प्रश्नो के उत्तर दूसरे साधु दिया करते थे पर आचार्य भगवन ध्यान से सुनते थे। जब कठिनाई होती थी तो आचार्य भगवन स्पष्टीकरण देते थे तथा गहराई मे जाकर असली तत्व ज्ञान का दर्शन करवाते थे। शायद ही कोई ऐसा दिन रहा हो या व्यक्ति रहा हो या कोई प्रश्न रहा हो जिसका संतोषप्रद उत्तर नहीं मिला हो। एक भौतिकी वैज्ञानिक होने के नाते मै भी कई प्रश्न करता था तथा चर्चा का आनंद लिया करता था। आज एक जिम्मेदार वैज्ञानिक होने के नाते कह सकता हू कि विज्ञान के इस युग मे आचार्य नानालाल जी म सा का चिंतन एक बड़े वैज्ञानिक से कम नहीं था।

इस उपाधि को समझने से पहले आधुनिक विज्ञान को समझना होगा जिसकी मूल कुंजी है नाप तौल की विधि। किसी भी चीज के किसी भी गुण को अगर नापा जा सके या तौला जा सके तथा हर व्यक्ति एक ही निष्कर्ष पर पहुंचे तो कहा जाता है कि यह नाप तौल वैज्ञानिक है। यह नाप तौल कोई भी व्यक्ति किसी भी जगह पर कर सकता है। विज्ञान के इस दृष्टिकोण व महत्व के कारण ही विज्ञान का गत दो शताब्दियो मे तीव्रगति से विकास हुआ

है। इसके साथ नई नई तकनीकों का विकास हुआ है। परन्तु विज्ञान के विकास की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है कि व्यक्ति अपनी शक्ति, अपने अधिकार अपनी इच्छा को अच्छी तरह से समझने लग गया है। क्या यह इस बात से मेल नहीं खाता है कि हर व्यक्ति में मूल रूप से एक ही आत्मा विद्यमान है, जो जैन दर्शन का सबसे बड़ा सिद्धांत है ?

विज्ञान के इस विकास से कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए, जैसे कि अंतरिक्ष विज्ञान, परमाणु विज्ञान, कृषि उत्पादन बढ़ाने की नयी-नयी विधियां, टेलीविजन, कम्प्यूटर स्वास्थ्य क्षेत्र में नई-नई दवायें, टेलीफोन, इलक्ट्रोनिक्स वगैरह वगैरह पर विज्ञान का यह सिर्फ एक रूप है।

विज्ञान का एक दूसरा घिनौना रूप भी हमारे सामने है। वह यह है कि इस विज्ञान के विकास के साथ मानव जाति के पास परमाणु बम, हाइड्रोजन बम जैविक व रासायनिक हथियार, दूर-दूर तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र, टैंक पनडुब्बियां, हवाई हमले करने के लिए बनाए जाने वाले नये-नये विमान व रॉकेट इत्यादि। इसके साथ ही पर्यावरण का नष्ट होना, हजारों सालों से बहने वाली नदियां घने जंगल, उपजाऊ मिट्टी, हजारों तरह की वनस्पतियां शुद्ध वायु वगैरह इस तरह नष्ट हो गये हैं या प्रभावित हुए कि इन्हें अगर रोका नहीं गया तो आगे आने वाली पीढ़ियां कभी हमें माफ नहीं करेंगी। विज्ञान के विकास के दूसरे दुष्परिणाम यह है कि एक तरफ शानदार बड़े-बड़े शहरों का विकास हुआ है, वहीं पर हजारों गांवों में कई गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। जहां शहरों में आलीशान अट्टालिकाएं बन गई हैं वहीं हजारों झुग्गी झोपड़ियां बन गई हैं। लोगों में शुद्ध प्रेम के बजाय राग द्वेष स्वार्थ, झूठा अहम बढ़ गया है। लोगों में सहनशीलता दया क्षमा वगैरह के गुण लगभग लुप्त होते जा रहे हैं।

इस विज्ञान के विकास व विनाश के बारे में आचार्य भगवन से काफी चर्चायें होती थीं तथा आनंद प्राप्त होता था। आचार्य भगवन् का हमेशा यही कहना होता था कि आज जिस भौतिक विज्ञान का पूर्ण ज्ञान का प्रतीक मान लिया गया है, वह उचित नहीं है। इससे परे सोचने की जरूरत है। आचार्य भगवन् हमेशा आत्मा के ज्ञान को ही परम ज्ञान व वास्तविक ज्ञान समझने का आग्रह करते व समझाने की कोशिश करते थे। उनका महत्वपूर्ण विषय यही होता था कि पूर्ण ज्ञान का स्रोत सिर्फ शुद्ध आत्मा ही है जो सभी ज्ञान का भंडार है तथा आत्मा के जो अनुभव व दर्शन हैं वे ही सबसे महत्वपूर्ण हैं। भौतिक ज्ञान निम्न कोटि का ज्ञान है इससे बड़ा आध्यात्मिक ज्ञान है। जब आत्मा पुद्गलों के बंधन से अपने आपको अलग कर लेती है तो अनंत ज्ञान को प्राप्त कर लेती है तथा हर प्राणी इस स्थिति को प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा उनका यह चिंतन कि आत्मा ही सबसे बड़ा सच है, यानें नाप तौल करने वाली मशीन है जो ज्ञान को, दर्शन को, अनुभवों को, विचारों को, भावनाओं को, प्रेम को, राग को द्वेष को, ईर्ष्या को तथा ऐसे कई अन्य गुणों को समझ सकती है। इसलिए आत्मा को शुद्ध करके ही व्यक्ति अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति व अनंत सुख को प्राप्त कर सकता है।

आज जब विज्ञान एक विरोधाभास की स्थिति में पड़ा हुआ है तो पश्चिम के कई बड़े-बड़े वैज्ञानिक तथा नोबल पुरस्कार विजेता भी आत्मा की बातें करने लगे हैं। ये लोग अब विश्वास करने लगे हैं कि जब तक आत्मा को अच्छी तरह नहीं समझा जाएगा तब तक विज्ञान में आगे प्रगति संभव नहीं है तथा मानव मन व मस्तिष्क को नहीं समझा जा सकता है। इन वैज्ञानिकों में प्रो. ब्रायन जासेफसन प्रो. युजन विगनर, प्रो. प्रीगार्जीन प्रो. पनरोज व प्रो. जान इक्कलीस हैं। ये सभी नोबल पुरस्कार विजेता हैं (सिर्फ पनरोज के अलावा)।

आचार्य नानालाल जी म. सा. ने जैन दर्शन के इस मूल सिद्धांत को इसी विज्ञान के युग में [illegible] से पुनर्स्थापित किया है। उनके अनुसार क्योंकि हर व्यक्ति व प्राणी में एक ही आत्मा की [illegible] की गई है इसलिए प्रयास करके [illegible] आत्मा [illegible] से पो (या हर समय पर) एक ही [illegible]

का प्रदान किया जा सकता है। आचार्य भगवन द्वारा नवकार मंत्र गिनना, एकासन व उपवास करना प्रतिक्रमण करना, सामायिक करना, मौन रखना पाच महाव्रतो का श्रावक की तरह पालन करना आदि का प्रयोग कर सत्य की तरह स्थापित करने पर काफी जोर दिया जाता था। व हमेशा इन उपदेशो पर प्रयोग करने के लिए जोर देते थे जो कि एक पूर्ण रूप से वैज्ञानिक विधि का हिस्सा है। अगर परिणाम अच्छा लगे तो उसको जीवन मे उतारो वरना छोड़ दो।

आचार्य भगवन् द्वारा स्याद्वाद, समता दर्शन निमित्त व उपादान पर जो व्याख्यान व चर्चा होती थी उनको आज भी याद कर मैं सोचता हू कि उनकी विश्लेषण क्षमता किसी भी वैज्ञानिक से कम नही थी। आज जब आचार्य भगवन हमारे बीच नही है तो उनको सही श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके बताये मार्ग व उपदेशो को तर्क की दृष्टि से प्रयोग कर वैज्ञानिक दृष्टि मे परखें तथा जिन शासन के सिद्धांतो को इस वैज्ञानिक युग मे वैज्ञानिक दृष्टि से पुनर्स्थापित करें तभी स्वयं की समाज की राष्ट्र की विश्व की जिनशासन की अच्छी तरह सेवा कर सकेंगे।

-अहमदाबाद - ३८००१५

✿

नानेश ने उपदेश दिया

शैलेष गुणधर

नानेश ने सारे जग में,
समता का उपदेश दिया।
देश का बच्चा बच्चा जागे,
यूं नानेश ने उपदेश दिया ॥१॥

अहम दांता में पाया,
नाना ने जग में नाम कमाया।
जैन धर्म की शान बढ़ाने,
नानेश ने अवतार लिया ॥२॥

भर यौवन में दीक्षा लेकर,
जग को उनने ज्ञान दिया।
देश का बच्चा बच्चा जागे
यूं नानेश ने उपदेश दिया ॥३॥

नाना गुरु का संदेश यही था,
समता मय हो सारा देश ।
इस देश मेरा के घर घर में
मत बिगाड़ो मेरा देश ॥४॥

नानेश की वाणी ने सबको,
सच्चा मार्ग दिखाया था।
समता मय सारे हों,
घर घर में पहुंचाया था ॥५॥

मिटा धर्म अज्ञान यहां से,
देवलोक को प्रस्थान किया।
देश का बच्चा बच्चा जागे,
यूं नानेश ने उपदेश दिया ॥६॥

-सम्यनगुर (यगार)

□ डा धर्मचद जैन

समता दर्शन के नायक

आचार्य श्री नानेश बीसवीं सदी के महान जैनाचार्य थे। उन्होने ३७ वर्षों तक स्थानकवासी जैन सप्रदाय के एक बहुत बड़े समुदाय का कुशल नतृत्व किया। आचार्य श्री इस धरा पर एक उद्‌दाम तेजस्विता क केन्द्र बने तथा सघ एव समाज के चारित्रिक उन्नयन मे सहायक बने।

बचपन म आचाय श्री के दर्शनो का सौभाग्य अपने ग्राम अलीगढ़ एव सवाइमाधोपुर म मिला। आचाय श्री अल्पभाषी एव बच्चो के प्रति स्नेहशील थे। उनकी तेजस्विता सयमनिष्ठा सरलता समता आदि गुणा से अनक लोग प्रभावित हुए। आचार्य श्री क दिवगत हो जाने से एक रिक्तता का आभास हाता है।

आचार्य श्री समता दर्शन क प्रबल प्रस्तोता, प्रेरक एव नायक थ। उन्होंने जन मन म समता का प्रचार किया। वे स्वय समता की प्रतिमूर्ति थे तथा समता को जीवन दर्शन बनाने की सदैव प्ररणा करत थे।

समता दर्शन मे समस्त जैन दर्शन समाहित हा जाता है। समता साधु और श्रावक दोना के जीवन म समानरूप से उपयोगी है। आचाराग सूत्र म समता म ही धर्म कहा गया है।

'आरिएहि समयाए धम्मे पवेइए'

समता से ही राग द्वेषादि कषायो पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इसलिए आचार्य श्री न समता को एक आदोलन का रूप दिया। साधु-साध्वी के लिए तो समता का पालन आजीवन सामायिक व्रती होने क कारण आवश्यक है ही किंतु श्रावक समाज म भी वे समता का व्यापक रूप देखना चाहते थ। आचार्य श्री ने इस दृष्टि स समता के तीन चरण प्रतिपादित किए-

(१) समतावादी - समता दर्शन म गहरी आस्था रखन वाल समता साधको की यह प्रथम श्रेणी है। जिसम समता दर्शन एव उसक व्यावहारिक पक्ष का समर्थन और प्रचार करन के साथ साधक अपन व्यवहार को समता क आचरण स सपन्न बनाने क लिए तत्पर रहता है।

(२) समताधारी - समता के दार्शनिक एव व्यावहारिक धरातल पर सक्रिय बनकर दृढ़ता पूर्वक चलना प्रारंभ करन वालो की यह द्वितीय श्रेणी है। समताधारी साधक समता दर्शन के सभी पक्षो को हृदयगम करक समतामय आचरण की सर्वागीणता की ओर अग्रसर होता है।

(३) समतादर्शी इस श्रेणी का साधक ससार, राष्ट्र और समाज का समतामय बनान और देखन की क्षमता प्राप्त करन लगता है। ऐसा साधक स्वहित को भी परहित म समाविष्ट करता हुआ सपूर्ण समाज म समता लाने क लिए प्रयत्नशील होता है। इस श्रेणी का साधक समस्त प्राणि वर्ग को अपनी आत्मा क तुल्य मानता है।

प्रत्यक प्राणी के प्रति मैत्री सहानुभूति एव सहयोग की भावना रखते हुए दुःखो से मुक्त हुआ समदर्शी है। यह षड्‌ जीवनिकायों म मनुष्य होकर चेतना के विकास म ही अपना विकास मानता है। राग और द्वेष पर विजय प्राप्त करन क लिए प्रयत्नशील होता है।

का प्रदर्शन किया जा सकता है। आचार्य भगवन द्वारा नवकार मंत्र गिनना एकासन व उपवास करना प्रतिक्रमण करना, सामायिक करना, मौन रखना, पाच महाव्रतो का श्रावक की तरह पालन करना आदि का प्रयोग कर सत्य की तरह स्थापित करने पर काफी जोर दिया जाता था। वे हमेशा इन उपदेशो पर प्रयोग करने के लिए जोर देते थे जो कि एक पूर्ण रूप से वैज्ञानिक विधि का हिस्सा है। अगर परिणाम अच्छा लगे तो उसको जीवन मे उतारो वरना छोड़ दो।

आचार्य भगवन् द्वारा स्याद्वाद समता दर्शन निमित्त व उपादान पर जो व्याख्यान व चर्चा होती थी उनको आज भी याद कर मै सोचता हू कि उनका विश्लेषण क्षमता किसी भी वैज्ञानिक से कम नही थी। आज जब आचार्य भगवन हमारे बीच नही है तो उनको सही श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके बताये धर्म व उपदेशो को तर्क की दृष्टि से प्रयोग कर वैज्ञानिक दृष्टि से परखें तथा जिन शासन के सिद्धांतो को इस वैज्ञानिक युग मे वैज्ञानिक दृष्टि से पुनर्स्थापित करें तभी स्वयं की समाज की, राष्ट्र की विश्व की जिनशासन की अच्छी तरह सेवा कर सकेंगे।

-अहमदाबाद - ३८००१५

नानेश ने उपदेश दिया

शैलेष गुणधर

नानेश ने सारे जग मे,
समता का उपदेश दिया।
देश का बच्चा-बच्चा जाने,
यू नानेश ने उपदेश दिया ॥१॥

जन्म दाता ने पाया,
नाना ने जग मे नाम कमाया।
जैन धर्म की शान बढाने,
नानेश ने अवतार लिया ॥२॥

भर यौवन मे दीक्षा लेकर,
जग को उसने त्याग दिया।
देश का बच्चा-बच्चा जाने
यू नानेश ने उपदेश दिया ॥३॥

नाना गुरु का संदेश यही था,
समता मय हो सारा देश।
दूर करो मेरा तेरा के चक्कर मे,
मत बिगाड़ो मेरा देश ॥४॥

नानेश की वाणी ने सबको,
सच्चा मार्ग दिखाया था।
समता मय नारे को
घर-घर मे पहुँचाया था ॥५॥

मिटा कर्म जंजाल यहां से
देवलोक को प्रस्थान किया।
देश का बच्चा बच्चा जाने,
यू नानेश ने उपदेश दिया ॥६॥

-सम्बलपुर (धमा)

□ डा धर्मचद जैन

समता दर्शन के नायक

आचार्य श्री नानेश बीसवीं सदी के महान जैनाचार्य थे। उन्होने ३७ वर्षों तक स्थानकवासी जैन सप्रदाय के एक बहुत बड़े समुदाय का कुशल नेतृत्व किया। आचार्य श्री इस धरा पर एक उद्दाम तेजस्विता के केन्द्र बने तथा सघ एव समाज के चारित्रिक उन्नयन म सहायक बने।

बचपन म आचार्य श्री के दर्शनो का सौभाग्य अपने ग्राम अलीगढ़ एव सवाईमाधोपुर म मिला। आचार्य श्री अल्पभाषी एव बच्चो के प्रति स्नेहशील थे। उनकी तेजस्विता, सयमनिष्ठा सरलता, समता आदि गुणो से अनेक लोग प्रभावित हुए। आचार्य श्री के दिवगत हो जाने से एक रिक्तता का आभास होता है।

आचार्य श्री समता दर्शन के प्रबल प्रस्तोता, प्रेरक एव नायक थे। उन्होंने जन-मन म समता का प्रचार किया। वे स्वय समता की प्रतिमूर्ति थे तथा समता को जीवन दर्शन बनाने की सदैव प्रेरणा करते थे।

समता दर्शन म समस्त जैन दर्शन समाहित हो जाता है। समता साधु और श्रावक दोनो के जीवन म समानरूप से उपयोगी है। आचाराग सूत्र मे समता म ही धर्म कहा गया है।

'आरिएहिं समयाए धम्मे पवेइए'

समता से ही राग, द्वेषादि कषायो पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इसलिए आचार्य श्री ने समता को एक आदोलन का रूप दिया। साधु साध्वी के लिए तो समता का पालन आजीवन सामायिक व्रती होने के कारण आवश्यक है ही किंतु श्रावक समाज म भी वे समता का व्यापक रूप देखना चाहते थे। आचार्य श्री ने इस दृष्टि से समता के तीन चरण प्रतिपादित किए

(१) समतावादी   समता दर्शन म गहरी आस्था रखने वाले समता साधको की यह प्रथम श्रेणी है। जिसमे समता दर्शन एव उसके व्यावहारिक पक्ष का समर्थन और प्रचार करने के साथ साधक अपने व्यवहार को समता के आचरण से सपन्न बनाने के लिए तत्पर रहता है।

(२) समताधारी   समता के दार्शनिक एव व्यावहारिक धरातल पर सक्रिय बनकर दृढ़ता पूर्वक चलना प्रारंभ करने वालो की यह द्वितीय श्रेणी है। समताधारी साधक समता दर्शन के सभी पक्षो को हृदयगम करके समतामय आचरण की सर्वांगीणता की ओर अग्रसर होता है।

(३) समतादर्शी   इस श्रेणी का साधक ससार राष्ट्र और समाज को समतामूलक बनाने और देखने की क्षमता प्राप्त करने लगता है। ऐसा साधक स्वहित को भी परहित मे समाविष्ट करता हुआ सम्पूर्ण समाज म समता लाने के लिए प्रयत्नशील होता है। इस श्रेणी का साधक समस्त प्राणियो को अपनी आत्मा के तुल्य समझता है।

प्रत्येक प्राणी के प्रति सौहार्द सहानुभूति एव सहयोग की भावना रखते हुए दूसरो के सुख दुःख समझता है। यह जड़ पदार्थों से ममत्व हटाकर चेतना के विकास म ही अपना विकास मानता है। राग और द्वेष पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होता है।

का प्रदर्शन किया जा सकता है। आचार्य भगवन द्वारा नवकार मंत्र गिनना, एकासन व उपवास करना, प्रतिक्रमण करना, सामायिक करना, मौन रखना पाच महाव्रतो का श्रावक की तरह पालन करना आदि का प्रयोग कर सत्य की तरह स्थापित करने पर काफी जोर दिया जाता था। वे हमेशा इन उपदेशो पर प्रयोग करने के लिए जोर देते थे जो कि एक पूर्ण रूप से वैज्ञानिक विधि का हिस्सा है। अगर परिणाम अच्छा लगे तो उसको जीवन मे उतारो वरना छोड़ दो।

आचार्य भगवन् द्वारा स्याद्वाद, समता दर्शन, निमित्त व उपादान पर जो व्याख्यान व चर्चा होती थी उनको आज भी याद कर मै सोचता हू कि उनकी विश्लेषण क्षमता किसी भी वैज्ञानिक से कम नहीं थी। आज जब आचार्य भगवन हमारे बीच नही है तो उनको सही श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके बताये मार्ग व उपदेशो को तर्क की दृष्टि से प्रयोग कर वैज्ञानिक दृष्टि से परखें तथा जिन शासन के सिद्धातो को इस वैज्ञानिक युग मे वैज्ञानिक दृष्टि से पुनर्स्थापित करे तभी स्वय की समाज की राष्ट्र की, विश्व की जिनशासन की अच्छी तरह सेवा कर सकेगे।

-अहमदाबाद - ३८००१५

नानेश ने उपदेश दिया

शैलेष गुणधर

नानेश ने सारे जग मे,
समता का उपदेश दिया।
देश का बच्चा-बच्चा जागे,
यू नानेश ने उपदेश दिया ॥१॥

जन्म दांता मे पाया,
नाना ने जग मे नाम कमाया।
जैन धर्म की शान बढाने,
नानेश ने अवतार लिया ॥२॥

भर यौवन मे दीक्षा लेकर,
जग को उसने त्याग दिया।
देश का बच्चा-बच्चा जागे,
यू नानेश ने उपदेश दिया ॥३॥

नाना गुरु का संदेश यही था,
समता मय हो सारा देश।
इस तेरा मेरा के चक्कर मे,
मत बिगाड़ो मेरा देश ॥४॥

नानेश की वाणी ने सबको,
सच्चा मार्ग दिखाया था।
समता मय नारे को,
घर-घर मे पहुँचाया था ॥५॥

मिटा कर्म जंजाल यहां से,
देवलोक को प्रस्थान किया।
देश का बच्चा-बच्चा जागे
यू नानेश ने उपदेश दिया ॥६॥

-सम्यतपुर (मन्दर)

□ वीरेन्द्रसिह लोढा
पूर्व कोषाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

जीवन जैसा मैंने देखा

आचार्य प्रवर की कथनी और करनी म समरूपता थी। वे सरलता, सहजता, एव सादगी क प्रतिमूर्ति थे। मै यो कहू कि वे सभी गुण जो एक महापुरुष म होने चाहिए, आचार्य दव म विद्यमान थे, तो अतिशयोक्ति नही हागी। उन्होने समता दर्शन की सैद्धान्तिक व्याख्या ही नहीं की, अपितु उसे व्यावहारिक स्वजीवन म साकार कर दिखाया।

प्राय कुछ महानुभाव यह कहत हैं कि आचार्य श्री से मगलिक सुनना ता दूर उनके दशन होना ही बहुत कठिन कार्य है। वे अपनो के अलावा दर्शन दन भी नही जात। वर्ष १९८१ म जब स्वर्गीय आचाय श्री का उदयपुर म चातुर्मास था, उस समय की एक घटना याद आती है।

मरे पड़ोस म एक स्वधर्मी भाई जो सिघटवाड़ियो की सेहरी मे रहते थे उनक यहा ८ की तपस्या का प्रसग था गुरुदव उधर से पधारे, भाई ने विनती की परतु गुरुदव नहीं पधार। दिन का ही उक्त भाइ ने यह चचा फैला दी कि नानालाल जी म सा हम गरीबो क यहा नही आते है, और इस चर्चा ने राई का पहाड़ बना दिया। मै रात्रि को गुरुदेव की सेवा मे पहुचा और निवदन किया कि अमुक भाई ऐसा बोल रहा है कि आप उनके मकान पर नही पधार। गुरुदेव ने फरमाया कि आपका कहना सही है, मै जब कभी मौका मिलता है, दशन दन चला जाता हू। परतु आप जानते हैं कि यदि मै बिना नियम क चला जाऊगा तो सम्भव है मै कुछ जगह जा पाऊ और कुछ जगह नही तो आप लोग ही कहग कि म सा अमुक पैसे वाले के यहा पधारे, हमार यहा नहीं अमुक नता क यहा पधार और हमारे यहा नही। जबकि मरे लिए गरीब, अमीर, नता, साधारण आदमी सभी बराबर हैं। इन सब बाता मे एकरूपता लाने के लिए मैने अपने ११ नियम बना रखे हैं कि जा कोई भी इन नियमा म स एक भी नियम का पालन करेगा उसके यहा मै निसकोच चला जाऊगा। मुझे ११ नियमो की भी जानकारी आचार्य प्रवर न दी। दूसरे दिन मै उन स्वधर्मी बधुओ के मकान पर गया और सारी जानकारी उनको दी ता व बहुत खुश हुए। और कहा कि यदि आचार्य भगवन का ऐसा नियम है तो मै बहुत हर्षित हू, और कोशिश करूगा कि आचाय श्री क बताये हुए नियमो म से कोई एक नियम लकर लाभान्वित होऊँ।

इसी प्रकार की एक घटना जाधपुर की है। आचार्य भगवान जाधपुर विराज रह थे शाम का आहार पानी का समय था, मै भी वहीं था, लगभग सवा पाच बजे उदयपुर स कुछ दशनार्थी आचाय श्री के दर्शन करने स्थानक में पहुच। उस सघ मे स्थानकवासी समाज उदयपुर के कई मुख्य श्रावक एव प्रतिष्ठित व्यक्ति थ। वहा पहुच और आचार्य श्री से मगलिक सुनने की बात, वहा खड़ व्यक्ति से जो जोधपुर का ही था कही ता उस भाइ ने सहज भाव स कहा कि अभी आहार हा रहा है अत थोड़ी दर बाद मगलिक हा सकगी। आगन्तुक श्रावकों म स कुछ ने कहा कि यहा तो श्रीनाथ जी के जिस तरह पट खुलते है उसी तरह दशन हात है। हम तो आगे जाना है यहा ठहरने से कोई फायदा नहीं है।

जब मैंने ये शब्द सुने तो मै तत्काल उन श्रावको के पास पहुचा और शान्ति स निवदन किया कि आपकी भावना आचार्य श्री के पास पहुची नही है अत रुक मै आचार्य श्री को निवेदन करु और मुझे विश्वास है कि आपकी

आचार्य श्री ने समता समाज के नाम से समतामय समाज की भी परिकल्पना की। वे व्यक्ति और समाज के हितो मे तालमेल बिठाकर समता के धरातल पर जन जन का विकास करने के गुरुतर कार्य मे सलग्न थे। आचार्य श्री समता के व्यावहारिक पक्ष पर भी बल देते थे। स्वहित एव परहित के बीच समन्वय और आत्मतुल्यता के सिद्धात को उन्होने सदैव आवश्यक माना। जैन धर्म के विभिन्न पक्षो को उन्होने समता का दार्शनिक विवेचन करते हुए समता मे समाहित कर लिया। आचार्य श्री ने समता के दार्शनिक स्वरूप को चार सोपानो मे प्रस्तुत किया- १ सिद्धात दर्शन २ जीवन दर्शन ३ आत्म दर्शन ४ परमात्म दर्शन।

समता दर्शन को आचार्य श्री ने अपने जीवन मे भी अपनाया। बिना किसी भेदभाव के उन्होने खटीक, बलाई आदि जातियो के लोगो का धर्मपाल बनाकर जैन धर्म मे दीक्षित किया। उनके प्रभावी प्रवचनो के माध्यम से इन जातियो के हजारो लोगो ने व्यसनो का त्याग कर धार्मिक संस्कार ग्रहण किया। आचार्य श्री ने आत्म-समीक्षण और समीक्षण ध्यान पर भी बड़ा बल दिया। आत्म समीक्षण के उन्होने सूत्र दिए

१ मै चैतन्यदेव हू। मुझे सोचना है कि मै कहा से आया हू, किसलिए आया हू?

२ मै प्रबुद्ध हू, सदा जागृत हू। मुझे सोचना है कि मेरा अपना क्या है और क्या मेरा नहीं है?

३ मै विज्ञाता हू, द्रष्टा हू। मुझे सोचना है कि मुझे किन पर श्रद्धा रखनी है और कौन से सिद्धात अपनाने है?

४ मै सुज्ञ हू, सवेदनशील हू। मुझे सोचना है कि मेरा मानस, मेरी वाणी और मेरे कार्य तुच्छ भावो से ग्रस्त क्यो है?

५ मै समदर्शी हू, ज्योतिर्मय हू। मुझे सोचना है कि मेरा मन कहा कहा घूमता है, वचन कैसे कैसे निकलता है और काया किधर-किधर भटकती है?

६ मै पराक्रमी हू, और पुरुषार्थी हू। मुझे सोचना है कि मै क्या कर रहा हू और मुझे क्या करना चाहिए?

७ मै परम प्रतापी सर्वशक्तिमान हू। मुझे सोचना है कि मै बधना मे क्यो बधा हू, मेरी मुक्ति का मार्ग किधर है?

८ मै ज्ञानपुज हू, सफलयोगी हू। मुझे सोचना है कि मुझे अमिट शाति क्यो नही अक्षय सुख क्यो नहीं प्राप्त होता?

९ मै शुद्ध बुद्ध निरजन हू। मुझे सोचना है कि मूलस्वरूप क्या है और उसे मै प्राप्त कैसे करू?

आत्म-समीक्षण के ये सूत्र यदि कोई साधक प्रतिदिन अपने जीवन मे अपनाए तो निश्चित रूप से वह आत्म-स्वरूप को प्राप्त कर अनत ज्ञान, दर्शन आदि का अनुभव कर सकता है।

आत्म समीक्षण की सफलता के लिए समीक्षण ध्यान उपयोगी है। आचार्य श्री ने ध्यान की यह प्रयोगात्मक विधि मन को एकाग्र कर द्रष्टा भाव जागृत करने की दृष्टि से विकसित की। समीक्षण ध्यान की प्रक्रिया मे श्वास पर ध्यान करते हुए मन को शात बनाया जाता है तथा फिर अपने द्वारा किए कृत्यो की समीक्षा की जाती है।

आचार्य श्री का समाज को महान योगदान रहा है। वीर सघ की स्थापना साधु एव गृहस्थ के बीच का प्रचारक वर्ग तैयार करने की दृष्टि से की गई थी। इस योजना में निवृत्ति स्वाध्याय साधना और सेवा के स्तम्भ स्वीकार किए गए। आचार्य श्री ने समाज को प्रेरणा प्रदान की तथा निर्व्यसनता सघ और समता के संस्कार दिए, वे अपने आप मे सघ के लिए वरदान हैं। उन महापुरुष का स्मरण करना हमारी चेतना को असत् से सत् की ओर ले जाने मे सहायक है।

-द्वितीय पावटा सी रोड, जोधपुर

□ वीरेन्द्रसिह लोढा
पूर्व कोषाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

जीवन जैसा मैंने देखा

आचार्य प्रवर की कथनी और करनी मे समरूपता थी। वे सरलता, सहजता, एव सादगी के प्रतिमूर्ति थे। मै यो कहू कि वे सभी गुण जो एक महापुरुष मे होने चाहिए, आचार्य देव मे विद्यमान थे, तो अतिशयोक्ति नही होगी। उन्होने समता दर्शन की सैद्धान्तिक व्याख्या ही नही की, अपितु उसे व्यावहारिक स्वजीवन मे साकार कर दिखाया।

प्राय कुछ महानुभाव यह कहते हैं कि आचार्य श्री से मगलिक सुनना तो दूर उनके दर्शन होना ही बहुत कठिन कार्य है। वे अपनो के अलावा दर्शन देने भी नही जाते। वर्ष १९८१ मे जब स्वर्गीय आचार्य श्री का उदयपुर मे चातुर्मास था उस समय की एक घटना याद आती है।

मेरे पड़ोस मे एक स्वधर्मी भाई जो सिघटवाड़ियो की सहरी मे रहते थे उनके यहा ८ की तपस्या का प्रसग था गुरुदेव उधर से पधारे, भाई ने विनती की परतु गुरुदेव नही पधारे। दिन का ही उक्त भाई ने यह चर्चा फैला दी कि नानालाल जी म सा हम गरीबो के यहा नही आते है, और इस चर्चा ने राई का पहाड़ बना दिया। मै रात्रि को गुरुदेव की सेवा मे पहुचा और निवेदन किया कि अमुक भाई ऐसा बोल रहा है कि आप उनके मकान पर नही पधारे। गुरुदेव ने फरमाया कि आपका कहना सही है, मै जब कभी मौका मिलता है, दर्शन देने चला जाता हू। परतु आप जानते हैं कि यदि मै बिना नियम के चला जाऊगा तो सम्भव है मै कुछ जगह जा पाऊ और कुछ जगह नही तो आप लोग ही कहेगे कि म सा अमुक पैसे वाले के यहा पधारे हमारे यहा नही अमुक नेता के यहा पधारे और हमारे यहा नही। जबकि मेरे लिए गरीब, अमीर, नेता, साधारण आदमी सभी बराबर हैं। इन सब बातो मे एकरूपता लाने के लिए मैने अपने ११ नियम बना रखे है कि जो कोई भी इन नियमो मे से एक भी नियम का पालन करेगा उसके यहा मै निसकोच चला जाऊगा। मुझे ११ नियमो की भी जानकारी आचार्य प्रवर ने दी। दूसरे दिन मै उन स्वधर्मी बधुओ के मकान पर गया और सारी जानकारी उनको दी तो वे बहुत खुश हुए। और कहा कि यदि आचार्य भगवन का ऐसा नियम है तो मै बहुत हर्षित हू, और कोशिश करूगा कि आचार्य श्री के बताये हुए नियमो मे से कोई एक नियम लेकर लाभान्वित होऊं।

इसी प्रकार की एक घटना जोधपुर की है। आचार्य भगवान जोधपुर विराज रहे थे शाम का आहार-पानी का समय था, मै भी वहीं था, लगभग सवा पाच बजे उदयपुर से कुछ दर्शनार्थी आचार्य श्री के दर्शन करने मन्दिर में पहुचे। उस सघ मे स्थानकवासी समाज उदयपुर के कई सुश्रावक एव प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। वहा पहुचे और आचार्य श्री से मगलिक सुनने की बात वहा खड़े व्यक्ति मे जो जोधपुर का ही था कही तो उस भाई ने [illegible] से कहा कि- अभी आहार हो रहा है, अत थोड़ी देर बाद मगलिक हो सकेगी। आगन्तुक [illegible] मे से कुछ ने कहा कि यहा तो श्रीनाथ जी के जिस तरह पट खुलते है उसी तरह दर्शन होते है। हम तो आज जाना है यहा ठहरने से कोई फायदा नही है।

जब मैने ये शब्द सुने तो मै तत्काल उन श्रावको के पास पहुचा और [illegible] से [illegible] किया कि आपकी भावना आचार्य श्री के पास पहुची नही है अतः [illegible] मै आचार्य श्री को निवेदन करूं और मुझे [illegible] है कि आपकी

भावना क अनुरूप हो सकता है। जब मैने यह बात कही तो श्रावकगण शात हुए और मै तत्काल आचार्य श्री के पास जो ऊपर मजिर म आहार कर रहे थे, पहुचा और निवेदन किया कि उदयपुर के श्रावक लोग आये हैं और मगलिक सुनना चाहते हैं तो तत्काल गुरुदेव याहर पधारे और श्रावको को सबोधित करते हुए फरमाया कि जब मै आवश्यक कार्य मे लगा रहता हू तो कदाचित मगलिक या दर्शन नही हो सकते हैं फिर भी यदि उक्त समय में मुझे सूचना मिल जाती है तो मै कोशिश करता हू कि आपकी भावना को पूरी करू। अभी-अभी मुथ लोढ़ा जी से यह बात सुनने को मिली कि आप लोग मगलिक सुनने आये और मगलिक नही सुना रहे हैं परतु आपकी भावना मेरे तक पहुची नही तो कैसे क्या बात हो सकती है और जैसे ही मुझे समाचार मिला मै उपस्थित हो गया। अपने दिल मे ऐसा कोई विचार नही रखे यह कहकर मगलिक सुना दी।

आचार्य श्री हमेशा हर व्यक्ति को सुनते थे। तत्काल उसका जवाब देन का प्रयास करते थे। कुछ ऐसे मामलों मे जिसम शासन की गरिमा की बात होती ता तत्काल जवाब नही देकर समय आने पर जानकारी प्राप्त करके उचित जवाब दिला देते थे। मैंने प्राय यह देखा कि जब कोइ श्रावक बाहर से आता और उसके चेहरे से ऐसा लगता था कि वह बहुत सारी समस्याए लेकर आया है आवेश म भी है परतु जैसे ही वह आचार्य श्री की सवा म पहुचता आचार्य श्री के सामने अपनी बात रखता और जो समाधान प्राप्त होता उससे वह एकदम शात हो जाता था। जब वह वापस बाहर आता तो वह सताप व्यक्त करता हुआ पाया जाता। इतना ही नहीं यदि कोई व्यक्ति श्रावक या श्राविका शासन के प्रतिकूल कार्य करत ता उचित तरीके से समझाकर समाधान फरमात। साधु-साध्वियां को भी जहा कहीं कमी आती, उन्हे उचित प्रायश्चित देने म भी नही हिचकिचाते।

आचार्य श्री क व्यक्तित्व के बारे म देखा कि वे सुनते सबकी थे परतु करते अपने मन की थे। वर्ष १९९८ का वर्षावास पूर्ण कर गुरुदेव उदयपुर स विहार करते हुए दरोली गाव पधारे। (उदयपुर से लगभग ३० कि मी दूरी) और वहा स्वास्थ्य ठीक नही रहा अधिकतर लोगो की भावना थी (विशेष तौर से मालवा क्षेत्र के) कि वे मालवा पधारें और इसी बात को ध्यान मे रखते हुए स्थवीर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म सा दरोली से आग भटेवर पधार चुके थे परतु जैस ही आचार्य श्री का दरोली से विहार कर दरोली गाव की मेन सड़क जहा से एक सड़क भटेवर की तरफ जाती है और दूसरी उदयपुर की तरफ। तुरत आचार्य श्री ने कहा कि जिधर उदयपुर की सड़क जाती है, उधर चलें और भी ऐसे कई प्रसग हैं चाहे वह नोखा चातुर्मास का हो, बीकानेर से विहार का प्रसग हो सब जगह आचार्य श्री सुनते सब की थे, पर करते वही थे जो उनकी अतरात्मा कहती थी। इसी प्रकार उदयपुर विराजने के समय में भी विशेषकर अतिम समय के पिछले चार महीने मे मै कभी डाक्टर साहब को लाता भी था तो आचार्य प्रवर की इच्छा होती तो बी पी नाड़ी आदि की जाच, खून की जाच करने देते अन्यथा हाथ नहीं लगाने देते। मुझे कई बार फरमाया करते कि लोढ़ा जी आपकी भावना अच्छी है परतु अब इन सबकी कोई आवश्यकता नही है।

वास्तव म इस भौतिकवादी युग मे भी अध्यात्म साधना के सर्वोच्च शिखर पर विराजित गुरु को पाकर समस्त सघ गौरवान्वित था व अपन आपको धन्य मानता था। अब गुरुदेव का पार्थिव शरीर विद्यमान नही तथापि उनका आदर्श माग का आगे चलाने वाल उन्हीं के द्वारा स्थापित वर्तमान आचार्य प्रवर व्यसन मुक्ति के प्रेरक आचार्य पूज्य श्री १००८ श्री रामलाल जी म सा हैं। हम सभी उनकी छत्र छाया में अपने जीवन को अध्यात्म की ओर अग्रसर करते हुए बढ़ेगे यही आशा और विश्वास है।

-धानमडी, उदयपुर

□ डा० मधु एस० जैन

उनके आदर्श आज भी जिंदा हैं

राष्ट्र की समृद्धि का आधार उस देश क नागरिको की विनाशक सम्पत्ति नही और न ही उनका आधार उस देश क सुविस्तृत राजमार्ग है। उस दश की प्रोद्यौगिकी के ऊचे-ऊच सयत्र भी नही बल्कि राष्ट्र की वास्तविक प्रगति का यथार्थ आधार है उस देश के निवासियो का निर्मल चारित्र। हमारा सौभाग्य है कि दश की लब्ध आत्माओ न अपने महनीय चारित्र से पृथ्वी के जन जन को शिक्षा प्रदान की है जैसा कि कहा गया है -

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मवन
स्व चरित्र शिक्षेरन पृथित्या सर्वमानवा ॥

भारतीय चरित्र नायको की पक्ति मे अग्रणी, सरस्वती के महान आराधक ज्ञानपुष्ट होकर भी आत्मपुष्ट सत शिरोमणि आचार्यवर्य पूज्य श्री नानालाल जी महाराज साहब अपन पद विहार से इस जगती तल को पवित्र कर रह थ। इन महान आचार्य श्री के द्वारा भारतीय सस्कृति एव श्रमण परम्परा पर किए गये सवव्यापी उपकारो एव अवदाना की अभिव्यक्ति करन की सामर्थ्य शब्दो मे नही है। आचार्य श्री का व्यक्तित्व इतना महान एव असीम था कि अनक शोध ग्रथ लिखकर भी उसकी सीमा और गहराई की थाह का अकन नही किया जा सकता।

आचार्य नानेश के मुझे प्रथम बार दर्शन का अवसर उनके उदयरामसर चातुर्मास क समय पर हुआ। उस समय उनके उदर मे जबरदस्त दर्द था। मुझे पितृ तुल्य श्री धूडमल डागा उनके पास ले गये। प्रथम दिन मैंने उनका मात्र निरीक्षण किया और कहा आप मात्र एक खुराक स ही ठीक हो जाएगे। उनको मेरे इस कथन पर विश्वास नही हुआ और उन्होने चुप्पी साध ली। शाम को डॉ हेमचन्द्र सक्सेना उन्ह देखन आए तो उन्होने मेरे बारे म उनस वार्ता की। डॉ सक्सेना ने मेरे बारे म उन्हें आश्वस्त किया तो अगले दिन श्री डागा जी पुन मुझे को लेने आए। मै होम्योपैथिक दवा की मात्र एक पुड़िया अपने साथ ले गया। आचार्य श्री से विचार विमर्श क पश्चात् उसी समय मैंने पुड़िया की दवा उन्हें दे दी निसदेह भगवान की कृपा से उन्हे आधे घंटे पश्चात् ही काफी लाभ हो गया। तब से आचार्य श्री का वरदहस्त सदैव मेरे ऊपर रहा। फिर उनका चातुर्मास चाहे देशनोक मे हो या नोखा बीकानेर भीलवाड़ा या उदयपुर म मेरे स वे सलाह अवश्य ले लेते थे। मुनि रानेश जी उनके स्वास्थ्य की विशेष देख रेख म रहत थ। अत वे मेरे से सदैव जानकारी प्राप्त करते रहते थे।

मै सघ के काफी साधु-साध्वियो के सपर्क मे आया चूकि आयुर्वेदिक दवाओ का निर्माण भी करता हू अत साधु साध्वियां अपनी ज्ञान पिपासा को मेरे स शान्त अवश्य करत रहत थ।

मै उस समय धन्य हो गया जब आचार्य श्री बीकानेर स अपनी आखो क इलाज क लिए पी बी एम अस्पताल पधार रह थे। रास्ते मे मेरा निवास था। जब आचार्य श्री को ज्ञात हुआ कि मेरा निवास गली क नुक्कड म है तो उन्होंने स्वय मेरे निवास को उद्धार करन का मन बना लिया और कुछ क्षण क लिए मेरे निवास में विश्राम किया। उनके पीछे चल रहा विशाल जन समूह भी आश्चर्यचकित रह गया। श्री जयचन्दलाल सुखानी ने उपस्थित जन समूह की जिज्ञासा का मधुर शब्दो म निराकरण किया।

आचार्य श्री सेठिया कोटड़ी, बीकानेर मे स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे, मै प्राय उनके उपचारार्थ जाता रहता था। प्रसग महावीर जयन्ति का है। उस समय आचार्य श्री का स्वास्थ्य अनुकूल नही था उन्हे खड़े होने व चलने मे तकलीफ होती थी। ऐसे समय हमारे दिगम्बर जैन समाज द्वारा निकाली गई भगवान महावीर की शोभायात्रा जब सेठिया कोटड़ी के पास पहुची तो मैंने आचार्य श्री से दिगम्बर जैन समाज के मत्री होने के कारण शोभायात्रा को मगलिक हेतु निवेदन किया। उपस्थित श्रावको ने आचार्य श्री से निवेदन किया आप ऊपर खिड़की से ही शोभायात्रा को मगलिक फरमा दे परतु मेरे मुख पर जब उनकी दृष्टि पड़ी तो मेरा अनुनय वे अस्वीकार नही कर सके। नीचे मुख्य द्वार तक आकर अपना आशीर्वचन एव मगलिक देकर हमे कृतार्थ किया।

मनुष्य जीवन केवल सकुचित स्वार्थों के साधन - मात्र के लिए ही नही होता। ऐसे लोगो को कोई स्मरण भी नहीं करता। प्रात स्मरणीय आचार्य श्री नानेश ने आविर्भाव से लेकर तिरोभाव तक सपूर्ण जीवन साधना, परोपकार एव समता भाव से समाज के उत्थान मे ही समर्पित कर दी। इसलिए मेरी यह भावाञ्जलि है

तुम्हे मेहरूम कहता कौन, तुम जिन्दा के जिन्दा हो।
तुम्हारी नेकिया बाकी, तुम्हारी खूबिया बाकी ॥

उनकी स्मृति मेरे मन मस्तिष्क मे अपना स्थान बना चुकी है। उनकी महती कृपा मै आज भी महसूस करता हू। दिनाक २७ अक्टूबर ९९ को समाधि पूर्वक उदयपुर नगरी मे उन्होने श्रेष्ठ साहस का परिचय देकर मृत्यु को अपना कर्त्तव्य करने का अवसर प्रदान किया शान्त चित्त से और हो गये मृत्युजय। ऐसे प्रात स्मरणीय महान् सत को कोटि कोटि वन्दन।

-बीकानेर

मिल जाए नानेश गुरु

किरण पितलिया

नाना गुरु से मिलने को मेरा दिल ये बेगाना है।
मिल जाए नाना गुरु मेरा दिल ये दीवाना है ॥

नोखा मे ढूढा तुझे दाता मैं ढूढा तुझे।
बीकानेर के स्थानक मे गुरुदेव का ठिकाना है ॥१॥

गगा मे ढूढा तुझे, यमुना मे ढूढा तुझे।
दाता की नगिर्यो मे, नानेश गुरु का ठिकाना है ॥२॥

मन्दिर मे ढूढा तुझे, मस्जिद में ढूढा तुझे।
मेरे हृदय में नानेश गुरु का ठिकाना है ॥३॥

-मोरवन डेम

□ डा० अनिलकुमार जैन

बहु आयामी एव क्रातिकारी

कोई भी व्यक्ति न जन्म स महान् होता है न छोटा। छोट-बड़े अथवा ऊच-नीच का आरोप व्यक्ति क कार्यो-कर्मो क आधार पर होता है। जैन धर्म की यह स्पष्ट घोषणा है कि अपने कुत्सित कर्मो-कार्यो का परित्याग करक कोई भी व्यक्ति महान् बन सकता है। जैन धर्म का संदेश है कि कोई भी व्यक्ति अपन बुरे कार्यो को छोड़कर जैन कहलाने का अधिकारी हो सकता है।

ये महान् विचार है जैनाचार्य श्री नानेश जी के। उन्होने इन विचारो को मात्र विचार तक ही सीमित नही रखा बल्कि धर्मपाल अभियान का सूत्रपात करके उन्होने इन विचारो का कार्यरूप मे भी परिणत कर दिखाया। आचार्य श्री जवाहरलाल जी एव आचार्य श्री गणेशीलाल जी द्वारा प्रदत्त ज्ञान को और अधिक परिष्कृत करते हुए आचार्य श्री नानेश जी सन् १९६४ म मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र मे विहार कर रहे थे वही उन्हे बलाई समुदाय के लोगो के बारे मे पता चला। आचार्य श्री को इस कार्य म सफलता मिलना अवश्यभावी है बस मात्र इसे प्रारभ करने की आवश्यकता है। २३ मार्च सन् १९६४ के दिन नागदा के निकट बनवना से दो मील दूर स्थित गुराडिया ग्राम मे आचार्य श्री नानेश ने एक क्रातिकारी मत्रोच्चारण किया धर्मपाल। फिर तो एक क बाद अनेक लोग इस कार्य म जुड़ते चल गय। यह अभियान सफलता पूर्वक चला तथा इसी का परिणाम यह रहा कि अछूत कहे जाने वाले लगभग एक लाख बलाइयो ने सप्त व्यसन का परित्याग कर दिया। आचार्य श्री न उन्ह नैतिक आचरण क लिए दीक्षित कर दिया। इतनी बड़ी सख्या म लोगो को व्यसन मुक्त करा पाना वह भी मात्र एक व्यक्ति की प्रेरणा एव मार्ग दर्शन से यह एक महान् एतिहासिक कार्य है।

यहा एक बात यह स्पष्ट कर लेनी चाहिए कि इस अभियान का उद्देश्य लोगो को शाकाहार एव व्यसन मुक्त जीवन की ओर प्रेरित कराना था। यह कोई धर्मान्तरण का कार्य नही था। हाँ यदि लोग आचार्य श्री से प्रभावित होकर या जैन धर्म की विशेषताओ स प्रभावित होकर जैन धर्म अगीकार करते है तो इनका स्वागत है।

कुछ वर्षो पूर्व धर्मपाल अभियान जैसा काय दिगम्बर मुनि उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी ने बगाल बिहार उड़ीसा मे फैली हुई सराक जाति के मध्य किया। सराक जति मूलत जैन धर्मानुयायी रही है लेकिन विभिन्न कारणो स यह जैन समाज की मुख्य धारा स अलग हो गइ। उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी न उन्हे जैन समाज की मुख्य धारा स जोड़न का भगीरथ प्रयास किया और व उसन सफल भी हुए। हालाकि सराक जाति क मध्य कार्य प्रारभ करने वालो मे स्व प बाबूलाल जी जमादार थे लेकिन इस कार्य का अधिक गति प्राप्त हो पायी उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी म द्वारा।

वस्तुत धर्मपाल अभियान जैसे जितने भी कार्य है व अनक प्रतिष्ठाओ अजन शलाकाओ एव पच कल्याणको स कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। व्यसन मुक्त कराने क इस प्रकार क अभियानो को हम स्थिर नहीं कर लेना चाहिए। उन्हें हमेशा गतिशील बनाए रखना चाहिए।

आचार्य श्री नानेश एक बहुआयामी एव क्रातिकारी व्यक्ति थे। धर्मपाल अभियान उनका [illegible] था। उन्होने समाज म व्याप्त कुरीतियो के विरुद्ध भी जन चेतना जागृत की। दहेज प्रथा मृत्युभोज तथा बाल विवाह जैसी

कुरीतियो के वे सख्त खिलाफ थे । तन्त्र मन्त्र में इनका कोई विश्वास नहीं था । वे कार्य करने मे विश्वास रखते थे। इसी के फलस्वरूप अधिकतर उनके अनुयायी अंध-विश्वास एव कुरीतियो से दूर है । यह बात आज छिपी नहीं है कि जैन समाज में विशेषकर साधु वर्ग मे दिन-प्रतिदिन शिथिलाचार बढ़ता जा रहा है । यह कहा जाकर रुकेगा कुछ कहा नही जा सकता । मेरा ऐसा मानना है कि यदि आचार्य श्री कुछ और वर्ष जीवित रहते तो निश्चित तौर पर वे वर्तमान परिस्थितियो मे बाल-दीक्षाओ पर भी अवश्य पुनर्विचार करते ।

विज्ञान और धर्म के सबध मे आचार्य श्री का स्पष्ट मत था कि विज्ञान और धर्म एक दूसरे के पूरक है । वे विज्ञान को हेय नही मानते थे। उनका मानना था कि विज्ञान को धर्म की तथा धर्म का विज्ञान की कसौटी पर कसा जाना चाहिए । जो खरा है उसे किसी भी कसौटी पर कसो, उससे क्या फर्क पड़ता है । हाँ, इतना अवश्य है कि कार्य एक-दूसरे के सहयोग से ही चलेगा। विज्ञान तो एक अति-सुन्दर एव अधिक गतिवाली गाड़ी की तरह है, लेकिन उसमें धर्मरूपी ब्रेक का होना अति आवश्यक है। यदि गाड़ी बिना ब्रेक के होगी तो उसका परिणाम भी भयकर होगा ।

अत मे मै यह कहना चाहूगा कि हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि हम आचार्य श्री के विचारो एव कार्यों को आगे बढ़ायें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी । समाज-हित एव देश हित भी इसमे निहित है ।

-बी-२६, सूर्य नारायण सोसायटी, साबरमती, अहमदाबाद

✿

कुण्डलिया

आचार्य श्री नानेश के उपदेशों पर आधारित

रतनलाल व्यास

स्वतंत्रता है सादगी, फैशन फांसी जान ।
पूज्य गुरुवाणी कहे, दो विशिष्ट नर ध्यान ॥
दो विशिष्ट नर ध्यान, प्रशंसा छोड़ो भाई ।
जहर तुल्य चढ जाए, प्रशंसा बहु अधमाई ॥
रतन गुरु उपदेश, सुनो सब प्राणी भ्राता ।
गुरु आज्ञा सिर धार, रख सादगी स्वतंत्रता ॥१॥

धीरज को मत छोड़ना, यह सत्यनिष्ठा कर्तव्य ।
आपस में नित सफलता देता है यह भव्य ॥
देता है यह भव्य फल नित निष्काम भाव में ।
पहुंचे उन्नति शिखर, यदि होता समभाव मे ॥
रतन गुरु आदेश, अन्तर आत्मा को भज ॥
फल देता है जरुर मत छोड़ना तू धीरज ॥२॥

भयमुक्त संघर्ष कर कायरता मत लाय ।
बुरी वस्तु संघर्ष नहीं, जीवन विकास समाय ॥
जीवन विकास समाय, अलग नहीं करना भाई ।
सदाचार को पाल पवित्रता इसमे समाई ॥
रतन गुरु आदेश, संघर्ष करना अभय ।
शुद्ध आत्म बन जाय जीवन सूं मिटे सब भय ॥३॥

मन पवित्र बनता जभी जीवन धर्म रमाय ।
यह अचूक है औषधि, बाह्य अभ्यंतर मांय ॥
बाह्य अभ्यंतर मांय, आराधना मन की भांति ।
शुद्ध आचरण के साथ सफलता दिल रम जाति ॥
रतन गुरु आदेश, तज आडम्बर और छल ।
सदाचार रख साथ, तबहि बनता पवित्र मन ॥४॥

नर दुनियां क्या देखती, मत कर आप विचार ।
तू क्या देखे जगत में, इस पर करो विचार ॥
इस पर करो विचार, स्वयं ही सुधरो भाई ।
सदाचार मन धार, यही है आत्म कमाई ॥
रतन गुरु आदेश, पवित्र कर आत्मा जीवन भर ।
क्या कहेगी आत्मा, तू सोच रे साहसी नर ॥५॥

जीवन साधु, सफल तब विषय वासना छोड़ ।
अनासक्त की भावना, इनसे करले होड़ ॥
इनसे करले होड़ गौण, यही साधु जीवन ।
सफल कुंजी आचरण इसी में लगा तू मन ।
रतन गुरु उपदेश, आत्म-सुधार है बड़ धन ।
करले दृढ संकल्प, सफल तबहि साधु जीवन ॥६॥

-कानोड़

नाना गुणो के पुज

नाम है नाना, जग ने माना ।
गुण है नाना, सबने जाना ॥

अपने युग के महामानव आचार्य श्री नानालालजी म सा का जीवन अनेक विशेषताओ से परिपूर्ण था। महापुरुषो क जीवन की सभी विशेषताओ का लेखबद्ध करना असभव है। आचार्य श्री नानालालजी म सा का जीवन अनेक गुणो का पुञ्ज था। मेवाड़ म छोटे को नाना कहा जाता है। आचार्य श्री नानालालजी म सा जिनका जन्म नाम तो गोवर्धन था, पर परिवार म सबसे छोटे होने के कारण पारिवारिक जीवन मे उन्ह नाना के नाम से पुकारा जाता था। नाना शब्द का दूसरा अर्थ अनेक भी होता है। नाना नाम के इस महामानव ने अपने नाना नाम को सार्थक कर दिया।

1 <u>समता सागर</u>

स्व आचार्य श्री नानालालजी म सा समता सागर थे। समता का गुण उनम इतना कूट कूट कर भरा था कि उनके नाम के साथ समता शब्द जुड़ गया था। उन्ह समता विभूति के नाम से जाना जाता था। कठिन परिस्थितियो मे विपरीत वातावरण मे भी आचार्य श्री नानेश ने अत्यन्त धैर्य एव समता का परिचय दिया। श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ जैसे विशाल सघ के आचार्य पद पर रहते हुए समता को जीवन म साकार कर सघ सचालन का कार्य बड़ी कुशलता पूर्वक किया। समाज में व्याप्त विषमता से द्रवित होकर उन्होंने समाज के समक्ष समता समाज की रचना का अत्यत उपयोगी सिद्धात प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यानो क आधार पर लिखी पुस्तक समता दर्शन और व्यवहार वर्तमान परिप्रेक्ष्य म अत्यत उपयोगी सिद्ध हुई है तथा इसका अनुवाद अन्य भाषाओ म भी किया जा चुका है। निसदेह आचार्य श्री नानेश समता के सागर थे।

2 <u>सयम साधना के सजग प्रहरी</u>

जब से आचार्य श्री नानेश ने दीक्षा ग्रहण की उसी दिन से सयम मार्ग पर पूर्ण दृढता पूर्वक आरूढ हो गये। जीवन के अन्तिम क्षणो तक सयम के प्रति पूर्ण जागरूक रहे। जीवन पर्यन्त शुद्ध सयम का पालन किया। सयम के प्रति आपकी दृढ श्रद्धा से प्रभावित होकर ही स्व आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा ने आप श्री को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। वर्तमान युग मे शिथिलाचार अधिक बढ रहा है परतु आपने स्वय सदैव शुद्ध सयम का पालन किया एव अपने सघ क सत सतियो को भी शुद्ध सयम पालने की प्रेरणा प्रदान की। सयम मार्ग म दोष लगाने वाले सत सतियो को अवसर आने पर सघ से निष्कासित करने म भी सकोच नहीं किया। जबकि वर्तमान युग में शिष्यो का मोह कैसी विषम परिस्थितिया उत्पन्न कर देता है यह सुज्ञजनो से छिपा हुआ नहीं है।

3 <u>दीक्षाओ का नया कीर्तिमान</u>

सयम क प्रति आचार्य श्री नानेश की जागरूकता का एक प्रत्यक्ष प्रतिफल यह हुआ कि आप श्री ने अपने सयमी जीवन काल म 350 से अधिक मुमुक्षु आत्माओ को दीक्षा प्रदान की तथा रतलाम म 25 दीक्षाएं एक साथ

प्रदान कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। गत 500 वर्षो के इतिहास मे किसी आचार्य द्वारा एक साथ पच्चीस दीक्षाए प्रदान करने की घटना का उल्लेख पढने-जानन मे नही आया। यह स्व आचार्य श्री नानेश की विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है।

4 अनूठी प्रवचन शैली

आचार्य श्री नानेश की प्रवचन शैली अत्यन्त प्रभावशाली एव विशिष्ट थी। परिमार्जित भाषा शैली मे आगमानुसार, तात्कालिक समस्याओ का समाधान प्रस्तुत करने स आपके व्याख्यानो में बहुत अच्छी उपस्थिति रहती थी तथा श्रोतागण मत्र मुग्ध हो जाते थे। व्याख्यानो मे हजारो की उपस्थिति होते हुए भी बिना ध्वनि प्रसारक यत्र के ही सभी श्रोता शान्ति पूर्वक आपका व्याख्यान सुनते थे तथा व्याख्यान मे पूर्ण शान्ति बनी रहती थी। यह आपकी वाणी का अतिशय था। कानोड़ चातुर्मास मे विद्वत सगोष्ठी के अवसर पर बिना ध्वनिप्रसारक यत्र के आपके व्याख्यानो की छटा देख कर डॉ दयानन्द भार्गव ने अपने वक्तव्य मे आपकी इस अनूठी विशेषता पर आश्चर्य व्यक्त किया। युवा पीढ़ी जो वर्तमान युग में धर्म से विमुख होती जा रही है, आपके प्रवचना से बहुत प्रभावित होती थी तथा आपके प्रवचनो स उनमे भी धर्म-भावना का सचार हुआ। अनेक जैन, अजैन युवक धर्म से जुड़े है यह आपकी प्रवचन शैली एव कथनी करनी की एक रूपता का परिणाम है।

5 युग पुरुष

आचार्य श्री नानेश वर्तमान युग की विरल विभूति थे। उन्होंने इस युग के मानव की समस्याओ को समझकर प्रत्येक क्षेत्र मे आध्यात्मिक धरातल पर समाधान प्रस्तुत किया। परिवार, समाज राष्ट्र एव विश्व म व्याप्त विषमताओ पर विजय पाने के लिए समता सिद्धात का प्रतिपादन किया जो विश्व को आचार्य श्री नानेश की अनुपम देन है। आज का मानव तनावा मे जी रहा है, जिसस हृदयाघात, उच्च रक्त चाप जैसे भयकर रोगो का बाहुल्य हो रहा है। तनावो से मुक्ति के लिए जन मानस के लिए आप श्री ने समीक्षण ध्यान समाज क सम्मुख प्रस्तुत किया। श्रावक वर्ग मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति के विकास के लिए तथा सत सतियो के चातुर्मास से वचित क्षेत्रों मे पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर पर्वाराधना हेतु सुयोग्य स्वाध्यायियो की व्यवस्था के लिए समता प्रचार सघ की स्थापना की प्रेरणा प्रदान की। समता प्रचार सघ द्वारा गत पर्युषण पर्व मे लगभग ८० स्थानो पर पर्वाराधना कार्यक्रम सपादित किया गया। सामाजिक क्षेत्र मे त्याग मय जीवन के साथ समर्पित भाव से समाज सेवा करने वाले सुश्रावक तैयार करने के लिए स्व आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के स्वप्नानुसार वीर सघ योजना को प्रेरणा प्रदान की। आपकी सद्प्रेरणा से उदयपुर विश्व विद्यालय मे प्राकृत विभाग की स्थापना की गई। दलित वर्ग के उत्थान की दिशा मे आप श्री ने मध्यप्रदेश म रहने वाली बलाई जाति के लोगो को कुव्यसनो से मुक्त कर धर्म के सन्मार्ग पर लगाया। आपकी सद्प्रेरणा से प्रेरित होकर हजारो व्यक्तियो ने व्यसनो का त्याग किया जिन्हे धर्मपाल कहा जाता है। इस समुदाय ने आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक नैतिक, शिक्षा आदि प्रत्येक क्षेत्र मे बहुत विकास किया है। जैन समाज एव अन्य समाज मे व्याप्त दहेज प्रथा के विरोध मे आपने प्रभावशाली प्रवचन एव व्यक्तिगत उपदेश के माध्यम से व्यक्तियो को प्रत्याख्यान कराए। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र मे युग की समस्याओ के अनुसार समाधान प्रस्तुत किया। अत आचार्य श्री नानेश बीसवीं शताब्दी के युग पुरुष थे। उन्होंने युगीन परिस्थितियो के अनुरूप सामाजिक, व्यक्तिगत राष्ट्रीय, धार्मिक समस्याओ का समाधान प्रस्तुत किया।

6 सघ का कुशल सचालन

दीर्घकाल तक आचार्य पद पर रहकर विशाल चतुर्विध सघ (37 वर्ष तक) का कुशल सचालन किया एव लगभग 60 वर्ष तक विशुद्ध सयम का पालन किया। विषम से विषम परिस्थितियो मे भी धैर्य धारण कर समता को साकार किया। समय पर सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप मे शास्त्रज्ञ प्रशान्तमना भावी शासन नायक आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा का चयन करना उनकी कुशल

सघ सचालन क्षमता का प्रतीक है। आचार्य श्री नानेश महामानव थे, प्रकाश पुञ्ज थे, सघ सिरताज थे, जैन जगत के ज्योतिर्मान नक्षत्र थे, बीसवी शताब्दी के युग पुरुष थे। युगो-युगो तक उनका नाम अमर रहेगा। वे मृत्युञ्जय हो गए। एसे महामानव को मै भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हू। धन्य है अनेक गुणो के पुञ्ज महामानव की उस पवित्र आत्मा को जिसके महाप्रयाण से समाज और सघ की अपूरणीय क्षति हुई है।

सयोजक-समता प्रचार सघ, बड़ीसादड़ी

समता का सूरज अस्त हो गया

सौभाग्यमल कोटड़िया

समता का सूर्य आज अस्त हो गया,
चारों दिशाओ में अधेरा छा गया ।
समता की राह दिखाने वाले रहनुमा,
समता पथ से आज विमुख हो गया ॥
हुक्म सघ का किया बड़ा विस्तारा,
जवाहर गणेशी लाल का तारा दुलारा
जैन जगत का प्राणो से प्यारा,
धर्मपाल का एक मात्र सहारा
भारत का एक अनमोल रत्न खो गया ।
समता का आज सूर्य अस्त हो गया ॥१॥

सथारा लेकर महाप्रयाण किया जग से,
प्रकृति भी आज रूठ गई हमसे
दर्शन को नैना रह गये तरसते,
मेघ भी रह गए बरसते-बरसते
आसमान भी अकस्मात सो गया ।
समता का सूर्य आज अस्त हो गया ॥२॥

दाता गाव आज तीर्थ बन गया,
पोखरना कुल नाम रोशन हो गया
शृंगार मा का लाल सिद्ध हो गया,
मोड़ीलाल का मस्तक ऊचा हो गया
नाना गुरु आज अमर हो गया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया ॥३॥

देवदूत बनकर धरा को पावन किया,
सद्उपदेश दे लाखो का उद्धार किया
सत्य अहिंसा का जन-जन मे प्रचार किया,
मुक्ति पथ का मार्ग सरल बना दिया
उदयपुर नगर आज सूना-सूना हो गया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया ॥४॥

मेरे ही स्वास्थ्य ने मुझे धोखा दे दिया,
अतिम दर्शन से भी वचित रह गया
गर स्वाब मे भी दीदार मिल जाएगा,
'सौभाग्य' तेरा जीवन सफल हो जाएगा
अश्रुपूरित श्रद्धांजलि से मुह धो लिया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया ॥५॥

प्रदान कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। गत 500 वर्षो के इतिहास म किसी आचार्य द्वारा एक साथ पच्चीस दीक्षाए प्रदान करने की घटना का उल्लेख पढ़ने-जानने मे नही आया। यह स्व आचार्य श्री नानेश की विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है।

4 अनूठी प्रवचन शैली

आचार्य श्री नानेश की प्रवचन शैली अत्यन्त प्रभावशाली एव विशिष्ट थी। परिमार्जित भाषा शैली मे आगमानुसार, तात्कालिक समस्याओ का समाधान प्रस्तुत करने से आपके व्याख्यानो में बहुत अच्छी उपस्थिति रहती थी तथा श्रोतागण मत्र मुग्ध हो जाते थे। व्याख्यानो मे हजारो की उपस्थिति होते हुए भी बिना ध्वनि प्रसारक यत्र के ही सभी श्रोता शान्ति पूर्वक आपका व्याख्यान सुनते थ तथा व्याख्यान मे पूर्ण शान्ति बनी रहती थी। यह आपकी वाणी का अतिशय था। कानोड़ चातुर्मास मे विद्वत सगोष्ठी के अवसर पर बिना ध्वनिप्रसारक यत्र के आपके व्याख्यानो की छटा देख कर डॉ दयानन्द भार्गव ने अपन वक्तव्य म आपकी इस अनूठी विशेषता पर आश्चर्य व्यक्त किया। युवा पीढ़ी जो वर्तमान युग में धर्म से विमुख होती जा रही है, आपक प्रवचनो से बहुत प्रभावित होती थी तथा आपके प्रवचनो से उनमे भी धर्म-भावना का सचार हुआ। अनेक जैन, अजैन युवक धर्म से जुड़े है यह आपकी प्रवचन शैली एव कथनी करनी की एक रूपता का परिणाम है।

5 युग पुरुष

आचार्य श्री नानेश वर्तमान युग की विरल विभूति थे। उन्होने इस युग के मानव की समस्याओ को समझकर प्रत्येक क्षेत्र म आध्यात्मिक धरातल पर समाधान प्रस्तुत किया। परिवार, समाज, राष्ट्र एव विश्व म व्याप्त विषमताओ पर विजय पाने के लिए समता सिद्धात का प्रतिपादन किया जो विश्व को आचार्य श्री नानेश की अनुपम देन है। आज का मानव तनावो मे जी रहा है, जिसस हृदयाघात उच्च रक्त चाप जैसे भयकर रोगो का बाहुल्य हो रहा है। तनावो से मुक्ति के लिए जन मानस के लिए आप श्री ने समीक्षण ध्यान समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। श्रावक वर्ग मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति क विकास के लिए तथा सत सतियो के चातुर्मास से वचित क्षेत्रो मे पर्युषण पर्व क पावन अवसर पर पर्वाराधना हेतु सुयोग्य स्वाध्यायियो की व्यवस्था क लिए समता प्रचार सघ की स्थापना की प्ररणा प्रदान की। समता प्रचार सघ द्वारा गत पर्युषण पर्व मे लगभग ८0 स्थानो पर पर्वाराधना कार्यक्रम सपादित किया गया। सामाजिक क्षेत्र मे त्याग मय जीवन के साथ समर्पित भाव से समाज सेवा करने वाले सुश्रावक तैयार करने के लिए स्व आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के स्वप्नानुसार वीर सघ योजना को प्रेरणा प्रदान की। आपकी सद्प्रेरणा से उदयपुर विश्व विद्यालय मे प्राकृत विभाग की स्थापना की गई। दलित वर्ग क उत्थान की दिशा मे आप श्री ने मध्यप्रदेश मे रहने वाली बलाई जाति के लोगो को कुव्यसनो से मुक्त कर धर्म क सन्मार्ग पर लगाया। आपकी सद्प्रेरणा से प्रेरित होकर हजारो व्यक्तियो ने व्यसनो का त्याग किया जिन्हे धर्मपाल कहा जाता है। इस समुदाय ने आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक शिक्षा आदि प्रत्येक क्षेत्र मे बहुत विकास किया है। जैन समाज एव अन्य समाज मे व्याप्त दहेज प्रथा के विरोध मे आपने प्रभावशाली प्रवचन एव व्यक्तिगत उपदेश के माध्यम से व्यक्तियो को प्रत्याख्यान कराए। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र मे युग की समस्याओ के अनुसार समाधान प्रस्तुत किया। अत आचार्य श्री नानेश बीसवी शताब्दी के युग पुरुष थे। उन्होने युगीन परिस्थितियो के अनुरूप सामाजिक, व्यक्तिगत, राष्ट्रीय धार्मिक समस्याओ का समाधान प्रस्तुत किया।

6 सघ का कुशल सचालन

दीर्घकाल तक आचार्य पद पर रहकर विशाल चतुर्विध सघ (37 वर्ष तक) का कुशल सचालन किया एव लगभग 60 वर्ष तक विशुद्ध सयम का पालन किया। विषम से विषम परिस्थितियो मे भी धैर्य धारण कर समता को साकार किया। समय पर सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप मे शास्त्रज्ञ प्रशान्तमना भावी शासन नायक आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा का चयन करना उनकी कुशल

सघ सचालन क्षमता का प्रतीक है। आचार्य श्री नानेश महामानव थे, प्रकाश पुञ्ज थे, सघ सिरताज थे, जैन जगत के ज्यातिर्मान नक्षत्र थे, बीसवी शताब्दी के युग पुरुष थे। युगो-युगो तक उनका नाम अमर रहेगा। वे मृत्युञ्जय हो गए। एसे महामानव को मै भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हू। धन्य है अनेक गुणो के पुञ्ज महामानव की उस पवित्र आत्मा को जिसके महाप्रयाण से समाज और सघ की अपूरणीय क्षति हुई है।

सयोजक-समता प्रचार सघ, बड़ीसादड़ी

समता का सूरज अस्त हो गया

सौभाग्यमल कोटड़िया

समता का सूर्य आज अस्त हो गया,
चारों दिशाओ मे अधेरा छा गया।
समता की राह दिखाने वाले रहनुमा,
समता पथ से आज विमुख हो गया॥
हुक्म सघ का किया बड़ा विस्तारा,
जवाहर गणेशी लाल का तारा दुलारा
जैन जगत का प्राणो से प्यारा,
धर्मपाल का एक मात्र सहारा
भारत का एक अनमोल रत्न खो गया।
समता का आज सूर्य अस्त हो गया॥१॥

सथारा लेकर महाप्रयाण किया जग से,
प्रकृति भी आज रूठ गई हमसे
दर्शन को नैना रह गये तरसते,
मेघ भी रह गए बरसते-बरसते
आसमान भी अकस्मात मौ गया।
समता का सूर्य आज अस्त हो गया॥२॥

दाता गाव आज तीर्थ बन गया,
पोखरना कुल नाम रोशन हो गया
शृगार मा का लाल सिद्ध हो गया,
मोड़ीलाल का मस्तक ऊचा हो गया
नाना गुरु आज अमर हो गया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया॥३॥

देवदूत बनकर धरा को पावन किया,
सद्उपदेश दे लाखो का उद्धार किया
सत्य अहिंसा का जन-जन मे प्रचार किया,
मुक्ति पथ का मार्ग सरल बना दिया
उदयपुर नगर आज सूना-सूना हो गया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया॥४॥

मेरे ही स्वास्थ्य ने मुझे धोखा दे दिया,
अतिम दर्शन से भी वचित रह गया
गर ख्वाब मे भी दीदार मिल जाएगा,
'सौभाग्य' तेरा जीवन सफल हो जाएगा
अश्रुपूरित श्रद्धाजलि से मुह धो लिया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया॥५॥

उत्कृष्ट धर्मसाधक

हुक्मगच्छीय सम्प्रदाय के अष्टमाचार्य जैन जगत के ज्योतिपुज, महायोगी पूज्य आचार्य श्री नानलाल जी महाराज साहब उदयपुर नगरी मे २७ अक्टूबर १९९९ को रात १० बज कर ४१ मिनट पर इस लोक को छोडकर मोक्ष मार्ग के पथिक बन गए।

६० वर्ष के अपने सयमकाल मे एक तरफ जहा पूज्य गुरुदेव कठोर आचार सहिता, साधु मर्यादा का पालन करते हुए तथा ज्ञान व साधना के द्वारा अध्यात्म के उच्च से उच्च शिखर तक पहुचते गए, वही दूसरी तरफ साधु, साध्वियो को उत्कृष्ट सयम जीवन की प्रेरणा व अनुशासित रखते हुए समता की निर्मलधारा को सारा देश, विदेश मे प्रवाहित कर जन-जन में जो जागरण उत्पन्न किया और चतुर्विध सघ के समन्वय का जो अनूठा दृष्टात रखा, वह अपने आप में पूज्य गुरुदेव को बेजोड़ शासन नायक के रूप मे युगो-युगो तक स्मरण कराता रहेगा।

पूज्य गुरुदेव का अनोखा व्यक्तित्व, व्यवहार व उनकी दिनचर्या अपने आप में एक वीतरागता की साक्षात् प्रतिमूर्ति थी। साधारण से साधारण मानव भी गुरुदेव के सानिध्य में आते ही गुरुदेव की प्रति आकृष्ट हो जाता। इसी सहज, सरल व चुम्बकीय शक्ति के कारण गुरुदेव के भक्तो की आज कोई सीमा नही।

पूज्य गुरुदेव ने भक्तो की अज्ञानता को दूर करते हुए जैन धर्म का सच्चा स्वरूप समझाया। इस बेबुनियाद धारणा को मिटाया कि जैन धर्म का इस भव से कोई नाता नही है, जैन धर्म केवल परलोक सुधार के लिए है। गुरुदेव व उनके शिष्य, शिष्याओ ने जीवन मे जैन धर्म द्वारा चितामुक्त होकर जीने की कला, समीक्षण ध्यान द्वारा कषायो पर विजय पाने की कला, व्यसन मुक्त होकर सुखी निरोग जीवन जीने की कला का ज्ञान दिया एव जीवन सुधार के साथ साथ पर भव सुधारने का भी ज्ञान देकर जन-जन को अध्यात्म के साथ जोड़ा। धर्म के प्रति उदासीन युवक समाज व शिक्षित समाज गुरुदेव के प्रति विशिष्ट रूप से आकृष्ट होकर आज आगे आया है।

अपनी साधना को गुरुदेव आगे बढ़ाते हुए एक जगह से दूसरी जगह हजारों मील की पदयात्रा करते हुए विश्वशान्ति व मानव उत्थान के कार्य मे जुटे रहे। इसीके तहत दलितों व पिछड़ी जातियो के लोगो को भी सही दिशा व सच्चा ज्ञान देकर धर्मपाल बनाकर व्यसनमुक्त किया एव नयी जीवनधारा उनमे प्रवाहित की। इस प्रकार लाखों व्यक्ति गुरुदेव के नये भक्त बन गये।

पूज्य गुरुदेव के भक्तो की सख्या बढ़ती गयी। जहा भी गुरुदेव विराजित रहते, हजारो की सख्या मे भक्त पहुचते व गुरुदेव के दर्शन, लाभ व पावन वाणी सुनने को आतुर रहते। भारी जनमेदिनी को देखते हुए कई बार भक्तों ने पूज्य गुरुदेव से माइक, लाइट इत्यादि व्यवहार करने की विनती की, लेकिन महायोगी पूज्य गुरुदेव साधु मर्यादा के साथ किसी भी समझौते की गुजाइश से साफ इनकार करते रहे। आज भी काफी लोगों को सुनकर आश्चर्य होता है कि हुक्मगच्छीय साधु साध्वी रात्रि में बत्ती या दीपक का व्यवहार नही करते, कितना भी वृहद् जनसमुदाय हो माइक का व्यवहार नही करते। सेनिटरी लेट्रिन, बाथरूम का व्यवहार नही करते। इनके लिए कोई छोटे से छोटा गाव हो चाहे बम्बई जैसा बड़ा शहर, आचार पालन सभी जगह एक समान है।

एक तरफ उत्कृष्ट धर्म साधना दूसरी तरफ जन-कल्याण करते हुए पावन प्रभुवाणी को जन-जन तक पहुचाने से हमारे पूज्य गुरुदेव भक्तो के मन मे भगवान के रूप मे प्रतिष्ठित होते गये।

साधना के द्वारा प्राप्त शक्ति से गुरुदेव के अनेक चमत्कार सामने आये है। पूज्य गुरुदेव के स्मरण मात्र से बड़े-बड़े सकट टले है। दुसाध्य रोगो से भक्तो को मुक्ति मिली है, दृष्टिहीनो को दृष्टि प्राप्त हुई है। यह सारे चमत्कार अनायास घटे हैं। भौतिक चमत्कार को दिखाने की किसी महत्वाकाक्षा के पूज्य गुरुदेव शिकार नही थे। इस कारण अपनी फोटो भी गुरुदेव रखने की सख्त मनाही करते थे। किसी नाम, यश अथवा प्रचार प्रसार मे गुरुदेव कभी भी अग्रणी नही रहे। रात १० बजकर ४१ मिनिट का समय भी पूज्य गुरुदेव ने अपने महाप्रस्थान के लिए चयन किया ताकि स्थानीय सघ को भी कोई परेशानी न रहे और ज्यादा भीड़-भाड़ या आडम्बर न हो। लेकिन भक्तो के भगवान गुरुदेव के देवलोक के समाचार देर रात तक जगह-जगह पहुचते गये और देखते-देखते लाखो भक्त गुरुदेव की महाप्रयाण यात्रा मे सम्मिलित हुए। गुरु भक्ति की मिशाल व उदयपुर श्री सघ की अभूतपूर्व व्यवस्था देखकर पूर्वांचल सघ इस मौके पर उदयपुर उपस्थिति के लिए अपने को धन्य व गुरुदेव की असीम कृपा मानता है। गुरुदेव की इस असीम कृपा को श्री सघ पूर्वांचल और भी अधिक प्रयास से जन-जन तक पहुचाने में प्रयासरत होगा। आज जरूरत है गुरुदेव के प्रति हमारी सच्ची प्रार्थना की ताकि गुरुदेव जहा भी विराजित हों शीघ्रातिशीघ्र सिद्ध, बुद्ध और मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करे।

-कूचबिहार

✿

समता का पाठ पढाते हैं

राजकुमार जैन

अनार, आम, ए.बी.सी.डी. सिखलाने वाले गुरुवर है,
इस दुनिया की हर सीढी का पहला अक्षर गुरुवर है।

सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र समझाने वाले गुरुवर है,
जैन तत्व के ज्ञान प्रकाशक सम्यक्धारी गुरुवर है,

ये गुरुवर समताधारी समता का पाठ पढाते है,
मोक्ष मार्ग में दीक्षित कर धर्म ध्वजा फहराते है।

करें करावे त्याग, तपस्या, राग-द्वेष का काम नहीं
पाले मन वचन कायिक सयम भेदभाव का नाम नहीं।

अज्ञान तिमिर मय इस जग को पापो ने आकर घेरा है,
बुद्धि धर्म की राहो में गुरु बिन घोर अधेरा है।

-अकोला (राज.)

चुम्बकीय आकर्षण

परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म सा का लगभग डेढ़ दशक से अति निकटता से सानिध्य पान का सौभाग्य मिला। वास्तव मे उनका जीवन अन्तरग व बाहर समान रूप था। कथनी की अपेक्षा करनी को अधिक महत्व देते थे। कई बार फरमाया भी करते थे कि कहने की अपेक्षा जीवन मे उतारना ही आवश्यक है। उनके सानिध्य म समागत सदस्य चाहे वह जैन जैनेतर ही क्यो न हो सदा उनका भक्त बन जाता था। इनका चुम्बकीय आकर्षण ही ऐसा था कि व्यसनी व्यक्ति भी जीवन का सस्कारित कर लेता था।

आचार्य देव के सानिध्य व सेवा के १५ वर्षों मे मैने अनेक घटनाए प्रत्यक्ष में घटित देखी है। उनमे एक प्रत्यक्ष सस्मरण प्रस्तुत कर रहा हू-

मै कालेज के विद्यार्थी जीवन मे आचार्य देव के दर्शनार्थ फाल्गुणी चौमासी के प्रसग पर मुबई पहुचा। वैसे तो मुझे पिताश्री के साथ आचार्य देव के कई बार दर्शनो का सौभाग्य मिला किन्तु अभी सघ सेवा (पत्राचार कार्य) हेतु श्रीचरणो मे पहुचा। सयोग ही कहा जाय कि मुझ पर दूसरे ही दिन एक आरोप आ गया एक श्रेष्ठीवर्य के सोने के बटन चुराने का। सेठ लोग मुझे दबाने लगे धमकिया देने लगे। मै आचार्य भगवन् के चरणों मे पहुचा निवेदन किया, भगवन् मुझ पर चारी का आरोप लगाया जा रहा है सेठ लोग धमका रहे है। भगवन् मै निर्दोष हू। आचार्य भगवन् मरी तरफ कुछ क्षण तक देखते रहे मानो व्यक्ति क चेहरे को जैसे पढ रहे हों। वे मानव मन के ज्ञाता थे। क्षण मौन रहने क पश्चात् आचार्य दव ने फरमाया। घबराओ मत। शाति रखो। समय पर सब कुछ सामने आयेगा।' मै असमजस मे था। किन्तु आचार्य भगवन की आत्मीय वात्सल्य वाणी स मन मे अपार शाति का अनुभव हुआ। कुछ समय पश्चात् घाटकोपर मुबई चातुर्मासार्थ पदार्पण हुआ। पूज्य गुरुदेव को उस समय यह स्थिति स्पष्ट हुई। एक व्यक्ति जो काफी समय से सन्त सेवा का लाभ लेता था। वही ऐसी हरकत करता रहता था। उसकी गुत्थी खुल गई तथा चोरी की गई वस्तु का पता लग गया। आचार्य देव की वाणी सार्थक हो गयी।

ऐसे एक नही अनेक उदाहरण- सस्मरण इस १५ वर्ष के सेवाकाल मे देखने को मिले जिससे लगता था कि आचार्य श्री नानेश इस युग के अवतारी युगान्तर महापुरुष थे। उन्होने परिवार, समाज, राष्ट्र को समता दर्शन की जो देन प्रदान की वह विश्वस्तर पर ग्रहणीय है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने सघ का उत्तरदायित्व जिन सशक्त कधो पर डाला है, उससे उनकी दीर्घदृष्टि साबित हुई है। उनकी कृपा प्रत्येक भक्त हृदय का सदा मिलती रहेगी।

-उखलाना जिला टोंक (राज)

❑ शिवकुमार सोनी, पत्रकार

सयम, साधना का नजराना

जैनाचार्य श्री नानालालजी म० (नानेश) के स्नेह, आम जन के साथ आत्मीयता, प्रभावी प्रवचन, समीक्षण ध्यान, व्यसन मुक्ति व सस्कार की दिशा मे किए गए कार्यों से जैन ही नही आम जन नत मस्तक होता है।

आचार्य श्री अनेक नैनो को छलकते हुए छोड़कर २७ अक्टूबर को उदयपुर मे सलेखणा मथारा सहित अरिहत शरण हो गए। नाना का सघ, समाज व देश को दिया गया सयम, साधना का नजराना हर युग के लागो को नाना प्रकार के झझावतो से दूर हटने तथा अहिंसा परमोधर्म का संदेश देने वाले भगवान महावीर के सिद्धातो से जोड़ने मे सदैव सहयोगी रहेगा। बहुजन वदित जैन सत नानालालजी का जीवन, अनवरत तपश्चर्या एव जीवन पर्यन्त की गई पद यात्राए अविस्मरणीय रहेगी।

आचार्य श्री के नैनो मे वीरत्व की गौरव गरिमा से मडित तत्कालीन मेदपाट (मेवाड़) की राजधानी सुरम्य उपवनो एव अरावली श्रेणियो से सुरक्षित अपनी प्राकृतिक छटा से देश विदेश मे विख्यात झीला की नगरी उदयपुर तथा साहित्यिक, सास्कृतिक एव आध्यात्मिक नगरी बीकानेर के प्रति विशेष लगाव रहा है। उदयपुर, बीकानेर ब्यावर व रतलाम को साधुमार्गी जैन सघ के चार पाये माना गया है। कहा जाता है कि इन स्थानो पर आचार्य श्री के इकरग श्रावक-श्राविकाए है।

देशनोक मे प्रथम चातुर्मास के समय ही श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के नौवे आचार्य श्री व अपने उत्तराधिकारी रामलाल जी को विक्रम सम्वत् २०३१ मे माघ माह की द्वादशी को दीक्षा दी। देशनोक मे छ दीक्षाओ के बाद उन्होंने त्याग, तप एव साधना की उज्ज्वल ज्योति प्रज्ज्वलित कर पाचू, झझू सहित अनेक गावो मे विचरण किया। आचार्य श्री ने अपनी यात्रा के दौरान इन गावो मे पारिवारिक वैमनस्य को दूर करवाकर आपसी स्नेहसूत्र मे बाधा। वही जाट राजपूत, कसाई व मोची आदि अनुसूचित जाति व स्वर्णजाति के अनेक लोगो ने दारू, मास, आदि दुर्व्यसनों तथा कई अजैन महिलाओ ने रात्रि भोजन का त्याग किया।

नोखामडी चातुर्मास के पश्चात् भोपालगढ मे गणतत्र दिवस एव गणशाचार्य के पन्द्रहव स्वर्गारोहण दिवस पर दो गणाधीशो का ऐतिहासिक मिलन हुआ। एक अद्भुत सयोग से आचार्य श्री हस्तीमलजी व नानालाल जी दोनों अपनी-अपनी पाट परम्परा के अष्टम पट्टधर थे और मिलन की पुनीत बेला मे आठ आठ श्रमणो-शिष्यो स परिवृत थे। यह युगातकारी ऐतिहासिक स्नेह-मिलन अपने आप मे विशिष्ट उपलब्धि पूर्ण रहा। उपलब्धि का मुख्य आयाम पारस्परिक प्रेम सबधो को स्थापना पूर्वक निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सुरक्षा के लिए सुसगठन की सुदृढ भूमिका का निर्माण था। दोनो स्थानकवासी जैन सघ के नायको ने तीन-चार दिनो की मत्रणा के उपरात सुसगठन की पृष्ठभूमि क रूप मे सयुक्त उद्घोष किया जिसका सपूर्ण स्थानकवामी समाज के प्रबुद्ध वर्ग ने स्वागत किया।

सयुक्त उद्घोष मे कहा गया कि परम वीतराम श्रमण भगवान महावीर का धर्मशासन उपशम भाव प्रधान है वीतराग भाव की प्राप्ति उसका लक्ष्य है। जप-तप की कठोर साधना भी धर्मशासन मे उपशम भाव के साथ ही सफल मानी गई है। समाज मे व्याप्त राग द्वेष, निंदा के कलुषित वातावरण को दूर करना और शास्त्राचार परम्परा को सुरक्षित रखना, शात, स्वच्छ समताभाव की वृद्धि के लिए तदनुकूल वातावरण का निर्माण करना परमावश्यक है। कषाय

घटाने की शिक्षा देने वाला वीतराग मार्ग यदि राग-द्वेष वृद्धि का क्षेत्र बनता है, तो हर धर्म प्रेमी के लिए सहज चिंता का विषय हो जाता है। दोनो आचार्य आपसी मत्रणा के बाद इस नतीजे पर पहुचे कि एक सवत्सरी की भावना पूर्वक कुछ मौलिक नियमो पर आश्रित एक चातुर्मास, निंदावर्जन और एक व्याख्यान की व्यवस्था समाज मान्य हो तो शासन की सुव्यवस्था का रथ व्यापक रूप से सरलता से गतिमान हो सकता है। दोनो आचार्यों ने समाज की भावना और आवश्यकता को ध्यान मे रखकर अन्य साथियो से बिना परामर्श किए तत्काल मगलाचरण के रूप में यह विचार रखा कि समग्र जैन समाज की अथवा श्वेताम्बर जैन समाज की या स्थानकवासी जैन समाज की सावत्सरिक एकाग्रता बनने के अवसर पर ये एक चातुर्मास एव एक पद पर व्याख्यान देने के लिए तैयार है। स्थानक्वासी जैन समाज के दोनों आचार्यों के मिलन के बाद बीकानेर मे हस्तीमलजी महाराज की शिष्याओ ने चातुर्मास किया। एक दो दीक्षाए भी हुईं। चातुर्मास व अन्य कायक्रमो मे आचाय श्री नानालालजी म० के शिष्यो का भी परोक्ष अपरोक्ष रूप से सहयोग रहा।

१६ फरवरी १९९२ (माघ शुक्ला त्रयोदशी रविवार) को आचार्यश्री नानालालजी के सान्निध्य मे गगाशहर की बाफना स्कूल परिसर तक २१ मुमुक्षुओ की जूनागढ से निकली शोभायात्रा भी अपने आप मे अनूठी रही है।

बीकानेर के चार शताब्दी पुराने जूनागढ दुर्ग मे ही आचार्य श्री नानालालजी ने दशनाक के मुनिश्री रामलालजी को युवाचार्य तथा अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। युवाचार्य श्री रामलालजी ने हाल ही मे उदयपुर में आचार्यश्री के अरिहत शरण होने के बाद सघ के नौवे आचार्यश्री का दायित्व सभाला है। साधुमार्गी जैन सघ के हुक्मीचदजी महाराज की परम्परा में पूरे देश की नाक कह जाने वाल देशनाक ही नही बीकानेर के पहले आचार्य श्री रामलालजी महाराज ही बने है। आचार्य श्री ने मुनिश्री रामलालजी मे सरलता, सादगी, मृदुता, मैत्रीभाव, सयम साधना, सेवा, कर्त्तव्य निष्ठा धर्म के प्रति श्रद्धा, नम्रता आगमो की विद्वता आदि गुणो को परख कर युवाचार्य पद पर मनोनीत किया।

शाकाहार, व्यसन मुक्ति व समता का सदेश देने वाले आचार्य श्री नानेश के दिए गए समता दर्शन व समीक्षण ध्यान के दो रत्न सघ व समाज के लिए अनुकरणीय रहेंगे। समता दर्शन वह सिद्धात है जो किसी भी विषम से विषम परिस्थिति में भी हमारे सतुलन को बनाए रखता है। समता दर्शन को समझने वाला व्यक्ति प्रत्यक प्राणी की आत्मा को स्वय तुल्य मानता है। वह दूसरे के दुख दर्द व पीड़ा को अपनी समझकर उसके साथ समानता का व्यवहार करता है।

समीक्षण ध्यान वह साधना है जिसमे शात एकात स्थान पर बैठकर मन की दृढ़ता के साथ साधक को बैठना होता है। पहले कुछ समय तक मन को एकाग्र करने का प्रयास किया जाता है। उसके बाद अपने मे व्याप्त एक-एक दूषितवृति का चितन किया जाता है। इस चितन व दृढ सकल्प से जीवन मे व्याप्त राग-द्वेष, काम क्रोध, लोभ-मोह आदि कषायो से छुटकारा मिलता है। ऐसे सयम व समता साधक, समीक्षण ध्यान योगी को मेरा अनेक वन्दन एव श्रद्धाजलि।

-राजस्थान पत्रिका, बीकानेर

❑ प श्यामाचरण त्रिपाठी

नित्य लीलालीन

शान्त, दान्त समाहित, दीर्घदर्शी महामना, बाल ब्रह्मचारी, चारित्र चूड़ामणि, समता विभूति, समीक्षण ध्यानयोगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, परमादरणीय, श्रद्धेय जैनाचार्य श्री नानेशजी महाराज साहब कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की तृतीया बुधवार को रात्रि १०-४१ पर इह लीला का सवरण कर नित्य लीला में लीन हो गए। इनका जन्म १९२० ई ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया को मेवाड़ ग्राम दाता मे हुआ था। इस प्रकार इनका कार्यकाल आठ दशको मे विभक्त है।

कार्तिक स्यासिते पक्षे तृतीया बुध वासरे ।
ब्रह्मवादी महायोगी नानेशोनिधन गत ॥

आचार्य प्रवर अपने तेजस्वी, मनस्वी, ओजस्वी तथा यशस्वी व्यक्तित्व के कारण सर्वमान्य थे। जिन शासन के प्रभावक होते हुए भी सम्प्रदायातीत थे। सहृदयता उनमे कूट-कूट कर भरी थी।

भारतीय अस्मिता समता दर्शन के एक मात्र मार्ग दर्शक होने के कारण वे वस्तुत स्थितप्रज्ञ' थे। समीक्षण ध्यान उनकी साधना का मूलमत्र था। समीक्षण ध्यान अन्तरचेतना की अन्तर्दृष्टि है। जिससे सर्वानर्थ परिप्लुत दु खालय ससार की अहता तथा ममता सर्वदा के लिए मिट जाती है। परम श्रद्धेय समीक्षण योगी आचार्य श्री नानेश जी महाराज के सानिध्य में अनेक भव्य आत्माओ ने इसका अभ्यास किया।

आचार्य जी की दार्शनिक दृष्टि बड़ी सूक्ष्म थी। उनकी दृष्टि मे भाव साधु ही मान्य था। द्रव्य साधु साधन के रूप मे स्वीकार्य था नमो लोए सव्व साहूण। वे अप्रमत्त योग के उपासक थे। अनुशिष्ट, मर्यादित जीवन ही उन्हें प्रिय था। साधु जीवन में शिथिलाचार के वे कट्टर विरोधी थे। आचार्य जी के कार्यकाल मे त्रिशताधिक भव्य जीव ईश्वराभिमुख बने। आचार्य चरण का गुण ग्राहित्व अनुपम था। वे भारतीय महापुरुषो में अन्यतम माने जाएगे।

उनके मन, वचन शरीर में पुण्यरूपी अमृत का वास था। तीनो लोको को अपनी उपकार परम्पराओ से प्रसन्न करते हुए दूसरो के परमाणु जैसे छोटे गुणो को पर्वत के समान बड़ा बना कर अपने मन में सतत सन्तुष्ट रहते हुए उनके समान सज्जन कितने है ? जैसे महात्मा भर्तृहरि जी कहते है-

मनसि वचसि काये पुण्य पीयूष पूर्णा ।
त्रिभुवनमुपकार श्रेणिभि प्रीणयन्त ॥
परगुण परमाणुन् पर्वतीकृत्य नित्यम् ।
निजहदि विकसन्त सन्ति सन्त कियन्त ।

इस प्रकार यद्यपि अनादि निधन सनातन निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के अनन्य प्रभावक, तत्वज्ञ कर्मयोगी आचार्य श्री का द्रव्य शरीर नित्य लीला लीन हो चुका है तथापि उनका भाव शरीर अपनी पीयूष वर्षी देशनाओ के माध्यम से वीतराग प्ररूपित श्रमण सस्कृति का अनन्त काल तक प्रतिनिधित्व करता रहेगा।

-बीकानेर

समता-सूरज

भारतवर्ष ऋषि मुनियो का देश, उन्होंन अपनी साधना स स्वय भी सिद्धियो को प्राप्त किया तथा देश की जनता का भी हमेशा मार्गदर्शन किया। जीवन के सच्चे मूल्यो आदर्शों की स्थापना की और भवसागर में भटकती हुई आत्माओ को राह दिखायी। ऐसी महान् आत्माओ और विभूतियो मे एक विलक्षण व्यक्तित्व वाले आचार्य श्री नानालाल जी महाराज हुए जिन्होंने अपनी साधना और व्यक्तित्व के बल पर ही जैन धर्म का खूब प्रचार-प्रसार किया। वे समता विभूति, बाल ब्रह्मचारी, धर्मपाल प्रतिबोधक, जिन शासन प्रद्योतक, करुणा के सागर, जैनागम व्याख्याता एव अद्भुत मनीषी थे। उन्होंने कभी भी ऊच-नीच, गरीब धनी भेद को नही माना। उनका कहना था कि परमात्मा की दृष्टि मे सभी समान है तथा इस ससार में सभी एक समान ही जन्म लत है। इसलिए मनुष्य के दुर्लभ जीवन को पाकर इसे व्यर्थ नहीं गवाना चाहिए। वाकई इसका सदुपयोग करना चाहिए। आचार्य नानेश कहा करते थे कि जब तक व्यक्ति के अन्दर वास्तविक रूप स समता का भाव नही आयेगा तब तक उसे शान्ति प्राप्त नही होगी।

पूज्य गुरुदेव ने समता भाव क कारण ही हजारो की सख्या मे पतितो पर करुणा करके उनको अपना लिया तथा उनको धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनसे हिंसा छुड़वायी। गुरु नानेश ने अपने जीवनकाल मे हजारो लोगो को शराब बीड़ी, सिगरेट तथा भाग, गाजा, अफीम आदि नशे की वस्तुओ को न सेवन करने का नियम दिलाया। वास्तव मे जन कल्याण की दृष्टि से महात्मा गाधी, विनोबाभावे तथा मदर टेरेसा के आलावा यदि कोई नाम है तो वह आचार्य नानेश का ही है। चाहे किसी धर्म का व्यक्ति हो यदि उनके पास आया तो वह उनसे जरूर प्रभावित हुआ तथा कुछ न कुछ प्रेरणा लेकर गया।

एक बार कुछ श्रावक रात्रि को प्रस्थान करने के लिए मगलिक लेने गये तो पूज्य गुरुदेव ने जाने से मना कर दिया वे लोग मान गये। प्रातःकाल समाचार पत्रा म देखा कि अमुक ट्रेन रात को दुर्घटना ग्रस्त हो गई। जबकि वे उसी स जाने वाले थे। ऐस ही एक व्यक्ति की कन्या की शादी तय थी तथा कुछ दिन बाद अचानक टूट गयी तो दुखी भाव से गुरुदेव से कहा गुरुदव मेरी कन्या की शादी तय थी वह टूट गयी ता पूज्य गुरुदव न फरमाया कि बहुत अच्छा हुआ। यद्यपि यह बात उस व्यक्ति को उस समय अच्छा नही लगी किन्तु बाद मे उसे पता चला कि जो शादी तय थी वह बहुत खराब थी तब जाकर उसे गुरुदेव की बात का अर्थ समझ मे आया।

आचार्य नानेश के विलक्षण व्यक्तित्व तथा उनकी गहन साधना के कारण सभी उन्हे पूज्य मानत थे। आचार्य नानेश ने अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को लिखकर साहित्य की श्री वृद्धि तो की ही साथ ही अपने अद्भुत ज्ञान को पुस्तको के माध्यम से जनता को उपलब्ध करा कर महान् उपकार का कार्य किया।

वे अहिंसा को दया धर्म का मूल मानत थे तथा कहते थे कि जिस व्यक्ति म अहिंसा और दया नही है वह उस फूल के समान है जो सुर्ख तो बहुत है किन्तु उसम थोड़ी भी सुगन्ध नही है। आचार्यश्री छोट बच्चो से बहुत प्रेम रखते थे तथा कहते थे कि यदि इन बच्चो मे अच्छे सस्कार डाले जायें तो य देश और समाज दोनो का भला करने वाले है। इसलिए माताओ को हमशा कहते थे कि बच्चो को कभी मारना मत। आचार्य नानेश दयालु थे अपने अनुवर्ती सतो सतियो को पुत्र-पुत्री स भी अधिक ममता की छाव देते थे। यह सब होते हुए भी एकदम पानी मे रहने

वाले कमल की तरह निर्लिप्त थे। वे सच्चे अर्थों मे वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धात को चरितार्थ करते थे। वास्तव मे बीसवीं सदी के एक महान सन्त तथा युग पुरुष आचार्य नानेश थे। यदि हम उनके बताए मार्ग पर चलें तो निश्चित ही उनके समान अपने जीवन को भी धन्य और सफल बना सकते हैं। ऐसे अद्भुत मनीषी को मै कोटि-कोटि नमन करता हू।

–उदयपुर

अष्टम पट्टधर को समर्पित है

डा संजीव प्रचण्डिया 'सोमेन्द्र'

घनघोर अधेरा
दूर-दूर तक नहीं दीखता सवेरा
हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील परिग्रह
जगल में फैले झाड़ की तरह
पसर गए चारो ओर
और मचने लगा
शोर ही शोर।
पीड़ाए!
जन्म जन्मातर के अक्षय कोष को
टटोलने लगी,
जिसे देख हमारी आत्माए,
हमे अपने आप से जकड़ने लगी।
धर्म!
मानो चुक गया
जीवन के हाशिये पर आकर
और हम बीतने लगे
भोग और केवल भोग के योग पर
तभी अचानक मैं
एक तेज प्रकाश को देखता हू
जो उगा और छा गया समूचे ससार पर
सयम, साधना, तपाराधना, चितन योग
ध्यान!
व्यसन मुक्ति के जीवित सस्कार
हमारे घट-घट मे
अग जग मे
दीपित हो गए
और धर्म का ध्येय फैल गया
यत्र-तत्र-सर्वत्र
ऐसे अलौकिक, अप्रतिम प्रकाश पुज
समता विभूति
आचार्य श्री नानेश जी
इस धरा पर प्रकट हुए और दे गए
एक नहीं, अनेक दिशाए-
उत्तम, सयमित जीवन की नित नयी आशाए
उनके शिष्यत्व मे मिली
अर्द्ध त्रिशतक दीक्षाए
और सुसगठित सघकुल
उस ऐसे महान व्यक्तित्व
अष्टम पट्टधर को समर्पित है,
यह विनम्र काव्याजलि।

◻ विनोद जैन

शताब्दी के महापुरुष

समय रुकता नही है, काल एक अखड प्रवाह है, घटनाए घटती रहती है। समय के सरोवर मे खिलते रहेंगे घटनाओ के कमल। स्मृतियों के झरने झरते रहेंगे। आचार्यों की परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है, और आगे भी सदिया तक चलती रहेगी। धर्म की धड़कन से प्रतिपल धड़कती-धरा शाश्वत काल से ही ऋषियो मुनियो की तप-जप स्थली रही है। जिस प्रकार भगवान की महिमा अनिर्वचनीय होती है, उसी प्रकार महान सत महात्माओ की महिमा अवर्णनीय होती है।

श्री सुधर्मा स्वामी की पाट परम्परा के इक्यासीवे आचार्य, हुक्म सघ के आठवे पट्टधर, मूर्धन्य विद्वान, चारित्रिक उज्ज्वलता के प्रति सतत जागरूक, नियमों के पालक, श्रमण सस्कृति की सुरक्षा मे सदैव प्रयत्नशील आचार्य श्री नानेश इस युग की एक ऐसी विरल विभूति थे, जिन्होंने विघटनशील समाज मे नई चेतना जागृत कर सतुलित विकास की आधार शिला रखी थी। कहा जाता है कि चमत्कारी पुरुषो को जन्म से पूर्व उनके जीवन-सबधित चमत्कारी घटनाओ का पूर्वाभास हो जाता है। आचार्य श्री नानेश के जन्म के कई वर्षों पहले हुक्म सघ के पाचवे पट्टधर श्री श्रीलालजी म सा ने अपने आचार्यत्वकाल में सहजभाव स सकेत दिया था कि इस सघ के आठवे पट्टधर युग मे इतने प्रभावशाली होंगे कि उनके आचार्य काल मे धर्म की महती प्रभावना होगी। सस्कार चेतना के सूत्रधार, वीर शासन के अद्वितीय एव प्रभावक आचार्य, प्रखर तेजस्वी, धवल यशस्वी और इस शताब्दी के महान साधक, चितक थे राष्ट्र सत श्री नानेश। सत जीवन की आरभिक अवस्था में ही धर्म के गूढ़ तत्वो को जीवन मे सहज सत्य के रूप मे स्थापित करने की दिशा मे वे सलग्न हो गए थे। समाज के उपेक्षित तिरस्कृत पिछड़े वर्ग के सस्कारो मे सुधार करवाने का बीड़ा उठाया और उन्हे सुधार कर धर्मपाल बनाकर उनका अभिशप्त जीवन ही सुधार दिया। हजारों बलाई परिवारो को कुव्यसनो से मुक्ति दिलवाकर ऐतिहासिक सामाजिक क्राति का सूत्रपात किया था। छोटे-छोटे गावो मे सतत सघन विचरण कर, धर्म का व्यापक प्रचार प्रसार कर इन लोगो को प्रभावित किया। इनके सुधरे आचरण और बदलते जीवन आचार्य श्री के प्रयासो की साक्षी अब तक दे रहे है। जैन समाज मे एकता के लिए आचार्य श्री जीवन भर जागरूक रहे। हमेशा हर चर्चा मे हर स्तर पर कहते रहे कि "सपूर्ण जैन समाज एक बने तो उपलब्धि होगी। सावत्सरिक एकता की दृष्टि से अगर हमे अपनी परम्परा त्यागना पड़े तो किसी पूर्वाग्रह को आड़े नही आने दूगा।"

कौन जानता था, किसे पता था कि राजस्थान म मेवाड़ के छोटे से गाव दांता में ज्येष्ठ सुदी द्वितीया सवत् १९७७ को सामान्य घर के साधारण आगन मे जन्मा बालक महामानव की श्रेणी मे उच्च प्रतिष्ठित होगा। वीर प्रसविनी मेवाड़ धरा की गोद मे बसा गाव दाता। नाम के अनुरूप दाता ने जो दिया था वह दुनिया के सामने था। अब वह जाज्वल्यमान विराट व्यक्तित्व आज हमारे बीच नहीं है, उनकी भौतिक काया हमारी निगाहो से ओझल है पर हमारी मन की आखो म इस शताब्दी के उस महापुरुष के जीवन की, आचरण की, धर्म की सिद्धाता की, आदर्शों की अनत स्मृतिया तैर रही हैं जो जैन धर्म के आध्यात्मिक ससार को आलोकित कर रही हैं। आचार्य श्री नानेश की स्वरचित सत्तर कृतिया एव उनके धवल विराट व्यक्तित्व पर लिखी गई बीस पवित्र रचनाए मानव समाज को धर्मपथ के लिए आधार देगी।

-राज मेडिकल हास्पिटल रोड़ नीमच, (म प्र)

आत्मिक-गुण-मजूषा

मेरे जीवन के अनन्य आराध्य देव नानेश को मै किन शब्दो के घेरे मे आवेष्टित करू ? मेरे पास उस आराध्य देव की आत्मिक गुण मजूषा को उद्घाटित करने की शक्ति नही सामर्थ्य भी नही, किन्तु फिर भी उनके हृदय सुमेरू से प्रस्फुटित जो अन्त सलिला इस भारत धरा पर प्रवाहित हुई जिससे यह धरा अपने सारे अशुचिमय जीवन को शुचिमय बनाकर बड़े ही हर्ष से सागर मे निमग्न थी। मेरे पूज्य गुरुदेव ने बनारसीदास की भाषा मे शुचिमय जीवन का ही उपदेश दिया -

भेद विज्ञान साबुन भयो, समरस निर्मल नीर।
धोबी अन्तर आत्मा, धोवे निज गुण चीर॥

आत्मवत सर्व भूतेषु यानी अपनी आत्मा के समान ही समस्त आत्माओ को समझना आपका अद्भुत विज्ञान था। आप श्री जी ने सिद्धान्त के प्रत्येक पहलू को जीवन पाथेय बनाकर जीना ही श्रेष्ठतम माना आप श्री जी के रग-रग से, कण कण से ऐसी स्नह-वात्सल्य की धारा बहती ही रहती। वास्तव मे मेरे गुरु ऐसे थे, जैसा कि -

गुरु ऐसा कीजिए, जैसा पूनम का चाद।
तेज करे पर तपे नही, उपजावे आनन्द॥

आप श्री जी सम-विषम सभी परिस्थितियो में चन्द्र की भाति सौम्यता, शीतलता एव प्रकाश प्रदान करते रहे। पर शत्रु सम अगन की तपन का रूप बनकर आने वाले पर भी समतामय पीयुष वचन बरसाकर श्रुत ज्ञान की वारि से शीतलता प्रदान ही करते। कहा भी है-

प्रिय वाक्य प्रदानेन, सर्वे तुष्यन्ति जन्त्व।
तस्मान् तदेव वक्तव्य, वचने का दरिद्रता॥

आपके मुख मडल की मुद्रा ब्रह्मतेज की ओजस्विता से चमकती-दमकती ऐसी नजर आती कि मानो वनो का राजा मृगराज साक्षात सुशोभित हो रहे हो।

मेरे गुरु देव के अविचल साधना मय जीवन का ऐसा आकर्षण था कि परिचित क्या अपरिचित भी समर्पित हो जाते थे। क्योंकि कहा है -

जग मे वैरी कोऊ नहिं, जो मन शीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करे सब कोय॥

आप श्री जी के हृदय मे समतामय सलिला बहती रहती थी।, आपश्री जी का चित हमेशा औरो की ही प्रसन्नता से ही प्रसन्न रहता था। आपश्री जी के समीक्षण ध्यान का मानस चितन सयमी साधना से अनुप्राणित था। यही कारण था कि आप श्री जी तीर्थंकर परम्परा के अनुशासन मे उतने ही अडोल-अकम्प-अविचल थे जितने स्वामी सुधर्मा थे।

इसके विपरीत यदि ऐरे-गरे गुरुओ की बातें सुने तो सुनते ही रह जाएगे। जैसे कि कहा भी है :-

गुरु लोभी चेला लालची, बैठे पत्थर की नाव।
दोनो डूबे बापड़ा, कौन बचावे आय॥

नवम् पट्टधर ने आचार्य देव के श्री चरणों मे ही नही, अन्तर हृदय मे निवास किया है। आपकी मृदुता-ऋजुता-विनयशीलता गजब है।

निश्चय ही यह महाप्रभु भी मेरे हृदय मदिर के आस्था सिहासन पर ऐसे विराजमान रहेगे जैसे आचार्य श्री नानेश।

ये महाविभूतिया एसी हैं जो विष से अमृत बनाने की कलाओ के मर्मज्ञ कलाकार है। दुनिया के मान अपमान रूपी हलाहल/कालकूट को अमृत बनाना आपके बाय हाथ का खेल है हसते-हसते, मुस्कुराते मुस्कुराते विष की विषम परिस्थितियो मे शिव रूप बन जाते है। जैसे कहा है कि -

मनुज दुग्ध से, दनुज रक्त से देव सुधा से जीते है।
किन्तु हलाहल इस जग का, शिवशकर ही पीते है।

इसलिए मै विनम्र भावो के साथ प्रार्थना करता हू कि मेरे दिवगत ज्योतिर्मय प्रदीप जहा भी विराज रहे हो, वहा आत्मभाव म रमण करते हुए हमारे वतमान शासनेश पर अविराम वरद हस्त की छाया बनाये रखे। निश्चय ही हमारे वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामेश युगो-युगो तक आपकी उज्ज्वल यश की ध्वजा अवनि अम्बर मे लहराएगे।

-अलाय

अस्त हुआ महासूर्य

पदम जैन

१) नाना लाल आचार्यो, नाना गुण विभूषित।
नाना रत्नै प्रतिपूर्णो यथा हि मन्दरा गिरि॥

२) नानादेश विहारित्वात्, नाना भाषा विशारद।
गुरुपाम्त्याम्य श्रमाच्च शास्त्रेषु परिनिष्ठित॥

३) गुरुणा स्नेह भूमि, म श्राद्ध (श्रद्धानां श्रावकानां) श्रद्धेय पूजित।
चतुर्वर्णाकीर्ण मंचे, हस्तच्छाया करश्च स॥

४) गणेशीलालाचार्यस्य शिष्यत्वेनोपलक्षित।
शिष्यसम्पत्संपन्न मुनि राड भूमि राड्वि॥

५) जिन प्रवचनमाश्रित्य प्रवचन प्रभावनाम्।
कुर्वन्नदीपि सर्वत्र दिवा दीपक भास्वर॥

६) अस्माकं स्नेहतो स्निग्ध दिग्धोऽमृत रसेन च।
तप संयम मूर्तिश्च पूर्तिश्च मन स्थिते॥

७) पूर्वाचार्य पट्टस्य, योयगज्येऽमिषिञ्चित।
आश्वेव स आचार्य पदवीमभ्यशुशुभत॥

८) स अद्य निधनं यात: निर्धनी भूत्वानुयायिन।
अञ्जल शब्दभावानाम्, कुर्वेऽहं समर्पणम्॥

-लुधियाना

❑ मिट्ठालाल मुरडिया, साहित्य रत्न

वे अब नहीं रहे

महाप्रतापी आचार्य श्री नानालालजी म०सा० के दिवगत होने के समाचारो से सारा राष्ट्र सवेदनशील हो गया। उनके जाने से एक पीढ़ी का अत हो गया। ऋषि परम्परा का एक बहुत बड़ा बाध टूट गया, लोक जीवन के अतर का कीर्तिस्तम्भ धराशायी हो गया। प्राचीन पीढ़ी और मर्यादाओ का अत हो गया। समाज, धर्म और देश ने एक धीर-वीर-गभीर और सयम साधना का एक चलता-फिरता यशस्वी आचार्य खो दिया।

अगर ये अमेरिका मे होते तो वाशिगटन और इब्राहिम लिकन की तरह पूजे जाते, अगर इग्लैण्ड मे होते तो वेलिगटन और नेलशन आचार्य श्री का शिष्यत्व स्वीकार करते, स्काटलैड मे होते तो वालेस और राबर्ट ब्रू आचार्य श्री के सहयोगी बन जाते, फ्रान्स और इटली मे होते तो जान ऑफ आर्क और मेजिनी की तरह आचार्य श्री के साथ धर्म जयघोष करते। मगर आचार्य श्री एक निर्ग्रन्थ थे मर्यादाओ की सीमा मे बधे थे, धर्म की लक्ष्मण रेखा थी। जा कुछ तू था, भारतीय और जैन समाज के लिए पर्याप्त था आज नही तो कल तेरा मूल्याकन अवश्य होगा।

अपने साधना जीवन मे आचार्य श्री ने जो ख्याति पाई, जो नाम कमाया, जो प्रतिष्ठा बढायी और जो कीर्ति अर्जित की, वैसी न भूतो न भविष्यति।

काफी समय से आचार्य श्री का जीवन बडा सघर्षमय रहा, अतर्द्वन्द्व अतर मे उथल-पुथल मचाते रहे, तनाव परशान करते रहे, मगर आचार्य श्री कभी निराश नही हुए। अपने अदम्य उत्साह और आन्तरिक प्रेरणाओ से सब कुछ सहते रहे, सब कुछ पीते रहे। समता के साथ धैर्य और विवेकवान बने रहे और सकटो से लोहा लते रहे। स्वास्थ्य साथ न देने पर भी आन्तरिक सघर्षों से झूझते रहे। विपत्तियो मे भी मुस्कराते रहे।

वे तप-त्याग, साधना, समता, ज्ञान-दर्शन और चारित्र्य की अद्भुत मूर्ति थे। सयम-साधना के साकार रूप थे श्रेय मे डूबे रहने वाले कर्मयोगी महात्मा थे, चतुर्विध सघ की पतवार थे।

कबीर के शब्दो मे इन्होंने सयम साधना की पावन चादर 'ज्यो की त्यो' धर दीनी चदरिया। वही चादर पवित्रता से, मैत्री से, समता से, उदारता से और अधिक उज्ज्वल बनाकर समाज और धर्म को वापस समर्पित कर दी। धन्य है इस आचार्य को, धन्य है आचार्य जवाहर और आचार्य गणेश के इस प्रभावशाली लाल को। यही मेरी श्रद्धाजलि है शत्-शत् वदन।

-बैंगलोर-२५

✿

काया महाव्रत निभाकर
गुरुवर किया प्रयाण ।
मुझ को दुख ऐसा हुआ
मानो सुख गया प्राण ॥

-मोहनलाल पारख, नोखा

❑ सुमतिकुमार जैन

आलोकमान भास्कर

कठोर सयम साधना, शुद्ध, सात्विक साधु मर्यादा, विशिष्ट ज्ञान-ध्यान आराधना के लिए विख्यात, सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र रूप रत्नत्रय की आराधना मे जीवन पर्यन्त समाधिभाव में लीन रहने वाले साथ ही सघ व समाज को इस ओर प्रवृत्त होने की सतत प्रेरणा देने वाले आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित तृतीय मनोरथ का अपनाकर महानिर्जरा, महापर्यवसान कर जैन समाज मे एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है। अर्थात् जब सूर्य का प्रभातकाल था तब उन्होने रात्रि के अधकार का सफाया किया और कमल राशि को खिलाए तेजस का प्रसार हुआ कि चन्द्र नक्षत्र सब फीके पड़ गए। मध्याह्न काल मे प्रखरता से तपकर वही सूर्य अब सध्याकाल मे अस्ताचल के शिखर पर उतर गया, हम सब शोक मग्न हो गए।

अपना सपूर्ण जीवन त्याग, तप एव सयम की सौरभ से ओतप्रोत कर जनमेदिनी को सत् मार्ग की ओर प्रेरित किया। जैसे गन्ने को किधर से भी चखे, सर्वत्र मिठास ही मिठास है। सूर्य की प्रत्येक किरण तम नाशक है, पानी का प्रत्येक बिन्दु प्यास बुझाने मे सक्षम है, इसी प्रकार आचार्य भगवन्त के पावन जीवन का एक एक क्षण अज्ञानाधकार मे भटकने वाले मानव समाज के लिए प्रकाश स्तम्भ था। आचार्य श्री की वाणी मे ओज, हृदय में पवित्रता एव आचरण में पवित्रता के साथ साथ आपका बाह्य जीवन जितना नयनाभिराम था उससे भी अनेक गुना आपके अन्तर जीवन की सौरभ थी। आपका जीवन सागर सी गहराई, पर्वत सी ऊचाई, चन्द्र सी शीतलता, सूर्य की तेजस्विता, धर्म की महाप्राण सरलता, सरसता आदि अनेक गुणो से युक्त था। जिस प्रकार एक महावृक्ष महावात के योग से गिर जाय उस समय बेचारे पक्षीगण क्रदन करते है, यही स्थिति जैन शासन और सघ की है वे सघ के छत्रपति, जैन जगत के आलोकमान भास्कर, माँ भारती के अनुपम लाल आचार्य भगवन् को अपने बीच न देखकर, न पाकर अत्यन्त उद्वेलित हैं। राष्ट्र कवि श्री मैथिली शरण गुप्त ने एक जगह लिखा है-

जो इन्द्रियो को जीत कर, धर्माचरण में लीन है।
उनके मरण का सोच क्या वो मुक्त बधन हीन है॥

यह भी कटु सत्य है कि जिस महामानव-महापुरुष ने सब कुछ दे दिया, जीवन सौप दिया। हमारे पास क्या है, जो उनके ऋण को चुका सके। हमारे पास प्रतिदान करने को कुछ भी तो नही है, ऐसे महापुरुष न मालूम कितनी शताब्दियो में आते है। सच ही कहा गया है

हजारो सालो से नरगिस, अपनी बेनूर पर रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन मे दीदार पैदा॥

आचार्य भगवन् अपनी सानी के एक ही थे। आप दीपक के समान थे जो स्वय प्रकाशित रहकर अन्य को प्रकाशमान करते है। परमाराध्य आचार्य श्री नानालाल जी म ने अज्ञान की घोर तमिस्रा को नष्ट कर न जाने कितने व्यक्तियो को ज्ञान से प्रकाशमान किया। दिशाहीनों ने दिशा पायी है पगु गतिमान हुए है। सपत्ति और विपत्ति जीवन और मरण दोनो में महात्मा एक ही भाव दशा रखते है, आप में भी यही भाव हर दम नजर आता है। आचार्य

प्रवर ने जीवन के प्रारभ से अन्त तक एक तेजस्वी व्यक्तित्व को जिया। उस महान् दिव्य पुरुष की सर्व विशेपताओ को शब्दश प्रकट करने की ताकत ही नही। धन्य है ऐसे आराध्य आचार्य देव धन्य है उनकी साधना। ऐसी समता विभूति के चरण कमलो मे सहस्र बार वदन।

-प्रधान सम्पादक, जगमग दीप ज्योति, अलवर

फरजन्द जाया तुमसा

गोपीलाल गोखरु

हुक्मचद गच्छ नायक रोशन है नाम तेरा।
लब पे है हर बसर के पूज्य राज नाम तेरा॥
है धन्यवाद उसको फरजन्द जाया तुमसा।
खुशी हुआ था कुनबा सुनकर के नाम तेरा॥
है सम मरीफ तेरा नाम नानालाल जाहीर।
जाने नही बसरे जो कम्बख्त नाम तेरा॥
फादर है मोड़ीलाल मदर शृगार बाई।
इसी वतन मे जन्मा है दाता ग्राम तेरा॥
सम्वत् उनीसो छन्नु बाना फकीरी पहना।
तब से कहाये मुरसद दुनिया मे नाम तेरा॥
ओहदा मिला था तुझको उदयपुर के अन्दर।
मकलुक तब से कहती पूज्य राज नाम तेरा॥
करता है तू गरजना तख्ते नसीन होकर।
रुकसत अजाब होते सुनकर के कलाम तेरा॥
चक्कर लगाते रहेगे समसो कमर फलक मे।
तब तक रहेगा रोशन दुनिया मे नाम तेरा॥
नह ताव है जबा मे तारीफ कर सकू मै।
खिदमत मे रहे फरिश्ते बनकर गुलाम तेरा॥
खादीम तेरा ये करता है अर्ज दस्त बसता।
किश्ती को पार कर दे मै हू गुलाम तेरा॥
ये गोखरू भी आया करने दीदार तेरा।
सजदा करे कदम मे खादीम सलाम तेरा॥

❑ महेश नाहटा

समता योगी

गंगा की निर्मल धारा सम था जीवन जिनका पावन, ऐसे दिव्य विभूति को कोटि-कोटि वंदन।

भारतवर्ष ऋषियो, त्यागियो और समाज सुधारको की धरा रही है। यहा ऐसे महापुरुषो ने जन्म लिया जिन्होने स्व पर कल्याण के पथ पर चलकर युगबोध, युगनिर्माण का पुरुषार्थ किया। ऐसे ही युग चेतनाओ में एक ऐसे आचार्य का नाम आता है जिन्होने एक ओर अस्पृश्य समझे जाने वाले हजारो लोगो का शुद्ध धर्माचार का उपदेश देकर धर्मपाल बनाया तो दूसरी ओर विषमता, तनाव, व्यग्रता और अशाति से त्राहि त्राहि करती समाज को समता दर्शन व समीक्षण ध्यान के माध्यम से अतरावलोकन व अत निरीक्षण की प्रेरणा दी। भगवान महावीर के वीतराग सिद्धातो का मुकुट धारण करने वाले एव विशुद्ध निर्ग्रन्थ श्रमणाचार का पालन करने वाले व कराने वाले थे जैनाचार्य श्री नानेश जी म० सा०।

२०वीं शताब्दी के महामनस्वी, महातपस्वी, महावर्चस्वी, सर्वतोमुखी व्यक्तित्व के धनी आचार्य श्री नानेश जन-जीवन में सर्वांगीण समुन्नत सस्कार निष्ठ धार्मिक प्रतिष्ठा की स्थापना करने मे सलग्न रहे। आपके समतानिष्ठ शात गभीर व्यक्तित्व एव सयमी जीवन का ही प्रभाव है कि आज के भौतिक युग की सुख सुविधाओ और विषय भोगो का निस्सार और निरर्थक समझ कर ३५० से अधिक मुमुक्षु आत्माओं ने भागवती दीक्षा स्वीकार की। एक साथ पाच, सात, नौ, बारह, पन्द्रह, इक्कीस, पच्चीस दीक्षाए आपश्री के कर कमलो द्वारा सपन्न हुई। रतलाम मे लाखो की जनमेदिनी के बीच आपने एक साथ २५ भव्यात्माओ को दीक्षा दी।

आप आगमों, शास्त्रों के मर्मज्ञ थे। अनेक भाषाओ के अच्छ जानकार थे। अन्य धर्म दर्शनो का आपने गूढ़ अध्ययन किया था। वाणी और लेखनी का अनुपम समन्वय था आप में। आप आत्म साधना व अनुशासन के प्रति सतत जागरुक रहे। आचार्य श्री प्रभावशाली प्रज्ञा पुरुष थे। आपकी प्रभावशाली वाणी जन-जन को आदोलित कर वीतराग मार्ग की ओर प्रेरित करती रही। गुरुदव के समता सदेश को ही आत्मसात कर लिया जाए तो व्यक्ति, परिवार समाज, राष्ट्र, विश्व का उद्धार सभव है। आपकी वाणी और व्यक्तित्व मे अनूठा आकर्षण था। हर परिस्थिति म सहिष्णुता, समता रखकर दुनिया को आपने समता का सच्चा पाठ पढ़ाया।

आपने अपना उत्तराधिकारी शिष्यो में श्रेष्ठ शिष्य, आगम मर्मज्ञ, व्यसन मुक्ति सस्कार क्राति के प्रेरक श्री राममुनि जी को बनाकर जिन शासन व विश्व का एक अनमोल हीरा दिया है।

जैन समाज ही नही वरण सपूर्ण मानव समाज का इस विरल विभूति की महाप्रयाण यात्रा एक अनुपम सदेश दे गई। २७ अक्टूबर १९९९ को पूर्ण चैतन्य अवस्था मे प्रात ९ ४५ बजे सथारा ग्रहण कर रात्रि १० ४१ मिनट में अपने नश्वर देह को छोड़कर मोक्ष मार्ग की यात्रा की ओर प्रयाण किया। जीवन भर उत्कृष्ट सयम पालन का ही प्रतिफल था कि अतिम समय पडित मरण का प्राप्त किया। पिछले छ माह से इस शरीर का मोह छोड़कर वे अतर साधना में लीन हो गये थे। ऐसे महान आचार्य को हमारी हार्दिक श्रद्धाजलि। आपकी यह अमर कहानी युगा युगा तक जन जन को प्रेरणा देती रहेगी। इतिहास उनके गुण गाता है जो दीपक की तरह जलते है, जो विष की घूट पीकर भी अमृत की धार उगलते है।

-नगरी (छत्तीसगढ़)

❑ इन्द्रमल बाबेल

महानता के प्रतीक

हुक्म सघ के अष्टमाचार्य, समता दर्शन प्रणेता, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, श्री नानालालजी म सा के आध्यात्मिक चरमोत्कर्ष पर पहुचने के मूल कारणो का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि-

आचार्य श्री का जीवन सयमीय साधना व तदनुसार आचरण से ओत-प्रोत था। जीवन की असली सपदा चारित्र ही है। चारित्र किसी भी प्राणी को उत्तराधिकार के रूप मे प्राप्त नही होता, वह तो स्वय को अर्जित करना पड़ता है। आचार्य श्री के चरणो के साथ आचरण के जुड़ जाने से चरण पूज्य हो गए हैं। आचार्य श्री ने पहले स्वय सयमित व सादगीपूर्ण जीवन अपनाकर बाद मे अपने श्री सघ के अनुयायियो (साधु- साध्वी, श्रावक-श्राविकाओ) को भी ऐसा ही सयमित एव सादगीपूर्ण जीवन जीने हेतु प्रेरणा व मार्गदर्शन का अविरल स्रोत प्रदान किया। स्वय के विशुद्ध चारित्र पालन द्वारा अपने अनुयायियो पर अमिट प्रभाव डाला।

आचार्य श्री ने यश, कीर्ति की कभी चाहना नही की। मान को सदैव पृष्ठ भाग पर रखकर, पद एव पदवी से सदैव दूर रहकर, सादगी एव सयम से प्रीति रखी, वही उन्हे चरमोत्कर्ष पर पहुचाने मे सहायक सिद्ध हुई।

आचार्य श्री नानेश को श्रमण नियमो के पालन मे शिथिलता कतई स्वीकार्य नही थी। उन्होंने कहा कि- स्थानकवासी परपरा मे देश काल व परिस्थिति के नाम पर भी आगम निरूपित श्रमण आचार नियमो की अनदेखी या शिथिलता कतई स्वीकार्य नही।

आचार्य श्री का मानना था कि भगवान महावीर के दर्शाये सिद्धातो--अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के तहत ही जैन साधु-साध्वियो का आचरण प्रशसनीय है। जैन साधुओ को मर्यादित जीवन जीने के लिए जैन गृहस्थो को सभी जैन साधुओ के आचरणीय मौलिक सिद्धातो की जानकारी होना आवश्यक है। उनके कथनानुसार जब भी जहा भी इन नियमो के विपरीत किसी साधु-साध्वी का आचरण होता है, तो जैन ही नही, हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वे उन्हे नियमो की याद दिलायें।

साधु जीवन मे वर्तमान समय मे आई गिरावट पर चिता व्यक्त करते हुए स्थविर प्रमुख श्री ज्ञान मुनिजी म सा ने उचित ही कहा कि आज स्वच्छदता बढ़ रही है। नैतिक पतन हो रहा है। अगर बचपन के सस्कार सही हैं और वह साधु जीवन अगीकार कर चुका है तो फिर सासारिक मृग-मरीचिका से विलग आत्म-कल्याण की राह पर ही चलना होगा।

आचार्य श्री की सदैव यह मान्यता रही कि लघु से लघु भूलो की उपेक्षा करने स जीवन मे बड़ी भूलो का निर्बाध रूप से प्रवेश होने लगता है। आपने फरमाया कि- आरभ मे भूल का प्रवेश खटकता है, परतु अभ्यस्त हो जाने पर वे बड़ी भूलें भी नगण्य सी प्रतीत होने लगती हैं। फलस्वरूप भूलो से पूर्णतया परिवेष्टित जीवन पतन की ओर बढ़ता चला जाता है। अत प्रारभ मे ही इन लघु भूलो के प्रवेश पर रोक लगाया जाना नितात आवश्यक है। इस दृष्टि से यह उचित ही कहा गया कि रोग, त्रुटि और शत्रु को छोटा समयकर उसकी उपेक्षा नही की जाना चाहिए अन्यथा वे घातक बन जाते है।

आचार्य श्री के सपूर्ण जीवन, आचरण और व्यवहार म इस तथ्य को भली भाति देखा व परखा जा सकता है । उनकी सादगी, त्याग सभी सतों के प्रति सेवा-भावना का उल्लेख शब्दों की सामर्थ्य से परे है । उनका सपूर्ण जीवन वास्तविक अर्थों मे एक दीपक की भाति था, जिसने स्वय जलकर सपूर्ण मानव व राष्ट्र को आलोकित किया । वे विशुद्ध साध्वाचार के प्रतीक थे । वैसे तो उनके जीवन काल की अनेकानेक घटनाओ, प्ररक प्रसगों, चमत्कारिक घटनाओ से हम उनकी महानता व उत्कृष्ट साधना का अनुमान लगा सकते हैं, किंतु यहा एक ऐसी ही लघु भूल की घटना पर आचार्य श्री की प्रतिक्रिया को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है-

आचार्य श्री अपने सतों व श्रावको के साथ विहार करके चार मील की दूरी पर निकल आये । अचानक आचार्य श्री के सामने मुनि अमरचद जी म सा आये और निवदन किया कि मरे स आज किंचित प्रमाद हुआ है । उन्होंने करा, भगवन आज प्रात एक श्रावक से सूई लाया था जो स्थानक मे ही रह गयी । उसे लौटा नही पाया । आप श्री आदेश दे क्या करू ?"

आचार्य श्री ने तुरत कहा 'इसमे क्या सोचना है, किसी श्रावक को साथ लो और ढूढ कर लौट आओ । भगवान महावीर ने कहा- सयम गोयम मा पमायए (हे गौतम एक समय मात्र का भी प्रमाद मत करो) । उपस्थित श्रावको न आचार्य श्री से निवेदन किया भगवन आप इन्ह आठ मील (चार जाने व चार आन) का चक्कर न दे । हम वापस जाएगे ही जाकर सूई अवश्य लौटा देग ।

आचार्य श्री ने हसते हुए कहा- 'आपकी भावना प्रशस्त है किंतु हमारा सयमी जीवन हमे इसकी अनुमति नहीं देता । सयम की अपनी मर्यादाए हैं । हम अपना काम स्वय न करे, अन्यो से करवायें, यह उचित नहीं है । एक सामान्य शिथिलता, एक साधारण मर्यादा भग किसी भी समय बड़ा आकार ग्रहण कर सकता है । सूई तो मुनि अमरचद जी को खुद ही लौटानी है । सुविधाए, दुविधाओ को जन्म देती है । जैन साधु सुविधा भोगी नही है । वह प्रतिपल, अप्रमत सजग है, अनुपल जाग्रत अनुक्षण सावधान ।

जैसे ही मुनि अमरचद जी म सा ने सुना, वे तत्काल उसी दिशा मे चल दिए जिधर से विहार हुआ । स्थानक पहुच कर सूई ली और उसे श्रावक को लौटाकर पुन सघ विहार मे सम्मिलित हो गये ।

इसी एक प्रसग से आचार्य श्री का साध्वाचार के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाना चाहिए । इसी प्रकार आचार्य श्री ने सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र के मार्ग पर दृढता से आरूढ होकर साधना के चरम शिखर पर पहुचने मे सफलता प्राप्त की ।

श्रमण सघ की साध्वी मेवाड़ कोकिला यश कुवर जी म सा ने चित्तौड़गढ मे अपनी आचार्य श्री की श्रद्धाजलि सभा मे यह उचित ही कहा है कि आचार्य श्री का नाम भले ही नानालाल है, किंतु उनके कार्य मोटेलाल के हैं ।

जब तक यह धरती, समाज, राष्ट्र तथा वीर शासन है तब तक आचार्य देव की शालीनता, सतत्व आचार्यत्व व उनके समत्व भाव की दुदुभी चहु दिशा की ओर बजती रहेगी ।

-१५ ग्लास फैक्ट्री, मातृ छाया, उदयपुर - ३१३००१

✿

❑ पारसमल श्रीश्रीमाल

गुरु को जब जाना तब पाया

समता विभूति आचार्य भगवन श्रद्धय १००८ श्री नानालालजी म सा का व्यक्तित्व एव कर्तृत्व सदा सर्वदा स्वच्छ दर्पण के माफिक था, स्पष्ट था। सैद्धातिक धरातल पर उन्होने अपने जीवन को अहर्निश जीने का प्रयास किया। भगवान महावीर के समस्त नियमो के प्रति आस्थावान रहकर साधुमार्गी परपरा को सतत गति देने मे जो भूमिका दीर्घ तपस्वी महान् क्रियोद्धारक श्रद्धेय स्व आचार्य देव श्री हुक्मीचद जी म सा ने सपादित की उसी विशुद्ध परपरा को प्रवर्धमान बनाने मे उनके बादवाले यथा नाम तथा गुण स्वरूप आचार्य श्री शिवलालजी म सा , आचार्य श्री उदय सागरजी म सा , आचार्य श्री चौथमलजी म सा आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा ने जो प्रयास अपने विवेक के साथ अपनी मर्यादा मे रहते हुए किये, आचार्य श्री नानेश ने उसे ही महानता प्रदान करने का सतत कार्य किया तथा जा नवीनता उसमे अनुकूल लगी, वास्तविकता से जुड़ी लगी उसे साकार रूप प्रदान करने मे आप श्री जी की भूमिका सराहनीय रही। मूल परपरा को सुरक्षित रखते हुए, आप श्री जी ने अपनी विचक्षण प्रतिभा के बल पर धर्मपाल उद्धार का जो कार्य किया, वह अपने आपमे विशिष्ट स्थान रखता है। एक व्यसनी व्यक्ति को बदलना जहा मुश्किल है, वहा एक लाख के लगभग बलाई जनो को स्वात्मबोध कराते हुए उनके जीवन के विकास के लिए क्या जरुरी है तथा पारिवारिक व सामाजिक जीवन म सम्मानित स्थान पाने मे क्या आवश्यक है, उसको जिस तरह समझाया, यह आप श्री जी की अनुपम शैली का करिश्मा है।

ध्यान क्षेत्र मे समीक्षण-ध्यान का आगम सम्मत प्रमाण व स्वरूप समझाकर एक ऐसा दिशा बोध दिया जिससे मनुष्य चिता फिक्र के भवर से निकलकर जीवन को यथार्थ रूप से समयकर जीने की कला सीख सके।

स्वाध्याय के क्षेत्र मे पर्युर्षण महापर्व एव अन्य प्रसगो पर अध्यात्म परक जीवन की स्थिति बनाने क अवसर हेतु एक ऐसा सगठन तैयार किया जिसके द्वारा जिन गावो, नगरो मे सत महापुरुष एव महासतियाजी म सा मर्यादा में बाधकता के कारण नही पहुच सकते हैं या जहा की पूर्ति चातुर्मास के रूप मे नही हो पाती है वहा पर स्वाध्यायी भाई-बहन पहुचकर धर्म ध्यान का अलख जगाने लगे।

समता समाज के निर्माण मे समता दर्शन और व्यवहार का प्ररूपण कर आप श्री जी ने यह सुस्पष्ट कर दिया कि जीवन को इस तरह भी जीया जा सकता है , जा जीवन का वास्तविक दृष्टिकोण है। जिसे समझ कर भटकने की बजाय अपने गतव्य की आर अग्रसर हो सके।

१५-१५, २१-२१, २५-२५ आदि दीक्षाओ का एक साथ होना जैन जगत में बहुत आश्चर्यकारी कार्य है। इतना सब कुछ होने पर भी आप श्री जी के जीवन मे कोई अहमन्यता या प्रदर्शन आदि की प्रतिकूल प्रवृति नहीं देखी गई। इसी वजह से आप श्री जन जन के श्रद्धा कद्र बने। न सिर्फ हुक्म सघ की परपरा से जुड़े हुए ही आप श्रीजी को मानते थे, बल्कि अन्य सप्रदाय एव परपराओ म भी आप श्री जी अपने व्यक्तित्व एव कर्तृव्य के कारण समादृत थे।

क्या गुणगान कर ऐसे महामहिम का जिन्होने अपने जीवन मे अनेक उपसर्ग एव परिषह सहकर समतामय जीवन जीते हुए अपनी वह जिम्मेदारी जो प्रवल पुण्य योग स स्व शात क्राति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य से पायी थी उसे बखूबी निभाने के लिए सर्वदा कटिबद्ध रहे हैं। इधर कई वर्षों के अदर स्वास्थ्य की परिस्थिति वश एव शासन की

जाहो जलाली जो विभिन्न रूपों म आप श्री जी के सानिध्य मे होती रही उस भार को हलका करने के लिहाज से आप श्री जी ने चित्तौड़ नगरी मे तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ श्री रामलाल जी म सा को मुनि प्रवर के पद के साथ मुख्य रूप से चातुर्मास की विनतिया सुनना, चातुर्मास खालना, सत सतियो के शासन सबधी पत्र व्यवहार आदि की जिम्मेदारी विधिवत् सौपी थी, और कालातर मे बीकानेर नगर के अदर विधिवत परपरा के अनुसार लिखित व्यवस्था के साथ सयगत उपस्थित साधु साध्वी समुदाय एव श्रावक श्राविकाओ के समक्ष अपना कार्यभार मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को, युवाचार्य बनाकर सौप दिया । इस कार्य से पूर्ण रूपेण शासन के प्रति वफादार चतुर्विध सघ ने आप श्री की इस आज्ञा का यथाविधि पालन कर अपनी श्रद्धानिष्ठा का परिचय दिया । सप्रति आप श्री जी का साया प्रत्यक्ष नहीं है किंतु परोक्ष रूप से आप श्री जी का वरद हस्त सदा सभी पुण्य आत्माओ के ऊपर है और रहेगा । क्योंकि जिस तरह से शासन फल रहा है, फूल रहा है, वर्धमान हो रहा है, इससे आप श्री जी के निर्णय की वास्तविकता के दर्शन प्रत्यक्ष करने का मौका वर्तमान शासन प्रणाली को देखते हुए मिल रहा है ।

सदा सर्वदा आप श्री जी का वरद हस्त हमारे पर बना रहे, हम निरतर आप श्री जी के आदेश निर्देश अनुसार वर्तमान आचार्य भगवन रामेश की छायाछत्र मे रहते हुए अधिक से अधिक शासन की हर तरह से सेवा, भक्ति, विनय करते रहें, यही कामना है ।

-महामत्री, समता युवा सघ, ब्यावर

समता मत्र

मोती विमल

विश्व शांति का महा मंत्र,
आचार्य श्री की समता है ।
जीवन तो रमता भोगो मे,
कर्मों मं कुत्सित ढोंगों में
सुख दुख दोनां साथी है
पग पग बाधा आती है
मेरा मेरी ममता है ॥१॥

बिगड़ी का ना कोई साथी
अपना भी पराया हो जाती
पुद्गल को जो पहचान तू
आत्मा का अन्तर जाने तू
क्यों दुख का कारण बनता है ॥२॥

तुझ में जो अहंकार भरा
मान मोह है क्रोध भरा
तू सम्यक् दृष्टि पाले रे
नानेश शरण अपनाले रे
मुक्ति का पथ बनता है ॥३॥

तन धन तन का अभिमान
दूजां का क्यों अपमान
क्लेष का कारण बनता
क्या तेरा निज की ममता
करणी का फल तू चखता है ॥४॥

-उपाचार्य, आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति, दाता

❑ चचलकुमार बोथरा

विचक्षण प्रतिभा के धनी

चित्तौड़गढ़ जिले के छोटे से ग्राम दाता मे पिता मोड़ीलाल जी एव मातुश्री शृगार कवर बाई की रत्नकुक्षी से जन्म लिया। बचपन का नाम नाना रखा गया। मेवाड़ का यह हीरा जिसकी बुद्धि बचपन मे ही तीक्ष्ण थी तथा सेवाभावना प्रखर थी। गाव के बाहर से औरतें पानी लेकर घर-घर पहुचती। एक बार एक महिला पानी ठीक तरह से ले जा नही पा रही थी, नाना ने स्वय अपने कधे पर घड़ा उठाया और उस वृद्ध महिला के घर पर छोड़ आय। समता का एक अन्य प्रसग गृहस्थ जीवन मे अपने काकाजी के साथ व्यापार प्रारभ करने के समय का है। काकाजी को नाना ने पहले ही कह दिया मुझे गुस्सा आए तब आप शात रहना कदाचित आपको गुस्सा आएगा तो मै शात रहूगा। क्रोध का जवाब शाति से देना यह समता भाव का अनुपम उदाहरण है।

१९ वर्ष की उम्र मे सच्चे गुरु शात क्राति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की खोज के बाद सयम (दीक्षा) ग्रहण किया। दीक्षा लेने के बाद ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि करते हुए गौरवशाली आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद समता संदेश जन-जन के कल्याण के लिए दिया। केवल सदेश ही समता का नही दिया बल्कि अपने जीवन के प्रत्येक क्षण मे समता का जीवन जिया और सर्व जनहित के लिए समता का उपदेश दिया। आप श्री जी की सत्प्रेरणा से बलाई जाति के हजारो भाई-बहनो ने कुव्यसन का त्याग किया जो धर्मपाल के रूप मे जाने जाते हैं। स्थानवासी समाज में पिछले ५०० वर्षों क इतिहास म एक साथ धर्मनगरी रत्नपुरी मे २५ भव्य मुमुक्षुओ को दीक्षा दकर जिनशासन का गौरव ही नही बढ़ाया अपितु एक कीर्तिमान स्थापित किया, जिससे जिनशासन की भव्य प्रभावना का प्रसग बना।

आचार्य श्री नानेश ने सवत्सरी एकता के लिए भी अपनी तरफ से पूरी कोशिश की और यहा तक कह दिया था कि सवत्सरी एकता के लिए यदि सभी जैन समाज भादवा सुदी ४ या ५ की बजाय ६ या अष्टमी कोई भी तिथि तय करते हैं तो मै भी अपनी पूर्व परम्परा स हटकर एकरूपता के लिए जो तिथि सपूर्ण जैन समाज तय करेगा उस तिथि को सवत्सरी के रूप मे मनाने को तैयार रहूगा।

निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए आपन एक ही आचार्य के नेश्राय मे शिक्षा दीक्षा विहार प्रायश्चित रखने की परपरा को अक्षुण्ण रखा। आप श्री ने सयम मे कही पर भी किचित मात्र भी शिथिलता नही आने दी। व सयम के सजग प्रहरी थे।

आप श्री से बम्बई चातुर्मास में एव अन्य चातुर्मासा तथा दीक्षा जैसे विशेष प्रसगो पर तो माईक खाल देना चाहिए का विशेष आग्रह किया लेकिन आपने मूल महाव्रता को पूर्णत सुरक्षित रखा तथा जहा प्रवचन सभा मे परिषद् बहुत ज्यादा आ जाती तो अलग-अलग ढग से दो तीन बार शिफ्ट म प्रवचन दिया जाता। आपने जीवन पर्यन्त महाव्रता को पूणत सुरक्षित रखा, तभी अन्य धर्माचार्य सहज ही कह देते है कि क्रिया देखनी है तो आचार्य श्री नानालाल जी म सा की देखो।

आचार्य श्री नानेश ने अपने मुखारविंद से लगभग ३५० भाई बहनो को दीक्षा प्रदान की जो अपने आप म एक कीर्तिमान है। आचार्य श्री नानेश ने हजारो कि मी की पैदल यात्रा करक जिनशासन की भव्य प्रभावना की

और आपश्री के सान्निध्य में १०१ उपवास की तपस्या तपस्विनी महासती श्री प्रभा जी ने सपन्न की एव वि महासती श्री गुलाव कवर जी म सा को ८३ दिन का उत्कृष्ट सथारा भी आपश्री के सानिध्य मे आया जो कि अपने आप मे एक कीर्तिमान है।

आप श्री ने अपने शरीर की तनिक भी परवाह न करते हुये कहा कि जिन शासन की सेवा करते हुए यह तन भी चला जाये तो कोई बात नहीं है। ऐसे आचार्य जिन्होंने अपने शरीर की तनिक भी परवाह न करते हुए वृद्ध अवस्था मे बीकानेर से ब्यावर और उदयपुर तक पाद विहार किया वह अपने आप में उनके विशेष आत्मवल का, मनोबल का परिचायक है।

आचार्य का महत्वपूर्ण कर्तव्य होता है कि अपने पीछे योग्य उत्तराधिकारी का चयन करना। स्व पूज्य गुरुदेव अपने पीछे प्रशातमना, व्यसन मुक्ति के प्रेरक पद पूज्य श्री रामलाल जी म सा के सशक्त कधो पर गुरुतर भार सौप गये हैं। आचार्य प्रवर इस शासन को खूब देदीप्यमान करेंगे एव खूब चमकायेंगे, यही आशा एव विश्वास है।

स्व आचार्य श्री नानेश एव पूर्वाचार्य का आशीर्वाद उनके पास है एव चतुर्विध सघ उनके साथ है। स्व आचार्य श्री नानेश के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा को हर सभव सहयोग करे एव जैसी उनकी आज्ञा हो, निर्देश हो, उनके अनुसार अनुपालना करे।

-सहमत्री, साधुमार्गी जैन श्रावक सघ,
गगाशहर-भीनासर

जन-जन के सिरताज

भागचद सोनी

गुरुदेव आप थे लोकनायक, समाज के सुधारक,
आप ही तो थे सकल मानव जगत के उद्धारक।
जैसे फूलों बहारों में, गुलाब का है राज,
वैसे बने थे आप गुरुवर, जन-जन के सिरताज।
सपने सभी के ही आपने, किये थे साकार,
पार लगती थी जीवन नैया, था आपका आधार।
समता रस के धारी आपकी, शक्ति अजब निराली,
पत्थर को सोना कर दे, सूखे को हरियाली।
जैसे दूर गगन मे चमकते, सूरज चाद सितारे,
वैसे अलौकिक अद्वितीय थे, पूज्य गुरुदेव हमारे।
आप तो थे क्षीर सागर मे, शशि सम विराजमान,
धरती का कण-कण करेगा, आपका सदा जयगान।
अब तो दिन रात प्रभु से, केवल एक प्रार्थना,
चिर शांति पाए आपकी, पुण्यशाली आत्मा,
चिर शाति पाए आपकी भव्यात्मा ॥

-राजनादगाव

❑ अमृतलाल पगारिया

ऐसे थे मेरे गुरु

याद करू गुरुवर की, करुणा अमिट अपार।
तन मन पुलकित हो उठे चित छाये आभार ॥

भारत की भूमि सतों की, अरिहतो की, अवतारो की, वीरो की भूमि है। इस पावन पुण्य भूमि पर अनेक महापुरुषो ने जन्म लिया है और अपने तप त्याग से, सयम वैराग्य से, साधना आराधना से, स्वय के जीवन को तो निखारा ही है कितु साथ ही साथ जन जन को पावन बनाने का पवित्र सदेश भी दिया है। उन्ही पूज्य महापुरुषो की पावन परपरा मे जैनाचार्य परम श्रद्धेय श्री नानालालजी (नानेश) म सा का नाम बडे आदर एव सम्मान से लिया जाता है।

जिस प्रकार परम तेजस्वी दैदीप्यमान सूर्य का परिचय कराने की जरूरत नही पड़ती है उसका प्रखर तेजोमय प्रकाश एव उष्मा स्वय परिचय करा देता है ठीक उसी प्रकार प्रखर प्रतिभा के धनी वीर सयमी समता की प्रतिमूर्ति आचार्य श्री नानेश का भी परिचय स्वय उनकी साधना एव ओजस्वी प्रतिभा से हो जाता था। बच्चा-बच्चा आचार्य श्री के नाम से परिचित था।

जिस प्रकार फूलो की महक छिपाये छिप नही सकती है उसी प्रकार आचार्य श्री के ज्ञान दर्शन, चारित्र, तप, त्याग,सयम एव सहिष्णुता तथा समता भाव आदि विविध गुणो की चमक छिपाये छिप नही सकती थी।

वास्तव मे आचार्य श्री सादगी के अवतार थे। उनके पास आडबर के नाम पर कुछ नहीं था, और न ही वे आडबर को पसद करते थे। यदि उनके पास कोइ बालक जाता था तो वे बालकों के सामने बालको जैसा अपनत्व दिखाते एव सरल व्यवहार करते थे। एक महापुरुष होते हुए बालको जैसी सरलता मुग्धता, भोलापन विनम्रता उनकी एक महती विशिष्टता थी।

यदि उनके पास कोई विद्वान दार्शनिक या राजनीतिज्ञ मिलने जाता था तो वह अपने क्षेत्र मे आचार्य श्री से अवश्य प्रेरणा पाकर अपने को धन्य मानता था, यहा तक कि आचार्य श्री को वह सभी क्षेत्रो मे निष्णात एव पारगत मानकर जाता था, ऐसी विलक्षण प्रतिभा वाले आचार्य नानेश थे।

वास्तव मे पूज्य गुरुदेव का व्यक्तित्व अनोखा था, उनके दर्शन मात्र से मानव मे मानवता का सचार हो जाता था तथा अपने क्षेत्र मे यदि कोइ भटका हुआ होता तो उसे अपनी राह दीख जाती थी और आचार्य श्री का दर्शन एव उद्बोधन एक भटके हुए मानव जीवन के पथिक के लिए वरदान हो जाता था। समता विभूति पूज्य गुरुदेव का व्यक्तित्व सच मे सूर्य सा तेजस्वी, चाद सा सौम्य, शेर सा निर्भीक, कमल सा निर्लिप्त तथा गुलाब सा महकदार था।

आप श्री ने भारत के सुदूर प्रान्तो में घूम घूम कर, गाव-गाव ढाणी ढाणी जाकर जैन धर्म की प्रभावना की तथा हजारो लोगो को धर्मपाल' बनाया।

हिंसा और विभिन्न व्यसनो मे लगे हजारो गरीब परिवारो को कुव्यसन का त्याग करवाकर उनके परिवार को खुशहाली दिलायी तथा उनको मानव जीवन का सही मार्ग दिखाया। उनके द्वारा हिंसा न करने के त्याग दिलवाकर

आप श्री ने लाखो पशु पक्षियो को भी जीवन दान दिया। यही कारण है कि आप जन मानस के मन मे रच-पच गए। आपकी वाणी अमृत की धारा के समान थी, उस जिसने एक बार सुन लिया वह कभी अघाता न था। आपके व्यक्तित्व और वाणी मे एक अपूर्व आकर्षण था। आपकी जिव्हा पर सरस्वती साक्षात विराजमान थी।

-महामंत्री श्री साधु जवाहर संघ, जावरा

तुम अखिलेश निरंजन

मिट्ठूलाल नागोरी

तुम हो समता के प्रणेता जैन दर्शन के ज्ञाता ।
मानवता के पुजारी दीनहीनों के दाता ॥१॥
जन जन के प्यारे हो कण कण में समाये हो
रग रग में बसे हो सबके मन भाये हो ॥२॥
गजब जीवन तुम्हारा विश्व ने तुमको पहचाना
साधना में लीन हो आत्मा के स्वरूप को जाना ॥३॥
गुरु गणेशी ने भी तुमको खूब तपाया,
आशीर्वाद दे तुम्हें युवाचार्य का ताज पहनाया ॥४॥
तुम में कई छिपे हैं रत्न खोज निकाले,
नव दीक्षित कर नये साँचे में हैं ढाले ॥५॥
तुमने जो भी कुछ किया, याद रखेगा सब कोई,
ऋणी रहेगा समाज हमारा भूल न सकेगा कोई ॥६॥
शत शत वन्दन तुम्हें तुम हो जैनों के पैगम्बर
स्व पर प्रकाशक हो, जानता है धरती अम्बर ॥७॥
क्या कहें हम तुमको तुम इस युग के इष्ट हो
सच्चे माने में तुम, इस युग के सृष्टा हो ॥८॥
ओ विश्व के महामानव, तुमको मेरा शत शत वन्दन,
श्रद्धांजली करता अर्पित, बनो तुम अखिलेश निरंजन ॥९॥

-भीण्डर

❑ शातिचन्द्र मेहता, एडवोकेट

समता-व्यवहार के आग्रही

आचार्य श्री नानेश मूलत एक विचारक थे और मेरी मान्यता है कि वे एक क्रातिदर्शी विचारक थे। समता दर्शन का उनका विचार इसी तेजस्वी वैचारिक्ता का सुफल है। सच माने, इसी विचार के विस्तार के प्रति उनका सपूर्ण जीवन समर्पित रहा और उन्होने सदा समता को व्यवहार मे उतारने का आग्रह किया। अपने प्रवचनो मे समता को उन्होने इतनी प्रमुखता दी कि सारे समाज ने समता की विशिष्टताओ को भली प्रकार से समझा तथा उसके समाजीकरण की दिशा मे भी प्रयत्न किये जा रहे है। समता दर्शन एव उसके व्यवहार के प्रति सपूर्ण समाज कितना अभिभूत हुआ है यह इस तथ्य से ही स्पष्ट है कि आचार्य श्री को समता विभूति, समता दर्शन व्याख्याता आदि विशेषणो से प्रतिष्ठित किया गया।

आचार्य श्री का समता-भाव जीवन मे आचरित करने पर इतना आग्रह क्यो था ? इसे सही परिप्रेक्ष्य मे समझा जाना चाहिए। मै दीर्घकाल से आचार्य श्री के सहज सपर्क मे रहा हू और उनके विचारों की गहराई को समझता रहा हू। उनके प्रवचनो के सम्पादन मे भी मैंने उस गहराई को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। वह गहराई यह है कि वे चारो ओर फैले विषमता के वातावण से पीड़ित रहते थे। कोई क्षेत्र ऐसा उनकी दृष्टि मे कम आता था, जहा विषमता का विष न फैला हुआ हो। वे कई बार धन सम्पन्नो के व्यवहार से भी दु खी होते थे। उनका ध्यान रचनात्मक रूप से दलितों एव पीड़ितो की आर नही जाता था, वे कहा करते थे कि पूरी जाजम समेटकर उस पर एक व्यक्ति बैठ जाय, कतई उचित नही। जाजम बिछाई जानी चाहिए ताकि उस पर सभी समान सुविधा के साथ बैठ सके। उनके मन-मानस मे असमानता की पीड़ा उमड़ती-घुमड़ती रहती थी।

समय समय पर उपजे अपने उन्हीं विचारो को आचार्य श्री नोट करते रहते थे तथा वे ही टिप्पण मुझे दिए गए थे कि मै उन्हे एक ग्रथ के रूप मे सकलित एव सपादित करू। मैंने उनके आशय को समझा जिसके परिणाम स्वरूप जो ग्रथ १९७८ मे प्रकाशित हुआ वह था समता दर्शन और व्यवहार। यह ग्रथ इतना लोकप्रिय रहा कि बाद मे इसका दूसरा व तीसरा सस्करण भी निकला तथा अलग से अग्रेजी अनुवाद भी छपा।

यो तो समता एक शाश्वत सिद्धात है। जैन दर्शन मानता है कि मूल रूप मे सभी आत्माए समान स्वरूपी होती हैं। याने कि सर्व कर्म क्षय करके जो आत्म-सिद्ध होती है, वैसी ही अनन्त शक्ति ससारी आत्माओ में भी समाई हुई है जिसे प्रकट करन के पराक्रम की आवश्यकता होती है। उसी आध्यात्मिक समता के सदर्भ मे व्यावहारिक समता को देखना चाहिए और इसी का अतरदर्शन आचार्य श्री ने अपने ज्ञान-विवेक एव अनुभव प्रयोग मे किया। उन्होने अपना छोटा (सिर्फ १९ वर्ष की आयु तक का) सासारिक जीवन व्यतीत किया, उसकी छाप अवश्य उनके मन मानस पर पड़ी होगी। समता का वही स्पर्श उनके दीर्घ सयमी जीवन मे पल्लवित एव पुष्पित होता रहा। समता का आतरिक मर्म चूकि वे अपने जीवन प्रवाह मे अनुभूत करते रहे उनके उपदेशों में प्रधानत एव अधिकाशत वही समता जन जागरण का सफल माध्यम बन सकी। इसी समता की दिव्य आभा के साथ वे सकुचित दायरो से ऊपर उठकर समस्त विश्व की आस्था के प्रतीक बन गये। समाज मे वास्तविक रूप मे समता की स्थापना हो जो जीवन-यापन से जीवन निर्माण तक सजीवनी के समान प्रभावक बने- यही सदा उनका अतर्भाव रहा। यह अतर्भाव और

दर्शन ही उनके जीवन की सर्वोच्च साधना भी था तो उनके जीवन की सर्वश्रेष्ठ विशिष्टता भी।

आज जब वे भौतिक रूप से सब के बीच नहीं रहे हैं, तब उनके प्रत्येक भक्त का यह कर्त्तव्य बनता है कि आचार्य श्री के समता के व्यावहारिक स्वप्न को स्वयं मे साकार रूप देने के लिए आगे बढ़ें और तद् हेतु सर्व प्रकार के त्याग का परिचय दें। यही उसकी भक्ति की सार्थकता होगी तथा उसका प्रमाण भी।

-ए-४, कुंभानगर चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

त्याग का मकरंद बहाने वाले

कन्हैयालाल बोरदिया

त्याग का मकरन्द जिनके तेज से झरता रहा है,
मन मेरा नित वन्दना, उनकी सदा करता रहा है।
वे सत्य के उदधि, अहिंसा के पुजारी,
उनको पाकर जग हुआ निहाल था।
घर-घर के अन्दर बस रहे हो आज भी,
नाम उनका पूज्य नाना लाल था।
पद आचार्य नित सुशोभित, उन्हे जो करता रहा है,
त्याग का मकरन्द जिनके तेज से झरता रहा है।
भोर का वन स्वप्न वे आये थे मुनिवर,
मोह सबके मन के अन्दर भर गये।
यहां लाख लेते जन्म तो किस काम का,
कर्त्तव्य वे इस जन्म मे ही कर गये।
वे फिर जिस छोर पर मन मेरा फिरता रहा है,
त्याग का मकरन्द जिनके तेज से झरता रहा है।
अन्धकार कैसा धर्म के होते हुए,
चल दिये वे स्नेह भरकर दीप मे।
संतोष से बढ़कर ना कोई रत्न है,
चल दिये मोती रख मन सीप में।
नाम उनका कष्ट सारे, विश्व का हरता रहा है,
त्याग का मकरंद जिनके, तेज से झरता रहा है।
रजकण उदयपुर नगरी का अब भी
हर पल गीत उनके गा रहा है।
नाना गुरु को याद कर आज भी,
रोशनी पावन हमेशा पा रहा है।
सिसकियां उनके बिना कन्हैया का मन भरता रहा है।
त्याग का मकरन्द जिनके तेज से झरता रहा है।

-संयोजक, समता जैन पाठशाला, रायपुर

❑ शकेन्द्र छाजेड़

धार्मिक गगन के दिव्य नक्षत्र

जैन जगत के सजग प्रहरी, समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक, चारित्र चूड़ामणि, इस युग की विरल विभूति आचार्य श्री नानालालजी म सा के ससार मे अब न होने पर भी हमारे हृदय पटल पर अपनी गुण गरिमा के कारण सदा विद्यमान रहेग क्योंकि शरीर क्षणविध्वसि कल्पान्त स्थायिनो गुण'- शरीर तो क्षणभगुर है पर गुण कल्पात (कालातर) तक स्थायी रहते हैं। आपका स्मरण करते ही भर्तृहरि का निम्न श्लोक आप श्री की महिमा प्रकट करता हुआ सामने आता है-

मनसि वचसि काये पुण्य पीयुष पूर्ण ।
त्रिभुवनमुपकार श्रेणिभि प्रीणयन्त ॥
परगुण परमाणुन्पर्वती कृत्य नित्यम ।
निज हवद विकसन्त सन्ति सन्त कियन्त॥

अर्थात् ऐसे सत इस ससार मे विरले ही हैं जिनके मन, वचन और देह मे पुण्य रूपी अमृत भरा हुआ है, जिन्होंने अपने उपकारो से तीनो लोको को प्रसन्न किया है और जो दूसरे के परमाणु बराबर गुण का पर्वत के समान बढ़ाकर अपने हृदय मे सदा प्रसन्न रहते हैं। जिन महानुभावो को आचार्यवर के सत्सग और उपदेशा से लाभ उठाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे मुझसे सहमत होंगे।

आचार्य श्री ने अपने गहरे आध्यात्मिक ज्ञान, तप और त्याग से अनेक परीषह तथा परेशानियो का दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए हिमालय की भाति अटल और अचल रहकर विश्व को सही, सत्य और शाश्वत विचार प्रदान कर इस युक्ति को चरितार्थ किया कि अध्यात्म तर्क का विषय नही है वह हृदय की ध्वनि है। अध्यात्म के पास हृदय होता है इसलिए वह विवादो को समेट लेता है।

कठोर तप और सयम के साधक, सौम्य समता की प्रतिमूर्ति स्वर्गीय आचार्य श्री थे। बाल्यावस्था मे ही ससार की असारता का अनुभव कर, विरक्त बन, ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना करते हुए आपने यह सिद्ध किया कि सामर्थ्य का विकास साधना से हाता है, और साधना तप के बिना नही होती। सतत् साधना और कठिन परिश्रम से ही जीवन निर्माण सभव है।

आचार्य श्री ने अपने जीवन म रत्नपुरी मे २५ मुमुक्षु आत्माओ मे अध्यात्म का प्रकाश दैदीप्यमान कर भागवती दीक्षा अगीकृत कराई एव एक लाख से अधिक धर्मपाल बनाये जो इस सदी के इतिहास मे स्वर्णिम अक्षरा मे अकित करने याग्य है। सघ को आप श्री ने सर्वोत्तम व कुशल मार्गदर्शन देकर मजबूती व वृहद स्वरूप प्रदान किया है, वह आप सबके समक्ष है ही। सघ को अपने भविष्य की उज्ज्वलता का विश्वास हा गया है।

आचार्य प्रवर श्री नानेश की बच्चो व श्री अ भा सा जैन समता बालक बालिका मडली पर अत्यधिक कृपा दृष्टि रहती थी। आप श्री के आशीर्वाद से यह सस्था अल्प समय मे ही अखिल भारतीय स्वरूप को प्राप्त कर नय क्षितिज पर पहुची है व कई धार्मिक व सामाजिक कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

विगत वर्षों की स्मृतिया जव मर मानस पटल पर उभरती हैं तो मन और मस्तिष्क पुलकित हो जाते हैं और उस प्रात स्मरणीय महात्मा का साकार स्वरूप प्रतिफलित हो उठता है। लगता है जैसे व आज भी विद्यमान हैं और मरे कर्त्तव्य पथ का निर्देश कर रहे है। आप श्री के अभाव म हृदय ममान्तिक पीड़ा की अनुभूति कर रहा है।

हमारे आचार्य प्रवर महान प्रतिभा सपन्न विचारक, क्षमाशील, तपाधनी, समता की साकार प्रतिमूर्ति त्यागमूर्ति सरल, निष्कपट हृदय व करुणा सागर थे। आपका व्यक्तित्व महान तजस्वी था। आप श्री ज्ञान, दर्शन, चारित्र की उत्तरोत्तर वृद्धि, शुद्धतम चरित्र व अक्षुण्ण निर्ग्रन्थ समाचारी पालने व पलवाने मे सर्वदा तत्पर व सजग रहे हैं। एक कुशल आचार्य मे जो गुण होने चाहिए, वे सब गुण पूज्य गुरुदेव मे अक्षरश विद्यमान थे।

शरीर दुर्बल हो जाने पर भी आप श्री आत्मबल और मनोबल स बीकानेर से उदयपुर पधारे व आत्म साधना मे लीन रहे। आखिर पादगलिक पदार्थ कहा तक, टिक सकता है, और २७ अक्टूबर १९९९ को समाग सलेखनापूर्वक यह दिव्य विभूति आचार्य श्री नानेश इस धराधाम से प्रयाण कर गई। असीम पुण्योदय से अष्टम श्री हम अपने सुयोग्य उत्तराधिकारी नवम् पट्टधर शास्त्रज्ञ, विनय की साकार प्रतिमूर्ति, आगमज्ञाता वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म० सा० क हाथों सौंप गये हैं।

मै स्वर्गस्थ आत्मा के प्रति श्रद्धापूर्वक श्रद्धाजलि अर्पित करता हू एव नतमस्तक होकर नमन करता हू।

-अध्यक्ष

श्री अ भा सा जैन समता बालक-बालिका मडली

सम्यक् बोध सुधाकर

पवनकुमार कातेला

सम्यक् बोध सुधा दाता के, गुण गण गौरव गाए,
तेरे ही आदर्शों का हम, अभिनव दीप जलाएं।

दाता मे थे लिये जन्म तुम, मोड़ी परिजन भाए,
मानस सौरभ सा करके, करुणा भाव जगाए।

हुक्म गगन के धुनी साधक, कहां तुम्हें है पाए,
जहां कहीं हो है शिवदायक, सादर शीश झुकाए।

श्रद्धा के सुमनों को अर्पण, करते तव चरण में,
महामहिम प्रकाश पुंज, अभिनव दे गति शरण में।

देशनोक

❑ चादमल बावेल

दृढ सकल्प के धनी

इस विश्व के विशाल प्रागण मे प्रतिदिन अनत प्राणी जन्म धारण करते है और प्रतिदिन विकराल काल के गाल मे विलीन हो जाते है। जन्म और मृत्यु का यह काल चक्र अनादिकाल से चला आ रहा है। एक दिन जन्म लेना व एक दिन मरण को प्राप्त करना, यह विश्व का अबाध सनातन नियम है। जन्म-मरण इस दृष्टि से अपने परिवेश मे कोई विशेष घटना नही रह गई है। पता ही नहीं चलता कि इस जन्म मरण के चक्रव्यूह मे कौन, कब और कहा जन्म लेता है, और इस ससार से कब चला जाता है। इस जन्म मरण को क्या कभी ऐतिहासिक बनाया जा सकता है ? विचारणीय प्रश्न है। प्रिय से प्रिय व्यक्ति के जाने से मन को आघात अवश्य हाता है किंतु कुछ समय बाद हम भूल जाते हैं। हमे न तो उनकी जन्म तिथि स्मरण रहती है और नहीं मृत्यु तिथि ही ज्ञात रह जाती है।

इस धरती पर लाखों करोड़ो मनुष्य आते हैं और मरण को प्राप्त कर जाते हैं। मानव जाति को उनसे कोई लाभ नही मिल पाता है। जब इतिहास का अवलोकन करते हैं तो अवगत होता है कि अनेक धनपति व सत्ताधीश हो चुके है, जिनकी गगन चुबी अट्टालिकाओ मे लक्ष्मी नृत्य करती थी, जिनके विशाल भवनो मे वैभव का अबार बिखरा रहता था, जिसकी सेवा मे हजारो सैनिक हाथ जोड़े खड़े रहते थे। अनेक राजा एव सामत उनकी सेवा-चाकरी करते थे। किंतु आज विश्व के किस कोने मे उनका स्मृति चिन्ह अवशिष्ट है ? परतु इस ससार मे ऐसी महान आत्मायें जन्म लेती है जो भौतिक देह दृष्टि से हमारे सामने स ओझल हो जाती हैं, किन्तु उन्होंने आत्म पुरुषार्थ से अपने जीवन मे अलौकिक प्रतिभा के धनी मुनि नाना को गणेशीलाल जी ने युवाचार्य के पद से अलकृत किया तथा २०१९ मे ही झीलो की नगरी उदयपुर म हुक्म गच्छ के अष्टम आचार्य के रूप मे चतुर्विध सघ का नेतृत्व सभाला।

इस महापुरुष ने आत्म-विकास के साथ अनेक भव्य आत्माआ को अपने आलोक से स्वविकास मे सहयोग दिया तथा करीब तीन सौ आत्माओ ने इस भौतिक चकाचौध से हटकर परिवार एव सग सबधियो को परित्याग कर आप श्री क चरणो मे समर्पित होकर भागवती दीक्षा अगीकार की जो अपन आप मे बहुत बड़ी उपलब्धि है। इतनी आत्माओं का अभिनिष्क्रमण मार्ग पर आरूढ होना महान आश्चर्यकारी घटना है। इस युग मे ऐसा बेजोड़ कार्य अन्यत्र देखा नही गया। स्व आचार्य श्री नानालाल जी म० सा० ने अपने समस्त ज्ञान का प्रकाश समाज को वितरित कर समाज की सर्वोत्तम विभूति की रूप मे दृश्यमान रहे। आप भटके हुए समाज के लिए एक दिव्य पथ-प्रदर्शक प्रकाश पुज थे।

जैन समाज के वे नूर थे, छल और कपट से सदा दूर थे,
जीते जी सग्रह किया सयम धन जब चले तो पूर्णता से भरपूर थे।

इस महान् विभूति ने अपने आलाक स अपन विचारो से जन-मानस पर अमिट प्रभाव डाला। आपकी ज्योति ने अधकार मे प्रकाश, निराशा मे आशा की किरण को जन्म दिया था। आपने अपने चितन प्रसूत विचार कणा से, अनक ग्रथो से समाज में क्राति लान का अथक प्रयास किया। समता दर्शन के माध्यम से विषमता के वातावरण को समाप्त किया तथा जो आत्माए भौतिकता के चक्कर म अपने जीवन को बर्बाद कर रही थी जहा पर चारा आर विषमता की अग्नि प्रज्वलित हो रही थी, गहन दुःख की स्थिति बनी हुई थी ऐसे वातावरण मे विश्व शाति का अमोघ

शास्त्र सिद्धांत, दर्शन, जीवन दर्शन, आत्म दर्शन और परमात्मा दर्शन प्रस्तुत कर मानव का सुख शांति के वातावरण म लाने का प्रयास बड़ा ही प्रशसनीय रहा तथा आपने जीवन की परिभाषा इस प्रकार दी कि जिसके जीवन म समता है जो सम्यक निर्णायक की भूमिका पर है वही सच्चा जीवन है। इनका जीवन सदा समता की पावन धारा रहा। इनका जीवन सदा साधना का द्वार रहा। इन्होंने जीना सीखा और सिखाया सभी को। आपका समतामय जीवन जीवन की अंतिम श्वास तक सघ का आधार रहा।

इसी प्रकार समीक्षण ध्यान को आपने अपनी प्रखर प्रतिभा से सपादित कर यह दृष्टि कोण दिया कि चितवृतियो का विरोध ही नहीं अपितु सशोधन किया जाये। ऐसा प्रायोगिक दृष्टिकोण देकर मन को निग्रह करने की एक विधि साधको के सम्मुख प्रस्तुत की जिसका सभी ने समादर किया था। धर्मपाल प्रतिबोधक बनकर अनेक दलितो का आपने उद्धार किया तथा इस उक्ति को सार्थक किया- जन्म न जायते शूद्र सस्कारात् भवेत विप्र, आपने इस प्रकार हजारो बलाइयो को जैन दर्शन की ओर प्रेरित कर उनके जीवन मे नैतिकता एव आध्यात्मिकता का सचार किया। उनको अनेक दुर्व्यसनो से निवृत्त किया। सदाचारी जीवन जीने की कला का प्रादुर्भाव किया। आपने ऐसा बेजोड़ कार्य कर एक मिसाल कायम की जो युगो युगों आपकी गुणगाथा को विस्मृत नहीं करा सकती है। आपके प्रवचनो का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनके जीवन में आमूल चूल परिवर्तन हो गया, यह सब आपके तेजस्वी जीवन का प्रभाव है जो कि हमेशा अमिट रहेगा।

ज्ञान भरा प्रवचन खरा जब देते थे आप।
जिज्ञासु मन प्रसन हो त्यागते सारे पाप॥

ऐसी महान् विभूति का हमारे मध्य से प्रस्थान कर जाना चतुर्विध सघ के लिए अपूरणीय क्षति है, वह महान् विभूति भौतिक रूप से भले ही हमारे मध्य नहीं है किंतु आज का जैन इतिहास इनकी स्वर्णिम आभा से जगमगाता रहेगा अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करेगा। क्योंकि ऐसी सरल विरल आत्मा का मिलना असभव है। उनका अभौतिक रूप चिर काल तक हमारी स्मृति पटल पर चक्कर लगाता रहेगा, इसमे सशय भी सभावना नहीं है। महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के अवसर पर शोकाकुल जनसमूह का सबोधित करते हुए देवेन्द्र शक्र ने ये वाक्य दोहराये थे- 'अनिच्चावत् सखारा उप्पाद व्यय धामेन' यानी ससार मे उत्पन्न होने वाली सभी वस्तुए अनित्य है, शरीर धन वैभव ऐश्वर्य जो कुछ भी है भौतिक है, विनाशी है, वह एक दिन उत्पन्न होता है तो एक दिन विनिष्ट। अत मानव जीवन मे जो विभूति है, समृद्धि है वह है आध्यात्मिक बल। साधना के क्षेत्र मे इसी बल को तौला एव नापा जाता है। महान साधक आचार्य नानेश का जीवन विनाशी से अविनाशी की ओर बढ़ा था मृत्यु से अमृत की ओर गति किया। अतः साधना, ज्योति, सेवा एव सद्भाव की सुरुचि जो हमारे मध्य छोड़कर गए है वह अभौतिक है वह अमरणशील है। जब भी हम उसे देखना चाहें वह हमारे मध्य विद्यमान मिलेगी, उन्होंने अपने अथक श्रम से जो भी बीज अकुरित किये वे आज लहलहाते वृक्ष के रूप मे पुष्पित एव पल्लवित हो रहे हैं, उनके द्वारा यह सिंचित वृक्ष धर्म और समाज को शीतल छाया एव मधुर रस से तृप्त करता रहेगा।

महापुरुषो की गुण गाथा कौन लिख सकता यहां।
सपूर्ण सागर नीर यो घट मध्य रह सकता कहा॥

आचार्य देव का व्यक्तित्व जल तरगों के समान निरतर गतिमान पुष्प गध के समान सदैव प्रवहमान रवि रश्मियो के समान आलोकमय एव जलोदधि के समान अति गभीर था। आप मन से सरल, हृदय से भावनाशील, व्यवहार से मृदुल एव चित्तवृतियो से स्वच्छ एव निर्मल थे। आपके जीवन मे स्वाध्याय एव तत्व चर्चा का विस्तार इस बात को प्रमाणित करता है कि आपने इसी को अपने जीवन म आत्मसात कर लिया था। सयम की दृढ़ता, समाचारी के प्रति सजगता मर्यादाओ का

परिपालन, अनुशासित जीवन का जीना आपके रग रग मे समाया हुआ था । एक समय आपका पदार्पण डा राधाकृष्णन् नगर भीलवाड़ा मे हुआ था । उस समय सयोग से मेरे यहा पर प्रात एव साय आहार हेतु प्रसग हो गया था, जो कि आपकी समाचारी मे नही है। पता नही यह आपको कैसे मालूम हो गया । सायकाल प्रतिक्रमण के बाद मै प्रश्न चर्चा मे गया था, उस समय मै ही था किंतु बाहर अनेक श्रद्धालु अवश्य विराजते थे। जब मै बाहर निकला तब आप श्री भी बाहर आये एव सभी के समक्ष इस दोष परिमार्जन की वार्ता रखी, इससे यह प्रकट होता है कि आपकी कितनी पैनी दृष्टि थी । कितनी सूक्ष्म गवेषणा थी जबकि मुझे ऐसी जानकारी नहीं थी। सभी श्रद्धालु नत मस्तक हो गए कि आचार्य श्री अपने जीवन मे कितने सतर्क एव सजग हैं, तथा कितनी छानबीन करते हैं।

आचार्य श्री हमेशा दृढ सकल्प के धनी रहे है निर्भय एव निडरता से अपने निर्णय देने मे कभी हिचकचाते नही थे। सघ मे अनुशासन बना रहे इसके लिए वे कठोरता से समाचारी का स्वय पालन करते एव पालन करवाते थे। कोई कितना भी नाराज क्यो न हो इसकी परवाह नही करते थे । हृदय से नवनीत समान कोमल अवश्य थे, किंतु सघ व्यवस्था मे कठोरता उपालभ देना, फटकारना दड प्रायश्चित देना जो कि आवश्यक था उसे सपन्न करने मे शिथिलता नही रखते थे। क्रोध शीघ्र ही समाप्त हो जावे ऐसी आपमें अद्भुत शक्ति थी। सच्चे निर्ग्रन्थ की तरह किसी प्रकार की कोई ग्रथि नही थी। आपका जीवन चदन के वृक्ष की तरह शीतल था, जो शीतलता दूसरो को प्रदान करने मे अर्थात् आपका जीवन प्राणि-मात्र के लिए अनुकम्पा से युक्त था। आपका अतर्मन निर्मल हो के कारण किसी बात को सामने वाला सहज ही स्वीकार कर लिया करता था। आपका मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण विराट था, जिससे सपर्क मे आने वाले श्रद्धालुओ की अतर्मन की यात आकृति से ही जान लेत थे।

आपके प्रवचना स या वातचीत से श्राता इतने प्रभावित होते थे कि वे चाहते थे कि आपका निरतर सानिध्य मिलता रहे तथा आपके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव से समर्पित हो जाते थे। हर साधक एव श्रावक आपके अनुग्रह की अपेक्षा रखता था। आपका कृपा पात्र बनने की अभिलाषा रखता था। आज वह महान विभूति हमारे मध्य नही है किंतु उनका सौम्य चेहरा, उन्नत भाल, गेहुँआ वर्ण, लबी भुजाएँ, दृढ एव विशाल वक्ष स्थल, निर्विकार लोचन, मुख वस्त्रिका से शोभित मुखमडल श्वत परिधान म तेज सी चमकती दह, हमारी दृष्टि से ओझल नही हो सकती। जब भी स्मरण आता है तो सहसा स्मृति पटल पर यह स्वरूप उभरता है।

वास्तव मे आचार्य श्री का जीवन गौरवशाली था। वे केवल जैन समाज के ही नही अपितु सभी के लिए वरदान थे। एक आदर्श साधक, आदर्श तपस्वी, बाल ब्रम्हचारी होने के कारण आपका व्यक्तित्व तेजस्वी था एक बार जो आपके दर्शन कर लेता उसके मन मे आपकी पावन प्रतिभा स्थापित हो जाया करती थी।

हे जिन तत्व के साधक शिरोमणि आपका गुणानुवाद करना कठिन है। जैसे प्रलय काल की वायु मे समुद्र मे तरगे उठ रही हों उसको अपनी भुजाओ से तैरना कठिन है। उसी प्रकार आपके अनुकरण के अथाह समुद्र का अवगाहन करना कठिन है।

आपका विराट रूप शब्दो मे कभी नही समाता है।
कितना कुछ लिखें मगर लिखने को शेष रह जाता है।

हे भारत के महान् आचार्य आपके चरणो मे सादर श्रद्धाजलि अर्पित करता हुआ यह मगल कामना एव मगल भावना करता हू कि आपको चिर शान्ति प्राप्त हो।

सी-४६, डा राधाकृष्णन नगर
भीलवाड़ा-३११००१

□ लालचद नाहटा 'तरुण'

सघ गौरव बढेगा

परम पूज्य आचार्य भगवन्त के आकस्मिक स्वर्गवास के समाचार सुनकर मन अवसाद से भर गया मस्तिष्क सुन्न हो गया, किकर्त्तव्यविमूढत्व-सी स्थिति हो गई, परन्तु क्या करे ? किसके वश की बात है ? जो आता है, उसको जाना ही है। यही प्रकृति का अटल, अविचल नियम है, जिसमे कही कोई अपवाद नही है। यही अनित्य भाव पाकर हमे सताप धारण करना पड़ता है और करना चाहिये।

इस आकस्मिक घटना स वर्तमान आचार्य श्री रामेश के कधो पर अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व आ गया है वह है हुकमगच्छ के इस जहाज को सफलता की नई बुलदियो का सस्पर्श कराना। परम् पूज्य आचार्य भगवन्त से समाज को, सघ को, शासन को बड़ी आशाए है, आकाक्षाए है।

पहले तो स्व पूज्य आचार्य भगवत रूपी छत्र अपने ऊपर था। हर आपत्ति, विपत्ति मे वह अपने आप हमारी रक्षा करता था। छोटी-छोटी और कभी-कभी बड़ी बाते भी स्व आचार्य भगवन्त की ओजस्विता और तेजस्विता के सामने प्रभावहीन होकर अस्तित्व खो बैठती थी। अब आचार्य श्री रामेश उसी परम्परा मे सघ गौरव बढायेगे विश्वास है।

-केकड़ी

□ अजीत जैन
महापौर, नगरपालिका निगम

ऊर्जा के जीवत प्रतिमान

प्राणिमात्र को कल्याण का पथ बतलाने वाले, महान् शासक प्रभावक, समता दर्शन प्रणेता, समीक्षण ध्यान योगी आचाय भगवन्त का विछोह, हम सभी के लिये अपूरणीय क्षति व अत्यन्त वेदनाकारी घटना है। वे ऊर्जा के जीवत प्रतिमान थे। मानव धर्म और मानवीयता के प्रति उनका उदात्त चिन्तन सदा-सर्वदा सभी का पथ प्रशस्त करता रहेगा। दैहिक रूप से आचार्य भगवन्त हमारे बीच मे नही है किन्तु उनकी दिव्य छवि और जीवनोपकारी वाणी से निरतर सद्कार्य की प्रेरणा मिलती रहेगी।

वर्तमान गुरुवर आचार्य प्रवर प पू श्री रामलालजी म सा के तपोमय जीवन तथा गुरु गभीर चिन्तन को देखकर हम सब आश्वान्वित है कि आप श्री के माध्यम से श्रद्धेय गुरुवर के ज्ञान पथ का अक्षय आलोक सबको प्राप्त होता रहेगा और आपके उत्तराधिकार व दिशा निर्देशन मे जिनशासन व श्री सघ की शोभा वृद्धि अविराम होगी।

-राजनादगाव

❑ गौतम जैन

प्राणिमात्र के लिये महत्त्वपूर्ण

प्रत्येक युग मे किसी न किसी महापुरुष का अवतरण होता है। उसी तरह इस कलियुग (कलिकाल) मे भी आचार्य श्री नानालालजी म सा का अवतरण हुआ। जिन्होंने अपनी दिव्यता से परिवार, समाज एव राष्ट्र ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व को सुरभित किया है। जनमानस के जीवन मे अपने सिद्धान्तो एव उपदेशो से अतर्ज्योति जाग्रत करके अभिनव आलोक को आलोकित किया है। आपश्री के पुण्य इतने प्रबल थे कि इनके स्मरण मात्र से विपदा सपदा बन जाती है, उलझन सुलझ जाती है एव दुर्लभ पथ सुगम पथ बन जाता है।

आपश्री अपने जीवन मे कभी भी पुष्प की तरह प्रशसा एव तीक्ष्ण शूलरूपी निंदा की परवाह न करते हुए गजगति सिह की तरह साधना पथ पर बढते रहे एव जिनशासन मे सूर्य एव चन्द्रमा की तरह चमकते रहे।

आपश्री की सन्निधि मे आने पर अधम से अधम व्यक्ति भी महान् बन गये।

आचार्य श्री जहा जहा पधारे समवशरण का एव अदृश्य शक्तियो की उपस्थिति का आभास होता था। ऐसे कई प्रत्यक्ष अविस्मरणीय प्रसगो मे से एक आचार्य श्री का जयनगर पधारने पर केसर वर्षा का था।

मेरी हार्दिक श्रद्धाजलि एव वन्दन।

❑ डा शान्ता जैन

विशिष्ट जैनाचार्य

पूजनीय आचार्यश्री नानेशजी के देवलोक हो जाने के सवाद ने पूरे जैन समाज को एकबारगी उदासीन कर दिया पर जन्म और मृत्यु की शास्वत परम्परा को कोई नही रोक सकता। इस सदी के अन्त में हमने कई जैनाचार्यो एव विशिष्ट जैन धर्म प्रचारक मुनियो को खोया है। दो वर्ष पूर्व ऐसी ही असहनीय घटना जैन तेरापथ समाज मे घटी थी। श्रद्धेय आचार्य श्री तुलसी को खोकर हम सब खाली हो गये थे। पर जैन श्रमण परम्परा की स्वस्थ एव गौरवशाली परम्परा रही है उत्तराधिकारी की। तेरापथ समाज को आचार्यश्री महाप्रज्ञ का नेतृत्व मिल गया। इसी तरह साधुमार्गी सम्प्रदाय मे पूज्यश्री रामलालजी म सा का आचार्य के रूप मे प्रतिष्ठित होना भी प्रभावक रहेगा।

श्रद्धेय आचार्यश्री नानेशजी ने अपनी पवित्र सन्तता के साथ अपने धर्मसघ को ज्ञान दर्शन चारित्र एव तप की दृष्टि से सक्षम एव समृद्ध बनाया। उनकी प्रशासना ने श्रमण सघ को गौरवान्वित किया। वे सिद्धान्तवादी थे, साधुता के आचार-विचार पालन मे कहीं, कैसा भी समझौता नहीं करते थे। प्रत्यक्षत दर्शन तो कभी नही हुए पर उनका साहित्य प्रवचन एव विचारो को पढने सुनने का बहुत अवसर मिला था। आज श्रद्धाप्रणत है उस दिव्यात्मा के प्रति जिसने उम्र भर 'तिन्नाण तारयाण' के व्रत का पालन किया और सबको आत्मविकास का नया रास्ता दिखाया।

□ इन्दरचंद जैन
सदस्य, अखिल भारतीय कांग्रेस कमटी

महातेजस्वी आचार्य प्रवर

आगम रत्नाकर मे गभीर अवगाहन करने वाले सरल, सरस, सुवोध चिन्तन मनन से जीवन को सम्यक् दि प्रदान करने वाले, जिनश्वरोपदिष्ट विशुद्ध श्रमणाचार का पालन कर सैकड़ो मुमुक्षु आत्माओ को सयम मार्ग पर अग्रसर करने वाले, विश्व शांति के अप्रतिम उद्गाता, जिनशासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, समता दर्शन प्रणेता समीक्षण ध्यान महायोगी, सस्कार क्रांति के महानायक तथा बीसवी शताब्दी के महामनस्वी सर्वतोमुखी व्यक्तित्व परम पूज्य आचार्य श्री नानेश का विछोह अत्यन्त असह्य व पीड़ाकारी है परन्तु जिनदर्शन प्रणीत आयुष्य के चक्र से उद्घोषित ज्ञान राशि के प्रकाश म मन को समझाना ही पड़ता है कि यह वियोग अपरिहार्य है।

महातेजस्वी आचार्य प्रवर निरतर श्रमण संस्कृति और मानवीय मूल्यो की संस्थापना के गुरुतर दायित्व का स्तुत्य निर्वहन करते हुए जब छत्तीसगढ अचल मे पधारे थे तब यहा साधु-साध्वियो की संख्या नगण्य थी। परन्तु परम पूज्य आचार्य श्री की प्रभावना, प्रेरणा और मगल आशीर्वाद ने लगभग ३५० मुमुक्षु आत्माओ म सयम पथ अगीकार करने की प्रबल भावना उत्पन्न कर दी।

वयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध आचार्य प्रवर शासन प्रभावना और हुक्मशासन की गरिमा महिमा को अक्षुण्ण रखने हेतु शारीरिक नि शक्तता को परे रखकर आत्मबल से उदयपुर पहुच गये। स्मृति शेष श्रद्धेय गुरुवर का पावन सानिध्य प्राप्त करने के अनेक सुअवसर आये जीवन धन्य हुआ किन्तु कुछ वर्षों पूर्व बीकानेर मे आचार्य श्री का सानिध्य ५ ७ दिनो के लिए मिला और उनका दिव्य सामीप्य स्मृति पटल पर चिरअंकित हो गया।

महायशस्वी युग पुरुष की छत्र छाया अब प्रत्यक्षत नहीं है परन्तु उसका आशीर्वाद व जीवन की दशा व दिशा बदल लेने वाले शुभसदेश से समतामय, सात्विक जीवन की प्रेरणा सदैव प्राप्त होती रहेगी जिससे शासन की सेवा का बल भी निश्चित रूप स मिलगा।

वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा भी उच्च कोटि के साधक, शास्त्राध्ययन म गहन रुचि सम्पन्न अडिग तपस्वी व मनस्वी व्यक्तित्व हैं। प्रत्येक शनिवार मौन पूर्वक उपवास व सयम का विशुद्ध पालन हम विश्वास दिलाता है कि आचार्य श्री अपने गुरुतर उत्तरदायित्व का निभाने मे पूर्णत यशस्वी होंगे। उन पर अब विशेष जवाबदारी आ गयी है। गुरुदेव का सबल तथा उनके तेज से अर्जित ज्ञान व सयमबल से आचार्य श्री अनवरत जिनशासन प्रभावना कर, यही मगलकामना है।

-राजनांदगांव

❑ अमृतलाल मेहता

मर्मस्पर्शी देशना

श्रीमद् जैनाचार्य श्री नानेश के चरण रतलाम का ऐतिहासिक चातुर्मास पूर्ण कर जिनवाणी की अमृत वर्षा से क्षेत्रो को सरसब्ज करते हुए छत्तीसगढ के सिहद्वार राजनादगाव की ओर बढे। सम्पूर्ण छत्तीसगढ की पावन धरा अपरिमित आनद की अनुभूति में निमग्न हो गई।

आचार्य श्री की मर्मस्पर्शी देशना श्रवण कर मछुआरो ने अपनी आजीविका के साधन जाल को जलाकर अहिसक बन मानवता का रास्ता अपनाया।

रायपुर मे मोहरम के अवसर पर धर्म जुलूस द्वारा बैनर फाड़ने से स्वधर्मी बन्धु उत्तेजित हो गये। दगे की आशका से आशकित पुलिस अधीक्षक एव मौलवीजी क्षमायाचना करने लगे। आचार्य भगवन् ने कहा, मै तोड़ने नही जोड़ने आया हू। सर्व धर्म समभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण पाकर एव मासाहार का प्रत्याख्यान कर वे प्रसन्नवदन लौटे। राजनादगाव चातुर्मास मे मद्रास श्री सघ अध्यक्ष श्री गणपतराजजी बाहरा के नेतृत्व मे स्पेशल ट्रेन से दर्शनार्थ उपस्थित हुआ।

सड़क पर बिना माइक के शान्त वातावरण मे प्रवचन आवास, भोजन की सुव्यवस्था सघ अध्यक्ष का सघप्रेम एव अटूट श्रद्धा आज भी हृदय पटल पर चलचित्र की तरह अकित है।

दुर्ग चातुर्मासीय कुप्रथाओ को छोडन हेतु प्रवचनो से प्रभावित होकर दहेज प्रथा, मृत्युभोज, पल्ला लेने कृत्रिम रुदन जैसी सघ अध्यक्ष श्री जुगराजजी बाथरा ने खड होकर परिवार का सौगन्ध दिलवाये एव कहा कि मरी मृत्यु पर कोई पल्ला न ले तथा मृत्यु भोज न करे।

आचार्यश्री के क्षेत्र खोलने पर छत्तीसगढ क्षेत्र मे सता, महासतियो के चातुर्मास विचरण, धार्मिक शिविरो का स्थायी आयोजन क्षेत्रीय समता प्रचार सघ की स्थापना गाव गाव मे नूतन जैन भवनो का निर्माण जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य सपादित हुए।

आचार्य श्री ने अपने मुखारविन्द से छत्तीसगढ अचल की श्रद्धा समर्पणा की मुक्त कठ से प्रशसा की है।

-राजनादगाव

❑ मोहनलाल श्रीश्रीमाल

नेह निधि नाना

मुझे जब भी स्व आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा के दर्शन वन्दन और सेवा का अवसर मिलता था मेरा मन मयूर नाच उठता था। मेरा हृदय एक बालक जैसा हो जाता था और मेरे चाल ढाल और व्यवहार म भी बालपन झलकने लगता था। पैर धरती पर सीधे नही पड़ते थे। प्रौढ़ावस्था का भुलाकर मै बाल्यावस्था के आनन्द सागर मे गोते लगाने लगता था क्योंकि आचार्य श्री नानेश के मातृवत् वात्सल्य मे, उनकी नेह निधि मे नहा कर मै भी नाना' के साथ नाना बालक-ही बन जाया करता था। नाना गुरु की पावन सन्निधि मे बिताये गये मेरे जीवन के क्षण ही आज मेरे जीवन की अमर निधि बन गये है।

धमपाल पदयात्राओ म प्रात की मन्द, शीतल समीर मे जब धर्मजागरण यात्रियो के जत्थे एक पड़ाव स दूसरे पड़ाव हतु प्रस्थान करते था ता जयगुरु नाना के जयघोष के बीच मेरा स्वर कुछ बुलद होने के कारण वरिष्ठ सघ प्रमुख और स्नेही सगी साथी जब मुझसे गीत गाने का आग्रह करते थ तो न जाने क्यो हर बार मेरे कठो स एक ही स्वर फूटता था- मेवाड़, देश बस्ती दाता, सिणगार कवर जिणरी माता, उन माड़ीलाल जी के नदन की, जय बोलो नाना गुरुवर की- जय बोलो नाना गुरुवर की - और फिर यात्री दल इस पावन समूह गीत से एकात्म हो उठता था और गगन मडल में एक ही ध्वनि प्रतिध्वनि गूजती रहती थी-जय बोलो नाना गुरुवर की।

धर्मपाल यात्राओ के बाद जब सघ ने मेवाड़ क्षेत्रीय पदयात्रा का आयोजन किया और यात्रा अवधि मे दाता म भी प्रवास और पड़ाव रखने की घोषणा की तो मेरे सेवक श्रावकों के हृदय म हर्ष का सागर हिलोरें लेने लगा। ज्यो ज्यो यात्रा मे कदम दाता की ओर बढ़त थे त्यो त्यो मेवाड़ देश, बस्ती दाता का गीत सहज ही मुखरित होने लगा था। हम दाता पहुच कर धन्य हो गए। धन्य है हमारा सघ भी जो सदस्यो हेतु ऐसे ऐस श्रेष्ठ आयोजन करता है।

बीकानेर ब्यावर-उदयपुर गुरुदेव के सभी प्रवासो मे मैंने और मेरे परिवार ने भरपूर धर्मलाभ लेने का प्रयत्न किया और सभी समया में गुरुदेव का अमित स्नेह भी अमृत वर्षा करता रहा।

उदयपुर मे जब गुरुदेव की अस्वस्थता कुछ वृद्धि पर थी, तब मैंने भी वहा चौका लगाया था। प्रात सध्या दोपहर बल्कि दिन रात गुरुदव का सान्निध्य प्राप्त करने की चाह रहती थी। सघ प्रमुखो और गुरु भक्त श्रावक श्राविका वर्ग हमार चौक म पधारे- यह भी मेरी तथा मेरे परिवार की भावना रहती थी। अत चतुर्विध सघ का आवागमन बना रहता था और इस अवधि मे वार्ता का कुछ भी प्रसग उपस्थित हाता ता उस वार्ता का केन्द्र बिन्दु 'नाना गुरु ही हुआ करते थे।

इस प्रकार आचार्य श्री नानेश की कृपा का प्रसाद हम जीवन भर प्राप्त करत रहे। नेह निधि नाना की यह कृपा चिर स्मरणीय रहेगी। साथ ही स्मरणीय तथा वदनीय रहेगी उनकी महान् देन नवम् पट्टधर आचार्य श्री रामेश। उस महाविभूति को कोटि-कोटि वन्दन।

-महावीर बाजार ब्यावर

असीम कृपालु

पूज्य आचार्य श्री १००८ श्री नानालालजी म सा से मै स्वर्गीय पूज्य आचार्य श्री १००८ गणेशीलालजी म सा के समय से ही परिचित रहा हू, सम्पर्क म रहा हू। कुछ सस्मरण प्रस्तुत कर रहा हू-

मै अहमदाबाद से उदयपुर शाम को पहुचता हू। गुरुदव के उस दिन मौन था बीमार चल रहे थे। मरी उस समय युवाचार्य श्री नानालालजी म सा से जो बात हुई उसका सार है-मालूजी यह सघ कैसे चलेगा साधु बहुत ही कम है दीक्षाए भी विशेष नही हो रही है अधिकतर वृद्ध साधु है। लेकिन आचार्य पद प्राप्त हाने के बाद प्रबल पुण्योदय से सघ मे करीब ३५० दीक्षाए हुई।

भावनगर चातुर्मास की बात है। मैंने गुरुदेव से प्रश्न किया कि आप कोई भी प्रश्न सामने आने पर तुरन्त निर्णय नही लेते है तो उन्होंने बताया कि, 'मै एकान्त मे सोचता हू- मनन करता हू और फिर स्व गुरुदेव को आदेश के लिए विनती करता हू और रात में साधना म या स्वप्न में उनकी तरफ से सकेत मिल जाता है और उसी आदेश का मै पालन करता हू।'

पूज्य गुरुदेव उदयपुर से अहमदाबाद चातुर्मासार्थ डोली पर पधार रहे थे। लगभग १० किलोमीटर पर एक गाव से दूसरे गाव आ रहे थे। ४ सत ५वे गुरुदेव, एव छठा मै था और कोई नही था। लगभग ८ किलोमीटर तक मेरी गुरुदेव से विविध विषयो पर बातचीत होती रही। मेरी जिन्दगी का वह लगभग ८ किलोमीटर प्रथम एव अतिम प्रवास था। एक गाव आया वहा रुकना था पर गुरुदेव वहा रुके नही एव प्रवास चालू रखा और फिर लगभग ८ किलोमीटर पर जाकर रुकना हुआ। भाई पीरदान पारख (मत्री अहमदाबाद सघ) चितित था कि गुरुदेव पधार गये है पर अहमदाबाद मे अब तक रुकने के स्थान का निर्णय नही हुआ है- मैंने कहा कि चिता की कोई बात नहीं है गुरुदेव के अतिशय से सब कुछ हो जावेगा और जब हम लाग अहमदाबाद पहुचे ता राजस्थान हॉस्पिटल के मत्री श्री सपतराजजी हुण्डिया (वकील साहब) ने बताया कि उनकी कार्यकारिणी ने ठहरने क लिए स्वीकृति दे दी है। यह गुरुदेव का अतिशय ही था कि उनक वहा रुकने के पुण्य प्रभाव से हास्पिटल का कार्य जा लगभग ३ वर्ष से मकान बन जाने पर भी अर्थाभाव से रूका हुआ था चालू हो गया और आज वह हास्पिटल सफलतापूर्वक कार्यरत है और जन-साधारण की सेवा म सलग्न है और गुजरात में प्रथम श्रेणी में गिना जाता है।

स्व गुरुदेव की मुध पर अति कृपा थी एव अहमदाबाद चातुर्मास के बाद मेरी विनती पर मेर निवास अबाबाड़ी के पास ४ या ५ दिन के लिए नवरगपुरा से विहार कर पधारे। अबावाड़ी में अपना स्थानक नही था और वहा क श्रावकों ने मुध कहा कि गुरुदेव से विनती करे कि हमार यहा एक उपाश्रय हा जाव तो अच्छा रहे-मैंन गुरुदेव स प्रार्थना की और गुरुदेव न सघ में स्थानक की उपयागिता के विषय मे अति सुदर व्याख्यान दिया और उनका अतिशय ही समझिये कि वहा (अबावाड़ी) पर आज अति सुदर स्थानक बन गया है।

मरे साथ मरी धर्मपत्नी पर भी उनकी असीम कृपा थी जब भी मै दशनाथ पहुचता ता दर्शनोपगत उनका पहला प्रश्न यही होता था कि बाई जी आये है कि नही। हमारे परिवार पर रही असीम कृपा को स्मरण कर मै अभिभूत हो उठता हू।

दहेज प्रथा उन्मूलन के समर्थक

वर्ष १९७७ ई म टोक में शासन प्रभावी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म सा का चातुर्मास था। चातुर्मास मे कुछ साम्प्रदायिक तत्वा ने, अशान्ति करने का माहौल पैदा कर दिया। सभी मुष राजकाज स बीकानेर जा पड़ा। वहा आचार्य श्री नानेश के दर्शन का सुअवसर मिला। जब मैंन उन्हे चातुर्मास काल मे टोक म हो रही अशान्ति की जानकारी दी, तो उन्होंने उस पर विशप ध्यान देकर मर से एकान्त मे बैठकर करीब एक घटे तक टोक म घटी घटना की सारी जानकारी ली तथा टोक सघ म शान्ति और सद्भाव बनी रह, इस हेतु टोक के सभी श्रावक श्राविकाआ को समभाव और प्रेमपूर्वक धर्मध्यान कहते हुए, चातुर्मास को सफल बनाने का सदेश प्रदान किया, जिससे टोक श्री सघ मे कोई अप्रिय घटना न घटी और चातुर्मास सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। पू आचार्य श्री सम्प्रदाय की विशद् व्याख्या करते हुए कहा करत थे कि सम्यक् प्रदीयते इति सम्प्रदाय अर्थात् जो सम्यग् मार्ग प्रदान करे वह 'सम्प्रदाय है।

दहेज प्रथा उन्मूलन के समर्थक आचार्य श्री नानेश का चातुर्मास कानोड़ था। तब वहा आपके सानिध्य म अ भा विद्वद् परिषद् की डा नरन्द्र भानावत के सयोजन में सगाष्ठी थी, जिसमें मुझे भी आमत्रित किया गया था। मै जब गोष्ठी में भाग लेने कानोड़ गया ता कानोड़ के निकट ही एक ग्रामीण यात्री से बस म बैठे सम्पर्क हुआ। उसके पूछने पर, जब मैंने आचार्य श्री के दर्शनार्थ व विद्वद् सम्मेलन मे भाग लेने हेतु कानोड़ जा रहा हू, ऐसा बताया ता उसने कहा, आपके आचार्य महान है, किन्तु उन्ही के यही रहते हुए, उन्ही के अनुयायी एक जैनी ने एक महिला को दहेज मागनी से प्रताड़ित कर (पूर्ति न होने से) जीवित जला डाला। यह आपका कैसा धर्म है कि एक कीड़ी का तो बचाते हैं और पचेन्द्रिय मानव को जिदा जला डाल दते है मात्र दहेज के लालच म। उसकी बात मे सत्य तथ्य था और वजन था जिससे उसका प्रतिकार न कर मुझे तब मौन रहना पड़ा। कानाड़ पहुच विद्वद् गोष्ठी में भाग लेन के बाद मै आचार्य श्री क पास बैठा और उक्त ग्रामीण यात्री की बात कही। पू आचार्य श्री ने उक्त घटना का कारण दहेज कुप्रथा है इसे समाज के लिए अभिशाप और कलक बताया तथा समाज को उसे त्यागने हतु, प्रवचन म प्रेरणा देने का भी कहा। इस पर मैंने विनम्रतापूर्वक, श्रद्धय आचार्य प्रवर की सवा म निवेदन किया कि यदि आपकी प्रेरणा म भी हमारा समाज इस कलक को न त्यागे ता फिर शासन व सघ हित मे आपको कुछ ठोस कदम उठाना चाहिए। जैसे उन सभी भाई-बहिनो के यहा से आहार पानी साधु साध्वी न लावे जो दहेज मागनी का त्याग नहीं करते हैं। पू आचार्य प्रवर ने मेरे इस निवेदन पर ध्यान देते हुए मौनस्थ हो, आग चिन्तन करने का भाव व्यक्त किया।

उपरोक्त दोना चर्चा वार्ता के ससमरण हम सबके लिय महत्वपूर्ण व प्रेरणास्पद हैं। पू आचार्य श्री नानेश जहा समता दर्शन प्रणेता व्यसनग्रस्त दलितो के उद्धारक और जीवदया की प्रवृत्तिया के प्रेरणास्रोत थे वहीं व एक सम्प्रदाय के आचार्य होकर भी सप्रदायवाद म दूर उदार वृत्ति वाले होने से जन जन के श्रद्धा केन्द्र थे और दहेज जैसी कुप्रवृत्ति के विरोधी भी थे। हम सभी उनक इन ससमरणा स प्रेरणा लेकर, असप्रदायवादी उदार स्वभावी बन जिससे सभी वीर के अनुयायी सगठित हो सके। दहेज प्रथा के विरोध की सघ व समाज स्तर पर कार्यवाही करे ता यह उस युग पुरुष, समतामूर्ति, आगम मनीषी जिनशासन प्रद्योतक परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजलि होगी। यही मगल कामना है।

-डागा सदन, सघपुरा, पो टोंक (राज) ३०४००१

डा जैन तो अपने घर के हैं

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ ने गुरुदेव को मेरे द्वारा दी गयी स्वास्थ्य सबधी सेवाओ के सदर्भ मे मेरे से सस्मरण मागे वे ये है- सर्वप्रथम १९७६ मे जब मै विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त करके बीकानेर के पी बी एम अस्पताल मे लगा तब एक दिन दोपहर के समय बीकानेर के कुछ गणमान्य व्यक्ति मुये एक मरीज दिखाने के लिए नोखा ले जाने के लिए आए। रास्ते मे कार मे बैठे उन व्यक्तियो से बात करके मुझ लगा कि मुये किसी बड़ सेठ या धनवान मरीज को नही अपितु किसी साधु सत को दखने के लिए ले जाया जा रहा है। नोखा पहुचन पर पहली बार गुरुदेव के दर्शन हुए और मैंने उनकी बहन जिनकी कूल्हे की हड्डी टूट गई थी को देखा और उपचार शुरू किया। बीकानेर लौटते समय जो व्यक्ति मुझे नोखा ले गए थे उन्होंने मुझसे नोखा आने-जाने एव इलाज की फीस पूछी। गुरुदेव के दर्शन का मुझ पर इतना अधिक प्रभाव था कि मैंने उन व्यक्तियो से कहा कि अगर मै यह फीस लूगा तो मुये नरक भी नही मिलेगा। आप लोगा ने मुझे इस योग्य समझा कि मै महाराज की बहन का इलाज कर सकू मेरे लिए यही सबसे बड़ा सम्मान है। वे व्यक्ति मेरे उत्तर से प्रभावित हुए और वे थे श्री भवरलाल जी कोठारी एव श्री जयचदलाल जी सुखानी। घर पहुचत ही मैंने देखा कि १० १२ मरीज मुझे दिखाने के लिए इतजार कर रहे है। बीकानेर मेरे लिए बिल्कुल नया शहर था और मुय ज्वाईन किए हुए ज्यादा दिन भी नहीं हुए थे। मरीजो की भीड़ दख कर मेर मन मे तुरत यही विचार आया कि हो न हो यह गुरुदेव का ही चमत्कार है कि उन्होंने मुझे अपनी कृपा स कृतार्थ किया एव मुझे १० गुना फीस मिल गयी।

इस घटना के पश्चात् साधु सतो की सेवा के सिलसिले मे मेरा श्री भवरलाल जी कोठारी एव जयचन्दलाल सुखानी जी से निरतर सपर्क बढ़ता गया।

उन्ही दिनो की बात है बदूक की गोली से हत्या के प्रयास मे गोली लगा एक मरीज भर्ती हुआ। गोली कधे मे लगी थी एव कधे की हड्डी टूटी हुई थी। आपात विभाग मे कोई डॉक्टर उपलब्ध नहीं था मुझ तुरत बुलाया गया। मैंने मरीज को तुरत ऑपरेशन कक्ष मे लिया। बेहोशी की दवा देने के बाद हड्डी बैठाने के लिए ज्योंहि मैंने घाव खोला एकदम से तीव्र वग स रक्त स्राव हुआ। मरीज विल्कुल सफेद हो गया। उसका रक्त दवाव शून्य हो गया जैसे तैस रक्त स्राव रोककर आपरेशन कक्ष के कपड़ो मे ही मै रक्त बैक मे गया और मरीज के लिए रक्त की व्यवस्था की। इस समय रात के २ बजे थे। मरीज की गभीर स्थिति को देखते हुए मैंने अपने प्रोफेसर एव अन्य वरिष्ठ डॉक्टरो को भी बुला लिया। दूसरे डॉक्टर जबकि मरीज को सामान्य करने में लगे थे मै ऑपरशन कक्ष के एक कोने मे खड़ा होकर णमोकार मत्र का जाप कर रहा था एव गुरुदेव का ध्यान कर रहा था कि आज कैसी मुश्किल म फस गया हू। मेरे प्रोफेसर ने मुये और डरा दिया था और कहा कि चूकि यह मर्डर कस है पुलिस मुये गिरफ्तार कर लेगी। चूकि मरीज गोली से नही मरा है बल्कि अगर मरेगा तो ऑपरेशन से मरा है। मैंने देखा ऑपरशन कक्ष के बाहर दरवाज पर मरीज की बीवी और उसके हाथ मे एक बच्चा गभीर मुद्रा म खड़ है। मर मन म बात आयी कि अगर मै गिरफ्तार हा गया तो मरे बीवी बच्चे भी इसी अवस्था म हो जाएग। मैंन पुन णमोकार मत्र का जाप किया एव गुरुदेव को याद किया।

लगभग सुबह चार बजे मरीज बिल्कुल सही हो गया होश में आ गया एवं अपना नाम तक बताने लगा। उस दिन मेरे मन में गुरुदेव एवं णमोकार मंत्र की शक्ति का आभास हुआ। इसके पश्चात् १५ वर्ष तक साधुमार्गी संघ की तरफ से बीकानेर संभाग में भीषण गर्मियों के दिनों में गुरुदेव आचार्य श्री नानालाल जी म सा के आशीर्वाद से मैंने अनेकों पुनर्वास कैम्प लगाए, जिसमें विकलांगों को विकलांग प्रमाण पत्र ही नहीं अपितु उन्हें कैलीपर कृत्रिम पैर एवं अन्य उपकरण बांटे। इन सभी कैम्पों में भंवरलाल जी कोठारी एवं सुराना साहब का अत्यधिक सहयोग रहता था। यह मेरा सौभाग्य है कि उदयपुर स्थानान्तरण पर मुझे गुरुदेव की सेवा करने का पुन मौका मिला। गुरुदेव अपने डायलेसिस से इनकार करते रहते थे और किसी भी तरह का उपचार लेने के लिए सबको मना कर रखा था।

इन्हीं दिनों उन्हें देखने के लिए मुझे भी बुलाया गया। मैं अपने आपको गुरुदेव के बहुत समीप समझता था लेकिन जब उन्होंने किसी भी तरह का इलाज कराने से एवं किसी भी तरह का आग्रह मानने से इनकार कर दिया तो मुझे लगा कि गुरुदेव मुझसे नाराज है एवं मेरी सेवा से खुश नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं था उस समय गुरुदेव की मनोस्थिति ही कुछ ऐसी थी।

१९९८ में एक संत के घुटने में गांठ हुई जिसका मैंने ऑपरेशन किया। ऑपरेशन बहुत सफल रहा। संत को देखने गुरुदेव दूसरी मंजिल पर स्थित वार्ड में आए। वार्ड बड़े-बड़े डॉक्टरों एवं प्रतिष्ठित लोगों से भरा था। जब मैं इन संत महाराज को संभालने गया तब आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने अत्यंत प्रेम भरी वाणी में सबके सामने कहा कि डॉक्टर जैन तो अपने घर के है आचार्य श्री के मुखारविन्द से ये शब्द सुन कर मैं भाव विह्वल हो उठा वो क्षण मेरे लिए मेरे जीवन में एक अविस्मरणीय क्षण था।

मेरा गुरुदेव से २० साल संपर्क रहा। मेरे एक हड्डी विशेषज्ञ होने के नाते भी वे अपना दूसरा उपचार भी मुझे दिखाते थे। समय समय पर दवाइयों के बारे में मेरी राय लेते थे। मेरे लिए यह एक बहुत बड़ा सम्मान था।

सरकारी सेवा में कितने ही उतार चढ़ाव एवं सफलता एवं असफलताएं देखीं लेकिन गुरुदेव की कृपा एवं णमोकार मंत्र ने मुझे शक्ति दी और टूटने से बचाया। मैं आज भी महसूस करता हूं कि गुरुदेव की शक्ति हमेशा मेरे साथ है जो आज भी मुझे कुछ अच्छा करने के लिए हमेशा प्रेरित करती रहती है।

हे गुरुदेव आपको कोटि कोटि नमन।

-एम एल, उदयपुर

चिन्तन मनन

□ प्रो डॉ छगनलाल शास्त्री
एम ए (त्रय) पी एच डी
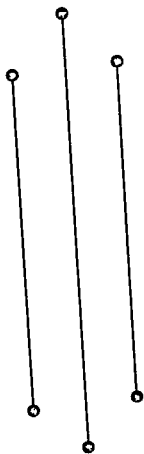
जैनागम स्वरूप, विकास एव वैशिष्ट्य

धर्म का मुख्य आधार

किसी भी राष्ट्र, जाति और समाज के साहित्य का अत्यन्त महत्व है। साहित्य वह प्राणभूत तत्व है, जिस पर इन सबका पल्लवन, सवर्द्धन और विकास होता है। साहित्य ज्ञान और चिन्तनधारा की वह पावन मदाकिनी है, जिसमे अवगाहन कर जिज्ञासु, आत्म कल्याणेक्षु एव मुमुक्षु जन उन्नति, अभ्युदय और आत्मोत्थान का प्रशस्त पथ प्राप्त करते हैं। उस पर आगे बढ़ते हुए वे जीवन का महान लक्ष्य सिद्ध कर लेते हैं। भारतवर्ष एक धर्मभूमि या पुण्यभूमि है। यहा के प्रज्ञाशील मनीषियो ने केवल ऐहिक जीवन की समस्याओ के समाधान तक ही अपनी प्रज्ञा का उपयोग नही किया वरन् उन्होने जीवन का परम सत्य प्राप्त करने की दिशा मे अपनी बुद्धि को अनवरत अध्यवसायरत रखा। यही कारण है कि धार्मिक एव आध्यात्मिक दृष्टि से यह देश ससार मे सर्वाग्रणी माना गया है। भारत के धर्मों मे जैन धर्म का अपना अत्यत महत्वपूर्ण स्थान है। अहिसा, विश्वमैत्री, समता एव समन्वय की उदात्त भावना के प्रसार द्वारा लोक कल्याण का महान कार्य जो इस धर्म ने किया, वह ससार के धर्मों के इतिहास में वास्तव मे अनूठा है। धर्म का वह अनादि स्रोत जो भी अपने प्राकृतन रूप मे जीवित है, यह एक गौरव का विषय है। अढ़ाई हजार से भी अधिक वर्ष पूर्व इस धर्म का जो न केवल चिन्तनात्मक वरन् क्रियात्मक रूप था वह आज भी सहस्रो साधु-साध्वियो के रूप मे अक्षुण्णतया विद्यमान है। इस धर्म के आधारभूत शास्त्र आगम कहे जाते है, जो तत्व चिन्तन एव सच्चर्यानुप्राणित जीवनचर्या के अजर अजर दस्तावेज है, जो आज भी विश्व को शाति का महान् सदेश प्रदान करते हैं।

आगम

आगम विशिष्ट ज्ञान के सूचक है, जो प्रत्यक्ष या तत्सदृश बोध से जुड़े है। दूसरे शब्दो मे यो कहा जा सकता है- आवरक हेतुओ या कर्मों के अपगम से जिनका ज्ञान सर्वथा निर्मल एव शुद्ध हो गया, अविसवादी हो गया, ऐसे आप्त पुरुषो द्वारा प्रतिपादित सिद्धाता का सकलन आगम है।[1]

आगमो के रूप मे जो प्रमुख साहित्य हमे आज प्राप्त है, वह अतिम तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा भाषित और उनके प्रमुख शिष्यो, गणधरो द्वारा सग्रथित है। आचार्य भद्रबाहु ने लिखा है- 'अर्हत अर्थ भाषित करते हैं। गणधर धर्मशासन या धर्मसघ के हितार्थ निपुणतापूर्वक सूत्ररूप मे उसका ग्रथन करते है, यों सूत्र का प्रवर्तन होता है।[2] इसका तात्पर्य हुआ कि भ महावीर ने जो भाव अपनी देशना मे व्यक्त किय वे गणधरो द्वारा शब्दबद्ध किये गये।

आगमो की भाषा

वेदो की भाषा प्राचीन सस्कृत है जिसे छन्दस् या वैदिकी कहा जाता है। बौद्धपिटक पालि मे है, जो मागधी, प्राकृत पर आधृत हैं। जैन आगमो की भाषा अर्द्धमागधी प्राकृत है। अर्हत इसी मे अपनी धर्मदेशना देते हैं।

समवायाग सूत्र मे लिखा है-

भगवान अर्द्धमागधी भाषा मे धर्म का आख्यान करते हैं । भगवान द्वारा भाषित अर्द्धमागधी भाषा आर्य, अनार्य, द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु-पक्षी, सरीसृप- रेंगने वाले जीव आदि सभी की भाषा में परिणित हो जाती है, उनके लिए हितकर, कल्याणकर तथा सुखकर होती है ।[3]

आचाराग चूर्णि मे भी इसी आशय का उल्लेख है । वहा कहा गया है कि स्त्री, बालक, वृद्ध,अनपढ सभी पर कृपा कर सब प्राणियो के प्रति समदर्शी महापुरुषो ने अर्द्धमागधी भाषा मे सिद्धातो का उपदेश किया ।

अर्द्धमागधी प्राकृत का एक भेद है । दशवैकालिक वृत्ति मे भगवान के उपदेश का प्राकृत मे होने का उल्लेख करते हुए पूर्वोक्त जैसा ही भाव व्यक्त किया गया है-चारित्र की कामना करने वाले बालक, स्त्री, वृद्ध, मूर्ख, अनपढ सभी लोगो पर अनुग्रह करने के लिए तत्वदृष्टाओ ने सिद्धात की रचना प्राकृत मे की ।[4]

अर्द्धमागधी

भगवान महावीर का युग एक ऐसा समय था जब धार्मिक जगत मे अनेक प्रकार के आग्रह बद्धमूल थे । उनमे भाषा का आग्रह भी एक था । सस्कृत धर्म-निरूपण की भाषा मानी जाती थी । सस्कृत का जन-साधारण मे प्रचलन नहीं था । सामान्य-जन उसे समझ नही सकते थे । साधारण जनता मे उस समय बोलचाल मे प्राकृत का प्रचलन था । देश-भेद से उसके कई प्रकार थे जिनमे मागधी अर्द्धमागधी, शौरसेनी, पैशाची तथा महाराष्ट्री प्रमुख थीं । पूर्व भारत मे अर्द्धमागधी और मागधी तथा पश्चिम में शौरसेनी का प्रचलन था । उत्तर-पश्चिम पैशाची का क्षेत्र था । मध्यप्रदेश मे महाराष्ट्री का प्रयोग होता था ।

शौरसेनी और मागधी के बीच के क्षेत्र मे अर्द्धमागधी का प्रचलन था । यो अर्द्धमागधी, मागधी और शौरसेनी के बीच की भाषा सिद्ध होती है अर्थात् इसका कुछ रूप मागधी जैसा और कुछ शौरसेनी जैसा है । अर्द्धमागधी आधी मागधी ऐसा नाम पड़ने मे सभवत यही कारण रहा हो ।

मागधी के तीन मुख्य लक्षण हैं । वहा श,ष,स तीनो के लिए केवल तालव्य श का प्रयाग होता है । र के स्थान पर ल आता है । अकारान्त सज्ञाओ मे प्रथमा एकवचन मे ए विभक्ति का उपयोग होता है । अर्द्धमागधी मे इन तीन मे आये लगभग आधे लक्षण मिलते हैं । तालव्य श का वहा बिल्कुल प्रयोग नही होता । अकारान्त सज्ञाओ मे प्रथमा एक वचन मे ए का प्रयोग अधिकाश होता है । र के स्थान पर ल का प्रयोग कहीं कही होता है ।

अर्द्धमागधी की विभक्ति रचना मे एक विशेषता और है, वहा सप्तमी विभक्ति मे और म्मि के साथ साथ असि प्रत्यय का भी प्रयोग होता है, जैसे नयरे- नयरम्मि नयरसि ।

नवागी टीकाकार आचार्य अभयदेव सूरि ने औपपातिक सूत्र मे जहा भगवान महावीर की देशना के वर्णन के प्रसग मे अर्द्धमागधी भाषा का उल्लेख हुआ है, वहा अर्द्धमागधी का ऐसी भाषा के रूप मे व्याख्यान किया है, जिसमे मागधी मे प्रयुक्त होने वाले ल और श का कही कही प्रयोग तथा प्राकृत का अधिकाशत प्रयोग होता था ।[5]

व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र की टीका मे भी उन्होंने इसी प्रकार उल्लेख किया है कि अर्द्धमागधी मे कुछ मागधी तथा कुछ प्राकृत के लक्षण पाये जाते हैं ।

आचार्य अभयदेव ने प्राकृत का यहाँ सभवत शौरसेनी के लिए प्रयाग किया है । उनके समय मे शौरसेनी प्राकृत का अधिक प्रचलन रहा हो ।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण मे अर्द्धमागधी को आर्ष (ऋषियो की भाषा) कहा है । उन्होंने लिखा है कि आर्ष भाषा पर व्याकरण के सब नियम लागु होते क्योंकि उसमे बहुत से विकल्प हैं ।[6]

इसका तात्पर्य यह हुआ कि अर्द्धमागधी मे दूसरी प्राकृतो का भी मिश्रण है ।

एक दूसरे प्राकृत वैयाकरण मार्कण्डेय ने अर्द्धमागधी के सबध मे उल्लेख किया है कि यह शौरसेनी के बहुत निकट है अर्थात् उसमे शौरसेनी के

बहुत लक्षण प्राप्त होते हैं। इसका भी यही आशय है कि बहुत से लक्षण शौरसेनी के तथा कुछ लक्षण मागधी के मिलने से यह अर्द्धमागधी कहलाई।

क्रमदीश्वर ने ऐसा उल्लेख किया है कि अर्द्धमागधी मे मागधी और महाराष्ट्री का मिश्रण है। इसका भी ऐसा ही फलित निकलता है कि अर्द्धमागधी मे मागधी के अतिरिक्त शौरसेनी का भी मिश्रण रहा है और महाराष्ट्री का भी। निशीथचूर्णि मे अर्द्धमागधी के सबध मे उल्लेख है कि वह मगध के आधे भाग म बोली जाने वाली भाषा थी तथा उसमें अट्ठाईस देशी भाषाओ का मिश्रण था।

इन वर्णनो से ऐसा प्रतीत होता है कि अर्द्धमागधी उस समय प्राकृत क्षेत्र की सपर्क भाषा (Lingua Franca) के रूप मे प्रयुक्त थी, जो बाद मे भी कुछ शताब्दियो तक चलती रही। कुछ विद्वानो के अनुसार अशोक के अभिलेखो की मूल भाषा यही थी, जिसको स्थानीय रूपो मे रूपान्तरित किया गया है।[7]

भगवान महावीर ने अपने उपदेश का माध्यम ऐसी ही भाषा को लिया जिस तक जन साधारण की सीधी पहुच हो। अर्द्धमागधी मे यह बात थी। प्राकृतभाषी क्षेत्रो म, बच्चे बूढ़े स्त्रिया शिक्षित अशिक्षित सभी उस समझ सकते थे।

अग-साहित्य

गणधरो द्वारा भगवान का उपदेश निम्नाकित बारह अगो के रूप मे हुआ-

१ आचाराग	२ सूत्रकृताग
३ स्थानाग	४ समवायाग
५ व्याख्या प्रज्ञप्ति	६ ज्ञातधर्मकथा
७ उपासकदशाग	८ अन्तकृद्दशा
९ अनुत्तरौपपातिक	१० प्रश्न व्याकरण
११ विपाक	१२ दृष्टिवाद।

प्राचीनकाल मे शास्त्र ज्ञान को कण्ठस्थ करने की परम्परा थी। वेद पिटक, और आगम- ये तीनो ही कण्ठस्थ परम्परा से चलते रहे। उस समय लोगो की स्मरण शक्ति दैहिक सहनन बल उत्कृष्ट था।

आगम सकलन प्रथम प्रयास

भगवान महावीर के निर्वाण क लगभग ५६० वर्ष पश्चात् तक आगम ज्ञान की परम्परा यथावत रूप मे गतिशील रही। उसके बाद एक विघ्न हुआ। मगध में बारह वर्ष का दुष्काल पड़ा। यह चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल की घटना है। जैन श्रमण इधर-उधर बिखर गये। अनेक काल कवलित हो गये। जैन सघ को आगम ज्ञान की सुरक्षा की चिन्ता हुई। दुर्भिक्ष समाप्त होने पर पाटलिपुत्र मे आगमो को व्यवस्थित करने हेतु स्थूलभद्र के नेतृत्व मे जैन साधुओ का एक सम्मेलन आयोजित हुआ इसमे ग्यारह अगो का सकलन किया गया। बारहवा अग दृष्टिवाद किसी को भी स्मरण नही था। दृष्टिवाद के ज्ञाता केवल भद्रबाहु थे। व उस समय नेपाल मे महाप्राण ध्यान की साधना मे लगे हुए थे। उनसे वह ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया गया। दृष्टिवाद के चौदह पूर्वों मे से दस पूर्व तक का अर्थ सहित ज्ञान स्थूलभद्र प्राप्त कर सके। चार पूर्वों का केवल पाठ उन्हे प्राप्त हुआ।

आगमा के सकलन का यह पहला प्रयास था। इसे आगमो की प्रथम वाचना या पाटलिपुत्र कहा जाता है।

यो आगमो का सकलन तो कर लिया गया पर उन्हे सुरक्षित रखने का क्रम वही कण्ठाग्रता का ही रहा। यहा यह ज्ञातव्य है कि वेद जहा व्याकरणनिष्ठ सस्कृत मे निबद्ध थे जैन आगम लोक भाषा मे निर्मित थे, जा व्याकरण के कठिन नियमो स नही बधी थी इसलिए आने वाले समय के साथ-साथ उनम भाषा की दृष्टि से कुछ कुछ परिवर्तन भी स्थान पाने लगा। वदा मे ऐसा सभव नही हो सका। इसका एक कारण और था- वेदो की शब्द रचना को यथावत् रूप म बनाये रखने के लिए उनमे पाठ के सहिता पाठ, पदपाठ, क्रमपाठ जटापाठ तथा घनपाठ य पाच रूप रखे गये जिनके कारण किसी भी मत्र का एक भी शब्द इधर से उधर नही हो सकता। आगमो के साथ ऐसी बात सभव नहीं थी।

द्वितीय प्रयास

भगवान महावीर के निर्वाण के ८२७-८४० वर्ष के मध्य आगमो को सुव्यवस्थित करने का एक और प्रयत्न हुआ। उस समय भी पहले जैसा एक दुष्काल पड़ा था। जिसमे भिक्षा न मिलने के कारण अनेक जैन मुनि परलोकवासी हो गये। आगमो के अभ्यास का क्रम यथावत रूप से चालू नही रहा। इसलिए वे विस्मृत होने लगे। आगमो के अभ्यास होने पर आर्य स्कन्दिल के नेतृत्व मे मथुरा मे साधुओ का सम्मेलन हुआ। जिन-जिन को जैसा स्मरण था सकलित कर आगम सुव्यवस्थित किये गये। इसे माथुरी वाचना कहा जाता है। आगम- सकलन का यह दूसरा प्रयास था।

इसी समय के आसपास सौराष्ट्र के अतर्गत वल्लभी मे नागार्जुन के नेतृत्व मे भी साधुओ का वैसा ही सम्मेलन हुआ, जिसमे आगम सकलन का प्रयास हुआ। यह उपर्युक्त दूसरे प्रयत्न या वाचना के अन्तर्गत ही आता है। वैसे इसे वल्लभी की प्रथम वाचना भी कहा जाता है।

तृतीय प्रयास

अब तक यही कण्ठस्थ क्रम चलता रहा था, आगे इसमे कुछ कठिनाई अनुभव होने लगी। लोगो की स्मृति पहले से दुर्बल हो गई, दैहिक सहनन भी वैसा नही रहा, अत उतने विशाल ज्ञान को स्मृति मे बनाये रखना कठिन प्रतीत होने लगा। आगम विस्मृत होने लगा। अत पूर्वोक्त दूसरे प्रयत्न के पश्चात् भगवान महावीर के निर्वाण के 980 या 993 वर्ष के बाद वल्लभी मे देवर्धिगणि क्षमा श्रमण के नेतृत्व मे पुन श्रमणो का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में उपस्थित श्रमणो के समक्ष पिछली दो वाचनाओ का सदर्भ विद्यमान था। उस परिपार्श्व में उन्होने अपनी स्मृति के अनुसार आगमो का सकलन किया। मुख्य आधार के रूप मे उन्होने माथुरी वाचना को रखा। विभिन्न श्रमण सघो में प्रवृत्त पाठान्तर, वाचना भेद आदि का समन्वय किया। इस सम्मेलन मे आगमो को लिपिबद्ध किया गया ताकि आगे उनका एक सुनिश्चित रूप सबको प्राप्त रहे। प्रयत्न के बावजूद जिन पाठो का समन्वय सभव नही हुआ, वहा वाचनान्तर का सकेत किया गया। बारहवा अग दृष्टिवाद सकलित नही किया जा सका, क्योंकि वह श्रमणो को उपस्थित नहीं था। इसलिए उसका विच्छेद घोषित कर दिया गया। जैन आगमो के सकलन के प्रयास मे यह तीसरी या अतिम वाचना थी। इसे द्वितीय वल्लभी वाचना भी कहा जाता है। वर्तमान में उपलब्ध जैन आगम इसी वाचना के सकलित आगमो का रूप है।

उपलब्ध आगम जैनो की श्वेताम्बर परपरा द्वारा मान्य है। दिगम्बर परपरा मे इनकी प्रामाणिकता स्वीकृत नही है। वहा ऐसी मान्यता है कि भगवान महावीर के निर्वाण के ६८३ वर्ष पश्चात् अग साहित्य का विलोप हो गया। महावीर भाषित सिद्धातो के सीधे शब्द समवाय के रूप मे वे किसी ग्रन्थ को स्वीकार नही करते। उनकी मान्यतानुसार ईसा की प्रारभिक शती मे धरसेन नामक आचार्य को दृष्टिवाद अग के पूर्वगत ग्रथ का कुछ अश उपस्थित था। वे गिरनार पर्वत की चद्रगुफा मे रहते थे। उन्होने वहा दो प्रज्ञाशील मुनि पुष्पदन्त और भूतबलि को अपना ज्ञान लिपिबद्ध करा दिया। यह षट्खण्डागम के नाम से प्रसिद्ध है। दिगम्बर परपरा मे इनका आगमवद् आदर है। दोनो मुनियो ने लिपिबद्ध षट्खण्डागम ज्येष्ठ शुक्ल पचमी को सघ के समक्ष प्रस्तुत किये। उस दिन को श्रुत के प्रकाश मे आने का महत्वपूर्ण दिन माना गया। उसकी श्रुत पचमी के नाम से प्रसिद्धि हो गई। श्रुत पचमी दिगम्बर सम्प्रदाय का एक महत्वपूर्ण धार्मिक पर्व है।

ऊपर जिन आगमो के सदर्भ मे विवेचन किया गया है श्वेताम्बर परपरा मे उनकी सख्या के सबध मे एकमत नही है। उनकी 84 84 तथा 32 ये तीन प्रकार की सख्याये मानी जाती हैं। श्वेताम्बर मन्दिरमार्गी सम्प्रदाय मे 84 और 45 की सख्या की भिन्न भिन्न रूप मे मान्यता है। श्वेताम्बर स्थानकवासी तथा तेरापथी जो अमूर्तिपूजक सम्प्रदाय है-मे 32 की सख्या स्वीकृत है जो इस प्रकार है

ग्यारह अग- आचार, सूत्रकृत, स्थान समवाय, व्याख्या प्रज्ञप्ति ज्ञातृधर्म कथा, उपासकदशा अन्तकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण, विपाक।

बारह उपाग- औपपातिक, राजप्रश्नीय, जीवाभिगम प्रज्ञापना, सूर्यप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति निरयावली, कल्पवतसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा।

चार छेद- व्यवहार, बृहत्कल्प, निशीथ, दशाश्रुतस्कन्ध।

चार मूल- दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दी अनुयोग द्वार एव एक- आवश्यक यो ग्यारह अग तथा इक्कीस *अग बाह्य कुल बत्तीस होते हैं।*

चार अनुयोग व्याख्याक्रम, विषयगत भेद आदि की दृष्टि से आर्यरक्षित सूरि ने आगमो को चार भागो में वर्गीकृत किया। जो अनुयोग कहलाते हैं वे इस प्रकार हैं-

१ **चरणकरणानुयोग**- इसमे आत्मविकास के मूल गुण आचार, व्रत, सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र सयम, वैयावृत्य, ब्रम्हचर्य तप कषाय निग्रह आदि तथा उत्तर गुण पिण्ड विशुद्धि, समिति, भावना प्रतिमा इन्द्रिय निग्रह, प्रतिलेखन, गुप्ति तथा अभिग्रह आदि का विवेचन है।

२ **धर्मकथानुयोग**- इसमे दया दान, शील क्षमा आर्जव, मार्दव आदि धर्म के अगो का विवेचन है। इसके लिए विशेष रूप से आख्यानो या कथानको का आधार लिया गया है।

३ **गणितानुयोग**- इसमे गणित सबधी या गणित पर आधृत वर्णन की मुख्यता है।

४ **द्रव्यानुयोग**- इसमे जीव, अजीव आदि छह द्रव्या तथा नौ तत्वो का विस्तृत व सूक्ष्म विवेचन, विश्लेषण है।

पूर्वोक्त 32 आगमो का इन 4 अनुयोगो म इस प्रकार समावेश किया जा सकता है-

चरणकरणानुयोग मे आचाराग तथा प्रश्नव्याकरण ये दो अगसूत्र दशवैकालिक यह मूल सूत्र निशीथ, व्यवहार, बृहत्कल्प एव दशाश्रुतस्कध ये चार छेद सूत्र तथा आवश्यक यों कुल आठ सूत्र आते हैं।

धर्मकथानुयोग मे ज्ञातृधर्मकथा उपासकदशा अन्तकृद्दशा अनुत्तरोपपातिकदशा तथा विपाक ये पाच अगसूत्र औपपातिक, राजप्रश्नीय, निरयावली कल्पवतसिका पुष्पिका पुष्पचूलिका व वृष्णिदशा य सात उपागसूत्र एव उत्तराध्ययन यह एक मूल सूत्र यों कुल तेरह सूत्र आते है।

गणितानुयोग मे जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति चन्द्रप्रज्ञप्ति तथा सूर्यप्रज्ञप्ति ये तीन उपागसूत्र आत हैं।

द्रव्यानुयाग म सूत्रकृत स्थान समवाय तथा व्याख्याप्रज्ञप्ति ये चार अगसूत्र जीवाभिगम प्रज्ञापना ये दो उपागसूत्र एव नन्दी व अनुयोगद्वार ये दो मूल सूत्र यो कुल आठ सूत्र आते हैं।

जैनागमो की सार्वजनीनता

जैनागम केवल जैन सिद्धात और आचार का ही बोध नही कराते वरन् सहस्रो वर्ष पूर्व के लोकजीवन का भी वे जैसा दिग्दर्शन प्रस्तुत करते हैं वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। उनमें न केवल राजाओ सत्ताधीशो सामन्तो एव वैभवशाली श्रेष्ठजनो का ही वर्णन है किन्तु सभी जातिया वर्गो एव व्यवसायियो मे सबद्ध सभी लोगो के जीवन का सजीव चित्रण प्राप्त होता है। आर्थिक सामाजिक, व्यावसायिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, इत्यादि जीवन के विभिन्न अगो पर उनमे प्रकाश डाला गया है।

आज के अशाति सघर्ष विद्वेष और भ्रष्टाचार से उत्पीड़ित मानव समुदाय जैनागमो मे प्रतिपादित अहिसा समता एव विश्वमैत्री क संदेश को अपनाकर इन कष्टो मे छुटकारा पा सकते हैं। आगम लोक साहित्य का वह विराट् रूप लिए हुए है जिसम विश्व के समस्त लागा को परस्पर निकट आने का प्रशस्त पथ प्राप्त होता है। आज इनके गहन सूक्ष्म व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है। समीक्षात्माक एव तुलनात्मक परिशीलन द्वारा इन आगमो से ज्ञान क वे दिव्य रत्न प्राप्त हो सकत हैं जो मानव जाति की उन्नति की दिशा मे अग्रसर होन की प्रेरणा प्रदान कर सकत हैं। आगमो में निरूपित

पुद्गल विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एव तत्वचितन आदि के अनेक सिद्धात आधुनिक भौतिक विज्ञान वनस्पति विज्ञान एव मनोविज्ञान की कसौटी पर खरे सिद्ध हो रहे हैं । आवश्यकता इस बात की है कि आगमो का दार्शनिक एव आध्यात्मिक दृष्टि के साथ साथ वैज्ञानिक एव मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी गहन अध्ययन किया जाये । इस दिशा मे उत्साहशील अध्येताओ और अनुसधित्सुओ को प्रेरणा और सहयोग दिया जाए तो कितना अच्छा हो क्योकि वर्तमान के परिप्रेक्ष्य मे अहिंसा, समता और अनेकात दर्शन की अपरिहार्य उपयोगिता किवा आवश्यकता है ।

सन्दर्भ

१ आप्तवचनादाविर्भूतमर्थसवेदनमागम।
उपचारादाप्तवचन च ॥ -प्रमाणनय तत्वालोक ४ १ २

२ अत्थ भासइ अरहा, सुत्त गथति गणहरा निउण ।
सासणस्स हियट्ठाए, तओ सुत्त पवत्तेई ॥ आवश्यक निर्युक्ति १२

३ भगव च ण अद्धमागहीए भासाए धम्माइक्खइ । सावि यण अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेसि सव्वेसि आरियमणारियाण दुप्पय-चउप्पअ-मिय-पसु पक्खि सरीसिवाण अप्पणो हिय सिव-सुहय-भासत्ताए परिणमई ।
-समवायाग सूत्र ३४ २१ २२,२३

४ बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणा, नृणा चारित्रकाक्षिणाम् ।
अनुग्रहार्थ तत्वज्ञै , सिद्धान्त प्राकृत कृत ॥ -दशवैकालिक वृति पृष्ठ २२३

५ अद्धमागहाए भासाएत्ति रसोर्लशौ मागध्यामित्यादि यन्मागधभाषालक्षण तनापरिपूर्णा प्राकृत भाषालक्षणबहुला अर्द्धमागधीत्युच्यते । -उववाई सूत्र सटीक पृष्ठ २२४-२२५
(श्रीयुक्त राय धनपतिसिंह बहादुर आगम सग्रह जैन बुक सोसायटी कलकत्ता द्वारा प्रकाशित)

६ आर्ष ऋषीणामिदमार्षम् । आर्षप्राकृत बहुल भवति ।
तदपि यथास्थान दर्शयिष्याम । आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते ॥
सिद्धहेमशब्दानुशासन ८ १ ३

७ भाषाविज्ञान डा० भोलानाथ तिवारी पृष्ठ १७८
(प्रकाशक किताब महल इलाहाबाद, १९६१ ई०)

□ डॉ मुकुलराज मेहता
रिसर्च साइन्टिस्ट

जैन दर्शन मे मोक्ष तत्त्व

जैन दर्शन मे वर्णित साता तत्वो मे मोक्ष तत्व का अतिम स्थान है । सभी भारतीय दशनो का अतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति रहा है । प्राय सभी दर्शनो मे माक्ष प्राप्ति की पद्धति अलग-अलग दृष्टिगाचर होती है अर्थात् सभी दर्शनो ने अपने-अपने ढग से मोक्ष प्राप्त करने के उपाय बताये हैं ।

मोक्ष प्राप्त करने की शृखला मे जैन दर्शन न माक्ष की प्राप्ति को जीवन का परम ध्येय माना है । जिसने समस्त कर्मो का क्षय करके अपन साध्य को सिद्ध कर लिया उसने पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली । कम बधन स मुक्ति मिलन पर जन्म मरण रूपी महान दुखो के चक्र की गति रूक जाती है, और वह सदा के लिए सत् सत् आनन्दमय स्वरूप को प्राप्त कर लेता है ।

मोक्ष का अर्थ

सभी भारतीय दर्शनो ने मोक्ष को स्वीकार किया है । मोक्ष प्राप्ति का अर्थ सभी प्रकार क दुखो स छुटकारा पाना है अर्थात् मोक्ष प्राप्त होने पर जीव परमानद स्वरूप हा जाता है ।

आचार्य पूज्यपाद ने मोक्ष की परिभाषा इस प्रकार दी है- कृत्स्नकर्मवियोग लक्षणो माक्ष'' अर्थात् सपूर्ण कर्म का वियोग मोक्ष है । जब सभी प्रकार के मोह माया से मुक्ति मिल जाती है तब उसे ही मोक्ष कहते है। मोक्ष की अवस्था म जीव का पुद्गल से पृथक्करण हो जाता है ।[2]

मोक्ष का स्वरूप

बन्धहेतुओ के अभाव और निर्जरा से सभी कर्मो का आत्यन्तिक क्षय होना ही मोक्ष है ।[3] ससार की परिपाटी उस नौका के समान है, जिसमे स पानी तो निकाला जा रहा हो पर पानी आने का स्रोत बद न हा । यह जीव हर समय नवीन कर्मो का बध करता रहता है और पूर्वबद्ध कर्मो के फल को भागकर उसकी निर्जरा भी करता रहता है ।

जब बध के हेतुओ का अभाव किया जाता है तब नवीन बध नही होते है । बध क पाच हतु है- मिथ्यादर्शन, अविरति प्रमाद कषाय और योग ।[4] इन हेतुओ को दूर कर दने स नवीन बध नहीं होता और जीव को मोक्ष प्राप्त होता है । कैवल्य प्राप्ति के समय मोहनीय आदि चार कर्मों का अभाव हाता हैं और बध क हेतुओं म योग शेष रहता है जिसस माक्ष नही होता । तब जाकर यह जीव पहले याग का अभाव करता है और तत्पश्चात् शेष बच चार कर्मो की समग्र निर्जरा करता है, तब इस मोक्ष प्राप्त होता है ।

जैन दर्शन मे वर्णित मोक्ष क स्वरूप का क्रमश विवचन प्रस्तुत है

१ समस्त कर्मों का नाश हा जाना मोक्ष है ।[5] कम तीन प्रकार क है भावकम द्रव्य कम और नाकम (शरीर) । प्रथम कर्म के नष्ट हो जान पर शेष दोनों कर्मो का नाश हा जाता है । उसी के साथ जीव क समस्त दुख नष्ट हो जाते है ।

२ अस्ति की अपक्षा मे जीव की सपूण शुद्धता माक्ष है और नास्ति की अपक्षा स सपूर्ण विकार स मुक्त हाना ही माक्ष है ।

३ प्रत्येक जीव अपने स्वय के प्रयास से प्रथम मिथ्यात्व का दूर कर सम्यक् दर्शन प्रकट करता है और फिर क्रमश विशेष पुरुषार्थ क माध्यम स प्रत्येक विकार को दूर करके मुक्त हो जाता है। पुरुषार्थ क बिना मोक्ष सम्भव नही है। हजारो जन्म बीत जान पर स्वत मुक्ति नही होती है।

अयत्नसाध्य निर्वाण चित्तत्व भूतज यदि ।
अन्यथा योगतस्तस्यान्न दु ख योगिना क्वचित् ॥

यदि पृथ्वी आदि पचभूतो से जीव की उत्पत्ति हो तो निर्वाण यत्न साध्य है किंतु यदि एसा न हा ता योग स निर्वाण की प्राप्ति हो, इसलिए योग साधका का प्रयत्न करने मे दुख नही होता। इससे सिद्ध होता है कि बिना पुरुषार्थ के मोक्ष भी सम्भव नही होगा।

४ जब जीव मुक्त हो जाता है तब वह अशरीरी हो जाता है अर्थात् उसका कोई रूप रग आकार नही होता। वह जीव इस लाक म निवास नहीं करता वह उर्ध्वगमन करते हुए लोक के अग्रभाग मे चला जाता है। वहा उनका अनन्त समय के लिए वास होता है। धर्मास्तिकाय जीव की सत्ता लोक तक ही हाती है, उसके आगे उसकी गति नही होती।

५ जब जीव निर्वाण की दशा मे पहुचता है तब न तो आत्मा का अभाव होता है और न अचेतन ही हो जाता है। जब आत्मा एक स्वतत्र मौलिक द्रव्य है, तब उसके अभाव की या उसके गुणो की कल्पना ही नही की जा सकती।[8] आत्मा के अभाव या चैतन्य के उच्छेद को मोक्ष नही कह सकते। रोग की निवृत्ति का नाम आरोग्य है न कि रोग की निवृत्ति या समाप्ति।

अत जैन दर्शन क अनुसार जीव का निर्वाण न तो बुद्धि से मेल खाता है और न न्याय से। साख्य और जैन दोनों जीव को अनात्म तत्वो से पृथक और स्वतत्र होकर शुद्ध चेतन स्वरूप मे स्थित मानते है।

६ निर्वाण की अवस्था मे सभी जीव एक समान शुद्ध चेतन होते हुए भी और अनन्त ज्ञान सम्पन्न हाते हुए भी अद्वैत वेदान्त के समान सभी जीव एकत्व म लीन नही होते। साख्य के अनुसार उनका स्वतत्र अस्तित्व बना रहता है।

७ बधन की अवस्था मे जीव मे बाह्य प्रभाव पड़ते है और वह उनके कारण परिणमित होता है किन्तु मुक्त होने पर वह केवल ज्ञान से सपन्न हो जाता है। वह प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता है क्योंकि दर्शन और ज्ञान आत्मा के व्यापार है, इद्रियो के नही।[9]

८ जैन दर्शन मे जीव का आकार शरीर के बराबर माना गया है। मुक्त होने पर उसका आकार सीमित हो जाता है। उसके आत्म तत्त्व मे एक विशेष गुण होता है जिसके कारण शरीर के आकार मे विद्यमान रहकर मुक्त आत्माओ क साथ सहअस्तित्व रख सकता है। उसका आकार सीमित होने पर भी उसका ज्ञान अनन्त होता है।

मोक्ष की अवस्था मे जीव पुद्गल से अलग होता है। मोक्ष की प्राप्ति तब तक सभव नही है जब तक नये पुद्गल क कणो का आत्मा की ओर प्रवाहित होने से रोका न जाए। केवल नये पुद्गल कर्णो को आत्मा की ओर प्रवाहित होने से रोकना ही मोक्ष के लिए पर्याप्त नहीं है, बल्कि जीव मे पहले से उपस्थित कर्म पुद्गल कणो को बाहर न निकाला जाय। कम पुद्गल मे मुक्त होने पर जीव स्वत मुक्त हो जाता है।

<u>मोक्ष के प्रकार</u> : जैन दार्शनिको ने मोक्ष को दो प्रकार का माना है, जा निम्न हैं-

१ भाव मोक्ष
२ द्रव्य मोक्ष [10]

भाव मोक्ष मोह का क्षय होने से और ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय तथा अन्तराय कर्मों के समाप्त होन पर केवल ज्ञान की उत्पत्ति हाती है। केवल ज्ञान की उत्पत्ति होने पर भावमाक्ष होता है अथात् जिन भावो से समस्त कर्मों का क्षय हाता है वह भाव मोक्ष कहलाता है यह जीव की अरिहन्त दशा है।

द्रव्य मोक्ष चार अघाति कर्मो का अभाव होना ही द्रव्य मोक्ष' है। इस स्थिति मे जीव का आत्मा से किसी

प्रकार का सबध नही रहता। समस्त कर्म आत्मा से अलग हो जाते है। इसे ही द्रव्य मोक्ष' कहते हैं। यह जीव की सिद्ध दशा है।

मोक्ष प्राप्ति के साधन

प्रत्येक मनुष्य मोक्ष प्राप्त करने का निरतर प्रयास करता है किंतु वह अपने आसपास और ससार मे उपस्थित प्रत्येक वस्तु को अपना समझता है। वह अनादि काल से अज्ञान के वशीभूत होने के कारण ही एसा समझता है। वह अपने शरीर को अपना ही समझता है। इसलिए वह सम्पूर्ण जीवन अपने शरीर की रक्षा और उसी की सेवा मे लगा रहता है। यही उसकी सबसे बड़ी भूल है। जीव की इस भूल को मिथ्या दर्शन कहा गया है। मिथ्या रूपी भूल को पाप भी कहते है।

इस प्रकार की भूल को दूर करने से ही मोक्ष की प्राप्ति सभव है। जैन दर्शन मे मोक्ष प्राप्ति के तीन साधन बताये गये है। जो निम्न है-

१ सम्यक् दर्शन (श्रद्धा)

२ सम्यक् ज्ञान

३ सम्यक् चारित्र्य

इन तीनो साधनो के समुच्चय से मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है।[12] प्रत्येक व्यक्ति को इन तीनो साधनो का नियम पूर्वक पालन करना चाहिए। क्योंकि तभी उसे सासारिक मोहमाया से मुक्ति मिल सकती है। जैनाचार्य कुन्दकुन्दाचार्य ने सम्यक् दर्शन ज्ञान और चारित्र इन तीनो को आत्मा का पर्याय माना है। इनके अलावा अन्य कोई रास्ता नही है। व्यवहार पूर्वक दूसरो को भी यही उपदेश देना चाहिए।[13]

इन मोक्षोपयोगी तीनो साधनो को जैन दर्शन मे त्रिरत्न या रत्न त्रय की सज्ञा दी गई है।[14] ये तीनो मानव जीवन के अलकार के समान होते है।

आचार्य उमास्वामी न तत्वार्थाधिगम सूत्र मे कहा है कि सम्यक् दर्शन, ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्ग।[15]

अर्थात् ये त्रिरत्न ही मोक्ष प्राप्ति के मार्ग हैं। तीना मार्गों के सयुक्त रूप से ही मोक्ष मिल सकता है। क्रमश तीनो का वर्णन निम्नवत् सक्षेप मे प्रस्तुत है-

सम्यक् दर्शन आचार्य उमास्वामी ने यथार्थ ज्ञान क प्रति श्रद्धा का होना सम्यक् दर्शन कहा है।[16] कुछ लोगा मे यह जन्मजात होता है। कुछ लाग इसे अभ्यास या विद्या द्वारा सीखते है।[17]

सम्यक् दर्शन का अर्थ अधविश्वास नही है। जैन दार्शनिको ने स्वय अधविश्वास का खडन किया है। उनका मानना है कि व्यक्ति को सम्यक् दर्शन तभी हो सकता है, जब उसने अपन आपको अनेक प्रकार के प्रचलित अध विश्वासो से मुक्त कर लिया हो। प्रख्यात जैन दार्शनिक मणिभद्र कहते है कि 'जैन मत युक्तिहीन नहीं वरन् युक्ति प्रधान है। उनका मानना है कि न मेरा महावीर के प्रति कोई पक्षपात है और न ही कपिल या अन्य दार्शनिका के प्रति कोई द्वेष है। मैं युक्ति सगत वचन को ही मानता हू, चाहे वह जिस किसी का हो।[18]

सम्यक् दर्शन का अर्थ होता है कि बौद्धिक विकास अर्थात् व्यक्ति किसी भी वस्तु का यथार्थ स्वरूप समझकर उसमे श्रद्धा रखना और उसमे अपनी मान्यता रखना या स्थापित करना सम्यक् दर्शन कहलाता है। यह तभी हो सकता है जब हम उस वस्तु के स्वरूप का स्पष्ट रूप से समझ ले।

सम्यक् दर्शन के आठ अग बताये गय हैं- सदेह से दूर रहना सासारिक सुखो की इच्छा का त्याग करना सबके प्रति प्रेम का भाव रखना जैन सिद्धांतों को सर्वश्रेष्ठ समझना। इनके अलावा लौकिक अधविश्वासो, पाखडों आदि से दूर रहना भी सम्यक् दर्शन म शामिल है। इन सबका अर्थ हुआ कि मनुष्य को सभी प्रकार की बुराइया से दूर रहना चाहिए तथा अधिक सुख भी नही लेना चाहिए।

मनुष्य को अपनी इन्द्रियो का वश म रखकर वस्तु क प्रति सच्ची जानकारी रखना ही सम्यक् दर्शन कहलाता है।

सम्यक् ज्ञान सम्यक् ज्ञान मे जीव और अजीव क मूल तत्वो का विशेष ज्ञान प्राप्त हाता है।[19] यदि जीव और अजीव के अन्तर को न समझा जाय ता बधन का उदय हाता है और उस बधन को रोकने क लिए ज्ञान का हाना

अति आवश्यक है। यह ज्ञान शुद्ध, पवित्र, दोषरहित, संशयहीन होता है। दर्शन कारण और ज्ञान कार्य है।

तत्त्वार्थसार के अनुसार जिस ज्ञान में अपना स्वरूप विषय हो, उसका यथार्थ निश्चय हो उस ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं।[20] जिस ज्ञान में विषय प्रतिबोध के साथ साथ उसका स्वरूप प्रतिभासित हो और वह यथार्थ हो, उस ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान के पांच भेद स्वीकार किये गए हैं[21] जो निम्नवत संक्षेप में प्रस्तुत हैं-

१ मतिज्ञान- पांच इन्द्रियों तथा मन के द्वारा अपनी शक्ति के अनुसार होने वाला ज्ञान मतिज्ञान कहलाता है।

२ श्रुतज्ञान- इसमें किसी भी वस्तु का विशेष ज्ञान होता है। उस विशेष ज्ञान को श्रुतज्ञान कहते हैं।

३ अवधि ज्ञान- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादा सहित इन्द्रिय या मन के निमित्त के बिना पदार्थ का प्रत्यक्षीकरण होना, अवधिज्ञान कहलाता है।

४ मनपर्यव ज्ञान- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादा सहित इन्द्रिय तथा मन की सहायता के बिना ही दूसरे पुरुष के मन में स्थित पदार्थों का प्रत्यक्षीकरण करना मनपर्यव ज्ञान कहलाता है।

५ केवल ज्ञान- केवल ज्ञान में सभी द्रव्य और उनकी सब पर्यायें एक साथ जानी जाती हैं।

सम्यक् ज्ञान का तात्पर्य यह हुआ कि ज्ञान प्राप्ति में जो कर्म बाधक होते हैं उनको समूल नष्ट करना आवश्यक है। इस ज्ञान में जीव और अजीव के मूल तत्वों का विशेष ज्ञान प्राप्त होता है।[22] विशेष ज्ञान या सत्य ज्ञान के द्वारा ही कर्मों का विनाश होता है। कर्मों के विनाश के बाद ही सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है। कर्म आठ प्रकार के हैं- ज्ञानावरणीय कर्म दर्शनावरणीय, मोहनीय, वेदनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, तथा अन्तराय।[23] जब जीव का कर्म से विच्छेद होगा तभी मोक्ष की प्राप्ति होगी।

सम्यक् चारित्र्य अज्ञान पूर्वक आचरण की निवृत्ति के लिए और आत्मा में स्थिर होने के लिए प्रयुक्त होता है। यह संवर में सहायक होता है। अहितकर कार्यों का त्याग तथा हितकर कार्य का आचरण करना सम्यक् चरित्र कहलाता है।[24] मोक्ष प्राप्त करने के लिए केवल श्रद्धा तथा ज्ञान ही आवश्यक नहीं है बल्कि साधक को आचरण पर भी नियंत्रण रखना चाहिए। सम्यक् चरित्र के द्वारा ही जीव अपने कर्मों से मुक्त हो जाता है क्योंकि कर्मों के कारण ही बंधन और दुःख होता है। नये कर्मों को रोकने तथा पुराने कर्मों को नष्ट करने के लिए निम्न क्रियाएं आवश्यक बतायी गई हैं-

१ प्रत्येक व्यक्ति को समिति का पालन करना चाहिए। समिति का अर्थ साधारणतया सावधानी बताया गया है। जैनों ने पांच प्रकार की[25] समिति माना है जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नवत् प्रस्तुत है

(क) ईर्या समिति- सभी प्रकार की हिंसा से बचने के मार्ग को ईर्या समिति कहते हैं।

(ख) भाषा समिति- मधुर, प्रिय, नम्र वाणी बोलना भाषा समिति कहलाती है।

(ग) एषणा समिति- आवश्यकतानुसार भिक्षा ग्रहण करना एषणा समिति कहलाती है।

(घ) आदान निक्षेपण समिति वस्तु के उठाने व नियत स्थान पर रखने को आदान निक्षेपण समिति कहते हैं।

(ङ) उत्सर्ग समिति- निश्चित स्थान पर मल-मूत्र का त्याग करना उत्सर्ग समिति कहलाती है।

२ मन वचन व कर्म पर संयम रखना आवश्यक होता है। जैन दार्शनिक इसे गुप्ति कहते हैं। गुप्तियां तीन प्रकार की होती हैं जो निम्न हैं

(क) वाणी पर संयम रखा जाता है।

(ख) वाणी पर नियंत्रण रखना ही वाग्गुप्ति कहलाती है।

(ग) मन पर नियंत्रण रखना ही मनोगुप्ति कहलाती है।

३ व्यक्ति को दस प्रकार के धर्मों का पालन करना चाहिए। दस धर्म ये हैं सत्य, क्षमा शौच तप संयम, त्याग विरति मार्दव, सरलता ब्रह्मचर्य।

४ जीव और अजीव के स्वरूप के सबध म ममान भाव रखना पड़ता है। जैनो ने जीव और अजीव के सबध का भावनापूर्ण बताया है।

५ सर्दी, गर्मी भूख प्यास आदि से मिले दुख को सहन करना आवश्यक होता है। जैना ने इसे परीषह कहा है।

६ समता, निर्लोभता, निर्मलता और सच्चरित्रता का पालन आवश्यक है।

जैनाचार्यो ने त्रिरत्न के अलावा पच महाव्रत को मोक्ष प्राप्ति के लिए सबसे उत्तम माना है, लेकिन ये पाच महाव्रत सम्यक् चरित्र के अन्तर्गत ही आते हैं। सक्षेप म पच महाव्रत का वर्णन निम्नवत् प्रस्तुत है

अहिंसा सम्यक् चरित्र के पालन करने मे अहिंसा का प्रमुख स्थान है। अहिंसा का अर्थ सभी प्रकार की हिंसाओ का त्याग है। जैनो के अनुसार सभी जीवो का निवास द्रव्य मे होता है। इन द्रव्या का निवास केवल द्रव्य में ही नही बल्कि स्थावर द्रव्यो मे भी होता है। जैसे- पृथ्वी वायु, जल इत्यादि मे भी माना जाता है। साधु या सन्यासी इस व्रत का पालन अधिक कठोरता से करते है, परतु साधारण मनुष्य के लिए दो इन्द्रिया वाले जीव की हत्या न करने का आदेश दिया है। जैन सन्यासी हिंसा से बचने के लिए मुह पर कपड़ा बाधे रहते हैं। क्योंकि उनका मानना है कि सास लेते समय छोटे-छोटे जीवो की हिंसा होने की सभावना रहती है। जैन दार्शनिको ने यहा तक माना है कि दूसरो को हिंसा के लिए प्रेरित करना या मन मे दूषित विचार लाना हिंसा के समान है। कुछ पाश्चात्य विद्वान् यह मानते हैं कि आदिम युग के असभ्य मनुष्य म जीवो के प्रति हिंसा का भय बना रहता था। वही हिंसा का मूल कारण है।[26] इस व्रत का पालन साधक को मन, वचन व कर्म स करना चाहिए। जिससे आचरण साफ व शुद्ध बना रहता है जो मोक्ष प्राप्ति मे सहायता करता है।

सत्य सत्य व्रत का स्थान सम्यक् चरित्र में दूसरा है। सत्य का अर्थ सभी प्रकार क असत्य का परित्याग। इस व्रत म झूठ नही बोला जाता। केवल सत्य ही बोला जाता है। सत्य का अर्थ सबका हितकारी हो और प्रिय हो। सत्य के पालन क समय लोभ क्रोध भय से दूर रहना चाहिये। मन मे किसी प्रकार की बात को छिपाना दूसरा को झूठ बोलने क लिए प्रेरित करना, सत्य के नियम का उल्लघन हाता है। सत्य व्रत का पालन मन वचन व कर्म से करना चाहिए। इसके पालन से मोक्ष प्राप्ति मे सहायता मिलती है।

अस्तेय अस्तेय भी मोक्ष प्राप्ति म सहायक होता है। इसका अर्थ सभी प्रकार की चार प्रवृत्ति का निषेध करना है। जैनो के अनुसार जिस प्रकार किसी जीव क लिए उसका प्राण प्रिय है उसी प्रकार उसकी धन-सम्पत्ति भी प्रिय है। मनुष्य का जीवन धन-सम्पत्ति पर निर्भर है। इसलिए धन-सम्पत्ति उसका बाह्य अग है। किसी के धन के अपहरण की बात सोचना उस व्यक्ति के जीवन के अपहरण के समान है। अहिंसा क साथ अस्तेय का अछेद्य सम्बन्ध है। इस व्रत का पालन मन, वचन व कर्म से करना चाहिए।

ब्रह्मचर्य ब्रह्मचर्य का अर्थ है सभी प्रकार की वासनाओ का त्याग। जैन दार्शनिक केवल इन्द्रिय सुख का ही नही बल्कि सभी प्रकरार के कामो क त्याग को ब्रह्मचर्य कहते है। मानव अपनी वासनाओ एव कामनाओ के वशीभूत होकर अनैतिक कर्म करने लगता है। सभी प्रकार के शब्द स्पर्श, रूप गध व स्वाद विषय कामना की वृद्धि मे उत्तेजक होते है। मनुष्य इन्ही विषयो के कारण बधन मे फसा रहता है परिणामस्वरूप वह बार-बार जन्म ग्रहण करता रहता है और वह मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता। मोक्ष प्राप्त करने क लिए इन कुप्रवृत्तियो का सर्वथा त्याग करना होगा। यह त्याग मन वचन व कर्म स करना चाहिए।

अपरिग्रह सम्यक् चरित्र म अपरिग्रह का अन्तिम स्थान है। अपरिग्रह का अर्थ सभी विषयो में आसक्ति का त्याग है। इस व्रत मे उन सभी विषयो का त्याग करना पड़ता है जिससे इन्द्रिय सुख की उत्पत्ति होती है। इन विषयो मे सभी प्रकार क रस शब्द गध स्पर्श व स्वाद आते है। इन विषयो क द्वारा मनुष्य कर्म बधन मे पड़ा

रहता है। जिसके कारण वह लगातार जन्म ग्रहण करता है। वह तब तक मोक्ष प्राप्त नही कर सकता जब तक इन विषयो से अनासक्ति न हो जाये।

उपरोक्त कर्मों को अपनाकर मानव मोक्ष प्राप्त करने योग्य हो जाता है। सम्यक् ज्ञान सम्यक् दर्शन व सम्यक् चारित्र्य मे बड़ा घनिष्ट सबध है। कर्मों का आस्रव जीव मे बद हो जाता है। पुराने कर्मों का क्षय हो जाता है। इस प्रकार जीव अपनी स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त कर लेता है, यही मोक्ष की अवस्था कहलाती है।

आचार्य उमास्वामी ने सभी प्रकार के कर्मों के क्षय को मोक्ष कहा है।[28] जब जीव अपने नैसर्गिक शुद्ध स्वरूप को पा लेता है तो उसमे अनन्त चतुष्टय अनन्त ज्ञान, अनन्त वीर्य, अनन्त श्रद्धा व अनन्त शाति की उत्पत्ति होती है। यही कैवल्य की अवस्था होती है।

तात्पर्य यह है कि सम्यक् दर्शन ज्ञान व चारित्र्य से सर्वप्रथम ससार के कारण रूप मोहनीय कर्म नष्ट होते हैं तथा नवीन कर्मो का आस्रव बद हो जाता है और सचित कर्म पुद्गल क्षीण हो जाता है। उस समय ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व मोहनीय कर्मो का एक साथ क्षय हो जाता है। जैन दार्शन मे आत्मा की शुद्ध अनन्त ज्ञानादि गुण से पूर्ण अवस्था को मोक्ष कहा गया है।[29] त्रिरत्न ये गृहस्थ तथा श्रावक के धर्म माने जाते हैं। परतु ये दोनो मोक्ष के कारण माने गये हैं। अत मोक्षाभिलाषी को इनका पालन करना अति आवश्यक माना गया है।[30]

दर्शन एव धर्म विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी - २२१००५

सन्दर्भ

१ सर्वार्थ सिद्ध १/४
२ भारतीय दर्शन की रूपरेखा, एच पी सिन्हा, पृ० १५९
३ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्या, कृत्स्नकर्म क्षयोमोक्ष ' -तत्वार्थ सूत्र १०/२/३
४ ' मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमाद कषाया योगा बन्धहेतव।'' -तत्वार्थ सूत्र ८/१
५ तत्वार्थ सूत्र १०/२
६ समाधिशतक-१००
७ तदन्तरमूर्ध्व गच्छत्यालोकान्तात् तत्वार्थ सूत्र १०/५
८ आतमलाभ विदुर्मोक्ष जीवस्यान्तर्मलक्षयात्।
नाभावो नाप्य चैतन्य न चैतन्यमनर्थकम्॥ सिद्धि वृत्ति पृ ३८४
९ भारतीय दर्शन भाग एक डा राधाकृष्णन् पृ० ३०५
१० क प्रवचन सार अध्याय-१, गाथा ८४
ख ''सर्वस्य कर्मणो य क्षयहेतुरात्मनो हि परिणाम।
ज्ञेय स भाव मोक्षो द्रव्यविमोक्षश्च कर्मप्रथग्भाव।
११ सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग '' तत्वार्थ सूत्र १/१
१२ सम्यग्दर्शन-ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग ' तत्वार्थ सूत्र १/१

१३ दर्शनज्ञानचारित्राणि सेवितव्यानि साधुना नित्यम् ।
तानि पुनर्जानीहि त्रीण्यप्यात्मान चैव निश्चयत ॥ -समयसार, पूर्वरग १६
१४ भारतीय दर्शन बलदेव उपाध्याय पृ० १६७
१५ तत्वार्थधिगम सूत्र १/२-३
१६ तत्वार्थश्रद्धान सम्यक्दर्शन् - तत्वार्थ सूत्र १/२
१७ तत्वार्थाधिगम सूत्र १/२-३
१८ न मे जिने पक्षपात न द्वेष कपिलादिषु ।
युक्तिमद् वचन यस्य तद् ग्राह्य वचन मम ॥
षड्दर्शन समुच्चय ४४ पर टीका (चौखम्भासस्करण पृ०३९)
१९ सशयविमोहविभ्रमविवर्जितमात्मपरस्वरूपस्य ।
ग्रहण सम्यग्ज्ञान साकारमनेक भेद च ॥ -द्रव्यसग्रह गाथा ३१ श्लोक
२० तत्वसार, पूर्वार्द्ध गाथा, १८
२१ मतिश्रुतावधिमन पर्याय कवलानि ज्ञानम् । -तत्वार्थ सूत्र १/९
२२ द्रव्य सग्रह श्लोक-४२
२३ ज्ञानदर्शनावरण वेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तराया -तत्वार्थ सूत्र ८/४
२४ सामायिकच्छेदोपस्थाप्यपरिहारविशुद्धि सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यातानिचारित्रम् । -तत्वार्थ सूत्र ९/१८
२५ ईर्याभाषैषणादान निक्षेपोत्सर्गा समितय -तत्वार्थ सूत्र ९/५
२६ हिन्दू नीतिशास्त्र, डा० मैकेन्जी पृ० २
२७ आचाराग सूत्र पृ० २०८
२८ तत्वार्थ सूत्र १०/२-३ भारतीय दर्शन डा० बलदेव उपाध्याय पृ १७०
२९ नरेन्द्रसेनाचार्य सिद्धान्तसार पृ० ८६-८७
३० क अमृतचन्द्राचार्य पुरुषार्थसिद्धयुपाय पृ० ८५
ख राजचन्द्र जैन शास्त्रामाला, पचमसस्करण, १९६६

ज्ञान-विज्ञान का आविष्कर्त्ता

जिस प्रकार वृक्ष के लिए बीज उसी प्रकार भूतकालीन सभ्यता, संस्कृति, हर राष्ट्र या समाज की जरूरत है क्योंकि उन घटनाओ व परम्पराओ से शिक्षा लेकर हम आगे बढ़ सकते हैं। केवल इतिहास पढ़ लेना यह तो केवल सड़े-गले शव को उखाडना है। इतिहास उसे कहते हैं जिसमे महापुरुष के बारे मे वर्णन किया गया हो जिससे हम प्रेरणा मिले। एक मराठी कवि ने कहा-

महापुरुष हो उनगेले त्याचे चारित्र पहाजरा ।
आपण त्याचे समान हवावे यचि सापडे बोध खरा ॥

हम इतिहास, पुराण आदि पढ़ते है, वह क्या मनोरंजन, गुणगान या समय व्यतीत करने के लिए है ? नही बल्कि जो महापुरुष हो गए हैं उनका चरित्र अध्ययन करने के लिए, उसको पढ़कर उनके आदर्शों को जीवन में अपना करके, उनके समान बनकर राष्ट्र को विश्व गुरु के रूप मे प्रतिस्थापित करने के लिए।

हमारा भारत कभी विश्व-गुरु था, क्योंकि हमारे भारत मे आधुनिक विज्ञान की हर शाखाए थीं, एसा कहा गया है-

कला बहत्तर नरन की, यामे दो सरदार,
एक जीव की जीविका, एक जीव उद्धार।

बहत्तर कलाएँ होती है, उन बहत्तर कलाओ मे दो कलाएँ सर्वश्रेष्ठ कलाएँ है, एक कला है- जीव की जीविका क्योंकि शरीरमाध्यम् खलु धर्म साधनम्। जीव की जीविका के अंतर्गत वाणिज्य, शिल्पकला, व्याकरण, इतिहास, पुराण आते हैं। दूसरी कला है- जीव उद्धार। इन बहत्तर कलाओ मे समस्त आध्यात्मिक विधायें पराविधायें हमारे भारत मे किस प्रकार थी, उन सभी के बारे मे मै यहा संक्षिप्त मे प्रकाश डालूंगा। सर्वप्रथम मै यह बताना चाहूंगा कि जिस प्रकार सपूर्ण सूर्य चन्द्र ग्रह, नक्षत्र ब्रह्माड आकाश मे गर्भित हैं उसी प्रकार सपूर्ण ज्ञान विज्ञान का उदय विकास केवली तीर्थंकर से हुआ है। इसलिए सपूर्ण ज्ञान विज्ञान के सम्पादक, आविष्कारक, प्रवक्ता केवली भगवान हैं।

य सर्वाणि चराचराणि विधि वद् द्रव्याणि तेषा गुणान्,
पर्यायानपि भूत भावि भावित सर्वाम् सदा सर्वदा ।
जानीते युगपत प्रतिक्षण मत सर्वज्ञ इत्युच्यते
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नम ॥

Einstin Says We can only know the relative truth but the real truth is known only to the Universal observer

हम सब केवल आशिक सत्य का जान सकते हैं। कोई भी महान् वैज्ञानिक दार्शनिक ही क्यो न हो सपूर्ण सत्य को नही जान सकता है क्योंकि हमारे पास जो ज्ञान है, वह निश्चित है। जिस प्रकार हमारे पास अनन्त आकाश

हाते हुए भी हम अनन्त आकाश को दख नहीं सकते। क्योंकि हमारी दृष्टि-शक्ति सीमित है। तीर्थंकर एक साथ कितनी भाषाए बोलते है ? ७१८ भाषाए बोलते हैं। इसलिए समस्त ज्ञान-विज्ञान के जन्मदाता तीर्थंकर हैं। उसके बाद सम्पादन करते है गणधर। समस्त कलाओं, विधाओ का सम्पादन आदिनाथ भगवान ने किया था। परतु उसका प्रायोगिक रूप मे सक्षिप्त वर्णन मै करूगा।

भारतीय सस्कृति मे ६०७५ ईसा पूर्व एक धन्वतरी हुए जो कि शल्य चिकित्सा और रसायन शास्त्र क प्रवक्ता थे। उसी प्रकार अश्विनी कुमार थे जो औषध/आयुर्वेद के माध्यम से चिर युवा रह और एक च्यवन ऋषि थे वे वृद्ध थे। इसलिए च्यवन ऋषि को उन्होने ओषधि दी। जिसके माध्यम से वृद्ध ऋषि युवक बन गया और औषधि का नाम च्यवनप्राश पड़ गया। ये सभी हमारे प्राचीन ग्रथ चरक सहिता, आयुर्वेद मे वर्णित हैं। इसके बाद पुनर्वसु ऋषि हुए। वे ईसा के २८०० वर्ष पूर्व हुए। शिक्षा पद्धति एव आयुर्वेद शल्य चिकित्सा का वर्णन प्रतिपादन उनके शिष्यो ने किया। हिपोक्रिटिश यूनानी थे। इतिहासकार मानते हैं कि हिपोक्रिटिश आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा क आविष्कारक हैं। परन्तु उससे भी कई हजार वर्ष पहले लिखित रूप मे प्रयोग रूप मे हमारे देश मे शल्य चिकित्सा स लेकर अन्य प्रकार की चिकित्सा व शिक्षा थी। इस शल्य चिकित्सा के मौजूद मूल ग्रथ चरक सहिता, वागभट्ट सहिता, योग रत्नाकर आदि मे वर्णन मिलता है। ये शल्य चिकित्सा के आद्य प्रवक्ता थे। उन्होने सुश्रुत सहिता ग्रथ लिखा। ईसा से ६०० वर्ष पहले भारत ग्रीक आदि कुछ देशो को छोड़कर अन्य देश अनत अधकार म थे। उन्हे अक व अक्षर का ज्ञान नही था और हमारे यहा सभी था। इन सभी के साक्षी शिलालेख और ग्रन्थ है। सुश्रुत नाक कान गला, आख, इन सभी की शल्य चिकित्सा करते थे। एक स्थान से मास काटकर के अन्य स्थान मे जोड़ देते थे और उन्होने शल्य चिकित्सा के १२० प्रकार क यत्रो का अविष्कार किया था। जीवक बुद्ध के चिकित्सक थे। एक सेठजी की लड़की थी जिसकी उल्टी के माध्यम से अदर की जो आत बाहर निकल गई जीवक ने आपरेशन करके पुन उसका स्थापन कर दिया। भारत में पशु-पक्षी की सुरक्षा और चिकित्सा पद्धति का भी आविष्कार हुआ था।

आदिनाथ भगवान की दो पुत्रिया थीं ब्राह्मी और सुन्दरी। भरत, बाहुबली को उन्होंने पहल विद्यादान न देकर ब्राह्मी और सुन्दरी को दिया। क्योंकि विद्यादान के पहले आदिनाथ भगवान कहते है

'विद्यावान पुरुषो लोके सम्मति याति कोविदै।
नारीचतद्वतिघत्तेस्त्रीसृष्टेरग्रिमपदम् ॥'

जिस प्रकार विद्यावान पुरुष समाज म अग्रिम पद प्राप्त करते है उसी प्रकार शिक्षा प्राप्त करके स्त्री भी समाज मे अग्रिम स्थान प्राप्त करती है।

इसलिए स्त्री शिक्षा पहले आदिनाथ भगवान ने प्रारभ की क्योंकि माता प्रथम गुरु होती है। इसलिए सिद्ध होता है कि पुरुष शिक्षा से महत्वपूर्ण स्त्री शिक्षा है परतु मध्यकालीन परतन्त्रता के कारण हम स्त्री शिक्षा को भूल गए और प्रतिलोभी बन गये। हमने स्त्री शिक्षा महत्व के बजाय पुरुष शिक्षा का महत्व दिया और स्त्रियों का केवल भोग की वस्तु मान लिया। आदिनाथ ब्राह्मी सुन्दरी दोनो को गोदी मे बैठाकर सिखाते हैं। इसलिए गणित मे लिखते हैं वह उल्टी सख्या है, क्योंकि हम १२३ मे पहले ३२१ नहीं लिखकर इसमे उल्टा लिखते हैं। इस सख्या म १ का स्थानीय मान शतक है। २ का स्थानीय मान दशक है और ३ का स्थानीय मान इकाई है। हमे पहले एकक ३ लिखना चाहिए फिर दशक २ लिखना चाहिए एव इकाई ३ बाद म लिखना चाहिए। परतु हम इसम उल्टा शतक १ लिखते हैं फिर दशक लिखते हैं पीछे इकाई ३ लिखते हैं। इसका कारण यह है कि ब्राह्मी को दाया भाग म बैठाकर अ आ की शिक्षा दी थी जिसस अक्षर (भाषालिपि) की गति बायें और से दाय की ओर होती है। सुन्दरी को बायी गोद म बैठाकर १ २ की शिक्षा दी थी जिसके कारण सख्या की गति दायें भाग से बायें की ओर होती है। इसलिए

'अकानाम् यामतो गति।' अर्थात् अकों की गति बाम स होती है। इससे स्वत यह सिद्ध हुआ कि ब्राह्मी लिपि का आविष्कार ब्राह्मी के नाम पर हुआ।

आदिनाथ भगवान ने कई खण्डो मे व्याकरण शास्त्र को रचा था। परतु अभी लिपिबद्ध रूप म सबस प्राचीनतम व्याकरण पाणिनी व्याकरण है। पाणिनी ने व्याकरण ईसा क ५०० वर्ष पूर्व लिखा। हमारे भारत ने ० व दशमलव पद्धति का अविष्कार किया। यदि दशमलव पद्धति एव १ से ९ तक का आविष्कार नही होता तो गणित व विज्ञान का आविष्कार भी नही होता। इसस सिद्ध हाता है कि १२०० वर्ष पूर्व एक भारतीय वैज्ञानिक गणित, ज्योतिष लकर अरब गया और अरब से यूरोप और यूनान। वहा से जाकर अन्यत्र विकास हुआ।

नवीं शताब्दी में नागार्जुन जो भारत के सुप्रसिद्ध रासायनिक वैज्ञानिक थे उनका ग्रन्थ रसायन शास्त्र था। गणित म महावीर आचार्य का एक शास्त्र है गणित सार सग्रह' जिसमे लघुतम समावर्त्तक, दीर्घवर्त और अकगणित व बीजगणित आदि का वर्णन है। ९९८ में ब्रम्हगुप्त हुए जिनका ग्रन्थ १२०० वर्ष पहल विदशा म गया। उसम अकगणित बीजगणित रेखा गणित है और पाई का वर्णन है। भास्कराचार्य ने न्यूटन से ५०० वर्ष पूर्व गुरुत्वाकर्षण की खोज की थी। न्यूटन जब पेड़ क नीचे बैठ थे तो एक एपल उनके सिर पर गिरी तो उन्होंने सोचा कि एप्पल ऊपर या इधर उधर जाने की बजाय सीधा नीचे ही क्या आया और उन्होने गुरुत्वाकर्षण सिद्धात की खाज की किन्तु उनसे पूर्व भास्कराचार्य ने निम्न सूत्र दिया।

आकृष्टि शक्तिश्च मही तपायत स्वस्थ गुरु स्वामि मुख स्वशक्त्या।'

भूमि मे आकर्षण शक्ति है, अत आकाश मे स्थित भारी वस्तु का भूमि अपनी शक्ति से अपनी ओर खीच लेती है। हम मानते हैं, पढ़ते हैं और पढ़ाते हैं कि गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रतिपादन न्यूटन ने किया। दीपक के नीचे अधेरा है। हमारे अदर आत्मबल नही है, जिससे हम अपने सिद्धात को स्वीकार नही कर पाते हैं। इसी प्रकार वर्गमूल का हाल करके छोड़ दिया, परन्तु भास्कराचार्य ने उस पाई' की Value निम्न १३ १४१६६ और आधुनिक गणित के अनुसार २२/७ = ३ १४२ बताया है। आर्कमिडिस ने प्लावन सूत्र का प्रतिपादित किया था। जबकि इसका जन्मदाता ३००० वर्ष पूर्व अभय कुमार था जो श्रेणिक का पुत्र और महामत्री था। सूर्य सिद्धात का प्रतिपादन सिद्धान्त शिरोमणि भामह व लीलावती ने किया। अभय कुमार ने हाथी का वजन करने के लिए आयतन सूत्र का आविष्कार किया। यह कुछ गरीब ब्राह्मण की रक्षा के लिए किया था। श्रेणिक उनको कष्ट देना नही चाहता था, उनकी रक्षा करने के लिए श्रेणिक ने कहा हाथी का वजन करक ले आओ। इसके लिए अभय कुमार ने आर्कमिडिस का सूत्र दिया कि तुम एक नौका जल मे रखो फिर नौका मे हाथी को रखो। नौका वजन के कारण डूबेगी, जहा तक नौका डूबेगी वहा तक चिन्ह लगा दो फिर हाथी को निकाल दो। उसमे ऐसा पत्थर रखो जिससे नौका निशान तक डूबे। इस पत्थर का वजन करो वह हाथी के बराबर वजन हो जाएगा।

आज तक हम यह जानते हैं कि हवाई जहाज का आविष्कार राइट ब्रदर्स ने किया था, लेकिन पुष्पक विमान जो काफी बड़ा था उसका निर्माण महाभारत काल के पूर्व हो चुका था। उसका निर्माण हिन्दू धर्म के अनुसार ब्रह्म ने किया और कुबेर को दिया। कुबेर से रावण युद्ध करके ल आया। पुष्पक विमान एक योजन (१२ कि मी) लम्बा था, और चौड़ाई (६ कि मी) आधा योजन। उसमे मनुष्य, हजारो हाथी, घोड़ अस्त्र शस्त्र भोजनशाला बगीचा, व्यायामशाला, तालाब आदि होते थे।

आर्यभट्ट सन् ४७६ गुप्तकाल म हुए और उन्हाने आर्य सिद्धात का प्रतिपादन किया। शून्य का आविष्कार वर्षो पूर्व हो गया था। लेकिन शून्य का लिपिबद्ध रूप से व्यापक रूप मे प्रयोग आर्यभट्ट ने किया। त्रिकोणमिति म SinØ cosØ को भी आर्यभट्ट ने दिया। पृथ्वी गोल

है जो अपनी धुरी पर भ्रमण करती है, इस सिद्धात को भी आर्यभट्ट न सिद्ध किया। द्वितीय आर्यभट्ट ९५० मे हुए जिसने यह महान् सिद्धात दिया। रॉयल सोसायटी जो कि अभी इग्लैड मे है ऐसी ही सस्था की स्थापना हमारे भारत मे १५०० वर्ष पूर्व हुई थी। यहा पर केवल विशिष्ट वैज्ञानिक ही सदस्य बन सकते थे। दूसरे के लिए स्थान नही था। इसे ही विक्रमादित्य के नवरत्न पडित कहते थे। उसम एक थे वराहमिहिर, उन्होने वृहत् सहिता ग्रन्थ लिखा। इसमे ऋतु विज्ञान कृषि विज्ञान आदि का वर्णन है। सभी विषय के वैज्ञानिक व गुरु हमारे भारत मे हुए जिन्होने सर्वप्रथम वैज्ञानिक आविष्कार किये इसलिए हमारा भारत विश्वगुरु कहलाया।

हमारा भारत विश्वगुरु था, यह केवल भारतीयों का गुणगान नही है, ठोस आधार पर हमारा भारत विश्व गुरु रहा। अभी भी हमारे पास क्षमता शक्ति व उपलब्धि है केवल हमे जागना है। जैसे एक व्यक्ति के घर मे गड़ी हुई करोड़ो की सम्पति है लेकिन उसे मालूम नही है कि उसके यहा सम्पति है तो जीवनभर केवल गरीब व अज्ञानी रहेगा। यदि मालूम होगा तो परिश्रम कर सम्पति निकालेगा व धनपति बन जाएगा। इसी प्रकार हमारे पास सब कुछ होते हुए भी जिस प्रकार मृग की नाभि मे कस्तूरी है तथापि इधर-उधर भटक रहा है उसी प्रकार हम हमारे मूल उद्देश्य से भटक गए, विछिन्न हो गये। जिस प्रकार वृक्ष मूल से कट जाता है तो कितना भी पानी पिलाने पर सूख जाता है। उसी प्रकार हम विकसित नही हो पायेंगे। इसलिए हमे मूल से जुड़ना है। पुन हमारी भारतीय सभ्यता, सस्कृति के ज्ञान-विज्ञान को पल्लवित करके पुष्पित करना है और दिखा देना है कि हमारा भारत विश्वगुरु था। अभी क्षमता हम मे है। भविष्य म इसे विश्वगुरु बनाना है और २१वी शताब्दी का स्वागत हम ज्ञान, क्राति, प्रगति से करना है।

(२३-११-९९ को आचार्य रत्न कनकनदी द्वारा सगोष्ठी मे दिया गया प्रवचन जिसे सुनकर उपस्थित वैज्ञानिक प्रोफेसर न्यायविद्, पत्रकार प्राचार्य, शोधार्थीगण रोमाचित हुए एव गौरव से अभिभूत हुए)।

रुकिये, एक क्षण

जिस समय समाज के हाथ से सामूहिक रूप में अहिंसा का पल्ला छूट जाता है, उस समय की असुरक्षा पर एक क्षण विचार कीजिये। जब किसी नगर या क्षेत्र में कोई साम्प्रदायिक दंगा हो जाता है तब वहां कैसा वातावरण बन जाता है? हिंसा से पागल हुए लोग एक दूसरे सम्प्रदाय के लोगों की नृशंस हत्याएं करते हैं। उनके मकान उनकी दुकानें, उनके कारखाने जलाते हैं और अकरणीय हिंस्र कृत्यों पर राक्षसी अट्टाहास करते हैं। सब ओर मार काट मच जाती है और सब जैसे हिंसा के उन्माद में क्रूर बन जाते हैं। जो उस हिंसा से दूर बैठा है क्या वह सर्वथा सुरक्षित रह सकता है? इस परिदृश्य में ध्यान दीजिये कि व्यक्ति और समाज की सुरक्षा के लिए अहिंसा का सामूहिक परिपालन आवश्यक ही नहीं वरन् अत्यन्त अनिवार्य है।

आचार्य नानेश

धर्म और विज्ञान

धर्म आत्म सम्बद्ध होते हुए भी समाज मूलक वस्तु के रूप में शताब्दियों से जन जीवन में प्रतिष्ठित रहा है। विज्ञान का भौतिक जगत से सम्बद्ध होते हुए भी धर्म के क्षेत्र में इसका प्रभाव रहा है। धर्म की वास्तविक अभिव्यक्ति आचार मूलक परम्पराओं में निहित है, जो समाज की नैतिक सम्पत्ति है। उच्चतम आचार और विचार द्वारा वासना क्षय ही धर्म का एक सोपान है। आचार विषयक परिस्थितियां परिवर्तित होती रहती हैं - उसका मुख्य कारण विज्ञान है। विज्ञान ने धर्म के वाह्य स्वरूप के अन्वेषण में जो क्रांतिकारी रूप दिया है वह मानव शास्त्र और समाज शास्त्र की दृष्टि से अनुपम है। पुरातन काल में वर्तमान अर्थ में प्रयुक्त विज्ञान शब्द सार्थक न रहा हो पर जहां तक इसकी भाव मूलक परंपरा का प्रश्न है, इसका नैकट्य स्पष्ट है। समाज मूलक क्रांतियों का जो धर्म पर प्रभाव पड़ा है और जो अपेक्षित संशोधन भी करने पड़े हैं, यह सब कुछ विज्ञान की ही देन है। क्योंकि विशुद्ध आध्यात्मिक दृष्टि से जीवन- यापन करनेवालों का अस्तित्व भी भौतिक जगत पर ही निर्भर रहता आया है। अतः समाज से बद्ध वैज्ञानिक प्रयोगों को भी धर्म द्वारा समर्थन मिला है। जब हम ज्ञान की विशेष स्थिति को विज्ञान के रूप में अंगीकार करते हैं तो स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान भी आत्मा का एक मौलिक गुण है। उपनिषदों में 'एक से अनेक की ओर प्रेरित करने वाली शक्ति' को विज्ञान कहा गया है। पौर्वात्य विज्ञान की परंपरा की जड़ें धर्म के आदिकाल तक बिखरी हुई हैं। हां, कुछ काल ऐसा अवश्य व्यतीत हुआ कि विज्ञान का स्थान श्रद्धा ने ग्रहण किया, पर इससे हमारी सत्यान्वेषिणी वृत्ति को अधिक प्रोत्साहन नहीं मिला। विज्ञान एक ऐसी दृष्टि प्रदान करता है कि जिसके समुचित उपयोग द्वारा आत्म-तत्त्व गवेषण के प्रशस्त क्षेत्र में भी क्रांति की जा सकती है।

यह सर्व स्वीकृत तथ्य है कि मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। इसलिए वह विज्ञान द्वारा प्राकृतिक शक्तियों की क्षमता की खोज कर सका। पर, परिताप इस बात का है कि वह भौतिक शक्तियों पर विजय प्राप्ति में इतना लीन हो गया है कि आत्मिक शक्तियों को भी विस्मृत कर बैठा। यहां तक कि वह अपने आपको इतना अधिक शक्ति-सम्पन्न समझने लगा कि परमात्मा, महात्मा, ईश्वर आदि अज्ञात शक्तियों को भी नगण्य मानने लगा। श्रद्धा का अंश जीवन से विलुप्त हो गया। वह एक प्रकार से हक्सले के इस सिद्धांत का अनुगामी बना कि ईश्वर आदि अज्ञात तथ्य मानवीय चिन्तन की अपूर्णता के द्योतक हैं। वह मानता है कि मनुष्य को समुचित या पौष्टिक खाद्य उचित मात्रा में न मिल पाने के कारण उन लोगों में विटामिन की कमी थी। मानसिक शक्ति दुर्बल हो गई थी। तभी वे ज्ञात वस्तुओं को छोड़ अज्ञात के चिन्तन में लीन हो गये। फलस्वरूप दौर्बल्य के कारण वे परमात्मा या अज्ञात शक्ति के लिए प्रलाप करने लगे। नहीं कहा जा सकता कि हक्सले के इस तर्क में कितना तथ्य है, पर यह तो बुद्धिगम्य है कि इस चिन्तन की पृष्ठभूमि भौतिक है। अहिंसा या अध्यात्म प्रधान दृष्टिकोण से चिन्तन किया जाए तो उपर्युक्त विचारों में संशोधन को पर्याप्त अवकाश मिल सकता है। भारत तो सदा से श्रद्धा और ज्ञान में विश्वास करता आया है। इन दोनों के अभाव में जीवन तिमिराच्छन्न हो जाता है। विज्ञान के द्वारा बढ़ी हुई स्वार्थपरायण वृत्ति की खाई को अहिंसा द्वारा ही पाटा जा सकता है। तात्पर्य है कि धर्म और विज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करने में बाधाएं आती हैं। कारण कि धर्म का संबंध अज्ञात आत्मा से है और विज्ञान का संबंध पौद्गलिक या दृश्य जगत से। यह वैषम्य

दा दिशाओ की ओर मनुष्य को उत्प्रेरित करता है। धर्म एकत्व का सूचक है तो विज्ञान द्वैध की ओर सकेत करता है। इतना होते हुए भी आधुनिक दृष्टि से जब अहिंसा के द्वारा विज्ञान पर नियत्रण रखन के प्रयत्न हो रहे हैं तो धर्म के द्वारा भी इसे नियत्रित किया जा सकता है। हा विज्ञान से सामजस्य स्थापित करने वाला धर्म कवल पारम्परिक या कालिक तथ्य न होकर विशाल दृष्टि सम्पन्न तथ्य है। धर्म का सीधा तात्पर्य केवल इतना ही है कि मानव जाति का अभ्युदय हो, सर्वोदय हो, विज्ञान इसका साधन हो।

धर्म और विज्ञान का समुचित सबध हो जाने पर मानव को वास्तविक सुख शाति की प्राप्ति होगी। धर्म या विशिष्ट दृष्टि रहित विज्ञान मानव समाज मे वैषम्य उत्पन्न कर सकता है। विज्ञान बाह्य विषमताओ को मिटाने मे सक्षम हागा तो धर्म आन्तरिक विकारा का दूर करने म सहायक होगा। विज्ञान नित नये साधनो का उत्पादक है ता धर्म उसका व्यवस्थापक। विपुल उत्पादन भी उचित वितरण के अभाव म एक समस्या बन जाता है। ऐसी अवस्था मे जीवन का सतुलन दोनो के सामजस्य पर ही अवलबित है। श्री ए एन व्हाईट हैड कहते है- धर्म के अतिरिक्त मानव जीवन बहुत ही अल्प प्रसन्नताओ का केद्र बिन्दु है।' अत विज्ञान के साथ धर्म का सामजस्य मानवता की रक्षा के लिए अनिवार्य है।

कतिपय विज्ञो का मतव्य है कि धर्म और विज्ञान का सामजस्य तो अमृत और विष के सयोग के समान है। धर्म, हृदय की वस्तु है, विज्ञान मस्तिष्क की। धर्म श्रद्धा और विश्वास पर पनपता है ता विज्ञान प्रत्यक्ष प्रयाग पर। विचारणीय प्रश्न यह है कि प्राकृतिक शक्ति सम्पन्न विज्ञान अज्ञात तथ्यो का प्रत्यक्ष करा देता है तो धर्म जैसी सजीव वस्तु का जड़ के साथ चाहे किसी भी रूप म सयोगात्मक या नियत्रण-मूलक सम्पर्क हो जाने पर विज्ञान का महत्त्व बढ़ जाएगा और विकारवर्धक वैमनस्य मूलक भावनाए भी समाप्त हा जाएगी। पर शर्त यह है कि वह धर्म भी शब्दाडम्बर रहित मानव की आतरिक भावभूमि से स्पर्श रखता हो, जीवन के सौन्दर्य मे अभिवृद्धि कर अन्तर्मन को तृप्त करता हो।

आज राजनैतिक और धार्मिक सस्थाए धर्म के मर्म से बहुत दूर या उदासीन हैं। धर्म की स्वैच्छिक मर्यादाए बोझ-सी प्रतीत होती हैं। इसलिए कि मर्यादाओ के प्रति मानव का विशुद्ध दृष्टिकोण था वह शुष्क विज्ञान की प्रगति के कारण दिनानुदिन विलुप्त हुआ जा रहा है। एक समय था धर्म का श्रद्धा के द्वारा ग्रहण किया जाता था पर आज धर्म को विज्ञान या बुद्धि द्वारा ग्राह्य तत्व समझा जा रहा है। जहा तक चिन्तन का प्रश्न है यह ठीक है कि ससार की प्रत्येक ग्राह्य वस्तु बौद्धिक कसौटी पर कसने के बाद ही आत्मस्थ की जाना चाहिए। पर वह चिन्तन और बौद्धिक चातुर्य व्यर्थ है जिससे चिन्तित तथ्य को जीवन मे साकार नही किया जा सकता। आचार-मूलक श्रद्धान्वित ज्ञान ही वास्तविक चिन्तन का प्रतीक होता है। उत्कर्षमूलक तथ्य केवल मानसिक जगत की वस्तु नही है, वह लोक-कल्याण की वस्तु होती है। यदि मस्तिष्क द्वारा चिन्तित वैज्ञानिक तत्त्वो को अहिसा-मूलक परम्परा द्वारा जीवन म प्रस्थापित किया जाए ता निसदेह इन दोनो के सामजस्य स न केवल मानवता ही परितुष्ट होगी अपितु भविष्य म और भी सुखद परिणाम आ सकते हैं। शक्ति बुरी चीज नही है पर शक्ति का वास्तविक रहस्य उचित प्रयोग पर निर्भर होता है। रावण और हनुमान शक्ति सम्पन्न व्यक्ति थ। रावण के पास धर्मरहित वैज्ञानिक शक्ति थी तो हनुमान क पास धर्मसयुक्त शक्ति। रावण की शक्ति स्वार्थ साधना मे प्रयुक्त हुई तो हनुमान की शक्ति सवा और साधना का एसा प्रतीक बनी कि आज भी उन्हें अविस्मरणीय कोटि म स्थान दिया गया है। धर्ममूलक वही शक्ति स्मरणीय हाती है जो सुदृढ, स्वस्थ, प्रेरणाप्रद और उर्जस्वल परपरा का सूत्रपात कर सक।

शुद्ध साध्वाचार

विश्व का प्रत्यक व्यक्ति प्रगति विकास एव अभ्युदय करना चाहता है और उसके उठने वाले प्रत्येक कदम के पीछे यही भावना एव कामना अन्तर्निहित रहती है । परतु हम यह भी देखते है कि चाहत हुए एव प्रयत्न करते हुए भी सबकी भावना साकार रूप नही ले पाती । युग युगातर से उठने वाले इस प्रश्न का आगम मे बहुत सुदर समाधान किया है । जब तक व्यक्ति का लक्ष्य ही नही होता उस पर दृढ विश्वास नही जमता, तब तक वह विकास के यथार्थ पथ पर नही पहुच सकता । इसलिए आगमकारो ने विचार एव आचार के पूर्व विचार शुद्धि या सम्यक् दर्शन को महत्व दिया है, जिसे आगम की भाषा मे दर्शन शुद्धि या सम्यक् दर्शन अथवा सम्यकत्व कहा है । विश्वास दशन या श्रद्धा के शुद्ध होने पर ही विचार एव आचार अथवा ज्ञान एव चरित्र सम्यक् हाता है और वह अपने लक्ष्य की ओर निर्बाध गति स बढ़ता हुआ अपने साध्य को सिद्ध कर लेता है, अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है । कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन को परिपूर्ण बनाने के लिए सर्वप्रथम श्रद्धा का शुद्ध होना, सम्यक होना आवश्यक ही नही अपितु अनिवार्य है । श्रद्धा की नीव पर ही सम्यक् विचार एव आचार का भव्य भवन खड़ा किया जा सकता है ।

व्यक्ति के जीवन मे श्रद्धा एव विश्वास तो है ही । कोई व्यक्ति श्रद्धा शून्य नही होता । परतु अनन्त काल स दर्शन मोह के सपर्क मे रहने के कारण श्रद्धा या दर्शन की पर्याय अशुद्ध हो सकती है । जब तक अशुद्ध पर्याय रहती है, तब तक व्यक्ति के जीवन मे सत्य को समझने, परखने एव उसको प्राप्त करने की भावना उद्बुद्ध नहीं हो पाती । यथार्थ दर्शन मोह का क्षय या क्षयोपशम होने पर ही व्यक्ति के मन मे स्व को एव स्व स्वरूप को समझने की भावना जागृत होती है । वह अपने स्वरूप को समझकर इसे प्रकट करने या अपनाने का प्रयत्न करता है । इसलिए निश्चय दृष्टि से कहा गया है कि स्व के द्वारा स्व के स्वरूप को समझकर उस पर श्रद्धा करना, विश्वास करना सम्यक् दर्शन है । स्व का जानना सम्यक् ज्ञान है, और स्व स्वरूप मे स्थित होना सम्यक् चरित्र है । जैन दर्शन के महान् दार्शनिक उमास्वाति महाराज न कहा भी है-

सम्यक् दर्शन,ज्ञान, चारित्राणि मोक्ष मार्ग ।

अर्थात् सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान सम्यक् चारित्र को भली-भाति समझकर तदनुसार आचरण करना ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है । अत जो स्व के द्वारा स्व के स्वरूप को समझ गया जिसने अपने आप का जान लिया, परख लिया मै कौन हू, कहा से आया हू, अनन्त काल से मैं इस असार ससार मे क्यो भ्रमण कर रहा हू, ये ससार के नाते-रिश्ते सब झूठे हैं, मुझे तो सच्चिदानद परमात्म स्वरूप को प्राप्त करना है,मेरी आत्मा के प्रत्येक प्रदेश म अनन्त शक्ति है, जो ज्ञान रूप, दर्शन रूप अव्याबाध रूप चारित्र रूप सामर्थ्यरूप है परतु कर्मों के आवरण से समस्त शक्तिया लुप्त हो रही है । अत सबसे पहले मुझे कर्मों के आवरण को हटाना है । ऐसा जो व्यक्ति समझ जाएगा वह सबसे पहले ऐसी शिक्षा ग्रहण करना चाहेगा जो उसे मुक्ति का सही मार्ग बता सके ।

भारतीय सस्कृति की परम्परा मे सा विद्या या विमुक्तये (वही वास्तविक विद्या है जो मुक्ति का कारण बने) का सूत्र सदा से प्रचलन मे रहा है । क्योकि अन्य लौकिक विद्याए केवल इहलौकिक स्वार्थ सिद्ध करने वाली या

अहकारोत्पादक होती है, उससे मुक्ति का मार्ग दर्शन नही मिल सकता। जो विद्या मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि बधना से मुक्ति दिलाने वाली, कर्मो के निविड़ बधनो को काटना सिखाने वाली और मनुष्य जीवन को सफल बनाने की तालीम देने वाली न हो तो वह विद्या भव भ्रमण का अन्त नही कर सकती। वह तो मस्तिष्क के लिए बोझ रूप और अनर्थ परपराओ को बढ़ाने वाली ही साबित होती है। अत जो विद्या स्व पर कल्याण साधिका, अठारह पाप स्थानो से मुक्ति दिलाने वाली, शमादि पाच मार्ग बताने वाली हो ऐसी शिक्षा ग्रहण करने के लिए ऐसे गुरु के द्वार जाना चाहिए, जिन्होंने स्वय कर्मो की लीला को समझा हो और मुक्ति के मार्ग की ओर बढ़ रहे हो, वे ही सयम मार्ग या दीक्षा के लाभ समझा सकेंगे। आगमो का अध्ययन करा सकेंगे। ऐसे मुमुक्षु को गुरु चरणो मे समर्पित हो जाना चाहिए। गुरु ही उसे आगमो का बोध कराते हैं और आर्हती दीक्षा के लाभ समझाते हैं ताकि वह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सके।

<u>आर्हती दीक्षा</u> दीक्षा एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला है, जिसमे स्वाध्याय और ध्यान से, आत्मा मे रही हुई शक्तियो को प्रकट किया जाता है। दीक्षा रूपी जाज्वल्यमान अग्नि मे तप कर ही राग, द्वेष नष्ट होते है। दीक्षा अतर्मुखी साधना है। दीक्षा वही ग्रहण कर सकता है जिसके अन्तर्मानस मे वैराग्य का पयोधि उछाले मार रहा हो। इससे साधक असद् से सद् की ओर तमस से आलोक की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ता है। अशुभ का बहिष्कार करके शुभ सस्कारों से जीवन यापन करता है और शुद्धत्व की ओर सुदृढ़ कदम बढ़ाता है। दीक्षा आत्मा से परमात्मा बनाने का श्रेष्ठ साधन है। दीक्षा अनुस्रोत का मार्ग नही है, अपितु प्रतिरोध का मार्ग है जो बहुत ही कठिन है। यह बालू के ग्रास की तरह नीरस है। दीक्षा बुभुक्षु व्यक्ति नही अपितु मुमुक्षु व्यक्ति ग्रहण करता है। दीक्षा से ही जीवन जीने की पद्धति मे परिवर्तन होता है। चित्त की जो धारा भोग की ओर प्रवाहित होती है वह दीक्षा से योग की ओर, त्याग की ओर प्रवाहित होने लगती है। दीक्षा धर्माचरण और व्रतारोहण की साधना है। दीक्षा जीवन और कर्त्तव्य से पलायन का नहीं अपितु प्रगति का मार्ग है। दीक्षा से साधक जीवन की चुनौतियो से भागता नही वरन् साहस पूर्वक जूझता है। परमाणु की खोज करना सरल है परतु आत्मा की खोज करना कठिन ही नहीं कठिनतर है। उस खोज के लिए जो अन्त यात्रा है वही दीक्षा है। दीक्षा से मन की आधि व्याधि और उपाधि मिट जाती है और समाधि प्राप्त होती है। दीक्षा का अर्थ केवल वेश परिवर्तन या सिर मुडन कराना ही नही है। दीक्षा का अर्थ है जीवन का परिवर्तन करना। विकारो की जटा का मुडन करना, ममता का त्याग और कषायों का क्षीण करना है।

आधुनिक भौतिक भक्ति के युग मे जो व्यक्ति साधना के कटकाकीर्ण महामार्ग पर मुस्तैदी से अपने कदम बढ़ाता है वह अवश्य ही साधुवाद का पात्र है। दीक्षा मार्गदर्शन का मार्ग नही इन्द्रिय दमन का मार्ग है। आत्म निर्णय का सर्वतोभद्र मार्ग है। यह ध्यान रहे कि दीक्षा आत्म कल्याण के साथ-साथ लोक कल्याण का भी मार्ग है। दीक्षा से मुमुक्षु साधु हो जाता है और साधु का लक्षण है

स्व पर हित समुचित रूपेण साधयति स साधु ।

अर्थात् जो स्वहित (आत्म कल्याण) और परहित (दूसरो का हित) भली भाति साधता है वह साधु है। साधु के लिए स्वहित आत्म कल्याण की साधना करना प्रथम कर्त्तव्य है। दीक्षा ३६ गुणो के धारक आचार्य भगवन्त जो गण के नायक हैं उनसे या निग्रन्थ गुरु से लेना ही श्रेयस्कर है। निर्ग्रन्थ इसलिए कहा है कि जो मूर्च्छा की गाठ से परिग्रह के राग-द्वेष के ध्यान से मुक्त हो। दशवैकालिक सूत्र मे कहा है-

ज पि वत्थ व पाय वा कबल पायपुछण ।
त पि सजमलज्जट्ठा धारेंति परिहरेंति य ॥

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो' इइ वुत्त महेसिणा ॥
-दशवैकालिक अ ६, गाथा २८२ २८३

अर्थात् साधु लाग जा वस्त्र पात्र, कबल, और पादपोंछक आदि रखते हैं उन्हे भी व सयम निर्वाह एव लज्जा निवारण के हेतु ही रखत हैं,पहनते हैं । ज्ञान पुज एव सर्व जगत के प्राणियो के रक्षक महावीर प्रभु ने इस परिग्रह नही कहा है । मूर्च्छा को परिग्रह कहा है । जिस सभी महर्षियो न परिग्रह माना है । अत साधु इन सब को काम मे लेते हुए भी परिग्रह की गाठ से मुक्त हैं ।

साधु धर्म (साध्वाचार)

मुमुक्षु जीव साधु धर्म की दीक्षा के लाभ समय जाता है तो वह सच्ची धर्म साधना करने को आतुर हो जाता है । सच्ची धर्म साधना करने का मूल कारण है ससार के जन्म-मरण, इष्ट वियाग अनिष्ट सयोग राग शाक, आधि, व्याधि, उपाधि और कर्मों की अद्भुत दासता से व्यक्ति का ऊव जाना है । उससे छुटकारा पाने को मोक्ष प्राप्ति की इच्छा होती है । इस प्रकार ऊब जाना ही वैराग्य है ।

वैराग्य होने पर भी अभी मोह की परवशता तथा शक्ति की न्यूनता के कारण गृहस्थ म रहते हुए भी धर्म साधना की जाती हैं परतु दैनिक जीवन मे होने पर भी षटकाय जीवो का सहार तथा १८ पापस्थान प्राणातिपात मृपावाद अदत्तादान मैथुन, परिग्रह, क्राध, मान माया लोभ, राग,द्वप कलह अभ्याख्यान पैशुन्य, रति अरति परपरिवाद माया मृपावाद मिथ्यात्व शल्य का सेवन उसे अत्यत खटकता है, अत वह वीर्योल्लास व वैराग्य वृद्धि के प्रयत्न मे रहता है । यह वढ़ते हुए गृहवास,कुटुम्ब परिवार धन सम्पति और आरम्भ समारम्भ के जीवन से अत्यत ऊब कर उसका त्याग कर दता है और आचाय भगवन्त या योग्य गुरु के चरणा मे अपना जीवन अर्पित कर देता है। वह अहिंसा सयम और तप का कठोर जीवन व्यतीत करने के लिए तत्पर है ।

गुरु भी उसे सावधान और दृढ देखकर उनके माता-पिता या अभिभावक की आज्ञा लेकर अरिहन्त परमात्मा की साक्षी से मुनि जीवन की दीक्षा देकर जीवन भर के लिए सावद्य व्यापार (पाप प्रवृत्ति)के त्याग रूप सामायिक की प्रतिज्ञा कराते है । षट्काय के जीवो की रक्षा के लिए भी पतिज्ञा करात हैं । उसे पूर्व जीवन की किसी प्रकार की स्मृति न हो इस उद्देश्य से वहुत स्थाना पर तो नया नाम रख दिया जाता है ताकि उसे ध्यान रहे कि वह अव गृहस्थ स मुनि बन गया है और अनक स्थानो पर वही नाम रख दिया जाता है पर उसके आग मुनि लगा दिया जाता है । यह उसकी छाटी दीक्षा है । इसके पश्चात् उसे साध्वाचार और पृथ्वीकायादि षट् जीव निकाय की रक्षा की दीक्षा दी जाती है । अध्ययन भी कराया जाता है और उसे याग्य समझकर हिसादि पाप मन, वचन, काया से करू नही कराऊ नही अनुमोदन नही करू ऐसी त्रिविध प्रतिज्ञा दिलाई जाती है । अहिसादि महाव्रता का उच्चारण कराके पालन की शिक्षा दी जाती है यह उसकी वड़ी दीक्षा है ।

साधु की दिनचर्या रात्रि के अतिम प्रहर स शुरू होती है । वह निद्रा का त्याग कर पच परमेष्ठी स्मरण आत्म निरीक्षण तथा गुरु के चरणो मे नमन करता है । यदि कुस्वप्न आता है तो उसकी आलोचना करता है । फिर ध्यान स्वाध्याय करता है । अत मे प्रतिक्रमण कर वह वस्त्र रजोहरण आदि की प्रतिलेखना करता है । तव तक सूर्योदय हो जाता है, इसके याद सूत्रोध्ययन आदि करके छ घड़ी दिन चढ़ने पर पात्र प्रतिलेखन करता है । तदनन्तर आचार्य भगवन्त या गुरु जो भी बड़े हों उनको नमस्कार करता है । भिक्षा के समय गाव मे गोचरी के लिए गुरु की आज्ञा से आता है । गोचरी का अर्थ है गाय जैसे जगह छोड़कर चरती है ताकि और गायो क लिए वाद म काम आवे । इसी तरह मुनि एक ही जगह से आवश्यक सामग्री न लेकर अनक घरा से लें ताकि देने वाले गृहस्थ के कमी न आवे । किसी को याद मे पीड़ा न हो । भिक्षा मे ४२ दाषो का ध्यान रखते हुए लेवें ।

भिक्षा लाकर गुरु को दिखाते हुए लाई हुई गाचरी की सब विगत वताता है। फिर पचक्खाण पार कर आचार्य, अन्य गुरुवृन्द, तपस्वी ग्लान, बाल साधु अतिथि (आए हुए साधु) सभी की भक्ति कर और गग द्वेषादि पाच दोष टालकर आहार करता है। प्रात साय आवश्यकतानुसार शौच के लिए गाव से वाहर स्थडिल (निर्जीव एकान्त भूमि) मे निवृत्त होकर आता है। तीसर प्रहर के अन्त मे वस्त्र पात्रादि की पेडिलहणा करता है। चौथे प्रहर स्वाध्याय कर गुरु को वन्दन करता है। फिर गोचरी से लाया भोजन करता है। नदनतर गुरु की उपासना करके रात्रि के प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय प्रतिक्रमण आदि कर सथारा पोरमी पढ़कर सो जाता है।

साधु जीवन मे सब कुछ गुरु से पूछकर करना पड़ता है। रुग्णमुनि की सेवा का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इसके अलावा आचाय बड़े गुरु की सवा सुश्रुषा और विनय भक्ति करना हर एक स्खलना का गुरु के समक्ष बोल भाव से प्रकट कर प्रायश्चित लेना, यथाशक्ति विगय का त्याग पर्व तिथि को विशेष तप वर्ष म दो या तीन बार हाथ से केशो का लोच, वर्षावास के अतिरिक्त शेष काल म ग्रामानुग्राम पाद विहार करना। सूत्रो व उनके अर्थों का भली-भाति पारायण करना भी आवश्यक है। परिग्रह से और स्त्रियो से सर्वथा अलग रहना किसी प्रकार का परिचय बातचीत, निकट वास आदि न करना भी साधु का आचार है। कहा भी है

पास बैठी कला घटावे, प्रत्यक्ष दीखे भूडी।
कहे सद्‌गुरु सुन चेलका यह कोई भली न भूडी।

अर्थात् अकली स्त्री यदि अकेले साधु के पास वैठती है तो उसके ब्रह्मचर्य की कलाआ को घटा देती है और आचार्य की १६ कलाआ म भी कमी आती है। लाक व्यवहार म अकेली औरत अकेले साधु के पास बैठी खराव लगती है और वह बदनामी का कारण बनती है। सद्‌गुरु अपन शिष्य से कहते हैं स्त्री चाहे साध्वी हो या गृहस्थी हो अकेल साधु क पास बैठा अच्छी नही लगती। साधु जीवन मे दस प्रकार की समाचारी अष्ट प्रवचन माता (पाच समिति तीन गुप्ति) सवर निर्जरा तथा पचाचार का पालन करना पड़ता है। वन्दन विधि अपने मे बड़े सभी साधु वृन्द को सादर सविधि नमन करना। साध्वी वृन्द को नमन वन्दन नही करना क्योंकि जैन आगमो म पुरुष को श्रेष्ठ माना है। साध्वी वृन्द भी अपने से बड़ी को वन्दन करे।

साधु को अपना काम स्वय करना होता है। यदि कारणवश दूसरो से कराना पड़े तो उनकी इच्छा पूछकर कराना। किसी प्रकार की भूल हो जावे तो तत्काल मिच्छामि दुक्कड कहना, गुरु कुछ भी कह तो उसको तत्काल स्वीकार करना। कोई कार्य करने से पूर्व गुरु से पूछना। आहार लेने से पूर्व मुनियो से इच्छा पूछना कि क्या क्या इसमे से लाभ देंगे। भिक्षा लेने जाने मे पूर्व मुनियो से पूछकर जाना कि मै आपके लिए क्या लाऊ? तप विनय श्रुत आदि की शिक्षा के लिए उनके योग्य आचार्य का गुरु का सानिध्य स्वीकार करना। गुरु ने जिन-जिन आचारो के पालन करने की आज्ञा दी हो मर्यादा का बधन रखना हो, वह तदनुसार करना। गुरु की पूर्ण आज्ञा मे रहना मर्यादा के बारे म एक घटना मुझे याद आ गई।

यह मेरा महान सौभाग्य रहा कि स्वर्गीय पूज्य समता विभूति शासन दीप समीक्षण ध्यान योगी आचाय भगवन्त श्री नानालाल जी महाराज साहब का वरदहस्त सदा मेरे मस्तक पर रहा है। अधिकाश वर्षावासो म मै उनके दर्शनार्थ जाता रहा हू। रतलाम मे एक बार बहुत बड़ा दीक्षा समारोह पच्चीस मुमुक्षुओ की दीक्षा का था। वहा हजारो की जनमेदिनी उपस्थित थी, नर-नारी गुरुदेव के दर्शन, वदन व वाणी श्रवण के लिए उमड़ रहे थे। स्थिति ऐसी थी कि आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से एक शब्द भी उनको सुनाई पड़ जावे तो वे अपने आपको धन्य मान रहे थे। इस हेतु धक्का मुक्की और [illegible] बढ़ रहा था। मै गुरुदेव के चरणो म पहुचा और विनती की कि गुरुदेव सामने बैठे महानुभावो को छोड़कर

पीछे बैठे हजारो लोगो को आपके प्रवचन के शब्द किसी को सुनाई नही दे रहे हैं और मेरे साथ आए ये महानुभाव और जनमानस आपसे प्रार्थना कर रहा है कि हम दूर दराज सैकड़ो किलोमीटर दूर से आपको वन्दन करने एव आपका प्रवचन सुनने यहा आए है अत हमारी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि आप लाउडस्पीकर पर बोलने की कृपा करें। ताकि सबको सुनाई दे। तो गुरुदेव ने फरमाया ललोड़ जी

जो हमारा साध्वाचार है, साधु के लिए शास्त्रो मे जो मर्यादाए रखी गई हैं उनको हम किसी भी हालत मे तोड़ नही सकते। कोई विशाल बाध कभी टूट जाता है तो वह कितना भयकर नुकसान कर जाता है बाढ़ आ जाती है। बीच मे पड़ने वाली फसलो को चौपट कर जाता है। सैकड़ा पशुओ को बहा ले जाता है। जनहानि भी हो जाती है। इसी प्रकार यदि हम अपना आचार तोड़ दें, मर्यादा ताक पर रख दे जनता की इच्छा पर नियम पलटते रहे तो वह अनाचार, अमर्यादाए रुदे कहा त जाएगी। फिर कितने आचार मर्यादाए तोड़ें और हम कितना पाप लगेगा इसकी कल्पना कितनी भयावह है। वे कितने कर्मबधन का कारण होंगी यह आप स्वय सोचे। उन्होने सिहनाद करते हुए कहा हम अपना आत्म कल्याण करने निकले हैं पर कल्याण भी करते हैं पर साध्वाचार का पालन प्राण रहते करेंगे। यह कभी न हुआ है न भविष्य म होगा कि हम दूसरों के कहने स अपने आचार तोड़ दे। जिन आचारा की नियमा की मर्यादाओ के पालन करने की हमने प्रतिज्ञा ली है उसका सदा सर्वदा पालन करेंगे यह हमारी प्रतिज्ञा है। पूज्य श्री जी महाराज साहब जीवन पर्यन्त शुद्ध साध्वाचार पालन करते हुए सदा मर्यादा की रक्षा करते रहे। धन्य हैं ऐसे शलाका पुरुष आचार्य देव।

-२० मडी प्रागण, नीमच - ४५८४४१

पुरुषार्थी वीर

वीर पुरुष पुरुषार्थ की प्रक्रिया मे विश्वास रखते हैं। व कभी हताश होकर भाग्य के भरोसे नहीं बैठते हैं। ऐसे पुरुषार्थी वीर ही अपने वर्तमान जीवन की सहज सुरक्षा करने में सफल होत हैं ता अपन शुभ पुरुषार्थ स सबके जीवन की सुरक्षा करते हैं। इस वीरता पूर्ण पुरुषार्थ स जो चलते हैं वे सबस पहल तो इहलोक को सुन्दर बनाते हैं और उसके माध्यम से परलोक को भी उज्ज्वल बना लेत हैं।

एक बटन दबाने से एक बल्ब भी जलता है ता पूरा बिजली घर भी चलता है और ज्यों ज्यों जीवन की सुन्दर उज्ज्वलता बढती जाती है त्यों त्यों बटन की शक्ति का भी विकास होता रहता है। यह विकास इहलोक में करलें तो वर्तमान जीवन पहले सुधर जायगा और परलाक भी सुरक्षित बन जाएगा।

आचार्य नानेश

❑ प्रो चादमल कर्णावट

धर्म साधना लोक परलोक

यह सच है कि मृत्यु के बाद इस लोक की सपूर्ण सामग्री धन वैभव परिवारादि यहीं रह जाती हैं। वह व्यक्ति क साथ नही जाती। व्यक्ति क साथ जाती है धर्म साधना। यह धम साधना ही परलोक म उनका साथ देती है उनको सुख साधन प्रदान करती है।

तब प्रश्न खड़ा होता है कि क्या इस लोक म धर्म साधना का फल नही मिलता ? क्या परलाक म ही उसका फल मिलता है ? क्या धर्म साधना केवल परलोक के लिए ही है ?

धर्म साधना का फल वास्तविकता यह है कि धर्म साधना का फल लाक परलोक दोनो मे मिलता है। शास्त्रा म जगह जगह उल्लेख मिलता है कि धर्मकरणी का फल इस लोक और परलोक दोनो जगह मिलता है। सम्यक्दृष्टि आत्मा जहा भी हो वह धर्मसाधना मे रत रहकर सुखानुभव करती है। कर्म सिद्धात के अनुसार कर्मो का उदय इस लोक मे हो तो उनका फल यहा मिलता है और भविष्य में परलोक मे उदय आन पर फल परलोक मे मिलता है। जैसे चोर चोरी करते हुए पकड़ा जाए ता उसे वही और तत्काल भी सजा हो जाती है। इसी प्रकार प्राणिरक्षा आदि का श्रम कार्य करने पर तत्काल व्यक्ति को सिर पर उठा लिया जाता है। वह लोक म मान सम्मान का पात्र बन जाता है। उत्तराध्ययन १४ मे आत्मा ही सुख-दुख का कर्ता और भोक्ता है। इस आत्मा का दमन ही कठिन है। आत्मा का दमन करने वाला इस लोक और परलोक मे सुखी होता है।

इस लोक मे धर्म साधना का फल धर्म साधना का फल इस लोक मे इस जन्म मे प्रत्यक्ष मिलता है। सताष या निर्लेपता धर्म की साधना का परलोक मे तो फल मिलेगा ही परतु इस लोक मे पहले सुख शाति का अनुभव होगा इसलिए कहा गया है-

गोधन, गजधन बाजिधन, और रतन धन खान
जब आवे सतोष धन सब धन धुलि समान।

अर्थात् सतोष सबसे बडा धन है सबसे बड़ा सुख है। ज्ञान साधना से आत्मा मे विवक जागृत हागा। विवेकपूर्वक कार्य करने से आत्मा को शाति प्राप्त होगी। आत्मा पापो स बचेगा और धम साधना म अग्रसर होगी। ज्ञान से हेय (त्यागने योग्य) ज्ञेय (जानने योग्य) और उपादेय (ग्रहण याग्य) का बोध हाने स आत्मा ज्ञेय से जानकर त्यागने योग्य का त्याग करेगा और ग्रहण करने योग्य का ग्रहण करेगा। विवेकपूण व्यवहार करने म घर,परिवार और समाज मे सर्वत्र शाति का प्रसार होगा। धन सपति एव सुख साधनो की प्राप्ति तो धमसाधना जन्य पुण्य से स्वत प्राप्त हो जाएगी। शास्त्र कहता है- (दशवैकालिक १/१) धर्म उत्कृष्ट मगल है। जिसका मन धम म लगा रहता है, देव भी उन्हे नमन करते हैं।

जीवन की विभिन्न समस्याओ का समाधान सामायिक जैसी क्रिया की सम्यक् साधना एव उसक अभ्यास स आत्मा मे समता गुण का विकास हाता है। समतागुण का विकास करके व्यक्ति अनुकूल प्रतिकूल सभी परिस्थितिया म सतुलित रहने मे समर्थ बनता है। वह सभी समस्याओ का धैर्यपूर्वक समाधान प्राप्त कर लेता है। इसके विपरीत

असतुलित बना व्यक्ति हिसा असत्य क्रोध, लोभ आदि का शिकार बनकर समस्याओ को अधिक जटिल बना डालता है।

वह समभाव रूप सामायिक की साधना म पूर्वकृत अशुभ कर्मो का क्षय करता है। फलस्वरूप शुभ कर्मो का उदय होता है और उसकी समस्याए स्वत ही हल हो जाती हैं। समभाव का साधक जीवन म क्रमश आगे बढ़ते हुए एक दिन समस्त कर्मों के बधन स छुटकारा पाकर मुक्ति का अधिकारी बन जाता है। वह शाश्वत सुखो को प्राप्त कर लेता है। धर्म साधना के इस मधुर परिणाम का हम प्रत्यक्ष देखते हैं, अनुभव करते हैं। अनेक साधको के जीवन इसके आदर्श उदाहरण हैं जिन्होंने ज्ञान, दर्शन चारित्र तप की साधना करके कर्मो का क्षय कर इसी इस लोक म अपने जीवन का परम लक्ष्य सिद्ध कर लिया।

स्वस्थ, सुरक्षित एव समृद्ध जीवन की प्राप्ति धर्म साधना पूरे जीवन व्यवहारो स जुड़ी हुई है। पाच समिति तीन गुप्ति म कैसे बोलना, कैसे चलना क्या कैसे खाना पीना किस प्रकार वस्तुओ को रखना उठाना और त्यागने योग्य पदार्थों का त्याग करना बताया गया है। तीन गुप्ति मे मन, वाणी और शरीर को वश मे रखने की बात है। पाच समिति मे चलने बोलने खाने-पीने आदि क्रियाओ मे विवेक रखकर जहा व्यक्ति अन्य प्राणियो के जीवन की सुरक्षा करता है, वहीं वह अपने जीवन को स्वस्थ सुरक्षित एव समृद्ध बनाता है। वाणी के लिए कहा गया-

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय,
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।

व्यक्ति समिति पूर्वक किए गए सद्व्यवहारो स अपने चारो ओर सुदृढ़ रक्षा कवच बना लेता है। इससे उस पर दुख जनक घातक प्रहारो का भी कोई असर नही होता। इस समिति गुप्ति की आराधना से व्यक्ति का नित्यप्रति का जीवन सुखपूर्ण होता है और समाज का भी। इस लोक म वह धर्म साधना के मीठे फलो का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है।

इन्द्रियो एव मन पर सयम रखकर तथा तप की आराधना करके स्वस्थ एव सुखमय जीवन जी सकता है। इस धर्म साधना का फल परलोक म तो मिलेगा ही परतु पहले इस लोक मे और इस जन्म मे मिलेगा। इसका अनुभव सयम और तप की साधना करते हम आज भी अनुभव करते हैं।

धर्म आत्मा का स्वभाव है। आत्मा जब भी और जहा भी अपने स्वभाव म रहेगी वहीं उस उसका प्रतिफल मिलेगा। इस लोक म एव परलोक म।

गुण स्थानों मे आरोहण एव आत्मिक विकास गुणस्थान मिथ्यात्वादि १४ हैं। जैसे जैसे क्रोध लोभादि मोहजन्य कषायो म कमी करता जाता है वैसे वैसे उसकी आत्मा शुद्ध होकर विकास करने लगती है पवित्र बनने लगती है। यहा तक कि एक दिन सद्गुणो की धर्म की साधना करते हुए आत्मा मोह, ममता या आसक्ति का पूर्ण क्षय करके पूर्णज्ञान केवल ज्ञान स जगमगा उठती है। वह सर्वज्ञ और सर्वदर्शी बन जाता है। इस जीवन म ही साधना करने का यह सुखद परिणाम है कि आत्मा मोहजन्य दोषो का क्षय करके अनत ज्ञान अनत बल को जागृत कर लेता है। १४वे गुणस्थान म पहुचकर आत्मा समस्त कर्मों का क्षय करके मुक्त दशा को प्राप्त कर लेता है जो हम सभी का अतिम लक्ष्य है।

धर्म-साधना स शाति और आनद की प्राप्ति के लिए हमे परलोक की प्रतीक्षा नही करनी पड़ती, वह तो साधना से इसी लोक मे भी प्राप्त हो सकती है।

विशिष्ट उपलब्धियो की प्राप्ति धर्म साधना का फल विशिष्ट उपलब्धियो के रूप मे आत्मा को इस लोक मे प्राप्त होता है। सम्यक् दर्शन का शुद्ध पालन करते हुए आत्मा कर्मों की स्थिति का क्षय करके क्रोधादि का पूर्ण क्षय करके क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त कर लेता है। इस पाने के बाद यदि पूर्व म दुर्गति का बधन न हुआ हो तो उसी भव म मोक्ष प्राप्त कर सकता है। शाश्वत सुखो को पालता है। सम्यक् दर्शन स आत्मा परित ससारी बनकर असीम जन्म मरण को सीमित कर लेती है। ज्ञानावरणीय

कम का क्षय करके आत्मा इसी लाक म परम ज्ञान केवल ज्ञान, केवल दर्शन को उपार्जित कर लती है। वह इस ज्ञान से, दर्शन स सब कुछ जानने और देखन की शक्ति प्राप्त करती है।

मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति भी साधक आत्मा यहीं प्राप्त कर लेती है। सपूर्ण कर्मों का क्षय ही मोक्ष है। (कृत्स्न कम क्षयो मोक्ष) अतिम गुणस्थान मे पहुचकर आत्मा समस्त कर्मों का क्षय करने से मुक्त बन जाता है और एक समय मे यहा से सिद्धालय म पहुच जाता है।

आवश्यकता है हम धर्म साधना क स्वरूप को भली भाति समझे और उसका सम्यक् आचरण करें। अनत सुख रूप मोक्ष प्राप्ति का कारण भी आत्म ज्ञानिय न यही बताया है कि हम सम्यक् ज्ञानादि रत्नत्रयी को समझकर सम्यक् आचरण करें।

आशा है पाठक लघु निबध मे अभिव्यक्त तथ्य पर विचार करेंगे कि धम साधना परलोक म ता साथ देती ही है परन्तु इस लाक म भी वह साथ देती है। धर्म साधना स हम इस लाक में भी सुखी शात सुरक्षित स्वस्थ एव निर्द्वन्द्व जीवन विताने म समर्थ हो सकते हैं।

-प्लाट ३५, अहिंसापुरी, फतहपुरा,
उदयपुर -३१३००१

शरीर और आत्मा

स्वामी रामतीर्थ जब अमेरिका गये थे तब वहां के लाग उनके जीवन का देखकर आश्चर्य करत थ। वे अपने लिए उत्तम पुरुष का प्रयाग नहीं करते थ। उनसे पूछा जाता कि आपको भूख लगी है ता उनका उत्तर होता राम को भूख लगी है। आपको भूख लगती है या नहीं? यह पूछे जाने पर वे कहते राम को भूख लगती है। लोग उनसे पूछते कि राम का तात्पर्य क्या है ? व कहते इस शरीर का नाम राम है। शरीर को भूख लगती है मेरी आत्मा को नहीं लगता। मैं अपने शरीर से पर हूं। शरीर का दृष्टा होकर इसकी देख रेख करता हूं। इस प्रकार स्वामी रामतीर्थ शरीर और आत्मा क भेद को व्यवहार में उतार कर बताते थे।

आचार्य गणेश

समता दर्शन और व्यवहार एक मूल्यांकन

जैन संत प्रवर आचार्य श्री नानालाल जी महाराज जो आचार्य नानेश के नाम से विख्यात है, ने अनेक बहुमूल्य ग्रंथो की रचना की है। समता दर्शन और व्यवहार' उनके द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। जीवन संघर्षों की अग्नि में तपकर कुन्दन बने आचार्य श्री नानेश जी की दीर्घ पदयात्राओ एव वास्तविक जीवन से झरे अनुभवो की पृष्ठभूमि पर आधारित होने के कारण उनकी यह कृति वर्तमान समाज के लिए एक दीप स्तम्भ है। आज जबकि पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में भारत का सामान्य से लेकर उच्च वर्ग तक का नागरिक भटका हुआ प्रतीत हो रहा है और जबकि वह आत्म केन्द्रित होकर समाज से कटता जा रहा है ऐसे समय मे नानेश जी की यह कृति प्रत्येक नागरिक के लिए दिशा-दर्शन है। मानव जीवन का जो दर्शन है जीवन के जो उच्च सिद्धात हैं उन सबकी एक मात्र कसौटी है मानव व्यवहार। यदि हमारे सामान्य जीवन म नही उतारे जा सके तो उन सिद्धातो की उपादेयता ही क्या? प्रस्तुत कृति की रचना करते समय लेखक इस तथ्य के प्रति निश्चित रूप से जागरुक प्रतीत होते हैं। आज का मानव जीवन सभी प्रकार की विषमताओ के दुष्चक्र मे फस गया है। लेखक ने इसके विशद विवेचन के साथ उन विषमताओ का समाधान भी खोजा है। समता के विचार को जीवन-व्यवहार मे लाकर उसे किस प्रकार जीवन आचार का अंग बनाया जाए यही लेखक की चिंतनधारा रही है।

वैसे इस तथ्य को जान लेना भी आवश्यक है कि आचार्य प्रवर नानेश द्वारा यह स्वत लिखित कृति नही है वरन् उनके प्रवचनों के आधार पर श्री शातिचद्र मेहता द्वारा सम्पादित कृति है। श्री मेहता जी की मान्यता है कि इस कृति मे आचार्य प्रवर की मूल भाषा एव भावो को यथासभव अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया गया है। इसी कारण कृति के मुखपृष्ठ पर लेखक के रूप म आचार्य श्री का ही नाम मुद्रित है।

समता भाव एक प्रकार से मानव मन का एक विकार ही है ठीक उसी प्रकार जिस तरह साहित्य के नौ रस मानव मन के स्थायी विकार हैं। इस समता मनोभाव के विभिन्न आयाम हैं इस कारण समता से संबधित संपूर्ण विचारो को कुल बारह शीर्षको के अन्तर्गत विभाजित किया गया है किंतु विचारो का अंतर संबध यथावत् है।

ऐसा सोचा गया कि इस मूल्यवान कृति का भाव एव भाषा की दृष्टि से सरलीकरण एव संक्षेपीकरण करते हुए इसकी सामान्य समीक्षा भी की जाए जिससे यह कृति सर्वसाधारण के लिए सुलभ ग्राह्य हो सके। इसे मै सुखद संयोग ही समझता हू, कि इस गुरुतर उत्तरदायित्व को वहन करने का अवसर संदीप जैन मित्र के द्वारा मुझे प्रदान किया गया। अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह म मैंने कृति के मूल भावो को यथावत् रखने की चेष्टा तो की है किंतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक निष्पक्ष एव वस्तुनिष्ठ प्रेक्षक होने का प्रयास भी किया है।

वर्तमान विषमता की विभीषिका

इसे ही इस कृति का प्रथम अध्याय माना जाए। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि सर्वत्र व्याप्त विषमता की चर्चा इस अध्याय म की गई है। यह बात ध्यान मे रखने योग्य है कि प्रस्तुत कृति प्रवचनो के आधार पर लिखी गई है। इस कारण प्रवचन एव पुस्तक लेखन की विभिन्नताओ का अंतर दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक है। इस अध्याय में जहा एक ओर समाज मे व्याप्त भिन्न भिन्न क्षेत्रो की विषमताओ की ओर संकेत किया गया है वहीं उनके कारण

एव निदान की चर्चा भी की गई है।

समाज म व्याप्त इस विपमता का फैलाव परिवार से लेकर समूच विश्व के अनेकानेक क्षेत्रा म है। समाज एव परिवार ही इसका शिकार है। परिवार समाज की महत्वपूण इकाई है, इसस सारा समाज विपमता का शिकार हो गया है। माना कि हमन वौद्धिक क्षेत्र मे बहुत विकास किया है किंतु हम अपने परिवार को समन्वय, स्नेह तथा सद्भाव की वाछित शिक्षा नहीं दे सके इसके लिए समाज, राष्ट्र एव समूचे विश्व म पक्षपात एव विपमता की दीवारे खड़ी हो गई है। कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नही है। सारा विश्व दो शक्ति गुटा मे विभाजित हा गया है। तीसरे गुट के नाम से तटस्थ राष्ट्रो का जो समूह है उसके सदस्य भी वास्तव मे प्रच्छन्न रूप स किसी न किसी गुट स सबद्ध हैं। इन शक्ति गुटा ने सहारक परमाणु क्षमता का विकास कर पशुता की शक्ति को बढावा दिया है। राजनीति के क्षेत्र मे मानव ने वड़ी समस्या के बाद लाकतत्र क रूप म समानता के कुछ सूत्र बटारे किंतु विपमता के पुजारियो ने मत सरीखे पवित्र अधिकार को भी व्यवसाय बनाकर कलुपित कर दिया। आज समाज मे आर्थिक विपमता का जा नगा नाच हो रहा है वह अवर्णनीय है।

आर्थिक क्षेत्रो की विपमता का तो कहना ही क्या है। सच पूछा तो इस देश म आर्थिक चितन हुआ ही नही है। इस स्थिति के कारण य दोना वग भागो म लिप्त हा रहे हैं। विपमता का हमला आध्यात्मिक क्षेत्र पर भी हुआ है। परिणाम यह हुआ है कि सपन वर्ग आत्म-विस्मृति के कारण तथा विपन वर्ग दमन एव शोपण क कारण जड़ हुआ जा रहा है। इस प्रकार स दोना वग धार्मिकता एव आध्यात्मिकता स दूर होकर रिश्वतखोरी कालाबाजारी एव अपराध म लिप्त हो रहे हैं। सपन लोगा का बढ़ता हुआ अथ अहकार समाज म और अधिक विपमता पैदा कर रहा है। यह अहकार छल को जन्म देता है। फिर जहा छल है वहा सत्य रह नही सकता। विज्ञान एव शक्ति स्रोतों पर चर्चा करत हुए आचार्यवर कहते है कि विज्ञान का उपयोग ता मानव विकास के लिए हाना चाहिए था किंतु दुख इस बात का है कि यह विनाश का साधन वन गया है। विज्ञान के ही कारण आज अधिक स अधिक शक्ति कम से कम हाथों मे एकत्र हा गई है। इससे समूचे विश्व का शक्ति सतुलन बिगड गया है। अतत इसी कारण विश्व स्तर पर विपमता निर्मित हा रही है। इस भागवाद के युग मे आदमी धन सत्ता और यश लिप्सा मे डूब गया है। वह तृष्णा के चक्कर म पड़ गया है। तृष्णा एक ऐसी चीज है जिसका अत कभी नही होता। इन सब बातो के कारण ही आज व्यक्ति अधिक आक्रामक होता जा रहा है।

आचार्य श्री केवल कोरे आदर्श एव कोरी कल्पना की बात नही करते। उनके समस्त विचार जीवन की वास्तविकता स जुड़े हैं। जब व परिग्रह और अपरिग्रह की वाते करते हैं तब वे कहत हैं इस तथ्य का स्वीकारना पड़ेगा कि धन का ससारी जीवन पर अमिट प्रभाव ही नही है बल्कि वह उसके लिए अनिवार्य है। किंतु उनका मानना है कि अधिक धन अनीति से ही अर्जित किया जा सकता है। तात्पर्य यह कि व्यक्ति का अत्यधिक धन कमाने की लालसा से बचना चाहिए।

आचार्य जी ने धन के सबध मे बड़ी विशद चर्चा की है। वे कहते हैं कि यदि साधु धन रख तो वह दो कौड़ी का है और यदि गृहस्थ के पास धन न हा ता गृहस्थ दो कौड़ी का है। यदि गृहस्थ के द्वारा धन का उपयाग निर्ममतापूवक किया जाता है ता वह विकारवर्धक बन जाता है। आचार्य श्री जी की आकाक्षा है कि धन नही वरन् गुण होना चाहिए। इस सबध म उनका अतिम कथन यह है कि द्रव्य परिग्रह क अर्जन की पद्धति का आत्म नियत्रित करना आवश्यक है। यदि एसा हा सका तो समता की सृष्टि हा सकती है।

जीवन की कसौटी और समता का मूल्याकन

यहा पर आचार्य श्री न अपन दार्शनिक विचारो को प्रस्तुत किया है। आत्मा चेतन है शरीर जड है। आवश्यकता इस बात की है कि जड़ क साथ रहत हुए भी चेतन अपन स्वामी स्वभाव का न भूल। इस चेतन एव जड़ का मिलन ही जीवन है। सार्थक जीवन वह है जो अपने विवक का उपयाग करत हुए स्वय चल और

समतापूर्ण जीवन के निर्माण मे अहिसा का बहुत महत्व है । सबको सुखपूर्वक जीने देने मे आखिर व्यक्ति को क्या कष्ट है । इस सबध मे यह बात ध्यान देने योग्य है कि वैर स वैर और हिंसा से हिसा कभी नही मिटती । इस कारण अहिंसा को मानव का परम धर्म कहा गया है । अहिंसा मे दया एव करुणा का स्थान सर्वोपरी है । इन दोनों का समावश होते ही व्यक्ति मे क्षमा और प्रेम का उदय अपने आप हो जाता है । अहिंसा की अराधना मे जो दृष्टि मिलती है वही समदृष्टि कहलाती है और उसमे शत्रु और मित्र का भाव तिरोहित हो जाता है । सीधी सी बात है कि यदि हम स्वय सुख चाहते हैं तो हमे सबको सुख देना चाहिए। अहिंसा मे ऐसी कोई बात नही है जिसे सामान्यजन अपने जीवन मे न उतार सके ।

सत्य

२ सत्य की सामान्य परिभाषा तो यह है कि जो इद्रियो के माध्यम से जाना जाय वह सत्य है । जो आखो से देखा जाता है, वह सत्य है । इसके अतिरिक्त महापुरुषो ने जा शोध किया है और जो शोध जन-कल्याण की भित्ति पर खड़ा है उसे भी हम सत्य की सज्ञा देते हैं । किंतु ऐसे सत्य को सदैव स्वय के अनुभव की कसौटी पर कसकर पहले आत्मसात् कर अपना बना लेना चाहिए फिर उस पर आचरण करना चाहिए । सारे सद्गुणो के साथ यह विडम्बना है कि यदि एक सद्गुण हमारे पास आता है तो दूसरा सदगुण हमसे दूर भागने लगता है । बहुधा सत्य बोलने वाला व्यक्ति कटु एव कडुवा हो जाता है किंतु यदि सर्तकता बरती जाए तो इससे बचा जा सकता है । इसलिए कहा गया है कि सत्यम ब्रूयात, प्रियम ब्रूयात, मा ब्रूयात सत्यम् अप्रियम् ।" सत्य भी इस ढग से बोला जाए कि वह प्रिय लगे और अप्रिय सत्य से बचा जाय । सत्य की साधना मनसा, वाचा, कर्मणा से करने से कठिनाइया दूर हो जाती हैं । झूठ को पास न आने देना ही उत्तम है । झूठ बोलते बोलते ऐसी धृष्टता पैदा हो जाती है कि फिर झूठ बोलना अखरता नही है । वैचारिक दृष्टि से यही मिथ्यावाद है और इससे व्यक्ति मे समदृष्टि का आविर्भाव नही होता । ध्यान रहे कि एक बार सत्य के प्रति निष्ठा जागने के बाद उसके पूर्णरूप को पाना कठिन नही है ।

अस्तेय

३ अस्तेय का अर्थ है चोरी के स्थूल या सूक्ष्म सभी रूपो को निरतर छोड़ते जाना तथा अचौर्य वृत्त को सुदृढ बनाते जाना । आचार्य श्री के चिन्तन का पैनापन हमे अनेक स्थानो पर देखने को मिलता है । मानव जीवन पर अर्थ के असर पड़ने का उनका सोच कितना सटीक है । उनका कहना है कि जब व्यक्ति का प्रकृति आधारित जीवनयापन छूट गया और वह स्वय अर्जन करने लगा तभी से अर्थ का असर भी प्रारभ हुआ । चोरी का अध्याय भी वही से शुरू होता है जबसे समर्थ, कमजोर की सपत्ति हरने लगा । आचार्य जी ने एकदम तथ्यात्मक बात कही है कि परिश्रम और नैतिकता के द्वारा उपार्जन करने पर अर्थ का सचय सभव नही है । इच्छाए आकाश के समान अनत होती है । और तृष्णा का रूप वैतरणी नदी के समान होता है । अर्थात् इच्छाओ की पूर्ति और तृष्णा का अत सभव ही नही है । तृष्णा मे यह उक्ति बिल्कुल सही है कि-

एक हुआ तो दस होवे, दस होने पर सौ की इच्छा,
सौ होने पर सोच हुआ कि अब सहस्र हो तो अच्छा ।
इसी तरह बढ़ते-बढ़ते राजा का पद भी पा जाता,
फिर भी सतोष नही होता, यह ऐसी डायन तृष्णा है ॥

आज आर्थिक क्षेत्र मे चोरी के रास्ते अधिक टेढ़े-मेढ़े किंतु इतने व्यापक हो गए है कि नम्बर दो की रकम का अर्थ हर व्यक्ति समझता है । आज हर व्यक्ति काले धधे के द्वारा रातो-रात धनी हो जाना चाहता है । आज राजनीति का मेरूदड धन हो गया है, इस कारण राजनीति भ्रष्ट हो गई है । राजनीतिज्ञ और व्यापारी मौसेरे भाई हो गए है । इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि सपूर्ण जनतत्र ही भ्रष्ट हो गया । विडम्बना यह है कि धनी के घर से गरीब के द्वारा धन ले जाना चोरी है किंतु धनी के द्वारा गरीब का शोषण चोरी नही माना जाता । नानेश जी का दृढ मत

है कि इस अर्थ प्रधान युग मे अस्तेय याने चोरी न करने का व्रत अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है ।

ब्रह्मचर्य

४ ब्रह्मचर्य का अर्थ समझते सब है किंतु आचार्य श्री न जीवन की वास्तविक भूमि पर उतरकर ब्रम्हचर्य की बात की है । वे यह ता मानते हैं कि एक साधु एव तपस्वी के लिए सपूर्ण ब्रम्हचर्य का पालन अनिवार्य है । इसका यह मतलब बिल्कुल नही है कि गृहस्थ जो चाहे सो करे । उनका कहना है कि इसका पालन एक सीमा म गृहस्थ के लिए भी जरूरी है इस रूप मे कि उसे एक तो स्वपत्नी सतोष की मर्यादा का पालन करना चाहिए और दूसरे यह कि उसे यह याद रखना चाहिए कि कामवासना का अर्थ सतान उत्पत्ति तक ही सीमित है । जब आचार्य जी यह कहते हैं कि रोटी और सेक्स मानव जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताए है तब वे दार्शनिक एव चितक सिगमण्ड फ्रायड के निकट होत है । वे यह मानते है कि सेक्स क नद का वेग इतना प्रबल होता है कि उनके किनारे स्थित विश्वामित्र मुनि सरीखे विशाल बरगद दह जाते हैं । एक सासारिक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि इसी उद्दाम कामवासना को नियमित करने के लिए ही विवाह तथा परिवार सस्था का निर्माण किया गया है । प्रत्येक व्यक्ति को इस सस्था का सम्मान करना चाहिए । आचार्य जी का मानना है कि शासन द्वारा जनसख्या निरोध के अप्राकृतिक उपाय प्रचारित किए जा रहे है, उनसे सयम एव ब्रह्मचर्य व्रत की अपार हानि हो रही है । शासन को समझना चाहिए कि सयम का प्रचार उसकी योजनाओ को सफलता दिलायेगा और व्यक्ति का भी कल्याण करेगा । इस प्रकार नानेश जी महात्मा गाधी के निकट आते प्रतीत होते हैं ।

अपरिग्रह

५ अपरिग्रह का सीधा-साधा अर्थ है त्याग । किंतु मात्र धन एव वस्तुओ के त्याग से काम नहीं चलेगा साथ मे तृष्णा का त्याग भी जरूरी है । परिग्रह याने सग्रह केवल भौतिक साधनो का नही हाता वरन् ममत्व भाव भी परिग्रह का प्रच्छन्न रूप है । यदि हमारा जीवन सादा रहगा तो तृष्णा का दौर तीव्र नही होगा । तब एक ओर तो व्यक्ति परिग्रह मूर्छा के दुष्परिणाम से बच जाएगा और दूसरी ओर उसके मन म उच्च विचारो का उदय भी होगा । परिग्रहवाद का ही दूसरा नाम पूजीवाद है । यह पूजीवाद समाज मे अपने पैर पसार रहा है । इससे आर्थिक विषमता फैल रही है । जो सामाजिक विषमता की खाई को चौड़ा कर रही है । सपन्न वर्ग समाज मे अन्याय व अत्याचार पर उतर रहा है । इन सबसे बचने के लिए अपरिग्रह व्रत का पालन करना आवश्यक है ।

(३) क्षेत्र गरिमा एव पद मर्यादा का ज्ञान

इस प्रकरण को पढ़ने स यह बात स्पष्ट होती है कि आचार्य जी ने राष्ट्र एव समाज को बड़ी गहराई के साथ देखा है । आज के अर्थ प्रधान युग का दुष्परिणाम यह हुआ कि मानव अधिक दम्भी एव पाखडी हो गया है । पाखडी व्यक्ति समाज मे सफलता के शिखर पर चढ़ रहा है और मजा यह है कि व्यक्ति के पाखड का जानते हुए भी उसे आदर इसलिए दिया जाता है कि वह व्यक्ति सफल होता जा रहा है । प्रकारान्तर से इसका परिणाम यह हो रहा है कि दभ छल कपट और पाखड आज की व्यावहारिकता के सूत्र बनते जा रहे हैं । तभी तो भ्रष्टाचारी खुलेआम भ्रष्टाचार को शिष्टाचार की सज्ञा दे रहे है । लोग यह कहते हैं कि घूस लेना पाप नहीं है किंतु घूस लेकर पकड़ा जाना पाप है । आज साप मरे न लाठी टूटे की कहावत चरितार्थ हो रही है । जहा पाखड हा वहा मन वाणी और कर्म की एकरूपता का प्रश्न ही नहीं है । इसलिए आचरण मे विषमता का आगमन अनिवार्य है । धर्म और सम्प्रदायो के नाम पर चलने वाले पाखड ने समाज को अधिक हानि पहुचाई है । नानेशजी का मत है कि जो अपन जीवन क्षेत्र एव पद की मर्यादा के अनुकूल काम कर उसे ही सम्मान दिया जाना चाहिए ।

(४) नियम एव सयम का पालन

आचार्यवर का मानना है कि ये मर्यादाए जो समाज एव व्यक्ति क पारस्परिक सबधो क सुचारु रूप स निर्वहन क लिए परपराओ क रूप मे ढल गई हैं । उनक

निर्वाह मे भी अधानुकरण नहीं होना चाहिए। उनके पालन क लिए भी परख बुद्धि की आवश्यकता है। जो भी सामाजिक नियम बनाय जात हैं, उनमे आम स्वीकृति रहती है इसलिए विकास क दृष्टिकोण से इनमे सवर्धन एव परिवर्तन होते रहत हैं। पर नियमा के सबध मे सम दृष्टि आवश्यक है। आज विधि क्षेत्र मे यह बात बड़े गौरव से कही जाती है कि व्यक्ति का नहीं वरन् समाज मे कानून का राज हाता है। पर आवश्यक यह है कि नियम के पालन का आधार समानता हो। पर एक आध्यात्मिक चिन्तन यह है कि नियम भग करन वाले के सामने कोई अपना प्राप्य छोड़ दे और सयम से काम ले तो दोषी व्यक्ति का दिल भी पलट सकता है। मर्यादा, नियम एव सयम के अनुपालन म निष्कपट भाव अनिवार्य है। यह भाव ही व्यक्ति को समता साधना का मार्ग दिखाता है।

(५) दायित्वो का निर्वहन

परिवार से लेकर समाज और राष्ट्र तक प्रत्येक व्यक्ति को अपने दायित्वो का यथास्थान, यथा अवसर, यथाशक्ति और यथायोग्य रीति से निर्वाह करना पड़ता है। कहीं भी अपने कर्त्तव्य से च्युत होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसलिए प्रत्यक समय जागरूक एव सतर्क रहने की आवश्यकता है। जब हम समता स्थापित करने निकले ही हैं तो हम प्रत्येक अवसर का लाभ उठाने के साथ कर्त्तव्यहीनता से भी बचना होगा। ईमानदारी से किये गए कर्त्तव्य ही समता व्यवहार की समरस धारा बहा सकते हैं।

(६) सबके लिए एक और एक के लिए सब :

सबके लिए एक और एक क लिए सब की बात कर आचार्य श्री 'जीओ और जीने दो' के स्वर्ण सिद्धात का ही अनुमोदन करते हैं। अपने इस विचार के साथ वे आचार्य विनोबा भावे के विचारो के साथ भी एकाकार होते हैं। यदि उपरोक्त सिद्धात का पालन समाज मे होने लगे तो विषमता के विष की अतिम बूद भी सूख सकती है। इसी भावना से सहयोग, सहकार और सगठन का वह भाव जागृत होता है जिससे व्यक्ति समाज म समाहित हो जाता है।

(७) सारा विश्व एक कुटुम्ब

यही समता दर्शन का चरम बिंदु है। यद्यपि कुटुम्ब शब्द का सबध परिवार का रक्त सबध है किंतु यदि इसका विस्तार समूचे विश्व एव प्राणी समाज तक कर दिया जाए तो सारा विश्व ही एक परिवार हो जाएगा और भारतीय सस्कृति की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कल्पना, साकार हो जाएगी। इस कल्पना के साथ आवश्यकता इस बात की है कि सपूर्ण आस्था के साथ इसे आचरण मे उतारा जाए।

आत्म-दर्शन के आनद पथ पर

अनेकानेक अन्य चिंतको की तरह आचार्य नानेश जी का भी यही मत है कि जीवन का उद्देश्य शाश्वत आनद की प्राप्ति है। वे ज्ञान, दर्शन एव चारित्र की त्रिधारा को ही आत्म-दर्शन की सज्ञा देते हैं। यह आत्म दर्शन ही आनद पूर्ण जीवन का पथ है।

सामान्यत अनेक दर्शनो मे मै को अह का ही पर्याय माना गया है। किंतु नानेश जी इस चिंतन स बिल्कुल अलग हैं। उनके अनुसार मै ही ईश्वर हू मे अभिमान का स्वर नहीं वरन् यह तो गहन अनुभूति का वह क्षण है जब व्यक्ति का मै विगलित होकर सब मे घुलमिल जाता है। वैसे आचार्य जी की यह धारणा गलत नहीं है। यह तो सबके लिए स्वय को विगलित करने की क्रिया ही है। नानेश जी के अनुसार चेतना ही आत्मा का दूसरा नाम है। वास्तव मे इस प्रकार के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है क्योंकि अनेक के समक्ष यह प्रश्न खड़ा है कि आखिर आत्मा है क्या ? क्या वह हृदय के समान शरीर का कोई अग है ? नानेशजी के अनुसार भूत के विपरीत जीव या किसी अन्य पर्यायवाची शब्द चैतन्य ही आत्मा है। यह चेतना ही किसी अन्य शरीर मे समाती है और सक्रिय हाती है। यदि ऐसा न हो तो मानव विकास के सारे द्वार बद हो जाएगे। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि अपने शुभ कर्मों के द्वारा इस चेतना को सदा पैनापन देते रहना चाहिए इसलिए अपने मै को परिष्कृत करते रहना चाहिए। क्योंकि यह मै ही तो

क्रियमाण होता है और इस शरीर को चलाता है। यह मै ही आत्मा है जो एजिन का रूप धारण कर शरीर को चलाता है। इस मै का मूल तत्व तो ज्ञानमय है किन्तु जब इस पर दुष्कर्मो का मैल चढ़ जाता है तब चेतना शक्ति दब जाती है याने मै की वास्तविकता विस्मृत हो जाती है। परन्तु अपने मूल स्वभाव के अनुसार यह मै हमेशा बुराई के विरूद्ध चेतावनी देत रहता है। बुराई का अपनाने से जो बिगड़ता है वह आचरण है, मैं या आत्मा तो तब भी शुद्ध बना रहता है। निश्चित रूप से चितन का यह दृष्टिकोण स्वागतेय है। आचार्य जी का मत है कि अपने इस मैं का विस्तार करना हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए और जब हम आत्मवत् सर्व भूतेपु की स्थिति मे पहुचते हैं तब हम जीवन के शिखर पर पहुच जाते हैं। तब समस्त जीवधारी हमे अपने ही मे या अपनी ही आत्मा के तुल्य प्रतीत होने लगते हैं, यही समता की सर्वोच्च स्थिति है। आचार्य जी का मानना है कि समता के साधक को इस स्थिति मे पहुचने के लिए पाच भावात्मक अभ्यास करना चाहिए। ये भावात्मक अभ्यास निम्नानुसार हैं-

(१) सूर्योदय के पूर्व आत्म-चिन्तन एव साय आत्मालोचन

इसका मतलब केवल यही है कि प्रत्येक सुबह हम क्षणभर के लिए यह विचार करे कि आज हमारी दिनचर्या कैसी होगी ? महावीर स्वामी के अनुसार हमारे चिन्तन का बिंदु यह हा कि एक क्षण के लिए भी हम प्रमाद के शिकार न हों। उन्होने अपने पट्ट शिष्य गौतम गणधर को यही उपदेश दिया कि आलस्य ही हमारे शरीर मे घुसा है। यही हमारा दुश्मन है। नीति शास्त्र मे कहा गया है कि- आलस्यो ही मनुष्याणा शरीरस्या महारिपु'। आचार्य जी का मत है कि प्रति सध्या हमे अपना आत्म-आलोचन करके यह विचार करना चाहिए कि दिनभर हमने कौन कौन से गलत कार्य किए है।

(२) सत्साधना का नियमित समय

वैस ता समता साधना क यात्री के मन मे यह धारा निरतर बहते रहती है किंतु हमे इसका नियमित एव निश्चित समय पर विचार करना चाहिए। इससे हम पाप प्रवृत्तियो के निरोध एव समता प्रवृत्तियो के आचरण की ओर अग्रसर होंगे।

(३) सत्साहित्य का अध्ययन

स्व अध्ययन सदा श्रेष्ठ माना गया है। जरूरत इस बात की है कि हम श्रेष्ठ ग्रथो का अध्ययन कर मनन एव चिन्तन करे। यह नियमित रूप से होगा तो हमारी स्वानुभूति परिष्कृत होगी और हमारे खुद के भीतर उत्तम एव मौलिक विचार पैदा होंगे। अच्छा लेखक बनना अच्छा पाठक और अच्छा वक्ता बनना, अच्छा श्रोता बनना आवश्यक है।

(४) मै किसी को दुख न दू - मै सबको सुख दू

यही आत्म-दर्शन का सार है। किसी भी अन्य प्राणी को दुख देना या उसकी हत्या करना वस्तुत अपने को दुख देना और अपनी ही हत्या करना है। हमारे भीतर यह भाव जागना चाहिए कि मुझे दुख प्रिय नही है अर्थात् किसी भी जीव को दुख प्रिय नहीं है। तुलसीदास जी के शब्दो मे इसे इस रूप मे व्यक्त किया जा सकता है

परहित सरिस धरम नही भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥

(५) आत्म-विसर्जन की अतिम स्थिति तक

यह एक मान्य तथ्य है कि जैन धर्म ईश्वर कही जान वाली किसी अन्य सत्ता म विश्वास नही करता पर आचार्य नानेश जी इस सबध म एक नया दर्शन प्रस्तुत करते हैं। वे कहत हैं कि कोई आत्मा किसी दूसरे क सहारे विशिष्टता प्राप्त नही कर सकती। इसका अर्थ यह हुआ कि आत्मा ही परमात्मा बनगी और नर ही नारायण बनेगा किंतु यह तभी सभव है जब व्यक्ति त्याग एव सेवा से अपने आपको भूला द एव समता क निमाण हेतु खुद का उस लक्ष्य म विलीन कर द। यही सच्ची तपस्या है। यही आत्म दशन स परमात्म दर्शन तक की यात्रा की पूर्णाहुति है।

अन्त मे आचाय श्री सच्च आनद को परिभाषित

करते हैं। वे कहते हैं कि खाने पीने, अच्छा रहने या अन्य भौतिक वस्तुओं के उपभोग से जो सुख मिलता है उसे भी आनद कहा जाता है। किंतु वह वास्तविक आनद नहीं है। आनद एक दूसरी धारा है जिसका उद्गम किसी की पीड़ा के हरण में मिलता है। यहीं आनद स्थायी होता है।

परमात्म-दर्शन के समतापूर्ण लक्ष्य तक

आचार्य नानेश जी के अतर का विश्वास बड़ा सबल है। इसी से वे कहते हैं कि विकास का कोई भी चरम बिंदु साहसी व्यक्ति के लिए असभव नही है किन्तु वही विकास एक कायर के लिए अवश्य असभव है। अत किसी भी शुभ लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मनुष्य की कायरता का लोप आवश्यक है। आचार्य जी का कथन है कि चौर्यवृत्ति से कायरता का जन्म होता है। इस प्रवृत्ति को उन्होंने बिल्कुल सरल ढग से समझाते हुए कहा है कि- 'जिसको जो प्राप्य नही है उसे जब यह चुपके से लेना चाहता है तब उसे चोरी करना कहते हैं। जिसमे यह वृत्ति होगी वह कायर होगा ही। इसके विपरीत मजबूत व्यक्ति वह होगा जो साहसी होगा। विषमता पर प्रहार करने के लिए इसी साहस की जरूरत है।' आचार्य ने कहा है कि कर्मण्यता के कठोर मार्ग पर चलकर ही समता प्राप्त की जा सकती है। जब विचारो, वाणी और आचरण तीनो एक साथ क्रियाशील रहेंगे तभी कर्मण्यता का सही मार्ग प्रशस्त होगा। इस अध्याय मे दर्शन की जिन ऊचाइयों को छुआ गया है वह सब समाज के सामान्य जन के योग्य नहीं है। अत सामान्य जन के लिए उनके इस तथ्य को सही ढग से प्रस्तुत किया जाता है कि निम्न नौ प्रकार से पुण्य अर्जित होता है यथा-

(१) अन्न	(२) पान	(३) स्थान
(४) शयन	(५) वस्त्र	(६) मन
(७) वचन	(८) काया	(९) नमस्कार।

एव निम्न अठारह प्रकार से मनुष्य पापो मे लिप्त होते जाता है यथा

(१) हिंसा	(२) झूठ	(३) मैथुन
(४) परिग्रह	(५) क्रोध	(६) मान
(७) माया	(८) लोभ	(९) राग
(१०) द्वेष	(११) कलह	(१२) मिथ्यारोप
(१३) पैशुन्य (चुगली)		(१४) परनिंदा
(१५) पाप मे रुचि		(१६) धर्म मे अरुचि
(१७) माया मृषावाद (झूठ-कपट)		
(१८) मिथ्या दर्शन।		

उपरोक्त म से प्रत्येक की विशद व्याख्या तो नही की गई है किंतु अधिकाश बातो पर किसी न किसी रूप मे चर्चा हो चुकी है।

जैसा कि पूर्व मे ही निवेदन किया जा चुका है कि प्रस्तुत पुस्तक म आचार्य वर नानेश जी के प्रवचनो का सग्रह है इस कारण अनेक तथ्यो की पुनरावृत्ति भी हुई है और प्रवचनो मे यह सहज सभव है। जब विधिवत् लेखन के रूप मे तथ्यो को प्रस्तुत किया जाता है तब ये सभावनाए क्षीण हो जाती हैं।

समता के सिद्धात को जीवन में उतारते समय अनेक बाधाये आती हैं इन बाधाओं का उल्लेख एक अलग अध्याय म किया गया है किंतु अध्ययन के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि ये सारी बाते पूर्ववर्ती अध्यायो म आ चुकी हैं। अत पुनरावृत्ति से बचने के लिए उन पर समीक्षा प्रस्तुत करने का औचित्य प्रतीत नही होता।

आचार्यवर के हिमालयीन व्यक्तित्व, गहन अध्ययन एव विस्तृत अनुभव की भावभूमि से निःसृत हुए उनके विचार कहीं कहीं तो इतने गूढ़ हो गए हैं कि सामान्य पाठक की पकड़ के परे हैं किन्तु सतोष इस बात से होता है कि सामान्य रुचि सपन्न पाठक से लेकर दिग्गज विद्वानो तक के लिए इसमे अमूल्य तथ्य भरे पड़े हैं। व्यक्ति अपनी रुचि एव योग्यतानुसार चुनाव करके दिशा निर्देश प्राप्त कर सकता है।

ॐ

आचार्य नानेश की साहित्य साधना

जब हम आचार्य श्री नानेश के साहित्य की बात करते हैं तब हमारा ध्यान तुरत साहित्य शब्द के उस अर्थ की ओर चला जाता है जो साहित्य का इष्ट हाता है। क्योंकि यह इष्ट ही वह कसौटी होता है जिस पर किसी भी साहित्य की सार्थकता की परख की जाती है। इस सबध मे यह भी समझ लेना आवश्यक है कि प्राचीन काल म साहित्य को शास्त्र माना जाता था और इसी अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग होता था। ७वीं शताब्दी के लगभग इसका प्रयोग काव्य के अर्थ म होने लगा। आधुनिक युग म साहित्य शब्द का प्रयोग लिटरेचर शब्द की भाति समस्त लिखित एव मौखिक रचनाओ के अर्थ मे हाता है। साहित्य के इन परिवर्तित होते अर्थो क सदर्भ मे यदि हम आचार्य श्री नानेश के साहित्य पर दृष्टिपात करे तो वह इन सभी परिवर्तित रूपो का प्रतिनिधित्व करता दिखाई देता है। वह शास्त्र तो इस अर्थ मे है ही कि वह शास्त्रो के समान ही समाज के लिए परम हितकारी है। यदि काव्य के अर्थ में दखे तो वह काव्य इष्ट सत्य, शिव और सुदर का समन्वय अपने म प्रस्तुत करे जो क्षण भर नही सर्वकाल का और इस कारण शाश्वत होता है। शिव सब कल्याणकारी है, और सुदर इसलिए कि जो सत्य और शिव होता है वह स्वत ही सुदर होता है। लिटरेचर के अर्थ मे ले तो वह जितना लिखित (पुस्तकाकार प्रकाशित) है उतना ही मौखिक भी है, प्रवचनो के रूप म।

रूप के बाद जब हम साहित्य के इष्ट की बात करते है तब आचार्य नानेश का साहित्य उसके निर्देशित लक्ष्य की पूर्ति करता दिखाई देता है। इस इष्ट अथवा निर्देशित लक्ष्य के सबध मे कहा गया है कि हित सन्निहित तत् साहित्यम्, अर्थात् जो हित-साधन करे, वह साहित्य है। इस हित की बात को यो परिभाषित किया गया है- अवहित मनसा महर्षिभ तत् साहित्यम्, अर्थात् यह हित मानव मनोवृत्तियो को उन्नत करता है इस सबध मे गोस्वामी तुलसीदास जी न स्पष्ट कहा है- कीरति भनिति भूति भल सोई, सुरसरि सम सब कह हित होई, इस प्रकार भनिति अर्थात् साहित्य सुरसरि गगा के समान सबका हित करने वाला हाता है। आचार्य नानेश का साहित्य ता शाब्दिक अर्थ मे भी हितकर है। यह उनके साहित्य की ऐसी विशेषता है जा उसे साहित्य के रूप मे विशिष्ट बना देती है और इस रूप मे उसके विशष विवेचन की अपेक्षा रखती है।

आचार्य नानेश साहित्यकार होने से पहल एक सत है- सिद्ध सत। वे एक विशेष सम्प्रदाय मे दीक्षित अवश्य हुए थे परतु उसकी सीमाओ मे बधकर नहीं रहे। आचार्य पद पर अधीकृत होन के बाद तो वे पूर्णत सम्प्रदायातीत हो गए। एक सप्रदाय विशष के पट्टधर आचार्य हात हुए भी उन्हाने अपनी वाणी से मानव मात्र का किस प्रकार हित साधन किया, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका साहित्य है।

आचार्य नानेश की सभी कृतियो की गणना करा पाना कठिन है क्योंकि गणना तो केवल उतनी कृतिया की ही कराई जा सकती है जो किसी रूप मे प्रकाशित हा गइ है उपलब्ध है और इस प्रकार समाज क सम्मुख आ गइ है। यद्यपि यह साहित्य भी विपुल है तथापि इससे भी अधिक साहित्य ऐसा भी है जो पाडुलिपिया म पुटकर लेखा म और भक्तजना द्वारा सग्रहित प्रवचन के रूप म विद्यमान है। इसम स कितना समाज के सम्मुख आ पायगा यह कहना कठिन है। कहते हैं भक्त सूरदास न सवा लाख पद लिख थ परतु मिलत तो बहुत कम हैं। साहित्यकारा क

अवसान के बाद उनका कितना साहित्य उपलब्ध रहता है और कितना नष्ट हो जाता है, यह साहित्य के सभी विद्वान जानते हैं। फिर भी एक बात सत्य है- बटलोई म से चावल का एक दाना देखा जाता है और ढेर मे से केवल मुट्ठी भर अन्न के नमूने ही सपूर्ण भडार की प्रकृति का परिचय करा देते है। आचार्य नानेश के साहित्य का भी इसी आधार पर एक महत्वाकन किया जा सकता है और यही उस समझने का एक मात्र आधार भी है।

आचार्य नानश क साहित्य को निश्चित वर्गों म बाट पाना सभव नही है। क्योंकि उनक भक्तो न अपनी रुचि अवसर अथवा आवश्यकता के अनुसार उसक एक निश्चित भाग का सम्पादन कर उसे प्रकाशित कर दिया है। उपयोग का ध्यान मे रखकर कई बार उसके रूप का बदला भी गया है। उदाहरण के तौर पर उनके प्रवचनो क बीच मे आए हुए ज्ञान सूत्रो अथवा दृष्टात के रूप मे लाई गई कथाओ को उनके सुभाषिता सूक्तिया, नीति कथाओ अथवा शिक्षाप्रद कथाओ के रूप मे सकलित कर प्रकाशित किया गया है। ऐसे दो सकलन मुनि ज्ञान द्वारा सकलित एव सपादित अतर के प्रतिबध एव श्री विजय मुनि द्वारा सकलित एव सपादित जलते जाय जीवन दीप है।' दोनो ही पुस्तको की भूमिकाओ मे मुनि ज्ञान ने ठीक ही कहा है कि आचार्य प्रवर की प्रस्तुत अभिव्यक्ति वस्तुत. ज्योतिरहित दीपको को प्रज्वलित करने वाली है तथा सक्षिप्तिकरण के युग मे ये बिदु म सिधु के प्रतीक है।"

सत ज्ञानी अथवा दार्शनिक की वाणी का महत्व उसकी शैली म न होकर उसमे निहित वस्तु तत्त्व में विशेष रूप से होता है। यह वस्तु तो वह सोना होती है जिसका मूल्य आकार के अनुपात म नही उसमे निहित उसके अशो के अनुपात मे होता है। इसलिए सामग्री चाहे प्रवचन सकलन हो, चाहे सपादित धर्म ग्रन्थ चाहे काव्य प्रस्तुतिया हो चाहे कथा प्रस्तुतिया सबकी सामग्री उसी बहुमूल्य वस्तु से पूरित है जो अपनी गहन आध्यात्मिक साधना के दौरान आचार्य श्री ने अजित की थी। एक युग प्रवर्तक सत धर्माचार्य, अनुपम ज्ञानयोगी, पट्टधर आचार्य के साहित्य की महिमा उसी कारण है और यही वह कारण भी है जा साहित्य बनाता है।

विषया तथा उनके माध्यम से प्रस्तुत सामग्री की प्रकृति के आधार पर यदि आचाय नानेश के समग्र साहित्य का मूल्याकन किया जाये ता निश्चित रूप से वह न केवल उस सचित ज्ञानराशि का परिचय करा पायगा वरन् उसकी उपादेयता को रेखाकित भी कर सकेगा। समाज की दृष्टि से यह उपादेयता ही इस सपूर्ण साहित्य की प्रमुख वृत्ति है। इसलिए वह चाहे प्रवचन साहित्य हा चाहे कथा साहित्य चाहे धर्म शास्त्रीय समीक्षण सभी म सामग्री की इस प्रकृति पर दृष्टिपात करना उचित होगा।

सबसे पहले बात करते हैं उन प्रवचनो की जो नियमात्मक रूप मे दो दर्जन से भी अधिक सकलनो म प्रकाशित हुए हैं। इन सकलनो के शीर्षक उनमे सकलित सामग्री की प्रकृति का किसी रूप मे परिचय भी करा देत हैं। जिस प्रकार 'अपने को समझें । भाग १ २ और ३ मे मनुष्य स्वय को अपन का समझने की कोशिश मे प्रेरित करने का लक्ष्य रखती है। इनमे सकलित प्रवचनो क विषय इस प्रकार के हैं- अन्तर्चक्षुओं का आपरशन, क्या पानी को मथ कर मक्खन निकाल सकेंगे, सीमित घेरा म विराट की ओर दिल और दिमाग से दुर्गंध निकालें, देख कि क्या कर रहे हैं, क्या करना चाहिए, वर्तमान की सुरक्षा पहले कीजिए, आदि।

एकै साधे सब सधे सब साधे सब जाय' सुसस्कारो के निर्माण का पथ, समता निर्झर क प्रवचन प्रमुख रूप से सामायिक साधना से सबधित हैं। हम ज्ञात है कि सामायिक जैन साधना पद्धति की आधार शिला है। अधिकाश श्रावक सामायिक साधना करत अवश्य हैं किन्तु उसकी सम्यक विधि क ज्ञान क अभाव मे पूर्ण लाभ से वचित रह जात हैं। सामायिक साधना परिपूर्ण समता साधना का प्रवेश द्वार भी है। इसलिए आचार्य प्रवर ने इस विषय को चुनकर तरह प्रवचनो मे इसकी गहन मीमासा की है। आचार्य नानश समाज की समस्त समस्याओ का कारण विषमता को मानते थे इसलिए

प्राय प्रत्येक प्रवचन म निष्कर्ष के रूप मे समता को प्रस्तुत किया गया है । समता दर्शन आचार्य श्री नानेश की भारतीय चिन्तन परपरा को एक प्रमुख देन है इस दृष्टि से इस सकलन की विशेष सार्थकता है ।

चातुर्मासो के दौरान दिये गय प्रवचनो के एमे सकलन श्रावकों को उद्बोधन देने की दृष्टि से विशिष्ट हैं । ऐसे कतिपय अन्य सकलन है- प्रवचन पीयूष, सर्व मगल सर्वदा, एसे जीये, परद के पीछे, समीक्षण धारा पावस प्रवचन, ताप और तप, सुख और दु ख, सस्कार क्राति आदि ।

इन सकलनो मे सकलित प्रवचना के विषय विविध हैं और जीवन के प्रमुख पक्षो से सबधित हैं । प्रेरणा, ज्ञान शिक्षा धर्माचरण आदि की दृष्टि से इनका अपना महत्व है । इनके विषय कर्मों के बध, उदय और क्षमोपशम अहिसा की सूक्ष्म मर्यादाए धर्म और विज्ञान का समन्वय, अपरिग्रह का चारित्रिक महत्त्व दु ख का हेतु अपने भीतर, पडित कौन, समता और समीक्षण, शक्ति की पहचान तर्क, श्रद्धा और विश्वास का सकट, स्वकीय शक्ति की पहचान, राष्ट्र धर्म की महत्ता, आत्म चिकित्सा पर्यावरण सुरक्षा, प्रदूषण मुक्ति आदि ।

ये और एसे विषय मनुष्य की चेतना शक्ति को जाग्रत ही नही करते वरन् उसके ज्ञान मे अभिवृद्धि भी करते हैं तथा उसे जिज्ञासु भी बनाते हैं । इस प्रकार चरित्र वृत्ति और व्यवहार के परिष्कार का कार्य ये प्रवचन सहजता से कर लेते हैं और चूकि आचार्य श्री अपन प्रवचन मानवता समाज, सस्कृति राजनीति, राष्ट्र आदि से सबधित समस्याओ क सदर्भ मे देते थे इसलिए य श्रावका को समसामयिक जीवन के प्रसगा क परिप्रेक्ष्य म अपनी चिन्तन शैली एव व्यवहार का सयोजित करने का रास्ता भी दिखात हैं । शैली की सरलता इनकी एक एसी प्रमुख विशेषता है जो इन्हे सुग्राह्य बना देती है ।

आचार्य श्री के श्रावको के आयु ज्ञान चतना अनुभव आदि की दृष्टि से अलग अलग वर्ग एव स्तर बनते है इसलिए अपन प्रवचनो को वे उदाहरणो उद्धरणो, कथाओ, सवादा व्यग्य विनादपूर्ण टिप्पणियो आदि से जीवन्त रखत थे । उनक कथनो मे ऐसी सहजता होती थी कि जो किसी के भी दिल मे सरलता से उतर सकती थी । कहत हैं सूत्रात्मकता ज्ञान की आत्मा होती है । ऐसे सूत्रात्मक कथना से उनके प्रवचन परिपूर्ण होते थे । एक दो उदाहरण ही पर्याप्त हागे-

अविश्वास और चचलता ये दोनो सगी-साथी हैं ।

(पावस प्रवचन पृष्ठ ७३)

विचारो के साथ सस्कारो मे जो परिवर्तन आता है, वही स्थायी रहता है ।

(अपन का समझें भाग-१ पृष्ठ ७३)

समाज की जड़ व्यक्ति मे उसी प्रकार है जिस प्रकार प्रौढावस्था की जड़ बचपन मे होती है ।

(पावस प्रवचन पृष्ठ १९८)

समसामयिक समस्याओ एव सामाजिक जीवन की विषमताओ तथा आवश्यकताओ का उन्हे पूरा ज्ञान था । परिस्थितियो की विकटता का वे गहनता से अनुमान करते थे । उनकी प्रकृति पर चिन्तन करते थे और उनक निराकरण के प्रति चिन्तित ही नही रहते थे, निराकरण की दिशा का सकेत भी करते थे । उनकी ऐसी सामाजिक सलग्नता के उदाहरण उनके प्रवचना म बिखरे पड़े हैं । इस सलग्नता की प्रकृति को समझन क लिए उनक कतिपय प्रवचना पर दृष्टिपात उपयोगी होगा ।

दु ख और सुख मनुष्य की चिन्ता के प्रमुख विषय हाते हैं । अनागत की आशका से दु खी हा जाना मनुष्य का सहज स्वभाव हाता है । इस दुराशा स मुक्ति का उपाय बताते हुए व कहते हैं- वास्तव म सुख और दु ख की अनुभूतिया अपने ही मन की अव्यवस्थाए होती हैं । य अवस्थाए किन्ही बाहरी तत्त्वा पर आधारित नहीं हाती (दु ख और सुख की समीक्षा दु ख और सुख पृष्ठ १)

भगवान महावीर को दिय गए दु खा तथा उनकी निस्सगता का उदाहरण दते हुए वे समझात हैं- आप भी सोच कि दु ख देने वाला व्यक्ति आपके आत्म स्वरूप पर जमे हुए मैल का साफ कर रहा है मर अन्तर्मति की दृष्टि से वह अच्छा ही कर रहा है ।

(सुख और दुख की समीक्षा दुख और सुख पृष्ठ ५)

रोगो की वढ़ती के इस युग मे राग के मूल कारण को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं- 'सच बात तो यह है कि बाहर की और शरीर की सभी बीमारियो की जड़ मे प्राय मानसिक राग ही होते हैं डॉक्टर भी स्वीकार करते हैं कि किस प्रकार मन की तरह-तरह की ग्रथिया शरीर की विभिन्न प्रक्रियाओ पर अपना असर डालती हैं और उस असर से इस शरीर में तरह-तरह के रोग किस प्रकार पैदा होते हैं।

(आत्म ममीक्षा, सच्चा सौंदर्य पृष्ठ ४८)

दान की महिमा और दान की सच्ची प्रकृति पर उनके विचार हैं 'वस्तुत दान देना दूसरो पर नहीं अपने पर ही अनुग्रह है। सोचिये एक व्यक्ति दूसरे के पास आकर उसके शरीर का मैल उतारता है।

(दान ममत्व त्याग का सापान, प्रवचन पीयूप पृष्ठ ५८)

'दान की शुद्ध भावना को ममत्व त्याग की परिचायिका के रूप मे दखिये विसर्जन का त्याग दाता का प्रधान लक्षण है।'

(दान ममत्व त्याग का सोपान, प्रवचन पीयूष पृष्ठ ५९)

श्रद्धा मे तर्क का क्या स्थान होता है, इस सबध मे उनकी दृष्टि स्पष्ट थी। उन्होंने कहा है- 'तर्क केवल मस्तिष्क को झकझोरता है, और उसकी सीमाओ मे ही बधा रहता है सजग श्रद्धा मन और मस्तिष्क दोनों को झकझोरती है। तर्क सम्मत श्रद्धा और श्रद्धापूर्ण विश्वास का मध्यम मार्ग ही ऐसा राजमार्ग हो सकता है जिस पर चलकर मनुष्य अपने वर्तमान जीवन की समस्याओ का ममाधान भी पा सकता है।

(तर्क श्रद्धा और विश्वास का सकट, पावस प्रवचन पृष्ठ ७२)

अपनी समस्याओ के समाधान मे स्वकीय शक्तिया का कितना महत्व है, मनुष्य प्राय इसकी अनदेखी कर जाता है। इसलिए आचार्य श्री उसे याद दिलाते है- आज के युग म लोग अपनी समस्याआ का समाधान पाने के लिए बाहर ही बाहर देख रहे हैं और बाहर ही बाहर दौड़ लगा रह हैं, उस कस्तूरी मृग की तरह जो वन प्रातर मे भागता है जबकि कस्तूरी उसी की नाभि मे होती है। आप भी कस्तूरी को नाभि मे खाजिये और बाहर से अपनी दृष्टि और भागदौड़ को हटाकर अपने भीतर झाकिये तथा वहा अपनी शक्ति के अनत भडार का खोजिये।'

(पर्याप्ति और प्राण सर्वमगल सर्वदा पृष्ठ १६६)

इस शक्ति को प्राप्त करने मे मनुष्य की स्वय की भावना के स्थान का सकेत करते हुए उन्होंने कहा है विराट विश्व मे फैली हुई जितनी भी विराट शक्तिया हैं उन शक्तियो से आत्मा का सबध जुड़ा हुआ है किन्तु उस सबध को सक्रिय बनाने के लिए भावना के विद्युत प्रवाह की आवश्यकता है। जैसे बिजली घर से आपके घर की बिजली फिटिंग का सबध तो जुड़ा हुआ है लेकिन करंट नही है। तो प्रकाश कैसे होगा ? यह करट ही भावना है। भावना का प्रवाह ज्योंहि दूसरी दिशा मे बहने लगेगा त्योंहि आत्मा का अपनी शक्तियो के साथ सबध सजीव हो उठेगा।'

(स्वकीय शक्ति की पहचान प्रवचन पीयूष पृष्ठ १७)

आचार्य श्री को ज्ञात था कि वर्तमान मे अशाति के लिए जो तत्व उत्तरदायी है उनमें धर्म भ्रष्टाचार राजनीति और राष्ट्रीय भावना का अभाव प्रमुख है। इनकी प्रकृति और उसके परिणाम की उन्हे पूरी जानकारी थी और एक समत्व योगी सत की दृष्टि से उन्होंने उनकी सम्यक् विवेचना की थी। सच्चे धर्म की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था-'वस्तुत धर्म सर्व शुद्ध होता है उसी तरह जिस तरह सारी मानव जाति एक होती है। मानव जाति के टुकड़े नहीं किये जा सकते तो धर्म भी अविभाज्य होता है। पहले भी धर्म की मनमानी व्याख्याए की गई हैं और आज भी की जाती हैं। आज धर्म के नाम पर लड़ाइया हाती है, दगे होते हैं।

(धर्म का चिन्तन, सर्व मगल सवदा पृष्ठ २५)

भ्रष्टाचार के विकरालतर होते रूप से वे अत्यत क्षुब्ध थे, उसके कारणो की सहज विवेचना करते हुए उन्होंने कहा था- जीवन विकास के सारे लक्ष्य भुला

दिये गये है, आध्यामिकता और आदर्श प्राय वाणी-विलास के साधन बना दिए गए हैं और मानवीय गुणो की आभा विरल हा गई है यही कारण है कि भ्रष्टाचार समाज और स्वय व्यक्ति की रग-रग मे पसरता जा रहा है। नवर दो की आमदनी की रखैल ही आज के बिगड़े हुए आदमी का शृगार बन रही है। यही धन लिप्सा विश्व-मानव को अपने प्रभाव से कलकित करती हुई बहुमुखी विषमता की जननी बन गई है तथा सभी देशो म विकारो के कीटाणु फैला रही है।'

(समता दर्शन और व्यवहार पृष्ठ ५)

सामाजिक विषमता तथा भ्रष्टाचार के मूल कारण अर्थ की भूमिका की भी उन्होने सही व्याख्या की है- अर्थ का अनर्थ जब तक व्यक्ति के लिए ही और व्यक्ति क नियत्रण मे रहगा तब तक वह अनर्थ का मूल भी बना रहेगा क्योंकि वह उसे त्याग मार्ग की ओर बढ़न स रोकेगा। उसकी परिग्रह मूर्च्छा को काटने मे कठिनाई आती रहेगी। इसलिए अर्थ का अर्थ समाज से जुड़ जाए और उसम व्यक्ति की अनर्थ आकाक्षाओ को खुलकर खेलने का अवसर न हो तो सभव है कि अर्थ के अनर्थ को मिटाया जा सके।

(समता दर्शन और व्यवहार- पृष्ठ ५३)

समाजवादी और साम्यवादी चिन्तन को आध्यात्मिक धरातल पर व्याख्यायित कर उन्होने वाद के दुराग्रह से उन्हे मुक्त कर व्यवहार की गरिमा से विभूषित कर दिया है। स्वय किसी वाद तथा भौतिकवादी चिन्तन के आग्रह से मुक्त कोई निस्पृह सत ही ऐसी समतामयी दृष्टि से सम्पन्न हो सकता था। वाद की भारत के लिए अनुपयुक्तता बताते हुए उन्होने कहा था- भारतीय जनता का मानम इतना गुलाम बन गया है कि उसे अपनी सस्कृति, अपनी रीति-नीति अच्छी नहीं लगती और प्रत्येक क्षत्र म दूसरो की नकल करना ही उसका एक मात्र लक्ष्य हो गया है वे रूस और चीन की नीतियो के राग अलाप रहे हैं जबकि वहा की जनता उनको असफल मानकर अन्य मार्ग की खोज म लगी हुई है।''

(चरित्र का मूल्याकन प्रेरणा की रेखाएँ पृष्ठ १४८)

हम जानते है कि ऐसी स्थिति तब आती है जब देश की राजनीति असफल हो जाती है। वह न लोगो का मार्गदर्शन कर पाती है, न उन्हे प्रेरणा ही दे पाती है वरन् अव्यवस्था और विषमता का पर्याय बन जाती है। देश के ऐसे राजनीतिक पतन पर पीड़ा व्यक्त करते हुए उन्होने टिप्पणी की थी- राजनीति के क्षेत्र म नजर फैलायें तो लगता है कि सैंकड़ो वर्षों के कठिन सघर्ष के बाद मनुष्य ने लोकतत्र के रूप म समानता के कुछ सूत्र बटोर किन्तु विषमता के पुजारियो ने मत जैसे समानता क प्रतीक को भी ऐस कुटिल व्यवसाय का साधन बना दिया है कि प्राप्त राजनीतिक समानता भी जैसे निरर्थक होती जा रही है। विषमता के ऐसे पक मे से राजनीति का उद्धार नही हुआ ता न सही कितु वह तो अब दलदल म गहरी डूबती जा रही है। तब आर्थिक क्षेत्र मे समानता लाने क प्रयास किए जा सके, यह और भी कठिन हा गया है।

(समता दर्शन और व्यवहार पृष्ठ ४)

राजनीतिक अराजकता, सामाजिक भ्रष्टाचार और वैयक्तिक दुराचरण के परिप्रेक्ष्य मे ही उन्होने राष्ट्रधर्म की महता को प्रतिपादित कर सुख शाति और विकास का रास्ता दिखाया। उन्होने श्री ठाणाग सूत्र से उदाहरण दकर बताया कि वहा दस प्रकार के धर्मों का उल्लेख है। उनमे भगवान महावीर ने पहले नगर और ग्राम धर्म का प्रतिपादन कर फिर राष्ट्रधर्म का प्रतिपादन किया है दस विहे धम्मे-तजहा गाम धम्मे, नगर धम्मे, रट धम्मे, पाखड धम्मे, कुल धम्मे, गण धम्मे, सघ धम्मे सुय धम्मे, चरित धम्मे, अत्थितकाय धम्मे। ग्राम धर्म नगर धर्म और राष्ट्र धर्म को पहले रखने का अभिप्राय यही है कि जब य निष्ठापूर्वक पाल जाएग और इनका रूप व्यवस्थित हागा तभी श्रुत चारित्र आदि धर्मों का पालन सुविधा जनक बन सकगा।

(राष्ट्रधर्म की महत्ता ताप और तप पृष्ठ १८७)

अराजकतापूर्ण स्थिति म न साधक निर्भय होकर विचरण कर पायगा न ही धर्म आदि का पालन। उन्होन प्रश्न किया- राष्ट्र का समस्या क्या हो सकता है? क्या सिर्फ दिल्ली मे बैठकर कुछ कानून बना देन मात्र स देश

मे परिवर्तन आ जायगा तथा राष्ट्र धर्म का पालन होने लगेगा ? स्वय कानून निर्माताओ एव शासको के अपने चरित्र एव आचार का प्रश्न भी सम्मुख आता है। बार बार कानून मे परिवर्तन या सशोधन पर असतोष व्यक्त करते हुए उन्होने आगे कहा था-" परिवर्तनो और सशोधनो का कोई जनहितकारी आधार नही होता वरन् सत्ताधारियो के स्वार्थों को पूरा करने के लिए ऐसा किया जाता है।"

(राष्ट्र धर्म की महत्ता ताप और तप-पृष्ठ १८७)

उन्होने स्पष्ट कहा था कि ' जहा सत्ता को स्वार्थ को, पूरा करने का साधन बना दिया गया है वहा राष्ट्र धर्म नही टिक सकता देश म व्यक्तियो मे हो या दलों म सत्ता की लिप्सा ने ऐसा ताडव दिखाया है कि सिर्फ राजनीति ही सबके सिरो पर हावी होती चली जा रही है। सत्ता भोग हो गई है और व्यवसाय बना दी गई है (पृष्ठ १८८) 'समत्व, एकता एव साम्य भावना इस राष्ट्रधर्म की मूल आत्मा है और जब तक मूल को ठुकराया जाता रहेगा तब तक शाखाओ और उप शाखाओ को सींचने से फूल कभी नही आयेगा। (वही पृष्ठ २००)" इन उदाहरणो के सदर्भ म यदि हम आचार्य श्री के प्रवचनो पर विचार करे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे ऐसे धर्म नायक थे जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और ससार के जीवन मे धर्म की ईमानदारी स स्थापना होना देखना चाहते थे। उनका न राजनीति से कुछ लेना देना था, न अर्थनीति से और न ही शासन व्यवस्था से परतु वे धर्मानुकूल आचरण कर, जिससे वे अपने आपको चरितार्थ कर सके और मानव का व्यापक हित साध सके, यह वे अवश्य चाहते थे। एक ऐसे सत का चिन्तन जिसने समता समाज की स्थापना, आत्मा आत्मा के बीच समभाव तथा उस हेतु आत्म समीक्षण का मार्ग सुझाया हो और जो स्वय उस पर जीवन भर चलता रहा हो इससे भिन्न हो भी नही सकता था। आज इस बात की महती आवश्यकता है कि उनके चिन्तन के विभिन्न सूत्रो को सकलित कर एक सपूर्ण दर्शन शृखला की रचना की जाए जो मनुष्य का सभी स्तरो पर मार्गदर्शन कर सके। इस हेतु उनके प्रवचन सकलनो को विषयानुसार सपादित कर पुन प्रकाशित किया जाना आवश्यक है।

इस दृष्टि से ऐसे दो सकलनो की बात करना समीचीन होगा जो सकलनकर्ताओ के सद्प्रयासो के कारण स्वतत्र ग्रथो का रूप ले सके हैं। इनमे एक है गुण स्थान स्वरूप और विश्लेषण जिसे श्रमणीरत्ना विदुषी साध्वी विपुला श्री जी म सा एव श्री विजेता श्री जी म सा ने आचार्य श्री नानेश के गुण स्थान विषयक प्रवचनो को एक स्थान पर सग्रहित कर ग्रथ रूप दिया है और दूसरा है निर्ग्रन्थ परम्परा मे चैतन्य आराधना जिसमे आचार्य श्री नानेश के उद्बोधनो को उनके आज्ञानुवर्ती सत सती वर्ग ने एक स्थान पर सग्रहित किया है।

धर्म शास्त्रो की व्याख्या कर उनकी सामग्री को सामान्य पाठको हेतु उपयोगी बनाने की दृष्टि से भी आचार्य श्री नानेश ने कठोर श्रम किया था। इस प्रकार आचाराग सूत्र आदि की जो आगम सम्मत विवेचनाए उन्होने प्रस्तुत की हैं, वे निश्चय ही शास्त्रो मे उनकी गभीर पैठ के प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। शास्त्र ज्ञान मे निष्णात तथा आगमो के गभीर ज्ञाता आचार्य श्री नानेश ने मानस मथन द्वारा ज्ञान का नवनीत समता दर्शन के रूप मे निकालकर श्रावको का एक अन्य प्रकार से भी परम हित किया है। तुलसी ने वेद, पुराण और दर्शन ग्रथो के सार के रूप मे रामचरित मानस ग्रथ की रचना की बात कही थी और उसे कलिमल हरनी मगल' बताया था। उन्होने उसे अमियमूरिमय चूरन चारु' कहकर शमन सकल भवरुज परिवारु' के रूप मे प्रस्तुत किया था। इसी प्रकार आचार्य श्री नानेश ने समता दर्शन के रूप में शास्त्रो की वाणी का ऐसा सार निकाला है जो विषमता की भीषण व्याधि से ग्रस्त मनुष्य के लिए रामबाण औषधि सिद्ध हो सकता है।

आचार्य श्री नानेश एक उच्च कोटि के साधक थे जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण आत्म समीक्षण को समर्पित था। अपने द्वारा खोजी गई, विकसित की गई तथा प्रयुक्त की गई इस साधना पद्धति से उनकी भाव

भूमि का अतरग सबध था, इसलिए अपने प्रवचनो मे समीक्षण ध्यान-साधना के मनोविज्ञान, उसकी विधि पद्धतियो आदि की विस्तृत चर्चा कर वे उसे सर्वजनोपयोगी बनाने का गुरुतर कार्य कर सके। ऐसे प्रवचनो के जो कतिपय सग्रह प्रकाशित हुए है, उनमे प्रमुख हैं- समता दर्शन और व्यवहार, समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान, समीक्षण धारा समीक्षण ध्यान एक प्रयोग विधि, क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण, माया समीक्षण, लोभ समीक्षण और आत्म समीक्षण।

समीक्षण ध्यान साधना चाहे वह किसी भी रूप मे हो आचार्य नानेश की साधना की चरम उपलब्धि है। सच तो यह है कि इन समताविभूति समीक्षण ध्यान-योगी के समता चिन्तन का समाहार ही समीक्षण ध्यान चिन्तन मे हुआ है। अपनी वृत्तियो को समभावपूर्वक देख पाना अभ्यास द्वारा ही सभव है। आचार्य नानेश ने स्पष्ट किया है कि क्रोध, लाभ, मोह, मान आदि प्रवृत्तिया मनुष्य के अतर्मन को असतुलित कर देती है। इस मन को सतुलित करने का एक ही मार्ग है, समीक्षण ध्यान-साधना। इस प्रकार समीक्षण ध्यान-साधना यदि दार्शनिक दृष्टि से निष्काम कर्म सिद्धि का आधार है तो आत्म समीक्षण आत्मिक शाति की प्राप्ति हेतु आत्मा को समता के सर्वोच्च शिखर पर पहुचाने की चमत्कारी विधि है। आत्म समीक्षण ग्रथ इसी साधना की विशद् व्याख्या की अद्भुत रचना है जो आत्म समीक्षण के नौ सूत्रो के साथ ही समत्व की जय यात्रा तक की सागोपाग विवेचना भी प्रस्तुत करती है। इस ग्रथ को आचार्य श्री के दार्शनिक चिन्तन की चरम उपलब्धि भी कहा जा सकता है।

धर्माचार्य की एक प्रमुख विशेषता यह होती है कि वह श्रावको के हित की दृष्टि से ज्ञान अथवा अध्यात्म चर्चा इस रूप म करता है कि गूढ़ तत्वो की भी सरल रूप म विवेचना हो सके। ऐसा वह इसलिए भी करता है क्योंकि आचार्य होने के साथ वह शिक्षक भी होता है और चूकि कथा के माध्यम से शाश्वत सत्य आबाल-वृद्ध नर-नारियो को सरल ढग से समझाया जा सकता है इसलिए कथा अत्यत प्राचीन काल से शिक्षा देने का सार्थक साधन रही है। इस प्रकार चाह वेदों म बिखरी कथाओ की बात करे चाहे पचतत्र और दशकुमार चरित्र जैसी नीति कथाओ की, चाहे द्वादशागी जैसी शास्त्रीय कथाओ की, चाहे बुद्ध धर्म की जातक कथाओ की। धर्म नीति और सदाचार की शिक्षा इनक प्रमुख विषय रहे है। आचार्य श्री नानेश भी कथा विद्या की शक्ति से भली प्रकार परिचित थ इसलिए उन्होने जहा कथाओ और घटनाओ को अपने प्रवचना मे बड़े पैमाने पर स्थान दिया वहीं स्वतत्र रूप से शिक्षाप्रद कथा साहित्य की रचना भी की। उनका यह शिक्षाप्रद साहित्य कथा, कहानियों और उपन्यासो के रूप मे उपलब्ध है। इस वर्ग की जो रचनाए प्रकाशित हुइ है उनम प्रमुख है- नल दमयती अखड सौभाग्य कुकुम के पगलिये, ईर्ष्या की आग, लक्ष्यवेध और आदर्श भ्राता। इनम प्रथम पाच औपन्यासिक कृतिया है और पाचवी काव्य रचना। कथा यद्यपि इन रचनाओ का शरीर है तथापि शास्त्र प्राण है इसलिए जहा ये कथाए आनदित करती है वही प्रेरित भी करती है।

पहले नल दमयन्ती की बात कर। नल दमयन्ती की कथा भारत की एक प्राचीन लोकप्रिय कथा रही है। आचार्य श्री नानेश ने नल के जीवन के औदात्य और दमयती के जीवन के शील को महत्व देकर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि नैतिकता के पथ स विचलित होने पर किस प्रकार भीषण विपत्तिया सम्मुख आती है परतु जब जीवन का परिमार्जन कर लिया जाता है तब सभी विपत्तिया शनै शनै समाप्त होन लगती है। विशेष रूप से दमयती पवित्रता और नैतिकता क जिस ज्वलत रूप को प्रस्तुत करती है वह भारतीय नारी का चिरकालीन आदर्श रहा है।

अखण्ड सौभाग्य म महाराज चन्द्रसेन उनकी पटरानी युवराज आनदसेन तथा विद्याधर पुत्री विजय सुदरी के माध्यम से समतामय जीवन साधना तथा आदर्श नृपति क कर्तव्यो का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। दुष्टजनो के षडयत्रो स भक्त आत्माओ की रक्षा

मे परिवर्तन आ जायेगा तथा राष्ट्र धर्म का पालन होने लगगा ? स्वय कानून निर्माताआ एव शासका के अपने चरित्र एव आचार का प्रश्न भी सम्मुख आता है। बार बार कानून मे परिवर्तन या सशाधन पर असतोप व्यक्त करत हुए उन्होने आगे कहा था-' परिवर्तनो और सशोधनो का कोई जनहितकारी आधार नही हाता वरन् सत्ताधारियो क स्वार्थों को पूरा करने के लिए ऐसा किया जाता है।'

(राष्ट्र धम की महत्ता, ताप और तप-पृष्ठ १८७)

उन्होने स्पष्ट कहा था कि जहा सत्ता को स्वाथ को, पूरा करने का साधन बना दिया गया है वहा राष्ट्र धर्म नही टिक सकता-देश में व्यक्तियो मे हो या दलों मे सत्ता की लिप्सा ने एमा ताडव दिखाया है कि सिर्फ राजनीति ही सबके सिरो पर हावी होती चली जा रही है। सत्ता भोग हो गई है और व्यवसाय बना दी गई है (पृष्ठ १८८) समत्व, एकता एव साम्य भावना इस राष्ट्रधर्म की मूल आत्मा है और जब तक मूल को ठुकराया जाता रहेगा तब तक शाखाओ और उप शाखाओ को सीचने से फूल कभी नही आयेगा। (वही पृष्ठ २००)'' इन उदाहरणो के सदर्भ मे यदि हम आचार्य श्री के प्रवचनो पर विचार करे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे ऐसे धर्म नायक थे जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और ससार के जीवन मे धर्म की ईमानदारी से स्थापना होना देखना चाहते थे। उनका न राजनीति से कुछ लेना देना था, न अर्थनीति से और न ही शासन व्यवस्था से परतु वे धर्मानुकूल आचरण करे, जिससे ये अपने आपको चरितार्थ कर सके और मानव का व्यापक हित साध सक यह वे अवश्य चाहते थे। एक ऐसे सत का चिन्तन जिसने समता समाज की स्थापना आत्मा-आत्मा के बीच समभाव तथा उस हेतु आत्म समीक्षण का मार्ग सुझाया हो और जो स्वय उस पर जीवन भर चलता रहा हो, इससे भिन्न हो भी नही सकता था। आज इस बात की महती आवश्यकता है कि उनके चिन्तन के विभिन्न सूत्रो को सकलित कर एक सपूर्ण दर्शन शृखला की रचना की जाए जो मनुष्य का सभी स्तरो पर मार्गदर्शन कर सके। इस हेतु उनक प्रवचन सकलनो को विषयानुसार सपादित कर पुन प्रकाशित किया जाना आवश्यक है।

इस दृष्टि से ऐसे दो सकलनो की बात करना समीचीन होगा जो सकलनकर्ताओ के सद्प्रयासा के कारण स्वतत्र ग्रथो का रूप ले सके हैं। इनमे एक है गुण स्थान स्वरूप और विश्लेषण', जिसे श्रमणीरत्ना विदुषी साध्वी विपुला श्री जी म सा एव श्री विजेता श्री जी म सा ने आचार्य श्री नानेश के गुण स्थान विषयक प्रवचनो को एक स्थान पर सग्रहित कर ग्रथ रूप दिया है और दूसरा है निर्ग्रन्थ परम्परा मे चैतन्य आराधना जिसमे आचार्य श्री नानेश के उद्बोधनो को उनके आज्ञानुवर्ती सत सती वर्ग ने एक स्थान पर सग्रहित किया है।

धर्म शास्त्रो की व्याख्या कर उनकी सामग्री को सामान्य पाठको हेतु उपयोगी बनाने की दृष्टि से भी आचार्य श्री नानेश ने कठोर श्रम किया था। इस प्रकार आचाराग सूत्र आदि की जो आगम सम्मत विवेचनाए उन्होने प्रस्तुत की हैं, वे निश्चय ही शास्त्रो मे उनकी गभीर पैठ के प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। शास्त्र ज्ञान म निष्णात तथा आगमा के गभीर ज्ञाता आचार्य श्री नानेश न मानस मथन द्वारा ज्ञान का नवनीत समता दर्शन क रूप मे निकालकर श्रावको का एक अन्य प्रकार से भी परम हित किया है। तुलसी ने वेद, पुराण और दर्शन ग्रथो के सार के रूप मे रामचरित मानस ग्रथ की रचना की बात कही थी और उसे कलिमल हरनी मगल बताया था। उन्होने उसे अमियमूरिमय चूरन चारु कहकर 'शमन सकल भवरूज परिवारु के रूप मे प्रस्तुत किया था। इसी प्रकार आचार्य श्री नानेश ने समता दर्शन के रूप में शास्त्रो की वाणी का ऐसा सार निकाला है जो विषमता की भीषण व्याधि से ग्रस्त मनुष्य के लिए रामबाण औषधि सिद्ध हो सकता है।

आचार्य श्री नानेश एक उच्च कोटि के साधक थ जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण आत्म समीक्षण को समर्पित था। अपने द्वारा खोजी गई, विकसित की गई तथा प्रयुक्त की गई इस साधना पद्धति से उनकी भाव

भूमि का अतरग सबध था, इसलिए अपने प्रवचनो म समीक्षण ध्यान-साधना के मनोविज्ञान, उसकी विधि पद्धतियो आदि की विस्तृत चर्चा कर वे उस सर्वजनोपयोगी बनाने का गुरुतर कार्य कर सके। ऐसे प्रवचना के जा कतिपय सग्रह प्रकाशित हुए है उनमे प्रमुख हैं- समता दर्शन और व्यवहार, समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान, समीक्षण धारा, समीक्षण ध्यान एक प्रयोग विधि, क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण माया समीक्षण, लोभ समीक्षण और आत्म समीक्षण।

समीक्षण ध्यान साधना चाहे वह किसी भी रूप मे हो आचार्य नानेश की साधना की चरम उपलब्धि है। सच तो यह है कि इन समताविभूति, समीक्षण ध्यान-याेगी के समता चिन्तन का समाहार ही समीक्षण ध्यान चिन्तन मे हुआ है। अपनी वृत्तियो को समभावपूर्वक दख पाना अभ्यास द्वारा ही सभव है। आचार्य नानश ने स्पष्ट किया है कि क्रोध लोभ माह मान आदि प्रवृत्तिया मनुष्य के अतर्मन को असतुलित कर देती है। इस मन को सतुलित करने का एक ही मार्ग है समीक्षण ध्यान-साधना। इस प्रकार समीक्षण ध्यान-साधना यदि दार्शनिक दृष्टि से निष्काम कर्म सिद्धि का आधार है तो आत्म समीक्षण आत्मिक शाति की प्राप्ति हतु आत्मा को समता के सर्वोच्च शिखर पर पहुचाने की चमत्कारी विधि है। आत्म समीक्षण ग्रथ इसी साधना की विशद् व्याख्या की अद्भुत रचना है जो आत्म समीक्षण के नौ सूत्रो के साथ ही समत्व की जय यात्रा तक की सागोपाग विवेचना भी प्रस्तुत करती है। इस ग्रथ को आचार्य श्री के दार्शनिक चिन्तन की चरम उपलब्धि भी कहा जा सकता है।

धर्माचार्य की एक प्रमुख विशेषता यह होती है कि वह श्रावका के हित की दृष्टि से ज्ञान अथवा अध्यात्म चर्चा इस रूप मे करता है कि गूढ़ तत्वो की भी सरल रूप मे विवेचना हो सके। ऐसा वह इसलिए भी करता है क्योकि आचार्य होने के साथ वह शिक्षक भी होता है और चूकि कथा के माध्यम से शाश्वत सत्य आबाल-वृद्ध नर नारियो को सरल ढग स समझाया जा सकता है इसलिए कथा अत्यत प्राचीन काल स शिक्षा देने का सार्थक साधन रही है। इस प्रकार चाहे वेदों म बिखरी कथाओ की बात करे चाहे पचतत्र और दशकुमार चरित्र जैसी नीति कथाओ की चाह द्वादशागी जैसी शास्त्रीय कथाओ की चाहे बुद्ध धम की जातक कथाओ की। धर्म नीति और सदाचार की शिक्षा इनके प्रमुख विषय रहे है। आचार्य श्री नानेश भी कथा विद्या की शक्ति से भली प्रकार परिचित थे इसलिए उन्होंने जहा कथाओ और घटनाओ को अपने प्रवचनो मे बड़े पैमाने पर स्थान दिया वहीं स्वतत्र रूप से शिक्षाप्रद कथा साहित्य की रचना भी की। उनका यह शिक्षाप्रद साहित्य कथा, कहानियों और उपन्यासा के रूप म उपलब्ध है। इस वग की जो रचनाए प्रकाशित हुई है उनम प्रमुख है- नल दमयती अखड सौभाग्य, कुकुम के पगलिये, ईर्ष्या की आग, लक्ष्यवेध और आदर्श भ्राता। इनम प्रथम पाच औपन्यासिक कृतिया है और पाचवी काव्य रचना। कथा यद्यपि इन रचनाओ का शरीर है तथापि शास्त्र प्राण है, इसलिए जहा ये कथाए आनदित करती है वहीं प्रेरित भी करती है।

पहले नल दमयन्ती की बात करे। नल दमयन्ती की कथा भारत की एक प्राचीन लोकप्रिय कथा रही है। आचार्य श्री नानेश ने नल क जीवन के औदात्य और दमयती के जीवन के शील को महत्व देकर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि नैतिकता क पथ म विचलित होन पर किस प्रकार भीषण विपत्तिया सम्मुख आती है परतु जब जीवन का परिमार्जन कर लिया जाता है तब सभी विपत्तिया शनै-शनै समाप्त हाने लगती है। विशेष रूप स दमयती पवित्रता और नैतिकता के जिस ज्वलत रूप को प्रस्तुत करती है वह भारतीय नारी का चिरकालीन आदर्श रहा है।

अखण्ड सौभाग्य म महाराज चन्द्रसेन उनकी पटरानी युवराज आनदसेन तथा विद्याधर पुत्री विजय सुदरी क माध्यम से समतामय जीवन साधना तथा आदश नृपति क कर्तव्या का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। दुष्टजनो के षड्यत्रो मे भव्य आत्माओ की रक्षा

के किस प्रकार विचित्र योग बनते हैं, ब्रह्मानद जैसी दिव्य आत्माए कैसे उनके साथ सहयोग करती हैं तथा सलखू नाईन और ग्यारह दुष्ट रानियो को लज्जा और पराजय का मुह किस प्रकार देखना पड़ता है, यह इस उपन्यास का विषय है। अत मे महाराज, उनकी तेरह रानिया, राजकुमारी चम्पकमाला, कई मत्री एव सामन्त आदि जैन भागवती दीक्षा अगीकार करने के पथ पर चल पड़ते है।

कुकुम के पगलिये' नैतिक सदाचरण प्रधान रचना है। कुकुम के पगलिये सुख, शाति और श्री सम्पन्नता के प्रतीक होते है। एसे ही पगलिये शक्ति, शील और सौन्दर्य की देवी मजुला श्रीकान्त के जीवन म प्रवेश करती है। सीधा, सरल, सुसस्कारी और स्वाभिमानी श्रीकान्त आत्म पुरुषार्थ का जाग्रत कर सकल्प शक्ति और साधना के बल पर अपने भविष्य का निर्माण करता है। मजुला विकट परिस्थितियो मे भी अपने शील की रक्षा करती है और अपने पति को प्राप्त करने मे सफल होती है। तप, त्याग और सदाचरण के पुरस्कार स्वरूप इस परिवार को अपना खोया हुआ सुख कई गुना बढ़कर प्राप्त हाता है। अत मे श्रीकान्त, मजुला और कुसुम कुमार की भव्य आत्माए दीक्षा का मार्ग ग्रहण कर अपना जीवन सार्थक करती हैं।

ईर्ष्या की आग' अपक्षाकृत एक लघु रचना है जो यह स्पष्ट करती है कि धर्म मे आस्था रखने वाला, साधु, सता के निर्देशो को मानने वाला, सतोषी, समभावयुक्त तथा प्रतिज्ञा का पक्का व्यक्ति, सभी कष्टो से मुक्त हाकर सुख वैभव प्राप्त करता है जबकि ईर्ष्यालु, कपटी और स्वार्थी व्यक्ति अपमान का पात्र बनता है। अवधेश और उसकी पत्नी यामिनी प्रथम प्रकार क तथा सुधेश और उसकी पत्नी भामिनी दूसरे प्रकार के पात्र है। अपनी सकल्पशीलता तथा समतामयी दृष्टि के कारण जहा अवधेश और यामिनी सदा सतुष्ट एव प्रसन्न रहते है वही सुधेश असतुष्ट और दुखी रहता है। परिस्थितिया उसे जीवन परिवर्तन के लिए विवश कर देती है और वह भी सन्मार्ग का पथिक बन जाता है।

'लक्ष्यवेध मानसिह और अभयसिह नामक दो सगे भाइयो के आदर्श प्रेम की कथा है। आचार्य श्री नानेश ने लक्ष्यवेध को प्रतीक के रूप मे प्रयुक्त किया है। बाहरी लक्ष्यभेद जहा भोगदृष्टि का सकेत बनाने की सिद्धि की ओर इशारा करता है वहाँ अभय की सात्विक प्रेरणा मानसिह का जीवन ही बदल देती है। अपनी वीरता, साहस और सूझबूझ से दोना भाइया के जीवन का क्रम ही बदल जाता है। उनका दुर्भाग्य समाप्त हो जाता है और आनद एव उत्साह की गगा उनके जीवन मे बहने लगती है। मानसिह और प्रतापसिह के उपरात अभयसिह भी भागवती दीक्षा के मार्ग को अगीकार कर आत्म कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। 'आदर्श भ्राता' इसी कथा की काव्यात्मक प्रस्तुति है जिसे लोकप्रिय छद मे सगीतबद्ध किया गया है।

इन सभी कथाओ की प्रमुख विशेषता इनमे समाया धर्म तत्व है जिसकी अभिव्यक्ति इनके नायक नायिकाओ के माध्यम स हुई है। धर्म के सिद्धातो के अनुसार आचरण करनेवाले तथा समता भाव रखने वाले निर्मल चरित्र पात्र सभी कष्टो और सकटो के बीच से सुरक्षित निकल आते हैं और स्वकल्याण के साथ परकल्याण के गुरुत्तर दायित्व का निर्वाह करते हैं। दुष्टता और कुटिलता सदैव पराजित होती है और दुष्टो के हृदय परिवर्तित होते हैं।

सभी रचनाओ मे कथा का समाहार प्रमुख पात्रो (नायक एव खलनायक सहित) मे उत्कृष्ट वैराग्य भावना के उदय तथा भागवती दीक्षा ग्रहण कर आत्म-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो जाने मे होता है। नीति कथाओ तथा प्राचीन धार्मिक आख्याना क सदर्भ मे इन कथाओ की एसी परिणति पर यदि विचार करे ता वह पूर्णत शास्त्रानुकूल ही नही साहित्य शास्त्रानुकूल भी दीखती है। प्राचीन भारतीय कथाए सुखात होती थी और चार पुरुषार्थो मे से किसी एक अथवा अधिक की प्राप्ति का लक्ष्य रखती थी। इसलिए उनका समाहार भरत वाक्य से होता था। आचार्य श्री नानेश की कथाओ मे समाहार का यह रूप उदात्ततर बनकर आया है क्योकि इनमे चार पुरुषार्थो मे से धर्म और मोक्ष की प्राप्ति को ही लक्ष्य रखा

गया है और दण्ड के पात्रो दुष्टो का भी हृदय परिवर्तन प्रदर्शित कर क्षमा, दया, करुणा और समता भाव के आदर्शों की प्रतिष्ठा की गई है ।

आचार्य श्री नानेश क सम्पूर्ण माहित्य पर जब हम विहगम दृष्टि डालते हैं तब यह तथ्य अपनी पूर्ण प्रखरता मे प्रकट हुए बिना नही रहता कि वह सब ज्ञान, दर्शन तथा मानवता का साहित्य है । जिसका एक मात्र उद्देश्य धर्माचरण की प्रेरणा देकर समाज को चरित्र परिष्कार, सस्कार निर्माण तथा समीक्षण ध्यान साधना के मार्ग पर अग्रसर करता है । परतु यह सब एकागी रूप मे नही हुआ है वर्तमान जीवन की ज्वलत समस्याओ के सदर्भ मे हुआ है । आचार्य श्री ने जीवन की विभीषिकाओ के असत्य-अन्याय, अत्याचार की स्थिति मे हिंसा, लोभ, मोह आदि की बढ़ती प्रवृत्तियो अभावो, दुखो, अशाति एव असतोष के पारावार मे डूबते उतराते लोगो, अधर्म के विस्तार तथा विषमता अज्ञान और पाखड के कसते हुए शिकजो के बीच फसी मानवता के बहते आसुओ को देखा था स्थितिया की विकटता को समझा था तथा उस पर गभीरता से चिन्तन करने के उपरात करुणा विगलित होकर अपनी साधना के बल पर उसके उद्धार का मार्ग तँलाश किया था । विषमता की पीड़ा से ग्रस्त मानवता के त्राण हतु जो कार्य उन्होने धर्म प्रभावना के शास्त्र सम्मत मार्ग द्वारा प्रारभ किया था, उसे ही साहित्य साधना के मार्ग द्वारा गतिशील बनाये रखा । इस प्रकार उनका सपूर्ण साहित्य चाहे वह किसी भी विधा मे हो, अवहित मनसा मर्हर्षिभि तत् साहित्यम्' की भारतीय साहित्य शास्त्र की अवधारणा पर खरा उतरता है । धर्म शास्त्र और साहित्य शास्त्र का यह सार्थक समन्वय आचार्य नानेश की साहित्य-साधना की प्रमुख उपलब्धि है ।

बी १७ शास्त्री नगर बीकानेर ३३४००३

शाति का पाठ

एक महात्मा से पूछा गया आप इतनी उम्र तक असंग सहनशील और शांत कैसे बने रहे ?

महात्मा ने कहा जब मैं ऊपर की ओर देखता हूँ तब मन में आता है कि मुझे ऊपर की ओर जाना है तब यहां पर किसी के कलुषित व्यवहार से खिन्न क्यों बनूं ? नीचे की ओर देखता हूँ, तब सोचता हूँ कि मोने उठने बैठने के लिए मुझे थोड़े स्थान की आवश्यकता है तब क्यों संग्रही बनूं ? आस पास देखता हूँ तो विचार उठता है कि हजारों ऐसे व्यक्ति हैं जो मुझसे अधिक दु खी हैं व्यथित और व्यग्र हैं । इन सब को देखकर मेरा मन शांत हो जाता है ।

आचार्य नानेश

जीवन सन्देश के सवाहक तीन आख्यान

जैन आख्यानों की परम्परा अत्यन्त समृद्ध रही है । हजारो की सख्या मे विविध जैन आख्यान सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश एव राजस्थानी आदि भाषाओ में मिलते है । ये आख्यान विभिन्न युगो मे अलग-अलग कथाकारो द्वारा निबद्ध किये जाने क तथा युग-प्रभाव एव व्यक्ति वैशिष्ट्य क कारण किचित् परिवर्तित रूपो मे भी मिलते है । प्राय जैन साधु उपदेश निमित्त इन आख्यानो का उपयोग करते रह है । उपदेश के साथ ही साथ अपने धार्मिक सिद्धाता के निरूपण की दृष्टि से भी वे इनका उपयोग करते रहे है । चूकि जैन साधुओ का मुख्य उद्देश्य रोचक एव उद्बोधक कथानको क माध्यम से जैन धर्म क गूढ सिद्धान्तो को जन सामान्य के बीच बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करना रहा है अत स्वाभाविक है कि इन कथानको म बीच-बीच मे यथाप्रसग धार्मिक सिद्धान्तो का विशद् विवेचन भी किया जाता रहा है । ये आख्यान गद्य पद्य और चम्पू तीना रूपो में मिलते रहते है । जैन साधु इन आख्यानो का उपयोग प्राय नियमित रूप से दिये जाने वाले आख्यानो के बीच करते रहे है, अत स्वाभाविक है कि प्रवचनकार अपनी रुचि एव योग्यता के अनुरूप इनके मूल स्वरूप को कायम रखते हुए भी इनको विस्तृत या सक्षिप्त रूप देते रहते है । इसी परम्परा की एक सशक्त कड़ी के रूप मे आचार्य श्री नानेश प्रणीत, अखण्ड सौभाग्य, कुकुम के पगलिए एव लक्ष्य वेध नामक आख्याना का नाम गिनाया जा सकता है । आगे किचित् विस्तार से इन आख्यानो की समीक्षा की जा रही है ।

जहाँ तक इन आख्यानो के साहित्यिक मूल्याकन का प्रश्न है, वहाँ हमे एक बात को विशेष रूप स ध्यान में रखना होगा कि इनका प्रणयन एक सामान्य साहित्यकार ने नही किया है, वरन् ये एक यशस्वी आचार्य की रचनाए है और इनका मूल्याकन करते समय रचनाकार की दृष्टि का प्रश्न है तो उस पर विचार करते हुए यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि सामान्य साहित्यकार और धर्माचार्य की दृष्टि मे मूलभूत अतर होता है । सामान्य साहित्यकार मानवीय चरित्र की विविधताओ को उजागर करने क साथ साथ उसके अन्तर्जगत् के गूढ रहस्यो को उद्घाटित करने मे विशेष रूप मे सक्रिय रहता है । वह बहुधा मनोवैानिक सच्चाइयो को दृष्टिपथ मे रखने के कारण नैतिक मूल्यो को गौण कर देता है । इसके साथ ही उसकी सबसे बड़ी सीमा यह है कि वह सामान्यत पुनर्जन्म, कर्म सिद्धान्त आदि बातो पर विश्वास नही करता है और व्यक्ति के व्यवहार का विश्लेषण करते हुए वह उसके इस जन्म के परिवेश और परिस्थितियो तक ही अपने आपको सीमित रखता है, किन्तु इसके विपरीत आध्यात्मिक सोचवाले धर्माचार्य व्यक्ति के जीवन को केवल इसी 'भव' तक सीमित नही करते है । वे व्यक्ति के इस जन्म के कर्मों का विश्लेषण करते समय कर्म सिद्धान्त के आलोक मे उसके कृत्यो का सर्वथा भिन्न रूप में विवेचन विश्लेषण करते है ।

यही बात प्रयोजन क सम्बध मे भी है । यहाँ भी दोनो के बीच के अतर को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। आचार्य मम्मट ने काव्य प्रयोजन की दृष्टि से एक श्लोक मे अपनी बात को सारगर्भित रूप स प्रस्तुत करते हुए कहा है कि काव्य का प्रयोजन यश एव अर्थ प्राप्ति, व्यवहार निपुणता तत्काल उच्चकोटि के आनन्द की प्राप्ति एव कान्ता के समान प्रिय उपदेश कथन होता है । आचार्य मम्मट के द्वारा गिनाये गये काव्य-प्रयोजन साधु समाज पर पूरी तरह लागू नही होते है, क्योंकि कोई भी सच्चा साधु वित्तैषणा अथवा लोकैषणा से बधकर काव्य रचना नही

करता। हाँ उसका साहित्य लोक-व्यवहार की निपुणता का हेतु कई बार बनता है, यद्यपि यह भी उसके साहित्य-सृजन का मुख्य प्रयोजन नही होता। ऐसी स्थिति मे उनके लखन का प्रयोजन तो मुख्य रूप से अनिष्ट क निवारण अथवा हितप्रद उपदेश को ही माना जा सकता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि दृष्टि एव प्रयोजन भेद के कारण आधुनिक कथाकार और विविध आध्यात्मिक अवधारणाओ में विश्वास रखने वाले परम्परानिष्ठ कथाकारो के प्रतिपाद्य और शिल्प दोनो मे ही महत्वपूर्ण अन्तर दृष्टिगत होता है। आगे इसी आलोक मे हम आचार्य श्री नानेश के इन तीनो आख्यानो का मूल्याकन करने की चेष्टा करते है।

कुकुम के पगलिए एक घटना प्रधान आख्यान है। अनक कथानक रूढियो एव घटना प्रसगो के सहारे इस आख्यान का ताना बाना बुना गया है। इस आख्यान मे प्रधान पुरुष पात्र श्रीकान्त की जीवन गाथा को आधार बनाकर आचार्य श्री ने कुछ महत्वपूर्ण बाता की आर सद्गृहस्थो का ध्यान आकर्षित करन का प्रयास किया है। उन बातो की ओर सकेत करते हुए हिन्दी एव राजस्थानी साहित्य के वरिष्ठ समालोचक तथा जैन दर्शन और जैन साहित्य क मर्मज्ञ विद्वान डा० नरेन्द्र भानावत ने लिखा है कि यह आख्यान घटना प्रधान होकर भी विभिन्न पात्रो के माध्यम से उदात्त जीवन मूल्या को रेखाकित करता है।' बहिर्द्वन्द और अन्तर्द्वन्द का अनूठा सामजस्य यहाँ देखने को मिलता है। मजुला और श्रीकान्त बहिर्द्वन्द्व और अन्तर्द्वन्द्व स ऊपर उठकर निर्द्वन्द्व की स्थिति की ओर कदम बढाते है। सेवा शील पुरुषार्थ, तप कर्त्तव्यनिष्ठा, प्रायश्चित धैर्य स्थिरता प्रेम सहयोग मातृभक्ति जैसे उदात्त जीवन मूल्य विभिन्न घटनाओ और पात्रो के माध्यम स इस कथा म सहज उभरते चलत है। हिसा और अहिसा, भाग और योग, सन्देह और श्रद्धा राग और विराग का सघर्ष कृति को रोचक और कलात्मक बनाता है।

डा० भानावत का यह कथन समीचीन प्रतीत होता है। मूलत इस आख्यान की रचना आचार्य श्री ने अपने अजमेर चातुर्मास मे प्रवचन के बीच एक सरस वातावरण बनाने की दृष्टि स की थी। स्वाभाविक है कि प्रवचन और कथा दोनो के साथ-साथ चलने पर अनेक अवान्तर किन्तु सामयिक प्रसगो की चर्चा भी बीच-बीच मे होती रही है। ऐसी स्थिति मे आख्यान के कारण प्राप्त होने वाले कथारस में बाधा उपस्थित होने की सभावना भी बनी रहती है और विशेष रूप से जब उस आख्यान को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जा रहा हो। चूकि प्रवचन के दौरान वक्ता और श्रोता का सीधा सम्बन्ध बना रहता है फलस्वरूप दोना के बीच एक विशेष भावात्मक सबध जुड़ जाता है और यह सम्बध उन स्थितियो मे और अधिक प्रगाढ हो जात है जबकि प्रवचनकार एक तपोमूर्ति आचार्य हो। वक्ता, श्रोता तथा पाठक और सृजता के भिन्न सबधो को समझते हुए इस आख्यान को पुस्तक रूप मे प्रकाशित करने से पूर्व श्री शातिचन्द्र मेहता ने इसका सपादन जिस कुशलता के साथ किया है, उसके कारण इस आख्यान म पाठक को कही भी बिखराव या विषयान्तर का अनुभव नही होता।

इस आख्यान का मुख्य प्रयोजन कर्म सिद्धान्त को प्रभावी रूप मे प्रस्तुत करना रहा है। इस आख्यान मे आचार्य श्री ने बार बार यह सदेश दुहराया है कि व्यक्ति को वर्तमान के दु ख अभाव और पीड़ाओ का पूर्वकृत कर्मों का फल मानकर समभावपूर्वक उन्हे सहन करना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से वह आर्त्तध्यान से बचता है और पुन नये पाप कर्मों का सचय करने से भी बचता है। यही नहीं ऐसी स्थिति में की गई समता भाव की साधना उसके वर्तमान कष्टो अभावो यानी दु खो की अनुभूति को बहुत कुछ क्षीण कर देता है। या कर्म सिद्धान्त क अतिरिक्त भी प्रसगानुसार अन्य अनेक हितकारी बातो की ओर भी इनम सकेत किया गया है जिसकी चर्चा डा० भानावत इसके मूल्याकन क्रम म कर चुके है।

पाठकीय जिज्ञासा को निरन्तर जगाये रखने वाले विविध घटना प्रसगो के बीच बीच मे धर्म अध्यात्म और नैतिक जीवन से सबधित बातो पर भी प्रभावपूर्ण ढग से प्रकाश डाला गया है । आचार्यवर ने उन गूढ एव मननीय प्रसगो की चर्चा अत्यन्त विद्वतापूर्ण ढग से की है । उदाहरण रूप में आख्यान का एक अश दृष्टव्य है 'नीति के मानदण्ड सामाजिक धारणाओ के धरातल पर तैयार होते है ।' इन्ही मानदण्डो के आधार पर यह निर्णय लिया जाता है कि किसी व्यक्ति का कौनसा कार्य नैतिक है और कौनसा कार्य अनैतिक ? मूल रूप मे नैतिकता और अनैतिकता की मीमासा जन्म लेती है अन्त करण के गर्भगृह मे और अन्तर्चेतना ही उसकी कसौटी होती है । यही धार्मिकता या आध्यात्मिकता कहलाती है ।

समाजहित के सन्दर्भ में व्यक्ति की निजात्मा की कसौटी पर कसा जाकर जो सस्कार, विचार या कार्य बाहर प्रकट होता है, उसे मोटे तौर पर धर्म कह सकते है, नैतिक कह सकते है या कि सदाशयी कह सकते है । इसके विपरीत जहाँ न समाजहित का ध्यान होता है और न ही निज अनुभूति का भान, वैसे व्यक्ति का सस्कार, विचार या कार्य विकार युक्त होने के कारण पाप रूप कहा जाता है ।

यह आख्यान इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन पड़ा है कि इसमे मातृशक्ति के उज्ज्वलतम रूप को प्रस्तुत किया गया है । भारतीय समाज मे शील को सर्वोपरि मूल्य रूप मे स्वीकारा गया है । यह आख्यान शील के सर्वोत्कृष्ट रूप को हमारे सामने रखता है । इनकी नायिका मजुला नानाविध प्रतिकूल परिस्थितियो मे जूझती हुई भी कही विचलित या स्खलित नही होती है । न तो भय ही और न ही प्रलोभन उसे अपने दृढ निश्चय से डिगा सकते है । इस आख्यान मे दाम्पत्य प्रेम का आदर्श हमारे सामने रखा गया है । दाम्पत्य जीवन की सफलता का आधार पति पत्नी का परस्पर का दृढ विश्वास और एक दूसरे के प्रति अनन्य प्रेम का भाव होता है, यही सब इस आख्यान मे चर्चित किया गया है । जीवन भोग विलास से तृप्त नही होता वरन् त्याग और तपस्या के द्वारा उसमे निखार आता है, जहाँ जीवन-आधार सत्यनिष्ठा है, वहा अनेकानेक बाधाए भी उसे पराभूत नही कर सकती है बल्कि यह सत्यनिष्ठा ही व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा सम्बल बन जाता है । इस प्रकार गृहस्थ जीवन के आदर्श प्रस्तुत करने वाला यह आख्यान प्रेरक एव उद्बोधक है ।

आचार्य श्री नानेश का एक अन्य आख्यान है 'अखण्ड सौभाग्य इस आख्यान के माध्यम से आचार्यवर ने जीवन मे 'समता' की साधना का मत्र दिया है । आचार्यवर के अनुसार सामायिक' के सम्यक् अभ्यास से जीवन म समता क्रमश सधती चलती है और इसमे सहायक बनती है आध्यात्मिक आस्था । अपने आराध्य और गुरु के प्रति पूरी तरह आस्थाशील रहने वाला व्यक्ति उसी आस्था के बल पर जीवन मे आने वाले बड़े से बड़े सकटो को भी पार कर सकता है । यही नही प्रतिकूल से प्रतिकूल एव भयावह से भयावह या कि विषम से विषम परिस्थितियाँ भी इसी के बलबूते पर अनुकूल, सुखद एव समरस बन जाती है । इन मुख्य बातो के अतिरिक्त इस आख्यान म आचार्यवर न हिंसा और क्रूरता को प्रेम और करुणा तथा मैत्री एव अहिंसा से जीतने का संदेश भी दिया है । इस महान् सन्देश के साथ ही आचार्यवर इसमे एक और बात की तरफ भी सकेत करते है, कि अन्यायी और आततायी को भय या बल के सहारे नही वरन् क्षमा और सदाशयता क सहारे जीतने का प्रयास करना चाहिए । घोर स्वार्थी, अक्षम और लोभी व्यक्तियो का भी हृदय परिवर्तन इन्ही महान् आदर्शों के माध्यम से किया जा सकता है । इन्ही सब आध्यात्मिक सत्यो और श्रेष्ठ मानवीय मूल्यो को सहज और सरल रूप मे हृदयगम करवाने की दृष्टि से उन्होंने इस कहानी का ताना-बाना बुना है ।

इस आख्यान की कथा भी प्राचीनकाल से सबधित है । प्राचीन भारतीय साहित्य म नगर राज्यो का वर्णन अनेक बार आया है । इस आख्यान का आधार भी ऐसे ही नगर राज्य रहे है । चम्पा नामक एक नगर का शासक पुत्र प्राप्ति की लालसा से प्रेरित होकर एक एक

कर बारह विवाह करता है, किन्तु फिर भी उसकी मनोकामना सिद्ध नही होती। ऐसी स्थिति मे वह अपनी पटरानी के धर्म एव नीतिपूर्ण आचरण से तपस्या के माध्यम स देवशक्ति की आराधना करता है, फलस्वरूप उसे पुत्र प्राप्ति का वर मिलता है। राजा दव द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण करते हुए विश्व सुन्दरी जैसी अनिन्द्य सुन्दरी से विवाह करता है और एक सुन्दर राजकुमार और राजकुमारी का पिता बनता है, किन्तु पूर्वजन्म के कर्मो के कारण एक लम्बी अवधि तक राजा और उसकी प्रिय रानी विश्व सुन्दरी उन दोनो सतानो के सुख से वचित रहते है। राजा की पूर्व विवाहित रानियो के षड़यन्त्र के फलस्वरूप नवजात शिशुओ के स्थान पर सद्यजात कुत्ते के पिल्ल विश्व सुन्दरी के पास लिटा दिये जात है और यह दुष्प्रचारित कर दिया जाता है कि नयी रानी की कुक्षी से इन्ही श्वान-शावको का जन्म हुआ है। उसके पश्चात् उन बच्चो को अन्यत्र पालित-पोषित शिक्षित और सस्कारित होने की कथा सामने आती है और अपने माता-पिता से उनके मिलन से पूर्व घटनाआ के अनेक उतार-चढ़ावो के बीच उा दोनो को अनेक चुनौतियो एव सकटो का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतिया और सकट पूरे आख्यान को अधिक रोचक और कुतुहलपूर्ण बना दते है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि एसे आख्यानो मे सयोग तत्त्व का भरपूर सहयोग लिया जाता है और पूरे कथानक का तानाबाना अनेक कथानक रूढियो के सहारे बुना जाता है। यह आख्यान भी इसका अपवाद नही है। मणिधर सर्प, बावड़ी क तल म बसा भव्य महल, जनविहीन नगर आदि अनक प्रसग विविध आख्यानो मे भिन्न-भिन्न रूप मे आते रहत है और इस आख्यान मे इन सभी का उपयोग कौशल के साथ किया गया है।

आचार्य नानेश का एक अन्य आख्यान है लक्ष्य वेध'। अतिमानवीय पात्रो और अलौकिक घटना प्रसगा के सहारे इस आख्यान की कथा का निर्माण किया गया, जिसमे कथानक रूढिया का भी भरपूर प्रयोग किया गया है। दो राजकुमार-मानसिह और अभयसिह इस आख्यान के प्रमुख पात्र है। इन्ही दोनो भाइया के घटना बहुल जीवनवृत्त के सहारे पूरा आख्यान गढ़ा गया है। इस आख्यान का मुख्य उद्देश्य जीवन मे नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठापना है। आचार्य श्री ने इस आख्यान के माध्यम से यह प्रतिपादित किया है कि जीवन मे श्रेष्ठ नैतिक मूल्यो को धारण करने वाल व्यक्तियो को अनेक बाधाओ सकटो से गुजरते हुए भी अन्ततोगत्वा सुख और सतोष प्राप्त होता है।

विषम से विषम परिस्थितिया एव प्रतिकूल से प्रतिकूल प्रसगो में भी ऐसे पात्र अपने जीवनादर्शों स विचलित नही होते हैं। वस्तुत ऐसी विपरीत परिस्थितियाँ तो उनके जीवन की कसौटी बनती है और वे उस पर खरे उतरते है। दु ख, अभाव, पीड़ा या सन्ताप की अग्नि म तपकर उनका जीवन अधिक भास्वर एव प्रखर बनकर उभरता है। यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यातव्य है कि अभयसिह क जीवन म जिन नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठापना की गयी है, उसकी पृष्ठभूमि म है- उच्च आध्यात्मिक आदर्श। वस्तुत इस आख्यान के चरित्र नायक अभयसिह के जीवन का नियामक तत्त्व उसकी अध्यात्म चतना ही है। यो तो वह पूव जन्मा के सस्कारा के कारण सहज ही नीतिनिष्ठ एव धर्मपरायण व्यक्ति है, किन्तु जगल प्रवास के दौरान एक महात्मा के ससर्ग से नमस्कार महामत्र के महात्म्य से परिचित हान क बाद ता उसकी अध्यात्म-चेतना इतनी अधिक प्रबल हो जाती है कि मृत्यु क प्रतिरूप प्रतीत हान वाले भयावह स भयावह प्रसग भी उसे क्षण भर के लिए भी विचलित नहीं कर पाते है।

वस्तुत यह आख्यान आज की भोगमूलक भौतिकतावदी सस्कृति म जीन वाले लोगों को एक बहुत बड़ा सन्देश देता है। यह आख्यान हमे दिखलाता है कि जहाँ व्यक्ति की आस्था आध्यात्मिक मूल्यो क प्रति दृढ होती है वहाँ न ता असफलताजन्य कुण्ठाए जन्म लती हैं और नही सत्रास और मृत्यु भय की काली छायाए उसके जीवन को घरती है। इसके विपरीत उसकी

आध्यात्मिक निष्ठा उसमे गहरे आत्म विश्वास को जन्म देती है और यही निष्ठा उसकी चेतना को उर्ध्वगामी बनाती है। ऐसा व्यक्ति विपत्तियो, बाधाओ और असफलताओ से क्षुब्ध या विचलित नही होता और न ही सफलताए, सुख और उपलब्धिया उसके मन मे अहकार के भाव को जगाती हैं। वह तो सुख और दु ख दोनो मे सम रहने की साधना करता है। वस्तुत उसकी यह साधना समता दर्शन का एक वरेण्य रूप हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

इस आख्यान की एक और उल्लेखनीय विशेषता है कि इसमे छोटे-छोटे रोचक घटना-प्रसगो के बीच आध्यात्मिक जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्रो को इस कौशल के साथ पिरोया गया है कि पाठक को कही भी यह नही लगता है कि वह गूढ, दार्शनिक प्रश्नो मे उलझ रहा है। जैन धर्म के महत्त्वपूर्ण कर्म सिद्धान्त को अत्यन्त सरल रूप मे कथा के साथ इस तरह अनुस्यूत किया गया है कि उसकी दुरूहता या जटिलता का भान भी सामान्य पाठक को नही होता। आचार्य श्री ने प्रसगवशात् धर्म और अध्यात्म के गूढ सिद्धान्तो को भी अत्यन्त सरल भाषा एव सुबोध रूप मे प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही जहाँ कही भी उन्हे अवकाश मिला है, वहा वहा वे नैतिक मूल्यो के समर्थन मे भी अपने उद्गार व्यक्त करते चले जाते हैं।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आचार्य श्री नानेश के ये तीनो आख्यान प्राचीन कथासूत्र को लेकर भी वर्तमानयुग को एक महत्त्वपूर्ण उद्बोध देते है। इनमे जीवन के शाश्वत् मूल्यो की स्थापना का महत्तर कार्य सम्पादित हुआ है। धर्म और अध्यात्म, नीति और मूल्यनिष्ठा, पवित्रता और दृढता इन सभी को साथ लेकर चलते हुए ये आख्यान अपनी प्रासगिकता को सदैव बनाये रखेंगे, ऐसा विश्वास है।

-७ ग १५, पवनपुरी, दक्षिण विस्तार, बीकानेर

❑ मगनलाल मेहता

समीक्षण ध्यान की प्रासगिकता

समीक्षण शब्द क्या है ?- हिन्दी साहित्य मे एक शब्द है समीक्षा'। जब किसी पुस्तक की समीक्षा की जाती है तो उस पुस्तक मे क्या अच्छाइया है और क्या कमिया है, इसका विश्लेषण किया जाता है। यही उस पुस्तक के समीक्षक का कार्य हाता है। समीक्षण' शब्द भी तद्नुरूप है। यह एक अध्यात्मिक शब्द है जिसका अर्थ भी लगभग इसी तरह का है। यहा समीक्षण का अर्थ लिया गया है समभाव से देखना। यह समभाव क्या है और समभाव से किसे देखना, यह समझना पहले आवश्यक है ? देखते तो हम प्रतिदिन हैं अपने नेत्रो से लेकिन बाहरी व्यक्ति अथवा वस्तु को। यहा देखने से तात्पर्य है स्वय को देखना। स्वय के द्वारा स्वय का अवलोकन। दूसरे को देखने के लिए आख चाहिए लेकिन स्वय को देखने के लिए इन बाहरी आखो की आवश्यकता नही है। स्वय को देखने के लिए चाहिए अतर मन की आखें।

प्रश्न होता है स्वय मे क्या देखें ? क्या भीतर का हाड़, मास अथवा शरीर की रचना को देखना है ? तो उत्तर है नही। यहा स्वय को देखने से तात्पर्य है स्वय की वृत्तियो को दखना।

वृत्तिया क्या हैं ? - प्रत्येक मनुष्य मे अनेक प्रकार की वृत्तिया होती हैं। जिन्हे हम उसकी आदते अथवा स्वभाव के रूप मे पहचानते हैं। हमे थोड़ा-सा कोई अपशब्द कह दे, अपमान कर दे अथवा हमारे स्वार्थ के कहीं चोट लग जाए तो हमे तुरत क्रोध आ जाता है। थोड़ी सी सपत्ति अथवा पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति हा जाती है तो अहभाव की जागृति होना स्वाभाविक है। स्वार्थ की पूर्ति के लिए छलकपट करना, ससार के सारे सुख मुझे प्राप्त हो जावें ऐसी इच्छा करना और तद्नुरूप व्यवहार करना ये सब मनुष्य की वृत्तिया हैं। इन्ही वृत्तियो के फलस्वरूप हिंसा, झूठ चोरी, व्यभिचार सग्रह आदि अन्य दूषित वृत्तिया भी मनुष्य में उत्पन्न हो जाती हैं। आवश्यक नही कि मनुष्य मे सभी वृत्तिया दूषित ही होती हैं। अनेक अच्छी वृत्तिया भी होना सभव है। दान, दया, करुणा प्रेम, सेवा, तप त्याग,साधना आदि शुभ वृत्तिया भी मनुष्य मे होती हैं। इन सारी वृत्तियो के उभरने का मूल कारण है राग अथवा द्वेष की भावना। इसी राग अथवा द्वेष के कारण कभी शुभ वृत्ति और कभी अशुभ वृत्ति मनुष्य में उभरती रहती है।

वृत्तिया निर्मित कैसे होती है - मनुष्य का स्वभाव दो कारणो से निर्मित हाता है और इन्ही से उसकी जीवन शैली का पता लगता है। पहला- उसके पूर्व भवो मे किये गये कर्मों के फलस्वरूप और दूसरा उसके वर्तमान जीवन मे जिस वातावरण मे और जिन लोगो के साथ वह रहता है उसके अनुसार उस सस्कार का निर्माण हाता है। मनुष्य का यह भी स्वभाव है कि वह दूसरो की दूषित वृत्ति को तो बहुत जल्दी देख लता है और उसे काफी बढ़ा-चढ़ाकर वर्णित करने मे भी अत्यत प्रसन्नता का अनुभव करता है। दूसरे व्यक्तियो के गुण देखनेवाले विरले पुरुष ही हाते हैं। इसी के साथ मनुष्य को स्वय के अवगुण तथा स्वय की दूषित वृत्तिया कभी दिखाई नहीं देती हैं। अपने को तो वह सदैव सर्वगुण सपन्न ही समझता है। अपने अवगुणो को भी वह सद्गुणो के रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

वृत्तियो का जीवन पर प्रभाव- आध्यात्मिक - मनुष्य की इन वृत्तिया के कारण उसके जीवन पर दो तरह का प्रभाव हाता है। एक आध्यात्मिक और दूसरा व्यवहार का। आध्यात्मिक दृष्टि से हम सोचे ता हमे यह दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है। जिसे प्राप्त करने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं। धर्म को थोड़ा भी समझने वाला व्यक्ति जानता है कि जीव की चार गतियाँ होती है। देव, मनुष्य, तिर्यंच और नरक। अपने द्वारा किये गये शुभ अथवा अशुभ कर्मों के कारण वह इन चारो गतियो म परिभ्रमण करता रहता है। और इस कर्मबध की प्रक्रिया का प्रमुख कारण है हमारी वृत्तिया। अशुभ वृत्तिया नरक और तिर्यंच गतियो के कर्मबध और शुभ वृत्तिया देव और मनुष्य गति के कर्मबध का कारण है। देव और नरक गति को हम प्रत्यक्ष नही देखते लेकिन शास्त्रों मे वर्णित उनके स्वरूप में हम विश्वास करते हैं। मनुष्य और तिर्यंच गति हमारे सामने प्रत्यक्ष है। तिर्यंच गति म होनेवाले दुखों को हम प्रतिदिन देखते है। इसी प्रकार मनुष्य जाति मे भी बिरले पुरुष हाते हैं जिन्हे स्वस्थ शरीर उत्तम कुल, धर्मश्रवण के सुअवसर और सुने गए धर्म के मार्ग पर चलन की रुचि जागृत होती है। उत्तम धर्मगुरुओ का सयोग भी सद्भाग्य से ही प्राप्त होता है अन्यथा मनुष्य भव प्राप्त करके भी वह जीव पशु की तरह जीवन जीता है और पशु की तरह ही मर जाता है। मनुष्य गति ही एक ऐसी गति है जहा वह उत्कृष्ट साधना कर सर्वश्रेष्ठ मोक्ष गति को प्राप्त करने का सद्प्रयास कर सकता है। मनुष्य मे ज्ञान शक्ति और आचरण शक्ति दोनो विद्यमान होती है।

व्यावहारिक - व्यावहारिक जीवन की दृष्टि से हम देखे तो इन दूषित वृतियो के कारण मनुष्य सदैव तनावग्रस्त रहता है।

आज के मानव को हम देखे तो चाहे गरीब हो या अमीर, चाहे सत हो या साधारण व्यक्ति, पदासीन हो अथवा पद विहीन, प्रत्येक व्यक्ति प्रतिक्षण तनावग्रस्त रहता है, चिता से घिरा रहता है और जितना अधिक धन, जितना बड़ा पद उतना ही अधिक तनाव। इस तनाव का भी सबसे बड़ा कारण यह है कि मनुष्य अपनी इच्छाओ को, आकाक्षाओ को इतना बढ़ा लेता है कि वे दुष्पूर हो जाती हैं और जब इच्छाए पूरी नही होती तो तनाव ग्रस्त हो जाता है और उन्हे पूर्ण करने के लिए अनेक प्रकार के अनैतिक कार्य करने लग जाता है। फिर भी मनुष्य की सभी इच्छाये कभी पूरी नही होती हैं। रोज नई नई इच्छाए जागृत होती रहती हैं। इसी मानसिक तनाव के कारण मनुष्य अनक प्रकार की बीमारिया से ग्रसित हो जाता हैं और समय से पूर्व मृत्यु को प्राप्त कर लेता है। हार्ट अटैक, हेमरेज, ब्लडप्रेशर, डायबिटिज आदि तनावग्रस्त जीवन के दुष्परिणाम हैं।

समीक्षण साधना क्यों ?

ससारी दूषित वृत्तिया हमसे कैसे दूर हों। हमारे स्वय के दोष हमे कैसे दिखाई दें और कैसे हम तनाव मुक्त सुखी प्रसन्न और आत्मिक शाति युक्त जीवन जी सके, उसका एक मात्र तरीका है 'समीक्षण ध्यान साधना'। आचार्य श्री नानेश की यह एक अनुपम देन है जो मनुष्य को सुखी और शात जीवन जीने की कला सिखाती है। उन्होंने केवल इस साधना विधि को उपदेशित ही नही किया लेकिन पहले इसे अपने स्वय के जीवन मे उतारा फिर हम उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान की। इसी साधना के फलस्वरूप अनेक विषम परिस्थितियो मे भी वे अपने आपको समभाव म स्थिर रख सके।

ध्यान क्या है ?- ध्यान साधना प्रत्येक धर्म मे एक प्रचलित साधना विधि है। जैन साहित्य म मन की किसी एक दिशा म स्थिरता को ध्यान कहा है और इसके चार स्वरूप बताये हैं। आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान।

इनमे प्रथम दो अशुभ ध्यान है जा अशुभ कर्मबध के कारण और बाद के दो शुभ ध्यान है जो हमे कर्म मुक्ति के मार्ग की ओर अग्रसर करते है। शुक्ल ध्यान ध्यान की वह श्रेष्ठतम अवस्था है जो अत्यत उग्र साधना क पश्चात मोक्ष के निकट होने पर ही पैदा होती है। लेकिन धर्मध्यान ऐसी प्रक्रिया है जो साधारण अभ्यास से कोई

भी साधक प्राप्त कर सकता है। समीक्षण ध्यान-साधना अपनी इन्ही वृत्तिया को अशुभ से शुभ की ओर मोड़ने की कला है। यद्यपि हमारा अतिम लक्ष्य है कममुक्त अवस्था प्राप्त करना लेकिन उस प्राप्त करने के पूर्व अशुभ से शुभ की ओर प्रवृत्त होना आवश्यक है।

साधक का लक्ष्य - हमारे सबके जीवन का एक मात्र लक्ष्य है- सच्चा सुख और शाति प्राप्त करना। बाहरी भौतिक सुख चाहे वह किसी व्यक्ति से सबधित हो अथवा वस्तु से वह निश्चित रूप से अस्थाई है, केवल सुखाभास है। ऐसा सुख एक न एक दिन निश्चित रूप से दुख म परिवर्तित होने वाला है। क्योंकि वह नाशवान वस्तुओ पर आधारित है। सच्चा सुख स्वय के भीतर आत्मा मे है क्योंकि वह स्थाई है सदैव साथ रहने वाला है। हमारी आत्मा की तीन स्थितिया होती है- बहिरात्मा जा ससार मे ही सुख ढूढ रही है, अतरात्मा जो स्वय मे लीन हैं और परमात्मा जा कर्ममुक्त अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं। हमारा लक्ष्य है बहिरात्मा से अतरात्मा और अतरात्मा स परमात्म-पद की ओर अग्रसर होना।

साधना कैसे करे ? इस परमात्म दशा को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम हम हमारी दूषित वृत्तियो का अशुभ से शुभ की आर मोड़ने का प्रयास करते हैं। समीक्षण ध्यान साधना हमे यही कला सिखाती है। इस साधना के द्वारा सर्वप्रथम हम हमारे मन को एकाग्र करने का प्रयास करते हैं जिसके लिए प्राणायाम की अनेक क्रियाओ का प्रयोग किया जाता है। तत्पश्चात् हम हमारी एक एक दूषित वृत्ति का चितन करते है- उसकी उत्पत्ति का कारण और उससे होने वाले दुष्परिणामो का चिन्तन करते है और उन्ह अशुभ से शुभ की ओर माड़ने का प्रयास करते है।

प्रयोग विधि ध्यान साधना प्रारभ करने के पूव द्रव्य, क्षेत्र काल और भावा की शुद्धता और निमलता देखना प्रथम आवश्यकता है। आहार की सात्विकता और परीमितता तथा वाणी की निश्चलता अथवा मौन साधना के अन्य सहायक तत्त्व है।

साधक किसी शात एकात स्थान पर अनुकूल समय देखकर ध्यान मुद्रा मे बैठ जाए। नेत्र बद रखे, गर्दन और रीढ की हड्डी सीधी रखे। अपने पहनन क वस्त्र, आसन आदि की शुद्धता और अनुकूलता का पूरा ध्यान रखे। सक्षेप मे इस बात का पूरा ध्यान रखे कि किसी तरह का प्रमाद, आलस्य अथवा निद्रा न आने पाय। ध्यान प्रारभ करने के पूर्व अपने मन मे साधना और उससे प्राप्त होनेवाल फल के प्रति पूर्ण विश्वास और उत्साह होना तथा अपने भावा की निर्मलता बनाये रखना अत्यत आवश्यक है। इसी साधना के द्वारा अनेक महापुरुष मुक्त हुए है

आसन ग्रहण करने के पश्चात् मन को एकाग्र करन के लिए श्वास के प्रयोग ५-१० मिनट तक करे। मन की एकाग्रता प्राप्त होने पर अपनी विगत दैनिक जीवन-चर्या का चितन कर उसका विश्लेषण कर। दिन भर मे कौन कौन स गलत विचार अपन मन मे आय अथवा गलत कार्य अपने द्वारा किए गये, उनको एक-एक कर ध्यान मे लाये। कभी क्रोध, कभी गलत शब्दो का प्रयोग, कभी अहकार, कभी किसी रूपवती को देखकर वासना की वृत्ति, कभी स्वार्थ क वशीभूत होकर किसी को ठगन की भावना ऐस जो भी गलत कार्य हों उनका चितन करे। उनसे हानेवाली हानिया और कमबध का चितन कर। इसी प्रकार दिन भर म जो शुभ भाव पैदा हुए हों। दान, दया करुणा, सेवा के उन्हे भी एक एक कर ध्यान मे लावें। इसके पश्चात् जो गलत कार्य हुए हैं उनके लिए पश्चताप करत हुए भविष्य म न करने का सकल्प अपन मन म करे और जो अच्छ काय हुए है उन्ह और अधिक पुष्ट करने का सकल्प कर। पन्द्रह मिनट तक उक्त प्रयोग करने के बाद अत म मनुष्य जीवन की दुलभता, कर्मबध के स्वरूप और अपनी आत्मा तथा परमात्मा की समानता का चितन करत हुए अपनी आत्मा की पवित्रतम दशा प्राप्त करन का चितन करे। अत में चार शरण ग्रहण करत हुए अत्यत शात एव प्रसन्न मुद्रा म ध्यान साधना स बाहर आन का प्रयास कर। इस दैनिक साधना क अतिरिक्त हम हमारी [illegible] विशेष दूषित वृत्ति [illegible] चाह वह क्रोध मान माया लोभ की हो अथवा किसी

झूठ, चोरी, वासना, अथवा सग्रह की या अन्य कोई वृत्ति हो तो उस पर भी विशेष चिन्तन करते हुए उसे दूर करने की साधना कर सकते हैं।

सकल्प के साथ साधना सफलता की कुजी है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह सत हो या साधक। साधारण व्यक्ति, स्त्री हो या पुरुष उसके लिए इस प्रकार की दैनिक साधना निश्चित रूप से लाभकारी होगी। आत्म कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होने मे सहायक होगी।

सभी का कल्याण हो, सबका मगल हो।

-चादनी चौक, रतलाम (म प्र)

सयमित जीवन हो

एक डाक्टर थे। उनका नाम था डाक्टर थूर। वे अपने क्षेत्र में तो कार्य करते ही थे उसके अतिरिक्त छात्रों को शिक्षा देने का भी कार्य करते थे। एक दिन एक छात्र ने पूछा 'डाक्टर साहब मैं इस संसार में रहता हुआ सुखी कैसे रह सकता हूं।' कृपया मुझे एक मंत्र बताइये। डाक्टर थूर ने कहा 'यदि तुम सुखी रहना चाहते हो, तो ब्रह्मचर्य का पालन करो।' यह सुनकर छात्र ने कहा 'मेरे लिये,आजीवन ब्रह्मचर्य रखना तो कठिन है। तलवार की धार पर तो एक बार चला भी जा सकता है, किंतु यह व्रत तो लगभग असम्भव है।' डाक्टर ने कहा 'यदि आजीवन ब्रह्मचारी न रह सकते हो तो जीवन में एक बार क अतिरिक्त ब्रह्मचारी रहो।' छात्र ने कहा कि यह भी कठिन है तो डाक्टर ने कहा कि 'महीने मं एक बार के अतिरिक्त ही ब्रह्मचारी रहना। छात्र को इसमें भी कठिनाई प्रतीत हुई त्त डाक्टर ने कहा कि महीने में दोबार के अतिरिक्त ही ब्रह्मचारी रहो। किन्तु छात्र के लिये तो यह भी कठिन था। तब डाक्टर ने कहा कि यदि यह भी तुम्हारे लिये कठिन है 'तब तो जब तुम जिस किसी के भी साथ रहो, कफन की सामग्री अपने साथ रखना।

इस प्रसंग को आपको सामने रखने का यही अभिप्राय है कि जीवन में संयम की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि आप मर्यादित जीवन व्यतीत करेंगे तो सुखी रह सकेंगे अन्यथा अमर्यादित जीवन कभी सफल और सुखी नहीं बन सकेगा।

आचार्य नानेश

□ रिकु ललवाणी

समता दर्शन एक दृष्टि

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानेश ने अपन चिन्तन-मनन से नवीनतम युगीन समस्याओ का समाधान आध्यात्मिक दृष्टि से किया। आज के युग मे व्याप्त कुरीतिया, व्यसनो, भ्रष्टाचारो का बहिष्कार कर जन समुदाय को दिशा बोध देना उनका प्रमुख ध्येय रहा है।

एसे समय मे आचार्य श्री नानश ने विश्व मे फैली विषमता का प्रतिघात करते हुए सभी जन का एक अमोघ उपाय बताया है, वह है समता दर्शन।

<u>समता दर्शन पर एक दृष्टि</u> समता के दार्शनिक एव व्यावहारिक पहलुओ पर विस्तार से चिंतन किया जा सक्ता है। समता समग्र जीवन मे समाहित होनी चाहिए। समता की विरोधी स्थिति होती है ममता की स्थिति। ममता मे मम शब्द का अर्थ होता है मेरा और ममता का अर्थ है मेरापन। जहा ममता है वहा समता नही। समता का अर्थ है सम, समभाव समत्व। समभाव बनता है तो समदृष्टि जन्म लती है। तव सम आचरण ढलता है और साम्यता आ जाती है।

समता का साधक सुख को अपने ही अन्तःकरण मे खोजता है और उसके लिए सबसे पहले अन्तरावलोकन करना सीखता है। इस प्रक्रिया से वह एक ओर प्रभु के निर्मल स्वरूप को देखता है तो दूसरी ओर अपनी आत्मा के मैल को धाने के लिए आगे बढ़ता है और वह समतावादी समताधारी एव समतादर्शी क सोपानों पर चढ़ता हुआ समता दर्शन से जीवन दर्शन की गहराइयो से, आत्म-दर्शन से साक्षात्कार करता हुआ परमात्म दर्शन की ओर अग्रसर होता है।

<u>समता दर्शन की परिभाषा</u> दशन की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए ज्ञानिया ने कहा है कि- दर्शन वह उच्च भूमिका है जहा पर तत्वो का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है।

समता दर्शन ऐसी तमाम विषमताओ तथा विपरीतता के बीच का ऐसा मार्ग है, जो आज के सतप्त मनुष्य को शाति सौख्य, मैत्री और आत्मोनयन की मगलकारी दिशा मे ल जाता है।

कि जीवनम् ? सम्यक निर्णायक समतामयच्च यत् तज्जीवनम्।

समता वह अमोघ शास्त्र है जिसका प्रयोग करने से आक्रमणकारियो के जीवन पक्ष भी सभ्य बनकर बलिदान एव साहस की वास्तविकता को स्वीकार कर लेत है

विश्व शाति का एक मात्र अमोघ उपाय है समता-दर्शन । समियाए धम्मे आरिएहिं पवइए।

समभाव समन्वय, साम्यदृष्टि, साम्य विचार व सादगी आदि समता के सूत्र हैं।

<u>समता दर्शन का उद्देश्य</u> अन्तर्बाह्य विषमताओ का अत करना ही समता दर्शन का उद्देश्य है। समता दशन केवल विचार सामग्री नही, विचार क्राति भी नही अपितु यह तन्वत आचार क्राति है। अत इसक विस्फाट को पहली आवश्यकता है कि चेतन जागृत होकर अपने स्वत्व के प्रति सावधान हो जाए।

आचार्य श्री ने समता दर्शन को व्यापक एव व्यावहारिक बनाकर प्रस्तुत किया। उन्होंने कर्मासक्ति म कर्म समृद्धि की ओर बढ़ने का आह्वान किया।

झूठ, चोरी, वासना, अथवा सग्रह की या अन्य कोई वृत्ति हो तो उस पर भी विशेष चिन्तन करते हुए उसे दूर करने की साधना कर सकते हैं।

सकल्प के साथ साधना सफलता की कुजी है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह सत हो या साधक। साधारण व्यक्ति, स्त्री हो या पुरुष उसके लिए इस प्रकार की दैनिक साधना निश्चित रूप से लाभकारी होगी। आत्म कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होने मे सहायक होगी।

सभी का कल्याण हो, सबका मगल हो।

-चादनी चौक, रतलाम (म.प्र)

सयमित जीवन हो

एक डाक्टर थे। उनका नाम था डाक्टर थूर। वे अपने क्षेत्र में तो कार्य करते ही थे उसके अतिरिक्त छात्रों को शिक्षा देने का भी कार्य करते थे। एक दिन एक छात्र ने पूछा 'डाक्टर साहब मैं इस संसार में रहता हुआ सुखी कैसे रह सकता हूं।' कृपया मुझे एक मंत्र बताइय। डाक्टर थूर ने कहा 'यदि तुम सुखी रहना चाहते हो, तो ब्रह्मचर्य का पालन करो।' यह सुनकर छात्र ने कहा 'मेरे लिये,आजीवन ब्रह्मचर्य रखना तो कठिन है। तलवार की धार पर तो एक बार चला भी जा सकता है, किंतु यह व्रत तो लगभग असम्भव है। डाक्टर ने कहा यदि आजीवन ब्रह्मचारी न रह सकते हो तो जीवन में एक बार क अतिरिक्त ब्रह्मचारी रहो। छात्र ने कहा कि यह भी कठिन है तो डाक्टर ने कहा कि महीने में एक बार के अतिरिक्त ही ब्रह्मचारी रहना।' छात्र को इसमें भी कठिनाई प्रतीत हुई तो डाक्टर ने कहा कि महीने में दोबार के अतिरिक्त ही ब्रह्मचारी रहो। किन्तु छात्र के लिये तो यह भी कठिन था। तब डाक्टर ने कहा कि यदि यह भी तुम्हारे लिये कठिन है तब तो जब तुम जिस किसी के भी साथ रहो, कफन की सामग्री अपने साथ रखना।

इस प्रसंग को आपको सामने रखने का यही अभिप्राय है कि जीवन में संयम की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि आप मर्यादित जीवन व्यतीत करेंगे तो सुखी रह सकेंगे, अन्यथा अमर्यादित जीवन कभी सफल और सुखी नहीं बन सकेगा।

आचार्य नानेश

❑ रिकु ललवाणी

समता दर्शन एक दृष्टि

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानेश ने अपन चिन्तन-मनन से नवीनतम युगीन समस्याओ का समाधान आध्यात्मिक दृष्टि से किया। आज के युग मे व्याप्त कुरीतिया, व्यसनो, भ्रष्टाचारो का बहिष्कार कर जन समुदाय को दिशा बोध देना उनका प्रमुख ध्येय रहा है।

ऐसे समय मे आचार्य श्री नानेश ने विश्व मे फैली विषमता का प्रतिघात करत हुए सभी जन का एक अमोघ उपाय बताया है, वह है समता दर्शन।

<u>समता दर्शन पर एक दृष्टि</u> समता के दार्शनिक एव व्यावहारिक पहलुओ पर विस्तार से चिंतन किया जा सकता है। समता समग्र जीवन मे समाहित होनी चाहिए। समता की विरोधी स्थिति होती है, ममता की स्थिति। ममता मे मम शब्द का अर्थ होता है मेरा और ममता का अर्थ है मेरापन। जहा ममता है वहा समता नही। समता का अर्थ है सम, समभाव, समत्व। समभाव बनता है तो समदृष्टि जन्म लेती है। तब सम आचरण ढलता है और साम्यता आ जाती है।

समता का साधक सुख को अपने ही अन्तःकरण मे खोजता है और उसके लिए सबसे पहले अन्तरावलोकन करना सीखता है। इस प्रक्रिया से वह एक ओर प्रभु के निर्मल स्वरूप को देखता है तो दूसरी ओर अपनी आत्मा के मैल को धोने के लिए आगे बढ़ता है और वह समतावादी समताधारी एव समतादर्शी के सोपानों पर चढ़ता हुआ समता दर्शन से जीवन दर्शन की गहराइयो से, आत्म-दर्शन से साक्षात्कार करता हुआ परमात्म दर्शन की ओर अग्रसर होता है।

<u>समता दर्शन की परिभाषा</u> दर्शन की परिभाषा प्रस्तुत करत हुए ज्ञानियो ने कहा है कि दर्शन वह उच्च भूमिका है जहा पर तत्वो का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है।

समता दर्शन ऐसी तमाम विषमताओ तथा विपरीतता के बीच का ऐसा मार्ग है जो आज के सतप्त मनुष्य को शाति, सौख्य, मैत्री और आत्मोनयन की मगलकारी दिशा मे ल जाता है।

कि जीवनम् ? सम्यक निर्णायक समतामयच्च यत् तज्जीवनम्।

समता वह अमोघ शास्त्र है जिसका प्रयोग करने से आक्रमणकारियो क जीवन पक्ष भी सभ्य बनकर बलिदान एव साहस की वास्तविकता को स्वीकार कर लेते है

विश्व शाति का एक मात्र अमोघ उपाय है समता-दर्शन। समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए।

समभाव, समन्वय, साम्यदृष्टि, साम्य विचार व सादगी आदि समता के सूत्र हैं।

<u>समता दर्शन का उद्देश्य</u> अन्तर्बाह्य विषमताओ का अत करना ही समता दर्शन का उद्देश्य है। समता दर्शन केवल विचार सामग्री नही, विचार क्राति भी नही अपितु यह तत्वत आचार क्राति है। अत इसक विस्फोट का पहली आवश्यक्ता है कि चेतन, जागृत होकर अपने स्वत्व के प्रति सावधान हो जाए।

आचार्य श्री ने समता दर्शन को व्यापक एव व्यावहारिक बनाकर प्रस्तुत किया। उन्होंने धर्मासक्ति म कर्म समृद्धि की ओर बढ़ने का आह्वान किया।

'सव्वेसि जीविय पिय'

सद् शिक्षा को प्रत्येक मानव के उदात्त मस्तिष्क मे भरना ही समता-दर्शन का मूल उद्देश्य माना जाता है।

समता दर्शन के सोपान वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे चहुँ ओर जो विष फैल रहा है उसको मिटाने के लिए आचार्य श्री ने हमे समता-दर्शन दिया। समता दर्शन को प्रत्येक व्यक्ति से लेकर सारे ससार मे सकारात्मक रूप देने के लिए आचार्य भगवन ने समता दर्शन के चार सोपान बताये ताकि विश्व मे फैली विषमता, विडबना, विपरीतता, तकरार, विद्रोह की स्थिति मिट सके।

१ समता सिद्धात-दर्शन किसी भी वस्तु को अपनाने से पहले उसकी उपयोगिता, अनुपयोगिता का अवलोकन किया जाता है। समता को जीवन मे अपनाने से पहले उसके सिद्धाता को उपयोगी माना जाए, इसका अवलोकन करना चाहिए। मानव ही नही प्राणी समाज से सबधित सभी क्षेत्रा मे यथार्थ दृष्टि वस्तु स्वरूप उत्तरदायित्व तथा शुद्ध कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान एव सम्यक् सर्वांगीण एव सपूर्ण चरम विकास की साधना, सिद्धात दर्शन का मूलाधार है। जीवन के प्रत्येक कार्य मे समता सिद्धात का होना नितात आवश्यक है। दूसरे के अस्तित्व और अपने अस्तित्व को समान मानना होगा यही इस सोपान के सिद्धात की प्रमुखता है।

२ समता जीवन-दर्शन सिद्धान्त रूप से समता को ग्रहण करने के बाद व्यावहारिक जीवन मे समता अपने आप आने लगती है। समता जीवन-दर्शन व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन को विषमता से हटाकर समता मे बदल देता है। सबके लिए एक तथा एक के लिए सब 'जियो और जीने दो' के सिद्धातो को जीवन मे उतारना समता दर्शन है। सयम नियमो को स्वय को तथा समाज मे प्रतिपादित करना समता जीवन दर्शन है।

३ समता आत्म-दर्शन समता जीवन दर्शन की साधना से ऊपर उठता हुआ व्यक्ति समता आत्म दर्शन की ओर अग्रसित होता है। समता आत्म दर्शन से स्वय की चेतना मे अमूल्य शक्ति स्फूरित करने का आत्मरथ साधन है। आत्म साधक व्यक्ति जड़ व चेतन के स्वरूप को समझ जाता है और नित्य आत्म दर्शन के लिए साधना मे तल्लीन हो जाता है। सतत् एव सत्य साधना पूर्ण सेवा तथा स्वानुभूति के बल पर पुष्ट करते हुए सारा जहा ही अपना घर है' कि भावना उसमे व्याप्त हो जाती है और आत्म-दर्शन को प्राप्त कर लेता है।

४ समता परमात्म दर्शन जब आत्म-साधक व्यक्ति विश्व की समस्त आत्माओ के साथ अपनी आत्मा के समान व्यवहार करेगा तो उसे अपने आप ही परमात्म दर्शन हो जाएगा क्योंकि उसमे मेरे, तेरे का भाव मन मे नही रहेगा। परमात्मस्वरूप प्रकट होने लगेगा और वीतरागी बन जाएगा। उज्ज्वलतम स्वरूप प्राप्त करके स्वय परमात्मा बन जाएगा।

इक्कीस सूत्रीय योजना इन चार सोपानो को मूल बनाकर आचार्य देव ने समता समाज सर्जना पर विशेष बल दिया। विषमता से विपाक्त विश्व मे अमृत का सचार करने के लिए समता दर्शन को अपनाना होगा। समता समाज रचना के लिए आचार्य प्रवर ने इक्कीस सूत्रीय योजना का प्रतिपादन किया।

समता-दर्शन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे महत्त्व - वर्तमान युग मे आत्मा और परमात्मा सबधी चर्चाए कुछ धूमिल सी हो रही हैं। पूर्णता की गहराई मे मनुष्य प्रवेश नही करता वह आत्माभिमुखी नही बन पाता। आज की इस स्थिति का कारण यह है कि मानव केवल भौतिक वातावरण के प्रवाह मे अपने जीवन को बहा रहा है इसके लिए समता दर्शन का महत्त्व आवश्यक है, क्योंकि समता दर्शन विषमता के विरूद्ध विवेक युक्त चिन्तन है। विषमता के मूल मानव मन को आज व्यवस्थित एव सतुलित बनाने की सबसे अधिक आवश्यकता है। इस मानव मन की विषमता को हटाने के लिए समता लाना अत्यधिक आवश्यक कड़ी है। समता दर्शन के धरातल पर यदि वर्तमान मानव मन की समस्याओ का समाधान खोजा जाए तो विश्व की सभी समस्याओ का समाधान भी सरलतापूर्वक खोजा जा सकता है। समता दर्शन के मर्म को आतरिकता से समझना होगा। समता दर्शन का

दिग्दर्शन हम आचार्य प्रवर ने हर समय कराया। यह किसी व्यक्ति जाति या दल की धरोहर नही है, यह तो आत्मीय गुणा की विकसित अवस्था है, आत्मशक्ति का उभार है जो आत्मशक्ति प्रत्येक प्राणी मे रही है। आज सावधान होकर इस आत्म-शक्ति को पहचानना होगा। तभी अदर बाहर की सारी विषमता समाप्त होगी। इस युग में आचार्य श्री नानेश के बताये मार्ग पर चलकर समता साधका एव चरित्र सपन्न व्यक्तिया का एक ऐसा वर्ग बन जो समता सिद्धात का प्रचार-प्रसार कर। युद्ध की विभीषिका आज जहा सभ्यता एव सस्कृति का हनन करने क लिए तत्पर है, वहा समता का मगलमय स्वर उसे सुरक्षित रख सकता है।

आचार्य भगवन् ने सुदीर्घ-साधना एव गहन चिन्तन की विथिकाओ मे विहरण कर समता-दर्शन का अद्भुत उपहार हमे भेट किया है। समता से भावी एव वर्तमान का नव्य-भव्य निर्माण सभव है। यह समता-दर्शन इस युग के लिए ही नही अपितु प्रत्येक युग-युगान्तर के लिए प्रकाश स्तम्भ बनकर रहेगा। शाति का विमल ध्वज इसी के आधार पर फहराया जा सकता है। वर्तमान विषम जीवन को सभी स्तरों पर एक नया परिवर्तन देने के लिए समता दर्शन ही अमृतमय उपाय है। समता-दर्शन डूबते हुए जन-जीवन की एक मात्र पतवार बन सकती है। अन्त म मै यह कहना चाहती हू कि इस समता दर्शन को सुने पढ़ व गहन चिन्तन करे और अपने जीवन म उतारे। दूसरा का भी प्रेरणा देव और अपने आराध्य देव आचार्य श्री नानेश का स्वप्न पूरा कर।

-गगाशहर (बीकानेर)

गीता का रहस्य

एक बार गांधीजी साबरमती आश्रम का निर्माण करा रहे थे तो गुजरात के एक बड़े विद्वान उनके पास आए और कहने लगे ' महात्मन! मैं आपके पास रह कर गीता का गूढ़ रहस्य समझना चाहता हूँ। महात्माजी ने उनकी बात सुन ली और उन्होंने रावजी भाई को बुलाया। व आश्रम की जिम्मेदारी लेकर चल रहे थ। रावजी भाई आए तो महात्माजी ने कहा ' ये गुजरात के प्रख्यात व्यक्ति हैं और अपने पास कोई काम हो तो इन्हें उस पर लगा दें।

रावजी भाई के पास आश्रम निर्माण का सारा काम था। उन्होंने उनसे कहा कि आप गांधीजी के पास रहना चाहते हैं तो ईंटे उठाकर रखते जाइये व कुछ बोल नहीं सके। दो चार रोज तो उन्होंने ईंटे उठाई, फिर तंग आ गए और रावजी भाई से कहने लगे 'मेरी तो आपने दुर्दशा कर दी। मैं तो गीता का गूढ़ रहस्य समझने के लिए आया था और आपने मजदूर का काम मेरे सुपुर्द कर दिया मेरा काम यह नहीं है। यह तो मजदूरों का काम है।

यह बात जब गांधीजी के पास गई तो उन्होंने कहा कि यही तो गीता का गूढ़ रहस्य है। आप केवल गादी तकिये के सहारे बैठकर गीता का गूढ़ रहस्य समझना चाहते हैं तो क्या वो समझ में आ सकता है। आप अपने कर्त्तव्य को समझें और जिस क्षेत्र में चल रहे हैं उसकी जिम्मेदारी लें तो यह गूढ़ रहस्य समझ में आ सकता है।

आचार्य नानेश

समता दर्शन एक अनुशीलन

समता, साम्य या समानता मानव जीवन एव मानव समाज का शाश्वत दशन है । आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र हो अथवा आर्थिक राजनीतिक व सामाजिक- सभी का लक्ष्य समता है, क्योंकि समता मानव-मन के मूल में है । इसी कारण कृत्रिम विषमता की समाप्ति और समता की अवाप्ति सभी का अभीष्ट होती है । जिस प्रकार आत्माएँ मूल म समान होती है किन्तु कर्मों का मैल उनमें विभेद पैदा करता है और जिन्हे सयम और नियम द्वारा समान बनाया जा सकता है, उसी प्रकार समग्र मानव मे भी स्वस्थ नियम प्रणाली एव सुदृढ सयम की समाजगत समता का भी प्रसारण किया जा सकता है ।

आज जितनी अधिक विषमता है, समता की माग भी उतनी ही अधिक गहरी है । काश कि हम उसे सुन और महसूस कर सके तथा समता दर्शन के विचार को व्यापक व्यवहार में ढाल सके । विचार पहले और बाद उस पर व्यवहार-यही क्रम सुव्यवस्था का परिचायक होता है ।

वर्तमान विषमता के मूल मे सत्ता व सम्पत्ति पर व्यक्तिगत या पार्टीगत लिप्सा की प्रबलता ही विशेषरूप से कारणभूत है और यही कारण सच्ची मानवता क विकास मे बाधक है । समता ही इसका स्थायी व सर्वजनहितकारी निराकरण है ।

समता दर्शन का लक्ष्य है कि समता, विचार म हो, दृष्टि और वाणी म हो तथा समता, आचरण के प्रत्येक चरण मे हो । जब समता जीवन के अवसरो की प्राप्ति मे होगी और सत्ता और सम्पत्ति के अधिकार म होगी तो वह व्यवहार के समूचे दृष्टिकोण मे होगी । समता, मनुष्य क मन मे, तो समता समाज के जीवन म । समता भावना की गहराइयो म तो समता साधन की ऊँचाइयो मे । प्रगति के ऐसे उत्कृष्ट स्तरो पर समता के सुप्रभाव से मनुष्यत्व तो क्या-ईश्वरत्व भी समीप आने लगेगा ।

विकासमान समता-दर्शन

मानव जीवन गतिशील होता है । उसके मस्तिष्क म नये नये विचारो का उदय होता है । ये विचार प्रकाशित होकर अन्य विचारो को आन्दोलित करते है । फिर समाज मे विचारो के आदान प्रदान एव सघर्ष समन्वय का क्रम चलता है । इसी विचार मन्थन मे से विचार नवनीत निकालने का कार्य युग पुरुष किया करते है ।

कहा जाता है कि समय बलवान होता है । यह सही है कि समय का बल अधिकाशत लोगो को अपने प्रवाह में बहाता है, किन्तु समय को अपने पीछे करन वाले ही युगपुरुष होते है जो युगानुकूल वाणी का उद्घोष करक समय के चक्र को दिशा दान करते है । इ ही युगपुरुषो एव विचारको के आत्म दर्शन से समतादशन का विकास होता आया है । इस विकास पर महापुरुषो के चिन्तन की छाप है तो समय-प्रवाह की छाप भी । और जब आप समतादर्शन पर विचार करे तो यह ध्यान रखने के साथ कि अतीत मे महापुरुषो ने इसक सम्बन्ध म अपना विचार सार क्या दिया है-यह भी ध्यान रखन की आवश्यकता होगी कि वर्तमान युग के सदर्भ में और विचारो के नवीन परिप्रेक्ष्य मे आज हम समता दर्शन का किस प्रकार स्वरूप निर्धारण एव विश्लेषण करे ?

महावीर की समताधारा

ऐतिहासिक अध्ययन से यह तथ्य सुस्पष्ट है कि समता दर्शन का सुगठित एव मूर्त विचार सबसे पहले भगवान पार्श्वनाथ एव महावीर ने दिया। जब मानव समाज विषमता एव हिंसा के चक्रव्यूह में फसा तड़प रहा था, जब महावीर ने गभीर चिन्तन के पश्चात् समता दर्शन की जिस पुष्ट धारा का प्रवाह प्रवाहित किया, वह आज भी युगपरिवर्तन के बावजूद प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। इस विचारधारा और उनके बाद जो चिन्तन-धारा चली है- यदि दोनो का सम्यक् विश्लेषण करके आज समता-दर्शन की स्पष्टता ग्रहण की जाय और फिर उसे व्यवहार में उतारा जाय तो निस्सन्देह मानव समाज को सर्वांगीण समता के पथ की ओर मोड़ा जा सकता है।

महावीर ने समता के दोनो पक्षो-दर्शन एव व्यवहार को समान रूप से स्पष्ट किया तथा वे सिद्धान्त बता कर ही नही रह गये किन्तु उन्होने उन सिद्धान्तो को साथ ही साथ स्वय क्रियात्मक रूप भी दिया। महावीर के बाद की चिन्तनधारा का सही अध्ययन करने के लिये पहले महावीर की समता धारा को ठीक से समझ ले- यह अधिक उपयुक्त रहेगा और समतादर्शन को आज उसके नवीन परिप्रेक्ष्य मे परिभाषित करने म अधिक सुविधा रहेगी।

'सभी आत्माएँ समान हैं' का उद्घोष

महावीर ने समता के मूल बिन्दु को सबसे पहिले पहिचाना और बताया। उन्होने उद्घोष किया कि सभी आत्माएँ समान है याने कि सभी आत्माओ मे अपना सर्वोच्च विकास सम्पादित करने की समान शक्ति रही हुई है। उस शक्ति को प्रस्फुटित एव विकसित करने की समस्या अवश्य है किन्तु लक्ष्य प्राप्ति के सम्बन्ध मे हताशा या निराशा का कोई कारण नही है। इसी विचार ने यह स्थिति स्पष्ट की कि अप्पा सो परमप्पा अर्थात् ईश्वर कोई अलग शक्ति नही, जो सदा से केवल ईश्वर रूप मे ही रही हुई हो बल्कि ससार मे रही हुई आत्मा ही अपनी साधना से जब उच्चतम विकास साध लेती है तो वही परम पद पाकर परमात्मा का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। वह परमात्मा सर्वशक्तिमान् एव पूर्ण ज्ञानवान तो होता है किन्तु ससार से उनका कोई सम्बन्ध उस अवस्था मे नहीं रहता।

यह क्रान्ति का स्वर महावीर ने गुजाया कि ससार की रचना ईश्वर नही करता और इसे भी उन्होने मिथ्या बताया कि ऐसे ईश्वर की इच्छा के बिना ससार म एक पत्ता भी नही हिलता। ससार की रचना को उन्होने अनादि कर्म प्रकृति पर आधारित बताकर आत्मीय समता की जो नींव रखी- उस पर समता का प्रासाद खड़ा करना सरल हो गया।

सबसे पहले समदृष्टि

आत्मीय समता की आधारशिला पर महावीर ने सदेश दिया कि सबसे पहले समदृष्टि बनो। समदृष्टि का शाब्दिक अर्थ है समान नजर रखना, लेकिन इसका गूढार्थ बहुत गभीर और विचारणीय है।

मनुष्य का मन जब तक सतुलित एव सयमित नही होता तब तक वह अपनी विचारणा के घात-प्रतिघातो से टकराता रहता है। उसकी वृत्तिया चचलता के उतार-चढाव मे इतनी अस्थिर बनी रहती है कि सद् या असद् का उसे विवेक नही रहता। आप जानते है कि मन की चचलता राग और द्वेष की वृत्तियो से चलायमान रहती है। राग इस छोर पर तो द्वेष उस छोर पर मन को इधर-उधर भटकाते है। इससे मनुष्य की दृष्टि विषम बनती है। राग वाला अपना और द्वेष वाला पराया तो अपने और पराये का जहा भेद बनता है, वहा दृष्टिभेद रहेगा ही।

महावीर ने इस कारण मानव-मन की चचलता पर पहली चोट की क्योंकि मन ही तो बन्धन और मुक्ति का मूल कारण होता है। चचलता राग और द्वेष को हटाने से हटती है और चचलता हटेगी तो विषमता हटेगी। विषम दृष्टि हटने पर ही समदृष्टि उत्पन्न होगी।

सबसे पहले समदृष्टिपना आवश्यक बताया है क्योंकि समदृष्टि जो बन जायगा वह स्वय तो समता पथ पर आरूढ होगा ही किन्तु अपने सम्पर्क, सम्ग म या

दूसरो को भी विषमता के चक्रव्यूह से बाहर निकालेगा। इस प्रयास का प्रभाव जितना व्यापक होगा उतना ही व्यक्ति एव समाज का सभी क्षेत्रो मे चलनेवाला क्रम सही दिशा की ओर परिवर्तित होने लगेगा।

श्रावकत्व एव साधुत्व की उच्चतर श्रेणिया

समदृष्टि होना समता के लक्ष्य की ओर अग्रसर होने का समारभ मात्र है। फिर महावीर ने कठिन क्रियाशीलता का क्रम बताया। समतामय दृष्टि के बाद समतामय आचरण की पूर्ति के लिए दो स्तरो की रचना की गई।

इसमे पहला स्तर रखा श्रावकत्व का। श्रावक के बारह अणुव्रत बताये गये है, जिनमे पहले के पाच मूल गुण कहलाते है एव शेष सात उत्तर गुण। मूल पाच व्रत है- अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य एव अपरिग्रह। अनुरक्षक सात व्रत है- दिशा मर्यादा, उपभोग परिभोग परिमाण, अनर्थदड त्याग, सामायिक, देशावकासिक, प्रतिपूर्ण पौषध एव अतिथि-सविभाग व्रत।

श्रावक के जो पाच मूल व्रत है- ये ही साधु के पाच महाव्रत है। दोनो मे अन्तर यह है कि जहा श्रावक स्थूल हिसा, झूठ, चोरी, परस्त्रीगमन एव सीमित परिग्रह का त्याग करता है, वहा साधु सम्पूर्ण रूप से हिंसा झूठ चोरी, मैथुन एव परिग्रह का त्याग करता है। नीचे का स्तर श्रावक का है तो साधु त्याग की उच्च श्रेणियो मे रमण करता हुआ समता दर्शन की सूक्ष्म रीति से साधना करता है। महावीर का मार्ग एक दृष्टि से निवृत्तिप्रधान मार्ग कहलाता है- वह इसलिये कि उनकी शिक्षाए मनुष्य को जड़ पदार्थों के व्यर्थ व्यामोह से हटाकर चेतना के ज्ञानमय प्रकाश म ले जाना चाहती हैं। निवृत्ति का विलोम है प्रवृत्ति अर्थात् आन्तरिकता से विस्मृत बनकर बाहर ही बाहर मृगतृष्णा के पीछे भटकते रहना। जहा यह भटकाव है, वहा स्वार्थ है, विकार है और विषमता है। समता की सीमा रेखा मे लाने, बनाये रखने और आगे बढ़ाने के उद्देश्य से ही श्रावकत्व एव साधुत्व की उच्चतर श्रेणिया निर्मित की गईं।

जानने की सार्थकता मानने म है और मानना तभी सफल बनता है जब उसके अनुसार आचरण किया जाय। विशिष्ट महत्त्व तो करने का ही है। आचरण ही जीवन को आगे बढ़ाता है- यह अवश्य है कि आचरण अ धा न हो विकृत न हो।

विचार और आचार मे समता

दृष्टि जब सम होती है अर्थात् उसमे भेद नही होता विकार नही होता और अपेक्षा नही होती तब उसकी नजर में जो आता है वह न तो राग या द्वेष से कलुषित होता है और न स्वार्थभाव से दूषित। वह निरपेक्ष दृष्टि स्वभाव से देखती है। विचार और आचार स समता का यही अर्थ है कि किसी समस्या पर सोचे अथवा किसी सिद्धान्त पर कार्यान्वयन करे तो उस समय समदृष्टि एव समभाव रहना चाहिये। इसका अर्थ यह नही कि सभी विकारा की एक ही लीक को माने या एक ही लीक पर भेड़ वृत्ति से चले। व्यक्ति के चिन्तन या कृतित्व या स्वातत्र्य का लोप नही होना चाहिये बल्कि ऐसी स्वतन्त्रता तो सदा उन्मुक्त रहनी चाहिये।

समदृष्टि एव समभाव के साथ बड़े से बड़े समूह का भी चिन्तन या आचरण होगा तो समता का यह रूप उसमें दिखाई देगा कि सभी एक दूसरे की हितचिन्ता मे निरत है और कोई भी ममत्व या मूर्छा का मारा नही है। निरपेक्ष चिन्तन का फल विचार समता में ही प्रगट होगा, किन्तु यदि उस चिन्तन के साथ दभ हठवाद अथवा यश लिप्सा जुड़ जाय तो वह विचार सघर्षशील बनता है। ऐसे सघर्ष का निवारक महावीर का सिद्धान्त है अनेकान्तवाद या सापेक्षवाद जिसका अर्थ है कि प्रत्येक विचार मे कुछ न कुछ सत्याश होता है और अपेक्षा से भी सत्याश होता है तो अशो को जोड़कर पूर्ण सत्य से साक्षात्कार करने का यत्न किया जाय। यह विचार सघर्ष से हटकर विचार समन्वय का मार्ग है ताकि प्रत्येक विचार की अच्छाई को ग्रहण कर ले।

आचार समता के लिये पाच मूल व्रत है। मनुष्य अपनी शक्ति के अनुसार इन व्रतो की आराधना मे आगे

बढ़ता रहे तो स्वार्थ-सघर्ष मिट सकता है। परिग्रह का मोह छोड़े या घटावे और राग द्वेष की वृत्तियो को हटावे तो हिंसा छूटेगी ही- चोरी और झूठ भी छूटेगा तथा काम-वासना की प्रबलता भी मिटेगी। सार रूप मे महावीर की समताधारा विचारो और स्वार्थों के सघर्ष को मिटाने मे सशक्त है, बशर्त कि उस धारा में अवगाहन किया जाय।

चतुर्विध सघ एव समता

महावीर ने इस समता दर्शन को व्यावहारिक बनाने के लिये जिस चतुर्विध सघ की स्थापना की, उसकी आधारशिला भी इसी समता पर रखी गई। इस सघ में साधु, साध्वी श्रावक एव श्राविका वर्ग का समावेश किया गया। साधना के स्तरो में अन्तर होने पर भी दिशा एक ही होने से श्रावक एव साधु वर्ग को एक साथ सघ बद्ध किया गया। दूसरी ओर उन्होने लिग भेद भी नही किया-साध्वी और श्राविका को साधु एव श्रावक वर्ग की श्रेणी म ही रखा। जाति भेद के तो महावीर मूलत ही विरोधी थे। इस प्रकार महावीर के चतुर्विध सघ का मूलाधार ही समता है। दर्शन और व्यवहार के दोनो पक्षो मे समता को मूर्त रूप देन का जितना श्रेय महावीर को है, उतना सभवत किसी अन्य को नहीं दिया जा सकेगा।

समता दर्शन का नवीन परिप्रेक्ष्य

युग बदलता है तो परिस्थितियाँ बदलती हैं। व्यक्तियो के सहजीवन की प्रणालियाँ बदलती है तो उनके विचार और आचार के तौर-तरीको मे तदनुसार परिवर्तन आता है। यह सही है कि शाश्वत तत्त्व मे एव मूल व्रतो मे परिवर्तन नही होता। सत्य ग्राह्य है तो वह हमेशा ग्राह्य ही रहेगा, किन्तु सत्य-प्रकाशन के रूपो में युगानुकूल परिवर्तन होना स्वाभाविक है। मानव समाज स्थगित नही रहता बल्कि निरन्तर गति करता रहता है तो गति का अर्थ होता है एक स्थान पर टिके नही रहना और एक स्थान पर टिके नही रहे तो परिस्थितिया का परिवर्तन अवश्यभावी है।

मनुष्य एक चिन्तक और विवेकशील प्राणी होता है। वह प्रगति भी करता है तो विगति भी। किन्तु यह सत्य है कि वह गति अवश्य करता है। इसी गतिचक्र मे परिप्रेक्ष्य भी बदलते रहते है। जिस दृष्टि से एक तत्त्व या पदार्थ को कल देखा था, शायद समय स्थिति आदि के परिवर्तन से वही दृष्टि आज उसे कुछ भिन्न काण से देखे और कोण भी तो देश, काल और भाव की अपेक्षा से बदलते रहते है। अत स्वस्थ दृष्टिकोण यह होगा कि परिवर्तन के प्रवाह को भी समझा जाय तथा परिवर्तन के प्रवाह में शाश्वतता तथा मूल व्रतो को कदापि विस्मृत न होने दिया जाय। दोना का समन्वित रूप ही श्रेयस्कर होता है।

इसी दृष्टिकोण से समता दर्शन को भी आज हमे उसके नवीन परिप्रेक्ष्य में देखने एव उसक आधार पर अपनी आचरण विधि निर्धारित करने में अवश्य ही जिज्ञासा रखनी चाहिये।

वैज्ञानिक विकास एव सामाजिक शक्ति का उभार

वैज्ञानिको के विकास ने मानव जीवन की चली आ रही परम्परा मे एक अचिन्तनीय क्रान्ति की है। व्यक्ति की जान पहिचान का दायरा जो पहले बहुत छोटा था- समय एव दूरी पर विज्ञान की विजय ने उसे अत्यधिक विस्तृत बना दिया है। आज साधारण से साधारण व्यक्ति का भी प्रत्यक्ष परिचय काफी बढ़ गया है तो रेडियो, टेलीविजन एव समाचार पत्रो के माध्यम से उसकी जानकारी का क्षेत्र तो समूचे ज्ञात विश्व तक फैल गया है।

इस विस्तृत परिचय ने व्यक्ति को अधिकाधिक सामाजिक बनाया क्योंकि उपयोगी पदार्थों क विस्तार से उसका एकावलम्बन टूट सा गया समाज का अवलम्बन पग पग पर आवश्यक हो गया। अधिक परिचय से अधिक सम्पर्क और अधिक सामाजिकता फैलने लगी। सामाजिकता के प्रसार का अर्थ हुआ सामाजिक शक्ति का नया उभार।

दूसरो को भी विपमता के चक्रव्यूह से वाहर निकालेगा। इस प्रयास का प्रभाव जितना व्यापक होगा उतना ही व्यक्ति एव समाज का सभी क्षेत्रो मे चलनेवाला क्रम सही दिशा की ओर परिवर्तित होने लगेगा।

श्रावकत्व एव साधुत्व की उच्चतर श्रेणिया

समदृष्टि होना समता के लक्ष्य की आर अग्रसर होने का समारभ मात्र है। फिर महावीर ने कठिन क्रियाशीलता का क्रम बताया। समतामय दृष्टि के बाद समतामय आचरण की पूर्ति के लिए दो स्तरो की रचना की गई।

इसम पहला स्तर रखा श्रावकत्व का। श्रावक के बारह अणुव्रत बताये गये है, जिनमे पहले के पाच मूल गुण कहलात है एव शेप सात उत्तर गुण। मूल पाच व्रत है- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एव अपिरग्रह। अनुरक्षक सात व्रत है- दिशा मर्यादा, उपभोग-परिभोग परिमाण, अनर्थदड त्याग, सामायिक, देशावकासिक, प्रतिपूर्ण पौपध एव अतिथि-सविभाग व्रत।

श्रावक के जो पाच मूल व्रत है- ये ही साधु के पाच महाव्रत है। दोनो मे अन्तर यह है कि जहा श्रावक स्थूल हिंसा, झूठ, चोरी, परस्त्रीगमन एव सीमित परिग्रह का त्याग करता है, वहा साधु सम्पूर्ण रूप से हिंसा, झूठ चोरी, मैथुन एव परिग्रह का त्याग करता है। नीचे का स्तर श्रावक का है तो साधु त्याग की उच्च श्रेणिया मे रमण करता हुआ समता दर्शन की सूक्ष्म रीति से साधना करता है। महावीर का मार्ग एक दृष्टि से निवृत्तिप्रधान मार्ग कहलाता है- वह इसलिये कि उनकी शिक्षाए मनुष्य को जड़ पदार्थों के व्यर्थ व्यामोह से हटाकर चेतना के ज्ञानमय प्रकाश मे ले जाना चाहती हैं। निवृत्ति का विलोम है प्रवृत्ति अर्थात् आन्तरिकता से विस्मृत बनकर बाहर ही बाहर मृगतृष्णा के पीछे भटकत रहना। जहा यह भटकाव है, वहा स्वार्थ है, विकार है और विपमता है। समता की सीमा रेखा मे लाने, बनाय रखने और आगे बढ़ाने के उद्देश्य से ही श्रावकत्व एव साधुत्व की उच्चतर श्रेणिया निर्मित की गईं।

जानने की सार्थकता मानने मे है और मानना तभी सफल बनता है जब उसके अनुसार आचरण किया जाय। विशिष्ट महत्त्व तो करने का ही है। आचरण ही जीवन को आगे बढ़ाता है यह अवश्य है कि आचरण अन्धा न हो, विकृत न हो।

विचार और आचार मे समता

दृष्टि जब सम होती है अर्थात् उसमे भेद नहीं होता, विकार नही होता और अपेक्षा नही होती, तब उसकी नजर में जो आता है वह न तो राग या द्वेष से कलुपित हाता है और न स्वार्थभाव से दूपित। वह निरपेक्ष दृष्टि स्वभाव स देखती है। विचार और आचार से समता का यही अर्थ है कि किसी समस्या पर सोचे अथवा किसी सिद्धान्त पर कार्यान्वयन करे तो उस समय समदृष्टि एव समभाव रहना चाहिय। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी विकारो की एक ही लीक को माने या एक ही लीक पर भेड़ वृत्ति से चले। व्यक्ति के चिन्तन या कृतित्व या स्वातत्र्य का लाप नही होना चाहिये बल्कि ऐसी स्वतन्त्रता तो सदा उन्मुक्त रहनी चाहिये।

समदृष्टि एव समभाव के साथ बड़े स बड़े समूह का भी चिन्तन या आचरण होगा तो समता का यह रूप उसमें दिखाई दगा कि सभी एक दूसरे की हितचिन्ता मे निरत है और कोई भी ममत्व या मूर्छा का मारा नही है। निरपेक्ष चिन्तन का फल विचार समता में ही प्रगट होगा, किन्तु यदि उस चिन्तन के साथ दभ, हठवाद अथवा यश लिप्सा जुड़ जाय तो वह विचार सघर्षशील बनता है। ऐसे सघर्ष का निवारक महावीर का सिद्धान्त है, अनेकान्तवाद या सापेक्षवाद, जिसका अर्थ है कि प्रत्यक विचार मे कुछ न कुछ सत्याश होता है और अपेक्षा से भी सत्याश हाता है तो अशो को जोड़कर पूर्ण सत्य से साक्षात्कार करने का यत्न किया जाय। यह विचार सघर्ष से हटकर विचार समन्वय का मार्ग है ताकि प्रत्येक विचार की अच्छाई का ग्रहण कर ल।

आचार समता के लिये पाच मूल व्रत है। मनुष्य अपनी शक्ति क अनुसार इन व्रतो की आराधना मे आगे

बढ़ता रहे तो स्वार्थ-सघर्ष मिट सकता है। परिग्रह का मोह छोड़े या घटावे और राग द्वेष की वृत्तियो को हटावे तो हिसा छूटेगी ही- चोरी और झूठ भी छूटेगा तथा काम-वासना की प्रबलता भी मिटेगी। सार रूप म महावीर की समताधारा विचारो और स्वार्थों के सघर्ष को मिटाने मे सशक्त है, बशर्त कि उस धारा में अवगाहन किया जाय।

चतुर्विध सघ एव समता

महावीर ने इस समता दर्शन को व्यावहारिक बनाने के लिये जिस चतुर्विध सघ की स्थापना की, उसकी आधारशिला भी इसी समता पर रखी गई। इस सघ में साधु, साध्वी, श्रावक एव श्राविका वर्ग का समावेश किया गया। साधना के स्तरो में अन्तर हाने पर भी दिशा एक ही होने से श्रावक एव साधु वर्ग को एक साथ सघ-बद्ध किया गया। दूसरी ओर उन्होंने लिग भेद भी नही किया-साध्वी और श्राविका को साधु एव श्रावक वर्ग की श्रेणी म ही रखा। जाति भेद के तो महावीर मूलत ही विरोधी थे। इस प्रकार महावीर के चतुर्विध सघ का मूलाधार ही समता है। दर्शन और व्यवहार के दोनो पक्षो मे समता को मूर्त रूप देने का जितना श्रेय महावीर को है, उतना सभवत किसी अन्य को नहीं दिया जा सकेगा।

समता दर्शन का नवीन परिप्रेक्ष्य

युग बदलता है तो परिस्थितियाँ बदलती है। व्यक्तियो के सहजीवन की प्रणालियाँ बदलती है तो उनके विचार और आचार के तौर-तरीको मे तदनुसार परिवर्तन आता है। यह सही है कि शाश्वत तत्त्व मे एव मूल व्रतो मे परिवर्तन नही होता। सत्य ग्राह्य है तो वह हमेशा ग्राह्य ही रहेगा, किन्तु सत्य-प्रकाशन के रूपो में युगानुकूल परिवर्तन होना स्वाभाविक है। मानव समाज स्थगित नही रहता बल्कि निरन्तर गति करता रहता है तो गति का अर्थ होता है एक स्थान पर टिके नही रहना और एक स्थान पर टिके नही रहे तो परिस्थितियो का परिवर्तन अवश्यभावी है।

मनुष्य एक चिन्तक और विवेकशील प्राणी होता है। वह प्रगति भी करता है तो विगति भी। किन्तु यह सत्य है कि वह गति अवश्य करता है। इसी गतिचक्र म परिप्रेक्ष्य भी बदलते रहते है। जिस दृष्टि से एक तत्त्व या पदार्थ को कल देखा था, शायद समय, स्थिति आदि के परिवर्तन स वही दृष्टि आज उसे कुछ भिन्न कोण से देखे और कोण भी तो देश, काल और भाव की अपेक्षा से बदलते रहते है। अत स्वस्थ दृष्टिकोण यह होगा कि परिवर्तन के प्रवाह को भी समझा जाय तथा परिवर्तन के प्रवाह में शाश्वतता तथा मूल व्रतो को कदापि विस्मृत न होने दिया जाय। दोनो का समन्वित रूप ही श्रेयस्कर होता है।

इसी दृष्टिकोण से समता दर्शन को भी आज हम उसके नवीन परिप्रेक्ष्य में देखने एव उसके आधार पर अपनी आचरण विधि निर्धारित करने में अवश्य ही जिज्ञासा रखनी चाहिये।

वैज्ञानिक विकास एव सामाजिक शक्ति का उभार

वैज्ञानिको के विकास ने मानव जीवन की चली आ रही परम्परा मे एक अचिन्तनीय क्रान्ति की है। व्यक्ति की जान पहिचान का दायरा जो पहले बहुत छोटा था- समय एव दूरी पर विज्ञान की विजय ने उसे अत्यधिक विस्तृत बना दिया है। आज साधारण से साधारण व्यक्ति का भी प्रत्यक्ष परिचय काफी बढ़ गया है तो रेडियो, टेलीविजन एव समाचार पत्रो के माध्यम से उसकी जानकारी का क्षेत्र तो समूचे ज्ञात विश्व तक फैल गया है।

इस विस्तृत परिचय ने व्यक्ति को अधिकाधिक सामाजिक बनाया क्योंकि उपयोगी पदार्थों के विस्तार से उसका एकावलम्बन टूट सा गया-समाज का अवलम्बन पग-पग पर आवश्यक हो गया। अधिक परिचय से अधिक सम्पर्क और अधिक सामाजिकता फैलने लगी। सामाजिकता के प्रसार का अर्थ हुआ सामाजिक शक्ति का नया उभार।

व्यापक जागरण का शख फूकना होगा, जिससे समता के समरस स्वर उद्भूत हो सके।

समता दर्शन का नया प्रकाश

सत्याशो के सचय से समता दर्शन का जो सत्य हमारे सामने प्रकट होता है- उसे यथाशक्ति, यथासाध्य सबके समक्ष प्रस्तुत करने का नम्र प्रयास यहाँ किया जा रहा है। यह युगानुकूल समता दर्शन का नया प्रकाश फैला कर प्रेरणा एव रचना की नई अनुभूतियो को सजग बना सकेगा।

समता दर्शन को अपने नवीन एव सपूर्ण परिप्रेक्ष्य मे समझने के लिये उसके निम्न चार सोपान बनाये गये है -

१ सिद्धान्त-दर्शन

मानव ही नहीं, प्राणी समाज से सबधित सभी क्षेत्रो मे यथार्थ दृष्टि, वस्तुस्वरूप उत्तरदायित्व तथा शुद्ध कर्त्तव्याकर्तव्य का ज्ञान एव सम्यक्, सर्वांगीण व सम्पूर्ण चरम विकास समता सिद्धान्त का मूलाधार है। इस पहले सोपान पर पहले सिद्धान्त को प्रमुखता दी गई है।

२ जीवन-दर्शन

सबके लिए एक व एक के लिए सब तथा जीओ और जीने दो के प्रतिपादक सिद्धान्तो तथा सयम नियमो को स्वय के व समाज के जीवन में आचरित करना समता का जीवन्त दर्शन करना होगा।

३ आत्म-दर्शन

समतापूर्ण आचार की पृष्ठभूमि पर जिस प्रकाश स्वरूप चेतना का आविर्भाव होगा, उसे सतत व सत्साधना पूर्ण सेवा तथा स्वानुभूति के बल पर पुष्ट करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की व्यापक भावना म आत्मविसर्जित हो जाना समता का उन्नायक चरण होगा।

४ परमात्म-दर्शन

आत्मविसर्जन के बाद प्रकाश मे प्रकाश के समान मिल जाने की यह चरम स्थिति है। तब मनुष्य न केवल एक आत्मा अपितु सारे प्राणि समाज का अपनी सेवा व समता की परिधि मे अन्तर्निहित कर लेने के कारण उज्ज्वलतम स्वरूप प्राप्त करके स्वय परमात्मा हो जाता है। आत्मा का परम स्वरूप ही समता का चरम स्वरूप होता है।

इन चार सोपानो पर गहन विचार से समता दर्शन की श्रेष्ठता अनुभूत हो सकेगी और इस अनुभूति के बाद ही व्यवहार की रूपरेखा सरलतापूर्वक हृदयगम की जा सकेगी।

१ सिद्धान्त-दर्शन

(१) समग्र आत्मीय शक्तियो के सम्यक् और सर्वांगीण चरम विकास को सदा सर्वत्र सम्मुख रखना।

(२) दुर्भावना, दुर्वचन एव दुष्प्रवृत्ति के परित्याग पूर्वक सत्साधना मे विश्वास रखना।

(३) समस्त प्राणिवर्ग का स्वतत्र अस्तित्व स्वीकार करना।

(४) समस्त जीवनोपयोगी पदार्थों के यथा विकास यथायोग्य समवितरण मे विश्वास रखना।

(५) जनकल्याणार्थ सपरित्याग में आस्था रखना।

(६) गुण एव कर्म के आधार पर विश्वस्थ प्राणियो के श्रेणी विभाग में विश्वास रखना।

(७) द्रव्य-सम्पत्ति व सत्ता प्रधान व्यवस्था के स्थान पर चेतना तथा कर्त्तव्यनिष्ठा को प्रमुखता देना।

२ जीवन-दर्शन

(१) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और सापेक्षवाद (स्याद्वाद) को जीवन मे उतारना।

(२) जिस पद पर जीवन रहे, उस पद की मर्यादा को प्रामाणिकता से वहन करने का ध्यान रखना।

(३) जिस परिवार की सदस्यता का लेकर व्यक्ति चलता हो, उस परिवार क अन्य सदस्यो क साथ निष्ठापूर्वक आत्मीय दृष्टि बनाना।

(४) व्यक्ति, जिस सामाजिक क्षेत्र मे प्रवेश करे उसमे निष्कपटभाव से अपने जीवन की शुद्धता रखे तथा सामाजिक क्षेत्र मे उत्पन्न कुरीतियो एव घातक प्रवृत्तियो का परिमार्जन करता हुआ मानव-कल्याणकारी उत्तम मर्यादाओ के निर्माणपूर्वक अपने जीवन-स्तर को इस प्रकार बनाये, जिससे कि प्रत्येक सामाजिक प्राणि शान्ति की श्वास ले सके।

(५) व्यक्ति, स्वय से सम्बधित राष्ट्र एव विश्व के साथ यथायोग्य सम्बध को ध्यान मे रखता हुआ अपने आपके हिस्से म कितनी जिम्मेवारी किस रूप मे आ सकती है- इसका ईमानदारी से विचार करे और तदनुरूप यथाशक्ति, यथास्थान जीवन को ढालने हेतु सम्यक् चेष्टा करे।

(६) पद को महत्त्व देने के स्थान पर कर्तव्य को महत्त्व देने की प्रतिज्ञा हो।

(७) सप्त कुव्यसन (मास, मदिरापान, जुआ, चोरी, शिकार, परस्त्री व वेश्यागमन) का त्याग हो।

३ आत्म-दर्शन

विश्व मे मुख्य दो तत्त्व है एक चेतन तत्त्व और दूसरा जड़ तत्त्व। चेतन तत्त्व स्व-पर प्रकाश-स्वरूप है और जड़ तत्त्व उससे भिन्न है। इन दोनो तत्त्वो के समिश्रण से कर्मयुक्त ससारी प्राणिजगत् है। इनमे व्यवस्थित न्यूनाधिक कलापूर्ण विकासशीलता आत्मा का प्रतीक है और घुणाक्षर-न्याय के तरीके से बनने वाली स्थिति का प्रतीक प्राय जड़ तत्त्व है।

सम्यक् आचरण से आत्मा का साक्षात्कार चिन्तन मनन व स्वानुभूति द्वारा करना आत्म दर्शन है। इसके लिए निम्नोक्त भावना एव नियमितता आवश्यक है-

(१) अपने जीवन के रात-दिन के घटो मे नियमित रूप से मर्यादा करना।

(२) प्रात काल सूर्योदय के पहले कम-से-कम एक घटा आत्मदर्शन के लिए नियुक्त करना।

(३) जो भी घटा, जिन मिनटो से नियुक्त किया जाये, ठीक उन्ही मिनटो का हमेशा ध्यान रख कर साधना मे बैठना।

(४) साधना के समय पापकारी प्रवृत्तियो का निरोध करना और सत्प्रवृत्तियो को आचरण में लाना।

(५) समस्त प्राणिवर्ग को आत्मा के तुल्य समझना।

जैसा सुख-दु ख अपने को होता है अर्थात् सुख प्रिय और दु ख अप्रिय लगता है, वैसे ही अन्य प्राणियो को भी होता है। अत हम किसी को दु ख न दे। सब को सुख हो, इस भावना से अपनी सम्यक् प्रवृत्ति का ध्यान रखना चाहिए।

किसी भी जीव का हनन करने की भावना रखना अपने आपका हनन करना है। दूसरो के सुख मे अपना सुख समझना कष्ट मे अपना कष्ट समझना परमावश्यक है। इस प्रकार आत्मदर्शन की भावना को यथास्थान सम्यक् रीति से आगे बढ़ाते रहना चाहिए तथा इन भावनाओ को पुष्ट करने के लिए सत्साहित्य का यथावकाश अध्ययन करना चाहिए।

४ परमात्म-दर्शन

राग-द्वेष आदि विकारो के समूल-नाशपूर्वक चरम-विकास पर पहुँचने वाली आत्मा सही अर्थ मे परमात्म दर्शन को प्राप्त होती है और परमात्म-दर्शन पद-प्राप्त आत्मा की समग्र आत्मीय तथा अनन्त गुणो का उपयोग करती हुई जगत् मे मगलमय कल्याण-अवस्था की आदर्श स्थिति उपस्थित करती है।

इस विषय मे निरन्तर ध्यान रखते हुए जो व्यक्ति क्रमिक विकास पर चलता है वह समता-दर्शन की स्थिति से विश्व-कल्याण मे महत्त्वपूर्ण योगदान करता है। अत समता-दर्शन को परिपूर्ण रूप से जीवन म उतारना चाहिए।

आचरण के इक्कीस सूत्र

समता-दर्शन मे श्रद्धा (विश्वास) रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को निम्नलिखित २१ नियमो का पालन करने के लिए सकल्पित एव प्रयत्नशील रहना है -

१ ग्रामधर्म, नगरधर्म, राष्ट्रधर्म आदि की सुव्यवस्था अर्थात् तत्सम्बन्धी सामाजिक (नैतिक) नियमो का पालन करना। उसमे कोई कुव्यवस्था पैदा नही करना एव कुव्यवस्था पैदा करने वालो का सहयोगी नही होना।

२ अनावश्यक हिंसा का परित्याग करना तथा आवश्यक हिंसा की अवस्था में भी भावना तो व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र आदि की रक्षा की रखना तथा विवशता से होने वाली हिंसा मे लाचारी अनुभव करना न कि प्रसन्नता।

३ झूठी साक्षी नही देना। स्त्री, पुरुष, पशु, भूमि आदि के लिए झूठ नही बोलना।

४ वस्तु में मिलावट कर धोखे पूर्वक नही बेचना।

५ ताला तोड़कर, चाबी लगाकर तथा सेंध लगाकर वस्तु नही चुराना। किसी की अमानत को हजम नही करना।

६ परस्त्री का त्याग करना, स्व स्त्री के साथ भी अधिक से अधिक ब्रह्मचर्य का पालन करना।

७ व्यक्ति समाज व राष्ट्र आदि की जिम्मेदारी क आवश्यक अनुपात के अतिरिक्त धन-धान्य पर अपना अधिकार नही रखना। आवश्यकता से अधिक धन धान्य हो ता ट्रस्टी बन कर यथा आवश्यक सम-वितरण की भावना रखना।

८ लेन-देन, व्यसाय आदि की सीमा एव मात्रा का अपनी सामर्थ्य के अनुसार मर्यादा रखना।

९ स्वय, परिवार, समाज एव राष्ट्र के चरित्र मे कलक लगे वैसा कोई भी कार्य नही करना।

१० नैतिक धरातल पूर्वक आध्यात्मिक जीवन के निर्माणार्थ तदनुरूप सत्प्रवृत्ति का ध्यान रखना।

११ मानव जाति मे गुण कर्म के अनुसार वर्गीकरण पर श्रद्धा (विश्वास) रखते हुए किसी भी व्यक्ति से घृणा व द्वेष नही रखना।

१२ सयमी उत्तम मर्यादाओ का पालन करना व अनुशासन को भग करने वालो का अहिंसक असहयोग के तरीके से सुधारना, पर द्वेष की भावना न लाना।

१३ प्राप्त अधिकारो का दुरुपयोग नही करना।

१४ कर्तव्य-पालन का पूरा ध्यान रखना लेकिन प्राप्त सत्ता मे आसक्त (लोलुप) नही होना।

१५ सत्ता और सम्पत्ति को मानव सेवा का साधन मानना, न कि साध्य।

१६ सामाजिक व राष्ट्रीय चरित्रपूर्वक भावात्मक एकता को महत्व देना।

१७ जनतत्र का दुरुपयोग नही करना।

१८ दहेज बीटी, तिलक टीका आदि की मागनी सौदेबाजी एव प्रदर्शन नही करना।

१९ सादगी मे विश्वस रखना और कुरीति रिवाजो का परित्याग करना।

२० चरित्र निर्माण पूर्वक धार्मिक शिक्षण पर बल देना एव नित्य प्रति कम से कम एक घटा धार्मिक क्रिया पूर्वक स्वाध्याय चितन मनन् करना।

२१ समता दर्शन के आधार पर सुसमाज व्यवस्था पर विश्वास रखना।

व्यवहार के तीन सोपान

समता के दार्शनिक विश्लेषण को व्यवहार की दृष्टि से निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है ताकि समता दर्शन की क्रमबद्ध रीति से साधना की जा सके।

(अ) समतावादी पहली श्रेणी उन साधको की हो जो समता-दर्शन में गहरी आस्था, नया खोजन की जिज्ञासा और यथास्थिति की सुविधा से समता म व्यवहार मे प्रयासरत होने की इच्छा रखते हो। उनके लिए निम्न नियम आचरणीय हो सकते है-

(१) विश्व के समस्त प्राणियो में सामान्यरूप से समता की मूल स्थिति को स्वीकार करना एव गुण तथ

कर्म के अनुसार ही उनका वर्गीकरण मानना। अन्य सभी विभेदो को अस्वीकार करना एव गुणकर्म के विकास से व्यापक समता की स्थिति बनाने का सकल्प लेना।

(२) समस्त प्राणिवर्ग का स्वतत्र अस्तित्व स्वीकारना तथा अन्य प्राणी के कष्ट को स्वकष्ट मानना।

(३) पद को महत्त्व देने क स्थान पर कर्त्तव्य को महत्त्व देने की प्रतिज्ञा करना।

(४) सप्त कुव्यसन (मास, मदिरा, जुआ, चोरी शिकार, परस्त्री व वेश्यागमन) का त्याग करने की दिशा मे आगे से आगे बढ़ते रहना।

(५) प्रात काल सूर्य उदय से पूर्व एक घटा अथवा अपनी अनुकूलता के अनुसार २४ घटो में से १ घटा नियमित रूप स अपने चिन्तन, समालोचन एव समता-दर्शन के अध्ययन के लिये नियत करना।

(६) कदापि आत्मघात न करना एव प्राणिमात्र की यथाशक्ति रक्षा का प्रय न करना।

(अ) समताधारी- दूसरी श्रेणी के लिये निम्न अग्रगामी नियम प्रयोग में लिये जा सकते है-

(१) विपमता-जन्य अपने विचारो, सस्कारो एव आचारो को समझना तथा विवेक पूर्वक उन्हे दूर करना। अपने आचरण से किसी को क्लेश न पहुचाना व सबसे सहानुभूति रखना।

(२) द्रव्य सम्पत्ति व सत्ता प्रधान व्यवस्था के स्थान पर समता पूर्ण चेतना एव कर्त्तव्यनिष्ठा रखना।

(३) अहिसा सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और अनेकान्त एव सापेक्षवाद के स्थूल नियमो का पालन करना तथा भावना की सूक्ष्मता तक पैठने का प्रयास करना।

(४) समस्त जीवनोपयोगी पदार्थों के सम वितरण में आस्था रखना तथा व्यक्तिगत रूप से इन पदार्थों का यथाविकास यथायोग्य जन कल्याणार्थ परित्याग करना।

(५) परिवार की सदस्यता से लेकर ग्राम, नगर, राष्ट्र एव विश्व की सदस्यता को निष्ठापूर्वक आत्मीयदृष्टि एव सहयोगपूर्ण आचरण से अपने उत्तरदायित्वो को निभाना।

(६) जीवन मे जिस किसी पद पर या कार्यक्षेत्र में कार्यरत हो, उसमें भ्रष्टाचरण से मुक्त होकर समताभरी नैतिकता एव प्रामाणिकता क साथ कुशलता से कार्य करना।

(७) स्वजीवन मे सयम को व सामाजिक जीवन में नियम को प्राथमिकता देना।

(इ) समतादर्शी- समताधारी से आगे की सीढ़ी मे बोलने व धारने से आगे सारे ससार को समतामय देखने की प्रवृत्ति का उच्च विकास साधा जाना चाहिये। इस हेतु निम्न नियम सहायक हो सकते है-

(१) समस्त प्राणिवर्ग को निजात्मा के तुल्य समझना तथा समग्र आत्मीय शक्तियो के विकास मे अपने जीवन के विकास को देखना तथा अपनी समस्त दुष्प्रवृत्तिया के त्यागमय आदर्श से सत्प्रवृत्तियो के विकास को बल देना।

(२) आत्मविश्वास की मात्रा इतनी सशक्त बना लेना कि विश्वासघात न अन्य प्राणियो के साथ और न स्वय के साथ जाने या अनजाने सभव हा।

(३) जीवन क्रम के चौबीस घटो मे समतामय भावना व आचरण का विवेकपूर्ण अभ्यास करना।

(४) सामाजिक न्याय का लक्ष्य ध्यान मे रखकर आत्मबल के आधार पर अन्याय की शक्तियो से सघर्ष करना तथा समता के समस्त अवरोधो पर विजय पाना।

(५) प्रत्येक प्राणी के प्रति सौहार्द्र, सहानुभूति एव सहयोग रखते हुए दूसरे के सुख, दु ख को अपना सुख, दु ख समझना-आत्मवत् सर्वभूतेपु।

(६) चेतन व जड़ तत्त्वो के विभेद को समझकर जड़ पर से ममता हटाना, जड़ की प्रधानता हटाने मे योग देना तथा चेतन को स्वधर्मी मान उसकी विकास पूर्ण समता में अपन

जीवन को नियोजित कर देना ।

(७) राग और द्वेष दानो को सयमित करते हुए सब प्राणियो में समदर्शिता का अविचल भाव ग्रहण करना ।

ये जो तीना श्रेणिया के नियम बनाये गये है इनके अनुरूप एक से दूसरी व दूसरी से तीसरी श्रेणी मे बढ़ने की दृष्टि से प्रत्येक को अपना आचरण विचारपूर्ण पृष्ठभूमि के साथ सतुलित एव सयमित करना चाहिये ताकि समता व्यक्ति के मन में और समाज के जीवन में स्थायी रूप ग्रहण कर सके। यही आत्म कल्याण एव विश्व विकास का प्रेरक पाथेय है ।

-प्रस्तुति-भवरलाल कोठारी, बीकानेर

दीप से दीप

साधु मार्ग की परपम्परा अनादि अविच्छिन्न है। आचार ही साधुत्व की प्राण सत्ता एव कसौटी है अत वही साधु मार्ग की धुरी है। धुरी ध्वस्त हो जाए, तो रथ पर झण्डी पताकाएँ सजाकर तथा उसके चक्को पर पॉलिश करके कुछ समय के लिए एक चकाचौंध भले ही उपस्थित कर दी जाय, उसे गतिमान नही बनाया जा सकता।

वन्द्य विभूति आचार्य श्री हुक्मीचदजी म सा ने सम्यक् ज्ञान सम्मत क्रिया' का उद्घोष करके आचार की सर्वोपरिता का सन्देश दिया। इस आचार क्रान्ति ने जिन शासन परम्परा में प्राण ऊर्जा का सचार किया। अगले चरण मे ज्योतिर्धर जवाहराचार्य ने आगमिक विवेचन की तेजस छैनी से कल्पित सिद्धान्तो की अवान्तर पर्तो को छील छाट कर सम्यक् ज्ञान सम्मत क्रिया ' को विशुद्ध शिल्प मे तराश दिया। आगे चलकर श्री गणेशाचार्य ने इस विशुद्ध शिल्प के साम्य में ''शात क्रान्ति का अभियान चलाया।

समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानेश के सम्यक् निर्देशन में शात क्रान्ति का रथ उत्तरोत्तर आगे बढ़ा एव वर्तमान में आचार्य प्रवर श्री रामेश के निर्देशन में वही गति तीव्रता से प्रवहमान है। युग पर आश्वासन की सात्विक आभा फैलती जा रही है। विश्वास हिलकार लेने लगा है कि सात्विक साध्वाचार का लोप नहीं होगा। अधकार छटता और टूटता जा रहा है। दीप से दीप जलते जा रहे हैं।

□ प्रो कल्याणमल लोढा
पूर्व कुलपति-जोधपुर विश्वविद्यालय

साहु साहु त्ति आलवे

मै यह मानता हूँ कि मानव समाज के वर्तमान सकट और व्यामोह के लिए जैन धर्म ही एक समर्थ और सार्थक उपचार है। मै तो उसे हमारी आधिव्याधि के लिए परमोपरक सजीवनी ही कहना चाहूगा। यह एक भ्राति है कि जैनधर्म व्यक्ति परक है। वह जितना व्यक्ति के लिए है उतना ही समाज के लिए भी। वह लाक-मानस का धर्म है लोक सिद्ध। जैन धर्म की विशेषता है कि वह दर्शन, अध्यात्म, आचार नैतिकता और वैज्ञानिक प्रतिपत्तियो मे अन्यतम महत्त्व रखता है। वह जितना प्राचीन है, उतना ही आधुनिक। वर्तमान युग मे उसकी प्रासगिकता निर्विवाद है। हमारे आदि तीर्थंकर ने समूचे विश्व को असि, मसि और कृषि का पाठ पढ़ाया। बौद्ध धर्म की भाति वह अनेक देशो मे भले ही नही गया हो, पर इससे उसका विश्वव्यापी महत्त्व क्षुण्य नही हुआ अपितु यह उसके अधिकृत रहने का भी एक पुष्ट कारण है। बौद्ध धर्म की भाति जैन धर्म मे वज्रयान जैसी साधना पद्धति कभी नही रही। हमारे धर्माचार्यो ने उसके प्रकृत्त और मूल सिद्धान्तो और सस्थानो को यथावत् रखा। मै नही समझता कि अन्य कोई धर्म इतना अधिकृत रह पाया हो। जैन धर्म की प्राचीनता अब सर्वमान्य है। ईसाई पादरियो ने किसी तीर्थंकर की निन्दा नही की। कन्याकुमारी की शिला पर जिसे आज विवेकानन्द शिला कहते है पार्श्वनाथ के चरण-चिह्न अकित थे। वस्तुत चरण पूजा का प्रारम्भ ही जैनियो से हुआ। मैसूर मे बल्लुर के केशव मदिर मे अर्हम् नित्यय जैन शासनरता' लिखा है।

जैन धर्माचार्यो, साधुओ और मुनियो ने उदार व व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। वे कभी पूर्वाग्रह ग्रसित नही हुए, न कभी सकीर्ण और अनुदार रहे। हरिभद्राचार्य, आचार्य सिद्धसेन व हेमचन्द्राचार्य के कथन इसके प्रमाण है। एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा-

पक्षपातो न मे वीरे न द्वेष कपिलादिषु।
युक्तिमद् वचन यस्य, तस्य कार्य परिग्रह ॥

यह उदारता और सहिष्णुता जैन धर्म की अन्यतम विशेपता है। वह सदैव यही स्वीकारता रहा

ब्रह्मा व विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै।
बुद्ध व वर्धमान शतदल निलय केशव वा शिव वा ॥

वह सब प्राणियो को समान दृष्टि से देखता है, पर उसका ध्येय है परस्परोपग्रहा जीवानाम्। न कोई उच्च है और न कोई नीच। जन्म से न कोई ब्राह्मण होता है और न शुद्र। कर्म ही वैशिष्ट्य रखता है। महावीर ने कहा- 'समयाए समणो होइ, बभचेरेण बभणो। उनका उद्घोष था

न वि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बभणो।
न मुणणा नण्णवासेण, कुसी चरेण न तावसो ॥

उस युग मे यह क्राति का स्वर था। बुद्ध ने भी यही माना-

न जटाहि न गोत्तेन, न बच्चा होति ब्राह्मणो।
यम्हि सच्चच धम्मो, च सो सुचो सो च ब्राह्मणो॥
(ब्राह्मण वग्ग ११)

इमन माना 'कम्मेवीरा ते धम्मेवीरा। वशिष्ठ भी यही कहते है

कर्मेण पुरुषोत्तम पुरुषस्यैव कर्मता।
एते ह्यभिन्ने विद्धि त्वयथा तुहिन शीतते॥

महाभारत मे भीष्म कहते है-

अपारे यो भवेत्पारमल्पवे य भवोभवेत्।
शूद्रो व यदिवऽप्यन्य सर्वथा मान मर्हति॥

मै जैनधर्म को विश्व मे सभी धर्मों दर्शनो और अध्यात्म का विश्वकोष गिनता हू। 'महाभारत' के लिए कहा जाता है कि 'यन्न भारते तन्न भारते', जो महाभारत में नही है, वह भारतवर्ष मे नही है। मै तो समझता हू कि 'यन्न जिन धर्मे तन्न अन्य धर्मे । यह कोई गर्वोक्ति नहीं, सत्योक्ति है।

भगवान महावीर ने मनुष्यत्व को श्रेष्ठतम गिना माणस्स खु सु दुल्लह'। वे मनुष्यो को देवाणुप्पिय कहकर सबोधित करते थे। आचार्य अमितगति ने दोहराया 'मनुष्य भव प्रधानम्' सभी धर्म भी यही मानते है। व्यास ने कहा-'नहि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किंचित्। ग्रीक दार्शनिको की भी यही आवाज थी-'मनुष्य ही सब पदार्थों का मापदण्ड है। जैन धर्म इसी मनुष्यता के उद्घोष का पावन धर्म है। यहा यह भी कहना सगत है कि मनुष्यता का यह उद्घोष उसके पुरुषार्थ का उद्घोष है-उसकी उच्चतम स्थिति का। जैन धर्म मनुष्य के पुरुषार्थ का धर्म है। यह बताता है कि देव केवल कल्पना मात्र है। मनुष्य अपने पौरुष के बल पर ही श्रेष्ठतर पद प्राप्त करते है

"पुरिसा तुममेव तुममित्त, कि बहिया मित्तमिच्छसि

विश्वकोष मे कोई ऐसा रत्न नही है जो शुद्ध पुरुषार्थजनित शुभ कर्म से न प्राप्त हो सके। पुरुषार्थहीन व्यक्ति सदा परतन्त्र है। जिस पुरुषार्थ की देशना महावीर ने दी वही अन्यत्र भी कहा गया-

दैव न किंचित् कुरुते केवल कल्पनेद्देशी।
मूढै प्रकल्पित दैव तत्परास्ते क्षय गता।
प्राज्ञास्तु पौरुषार्थेन पदमुत्तमता गता॥

ससार के सभी धर्मों के ग्राह्य तत्वो का सन्निवेश जैन धर्म मे मिल जाएगा। महावीर कहते है वओ अच्चेति जोव्वण व -आयु और जीवन बीता जा रहा है। काल के लिए कोई समय असमय नही- न कोई उससे मुक्त है, नत्थि कालस्स णा गमो'। इसीलिए अप्रमत्त होकर जीवन-यापन कर और विवेकपूर्ण जीवन पथ पर चलकर सत्य युक्त हो। काल सदा परिवर्तनशील है और उपयोग जीव का धर्म। इसलिए 'समय गोयम मा पमायए क्षण भर का प्रमाद भी घातक है। सत्य की यह खोज और विश्व के सभी प्राणियो के प्रति मैत्री का भाव ही सम्यक्त्व है और इसके लिए अनिवार्य है आत्म विजय, वही तो सबसे कठिन है। प्रभु कहते है 'बाह्य युद्ध सारहीन है अपने से युद्ध कर'। आत्म विजय ही सच्चा सुख है। अपने से युद्ध का यह अवसर दुर्लभ है

अप्पाण मेव जुज्झहि, कि ते जुज्झण बज्झओ।
अप्पाण मेव अप्पाण, जइत्ता सुह मेहए॥

यही जीवन का सार तत्व है- यही सच्चा पुरुषार्थ भी। इसी से मै कहता हू जिसने जैन धर्म को जाना, उसने सभी धर्मों को जाना।

वैदिक ऋषियो ने कहा- आयुष क्षण एकोपि सर्वरत्नैन लभ्यते। सभी रत्नो से आयु का एक क्षण मूल्यवान है। यही तो वीर प्रभु ने भी कहा पर अधिक दृढता से- परिजूरइ ते सरीरय केसा पण्डुरया हवन्ति ते एव खणं जाणाहि पंडिए। हे साधक! तुम क्षण को पहिचानो-क्योंकि

जागरहणरा णिच्च जागर माणसरा
जागरित सुत्त।

जे सुवति न से सुहिते जागरमाणे
सुह होति ।

जैन धर्म बताता है क्षमा, सतोष, सरलता और विनय ही धर्म के चार द्वार है । सभी धर्मों ने भी यही स्वीकारा । छादोग्य उपनिषद् मे कहा गया-आत्म-यज्ञ की दक्षिणा है-तप दान, आर्जव, अहिसा व सत्य । 'महाभारत में विदुर सदैव क्षमा, मार्दव, आर्जव और सतोष का उपदेश धृतराष्ट्र को देते रह । महावीर ने अहिंसा को सर्वोपरि बताया, यही सभी धर्म भी कहते है, पर जो विषमता और व्यापकता जैन धर्म मे है, उतनी अन्यत्र नही । महावीर ने अहिसा को 'भगवती' कहा । 'ऋग्वेद' का मत्र है "अहिंसक मात्र का सुख व सगति हमे प्राप्त हो (५ ६४ ३) । वैदिक प्रार्थना मे 'अहि सन्ति का प्रयोग हुआ । यजुर्वेद ने भी स्वीकारा- पुमान पुमा स परिपातु विश्वम्' (३६-८), दूसरो की रक्षा ही धर्म है । अथर्व वेद' में तो प्रार्थना की गई- तद वृण्मो ब्रह्म वो गृहे सज्ञान पुरुषेभ्य ' हे प्रभो, परिचित अपरिचित सबके प्रति समभाव-सद्भाव रखू । विष्णुपुराण' कहता है- 'हिंसा अधर्म की पत्नी है'। बौद्ध धर्म का भी यही मूलस्वर था उसे कहा तक गिनाए । सबने एक ही स्वर मे गाया

अहिंसा, सत्य वचन दानाभिन्द्रिय निग्रह ।
एतेभ्यो हि महाराज, तपो नानत्रनात्परम् ॥

ईसाई धर्म में यही दोहराया गया- यदि कोई कहे कि वह ईश्वर स प्रेम करता है पर अपने भाई से घृणा व द्वेष तो समझो, वह झूठा है । दस आदेशा मे भी अहिंसा ही मुख्य है । मनुष्यत्व की जिस साधना का वर्णन, जिस पुरुषार्थ का विवेचन, जिस आत्म-विजय का महत्त्व, जिस अहिंसा, सत्य, अस्तय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का उपदेश हमारे तीर्थकरो ने आदिकाल से दिया, वही सबने स्वीकारा । महावीर कहते है-

चत्तारि परमगाणि, दुल्लहाणीह जन्तुणो ।
माणा सुच, सुई सद्धा सजमभिय वीरिय ॥

ससार मे चार बात दुर्लभ है-मनुष्यत्व, सद्धर्म का श्रवण और अनुपालन, श्रद्धा और सयम में पुरुषार्थ । इसीसे महावीर ने देवताओ के कामयोग को मनुष्य से हजार गुना अधिक बताया । आचार्य समन्तभद्र ने जिनशासन को सर्वोदय कहा-'सर्वोदय तीर्थमिद तवैव'। यह आत्मश्लाघा नही, एक निर्विवाद सत्य है ।

भारतीय मनीषा का मूल स्वर परोपकार का रहा है । परोपकार रहित जीवन से मरण अच्छा है । जिस मरण से परोपकार' होता है, वही जीवन वास्तव मे अमूल्य जीवन है, 'पर परोपकारार्थ यो जीविति स जीविति' । अन्यत्र भी-

जीवितान्मरण श्रेष्ठ परोपकृति वर्जितात् ।
मरण जीवित मन्ये यत्परोपकृति क्षमम् ॥

जैन शासन ने सदैव परोपकार को ही जीवन बताया । 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रानि माक्षमार्ग ' कहने वाले उमास्वाति ने इस सूत्र म जीवन के परम लक्ष्य की ही बात कही । जैन धर्मावलम्बी की यही प्रार्थना है-

सत्वेषु मैत्री, गुणीषु प्रमोद,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा पर त्वम् ।
माध्यस्थ भाव विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विद्धातु देव ।

जीवन की यह चरम उपलब्धि है । स्थानाग सूत्र (४-४-३७३) मे कहा है-मनुष्यायु का बध चार प्रकार से होता है- सरल स्वभाव, विनय भाव, दयाभाव और ईर्ष्यारहित भाव । तत्वार्थ सूत्र में इसी की व्याख्या करते हुए उमास्वाति कहते है-

अल्पारभ परिग्रहत्व स्वभाव मार्दवार्जव च
मानुष स्यायुष (६-१८)

जैन धर्म की वैज्ञानिकता तो आज सर्वविदित हो रही है । हमने जीव अजीव तत्व का जो वर्णन किया, आज विज्ञान भी उसे स्वीकार कर रहा है । नन्दी सूत्र' मे कहा गया है-पचत्थिकाए न कयावि नासि, न कयाइ नत्थि न कयाइ भविस्सइ । भुवि च भुवइ अ भविस्सइ आ । धुव्रे नियए, सासए, अक्खए, अव्वए अवट्ठि निच्चे ।अरूवो (५८) । पाच अस्तिकाया का यह वणन

कि वे सदा थे, सदा है और सदा रहेंगे ये ध्रुव, निश्चित, सदा रहने वाले, अनष्ट और नित्य पर अरूपी है। विज्ञान ने इस सत्य को प्रमाणित कर दिया। परमाणु दो प्रकार के होते है-सूक्ष्म और व्यवहार। सूक्ष्म अव्याख्येय है। व्यवहार परमाणु अनन्त अनन्त सूक्ष्म परमाणु, यह दलो का समुदाय है जो सदैव अप्रतिहत रहता है (अनुयोग द्वार-३३०-३४६)। वर्तमान विज्ञान ने एक नयी खोज की है सुपर स्ट्रिंग्स की इस खोज के अनुसार (जिसे टी ओ ई कहते है) विश्व की सरचना सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्री (स्ट्रिंग्स) से हुई है। प्रोटोन, न्यूट्रोन, शरीर और नक्षत्र सभी इनसे बने है। यह प्रोटोन का एकपद्म अति सूक्ष्म रूप है-जो मनुष्य की कल्पना से परे है-किसी यत्र से भी। इस अनुसधान ने विज्ञान की समूची प्रक्रिया को ही बदल दिया। यह आधुनिक खोज जैन तत्त्व दर्शन की वैज्ञानिकता को पुन प्रमाणित कर देती है। विज्ञान के दो महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त फलक्रम ऑफ रेस्ट' एण्ड "फलक्रम् ऑफ मोशन" भी वस्तुत अधर्म और धर्मास्तिकाय हैं। आज विश्व के प्रबुद्ध चिन्तक जैन धर्म के वैज्ञानिक विवेचन से आकृष्ट हो रहे है।

आज समूचा मानव जीवन मानसिक उन्माद, उन्ताप और उपमर्दन से पीड़ित है। समाज शास्त्री कहते है कि आज व्यक्ति अपने को अस्तित्वहीन, आदर्शहीन प्रयोजनहीन और अलगाव की स्थिति मे समझकर आत्मा और समाज से विपर्यस्त हो रहा है। एक ओर उसकी अन्तहीन आकाक्षाए और एषणाए है, दूसरी ओर उनकी पूर्ति के साधन सीमित है और अल्प। व्यक्ति और परिवेश एक-दूसरे से विच्छिन्न है। विनाबाजी के शब्दो मे सत्ता, सम्पत्ति और स्वार्थ का ही बोलबाला है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सबमे ज्ञात अज्ञात युद्धोन्माद है। फ्रास मे धनिक समाज का महत्त्व है, इग्लैड में सामाजिक प्रतिष्ठा का और जर्मनी म राज्य सत्ता का। अमेरिका इन तीनो से ग्रसित है। यहा वैयक्तिक और सामाजिक जीवन आधुनिक सभ्यता की जड़ता और भौतिकता से सत्रस्त है। मानव से अधिक मशीन का महत्त्व है। आकाश के सुदूर नक्षत्रो का सधान किया पर मानवीय सवेदनशीलता सिकुड़ती गयी। बाह्य का विस्तार और अन्तर का समचन-यही विसगति है। आज जिस सास्कृतिक क्राति की आवश्यकता है उसका मूल स्रोत जैन धर्म, दर्शन और सस्कृति मे ही विद्यमान है। महावीर जितने क्रातदर्शी थे उतने ही शातदर्शी भी। जैन धर्म ने सदैव युद्धोन्माद का विरोध किया। जिस व्यापक और विराट सत्य की प्रतिष्ठा की वह था विश्वजनीन आत्म और विश्वजनीन समाज। उन्होंने चींटी और हाथी मे समान आत्म भाव को देखा। महावीर ने मनुष्य को पुरुषार्थ और आत्मविजय का सदेश दिया। प्राचीनतम होने के साथ वह नवीनतम भी है। एक ओर जैन धर्म ने सदैव अधविश्वासो जड़ परम्पराओ और पाशविक वृत्तियो के विरुद्ध क्राति की तो दूसरी ओर उसने मानव जीवन को उच्चतम विचार, आचार और व्यवहार की ओर अग्रसर किया। उसकी यह रचनात्मक दृष्टि अनुपमय है हमारे आचार्य, उपाध्याय और साधु तत्त्वज्ञ सर्वभूताना योगज्ञ सर्व कर्मणा के आदर्श पुरुष थे।

यस्य सर्व समारम्भा कामसकल्पवर्जिता।
ज्ञानाग्निदग्ध कर्माण तमाहु पण्डित बुधा॥

जैन मुनि पूर्णार्थ में पण्डित है। अपनी ज्ञानाग्नि मे उनकें कर्म दग्ध हो गए हैं।

आज भी शत शत श्रमण वृन्द तत्त्वज्ञ, योगज्ञ, सुविज्ञ और प्रमाज्ञ होकर व्यक्ति समाज, राष्ट्र और मानवता क वर्तमान का परिष्करण कर उन्हे मगमलय भविष्य की ओर ले जा रहे है। पारसी धर्म के तीन महाशब्द है- हुमता, हुखदा और हुविश्तार अर्थात् सुविचार सत्य वचन और सुकार्य। यही तो हमारे साधु समाज का जीवन है। पूज्य नानालालजी म सा का जीवन श्रमण आदर्शों की मजूषा है। उन्होंने अपनी साधुता और श्रेष्ठता स जैन समाज का ही नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव समाज और लोक मगल का पाचजन्य फूका है। उन्हें मरी प्रणति।

- २ ए, देशप्रिय पार्क, जोधपुर

❑ कन्हैयालाल भूरा

वीर सघ एक अभिनव योजना

उद्गम

आज से लगभग १०८ वर्ष पूर्व साधुमार्गी सघ के महान आचार्यो मे षष्ठ पाट पर क्रातिकारी, युगदृष्टा, युगपुरूष श्रीमद् जवाहराचार्य हुए जो महान दूरदर्शी सत थे। उनके द्वारा जो आगम सम्मत ज्ञान प्रस्तुत किया गया वह आज भी आधिकारिक रूप मे स्वीकृत है। ज्ञान की उसी कड़ी मे जैन धर्म की युगीन आवश्यकता पर बल देते हुए आज से लगभग ९८वर्ष पूर्व उन्होने नव आयामी चिन्तन का जो स्वरूप प्रस्तुत किया था वह उनके जीवन चरित्र मे प्रकाशित है। यथा-

दिनाक ११-१०-१९३१ को दिल्ली मे स्थानकवासी जैन काफ्रेस की जनरल कमेटी का अधिवेशन हुआ जिसमे मुख्य विषय था साधु सम्मेलन'। उसी प्रसग मे एक दिन पूज्य श्री ने कहा ' हमारे समाज मे मुख्य दो वर्ग हैं साधु वर्ग और श्रावक वर्ग, पर साधु वर्ग पर समाज का बोझ पड़ने से अनेक हानिया हो सकती हैं। अतएव समाज-सुधार का कार्य श्रावक वर्ग को करना चाहिए। मगर हमारा श्रावक वर्ग दुनियादारी के पचडो मे अत्यधिक फसा रहता है, उसमे शिक्षा का अभाव तो है ही उसका धर्म सबधी ज्ञान भी इतना पर्याप्त नही है कि वह धर्म का लक्ष्य रखकर तथा धर्म मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखकर, तदनुकूल समाज सुधार का कार्य कर सके। मेरी सम्मति के अनुसार इस समस्या का हल ऐसे तीसरे वर्ग की स्थापना करने से ही हो सकता है जो साधुओ और श्रावको के मध्य का हो। यह वर्ग न तो साधुओ मे ही परिणित किया जाए और न गृहकार्य करने वाले साधारण श्रावको मे। इस वर्ग मे वे ही व्यक्ति शामिल किये जावे जो ब्रह्मचर्य का अनिवार्य रूप से पालन करे और अकिचन हों। वे लोग समाज एव धर्माचार्य की साक्षी से निर्धारित व्रतों को ग्रहण करे।

इस प्रकार एक तीसरे वर्ग के बन जाने से धार्मिक कार्यों मे बड़ी सहायता मिलेगी। यह वर्ग न तो साधु पद की मर्यादा मे बधा रहेगा और न ही गृहस्थी के झझटो मे फसा होगा, अतएव यह वर्ग धर्म प्रचार मे उसी प्रकार सहायता पहुचा सकेगा जैसी चित्त प्रधान ने पहुचाई थी।

इसके अतिरिक्त इस तीसरे वर्ग से समाज सुधार के अतिरिक्त कार्य का भी लाभ मिलेगा। अगर अमेरिका या अन्य किसी देश मे सर्व धर्म सम्मेलन होता है तो वहा सभी धर्मों के अनुयायी अपने-अपने धर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करने हेतु जाते हैं परतु ऐसे सम्मेलनो मे मुनि सम्मिलित नही हो सकते, अतएव धर्म प्रभावना का कार्य रूक जाता है। यह तीसरा वर्ग ऐसे अवसरो पर उपस्थित होकर जैन धर्म की वास्तविक उत्तमता का निरूपण करके धर्म की बहुत सेवा कर सकता है।

भविष्य दृष्टा

इस योजना के सबध मे आचार्य श्री ने फरमाया था, यह चाहे आज कार्यान्वित न हो सके मगर एक दिन आयेगा जब इसे अमल मे लाना अनिवार्य हो जाएगा। पूज्य श्री की यह एसी योजना है जिसे अमल मे लाये बिना सघ का श्रेयस सध नही सकता।

(ज्योतिर्धर पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा की जीवनी से)

प्रारंभिक प्रयास

उपर्युक्त अति महत्वपूर्ण योजना के अत्यत उपयोगी होते हुए भी सयोगवश उस समय वह साकार रूप नहीं ले सकी तो कालातर मे अनेक नय आयामो के प्रणेता अष्टम पट्टधर आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के द्वारा वि स २०३२ देशनोक चातुर्मास मे यह योजना वीर सघ योजना के रूप मे प्रारभ की गई। कुछ उत्साही सदस्यो द्वारा कई वर्षो तक इसका सचालन हुआ पर ज्योतिर्धर जवाहराचार्य का प्रमुख चिन्तन जो धर्म प्रचार का था वह साकार नही हो पा रहा था। अतएव इस योजना एव इनके सदस्यो का विलीनीकरण समता प्रचार सघ (स्वाध्यायी सस्था) मे कर दिया गया।

स्वरूप निर्धारण

स्वर्गीय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा के स २०५४ (१९९७) के ब्यावर वर्षावास म आश्विन शुक्ल द्वितीया जो आचार्य प्रवर का शुभ चादर प्रदान दिवस भी है, के दिन आचार्य प्रवर के चिन्तन मे इसे पुनर्स्थापित करने की भावना जगी। आचार्य प्रवर की उन्हीं भावनाओ के अनुरूप श्रद्धेय स्थविर प्रमुख एव ओजस्वी वक्ता श्री ज्ञानमुनिजी म सा ने सामायिक प्रतिक्रमण वर्ष की घोषणा के साथ ही वीर सघ योजना को साकार रूप देने के लिए प्रबल प्रेरणा प्रदान की। परिणाम स्वरूप वीर सघ योजना को अनोखा बल मिला।

प्रसगवश उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व वि स २०२५ (सन १९९५) में वर्तमान आचार्य प्रवर नवम् पट्टधर तरूण तपस्वी आगमज्ञाता श्री रामलालजी म सा (तत्कालीन युवाचार्य प्रवर) द्वारा अष्टम पट्टधर स्व आचार्य श्री नानालालजी म सा के चादर प्रदान दिवस के प्रसग पर व्यसन मुक्ति समता समाज रचना एव सस्कार जागरण जैसे अभियानो की घोषणा हो चुकी थी। सारे देश मे फैले हुए विशाल साधुमार्गी जैन समाज अजैन समाज एव उन स्थानो म जहा सत सती कम पहुच पाते है, या नहीं पहुच पाते है इस तरह देश के कोने कोने मे इस चिन्तन को पहुचाने की आवश्यकता थी। इस योजना को आचार्य प्रवर द्वारा निर्धारित प्रत्याख्यानो के तहत वीर सघ धर्म प्रचारक योजना के रूप मे व्यवस्थित कर स्थापित कर फैलाने की आवश्यकता अनुभव की गई।

निश्चित नियमो का प्रत्याख्यान :

वीर सघ प्रचारको के लिए निम्न नियमो की पालना का प्रावधान किया गया

१ सचित्त का त्याग।
२ जूते नहीं पहनना।
३ एक वक्त का अनिवार्य रूप से प्रतिक्रमण।
४ सैगटा (स्त्री-पुरूष का प्रत्यक्ष स्पर्श न होना)
५ खुले मुह नहीं बोलना।
६ असत्य नही बोलना।
७ चोरी नही करना।
८ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना।
९ रात्रि मे चौविहार (चारो आहारो का त्याग)
१० पुरुषो का पुरुषो से स्त्रियो का स्त्रियो से भी हाथ आदि नहीं मिलाना।
११ एक विगय का रोज त्याग।
१२ द्रव्यो की मर्यादा (स्व विवेक से)
१३ रूई के गद्दी तकिये का उपयोग न करना।

वर्तमान स्वरूप

वीर सघ योजना के तहत कार्यकर्ता फिलहाल निश्चित दिनो के लिए धर्म प्रचार के कार्य हेतु जा सकते हैं। जब तक धर्म प्रचारक सेवा मे रहे तब तक उनके लिए अनिवार्य रूप से उपरोक्त १३ नियमो का पालन करना अनिवार्य है। प्रचार का कार्य सपूर्ण होने पर ये पुन अपने घर जा सकते है। प्रचारक के वेश पर वीर सघ धर्म प्रचारक (स्त्री हो तो प्रचारिका) लिखा रहेगा। वीर सघ धर्म प्रचारक के लिए निश्चित वेश में रहना आवश्यक होगा।

धर्म प्रचारक द्वारा सेवा के पश्चात् घर जाने के उपरात भी पालनीय नियम

१ सप्त कुव्यसनो (जुआ, मास, शराब, चोरी, शिकार पर स्त्री गमन, वेश्यागमन) का आजीवन त्याग ।

२ बीड़ी, सिगरेट, जर्दा पान मसाला, गुटका आदि का आजीवन त्याग ।

३ प्रतिदिन एक सामायिक करना ।

४ आधा घटा स्वाध्याय करना ।

५ प्रतिदिन नवकारसी करना ।

६ निर्धन असहाय रोगियो की यथासभव सहायता एव सेवा करना ।

७ नैतिकता एव सदाचार पूर्ण जीवन जीने का प्रयास करना ।

८ बारह व्रतो को समझकर यथाशक्य ग्रहण करना ।

इस तरह वीर सघ धर्म प्रचारक के लिए उपरोक्त तेरह व इन आठ इस प्रकार कुल २१ नियमो के तहत चलने का प्रावधान किया गया है ।

साधुमार्गी सघ के अतर्गत सचालित

इस योजना को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ (प्रधान कार्यालय, बीकानेर) के अतर्गत रखे जाने से इसके सचालन का सपूर्ण भार सघ पर है । प्रचारको को भेजने हेतु योजना बनाना, उनका समुचित लाभ लेना, उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, स्थानीय सघो को प्रचारकों से लाभ लेने हेतु जागरूक करना तथा उनके मार्ग व्यय आदि व्यवस्था का उत्तरदायित्व सघ पर है ।

धर्म प्रचारकों द्वारा करणीय प्रचार दिशा निर्देशन

निर्देशित २१ नियमो का पालन करते हुए सघ निर्देशित स्थानो पर निम्न कार्यों को करने का निर्देश वीर सघ प्रचारक को दिया गया है-

१ भाई-बहिन, बालक-बालिकाओ को धर्मोपदेश के माध्यम से सत्सस्कार देना ।

२ सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल आदि धार्मिक क्रियाओ का अध्ययन करवाना तथा उसकी प्रेरणा देना ।

३ व्यसन मुक्त जीवन जीने के लिए व्यसनो से होने वाली हानिया समझकर लोगो से उनका त्याग करवाना ।

४ स्कूलो, कालेजो एव अन्य सार्वजनिक स्थानो पर भी यथायोग्य उपदेश देना तथा व्यसन मुक्ति की प्रेरणा देना ।

५ तरूण तपस्वी शास्त्रज्ञ आगम ज्ञाता परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा द्वारा सप्रेरित व्यसन मुक्त समता समाज की रचना पर भी बल देना ।

६ श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ की प्रवृत्तियों व गतिविधियों का प्रचार । कोई अर्थ सहयोग देना चाहे तो प्रचारक स्वय नही ले परतु सघ को भेजने की प्रेरणा दे सकता है ।

८ अधिक से अधिक त्याग- वैराग्य पूर्वक रहना, सासारिक बातें नही करना ।

निषिद्ध कार्य :

कोई भी धर्म प्रचारक जब तक सेवारत रहेगा तब तक निम्न कार्य नही करेगा-

१ सोफासेट पर नही बैठेगा ।

२ सबके साथ डायनिंग टेबल पर बैठकर भोजन नही करेगा ।

३ किसी से हाथ नही मिलायेगा ।

४ घूमने-फिरने के उद्देश्य से पर्यटन स्थलो पर नही जाएगा ।

५ किसी भी प्रकार की खरीददारी हेतु स्वय नही जाएगा ।

(आवश्यक हुआ तो दूसरे से कहकर मगा सकते हैं)

६ किसी के शादी-विवाह जन्मदिन जैस सासारिक कार्यों मे सम्मिलित नही होगा । (सामाजिक एव धार्मिक कार्यों मे द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव को देखते हुए भाग लेने की छूट है)

विशेष ध्यातव्य बाते

जब तक धर्म प्रचारक के रूप में कोई प्रत्याख्यानित होकर चल रहा है तब तक उसके साथ सभी भाई बहिन आदरपूर्वक व्यवहार करें यह अपेक्षित है। यदि उनसे कोई स्खलना भी हो जाए तो उसका हसी मजाक नहीं उड़ाया जाए और न ही व्यग्य की भाषा का प्रयोग किया जाए। सुधार का लक्ष्य रखा जाना जरूरी है। इसके लिए केद्र को सूचना देना अपना कर्तव्य समझा जाना चाहिए। जिस किसी सघ मे धर्म प्रचारक पहुचे वहा के सघ अध्यक्ष, मत्री तथा श्री अ भा सा जैन सघ के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, शाखा सयोजक एव साधारण सदस्यो का कर्तव्य है कि वे स्वय उसके कार्यक्रमो मे पूरा-पूरा भाग ले, उनके आयोजना को सफल बनाने मे योगदान दे तथा अन्य लोगो को भी प्रेरित करें। इस प्रकार का समर्पित सहयोग उपलब्ध होने पर ही ऐसे प्रचारक सघ की सच्ची सेवा कर सकेंगे क्योंकि वह साधु तो नही होता अत उसमे कभी किसी दुर्बलता का प्रकट हो जाना सहज है।

धर्म प्रचारक जिज्ञासुओ के लिए :

जो लोग धर्म प्रचार के कार्यों मे भाग लेना चाहते हैं वे फिलहाल श्री गुमानमल जी चोरडिया जयपुर से सपर्क करें। उन्हे कुछ आता है यह इतना महत्वपूर्ण नही है। महत्वपूर्ण यह है कि उनकी धर्म प्रचार के लिए जाने की भावना कितनी प्रबल है। ऐसे जिज्ञासु प्रथम बार ऐसे धर्म प्रचारको के साथ (जो सेवा दे चुके हों) जाकर मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। उसके बाद उन्हें स्वतत्र रूप से भेजने का प्रसग बन सकता है।

(वीर सघ धर्म प्रचारक- क्या कैसे से उद्धृत)

विशेष प्रशिक्षण व्यवस्था

आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा एव स्थविर प्रमुख श्री ज्ञान मुनि जी म सा का विशेष आशीर्वाद इस योजना को उपलब्ध है। धर्म प्रचार हेतु सेवा देने की भावना रखने वाले भाई बहिनो के सूचना देने पर सघ द्वारा उनके सानिध्य मे या आचार्य प्रवर के अपनी मर्यादानुसार प्राप्त सकेतो के आधार पर सघ के अन्य सत सतीवृद के सानिध्य मे या ऐसे ही शिविरो के माध्यम से उनके विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है। इस हेतु भी श्री गुमानमल जी चौरडिया से सपर्क किया जाना अपेक्षित है।

योजना का शुभारभ

दिनाक ३ १०-९७ को ब्यावर शहर मे आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा की भावनाओ के अनुरूप स्थविर प्रमुख एव ओजस्वी वक्ता श्री ज्ञानमुनि जी म सा द्वारा प्रेरित होने पर दिनाक १२-१०-९७ को ब्यावर शहर से ही सर्वप्रथम हम दम्पति (कन्हैयालाल भूरा एव कमला देवी भूरा) ने व्याख्यान मे, वीर सघ की निर्धारित वेश भूषा मे उपस्थित होकर जनमेदिनी के समक्ष आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा से निर्देशित नियम पचक्खाण लिये और लीडी जाकर पाच दिन तक धर्म प्रचार का कार्य अति सफलता पूर्वक किया। वहा के लोगो ने अत्यत सतुष्ट होकर धर्म प्रचारको को पुन भिजवाने हेतु आचार्य भगवन के चरणो में निवेदन किया। ब्यावर सघ के विशिष्ट लोग धर्म प्रचारको को पहुचाने व लेने गये।

विशेष आह्वान सुरक्षित बल का निर्माण

धर्म मे बढती हुई अनास्था से आज के वातावरण को सुधारने की दृष्टि से अपेक्षित है ज्योतिर्धर जवाहराचार्य के इस स्वप्न को सघ साकार रूप करने मे पूरी तरह से सहयोगी बने। आज हमे जबकि आचार्य प्रवर के सामने सारे देश से साधु साध्वियो को भेजने की माग निरतर आ रही है। तब वीर सघ धर्म प्रचारको के रूप मे सैकडो लोगो (भाई बहिनो) का एक सुरक्षित बल यदि मौजूद हो तो साधु-साध्वियो के न पहुच पाने की स्थिति मे धर्म प्रचार के कार्य की किसी सीमा तक तो पूर्ति हो सकती है।

एक सिक्के के दो पहलू :

वीर सघ योजना एव व्यसन मुक्ति सस्कार जागरण के साथ समता समाज रचना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जो धर्म प्रचारक जाते हैं वे धर्म प्रचार के

अनेक कार्य सम्पादित करते हैं, जैसे- सुबह ध्यान, प्रार्थना, फिर व्याख्यान तदुपरात दिन मे विद्यालयो में व्यसन मुक्ति सस्कार जागरण कार्य, दोपहर मे महिलाओ की उन्नति हेतु विशेष कार्यक्रम, रात्रि मे प्रतिक्रमण, बच्चो मे सस्कार जागरण के कार्य तथा इस प्रकार समता समाज रचना का प्रयास। इस तरह यह योजना अनेक स्तरो पर कार्य सपादित कर रही है।

कर्म निर्जरा का अपूर्व अवसर

स्वर्गीय आचार्य भगवन फरमाते थे कि धर्म प्रचारक जो उपरोक्त कार्य करते हैं, उनसे समाज को तो लाभ मिलता ही है, स्वय धर्म प्रचारको के कर्मों की निर्जरा का भी प्रसग बनता है।

जैन/अजैन सभी मे प्रिय

धर्म प्रचारको के जो कार्य है, वे सार्वजनिक हित क हैं, जिनसे सिर्फ जैनी ही नही समग्र समाज और इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति जैन, अजैन सभी लाभान्वित होते है। मासाहारी क्षेत्रो मे जाकर लोगो को अहिसा का उपदेश देकर शाकाहारी बनाया जाता है और नशा करने वाले व्यक्तियो का जीवन उनकी प्रेरणा से सुधरता है, तो समता समाज की रचना भी होती है। दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियो के त्याग से समता का प्रचार होता है। इस प्रकार वीर सघ योजना मानव मात्र के लिए हितकर है।

सघ का लक्ष्य आजीवन धर्म प्रचारक

इस तरह अगर धर्म प्रचारको के रूप मे सेवा देनेवालो और उनसे जुडनेवालो की भावना प्रवर्द्धमान रहे तो भविष्य मे इस योजना के व्यापक स्तर पर विस्तार की प्रबल स्थिति बन सकती है। तब जीवन भर के लिए भी धर्म प्रचारक बनाये जा सकेगे और समता समाज की स्थापना की दिशा मे प्रभावी कदम उठाये जा सकेगे।

विदेशो में प्रचार का प्रावधान

विशेष योग्यता प्राप्त धर्म प्रचारकों को इस कार्य हेतु विदेशो मे भेजने का प्रावधान भी रखा गया है।

सेवानिवृत्त व्यक्तियो से विशेष निवेदन

आपने जीवन भर कहीं न कही वैतनिक/व्यावसायिक सेवा दी है। आप मे उल्लेखनीय योग्यता व प्रतिभा तो है ही जीवन भर का प्रचुर अनुभव भी आपके पास है। तब आइये इस योजना से जुड़कर अपने जीवन की साध्य बेला को समाज हित के कार्य मे लगाकर सफल बनाईय।

-एन एन रोड कूचविहार (प बगाल)

फिजूलखर्ची राष्ट्रीय अपराध

मैं कहता हू कि सरकार का काम सरकार' जाने किन्तु फिलहाल तो यही बहुत है कि आप लोग अपना काम जान लें।

फिजूलखर्ची राष्ट्रीय अपराध है और भारत जैसे गरीबों के देश में तो इस अपराध का आकार और अधिक गुरुत्तर माना जाना चाहिए। जिस देश में एक ओर करोड़ों लोग भूखमरी के कगार पर हों तथा छोटे बच्चों को दूध तक दुर्लभ हो, उस देश में आतिशबाजी जैसी निरर्थक प्रवृत्ति पर पानी की तरह पैसा बहा देना अपराध ही नहीं मानवता पर घोर अत्याचार है।

'जरूरत इस बात की है कि फिजूलखर्ची पूरी तरह रोक दी जाएं बल्कि जो उचित खर्च हैं, उन्हें कम करके बचत की जाए तथा उस राशि का सदुपयोग उन गरीबों का दु ख दर्द कम करने और मिटाने के हितकारी कामों में किया जाए। सच तो यह है कि ऐसी संकटापन्न परिस्थितियों में आतिशबाजी जैसी फिजूलखर्ची को एक दंडनीय अपराध घोषित किया जाना चाहिए।

-आचार्य नानेश

सामाजिक सवार मे चतुर्विध सघ की महत्ता

भगवान महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त कर वैभार पर्वत पर जो लोक मगलकारी उपदेश दिय उसमे गणधर बड़े बड़े राजा महाराजा-रानिया-राजकुमार व असीम जन समूह अभिभूत होकर उनक आदर्शों को अगीकार कर शिष्यत्व स्वीकार जन जागृति के लिए सकल्पित हुए जिससे सभी प्राणियो का कल्याण हो जैसा कि निर्वाण भक्ति [1] मे कहा गया है कि -

अथभगवान्सम्प्रापदिव्य वैभार पर्वत रम्य ।
चातुर्वण्य-सुसघस्तत्राभूद गौतम प्रभृति ॥

उक्त सम्पूर्ण शिष्य समुदाय के लिए महावीर ने जो व्यवस्था दी उसे चतुर्विध सघ व्यवस्था कहा गया। यथा चउविहे सघे प स समणा समणीओ, सावगा सावियाओ । [2]

यही नहीं अपितु भगवती सूत्र मे भी बताया गया है कि

तित्थ पुण चाउवन्नाइन्ने समणसघो ।
त समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ॥ [3]

चतुर्विध सघ की पावनता को परख कर इसे तीर्थ कहा गया । यथा-

"'तीर्थनाम प्रवचन तत्त्व निराधान न भवति तेन साधु साध्वी श्रावक श्राविका रूप चतुर्वर्ण सघ'" भगवान महावीर इस महातीर्थ अथवा धर्म तीर्थ के कर्ता कहे गये । यथा

तिस्ससय करो वीरो महावीरो जिणुत्तमो ।
रागदोसमयादीदो धम्मतीत्थस्सकारओ ॥[5]

सबक उत्थान, सबके कल्याण एव समाज के अद्वितीय नवनिर्माण क परिप्रेक्ष्य म इसे सर्वोदय तीर्थ भी कहा गया । यथा-

सर्वान्तववदगुण मुख्यकल्प, सर्वान्तशून्य च मिथोऽनपेक्षम् ।
सर्वापदामन्तकर निरन्त, सर्वोदय तीर्थमिद तवैव ॥[6]

सभी प्राणियो के अभ्युदय के समस्त कारणा हेतु मानते हुए इसे बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के परिप्रेक्ष्य मे भी परखा गया । यथा-

'सर्व सत्वान हितसुखाय'

सुव्यवस्था, सुसस्कार, धर्म परायणता, लोकोपकार, नैतिक-निखार, सामाजिक सवार आदि के परिप्रेक्ष्य मे श्रमण-श्रमणी एव श्रावक श्राविका की भूमिका का महत्ता प्रदान की गई जिसकी यथावत गरिमा स चतुर्विध सघ गतिशील एव गौरवान्वित है । आज भी श्रमण श्रमणी गाव गाव, नगर-नगर देश के एक छोर से दूसरे छोर तक पैदल, बिना पादुका के (नग पैर) कटकाकीर्ण पथ पर चलकर अपने सदुपदेशो से समाज का कल्याण करते है जबकि

श्रावक श्राविका भी अपनी अटूट आस्था उनके प्रति अर्पित कर मर्यादा का पालन करते हैं । इस प्रकार जन जागृति का अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित करना जैन धर्म की विशेषता है, जिसमे पाच महाव्रतो के पालन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है । आत्म सयम, सदाचार, सत्कर्म, सामाजिक समन्वय, जप-तप-नियम, सत्य अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि सास्कृतिक उच्चादर्शों को स्वय के जीवन मे उतारने का आह्वान करते हुए लोकोपकारी कार्य करते है । इस परिप्रेक्ष्य में चातुर्मास की महत्ता अद्वितीय मानी गई है जिसमे धर्म-ध्यान, पठन-पाठन प्रवचन आदि कल्याण-कारी कार्य किये जाते है ।

श्रमण' शब्द की व्युत्पत्ति की वरीयता को परखना भी उक्त परिप्रेक्ष्य मे आवश्यक है । यह तप और 'खेद' (परिश्रम) अर्थ वाली 'श्रम धातु श्रम' तपसि खेदे च से 'ल्यु' प्रत्यय होकर श्रमण शब्द बनता है । आचार्य हरिभद्र सूरि ने कहा है कि 'श्राम्यतीति श्रमण तपस्यन्तीत्यर्थ '[७] अर्थात् जो श्रम करता है वह श्रमण है । आचार्य रविषेण ने तप' को ही श्रम कहा है । यथा-

परित्यज्य नृपो राज्य, श्रमणो जायते महान् ।
तपसा प्राप्य सम्बन्ध, तपो हि श्रम उच्यते ॥ [८]

अर्थात् राजा लाग भी राज्य का त्याग कर तप' से सम्बन्ध जोड़ कर 'श्रमण बन जात है । जिसके ऐतिहासिक उदाहरण अत्यधिक प्रेरक है ।

श्रम धातु के तप' और खेद' अर्थ को ध्यान मे रखकर अभियान राजेन्द्र कोश मे श्रमण' की व्युत्पत्ति निम्न रूप मे की गई है यथा-

'श्रममानयति पन्चेन्द्रियाणि मनश्चेति वा श्रमण श्राम्यति ससर विषयेषु '[९]

'श्रमण' का मूल प्राकृत रूप समण' है । इसका सस्कृत रूपान्तर श्रमण, समन और शमन तथा श्रम, शम और सम है, जो श्रमण सस्कृति का मूलाधार है । समन शब्द सम' उपसर्ग पूर्वक अण' धातु (अण प्राणने) से बनता है, जिसका अर्थ है सभी प्राणियो पर समानता का भाव रखने वाला । उत्तराध्ययन सूत्र (२५/३१) मे भी कहा गया है- समयाए समणो होई' अर्थात् समता से 'श्रमण' होता है । यही नही अपितु-

णत्थि य से कोइ वेसो, पिओ य सव्वेसु जीवेसु ।
एएण होई समणो, एसो अन्नो नि पज्जाओ ॥

अर्थात् जो किसी से भी द्वेष नही करता, जिसे सभी जीव समान भाव से प्रिय होते है वह श्रमण है । टीकाकार हेमचन्द्र ने 'श्रमण समण शब्द का निर्वचन 'सममन' किया है, जिसका तात्पर्य है सभी जीवो के प्रति समान भाव । इस परिप्रेक्ष्य मे स्थानागसूत्र का यह पद पठनीय है यथा-

सो समणो जइ सुमणो, मावेण जइण होइ पायमणो ।
सयणे अजणे य समो, समो अ माणावमाणेसु ॥
(स्थानाग सूत्र ६)

तथ्यत शब्द अपनी महत्ता में असीम आदर्श सजोये सास्कृतिक सवार एव सामाजिक निखार का अतुलनीय भाव प्रकट करते हुए सभी प्राणियो के मगल का आह्वान करता है, जिस पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है ।

तथ्यत श्रमण' सस्कृति का सूत्रधार श्रमण शब्द असीम, अनत, अतुलनीय रहस्य स्वय में समाहित किये हुए है तभी तो भगवान महावीर भी इस शब्द की महिमा से मडित हुए । कठोरतम तप की तुला पर गुरुत्तर होकर तभी उनका एक नाम 'श्रमण भी है । यथा-

'सहसमुइयाणे समणे

Jain Sutras (S B E.) Pt. 1 Page 193

इसकी टीका इस प्रकार की गई है-सहस मुदिता सहभाविनी तप करुणादिशक्ति तथा 'श्रमण इति द्वितीय नाम '[१] 'यही नही वरन् यह भी कहा गया है कि 'तएण समण भगव महावीर अरहा जाये, जिणो केवली सवन्न सव्व दरसी । ससार की सुख-शाति के लिए श्रमण' की गरिमा को परखना आवश्यक है । इस परिप्रेक्ष्य में यह उद्धरण विचारणीय है । यथा-

जह मम ण पिय दुक्ख, जाणिअ एमेव सव्वजीवाण ।
ण हणइ ण हणावेइ, अ सममणइ तेण सो समणो ॥ [11]

अर्थात् जिस प्रकार दु ख मुझे अच्छा नहीं लगता, उसी प्रकार ससार क अन्य सभी जीवा को अच्छा नहीं लगता। यह समझ कर कि जो न स्वय हिंसा करता है न दूसरो से करवाता है। अपितु सर्वत्र सम रहता है, वह समण है। उक्त यथार्थता को यदि सभी लोग समझे, पीड़ा की अनुभूति स्वय क समान अन्यो के प्रति भी करे तो ससार मे असीम सुख-शाति हो जायेगी। अत 'समण' की सामाजिक महत्ता को गभीरता से परखना चाहिए, जिससे स्वय का व समाज का कल्याण हो।

-कनवानी (उ प्र) २२२१४९

सन्दर्भ

१ नि भ १३ (पूज्यपाद)
२ ठाणाग सूत्र सटीक पू ठा ४३ ४ सूत्र ३६३ पत्र २८१-२
३ भगवती सूत्र सटीक शतक २, ३,८ सूत्र ६८२ पत्र १४६१
४ सत्तरिसय ठाणावृत्ति १०० द्वार आ म राजेन्द्रभिधान भाग ४ पृ २२७६
५ जयधवला टीका
६ युक्तानुशासन
७ दशवैकालिक सूत्र १-३
८ पदमूचरित ६/२१२
९ भारतीय सस्कृति और श्रमण परम्परा डा हरीन्द्रभूषण जैन पृ० ८
१० कल्पसूत्र, सुबोधिनी टीका पत्र २५४
११ स्थानाग सूत्र-३

वन्दना के स्वर
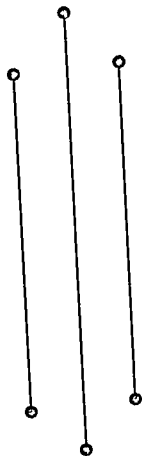
संदेश

अध्यात्म साधना केन्द्र
मेहरौली, नई दिल्ली

आचार्य महाप्रज्ञ
युवाचार्य महाश्रमण

जैनशासन मे चतुर्विध धर्मसघ की व्यवस्था है। उसमे आचार्य का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। ढाई हजार वर्ष की परम्परा मे अनेक आचार्य हुए है और उन्होने जिनशासन की सेवा की है।

आचार्य श्री नानालालजी म साधुमार्गी परम्परा के एक प्रभावी आचार्य थे। उन्होने अपने सघ के लिए अनेक कार्य किए। जिनशासन की एकता के लिए विशेषत सवत्सरी की एकता के लिए उनकी प्रबल भावना थी। देवाद (मेवाड) मे जब आचार्य श्री तुलसी से मिले उस समय भी सवत्सरी की चर्चा प्रमुख रूप से सामने आई। उनका स्वर्गवास जैनशासन के एक समर्थ व्यक्तित्व की रिक्तता का अनुभव करा रहा है। उनकी आध्यात्मिक यात्रा के लिए मगल भावना। विश्वास है उनके उत्तराधिकारी आचार्य श्री रामलालजी, साधु-साध्वियॉ तथा श्रावक समाज सभी जिनशासन की सेवा के लिए कृत सकल्प रहेंगे।

आचार्य राजयश सूरिश्वर

आज व्यक्ति अपने घर के सदस्यो का भी नेतृत्व ठीक से नहीं कर सकते फिर इतने विशाल साधु-समुदाय एव सघ को लेकर चलना आचार्य श्री नानेश के अद्वितीय एव विलक्षण नेतृत्वगण का परिचायक है। आचार्य श्री नानालालजी म. सा. इस सदी के महान् आचार्य थे जो सप्रदाय मे रहते हुए भी सम्प्रदायवाद से अलग थे। आपके चले जाने से जैन समाज ने एक महान् चिंतक आचार्य खो दिया जिसकी रिक्तता को हम निकट भविष्य मे पूर्ण नहीं कर सकते।

राष्ट्रपति सचिवालय
राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली ११०००४

भारत के राष्ट्रपति श्री के आर. नारायणन् जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर अपने पाक्षिक मुखपत्र श्रमणोपासक का आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक प्रकाशित कर रहा है।

राष्ट्रपति जी इस प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

आपका
प्रेम प्रकाश कौशिक

डा गिरिजा व्यास सांसद
अध्यक्ष
राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा धर्मपाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर नानालालजी म.सा. जिनका दिनांक २७ १० ९९ को महाप्रयाण हो गया था, की स्मृति मे 'आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक' प्रकाशित करने जा रहे है।
मै इस सुअवसर पर श्रद्धेय स्वर्गीय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी को अपने हृदय स्पर्शी श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए बार-बार नमन करती हू तथा आचार्य श्री के उत्तराधिकारी युवाचार्य शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, सिद्धान्त शिरोमणि, प्रशान्त-मना पूज्य श्री रामलालजी म.सा. को भी साथ-साथ नमन करती हू एवं आशा करती हू कि भवतगन आचार्य श्री के उपदेशों एवं निर्देशों का हृदय से सम्मान कर अनुकरण एवं स्मरण पूर्वक श्रद्धा अर्पित करते रहेंगे।

भवनिष्ठा
डा गिरिजा व्यास

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

जैन अध्यात्म, दर्शन को नवीन दिशा बोध कराने मे आचार्य श्री नानालालजी म सा. का योगदान स्वत. सिद्ध है तथा उन्होंने विभिन्न नवाचारों के माध्यम से सामाजिक समरसता का जिस प्रकार सूत्रपात किया, वह अपने आप मे प्रेरणादायी है। यह शुभ है कि उस विलक्षण संत के जीवन आदर्शों पर विशेषाक का प्रकाशन किया जा रहा है
मुझे विश्वास है कि आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषाक की सामग्री आचार्य श्री जी के व्यक्तित्व-कृतित्व एव जीवन दर्शन का ज्ञान कराने वाली होगी।
मै चिरस्मृति शेष आचार्य श्री का श्रद्धापूर्वक स्मरण एव सघ के नवमे पट्टधर आचार्य श्री रामलालजी म. सा. को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए विशेषाक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हू।

आपका
अशोक गहलोत

दिग्विजय सिह
मुख्यमत्री
मध्यप्रदेश शासन

आचार्य श्री नानेश जी ने भगवान महावीर के रास्ते पर चलकर समाज को, लोगो को एक नई दिशा दृष्टि प्रदान की। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने सत महापुरुषो के विचारो को आत्मसात् कर इनके दिखाये मार्गो पर चलने का प्रयत्न करे ताकि हम एक बेहतर समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सके।
मुझे आशा है कि आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषाक राष्ट्र और समाज को बेहतर बनाने मे सहायक सिद्ध होगा।
शुभकामनाओ सहित।

आपका
दिग्विजय सिह

डा वी डी कल्ला

मंत्री कार्मिक सामान्य प्रशासन मंत्रीमंडल
सचिवालय एव इंदिरा गांधी नहर परियोजना विभाग

स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश भगवान महावीर द्वारा स्थापित सिद्धान्तो के प्रवर्तन की श्रृंखला मे एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध हुए है। आचार्य श्री नानेश के सद्प्रयासो मे सर्वाधिक प्रभावशाली कदम था, समता के विचार को साकार रूप प्रदान करना, पतित व वंचित वर्ग को भी बराबरी का स्थान दिलाया जाना। उन्होने अपने जीवन काल मे जो कुछ भी प्रचारित करना चाहा, वह स्वय करके दिखाया। सभवत. यही कारण था कि उनके आचार्य काल मे उन्ही की प्रेरणा से ३५० से अधिक उपासको ने दीक्षा प्राप्त की।
मुझे विश्वास है कि आचार्य श्री नानेश के उत्तराधिकारी के रूप मे पूज्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. पूर्व मे स्थापित साधुमार्गी जैन सघ सन्तो की स्वस्थ परम्पराओ को निरन्तर सशक्त बनाये रखने मे सलग्न रहेंगे।

डा वी डी. कल्ला

न्यायाधीश मिलापचन्द जैन

लोकायुक्त, राजस्थान

स्मृति विशेषाक मे आचार्य श्री के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर लेख प्रकाश डालेंगे जिससे जन-जन को उनके विषय मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। आचार्य प्रवर विषमता से त्रस्त विश्व को समता का उपदेश व सदेश अपने जीवन मे देते रहे है और इस सदेश के द्वारा अछूतोद्धार का महान् प्रयास उन्होने किया। वे त्याग तपस्या व साधना की प्रतिमूर्ति थे। उनका नाम त्यागी, तपस्वी व साधक के रूप मे हमेशा विश्व को याद रहेगा और जन-जन उनसे प्रेरणा लेगा, आत्मबोध, आत्मज्ञान, आत्मकल्याण के लिए प्रयत्नशील होगा और पूर्ण शान्ति प्राप्त कर सकेगा।

आपका
मिलापचन्द जैन

राजेन्द्र चौधरी
सूचना एव जन सम्पर्क मत्री
राजस्थान सरकार

आचार्य श्री जी ने विश्वशाति तथो मानसिक तनाव
से मुक्ति हेतु समाज को नई दिशा दी।

राजेन्द्र चौधरी

अशोक सिघल
कार्याध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्

महापुरुषो का जीवन ही समाज के पथ प्रदर्शन का कार्य सदैव से करता आ रहा है, उन्ही के जीवन से व्यावहारिक शिक्षा समाज को प्राप्त होती है। विश्वास है कि इस स्मृति ग्रथ के माध्यम से उनके जीवन का व्यावहारिक पक्ष समाज के सम्मुख आकर प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

अशोक सिघल

डा बी डी कल्ला
मंत्री-कार्मिक, सामान्य प्रशासन, मंत्रिमंडल
सचिवालय एवं इंदिरा गांधी नहर परियोजना विभाग

स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश भगवान महावीर द्वारा स्थापित सिद्धान्तों के प्रवर्तन की शृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध हुए हैं । आचार्य श्री नानेश के सद्प्रयासों में सर्वाधिक प्रभावशाली कदम था, समता के विचार को साकार रूप प्रदान करना, पतित व वंचित वर्ग को भी बराबरी का स्थान दिलाया जाना । उन्होंने अपने जीवन काल में जो कुछ भी प्रचारित करना चाहा, वह स्वयं करके दिखाया । संभवतः यही कारण था कि उनके आचार्य काल में उन्हीं की प्रेरणा से ३५० से अधिक उपासकों ने दीक्षा प्राप्त की ।

मुझे विश्वास है कि आचार्य श्री नानेश के उत्तराधिकारी के रूप में पूज्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. पूर्व में स्थापित साधुमार्गी जैन संघ सन्तों की स्वस्थ परम्पराओं को निरन्तर सशक्त बनाये रखने में संलग्न रहेंगे ।

डा बी डी कल्ला

न्यायाधीश मिलापचन्द जैन
लोकायुक्त, राजस्थान

स्मृति विशेषांक में आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लेख प्रकाश डालेंगे जिससे जन-जन को उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सकेगा । आचार्य प्रवर विषमता से त्रस्त विश्व को समता का उपदेश व संदेश अपने जीवन में देते रहे हैं और इस संदेश के द्वारा अछूतोद्धार का महान् प्रयास उन्होंने किया । वे त्याग तपस्या व साधना की प्रतिमूर्ति थे । उनका नाम त्यागी, तपस्वी व साधक के रूप में हमेशा विश्व को याद रहेगा और जन-जन उनसे प्रेरणा लेगा, आत्मबोध, आत्मज्ञान, आत्मकल्याण के लिए प्रयत्नशील होगा और पूर्ण शान्ति प्राप्त कर सकेगा ।

आपका
मिलापचन्द जैन

राजेन्द्र चौधरी
सूचना एव जन सम्पर्क मत्री
राजस्थान सरकार

आचार्य श्री जी ने विश्वशाति तथा मानसिक तनाव
मे मुक्ति हेतु समाज को नई दिशा दी।

राजेन्द्र चौधरी

अशोक सिघल
कार्याध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्

महापुरुषो का जीवन ही समाज के पथ प्रदर्शन का कार्य सदैव से करता आ रहा है, उन्ही के जीवन से व्यावहारिक शिक्षा समाज को प्राप्त होती है। विश्वास है कि इस स्मृति ग्रथ के माध्यम से उनके जीवन का व्यावहारिक पक्ष समाज के सम्मुख आकर प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

अशोक सिघल

भैरोसिंह शेखावत
नेता प्रतिपक्ष
राजस्थान विधान सभा

आचार्य श्री नानेश जी महाराज ने संयमीय साधना के साथ वैचारिक संदेशों का शंखनाद कर भू-मण्डल को चमत्कृत किया है। उत्सूत्र सिद्धान्तों का उन्मूलन, समता सिद्धान्तों की प्रतिष्ठापना तथा अछूतोद्धार की धर्मपाल प्रवृत्ति का बीजारोपण करने में आचार्य श्री जी की प्रेरणा से अभिनव आयाम का सृजन किया है। आचार्य श्री ने सिर्फ जैन समाज को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज को धर्म एवं साधना का मार्ग दिखाया है।

मैं आचार्य श्री के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

भैरोसिंह शेखावत

शांतिलाल चपलोत
पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा

आचार्य श्री नानेश ने व्यसन मुक्ति का अभियान चलाकर असंख्य लोगों का कल्याण किया व उन्हें नवीन जीवन शैली प्रदान की।

आपका समता दर्शन हर युग में प्रासंगिक बना रहेगा।

शांतिलाल चपलोत

दिलीपसिह भूरिया
अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एव अनुसूचित जनजाति आयोग

श्री नानेश जी ने विषमता से ग्रस्त विश्व को समता का संदेश दिया तथा समता के विचार को साकार रूप प्रदान करते हुए अछूतोद्धार की धर्मपाल प्रवृत्ति का बीजारोपण किया। उनके उत्तराधिकारी के रूप मे आसीन पूज्य श्री रामलालजी उनके द्वारा रोपित वृक्ष एव अन्य कार्यकलापो को और अधिक सफलतापूर्वक आगे बढायेंगे जिससे जन-मानस का कल्याण हो, यही मेरी शुभकामना है।

दिलीपसिह भूरिया

प्रो रासासिह रावत
ससद सदस्य (लोकसभा)

स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश जी के दर्शन करने का सुअवसर मुझे ब्यावर तथा पीपलियाकला मे मिला था, उनके मुखारबिन्द से अमृतमयी वाणी से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र मे समता और ममता का संदेश सुनकर मै गौरवान्वित हुआ था, उन्होंने भगवान महावीर के आदर्शो को अपने जीवन मे उतारकर अपना जीवन मानवता के कल्याण हेतु समर्पित कर धार्मिक सिद्धान्तो को जो रचनात्मक एव व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया वह सदैव स्मरणीय रहेगा, उनके द्वारा अपने अनुयायियो को छुआछूत मिटाने, दीन दुखियो की सेवा करने तथा रोगियो का उपचार करने हेतु कैसर निदान केन्द्र (अस्पताल) खुलवाने तथा आध्यात्मिक शक्ति को जागृत करने का जो महत्वपूर्ण कार्य किया है वह सदैव समाज और राष्ट्र के लिए दीप स्तम्भ का कार्य करेगा। उन्होंने अपने आचार्य काल मे ३५० से भी अधिक दीक्षायें प्रदान कर अपनी आत्मशक्ति और अनन्त प्रेरणा के अभिनव आयाम का जो सृजन किया है वह अत्यन्त स्तुत्य एव प्रशंसनीय है।

रासासिह रावत

डा लक्ष्मीमल्ल सिंघवी
पूर्व उच्चायुक्त ग्रेट ब्रिटेन एवं
अन्तर्राष्ट्रीय संविधान विशेषज्ञ
सांसद राज्यसभा

परम् श्रद्धेय, साधु शिरोमणि, आचार्य श्री नानेश जिन शासन के अनन्य प्रतिबोधक और उद्बोधक थे। उनका जीवन साधना का पर्यायवाची रहा। मानवीय मूल्यों को उन्होंने अपने जीवन में जिया और सिद्ध किया। उपदेश और क्रियापक्ष से उन्होंने समाज को दिशा और कर्त्तव्यबोध की चेतना दी। अछूतोद्धार में उनका नेतृत्व एक अनुपम कीर्तिमान रहेगा। संस्कार निर्माण और व्यसन मुक्ति हेतु उन्होंने जो अभियान चलाया था, वह अविस्मरणीय है। मैं परम् श्रद्धेय आचार्य प्रवर की स्मृति को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने में गौरव का अनुभव करता हूं। वे साधुमार्गी जैन समुदाय के ही नहीं, श्रमण परम्परा के और भारत की वैश्विक दृष्टि के प्रखर और मुखर व्याख्याता और प्रवक्ता थे। उनकी स्मृति को मेरा विनयावनत् प्रणाम।

लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

डा लक्ष्मीनारायण पाण्डेय
संसद सदस्य (लोकसभा)
सभापति रक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति

पूज्यपाद आचार्य श्री नानेश जी एक अद्वितीय संत थे। देश की महान विभूतियों में उनकी गणना है। समता का संदेश उनका जहां 'मंत्र' था, वहीं आत्मानुभूति के लिए मानवीय प्रवृत्तियों में जागरूकता लाना उनकी अपनी आध्यात्मिक शैली का परिचायक स्वरूप था।

संघ के आचार्य के दायित्व के रूप में उत्तराधिकारी बनाकर पू. श्री रामलालजी महाराज को पदासीन किया है, यह हम सबके लिए गौरव का विषय है।

मैं श्रद्धावनत हूं पूज्यपाद श्री रामलालजी म.सा. के प्रति जो न केवल तरुण तपस्वी हैं अपितु वे शांत होने के साथ उनमें गांभीर्य है।

भारत को आज ऐसे ही संतों के आध्यात्मिक ज्ञान संदेश की आवश्यकता है।

डा. लक्ष्मीनारायण पांडेय

वन्दना के स्वर
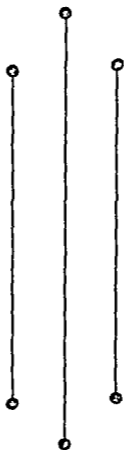
अणगार

स्फटिक मणि के समान पारदर्शी

नवोदित आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा ने उपस्थित जन समुदाय को आचार्य देव के जीवन प्रसग को उजागर करते हुए फरमाया कि- आचार्य श्री का जीवन स्फटिक मणि के समान था, मैंने निकट से देखा है। मेरा परम् सौभाग्य रहा कि दीक्षा ग्रहण क पश्चात् पिछले दो चातुर्मासो को छोड़कर प्राय उनके चरणो मे रहने का प्रसग बना एव सयमी जीवन की साधना करता रहा। निकट रहन के कारण उनके हृदय की गहराइयो को पाने का प्रयास किया। उन महापुरुषो की गहराइयो की थाह पाना अशक्य नही तो दुष्कर अवश्य है। जहर पीकर उसे पचाना शकर ही कर सकता है। साधारण व्यक्ति नही। आचार्य भगवन् भी अलौकिक महापुरुष थे। उन्होंने हर परिस्थितिया मे समभाव बनाए रखा। कई जगह देखा आशापूर्ण हनुमानजी, चिन्तारण हनुमान जी आदि। उनके यहा आशा पूर्ण हुई या नही। चिन्ता दूर हुई या नही ? किन्तु आचार्य देव के स्मरण से आशापूर्ण एव चिता दूर हुई है। अनेक सकट दूर हुए है। जय गुरु नाना के जाप से कई कार्य सिद्ध हुए है। वे किसी को दु खी देखना नही चाहते थे। मानवता के मसीहा महापुरुष थे आचार्य दव। उनका वियाग खलने जैसा है। '

शात क्रान्ति के अग्रदूत स्व आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा की तन्मयता पूर्वक सेवा की, सवा के क्षेत्र म वे हमेशा तत्पर रहे। छोटे से छोटे सत की सेवा करने मे भी पीछे नही रहते। उनका जीवन साधनामय जीवन रहा है। जो भी आचार्य देव के निकट रहा है, उसने देखा है कि वे सचमुच मे समता की प्रतिमूर्ति थे। उनके जीवन से समता की प्रेरणा स्वत ही मिल जाती थी। उनका जीवन उपलब्धियो स भरा था वे कथनी की अपक्षा करनी को विशेष महत्त्व देते थे।

जीवन की सध्या म भी उनका आत्मबल सुदृढ था। पिछले ८-१० दिन स स्वास्थ्य सुधर नही पा रहा था, बीच मे उतार-चढाव आते रहे। ८ दिन से उसी कमरे म विराजते, चलना-फिरना भी उन्हें पसद नहीं था। २६ १० ९९ की रात्रि को वे स्वय अपने हाथो से सर दबाने लगे। मैंने सर दबाते-दबाते देखा, एक नस मे भारी वेदना थी कान मे दर्द था। डाक्टर को दिखाना चाह रहे थे किंतु आचार्य देव उसके लिए तैयार नही थे। डाक्टर पहुचे कहने लगे एक इन्जेक्शन लगाना है।' आचार्य देव ने कहा दया पालो अब मुझे उपचार नहीं लेना है।' स्वास्थ्य मे उतार-चढ़ाव आते रह। मैंने कहा चौरासी लाख जीवयोनि से खमत-खामणा करना है। गुरुदव ने खमत खामणा का उच्चारण किया। २७ १० ९९ को प्रात डाक्टर पहुचे, देखना चाह रहे थे, किन्तु जब आचार्य प्रवर ने स्पष्ट फरमा दिया है तो अब अलग स कुछ करने की आवश्यकता नही है। ऐसी स्थिति मे बिना सहमति के जबरदस्ती करना उचित नहीं समझा। सबका एक ही मत था कि अब प्रत्याख्यान करवा दिये जाय, प्रत्याख्यान करवा देवे। स्थविर प्रमुख श्री जी म सा ने भी आचार्य दव की भावना से अवगत कराया। आचार्य देव के उत्कृष्ट भावा को देखते हुए स्थविर प्रमुख जी म सा ने प्रात ९ ४५ पर तिविहार सथारा करा दिया जिसकी घोषणा साय ४ बजे श्रावको के बीच कर दी गई तथा ५ ३५ पर चौविहार प्रत्याख्यान करा दिया। रात्रि के १० ३० पर देखा तो हाथ की नाड़ी उमर चली गई। नब्ज धीमी चल रही थी उस समय न हिचकी आई न डकार ही आई तथा न उल्टी दस्त हुई। रात्रि के लगभग १० ४१ पर दाहिनी आख की पलक गिरी और उठी। उसी समय आत्मा नश्वर देह से अलग हो गई।

हमारा सिर छत्र जो हमारी रक्षा करने वाला था, मार्ग द्रष्टा था, वह दैहिक रूप मे हमारे बीच नहीं रहा है। यद्यपि आचार्य देव शरीर के रूप मे हमारे समक्ष नही है, तथापि उनकी छत्र छाया मेरे सिर पर सदा बनी रहेगी। उसके सहारे हमारी साधना चलती रहे। महापुरुषो का आशीर्वाद बना रहेगा। जिस विश्वास के साथ आचार्य देव ने सघ का गुरुतर उत्तरदायित्व मेरे निर्बल हाथो में सौपा है, उनके वरदहस्त से मै इस चतुर्विध सघ की जितनी बन सकेगी, उतनी सेवा करता रहूगा। आचार्य देव ने मुझे चतुर्विध सघ की गोद मे बैठाया है, इसलिए मै सुरक्षित हू। एक व्यक्ति से सघ नही चलता। सबके सहयोग, सहकार से ही सघीय व्यवस्था सुचारू रूपेण चलती है। सघ के आप सदस्य है, सघ आपका है। इसे ऊचाइयों तक पहुचाना हम सबका कर्त्तव्य है। इसके लिए सन्त सतीवर्याए अ भा साधुमार्गी जैन सघ, महिला समिति, समता युवा सघ, बालक मडली, सभी का समर्पण भाव से सहकार जरूरी है।

उदयपुर सघ ने स्वर्गीय आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा की जिस तन्मयता, निष्ठापूर्वक सेवा की थी, वह इतिहास के रूप मे सामने है। आचार्य देव का पिछला चातुर्मास यशस्वी रूप से सम्पन्न हुआ। यहा से विहार कर दिया था, किन्तु उदयपुर सघ की श्रद्धा भक्ति एव आचार्य देव के स्वास्थ्य को देखते हुए कारणवश यह चौमासा भी यही हो रहा था, किन्तु बीच मे ही यह स्थिति बन गई। इस अवधि मे उदयपुर सघ ने जो सेवाए कीं, वे अन्य सघो के लिए स्मरणीय है।

आज चारित्रिक मूल्यों का पतन हो रहा है। अखबारो के पृष्ठ ऐसी घटनाओ से भरे हुए है। राजनैतिक धार्मिक, सामाजिक क्षेत्रो में क्या अवस्थाए घटित हो रही है, इस पर चिन्तन जरूरी है। यदि ऐसा होता रहा, उस ओर हमारा ध्यान नही गया तो क्या होगा पिछली पीढ़ी का ? क्या सीखेंगे आने वाले बालक ? राजनैतिक धरातल पर भी कोई सिद्धान्त नही रहे। जोड़ तोड़ मे लग जाते है, कुर्सी बचाने की चिन्ता मे रहते है। नैतिकता को भूलते जा रहे है। इसका प्रभाव हर क्षेत्र म पड़ता जा रहा है। धार्मिक क्षेत्र मे भी आचरण की बजाय प्रचार-प्रसार को महत्त्व दिया जा रहा है। प्रचार तभी महत्त्वपूर्ण होगा जब आचरण सही होगा ? बिना आचरण के किया गया प्रचार तभी महत्त्वपूर्ण होगा जब आचरण सही होगा। बिना आचरण के किया गया प्रचार प्राण रहित शरीर की तरह है। हमारे विचार सुन्दर हो, आचरणयुक्त हो, श्रेष्ठ विचारो पर ही चारित्रिक मूल्य सुरक्षित रह सकते है। आचार्य देव के विचारो को जीवन मे उतारेंगे तो जीवन उज्ज्वल बन सकेगा।

आचार्य देव ने सावत्सरिक एकता आदि के सदर्भ मे जो उद्गार व्यक्त किये उन्ही का मुझे निर्देश दिया है तदनुसार मै चलने को तत्पर हू।

यहाँ विराजित शासन प्रभावक श्री सम्पतमुनिजी म सा इस अवस्था मे शासन सेवा मे लगे हुए है। आदर्श त्यागी श्री रणजीत मुनिजी म सा, घोर तपस्वी श्री बलभद्र मुनिजी म सा की सेवाए भी चल रही है। स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा विलक्षणता व प्रखरता के साथ शासन सेवा मे लगे हुए है, यह गौरव का विषय है, जिसका आप सब अनुभव कर रहे है। इसके अतिरिक्त शासन प्रभावक श्री सेवन्त मुनिजी म सा, शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म सा की शासन सेवाए प्रशसनीय है। विद्वान् श्री विनयमुनिजी म सा आदर्श सेवामूर्ति श्री पद्ममुनिजी म सा प्रज्ञा सम्पन्न श्री काति मुनिजी म सा, तरुण तपस्वी श्री अशोक मुनिजी म सा आदि सभी सन्त जो अलग-अलग क्षेत्रो मे शासन की भव्य प्रभावना कर रहे है, जिसके प्रति प्रमोद भाव है। इसी प्रकार महासतीवर्याए भी अपनी शक्ति के साथ सघ उन्नयन मे अदम्य उत्साहपूर्वक लगी हुई हैं, जिसके प्रति अहोभाव है। जिन वक्ताओ ने आचार्य देव के गुणगान किये व जो नहीं कर पाये, उनकी भावनाए प्रशसनीय हैं। महापुरुषो के गुण स्मरण से कर्मों की निर्जरा का प्रसग बनता है। आचार्य भगवन् का सान्निध्य प्रत्यक्ष रूप से नही तो अप्रत्यक्ष रूप मे आशीर्वाद स्वरूप हमे मिलता रहे, जिससे हमारी सयम साधना आगे बढ़ती रहे। आचार्य देव के वियोग को सहन करने के लिए हमे हृदय को मजबूत करना है तथा उनके आदर्शों को कायम रखते हुए शासन सेवा मे तत्पर बने रहे।

प्रस्तुति रतनलाल जैन

तीन शरीर एक प्राण

स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा ने समयाभाव को ध्यान मे रखते हुए अपनी भावनाए व्यक्त की। आपने कहा- आचार्य भगवन् ने एक-एक जीवन का सर्जन करने मे महान् योगदान देकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुनि श्री ने आचार्य देव की सन्निधि मे बीते क्षणो, सस्मरणो को भावपूर्वक चतुर्विध सघ के समक्ष रखा। जिसे श्रवण कर प्रत्येक मानस रोमाच से भर उठा। मुनिश्री ने सघ विभाजन की परिस्थिति से लेकर आचार्य देव के सथारा ग्रहण तक की स्थिति मे अपनी सेवा-समर्पणा की भूमिका को सहज रूप मे व्यक्त करते हुए आचार्य देव के श्रीमुख से उच्चरित उन शब्दो का स्मरण किया, जिसमे आचार्य देव ने फरमाया था कि "मै, युवाचार्य श्री एव ज्ञानमुनि-तीन शरीर एक प्राण है और इसी रूप में शासन की सेवा करनी है। तीन शरीर एक प्राण की तरह शासन मे जो कार्य करना होगा वह तीनो की सलाह से होगा।" अनेक विध सस्मरणो को ताजा करते हुए मुनिश्री ने आचार्य देव द्वारा समय-समय पर उच्चारित ' तू मुझे खाली मत भेजना। जब भी उतार-चढ़ाव की स्थिति आए तो तू मुझे सथारा करवा देना' इस वाक्य को सदन मे रखा। आपने कहा-मेर दिमाग मे निरन्तर इस बात का टेशन रहता था कि मै इस प्रकार की जिम्मेदारी को निभा पाऊँगा कि नही । प्रसगोपात मुनि श्री ने युवाचार्य श्री (नवोदित आचार्य प्रवर) के सकेतानुसार वज्रपात को सहते हुए सथारे की विधि पूर्ण कराने एव दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन सुनाने सबधी कार्य की सिलसिलेवार जानकारी दी। आपने कहा 'आचार्य भगवन् ने पूरी शाति के साथ अतिम श्वास को छोड़ा। श्वास की गति मे उतार-चढ़ाव नही आया। समाधिपूर्वक रात को दस बजकर इकतालीस मिनट पर स्वर्गधाम को पा लिया।'

इस प्रसग पर मुनिश्री ने साधु-साध्वी के समय मुख वस्त्रिका के उपयोग, सेल की घड़ी को न पहनने के सकल्प, बच्चो के साथ मारपीट नही करने तथा जप, तप, नियम वर्ष को सफल बनाने की प्रेरणा दी तथा नवोदित आचार्य प्रवर के प्रति शुभकामनाए व्यक्त की।

प्रस्तुति रतनलाल जैन

❑ आदर्श त्यागी श्री रणजीत मुनिजी

विनय की प्रतिमूर्ति

आदर्श त्यागी, तपस्वी श्री रणजीत मुनि जी म सा ने आचार्य देव की विचक्षणता गहरी चिंतन शक्ति का स्मरण करते हुए वर्तमान सघ अनुशास्ता का विनय की प्रतिमूर्ति बताया। श्रीमद् रामेशाचार्य की निराभिमानिता, सरलता, सहजता एव सौम्यता को मुनि श्री ने समर्पित भाव से व्यक्त किये।

❑ घोर तपस्वी श्री बलभद्र मुनि जी

दिखावे एव आडम्बर से दूर

घोर तपस्वी श्री बलभद्र मुनि जी म सा ने आचार्य देव की शिक्षा एव सकेतो को जीवन मे उतारने का आह्वान किया। आचार्य देव को दिखावा, आडम्बर पसद नहीं था। वे कहने की अपेक्षा करने में विश्वास रखते थे। तपस्वीराज ने अपने ससारी पिताश्री एव भ्राता के सयमी जीवन के सस्मरण भी सुनाये।

प्रस्तुति रतनलाल जैन

❑ शासन प्रभावक आदर्श त्यागी श्री सम्पत मुनि जी म सा

विश्व शाति के मसीहा

जिनका जीवन ही समतामय बन गया ऐसे नाना गुरु, जन-जन के मन भावन बालक गोवर्धन के नाम से माता शृगारबाई पिता मोडीलाल द्वारा अलकृत, मेवाड़ के चितौड़ जिले के कपासन कस्बे के दाता ग्राम को विश्व पटल पर प्रस्थापित करने वाले आचार्य नानालालजी ने अपने जीवन के ८ दशक पूर्ण किए और स २०५६ कार्तिक कृष्णा तृतीया दि २७-१०-९९ को रात्रि १० ४५ पर स्वर्गस्थ हुए।

६० वर्ष के सयम पर्याय व ३७ वर्ष के आचार्य काल मे उन्होंने छ काया के कल्पवृक्ष समान भव्य मुमुक्षु आत्माओ को दीक्षित, शिक्षित, सिंचित, पल्लवित, पुष्पित एव फलित किया।

निकट भूत में स्थानकवासी साधुमार्गी सघ मे इतनी दीर्घ आयु, दीक्षा पर्याय एव लबा आचार्यकाल कीर्तिमानीय है।

परिवर्तिनि ससारे, मृत को वा न जायते।
सजातो येन जातेन, यतिवश समुन्नतिम्।

इस परिवर्तनशील ससार मे किसने जन्म नही लिया और कौन नही मरा, किंतु जन्म उन्हीं का सार्थक होता है, जो अपने कुल, वश के साथ-साथ सघ का भी गौरव बढ़ाता है।

इस महापुरुष ने प्रभु महावीर के शासन एव हुक्म सप्रदाय क गौरव को बढ़ाया है। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श और अनुकरणीय है।

उन्होंने अपने ६० वर्ष के साधक जीवन मे साधना, ध्यान एव मौन द्वारा जो शक्ति अर्जित की है तथा उन्होंने जीवन जीने का जो आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत किया है, हम भी उनके पद-चिन्हो पर चलकर वैसा ही आदर्श दुनिया के सामने उपस्थित कर अपना अतिम समय सफल बनावे।

वर्तमान आचार्य श्री से निवेदन है कि उन महापुरुषो की आपने २४ वर्ष की अनुपम सेवा से जो शक्ति एव आगम मथन से जो उपलब्धि हस्तगत की है, उसे द्विगुणित करते हुए विश्व को नया आयाम देवे।

जोश न ठडा होने पावे, कदम बढ़ाकर चल।
मजिल तेरी राह चूमेगी, आज नही तो कल॥

आप श्री जी भी अपने आत्मबल को बढ़ाते हुए प्रभु महावीर एव हुक्म शासन की इस परपरा की अपार वृद्धि करे। सारा चतुर्विध सघ आपके साथ है। शासन को दिन दूना, रात चौगुना चमकावे।

आपके युवाचार्य पद के समय हुक्म शासन के अष्टम पाट को सुशोभित करने वाले आचार्य श्री नानालाल जी म सा और भावी नवम पट्ट का गौरव बढ़ाने वाले युवाचार्य (आप श्री) का अष्ट सिद्धि और नव निधि के रूप मे योग मिला था। आज स्व आचार्य श्री हमारे बीच मे भौतिक शरीर स नही है, उनकी आत्मा का वरद हस्त अभी भी हमारे ऊपर मौजूद है। आप और हम सभी अपनी सपूर्ण शक्ति से शासन के अप्रतिम विकास मे सहयोगी बन। भारत के विभिन्न क्षेत्रो के अचल मे जैन सिद्धातो को प्रसारित करने म हमारा योगदान सहायक हो सकता है।

स्वर्गीय आचार्य श्री जी ने आचार्य काल के ३७ वर्षों में जिस प्रकार भारतवर्ष के अनेक गाव को स्पर्श कर जिनशासन को चमकाया उसी प्रकार उन महापुरुषो का दायित्व आप श्री जी के सशक्त कधो पर आया है। चतुर्विध सघ के प्रत्येक सदस्य के सहयोग से आप जिन शासन की शोभा बढ़ावे।

चमकेगा वीर शासन, नेतृत्व एक होगा,
एक शिक्षा, दीक्षा होगी, चौमासा एक होगा।
विचरण आलोचनाए आचार्य एक देंगे।
सच्चे हृदय से कहते हम प्रेम से रहेंगे॥
सम्पत समाज के हित हम सब करें समर्पण,
शिव सुख तभी मिलेगा कहता है जैन दर्शन।
जो राग द्वेष त्यागेंगे वे ही सुखी बनेंगे,
सच्चे हृदय से कहते, हम प्रेम से रहेंगे॥

व्यक्तित्व विराट सुहाना था

शा प्र महाश्रमणी श्री केशर कवरजी म सा

आयारियाणं पद के स्वामी
क्यों गए कहा है आज अहो।
ये मुकुट मणि जिन शासन के
सो गये कहाँ है आज अहो।

व्यक्तित्व विराट सुहाना था
इस जग ने उनको माना था
सुर-असुर-नरों की श्रद्धा का
शुभ-केन्द्र कुंज गुरु नाना था।
श्री संघ-चतुर्विध के स्वामी २
विलीन हुए है क्यों अहो-ये मुकुट ।१।

महावीर दूत बन गुरु राई
महायोगी बनकर आए थे
आखें खोली तारी नैया
चिंतामणि तुल्य सुहाते थे
समता के अभिनवतम सर्जक २
वे चले गए क्यो आज अहो- ये मुकुट ।२।

वे धर्मपाल के प्राणेश्वर
महागोप यहा कहलाए थे
जनता को दिशा बोध देने वे
ध्यान समीक्षण लाए थे
जिनवाणी का सर्वस्व कर-२
गए दिव्य लोक मे आज अहो ये मुकुट ।३।
देवराज इन्द्र भी नमते थे
सुर-असुरों की क्या गिनती है
नर-नारी वृन्द सभी मिलकर
करते चरणों में विनती है
इस युग की विरल विभूति थे२
विदीर्ण हुए है आज अहो- ये मुकुट ।४।

धरती रोती अम्बर रोता
रोता है जन-जन सारा
वे कहा गये नानेश गुरु
सूना है कण कण सारा
राम गुरु के महागुरु २
स्वदेश गये क्यो आज अहो ये मुकुट ।५।

किन शब्दो मे कहूँ आज उन्हें
नहीं काव्य- कविता आती है
नहीं बृहस्पति गुण गा सकते
क्या मेरी मति कहलाती है
श्रद्धा भक्ति से पूज रहे-२
वे कहां गये है आज अहो ये मुकुट ।६।

श्री वीर प्रभु के अनुगामी
दे गये हमें गुरु राम महा
इनकी आज्ञा मे रहने का
संकल्प हमारा भव्य रहा
शत् शत् वदन से केशर
आलोप हुए है आज अहो ये मुकुट ।७।

❑ मुनि धर्मेश

अध्यात्म जगत के कोहिनूर

जिस प्रकार कोहिनूर हीरा एक साधारण खदान से निकल कर भी सारे विश्व के रगमच पर स्थापित हुआ है, उसी प्रकार अध्यात्म जगत के कोहिनूर आचार्य नानेश ने, राजस्थानान्तर्गत मेवाड़ की पावन धरा, जो कर्मवीर महाराणा प्रताप, दानवीर भामाशाह के इतिहास से गौरवान्वित है चित्तौड़ जिलान्तर्गत कपासन तहसील के एक छोटे से ग्राम दाता ग्राम मे श्रेष्ठीवर्य श्री मोड़ीलाल जी पोखरना की धर्मपत्नी सिणगार बाई की रत्न कुक्षि से वि स १९७७ की जेठ सुदी द्वितीया तदनुसार १९ मई १९२० बुधवार को जन्म लेकर विश्व रगमच को आलोकित किया। ग्रामीण सस्कृति मे बालक नाना का पोषण हुआ। तत्कालीन व्यवस्थानुसार वर्णमाला जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि विद्यार्जन करके गृहकार्य एव व्यापारिक क्षेत्र मे प्रवेश किया। धार्मिक क्रिया के सस्कार की कमी के कारण धार्मिक क्रियाओ मे भले अरुचि थी पर अन्तर्मन मे धार्मिकता क वे सारे सद्गुण बीज रूप में अवस्थित थे, जिसके कारण ही उनके जीवन के हर व्यवहार मे प्रामाणिकता दया, करुणा, स्नेह की पावन सरिता प्रवाहित थी। इसी कारण छोटी अवस्था मे ही सारे ग्रामवासिया के स्नेहभाजन बने हुए थे। पितृ-वियोग का दुख मातृ ममता मे अत्यधिक सहायक बनता गया जिसके कारण माता की सेवा मे अहर्निश जुट गए।

निमित्त पाकर बीज रूप मे अवस्थित वे आध्यात्मिक, धार्मिक व नैतिकता के बीज मेवाड़ी मुनि चौथमलजी के प्रवचन से अकुरित हुए, पूज्य मोतीलाल जी म सा के सानिध्य से पल्लवित हुए और पूज्य श्री गणेशाचार्य की चरण शरण मे पुष्पित, फलित हुए। इसी के फलस्वरूप विक्रम सवत १९९६ की पौष शुक्ला अष्टमी दि १८ जनवरी १९४० को कपासन मे जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करके मुनिधर्म मे प्रवेश पाया। विनीत शिष्य के रूप मे अहर्निश गुरु चरणो की उपासना करते हुए अपने जीवन को ज्ञानालोक से आलोकित किया। समग्र जैन वागमय के साथ ही वैदिक ग्रथ कुरान बाईबिल एव मुख्य रूप से प्रचलित षट्दर्शन के साथ विज्ञान चितको के मतव्यो का भी गहन अध्ययन किया। दादा गुरु आचार्य श्री जवाहर एव दीक्षा गुरु आचार्य श्री गणेश के व्यक्तित्व व वैचारिक उत्क्राति से राष्ट्रपिता महात्मा गाधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सर मनु भाई देशाई बाल गगाधर तिलक गोखले कस्तूर बा गाधी, विनोबा भावे जैसे राष्ट्र के सर्वोच्च नेता प्रभावित थे। उन जवाहराचार्य गणशाचार्य की हर कसौटी पर मुनि नाना कोहिनूर हीरे की तरह खरे उतरे। मुनि नाना को धर्म सघ क भावी सघ नायक के प्रतीक युवाचार्य पद पर वि स २०१९ की असोज सुदी द्वितीया ३० सितम्बर १९६२ को उदयपुर के राजप्रागण मे सूर्य झरोखे के ठीक नीचे तीस हजार की विशाल जनमेदिनी के सामने महाराणा भगवतसिह जी की उपस्थिति मे प्रतिष्ठित किया। तदनतर साढ़े तीन माह बाद वि स २०१९ माघ बदी २, दि ११ जनवरी १९६३, शुक्रवार को अपने आराध्य गुरुदेव श्री गणेश के महाप्रयाण के पश्चात् आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। तत्कालीन विरोधी वातावरण क भयकर उन्माद का सामना करते हुए अध्यात्म क्षेत्र मे एक नई उत्क्राति का सिहनाद करते हुए इस नर केशरी ने अपने चरण आगे बढ़ाए।

गुरु नाना की सिह गर्जना से दुराग्रहियो का विरोधी वातावरण तो अपने आप ही शमन होता गया तो सत्याग्रहियो मे एक नया उत्साह उमड़ पड़ा। ज्यो-ज्यो व्यक्ति आपके सपर्क मे आने लगे सहज ही आपसे प्रभावित हुए बिना न रहे। फिर वे व्यक्ति चाहे राजकीय क्षेत्र से प्रभावित हों चाहे अध्यात्म क्षेत्र से अथवा वैज्ञानिक क्षेत्र

न। चाहे फिर वह बालक हो, युवा हो अथवा प्रौढ़ या वृद्ध। उनम से विशेषकर आदिवासियो के प्रमुख बालेश्वरदयाल जी, तत्कालीन मंत्री गगवाल जी, गौतम जी शर्मा, प्रकाश जी सठी पाटस्कर साहब, मोहनलाल सुखाड़िया, भूतपूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा, मोतीलाल जी वोरा गिरिजा व्यास, भैरोसिंह जी शेखावत आदि अनेक राष्ट्रीय नेता व अध्यात्म क्षेत्र के जैन जैनेतर उद्भट विद्वान श्री सिद्धनाथ जी उपाध्याय गजानद जी शास्त्री विष्णुकुमार जी, वज्रधर जी आदि सानिध्य पाकर मुक्तकठ स प्रशसक बने। साथ ही वैज्ञानिक क्षेत्र के महान चेतक डॉ दौलतसिंह जी कोठारी, डॉ लक्ष्मीमल सघवी आदि अनेक महानुभाव आपकी प्रतिभा एव सचोट समाधान से प्रभावित एव चमत्कृत भी।

आपने विश्व समस्या के समाधान हेतु जिज्ञासुओ की भावनाओ का समादर करते हुए समता दर्शन व्यवहार ' जिसके हिन्दी, अग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओ के सस्करणो की प्रबुद्ध वर्ग ने मुक्त कठ से सराहना की। साथ ही तनाव मुक्ति के अपने अनुभूत प्रयोग रूप प्रचलित ध्यान योग पद्धतिया स बिल्कुल अलग-थलग सहज सरल याग पद्धति के रूप मे समीक्षण की धारा प्रवाहित की जो आत्म समीक्षण क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण माया समीक्षण समीक्षण ध्यान एव मनोविज्ञान के रूप मे पठनीय एव प्रशसनीय है।

जयपुर चातुर्मास के प्रसग पर विद्वत्जन के आग्रह के अनुरूप कि जीवनम् ? इस एक ही सूत्र पर चार महीने तक जो प्रवचन धारा प्रवाहित हुई वह पावस प्रवचन के रूप मे प्रकाशित हाकर साहित्य जगत् मे समादृत हुई है।

सारे जैन वागमय के सहज ज्ञानार्जन की जिज्ञासा के समाधान हेतु जिण धम्मो' की कृति से आचार्य देव ने विद्वतापूर्ण विचारधारा दी जो सहज ही पाठको को प्रभावित किए बिना नही रहती। ऐसी अनेक पुस्तको के रूप मे साहित्य जगत का आचार्य देव की देन जो कुकुम के पगलिए, आदर्श माता, अखड सौभाग्य, लक्ष्य वेध आदि हैं-उनका भविष्य ही मूल्याकन करेगा।

आचार्य नानेश ने साधनाकाल मे राजभवन स लेकर सामान्य झोपड़ो में, महानगरों से लेकर छोटे से छोटे ग्राम्याचला मे बड़े-बड़े राजा, महाराजा राष्ट्रनेता जागीरदार आदि से लगाकर साधारण ग्रामवासियो के बीच मे पहुचकर प्रभु महावीर के मिशन का प्रसाद बाट कर सब को जीवन जीने की कला बताकर उनका मार्ग प्रशस्त किया लेकिन विशेष रूप से वे लोग जो रात दिन व्यसनो मे रचे पचे रहते जो मास मदिरा मे धुत रहते, साथ ही दुनिया की दृष्टि मे अस्पृश्य गिने जाते, जो हिन्दुस्तान म जन्म लेकर हिन्दू सस्कृति से पतित कहलाते थे, गौरक्षक के स्थान पर गौभक्षक बनते जा रहे थे, उन लोगो को अपनी आत्मीयता से आप्लावित कर मानवता का संदेश दिया जा आज आचार्य देव द्वारा प्रदत्त धर्मपाल विशेषण से विभूषित होकर एक लाख से अधिक व्यक्ति गौरवमय मानव जीवन जी रहे है। यह आचार्य देव की हिन्दू राष्ट्र व सस्कृति का विशिष्ट देन है। आचार्य श्री के सयमित मर्यादित उपदेश मात्र से पूरे भारत म अनेक जगह शिक्षण सस्थान स्वास्थ्य केन्द्र ग्रथालय वाचनालय, छात्रावास आदि बने। जिनसे जैन जैनेतर सभी लाभान्वित हो रहे है और होते रहेगे। साथ ही जिस जैन कुल मे उन्होने जन्म लिया जिस जैन धर्म मे वे दीक्षित हुए, जिस जैन धर्म व सप्रदाय के वे आचार्य बन उसके अभ्युदय मे तो उन्होने कोई कसर नही रखी। अपने खून पसीने से उसको सींचा, आपने साठ वर्ष की दीक्षा पर्याय, अड़तीस वर्ष क आचार्यकाल मे अपने पूर्वाचार्यों से प्रदत्त धर्मसघ की बहुगुणी अभिवृद्धि की। चाहे वे श्रावक श्राविका रूप मे हों और चाहे क्षेत्र के रूप मे (कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक)। अपने आचार्यत्वकाल मे लगभग साढे तीन सौ मुमुक्षुओ को दीक्षित किया जो स्थानकवासी समाज के लिए तो पाच सौ वर्षों मे अपने आप म नया कीर्तिमान है। आपके सानिध्य में १०-१२ १५ २१-२५ दीक्षाएँ एक साथ सपन्न हुई है।

आपके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी

कि आप स्वभाव से जितने सहज, लचीले व मनमोहक थे, सिद्धात व सयमित मर्यादा के साथ अनुशासन मे उतने ही कठोर भी थे। झूठी पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु सिद्धात छोड़कर समझौता करने के लिए कभी तत्पर नही हुए। सैद्धातिक सुरक्षा रखते हुए एकता के भी पूर्ण पक्षधर रहे। चाहे वह मवत्सरी से सबधित हो या अन्य कोई प्रसग हो। जहा सिद्धात व अनुशासन मर्यादा में न्यूनता का प्रसग आया, वहा अपमानजनित विष का घूट पीकर व अपने ममत्व की कुर्बानी देने मे भी कभी पीछे नही हटे। जो शिष्य-शिष्या अनुशासन, मर्यादा और सिद्धात पर अड़िग रहे, उनको अपने हृदय का हार समझकर उन पर अपना स्नेहवर्षण करने मे कसर नही रखी। चाहे फिर वह साधारण से साधारण ही क्यो न हो। इसके विपरीत चाहे बड़ा से बड़ा विद्वान, व्याख्याता व प्रभावक भी क्यो न हो जब तक अपनी गलती का परिमार्जन नही किया तो उनको अनुशासन के नाते सघ से निष्कासित करने मे भी कभी हिचकिचाए नही। अपनी वृद्धावस्था को लखकर सघ के आग्रह से अपनी गहरी परख के आधार पर भावी सघ व्यवस्था को व्यवस्थित रूप देने हेतु वि स २०४८ की फाल्गुन सुदी तृतीया ७ मार्च १९९२ शनिवार को बीकानेर के जूनागढ़ के राजप्रागण मे चतुर्विध सघ की साक्षी से विशाल जनमेदिनी के समक्ष महाराज नरेन्द्र सिह जी की उपस्थिति में युवाचार्य पद की प्रतीक रूप चादर मुनिप्रवर श्री रामलाल जी म सा को देकर अन्त साधना मे सलग्न हुए।

शारीरिक अस्वस्थता एव पदलोलुपी कुशिष्य-शिष्याओ के दुर्व्यवहार के तीव्र प्रहार की ऐसी विकट स्थिति मे भी आप अपने समता विभूति के विशेषण को सार्थक करते रहे। पूर्ण समता भाव से उपचार खानपान आदि से भी उदासीन बनकर भयकर वेदना में भी पूर्ण शाति धैर्य व चेहरे पर वही मद मुस्कान बिखेरते हुए बड़-बड़े चिकित्सको को आश्चर्यान्वित करते रहे। दिनाक २७ १० ९९ को प्रात ९ बजकर ३५ मिनट पर साधना के अतिम मनोरथ को सार्थक कर सथारा सलेखना सहित पूर्ण जागरूक अवस्था में रात्रि को ठीक १० बजकर ४१ मिनट पर इस भौतिक देह का परित्याग कर विशाल शिष्य-शिष्या परिवार व लाखों भक्तो को रोते-बिलखते छोड़ कर स्वर्ग की ओर महाप्रयाण कर गए। जिनकी अत्येष्टि ता २८ १० ९९ को चादी के भव्य विमान मे बिठाकर लाखो व्यक्तियो के विशाल जुलूस क साथ मुख्य मार्गों से होती हुई श्री गणेश जैन छात्रावास के प्रागण मे चदन की चिता मे अग्नि प्रज्वलित कर समर्पित कर दी गई। हमारे सिर का सदा-सदा का छाया-छत्र उठ गया। अब तो केवल उनकी आदर्श प्रेरणादायी स्मृतिया ही पाथेय रूप म अवशेष है। वे मरे गुरु भाई व बहने धन्य हो गईं जिनको गुरुदेव की अतिम सेवा, सान्निध्य व मगलमय शिक्षा का पाथेय प्राप्त हुआ। मेरे जैसा अभागा तो गुरु सेवादि से वचित ही रह गया।

खैर, इस क्रूरकाल के आगे किसी का कुछ जोर चल ही नही सकता। फिर भी सात्विक गौरव एव नाज है ऐसी विरल विभूति को गुरु के रूप मे पाकर जिन्होंने एक मुनि, आचार्य एक गुरु के जितने उत्तरदायित्व, कर्त्तव्य होते है उन सब को पूर्ण खूबी से पूर्ण दृढ़ता के साथ ही पूर्ण मर्यादा की अक्षुण्णता पूर्वक पूर्ण किए। साथ ही सघ को आचार्य श्री राम जैसे शास्त्रज्ञ तरूण तपस्वी प्रशातमना, निर्लेप सयमी साधक के हाथो मे सौप कर सनाथ बनाकर गए है। आशा ही नही, पूर्ण विश्वास है कि आचार्य राम को जो गुरु प्रदत्त सस्कार व अधिकारमय हस्ताक्षर वसीयत रूप मे प्राप्त है, उसके सबल से वे शासन की दिन दूनी रात चौगुनी अभिवृद्धि करेंगे।

साथ ही मेरी मगलकामना व भावना है कि आप (आचार्य श्री राम) अपने तप तेज व सहृदयता से वात्सल्य का ऐसा स्रोत बहाये कि चतुर्विध सघ का गुरुदेव का ही नजारा दृष्टिगत हो। मरे तन का अतिम श्वास शासन को समर्पित है।

आत्म-साधना के महान् साधक

पूज्य गुरुदेव श्री का जीवन समता सेवा सहिष्णुता, वात्सल्य दूर-दर्शिता आदि गुणो से ओतप्रोत था। आकृति, प्रकृति एव मनावृत्ति से उच्चकोटि के आदर्श आचार्य थे। उनके चिंतन मे मौलिकता विचारो मे एकरूपता करनी व कथनी मे समानता तथा हृदय मे विशालता का असीम साम्राज्य था। उनके महान व्यक्तित्व को शब्दो की परिधि में नहीं बाधा जा सकता। अपार प्रज्ञा के धनी विद्वद शिरोमणि स्वर्गीय गुरुदेव के व्यक्तित्व मे हिमालय की उच्चता, सागर की गहराई, अध्यात्म की गहनगभीरता चदन की शीतलता के समान गुण हमारे लिए आज भी आदर्श रूप हैं। गुरुदेव की प्रवचन शैली बेजोड़ थी। उनकी वाणी मे आज तथा व्यक्तित्व मे अद्वितीय प्रभाव था।

पूज्य गुरुदेव की इसी विशिष्टता के सबध मे मैने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया कि वे जैन अजैन सभी के हृदयहार थे। उनके सारगर्भित प्रवचनो म सभी धर्मों का सदर्भ आता था गुरुदेव के महान व्यक्तित्व की उपमा अगुर के रूप म की जा सकती है। जिसमे सहजता मगलता तथा सरसता के मिठास के बाहुल्य का अखड साम्राज्य था। उन्होंने धर्म की पावन ज्योति हर गाव, शहर तथा घर-घर म ही नही व्यक्ति के दिलो मे जलाई। उन्होंने अपना खून पसीना बहाकर जिन शासन की बगिया का सरसब्ज बनाया था तथा अपना सर्वस्व जन मगलकारी कार्यों के लिए लुटाया।

आचाय श्री जी का नाम एक विशिष्टतम समतादर्शी व उच्च आचार सहिता के अनुपालक के रूप मे जाना जाता है। आज साधुमार्गी जैन सघ स्वर्गीय आचार्य श्री के इन महान उपकारो का ऋणी है और भविष्य मे भी रहेगा। वे विश्व के महान आध्यात्मिक चिकित्सक थे। जो मन व आत्मा के रोगो की चिकित्सा करते हुए सपूर्ण मानव समुदाय के मार्ग को प्रशस्त बना रहे थे। गुरुदेव की अमोघ वाणी के प्रभाव से एक लाख से भी अधिक बलाई जाति के लोग अहिंसक बने, जो धर्मपाल जैन के नाम से जाने जाते है, तथा व्यसनमुक्त एव सुसस्कारित जीवन जी रहे हैं। पूज्य गुरुदेव प्रत्येक काय अतर-आत्मा की साक्षी से करते थे। आपने आचार सम्पदा का अधिक महत्व दिया था। यही कारण है कि आपने योग्यतम सत प्रशान्तमना, विद्वत प्रवर श्री रामलालजी म सा को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

स्वर्गीय गुरुदेव का व्यक्तित्व कितना महान था यह निरूपित नहीं किया जा सकता। फिर भी क्षीर समुद्र का पानी कितना मधुर है उसका स्वाद पूरा समुद्र नहीं बल्कि थोड़ा सा पीकर भी जाना जा सकता है। स्वर्गीय गुरुदेव के अनेकानेक गुणों मे सबसे महत्वपूर्ण गुण था सरलता व सहजता। साधक जीवन की यही विशेषता व महानता होती है कि वह कितना सहज व सरल हाता है। जिसका अतर एव बाह्य दानो प्रकार का जीवन जितना सहज व सरल होता है यह उतना ही अधिक सुखी हाता है। गुरुदेव इतने महान होते हुए भी सदैव हर व्यक्ति क साथ सरलता का ही व्यवहार करते थे। कभी कोई दुराव नहीं दुर्भाव नहीं जो था वह सब खुली किताब की तरह था। विनम्रता भी उनके व्यक्तित्व की एक विशेषता है। साधक सदा ज्ञानवत होता है और वही मोक्ष मार्ग का साधक भी। विनयवान साधक अपने मधुर व्यवहार मे क्रोधी स क्रोधी व्यक्ति को अपने वश मे कर लेता है तथा वह सबका प्रिय पात्र बन जाता है।

मुझे गुरुदेव से सबधित सुना हुआ एक सस्मरण याद आ रहा है। जब पूज्य गुरुदेव मुनि अवस्था मे थे तब की घटना है। एक बार तेज प्रकृति स्वभाव के सत मुनिश्री रतनलालजी म सा स्वर्गीय गुरुदेव श्री गणेशीलाल जी म सा के पास आए और कहने लगे गुरुदेव ये छाटे सत नानालालजी म सा कैसे है ? दूसरे सारे सतो पर मुझे क्रोध आता है पर इन पर चाहते हुए भी क्रोध नही आता। मै कारण नही समझ पा रहा हू। गुरुदेव ने कारण समझाते हुए कहा मुनिराज ये मुनिश्री विनम्र एव मधुरभाषी है इनके मधुर व्यवहार के सामने आपकी क्रोधरूपी आग शात हो जाती है। मुनिश्री को कारण समझ मे आ गया और वे आपश्री के विनम्र एव मधुर व्यवहार से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने अपन जीवन का परिवर्तन कर लिया। वे भी क्षमा के अवतार बन गए। ऐसे चमत्कारी व्यक्तित्व वाले थे हमारे गुरुदेव।

स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश युग प्रणेता महापुरुष थे। तप सयम, साधना की गहराइयो मे उतर कर आपने युग को अभिनव रूप से मोड़ा था। आपश्री को वचन सिद्धि भी प्राप्त थी। जो भी श्रीमुख से सहज रूप मे निकल जाता था वह होकर रहता था। यही नही, आपकी सयमीय साधना की विशुद्धता से शरीर का कण-कण अनुवासित था। जहा भी आपके चरण पड़ते वह रजकण भी चमत्कारिक शक्ति देने वाला बन जाता था। जब आप ध्यान-साधना मे निमग्न हो जाते थे तब आपका आभामडल विशेष भव्य बन जाता था। गुरुदेव के नेत्रो से समता, मैत्री, करुणा की दिव्य किरणे निकलती रहती थीं। जो सामने वाले व्यक्ति के कालुष्य को समाप्त कर एक विशिष्ट प्रकार की शाति की अनुभूति करा जाती थीं। जिस प्रकार भयकर गर्मी से सतप्त व्यक्ति को एअरकडिशन कमरे म बिठा दिया जाए तो उसे शीतलता महसूस होने लगती है वैसे ही कषाय और रोग सतप्त व्यक्ति को गुरुदेव के सानिध्य मे शाति महसूस होन लगती थी।

प्रत्यक्ष देखी हुई घटना है स २०३७ का पावस प्रवास गुरुदेव के साथ राणवास विद्या नगरी मे था। एक दिन का प्रसग है वैयावच्च सेवा के कार्य से निवृत्त होकर मै शयन की तयारी कर रहा था। तभी भव्य दृश्य देखकर आश्चय चकित हुआ कि गुरुदेव के पैरो को कोई दबा रहा था अर्थात् वैयावच्च कर रहा था। दिव्य प्रकाश हो रहा था सभी सत महापुरुष विश्राम कर रहे थे। मैंने विचार किया गुरुदेव की सेवा करने वाला कौन है ? निकट मे पहुचा तब तक शक्ति अदृश्य हो गयी थी। गुरुदेव के चरण स्पर्श किए तो गुलाव जैसी सुवास से पाद पद्म सुगधित हो रहा था। ठीक ही कहा है शास्त्रकारो ने-

धम्मो मगलमुक्किट्ठ अहिसा सजमो तवो ।
देवावित नमसति जस्स धम्मे सया मणो ॥

धर्म उत्कृष्ट मगल है। धर्म का लक्षण है- अहिसा सयम और तप। जिसका मन सदा धर्म मे लीन रहता है उसे देव भी नमस्कार करते हैं। गुरुदेव भी देवो के पूजनीय तथा वदनीय थे।

गुरुदेव का जीवन प्रतिकूल अवस्थाओ विषमताओ एव विघटन की घड़ियो मे भी सदैव स्वर्णवत खरा उतरा था। उनके मुखारबिंद पर समता व शीतलता की स्मित फुहार हमे भी आत्मोन्मुख एव समतामय हाने की प्रेरणा देती थी। समता सहिष्णुता व आत्मानुसधान की त्रिवेणी रूप आपका जीवन खुली किताब के समान स्पष्ट था।

गुरुदेव का व्यक्तित्व महान, असीम, अनुपम एव बहु आयामी था। श्रद्धा और उपासना क भाव ही उनक प्रति वास्तविक श्रद्धा है। मेरे जीवन का कण-कण उन पावन चरणो का ऋणी है, जिनके रज कणों ने मुझ जैसे लोहे को स्वर्ण बनाने म पत्थर से प्रतिमा बनाने म मिट्टी को सुदर कुम्भ का रूप देने मे और अधकार से प्रकाश मे लाने के लिए प्रयास किया था। भौतिक ससार की मृग-मरीचिका स अलिप्त अमरता के आलोक का पथ प्रदर्शन किया। समीक्षण ध्यान क महान साधक के समतानुरजित जीवन से ममता का संदेश मिला। जिन्होंने अहिसा सयम, तप की त्रिवेणी मे स्नान करवाया उन्ही के विराट व्यक्तित्व कृतित्व तथा सयम मूलक साधना का लेखा-जोखा बताना बिंदु म सिंधु की महिमा एव

परम् प्रतापी पूज्य श्री श्री लाल जी म सा की वाणी साक्षात परिलक्षित हुई और अष्टम सूय लगा चमकने, कुछ समय पश्चात् ही ऐसा लगने लगा कि साक्षात् गणेशाचार्य ही इस हुक्म क्षितिज पर विराजमान हैं, आपने तपोतेज साधना के प्रभाव से धोकमद २५ २१-१५-१५-७ ८ आदि अनेक मुमुक्षु आत्माओ को दीक्षित कर एक रेकार्ड कायम किया।

बीहड़ विकट क्षेत्रो मे गध हस्ती क समान विचरण करते हुए सिह सम गर्जना करते हुए शासन की खूब जाहोजलाली की।

ऐसे समता विभूति गुरु की समय समय मेरे पर असीम कृपा बरसस बरसती रही। आदि से अन्त तक मे अपनी इस चर्म जिह्वा से जितना भी गुणानुवाद करू उतना ही कम है।

मेरी तो गुरुदेव के प्रति जबसे सयम का बाना पहना तब से मेरुवत् आस्था व श्रद्धा थी। विकट परिस्थितियो म भी मुझ डोलायमान करने वाले मिले लेकिन किसकी ताक्त कि मुझे मेरे अनन्य आराध्य मार्गदर्शक के पथ से चलित कर सके। ऐस विकट समय मे मेरी गुरुदेव के पास पहुचने की बहुत ललक थी किन्तु मै समय पर नही पहुच पाई। मेरे अन्तराय कर्म आगे आगे भाग थे।

एक दिन ऐसा स्वर्णिम अवसर आया कि मुझ अचानक आखो से दो दो वस्तुए दिखाई देने लगी तब डॉक्टर ने कहा कि आप उदयपुर पधारो आपका आपरेशन होगा। तब मेरी इच्छा नही थी कि मै डोली पर बैठकर जाऊ किन्तु सतियो का अति आग्रह होने से मै अनायास नेत्र चिकित्सा के लिए उदयपुर पहुची। आचार्य भगवन् क दर्शन किये, मेरा हृदय हर्ष से सराबार हो गया और अनिर्वचनीय आनद की अनुभूति हुई। आचार्य भगवन् को भी अत्यन्त खुशी हुई। दोनो की तमन्ना थी दर्शन देने की और दर्शन करने की। वह निर भावना पूर्ण साकार हुई। लगभग तीन महीने की स्वर्णिम सेवा व दर्शन का लाभ मुझे मिला और परस्पर मे अपने अपने हृदय मे भरे हुए उद्‌गार उजागर किये। मैने कहा भगवन् आपका शारीरिक स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन कमजोर होता चला जा रहा है, फिर भी आप श्रीजी का तो आत्मबल बड़ा ही अलबेला है। गुरुदेव कहते हैं कि यह शरीर नाशवान है, एक दिन हसा उड़ जाएगा।' तब मैने कहा कि भगवन् आप युगों युगों तक तपो। भगवन् अभी तो ऐसी वाणी न फरमावे। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करे हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है न कि कुम्भकार। आपकी महान कृति आप जैसी ही शासन की जाहोजलाली दिन दूनी रात चौगुनी फैलाएगी यह नवापाद हुक्म व नानेश गुलशन का महकता हुआ एक सुन्दर पुष्प है, उसकी सौरभ दिग्-दिगत तक प्रसरित होती रहेगी।

किन्तु कुछ समय बाद ही ऐसे समाचार सुने कि सुनते ही हृदय धक् रह गया। अहो क्रूर काल ने ऐसे महापुरुष को छीन लिया किन्तु वे महापुरुष अन्तरात्मा से तो मेरे हृदय मदिर मे मानो विराजित हैं। शास्त्र मर्मज्ञ,तपो तेज श्रद्धेय आचार्य भगवन् रामेश के ऊपर शासन की बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ गई है। जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि आपका यश भी पूज्य गुरुदेव की भाति दिनों दिन वृद्धि को प्राप्त हो और आपकी वात्सल्य कला चिर नवीन आयाम पाए। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सन्त सतियो से मधुर व्यवहार विचार विमर्श करते हुए अनुशासनबद्ध गति देते हुए चतुर्विध सघ को प्रगति पथ मे अग्रसर करेंगे और प्रभु महावीर के उज्ज्वल शासन के सवाहक मम हुक्म गच्छाधिपति आचार्य श्री नानेश की गरिमा को प्रवर्धमान करते रहें इसी मगल भावना क साथ शत् शत् वन्दन अभिनदन।

ꕤ

जिनशासन की दैदीप्मयान मणि

इस विराट भूतल पर अनन्त प्राणी जन्म लेते हैं एव जन्म मरण के भीषण चक्रवात मे फसकर समय के साथ अगले मुकाम पर चले जाते हैं किन्तु विश्व विभूति समीक्षण ध्यान योगी आराध्य पूज्य गुरुदेव एक ऐसी विरल विभूति थे जो लाखो प्राणियो के मन रूपी मदिर एव हृदय रूपी कैमरे मे विराजित थे। वस्तुत आराध्य गुरुदेव सम्पूर्ण विश्व एव जिन शासन की दैदीप्यमान मणि थी जो अपना प्रकाश इस दुनिया मे बिखेर कर पार्थिव देह से पचत्व मे विलीन हो गई।

ऐसे महापुरुषों का जन्म ज्ञान-साधना के लिए, जवानी सयम-साधना क लिए एव बुढ़ापा वरदान के लिए होता है। ऐसे नानेश गुरुवर की उपमा मन करता है सूर्य से करू किन्तु सूर्य तो दिन मे ही दैदीप्यमान होता है। आचार्य भगवन् जिन शासन मे हुक्म शासन में हमेशा दैदीप्यमान होते रहेंगे। मन करता है ऐसे समता-सिन्धु की उपमा चन्द्रमा से करू, चद्रमा मे कही काले धब्बे नजर आते हैं किन्तु करुणा-सिन्धु समता की साक्षात प्रतिमूर्ति मे किसी प्रकार के राग, द्वेष ईर्ष्या दाह के धब्बे नजर नहीं आते। मन करता है अध्यात्म योगी जन-जन के आस्था के केन्द्र की उपमा बादलो से करू किन्तु फिर विचार आता है बादल तो सूर्य की ओट म छुप जाते है और ये महापुरुष किसी की ओट मे नही छुपते हैं सघर्षों से जुझते रहते हैं। ऐसे विराट व्यक्तित्व एव कृतित्व के धनी की उपमा समय रूपी चक्र से कर सकती हू जिस प्रकार समय रूपी चक्र निरतर गतिशील रहता है, उसी प्रकार लाखो के मसीहा ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि म निरतर गतिशील रहते थे और यही कारण है कि ऐसे वचन सिद्ध योगी के मुखारविन्द से वाणी सुनने के लिए सैकड़ो सत सती वर्ग एव लाखों भक्त आतुर रहते थे एव घटों-घटों प्रतीक्षा करते रहते थे। यह आराध्य गुरुदेव की वाणी का जादुई चमत्कार था। आराध्य भगवन के जीवन का महत्वपूर्ण गुण ऐसा था कि विषमता मे भी सदैव मुस्कराते रहते थे।

दीर्घ-द्रष्टा आचार्य भगवन् न हमें रामेशाचार्य जैसा महान् तेजी तपस्वी गुरु दिया। ऐसे नवम् पट्टधर जिन शासन मे सुनहरे नक्षत्र की भाति हमेशा चमकते रहेंगे। गुरुदेव श्री की आत्मा जहा कही भी विराजी हों सुखो म विराजे एव शाश्वत सुखो को प्राप्त करे। यही श्रद्धा सुमन गुरु चरणा मे अर्पित है।

परम् प्रतापी पूज्य श्री श्री लाल जी म सा की वाणी साक्षात परिलक्षित हुई और अष्टम सूर्य लगा चमकने, कुछ समय पश्चात् ही ऐसा लगने लगा कि साक्षात् गणेशाचार्य ही इस हुक्म क्षितिज पर विराजमान हैं, आपने तपोतेज साधना के प्रभाव से थोकबद २५-२१-१५-१५-७-८ आदि अनेक मुमुक्षु आत्माओ को दीक्षित कर एक रेकार्ड कायम किया।

बीहड़ विकट क्षेत्रो मे गध हस्ती के समान विचरण करते हुए सिह सम गर्जना करते हुए शासन की खूब जाहोजलाली की।

ऐसे समता विभूति गुरु की समय समय मेरे पर असीम कृपा बरबस बरसती रही। आदि से अन्त तक मे अपनी इस चर्म जिह्वा से जितना भी गुणानुवाद करू उतना ही कम है।

मेरी तो गुरुदेव के प्रति जबसे सयम का बाना पहना तब से मेरूवद् आस्था व श्रद्धा थी। विकट परिस्थितियो मे भी मुझे डोलायमान करने वाले मिले लेकिन किसकी ताकत कि मुझे मेरे अनन्य आराध्य मार्गदर्शक के पथ से चलित कर सके। ऐसे विकट समय मे मेरी गुरुदेव के पास पहुचने की बहुत ललक थी किन्तु मै समय पर नही पहुच पाई। मेरे अन्तराय कर्म आगे-आगे भागे थे।

एक दिन ऐसा स्वर्णिम अवसर आया कि मुझे अचानक आखा से दो दो वस्तुए दिखाई देने लगी तब डॉक्टर ने कहा कि आप उदयपुर पधारो आपका आपरेशन होगा। तब मेरी इच्छा नही थी कि मै डोली पर बैठकर जाऊ किन्तु सतियो का अति आग्रह होने से मै अनायास नेत्र चिकित्सा के लिए उदयपुर पहुची। आचार्य भगवन् के दर्शन किये, मेरा हृदय हर्ष से सराबोर हो गया और अनिर्वचनीय आनद की अनुभूति हुई। आचार्य भगवन् को भी अत्यन्त खुशी हुई। दोनो की तमन्ना थी दर्शन देने की और दर्शन करने की। वह चिर भावना पूर्ण साकार हुई। लगभग तीन महीने की स्वर्णिम सेवा व दर्शन का लाभ मुझे मिला और परस्पर मे अपने अपने हृदय मे भरे हुए उद्‌गार उजागर किये। मैंने कहा 'भगवन् आपका शारीरिक स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन कमजोर होता चला जा रहा है, फिर भी आप श्रीजी का तो आत्मबल बड़ा ही अलबेला है। गुरुदेव कहते हैं कि यह शरीर नाशवान है, एक दिन हसा उड़ जाएगा। तब मैंने कहा कि भगवन् आप युगों-युगों तक तपो। भगवन् अभी तो ऐसी वाणी न फरमावे। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करे हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है न कि कुम्भकार। आपकी महान कृति आप जैसी ही शासन की जाहोजलाली दिन दूनी, रात चौगुनी फैलाएगी यह नवापाट हुक्म व नानेश गुलशन का महकता हुआ एक सुन्दर पुष्प है, उसकी सौरभ दिग्-दिगत तक प्रसरित होती रहेगी।

किन्तु कुछ समय बाद ही ऐसे समाचार सुने कि सुनते ही हृदय धक् रह गया। अहो क्रूर काल ने ऐसे महापुरुष को छीन लिया किन्तु वे महापुरुष अन्तरात्मा से तो मेरे हृदय मदिर मे मानो विराजित हैं। शास्त्र मर्मज्ञ तपो तेज श्रद्धेय आचार्य भगवन् रामेश के ऊपर शासन की बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ गई है। जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि आपका यश भी पूज्य गुरुदेव की भाति दिनों-दिन वृद्धि को प्राप्त हो और आपकी वक्तृत्व कला चिर नवीन आयाम पाए। मुझे पूरा विश्वास है कि सन्त सतियो से मधुर व्यवहार विचार विमर्श करते हुए अनुशासनबद्ध गति देते हुए चतुर्विध सघ को प्रगति पथ मे अग्रसर करेंगे और प्रभु महावीर के उज्ज्वल शासन के सवाहक बन हुक्म गच्छाधिपति आचार्य श्री नानेश की गरिमा को प्रवर्धमान करते रहें, इसी मगल भावना के साथ शत्-शत् वन्दन-अभिनदन।

जिनशासन की दैदीप्मयान मणि

इस विराट भूतल पर अनन्त प्राणी जन्म लेते हैं एव जन्म मरण के भीपण चक्रवात मे फसकर समय के साथ अगले मुकाम पर चले जाते हैं किन्तु विश्व विभूति समीक्षण ध्यान योगी, आराध्य पूज्य गुरुदेव एक ऐसी विरल विभूति थे जो लाखो प्राणियो के मन रूपी मदिर एव हृदय रूपी कैमरे मे विराजित थे। वस्तुत आराध्य गुरुदेव सम्पूर्ण विश्व एव जिन शासन की दैदीप्यमान मणि थी जो अपना प्रकाश इस दुनिया मे बिखेर कर पार्थिव देह से पचत्व मे विलीन हो गई।

ऐसे महापुरुषों का जन्म ज्ञान-साधना के लिए जवानी सयम-साधना के लिए एव बुढ़ापा वरदान के लिए होता है। ऐसे नानेश गुरुवर की उपमा मन करता है सूर्य से करू किन्तु सूर्य तो दिन मे ही देदीप्यमान होता है। आचार्य भगवन् जिन शासन मे, हुक्म शासन में हमेशा दैदीप्यमान होते रहेंगे। मन करता है ऐसे समता-सिधु की उपमा चन्द्रमा से करू, चद्रमा मे कही काले धब्बे नजर आते हैं किन्तु करुणा-सिधु समता की साक्षात प्रतिमूर्ति मे किसी प्रकार के राग द्वेष, ईर्ष्या दाह के धब्बे नजर नहीं आते। मन करता है अध्यात्म योगी जन-जन के आस्था के केन्द्र की उपमा बादलो से करू किन्तु फिर विचार आता है बादल तो सूर्य की ओट मे छुप जाते है और ये महापुरुष किसी की ओट मे नही छुपते हैं सघर्षों से जुझते रहते हैं। ऐसे विराट व्यक्तित्व एव कृतित्व के धनी की उपमा समय रूपी चक्र से कर सकती हू जिस प्रकार समय रूपी चक्र निरतर गतिशील रहता है, उसी प्रकार लाखो के मसीहा ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि म निरतर गतिशील रहते थे और यही कारण है कि ऐसे वचन सिद्ध योगी के मुखारविन्द से वाणी सुनने के लिए सैकड़ो सत सती वर्ग एव लाखों भक्त आतुर रहते थे एव घटों-घटों प्रतीक्षा करते रहते थे। यह आराध्य गुरुदेव की वाणी का जादुई चमत्कार था। आराध्य भगवन के जीवन का महत्वपूर्ण गुण ऐसा था कि विपमता मे भी सदैव मुस्कराते रहते थे।

दीर्घ-दृष्टा आचार्य भगवन् ने हमें रामेशाचार्य जैसा महान् तेजी तपस्वी गुरु दिया। ऐसे नवम् पट्टधर जिन शासन मे सुनहरे नक्षत्र की भाति हमेशा चमकते रहेंगे। गुरुदेव श्री की आत्मा जहा कही भी विराजी हों सुखो मे विराजे एव शाश्वत सुखो को प्राप्त करे। यही श्रद्धा सुमन गुरु चरणो मे अर्पित है।

□ महाश्रमणी रत्ना श्री पानकुवरजी म सा

महाव्यक्तित्व के धनी

एक माली ने सुन्दर पुष्प वाटिका म एक सुन्दर गुलाब से कहा तुम इतने सुन्दर हो, मनोहर हो, तुम अपने आपको काटो के बीच भी सुखी अनुभव करते हो, तुम अपनी महत्ता का बखान करने के लिए कोई प्रयत्न नही करते फिर भी तुम्हारी प्रशसा तुम्हारी खुशबू सर्वत्र वाटिका म कैसे फैल जाती है ? इस पर फूल मुस्कराकर मौन रह गया।

महापुरुषो का जीवन भी उसी गुलाब की तरह है कि वह अपने आपको जीवन के प्रत्येक उतार चढ़ाव मे प्रफुल्लित महसूस करते है औरों का कल्याण करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। उनके अन्दर इतने गुण विद्यमान हो जाते हैं कि फिर उसी गुलाब की खुशबू की तरह उसे फैलाने या बखान करने की आवश्यकता नही पड़ती है। आचार्य भगवन् का सपूर्ण जीवन काटा से भरे सयम जीवन मे भी सदा मुस्कराता हुआ रहा।

मेवाड़ देश के छोटे से ग्राम दाता मे आचार्य नानेश का जन्म हुआ। उनका जीवन महान् था, उन्होंने अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रो म राष्ट्र समाज, सघ एव कई मुमुक्षु आत्माओ पर अनत उपकार किया।

आपने साधु-साध्वी के लिए शिक्षा परीक्षा की प्रेरणा दी जिससे कईयो के जीवन मे ज्ञान-ध्यान के प्रति विशेष जिज्ञासा ने जन्म लिया। आपने कई सत सतियो को दीक्षा देकर विद्वता प्रदान कराई। सहज भाव से सभी को कहते शास्त्र का *अध्ययन करो और कुछ नहीं तो जवाहर किरणावलिया ही पढ़ो।*

सस्कृत, प्राकृत और व्याकरण पढ़ाने के लिए पडित और अच्छे शिक्षका को बुलाने की सदैव प्रेरणा करते और कहते फिक्र न करो मै सब व्यवस्था करने की कोशिश करूगा। इस तरह शिक्षा-दीक्षा का काम अपने हाथ मे लिया और उसे बखूबी निभाया।

आचाय भगवन् की समता, सयम-साधना उत्कृष्ट कोटि की थी। अन्य सम्प्रदाय वाले भी कहते ऐसे महाव्यक्तित्व के धनी *आचार्य का मिलना बहुत दुर्लभ है जो कोई श्रद्धा भाव से उनका स्मरण करता वह निहाल हो जाता।*

एक ग्राम मे गुरुदेव एक बहिन के यहा गोचरी के लिए पधारे, वह बहिन भाव सहित बहुत सा आहार बहराने लगी आचार्य भगवन् ने उसे मना किया तो बहिन ने कहा-महाराज श्री आप चिता न करें मेरा एक ही बच्चा है, उसे कुछ भी खिलाकर उदरपूर्ति कर दूगी। बच्चा आया और उसने दाल-चावल खाने की जिद्द की, मा ने कहा बेटा मै तुझे शाम को बना दूगी। तुम पैसे ले जाओ और बाजार से कुछ खा लेना। बच्चे की जिद्द को देखकर मा ने बच्चे को विश्वास दिलाने के लिए ढके बर्तनों को उसे दिखाया तो देखा दाल चावल के भर भराये बर्तन मिले और बच्चे ने प्रसन्न होकर उस भोजन को खाया। माता विचारो मे उलझ गई। ऐसा चमत्कार देखकर उसी दिन से आचार्य श्री के प्रति अटूट श्रद्धा जम गई।

आज उन्ही आचार्य श्री जी की स्मृतिया ही शेष रह गई। उन्होने अपनी इतने वर्षों की सयम साधना एव पारखी दृष्टि से मुनि राम को इस शासन को समर्पित किया *जिन्हे हमे गुरु का आशीर्वाद समझकर उसी श्रद्धाभाव से आचार्य श्री राम* के चरणो में अपने जीवन को समर्पित करना चाहिए। इनका जीवन भी अनत गुणो से भरा पड़ा है। ये शास्त्रज्ञ, तरूण तपस्वी होने के साथ ही उत्कृष्ट सयम साधना मे रमण करने वाले महान साधक हैं।

आज स्वर्गीय आचार्य भगवन् को भाव सहित श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उन्हे अतिशीघ्र मोक्ष रूपी परम् अवस्था हो, ऐसी मगल कामना करती हू।

❑ महासती श्री सुशीला कवर जी म सा

सत परम्परा पर गर्व है

रशियन प्रजा को अपनी वैज्ञानिक शक्ति पर गर्व है, तो अमेरिका के लोगो को अपने वैभव पर, अग्रेज प्रजा को अपनी जलशक्ति पर गर्व है तो फ्रास अपनी विलासिता तथा चमक-दमक पर फूला नही समाता, परन्तु हम भारतवासियो को सबसे अधिक गर्व है अपनी सत परपरा पर।

सत भारतीय सस्कृति के प्राण और आत्मा कहे जायें तो कोई अतिशयोक्ति नही है। भगवान ऋषभदेव से लेकर आज तक इस पवित्र भूमि में भिन्न-भिन जाति तथा भिन्न-भिन्न पथो मे अनेक सत महापुरुष पैदा हुए हैं। इसी सत परपरा तथा भ महावीर की पट्ट परपरा मे हुक्म सघ के अष्टम पट्टधर समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी, विश्व वदनीय आचार्य श्री नानेश भी एक महान सत रत्न थे।

आचार्य श्री नानेश इस धरा पर ज्ञान का दिव्य प्रकाश फैलाकर, त्याग, तप की सौरभ महकाकर, समता का बिगुल बजाकर सहिष्णुता को अपनाकर, जिनशासन को दीप्तिमान कर, समीक्षण ध्यान की धारा बहाकर, दलितो का उद्धार कर, लाखो भक्तो के मन मदिर मे बिराजकर परमात्म पथ की ओर प्रस्थान कर गये। कभी सोचा भी नहीं था कि यह अलौकिक दिव्य विभूति हमे रोते-बिलखते छोड़कर प्रस्थान कर जाएगी किन्तु नीतिकार ने कहा है-

स जातो येन जातेन याति वश समुन्नतिम्।
परिवर्तनि ससारे मृत को वा न जायते ॥'

इस परिवर्तनशील ससार मे प्रतिदिन हजारो मनुष्य जन्म लेते हैं और हजारों मृत्यु का भी प्राप्त हो जाते हैं, लेकिन यो ही जन्मने और मरने का महत्व नही होता। इन हजारो मनुष्यो मे बिरला ही कोई महापुरुष होता है, जो जन्म लेने के बाद आत्म कल्याण के लिए, देश और समाज के लिए अपने जीवन को बलिदान कर देता है। आचार्य भगवन भी ऐसे ही महापुरुष थे जिन्होने आत्म कल्याण हेतु जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने के अनन्तर अपना जीवन देश,समाज व राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण दीपक के समान ससार को प्रकाश देता रहा। वे महापुरुष महाप्रयाण करने पर भी सदा हमारे पास हैं।

धर्म पर जो हैं फिदा, मरने से वो डरते नही।
लोग कहते मर गए, दरअसल वो मरते नही ॥'

आचार्य भगवन् पार्थिव देह से हमारे बीच मे नही रह किन्तु वे यश रूपी शरीर से सदा सदा के लिए विद्यमान रहेंगे। आचार्य भगवान की साधना बेजोड़ थी उसी अजोड़ साधना क कारण कई चमत्कार हुए।

मेरे स्वय के जीवन का प्रसग है। पिछले वर्ष सरवाड चातुर्मास के लिए, उभय गुरु भगवन्ता का आशीर्वाद लेकर चित्तौड़ से विहार किया पूलिया कला के आसपास एकाएक मौसम परिवर्तित हुआ। आसमान काले कजराले मेघों से अच्छादित हो गया। देखते ही देखते मूसलाधार वर्षा होने लगी। आसपास का भू-भाग जलमग्न हो गया सारे मार्ग अवरूद्ध हो गए कही कोई रास्ता दिखाई नही दे रहा था। सहवर्ती साध्वियो सहित मैं चिन्तामग्न हो गयी। तुरन्त गुरुदेव का स्मरण किया- भगवन् अब क्या करे आप ही मार्ग दिखायें। गुरुदेव का स्मरण करते ही

मेघधारा भी बद हो गयी और मार्ग भी मिल गया। यथासमय गतव्य स्थान पर पहुच गये, यह है गुरुदेव की साधना का प्रभाव जिससे सारे उपसर्ग परीषह काफूर हो गये।

इसी प्रकार गुरुदेव का तपो पूत जीवन अद्भुत शक्ति का स्रोत था, अलौकिक दिव्य सिद्धियो का कोष था, शात प्रशात जल का निर्मल झरना था। उनका उत्कृष्ट मगलमय साधना युक्त जीवन इस लोक मे उत्तम था और परलोक मे भी उत्तम रहेगा ताकि लोक मे उत्तम स्थान को प्राप्त कर सिद्ध गति को प्राप्त होंगे। जैसा कि उत्तराध्ययन सूत्र मे कहा है

इह सि उत्तमो भते, पच्चा होहिसी उत्तमो।
लोगुत्तमुत्तम ठाण, सिद्धि गच्छसि णीरओ ॥

हम सौभाग्यशाली है कि ऐसे सद्गुरुदेव की पावन सन्निधि मिली दर्शन सेवा का किंचित लाभ प्राप्त हुआ,आज के इन गम के क्षणो मे उनके जीवन से प्रेरणा लेकर के साधना पथ पर आगे गति करें, इन्ही भावों के साथ हार्दिक श्रद्धाजलि।

-मनाव

म्हाने क्यू छिटकाया जी

मुनि श्री धर्मेश मुनि जी म सा

म्हारो शासन रा सिरताज प्यारा नाना गुरु गणीराज ।
म्हांने क्यूं छिटकाया जी म्हांने क्यूं बिसराया जी ॥ टेर ॥

कुटुम्ब कबीला छोड़ने सब, आप शरण में आया ।
करसी बेड़ो पार गुरुवर, आशा मन में लाया ॥
म्हांने छाड़ चल्या मझधार, कुण लेसी अब सार संभाल ॥ १ ॥

महा उपकार आप रो गुरुवर, नहीं उऋण हो पाया ।
अंतिम दर्शन री मन में रह गई, सेवा भी नहीं पाया ॥
उठ मन में इणरी झाल हो रह्या हाल म्हारां बेहाल ॥२॥

आप तो स्वर्ग में जाय विराज्या मैं तड़फां गुरुनाथ ।
छोटा मोटा चला चेली बिलख रह्या दिन रात ॥
कठे जावां अब गुरुराज पावां संयम रो साज ॥ ३ ॥

अब तो एक अर्ज है गुरुवर, शासन शक्ति दीजो ।
राम राज्य जस पावे जग में, म्हारी खबरां लीजो ॥
दीईजो धर्म रो साज पाईजो वेगो मोक्ष रो राज ॥४॥

प्रेषक- महेश नाहटा, राजनादगाव

बाप से बेटे सवाया

छोटा सा मिट्टी का घड़ा आगन मे पड़ा। उसकी महत्वकाक्षा जाग उठी कि प्रकाशमान सहस्र रश्मि सूर्य को मै अपने मे बाध लू। कैसा विचित्र है यह ससार ? कैसे समझाए उस मूर्ख घट को ? कभी असभव सभव हो सकता है किंतु इस विचित्र ससार मे असभव भी सभव हुआ है, पनिहारिन उस घट को पनघट पर ले गई। पानी स भरकर आगन मे लाकर रख दिया। बस हो गई मनोकामना उस घट की पूरी। घड़ा मूर्ख नही था।

मै भी साच रही हू कि जिस समता के देवता ने जगत को एक सूत्र दिया है

कि जीवनम् ?"

सम्यक् निर्णायक समतामञ्च यत् तत् जीवनम्

क्या मै उस अवणनीय महापुरुष का वर्णन अर्थात् अवाच्य को वाच्य नही बना रही। अपने शब्द घट मे उस ज्योतिर्मय सूर्य को आमत्रण नही दे रही ?

चित्तौड़ जिले मे छोटा-सा ग्राम दाता, मा शृगारा, पिता मोड़ी के आगन मे किलकारिया भरता गोवर्धन। माता का अत्यधिक लाड़ला होने से विश्व मे नाना नाम से प्रसिद्धि पा गया। बालक नाना १५ वर्ष की उम्र म भगिनी का तप की चुनरी ओढ़ाने भादसोड़ा के धर्मस्थान मे प्रतीक्षा कर रहा था कि एकल विहारी चौथमल जी म के शब्द कान मे पड़े कि छठा आरा कैसा होगा। क्या उस प्रकाश पुज को किसी प्रकाश की जरूरत थी। नही। किन्तु एक निमित्त। मार्ग मे चलते अश्वारोही नाना ने मार्ग खोज ही लिया घर से निकटस्थ विराजित सतो के पास पहुच गये। वहा देखा प्रलोभन का अबार। वह अबार नाना के मन को जीत नहीं पाया। एक आत्म-शोधक भले प्रलोभनो से कैसे लुभायेगा ? उन्होंने सोचा, जहा प्रलोभन है वहा जीवन की नैतिकता नही है। जो स्वय सर्जक है, द्रष्टा है, सृष्टा है उनके लिए राह और थाह अति सुलभ है। शात क्राति क अग्रदूत आचार्य श्री गणेश का सानिध्य उन्हे साधक से साध्य की ओर बढ़ा देता है, मुनि नाना से आचार्य नाना तक पहुचा देता है। सघ के लिए इस मनीषी ने रात देखा न दिन, साधना से सधते और सधाते ही रहे। क्या नही दिया सघ और समाज को ? एक बार एक सत गुरुदेव के छत्तीसगढ़ के प्रवास की झलक बता रहे थे कि हम सब बालक सत थे गुरुदेव युवा थे, लम्बा-लम्बा विहार करते छोटे-छोटे गावो मे आहार कम मिलता था गुरुदेव उपवास पच्चक्ख लते और हम सबको आहार करवात आहार से बचे समय मे हमको लगातार पढ़ाते, बेल-बेले, तेले तेले की तपस्या गुरुदेव की हो जाती किन्तु पढ़ाने से विराम नही। धन्य है एसे महापुरुष का जिन्होंने खाया नहीं खिलाया, पिया नही पिलाया। कुछ प्रसग सामने देख लेते तो स्वय सोये नही सतो को सुलाया। एक माता भी अपने सतान के लिए क्या कर सकती है ? उसस भी अनन्तगुणा गुरुदव ने शिष्य शिष्याओ को प्रदान किया।

वे पूज्यो म पूज्य श्रेष्ठो म श्रेष्ठ, ज्येष्ठो म ज्येष्ठ ससार सागर मे भटकती हुई लाखो लाख आत्माओ क लिए महासूर्य थे। जल म कोई सामर्थ्य नही है कि वह सूर्य को अपन म बाध सके। तद्वत शब्दो मे कोई सामर्थ्य नहीं है कि ये महापुरुषो के गुणो को शब्दो में बाध सके। एक विद्वान ने ठीक ही कहा है कि-

सर्वातिशायि महिमासि मुनिन्द्रलोक'

जिनकी मन, वाणी और कर्म जन-जन के अन्दर छाये घने अधकार को दूर करने म प्रयत्नशील थे उदात्त मन जन -कल्याण की कामना से ओत प्रोत था, जहा मन, वाणी और कर्म तीना एक हा चुके है, वही परमात्म रूप है।

आप श्री की वाणी मानो प्रकृति की गोद से झरते झरने वत् झकृत होती हुई निकलती थी। महान् कर्मयागी गुरुदेव कभी ज्ञान, कभी ध्यान, कभी चर्चा, पठन-पाठन तो कभी जप-तप स्वाध्याय, मे लीन रहते। अकर्मण्यता ने आपकी तरफ आख उठा करके भी नही देखा। प्राचीन और अर्वाचीन सारा साहित्य इस श्रुतवारिधि के स्मृति कक्ष क द्वार पर करबद्ध खड़ा था। आपकी जिह्वा का स्पर्श पाकर शब्द, शब्द ही नही रहा, अमृत बन गया।

पारस रूप गुरुदेव के स्पर्श से कुटिल कलुषित मन रूप लोहा भी कोमल कान्त स्वर्ण बन जाता। नरक स्वर्ग में रूपान्तरित हो जाता, आसू हसी मे बदल जाते। अधत्व दृष्टि मे परिवर्तित हो जाता जन मन के चिकित्सक की यह अद्भुत चिकित्सा चकित कर देती।

यह विराट पुरुष विविध रगी इन्द्रधनुष के समान था। प्रत्येक रग अनोखा और अद्भुत था, मनोहर था। यह वह बाग था, जिसमे अनेक रग बिरगे पुष्प खिले थे। हर पुष्प रग सुगध रूप, तप सयम से भरा था।

स्वय सजग एव दो पहरूओ को भी सजग कर दिया ध्यान रहे मै खाली हाथ न चला जाऊँ' लम्बे समय तक सलखना एव १३ घटे लगभग सथारा, समाधि पूर्वक पण्डित मरण यह किन्ही महाभाग्यशाली पुण्यवान आत्मा को ही प्राप्त होता है।

कहा ढूढू अनमोल रत्न को

महासती कल्पमणि जी म सा

नाना मेरे नाना थे
सबस निराले थे।
आत्मबली निरभिमानी
सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी थे ॥१॥

नाना मेरे दिल के हार थे
ज्ञानरत्ना से सजे थे।
सघ शिरोमणि तेजस्वी
महाध्यानी सघ सितारे थे ॥२॥

अनुपम प्यार लुटाकर,
सबको गले लगाया था।
नयनो से अमृत बरसाकर
सबका भ्रम मिटाया था ॥३॥

राम म नाना को निहारू
मनहर मूरत को ध्याऊ मै।
मन मदिर क देव को
ध्याती रहूँ निश दिन मे ॥ ४ ॥

तेरी यादो मे मन रो रहा
तेरी सेवा मे तन समर्पित रहा।
रोते बिलखते छोड़ा जन जन को
कहा ढूढू अनमोल रतन को ॥ ५ ॥

सद्गुणो की सौरभ

दीप बुझा प्रकाश अर्पित कर , फूल मुरझाया सुवास समर्पित कर ।
टूटे तार पर सुर बहाकर, नानेश गुरुवर चले गये नूर फैलाकर ॥

वृक्ष की डाली पर जब फूल खिलता है, तो वह चारो ओर आसपास के वातावरण मे अपनी सौरभ को बिखेर देता है ।

महापुरुषो का अवतरण फूलो से भी बहतर होता है, विशिष्ट होता है महान् होता है । महापुरुष जब तक इस दुनिया म मौजूद रहते हैं तब तक उनका व्यक्तित्व जन-मानस को अपनी ओर प्रभावित करता ही है और अपने अपूर्व सद्गुणो की सौरभ से जन-जन मे एक नवीन ताजगी भर देता है । आखो से ओझल हो जाने के बाद भी उनके गुणो की सुवास जन-जन को एक नवीन चेतना नव स्फूर्ति एव नव जीवन प्रदान करती रहती है ।

उनके दैदीप्यमान व्यक्तित्व का तुच्छ शब्दावली से व्यक्त नही किया जा सकता । वे हिमालय से विराट,सागर से गभीर, चद्र से उज्ज्वल एव सूर्य से तेजस्वी उन गुरुवर के जीवन दर्शन को शब्दो की सीमा मे बाध भी कैसे ?

उनके जीवन पर दृष्टि डालने पर मेरा मस्तक गौरव से ऊचा हो जाता है और अन्तर हृदय श्रद्धा से झुक जाता है । वे सयम साधना के ताप से तपे निरतर तपत रहे, निखरते रहे और निखरते-निखरते वे निर्मल हो गये । शुद्ध कुदन बन गये । उनकी अन्तरात्मा निर्मल, निश्चल स्वच्छ और पवित्र थी ।

वह तप पूत सयमी आतमा इस नश्वर तन को छोड़कर हमसे विदा हो गयी । जिसने भी इस बात को सुना उनके दिल पर मानो वज्रपात हो गया ।

आचार्य प्रवर इतने जल्दी छोड़कर चल देंगे ऐसा स्वप्न मे भी नही सोचा था । आचार्य प्रवर के इस महाप्रयाण से सबको अपार व्यथा हुई । हम जैसी लघु शिष्याओ का अत्यधिक गहरा आघात लगा कि वे हमे असमय ही छोड़कर चले गये ।

हमार विभु शरीर पिड से भले ही चले गये पर उनका उज्ज्वलतम चारित्र, यश सौरभ के साथ हमारे लिए प्रकाश-पुज बनकर अमर है । प्रभु वीर के शासन को उन्होंने जिस भाति गौरवान्वित किया वह इतिहास गगन का दैदीप्यमान नक्षत्र बनकर चमकता रहेगा । हम उनके बताये मार्ग पर चलकर श्रमणी जीवन को समुज्ज्वल बनायग ।

गुरुवर तेरी मीठी स्मृतिया युग बोध जगायेगी ।
सुख दुख में उलझे मन की उलझन को सुलझायेगी ।
कल्याणकारी है आपका च्यवन, मगलकारी है आपका जन्म ।
पावनकारी है आपकी प्रवर्ज्या, प्रेरणादायी है आपका निर्वाण ।

अत मे मै वीर प्रभु से यही अभ्यर्थना करती हू कि मेरे आस्था-पुज परम श्रद्धेय पूज्य गुरुवर की आत्मा यथाशीघ्र चरम लक्ष्य को प्राप्त करे ।

आस्था के अमृत सिधु

चले गये हमे छोड़कर, हम न सकेगे तुमको भूल,
सदा आपकी स्मृति मे, करेंगे अर्पित श्रद्धा फूल ।

वास्तव मे यह अनादि कालीन सिद्धात है कि जो मिलता है अवश्य बिछुड़ता है । जो उदित होता है वह अवश्य अस्त भी होता है । जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी होती है । जिस प्रकार रात्रि के आकाश मडल मे असख्य तारे उदित होकर टिमटिमाते है, अपनी चमक चादनी दिखाकर अन्तत प्रभात मे विलीन हो जाते हैं । उसी तरह इस पृथ्वी तल पर अनत अनत प्राणी आते हैं एव अपनी छटा दिखाकर चले जाते हैं ।

ससार मे सफल साधक वही गिने जाते हैं जो अपने आपको सयम साधना मे लगाये हुए एक पवित्र उज्ज्वल आदर्श स्थापित कर जाते हैं । आचार्य श्री नानेश उन्ही साधक महापुरुषो मे से एक हैं । आप श्री जी का मन एव हृदय करुणा, दया एव अनुकपा से लबालब भरा हुआ था । आचार्य भगवन् का सद्गुणमय जीवन महानता का द्योतक था । वे गुणो के अक्षय कोष थे । अनत गुणो के प्रशात महासागर थे ।

आचार्य श्री नानेश इस विश्व वाटिका के सौरभयुक्त सदाबहार सुमन थे । वे अपने जीवन की सुमधुर सौरभ विश्व मे फैलाकर इस असार ससार से चले गये । उनकी स्मृतियो की सौरभ हमारे जीवन को आज भी सुवासित कर रही है । जिस प्रकार अगरबत्ती एव मोमबत्ती अपनी देह के कण-कण को जलाकर वातावरण को सुवासित एव सुगधित बनाती है । उसी प्रकार समता सिधु आचार्य देव भी अपने जीवन का प्रत्येक अमूल्य क्षण समाज को समर्पित कर समाज मे ज्ञान के प्रकाश एव प्रेम की सुवास फैलाते रहे । व्यवहार दृष्टि मे आचार्य श्री नानेश चले गये है, पर हमारे अन्तर हृदयो से वे कभी भी नही जा सकते । मेरे भावलोक के देवता मेरी शत शत वदना स्वीकार करे ।

महकता था जिससे घर ससार का सारा गुलशन,
वह फूल अपनी महक बिखेरे हमे छोड़ गया,
हृदय का सम्राट जिगर का हुक्मरा जाता रहा,
खार का महबूब गुलो का महरबा जाता रहा
मौन क्यो गुच्छे है, क्यो हर कली मुरझा गई,
आज हमारे बाग से बागबा जाता रहा ।

अत मे मै मेरे आराध्य भगवन् के लिए शासन देव से यही प्रार्थना करती हू कि वे अतिशीघ्र मोक्षगामी बने ।

महान् अमर साधक

आप बादल नही स्वय आसमान थे,
आप फूल नही वरन् उद्यान थे ।
क्या कहना आपकी समता साधना का,
आप पुजारी नही स्वय भगवान थे ॥

पूज्य गुरुदेव का जीवन नाना गुणो से ओत-प्रोत था। आपके अन्तर और बाह्य जीवन मे ऐसा दिव्य और भव्य सयम था माना गगा और यमुना का सगम हो । आपने यौवन की दहलीज पर ही सयम साधना के कठोर कण्टकाकीर्ण महामार्ग पर अपने मुस्तैद कदम बढ़ाए और वीर की तरह बढ़ते गये । आगम साहित्य के प्रति आपके अर्न्तमन मे गहन निष्ठा थी एव सयम साधना के प्रति सहज अभिरुचि । वयोवृद्ध होने पर भी मन मे अहकार का अभाव था। दीप से दीप प्रज्वलित होता है उक्ति के अनुसार श्रद्धेय आचार्य भगवन् के जो भी सम्पर्क मे आया वही आलोकित हो गया । आपने लाखो साधको को प्रेरणा की एव जिनवाणी का अमृत पान करवाया ।

पूज्य गुरुदेव एक जगमगाते दिव्य तेज सितारे थे। आपका सयमित जीवन त्याग वैराग्य का ज्वलत उदाहरण था। वे इस कलिकाल के एक महान् पुरुष थे । उनके जैसा ज्ञानबल, आत्मबल एव चरित्रबल बहुत कम महापुरुषो मे होता है। उनके उज्ज्वल सयमी जीवन का प्रभाव अनूठा गहरा और अमिट था। विषमता से पर समता से जीवन आप्लावित था । उनकी साधना का लक्ष्य समता था और वही बना उनका स्वभाव ।

जिनमे सूर्य सी तेजस्विता शशि सी शीतलता, सागर सी गभीरता, धरा सी धीरता, सहिष्णुता, वज्र सी सयमी कठोरता फूल सी कोमलता, कमल सी निर्लिप्तता, सुमरू सी अडिगता समाहित थी । ऐसे महापुरुष के ज्ञान की गरिमा, गुणो की महिमा जीवन का सयम माधुर्य चतुर्विध सघ को अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नही रहता। आप द्वारा सम्पूर्ण समाज को समय समय पर नव चेतना उत्साह व जीवन निर्माण की राह मिलती रही । साथ ही-

जिनके जीवन उपवन मे खिले है सद्गुण सुमन,
मधुर सौरभ से भक्तगण के पुलकित होते अर्न्तमन ।
सयम, समता और सरलता जीवन में है सदा
श्रद्धानत है जनता सारी भुला सकेगी नही कदा ॥

जिस प्रकार कुशल कारीगर एक अनगढ़ पत्थर का प्रतिमा का रूप देकर पूजनीय बना देता है ठीक उसी प्रकार विश्व शाति के मसीहा सघ शिरोमणि, हुक्मेश सघ के अष्टम पट्टधर आचार्य नानेश ने हम सभी नन्ही-नन्ही कोमल कलियो को पल्लवित एव पुष्पित किया । अन्य शब्दो मे कहे तो प्रस्तर स प्रतिमा का रूप दिया । ऐसी महान विभूति का महाप्रयाण दिल को गमगीन करन वाला बना गया शोक का सलिल बरसा गया तथा दुख का अहसास करा गया ।

व्यक्ति जब नही रहता है तो उनकी यादे झकझोरती हैं। समता सौरभ से महकता महापुरुष का जीवन प्रेरणा स्रोत था। उनकी पार्थिव देह भले ही हमारे बीच नही है, किन्तु उनकी कीर्ति पताका दीर्घावधि तक फहराती रहेगी।

फूल के चले जाने पर भी मिट्टी मे महक रह जाती है, व्यक्ति के चले जाने पर भी दिल मे स्मृति रह जाती है। धन्य है ऐसे महापुरुष जिनके इहलोक से जाने पर भी श्रद्धा और आस्था भरी गाथाए अवशिष्ट रह जाती है॥

अष्टम पट्टाधीश के चमकते-दमकते नवम् पट्टाधीश आचार्य श्री रामेश देहरी के दीपक की तरह हैं जो भीतर बाहर सर्वत्र श्रद्धा का प्रकाश बिखेर देंगे। आप उस सुमन की तरह है जो कण कण मे समर्पणा की महक भर देंगे। पूर्वाचार्यों की पुनीत परम्पराओ/ सिद्धातो को तथा वर्तमान पीढ़ी रूपी बाह्य क्षेत्रो मे व्यसन मुक्ति एव सस्कार क्राति के माध्यम से भीतर बाहर प्रकाश की रश्मिया प्रकाशित करते रहेंगे। पूर्वाचार्यों की दिव्य शक्ति दिव्य प्रकाश स्वत आपमे प्रकट होगा और आप श्री जी भी आचार्य नानेश की भाति ही जैन जगत के एक दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप मे अपनी गरिमा तथा ख्याति प्राप्त कर गौरवान्वित होंगे और शासन की निरतर सेवा करते हुए हम सबकी आशाओ और अपेक्षाओ की पूर्ति करेंगे।

-कानोड़ (राजस्थान)

दीपक से दीपक जलता है

मंजु नाहर

गुरु को दीपक कहा,
न कि चांद सूरज
गुरु को पतवार कहा
न कि सुन्दर नौका
गुरु को डोर कहा
न कि सुन्दर पतंग
गुरु को धागा कहा
न कि सुन्दर सूई
गुरु का दीपक कहा
दीपक स दीपक जलता है,
नानेश को श्रद्धा सुमन,
राम को अभिनन्दन।

❑ महासती श्री शकुतला श्री जी म सा

आस्था के अमर दीप

सामने लखकर, खिलता था कमल मन मे,
लेकिन दूर जाकर मधुगध बन गये हो ।
आप रहते प्रभु तो थी दर्श की अभिलाषा,
विभु ! दूर जाकर उर-स्पदन बन गये हो ॥

सुनसान के सहचर को लेकर बैठी पर क्या लिखू ? समझ मे नहीं आ रहा है । कोई कहे चाद की शीतलता को शब्दो मे बाध दो खुशबू को कागज मे उतार दो, मा की ममता का रग बता दो इन सबको अनुभूति के आलोक मे अनुभव किया जाता है किन्तु समझाया नही जा सकता । पितु-मातुवत् स्नेह दाता महाप्राण गुरुदेव के विषय म क्या कहू ? जिन्होंने जीवन भर हम जैसे अशो को स्नेह लुटाया । विशाल वात्सल्य से विशाल सघ निर्मित किया । भगवन् इतना ममत्व क्यो दिया । इतना वात्सल्य क्यो उड़ेला ? अनन्य आत्मीयता क्यो दी । हृदय मे स्थान क्यो दिया ? नापसद को पसद क्यो किया ? आपका स्मरण, वचनामृत अन्दर से हिलाने वाला ? मक्खन से भी मुलायम और हम इतने कठोर कि आपको भूला दें, महाप्रयाण हो चुका, लाख मन को समझा लें पर मन नही मान रहा है । प्यासे नयनो को तृप्त करने एक बार आ जाओ । जिसे सानिध्य मिला, स्नेह मिला वे स्नेही जन जान सकते हैं । क्या गुरुदेव को युग ने पहचाना ? काश पहचाना होता । परम पूज्य प्रियजनो का वियोग कितना कष्टकर होकर शूल की तरह चुभता है । लग रहा है जैसे कोई कलेजा निकाल रहा है अथवा परम प्रिय खुशी को छीन रहा है । अब केवल स्मृति भर रह गयी । अभी सभी सहृदयो की यही मनोभूमि बन रही है । फिर भी न जाने क्यो ? गुरुदेव की उपस्थिति अपने मध्य है, इसका सकेत मिल रहा है । इस सफर मे लक्ष्य तक तुम हमारे दृढ़ विश्वास हो ।

हर धड़कन मे नाना बोल रहे हो,
आप श्वासो के तार मे डोल रहे हो ।
कैसे कहें महाप्राण का महाप्रयाण हुआ,
अस्तित्व के कण-कण को खोल रहे हो ॥

परमार्थ के परिप्रेक्ष्य मे नाना हर धड़कन मे बोल रहे है- क्योंकि पूज्यवर ने उदासी मे उल्लास दिया आशीषो के आचल म आवास दिया मुस्कानो से भरा राम जैसा मधुमास दिया ।

पूज्य प्रवर की समर्पणा सजीवनी शक्ति हमारे जर्रे-जर्रे मे सचरित हो रही है तो कहना होगा कि सूर्य अस्त नहीं हुआ, प्रकाश नही बुझा । आपने कभी प्रकाश को बुझते देखा ? कल की सुबह सूरज ले आज धरती पर उतर गया । गुरुदेव हमारे हाथ मे दीप थमा के गये हैं जमीन को उर्वरा बना के गये है चुनौतीपूर्ण समस्या म हम जगा गये है । यदि हम उनके आदर्शों पर न चले उनकी परम्परा को अक्षुण्ण बनाये नही रख तो प्रस्तुत श्रद्धाजलि दिखावा मात्र होगी । गुरुदेव के मात्र नारे लगाकर नही गुरुदेव नाद मे उतारकर हम जो अन्तिम सीख देकर गये उन्हे कर के दिखायें तभी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी । हे भगवन् ! आप हम एसी शक्ति, एसी कृपा किरण हम पर डाल

ताकि हम सब मे आपके सकल्प को पूर्ण करने की शक्ति जागृत हो सके।

आपके अनुदानो के कर्ज का हम एक शताश को चुका सके, ऐसी वीर प्रभु हमे सामर्थ्य दे।

गध बनकर हवा मे बिखर जाए हम,
ओस बनकर पखुरियो से झर जायें हम।
तूने न देखा बाग भी तो क्या,
तेरे आगन को खुशियो से भर जाए हम ॥

-प्रेषक किरण देशलहरा

घट घट में बसा है तू

मु सुमिता ममता बोथरा

हे देवो के प्रिय,
नाना तू कहा गया।
अनत को पाने,
हम सबको छोड़ गया ॥१॥

ध्यान तेरा था समीक्षण,
जीवन मे थी समता।
इसीलिए प्रभुवर तूने,
सबसे मारली है ममता ॥२॥

क्या होगा पीछे हमारा,
नही सोचा था तूने।
छोड़ा मझधार मे हमको,
हो गये अरमान सूने ॥३॥

कहा ढूढू कहा पाऊ
कहा जाय मन बावरिया।
कैसे भूलू मै तेरी शिक्षा,
घट-२ मे बसा है तू सावरिया ॥४॥

हाथ लिये श्रद्धा का अर्चन
करती मै तेरा पूजन।
स्वीकारो गुण पुज भगवन,
नित्य रहेगा तेरा स्मरण ॥५॥

प्रबल पराक्रमी एव पुरुषार्थी

एक प्रश्न उठता है पर उसका समधान सागर की अनन्तता के समान सुविस्तृत है, जिसका ओर छोर पाना दुसाध्य है।

प्रश्न है कि समता विभूति प्रात स्मरणीय स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश कैसे विनयी थे, कैसे विचारक थे कैसे सम्यज्ञ थे, कैमे अप्रमत्त थे और कैसी निष्ठा के साथ कुशल पराक्रमी पुरुपार्थी थे ? आदि-आदि

इन उभरते महान प्रश्नो का मै तुच्छ बुद्धि से क्या समाधान खोज सकती हू। परतु एक मात्र उन्हीं की परम कृपा प्रसाद के बल पर कुछ प्रयत्न कर रही हू।

अदभुत विनयी

आचार्य भगवन् बचपन से ही परम दयालु परम कृपालु एव विनयी थे। आप श्री जी अपनी मातुश्री के द्वारा भोजन करते मातु श्री प्रत्येक कार्य मे सहयोगी रहते, मातुश्री जी ही नही, अपितु आसपास के सभी ग्रामवासियो का कार्य निसकोच करते थे। इसलिए आप श्री जी को सभी अतीव प्यार स्नेह क साथ मधुर भाषा मे नाना कहकर पुकारते थे। जन्म नाम तो आपका गोवर्धन था जो नाना नाम व्यापक विराटता मे समाहित हो गया। नाना नाम की व्यापकता वस्तुत सार्थक सिद्ध हुई।

एक बुढ़िया पानी का घड़ा ले जा रही थी, आप श्री जी की विनय भावना दया के रग मे ओत-प्रोत वोल उठी कि लाओ माजी मै आपके घर पहुचा देता हू। कितने उदार दिल के थे, आप श्री जी को उस बुढिया ने क्या-क्या आशीप दी ? कहा भी है-

वस्तुत आचार्य भगवन् ने मुह से देने वाली आशीप नही मागी, उन्होने आतड़ियो की आशीपे पाई। तदनुरूप आप श्री जी ने जब आध्यात्मिक जगत शिरामणि शात क्राति के अग्रदूत परम श्रद्धेय श्री गणशाचार्य श्री जी की पुनीत सन्निधि मे चैतन्य देव की परामाराधना प्रारभ की तव तो क्या कहना ?

आप श्री जी ने सैद्धातिक विनय की विभूषा आत्मिक गुणो म सजोना प्रारभ किया कि विश्व के क्षितिज म विभुपित होकर चमकने लगे। आप श्रीजी ने गणेशाचार्य श्री जी की आज्ञा का गौतम गणधर के भाति पालन करत हुए चैतन्य की ज्योति को ज्योतिर्मय वना ली, जो त्रिलोक मे चमत्कारिक सिद्ध होने वाली है। इसम कोई अतिशयाक्ति नही है। सच्चे दिल से भगवान की आराधना करन वाला भक्त निसदेह भगवान बनता है। आप श्री जी ने वीर वचनो के कहे अनुसार जीवन जिया जैसा कि आचाराग सूत्र मे कहा है-

जाए सद्धाए निक्खन्तो, तमेव अणुपालिया विजहितु विसोत्तिय

आचार्य देव न अपने चमत्कारिक जीवन से जन जीवन को जीत लिया। मै इस महान् विभूति का क्या विनय गुण वर्णित कर सकती हू, इतना जरूर कह सकती हू कि पुण्य खजाने की विपुल राशि प्राप्त की।

आप श्री जी बचपन से सागर की उठती तरगों के समान उत्तुग विचारों के विचारशील महोदधि थे। आप श्री जी की प्राकृतिक प्रवृत्ति पर क्या कुछ कहा जाए ? आप श्री जी की सवदना सहानुभूति इतनी गजब की थी

कि आप श्री जी ने हरियाली सबधी सहार देखा तो विचारो मे इतने गहरे उतर गये कि हृदय की कारुण्य सरिता नयनो से बह पड़ी।

आप श्री जी ने उसी समय अपने वैराग्य को अतीव मजबूत बना लिया। आप श्री जी ने वीर वाणी 'अहिंसा तस थावर सव्व भूय खेमकारी को यथार्थता मे पाला और आप श्री जी आत्मोन्नति के आधारभूत सत्य के ऐसे अन्वेषी बने कि-

सच्च लोगम्मि सारभूय गम्भीग्र महासमुद्दाओ", आप श्री जी के विचारो की क्रातिकारी मथनी पद्दर्शनो के महासमुद्र मे अनवरत चलती रहती जिसकी बदौलत आप श्री जी ने समता दर्शन समीक्षण ध्यान की अद्भुत धरोहर प्रदान की है। जो विश्व शाति की, अमन चैन की शहनाइया बजाने वाली है।

समयज्ञ आप श्री जी समय की सत्यता को जानने वाल धीर, वीर गभीर, प्रज्ञाशील महापुरुष थे। आप श्री जी को समय निपुणता के कारण घड़ियाल की उपमा दी गई थी। घड़ियाल समय के बिना नही बोलता, वैसे ही आप श्री जी सुनना, समझना सब कुछ करते हुए भी बिना अवसर के नही बालते। अवसर आने पर भी फूलो की तरह कोमल मृदु वचन फरमाते कि प्राणी गद्गद् हा जाते। वाद प्रतिवाद करने वाले भी श्रद्धानत होकर लौटते। समय की सधी हुई साधना ही साधक को निजी लक्ष्य तक, मजिल तक पहुचाने मे फलीभूत होती है। जैसा कि कहा है-

'सत्व जग तु समयाणु पे ही, पियमप्पिय कस्स वि नो करेज्जा"

आचार्य देव ने समय की मौलिकता को आत्मसात् किया।

अप्रमत्त जो समय के विज्ञ होते हैं वो प्रमादी का उपशमन कर अप्रमादी जीवन जीते हैं। पूज्य प्रवर भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमत्त भावो मे रमण करने वाले महायोगी थे। भले ही आप श्री जी किसी अवस्था मे विराजमान रहते।

'से भिक्खु वा, भिक्खणी वा, सजय विरय पडिहय पावकम्मे दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा,' सतत् जागरूक आत्मार्थी थे। आचार्य देव की अप्रमत्त अध्यात्म साधना निरन्तर प्रगतिमान थी। आप श्री जी की परम पावन पवित्र-सेवा जब कभी सुअवसर मिलता उस समय यदि हम साध्विया कुछ लापरवाही या अन्य बाते करतीं ता आचार्य देव उस समय फरमाते कि सतिया जी समय व्यर्थ गवाना मुझे पसद नही है। साथ ही फरमाते कि भगवान ने क्या फरमाया कि 'समय गोयम मा पमायए' आचार्य भगवन् ने चरम तीर्थंकर ही नही अपितु अनन्त तीर्थंकरो की अप्रमत्त साधना को आत्मसात किया। आप श्री जी का बाह्य आभ्यन्तर जीवन अप्रमत्त भावो की अलौकिक तपस्या से अनुप्रणित था, जैसा कि नीतिकारों का कहना है-

"सम्पूर्ण कुम्भो न करोति शब्द, मर्धो घटो घोष मुपैति नूनम।
विद्वान कुलो न करोति गर्व, गुणोर्विहिना बहु जल्पयन्ति॥"

अतएव कैसी भी उचित अनुचित परिस्थितिया आईं पर समता शिरोमणि आचार्य देव सागर सम शात प्रशात, गभीर और अथाह बने रहे थे। कहा भी है कि-

'जहा से सयभू रमणे, उदही अक्खओ दए।
णाणा स्यणे पडिपुण्णे, एव हवई बहुस्सुए।'

आचार्य भगवन् ने इससे सहिष्णुता समन्वयता और अनुशासन प्रियता पाई। जिसका ज्वलत साक्षी है, गणेश शासन की अभिवृद्धि।

कुशल पराक्रमी परमाराध्य देव ऐसे कुशल पराक्रमी पुरुषार्थी थे जैसे कि रणवीर बाकुरे होते हैं। आप श्री जी ने साधना के क्षेत्र मे जब से प्रवेश पाया तब से चरमान्त साध्य की सिद्धि तक बढ़ते रहे, साधना की रण भूमि मे अनेकानेक सघर्षो का सामना करना पड़ा पर आप श्री जी के पुरुषार्थ के समक्ष सभी को काफूर होना पड़ा चूकि आप श्री जी ने 'आस च छद च विगि च धीरे इन सारे निस्सार तत्वो का परित्याग कर लोकोत्तर चेतना की निधि उजागर करने का ही कार्य किया। जैसे कि-

'सद्ध णगर किच्चा, तव सवर मगल ।
रवन्ति निऊण पागार, तिगुत्त दुप्प धसय ॥
धणु परक्कम किच्चा जीव च इरिय सया ।
घिई च केयण किच्चा, सच्चेण पलिमथए ॥
तव णाराय जुत्तेण, भित्तुण कम्म कचुय ।
मुणी विगय सगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥

आचार्य देव ने अपना पराक्रम नही छिपाया बल्कि अधिक सद्पराक्रम किया इसलिए मै यह स्पष्ट कह सकती हू कि आचार्य देव ने अपने गुरुदव व शासन की कोई अवज्ञा नही की न ही आशातना की । कोई-कोई अल्प बुद्धि मूढ़ कह देते हैं 'गुरुदेव की तो साठी बुद्धि नाठी' ऐसे कहने वालो मूर्खों को पता नही है कि यह लोकोक्ति किसको कही जाती है जो कर्महीन, च्यूत होते हैं । जिन्हे इस देव दुर्लभ जीवन का भान नही है । एसे गैर भला और क्या करेंगे । स्वय का जीवन थोथा ढ़ोल है, वे ऐसे लोकोत्तर परमोपकारी, कुशल पराक्रमी, पुरुषार्थी महान् गुरुदव की अवज्ञा आशातना करके ससार का अथाह सागर भटकने को पायेंगे । इसमे कोई सदेह नही है । आचार्य देव के कुशल पराक्रम और पुरुषार्थ का महान फल है ।

१ धर्मपाल जीवन ।
२ शिष्य शिष्याओ की अभिवृद्धि ।
३ त्यागी तपस्वियो की महकती फुलवारी ।
४ आध्यात्मिक सत्साहित्य का सर्जन ।
५ वृद्धावस्था मे जगत कल्याण के लिए पाद विहार ।

इनके विकास को आप श्री जी ने लक्ष्य के चरमान्त तक पहुचाने मे कोई कसर नही रखी, नही इस कठोरतम कदम की गति से विश्रान्ति ली किन्तु अनवरत रथ को आगे बढ़ाते चले । इसकी साक्षी सारी दुनिया का श्रद्धालुजन है ।

आचार्य देव ने इन सारे उन्नतिशील कार्यों के मार्ग मे आने वाली विघ्न बाधाओ को सयम से जीता । आप श्री जी ने दिग्-दिगन्त मे ऐसी यश ध्वजा लहराई है जो सदैव अविचल रूप स लहराती रहेगी ।

आप श्री जी असाधारण पराक्रमी पुरुषार्थी थे ।

प्रेषक निर्मला लोढा

समता शिवधन विधायी

कविरत्न श्री वीरेन्द्र मुनिजी म

समतामय शिवधन विधायी
तुम्हे ही हम याद करें।
श्री संघ के प्रचेता सुखदायी,
तुम्हे ही हम याद करे ।

शृंगार नंदन, भव भय भंजन,
सौम्य सुधा रस के दिव्य स्पन्दन
थे आत्म गुणो के संपायी ॥१॥

दिशा विहीन को दिशा दिखाई
निल प्रति समता सरित् बहाई
दिये संघ मे राम गुणदायी ॥२॥

महिमावन्त गुण रूप उजागर
हुक्म क्षितिज क भव्य विभाकर,
किए धर्मपाल संघमायी ॥३॥

कीर्तिमन्त श्री संघ को संवारे
भक्ति हृदय भव सिन्धु उबारे
नित अभिनव कलि विकसाई ॥४॥

जहां कहीं हो ध्यान लगाना
शिव सुषमामय देय बनाना
देना दृष्टि परम बरसाई ॥५॥

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

बहुरत्ना वसुधरा की उक्ति के अनुसार इस पुण्यश्लोका भारत की उर्वरा भू धरा पर अनेक महापुरुषो ने जन्म लिया। उन्ही मे से एक महापुरुष हुए हैं, अनत श्रद्धा के केन्द्र स्व पू गुरुदेव आचार्य श्री नानेश। उस अलौकिक अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी के अनत अविराम जीवनवृत्त को शब्दो मे बाधना सभव नही है। फिर भी भक्ति मे शक्ति को नही देखा, तोला जाता है। "स्त्रोतम् समुद्यत मतिर्विगतत्रपोऽहम' इस बात को स्मरण कर मेरी आस्था के आलम्बन पूज्य गुरुदेव के ३९ वर्षों के आचार्यत्वकाल को लक्ष्य मे रखकर उनके जीवन की सहस्त्र रश्मियो मे से कतिपय रश्मियो का यथामति यथाशक्ति स्पर्श करने का प्रयत्न कर रही हू।

(१) कीर्ति निकुज - विश्व विश्रुत महान् चारित्रनिष्ठ पू गुरुदेव की कीर्तिलता अटक से कटक, काश्मीर से कन्याकुमारी, आसाम से तमिलनाडु तक ही नही अमेरिका बैंकाक जैसे सुदुर पाश्चात्य देशो मे भी फैली है।

(२) पुण्यश्लोक - पूज्य गुरुदेव के सयमी तेज का प्रभाव जैन जैनेतर समाज पर फैला हुआ है। आप श्री जी के भक्त ही नही अन्य सम्प्रदायो मे भी आप श्री जी के तेज का लोहा माना जाता है। स्वय मेरे समक्ष पाली के एक सुश्रावक स्व अमरचन्द जी सा लोढ़ा ने कई बार कहा कि इस युग मे जितने भी आचार्य उपाध्याय, प्रवर्तक या प्रभावी सन्त मनीषी हैं, उन सबमे यह तो मानना पड़ेगा कि आपके गुरुदेव (आ श्री नानेश) की पुण्यवाणी जबरदस्त है।

(३) जिनशासन प्रद्योतक - १०० से ऊपर मुमुक्षुओ को दीक्षा देने वाला साधक जिन शासन प्रद्योतक कहलाता है। आप श्री जी ने अपने आचार्यत्वकाल मे ३०० दीक्षाए (जहा तक मुझे स्मरण है) दी है।

(४) अध्यात्म निनाद के धारक -आप श्रीजी के जीवन मे हर समय अध्यात्म निनाद अनुगुजित होता था। सयम मे जरा सा भी प्रमाद या शिथिलता आप श्री जी को असह्य थी। समिति गुप्ति व महाव्रतो का स्वय सजगता से पालन करते एव शिष्य परिकर से भी करवाते थे। राणावास चातुर्मास से पूर्व रचित अध्यात्म नवसूत्री' आप श्री जी के चिन्तन की मौलिक देन है। उसके एक एक सूत्र पर कई दिनो तक विवेचन प्रवचन किया जा सकता है।

(५) समाधि सदन - जिनके सानिध्य मे बैठने से चतुर्विध सघ ही क्या बच्चे बड़े जैन जैनेत्तर हर भक्त को अनुपम आनन्द की अनुभूति होती थी, जिनकी आखे अध्यात्म का अनुकम्पा का अमृत बरसाती थी, जिसे प्राप्त कर दर्शक धन्य धन्य हा जाता था।

(६) परमागम पारीण - पू गुरुदेव वाग्मी श्रेष्ठ आगम के गूढ़ विवेचक, जैन एव जैनेतर दर्शन के गहन अध्येता थे। आप श्री जी की प्रखर प्रतिभा किवा पैनी दृष्टि ग्रन्थो की शब्दमयी पर्तों को चीरकर अर्थ की गहराई तक पैठ जाती थी। सन १९६३ के लगभग की घटना है, धार जिला काग्रेस कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष वकील श्री सिद्धनाथ जी उपाध्याय जो वैदिक दर्शन के अधिकृत विद्वान थे, उनसे ईश्वर सृष्टि कृर्तत्व एव जैन धर्म के नास्तिकत्व विषय पर खुलकर चर्चा हुई। आप श्री जी के गहन चिन्तन ने उन्हे सम्यक् अर्थ का नवनीत दिया। जैन धर्म के सबध मे उनकी शकाए निर्मूल हुईं।

(७) अमित तेजपुज - पू गुरुदेव क साधना दीप्त अमित प्रभाव व लय को देखना साधारण लोगो के वलबूते के बाहर था, कई भक्तो से ऐसा सुना और ब्यावर मे सन् १९९७ के प्रवास मे १७ से २० अगस्त के बीच प्रवचन सभा मे लेखिका ने स्वय अनुभव भी किया व समीपस्थ सतियो को भी इगित कर बताया ।

(८) अमित मेघा के धनी - विद्यार्थी जीवन के कई दशक बीत जाने पर भी आप श्री जी की मेघा शक्ति इतनी जबरदस्त थी कि व्याकरण के कई सूत्र व्युतपत्तिया एव स्याद्वाद से सबधित दुरूह ग्रन्थो की कारिकाए धड़ाधड़ सुना देते थे । बोरीवली प्रवास मे स्याद्वाद मजरी की पाचवी कारिका भगवती सूत्र की वाचनी के प्रसग पर श्रीमुख से सुनकर सभी महासतियाजी आश्चर्यचकित हो गई थीं ।

(९) तत्व निष्णात - जिनागम तत्वो का सार निकालने मे आप श्री जी बड़े निष्णात थ । एक बार किसी विद्वान एव आप श्री जी क शिष्यो मे सम्यक्त्व के मबध मे उलझी गुत्थी को सुलझाते हुए आप श्री जी ने चौथे गुण स्थान की क्षायिक सम्यत्व नवनीत के समान है और १३वे गुण-स्थान की क्षायिक सम्यक्त्व तपे हुए घृत के समान है, समाधान दिया ऐसे कई उदाहरण हैं ।

(१०) शिव सुख-आलय - जो भी आप श्री जी का श्रद्धान्वित हो पुण्य दर्शन पा लेता, वह अपने जीवन म अनुपमेय सुख एव शाति की अनुभूति करता था । वह बारबार आप श्री जी के दर्शन पान को लालायित रहता था ।

(११) गुण के निधान - अनुशासन प्रियता, मोहक मृदुता कमनीय कोमलता, सौम्य शीतलता परम पौरुपता, सयम की धवलता सकल्प में कर्मठता, कठोर क्रिया पात्रता, हृदय की सहृदयता, दृष्टि मे विशालता, व्यवहार म कुशलता, विनीतता सागर सी गभीरता, मेरू पर्वत सी अडोलता, सूर्य सी तजस्विता, वाणी मे ओजस्विता, आदि सद्गुण सुमन आप श्री जी पर न्यौछावर हो अपने को कृतकृत्य मानते थे ।

(१२) महिमा मकरन्द - जिनका महिमा मकरन्द चतुर्दिक प्रसृत है, हम भी उसी से गौरवान्वित है । कैसे ? कभी अपरिचित सज्जनो द्वारा पूछा जाता- आप किनकी शिष्या है ? जब हमारे मुख से आप श्री जी का नाम उच्चरित होता श्रोता प्रश्नकर्ता श्रद्धावनत हो जाते और कहते ओ हो कितने महान् आचार्य हैं वे ।

(१३) क्षमा-क्षान्त - यौवन की दहलीज पर पहुचने से पूर्व ही आप श्री जी ने क्रोध पर इतना काबू पा लिया था कि चतुर्विध सघ के सदस्यो या अन्यो के द्वारा कई बार क्रोध के प्रसग उपस्थित होने पर भी और शासन व्यवस्था की इतनी जिम्मेवारी होते हुए भी आप श्री जी के चेहरे पर क्रोध की शिकन तक नही आती थी ।

(१४) कुशल शासक - इन सबके बावजूद उह सयम मे शिथिलता, जरा सा भी प्रमाद असह्य था । उभयकाल प्रतिक्रमण और वन्दना विधि मे या दैनिक चर्या मे जरा सा भी ऊचा-नीचा होता तो आप श्री जी सबधित व्यक्ति को आगाह करते, प्रायश्चित देते अन्यथा उस दिन पोरुषी (३ घटे के लिए अन्न जल का त्याग) कर लेते ।

(१५) परम इन्द्रिय जयी - कई बार आहार, वितरित करने वाले सती को ध्यान नही रहता, दूध फीका ही पी लेते, ख्याल आने पर पूछा जाता तो बस यही उत्तर मिलता- मेरा ध्यान दूध पीने मे था, फीके मीठे के उपयोग मे नही । कई बार फीका मीठा कड़वा जो भी इन्द्रिय के प्रतिकूल आता स्वय उदरस्थ कर लेते।

(१६) करुणा कुज- पूज्य गुरुदेव की शिष्यो भक्तो पर दया ता स्वाभाविक थी पर प्राणि मात्र पर अनुकम्पा का अजस्र स्रोत आप श्री के दिल मे बहता रहता था । मुनि अवस्था मे एक बार एक बकरे को बचाने का करुणामय प्रसग आप श्री जी के श्रीमुख से श्रवण करने का मिला ।

(१७) स्वस्थ परपरा के सपोषक - आधुनिक भौतिकता की चकाचौध म बहने वाले साधको एव श्रावको मे श्रमण सस्कृति की स्वस्थ परपरा के सपोषण म आप अद्वितीय थे । आधुनिक बुद्धिजीविया एव समाज

मे सयमीय नियमो मे शिथिलता रखने वालो से आपने कभी समझौता नही किया । कोई न कोई उचित मार्ग आप अपनी प्रखर प्रतिभा से निकाल लेते । उदाहरण है- घाटकोपर वर्षावास मे सवत्सरी महापर्व पर विशाल जनसमुदाय को प्रवचन सुनाने हेतु आप श्री जी ने अपने सत सतियों से व स्वय छह जगह प्रवचन करवाये ।

(१८) वाचोयुक्ति पटु - सादड़ी सम्मेलन मे श्रमण सघ के तत्कालीन प्रधानमत्री पद पर रहे हुए स्व आ श्री आनन्द ऋषिजी म सा के शब्दो मे "मुनि श्री नानालाल जी म मे वाणी सयम इतना जबरदस्त है कि ये कही पर भी भाषा की दृष्टि से पकड़ाते नही है ।"

(१९) कमनीय कलाकार - विशाल साधुमार्गी सघ मे अनेक प्रवचन पटु, विद्वान, साहित्यकार, कवि, उग्र तपस्वी, विश्रुत सथारे के धारक, कठोर क्रियापात्र श्रमण श्रमणी एव श्रावक गण मे भी कई सद्धर्म प्रचारक, स्वाध्यायी ध्यानी, तपस्वी विद्वान सेवाभावी आदि बनकर सामने आए उन सबका श्रेय पू गुरुदेव श्री जी की कमनीय कला को है ।

(२०) धर्म ध्वज - वैसे तो लक्षाधिक कि मी पाव पैदल विहार कर आप श्री जी ने सद्धर्म की अतुल प्रभावना की किन्तु छत्तीसगढ जैसे दुर्गम क्षेत्र के उड़ीसा जैसे विकट क्षेत्र मे आर्य सदश फैलाने का सर्वप्रथम श्रेय पू गुरुदेव को ही है ।

(२१) समता सागर - कई बार कोई दीक्षार्थी परिवार मोहवश कुछ कह देते अथवा सामाजिक धार्मिक प्रसगो पर कोई आवेश दिलाते, तर्क-कुतर्क करते अथवा साधको मे भी कभी वैचारिक मतभेदता होती ऐसे मे आवेश आना सहज है पर आप श्री जी वहा भी समता सागर ही बने रहते । बोरीवली (बम्बई) चातुर्मास मे एक बार श्री शातिमुनि म सा ने प्रवचन में अपना अनुभव बताया कि कल रात्रि मे गर्मागर्मी का वातावरण था हम विचार था आज पू गुरुदेव को पूरी रात नीद नही आयेगी पर यह क्या ? उसी समय उसी स्थान पर आ श्री ने अपना शयनोपकरण (बिस्तर) मगवाया १०-१५ मिनट मे तो गहरी नीद सो गए ।

(२२) अपूर्व अध्ययनशील - नवदीक्षित विद्यार्थी अवस्था मे आप श्री जी का नियम था जो ज्ञान (पाठ) आज सीखा उसे आज ही ग्यारह बार दोहराकर फिर क्रमश दस दिन उस एक-एक बार दोहराना । इस प्रकार अपूर्व लगन एव श्रम स आप श्री जी न श्रुताभ्यास में ठोसता पाई । हितोपदेश मे वर्णित- ' काकचेष्टा बकोध्यान, श्वान निद्रा तथैव च । अल्पहारी गृहत्यागी विद्यार्थीन् पच लक्षणम् । ' श्लोक को अक्षरश जिया है। अभी भी समय मिलने पर एकाग्रता से अध्ययन करते कई बार पू गुरुदेव को देखा गया है ।

(२३) चिन्मय चिराग - आप श्रीजी की अनेकानेक साहित्यिक कृतियो मे 'समता दर्शन और व्यवहार'' तथा समीक्षण ध्यान विधि विधान' मात्र इन दो कृतियो का ही आद्योपान्त वाचन, मनन और आचरण करे तो व्यक्ति से विश्व तक इस शाति सरोवर मे अवगाहन कर तनाव मुक्त होकर मानसिक शाति से सराबोर हो सकता है । ये रोशनी के मीनार सदियो तक चिराग का काम करने वाले है ।

(२४) अवान्धिपोत - उदयरामसर निवासी श्री नयमलजी सिपानी व्यावसायिक दृष्टि से आसाम रहते थे । एक बार बाढ पीड़ितो की सहायतार्थ खाद्य सामग्री जलपोत मे भरकर बराकी नदी से जा रहे थे कि नाव पलट गई । गुरुनाम का स्मरण करते ही भारी भरकम शरीर आटे की बोरी के सहारे तैर गया । गुरु कृपा से नाव से बच गए पुन गुरु चरणो मे १६ की तपस्या की । यह तो द्रव्य जल से तिराना हुआ पर भाव नैय्या भी आप श्री जी ने कइयो की तैराई । लगभग ३०० (२९७) मुमुक्षु, लक्षाधिक धर्मपाल एव अनगिनत श्रावक श्राविकाओ को भवाब्धि तिराने मे आप श्री जी सचमुच पोत सदृश ही थे ।

(२५) युग प्रहरी - सुना गया है आत्मनिष्ठ स्व श्री आत्माराम जी म सा के स्वर्गारोहण के बाद सम्पूर्ण स्थानकवासी सम्प्रदाय को नेतृत्व दन वाले एक मात्र आचार्य समता विभूति पूज्य गुरुदेव श्री नानेश थे । उसके लगभग १३ महीने बाद अजमेर मे स्व आ श्री आनन्द ऋषिजी म सा को आचार्य पद दिया गया । सामायिक

स्वाध्याय सदेशक पू श्री हस्तीमल म सा भी तब उपाध्याय पद पर थे ।

(२६) चक्खुदयाण - नाखामण्डी पावस प्रवास (सन् १९९६) म स्व श्री खीमराज जी लुणावत की धर्मपत्नी ८५ वर्षीय पन्नी बाई एव (सन् १९९४ में) ब्यावर निवासी श्री नोरतनमल जी छल्लाणी की अग्रजा श्रीमती कचन बाई को आप श्री जी की पुनीत कृपा स नेत्र ज्योति प्राप्त हुई और ज्ञानाजन शलाका से तो आप श्री जी ने कइयो के भावनेत्र उद्घाटित किये ।

(२७) पारस-पुरुष - जो भी भव्य आत्मा लाह पिण्ड क रूप मे आप श्री जी के सम्मुख आता आप श्री जी उसे स्वर्ण ही नही वरन् अपने सदृश पारस बनाने में पुरजोर यत्नशील रहे है ।

(२८) ऊर्जा केतु - आप श्री जी के विशुद्ध सयमीय प्रभाव से आप श्री जी के चरणरज की उर्ज्जस्वित ऊर्जा से कई भक्तो ने अकल्पय लाभ उठाया व उठा रहे हैं ।

(२९) मुक्ति मदिर - जिनकी अपूर्व कृपा से एव नाम स्मरण से २०वर्षीय गलित कुष्ठ तथा कैसर जैसे अनेक भयकर रोगो से ग्रस्त भक्तो को मुक्ति मिली । रत्नत्रय का प्रसाद वितरण कर आप श्री जी ने अनेक का भावमुक्ति की तरफ प्रोत्साहित किया है ।

(३०) विश्व बधु - हिण्डौन (अलवर)मे हरिजन को चरण स्पर्श की स्वीकृति देना तथा अछूत कहलाने वाली बलाई जाति को जैनत्व प्रदान करना आप श्री जी के विश्व बधुत्व का बोधित करता है ।

(३१) दूरदर्शी - आसन्न घटित होने वाली या दूर भविष्य मे होने वाली कई घटनाए आप श्री जी पहले ही फरमा देते जो कि प्राय अक्षरश घटित होती थी । किसी बात का निर्णय भी आप श्री जी काफी चिन्तन-मनन पूर्वक लते थे । अत आप श्री जी के निर्णय कसौटी पर शत-प्रतिशत खरे उतरते थे ।

(३२) अवधिज्ञानी - ऐसी कइ अदृश्य,अद्भुत घटित घटनाओ का हुबहू श्रीमुख स वर्णन सुनकर नोखामण्डी प्रवास मे मेर द्वारा तथा श्री भवरलाल जी सा कोठारी (बीकानेर) के अत्याग्रह पूर्वक पूछने पर आप श्री जी ने प्रकारान्तर म फरमाया- अवधिज्ञान की अल्प पर्याया का निषेध नही है ।

(३३) वरवर्चस्वी - पू गुरुदेव का वर्चस्व सिर्फ साधुमार्गी सघ पर ही नही किन्तु सपूर्ण जैन व जैनेतर समाज में छाया हुआ था चाहे कोई कहे या न कहे किन्तु वर्चस्व का लोहा सभी मानते थे ।

(३४) विचक्षण वाग्मी - शुरू से ही आप श्री जी की अल्पभाषिता व वचन सयम को देखकर बड़े सत आप श्री जी क लिए फरमाते थे- तुम्हारा बोलना घटाघर की घड़ी के समान है जो सभी ध्यान से सुनते हैं और हमारा मदिर की झालर के समान है ।

(३५) आस्था-आलम्बन - आप श्री जी पर आस्था रखकर अनेक ने मनवाछित सिद्धि पायी व पा रहे हैं । आप श्री जी का नाम ही जिनके लिए मत्र का काम करता था ।

(३६) विरल विभूति - हरिभद्रचार्य के शब्दो मे- 'वपुरैव तव आचष्टे,भगवान वीतरागतामान ही कोटर-सस्येऽग्नी, तरुर्भवति शाद्वल । जिनकी भव्याकृति ही वीतरागता को प्रकट कर रही है, ऐसी वह विरल विभूति है ।

(३७) कुशल जीवन शिल्पी - शिष्या को गलती का अहसास व सुधार कराने मे आप श्री जी विचक्षण थे । वात्सल्य के बहाने उनके कान का एक्यूप्रेशर करते सामने वाले से अपनी गलती स्वय कबूल करवाकर मनोवैज्ञानिक ढग से उसक जीवन का निर्माण करने मे आप श्री जी बहुत ही कुशल थ ।

(३८) अद्भुत अन्तेवासी - इन सबके मूल म आप श्री जी की अनन्य गुरु भक्ति का प्रसाद है । गुरु के स्वास्थ्य के लिए कई रातें खड़े-खड़े बीताना आप श्रीजी जैसे विनयवान अन्तेवासी की गुरुभक्ति के अनुरूप ही है । मेरे हृदय मदिर म प्रतिष्ठापित एसे परोपकारी जतन से प्रमोद बनाने वाले आचार्य श्री नानश की प्रतिपल भाव अर्चा करती हू, यावत मुक्ति प्राप्त करने तक भव भव मे आप श्री जी का सुखद शरण मिले । इसी मगल मनीषा के साथ

प्रेषक कपूर कोठारी

अपरिमित गुणो के स्वामी

अपरिमित गुणो के स्वामी गुरुवर,
तुम्हे भूल हम नही पायेगे ।
तेरी सद् शिक्षाओ से ही गुरुवर,
जीवन सत्व को हम पायेगे ॥

स्थानाग सूत्र के चौथे ठाणे मे चार प्रकार के पुष्प बताये गये है-

1 एक पुष्प रूपवान है किन्तु सुगध नही होती है, जैसे रोहेड़ा का पुष्प ।
2 एक पुष्प रूपवान तो नही होता किन्तु सुगध युक्त होता है, जैसे मोरसली का पुष्प ।
3 एक पुष्प रूपवान भी होता है व सुगधवान भी होता है, जैसे गुलाब का पुष्प ।
4 एक पुष्प रूपवान भी नही होता है व सुगधवान भी नही होता है, जैसे धतुरे का पुष्प ।

आचार्य भगवन् का जीवन खिलते गुलाब के फूल की तरह स था । उनका बाहरी व्यक्तित्व भी बड़ा आकर्षक था तो आतरिक तेजस्विता भी महान् साधना की सुवास से आपूरित थी ।

पुष्पवत खिलता था, जिनका जीवन,
हर क्षण हर पल लगते थे सबको मनभावन ।
जब भी आते तेरे द्वार पे गुरुवर नाना,
कृपा पूरित बरसता था तव घन सावन ॥

आचार्य भगवन् - जैसा समता का उपदेश फरमाते थे । वैसा ही उनका आचरण भी समता से ओतप्रोत था । जीवन का कण-कण समता की सुगध से आप्लावित था ।

मुझे मेरे सयमी जीवन के पच्चीस वर्षों मे आचार्य के सानिध्य मे चार चातुर्मास करने का सुअवसर प्राप्त हुआ । चातुर्मास के अलावा भी कई बार दर्शन, सेवा प्रवचन, श्रवण व प्रश्न पृच्छा आदि का अलभ्य लाभ प्राप्त होता रहा । उन सभी प्राप्त अवसरो के साथ मे आचार्य श्री को सदा-सदा समता के अनुरूप ही पाया ।

गुलाब के फूल को कोई देखे या न देखे व हर क्षण अपनी मधुर पराग बिखेरता ही रहता है । जगल मे खिल रहा है तो भी सर्वताभावेन अवस्था के साथ खिलता रहता है और नगर के मध्य मे भी खिलता हुआ अपनी मधुर सुवास बिखेरता रहता है । उसी प्रकार आचार्य भगवन् को जब भी देखा, जहाँ भी देखा, पब्लिक के मध्य देखा या एकात मे देखा, गरीब के साथ बात करते देखा, हर स्थान पर समता के आसन पर विराजकर समतामय मृदुभाषा की सुवास को बिखेरते ही देखा । आपश्री के चरणो मे जो भी दर्शनार्थी पहुचता वह भी आप श्री के रोम रोम से अनवरत निसृत समता की परिमल से आप्लावित हुए बिना नही रहता ।

जो भी आता तव चरणो मे सच्ची शाति पाता था । भावनगर सौराष्ट्र मे जब आप श्री का चातुर्मास था उस समय बरवाला सप्रदाय के आचार्य श्री सरदारमुनिजी म सा भी अपने गुरु आचार्य श्री चपकलालजी म सा के साथ

मुनि अवस्था म विराजमान थे । चातुर्मास के अत मे कार्तिक सुदी पूर्णिमा को धर्मसभा मे उपस्थित जन समुदाय क समक्ष सरदार मुनिजी म सा ने फरमाया कि 'मै बड़े बड़े सत महापुरुषो क सानिध्य मे गया । समता का उपदेश देने वाले तो बहुत हो सकत है किन्तु कथनी करणी की एकता जैसी मैने आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म सा मे देखी है वैसी और कहीं देखने को नहीं मिली । आचार्य भगवन् समता की जीवन्त प्रतिमूर्ति हैं । ये समता का जैसा उपदेश फरमाते है वैसा ही इनका जीवन भी है ।

ऐसे थे समता विभूति आचार्य श्री नानेश । आचार्य भगवन् ज्ञान के सहस्त्र रश्मि सूर्य थे । सूर्य का प्रकाश तो फिर भी बादलो स आच्छादित हो जाता है किन्तु आचार्य भगवन् के ज्ञान रूपी सूर्य की रश्मिया सदा सदा अनावृत ही रहती थीं । जब कभी किसी भी समय ज्ञान पिपासु श्री चरणो मे पहुँचकर आपश्री के मुखारबिद से निर्झरित ज्ञान रस का आस्वादन कर सकता था । आप श्री के सानिध्य मे पहुँचने वाले का अज्ञान अधकार दूर हुए बिना नही रह सकता था । आपश्री की सत् सनिधि मे नवीन विषयो का निरतर परिज्ञान प्राप्त होता था ।

एक पिता अपनी दो सतानो को बराबर नही सभाल पाता । वहाँ पर आचार्य श्री अपने साढे तीन सौ शिष्य- शिष्याओ के शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक उन्नयन का पूर-पूरा ख्याल रखते थे । शिष्य-शिष्याएँ भी हर पल आचार्य भगवन् की आज्ञा की राह देखते रहते । जैसी आज्ञा आयेगी वैसा ही हमे करना है । यह सब कुछ पुण्यवानी के बिना नही हो सकता ।

दिल्ली महानगर मे रोहिणी सेक्टर-3 के चातुर्मास मे कार्तिक सुदी पूनम को प्रवचन सभा मे रोहिणी सघ के भूतपूर्व मत्री श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन ने कहा था कि मै 'अष्टाचार्य गौरव गगा नामक पुस्तक को पढ़कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ । मै यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि यदि किसी को मत्र की आवश्यकता है तो ओ ही श्री हु शि उ चौ श्री ज ग नाना नम , इस मत्र को जपें । यह सर्व सिद्धि साधक मत्र है । इसे जो भी जपेगा वह हर तरह से फलीभूत हुए बिना नही रहेगा ।'

सोनीपत सघ- हरियाणा के तात्कालीन मत्रीजी ने प्रवचन सभा के मध्य कहा कि आचार्य श्री नानालालजी म सा जिनकी सयम की धाक पूरे भारतवर्ष मे है उनके आज्ञानुवर्तिनी महासतियाँ जी म सा पधारे हुए हैं, इनके दर्शन व प्रवचन मागलिक श्रवण मात्र से ही मालामाल हो जावोगे ।' इस प्रकार देश के कोने-कोने तक आचार्य के जीवन की गुणमय सुवास विकीर्ण थी ।

आपश्री भवजलधि मे भटक रहे जीवा के लिये प्रकाश स्तभ के रूप मे थे । लाखो भक्तो ने आपश्री से ज्ञान-प्रकाश पाया है । लाखो मानव, अपथ, कुपथ विपथ स सुपथ की आर अग्रसर हुए हैं । यह था आचार्य भगवन् का गुलाब के फूलो से भी बढ़कर प्रेरणादायक व्यक्तित्व ।

आचार्य भगवन् मे रहे हुए अनेकानेक गुणो का लेखनी के माध्यम से लिपिबद्ध करना असभव है ।

विशद विज्ञान भरा था तेरा जीवन ।
मिलता सभी को सदा सुख सजीवन ।
अकुलाए प्राण आज भी खोज रहे,
कैसे पाये गुरु नाना का दर्शन ॥

सतत् जागरूक रह जीवन की साध्य वेला तक । अप्रमत्त साधना मे रमण करते रह जिन्दगी क अतिम दम तक तेरी साधना का हृदय स हम नत मस्तक है ।

विश्व वद्य श्रद्धेय गुरुदेव

एक दिन मेरे मन के मालिक, महतो महीयान, मन मदिर के देवता आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ निकली स्थानक से निकलते ही-जमीन की पवित्र धूली ने पूछा अरे भैया किधर जा रही हो, मैंने कहा गुरुदेव के दर्शनार्थ। (धूल बोली) अरे भैया मुझे भी साथ ले चल। क्यो बहिन ? इन्हे तू कैसे पहचानती है। अरे ! उनको कौन नही जानता? उनका तो मेरे पर अनन्त उपकार है। देख, दुनिया के लोग, मुझे पैरो से ही क्या जूते चप्पलो से दबाते थे पर ज्यो ही गुरुदेव ने मुझे अपन पावन चरणो से स्पर्श किया त्यो ही भक्तो ने मुझे हाथो से उठाकर मस्तक पर लगा लिया।

हा मस्तक पर तो चढ़ाया ही, किन्तु हर दुख दर्द मे मेरा उपयोग लेकर अपने को स्वस्थ एव प्रसन चित्त बना लिया। उन्होंने मेरे जीवन मे आई निराशा, को आशा के रूप मे परिवर्तित कर दिया। मेरे बिगड़े भाग्य बन गये यानी मेरा मूल्य दवाई, मन्त्र-तन्त्र आदि से भी अधिक बढ़ गया है। अब लोग मुझे बड़े सम्मान से चरणरज कह कर पुकारते है। असलियत मे मै पूज्य गुरुदेव क चरण स्पर्श कर धन्य हो गई।

अब तू मुझे वही ले चल जहा मेरे गुरुदेव विराजते हैं। मन ने कहा, चल ! अपने एक से दो हुए, अब ज्योंहि थोड़ा आगे बढ़ा मुझे एक ग्रामीण युवक ने पुकारा। भैया किधर जा रहे हो ? मैंने अपनी बात दोहराई।

उसने कहा अरे भाई, उनके पास तो मुझे भी चलना है मैंने कहा क्यो भाई तू उन्हे जानता है ? हा, मै उन नाना गुरु भगवन् को अच्छी तरह जानता हू। वे एक बार हमारे गाव में पधारे। हमने, उनको पहचाना नही और हसने लग गये, पर कमाल है, उन्होंने हमारे ऊपर गुस्सा नही किया और हमें समझाया, हमारे बच्चो को समझाया। उनके समझाने का हमारे ऊपर ऐसा पभाव हुआ कि हमने तम्बाकू बीड़ी सिगरेट, जर्दा शराब आदि सभी नशीली चीजो का छोड़ दिया। वे हमारी बहुत सारी बीमारियो और कुरीतियो को नष्ट कर गये।

पहल हमारे बहुत सारे पैसे नशीली चीजो और बीमारियो मे खत्म हो जाते थे। अब हम उनके पुण्य प्रताप से खुश रहते और भगवन् का नाम लेते है। उन्होंने हमे अच्छ इन्सान बन कर जीना सिखाया है, भैया मैं भी तेरे साथ चलता हू।

मैंने कहा, भैया चलो। अपन दो से तीन भले। अब मै थोड़ा और आगे बढ़ा तो एक बलाई जाति के व्यक्ति धर्मपाल ने पुकारा- मैंने वही उत्तर दिया मै नाना गुरु क दर्शन करने जा रहा हू उसने भी साथ चलने का आग्रह किया, मेरे पूछने पर उसने भी अपना वृत्त कह सुनाया। अरे मन, वह तो हमारे देवता हैं, भगवान हैं और क्या बताऊं वे हमारे सब कुछ है- उन्होने हमे अधर्मी स धर्मी, नीच कर्मी से उच्च कर्मी बनाया है। मानो पाप तो भाग ही गये इनके दर्शन के बाद हमारे पास केवल धर्म ही धर्म रह गया है। मैंने कहा भैया बताओ तो सही आखिर तुम्हारे पर गुरुदेव का क्या उपकार है ? वह बोला सुनो- उनकी धर्मकथा इतनी प्रभावशाली है कि उनके एक ही उपदेश ने हम हजारो लोगो को जुआ खेलना, शिकार खेलना, मास खाना, शराब पीना, अण्डा खाना आदि सातो ही व्यसनो को छुड़वा दिए उनके उपदेश से पहले हम रात दिन गाजा, भाग चरस आदि का सेवन कर दिन रात घूमते थे, हमारे पास शाति नाम की कोई चीज नही थी, हमारा जीवन दुखो का घर बना हुआ था। पर क्या बताऊँ जैसे गरम गरम मन भर तेल में एक बावने चन्दन की बूद डालने पर तेल ठण्डा हो जाता है। वैसे ही इस महापुरुष ने एक

ही उपदेश से हमारा जीवन बदल दिया।

उन्होंने हम पापो से छुड़ाकर ही नही छोड़ दिया अपितु हमे तो धर्म से जोड़कर धर्मपाल बना दिया। आज हमारी सख्या लाखो में है। अहो, उनकी महिमा से आज हम धर्मी, धनी, सम्मानित श्रेष्ठ और श्रीमत बन गये हैं, मै भी उनके पास चलूगा और वही पर रहूगा। मैं तो सुनते सुनते दग रह गया। बोला भाई चलो तुम भी चलो अब अपने तीन से चार हुए। मै तनिक सा आग बढ़ा- तो एक पढ़ा लिखा विद्वान युवक मिला उसने भी पूछा अहो, मन राजा आज किधर जा रहे हो ? मैंने कहा मै धर्म की कमाई करने आचार्य श्री जी के चरणो म जा रहा हू। अहो- उन पूज्य गुरुदेव के श्री चरणो मे तो मुझे भी चलना है। मैंन मुस्करा कर कहा क्यो भई ?

उसने उत्तर दिया अरे भाई उनके उपदेश ने अनेक श्रीमतो की आख खोल दी। स्थान-स्थान पर छात्रावास की व्यवस्था हुई। देखो मे एकदम गरीब पिता का पुत्र हू, मेरी पढ़ने की बहुत इच्छा थी सो मे छात्रावास मे दाखिल हो गया वहा मैंने भौतिक ही क्या, आध्यात्मिक अध्ययन भी किया और कमाने, खाने के योग्य बन गया अब मै गृहस्थावस्था मे भी विवेक पूर्वक कार्य करके व्यसन रहित सात्विक जीवन जीता हू, पाप कर्मो स बचकर चलता हू, ऐसे म मैंने एक ही क्या, मरे अनेक साथियो ने जीवन सुधारा है। उनको धर्म भी मिला है और धधा भी।

धन्य हैं ऐसे आचार्य श्री नानेश जिनकी निर्दोष आगम व्याख्या ने अनेक को जीवन दान दिया है। मैंने कहा चलो अपने पाच की सख्या को प्राप्त हो गए। अब मै आगे बढ़ ही रहा था, उसी समय एक रागमुक्त- युवक से मुलाकात हो गई, उसने भी उसी तरह से अपनी बात दोहराई। अरे मन राजा देखो इन आचार्य देव की गरिमा की क्या बात कहू, मै गरीब और अनाथ था। मुझे भयकर टी बी की बीमारी ने घेर लिया। मरे पास इलाज कराने का कोई साधन नही था। ऐसे समय म मुझे समता चिकित्सा सस्थान जयपुर से भरपूर सहायता मिली, मै अब पूर्ण स्वस्थ हो गया हू। यह इन परम पूज्य आचार्य देव की ही कृपा फल का है। जो मुझे जैसे या मरे जैस अनेक का जीवन काल के मुह में जाकर भी लौट आता है मेरी बहुत समय से प्रबल इच्छा है कि मै भी उनके चरणो मे रहू।

मैंने कहा अच्छा यह तो बहुत खुशी की बात है हम पाच से छ हुए।

आगे कदम बढ़ाया एक नगर मे प्रवेश करते ही एक नागरिक ने हमे पूछा आप सब कहा जा रहे है ? मैंन कहा आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ।

बस इतना सुनना था कि वह हर्ष से उछल पड़ा। अरे वहा तो मै भी चलूगा। जब गुरुदेव हमारे नगर मे आये थे तब उन्होने मुझे समझाया। मेरे अनेक उलझे हुए प्रश्नो को सुलझाया। मै भौतिक चकाचौध में आत्मा को भूल ही गया था पर गुरुदेव तो ऐसे लोकातर महापुरुष हैं जिनके दर्शन मात्र से ही हमारा मन धर्म की ओर आकर्षित हो गया। सच मैंने देखा है वे दो-दो तीन-तीन घटे लगातार हमारे एक के बाद एक प्रश्नो को हल करते थे पर उनके चेहरे पर न कोई शिकन थी, न कोई परेशानी और न कोई उकताहट वास्तव म अपूर्व ज्योतिपुज उन गुरुदेव से प्रभावित होकर हम बहुत सार लोगो न सप्त कुव्यसन के त्याग किये ही साथ म गुटखा, चुटकी, पान पराग शैम्पु, सट आदि नशीली एव हिंसाकारी चीजो का भी परित्याग कर दिया। हमने सामायिक, प्रतिक्रमण सीखा और अब नियमित रूप से सामायिक प्रतिक्रमण करत है, उन्होन नगर मे होने वाली कई कुरीतियो पर रोकथाम लगायी और हम सभी को मोक्ष मार्ग दिखाया।

(मन) मै तो इस नागरिक की बातें सुनते सुनत आनन्द विभोर हो गया और बोला चलो भई चलो अब हम सात और माने की परात बन गये।

जब हम नगर मे आगे बढ़ तो एक श्रावक जी मिल गये वे कभी बेले-२ कभी तेले-२ की तपस्या म पारणा करते थे। ये बारह व्रतो को धारण करके आगार धर्म की शोभा बढ़ा रहे है। मैंने इनको पहचाना- उन्होंने मुझे पहचाना। मै धर्म की पहचान स सराबोर हो गया। जब उन्होने हमारे निश्चय को जाना तो बहुत खुश हुए और

बोले-

वाह, तुम तो तारण तिरण की जहाज, भव्यो के सार्थवाह, समता दर्शन के प्रणेता, समीक्षण ध्यान योगी या ऐसे कहू महायोगी के चरणा मे जा रहे हो ।

जब वह गुरु भगवन्त हमारे यहा पधारे तो 'कि जीवनम्' इस प्रश्न के उत्तर पर चार महिने उपदेश फरमाते गये । इतना गहरा फरमाया कि वह बढ़कर समता समाज की सरचना का हेतु और सेतु बन गया । देखो आज यह समता समाज नगर नगर और डगर डगर मे कितने सुन्दर तरीके से इस लोक और परलोक को सुधार रही है ।

उनके पधारने से समता समाज की रचना तो हुई ही है । साथ म समीक्षण ध्यान विधि पर अनेक प्रयोग हुए है । हम उनसे बहुत लाभान्वित है । ये गुरुदेव हमारे इस भरत क्षेत्र म सूर्य के समान तेजस्वी, जिन नहीं पर जिन सरीखे हैं, इनकी शरण मे आने वाला, सच्चे दिल स सेवा करने वाला कभी भी अशाति का अनुभव नही करता चलो आप सभी क साथ अष्टम पट्ट आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ मै भी चलू ।

मैंने कहा अवश्य पधारिये । हम हो गए आठ अब गुरुदेव स पढ़ेगी समता पाठ ।

आगे बढ़ने पर हमे श्राविका जी मिली इनसे सामान्य परिचय के बाद सुनने को मिला-

अहो अनाथों के नाथ, जैसे मा बच्चे की सुरक्षा करती है, वैसे ही ये गुरुदेव भी सयम-मर्यादा, अनुशासन की सुरक्षा करने वाले है । हमारे नगर मे तो एक वृद्ध महिला जो बरसो से प्रज्ञा चक्षु थी उसकी आखे खुल गईं, उनका नाम लेने से अपने कइयो के रोग ठीक हो गये, हमारी महिला समिति उनके हर निर्णय को तहे दिल से स्वीकार करती है । वह समत्व योगी भगवन महावीर की देशना मे नया प्राण फूकने वाले हैं । इन्होने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे नवम् पट्ट युवाचार्य श्री रामेश का चयन किया है । यह बहुत ही अभिनदनीय चयन है । हम सभी इनकी आज्ञा अनुशासन मे रहकर जीवन को धन्य बनायें । लो आप सभी के साथ, मै भी गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शनो का लाभ लेने चलती हू ।

इन श्राविका जी ने नवम् पाट की बात बताई और स्वय भी हमारे मडल की नवमी सदस्या के रूप मे साथ हो गई ।

हम सभी दर्शन वदन सेवा की भावना से आगे बढ़ रहे थे कि पुण्यवशात् हमे पूज्य मुनि मण्डल के दर्शन हो गये ।

हमने दर्शन वन्दन के साथ अपना प्रोग्राम बताया तो मुनिराज अत्यत प्रफुल्लित हो गये । वे फरमाते हैं अहो ! इन प्रभा पुज गुरुदेव मे इतनी शक्ति और तेजस्विता है जो हम चीटी जितने मनुष्यो को हाथी जितना बड़ा ही नही, ककर को शकर, नर को नारायण और जीव को शिव बनाने की योग्यता रखती है ।

विश्व की समस्त शक्तियो के द्वारा पूज्यता को प्राप्त हैं । वे विशाल सघ का सचालन करते हुए भी ध्यान, मौन-साधना में रत हैं, उनको क्रोध करते हमने देखा ही नही । लगता है घमण्ड तो इन्हें छू ही नही पाया है । वे सघ के छोटे बच्चे के साथ भी बड़े प्रेम के साथ व्यवहार करते है, हम छोटे छोटे सन्ता को भी आदर से पुकारत है । उनकी जितनी प्रशसा करें, उतनी ही कम है । वे हमारे आराध्य हैं, वदनीय हैं, पूज्यनीय है । हम भी गुरुदेव के दर्शनार्थ चल रहे हैं ।

मैंने कहा, मत्थएण वदामि, पधारो हमे भी सेवा का लाभ मिल जायेगा हम नौ सदस्य आगे बढ़ गये।

कुछ ही दूरी पर हमे महासती मडल के दर्शन हुए हमने हमारी भावना रखी, महासतिया जी म सा ने फरमाया, अहो हमारे श्रद्धा केन्द्र गुरुदव ! कितने महान् हैं । उन्होंने छोटी सतियों को भी बड़ी सुन्दर रीति से पढ़ाया है । जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड के द्वारा सभी आगम और न्याय शास्त्र, दर्शन शास्त्र व्याकरण आदि का परिबोध कराया है । इन आचार्य भगवन् की कृपा से यू कहे गूगा भी ज्ञानी बन जाता है । हम छोटी छोटी महासतिया जी जिन्होने सभी आगमो का अध्ययन कर लिया है और बड़ी सरलता से सरस व्याख्यान फरमाती हैं, हम हर क्षण, हर पल उनकी कृपा का अनुभव कर रहे है ।

हम भी हमारे आराध्य प्रवर के दर्शनार्थ आ रही है। मैंने कहा बड़े आनन्द की बात है हम चुतर्विध सघ मिलकर गुरु देव से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे और आगे बढ़ेगे। हम कुछ और आगे बढ़े ही थे कि छोटे से बच्चे से मुलाकात हा गयी उसने हमसे पूछा हमने अपना प्रयोजन बताया तो वह कहने लगा।

अकल मै भी आपके साथ दर्शन करने चलूगा मैंने कहा अभी तू छोटा है, बड़ा हा तब चलना।

तो बच्चा कहता है अकल क्या आप नही जानते, मै इतना बड़ा भी गुरुदेव की कृपा से हुआ हू ? नहीं तो मै तो गर्भ में ही मर जाता। मैंने कहा वो कैसे ?

बच्चा- देखो अकल सच बताऊ मै जब गर्भ में था मेरी मम्मी ने सोचा कि अब बच्चा नहीं चाहिए। वे हास्पिटल जाकर एबोर्सन के लिए तैयार हो गयी किन्तु बीच मे ही सुना कि गुरुदेव नानश पधारे हैं। सो पहले गुरुदेव का प्रवचन सुन लें। उस दिन गुरुदेव का प्रवचन क्या था, मानो मेरे लिए वरदान था। गुरुदेव न गर्भपात महापाप पर व्याख्यान दिया और बहनो को गर्भपात के प्रत्याख्यान करवाये। मेरी मम्मी का भी मानस बदला और प्रत्याख्यान कर लिए।

अगर गुरुदेव न होते तो, मै गर्भ कोठरी से, काल कोठरी म चला जाता। देखो गुरुदेव की महिमा, मै भी चलूगा और धर्म ध्यान करूगा।

मैंने कहा, वाह राजकुमार ! तुम भी कितना ज्ञान रखत हो चलो हम तुम्हे भी साथ ले चलत है।

अब हम दस जने हो गये। आगे बढ़े एक बालिका मिल गई। उसने भी साथ चलने को आग्रह किया। मैंने कहा अभी नही बाद में, वह कहती है प्लीज अकल ऐसे मत कहो, जब गुरुदेव हमारे यहाँ पधारे थे तो हमारी बालक बालिका मण्डल का गठन हुआ था। धार्मिक पाठशाला शुरू हुई। उसमें हम सामायिक प्रतिक्रमण सीखत है, प्रार्थना बोलते है यहा में ही क्या सब बालिकाएँ आपके साथ चलन को तैयार है।

मैंने कहा बहुत अच्छी बात है मै चला था, तुम दस मिल गये ता हम सब एक से ग्यारह हो गय।

हम सभी खुशियो के साथ आगे बढ़ रहे थे, रास्ते मे हिरण, भालू, बकरी, शेर, गाय, खरगोश मछलिया कबूतर, तोता, मैना, सारस, बतख, नाग आदि अनेक तिर्यंच पचेन्द्रिय प्राणी मिल। कह रहे थे- उन गुरुदेव को हमारी भी वन्दना। उन्होंने शिकारियो को हिंसा का त्याग करवाकर हमे जीवन दान दिया है। आकाश म परिभ्रमण शील सूर्य चन्दा बोल रहे थे। हमारा प्रकाश और ऊजा अभिनन्दनीय आचार्य भगवन् के चरणो म समर्पित करक वन्दना करना। डालियो के महकते सुमनों ने कहा, हम सयम फैलाने वाले गुरुदेव के चरणो मे समर्पित है।

ऊषा काल ने कहा मेरी रमणीयता से भी बढ़कर गुरुदेव की भक्ति रमणीय है। धरती ने कहा, मेरी ऊर्जा से भी बढ़कर गुरुदेव की ऊर्जा है।

दीपक ने कहा, गुरुदव मुझस भी बढ़कर उजाला करने वाले है तो स्वण थाल ने कहा मरा रग उनके धर्म रग के सामने फीका है चलते हुए पेन ने कहा मेरी सार्थकता गुरुदेव के गुणानुवाद लिखने मे है तो कापी ने कहा मेरी सार्थकता उनके जीवन अकन मे है।

हम चल रहे थे मार्ग मे देवो के स्वर गुजरित हुए हम इन महापुरुषो का ही वन्दना करते है हम सभी की बातें सुनते हुए गुरुदेव के चरणो मे पहुचे। सभी ने प्रमोद भाव से गुरुदेव के दर्शन किये हम सब वही सेवा मे निमग्न थे, वहा का वर्णन करने मे मरी मति और कलम सक्षम नही है।

इसी बीच एक दिन हमारे पर, दुखा का पहाड़ टूट पड़ा दिशायें शून्य हा गयीं, ऐसा लगा माना कुछ करना ही शेष नही रहा।

क्या कहू आचार्य भगवन् ने विधि पूर्व सलखना सथारा स्वीकार किया और अपनी दिव्य चेतना के साथ देहातीत हो गये।

गुरुदेव सच सच बताइय आपको यहा क्या कमी थी जो हमे साथ लिये बिना ही आप दिव्य लाक म पधार गये हो। दखो, यह मन ता वहा भी आ जायगा। पर क्या बचारे सभी जीव वहा आ सकत हैं।

हा एक बार हमे आप अपना पता तो बताइये, फिर देखना आपके वहा भी हम पहुचने की कोशिश करेंगे ।

आप कृपा करें इस शासन फुलवारी को जैसे लगाकर महकाया है वैसे इसे बढ़ाकर और अधिक सुगन्ध से भरें ।

हमें सभालने के लिये आप एक बहुत बड़ा सबल दे गये हैं, हम इनकी आज्ञा का पालन करेंगे । इनकी छत्र-छाया मे रहेंगे । पर हा आप भी एक बार फरमा दो कि आप जहा भी हो वही से हमारे गुरु राम पर पूर्ण कृपा रखेंगे ।

हे महाचेतन्य महापुरुष, आप को मेरा हमारा यानी सम्पूर्ण सृष्टि का श्रद्धा सहित कोटि कोटि प्रणाम ।

मन मन्दिर के देव हमारे, जन जीवन के साथ
जहा विराजो आप वही से, रखना हम पे हाथ ।

❑ साध्वी सुनिता जी म सा

परम कृपा-सागर

बीकानेर मे विराजित आराध्य आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ पीपाड़ से बीकानेर की तरफ विहार किया । पीपाड़ से ७ कि मी के लगभग आगे पाव की नस खिसक गई, भयकर दर्द हुआ चलते नही बनता । रास्ते मे कहीं रुकने की सुविधा नही । मालिश सेक करते-२ बढ़ते गये मन मे एक ही लक्ष्य था आचार्य भगवन् के दर्शन करना । नोखागाव से विहार कर भामटसर जा रह थे शाम का समय बहुत कम था । रास्ता लम्बा, पाव में दर्द, पाव उठ नही रहा था । चिता होने लगी क्या करे कैसे गन्तव्य को पायें, चेहरा उतर रहा था उसी समय मन ही मन जय गुरु नाना पार लगाना सबकी रक्षा करते हैं मेरी भी रक्षा करो कहते-२ तो पावो मे ऐसी ताकत आई कि पीछे चल रही थी आगे हो गई सबसे पहले पहुच गई । इसी प्रकार से कठिन दुर्गम मार्ग भी सरल सुलभ हो गया ।

❑ साध्वी श्री मञ्जुला श्री जी म सा

बेजोड व्यक्तित्व

आचार्य देव का धवल, यशस्वी, समता-सहिष्णुता से ओत-प्रोत व्यक्तित्व जन जीवन के लिए अत्यत चुम्बकीय एव गरिमापूर्ण था। लोक मानस मे कल्पना नही थी कि यह 'नाना' क्या करेगा पर अपनी अद्वितीय साधना द्वारा आपने अचित्य को भी साकार कर दिया। जैन जगत के कोहिनूर आचार्य श्री हुक्मीचद म सा से लेकर गणेशाचार्य तक के अधूरे स्वप्नो को आपने अपनी तीक्ष्ण न्याय तुला से पूर्ण किये। आचार्य श्री नानेश का मुख्य मत्र समता था। समतामय जीवन ही उनके व्यक्तित्व को उजागर करने वाला था। यह सत्य है कि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बिना व्यक्ति के नही होती, लेकिन अध्यात्म शास्त्र का कथन है कि व्यक्ति क्षर है, और व्यक्तित्व अक्षर है। व्यक्ति को मिटना होता है जबकि व्यक्तित्व अमिट होता है। आचार्य श्री नानेश आज व्यक्ति के रूप मे नहीं है किन्तु व्यक्तित्व के रूप मे साक्षात हैं और आने वाले समय मे भी होंगे। उनकी पुण्य स्मृति जागरण का सदेश देती रहेगी।

आपके जीवन मे प्रदर्शन नही दर्शन था। कृत्रिमता नही वास्तविकता थी। आपके स्वरूप म सतत्व गौरवान्वित हुआ था। गुरुदेव विद्वता के अगाध सागर थे सिद्धिया आपके चरण चूमती थीं, वैराग्य आपका अग रक्षक था सयम आपका जीवन साथी था। आप जीवन मुक्त ऐसे महान सत थे जो सदैव साधना मे सलग्न, आराधना-उपासना मे स्थित रहते थे। आपका हृदय स्फटिक की भाति उज्ज्वल था, आप अपनी आतम साक्षी को ही महत्व देते थे। आपकी वाणी में अभूतपूर्व शक्ति थी, आपकी स्मरण शक्ति अनमोल थी। आपने स्व को छोड़कर सघ सेवा को सर्वोपरि माना, आपने अनन्त्य उपकार करके सघ सुरक्षा के लिए अनमोल हीरा गुरु राम' के रूप मे दिया। मेरा हृदय आप श्री जी के उपकारो से कभी भी उऋण नही हो सकता और जीवन की अतिम धड़कन तक भी आपको भूला नही जा सकता। मेरी एक-एक श्वास और मेरे खून का एक-एक कतरा सदैव वर्तमान आचार्य श्री रामेश व सघ के लिए पूर्णरूपेण समर्पित रहेगा।

लोकोत्तर सूर्य अस्त हुआ

कुमारी दीक्षा

गुरु नानेश तेरे, दर्शन से हो जाती थी निहाल।
तेरे भजन गाकर, रहती थी खुशहाल ॥
उठ गया तेरा साया, मुझ पर से ।
गुरुवर तेरे अस्ताचल से हो गई बेहाल ॥

❑ साध्वी श्री चितरजना श्री जी

अलौकिक गुरु नाम

१९९२ हुबली का चातुर्मास सपन्न कर गुरुदेव का नाम लेकर मार्ग मे बढ़ते जा रहे थे। होली चौमासा पूर्ण कर धुलिया से आगे बढ़े। से धवा से इन्दौर का रास्ता बडा विकट था। गुजरी के बाद घाट पड़ता था। मानपुर २१ कि मी पड़ता है। बीच मे कोई शाकाहारी गाव, बस्ती, घर नही है। शाम को विहार कर गणेश मदिर देखा तो एक दम खुला है। सतियो के योग्य जगह नही है। आगे चले टावर तक पहुचे, सूर्यास्त होन लगा। कोई योग्य सुरक्षित जगह नही मिली। टावर मे गये, बाहर बरामदे मे रुके। इतने मे वहा का व्यवस्थापक आया। अजनबी को देखकर घबरा गया रुकने के लिए इन्कार करने लगा। उसको समझाया गया। जैन साधु-साध्वी का आचार विचार कहा। फिर भी बड़ा चितित था। बिजली घर था खतरे की जगह थी। अन्दर प्रवेश निषिद्ध था। आखिर बाहर बरामदे मे रुकने की स्वीकृति दी। सड़क का किनारा, रात भर ट्रक, मोटरें चलती रहीं। पास मे ही शराब की दुकान। चालक लोग उतरते दारू पीते, विश्राम करते फिर चलते। जगते रहे नवकार मत्र गिनते रहे, जय गुरु नाना पार लगाना, जाप करते रहे। इस जाप के प्रभाव से शराबियो के इस दिशा मे कदम ही नही बढ़े। इधर से जाते शराब पीने के लिए मगर पीने के बाद इस तरफ नही आये। सबेरा होते-होते हल्की सी नीद की झपकी लगी तो आचार्य भगवन् की प्रसन्न मुद्रा स्वस्ति के रूप मे उठा हुआ हाथ का स्वप्न देखा। ऐसे भयानक बीहड़ मार्ग मे पाच छोटी-२ सतिया, प्रतिमा बोकड़िया। साथ मे कर्नाटक का भाई कन्नड़ भाषी हिन्दी से अनभिज्ञ। हम लोगो ने उस मार्ग को तय किया। दूसरे दिन सबेरे भी घाट मार्ग को गुरुदेव की कृपा से पार कर मानपुर पहुचे।

नाना महा पुण्यशाली गुरु

अनिता नागोरी

निर्मल मन मनीषी करुणा निधान करुणा करो
कर से दे दो आशीष
ओ संयम पथ के सारथी श्रमण संघ शृंगार,
अष्टम पद आचार्य प्रवर, वन्दन सौ-सौ बार।
महापुण्यशाली गुरु,
धर्मपाल प्रतिबोधक, श्रमण संस्कृति के प्राण
संघ नायक सरदार हो मत पथ का दे दो वरदान
वन्दन सौ सौ बार।
मोक्ष धाम की पुनीत बेला में, महाप्रयाण उदयपुर में
श्रद्धा सुमन अर्पण करे, 'अनिता' अर्पित तन मन, प्राण
स्वीकार करो मेरी वन्दना,
सकल संघ करे अरदास। बीकानेर

❑ महासती श्री प्रभावना श्री जी

गुरुदेव का प्रथम दर्शन, सयमी जीवन का सर्जन

आदर्श त्यागी शासन प्रभावक पूज्य श्री धर्मेशमुनि जी म सा हमारे गाव बड़ाखेड़ा पधारे जो सासारिक रिश्ते मे काका सा म सा लगते थे। प्रथम बार दर्शन किये धार्मिक शिविर मे भाग लिया था, कुछ सीखा था। योग सयोग पिताजी का देहात हो गया, ससुराल वाले मेरे (पुष्पा) अनुकूल नही थे। माता जी दाखु बाई माडोत मद्रास में विराजित पडित रत्न धर्मेश मुनि जी म सा के दर्शन किए फिर राजस्थान आए। मै माता जी के साथ सारोठ दर्शनार्थ गई कुछ दिन रही। सयोग से आचार्य भगवन् का चातुर्मास उदयपुर था। कार्तिक मे दीक्षाओ का प्रसग था। उदयपुर जाने का अवसर मिला। गुरुदेव के पावन मगलकारी दर्शन किए। गुरुदेव का अलौकिक चेहरा देखती ही रह गई। मन मे पक्का सकल्प कर लिया कि मुझे तो दीक्षा ही लेना है। तब से मै ज्ञानार्जन करने लगी। रतलाम मे २५ दीक्षाओ मे मेरी भी दीक्षा गुरुदेव के श्री मुख से हुई। इन्दौर से विहार कर चागुटोला चातुर्मास क लिए हरदा से बैतुल आ रहे थे। भयानक जगल, कुरसना गाव के निकट पहुचे, तब चार सतिया गुणरजना श्री जी, प्रभावना श्री जी, चितरजना जी, चदना जी पुलिया के उस पार और जय श्री जी, सुनिता श्री जी एव साथ म भाई सुन्दरम पुलिया के इस पार थे। एक उदण्ड बैल सिह सा चेहरा, कोपायमान, अनिमेष दृष्टि, दौड़ता आया और प्रभावना श्री जी को धक्का लगाया, वे गिर गये। आगे दौड़ता-२ बैल पहले सुनिता श्री जी म सा की तरफ मुख किया। सामने मौत दीख रही, किधर जाए, क्या करे ? किकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। एक मात्र जय गुरु नाना पार लगाना शब्द मुखरित हो रहे थे। बैल की दृष्टि वहा से हटी, जय श्री जी म सा की तरफ फिर सुन्दरम की तरफ। सुन्दरम ने साइकिल आगे कर दी। कसकर पकड़ ली बैल के पाव चक्के मे फस गये, फिर भी धक्का लगाता रहा। सुन्दरम ने साईकिल छोड़ दी। अपना बचाव किया। जब तक वह बैल अपना पाव साइकिल स निकाले उतने समय मे सब सुरक्षित हो गये। प्रभावना श्री जी म सा नदी मे गिरते-२ किनारे क पत्थर के कारण बच गये। सिर म, हाथ मे पाव म चोट आई। खून बहने लगा, चश्मा फूट गया। यथा स्थान लाये। सयोग से गुरुदेव की कृपा से वहा डॉक्टर आ गया। पट्टी बाधी और बैतुल समाचार मिल गये। सब लोग पहुच गये। ऐसे भयानक जगल म बचाने वाला गुरू का नाम ही था।

गुरुदेव तेरी महिमा, देव भी नहीं गा सकते।
तेरे गुण लिखना भी होगी बाल हरकते ॥

विराट व्यक्तित्व के धनी

मेवाड़ की पावन वीर प्रसविनी भूमि पर एक विशिष्ट तपोपूत आत्मा अवतरित हुई जिनका नाम था नाना। नाना नाम कितना सुन्दर और प्यारा है नाम छोटा काम किया है मोटा ग्राम छोटा दाता, आज वह नानेश नगर बन गया है मोटा, क्योंकि जिस भूमि पर तीर्थपति जन्म लेते है वह भूमि जगम तीर्थ बन जाती है , जैसा कि दाता आज नानेश नगर के नाम से विश्व विख्यात हो गया है। धन्य है माता शृगारा जिनकी कुक्षि से एक विशिष्ट तपापूत आत्मा ने जन्म ग्रहण किया। वह रत्न प्रसूता माता शृगारा तो धन्य धन्य हुई, किंतु यह सपूर्ण जगत ही कृतार्थ हो गया। मेवाड़ की धरती कर्मवीरो से यशस्वी बनी है तो धर्म वीरो से गौरवान्वित भी।

आपकी प्रवचन शैली बड़ी ही मधुर आगम सम्मत तथा जन-जन को आकर्षित करने वाली थी। आपकी पीयूष वर्षी वाणी एव वैराग्य भावो स आत प्रोत प्रवचनों को सुनकर अनेक भाई-बहिनो ने ससार से विरक्त होकर सयम मार्ग अगीकार किया और जो आपके वरदहस्त व सुखद सामिप्य की छाया म आपकी महिमा, गरिमा को बढ़ाते हुए शासन की शोभा द्विगुणित कर रहे हैं। ऐसा नयनाभिराम व दैदीप्यमान व्यक्तित्व था आचार्य श्री नानेश का। आचार्य भगवन् का जीवन सहजता, मधुरता सद्गुणो का गुलदस्ता था। ऐसी आध्यात्मिक साधना मे तल्लीन सरलता व समता की एक जीवन्त छवि जिसके दर्शन होते ही मानव मस्तिष्क स्वत ही श्रद्धाशील हो, नमन कर असीम आनन्दानुभूति प्राप्त करता था। मै ऐसी दुर्भाग्यशाली थी कि मुझे गुरुदेव के दर्शन नही हुए और अनुपम सेवा का अवसर भी प्राप्त नही हुआ। मन की मुरादें मन में ही रह गईं। दिल के सजोए अरमान अधूरे ही रह गये।

आप श्री जी का समता का गुजायमान नाद तथा अनुपम प्रेरणा की सारी स्मृतिया और अनुभूतिया स्मृति पटल पर उभरकर सामने आ रही है। आप श्री जी के वात्सल्य समता रूपी मुक्ताओ को शब्द सूत्र मे पिरोने का मेरा प्रयास सूर्य को दीपक दिखाने के तुल्य ही है।

आज उनका विरक्ति प्रधान प्रेरक व्यक्तित्व हमारे लिए प्रकाश पथ एव प्रेरणा स्तम्भ बनकर दिशा दर्शन कराता रहेगा।

उस सौम्यमान करुणा, वरूणा को हृदय की हर धडकन के साथ श्रद्धाजलि अर्पित करती हू।

नाना गुरु हमारे नयनो के तारे थे।
नाना गुरु इस धरती के चाद सितारे थे।
युग-युग अमर रहेगी तेरी गौरव गाथा।
नाना गुरु भव्यो को तिराने वाले थे।

नवम् पट्टधर प्रशातमना, महामनीषी आचार्य भगवन् के आचार्य पद पर सुशोभित होने की खुशी म वन्दन अभिनन्दन।

मानवता के दीप तुम्हारा अभिनन्दन,
दिव्य धरा के द्वीप, तुम्हारा अभिनन्दन।

गुण रत्नाकर

खोजती हू मै स्वय ही, क्या तुम्हें अर्पित करू ।
हा मुझे कुछ याद आया, श्रद्धा सुमन समर्पित करू ।।

मेरे पूज्य समता विभूति श्रद्धेय आचार्य भगवन् के जीवन मे अनेकानेक गुण विद्यमान थे । पूज्य गुरुदेव मे एक विशेष प्रकार की चुम्बकीय शक्ति थी, जिससे कि मानव स्वत ही आपकी ओर खिचा चला जाता था और आकर्षित हो जाता था । मुझे भी ऐसी महान विभूति के पावन पवित्र सानिध्य मे रहने का अवसर मिला, पावन दर्शनो का लाभ मिला-

डालिया न होती तो फूल लटकते ही रहते ।
आप जैसे सद्गुरु न होते तो हम भटकते ही रहते ।।

सचमुच मे मेरा जीवन धन्य हो गया, ऐसे महान सद्गुरु को पाकर । पूज्य भगवान का जीवन कोहिनूर हीरे के समान शरद् ऋतु की धवल चादनी सा शुभ्र-शीतल व सबको सुखमय बनाने वाला था । आपका त्याग प्रणम्य तथा साहस अनुकरणीय था । पूज्य भगवन् का प्रभाव ही ऐसा था कि आपका नाम लेने से भक्तो के सकट दूर हो जाते थे आप श्री जी की दृढ़ता मेरू पर्वत के समान थी और सयम साधना अनुपमेय थी । जो भी आपकी पीयूष वर्षिणी वाणी सुन लेता था वह अपने आप को भूल जाता था और आपके श्री चरणो का पुजारी बन जाता था ।

नाना तेरे गुणो को मुझसे गाया नही जाता ।
तेरी समता का अन्दाज लगाया नही जाता ।

श्रद्धेय आचार्य भगवन् के गुण ही इतने हैं और मेरी बुद्धि अल्प है, मेरी जिन्दगी ही सारी निकल जाये तो भी पूज्य गुरुदेव के गुणो का वर्णन करना मुश्किल है । ऐसी महान विरल विभूति आज हमारे बीच मे नही है पर आपका यशस्वी जीवन तो सदैव जीवन्त रहने वाला है । आप श्री जी के कृतित्व एव व्यक्तित्व को कोई भी विस्मृत नही कर सकता है ।

पूज्य गुरुदेव का प्रशस्त उदार विचार एव उन्नायक सत्कार्य सदैव हमारा पथ प्रदर्शन करते रहेंगे । श्रद्धेय आचार्य भगवन् के आदर्शों पर चलकर हम उनकी स्मृतिया को चिरजीव बनाए, यही हमारी गुरु नाना के प्रति श्रद्धाजलि होगी ।

तेरे गुणो की गाथा जमाना सदा गाता रहेगा ।
जब तक सास मे सास है, स्मृति का तराना बजता रहेगा ।।

नानेश पट्टधर आगमो के निगूढ रहस्यो को उजागर कर ज्ञानियो का मनमोहने वाले, प्रशात मन से जिनशासन की सेवा करने वाले, तपस्या से आत्मा को उज्ज्वल बनाने वाले ऐसे गुरुवर रामेश को पाकर मेरा मन मुदित है । गुरुवर आप दिन दुगुनी रात चौगुनी प्रगति करते रहें । नानेश शासन मे चार चाद लगायें भगवन् आप श्री जी के वरदहस्त तले मेरा मार्ग भी प्रशस्त बने, इसी शुभ मगल मनीषा के साथ-

हर एक की जिन्दगी का बनो तुम सहारा ।
चाद सितारो से ऊचा हो रुतबा तुम्हारा ॥
गगन मे इतने तारे कि आकाश दिखाई न दे ।
राम गुरुवर के जीवन मे इतनी खुशिया हो
कि गम दिखाई न दे ॥

-कानो

प्राण हमारा त्राण हमारा

साध्वी श्री वैभव प्रभा जी

अचानक सुना गुरुवर ने लिया है संथारा
हृदय टूट पड़ा नहीं रहा धरती का सहारा।
कौन जानता था इस धरती को
खिलती चतुर्विध संघ की बस्ती को।
छोड़ चलेगा यह फरिस्ता स्वर्गलोक की पशस्ति को,
काल कराल अलग कर दिया तूने,
धरती में होने लगा था कम्पन।
आत्मा करन लगी सिहरन स्पंदन,
तेजस्वी सूर्य के अस्ताचल से,
करने लगा जन जन क्रंदन
हे विधाता।
छीन लिया मेरा नजारा
चला गया वो जिगर हमारा
हम सबका तारण हारा
प्राण हमारा त्राण हमारा।
भक्तों का भाग्य सितारा
यही थी विधातो की मरजी
करेंग नाना के राम से अरजी,
सब कुछ देकर अपना खाकर।
राम में ही नाना निहारकर
फरमां बरदार बनना राम गुरु गुंजाना
राम गुरु की फिजा पर अपना मस्तक चढाना
लय रहेंगे नय रहेंग चाहे जियगि मिटेंगे
समर्पण भावों में ही रहेंगे।

□ साध्वी विभा श्रीजी म

हुक्म शासन सरोवर के राजहस

मा शृगारा के प्यारे दुलारे हो तुम,
जन-जन की आखों के दिव्य सितारे तुम ।
दिन रात स्मृति रहती है गुरु नाना की,
मेरी श्रद्धा के एकमात्र सहारे हो तुम ॥
गुरुवर आप रहम की तस्वीर थे,
भीतर बाहर से गहन गभीर थे ।
आप श्री के गुणो का क्या वर्णन करू,
झझा और तूफानो मे भी सदा धीर थे ।

इस धरती पर कभी-कभी ज्योतिर्मय आत्माए आती हैं, वे दिव्य आत्माए कभी नर के रूप मे जन्म लेती हैं तो कभी नारी के रूप में । उनकी ज्योतिर्मय चेतना के दीप इस प्रकार प्रज्वलित होते है कि वे जलने के बाद फिर कभी बुझते नही, धूमिल पडते नही, बाह्य परिस्थितियो के भयकर झझावत भी उन्हे बुझाने मे पूर्ण असफल रहते है । ऐसी ही एक दिव्य ज्योति थे आचार्य श्री नानेश । उनके अन्तर मे जन्म-जन्मान्तरो से एक दिव्य ज्योति प्रज्वलित होती आ रही थी, जिसके आलोक मे ससार की असारता एव जीवन की क्षण भगुरता को समझकर आपने अपने आपको सर्वतोभावेन गुरुचरणो मे समर्पित कर दिया । आप श्रीजी की सर्वतोमुखी प्रतिभा को देखकर शात क्रान्ति के अग्रदूत श्रीमद् गणेशाचार्य ने उन्हे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया । इनका साधनामय जीवन जन-जन के मानस को दिव्य प्रकाश प्रदान करेगा मानो इस तथ्य की सूचना देने के लिए मेघाच्छादित सूर्य भी धवल चादर प्रदान करते समय बादलो से अनावृत होकर पूर्णतया जाजवल्यमान हो उठा ।

मालवा प्रात मे लाखो की सख्या मे दलित वर्ग, जो गो रक्षक से गो भक्षक बन रहे थे, जिनका मानवीय स्तर अधःपतन की ओर उन्मुख था एसे लाखो व्यक्तियो के बीच मे पहुचकर इस महायोगी ने अपना प्रभावशाली उपदेश दिया, सप्त कुव्यसन का परित्याग करवाकर उनको मानवता की उच्च भूमिका पर लाकर खड़ा किया ।

बलाई आदि जाति के नाम से उपक्षित समाज को धर्मपाल नाम से परिष्कृत किया तभी से समाज ने इस महायोगी को धर्मपाल प्रतिबोधक की सार्थक उपाधि से अलकृत किया ।

सोना खदान से, कमल कीचड़ से, गोरचन गाय के पित्त से, अग्नि काष्ट से प्राप्य है उसी प्रकार उत्पति स्थान साधारण कोटि का होने पर भी जगत प्रसिद्ध है उसी प्रकार व्यक्ति जन्म से नहीं अपितु गुणो की सौरभ से विश्व प्रसिद्ध होता है । हमारे आराध्य प्रवर भी जप तप, सयम सौरभ से ही जगत प्रसिद्ध हुए हैं ।

आचार्य भगवन् क्या थे ? शब्दों स उनका रेखाचित्र बना पाना तो असभव है ही पर भावो की ऊचाई से नापने चलें तो उन्हे कहीं और अधिक ऊचे पहुचे हुए पायेंगे । जैसे ही नजर उन तरफ दौड़ी कि वे उससे भी ऊचे दिखाई दिये । समता के तो आप सिधु थे ही निंदा, स्तुति, सम्मान अपमान के कड़वे घूट पीने में भी शिव शकर थे । आपका

जीवन अनुपम था जा मेरे साचने की शक्ति से मेरी समझ से, मेरी बुद्धि से बहुत परे था। हमारे आराध्य प्रवर अपने लिए जितने कठोर थे, दूसरे के प्रति उतने ही कोमल थे मधुर थे, सरल थे। ऐसी आत्माओ के लिए एक मनीषी ने कहा था

'वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि।'

एक ओर वज्र स भी अधिक कठोर जीवन। वज्र भी क्या कठोर होगा उनके समक्ष, दूसरी ओर फूल से भी कामल, हम उपमा देकर रह जाते है परतु वह दिव्यात्मा उससे भी कही आग थी। ऐसी अद्वितीय आत्मा के मन का, चित्त का कौन सही मूल्याकन कर पाया है। जैसे मरू पर्वत को तराजू म तौलना असभव है वैसे ही आपके सभी गुणो का वर्णन करना असभव है। यह महान आत्मा आज हमारे मध्य नही रही किन्तु उनकी अनश्वर कालजयी दिव्यात्मा हमारे साथ है। वह आत्मा जहाँ भी है निश्चित रूप से हमारे ऊपर हजारो हजार हाथ से अमृत बरसा रही है। आशीर्वाद प्रदान कर रही है। तीन लोक से बढ़कर इस महान निधि को हमे अपने अन्तर मे सजाकर रखना है जहा से निरन्तर आशीर्वाद प्राप्त होते रहेंगे। उसी के बल पर हमारा चतुर्विध सघ दिन दूनी, रात चौगुनी प्रगति करता रहेगा।

उस दिव्य आत्मा की महायात्रा को स्वीकारते हुए भी अन्तरमन उनके वियोग वेदना से विकल है। उनके सहज प्रेम, स्नेह एव अनुराग का वह निर्मल प्रवाह सहज ही अश्रु जल के रूप मे आखो से प्रवहमान हो उठता है। आराध्य देव की स्मृति गुरुणी प्रवर एव हम सभी के हृदय को, दिल को द्रवित कर रही है। आचार्य भगवन का वियोग एक बहुत बड़ी क्षति है। इस वज्रपात को हम सभी धैर्यता के साथ सहन करें। उनका अनन्त उपकार हम अतिम सास तक नही भूल पायेंगे। उनकी साधना, उनके सद्गुणो की तेजस्विता आज भी विद्यमान है और भविष्य मे भी रहेगी एसी पवित्र आत्मा को मेरे भाव विभोर भक्ति स्निग्ध श्रद्धा सुमन अर्पित समर्पित। साथ ही हुक्म सघ के अनुपम मोती, नानेश की दिव्य ज्योति परम आराध्य शासनेश नवम् पट्टधर के प्रति मगल मनीषा है कि वे दिनानुदिन गुलाब के विकसित पुष्प की भाति ज्ञान रूपी सुरभि से सपूर्ण जगत को युगों तक सुवासित करते रहे, आलोकित करते रहे। जन जन को ज्ञानरूपी सुधा का पान कराते रहें और हम लघु शिष्याओ पर उनका वरदहस्त सदा बना रहे, इन्ही शुभ कामनाओ के साथ।

मेरे गुरुवर नाना

कु पायल कांकरिया

नाना गुरुवर जग के दिव्य सितारे
मेरी आखें तुझ निहारे।
आंखों में वो मूरत घूमे
जय गुरु नाना में हम झूमे।
समता की वह मशाल थी
सूरत से समता बरसती थी।
नयनों में आत्मीयता की झलक
विश्व की बेजोड़ मिशाल।
गुरु को देख हो गई निहाल॥

❑ साध्वी कविता श्रीजी म

जैन जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र

जिनकी सौरभ से महक रहा हुक्मेश नन्दन वन,
जिनकी यशोगाथा, गा रहा हर एक अन्तर्मन,
ऐसे आराध्य प्रवर मा शृगारा के नन्दन,
आपकी स्मृति मुखरित है जन-जन के मन ।

वेदना के उफनते वेग मे सारा ज्ञान अवाक् रह गया है । विह्वलता की आधी मे धैर्य धराशायी हो गया है । सान्तवना का छोटा-सा तिनका कैसे सहारा दे, इस शाक मे बहते नेत्रो को ? कलेजा काप रहा है, हृदय रो रहा है मन मे उदासीनता है, वातावरण मे शून्यता छा गई है । वाणी स्तम्भित हो गई है और आखें मानो उस मृत्यु के मूल को खोजने आसुओ के रास्ते से बेतहाशा भाग रही है । पूछ रही हैं कि क्या कभी दिव्य आत्माओ की लोककल्याणी देह अमर नही हो सकती ? क्या उनकी आयु हजारो वर्ष लम्बी नही हो सकती ? क्या हम जैसों की आयु उन्हें समर्पित नही की जा सकती ? मन मे उत्पन्न होते इन प्रश्नो का कौन समाधान करे। इन आखा को कैसे समझाए जो दिव्य दर्शन के लिए उस पावन महामानव का देखने के लिए तरस रही है । कानो की उत्सुकता कैसे मिटे जो उस स्नेह मूर्ति के स्नेह भरे शब्दो को सुनने के लिए आतुर है । भगवन् आपकी स्मृतिया हम सभी के हृदय को उद्वेलित कर रही हैं । गगोत्री के जल के समान दिव्य और पवित्र आपका जीवन अब हमे कहा प्राप्त होगा । आपके एक एक गुण को पाने के लिए, जाने कितने जन्मो तक हमे साधना करनी पडेगी । जैसे स्फटिक रत्न सी आपकी स्वच्छ निर्मल काया थी, वैसा ही शुद्ध पवित्र और सरल आपका अन्त करण था । मानो ससार के सारे गुणो ने और सारी अच्छाइया ने ही आपकी देह को धारण कर रखा है । महान आत्माओ का जीवन महान हुआ करता है ।

आचार्य भगवन् का जीवन अवस्था की दृष्टि से ही नही ज्ञान और आचार की दृष्टि से भी हीरे की तरह ज्योतिर्मय और आलोकपूर्ण था । हीरे की दो प्रमुख विशेषताए होती है- कठोरता और तेजस्विता । आचार्य भगवन् सयम-साधना मे हीरे की तरह कठोर थे और ज्ञान आराधना एव आत्म-साधना मे तेजस्वी थे । आचार्य भ के जीवन मे ही अनेकानेक गुण विद्यमान थे । आचार्य भ का मगल स्मरण उनकी प्रेरक पावन स्मृतिया वे पुनीत यादें, आदर्श सस्मरण जन-जन के अन्तरमन को आनन्द विभोर कर देती हैं । इस युग पुरुष के जीवन से सबधित कोई भी घटना जब भी स्मृति पटल पर उभरती है, भले ही वह दाता ग्राम की हो, बाल्यावस्था की हो, वैराग्यमय जीवन की हो, अभिनिष्क्रमण यात्रा की हो धर्मपाल क्राति की हो तो जीवन का कण कण आनद से प्रफुल्लित हो जाता है । उस वीर पुरुष का विराट व्यक्तित्व मानो ऐसा था जैसे कि एक क्षीरसागर जिसका न कोई किनारा है न कोई सीमा है । जिस ओर से भी उसका पान करे अमृत है, मधुर है । वस्तुत महामनस्वियो का जीवन आकाश की तरह अनन्त व्यापक, विराट सागर सदृश गभीर, सर्वदर्शी होता है । अभीष्ट के पूरक और सर्वोपयोगी सर्वदर्शी हाता है । उनमे धरा सी धीरता, हिमाचल सी अचलता एव गगा सी पवित्रता समाविष्ट होती है । आचार्य भ भी ऐसी ही महान विभूतियो मे से एक थे, जिनका विमल व्यक्तित्व और उर्ध्वमुखी विचारधारा का सुमधुर निर्झर आज भी जन जीवन

को आप्लावित कर रहा है।

जैसे गुलाब का फूल जिस डाली से जिस पौधे से जुड़ा रहता है, वह केवल उस डाली को उस पौधे को ही सुवासित नही करता है, अपितु वह अपने आसपास के सपूर्ण वायुमडल को भी सुरभित कर देता है। हमारे आराध्य देव का जीवन भी उस गुलाब के फूल की तरह ही था।

आप श्री जी ने सयमी जीवन स्वीकार करके हुक्म शासन को सुवासित किया, महकाया। आप श्री जी पार्थिव देह के रूप मे भले ही आज हमारे सामने नही रहे लेकिन आपके गुणो की महक सुवास युगों-युगो तक इस शासन को महकाती करती रहेगी। मै उस ज्योतिर्मय आत्मा को हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करती हू। हमारे नवम् शासनेश, प्रखर प्रतिभा-सपन्न, दृढ निश्चयी तथा साहस की प्रतिमूर्ति हैं। त्याग तप के तेज से आपका मुख मडल आलोकित है। ऐसे आराध्य देव क प्रति प्रभु से मगल मनोकामना करती हू कि आप सदा-सदा तक हुक्मेश शासन को दीप्तिमन्त करते रहे, चमकाते रहे और हम शिष्याओ पर आपका वरद् हस्त हमेशा बना रहे, जिससे हमारा जीवन निरतर प्रगति करता रहे, इन्ही शुभ भावनाओ के साथ-

❑ साध्वी सुभद्राजी म

रोगी के लिए उपचार

गुरु के प्रति श्रद्धा रखने वाला भव सागर से तिर जाता है। गुरु नाम मे अनन्त शक्ति है। कभी भूलकर गुरु की आशातना नहीं करना चाहिए।

गुरु नाना के नाम मे इतनी शक्ति है कि जब कभी कोई भी सकट किसी पर आवे तो नाना गुरु की एक माला श्रद्धा के साथ जपे, उसका सकट सदा सदा के लिये टल जाएगा।

❑ साध्वी पूर्णिमा श्री जी

परम उपकारी गुरुदेव

महापुरुषो का नाम ही बड़ा चमत्कारी होता है, क्योंकि उस नाम मे साधना का बल होता है । शुरू मे नाम सुना आचार्य श्री नानालाल जी म सा का, मन अपूर्व आह्लाद से भर गया । नाम और महान जीवन को सुनकर दर्शन की तीव्र ललक जग गयी और ज्योंहि स्वर्णिम क्षण आये, उस महान विभूति के दिव्य दर्शन कर मुझे जो अनुभूति हुई । वह शब्दो की क्षमता के बाहर का विषय है ।

मै अपनी किस्मत की सराहना करती हुई गौरव का अनुभव करती हू कि मुझे ऐसे महान् साधनामय, सत्यमय, समतामय, महायोगी आचार्य श्री की चरण-शरण प्राप्त हुई । ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से मै इस महान विभूति को पहचान पाई । आप श्री जी का नाम लेते ही भक्तो के कष्ट काफूर हो जाते है । जन्मो-जन्मो का कर्म रोग मिटाने मुझे सयम दान दिया । आपका नाम लेते ही अद्‌भुत शक्ति मिलती है, आत्मबल जाग उठता है । हे साधना पुरुष ! आखें आज भी आपको ढूढ रही हैं । पार्थिव शरीर नही रहा पर आप श्री जी के आदर्शों का, सिद्धातो का, गुणो का वह प्रेरक जीवन सदा हमे साधुमार्ग की ओर प्रेरित करता रहेगा ।

दीपक बुझा प्रकाश देकर,
फूल मुर्झाया सुवास देकर ।
टूटा तार भी सुर बहाकर,
तुम चले पर नूर प्रकटाकर ॥

अनन्त उपकार है आपका कि आपने मेरे जीवन की डोर निर्लेपता के निर्मल नूर, ज्ञाननिधि, अद्वितीय आत्म साधक युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा के सशक्त हाथो मे सौपी है, जो हमे निश्चित ही चरम उत्कर्ष तक पहुचाने मे सहयोगी हैं । आचार्य श्री रामेश की हर आज्ञा प्राणो से बढ़कर है । आपके चरणो मे वदन-अभिवदन ।

नाना पार लगाते है

आशीष ललवाणी

शुद्धमन से गुरुवर का ध्यान जो लगाते हैं
नाना गुरु उनको सदा भवपार लगाते है ।।टेर।।
नाना गुरुवर तो समता के दाता है ।
समभाव २ में रहना जन जन को बताते है ।१।
नाना गुरुवर तो संयम की मूरत हैं ।
त्याग तप २ संयम का पाठ पढ़ाते हैं ।२।
नाना गुरु तो करुणा के सागर हैं ।
अंहिमा के २ उपदेश से सच्ची राह दिखाते है ।३। नई लाईन गंगाशहर

को आप्लावित कर रहा है।

जैसे गुलाब का फूल जिस डाली से जिस पौधे से जुड़ा रहता है, वह केवल उस डाली को, उस पौधे को ही सुवासित नही करता है, अपितु वह अपने आसपास के सपूर्ण वायुमडल को भी सुरभित कर देता है। हमारे आराध्य देव का जीवन भी उस गुलाब के फूल की तरह ही था।

आप श्री जी ने सयमी जीवन स्वीकार करके हुक्म शासन को सुवासित किया, महकाया। आप श्री जी पार्थिव देह के रूप मे भले ही आज हमारे सामने नही रहे लेकिन आपके गुणो की महक सुवास युगों-युगो तक इस शासन को महकाती करती रहेगी। मै उस ज्योतिर्मय आत्मा को हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करती हू। हमारे नवम् शासनेश प्रखर प्रतिभा-सपन्न दृढ निश्चयी तथा साहस की प्रतिमूर्ति हैं। त्याग, तप के तेज से आपका मुख मडल आलोकित है। ऐसे आराध्य देव के प्रति प्रभु से मगल मनाकामना करती हू कि आप सदा सदा तक हुक्मेश शासन को दीप्तिमन्त करते रहे, चमकाते रहे और हम शिष्याओ पर आपका वरद् हस्त हमेशा बना रहे, जिससे हमारा जीवन निरतर प्रगति करता रहे, इन्ही शुभ भावनाओ के साथ

❑ साध्वी सुभद्राजी म

रोगी के लिए उपचार

गुरु के प्रति श्रद्धा रखने वाला भव सागर से तिर जाता है। गुरु नाम मे अनन्त शक्ति है। कभी भूलकर गुरु की आशातना नहीं करना चाहिए।

गुरु नाना के नाम मे इतनी शक्ति है कि जब कभी कोई भी सकट किसी पर आवे तो नाना गुरु की एक माला श्रद्धा के साथ जपे उसका सकट सदा सदा के लिये टल जाएगा।

❑ साध्वी पूर्णिमा श्री जी

परम उपकारी गुरुदेव

महापुरुषो का नाम ही बड़ा चमत्कारी होता है, क्योंकि उस नाम मे साधना का बल होता है। शुरू मे नाम सुना आचार्य श्री नानालाल जी म सा का, मन अपूर्व आह्लाद से भर गया। नाम और महान जीवन को सुनकर दर्शन की तीव्र ललक जग गयी और ज्योंहि स्वर्णिम क्षण आये, उस महान विभूति के दिव्य दर्शन कर मुझे जो अनुभूति हुई। वह शब्दो की क्षमता के बाहर का विषय है।

मै अपनी किस्मत की सराहना करती हुई गौरव का अनुभव करती हू कि मुझे ऐसे महान् साधनामय, सत्यमय, समतामय, महायोगी आचार्य श्री की चरण-शरण प्राप्त हुई। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से मै इस महान विभूति को पहचान पाई। आप श्री जी का नाम लेते ही भक्तो के कष्ट काफूर हो जाते है। जन्मो-जन्मो का कर्म रोग मिटाने मुझे सयम दान दिया। आपका नाम लेते ही अद्भुत शक्ति मिलती है, आत्मबल जाग उठता है। हे साधना पुरुष! आखें आज भी आपको ढूढ रही हैं। पार्थिव शरीर नही रहा पर आप श्री जी के आदर्शों का, सिद्धातो का, गुणो का वह प्रेरक जीवन सदा हमे साधुमार्ग की ओर प्रेरित करता रहेगा।

दीपक बुझा प्रकाश देकर,
फूल मुर्झाया सुवास देकर।
टूटा तार भी सुर बहाकर,
तुम चले पर नूर प्रकटाकर॥

अनन्त उपकार है आपका कि आपने मेरे जीवन की डोर निर्लेपता के निर्मल नूर, ज्ञाननिधि, अद्वितीय आत्म साधक युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा के सशक्त हाथो मे सौपी है, जो हमे निश्चित ही चरम उत्कर्ष तक पहुचाने मे सहयोगी हैं। आचार्य श्री रामेश की हर आज्ञा प्राणो से बढ़कर है। आपके चरणो मे वदन-अभिवदन।

नाना पार लगाते हैं

आशीष ललवाणी

शुद्धमन से गुरुवर का ध्यान जो लगाते हैं
नाना गुरु उनको सदा भवपार लगाते है ॥टेर॥
नाना गुरुवर तो समता के दाता हैं।
समभाव २ में रहना जन जन को बताते है।१।
नाना गुरुवर तो संयम की मूरत है।
त्याग तप २ संयम का पाठ पढ़ाते है।२।
नाना गुरु तो करुणा के सागर हैं।
अहिंसा क २ उपदेश से सच्ची राह दिखाते है।३।

नई लाईन, गंगाशहर

जन-जन के वन्दनीय

जीवन-उपवन को कभी सावन-भादो की शीतल समीर परम आल्हादित करती है, तो कभी ग्रीष्म ऋतु की तेज तपती हुई लूए दिल को दहला देती हैं। कभी खुशियो का ढेर इठलाता हुआ हमारे सामने होता है, तो कभी दुखो का पहाड़ टूट पड़ता है। कभी उतार आता है तो कभी चढ़ाव, कभी अधकार तो कभी प्रकाश, कभी आशा और कभी निराशा। इस द्वन्द्वात्मक जगत मे अनचाहा भी नियति की डोर मे बधकर सामने आ जाता है।

मन मे विश्वास तो अभी तक नही हो रहा है कि मेरी जीवन नैय्या के पतवार, आस्था के आधार, सद्‌गुण मोतियो के हार, हुक्म सघ की आन, आचार्य भगवन् हम सभी को छोड़कर अनन्त में समाहित हो गये।

आज हम किस सूर्य को स्मृतियो मे ला रहे है। मेरा तात्पर्य उस सूर्य से नही जो प्रातकाल की स्वर्णिम बेला मे उदित होकर लोक का अधकार नष्ट कर सध्या बेला मे पुन अस्ताचल की ओर चला जाता है, अपितु मेरा तात्पर्य उस सूर्य से है जो अधकार मे भटके पथिक को सन्मार्ग दिखलाने वाला है, दिव्य प्रकाश प्रदान करने वाला है। इस दिव्य सूर्य का प्रकाश युगो तक हमे सन्मार्ग सुझाता रहेगा।

विश्व वाटिका मे अनेक पुष्प विकसित होते हैं जिनमे से कुछ पुष्प शहीदा के काम आ जाते है तो कुछ सज्जनो के गले का हार बनकर शोभा प्राप्त करते है, तो कुछ डाली से गिरकर अपने जीवन को समाप्त कर देते हैं, कुछ देव चरणों मे समर्पित हो जाते हैं। कुछ पुष्प इन सभी से भिन्न प्रकार के होते हैं और वे ही सच्चे पुष्प कहलाते हैं जो दुनिया के लिए अपना सर्वस्व लुटा देते हैं तथा सम्पूर्ण विश्व को अपनी सुवास से सुवासित कर देते हैं। हुक्म वाटिका मे आचार्य भगवन् भी ऐसे ही पुष्प थे जो हमारे बीच भले ही न रहे लेकिन स्वय के सद्‌गुणो की महक से सपूर्ण विश्व को भर दिया और अपना नाम अमर कर गये। जैन, अजैन जाति, कुल देश को ही नही अपितु सभी को उन्नत बनाया, उन्हे कुव्यसनो से दूर कराया।

आप श्री के बिना हमारा जीवन गध हीन पुष्प, नाविक हीन नाव, डोरहीन पतग के समान हो गया।

अन्त मे यही कामना है कि आचार्य भगवन् जहा भी पधारे है, भव शृखला को तोड़कर अतिशीघ्र सिद्धत्व पद को प्राप्त करे।

❑ साध्वी श्री प्रीति सुधा श्री जी

चिन्तन का चिन्तामणि

ओ मेरे जीवन बगिया के माली,
पाई थी तुमसे ही खुशहाली ।
अनन्त उपकार है मुझ पर तुम्हारे,
अर्पण करती हू, सुमनाजली ॥

आचार्य भगवन् का मौलिक चिन्तन जगत की गहराई का उद्घाटन करता है। उनकी मौलिक विचार धाराए एव साहित्यिक उद्भावनाए आत्मिक उत्थान के दिशा निर्देश हैं। आप श्री का जीवन विकास का मूल मत्र था। आप श्री अध्यात्म के प्राण थे। उनका अध्यात्म-चिन्तन जग-जीवन को प्रकाश देता है। कठोर साधना सप्राण थी। जीवन आध्यात्मिक और अनेकान्तिक अनुभूतियो से भरा हुआ था। प्रवचन शैली कर्ण कुहरो को छूती हुई अन्तर को झकझोर देती थी।

गुरुदेव की मधुर मुस्कान जगल मे भी मगल कर देती थी। आधि, व्याधि और उपाधि से दूर रखने वाले आप श्री के दर्शनो से अधे को नेत्र, डूबते को किनारा प्राप्त करवा देता था। पापी से पापी आपकी मेहर नजर से पावन बन जाते। वाणी का माधुर्य हर पीड़ा को हरण करने वाला था। अति सक्षिप्त मे कहें तो आपका हर कार्य चतुर्विध सघ को नई दिशा प्रदान करता था।

बात वीर स २०५५ की है। जेठ का माह गुरुदेव का विहार चित्तौड़ से दाता की ओर हो रहा था। दर्शन हेतु रेल्वे पुलिया के नीचे मै गुरुणी मैय्या के साथ खड़ी थी। आचार्य श्री फरमा रहे थे, सतियाजी आप यही से पधार जावें। जल्दी जाना, सेवाभावी प्रकाश मुनिजी तथा चन्द्रेश मुनिजी को जल्दी भेजना। मार्ग कम है फिर भी धूप बढ़ रही है, समय पर पहुचना ही ठीक है। मुनिद्वय आवें उनके साथ भाई।' मै विचार कर रही थी कि क्या मार्ग सतों को मालूम नही है। कोई २०साल के दीक्षित हैं, कोई २५ साल के दीक्षित हैं। फिर भी गुरु का वात्सल्य कम नही होता। गुरु ससार की सर्वोत्तम शक्ति है। कामना का कामधेनु, चिन्तन का चिन्तामणि है। आज शरीर से हमारे मध्य न रहे किन्तु उनके द्वारा प्रदत्त अध्यात्मरूपी जीवन-सजीवनी हमारे पास है। ऐसे अनन्त अनन्त उपकारी गुरुदेव को मेरी भावभीनी श्रद्धाजलि।

प्रेषक सुमिता ममता बोथरा

❀

❑ साध्वी अनुपम श्री जी

गुरुदेव समयज्ञ थे

अकथ अनुदान भरा तेरा जीवन,
गुरुवर हम कभी भूला नही पायेगे ।
गुरु राम मे लख मूरत तेरी,
नाना तव दर्शन नित-नित पायेंगे ॥

किसी महान् व्यक्तित्व के असीम गुणो को ससीम शब्दो की परिधि म पिरोना बड़ा कठिन होता है और उससे भी ज्यादा कठिन होता है गुरु जैसे महान् व्यक्तित्व को पिरोना। ऐसे गुरु समता विभूति मेरे आराध्य भगवन् का समग्र जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी था, उनका सपूर्ण जीवन गुणो से भरा खजाना था।

एक छोटे से ग्राम दाता म जन्मे गुरुदेव हृदय से भी दाता थे। वे केवल कहने के ही नाथ नही बने बल्कि एक लाख से ऊपर दलित पतित, दुखी आत्माओ को उन्होंने सहर्ष गले लगाया। उन्हे धर्म का सुपथ बताकर अपना बनाया। इसी का सुखद् परिणाम था कि समग्र जैन समाज ने उन महामहिम को समवेत स्वर से धर्मपाल प्रतिबोधक' की उपमा/विशेषण से उपमित किया।

वे पूज्य गुरुदेव जिन्हें सस्कारो की अमीरी जन्म के साथ ही मिली थी, जो गुरु गणेश के सुखद् सानिध्य मे विस्तृत रूप से खिली-

जिनके जीवन का शुरू हुआ प्रभात,
लेकर सद् सस्कारो की सौगात ।
मा शृगारा ने शृगारित किया जिसे,
ऐसे गुरु नाना की क्या बात करू ॥
कुशल जौहरी की भाति जिसने,
किया था गुरु गणेश का साथ ।
समता समीक्षण ध्यान का दे सदेश,
नाना बने चतुर्विध सघ के नाथ ॥

ऐसे यशस्वी, वर्चस्वी, तेजस्वी, मनस्वी, ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी महामहिम आचार्य श्री नानेश पूज्य गुरुदेव का सत् सानिध्य मुझे प्राप्त हुआ और मै स्वय को नानेश के नन्दन वन मे पाकर पुलकित हो उठी और सराहना करने लगी अपने प्रबलतम पुण्य की। पर हाय विडम्बना यह क्या हुआ जिनकी प्रत्यक्ष सन्निधि की हमे परम् आवश्यकता थी वह पुण्य पुरुष चल दिए हमे छोड़कर ।

छीन नही सकता कोई महाकाल हमसे,
उस शाश्वत चैतन्य रूप चिराग को ।

जिनकी समता लौ जल रही है जन-जन मे,
वे पूर्ण करते हैं आज भी हर मुराद को ॥

ऐसे विशाल व्यक्तित्व के धनी मेरे गुरुदेव जिन्होंने जिंदगी के अतिम दम तक हमे दिया ही दिया है । उन्होंने समता पूर्वक जीना ही नही अपितु समता पूर्वक मरना भी सिखाया ।

हम नाज है कि हमारे गुरुदेव ने गरिमायुक्त, गौरवशाली श्रेष्ठ पण्डित मरण का वरण किया। इससे बढ़कर साधना का सुखमय नवनीत और क्या हो सकता है ?

उन्होंने हर कार्य को बड़ी कुशलता से अपने दृढतम आत्मबल से पूर्ण किया ।

कैसे हो करुणा मूर्ति के अनन्त उपकारो का वर्णन,
प्रतिपल सदा करती हू, गुरु नाना नाम सुमिरण ।
परम कृपा से पायी मैने, सम्यक् ज्ञान किरण,
उनकी कृपा से गुरु राम मिले हैं तारण तिरण ।

सम्प्रति बाल ब्रह्मचारी, चारित्र चूड़ामणि शास्त्रज्ञ तपो तजस्वी, नवम् पट्टधर आचार्य प्रवर श्रद्धेय श्री रामलाल जी म सा इस चतुर्विध सघ का ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, सयम का उद्बोधन देकर तिण्णाण-तारयाण रूप वीतराग वाणी को चरितार्थ कर रहे हैं, यह समता विभूति आचार्य श्री नानेश की समयज्ञता है ।

जरा देखें गुरु राम की लघु काया मे,
गुरु नाना ही गुण रूप समाये है ।
उस कर्ता की अनुपम कृति में देखो,
गुरु राम हमे हरदम सुहाये हैं ॥

पूज्य गुरुदेव नानेश हमसे कभी दूर नही । हम समझें आगमोक्त सूक्ति एगे आया' (आत्मा एक है) । तद् रूप से गुरुदेव सदैव हमारे सन्निकट हैं । यह सत्य है कि द्रव्य रूप से गुरुदेव आज हमारे से दूर चले गये हैं, मुक्ति नगर की सुरम्य सुखद् यात्रा हेतु ।

वे महापुरुष अपनी यात्रा के चरम छोर को शीघ्रातिशीघ्र सप्राप्त करे, यही हमारी हार्दिक अभीप्सा है और कामना है वर्तमान आचार्य प्रवर नवम् पट्टधर, पूज्य गुरुदेव रामेश की सुखद छत्र छाया तले परम ज्ञान को प्राप्त करके अपने जीवन-पुष्प को सुवासित करे । यही हमारी अनन्त अनन्त आराध्य, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, पूज्य गुरुदेव नानेश के प्रति सच्ची भावाञ्जलि होगी ।

नाना तू कहा खो गया

वै जयश्री

यह दिल मेरा रो रहा,
चहुं दिशा में नाना को ही ढूंढ रहा ।
कहां छुप गई वह विरल विभूति,
जिसे सारा जहाँ चाहता था ।
फिर भी हो गया अलविदा
कर गया जहान् सूना सूना,
कहीं नजर नहीं आता,
जिस पर दृष्टि मेरी टिक जाए ।
और हम निहाल हो जाएं,
इस भीड़ भरी दुनिया में,
तुम सा नहीं कोई सानी
रिक्तता शून्यता नजर आए
गुरुवर अब तुम्हें कहां ढूंढ पाएं ।

देवो के अर्चनीय

महापुरुषो का जीवन एक आदर्श जीवन होता है। उनका जीवन पावन होता है, वह हमारे लिए प्रेरणा स्वरूप होता है। स्व-पर कल्याण की भावना उनकी रग-रग मे कूट-कूट कर भरी रहती है। उनकी वाणी मे मिठास, नजरो मे वात्सल्य, पर हेतु हार्दिक सहानुभूति एव असीम स्नेह होता है।

उनका ज्ञान सागर सम गभीर था, दर्शन चाद सम निर्मल, चारित्र रवि सम उज्ज्वल, हृदय नवनीत सम कोमल, गेहुवा वर्ण, सरसिज नेत्र अर्थात् उनका सारा जीवन ही गुणागार था। उनकी कथनी-करनी एक सरीखी थी। जैसा वे कहते थे, वैसा वे करते थे और जैसा वे करते थे, वैसा कहते थे। जो स्थान गगन मे प्रथम नक्षत्र को, माला मे प्रथम मोती को, उपवन मे प्रथम सुमन को होता है, वही स्थान हमारे पूज्यनीय श्रद्धेय आचार्य भगवन् का था। वे लोकपूज्य, लोक वन्दनीय, जन-जन के श्रद्धा केन्द्र सरल, सरस, विनम्र, मधुर तथा गभीर विचारो के धनी थे।

उपवन मे हजारो की सख्या मे फूल खिलते हैं, सभी के रग, रूप, सौरभ अलग-अलग होते है। जिसका सौन्दर्य सबसे अधिक विलक्षण होता है, दर्शको का ध्यान उसी पर केन्द्रित होता है और लोग उसी फूल को लेने, देखने तथा घर मे लगाने को लालायित रहते हैं। उसी प्रकार ससार रूपी उपवन मे जिस मनुष्य मे अद्भुत गुण सौरभ, परोपकार का माधुर्य और शील सदाचार का सौन्दर्य विलक्षण होता है ससार उसी की ओर आकृष्ट होता हैं, उसे ही अपने शीश एव नयनो पर चढ़ाता है। सूर्य हमेशा पूर्व दिशा मे उदित होता है और पश्चिम मे अस्त हो जाता है किन्तु चेतना सूर्य के लिए ऐसा कोई नियम नही है। महापुरुष इस धरती पर किसी भी दिशा मे प्रगट हो सकते है उनके लिए दिशा का कोई प्रतिबध नही है। वस्तुत तत्व दृष्टि से देखा जाय तो दुनिया मे महापुरुष कभी अस्त होता ही नही, क्योंकि उसके सजीव आदर्श मानव मन मे अक्षुण्ण रहत हैं।

जिसने त्याग से रोग को योग से भोग को, समता से ममता को, क्षमा से क्रोध को, विनय से अभिमान को सयम से स्वच्छद प्रकृतियो को जीतने का आजीवन प्रयास किया, सयम की साधना मे, जप-तप की आराधना मे जा हर वक्त सलग्न रहा, ऐसी महाविभूति आचार्य नानेश वि स २०२८ जेष्ठ माह का अन्तिम सप्ताह कड़ाके की धूप, मदारिया का पहाड़ी क्षेत्र भीषण कष्टो को सहते हुए कठिन तप की आराधना करते हुए देवगढ़ पधारे। लगभग तीन माह से निरन्तर कभी डेढ़ तथा कभी दो पोरसी होती थी। लम्बे विहार और यह कठोर तप, कोमल तन को मजूर नही था, तनिक भी प्रतिकूल परिस्थितियो मे पुष्प मुरझाये बिना नही रहता तद्वत आचार्य श्री नानेश की शारीरिक स्थिति बन जाती थी किन्तु उनका आत्मबल बड़ा मजबूत था, यह हमने उनके जीवन के अतिम क्षणो तक अच्छी तरह से देखा है। सत-सती एव श्रावक-श्राविका वर्ग अर्थात् चतुर्विध सघ अनुनय विनय कर कहते थे कि गुरुदेव आखिर शरीर को इतना कठोर दण्ड क्यो ?

आचार्य भगवन् दोपहर के समय विराजे थे, सत सती वर्ग तथा मुमुक्षु वर्ग वाचना कर रहे थे इसी बीच मे उस देवाणुप्रिय ने सत सती वर्ग को सबोधित करते हुए कहा, आप लोगो ने तो आज दो पोरसी की होगी कारण

प्रवचन देर से उठा। तत्काल एक श्रमणीवर्या ने पूछा, 'गुरुदेव आप श्री का स्वास्थ्य तो अनुकूल है न ? गुरुदेव ने फरमाया थोड़ा नरम तो है किन्तु कल मै लगभग सुबह चार बजे ध्यानावस्था म था कानो मे आवाज आई आप लम्बे समय से दो-दो पारसी करके विराजते हो, यह उपयुक्त नही है। मैंने सामने देखा आचार्य जवाहर खड़े थे। मुझे मना करते हुए क्षण भर मे आखो से ओझल हो गये।

आज ठीक चार बजे के समय ध्यान मे आवाज आती है कि कल क्रातिकारी युगद्रष्टा आचार्य जवाहर पधारे थे, मेरा तुम्हें आज कहना है कि पोरसी के क्रम को गौण कर दीजिए। शरीर आपका नही चतुर्विध सघ का है। इसको समालना आपका कर्त्तव्य है। स्वास्थ्य आपका बड़ा कोमल है। आप इस प्रकार की खीचतान मत कीजिए। गुरुदेव फरमाने लगे, मै आखे खोलकर सामने देखता हू तो शाति क्राति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा सामने खड़े है, देखते देखते कुछ ही क्षणो मे वही एक दिव्य रूप खड़ा है, हाथ जोड़ अनुनय कर रहा है कि आतमन् हमारा विनय स्वीकार कीजिए। हम विनय पूर्वक अर्ज करते हैं। आप श्री को सघ को अभी तक बहुत कुछ देना है। यू कहते हुए वह आवाज अदृश्य होती है। मुझे यह सुनते हुए शय्यभवाचार्यरचित दशवैकालिक सूत्र की प्रथम गाथा याद आ रही-

देवावित नम सति जस्स धम्मे सया मणो'

ऐसे एक नही अनेक उदाहरण श्रमण श्रमणियो से सुने जा सकते हैं। ऐसे महामहिम आचार्य भगवन् को मेरी भावभीनी अञ्जलि।

णाणेस पचयथुई

मुनि रमेश

'णाणेस' णाम सूरीसो सुरालये विरायइ।
सुयं मया जया अज्ज तया हं पीडिओ परं ॥१॥

नानेश अर्थात् नानालालजी म नामक आचार्य भगवान देवलोक में विराजमान हैं ऐसा आज जब मैंने सुना तब मुझे अत्यधिक पीड़ा हुई अर्थात् मैं खद खिन्न हुआ हूं।

रायत्थाणाम्मि पंतम्मि णयरो मेड़ता इय।
तत्थ ताण मया पत्तं पढमं दंसणं सुहं ॥२॥

राजस्थान प्रान्त में मेड़ता नामक नगर है। वहां मैंने उनके अर्थात् आचार्य नानेश जी म के प्रथम प्रशस्त दर्शन प्राप्त किये।

गणेस यरियाणं ते सीसा आसि पहावगा।
संता दंसा परं सोमा जिण सासण भूसणा ॥३॥

वे अर्थात् आचार्य नानालालजी म आचार्य गणेशलालजी म के शान्त, दान्त अत्यन्त सौम्य जिन शासन के भूषण रूप प्रभावशाली शिष्य थे।

तम्मि काले मया दिठो सरला निम्मला परं।
ते सहावेण गंभीरा तवस्सिणो मणस्सिणो ॥४॥

उस समय में मैंने देखा, वे स्वभाव से अत्यन्त सरल निर्मल गम्भीर मनस्वी और तपस्वी थे।

उवज्झायो महापण्णो संपुज्जो गुरु पोक्खरो।
ताण सीसो रमेसोऽहं वंदामि तं मुणीसरं ॥५॥

उपाध्याय महान् प्रज्ञावाले परम पूज्य गुरुदेव पुष्कर मुनिजी म हुए हैं। उनका शिष्य मैं रमेश मुनि हूं। मैं उनको अर्थात् आचार्य नानालालजी म सा को वन्दन करता हूं।

सच्चे पूज्यपाद के अधिकारी

उद्यान मे पुष्प विकसित होता है, आसपास का वातावरण सुवासित हो जाता है। धरा पर सूर्य देवता का अवतरण होता है तो सघन अधकार विलुप्त हो जाता है। उसी प्रकार इस पृथ्वी तल पर ऐसे यशस्वी नर रत्नो का आविर्भाव होता है कि ससार का दुख और दारिद्रय समाप्त हो जाता है। ऐसे यशस्वी नर रत्नो मे समता विभूति आचार्य श्री नानेश भी एक थे। जन-जन की श्रद्धा के एक मात्र केन्द्र, घट-घट के अन्तर्दर्शक, भव्य जीवो के पथ प्रदर्शक का ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए जहा भी पदार्पण होता वहा नाना गुणो के पुजस्वरूप नाना हृदय मे नाना विराजमान हो जाते।

गुरुदेव का सम्पूर्ण जीवन अलौकिक गुणो का पुज था, जिस प्रकार मिश्री को कही से भी चखा जाय, वह मिठी ही लगती है। उसी प्रकार गुरुदेव के जीवन का आदि, मध्य या अन्त देखें वह अद्वितीय ही दिखाई देता है। व्यवहार मे गुरुदेव मिश्री के समान मृदु थे। चरित्र मे मिश्री के समान स्वच्छ थे। इसी व्यावहारिक शुद्धता, चारित्र पालन की उत्कृष्टता एव सयमी जीवन की निर्मलता के कारण वे जन-जन के मन मस्तिष्क मे छा गए। बाल हो या आबाल,साधु हो या साध्वी, किसी की अवहेलना, निन्दा तो वे करना जानते ही न थे, वे तो दशवैकालिक सूत्र के नवें अध्ययन के अनुसार पूज्यपाद के अधिकारी थे। जैसा कि कहा गया है-

तहेव डहर च महल्लग वा इत्थि पुम पव्वइय गिहिं वा।
णो हीलए णो विय खिसइज्जा थभ च कोह च चए स पुज्जो ॥

गुरुदेव के जीवन के कण-कण मे, मन के अणु-अणु मे सरलता, सहजता और निष्कपटता थी। गभीर गिरा के यशस्वी कवि ने भी महात्मा का परिचय देते हुए यही कहा है -

'मनस्येक, वचस्येक, कर्मण्यस्ये क महात्मानाम्।'

इन अर्थों मे गुरुदेव का जीवन सच्चे महात्मा का जीवन था। उनके जीवन मे त्याग था किन्तु त्याग का दर्प नहीं ज्ञान था, किन्तु ज्ञान का अहकार नहीं विनय था। ऐसे साहजिक साधक ने अपने दिव्यज्ञान से ऐसा ही अद्भुत अलौकिक, अद्वितीय दीपक प्रज्वलित किया है, जिसके प्रकाश मे जन-जन प्रकाशित हो रहा है। ऐसा ही अद्वितीय दीपक है, वर्तमान अनुशास्ता आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा। उनका जीवन भी विशाल और विराट है। उनकी साधना की गहराइयो को यह अज्ञ मन छू नही सकता, उनके जीवन की ऊचाइयो को यह माप नही सकता किन्तु उपकारी गुरुदेव नानेश क उपकारो को विस्मृत नही किया जा सकता। जिनके एक दो नही अनन्त उपकार हैं। मुझे इस ससार सागर से उबारा, सयम रत्न प्रदान किया, उस रत्न को पाकर मेरा मानस सुखद अनुभूति कर रहा है।

तीन वर्ष पूर्व गुरुवर्या श्री जी की पावन सन्निधि मे बड़ीसादड़ी मे वर्षावास था, पूरे वर्षावास मे असाता वेदनीय कर्म का उदय रहा। डॉक्टर, वैद्यादि से चिकित्सा करवाई किन्तु स्वास्थ्य मे सुधार नही हुआ। चातुर्मास काल समाप्त हो गया, विहारादि में भी स्वास्थ्य की प्रतिकूलता प्रतीत हो रही थी, किन्तु मन मे उमग थी, उत्साह था। युवाचार्य भगवन (वर्तमान आचार्य भगवन) निम्बाहेड़ा से विहार कर निकुभ पधार रहे हैं। महापुरुषो के दर्शन, सेवा तथा

सानिध्य का लाभ प्राप्त होगा, हृदय में अपूर्व श्रद्धा थी कि महान आत्मा की मगलमय कृपा दृष्टि से मागलिक श्रवण से रोग भी काफूर हो जायेगा। वस्तुत यही हुआ रोग छूमतर हो गया, स्वास्थ्य मे समाधि प्राप्त हुई।

ऐसे परमाराध्य देव के विषय मे स्वर्गीय गुरुदेव फरमाते थे इनका तपो-पूत जीवन आचार्य हुक्मीचद जी म सा की तथा प्रवचन प्रभा आचार्य जवाहर की याद दिलाती है।

ऐसे सघ सिरताज से यह हुक्म सघ दिनदूनी, रात चौगुनी उन्नति करेगा और गुरु नाना के अरमानो को पूर्ण करेगा इसी मगल मनीषा के साथ नवोदित आचार्य भगवन् के चरणो मे कोटि-कोटि वदना

प्रेषक मु सुमिता ममता बोथरा

सयम का ताज दिया था

राष्ट्रसत गणेश मुनि शास्त्री

जिनका जीवन परिमल साधना के सूत्र से सधा का सधा रहा।
संयम की कठोर चट्टान पर समता का स्रोत अनवरत बहा।
आचार्य श्री नानालाल जी महाराज सचमुच एक युगपुरुष थे,
उन्होंने जो पाया, आचरित किया वही जग के सन्मुख कहा॥

आचार्य नानेश समय की गति को ठीक ठीक जानत थे।
प्रतिपल को सार्थक करने की बात मन में ठानते थे।
जप तप स्वाध्याय में निमग्न रहे जब तक जिये,
क्योंकि वे हर सांस सांस का मूल्य पहचानते थे॥

आचार्य नानेश ने शरण में आये पतितों को पावन किया था।
अनेकानेक मुमुक्षु आत्माओं को संयम का ताज दिया था।
उनकी पारखी निगाहों में हर नर नारायण का रूप था
तभी तो धर्मपालों को प्रतिबोधित कर अपना लिया था॥

आचार्य नानेश जैन धर्म के एक दिव्य दिवाकर थे।
शांत दांत गम्भीर और गुण गरिमा के सागर थ।
उनका संयमी जीवन बाहर भीतर से एक का एक रहा
वे समता साधक ज्ञान दर्शन के सच्चे उजागर थे॥

आचार्य नानेश की मधुर स्मृतियां मानस में चमकती रहेंगी।
एक महानायक की कहानी दुनिया सतत् कहती रहेगी।
मुनि गणेश करता है अर्पित उन्हें श्रद्धा सुमन भीगे नयनों से
उनके सद्गुणों की अजस्र धारा युगों युगों तक बहती रहेगी॥

❑ साध्वी चन्दना श्रीजी म

अतर्प्रज्ञ

आचार्य भगवन् के महाप्रयाण के समाचार सुनकर मन स्तब्ध रह गया। गुरुदेव हमे छोड़कर चले गये। अहो कैसी विरल विभूति थी।

गिरते हुए व्यक्ति को सहारा दिया तुमने।
डूबते हुए व्यक्ति को किनारा दिया तुमने॥
पालन महाव्रतों का करते व कराते थे।
भ्रमित व्यक्ति को सही ज्ञान दिया तुमने॥

आचार्य श्री नानेश का जीवन मेरू शिखर सम उच्च, शरदकालीन चन्द्रिका की ज्योत्स्ना वत् धवल एव प्रातःकालीन उषावत मोहक होता था। उत्फुल्ल नील कमल के समान स्नेह, स्निग्ध, निर्मल आखें, दीर्घ तपस्याओ से दैदीप्यमान भव्य ललाट कर्मयोग की प्रतिमूर्ति थे आराध्य देव। उनका बाह्य जीवन अत्यन्त नयनाभिराम था।

आप श्री जी का आभ्यन्तर जीवन मनोभिराम था। उदार आखों के भीतर से बालक के समान स्नेह सुधा छलकती थी। जब भी देखिये वार्तालाप मे सरस एव शालीनता दर्शित होती थी। आपकी मधुर वाणी मे अद्‌भुत चुम्बकीय आकर्षण था जिससे कि अपार जन समूह दर्शनार्थ उमड़ पड़ता था। आप श्री के गुणो का वर्णन करने मे न लेखनी समर्थ, न वाणी। ऐसे उर्जस्वल व्यक्तित्व के धनी अद्‌भुत महापुरुष पिता के समान परम पूज्य शिक्षक और गुरु की सफ्ल भूमिका को निभाते हुए अचानक हम सबको छोड़कर चले गये।

आचार्य प्रवर श्री नानेश की मेरे ऊपर अनुपम कृपा दृष्टि रही जब भी कोई सकट के बादल मडराते कि जय नानेश जय गुरु नाना का नाम स्मरण करते ही तिरोहित हो जाते। ऐसी ही मेरे जीवन की एक घटना है-

पिछले वर्ष शरद ऋतु मे विहार यात्रा चल रही थी, प्रतापगढ़ के पास छोटा सा गाव है, बारावरदा। रात्रि के समय शीत परीषह से बचाव के लिए दो शटर वाली छोटी सी दुकान मे निद्राधीन थे। तभी मध्य रात्रि का समय हुआ। बाहर से दो चार व्यक्ति आये एक सटर के बाहर ताला लगा था दूसरा भीतर से बन्द था। ताला तोड़ने का बहुत देर तक उनका प्रयास चलता रहा। मै घबरा गई, यदि ताला खुल जाएगा तो क्या होगा। सयमी जीवन की सुरक्षा कैसे होगी ? परतु मन-मस्तिष्क मे गुरुदेव की स्मृति आयी जय गुरु नाना जय गुरु नाना जाप करने लगी। हे गुरुदेव तू ही सहारा है। आखिर गुरुदेव ने अर्जी सुनी ताला नही टूटा।

वास्तव मे गुरुदेव महासागर के यात्रा पथ पर आगे बढ़ते पोत की तरह इस ससार सागर मे बहते चलते मानवो के लिए प्रकाश स्तभ थे। उनकी स्मृति को अशेष नमन।

❑ साध्वी श्री विरक्ता श्रीजी

विराट व्यक्तित्व के धनी

नत-मस्तक हो मै कहू, गुरुवर का उपकार ।
उऋण मै नही हो सकती हू, मन बोले बारम्बार ॥

महापुरुषो की गरिमा और महिमा अपरम्पार है । महापुरुष का जीवन विराट होता है । महापुरुषो का जीवन समुद्र की भाति गभीर होता है ।

मेरे अन्तर मानस मे अथाह भावो का समुद्र लहलहा रहा है । आचार्य श्री नानेश मेरे आस्था पुज गुरु थे । आचार्य भगवन् की साधना को मैंने निकट से देखा है । अत मै अपने गुरु भगवन् के बारे मे सपूर्ण आत्म विश्वास के साथ कह सकती हू । पूज्य श्री ज्ञान के भडार थे, दर्शन के सुमेरू थे, चारित्र के चूड़ामणि थे । उनके जीवन की स्मृतिया मेरे जीवन के कण-कण पर अकित है ।

आप श्री का प्रभाव ऐसा लोकोत्तर था कि आप श्री जी के नाम मात्र से भक्तो के सकट दूर हो जाते थे । उनके जीवन मे इतनी विनम्रता थी कि इतने महान् आचार्य होते हुए भी वे हमेशा यही फरमाया करते थे कि मै तो नाना हू नाना । आप श्री जी महान् होते हुए भी अपने आपको छोटा मानकर चलते थे ।

आचार्य प्रवर अनत श्रद्धा के केन्द्र थे । आचार्य प्रवर गभीर विचारक थे, दीर्घ दृष्टा थे, वे सगठन के सजग प्रहरी थे, उनका जीवन बहुआयामी था, वे जीवन के हर क्षण सजग, सतर्क रहते थे ।

आज मेरा अन्तर मानस ऐसे महापुरुष के वियोग से व्यथित हो रहा है । आज मेरे ज्योति पुज आचार्य प्रवर अपने पार्थिव शरीर से भले ही विद्यमान नही है पर उनका यशपुज महिमावत व्यक्तित्व सदा मेरे स्मृति पटल पर अजर-अमर है ।

आचार्य श्री नानेश ने नवम् पट्टधर के रूप मे आचार्य श्री रामेश को चतुर्विध सघ को प्रदान किया । उनमे भी सवाई समता रही है । यह मैने अपने जीवन मे अनुभव किया है । वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म सा से यही हृदय से प्रार्थना करती हू कि आप श्री जी की छत्र छाया, कृपा दृष्टि सदैव हम अज्ञ बालाओ पर बनी रहे ।

आचार्य श्री नानेश ने जिस अपार विश्वास के साथ आप श्री जी को यह गौरवशाली पद प्रदान किया है उसे आप श्री जी अपनी प्रखर प्रतिभा, प्रज्ञा के द्वारा सघ की महिमा और गरिमा मे द्वितीया के चाद की तरह अभिवृद्धि करते रहें, इस आशा और विश्वास के साथ मे मै अपनी अनत श्रद्धा समर्पित करती हू ।

❑ महासती श्री सुवर्णा जी म सा

ससार सहज सपनो की माया

जो महापुरुष आत्मा को शाश्वत समझ लेते है वे मौत का नाम सुनकर भय व 'दहशत' की बजाय आनद का अनुभव करते हैं। उनके लिए मरण ही जन्म का रूप लेते हुए महोत्सव बन जाता है। शरीर की नश्वरता व मौत की अपरिहार्यता को प्रभावी अदाज मे रेखाकित करते हुए हमारे अनत आराध्य ने मरण का वरण किया। लोग सभी तरह से विकारों को जीतकर, जीते ही मौत को प्राप्त कर लेते हैं। शरीर के त्यागने के साथ ही उसका 'द्रव्यमरण' जरूर होता है, पर भाव मरण नही होता है। शाश्वत सत्य को स्वीकार करके ही ज्ञानी जन अपने जन्म को मरण एव मरण को जन्म मानते हैं। उनकी नजर मे ससार मरघट' व श्मशान 'बस्ती' होती है क्योंकि जहा लोग मरते हैं, वही तो मरघट है।

कहा है कि- ससार सहज एक सपने की तरह, सपनो की माया है, जो कभी रूलाता है तो कभी हसाता है। अत ज्ञान व विवेक का उपयोग करने वाली आत्मा कभी विचलित नही होती है। जिनके जीवन मे जन-जन के लिए नई दिशा, जिनके पोर-पोर मे समता का नाद व सयम साधना का सगम था, ऐसे महापुरुष का भव-भव मे सहयोग मिलना अति दुर्लभ है।

शिल्पकारी सम थे गुरुवर गढ़-गढ़ मुझे सुधारा,
अनगढ़ पत्थर सम था जीवन तुमने इसे निखारा ।
फूलो के सग काटे भी महक जाते हैं,
सावन के महीने मे मरूस्थल भी चहक जाते हैं ।
जो कर देते अपनी हर धड़कन शासन पर कुर्बान,
इतिहास मे सदा-सदा के लिए वे अकित हो जाते हैं ॥

प्रेषक दीपक साखला

विकाल मन खोज रहा है

ललिता चोरड़िया

किस दिशा में चले गये गुरुवर हमें छोड़कर
किस दिशा में बसे हो, गुरुवर हमे बिसार कर ।
जब जब याद आती है, गुरुवर मन रोता है,
चहुं दिश विकल आंखें खोज रही हैं, दौड़ दौड़कर ॥

-पसारी बाजार, ब्यावर (राज)

□ साध्वी पुष्पलता जी म सा

मुक्तिपथ के सबल

किसी चिन्तक की इन पक्तियो को पढ़ा- ससार मे सबसे बड़ा अधिकार त्याग और सेवा से मिलता है" । सेवा का भाव हृदय की विशालता का परिचायक है । आराध्य देव आचार्य श्री नानेश के जीवन मे सेवा की अखड लौ सदा जलती रही । जिसने सिर्फ सघ गृह को नही अपितु देहरी दीप की भाति अन्दर बाहर प्रकाश फैलाया । त्याग और सेवा का साकार स्वरूप बनकर आचार्य देव ने स्वामी सुधर्मा की पीठ का अधिकार बखूबी निभाया ।

मेरे मानस पटल पर सस्मरण की तस्वीर अकित है । मैं विरक्ति पथ पर चल रही थी । साम्प्रदायिक दायरे के कारण परिजनो का अवरोध दीक्षा पथ मे बना हुआ था । आचार्य देव और गुरुवर्या श्री जी का वर्षावास जन्मभूमि के प्रागण म ही था । समय अपनी गति से चल रहा था । आज्ञा पत्र प्राप्ति की आशा किरण नजर आ रही थी । सयोग की बात समझिये जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म सा के सत श्री प्रतापमल जी म सा एव साध्वियो का चातुर्मास भी वहा था । पिता श्री का कहना था दीक्षा इस सप्रदाय मे दूगा और मेरा मन मधुकर समता सिधु आराध्य आचार्य श्री नानेश की शरण मे सयम पराग का पिपासु था । एक दिन श्रद्धेय गुरुवर्या श्री जी दो साध्वियो के साथ उस स्थानक की ओर जा रहे थे । मैंने चरण वदन करके पूछा अभी आप कहा पधार रहे हो ? तब उन्होंने फरमाया पुष्पा तुम भी साथ मे दयापालो । मुझे वयोवृद्ध महासति जी बालकवर जी म सा की सेवा मे जाना है । आचार्य *भगवन का आदेश है, तुम शीघ्र पहुचो । अत मै वहा जा रही हू ।* इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी उस दृश्य की स्मृति सजीव-सी है । आचार्य देव के अन्तर म सेवा के प्रति कैसा अनुराग । व्याख्यान स्थल पर सहसा मुझे देखकर ज्योहि व्याख्यान पूरा हुआ पसीने से भीगी चादर सहित ही आचार्य देव ने वहा महासती श्री बालकवर जी म सा के समीप गुरुवर्या श्री जी को भी चेतावनी दे दी, देखो इनकी सेवा का पूरा ध्यान रखना ।' महान आचार्य पद का नेतृत्व सभालते हुए प्रत्येक आत्मा के प्रति कितना सौहार्द्र भाव । उन क्षणा की स्मृति से आज अन्तर श्रद्धावनत हो जाता है । उनकी इस सहृदयता के प्रतिफल स्वरूप ही परिजनो का भी हृदय परिवर्तन हो गया । मेरी आतरिक अभिलाषा सफल हुई । आचार्य देव ने स्वय के आचरण से सेवा पाठ पढ़ाया । भगवन् के पथ का अनुसरण करने वाली सेवा समर्पित महासती श्री गगावती जी म सा ने भी अपना जीवन सेवा सौरभ से महकाया । इस वर्ष उनके साथ ही वर्षावास का सौभाग्य प्राप्त हुआ । काल की चपेट से भला कौन बच पाया ? कुछ ही अवधि के अतराल से द्रय साधनाशील आत्माओ की कृपा छाया हम पर से उर्ध्वारोही हो गई । उनका अभाव हृदय को उद्वेलित करता है तथापि उनके गरिमामय जीवन का स्वरूप मुक्ति पथ हमारा घृतिरूप सम्बल है । सेवा की दीप्त रश्मियो से युक्त आपका आलोकमय जीवन हमारी राह प्रशस्त करता रहेगा ।

असीम अनुग्रह के प्रति हृदय सदा कृतज्ञता से प्रणत है, अमर पथ के राही भगवन पहुच शीघ्र मुक्ति सौध मे, यही मेरा श्रद्धा सुमन समर्पण है ।

❑ साध्वी अजना श्री जी म

कृपा निधान

भारतीय सस्कृति मे अजपाभ्यास पर प्राय समस्त धर्म परपराओ का चिन्तन मुखरित हुआ है। सत कबीरदास जी ने यहा तक कह दिया-

साइ सुमिरण साचे हृदय करे, जो कोई मन।
सत सुमिरण से देखो पावे, सुख राम धन॥"

हृदयतत्री मे ये शब्द गूजे वैसे ही बाल्यवय से ही अनुवाशिक सस्कारो के रूप मे हुक्म शासन के प्रति आस्था का बीजारोपण हो चुका था, उन्ही सस्कारो के फलस्वरूप आराध्य आचार्य देव नानेश के प्रति मेरी प्रगाढ़ आस्था प्रारभ से ही थी।

रायपुर (म प्र) म शिक्षण शिविर (छत्तीसगढ़ स्तरीय) का आयोजन हुआ। अबोध बच्चो को धार्मिक ज्ञान सस्कार देने हेतु पूज्य गुरुवर्या श्री जी का मुझे निर्देश मिला। उन बच्चो को पढ़ाने मे बड़ा आनन्द आ रहा था। बच्चों की बाल सुलभ चेष्टाओ पर मन बाग-बाग हो रहा था। मध्यान्ह मे लगभग तीन बजे बच्चों के स्वल्पाहार का समय हुआ, अचानक जोरो की आधी आई एव सभी मे हलचल मच गई।

सरल हृदय एक न हा बालक बोल उठा। आओ-आओ, हम सब 'जय गुरु नाना' का जाप करे। बच्चो के द्वारा जय गुरु नाना, जय गुरु नाना की धुन प्रारभ करते ही स्वल्प क्षणो मे ही आधी थम गई, इस बालक ने एक घटना सुनाई। मेरे पापा मद्रास जा रहे थे, अचानक टिकिट कही रखकर भूल गये, इधर टी टी आया, पापा ने सारा सूटकेश छान डाला, अपने पेट की जेब भी टटोल ली, पर टिकिट नदारद, चिन्तित हो उठे। इधर टी टी ने कुछ सख्ती बताई। तब पापा ने कहा भाई धैर्य रखो, मै स्वय सत्य का पक्षधर हू। टी टी कुछ शात हुआ। आसपास के यात्रियो का निरीक्षण करने लगा। इधर पापा एक धुन से जय गुरु नाना' का जाप करने लगे। मुश्किल से १०-१५ बार जय गुरु नाना बोले होगे कि अचानक उन्हे ऐसा अन्तर आभास हुआ कि अरे टिकिट तो तूने छोटी डायरी मे रखा है, और तू पेट सूटकेश, सभाल रहा है, शीघ्र ही डायरी निकाली उसमे टिकिट सुरक्षित पड़ा था। टिकिट चेकर भी आश्चर्य चकित रह गया। कहने लगा, यह जय गुरु नाना किस पीर पैगम्बर का नाम है। तुम नाम जपते ही चिन्ता मुक्त हो गये हो, मुझे भी यह मत्र दे दो। मै रात-दिन टन्सन मे रहता हू सो मै भी चिन्ता मुक्त हो सकू।" पापा जी ने कहा- लो तुम भी सीख लो, बस छोटा सा नाम है, मेरे आराध्य गुरुदेव का सब सकटो को दूर करने वाला है। उस टी टी ने घर का एड्रेस लिया। ६ महीने के बाद हमे खबर मिली वह लिखता है कि मै बड़े आनन्द मे हू। तुम्हारे गुरु अब मेरे भी स्वीकृत हो चुके हैं। छोटे से इस नाना नाम मे बड़ा चमत्कार है, मेरी उनके प्रति धनीभूत आस्था जागृत हो चुकी है। एक बार मुझे भी उस नाना गुरु दर्शन करना है '। पापा ने जब यह घटना हमे सुनायी तब से हमारे घर मे किसी भी देवी देवताओ की मनौती न करके सिर्फ जय गुरु नाना का ही जाप करते है और हर दुख से मुक्ति पा लेते हैं। उस श्रद्धानिष्ठ बालक की सारी बात सुनकर मेरा अन्तर हृदय मेरे आराध्य के प्रति विशिष्ट गौरव के अहोभाव से आपूरित हो उठा। क्लास का समय पूर्ण होने पर मै पूज्य

गुरुवर्या श्री जी के चरणो मे पहुची, वदना कर प्रतिलेखन की क्रिया मे सलग्न हो गई । अपनी छोटी बहिनो के माध्यम से मेरे कानो मे स्वर पहुचे कि " गुरुणी प्रवर एव सेवानिष्ठ पूज्य गगावती जी म सा चातुर्मास विषयक विचार विमर्श मे सलग्न है । आराध्य आचार्य भगवन् के आदेशानुसार सिंघाड़े जमा रहे हैं । मेरा मन पूर्व दिवस की चर्चा से आशकित था । श्री मुख से हम सभी को सकेत मिला कि मै किसी को भी कही भी रख सकती हू, तब सभी ने अनुशासन के साथ एक स्वर मे 'तहति कहकर स्वीकृति दे दी । पर मन मेरा चाह रहा था- पूज्य गुरुवर्या श्री जी के पावन चरण सन्निधि मे चातुर्मास करना । चूकि लम्बे समय से मुझे सेवा मे चातुर्मास करने का अवसर नही मिला था । न जाने इस बार भी कही वचित न रहना पड़े । दिल का दर्द आखो मे उतर पड़ा । दिल को थामे सारे कार्यों से निवृत्त हो रात्रि मे प्रतिक्रमण के बाद जा पहुची, मातृ हृदया पूज्यनीया श्री गगा मैया के पास मे । अपनी आतरिक इच्छा जाहिर करते हुए नेत्र सजल हो गये, अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी, गुरु चरणो का प्रशस्त अनुराग नही चाह रहा था गुरु से दूर अन्य क्षेत्र मे चातुर्मास हेतु जाना । गुरु चरण सेवा मे जो मिलता है वह स्वतन्त्र चातुर्मास में लभ्य नही हो पाता । बस एक ही चाह-."इस बार चातुर्मास मे पूज्य गुरुवर्या श्री जी मुझेअपने साथ रख ले । तब गगा मैया ने शिक्षा देते हुए कहा-"अरे तुम इतने समझदार होकर एसे विह्वल होते हो ? अपने सयमी जीवन का एक ही सूत्र है, गुरुणामाज्ञा गरीयसी ' गुरु आज्ञा ही अपना जीवन सर्वस्व है । आशा की लौ बुझ चुकी थी । रात्रि के नीरव क्षण, निद्रा भी मुझसे रूठ चुकी थी । अनायास उस बालक की बताई घटना स्मृति मे उभर आई, मेरा अतर दृढ़ आत्मविश्वास एव आस्था की जगमगाती ज्योति से आलोकित हो उठी । तन्मयता के साथ, "जय गुरु नाना" के जाप मे लीन हो गई । द्वितीय दिवस व्याख्यान के पश्चात ज्योंहि पूज्य गुरुवर्या श्री जी के श्री चरणो मे वदना की, आशीर्वचन सुनने को मिला, पूज्यप्रवर किसी से कह रहे थे- ' मुझे अजना को तो चातुर्मास मे अपने साथ रखना है")। खुशियो का पार नही रहा । आस्था का कनेक्शन जुड़ते ही कृपा का पावर मिला । धन्य है मेरे अनत-अनत आस्था के आयतन तेजस्वी, यशस्वी अलौकिक चारित्र्य सपन्न, आराध्य भगवन्, जिनके नाम स्मरण मे भी अचिन्त्य शक्ति है । शब्दकोष के शब्द भी उन्हे वर्णित करने मे सक्षम नहीं है । भगवन नानेश, मेरे सयमदाता, जीवनत्राता महोपकारी । युगों-युगों तक आप श्री की जीवन, स्मृति का चिर सहचर बना रहेगा ।

हर पल आज पुकारू

कन्हैयालाल चौरड़िया

नानेश गुरु नानेश गुरु हर पल पल आज पुकारूं।
श्रद्धा की पावन पुष्प भेंट, तेरे चरणों पै डारूँ ।।टेर।।

युग की दृष्टि, युग की सृष्टि, इस युग की दिव्य विभूति थे ।
युग अवतारी युग उपकारी इस युग में एक अवधूती थे ।

खोये हो कहाँ ये दिल रोता हर दिल मे तुम्हें निहारूँ ।।
श्री संघ के पूज्य शिरोमणि थे, श्री संघ के अभिनव निर्माता ।

कई लाखों भक्तों क स्वामी जिनवर की बगिया के त्राता ।।
हू शि ऊ चौ श्री जग नाना गुरु राम नाम उच्चारूँ ।।

-जावपुर रोड़

❑ साध्वी अजना श्री जी म

गुरु एक, सुरक्षा कवच

गुजराती भाषा की वह अबूझ पहेली मुझे याद आ रही है- ' गिण्या गणाय नही बिण्या बिणाय नही, तोय मारा आभला मा माय गिनना चाहो तो गिन नही सकते बिनना चाहो तो बिन नही सकते, फिर भी मेरे आसमान मे समा जाते हैं । यही स्थिति उन सस्मरणा रूपी सितारों की है ।

परम आराध्य, पूज्य गुरुदेव का जीवन विराट, उदात्त और अपने आपमे एक खोजी जीवन था । उन्होने जो सिद्धात हमे दिये, उनका सर्वप्रथम स्व जीवन मे प्रयोग किया और फिर समाज के समक्ष रखा ।

उनकी प्रज्ञा गहरी, सूक्ष्म व पैनी थी, वे किसी की कही हुई बात पर विश्वास नही करते, वरन् उस विषयक पूरी खोज करने के बाद आत्म साक्षी से ही स्वीकृत करते । सदैव सघ सगठन व एकता के हिमायती रहे । सैद्धातिक ठोस धरातल के आधार पर सारा सघ एक रूप बन जाय, ऐसी भावना सदा बनी रही । प्रभु महावीर के द्वारा उपदर्शित सिद्धातो में कही मोच न आये एतदर्थ सदैव सजग रहते । उनका सयम के प्रति इतना लगाव था कि अपने प्रवचनो मे भी सयमी मर्यादाओ का प्रतिपादन सूक्ष्मता से करते थे ।

वे हमारे सुरक्षा कवच थे उनका अनुग्रह सकल सघ पर छत्रवत् था । अपने शिष्य-शिष्याओ को सदैव वात्सल्यपूर्ण प्रोत्साहन देते । जब हम उनकी चरणोपासना मे बैठते तो सुशिक्षा के अनमोल मुक्ताकणो से आप्लावित करते तथा हम बाल सुलभ चेष्टा से कहते भगवन हमे आपका प्रत्यक्ष सत्सानिध्य कम मिलता है, हमे आपकी चरण सेवा करनी है, तो भगवन् यही फरमाते- द्रव्य से मै कही भी रहू पर मेरा ध्यान प्रत्येक सत सती वर्ग की ओर रहता है । उनकी इस अहेतुकी कृपा का यही सुपरिणाम है कि जीवन मे कही विघ्न बाधाओ के दौर आये भी तो पूज्य गुरुदेव ने सुरक्षा कवच बन सरक्षित किया ।

एक घटना प्रसग इस सयमी परिवेश क तीसरे वर्ष मे पूज्य गुरुणी प्रवर ने अमीय आशीष का पाथेय देकर खिड़किया वर्षावास हेतु उज्जैन से रवाना किया । विहार यात्रा चालु थी । एक-एक पड़ाव पार करते करते इन्दौर से छोटे से गाव सिमरौल पहुचे, रात्रि विश्राम वही किया । उस रात्रि मे जो घटना बनी उसे कभी विस्मृत नही किया जा सकता । वर्षा का मौसम, आकाश मेघ घटा से आच्छादित । रात मे सघन अधकार के बीच कभी-कभी बिजली की चमक से प्रकाश आ रहा था, सध्या प्रतिक्रमण के पश्चात् सभी भगिनीवृन्द के साथ गुरु गुण-स्तुति मे लीन थे, तभी एक स्कूल के बरामदे मे एक अजनबी व्यक्ति आया और कहने लगा मुझे यहा विश्राम करना है । उसे साध्वाचार सबधी नियम बताये और कहा तुम यहा नही रह सकते, वह कुछ उटपटाग बातें करने लगा । हमने सोचा, आज विकट स्थिति है । यह कोई उपद्रव खड़ा न कर दे, अत हमे सावधानी रखना है, आज की रात्रि पूर्ण धर्म जागरणा से व्यतीत करना है । गुरुदेव हमारी रक्षा अवश्य करेंगे । सभी महामत्र के जाप एव गुरुनाम-स्मरण मे तल्लीन बन गये । जिस हाल मे हम थे उसके सभी द्वार खिड़किया वद कर दी सभी को वस्त्र के टुकड़ो से बाध दिया । पर आखिर यह तन जो ठहरा बैठे-बैठे ही कुछ समय के लिए सभी पर निद्रा देवी ने अपना प्रभाव डाल दिया, करीब १५-२० मिनट का समय हुआ होगा, अचानक आख खुली तो देखा सभी द्वार और खिड़किया खुले पड़े हैं । बिजली चमकी किन्तु

उस प्रकाश मे कोई भी नजर नही आया। किसी की भी अन्दर आने की हिम्मत न हुई, हो भी कैसे ? गुरु का सुरक्षा कवच जहा है, वहा कोई पहुचने की हिम्मत नही कर सकता। सूर्योदय के बाद देखा समीप वाले स्थान मे तीन-चार व्यक्ति साये हुए हैं। पर गुरु कृपा से हमारी रात्रि निराबाध बीत गई। ऐसे एक नही अनेक प्रसग जीवन मे आये, पर गुरुनाम रूपी मत्र ने ही पार लगाया। क्योंकि शिष्य चाहे जाने या न जाने पर प्रत्यक्ष व परोक्ष में रहे हुए प्रत्येक शिष्य-शिष्या पर गुरु का परिपूर्ण वरद् हस्त रहता है, वे स्वय साधना पूत जीवन जीते हुए सबका कल्याण चाहते हैं। ऐसे महान गुरु का वियोग हमारे अशुभ कर्मोदय का कारण है। उनकी आत्म शाति की कामना तो औपचारिक है, वस्तुत साधक अपनी शाति का निर्माता स्वय ही होता है और वह यही पर अगले जीवन की शाति का सूत्रपात करके जाता है। मेरा आत्म विश्वास है आचार्य देव ऐसी चिर शान्ति क पथ पर ही प्रस्थित हुए है।

❑ साध्वी सुमति श्री जी म

क्षमा सिधु

शयन से पूर्व नियमित चर्या के अनुरूप गुरुचरणो मे उपस्थित हुई, अपनी दिनचर्या का विवरण प्रस्तुत कर शिक्षा सूत्र पाने की जिज्ञासा में निवेदन किया। सयम एव अनुशासन पूर्वक सुसस्कारो का सिचन करने मे तत्पर श्री मुखारविन्द से अमृत कण झरने लगे। देखो बहिनों समता सिधु आचार्य भगवन् का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है, उन महान विभूति ने शास्त्रीय सूत्रो को याद ही नही किया, प्रत्युत गहन अनुप्रेक्षा के साथ आचरण मे ढाल लिए। प्रथम फलौदी चातुर्मास का प्रसग- शातक्राति क अग्रदूत स्व गणेशाचार्य से श्री रतनचद जी म सा गद्गद शब्दो मे कह रहे हैं-'भगवन् मै महाक्रोधी हू, मुझे निष्कारण ही क्रोध आता रहता है। पर मुझे इस नवदीक्षित मुनि नानालाल जी पर क्रोध क्यो नही आता। यदि इस निर्ग्रन्थ के साथ मै दो-तीन साल रह जाऊ तो मै स्वय क्षमाशील बन सकता हू।' यह सुनकर गणेशाचार्य को कितना प्रमोद हुआ होगा और कितना आशीर्वाद का झरना फूट पड़ा होगा जिससे वे २७ गुण से ३६ गुणो के अधिकारी एव बुद्धाण बोधिदाता पद को प्राप्त हो गये। श्रद्धेय गुरुवर्या श्री जी के अनुभूति पूर्ण वचनो को सुनकर हृदय अहोभाव से भर गया। धन्य है, हमारे आराध्य, जिन्होंने अपने जीवन से हमे बोध दिया है। कितना भव्य जीवन था उन महामहिम का। भगवन् ऐसे असीम शिक्षा कण आपने बिखरे हैं जिन्हे चुन-चुनकर हम अपने जीवन को सजा पाए, यही मेरी श्रद्धा अर्पित है।

❑ साध्वी दर्शना श्री जी म

हे सघ नायक कहॉ चले तुम

हे सघ नायक कहा चले तुम,
किस अदृश्य जगत मे ।
निश दिन याद सताये गुरुवर,
हृदय की धड़कन मे ।
हाय काल तूने गजब कर डाला,
सोच न पाया क्षण भर,
जन जन की इच्छाये कुचर्ली,
दया न आई हम पर ॥

परमोपकारी पूज्य गुरुदव की वाणी दूसरों के दु ख निवारणार्थ होती थी। अपने लिये उसमे कुछ भी नही था। समाज राष्ट्र देश और विश्व के सभी प्राणी समता सरोवर मे अवगाहन कर विषमता का पक धो डाले, ऐसी उन्चतम भावना सदा बनी रही। स्वय तो समता की जीवन्त प्रतिमा ही थे। आज के इस वैज्ञानिक युग मे भौतिक माधनो के अम्बार लगे हैं पर आन्तरिक शाति के अभाव ने मानव को विक्षुब्ध बना रखा है। इस अशाति को दूर कर आत्मीयानन्द मे रमण कराने के लिए पूज्य गुरुदेव ने हमे समीक्षण ध्यान का महामूत्र दिया, वह हमार लिए वरदान स्वरूप है। यदि गुरुदेव को हमे सदैव स्मृति मे तरोताजा रखना है तो उनके द्वारा प्रदत्त स्वर्णिम दोनो सूत्रो को (समता व समीक्षण ध्यान) जीवन मे साकार रूप देने का प्रयास करे।

कमल से निर्लिप्त थे, सागर से विशाल,
हम जिन्हे रख रहे थे हृदय मदिर मे सभाल ।
ओ शृगार नन्दन, हुक्म सघ के चन्दन
छिपे हो कहा तुम्हे नयन रहे निहार ॥
पूज्य गुरुवर के चरणो मे, श्रद्धा सुमन समर्पित ।
कर देना मगलमय नित हो यह सघ सदा सवर्धित ॥

समो निन्दा पससासु

सव्वओ पमतस्स भय, सव्वओ अपमतस्स नत्थि भय प्रभु महावीर से मुखरित सूत्र का सहज चिन्तन प्रात समय मन मे उभरा। प्रमाद शत्रु अति भयकर दु खावह स्थिति मे ले जाने वाला है। धन्य है उन महापुरुषो को जिन्होंने प्रमाद पर सर्वथा विजय प्राप्त की। ऐसी महान् चेतनाओ के नाम स्मृति पथ पर आ ही रहे थे कि मेरे अनत अनत आराध्य प्रवर, महापकारी, जर्जर नैया के पतवार समता सिधु, शृगार नन्दन का वह करुणायुक्त ब्रह्म तेज स आपूरित दीदार नयनो के समक्ष अचिन्त्य उपस्थित हो गया। सहसा मेरा अतर हृदय प्रणत हो गया। भीषण सघर्षमय झझावता म सयम, सेवा, साधना को अखडित रखते हुए अपनी निरजन पद प्राप्ति की ललक को गुजारित करते रह। आचाराग सूत्र तो जिनकी आत्मा मे देह सचरित रक्त सदृश रमा हुआ था। प्रत्येक सयमी गतिविधिया अप्रमत्तता से परिपूर्ण थी। मेदपाट के अन्तर्गत लघु ग्राम, अध्यात्मयोगी आचार्य प्रवर के प्रथम शिष्य श्री सेवन्त मुनि जी म सा की जन्म भूमि मे आचार्य भगवन् की सेवा का अवसर पूज्य गुरुवर्या श्री जी के साथ प्राप्त हुआ। विहारचर्या का समय, सत पाट-पाटला लौटाने हेतु जा रहे है। हम विहार कराने हेतु श्री चरणो मे उपस्थित हुए। दृश्य देखते ही हमारे नयनो मे भी नमी आ गई। आचार्य भगवन् लघु प्रस्तरो को चुन चुन यतनापूर्वक एक स्थान पर रख रहे थे, सहसा हृदय रो पड़ा। इस कलिकाल मे जहा प्रभुत्व के पीछे गहन अहकार से सना जीवन और कहा जिन स्त्रा शासन के प्राणभूत ३६ गुणाधिकारी पचक्खाण'' के सूत्र को उपदेश रूप मे ही नही किन्तु आचरण में ढाले हुए हैं। रवि की किरणो की गिनती वैज्ञानिक सहायता से शक्य हो सकती है। परन्तु परमाराध्य भगवन् के गुणो का आकलन बाल चेष्टावत ही होगा। याद आ रही है उत्तराध्ययन सूत्र की शिक्षा समो निन्दा पससासु'' का सूत्र उन श्री जी की रग-रग मे रमा हुआ था। छिन्द्रान्वेषियो के बीच मे भी वे अपने स्वरूप मे ही रमा करते थे। अहर्निश स्व निरीक्षण करते हुए विद्वेष भरे विषवर्षण मे भी समता सुधा सचार का ही लक्ष्य रहा। सम्यक्त्व आचार का वात्सल्य गुण तो न जाने क्षायिक सम्यक्त्व की ओर ही चरण बढ़ा चुका था। हम नादान शिशुओ पर भी इतना अधिक कृपा वर्षण था कि उससे हम अभिभूत हो जाते। मेरे पास शब्द नही है जिससे कि मै उसे अभिव्यक्त कर सकू। सुज्ञाना कि बहुना ॥

हम अनार्य ही रह जाते

प्रभु महावीर की साधना भूमि अनार्य देश रही, परिषहो के बीच जीकर प्रभु ने विशिष्ट उपलब्धि हासिल की। शौर्य सपन्न आत्माओ की तेजस्विता समरागण म ही निखरती है। प्रभु के पथानुगामी, हमारे हृदयेश आराध्यदेव आचार्य नानेश का ध्यान आचार्य पदारोहण के अनन्तर अनार्य देश स्वरूप पिछड़े क्षेत्र की ओर गया। छत्तीसगढ़ ग्राम्याचल का जन जीवन धर्म स्वरूप के बोध से शून्यवत् था। आप श्री के पदन्यास से ही वहा धर्म जीवन्त बना। सयमी मर्यादाओ की अनुपालना करते हुए उस क्षेत्र मे पदन्यास करना अभूतपूर्व घटना थी। उस विहार यात्रा के दौरान आगत परीषहो की स्मृति मात्र रोगटे खड़े कर देती है, किन्तु भगवन ने परवाह नही की। करुणा आपूरित हृदय परमार्थ हेतु मचल रहा था, वह बाधाओ से भला क्या घबड़ाय।

सुकुमार तन मे आचार्य भगवन् का फौलादी मन था, अपने कठोर तप त्याग के निर्मल नीर से उस धरा का सिचित कर चिरन्तन उर्वरता दे दी। केवल एक प्रवास का यह सुफल रहा कि स्वल्पावधि के सानिध्य से ही वह बजर भूमि सरसब्ज बन गई। यदि आपने धर्म बीज का वपन न किया होता तो वहा की आज जो छटा है कदापि नजर नही आती। आपके अप्रतिम जीवन की छबि भव्य मानस की अतल गहराइयो मे अकित हो गई है। वश परम्परा से वे सस्कार आज भी विरासत के रूप मे सचरित हो रहे हैं।

सम्यक्त्व और सयम का उपहार देकर अनेक का उद्धार किया। जैन ही नही जैनेत्तर बधुओ पर आपके ओजस्वी जीवन का प्रभाव पड़ा। मछली मारकर आजीविका करने वाले अपने व्यापार से निवृत्त हो गये, आज भी आपकी वाणी उनके हृदय मे अकित है। हृदय कृतज्ञता से प्रणत है, भगवन के अनल्प उपकारो के प्रति। कई बार अन्तर की ध्वनि स्फुरित हो जाती है-

भगवन्! यदि तुम न होते,
तो हम अनार्य ही रह जाते।

तरसे नयन

विशाल लोढा

सास आती है सास जाती है, सिर्फ मुझको है इतजार तेरा,
आसुओ की घटाए पी अब तो, कहता है यही भक्त तेरा।
दर्श पाने के लिए तरसे नयन, नाना गुरुदेव तुम्हें मेरा नमन।
तेरे दर्श का मै दीवाना हुआ, तेरी रहमतो का फसाना हुआ।
जमाने से अब मै बेगाना हुआ, नाना गुरुदेव तुम्हे मेरा नमन।

प्रबल समता विश्वासी

'सत्पथ का दिग्दर्शन, तुझ बिन कौन करेगा भगवन् ।
सयम जीवन का सवर्धन, तुझ बिन कौन करेगा भगवन् ॥''

सबकी अपनी-अपनी निकटता थी पूज्य भगवन से। सबके अपने-अपने सस्मरण है एव अपनी निजी कहानी। इच्छा होती थी कि भगवन् का पावन सानिध्य पाते ही रहे। बहुत कुछ था भगवन के पास सुनाने को। वे अपने मुखारविन्द से अपनी अनुभूतिया सुनाते ही रहते थे। मानो उन्हे ऐसा लगता था कि मेरे ये छोटे-छोटे सत एव सती वर्ग उन अनुभूतियो से कही अबूझ न रह जाय।

सन् १९९५ मे बीकानेर चातुर्मास मे जब जब हम गुरु निश्रा मे पर्युपासनार्थ पहुचते तब-तब पूज्य भगवन हम अपने अनेक निजी एव एतिहासिक अनुभवो से अवगत कराते रहते थे। उनकी अनत उज्वल स्मृतिया मेरे दिलो दिमाग मे बिखरी हुई है।

कैसे साचे मे ढ़ला था वह व्यक्तित्व ? शायद शताब्दियो मे कभी कभार ही ऐसे व्यक्तित्व उभरते है, अति दुर्लभ। मुझे प्रतीत हुआ मै अपनी सारी श्रद्धा अर्पित करके भी इस शत शाखी वट वृक्ष की ऊचाइयो को स्पर्श नही कर पाऊगी,पर अभिलाषा थी, इस दिव्य विभूति की विराटता के दर्शन की।

पूज्य भगवन् के वचन मे अजीव तासीर थी एव उनके शुभ आशीर्वाद मे अद्भुत शक्ति निहित थी। वे जो भी बोलते थे एव करते थे वह सब उनके जीवन की आतरिक गहराइयो एव अनुभूतियो से उद्भूत होता था। तह तक पहुचने वाली उनकी अर्न्तदृष्टि अनुपम थी। चुम्बकीय शक्ति भी अनूठी थी इस समता विभूति मे और सभी के साथ एक-सा साम्य-व्यवहार, मा की ममता सा दुलार। पूज्य भगवन् का ध्येय था कि समता ही हमारा विश्वास है। आप श्री के जादुई व्यक्तित्व म पता नही क्या तेज था कि बड़े से बड़ा विद्वान राजनेता भी आप श्री की वाणी सुनकर वशीभूत हो जाता था, तो अनपढ़ ग्रामीण व निपट अनाड़ी भी। किसी व्यक्तित्व के सम्मोहन के वशीभूत होना तभी सभव है, जब साधक के जीवन मे मन-वचन-कार्य की एकरूपता होती है, और होती है सत्यनिष्ठा एव लोक-कल्याणी पवित्र भावना।

लोग कहते हैं कि उनके पास सिद्धि थी, वे वचन सिद्ध पुरुष थे। उन्हें अमुक देव इष्ट था किन्तु सच्चाई तो यह है कि अरिहत देव वीतराग प्रभु का सच्चा उपासक क्या किसी सरागी देव की उपासना या साधना कर सकता है ? वह तो सिर्फ आत्म देव की आराधना या उपासना करता है। पूज्य गुरुदेव भी आत्मदेव अरिहत एव सिद्ध प्रभु के सच्चे उपासक थे। उनकी उपासना आराधना एव भक्ति मे निष्ठा थी, सयम था, तन्यमता थी और थी विश्व कल्याणी शुभकर भावना।

ऐसे दिव्य विभूति के दर्शन एव अमृत वाणी श्रवण का पच रत्न काम्पलेक्स बम्बई मे सौभाग्य मिला था। तब नही ज्ञात था कि यह जीवन का अतिम स्वर्ण अवसर है। उस अल्प चरण सेवा के समय दिया गया उनका उद्बोधन एव आदेशात्मक उपदेश मेरे जीवन की अनमोल थाती है जो मेरे आचरण की उज्ज्वलता का पाथेय बनेगा। पूज्य भगवन् की स्मृति उस परम हस की अमृत स्मृति को जितने शाश्वत शब्द अर्पित किए जाये वे अल्प ही होगे।

❑ साध्वी सिद्ध प्रभा श्रीजी म

तेजस्वी व्यक्तित्व

आचार्य भगवन् का व्यक्तित्व एक तेजोवलय था, जो चतुर्दिक अपनी चारित्रिक आभा की ज्योति विकीर्ण कर रहा था। पूज्य गुरुदेव के सयमी तेज से युक्त व्यक्तित्व का वर्णन हमारी चर्म मडित जिह्वा नही कर सकती। बाल्यकाल से ही आप श्री ने अपना जीवन अनूठे साँचे मे ढ़ालना शुरु कर दिया। आप श्री के जीवन की अनेक विशेषताओ मे एक विशेषता यह भी थी कि आप श्री प्रत्येक व्यक्ति के साथ स्नेह सौहार्द्रता का व्यवहार करते थे। वे प्रत्येक प्रवृत्ति को स्वजीवन मे लागू करने के बाद ही अन्यो को प्रतिबोध देते थे। सत्रस्त मानव मात्र को समता का पथ दिखाकर आपने सपूर्ण विश्व पर बहुत बड़ा उपकार किया तथा बलाई जाति का उद्धार करके आप श्री ने छुआछूत के भेद को मिटाया।

श्रमण सस्कृति का मूल समता पर अवलबित है। क्षणभगुर मुक्ति पथ से मन मोड़कर अटल, सुखद, निर्मल-मुक्ति की ओर सहज सरल एव सात्विक गति से बढ़ना एव इसके अवरोधक अज्ञान और मोह को वायु प्रेरित सघन घन की तरह दूर करना ही इस श्रमण सस्कृति का पवित्रतम लक्ष्य माना गया है जो समभाव से ही सिद्ध हो सकता है। अनन्त-अनन्त आस्था के आधार पूज्य गुरुदेव श्रमण सस्कृति एव समत्व के एक मूर्तिमान सजीव प्रतीक थ। उन श्री की सहज सरलता, भद्रता, आत्मीयता, समता व सहृदयता आज भी जनमानस मे सम्मान पा रही है। उनका गुणमय शरीर आज भी हमारे समक्ष है और आगे भी सदा रहेगा।

स्वर्गवास के कुछ मास पूर्व ही उन दिव्य महापुरुष के पावन दर्शन एव सुखद सानिध्य का सुअवसर प्राप्त हुआ था। निकट से देखा तो पाया कि वे मान-सम्मान और महिमा पूजा की कामना से सर्वथा परे थे। आचार्य देव के जीवन मे समयाए समणो होई इस सूत्र का साक्षात्कार होता था। और समोनिंदा पससासु का अन्तर्नाद गूजता रहता था। इस प्रकार आपश्री का जीवन उस विराट सत्य का खुला पृष्ठ है जो सदा सभी के लिए परमोपयोगी सिद्ध होगा। उस पावन तेजस्वी व्यक्तित्व के प्रति मै अपनी श्रद्धाजलि समर्पित करती हू।

गुरु महाउपकारी

श्याम वया

तेरे बिना गुरुवर हमारा नहिं कोई रे।
तरे बिना गुरुवर सहारा नहि कोई रे।
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला सुत और नारी छैल छबीला।
बिगड़ी साथ बनाया नहिं कोई रे।
गहरी नदियो नाव पुरानी, बड़े-बड़े भवर गहरे पानी।
डूबन लागी नाव बचाया नहिं कोई रे।
जबसे मैंने तुझको बचाया नहिं कोईर्ध रे।
तेरे जैसा ज्ञान सिखाया नहिं कोई रे।
घर घर तेरा नाम जपाऊ, तेरी महिमा सबको सुनाऊं।
तेरे जैसा लाड़ लड़ाया नहिं कोई रे।

भींदर

जीवन सस्कारकर्त्ता-गुरु

पाली वर्षावास का स्वर्णिम अवसर, मेरे अनन्त पुण्योदय से आशा फली पूज्य गुरु प्रवर के पावन चरण सानिध्य की। रात्रि मे पूज्या गुरुणी श्री अपने चिन्तन मे सलग्न थी। मैंने कहा, क्या आपको नीद नहीं आ रही है ? ' तब फरमाया गर्मी का विशेष प्रकोप व मच्छरो की बहुलता है तू थोड़ी दूरी पर सो जा, मेरे कारण तुझे भी जागना पड़ रहा है। यह सुन मेरे मनोमानस मे विचार लहरी उठी कि गुरु का आत्मीय स्नेह कितना अनुपम होता है गुरु कृपा से व्यक्ति भाव अटवी तो क्या भवाटवी को भी पार कर सकता है। मैने निवेदन किया नही म सा मै यही सोऊगी दिन भर ता कुछ भी सेवा नही मिल पाती रात्रि का ही वक्त है सेवा से आप्लावित होने का। उसी बीच चिंतन उभरा मेरे अतीत के जीवन का जब मैंने अपने अनन्त आराध्य के प्रथम बार दर्शन किये। समवशरण की सी भव्य छटा। पूज्य गुरुदेव अपनी ओजस्वी अमृत देशना से सबको मत्रमुग्ध कर रहे थे। वह दृश्य मानो भगवन महावीर की याद दिला रहा था। गुरुदेव के मुखारविंद से असख्य जीविय मा पमायए'', यह शास्त्रीय गाथा मुखरित हुई और उसका विशद विवेचन श्रवण कर मन मे दृढ सकल्प किया कि इस जीवन को गुरु ही सस्कारित कर सकते हैं। जीवन सस्कारकर्ता-गुरु के चरणो मे अपना वर्चस्व समर्पित करने मन आतुर हो उठा। चूकि गुरु शरण ही आत्मा को तीव्र वेग से उत्थान पथ पर अग्रसित करती है। सतवाणी का भी उद्घोष है सीस दिये गुरु मिले,तो भी सस्ता जान।

गुरु के कुशल कलापूर्ण हाथो से मेरा जीवन प्रस्तर गढ़ा गया। उनके उपकारो से उऋण नही हो सकती। उन पावन चरणो मे मै अपनी अन्त श्रद्धा व कृतज्ञता का अर्घ्य अर्पण करती हू। भगवन् तव पद चिन्हो पर चलकर चरम मजिल का वरण कर सकू।

ओ सुधर्मा के पट्टधर

रानी सुराणा

ओ सुधर्मा के पट्टधर,
'हुक्म गच्छ' के प्रभंकर,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
समता दर्शन के प्रणेता,
संघर्षों में हो आत्मविजेता
तुम हो शासन भाल के चन्दन
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
समीक्षण ध्यान की दीप शिखा
कई भव्यों का भाग्य लिखा
मिटाया तूने विषय, कषाय क्रंदन
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
गंगा सा दते दिव्य परिधान
ओ साधना का विस्तृत वितान,
उपकारी गुरु का अर्चन पूजन,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
सुना 'गुरु नाना' का अवसान
कहा गये मैं करती रही संधान
मेरी श्रद्धा के तुम हो स्पंदन
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।

इन्दौर

अमर व्यक्तित्व

जन-जन के आराध्य, दाता के लाड़ले सपूत, मेवाड़ माटी के गौरव, राजस्थान के राजहस, विश्व की विरल विभूति आचार्य देव भगुर देह का त्याग कर सदा-सदा के लिए अनन्त सागर मे विलीन हो गई ।

आचार्य श्री नानेश आज व्यक्ति रूप मे नही है, लेकिन व्यक्तित्व रूप मे आज भी हैं और आने वाली सदियो तक रहेंगे क्योंकि जिन पुण्यात्माओ ने आचार्य प्रवर को आखो से देखा है वे उनकी पावन मूर्ति को अपने चित्त पर चित्रित किए हुए सदैव दीदार पाते रहेंगे । जिन्होने उनके जीवन के विषय मे सुना भर है वे अपनी कल्पना मे याद करते रहेंगे । जिन्होने उस दिव्य विभूति का चरणाश्रय प्राप्त कर सेवा का प्राण प्रण से लाभ लिया, उन्होने निश्चित ही मानव जीवन को सफल कर लिया ।

अतीत की स्मृति मे, अनागत की कल्पना मे और वर्तमान की विचार वल्लरियो मे उनका व्यक्तित्व सागर की गभीरता, हिमालय की उत्तुगता गगन की विशालता, धरा सी धैर्यता शशि की शीतलता, रवि की प्रखरता, मा की ममता, सयम की सुदृढ़ता लिए हुए सही मार्गदर्शन कराता रहेगा ।

कहू चारु चारित्र का चमकता मार्तण्ड,
या तुझे जिन शासन का मेरूदण्ड ।
सभी उपमाए बौनी है, तेरे व्यक्तित्व से,
तेरे बिन सूना है चमन, गगन और भूखड ॥

जैन सस्कृति के सुरक्षा कवच आचार्य श्री जी का सयम गगा के नीरवत् पवित्र, उज्ज्वल एव बेदाग था। कथनी - करनी मे एकरूपता थी । आगम समेरू आचाराग सूत्र मे एक सूत्र है जहा अतो तहा बाहि को आपने पूर्णरूपेण आत्मसात् किया था । श्रमण सस्कृति की सुरक्षा के लिए आपके फौलादी कदम निरन्तर गतिशील रहे । समय के साथ समझौता कर मर्यादा पर आच आने देना आपके लिए नामुमकिन था । यही कारण है कि आपका अपने द्वारा शिक्षित, दीक्षित शिष्यो के प्रति भी मोह नही रहा । क्योंकि वे उन्ही शात क्राति के उन्नायक आचार्य श्री गणेश के सुशिष्य एव पट्टधर थे, जिन्होंने श्रमण सस्कृति की सुरक्षा के लिए सपूर्ण श्रमण सघ के उपाचार्य होने का मोह, लगाव या अभिमान नही रखा । शिथिलाचार पर अकुश न लगते देख अपने आपको सुरक्षित कर लिया यानी उपाचार्य पद का त्याग कर दिया था । जीवन की अतिम सध्या तक भी आपके यही उद्‌गार रहे कि श्रमण सस्कृति की सुरक्षा के लिए मुझे पसीना तो क्या खून की बूंदे भी देना पड़ा तो भी मेरे कदम पीछे नही हटेंगे ।

हजारो आखो ने प्रत्यक्ष देखा था कि इस वीर शिरोमणि ने अपनी वृद्धावस्था एव शारीरिक अस्वस्था के बावजूद भी सघ की सुरक्षा के लिए प्रभु महावीर के शासन की जाहोजलाली करने एव पूर्वाचार्यों की परपरा को सुरक्षित रखने के लिए किस प्रकार मुस्तैदी चाल से मरूधरा से मेदपाट की ओर विहार किया ।

आपका अमित आतमबल, सुदृढ साधना अतिम सध्या तक प्रवर्धमान रही । फलस्वरूप निर्ग्रन्थ के तृतीय मनोरथ के साथ पूर्ण सजगता पूर्वक इस भौतिक देह से बिदाई ली । आप जहा भी हो सुखो मे तल्लीन रहे और शीघ्रताशीघ्र शिवरमणी का वरण करे एव हम आपके बताये मार्ग पर चलते हुए नवम पट्टधर की आज्ञा अनुशासन म रहकर लक्ष्य का प्राप्त करे ।

प्रेषक दीपिका साखला

❑ साध्वी श्री ज्योति प्रभा जी

मा की ममता से भी बढकर वात्सल्य

हे समताविभूति कैसे करें तेरे गुणो का वर्णन,
तेरे ही खून-पसीने से बना यह सघ नन्दन वन।
तेरे परम पावन पवित्र मुख कमल के दर्शन
पाने लालायित थे सारी धरती के कण-कण ॥

पूज्य गुरुवर की आचार निष्ठा अहिंसा के अमृत से अनुरजित थी तो जीवन ब्रह्मचर्य की तेजस्विता से समन्वित था। आपने क्रान्तिकारी महापुरुषो के शासन रथ को निरन्तर ऊचाइया प्रदान की।

भगवन् आपका मगल स्मरण प्रेरक पावन और आदर्श सस्मरण आज अन्तर्मन को उद्वेलित कर रहे हैं। कह रहे हैं कि हमारी अभिव्यक्ति सर्वप्रथम हो पर उन सब को शब्दो की डोर मे बाधना मेरे लिए असभव ही प्रतीत होता है।

ह युगपुरुष, तरे जीवन से सबधित प्रत्येक घटना चाह वह दाता ग्राम की हो, बाल्यावस्था की हो, अध्ययन विषयक हो, तरुणाई के काल की हो, धर्मपाल क्राति की हो मुमुक्षुओ हेतु मुक्तिमार्ग के सबल की हो समता दर्शन दिव्य दन की हो युगीन समस्याआ के जाल मे फसी मानव जाति का उद्धार कर समाधान की सुव्यवस्था सर्जित करने वाली है।

हे वात्सल्यवारिधि, तेरी ममता मा के ममत्व से भी अधिक निश्छलता, निस्पृहता से भरपूर जीवन को खुशिया के बसन्त से सदाबहार बनाने वाली है। इसका एक प्रत्यक्ष अनुभूत उदाहरण है, सन् १९९६ मे हमे आपक पावन सानिध्य का लाभ लम्बे अर्से के बाद प्राप्त हुआ। महासती कल्याण कवर जी म सा के पेट मे गाठ थी। डॉक्टरी परामर्शानुसार आपरेशन कराना आवश्यक था, पर महासतीजी आपरेशन करवाना नही चाहते थे। कुछ भय भी था और सोचा कि पूज्य गुरुदेव की सेवा मे अन्तराय लगेगी सो अन्य होम्योपैथिक आदि से पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एव कृपा दृष्टि से सब ठीक हो जाएगा पर भगवन् को जब पता चला तो तुरन्त बुलवाया और स्नेहसिक्त मधुर वाणी से फरमाया कि सयम की साधना के लिए शरीर की स्वस्थता अति आवश्यक है, आपको आपरशन करवाना जरूरी है आप किसी प्रकार की चिता न करे मै सब सभाल लूगा। मै आपका भाई हूँ, मेरे से किसी प्रकार का सकोच न करे।

पूज्य गुरुदेव के पुनीत सानिध्य मे ही आपरेशन सफलता पूर्वक सपन्न हुआ, थियेटर से बाहर आने के बाद आराध्य देव अपने शिष्य परिवार सहित दर्शन देने, मगल पाठ सुनाने, पधारे की जबकि भगवन् की आखों का आपरेशन करवाया हुआ था। इन्फेक्शन का भय था फिर भी अपने शरीर की परवाह न करके कई बार सभालने के लिए पधारे थे और जब भी पहुचते तो स्वास्थ्य एव पथ्य परहेज का ध्यान दिलाते। हम भय था कि हम दो तीन छोटी-छोटी साध्विया कैसे सेवा करेगी पर आपक अपूर्व वात्सल्य एव वरदान स्वरूप आशीवाद के तले न तो किसी प्रकार की कमी महसूस हुई और न ही कोई गड़बड़ हुई, यह है आपकी अनुपम कृपा दृष्टि का चमत्कार। ऐसे एक

नही अनेक प्रसग है कि आपके नाम स्मरण मात्र से विपत्ति (सकट) के घनघोर बादल पल भर मे छूमतर हो जाते थे।

हे समत्व साधक महायोगी ! आप मे कषाय का उपशमन इतना जबरदस्त था कि कोई आपकी निंदा करे या स्तुति आप सभाव से रच मात्र भी नही हटते थे। यही कारण है कि मौलाना साहब भी आपके चरणो मे नतमस्तक हो गए। आपकी चरणधूली से कई नीम-हकीम रोगियो के शारीरिक रोग रफू चक्कर हो गये। एक विचारक की वाणी मे - सुख की चादनी मे सभी हस सकते है, पर दु ख की दोपहरी मे हसना सरल नही। श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने सुख की शुभ्र चादनी मे नही किंतु कष्टो की कठिन दुपहरी मे हसना ही सीखा था। इसीलिए आज जनमानस मे समता यानी आचार्य श्री नानेश, आचार्य श्री नानेश यानी समता, ये दोनो पर्याय बन चुके है। अत मे -

हे गुण सिघु ! तेरी गरिमा का नही है कोई पार।
कृपा की छाव सदा रखना सिर पे कृपावतार ॥
तेरे ढेर सारे उपकारो की बहुत लबी है कतार।
प्रभु ! आप तो चले गये अब कैसे पाऊगी उतार ॥

- प्रेषक मोनिका साखला

□ साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी

व्यष्टि ज्योति समष्टि मे लीन

परमाराध्य क्रान्तदर्शी आचार्य भगवन् के अनन्त मे लीन हो जाने के कारण निर्ग्रन्थ सस्कृति की अपूरणीय क्षति हुई है।

आचार्य प्रवर ने अपने जीवन काल मे ऐसे अनेक कार्य किए हैं जो सामान्य व्यक्ति के लिए सभव नही हैं। आप श्री का जीवन एक आदर्श जीवन था, फलत उनकी गणना भारत के विशिष्टतम महापुरुषो मे की गई है।

आचार प्रधान वीतराग सस्कृति के वे अनुपम उपमान थे। उनके सानिध्य मे अनेक भव्यात्माओ ने अपूर्व शाति का अनुभव किया। यद्यपि आज उनका भौतिक विग्रह हम लोगो के समक्ष नही है तथापि उनका दिव्य भव्य सिद्ध स्वरूप सदा हम लोगो का मार्गदर्शन करता रहेगा। इसी कामना के साथ परमाराध्य के चरणो मे श्रद्धा सुमन समर्पित है -

चन्द्र कला सा रूप हृदय मे,
आता उभर-उभर कर नाम ।
पाद पद्म मे करती प्रतिपल,
श्रद्धा रूप तुम्हे प्रणाम ॥

☐ साध्वी इन्द्र श्रीजी म

विलक्षण नेतृत्व सम्पन्न

इतने बड़े सघ के नाथ होते हुए भी स्वय के लिए कहते है नाना (छोटा बालक) हू। सचमुच मे गुरुदेव नाना ही तो थे, बालक की तरह उनकी निश्छल वृत्ति, सहज सौम्य प्रवृत्ति थी, स्वय को कितना लघुभूत समझा उन्होंने। अपने जीवन मे लघुता की अनुभूति ही दु शक्य है। लघुभूत बनने वाला ही ऊर्ध्वारोही बनता है।

सत्तालिप्सु व्यक्ति थोड़ी सी पद प्रतिष्ठा पाकर मदान्ध हो जाता है, पर धन्य है, प्रभु आपका जीवन कितना निस्पृह है। स २०३० की बात है- बीकानेर मे चतुर्विध सघ के बीच आचार्य देव ने फरमाया- "कोई इस पद का भार सभाल ले तो मै अपनी साधना मे लगना चाहता हू।" सबकी आखें सजल हो गईं। ऐसी निस्पृहता क्यो न होगी ? निस्पृह साधक की शरण जिन्होंने पाई थी। श्रमण सघ के विशाल समुदाय के नायक शात क्राति के जन्मदाता स्व गणेशाचार्य ने पद नही, कर्तव्य को महत्वपूर्ण माना था। वस्तुत सत्तालिप्सा से दूर व्यक्ति ही कर्तव्य को प्रधानता दे सकता है। वे स्वय के नही पूर्वाचार्यों के कीर्ति केतु को फहराने के लिए सकल्पित थे। शासनोत्कर्ष का ऐसा अनुराग जिस हृदय मे हो वही प्राणप्रण से सस्कृति के उन्नयन का दायित्व निर्भर करता है।

समोनिंदा पससासु"

सामान्य व्यक्ति प्रशस्ति परक वचनो से प्रमुदित होता है किन्तु उपालम्भ या आक्षेप परक वचनो मे सतुलन बनाये रखना बहुत मुश्किल है। महान विभूतिया होती हैं वे ही अन्यथा आरोप को सुनकर भी विचारो को समतौल बनाए रख सकती है। सूर्य की रश्मियो की प्रखर तेजस्विता मे भी उल्लू को अधकार का ही आभास मिल ता इसमे सूर्य का क्या दोष ? समताधीश आचार्य प्रवर की समता की परीक्षा अड़ोस-पड़ोस किसने नही की, परन्तु वे धृति सपन्न पुरुष हर परीक्षण मे उत्तीर्ण हुए उनका उदार मानस मधुर नीर ही बरसाता रहा। पत्थर फेकने वालो को भी मधुर फल देता रहा।

<u>विलक्षण नेतृत्व-क्षमता</u>

समय समय पर शिष्य-शिष्याओं के मनोभावो की टोह लेकर तद्नुरूप ही चातुर्मासिक क्षेत्र का निर्देश करते। किंतु जब उनकी अन्तरात्मा से कोई आवाज उठती और विशष शासन, प्रभावना का लाभ दृष्टिगत होता तो, योग्यतानुरूप निर्देश भी फरमाते थे। जिस वक्त बड़ीसादड़ी हेतु मेरा नाम सकेतित किया, तब मैंने निवदन किया भगवन् बड़ीसादड़ी ऐसा क्षेत्र है जहा के वरिष्ठ श्रावको ने आचार्य श्री आनद ऋषि जी म सा जैसे महापुरुषो को भी विचाराधीन कर दिया। मै तो ठहरी छोटी साध्वी। तब आचार्य देव के श्रीमुख से सहज वाणी निसृत हुई- सतीजी आप इतना क्यो सोच रही हो, आपका चातुर्मास अच्छा होगा, एसी कोई बात नही है 'गुरु आज्ञा गरीयसी" इसी चिन्तन के साथ बड़ीसादड़ी क्षेत्र की तरफ कदम बढ़ गये। 'गुरु आज्ञा ही आशीर्वाद" की उक्ति से वह चातुर्मास भव्य रहा। सघीय विभेद की दीवार ढह गई। मैंने अनुभव किया वह चातुर्मास गुरु कृपा की बदौलत ही उपलब्धिपूर्ण बना।

जिन्होंने उनके जीवन को समझा, वह उनकी महक से प्रभावित हुए बिना नही रहा, उनके गुण केवल भक्तो ने ही नही गाये इतर सम्प्रदाय के सत-सती वर्ग ने भी तहेदिल मे उनका गुणकीर्तन किया ।

मै अपनी अल्प बुद्धि से उनके जीवन की विशिष्टताओ का क्या आकलन करू, जैसे सुदृढ बुनियाद पर भव्य प्रासाद निर्मित होता है, ठीक वैसे ही आचार्य देव ने सयमी जीवन मे प्रवेश करने के साथ ही 'अक्रोध तप' की बुनियाद डाल दी और सतत बढ़ते चरणो ने साधना के प्रासाद पर समता का भव्य कलश'' स्थापित किया ।

भगवती सूत्र मे वीर वाणी का उद्घोष हुआ है- यदि आचार्य शुद्ध सयम के परिपालन पूर्वक चतुर्विध सघ की सार सभाल पूर्ण वफादारी के साथ करते हैं, तो तीसरे भव मे अवश्यभूत कर्म विमुक्त बन अजर-अमर-सिद्ध-स्वरूप को उपलब्ध होते हैं ।

हमारे रग-रग मे आचार्य देव के प्रति समर्पित भावना रक्त कोशिकावत अविरल प्रवहमान है । आचार्य भगवन् ने जो धरोहर अपनी ही प्रतिकृति शासन नायक के रूप मे प्रदान की है वह धरोहर है आचार क्राति की । उस आचार क्राति मे विचार क्राति और सस्कार क्राति भी सम्मिलित है । उस आचार विचार और सस्कार क्राति को विराटता प्रदान कर सघ गौरव की अभिवृद्धि करे, यही मगलाभिप्सा है । गणेशाचार्य की शात क्राति को समता के परिवेश मे महाक्राति के रूप मे ढालकर नानेशाचार्य ने राम के भरोसे'' काम सौप दिया है । अवश्य ही ये महापुरुष चतुर्विध सघ को नवीन गरिमा प्रदान करेंगे ।

जीवन सफल किया

पं श्री उदयमुनिजी म सा जैन सिद्धान्ताचार्य

धन्य ग्राम दाता जहां आपने जन्म लिया ।
धार संयम जीवन कुल का नाम रोशन किया ॥
मोड़ी शृंगार के लाल श्रद्धा से नमन है तुम्हें ।
बनाए सहस्रों धर्मपाल, धर्म ध्वज ऊंचा किया ॥
महापुरुषों का जीवन प्रेरणादायी होता है ।
सफल जीवन उनका जो सीख लेता है ॥
पूज्य नाना का जीवन गुणों का भण्डार 'उदय' ।
अपनायें इसे जो नर वह भव पार होता है ॥
सांसारिक नश्वरता को भर यौवन में जान लिया ।
त्याग भोग विलास संयम अपनाने का ठान लिया ॥
शुद्ध हो भावना तो अवश्य फलती है प्रिय शिष्य ।
गणेश गुरु का पा सानिध्य जीवन सफल किया ॥
आचार्य श्री नानेश को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं ।
मिले शांति तव आत्मा को यही कामना करते हैं ॥
महासंतों का जीवन सदा प्रेरणादायी होता 'उदयचंद' ।
मिलती रहे आपसे प्रेरणा यही शुभ भावना धरते हैं ॥

-मदसौर (म प्र)

❑ आचार्य नानेश की प्रथम शिष्या महासती श्री सुशीलाजी म सा

सत्य, समता व सहिष्णुता की त्रिवेणी

वरिष्ठ व्यक्तित्व के धनी हमारे आचार्य भगवन् जैन जगत के देदीप्यमान नक्षत्र थे। प्रारभ से ही समतामय जीवन जिया और समतामय जीवन जीने का उपदेश दिया। अपने प्रचण्ड पुरुषार्थ से इस नाना बगिया को खूब सिंचित किया। नाशवान तन की परवाह न कर सारा जीवन ही चतुर्विध सघ को सशक्त बनाने मे लगा दिया।

गुरुदेव की गुणपूजा को मेरी छोटी सी जिह्वा व्यक्त करने मे सक्षम नही है। आप श्री की वाणी मे त्याग का ओज, मनन का गाभीर्य तथा तत्त्व दर्शन का अमिट सत्य था। आपने शास्त्र मे ' खति से विज्ज पडिए'' की सूक्ति को आत्मसात कर लिया। सघ की विपरीत परिस्थितियो म आप श्री बिना किसी व्यग्रता के समता का आचरण ही करते रहे। भगवन् के नेत्रो से ऐसा अमृत झरता था कि उस झरने मे अवगाहित होने के लिए जनता उमड़ पड़ती। एक बार जो दर्शन कर लेता पुन चरणो मे पहुचता। ऐसा चुम्बकीय आकर्षण कि वहा से हटने का दिल ही नही करता। सत्य समता, सहिष्णुता की त्रिवेणी निरतर बहती रहती। उसी समता करुणा से एक लाख दलित वर्ग का उद्धार करके उन्हे धर्मपाल बनाया। तनाव युक्त जीवन को सही जीने के लिए समीक्षण ध्यान की विधि बतलाई। साथ ही हमे विपुल साहित्य दिया।

हमारे ऊपर आचार्य श्री के महान् उपकार हैं। हम इस उपकार के ऋणी हैं व ऋणी रहेंगे। ऐसे महान आचार्य वर्तमान समय मे एक ही थे। उनकी सानी का कोई साधक नही। ऐसी विरल विभूति को हमने खो दिया। गुरुदेव ने तो जीवन को अतिम सध्या तक जाग्रति के क्षणो मे जिया। समझ लिया कि साधना शरीर को सताना नहीं बल्कि आत्मा को साधना है। आत्म साधना व विशिष्ट त्याग तप की धूप मे आसक्ति को सुखाकर अतिम सास तक साधना की गहराई मे रम गये। शरीर थक गया किन्तु आत्मा कुन्दन की भाति दीप्त हो उठी।

शरीर से ममत्व छोड़कर आत्म साधना मे तल्लीन बन गये। उस अस्वस्थ अवस्था को भी हर क्षण, जाग्रत रहकर अगले जीवन का पाथेय रूप सथारा लेकर मृत्यु का स्वागत किया। ऐसे वीर साधक महान आचार्य भगवन् को श्रद्धाजलि किन शब्दो मे अर्पित करू यह बुद्धि से परे है। कहा है-

देह छता जे नी दशा वर्ते देहातीत।
ते ज्ञानी ना चरण मा वदन अगणित।

अत आप श्री का जीवन उत्सव बन गया व मृत्यु महोत्सव बन गई।

देह मे रहते हुए भी आपने देहातीत की साधना की। आज वह महान् ज्योतिपुज हमारे बीच मे भौतिक पिण्ड से नही है। वे तो अपनी साधना की अपरिमित खुशबू फैलाकर अनत में विलीन हो गये। लेकिन भगवान की अद्भुत ज्ञान ज्योति से दीप्त विचार तमसावृत हृदयो को आलोकित करते रहेंगे।

गुरुदेव के दर्शन की तीव्रतम तड़फ लग रही थी कि चातुर्मास उठते ही पहुच जाए, लेकिन भाग्य मे दर्शन नसीब कहा ? दर्शन की ये प्यासी आखे सदा सदा के लिए अब प्यासी रहेंगी।

आराध्य देव ने हमें एक ऐसा हीरा दिया जो कि आज नवम पट पर सुशोभित हो रहा है। ये चतुर्विध श्री सघ का अपनी ज्ञान की प्रभा से प्रकाशित चारित्र की सुगध से सुवासित और तप की प्रकर्षता से प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे नवम् पट्टधर को अभिनन्दन एव बधाई। प्रेषक - सुशील खटोड़ मनावर

हृदय रूपी कैमरे में सुरक्षित

किस्मत पर कहर ढाने वाली ए मौत तू क्यो न मरी,
तूने ही तो इस जहा की अखिया गम के अश्रुओ से भरी।
काश, न जाती समता विभूति पर तेरी यों तिरछी नजर,
तो सूनी ना होती, हुक्म शासन की बगिया ये हरी-भरी ॥

२७ अक्टूबर की निस्तब्ध रात्रि, सहसा आराध्य प्रवर के महाप्रयाण का दुखद समाचार सुनते ही मन व्यथित हो गया धैर्य विह्वलता की आधी मे धराशायी हो गया, वाणी स्तभित हो गई, वातावरण मे शून्यता छा गई, मति विवेक शून्य हो गई। नेत्र सजल हो गये, आखें उस मृत्यु के मूल को खोजने अश्को के पथ बेतहाशा भागने लगी और पथिको से पूछने लगी क्या वात्सल्य निर्झर, आगम पुरुष उस दिव्य आत्मा की देह अमरता की राही नही बन सकती ? हम जैसे पामरो की आयु उन्हे समर्पित नही हो सकती।

अन्तर की गहराई म दृष्टिपात किया तो अहसास हुआ कि उस दिव्य विभूति का महाप्रयाण नही हुआ, वे तो अमर हो गये। चर्म चक्षुओ से उनका देहपिण्ड ओझल हो गया पर उनकी अमर कृतिया, पावन स्मृतिया, प्रेरणास्पद सद् शिक्षाए हमारे हृदय रूपी कैमरे मे तस्वीर का रूप धारण किए सुरक्षित है। जब चाहे तब शीश झुकाकर अन्तर्निहित पावन तस्वीर का दिव्य दर्शन हमारे लिए वरदान स्वरूप है। जो जीवन के हर मोड़ पर 'रडार' की भाति पथ प्रदर्शक बनने की अतुल सामर्थ्य रखती है-

सयम, समता क्षमता, सरलता सहिष्णुता, आदि अनन्त गुण सदैव आप श्री की जीवन सरिता मे प्रवाहित होते थे। आपका जीवन महान् था। उस महानता का मूल्याकन चद शब्दो म या सतही दृष्टि स नही किया जा सकता। न ही ऐसी कोई तराजु है जिसमें उसे तौल सके। जो साधक स्व का विसर्जन कर स्वय को तराशता है, अपने अस्तित्व का विविध आयाम देता है, उसकी जीवन दृष्टि, उसका जीवन दर्शन अनूठा होता है।

हे समता सिन्धु, आप कोहिनूर हीरे एव रत्नो का परीक्षण करने वाली विचक्षण प्रज्ञा के धनी थे। शात क्रान्ति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य ने जब भावी उत्तराधिकारी की भावना से आपका परीक्षण किया,कसौटी पर कसा तब आप विनय विवेक, जीवतता, सहनशीलता, माध्यस्थता, दूरदर्शिता, निर्णय क्षमता, आदि सभी अर्हताओ मे सर्वोपरि रहे, यानी कसौटी पर शत प्रतिशत खरे उतरे और अद्भुत प्रज्ञापुञ्ज पचमाचार्य पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा की वाणी को सार्थकता दृष्टि से परख कर अपने सुघड़ करो से तराशकर अनमोल रत्न समाज को समर्पित किया है। जो पूर्वाचार्यो की समस्त परम्पराओ, आदर्शो एव सिद्धातो की रक्षा करते हुए सार्वभौम चिन्तन से, ऊर्जस्वल क्षमताओ से दूरदर्शिता पूर्ण निर्णयो से, शासन को समृद्ध, सिंचित एव विकसित कर रहे है।

हमे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रशान्त मूर्ति आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा आपकी हर ख्वाहिश को बखूबी पूर्णता प्रदान करेंगे और भव्य आत्माओ को अनुपम अपवर्ग की राह दिखायेगे।

दीप दीप से जला, दीप जलकर अमर हो गया।
राम को अनुशास्ता बना, गम मे खुशी दे अमर हो गया ॥

प्रस्तोता- अगुरबाला जैन

❑ महासती श्री मगला श्री जी म सा

मैत्री के सदेशवाहक

आचार्य नानेश एक तेजस्वी, यशस्वी वर्चस्वी आचार्य थे। बीसवी सदी के भाल (मस्तक) पर आपने अपन कृतित्व की अमिट छाप छोड़ी है, वह इतिहास के पृष्ठो पर स्वर्ण अक्षरो मे अकित रहेगी। आपका आभावलय पवित्र और मुख मडल प्रसन्नता का निकेतन था। आपके अत करण मे सदा समता का निर्झर प्रवाहित था। आप श्री जी का हृदय करुणा वत्सलता का दरिया था।

आप म सूर्य की तेजस्विता चद्र सी निर्मलता,सागर सी गभीरता के दर्शन एक साथ किए जा सकते थे। आकाश व सागर अमाप्य हैं, वैसे ही आप श्री के गुणो को कागज पर उतारना अशक्य है। आप श्री जी आत्म चतना के महासागर थे जिस शब्दो की सीपी मे कैस भरा जा सकता है ?

आप श्री जी के पद पकज पवित्रता के पथ पर गतिशील थे। अभय की मुद्रा में आपके हाथ उठते थे। नयना मे करुणा का तेज व मुख मडल पर समता का ओज था, वचनो से हमेशा मगल मैत्री का संदेश प्रस्फुटित होता था।

पू. गुरुदेव ने धर्म सघ को ही नही पूरी मानव जाति को समता, करुणा वात्सल्यता दी है। वे जन जन के आस्था के केन्द्र बन गए थे। हम आपके उपकारों से एक जनम तो क्या कभी भी ऋणमुक्त नही हो पायेंगे। जगत के रगमच से आपने बिदाई ली है, किन्तु आपके स्पदन समग्र मानव जाति के लिए प्रेरणा स्रोत रहेंगे। आपकी शिक्षाये सदियो तक मानव जाति का उद्धार करती रहगी।

कण-कण करता क्रन्दन

महासती श्री हेमप्रभा जी म सा

रामेश गुरू तुम्हे वंदन है करते शत् २ अभिनन्दन है ।
नानेश गुरू बिन जीवन का हर कण २ करता क्रन्दन है ॥ टेर ॥

दांता नगरी के दातारा है माड़ी कुल के उजियारा है ।
ओसवंश की शान गुरु मां शृंगारा के नन्दन है ॥१॥

गणेशी से संयम पाया, आतम का सच्चा धन पाया
समता और समीक्षण ध्यानी ने जीवन को बनाया है ॥२॥

गुरुवर तुम किस लोक चले वहां आतम का आलोक जले
पावन कृपा की ऊर्जा से मेरा जीवन करना चंदन है ॥३॥

दुख के बादल सब दूर हुए संघपति श्रीराम हुए,
जिनशासन महके गुलाब सम, सतीमंडल करती गुंजन है ॥४॥

मृत्यु से अमरत्व की ओर

जन्म आपका मगलकारी, प्रवर्ज्या थी पावनकारी,
प्रकृति जिनकी प्रेम क्यारी, जिनाज्ञा जिन्हे प्राण से प्यारी ।
कृति जिनकी कल्याणकारी, आहुति जिनकी आह्लादकारी,
थे अनत गुणो के धारी, स्वीकारो श्रद्धाजलि हमारी ॥

परम आराध्य आचार्य नानेश के महाप्रयाण की सूचना सपूर्ण भारत म काली घटा बन व्यथा (पीड़ा) का सलिल बरसा गई। लाखो हृदय की आशापूर्ण ज्योति अचानक बुझ गई। एसा लग रहा है मानो सपूर्ण सघ आज प्राण विहीन हो गया। जिनकी एक दृष्टि मात्र पाने को लोग तरसते थे। आज वे ही आखे उस दृष्टि को पाने के लिए फिर तरस रही है, तलाश रही है।

कबीर की पक्ति मे-

कबीर जब पैदा हुए, जग हसा हम रोए।
ऐसी करनी कर चलो हम हसे जग रोए ॥

प्रकृति का अटल नियम है बर्थ इज मेसेज आफ डेथ किन्तु वे महान् आत्माए मरकर भी अमर हो जाती हैं। आप श्री जी के गुणो का वर्णन करने के लिए शब्द कोष मे हमे शब्द नही मिल पा रहे हैं। जितने गुण गायें जाए उतने कम हैं। आप श्री की मधुर मुस्कान जन मानस को बरबस अपनी ओर लोह चुम्बक वत् खीच लेती थी। एक बार जो दर्शन कर लेता वह सदा सदा के लिए उपासक बन जाता था। आप श्री के दर्शन मात्र से भक्तजनो को गौरव की अनुभूति होती थी। मृग मरीचिका म भटके लोगो को आपन सद्राह दिखाई व तिण्णाण तारयाण ' बने।

आप श्री जी का जीवन चदन वन के समान था। चदन जब हरे-भरे वृक्ष क रूप मे रहता तब जगत के जीवो को शीतल छाया देता है। जब चदन काटा जाता है तब कुल्हाड़ी को खुशबू से भर देता है। जब चदन घिसा जाता है तब भी वातावरण को सौरभमय बना देता है, वैसे ही आप श्री जी ने हर परिस्थिति म जन-जन का तप त्याग व धर्म की सुवास ही दी।

आप पुष्प बनकर, जग को सुवासित कर गये ।
आप दीपक बनकर जग को आलोकित कर गये ॥
समता के सागर भक्तो के सबल,
क्यो छोड़ चले गये, आखो मे गागर ॥

आपने-

अहिंसा की आसदी से प्रेम का पाठ पढ़ाया।
नफरत के नासूर पर स्नेह का मरहम लगाया ॥

करुणा की कर्मशाला मे परोपकार सिखाया । समता की लेखनी से विश्व बधुत्व का लेख लिखाया ॥

हुक्म सघ की कीर्ति पताका दिग् दिगत मे लहरायेगे। नानेश-रामेश वाटिका को सदा हरित बनाये रखेगे ॥

❑ महासती श्री काता श्री जी म सा

अज्ञान-तम के नाशक

मिट्टी मे मिलने पर भी महक जाती नही,
तोड़ भी डालो तो हीरे की चमक जाती नही ।
महापुरुष कही भी किसी भी दशा मे रहे,
मगर सद्गुणो की सुवास छिपती नही ॥

अज्ञानतम के नाशक, सद्गुणो के प्रकाशक, करुणा के आराधक, समता के विस्तारक परम आराध्य गुरुदेव के निर्वाण के समाचार सुन हृदय धक् से रह गया ।

इस ससार म असख्य व्यक्ति ज म लेते हैं व असख्य कुसुम के समान खिलकर मुरझा जाते हैं। उनके अस्तित्व का समाज के लिए कोई विशेष महत्व नही रहता है। पर जो महान् आत्मा अपने आदर्श व्यक्तित्व और कर्त्तव्य की सुगध से विश्व को सुवसित करते हैं, प्रेरणा प्रदान करते हैं वे महापुरुष इतिहास के पृष्ठो पर अमर हो जाते हैं। समाज के लिए चिरस्मरणीय बन जाते हैं, ऐसे ही विशिष्ट महापुरुष थे आचार्य नानेश।

वीर प्रसूता, पुण्य सलिला रत्नगर्भा भारत भू ने अनेक ऋषि मुनि, महर्षियो को अपनी पवित्र माटी में प्रश्रय दिया व उ हे परवान चढ़ाया। उसी शृखला मे आचार्य नानेश के जन्म से लेकर निर्वाण (जन्म, दीक्षा युवाचार्य आचार्य, सथारा) तक की यात्रा का गौरव मिला है वीर भूमि मेवाड़ को।

गुरु ही हमारी जीवन यात्रा के पथ प्रदर्शक होते हैं। वे हमारी नौका को सही दिशा मे खेते हुए भव सागर पार उतार देते है। ऐसे अनत उपकारी गुरुदेव ने जैन जगत के नभ म प्रखर सूर्य बन ज्ञान की रश्मिया बिखेरी हैं तथा समता की सजीवनी का जनमानस मे सचार किया है। आपका जीवन ज्योतिर्मय व आचार निर्मल था। कथनी करनी मे एकरूपता थी। इसलिए आपके दिव्य जीवन की छाप जन जन मे अकित है, ऐसे अनत उपकारी गुरुदेव का स्मरण करते हृदय भर आ रहा है। मानवता के प्रति किये गये उनके कार्य सदा याद किये जायेगे।

❑ महासती श्री मधुबाला जी म सा

मानवता का मसीहा

जीवन मे सद्गुरु मिले, जीवन होय महान,
अतर का विष निकाल दे अमृत करावे पान ।

आचाय नानेश रूप समता सूर्य अचानक अस्त हो गया, जैसे पहाड़ से उतरती बरसाती नदी जम गई जैसे विराट चतना शून्य मे खो गई । मानवता का मसीहा इस धरती से उठ गया ।

वह वाणी मौन हो गई, जिसमे ससार की कल्याण कामना थी,
वे आखे मुद गई जो सभी की आखो मे समता भर देती थी ।

भले ही पार्थिव शरीर से आप विद्यमान नही है पर आप द्वारा प्रदत्त शिक्षाए हमारे हृदय मे गुजती रहेगी ।

ऐसा आशीर्वाद दो मुझे, मै जीवन को सफल कर सकू ।
चरण चिह्नो पर चल, जीवन मे महक भर सकू ।

पावन शरणा दे दो

महासती श्री सरदारकंवरजी म सा

ओ नाना पूज्य गुरुवर पावन शरणा दे दो ।
श्रद्धा से भजते हैं गुरु ध्यान जरा दे दो ॥
ओ अष्टम पूज्य गुरुवर वन्दन हम करते हैं ।
तेरी समता मय मूरत गुरु उर में धरते हैं ॥१॥

रामेश गुरु का मान, अंतर से बढ़ाएंगे ।
तुमसे बढ़कर प्रीति, हम इनसे लगाएंगे ॥
बनकर सच्चे हर दम, भक्ति शक्ति दे दो ॥ २ ॥

पा लें मुक्ति का पद, तब तक गुरु साथ रहो ।
आये जो भी संकट पल में उनको हर लो ॥
चंदना सा वीर बनके भव पार हमें कर दो ।
सरदार सतीवर को, गुरु भव से पार कर दो ॥३॥

प्रेषक तेजकुमार तांतेड़, इंदौर

वह नयन निधि अब कहाँ ?

आज हजारो हजार आखे उन्हे ढूढ रही हैं। सबके मन-प्राण जल बिन मीन की भाति छटपटा रहे हैं। मगर *वो नयन निधि अब कहा ? एक दुस्सह वज्रपात हुआ हम पर। हम तो सोच रह थे चातुर्मास उठते ही तुरत आचार्य* भगवन् की सेवा मे पहुचेंगे। मगर हमारी भावना मन की मन मे ही रह गई।

आचार्य भगवन् क साथ बिताये हुए क्षणो की स्मृतिया एक के बाद एक मानस पटल पर उभरने लगी। दीक्षा से पूर्व जब-जब मै गुरु चरणो मे पहुची, आचार्य भगवन् यही फरमाते कि ममता अब तुम समता कब बनोगी। उनके मुखारविन्द से निकले हुए शब्द, उनकी शिक्षाए, उनक निर्देश क्रमश आखो के आइने में तस्वीर बनकर उभर रह है।

इस वर्ष हमारी बहुत इच्छा थी कि हम आचार्य भगवन् के चरणो म चातुर्मास करेंगे। मगर हमार अतराय कर्म थे कि हम चातुर्मास नहीं मिल पाया। फिर भी मन मे उत्साह था कि अगले वर्ष हम आचार्य भगवन् के सानिध्य मे ही चातुर्मास करेगे। मगर मन की इच्छा मन मे ही रह गई और रात्रि १२ बजे ता यह समाचार आ गये कि आचाय भगवन् अपनी पार्थिव देह से हमेशा-हमेशा के लिए अलविदा हो गये। हृदय विदारक यह समाचार सुनते ही दिल रो पड़ा। कानो का विश्वास नहीं हो रहा था।

यद्यपि आचार्य भगवन् का सानिध्य मुझे बहुत कम मिल पाया क्योंकि मेरी दीक्षा को अभी सवा दो वर्ष ही हुए। *फिर भी मुये लगता है कि आचार्य भगवन् की मुझ पर बहुत कृपा थी।*

जब जब हम आचार्य भगवन के चरणो मे पहुचे एक अपूर्व शाति का अनुभव होता। इतनी अधिक प्रसन्नता होती थी कि जैसे स्वर्ग का साम्राज्य मिल गया हा। आचार्य भगवन् म इतनी अधिक आत्मीयता थी कि जो भी एक बार आप श्री के दर्शन कर लेता फिर उसे लगता कि और कही जाने की जरूरत ही नही है। आचार्य भगवन् के राम-रोम मे समता बसी हुई थी। आचार्य भगवन् का जीवन सरल निर्मल एव प्राजल था।

आप श्री का जीवन अथ से इति तक वदनीय और पूज्यनीय रहा है।

अश्रु धार बरसे

साध्वी सुप्रज्ञा जी म सा

नाना गुरु तुम बिन जमाना तरसे तरस
तुमको ढूढ़ लाखा आखें अश्रुधार बरसे ॥

पिता मोडी शृगार मा का हिया हरसे हरसे
दाता गाव हुआ धन्य जन्म लिया जब से ।१।

हुक्म सघ मे गुरु गणेशी कृपा से
शिक्षा दीक्षा पाई और तिरा भवजल स ।२।

धर्मपाल्न क्षमाशील समता सौरभ से,
समीक्षण ध्यान विनय सेवा से जीवन सरसे ।३।

चमका धा सघ ऐसे धीर वीर से
मिले मुक्ति शीघ्र ही कर्म जजीर से ।४।

एक महकता फूल गुलाब का

यह भारत धरा अवतारो की अवतरण भूमि है, सतों की पुण्यभूमि है, वीरो की कर्मभूमि है, विचारको की प्रचार भूमि है। यहा अनेक नर-रत्न समाज म, राष्ट्र मे पैदा हुए और हो रहे है, उसी भारत की मेवाड़ धरा पर हमारे आराध्य महाप्रभु आचार्य नानेश का जन्म लघु ग्राम दाता मे हुआ। आप श्री ने पोखरना वश को ही गौरवान्वित नही किया अपितु समस्त जैन समाज को गौरवान्वित करक अपने जन्म को सार्थक कर दिया।

हमारे आचार्य करुणा के अवतार थे। उन्होने बचपन मे सत के मुखारविन्द से छठे आरे का वर्णन सुना सुनकर चिन्तन की धाराए स्वय को प्रेरित कर गयी और उन्होंने अपनी चिन्तन धारा को निर्मल बना दिया। आप श्री ने गणेशीलाल जी म सा के समीप पच महाव्रत दीक्षा अगीकार कर ली। दीक्षा लेते ही आप श्री के समक्ष उग्र स्वभावी सतों की सेवा का अवसर आया, आप श्री ने उन सतों की सेवा भी अच्छी तरह की जिससे उग्र स्वभावी सत को भी यह कहना पड़ गया कि अरे इस सत क सामने तो मेरा गुस्सा कपूर के समान उड़ जाता है।

जिनकी प्रज्ञा प्रखर होती है तीक्ष्ण होती है उनकी वाणी प्राय मधुर व शालीन होती है, क्योंकि महापुरुष नगारे की तरह अपनी महत्ता का ढोंग नही पीटते, किन्तु बासुरी की तरह शाति और धीरज के साथ जा कुछ भी बोलते है सबका मन मुग्ध कर लेते हैं।

आचार्य श्री रूपी सुमन की समीपता जिस किसी भाग्यशाली को प्राप्त हुई उसे ज्ञान की सुगध और चरित्र की सुदरता का अनुभव अवश्य हुआ होगा। आज वह फूल हमारी आखो के सामने नही है लेकिन ज्ञान की सुगध और आचार की महक आज भी विद्यमान है। आपश्री के दिल मे बच्चो क प्रति असीम अनुकपा थी। हर मा को त्याग करवाते कि बच्चो को नही मारना बच्चे की रोने की आवाज उनके दिल को झकयार देती थी रोत हुए बच्चे के पास वे स्वय पहुच जाते थे

जयपुर का चातुर्मास सपन्न करक हम विहार करके जा रह थे। महला गाव के पूर्व मरा एक्सीडट मारुति कार स हो गया। बेहोशी की अवस्था हो गई थोड़ी देर बाद ज्योंहि मुझे होश आया आचार्य श्री मुझे दर्शन दे रहे और हिम्मत व धैर्य बधाते हुए कह रहे उठो चलो। मेरे पैर मे ज्यादा चोट थी, खून की धारा बह रही थी, मरहम पट्टी हुई जयपुर स डॉक्टर आए और कहा इनको जल्दी से जल्दी जयपुर पहुचा दीजिए एक्सीडट होने के बाद स्वय डढ कि मी महला गाव मे पहुचे। स्कूल म रुकने के लिए स्थान नही मिल पा रहा था, धर्मनिष्ठ चोरड़िया परिवार भी स्कूल वाल का समझा रह थे। लेकिन बार बार वह मना ही कर रहे थे लेकिन जैसे ही गुरुदेव का नाम लिया कि रक्षा करना, गुरुदेव की कृपा से स्थान मिल गया। गहरा घाव होन स एक महीने हास्पीटल मे रखा गया। मेरा घाव एकदम ठीक हो गया, किसी भी तरह की तकलीफ मेरे पैर मे नही रही।

धन्य है एसे गुरु की चरण शरण का जिनके नाम की स्मृति मे ही भवा-भवों क राग, दु ख टल जाते हैं, ऐसे गुरु को पाकर हम ता क्या चतुर्विध सघ का प्रत्येक सदस्य उनका ऋणी रहेगा। आचार्य श्री भले ही पार्थिव शरीर

से हमारे मध्य विराजमान नही है किन्तु उनके गुण सदैव हमारे साथ रहेगें । मै अनन्त श्रद्धा के साथ उनके श्री चरणो मे अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करती हू।

अन्त मे मै आचार्य श्री रामेश का नवम् पट्टधर बनने की बधाई देती हू और शुभकामना करती हू कि उनका शासन सदैव विस्तार पाता रहे ॥

❑ महासती समता श्री जी म सा

अमरता के सदेशवाहक

एक दिव्य दिवाकर अपना दिव्य ज्ञानालोक वसुधा तल पर विकीर्ण कर अस्त हो गया । हरी-भरी पुष्पित पल्लवित सरस बगिया का बागवान जाता रहा । वह ज्ञान-प्रदीप बुझ गया । तप, त्याग, समता की सौरभ लुटाकर वह पथ-प्रदर्शक अनत मे समा गया । आचार्य श्री ने अपने जीवन के अतिम श्वास तक समता का परिचय दिया । कोई भी पूज्य भगवन् को पूछते स्वास्थ्य कैसा ? आप श्री फरमाते थे, आनद है । चेहरे को देखने पर लगता साधना उर्ध्व स्थिति की ओर बढ़ रही है । उनके चिन्तन मे सूक्ष्मता, विचारो म अनतता, सयम साधना मे वज्र सम कठोरता हृदय मे फूल सी मृदुता परिलक्षित होती थी ।

आज हमे प्रखर तेजस्वी सघ नायक सप्राप्त हुए हैं, पूज्य नानेश ने खून पसीने से इस हुक्म सघ के बगीचा का सिचन किया । पूज्य रामेश को इसका माली बनाकर श्री सघ पर महद् उपकार किया । उनके गुणो की सुवास से समस्त वायुमडल ओत-प्रोत है । आप श्री की सत्य-क्राति की मशाल युगों-युगों तक जलती रहेगी । सघ का उपवन शत-शत युगा तक फले फूले, महकता रहे । हम सब इस शासन के सिपाही हैं, शासन की प्रगति के लिए एकजूट, रहें ताकि पूर्वाचार्यों की धराहर सुरक्षित और हरी-भरी रह सके ।

आराध्य के चरणों मे

जिन व्यक्तियो के कार्य महान होते है उनके प्रति सहज श्रद्धा उद्‌बुद्ध होती है। जिन व्यक्तियो का व्यक्तित्व, तेजस्वी और उर्जस्वी होता है, उन व्यक्तिया के प्रति भक्ति भावना पैदा होती है। जिनमे सद्‌गुणो का मधुर समन्वय होता है,वह व्यक्ति आराध्य बन जाता है। सुवासित सुमनो की मधुर सौरभ बिना प्रयास किए अपने आप फैलती है वैसे ही जो महान आत्माए होती है, उनके ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग और आत्मानुभूति की चर्चाये भी बिना प्रयास के दिग् दिगन्त मे फैलती हैं और उस मधुर सौरभ को ग्रहण करने के लिए भक्तरूपी भवरे भी उनके चारो ओर मडराते है।

असीमता को सीमाओ मे नापना, समुद्र की लहरो को नापना, तारिकाओ को गिनती की चदरिया ओढ़ाना आसान कार्य नही है। इसी प्रकार जाज्वल्यमान मुक्ति पथ की ओर अग्रसर आचार्य देव के अध्यात्म ज्ञान सम्पन्न जीवन को लेखनी में बाधना भी आसान नही। सूर्य प्रतिदिन अस्ताचल म डूबता नजर आता है किन्तु वह कभी डूबता नही बल्कि प्रकाशमान रहता है, भले ही हम उसे देख नही पाते ऐसे ही अध्यात्म जगत के सूर्य थे आचार्यश्री नानेश। आप श्री का सानिध्य मुझे प्राप्त हुआ उसे भुलाया नही जा सकता। आचार्य भगवन् के सानिध्य मे ब्यावर चातुर्मास मे दोपहर मे अध्ययनार्थ जाने का सुअवसर मिलता। दोपहर मे जब मै कुछ वृद्ध महासतिया जी के साथ जैसे ही समता भवन मे पहुची वैसे ही मूसलाधार वर्षा शुरू हो गयी। अध्ययन करने के पश्चात् आचार्य श्री का सुखद सानिध्य प्राप्त हुआ। आचार्य भगवन् ने फरमाया कि वापस जाते समय वृद्ध महासतिया जी का हाथ पकड़ कर ले जाना उनका ध्यान रखना, पैर आदि न फिसल जाए। इतनी वृद्धावस्था के बावजूद भी आचार्य भगवन् मे सेवा का गुण कूट-कूट कर भरा था। यह गुण उनमे नैसर्गिक था। उनके समक्ष जब भी यह जिज्ञासा कर कि हमारे योग्य कोई सेवा ? तो आप श्री जी फरमाते कि शासन की प्रभावना ही मेरी सेवा है और वर्तमान आचार्य श्री की आज्ञा पालन हेतु प्रेरणा देते थे। अत श्रद्धेय आचार्य श्री की आत्मा की उर्ध्वमुखी विकास की मगल भावना के साथ श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनकी शिक्षा के अनुसार वर्तमान आचार्य श्रीजी की आज्ञा का पालन मे तत्पर रहू, यही कामना है।

पतवार विन नौका हमारी

साध्वी चन्दनाजी म

जीवन नौका के तुम पतवार
पतवार बिन नौका हमारी।

नमक बिन भोजन फीका
नानेश बिन जीवन फीका ।

कहा मिलेगे गुरु नानेश हमें,
कोई तो बता दो हमें तरीका ।

एक बार आकर दर्शन देदा
प्यासी अंखियां तरस रही ।

राह तुम्हारी देख रही
नयनो से आंसू बहा रही ।

माली के बिना चमन का पत्ता-पत्ता उदास

सहसा ही पूज्य आचार्य श्री के स्वर्गवास के समाचार पर विश्वास नही हुआ पर एक गहन धक्का सा लगा। मनमस्तिष्क पर रह रहकर गुरुदेव की स्मृतिया कचोटती सी प्रतीत हुईं। गुरुदेव के साथ बिताए व श्रद्धापूरित क्ष वे प्रसग मन के द्वार खटखटाते से प्रतीत हुए। उनकी स्मृतिया मेरे हृदय के अत्यत कोमल तार को झकृत करती रहीं और अनजाने ही कृतज्ञता से बोझिल तथा ममता व श्रद्धा से अश्रुबून्द मेरी आँखो से झलके व लुढक पड़े। मै जानती हू कि आँसु एक दुर्बलता का प्रतीक है। ससार के किसी भी दु ख की आग अश्रु के जल से बुझा नहीं करती लेकिन जब तक आखो से बूदे नही छलकीं तब तक मुझे यह प्रतीत नही हुआ कि मेरा मन हल्का हो गया। पता नहीं था सब के गम का मिटाने वाले गुरुदेव इतनी जल्दी गहरा गम देकर चले जायेगे। जो सुख, जो ज्ञान, जो स्नेह आप श्री के चरणो मे मिलता था वह कहा मिलेगा। आज चहु ओर घोर तमिस्त्रा ही व्याप्त है। आज हमारा मार्गदर्शक कही खो गया है। माली के बिना आज इस चमन का पत्ता-पत्ता उदास है। प्रत्येक पुष्प मुरझा गया है। उपवन की इस वीरानी को देखकर हृदय हाहाकार कर रहा है। विधि का विधान अटल है। आना जाना सृष्टि का क्रम है, कौन बच पाया है, नियति के क्रूर हाथो से ?

गुरुदव के अनन्त अनन्त उपकारो की दीप शिखा हृदय मदिर मे सतत् जगमगाती रहती है। यही ज्योति हमारा सबल पाथेय है। उसी के आश्रय से ही यह जीवन सरिता आगे बढ़ती जाएगी।

आचार्य भगवन् महान् पुरुष थे। फलस्वरूप गुरु राम जैसे प्रतिभा के धनी गुरु के नाम को दीपाने वाले योग्यतम शिष्य प्राप्त हुए। देह से गुरुदेव हमारे बीच नही है पर उनकी सरलता, सजगता, समता, मधुरता का प्रकाश जीवन के अतिम सास तक हम मार्गदर्शन देता रहेगा। उनकी निर्देशित शिक्षाप्रद बाते हमे आज भी याद आ जाती हैं तो मन श्रद्धा से अभिभूत हो जाता है।

तू नही लेकिन तेरी उल्फत अभी तक दिल मे है।
बुझ चुकी है शमा लेकिन रोशनी महफिल मे है ॥

हुए हम निराधार

साध्वी सुनीता श्रीजी

शब्दों व भाषा की अभिव्यक्ति असंभव है
गुरु नानेश की महिमा बताना असंभव है ।१।

गुरु नानेश की शक्ति पहचानना असंभव है
गुरु नाना की गरिमा गाना असंभव है ।२।

नूतन अध्यात्म दृष्टि के थे सूत्रधार
भव्य जीवन नैया के सुदृढ़ पतवार ।३।

समता के आप साक्षात अवतार,
आप बिना आज हुए हम निराधार ।४।

महासती श्री सुरक्षा जी म सा

एक अधूरा स्वप्न

हमारी अनत, असीम श्रद्धा के केन्द्र, आश्रय प्रदाता, जीवन निर्माता, परम आराध्य आचार्य श्री नानेश इस नश्वर ससार से महाप्रयाण कर गए तो हम नन्ही-नन्ही कलिकाओ के जीवन म अनहोनी अनचाही घटना का घट जाना ही नियति का खेल है। प्रथम बार नोखामण्डी मे महामहिम पुण्यात्मा महापुरुष के इन नेत्रो से दर्शन हुए थे। तभी से मेरे मन मे उनकी सरलता, मधुरता, समता, सहजता, नम्रता आदि बस गई थी। तभी मुझे एसा अनुभव हुआ था कि पडित, विद्वान तार्किक, वक्ता, प्रवक्ता, सब कुछ आसानी से मिल सकते हैं, किन्तु ऐसे स्नेहिल, साधना की गहराई मे निमग्न लाखो आखो को शीतल शाति पहुचाने वाली विरल विभूति समत्व योगी का मिलना अत्यन्त दुष्कर है।

मनुष्य का स्वप्न कभी साकार नही होता है, वह हमेशा एक टीस बनकर सालता रहता है। जब मुझे गुरुदेव के परम पवित्र शासन मे आश्रय प्राप्त हुआ उस वक्त मेरे मन मे भी कुछ अरमान थे। मैने भी बड़ी आशा स स्वप्न सजोया था कि सयमी जीवन मे एक बार गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ लेकर बहुमूल्य सानिध्य को प्राप्त करू। एक पोती की तरह अपने दादा की सेवा का मौका प्राप्त कर उनकी मधुर वाणी के रस को ग्रहण करू। लेकिन मेरा स्वप्न टूट गया। मन के सारे सजाए गए फूल बिखर गए। चमन वीरान हो गया। मेरा जो स्वप्न था वह अधूरा रह गया। उनकी शेष यादे उनकी मधुर स्मृतिया जीवन को कल्याण देने वाला पैगाम मन मदिर म बसा हुआ है। मै प्रभु से यही मगल मजुल मनीषा करती हू, आशीर्वाद चाहती हू कि मेरी साधना म, मेरी आराधना मे, मेरी उपासना मे, जीवन के हर मोड पर वे वज्र के समान सम्बल बने तथा चतुर्विध सघ के हृदय सम्राट, परम आराध्य गुरुदेव की आत्मा क्षपक श्रेणी पर आरूढ होकर अतिशीघ्र मुक्ति मजिल को प्राप्त करे।

आत्मगुणो की शीतल छाव

साध्वी सुमेधा श्री जी

समत्व भाव का दीप जलाकर
किया है जगत उद्धार
ध्यान समीक्षण के द्वारा ही
खाले गुणमय भव्यतम द्वार॥

करुणा निलय दाता म जन्म
किया दीप्ति मय संघ परिवार,
आज लुम सा देख तुम्हें
है गिरती अश्क की कतार।

आभा विशिष्ट व्यास आदर्श था,
सतत स्वर थे अभिगम रम्य
दिया विश्व को भव्य सुनहरा
समता भाव का सुन्दर रूप॥

शान्त दान्त अक्लान्त जहां हो
स्वीकारें अनन्त मरे भाव
मतत २ देता रहता है
आत्म गुणां की शीतल छाव॥

प्रभुता के चरणो मे लघुता की पाखुरी

मै जिस प्रकाशपुज जीवन का सकेत कर रही हू, उन्हीं के पावन चरणो मे बहुत से साधको ने अपने जीवन को प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा ली और सयमाचरण की ओर अग्रसर हुई है, उस महाज्योति का नाम है आचार्य नानेश। इस नाम के उच्चारण मात्र से अतर मे पवित्र भाव उर्मिया उत्पन्न होती हैं।

जीवन का स्वभाव सा बन गया है जब-जब भी हमारा नेही या परिचित हमसे बिछुड़ता है तो हमे पीड़ा होती है परन्तु हमे वीतराग प्रभु ने मोह से विमुक्त रहने का प्रतिबोध दिया है।

मै उनके जीवन की विशिष्टताओ को जितना ग्रहण कर पायी हू, उन सबका सार सक्षेप यही है कि उनकी सरलता पवित्रता, आचार निष्ठा कष्ट सहिष्णुता समता और विपत्ति वियाग इत्यादि को आत्मसात करने की विमल भावना हममे भी साकार हो जाए या उसका अशाश भी हममे प्रवेश पा जाए तो उनका स्मरण सच्चा साबित हो सकता है।

पर्वत मे उचाई है, परन्तु गहराई नही समुद्र मे गहराई है तो ऊचाई नही, अमृत मे राग निवारक शक्ति है परन्तु दुर्लभ है, और जल मे शीतलता है तो वह चचल है, किन्तु सत का जीवन बहुत ही विलक्षण होता है। ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व के धनी, साधना के महाप्राण, समत्व योगी आराध्य प्रवर आचार्य श्री नानेश मे पर्वत की तरह ऊचाई भी थी तो समुद्र की तरह गहराई भी। वे अमृत की तरह दुर्लभ नही किन्तु सुलभ भी थे, जल की तरह शीतल होकर भी चचल नही, किन्तु धीर वीर गभीर थे।

मेरी ओर से यही प्रभुता के चरणो मे लघुता की पुष्प पाखुरी।

दे दो कृपालु हमे दर्शन

साध्वी प्रेमलताजी म

याद करते नानेश का जीवन भर आते हैं मेरे नयन
क्या मुख की छटा पापों से हटा,
बन गये थे तारण तिरण।
मेरे कांटों के पथ ये चल राहों मे जो पत्थर मिले,
अन्तर की रटन नहीं कोई दुश्मन।
महावीर सा ही रहा चिन्तन ॥1॥
चारों तीर्थ के गुरु थे ज्ञाता गंभीरता की क्या न पाता
ज्ञान कितना गहन, क्रिया का मन्थन
नन्दिनी नीर सा था भी मनन ॥2॥
इन्द्र दया क्या गुरु की गाऊं नहीं ऐसा अरस मैं पाऊं
याद जबरे करे झोली मेरी भर
दे दो कृपालु हमें दर्शन ॥3॥

आस्था के अमर देवता

माला मे प्रथम मणि का उपवन मे प्रथम पुष्प का, गगन मे प्रथम नक्षत्र का जो महत्वपूर्ण स्थान है, उससे ी सर्वोपरि स्थान वर्तमान सन्त समुदाय मे मेरे आराध्य देव, मेरी आस्था के अमृत सिन्धु आचार्य भगवन् का था। ाप श्री केवल जैन जगत के उज्ज्वल सितारे ही नही अपितु भारतवर्ष के चमकते-दमकते ज्योतिपुज रत्न थे। वे क ऐसे अलौकिक महापुरुष थे जिनकी महिमा और गरिमा को भाषा के द्वारा व्यक्त करना सभव नही है। वास्तव आचार्य देव अपन आप मे इस सदी के सर्वथा मौलिक इतिहास पुरुष थे। जिनका प्रत्येक पृष्ठ और प्रत्येक पृष्ठ ी पक्ति प्रेरणास्पद थी।

आप श्री का जीवन बीज से वृक्ष बिन्दु से सिन्धु और कण से विराट की महायात्रा का रहा है। चरैवेति- रैवेति मन्त्र के प्रमुख स्मरण कर्ता और आचरण कर्ता रहे हैं। उन्होंने गावो से लेकर महानगरो तक, गलियो से लेकर जपथो तक, कुटियो से लगाकर भव्य राजप्रासादो तक निरन्तर घूम-घूमकर हुक्मेश के शासन को दीप्तिमान किया। प्रभु हावीर एव हुक्मश की इस बगिया मे कोई आच न आये इसलिए आपने कहा था कि 'सघ एव शासन की सुरक्षा ़ लिए मेरी इतनी तत्परता है कि यदि इसकी सुरक्षा करते हुए मेरा तन भी चला जाए तो मुझे कोई परवाह नही ।' आप श्री स्वस्थ न होने पर भी सानिध्य मे रहने वाले साधु साध्वियो का पूरा-पूरा ध्यान रखते थे। आचार्य गवन् का व्यक्तित्व महान था।

आप श्री अपने सयमशील शिष्यो से घिरे हुए व्याख्यान मण्डप मे विराजमान होते तो ऐसा प्रतीत होता जैसे तारा ण्डल से घिरा हुआ चन्द्रमा सुशोभित हो रहा है। आश्चर्य तो यह है कि आपका मुख सूर्य की भाति दैदीप्यमान रहता ा। मगर मुख से निकलने वाले वचन इतने मधुर और शातिप्रद थे मानो चन्द्रमा से अमृत बरस रहा हो। उस अमृत ा पान करने हजारो हजार भक्त लालायित रहते थे। ऐसे दिव्य योगीराज शरीर पिण्ड से आज हमारे बीच मे नही लेकिन चेतना स्वरूप उन महापुरुष की दिव्य आत्मा हमारे मन मदिर मे विराजमान है। मुझे नाज है उन अनत योत पुञ्ज आचार्य नानेश के प्रति जिन्होंने अपने दीर्घ अनुभव और सूझ-बूझ के आधार पर गुदड़ी का लाल वर्तमान आचार्य प्रवर रामलाल जी म सा जैसे दिव्य महापुरुष को देकर हमारे ऊपर बहुत उपकार किया है। इन्ही भावनाओ ़ साथ-

सीप का मोती कहू या ज्ञान की ज्योति कहू।
आपके दिव्य सदेश से पाप मल धोती रहू॥

कल्पतरु चिन्तामणि सम

शासन एव गुरु का सदा करिए सम्मान,
भूल करके भी कभी कोई न करे अपमान।
यदि कोई करोगे भूलकर भी अपमान,
तो याद रखियेगा नीचे गिरोगे धड़ाम॥
ओ शृगारा के कुल केतु,
बाध गये भव्यो के लिए शिवसेतु।

खिलत हुए हुक्माद्यान म एक महान कल्पतरु वह सदा लहलहा रहा था, उस महान कल्पतरु की छत्र छाया तले भव्य आत्माए पा रही थी विश्रान्ति और मिटा रही थी भव भव की भ्राति। इतने समय तक ता हम कल्पवृक्ष की महिमा सुनत ही आ रह थे कि कल्पवृक्ष स हर व्यक्ति अपने अरमान पूर्ण कर सकते हैं लेकिन हम तो साक्षात् महाकल्पतरु रूप आचार्य श्री नानेश का पाकर हर अरमान को पूर्ण कर रहे थे और जब चाहते तब सम्पूर्ण इच्छाएं आटोमेटिक रूप से पूर्ण हा जाती।

अचानक ही जब सुना कि गुरुदेव ने सथारा पच्चक्ख लिया है फिर भी मन को विश्वास नही हो रहा था। मन अवाक् रह गया। अर यह क्या ? कुछ क्षण तो स्तब्धता छा गई। बेचारे नत्र तो बिन दर्शन के प्यास ही रह गये। अन्तरात्मा चिन्तन म डूबी कि अचानक ही समता विभूति आचार्य श्री नानेश का जवरन हमस किसने छिन लिया, यह ता विधि का विधान है इसे कौन टाल सकता है।

धन्य है गुरुदेव आपकी समता को। आपने जा दो महान् देन सघ को दी है समता दर्शन व समीक्षण ध्यान ', यह सदा-सदा अविस्मरणीय है। गुरुदेव जब समीक्षण ध्यान की गहन साधना मे विराजते तब साक्षात भगवान का रूप ही नजर आता।

दानो के आग लग रहा है ध्यान। एक अकारान्त तो दूसरा इकारान्त। हम तो निराल एव कृतार्थ हो गए एसी तरण तारण की जहाज को पाकर। महापुरुषो का जीवन अनेक उपलब्धिया एव चमत्कारो स भरपूर रहता है। उत्कृष्ट तपापूत, साधना शील पूज्य गुरुदेव का जीवन ठीक एसा था कि प्राणी प्रभावित हो जाता था। जहा भी पधारते वह उपवन शून्य जीवन सरसब्ज बन जात।

आपका दीप्तिमन्त रूप सहसा ही भव्यो का अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। बिना आमन्त्रण निमन्त्रण के ही भक्तगण कमल पर भ्रमरवत् मडराने लग जात। फलस्वरूप लाखो दलिता का उद्धार कर दानव से मानव बना दिया जिन हाथा मे शस्त्र रहत थ, उन हाथा मे शास्त्र एव धार्मिक ग्रथ थमा दिय। आचार्य देव एक विशिष्ट कलाकार एव सच्चे जौहरी थे। सैकड़ा अनगढ पाषाणा का गढकर मूर्ति का रूप देकर उनको पूजा प्रतिष्ठा के योग्य बनाया। मुझ बाला पर भी गुरुदेव ने अनन्त अनन्त उपकार कर चारित्र रत्न प्रदान किया। धन्य है गुरुदेव की कृति व कृति का

।
हर परिस्थितियो म समता विभूति के गेम-रोम मे समता निर्झर प्रवाहित होता हुआ ही नजर आता था। महापुरुप के जीवन मे एक बहुत बड़ी विशेपता थी। पूज्य गुरुदेव हमेशा यही फरमाया करते थे, 'मै सुनता सबकी हू करता वही हू जो मेरी अन्तरात्मा को मजूर हो।' कोई भी कार्य क्यो नही हो। वाणी मे अद्भुत जादू कि नाम *स्मरण से सारे सकट टल जाते। वे आत्मज्ञानी, समीक्षण* ध्यानी, सागर सम गभीर, पृथ्वी सम धीर, सयम साधना म मेरूवत अड़िग, अचल।

जौहरी बनकर ही हीरा परखा, गुरु राम को तुमने निरखा।
राम बनेगा नाना सरीखा, इनको पाकर जग सारा है हरखा॥

आधी तूफान क सैकड़ो थपेड़ो को सहते हुए भी उन्होंने प्राणपण से शासन की सुरक्षा की है। कोटि-कोटि धन्यवाद ऐसी उत्कृष्ट ज्योति पुज आत्मा को आचाराग सूत्र मे एक छोटा-सा सूत्र है-

रवण जाणाहि पडिए'

क्षण अर्थात् समय को जानने वाला ही वास्तविक *पण्डित कहलाता है। आचार्य श्री नानेश के जीवन मे यह* सूत्र अक्षरस घटित हो गया। ऐसी विकट परिस्थिति एव इतनी रूग्णावस्था मे बड़े-बडे साधक भी चेतना खो बैठते है लेकिन शासननायक आचार्य नानेश ने आत्मव्याधि मे भी अपूर्व समाधि धारण की। वे आत्माए धन्य हुई जिन्होने ज्योति पुज आत्मा की अन्तिम महाज्योति के *पावन दर्शन किए। भौतिक* देह से *भले ही गुरुदेव* दूर हो गये हों लेकिन उनकी स्मृतिया हर समय मानस पटल पर अकित रहेगी। आचार्य श्री नानेश की आत्मा शीघ्र ही परमात्म पद को वरण करे यही मेरी कामना है। शास्त्रज्ञ आगम मनीपी तरुण तपस्वी आचार्य श्री रामेश जैसे गुरुराज को पाकर मन पुलकित है।

प्रतिपल वन्दनीय अर्चनीय आप श्री की धवल कीर्ति युगो-युगो तक दिग् दिगत म प्रसरित होती रहे यही आन्तरिक भावना है।

❑ महासती श्री भावना श्री जी

गुलाब की तरह महका जीवन

आप श्री के गुणो का वर्णन करना मर लिए सभव नही। आप श्री की वाणी मे मिठास,तन मे सेवा और जीवन मे निर्मलता थी। मन गद्गद् हो रहा है, आप श्री की अनक स्मृतिया मानस पटल पर अकित हैं। आप श्री का जीवन ज्ञान, दर्शन और चारित्र मे बेजोड़ था। सुख दुख के काटो मे भी आप श्री का जीवन गुलाव की तरह महका।

प्राण ऊर्जा के सम्प्रेषक

आचार्य श्री नानेश विलक्षण महापुरुष थ । उनका व्यक्तित्व विलक्षण था, विलक्षण था पौरुष, विलक्षण था मनोबल विलक्षण थी कायशैली, विलक्षण थी रुचि, विलक्षण थी प्रतिभा । एक वाक्य मे कह तो उनका हर कार्य अद्भुत और अनुपम था । विलक्षणता के साथ ही वे महान ऊर्जावान और प्राणवान थे । ऊर्जा शक्ति के भण्डार थे । उनका आभा मण्डल तेजस्वी, शरीर शक्ति सम्पन्न था । सामान्यतया अवस्था के साथ-साथ तेजस शक्ति म पड़न लग जाती है किन्तु गुरुदेव का तेज तो और अधिक चढ़ता गया । उनकी सम्प्रेषण शक्ति गजब की थी । वर्तमान आचार्य श्री जी का व्यक्तित्व आचार्य श्री नानेश के समान होन का मुख्य कारण सम्प्रेषण ही है ।

कुछ लोग अगुलिया से शक्ति संप्रेषण करते है, कुछ आखो स, कुछ चरण स्पर्श से कुछ समुच्चारित शब्द ध्वनि से किन्तु ऐसे तीर्थंकर तुल्य भगवान स्वरूप विरले ही मिलते है जिनका सपूर्ण शरीर ही चुम्बकीय होता है प्राणवान होता है । आचार्य श्री नानश ऐसे ही ऊर्जा पुरुष थे । शरीर ऊर्जा मदिर ' यह उनके लिए चरितार्थ हो चुका था । मात्र उनके नाम की रचना ही कुछ एसी थी कि उसे उच्चारित करते ही प्राणो मे नई चेतना भर जाती थी ।

जैन ग्रथा मे एक घटना प्रसग उपलब्ध है, कहा है- गौतम स्वामी अष्टापद पर जा रहे थे, रास्ते मे सैकड़ो तापस गौतम स्वामी की अद्भुत क्षमता स प्रभावित हाकर दीक्षा का पथ स्वीकार कर लेते है । रास्त मे गौतम स्वामी भगवान के समोशरण की विशपताओ का वर्णन कर रहे थे उसे सुनते-सुनते ही सभी का केवल ज्ञान की उत्पत्ति हो गई । गुणो मे कितनी बड़ी शक्ति है । जिम प्रकार गौतम स्वामी ने भगवान की विशेषता बताई और सारे तापस स्वय को धन्य कर लिए वैसे ही पूज्य गुरुदेव के नाम दर्शन व चरण स्पर्श से जीवन धन्य हो जाता है ।

<u>'नाना' नाम का चमत्कार</u> दो शब्दा का यह छोटा सा नाम बड़ा चमत्कारी है । डूबते को सहारा देने वाला है । उदयरामसर के नथमल जी सिपाणी आसाम मे नाव म बैठकर यात्रा कर रहे थे अकस्मात् तूफान उठा और नाव डोलायमान हो गई । उन्होंने सिर्फ नाना नाम का स्मरण किया । वह नाव जो मझधार म डोलायमान थी, स्थिर बन गई और वे पार उतर गए । ऐसे एक नही अनेक उदाहरण हैं । इस नाम ने सजीवनी बूटी का काम किया है ।

<u>आखो का सम्प्रेषण</u> नजर का प्रभाव जादुई था । कौन व्यक्ति होगा जा आप श्री के सानिध्य को पाकर छोड़ने की इच्छा करता हो ? भावनगर की वह पावन भूमि जहा दो दो आचार्यों का चातुर्मास एक साथ एक ही स्थान पर था । पारिवारिक जन गुरुदेव क दर्शन करन जा रहे थे । मन म विचार हुआ मुझे भी दर्शन करना चाहिए । इस प्रकार विचार कर घरवालो स आग्रह किया, मेरे विशेष आग्रह स मुझे जाने की अनुमति मिल गई । लम्बे समय तक ट्रेन का सफर प्रथम बार करने के पश्चात् हम भावनाओ से प्रेरित भावनगर क स्थानक भवन मे पहुचे । जहा आचार्य भगवन् विराज रहे थे । प्रथम बार दर्शन किए । दर्शन करत ही मनोभावा ने नया मोड़ लिया । विचार हुआ ये दर्शन कितन पावनकारी शातिदायक हैं । मुझे यह सयोग छोड़कर अब कही नही जाना है । बस यहा से भावनाओ ने नया मोड़ ले लिया । लगभग एक महीने की अवधि म मुझे बहुत कुछ सीखने, सुनने का अवसर मिला । यहा स रवाना होते होत एक सामायिक और चौविहार का नियम लकर घर गए । पहले से ही बहन श्री प्रमिला अपनी दीक्षा की भावनाओ में आगे बढ़ रही थी । किन्तु मै उनस हमेशा यही कहा करती थी कि आप भले ही दीक्षा लीजिए किन्तु

मै नही लूगी। लेकिन गुरुदेव के दर्शन मात्र से ही दीक्षा लेने की इच्छा हो गई। मेरा स्वास्थ्य ठीक नही रहता था। इसी कारण सभी बोलते थे कि ऐसी हालत म दीक्षा लेकर क्या करोगे ? किन्तु मैंन तो मन म ठान लिया था कि मेरा स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा, मै अवश्य ही दीक्षा लूगी। गुरुदेव की मुझ पर ऐसी कृपा हुई कि मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया। बस फिर पारिवारिक जनो ने हम दोनो बहनो को आज्ञा दी और हम दोनो दीक्षित हुए। हमे ही नही अनेक मुमुक्षु भाई-बहना को गुरुदेव के द्वारा ऊर्जा शक्ति प्राप्त हुई और व हमेशा-हमेशा के लिए गुरुदव के चरणो मे समर्पित हो गए।

<u>चरणो का सम्प्रेषण</u> आचार्य श्री जी क चरणो का स्पर्श मा की गोद जैसा था। प्रवचन के पश्चात् हजारो लोग लयबद्ध तरीके स उनके चरणो का स्पर्श करत रहते थे। उस समय आचार्य भगवन् को कई बार दो-तीन घटों तक भी बैठना पड़ता था। जहा वे चरण रखते, उसक नीचे रही हुई धूल को लोग उठाकर अपने पास सुरक्षित रखते थे। आधि-व्याधि क समय उस धूल का उपयोग औषधि के रूप मे करते थे।

<u>दर्शन का सम्प्रेषण</u> आचार्य श्री जी के दर्शन मात्र से अनेक जीवात्माओ की आधि-व्याधिया समाप्त हुई हैं। नोखामण्डी की श्रीमती पन्नीबाई की विगत ११ वर्षों से नेत्र ज्योति समाप्त हो गई थी। गुरुदेव के दर्शन एव मागलिक श्रवण की इच्छा पारिवारिक जनो के समक्ष रखी। गुरुदेव पधारे मागलिक श्रवण कर वह वृद्धा जो गत वर्षों से खाट पर सोई थी उस दिन उठ गई। पारिवारिक जनो ने साश्चर्य पूछा- क्या तुम्हे दीखने लगा है ? वृद्धा मा ने कहा, हा। गुरुदेव की मुझ पर असीम कृपा है। वह ८५ वर्षीय महिला दूसरे दिन तो आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ स्वय स्थानक म आ गई। गुरुदेव के गुणो का वर्णन मै स्वय अपनी लेखनी के माध्यम से अधिक लिखने म समर्थ नही हू। अथ से इति तक उनका सारा जीवन क्रान्तिकारी रहा।

❑ महासती श्री प्रियलक्षणा जी म सा

अणु-अणु से मधु वर्षा

आचार्य भगवन् क जीवन मे सयम की सजगता शास्त्र का गभीर ज्ञान सहिष्णुता और चारित्र की पराकाष्ठा थी। हम इतजार मे थे कि कब चातुर्मास समाप्त हो और हमें गुरु दर्शन मिले। पर अतराय कर्म आप श्री की आतम-चेतना छ महीने पहले ही जाग गई और आप देहातीत हाकर स्व रमण की ओर चले गए। कितनी जागृति थी स्वय मे ? आप श्री ने समता का आचरण कर प्रयोग में दिखाया। पूज्य गुरुदेव तन से चले गये ता क्या हुआ वे हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे सहारा देते रहेंगे। हमे एक रत्न दिया है आचार्य श्री रामलाल जी म सा के रूप मे। आज हम गुरुदेव के सिद्धातो को जीवन मे उतारे। मै परम् पूज्य गुरुदेव से यही आशीर्वाद चाहती हू कि मेरी सयम-यात्रा सकुशल चलती रहे। शासन चमकता रहे और वर्तमान आचार्य भगवन् हम गुरुदेव की तरह सभालते रहें।

श्रद्धा सुमन अर्पण गुरु प्रतिपल तव चरणन ।
आन्तर से अभिनदन करते जाये अर्चन ॥
सहिष्णुता के बादल से समता रस टपके,
सजगता के सूर्य से चारित्र किरण चमके ।
तेरे जीवन के प्रतिपल मै गुण गाऊ,
तेरे जीवन के अणु-अणु से मधु ही मधु बरसे ॥

गुरु कृपा बिन जीवन सूना

नैया चाहे कितनी ही सुदर हो, परन्तु नाविक न हो तो नौका पार नही पहुचती। इसी प्रकार जीवन एक नैया है, जिसके नाविक गुरुदेव थे। आत्मा अज्ञान की आधी म फस गई थी, उसे गुरुदेव ने ज्ञान प्रकाश दिया। मिथ्यात्व की ग्रथि को तोड़कर सम्यक्त्व प्राप्त करने की सही राह बताई। सच कहू तो गुरुदेव जीवन के सच्चे निर्माता थे। घड़ा मिट्टी स बनता है, पर बनता किस प्रकार है ? कुम्हार मिट्टी लाता है, उसम पानी डालकर पिण्ड बनाता है फिर उस पिण्ड का चाक पर चढ़ाता है, घड़े का आकार देता है, फिर अग्नि म पकाता है, तब उस घड़े की कीमत होती है। हीरा खान में पड़ा है तब उसका कोई मूल्य नही होता। जौहरी कच्चा माल लाकर घिसवाता है, उन्हे खरा पर चढ़ाकर चमकाता है, तब हीरा कीमती बन जाता है।

<u>गुरु अर्थात् नूतन जीवन का निर्माता</u> बस इसी प्रकार गुरुदेव शिष्य और शिष्याओ क जीवन का नवसर्जन करते हैं। अज्ञानी व असस्कारी जीवन के हर पल को सुसस्कारी, गुणवान और पराक्रमी बनाते हैं और उनके जीवन का नवनिर्माण करते हैं। आपके घर मे जो बल्ब का प्रकाश होता है, वह कहा से ? पावर हाऊस से कनेक्शन जुड़ा हुआ हो तो वहा से आपका घर चाहे कितना भी दूर हो फिर भी प्रकाश आपको प्राप्त होगा और पावर हाऊस क पड़ोस म झोंपड़ी हो, पर यदि कनेक्शन जोड़ा हुआ नही तो बगल मे होते हुए भी वहा अधेरा रहेगा। इसी प्रकार गुरुदेव की आज्ञा और उनकी सीख के साथ यदि कनेक्शन जुड़ा होगा तो आपका जीवन भी प्रकाशित हो उठेगा। और कनेक्शन न जोड़ा हो तो उनके सानिध्य मे रहने पर भी जीवन रूपी झोंपड़ी म अधेरा ही रहेगा।

गुरुदेव के मुझ पर अनत अनत उपकार हैं। गुरुदेव ने ससार मे डूबती मेरी नैया को सयम का आलबन देकर पार लगा दिया। माता पिता तो मात्र जन्म देते हैं, पर गुरुदेव का उपकार तो जन्म जन्मातर तक का है। गुरुदेव सुन्दर तरीके स जीवन जीने की कला सिखाते हैं। उसी प्रकार पूज्य गुरुदेव के सयम ब्रह्मचर्य का अद्भुत प्रभाव मुझ पर पड़ा, उससे अपूर्व शाति और शीतलता अनुभव की। सयम मार्ग का जैसा सरल सर्वोच्च और स्पष्ट प्रकार का मार्गदर्शन उन्होंने दिया है, वह भवो-भव तक भूला नही जा सकता है। सत भगवत जी ने मुझे गुरुदेव की राह पर चलने की प्रेरणा दी। गुरुदेव ने राणावास मे ऐसी अमृतधारा बहायी कि मेरे जीवन रूपी क्षेत्र मे वैराग्य का बीज दृढ हो गया। वैराग्य रस का झरना बहाती वाणी की वर्षा ने मेरी अतर वीणा के तारो को झकृत कर दिया। वे मेरे जीवन के सच्चे सलाहकार और जीवन के खिवैया बने। ऐसे तारणहार जीवन के सच्चे खिवैया पूज्य गुरुदेव का मुझ पर उपकार है। ऐसे ज्ञानदाता सयमदाता, अनतानत उपकारी गुरुदेव के लिए मै क्या कहू, उनके गुण इस जीभ से वर्णित नही किए जा सकते। न कलम से लिपिबद्ध किए जा सकते हैं। वे उत्तम कोटि के महान् आत्मार्थी साधक थे। कषाय की कचरापेटी और अज्ञान के अधेरे म भटकती मुझे गुरुदेव ने सच्चे जीवन का प्रकाश प्रदान कर पाच महाव्रत रूपी अमूल्य रत्न से सजा दिया। मात्र सयमी जीवन का दान नहीं दिया अपितु सयमी जीवन की अनेक कलाएं भी सिखाईं। वात्सल्य और प्रसन्नता की धारा उनक हृदय म सदैव बहती रहती थी। गुरुदेव यदि न मिले होते तो मेरी यह जीवन नैया इस भीषण ससार मे थपेड़ खाती रहती। ससार मे डूबती नौका को बाहर निकाल सयमी जीवन की

अनमोल भेट देने वाले, मुरझाती जीवन नैया का अमृत पान कराने वाले मिथ्यात्व के महावन मे भटकती एक अबोध बाला को सही मार्ग बताने वाले ससार की ज्वाला से उबारकर सयम का साज सजाने वाले, मोक्ष मार्ग के सोपान पर चढ़ाने वाले, अनत अनत उपकारी समीक्षण ध्यान योगी, समता विभूति पूज्य गुरुदेव का उपकार भला कैसे भूला जा सकता है ? आज अरिहत प्रभु की गैर हाजिरी मे गुरु ही जीवन का आधार है गुरुब्रह्म, गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर, गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम" गुरु ही ब्रह्म है, गुरु ही विष्णु है और महेश्वर है। इसलिए गुरुदेव को कोटिश नमस्कार है।

गुरु की उपेक्षा करने वाला चाहे जितनी मेहनत करे पर मोक्ष महल मे प्रवेश नही कर सकता। साधना कितनी भी कर ले पर केन्द्र मे सद्गुरु होगा तो साधना सफल होगी। पूज्य गुरुदेव के उपकारो का ख्याल आता है तो लगता है उनके उपकारो का बदला अनेक भवो मे भी चुकाना मुश्किल है। गुरु की इतनी महत्ता क्यो गाई जाती है ? जरा शात चित्त से विचार कीजिए। उनके हृदय की कृपा पाने के लिए कितना त्याग करना पड़ता है, यह समझने की जरूरत है। जिसे गुरुदेव की कृपा प्राप्त हो गई उसका भाग्य खिल जाता है। मुझ जैसी पुण्यहीन को कहा गुरुदेव के दर्शन सेवा का लाभ मिल पाता, इसलिए तो १७-१८ वर्ष की सयम पर्याय मे भी एक चातुर्मास नही मिल पाया। गुरुकृपा के बिना हमारा जीवन अक शून्य जैसा है। इसलिए जीवन मे गुलाब की तरह महकने का व सूरज की तरह चमकने का प्रयास कर। जीवन मे अगर कुछ प्राप्त करने जैसा है ता वह है- गुरुकृपा। आईये हम राम गुरु की चरण-शरण में जिनशासन की सेवा करते हुए अपने जीवन मे गुरु नाना के गुणों को उतारने का, रामकृपा पाने का प्रयास करे।

❑ महासती श्री प्राजल श्री जी

अवर्णनीय जीवन

महापुरुषो के गुणा का वर्णन करना असभव है। मुझे भी उन्होंने आकार दिया। अनन्त उपकार है मुझ पर। महाप्रयाण सुनकर ही शरीर म, मन मे, कानो म उथल-पुथल, कपन और अश्रुधारा का समागम होने लगा। जब भी आप श्री के पास आती अपनी मीठी वाणी म कहते ममता समता मे बहुत अतर है मुझ ममता को समता का रूप प्रदान कर दिया, आप श्री की समता मेरे जीवन मे भी आई।

तन मन जीवन किया था अर्पण फिर भी तुमने ठुकराया,
भूल हुई क्या ऐसी जो, यहा रहना रास न आया।
रो रहा हृदय, रो रहा अम्बर, रो रहा है सारा जहा,
सुध-बुध सारी खो गई आओ न इक बार यहा"।

भव्यो के कर्णधार कहाँ विलीन हुए ?

मन के प्रश्नो का समाधान कहा होगा ? दिल की बाते भी किसे सुनाऊ ? आत्मीयता किससे पाऊ ? मुझे मार्गदर्शन कैसे प्राप्त होंगे ? पथ म सावधानी की शिक्षा भी कौन दे ? आलोचना किसके समक्ष करू ? भावी जीवन किस तरह प्रशात बने ? आदि आचार्य भगवन् के बिना जीवन शून्य प्रतीत हो रहा है। मानो सर्वस्व ही लुट गया। रिक्त की पूर्ति असभव सी लगती है। हृदय के ईश्वर मुख छोड़ सकते हैं नहीं नही मेरा भ्रम है। भगवन् को कहीं खोजना नही, स्वय मे ही पाऊगी, मुझस विलग हर्गिज नही हो सकते। मात्र दृष्टि परिवर्तन की आवश्यक्ता है। आचार्य भगवन् का जीवन, अनुभव का विषय है, शब्दो का नही। सिद्ध के सुखो की उपमा ससारी वस्तु से नहीं दी जा सकती है तथा गुरुदेव के चरण शरण को प्राप्त कर जो अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है, वह शब्दातीत है। श्रद्धा स गम्य है, तर्क से अगम्य है। वाणी से मूक हो दर्शन पान से ही शक्य है। गुरुदेव के जो भी एक बार दर्शन कर लेता, निहाल हो जाता। नेत्र अनिर्निमेष निहारते ही रहते हैं। मन्दसौर यात्रा के लिए जब मै जा रही थी। अज्ञात स्थान, पता भी विस्मृत। मात्र गुरुदेव के नाम स्मरण ने सकुशल स्थानक पहुचा दिया। अहमदाबाद मे जब आचार्य भगवन् क दर्शन हतु गई। आठ दिन की चरण सेवा कर पुन लौटने के लिए पूरी तैयारी कर मागलिक हेतु पहुची तो गुरुदेव का प्रश्न था, किसक साथ रतलाम जा रही हो ? मैंने जब कहा कि अकेली ही जा रही हू, कल पर्युषण लग रहे हैं मै उसम आवागमन नही करना चाहती हू। तब गुरुदेव ने फरमाया, पर्युषण पूर्ण कर लो सवत्सरी के दूसरे दिन ही जो श्रावक रतलाम जा रहे थे उन्हे सपरिवार सतियो की सेवा मे ठीक से सौंपने की सीख दे, जिम्मेदारी सहित कहा व मगलिक सुनाई। इस आत्मीयता से ओत प्रोत हो मेरा हृदय गद्गद् हो गया। सोचा मुझ जैसी बालाओ का भी भगवन कितना ध्यान रखत हैं। एक बार मैंने नादानी वश गुरुदेव की बात नहीं मानी तब सकट मे फस गई,तब भी गुरुदेव ने बिना उपालभ दिए मुझको सकट से उबारा। मै आजीवन गुरुदेव के निस्वार्थ उपकार को विस्मृत नहीं कर सकती।

गुरुदेव के मन म करुणा का स्रोत प्राणिमात्र के प्रति बहता रहता था। सयम के प्रति जहा सजगता के दर्शन होते हैं आत्म शुद्धि हेतु प्रायश्चित लेने को तत्पर भी रहते हैं। गुरुदेव से एक बार मैंने कहा, 'भगवन् मै नियाणा तो नहीं करती किन्तु मन म सदैव विचार रहता है कि मैंने पूर्व भव मे माया का सेवन किया जिससे स्त्री जन्म मिला व आपके चरणो मे दीक्षित होकर भी चरण सेवा स वचित रहती हू। भगवन् इस जन्म में कभी माया न करू जिससे आपक चरणो की सेवा व मार्गदर्शन मिले। आग जब भी जन्म लू आपके चरण मे शरण प्राप्त हो। आचार्य भगवन् मेरी बात श्रवण कर मुस्कराने लग व फरमाया कि तुम्हारे विचार प्रशस्त हैं। अतःकरण से यही चाहती हू भगवन् आपकी आत्मा शीघ्र कर्म मुक्त हो शाश्वत गुण को प्राप्त करे तथा आपकी कृपादृष्टि स मै ज्ञान दर्शन, चारित्र की निरतर वृद्धि कर आपक मार्गदर्शन व चरण सेवा को प्राप्त कर अतिम लक्ष्य मोक्ष को शीघ्र प्राप्त कर सकू। जिन आज्ञा से विपरित कभी भी मन म विचार, वचन से उच्चार व काया से आचरण हुआ हो उसका अतःकरण से आलोचना प्रायश्चित कर आत्मशुद्धि द्वारा आराधक बन सकू।

अनुपम सयम साधक थे

एक बार एक व्यक्ति अपने दोस्त के यहा गया, वह रेलवे टाईम टेबल देख रहा था, उसने अपने दोस्त से पूछा कि तुम हर समय यह टाईम टेबल क्यो देखते हो,कही जाते नही हो। उसने कहा नही मै इस बार जरूर कश्मीर जाऊगा। इस तरह हम प्रोग्राम तो बहुत बनाते हैं पर उन्हे कार्य रूप मे परिणित नही करते। भगवन् ने भी ३२ शास्त्र रूप मे टाईम टेबल दिया है कि कौन कहा जाता है। आचार्य श्री नानेश ने उन सबको जीवन मे उतारा। कथनी करनी मे कोई अतर नही। छठे आरे का वर्णन सुनकर गुरु की खोज मे निस्पृह साधक की तलाश में लग गये। कइयो ने प्रलोभन दिए मगर उन्हे सच्चे गुरु की तलाश थी। अत मे उन्हे कोटा म गणशाचार्य गुरु के रूप मे मिले जिन्हें पाकर अलौकिक शाति मिली और दीक्षा ग्रहण कर जीवन सफल बनाया। आप श्री की सूझबूझ एव ज्ञान अकथनीय है। रतलाम में कोई सतिया जी अस्वस्थ थी। सथारा का कहने पर आप श्री ने कहा अभी आयुष्य है, यह था आपका ज्ञान। सेवा भावना भी आप श्री की अटूट थी। अपने गुरु आचार्य श्री गणेश की अद्भुत सेवा की। सयम इद्रिय निग्रह भी आप श्री का अनुपम था। दिल्ली मे एक बार अस्वस्थ होने पर डॉक्टरो के कहने से ९ महीने सिर्फ मट्ठे के आधार पर बिताये। मुझ पर कितने उपकार रहे। आप श्री जी की ओजस्वी वाणी सुनकर मुझे जलगाव म वैराग्य आया। मेरा वैराग्य काल लगभग ६वर्ष आप श्री के सानिध्य मे ही रहा। आप श्री ने हमे बहुत कुछ दिया, हम आपका ऋण नही उतार सके। इस तन की अस्थिया होने से पहले आस्था का जगाया फिर चिता से पहले चैतन्य जगा लिया। इस तन के जाने से पहले मोक्ष धन को खोज लिया। अपने पाट पर श्री रामलाल जी म सा को बिठाया यह उनका नवम पाट नव अखण्ड का सूचक है।

करती रहेगी हमारा पथ रोशन

साध्वी हर्षिला जी म

थी वह उज्ज्वल ज्योति
किया आलोकित जग को
निराशा के तम में डूबे
अशान्त मानस में भी
भर दी भव्य स्फुरणा
समीक्षण की वीणा से
होता है स्वर झंकृत
है तुम्हारे भीतर
आनंद का अक्षय स्रोत

मत देखो पर दोष
करें सदा स्व का निरीक्षण
स्व के भूल की स्वीकृति
करती है आत्म संशोधन
आत्मोन्नति की राह दिखाकर
किया महाप्रयाण भगवन्
तुमने विकीर्ण की है रश्मियां
करती रहेगी हमारा पथ रोशन।

गुरु बिना कौन बतावे बाट

गुरुदेव के जीवन को शब्दो में सजाने क लिए मरे पास कोई शब्द नही है। सुरम्य वाटिका मे मद मद मुस्कुराने वाले, भीनी-भीनी मधुर सुगध बिखेरन वाले, सुविकसित मनाहारी सुमन का क्या परिचय देना ? उनका परिचय किसे नही उनका मानवतावादी दृष्टिकोण ही ससार को उनका परिचय करा देता है। जिधर भी वायु बहती है उनके सौरभ को लेकर निकलती है। अजस्र ज्योति धारा का सतत वर्णन करता हुआ दिव्य रूप ही उनका परिचय ससार को स्वय करा देता है। दिव्य पुरुष के युगल चरण जहा जहा पड़ वहाँ-वहाँ पर कमल खिलते गय। वाणी मे जादू"- जिन्होने आपकी वाणी को सुना वह पा गया अपने जीवन मे चिन्तामणि रत्न को आप श्री की वाणी पर हजारो हृदय अर्पण थे। अमृत तुल्य वाणी सुनकर जन-मन हर्षित हो उठता था। वार्तालाप मे सरलता, सहजता, उदारता दर्शक के मन और मस्तिष्क को एक साथ प्रभावित करती थी। आपकी जादुई वाणी श्रोताओं के दिल को तो लुभाती ही थी अपितु देश के चोटी के विद्वान और नेतागण भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। भावो की लड़ी, भाषा की झड़ी और तर्कों की कड़ी का ऐसा मधुर समन्वय हाता था कि श्रोता झूम उठते थे।

आप श्री जी की सयमाराधना, निर्भीकता निष्पक्षता धीरता गभीरता सहनशीलता समूचे भूमडल को ज्योर्तिमय करने वाली थी। आपको उच्च चरित्र ने ही लाकमान्य बनाया। त्याग और सयम की प्रतिमूर्ति इस महात्मा के प्रति लाखो पुरुषो की श्रद्धा थी। आपकी वैराग्य भरी वाणी म अद्भुत जादू था। जहाँ जहाँ आप विचरत थे उस पुण्य भूमि के असख्य नर नारी आपके भक्त हो जाते थे। लाखो पुरुषो ने आपके सदुपदेशो से प्रभावित होकर व्यसनो को जीवन भर के लिए छाडा। ऐस युगपुरुष पूज्य गुरुदेव ऐसे ही सुरभित सुमन थे जिनके गुणो से यह मधुवन सुवासित हो रहा है और सदा हाता ही रहेगा। उनकी अपार आत्मीयता अत्यधिक सूझबूझ, सहिष्णुता एव दूरदर्शिता विस्मृत करने के लिए नही, अपितु सदा अपने मन मस्तिष्क रूपी खजाने मे अमूल्य निधि की भाति प्रयत्न पूर्वक सजोकर रखने क लिए है। उनके वरदहस्त की छाया सबको समान रूप स प्राप्त है।

गुणो को याद जब मै करती हू, तब आखें अश्रु स भर आती हैं। गुरु नाना के बराबर विद्वता किसी म नही चाहे कितने ही गहन सवाल क्यो न किये जायें हाजिर जवाब बुद्धि बैरिस्टर जैसी। ऐसे अनन्त उपकारी गुरुदेव हमे छोड़कर चले गये लेकिन उनके सद्गुणो की सुवास हम सभी के जीवन को सुरभित करती रहगी। आपसे एक अलौकिक सौगात माग रही हू, यह सौगात है आपका आशीर्वाद आशीर्वाद का अमृत बरसावे जहा कहीं भी हों चतुर्गति के फेरो का मिटाकर पचम गति को प्राप्त करे यही भव्य भावना है ॥

दिव्य ज्योर्तिमय महान गुरुवर कहा हो तुम
आज तुमको ... व्यथित ।
बिलखते-बिलखते गये
एक नजर ... ।

युग युगान्त तक जिदाबाद

आत्मीयता की साक्षात मूर्ति, पृथ्वी सम क्षमाशील, सर्वतोमुखी, प्रतिभा के धनी महान् दिव्य ज्योति दूर द्रष्टा, अनुभूतियो के स्रोत, आराध्य आचार्य भगवन् श्री नानेश को व्यक्ति तो क्या जमाना भी भुला नही सकेगा। आचार्य भगवन् न अमूल्य समय निकालकर हम अल्पज्ञ को देशनोक, अलाय, गोगोलाव मे सेवा का अवसर प्रदान किया। भूल ही नही सकते मुख कमल से निसृत मधुर वचन। गौतमलाल जी पिरोदिया अशाक जी सुराणा के सामने उच्चरित शब्द अब भी कानो मे गूज रहे हैं। गुरुदेव के शब्द कितने ऊचे हैं, छोटो को भी कितना मान देते हैं। जो प्यार स्नेह, ममता माता-पिता, भाई-बहिन से नही मिलता वह गुरुदेव से मिलता। गुरुदेव की निर्भीक मानवता बरबस सबको प्रभावित करन वाली है।

फूल गुलाब का खुशबू देकर करता आबाद।
नाम गुरु नानेश का युगान्त तक जिन्दाबाद॥

उमडते भावा को शब्दो में बाधना अक्षरा मे पिरोना अशक्य है, ऐसे अनत उपकारी गुरुदेव शीघ्र सिद्ध, बुद्ध मुक्त बनें, यही कामना है।

नूतन नवम् शासनेश आगम नवनीत निधि आचार्य श्री रामलाल जी म सा को शत्-शत् अभिनन्दन।

कैसे भूलें नाम तुम्हारा

साध्वी प्रभावना श्री जी म

कैसे भूलें गुरुवर नाम तुम्हारा
उपकार तेरे जीवन सुधारा॥
मै थी गुरुवर एक अभागिन
खुले भाग्य मर पाये जब दर्शन
भव २ हुआ सफल संयम पुष्प खिला॥१॥

जब से गुरु का सबल पाया।
जीवन में खुशियां का सावन आया॥
गुरुवर नाना तू ही हमारा॥२॥
नाना के नाम से कष्ट मिटा था
नाना के नाम से इष्ट मिला था।
ऋद्धि सिद्धि पग २ चमका सितारा॥३॥

स्नेह-मूर्ति को श्रद्धा सुमन

उस दिव्य मूर्ति के दर्शन के लिए मन मचल रहा था। उस पावन प्रतिमा को देखने आखे तरस रही थीं। अब इन अश्रुपूरित नेत्रो को कौन सहारा देगा। मन गमगीन है। चारो ओर के वातावरण में शून्यता छा गई है। मन को कैसे शात करे। हे गुरुदेव आपकी स्मृतिया हृदय को उद्वेलित कर रही हैं। इस हृदय को कैसे समझाए गुरु की गौरवता कैसे प्रकट करू। वे महायोगी, महाज्ञानी महाध्यानी, महासाधक, महागुरु महामानव सभी रूपो म महान् थे। जिनका हृदय कोण साम्य धन से भरपूर था, असीम आराध्य जिनका सम्राट था, हिमवती सभापण जिनका मत्री था मधुर मुस्कान जिनकी चेरी थी पुण्य जिनका दिन रात जागने वाला सेवक था, आध्यात्मिक स्वर जिनका गाना था, मैं अपनी इस छोटी सी बुद्धि, लचर सी जिह्वा, टूटी हुयी लेखनी कागज से उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व को सीमा म बाध नही सकती। आपके एक-एक गुण को पाने हेतु न जाने हमे कितने जन्मो तक साधना करनी पड़ेगी। खुद के कष्टो की आपने कभी चिता नही की किन्तु हमारी थोड़ी सी पीड़ा भी आप सहन नही कर पाते थे। स्वय के लिए जितने कठोर, चतुर्विध सघ (विशेप तौर से साधु साध्वी) के लिए उतने ही कोमल। सबकी मनोकामना पूर्ण करते थे। मुझ पर पूज्य गुरुदेव की अपार कृपा थी।

राणावास प्रथम दर्शन मे ही आपकी कृपा नजर से मेरा काया कल्प हो गया। मात्र १४ वर्ष की उम्र मे दात की भयकर व्याधि जिससे रात को तकिया मवाद से भर जाता था, जिसके लिए डॉक्टरो ने कहा कि दात निकालने के अलावा दूसरा कोई इलाज नही होगा। सयोग से आप श्री जी के दर्शनो का सौभाग्य मिला, दर्शन करते ही सारा रोग तिरोहित हो गया। मेरे इन पैरो मे ५०-१०० कदम चलने की शक्ति भी नही थी। पूज्य गुरुदेव की कृपा ने इन पैरो मे ३५-३५ कि मी चलने की शक्ति भर दी। मेरी इन आखों के सामने बार बार अधेरा छा जाता था। पूज्य गुरुदेव ने इसमे ज्योति भर दी। भगवन् आपके इन अनन्तानत उपकारो का बदला कैसे चुका सकेग। कोई मार्ग बता द जिससे हम आपके ऋण से उऋण हो जाए। मेरा तन-मन सब कुछ आपके चरणो मे समर्पित है। जब जब आपकी भक्ति से भाव विभोर हो जाती हू, तो लगता है आपकी कृपा नजर से अनेकानेक अमृत कलश एक साथ छलक उठे है, मानो जनम-जनम की सचित निधि जागृत हो उठी हो।

इस प्रकृति ने आपक पार्थिव देह से भले ही हमें जुदा कर दिया है पर प्रभो आपकी दिव्य भव्य मूर्ति को हमने अपने भीतर सहेज लिया है। आपका दिव्य रूप हमारे अतर मे समाहित हो गया है। जहाँ से हमे निरतर आशीर्वाद प्राप्त हाते रहेंगे। उन आशीपो के बल पर हम इस सयमी रथ पर चलते रहेंगे। उस महान आत्मा को अतर हृदय से श्रद्धा सुमन समर्पित करती हू। प्रभु महावीर से यही अभ्यर्थना है कि उनका साधना आलोक हमे दिशा दर्शन देता रहे उनकी दिव्य आत्मा को परम शाति मिले। उनकी दैदीप्यमान स्मृति का शत् शत् वदन।

❀

□ महासती श्री स्थितप्रज्ञा जी म सा

जिनका जीवन बोलता था

आगम सूत्र है- समियाए समणो होई,' समता भाव वाला श्रमण कहलाता है।

असिप्पजीवी अगिहे अमिते, जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुकसाई लहु अप्पभक्खी, चिच्चा मिह एगचरे सभिक्खु ॥

जो सयम को आजीविका का साधन नही बनाता, वह अणगार होता है। जो मित्र शत्रुत्व भाव से ऊपर रहता है इन्द्रिय विजयी होता है। अनासक्त भावो मे अवगाहन करन वाला होता है,अल्पकषायी होता है, गर्व नही करता है, अल्प भोजी होता है आत्मरमणता वाला है, वह भिक्षु है।

ये ही आगम सूत्र जब किसी जीवन मे साकार रूप ले लेते हैं, तो वह जीवन एक असाधारण, अलौकिक, उर्ध्वमुखी व अनिर्वचनीय ही होता है। ऐसे ही जीवन के धनी थे, आराधना की उर्ध्वता पर आसीन साधना के शिखर पर शोभित समता समन्वय की अद्भुत निशानी, महायोगी, चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री नानालाल जी म सा । आपका सपूर्ण जीवन साधना की अतल गहराइयो मे अवगाहन करने वाला और प्राप्त ज्ञान मुक्ता मणियो को जन-जन मे वितरित करने वाला इस भू-मण्डल के लिए विरल वरदान स्वरूप था।

ऐसे आगम पुरुष भले मुख से कुछ उच्चारण करे या न करे लेकिन उनका जीवन बोलता है और उनको हर हृदय सुनता है फिर उन महापुरुष के मुखारविन्द से निसृत शब्द मकरन्द का तो कहना ही क्या ?

यही कारण था कि ज्योंहि आपको देखा, मन चरण-पिपासु बन गया, बुद्धिजीवी हो या कोई भी भव्य जनमानस सबकी निगाहा मे आपका विराजना सहज स्वाभाविक हो गया। आप सभी के आकर्षण व श्रद्धा के केन्द्र बन गये। नही सोचा था कि ये प्रत्यक्ष जिन नही पर जिन सरीखे आचार्य प्रवर इतनी जल्दी हमारे बीच से दिव्यता की ओर प्रयाण कर जायेंगे। मन यकीन नही कर पा रहा था पर विधि के विधान के आग गुजारिश की गुजाइश कहा ? पार्थिव शरीर से भले ही आप हमारे बीच नही रहे पर आपका गुण रूप जीवन सदा हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। हृदय की हर धड़कन से श्रद्धाजलि अर्पित है।

परमतोष तो इस बात का है कि आपकी प्रखर मेधा ने सयम सुमेरू हुक्म शासन की आवम्न श्रद्धास्पद आचार्य श्री रामलाल जी म सा को चतुर्विध सघ के सरताज के रूप मे दिया है।

आचार्य श्री रामलाल जी म सा की सारणा-वारणा-धारणा मे हमारा जीवन ज्ञान दर्शन चारित्र की सम्यक् आराधना करता हुआ अपने लक्ष्य प्राप्त को करेगा, यह मूर्ण विश्वास है। आप श्री जी की हर आज्ञा शिरोधार्य है। आप सदा जयवन्त हों यही शुभाशा।

इस तरह हमारे आचार्य भगवन् हर पल, हर क्षण, सजग थे। वे स्वय सजग थे। अपने शिष्य, शिष्याओ को यही सद् सदेश देते थे। उनका फरमान था कि यह जीवन मिला है इसको हर समय अच्छे कार्य के अन्दर लगाओ, हाथ से समय चला जाए तो फिर मिलना दुर्लभ है। एसा उनका शुद्ध विचार और शुद्ध आचार था। वे जैसा फरमाते थे, वैसा ही करते थे। उनकी करनी और कथनी मे अन्तर नही था। हम उस महापुरुष के लिए मृत्यु शब्द का प्रयोग नही कर सकते क्योंकि उनकी अच्छाइया जीवित हैं। उनके सत् कर्मों की ज्योति प्रकाशमान है। अब भी इस प्रकाश मे हम अपना रास्ता देख सकते हैं, और उस पर चल सकते हैं। उनके जीवन की प्रभा अब तक मौजूद है। फूल खिला और खिलकर मुरझा गया मिट्टी मे मिल गया मगर मिट्टी मे सुगध मौजूद है। आचार्य भगवन् का जीवन रूपी पुष्प दिव्य भाव पुष्प बन गया है। गुणी महापुरुषो का गुण करना अर्थात गुणानुवाद करना जिह्वा से परे है क्योंकि मै अल्पज्ञ हू। सद्गुणो के प्रति मेरी सद्भावना सुश्रद्धा बने। जिन महापुरुषो का जीवन पवित्र है उन महापुरुषो की मृत्यु भी पवित्र है। उनके गुणो का पुन पुन सत्कार करती हू।

☐ महासती श्री प्रेमलता जी म सा

स्नेह का सागर

अनन्त-अनन्त आस्था के केन्द्र मेरे परम पूज्य गुरुदेव के बारे मे मै क्या कहू जितना कहू, उतना सूर्य को दीपक दिखाने तुल्य है। गुरुदेव के अथाह गुणो को शब्दो की सीमा मे नही बाधा जा सकता। असीम लहलहाते स्नेह सागर ने बचपन से ही मुझे इतना स्नेह दिया कि उसका वर्णन नही कर सकती। आचार्य भगवन् का विरल विराट व्यक्तित्व था।

सयम के सजग प्रहरी जरा सी भी भूल दीखने पर इतने प्रेम से समझाते थे कि सभी का हृदय गद्गद् हो जाता।

दृष्टि मे कृपा की वृष्टि महावीर जयती के प्रसग पर मैं गुरुणी प्रवर श्री पानकुवर जी म सा के साथ भीलवाड़ा मे थी, तब अल्सर के कारण पेट दर्द हुआ। प्रात पूज्य गुरुदेव दर्शन देने पधारे आप श्री की कृपा दृष्टि से दर्द मे स्वस्थता महसूस होने लगी। ऐसी श्याम सलोनी मूरत को कहा से पाऊ, कहा दर्शन करू, प्यासे नयन की प्यास कैसे बुझाऊ ?

फूल डाली से जुदा हुआ, खुशबू से नही।
गुरुदेव तन से जुदा हुए गुणों से नही ॥

❑ महासती श्री कमल श्री जी म सा

सम्पूर्ण जिदगी को जागकर जिया

आत्म सिद्धि के अमर साधक, महान सयमी, चेतना के धनी, मेरे रोम-रोम मे बसने वाले आराध्य इस दुनिया से सदा सदा के लिए बिदा हो गये। ऐसे भगवान के वियोग मे हम सभी का मन एव चतुर्विध सघ उद्विग्न है। दिल आसुओ स बोझिल है। हृदय भर रहा है, कैसे गुण गान करू।

रात्रि मे, नील गगन मे अनेक गृह, नक्षत्र, तारे उदित एव अस्त होते है। बगीचे मे अनेक पुष्प खिलते, मुरझाते हैं लेकिन किसी को पता नही। अध्यात्म क्षितिज पर सत सितारे उदित होते वे अपनी विशिष्ट साधना के दिव्य प्रकाश से जनमानस को आकर्षित कर इतिहास के सुनहरे पृष्ठो म अपना नाम अकित कर जाते हैं, उनके न रहने पर भी उनकी प्रज्ञा का प्रभा मण्डल दिशा को आलोकित करता रहता है।

ऐसे ही विराट व्यक्तित्व के धनी आचार्य नानश के महाप्रयाण से हृदय पर वज्रपात हो गया। उनका जीवन बहते हुए गगाजल के समान निर्मल था। उस निर्मल गगाजल मे जो अवगाहन करता उनका कष्ट, रोग, शोक, सताप सब दूर हो जात थे।

असीम अनन्त व्योम मण्डल से भी विराट एव अगाध महासागर से भी गहन आचार्य भगवन् के विशिष्ट व्यक्तित्व को देखते तो वहा समता मृदुता, सौम्यता, वात्सल्यता, का झरना प्रवाहित होता रहता था। विषमता से सतप्त इस विश्व को समता दर्शन की अनुपम देन दी उन्होंने।

स्व पर कल्याण करते हुए ३५० के लगभग मुमुक्षु आत्माओ को उन्होंन सयम धन दिया। शास्त्रकार कहत है कि इस प्रकार ग्लान भाव से चतुर्विध सघ की सेवा करने वाले आचार्य उसी भव या तीसर भव मे मोक्ष जाते है। ऐस महान सयम की विरल विभूति ने अपने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप द्वारा तिण्णाण तारयाण' पद को सार्थक कर दिया।

मिट्टी का तन मस्ती का मन था। शरीर रूपी मिट्टी से अनासक्त रहे। उन्होंने समझ लिया कि जीवन व मरण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आचार्य भगवन् ने इस शाश्वत सत्य को समझा और उस तन का ममत्व छोड़कर मृत्यु का सहर्ष आलिगन कर लिया।

क्या पूछते हो जिदगी मेरी कैसी गुजरी,
सोचो इस बात पर कि वह कैसी गुजरी।
मै मरा तो मेरे को इस तरह उठाया गया,
एक शहशाह की मानो सवारी गुजरी॥

वह मनमोहक महान् मूर्ति हमारी आखो से ओझल हो गई लेकिन हमारे हृदय मे नही।
ऐसे महान् आराध्य देव व अमरता के राही को सभक्ति कोटि-कोटि श्रद्धाजलि।

\- प्रेषक सुशील खटोड़, मनावर

अविरल यादे

जिस गुलाब की सरस सौरभ से हुआ ससार सुरभित ।
आज वह मुरझा गया हाय रह गए नयन स्तम्भित ॥
धरा रो रही है, गगन रो रहा है,
नयन ही नही, आज मन रो रहा है ।
आपकी याद मे आज गुरुवर,
जहान् रो रहा है, वतन रो रहा है ॥

स्वर्ग प्रयाण देवलोक गमन वह भी पूज्य गुरुवर का इस हृदय विदार्ण समाचार को श्रवण कर दिल भर आया । असह्य वेदना । ऐसी भयकर वेदना मानो किसी ने एक साथ ही तन मन पर हजारो हजारो बाणो का प्रहार कर दिया हो । इस चराचर विश्व मे अनेक प्राणी जन्म धारण कर मृत्यु को प्राप्त होते हैं पर विरल व्यक्तित्व ही ऐसे होते हैं, जो अपने जीवन को आदर्श एव अद्भुत बनाकर अपना नाम इस लोक मे अजर अमर कर जाते हैं । ऐसी महान् विरल विभूतियो की शृखला मे मेरे अनन्त अनन्त श्रद्धा के केन्द्र, समता क्राति के सवाहक, निगूढ़ ध्यान योगी, परम पूज्य आचार्य श्री नानेश की कड़ी जोडना चाहूगी जिन्होने अपना जीवन निरन्तर समुज्वल बनाया । बचपन की बाल सुलभ क्रिड़ाये, पर यौवन के देहलीज पर कदम रखने के बाद सयम के परिवेश को प्राप्त कर बेजोड़ गुरु निष्ठा एव आत्मा समर्पण का आदर्श ऐसे विशाल जीवन के प्रति कुछ कहना अपने आप मे सहज नही फिर भी श्रद्धा के सुमन समर्पित करती हू ।

पुष्प खिलते हैं बहुत पर सुगन्ध देता है कोई-कोई,
पूजा करते हैं बहुत पर पूज्यनीय होता है कोई-कोई ।
जीवन के हर मोड़ पर स्वय को स्थिर बनाकर विश्व मे,
समताधीर श्री नानेश सा वन्दनीय है कोई-कोई ॥

परमाराध्य आचार्य भगवन् का जीवन कांटों के बीच गुलाब ही था । सुन्दर गुलाब ने कांटे अर्थात् कठिनाइया को सहकर अपना जीवन प्रभु चरणो मे अर्पित कर दिया था इस गुलाब ने अपने जीवन सौरभ से केवल एक प्रान्त को नही, सपूर्ण भारत को महका दिया ।

नाना नाम से धन्य थे गुरुवर मेरे
लुटाकर सौरभ गए गुरुवर मेरे ।
इस जिह्वा से गुण किस तरह गाऊ,
हृदय मदिर के भगवान थे गुरुवर मेरे ॥

हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित करती हुई नव आचार्य श्री के मगलमय भविष्य के लिए कोटि कोटि शुभकामना करती हू ।

सेवा सरलता समर्पनादि सर्वगुण जिसमे हो साकार।
ऐसी प्रखर विभूति को आस्थाभिसिक्त वदन बारबार॥
मेरे अनन्त-अनन्त आस्था की हो तुम प्रतिमूर्ति,
चतुर्दिक मे प्रसृत है तव अनुपम तप कीर्ति।
गुरुनाना की शुभाशीष साकार हुई जो
लख कर तुम्हारी शुद्ध सयम की हर प्रवृत्ति॥

❑ महासती नमन श्री जी

महकती खुशबू

जब गुलाब खुशबू से भर जाता है तो सारा उपवन महक उठता है, वीणा जब मधुर स्वर मे बजती है तो उसकी स्वर लहरिया सम्पूर्ण सत्ता को मुग्ध कर देती है। इसी प्रकार जब किसी का जीवन सुवास एव सुस्वर से परिपूरित हो जाता है तब सम्पूर्ण समाज एव देश उसके व्यक्तित्व पर मत्र मुग्ध हो जाता है। ऐसा ही मत्र मुग्ध कर देने वाला व्यक्तित्व था आचार्य श्री नानेश का। पार्थिव शरीर से यद्यपि वे नि शेष हो गए हो परन्तु अपने यशस्वी शरीर से वे सर्वदा जीवित रहेंगे।

गुण रूपी गुलाब से महकते जीवन बाग के असीम गुणो का वर्णन करना हमारी शक्ति से बाहर की बात है। सरलता, निरभिमानता, नम्रता, अपूर्व क्षमा स्नेह, करुणादि गुण तो उनके जीवन मे रचे बसे थे। अस्वस्थता म भी अजब समाधि साधी दुख मे रहे समभावी, तजस्वी, यशस्वी। गुरुदेव थे आत्मभावी परन्तु जिनशासन का अनमोल कोहिनूर रत्न काल राजा ने छीन लिया। सोलह कलाओ से खिला हुआ चाद जगत का अधेरा करके विलीन हो गया। यह समाचार वायुवेग से प्रसारित हुआ पर लोग सुनकर अचभित रह गय कि क्या यह सत्य है ? समस्त देश के कोने-कोने मे हाहाकार मच गया। इस दुखद समाचार के मिलत ही श्रद्धालुओ की भीड़ दर्शनार्थ उमड़ पड़ी। उनका पार्थिव शरीर देख सबके मन मे आता है कि कैसा अद्भुत है इस तेजस्वी मूर्ति का अलौकिक तज।

दीप बुझा प्रकाश अर्पित कर,
फूल मुरझाया सुवास समर्पित कर।
टूटे तार सुर बहा कर,
गुरुवर चले पर नूर फैला कर॥

❑ महासती श्री वनिता श्री जी म सा

कुशल बागवा

चमन वाले खिजा के नाम से कभी घबरा नही सकते ।
कुछ फूल ऐसे खिलते हैं, जो कभी मुरझा नही सकते ॥

महापुरुष मानव समाज मे खिले हुए ऐसे फूल हैं जो कभी मुरझाते नही, कुम्हलाते नहीं। उनकी जिदगी फूल की तरह खिली हुई, उसकी खुशबू समाज, बगिया म महकती रहती है। गुलशन मे कुछ ही फूल खिलते है, किन्तु महापुरुषो के जीवन मे सद्गुणो के हजार फूल खिला करते हैं। उन्ही महापुरुष की अमर कड़ी मे गुरु नानेश दीर्घकाल की तपस्या से इतनी ऊचाई तक पहुच पाये। वट बनने से पहले बीज को धरती की कोख मे, अधकार मे जाना पड़ता है। तब कही जाकर वृक्ष आकाश की ऊचाइया छू पाता है। "मुश्किलो मे भी कदम रुके नहीं" जिन्हें खुद पर भरोसा है, वे कब मुश्किले समझते है। जहा पर शाम हो जाये, वही मजिल समझते हैं। जीवन मे अनेक कड़वे मीठे अनुभव आए, अपना सतुलन कभी नही खोया। समत्व की आराधना ही उनका सच्चा लक्ष्य था। फूल खिले भवरो को पता न चले। उसकी सुगध सब ओर फैल जाती है। कितने तूफान, कितने जख्म अपनो ने दिए पर कमाल कभी किसी स शिकायत नहीं। इस वयोवृद्धता मे इतने आघातो को सहन करने पर भी वे समाज के उत्थान, विकास के लिए सतत प्रयत्नशील, चितनशील थे। उनके व्यक्तित्व मे आकाश सी ऊचाई, विचारो मे सागर सी गभीरता, कृतित्व मे विराटता जीवन की जितनी विशेषताए होना चाहिए, उन सबका अर्न्तभाव आपके महान् व्यक्तित्व मे निहित था।

भारतीय मनीषा के बहुश्रुत पुरुषों मे शीर्षस्थ नाम रहेगा, आचार्य श्री नानेश का। वे अध्यात्म की अतल गहराई म डुबकी लगाने वाले योगी साधक थे, तो व्यवहार मे जीने वाले मुनि थे। वे प्रज्ञा के पारगामी थे तो विनम्रता की बेमिसाल नजीर थे। वे करुणा के सागर थे तो प्रखर अनुशास्ता भी। उनमे वक्तृत्वता थी तो प्रतिसलीनता भी थी। पौरुष और समर्पण के सुयोग का अद्भुत करिश्मा ही था। स्याद्वाद को युगभाषा मे प्रस्तुत करने मे वे आईंस्टीन की भाति थे। ऐसी बहुआयामी विभूति का अलविदा हो जाना आतरिक चेतना को झकृत कर रहा है। युगपुरुष! पुण्य पुरुष! ओ गुरुवर मेरी श्रद्धा और समर्पण का थोड़ा माल दो। कृपा बरसा दो नयन खोलकर, एक लब्ज तो बोल दो।

हृदय का सम्राट जिगर का हुकमरा जाता रहा,
खार का महबूब गुलो का महरबा जाता रहा।
मौन क्यो गुच्छे हैं और हर कली मुरझा रही,
आज हमारे बाग से बागवा जाता रहा ॥

बिन बागवा के जीवन बगिया सूनी-सूनी, रीति रीति लग रही है। जिदगी का कारवा सिसक रहा। भगवन् यह कैसी आख मिचौली कर ली ? कुछ तो कह देना था और कुछ सुन लेना था।

मगर भगवन् मौनस्थ हैं क्योंकि सुनने सुनाने के लिए पट्टधर को नियुक्त कर दिया। इस नवम पट्टधर मे भी वे सारी शक्तिया निहित हैं, जो आचार्य श्री हुक्मेश से लेकर आचार्य श्री नानेश म अन्तर्निहित थी। नवम् पट्टधर

के व्यक्तित्व को शब्दो की सीमा मे नही बाधा जा सकता। आचार्य श्री रामेश का जीवन श्रद्धा और समर्पण का दस्तावेज है। प्रज्ञा और अर्न्तदृष्टि का अभिलेख है। शाति और विघायक दृष्टि से परिपूर्ण जीवन का सदेश है। आचार्य श्री की सृजन-चेतना से सपूर्ण मानव जाति, साधुमार्गी सघ लाभान्वित होगा। नवम् आचार्य पदाभिषेक पर अन्तःकामना है कि-

जिन्दगी के हर मोड़ पर एक नई बहार मिले, झोली का दामन कम पड़ जाए, इतनी बहार मिले।

आरव्या भर आई

साध्वी चचल श्री जी

नवम पट्टधर ने देवां बधाई
अष्टम पाट बिना आंरव्यां भर आई॥ टेर॥
वीर शासन की रीति पुरानी
एक स एक आये पाट में ज्ञानी
नाना धारे बिन म्हारी २ आत्मा अकुलाई।१।
हु शि उ चौ श्री ज्योतिर्धर ने
गणपति गुरुवर पूरे सब सपने
समता के प्रणेता गुरु ने।२।
कार्तिक बदी तीज का दिन गमगीन आया
संथारा गुरुवर के मन में समाया
मृत्यु महोत्सव गुरुवर तुमने मनाई।३।
अश्रु बहाए गुरुवर लाखों आंखें
विकल ह्रदय बंद मन की सलाखें
अपवर्ग वरो गुरुवर अंतर भाव लाई।४।
राम गुरु को पाके राहत पाये
श्रद्धा समर्पण से गुरु को बंधाये
गुलाब बगिया की कलियां हरखायी।५।

ओ पावन पूज्यवर

साध्वी श्री इन्दुबालाजी म सा

ओ मेरे गुरुवर ओ पावन पूज्यवर
कहां गये छोड़ के राम गुरु से मुखड़ा मोड़ के
सती मंडल के दिल को तोड़ के ॥ टेर॥
मोहनी मूरत मोहनी गारी २ समता मुरत थी प्रियकारी २
दिव्य दिवाकर २ ज्ञान गुणाकर
थे गुरुवर अनूठे कि हम से क्यों रूठे
कहां गये छोड़ के ।१।
वर्ष अड़तीस गणि पद पे विराजे २
निर्मल कीर्तिचहुं दिश राजे २
किया संथारा स्वर्ग सिधारा
नानेश गुरुवर प्यारा ओ संघ का सितारा
कहां गये छोड़ के।२।
धन्य हुई है नगरी उदियापुरी २
सकल साधना हुई है पूरी २
रह गई दूरी इच्छा अधूरी
पेप बाट निहारे ओ गुरुवर प्यारे
कहां गये छोड़ के।३।

□ महासती श्री निरूपमा श्री जी म सा

महानतम् आचार्य श्री नानेश

मेरी कल्पनाओ को शक्ल दी तुमने,
मेरे जीवन को सबल दिया तुमने ।
जिन्दगी के घने अधेरो को,
रोशनी मे बदल दिया तुमने ॥

मेरा परम सौभाग्य रहा कि मुझे सद्गुरुवर्य नानेश जैसे सघ अनुशास्ता जीवन निर्माता प्राप्त हुए थे। जिनका जीवन समता, ममता, और सहिष्णुता का पावन सगम था। आपका व्यक्तित्व अनन्त आकाश मे सुशोभित इन्द्रधनुष की तरह बहुरगी प्रतिभा से युक्त था। उपवन मे खिले हुए विविध प्रकार के रग-बिरगे फूलो की तरह आपकी सयम साधना पल्लवित और पुष्पित थी, जो भी आपके सानिध्य मे पहुचता वह चरित्र की सौरभ से सुवासित हो जाता था। चरित्र बल से भक्त गण स्वत खिचे चले आत थे।

मै कैसे भूल सकती हू आपको। आपने मेरे जीवन को विविध सद्गुणो के रग से रग, जीवन को नया मोड़ दिया। आपके सानिध्य का पाकर मरा जीवन धन्य हो उठा। अधे को आख पगु को पैर और सतृप्त हृदय को सात्वना मिलने से जितनी आनद की अनुभूति होती है, उससे कई गुणा आनद की अनुभूति मुझ हुई। आपके स्नेह से पली हुई छाव को पाकर मुझे उसी तरह की अनुभूति हुई कि मध्याह्न की चिलचिलाती धूप मे किसी घने वृक्ष की छाव सुस्ताने को प्राप्त हुई हो। प्रत्येक सास मे आपने त्याग और वैराग्य की सयम साधना की और स्वाध्याय की प्रेरणा दी। आज वे सारी स्मृतिया और अनुभूतिया स्मृति पटल पर उभरकर आ रही है। आपके सद्गुण रूपी मुक्ताओ को शब्द सूत्र म पिरोने का मरा यह प्रयास है। आपका जीवन सूर्य की तरह तेजस्वी था तो मेरा यह प्रयास नन्हे स दीपक की तरह है। हे महानतम् गुरु मै अब क्या लिखू ?

तुम्हे हम बुलाए

श्री उन्नति श्री जी म सा

आवाज देके तुम्हें हम बुलाये
ये वश नहीं है कि तुमको भुलाये
यादे तुम्हारी हरपल रुलाए १

तुम्हीं मेरा नैया के खेवन हार
जीवन सभी के तुम्हीं हो सहारे
साथ जो छूटा कदम लड़खड़ाये ३

आचार्य भगवन थे मेरू स अविचल
जीवन था जिनका गंगा से निर्मल
ममता थी ऐसी दिलो जाँ लुटाएं २

दिल का हर तार तुमको पुकारे
नानेश पूज्यवर कहा तुम सिधारे
श्रद्धा सुमन हम सब मिलकर चढ़ाए ५

प्रेषक : मणिलाल घोटा

दार्शनिक, धर्मप्रवण और वैज्ञानिक

ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनी आचार्य श्री नानेश जिनकी साधना सशक्त, प्राजल परिष्कृत निर्मल निमर्मत्व की आर बढ़ रही थी। अलौकिक साधना के स्नातक थे। चातुर्मास के प्रारभ से ही श्रुतिगोचर हो रहा था कि आचार्य श्री का प्रशमरतित्व भाव गहन होता जा रहा है। शारीरिक अस्वस्थता का उपचार बाहरी औषध से नही अपितु वीतराग भावों के रसायन से ही चल रहा था। उनकी दीप्तिमन्त आन्तरिक चेतना मे नियत सल्लेखना प्रवृत्त थी। यह सल्लेखना वृत्ति उनकी स्थित प्रज्ञता के अनवरत सघन होने का ससूचन कर रही थी। यह भी एक दिन या एक वर्ष की परिणति नहीं थी, वरन् सुदीर्घकालीन तपश्चर्या का सर्वोत्तम परिणाम थी, जिनकी चारित्रिक आराधना का हर पृष्ठ स्फटिक सा उज्वल रहा, जिनकी धड़कन में अध्यात्म जागृति का सदश था। ऐसी अप्रतिम विरल विभूति की वरदानी उदात्त छाव म चतुर्विध सघ महक रहा था कि अचानक विपत्ति के बादलो ने काल की काली कजरारी मेघ घटाओ को विस्तीर्ण कर दिया और २७ अक्टूबर ९९ की सुबह एक दर्दभरी सूचना लेकर दस्तक हुई। हम सिर से पैर तक हिल गये। मन परत दर परत कुरेदा जाने लगा। यकायक यह सथारा कौन सा ? एक अन्तहीन उदासी अनुताप भीतर ही भीतर सिसकने लगा। इस तेजाबी खबर से मन का जर्रा-जर्रा कापने लगा। कर्ण भी विह्वल थे हालात तो कटे पख पछी से बन गये। दिन क्या गुजारा ? दिल वीरान विषण्ण था। बेगलोर की चारो दिशाओ मे इस खबर ने विद्युत लहर सी पैदा कर दी। आगन्तुको की चहलकदमी रफ्तार ले रही थी। एक तरफ जाप की मगल ध्वनि गूज रही थी, तो दूसरी तरफ प्रति समय परम आराध्य गुरुदेव के स्वास्थ्य सबधी उतार-चढ़ाव का जिक्र था। ज्यो-ज्यो खबर मिल रही थी, त्यो-त्यो मन गहरी शून्यता मे डूब रहा था। भीतर बाहर खामोशी ही खामोशी व्याप्त थी कि एक ऐसी अप्रत्याशित बिजली गिरी। जिसका करट असह्य था, जिसमे सारी कल्पनाए मटियामेट थी। जीवन का अस्तित्व खण्ड खण्ड हो रहा था।

१० बजकर ४१ मिनट का क्षण जीवन की समग्रता को छिन्न भिन्न कर गया और मुह से सहसा निकला हे भगवन् यह क्या किया ? यह कैसा वज्रपात ? किस लोक मे छिप गय।

बरस पड़े हजार बादल एक साथ आखो से
मगर अलविदा तक न किया अपने हाथो से
तीर तलवार बरछी का घाव तो भरेगा।
किन्तु लगा जो जख्म हरदम गीला ही रहेगा॥

कुछ क्षण के लिए नि स्तब्धता छा गई। उस नीरव नि शान्त वातावरण मे मानो पूज्य गुरुदेव न सदेश सप्रपित किया

मैने ता अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर लिया अब तुम अपने कर्त्तव्य पथ पर आरूढ हो जाओ। अगर मुद्दे कुछ सुना हा, समया हो ता शोक सतप्त नहीं अपितु होश और ताजगी के साथ बढ़ते रहना नवम पट्टधर के इगित इशारों पर।

रन्ध्र-रन्ध्र मे सग्रहित उनके उपदेश, वचन स्फूर्त स्मृत्य होने लगे। वे तो एक निस्पृह अध्यात्म-योगी थे, उन्हे कहा रजोगम।

जीवन और मृत्यु उनके लिए पर्याय बने हुए थे। वस्तुत उनमे न तो जीवन के प्रति आकर्षण ही था और न ही मृत्यु का विषाद। उनकी अन्तर्यात्रा निसग एव सतेज थी।

समय के क्षितिज पर अपनी ही हथेली से एक सूर्य को उदित कर चुके थे। जिसमे रफ्ता रफ्ता रोशनी की चमक सुनहरी बनती जा रही थी। सघ अभ्युदय की नव्य चेतना सजग हो रही थी और देखा अब यह तिग्मरश्मि तमिस्रा को वितिमिरतर करने लगी है। तो शनै-शनै शासकीय कार्यो से विर्निमुक्त रहने लगे।

आचार्य श्री नानेश की वाणी सिद्धात ही नही अनुभवो की निष्पत्तिया थी, वे दार्शनिक, धर्मप्रवण एव वैज्ञानिक थे। आगम पुरुष थे। आचार्य श्री देश के, जैन समाज के ऐसे धर्मवृक्ष थे, जिनकी वरदायी छाव मे बैठकर चतुर्विध सघ ने दर्शन चारित्र ज्ञान का क ख ग सीखा था। कार्तिक कृष्णा तृतीया आसुओ के बादल भर लाई। हजारो हजार दिलो के आधार स्तभ को छीन लिया। विचरण काल मे ही दीर्घकाल की यात्रा कर गये। आचार्य श्री का समूचे देश,जैन समाज पर सात्विक प्रभाव था। खासतौर से अपनी आम्नाय साधुमार्गी के तो वे प्राणप्रिय थे। जनप्रिय सत थे, तो लोकप्रिय आचार्य भी थे। उनके जीवन मे कभी दो बात नही, दा पात नही, यह क्षतिपूर्ति असभव है, क्योंकि हर व्यक्ति व्यक्ति से भिन होता है। श्रमणत्व जीवन मे भौतिक शिक्षा मूल्यवान नही, मूल्यवान होती दीक्षा किस गुरु से पाई और उसका निर्वाह जीवनान्त तक कितना किया, यह देखा जाता है।

आपने देश मे फैली हुई विषमता का युगीन समाधान समता दर्शन द्वारा किया। उनकी समतामय प्रकृति से परिचित होकर उन्हें समता विभूति कहा जाने लगा। उनकी प्रेरणा से साधर्मी वात्सल्य, व्यसन मुक्त, स्वाध्यायी, वीरसघ जैसी पवित्र प्रणालिया निर्मित हुई। ३६५ करीबन मुमुक्षुओ को प्रवर्ज्या प्रदान की। शताधिको को तपस्या पथ पर, सहस्त्राधिको को ज्ञानचक्षु दिये। उनका जीवन वृत्त श्लाघनीय था। हरक्षेत्र मे उनकी प्रज्ञा के दीप जले। जीवन भर साधना के क्षेत्र मे जयवत रहे। आचार्य श्री की महिमा अपनी वय पूर्ण करने के वर्षों पूर्व पूरे देश के जन गण मन पर छाई हुई थी क्योंकि उनका जीवन श्रुत और चारित्र के मणि काचन का सुयोग था। उनके निकट मे जो भी गया उन्हीं का हो गया। फिजाओ मे उनका नाम आध्यात्मिकता की शुभ सुगध बिखेर रहा है। रोम रोम मे उनकी उज्जवल चारित्रिक आभा के दर्शन होते थे।

जीवन के हर मोड़ पर समता की झलक थी। समूचे देश मे उनके लक्षाधिक भक्त थे। देश के श्रावक गण ही नही जैनाचार्य जी भी उनके गुणानुरागी रहे, यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। उनके वियोग से दुख होना परपरागत क्रिया है। किन्तु उनकी जागतिक चेतना को पाकर पुलकित हैं। धन्य हैं वे क्षण। समाज, भक्त, श्रावक उन्हे श्रद्धाजलिया देते रहेंगे। सस्मरण दोहराते रहेगे। ज्ञान क्रिया की सगति मे उनकी आदर्शमयी योजना को सन्मुख रखकर चलेगे और सकल्प करेंगे कि मरण दृश्य सथारामय सचेतन अवस्था मे हो तो महान् कृपा होगी।

❑ महासती प्रतिभा श्री जी म सा

मेरे आराध्य मेरे श्रद्धा लोक मे

आगम पुरुष के महाप्रयाण के अश्रवणीय समाचारो को ज्योंहि सुना मानो मानस शून्य सा हो गया और हृदय क्षण भर के लिए स्तब्ध हो गया। क्या अनहोनी होनी हो सकती है ? क्या जो सुना वह सत्य हो सकता है। विश्वास तो नही हो पाया, दिल ने स्वीकार नही किया स्वीकारें भी तो कैसे ? दिल उन अशुभ समाचारो को मिथ्या देखना चाहता था। पर काल कितना क्रूर और बेरहम है जिसने हजारो हजार नयनो को (रोते बिलखते) देखकर भी सही सिद्ध कर दिया। आज हृदय अपार वेदना से व्यथित है, मन मे उदासीनता है वातावरण मे चहु ओर शून्यता है। आचार्य भगवन हमारे जीवन मे सर्वेसर्वा थे, अनन्य आराध्य थे, हमारा सब कुछ उन चरणो मे न्यौछावर था, जिनका व्यक्तित्व, आतमबल, आगम ज्ञान अद्भुत अद्वितीय था। वे सिर्फ साधुमार्गी सघ के ही आचार्य नही अपितु विश्व के मूर्धन्य शीर्षस्थ सत शिरोमणि थे। जिन्होने जीवन के प्रत्येक क्षण को साधना के स्वर्णिम सूत्रो मे पिरोकर युगों-युगों तक के लिए यशस्वी जीवन मे परिणत कर लिया। आज भले ही वे महापुरुष पार्थिव शरीर से हमारे बीच नही है फिर भी हृदय कमल की प्रत्येक पखुड़ी पर उनकी छवि के दर्शन करती हू। चद्रमा की शीतल किरणो मे उनकी गुण कौमुदी सदा विद्यमान रहेगी, धरती के कण-कण मे उनकी सहनशीलता अकित है चट्टानो के हर प्रस्तर मे उनकी दृढ़ता के साक्षात दर्शन होते हैं। मेरे गुरुदेव मेरे आतमा लोक के शासक हैं, मेरे श्रद्धालोक के परम अधिकारी हैं। मेरी भक्ति नगर के अधिष्ठाता हैं और रहेगे ऐसा मेरा अपना दृढ़ विश्वास है। कहने को सभी कहते हैं आचार्य भगवन् का देवलोक गमन हो गया है पर नही, मै तो समझती हू कि वे मेरे श्रद्धालोक मे विराजमान है। वे आत्म- बोधक मेरे आत्मलोक मे विराजमान है। मेरे परम पूज्य गुरुदेव । आपके द्वारा प्रदान किये गए लोक मे सदा सत्पथ पर आरूढ़ रह आपके आत्मीय सदेश अपनत्व भरे निर्देशो से अपन जीवन को सजाती रहू। उनकी हर प्रेरणा हमारी अर्चना बन जाय, उनका हर सदेश हमारी साधना बन जाय, उनका हर मत्र हमारी आराधना बन जाए, अन्त मे पूज्य गुरुदेव ने दीर्घ साधना का नवनीत रूप शासन को जो महान धरोहर दी है, ऐसे परम् आराध्य श्रद्धा समेरू, प्राज्ञ पुरुषोत्तम वर्तमान आचार्य भगवन रामेश की चरण छाव मे तन-मन जीवन से सदा समर्पित रहते हुए उनके आदेश निर्देशो पर सदा तत्पर रहेंगे। इ्ही अन्तर भावो की अभिव्यक्ति के साथ जिनके अनगिनत उपकारो को कभी चुकाया नही जा सकता, जिनकी निर्मल शिक्षाओ को कभी भुलाया नही जा सकता, उन्हे कोटि-कोटि वन्दन।

❑ महासती श्री कुसुमलता जी म सा

डूबतो का एक सहारा कहू

समता विभूति अनन्तान्त परमापकारी आचार्य भगवन के सलेखना सथारा युक्त, देवलोक गमन का श्रवण कर मन मुरझा गया, दिल भर गया,-

क्या कहू कैसे कहू कहा बिन रहा न जाय,
गुरुदेव मे गुण बहुत थे जिसका वर्णन किया न जाए।

शास्त्र मे दो प्रकार का मरण बताया है- (१) बालमरण (२) पडित मरण। दोनो का विवेचन करते हुय पडित मरण पर जोर दिया कि विरल आत्माओ को पडित मरण आता है, ऐसा मरण हमारे जीवन निर्माता, भाग्य विधाता, आचार्य भगवन् को आया। आप श्री जी के गुण गरिमा मडित जीवन की महिमा जितनी गाई जाय, उतनी कम है।

आपका जीवन हिमालय से भी ऊचा था,
आपका जीवन सागर से भी गभीर था ।
आपका जीवन मिश्री से भी मधुर था,
आपका जीवन नवनीत से भी कोमल था ॥

अम्बर का तुझे सितार कहु या धरती का प्यारा रत्न कहु, त्याग का एक नजारा कहू या डूबतों का सहारा कहू।

नाम रोशन कर गये जग मे गुणो का न पार था,
लेखनी ना लिख सके जो आपका उपकार था ॥

हरियाली कौन लाये

महसती सुमगला श्री जी

मन दर्शन करना चाहे लेकिन दर्श न पाये ।
जुड़ा है मन का गुलशन हरियाली कौन लाये ॥
खामोश ये निगाहें आशीष गुरु का चाहें
लेकिन वो अब कहां है जिसने दी हमको राहें ।
सच्चे गुरु थे नानी अब कैसे उनको पाये ॥
सागर से थे गंभीर समता का नीर बहाते

जो भी चरण में आते सुख की पनाह पाते,
ऐसे गुरु की यादें हरपल हमें रूलाए ।
बच्चे बड़े हर कोई उनको दिल मे चाहें
ऐसा दिया था वात्सल्य कभी न भूल पायें
हमसे हुई गुरु क्या खता हम समझ न पाये ।

प्रेषक कमलचंद डागा महामंत्री दिल्ली संघ

❑ महासती श्री सन्मति शीला जी म सा

जीवन के स्मृति-कोष मे तुम जिन्दा हो

ओ अखिल विश्व की बेमिसाल ज्योति तुम्हे नमन,
आगम-निगम की विमल विश्रान्ति तुम्हे नमन ।
चितन महार्णव के निर्मल मोती तुम्हे नमन,
समता सिद्धात के विशिष्ट व्याख्याता तुम्हे नमन ॥

एक उर्ज्वस्वल चेतना दीप जो कि प्रखर दीप्ति से प्रदीप्त हो प्रलयकारी तूफानी झयावतो के बीच भी अपनी ज्योति से निरतर तमिस्रा को हरने वाला था वह प्रज्वलित दीप क्रूर काल की हवा से बुझ गया। इस अप्रत्याशित घटना से दिल को बहुत बड़ा आघात लगा। मन द्रवित हुआ, श्वासो मे धड़कन रोम-रोम म स्पदन, अधरा पर क्रदन किकर्त्तव्यविमूढ़ सी रह गयी। कुछ देर तक तो ऐसा लगा जैसे तन से प्राण ही पृथक हो गए। यकायक विश्वास नही हो रहा था।

वेदना विह्वल मन बारबार प्रभु से यही अभ्यर्थना कर रहा था -

हे प्रभु ! क्यू छोड़ गए इस कदर हमे, बिलखते नयन निहार रहे है बारबार तुम्हे ।
क्या कसूर था कि हम से मुख मोड़ चले, यह हसता खिलता उपवन छोड़ चले ॥

तमन्ना है दिल की कि-

आप श्री की वरद् छाया,
सदैव छत्र बन इस सघ पर रहे ।
जिससे कि हम नन्हे-नन्हे सुमन कभी,
कलिकाल की अनुश्रोत लहर मे ना बहे ॥

अत्यधिक खेद हो रहा है कि आज आचार्य श्री की पार्थिव दह हमारे बीच नही रही किन्तु उनकी मधुर स्मृतिया चलचित्र की भाति उभर-उभर कर आ रही है। उन सारी स्मृतिया को वाणी का रूप दना असभव है। फिर भी समय-समय पर आचार्य श्री से प्रदत्त शुभ शिक्षाए प्राप्त हुईं व आज भी स्मृति काष मे सुरक्षित हैं और भविष्य म भी रहेंगी। जब-जब भी आचार्य श्री के चरणो म विशेष रूप स शिक्षा-याचना का प्रसग बनता, आचार्य दव के श्रीमुख से यही भव्य भाव निसृत होते कि - सयमीय मर्यादाओ मे रहकर स्वजीवन को अनुशासन म आबद्ध करत हुए समय को सार्थक करना और समतामय जीवन बनाना ।

आचार्य देव ने समता का सिर्फ उपदेश ही नही दिया अपितु समता को आत्मसात करके दिखाया जीवन भर की समता साधना आज चरमोत्कर्ष के सन्निकट पहुच गयी क्योंकि मनुष्य जीवन की साधना का निष्कर्ष अतिम समय मे उपस्थित होता है। जिनकी साधना का हर पल सयम की सजगता के साथ निकला हो उनका अतिम समय भी पूर्ण सचेतावस्था मे ही पडित मरण के रूप मे सार्थक होता है इसमे कोई अतिशयोक्ति नहीं है ।

सारी योग्यताओ को मध्यनजर रखते हुए सघ के भावी उत्कर्ष एव उज्ज्वल भविष्य की कामनाओ को साकार रूप प्रदान करने के लिए आचार्य देव ने अपना पावन उत्तरदायित्व प्रशातमना आगममर्मज्ञ, स्थितप्रज्ञ, तरुण तपस्वी आचार्य श्री रामलाल जी म सा के सशक्त कधो पर सौपकर समस्त चतुर्विध सघ पर जो गुरुतम उपकार किया है, उनके इस महान् उपकार के प्रति आभार प्रकट करने मे हम सक्षम नही हैं।

पूर्वाचार्यों की दूरदर्शिता एव उदात्त चारित्र का ही सुप्रतिफल है कि सहस्त्राब्दिया बीत जाने पर भी आज प्रभु महावीर की शासन प्रणाली अक्षुण्ण एव अजस्रधारा मे प्रवहमान है।

<u>कोटि-कोटि अभिनदन</u> :

हुक्मशासन के नवम् पट्टधर अभिनव आचार्य देव के श्री चरणो मे अतर की अनत अनत आस्थाभिषिक्त अभिवदना के साथ यही शुभकामना करती हू।

ओ आध्यात्म की उत्कट साधना मे,
अहर्निश अवगाहन करने वाले तपोपूत महामनीषीवर्य।
अत्यधिक आल्हाद की अनुभूति होती है जब-जब,
श्रवण करती हू वीतराग वाणी का अर्थ गाभीर्य।
सर्वस्व समर्पणा से काम्य कामना है श्री चरणो मे,
युगो-युगो तक श्रीमुख से भव्य मानस,
पाता रहे निस्यन्द का रस माधुर्य।

अत मे स्वर्गीय आचार्य भगवन् के लिए यही मगल मनीषा है कि वह विराट आत्मा दिव्यलोक म जहा भी पहुची हो वहा से शीघ्र ही सयम ले मोक्षगामी बने एव हमे आप श्री के चरण चिन्हो पर चलने की शक्ति प्रदान करे।

आज भी तुम जिन्दा हो, जीवन के स्मृति-कोषो में।
सासो की हर धड़कन मे, श्रद्धा के पावन रेशो में ॥

युगो युगो तक तेरी याद रहेगी

साध्वी अक्षय प्रभाजी मा सा

जब जब याद आए तुम्हारी
अश्रु बहाए अंखियां हमारी
सदा शान्ति पाए आत्मा तुम्हारी
यही श्रद्धांजलि है हमारी ॥१॥

चैतन्य की चांदनी लुप्त हो गई
गहरा अंधकार छा गया,
ओस की बूंद के बहाने
उषा ने आंसु टपका दिया ॥२॥

प्रकृति रोई रूलाया सभी को क्या
अमूल्य लाखो का गल हार
खो गया जा भी हो
इन बातो से मन अधीर हो गया ॥३॥

सुनो भगवन् आप सुनेगे हम कहेगे,
जहां भी हो हम आपको जुदा ना कहेगे॥
हम आपके थे आप हमारे थे
हम अक्षय सुख को वरेगे॥४॥

❑ महासती श्री सूर्यमणि जी म सा

एक घर का चिराग बना लाखो घर का प्रकाशक

नानेश चरण मे झुका शीश तो, अन्तर तर मे ज्वार उठा।
स्वीकार करेगा कौन, नमन यह गिरि अम्बर पुकार उठा ॥

अध्यात्म की उर्ज्जस्वल धारा के प्रवहमान युग पुरुष -

गौरव बढ़ाया हुक्म सघ का, बनायें लाखो धर्मपाल थे ।
हे *कोटि गच्छाधिपति आचार्य तेरी प्रतिज्ञा विशाल थी* ॥
साधुमार्गीय महासघ का बना तू महाप्राण था ।
हे समीक्षण ध्यानयोगी तेरी महिमा महान् थी ॥

भारतीय आध्यात्मिक परपरा मे त्यागमय सस्कृति का विशेष महत्व रहा है। इस सस्कृति मे आत्म जागृति, पुरुषार्थ, पराक्रम तप, सयम सदाचार एव कर्त्तव्य परायणता से युक्त व्यक्तित्व एव कृतित्व को पूजा गया है। सयमीय साधना क ज्वलत आदर्श विश्व शाति के अनन्य मसीहा, श्रमण परपरा के महान् श्रुतधर ध्रुव, नैष्ठिक क्राति के उद्गाता सयम साधना के कल्पवृक्ष, विषमता की विभीषिका मे व्याप्त समता की जगमगाती मशाल, अध्यात्म जगत के सुदक्ष यात्री प्रभु महावीर की अक्षुण्ण परपरा को लेकर चलने वाले, भौतिकवादी युग के सुषुप्त जनो मे चेतनात्मक दिव्य प्राण सचारक, जैन जगत के महासरताज,परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानेश इस युग के महाप्राण थे।

क्या कहू, कैसे कहू कहा कुछ अब जाता नही ।
आचार्य के वियोग का दुख सहा जाता नही ॥

सच है वियोग सयोग प्रकृति के विरल खल हैं, किन्तु हम देखते हैं जिनकी यशागाथा इस धरा के कण कण म व्याप्त है, जिसके चरित्र की आभा विशुद्ध विचारो की विभा वायुमडल के हर अणु-अणु मे विद्यमान है। मन कह उठता है-

गुरु तू नही तेरी उल्फत हर किसी के दिल मे है ।
शमाँ तो बुझ गई रोशनी सदा महफिल मे है ॥

<u>अवर्णनीय महाजीवन</u>

आध्यात्मिक जगत के प्रज्ञा पुरुष के समता की अजस्र ज्योति, आचार्य देव के जीवनाशो, घटनाक्रमों एव समस्त चारित्रिक जीवन दर्शन रूप महानताओ की अभिव्यक्ति को शब्दो मे आलेखित नही किया जा सकता।

कहा है-

सात समुद्र मसि करू, समस्त लेखनी वनराय ।
असख्य जीवन पूरे करू, गुरु गुण लिखे न जाय ॥

सिद्ध के सुख को उपमित नही किया जा सकता। घी के स्वाद को बताया नही जा सकता। गूगे की गुड़ की अनुभूति अकथ्य रहती है वही दशा हमारी है। महान् जीवन दशन के सागोपाग वर्णन की क्षमता अबाध लेखनी मे नही, फिर भी भावो की विशदता का बौना सा शब्दो का बाना पहनाकर छोटी सी भावउर्मि समर्पित।

श्रम कागज उज्ज्व आचार विचारो की स्याही।
२१वीं सदी मे है अपूर्व समता शाति की गवाही॥

साधना के शिखर पुरष का मेवाड़ी आन बान-शान का सवारने वाली कर्मवीरों की उसी महान् धरा पर धर्मवीरो के रूप मे नन्हे से गाव मे वैदूर्य मणि के रूप म अवतरण हुआ जिसकी चमक दमक अपनी विराटता क लक्ष्य का लकर प्राणिमात्र क लिए दिन दूनी रात चौगुनी बढती गई। आचार्य श्री का जीवन असख्य गुण शाखा का विटप था। जिनके व्यक्तित्व के घटक गुण गणना मे देखें जायें तो कौन सा एसा सद्गुण पुष्प नही था उनमे, जो महावट रूप जीवन शाखा पर पल्लवित पुष्पित सुरभित न हुआ हो। विश्व की कौन सी एसी दुर्लभ विशिष्टता थी जो उस बहुआयामी व्यक्तित्व मे नही पाइ गई हो। ऐसे वादीमान दिशासूचक शासनाधिपति को पाकर भव-भव निर्भय हो जाते है।

महापुरुषो का जन्म ही जीवन का मगल होता है। गुरुदेव का तेजस्वी व्यक्तित्व जन-जन के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। धर्म के शखनाद आचारो के दिव्य निनाद् म गुरुदेव का जीवन निर्धूम दीप शिखा की तरह जीवन के सध्याकाल तक धूमरहित रहा। जिन्दगी की अरुणाई से अन्त तक मन क कण कण व जीवन के अणु अणु को करुणा का सिदुर लेकर आपूरित किया। अनेक के प्राणधार पतितो के पावनहार शुद्ध आचार विचार स जन-जीवन म छाते चले गये।

सत जीवन महान् है, चले महन्त के पथ

सत जीवन स्वय धर्म का जीता जागता स्वरूप होता है। सूर्य का प्रकाश देना, धरती का कर्म धारण करना सत का धर्म जीवन को, आत्मा को परमात्म रूप देना है।

मन कहन लगा-

चलो मानस मानवी बढ़ें सत के पथ।
बीत जाए रात पतझड़ की बारह माह बसत॥

गुरुवर मेरे नाना गुणो का खजाना

साध्वी सुजाता जी

गुरुवर २ कहां गय हमें छोड़कर
गुरुवर मेरे नाना गुणों का खजाना
गुण गण की माला य जपते ही जाना॥ टेर॥

नाना गुरुवर जी गुणों के सागर
जिधर किधर भी देखा गुणों क थे आगर।
करुणा का तो हर पल बहता था झरना
हम सबके जीवन में गुरु गुण है भरना॥ १॥

सौम्य सलोनी मूरत प्यारी लगती थी
तेरी अनुपम वाणी मन को हरती थी।
तुझ दर्शन बिन तरस प्यारे है नयना
तेरे गम को कैसे जाए हैं सहना॥ २॥

ज्योति से ज्योति को जगमग जाया था
तेरी यादों में मेरा मन खोया था।
जहां कहीं भी हो गुरु राह दिखा देना
रामगुरु की आज्ञाओं में है रहना॥३॥

❑ महासती श्री विवेक शीला जी म

तुम अब भी जिन्दा हो

अपने युग के महापुरुष हो तुम,
जग की वीणा यह बोल उठी ।
इतिहास बनाया है तुमने
मन की हर उर्मि बोल उठी ।
तुम गए और हम खड़े
आसु की धार बहाते हैं ।
नाना गुरु यश की गाथा तेरी,
हम मन ही मन दोहराते हैं ॥

इस विशाल विश्व मे कौन किसको स्मरण करता है । काव्य के महासिधु म मानव जीवन-बिन्दु का क्या मूल्य हो सकता है । फिर भी कुछ महापुरुष मन मस्तिष्क पर ऐसी अमिट छाप व प्रभाव छोड़ जाते हैं कि उन्हे भुलान की बात ही कभी दिल और दिमाग मे नही आती । उनका सस्मरण तो अन्तर्मन मे केशर के रग की भाति नित्य प्रति गहरा होता जाता है । ऐसी महापुरुषो की पक्ति मे मै आज निगूढ़ ध्यान योगी सर्वतामुखी प्रतिभा के धनी श्रद्धेय आचार्य भगवान की कड़ी अनुस्यूत कर अपनी भावाजलि अभिव्यक्ति के रूप म प्रस्तुत कर रही हू ।

जिस प्रकार गुलाब खुशबू से भर जाता है तो सारा उपवन महक उठता है । वीणा जब मधुर स्वर मे बजती है तो उसकी स्वर लहरिया सपूर्ण सभा को मत्र मुग्ध कर देती है ऐसे ही सुवास एव सुस्वर स परिपूरित जन-जन को मत्रमुग्ध करने वाल विशिष्ट व्यक्तित्व के प्रतीक थे आचार्य श्री जैसा उनका नाम वैसी ही विशेषता उनके जीवन मे क्षीर नीर सी भरी हुई थी । उनके गुणो एव महत्वपूर्ण खूबियो को शब्दो की परिधि मे बाधना सहज नहीं हैं । क्योकि महापुरुषो के गुण शब्दातीत होते हैं । दायरे से परे होते हैं । उनके गुणो की व्याख्या पुस्तको मे नही जीवन की आचरण परक गहराइयो मे समाहित है । उनका जीवन आदर्श तो जन-जन क लिए प्रेरणा श्रोत बन जाता है । हृदयोद्गार मुखर हो उठते हैं कि

हुक्म सघ के भगवान तुम्हारा जीवन जग मे था आदर्श
मानव पावन हुए तुम्हारे चरण मणि का पाकर स्पर्श ।
गुरु पद श्रम से सफल किया आपने श्रेयकार
हर पल हर क्षण वदना करता मन बार हजार ॥

आज आचार्य श्री के प्रति हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करती हुई यह कामना करती हू कि आप श्री ने इस सघ के लिए जो अनमोल धरोहर छोड़ रखी है, उसे हम सुरक्षित रखकर सदा सदा के लिए समर्पण भावा से स्वर्णिम इतिहास की अजरामर पक्तियो पर एक अनुपम आदर्श उपस्थित करने की आशा रखते हैं । नूतन आचार्य श्री क लिए दीर्घायु की कामना करती हू । आप श्री हम अबाधों का मार्ग प्रशस्त कर उर्ध्व दिशा मे गति प्रदान करावे बस इन्ही आशाआ के साथ नमन ।

मेरे सयमी आवास

पुण्य प्रकर्ष से आचार्य श्री नानेश की विराट छत्रछाया मे मुझ अकिचन को सयमी आवास मिला। आप की चरण शरण अध्यात्म राह पर चलने की सतत् प्रेरणा मेरे नन्हे-नन्हे कदमो को अग्रसर करती रही। स्नेहाभूत अन्दर ज्ञान की अनुपम दीपशिखा से आपने मेरे इस दीप को ज्योर्तिमय बनाया। आपने सकीर्ण विधिका से विगत गतिग मे गुजरती हुई मेरी चेतना को अपने शाश्वत गतव्य की ओर गतिमान किया।

हे अनत उपकृतियो के केन्द्र, सख्यातीत उपकृतियो से उपकृत कर कर्मावृत्त आत्मा को उन्मुक्त मुक्ति गमन का पथिक बनाया। यह सब प्रबल पुण्योदय से हुआ।

हे महाभाग आप श्री जी का साधना निस्यद रूप सथारा पूर्वक देह त्याग ध्रुव तारे की तरह दिशाविहीन अवस्था म सम्यक् राह दर्शावेगा। फिर भी आप श्री को वीर शासन तख्त पर न पा हृदय विह्वल हुए बिना नहीं रहता। समता शिक्षा, सयम, साधना, सहिष्णुता के चैतन्य गुरुवर विरह की यह विभावरी हमे व्यथित कर रही है।

शोक की सघन शर्वरी मे असहाय की तरह अनुभूत कर रहे हैं मानो किसी ने प्राणो को ही हमसे छीन लिया। बेवस मन आर्तनाद कर उठा

रोता है दिल गुरु यादो मे प्राणों का सहारा लूट गया।
अब दर्श कहा तेरे कर पायेंगे, आशाओ का तारा टूट गया॥

महावीर की वाणी से तुमने, अनुपम चेतन शृगार किया।
समता की सौरभ महकाकर, हर मानव पर उपकार किया॥
तेरी ध्यान समीक्षण धारा ने, अन्तिम सासो को ढूढ लिया॥१॥

सलेखना और सथारे से, जाने की कर ली तैयारी,
'नमो आयरियाण' पद की, गुरु राम को दी जिम्मेदारी,
दिव्य लोक मे आप पधार गये, किश्ती का किनारा छूट गया॥२॥

गुरु राम की मगल मूरत मे, नानेश का दिव्य दीदार मिले,
आशीष की प्रतिपल धार बहे, जब तक ना मुक्ति मीनार मिले,
'इन्द्र' भुले ना अहसानो को गुरु ज्ञान खजाना अखूट दिया॥३॥

हुक्म क्षितिज के सूर्य

मन ने कैसी की नादानी,
जो तुम्हारा इतिहास लिखने को मचला।
जैसे नन्हा जुगनू,
सूरज की पूजा करने को निकला ॥

कुल पवित्र, जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यवनीच तेन'' कुल को पवित्र करने और जननी को कृतार्थ करने के लिए महापुरुष जन्म लेकर वसुधरा को भाग्यशाली बनाते हैं। महापुरुषो का जीवन सद्‌गुणो से भरा रहता है। उनके सद्‌गुणो की अनुभूति के विषय को शब्दो की परिधि मे बाधना सहज काम नही है। जैसे कोई माली चाहे समस्त उपवन के फूलो को एक गुलदस्ते मे सजा दू तो क्या कर सकता है ? नही ऐसे ही मेरे गुरुदेव ! सागर के समान गभीर, समता, सहिष्णुता, त्याग अनासक्ति, वात्सल्य आदि गुणो के समुद्र थे। विश्वास नही हुआ था कि आप हमे बीच मझधार मे छोड़कर चले जाओगे। सदा-सदा के लिए हमसे रूठ जाओगे।

मै नन्ही सी बूद वह भी ओस की, आपके जीवन को न तो कागज में बाधा जा सकता है न गुणो का गिनाया जा सकता है। बस यही प्रार्थना करती हू, हे हुक्म गगन के सूर्य ! आप श्री जी के दर्शन प्रतिपल मेरे राम गुरु मे होते रहें व मोक्षपुरी मे हमे अपने साथ-साथ अगुली पकडकर ले चलें।

अश्रुपूरित नयनों से आपके चरणो मे श्रद्धाजलि अर्पित करती हू।

जब तक आसमा है और जमी यहा रहेगी।
जिन शासन को आपकी देन अक्षुण्ण रहेगी,
'नाना नाम ही हमे दिशा देगा अनवरत
गाथा आपकी हमको यहा राम' जुबा करेगी ॥

अतर मनवा रोये

साध्वी श्री मंजुलाश्री जी म सा

विरह व्यथा यह कैसी आई अन्तर मनवा रोये
कि गुरुवर छोड़ चले हैं
रोम राम यह तुझको पुकारे हा गई कैसी जुदाई
कि गुरुवर छोड़ चले हैं

साया उठाया देखो काल ने कैसी की है क्रूरता
महायोगी को ले गये धरती का सोना ? पूजता
गम के बादल हैं मंडराये दिल ये नाना गायें।

राम की आज्ञा पे तन मन जीवन ये कुर्बान है।
आये कसौटी कितनी सारी संघ बलिदान है।
दिया है हीरा तूने अनूठा इन्द्र यश फैलाए।

प्रेषक कु अंशु

❑ महासती श्री ललित प्रभा जी म सा

मेरे अनन्य उपास्य देव

साधना स्नेह से आलोक फैलाया
उस दीपशिखा की मै हू परवाना !
अणु-अणु मे श्रद्धा का स्पदन परिस्पदन
'गुरु नाना' तुझे भुला न पायेगा जमाना ।

मेरे हृदय देवालय मे वसित, कण-कण मे अनुगूजित परम आराध्य आचार्य नानेश का महाप्रयाण श्रवणकर रोम-रोम काप उठा। शासन के अप्रतिम नायक हम सबको छोड़कर चले जाएगे, स्वप्न मे भी नही सोचा था। कोटि कोटि जनमेदिनी की आस्था के महा केन्द्र आचार्य भगवन् के स्वास्थ्य प्रदीप की ज्योति मदतम होती जा रही थी पर फिर भी हमारी आशा थी कि आराध्य गुरुदेव अभी शासन सरक्षण कुछ समय और करेंगे। लेकिन २७ अक्टूबर की वह रात वे दुखद अशुभ क्षण अविश्वसनीय शब्द कानो मे प्रवेश कर ही गये कि अष्टम पट्टधर प्रकाश पुरुष दिवगत हो गये। सलेखना सथारा (पडित मरण) महोत्सव पूर्वक जिस शान से जिये उसी शान के साथ देहोत्सर्ग हुआ। भगवन् यह सभी के लिए कीर्तिमान सदेश सदीप बना।

अतीत के उस पार झाका तो पाया कि अमरावती का पुनीत प्रागण मेरे उपास्य देव क समक्ष समकित ग्रहण करने उपस्थित हुआ, आचार्य देव ने देखा पूछा कि, आप वैरागिन बहिन हो इस आप्त वाणी ने मुझे रोमाचित कर दिया। आश्चर्य हुआ तब मै वैराग्य से अपरिचित, अज्ञात तो विरक्ति कैसे हो सकती थी। मगर महासाधक के शब्द अक्षरश पाच वर्ष मे ही सत्य हो गये। बीकानेर की धरा पर सर्वविरति के महापथ को स्वीकारने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य श्री नानेश की चरण शरण मे सयम पथ पर चलती हुई बाला को महाश्रमणी रत्नाश्री इद्रकवर जी म सा का सानिध्य मिला और समय समय पर प्रबल पुण्य से सेवा, शिक्षा से लाभान्वित होती रही।

भगवन्, आप हम अविलब ही शिवपथ के अधिकारी बनाये।

सयमी जीवन के प्राण

सयमी जीवन के प्राण थे तुम,
सघ के नाथ थे तुम ।
छोड़ा क्यो प्रभु तुमने हमें,
भवसागर नैया खेवनहार थे तुम ॥

साधना के अतरग चाह की स्पर्शना करने वाले परम आराध्य गुरुदेव के सथारे पूर्वक देह त्याग के समाचार ज्योंहि मिले अरमानो के सारे महल ढह गये। दर्शन प्यासी आखे अश्रुओ की निर्झरणी बन गई, कठ अवरूद्ध हो गया, हृदय व्यथा स ओत-प्रोत।

दीर्घ समय से विमुक्त लघु शिष्याओ पर अचानक तुषारापात हो जाएगा, आशाओ के दीप बेसमय ही बुझा दिए जाएगे। भगवान लबे अतराल के बाद पूना मे दर्शनों की तीव्र प्यास उपशात हुई और निर्देशो के अनुकरण हेतु श्रद्धेय गुरुदेव ने बिदा दी। वर्षों के वर्ष गुजर गये प्रगाढ़ अन्तराय मेघावरण से भाग्य रवि प्रच्छन्न रहा और दुर्देव से दर्शन वचित अन्तर कसक रहा है। मेरे भाग्य विधाता गुरुदेव अब दर्शन की तीव्र पिपासा कौन उपशात करेगा ? अब आप श्री के मुखारविन्द से अमृतोपदेश श्रवण करने का अवसर कहा प्राप्त होगा ?

मानस सरोवर मे रह रह स्मृति लहरें लहराती
नाना गुरु नाम लेते ही आखें बरस-बरस जातीं ।
सयम जीवन दे किया उपकार अनत तूने
गुण गाते यह जिह्वा कभी नही अघाती ॥

कहता है ये दिल मेरा

महासती श्री मनन प्रज्ञा जी

कहता है ये दिल मेरा मेरी धड़कन कहती है
लाखों मे तू एक था नाना २ तुझको नमन मैं करती हू
कहता है ये दिल मरा ॥ टेर ॥

तुम ही ज्ञान दिवाकर थे
ममता के सागर थे।
करूणा रस का दरिया थे तुम,
तुम ही गुण रत्नाकर थे ॥

भुला न सकूंगी तुझको गुरुवर
जब तक धड़केगा प्राण ।
तेरे नाम की आशाओं पर,
इन्द्र रहे सदा कुर्बान ॥

समता सागर के राजहस

ओ गुरुवर नानेश तुम थे भाग्य सितारे,
हजारो हजार को पहुचाया तुमने भव किनारे ।
श्रद्धा सुमन चढ़ाने तब चरणों मे भगवन्,
भव-भव मे सयम दाता बन पहुचाना मुक्ति द्वारे ॥

वीर शासन क्षितिज पर शुभ क्षणो मे जो दैदीप्यमान रवि उदयापुरी मे उदियमान हुआ, उसी पुनीत धरा पर दिवगत हो महानतीर्थ के रूप मे युगों-युगो तक के लिए उसे कीर्तिमान रूप प्रदान किया। ऐसे मेरे श्रद्धा सदीप गुरु नाना कभी स्मृत्याकाश से विलीन नही हो सकते, जिन्होंने सयम रत्न दे ज्योर्तिमान बनाया, समय समय पर शिक्षा सूत्र मे विकीर्ण जीवनधारा को अनुस्यूत कर सम्यक् पथ पर चलना सिखाया । सघर्षों के बीच हसते हसते समता रस का पान कराने वाले नानेश गुरुदेव महादिव्य देव के रूप मे जनमानस के मानस पटल पर आलेखित हो चुके है। ऐसे महाक्षेमकर गुरुदेव की वियुक्ति क्षण-क्षण हमे व्यथित बना रही है। श्रद्धासिक्त अनन्त श्रद्धापुष्प मन समर्पित कर रहा है।

समता सागर के राजहस, आप श्री के दर्शाये हुए महापथ पर अनवरत चलते हुए इस ससार की अनादि भव परिभ्रमणा को पर्यवसित कर पायें, यही अभीप्सा है ।

कहा चले हो तुम निर्मोही

साध्वी प्रमिला पुण्य रेखा

महायोगी तुमसे ही मैंने नव जीवन में गति पाई।
तेरी प्राण चेतना गुरुवर मेरे प्राणों बीच समाई॥

कहाँ चले हो तुम निर्मोही कैसा खेल विधाता का।
किस दर्पण में कहाँ निहारूँ ममता दर्शी मुख भ्राता का॥
मन अधीर कुंठित है वाणी, याद तुम्हारी कलपाई॥१॥

जो दीप जलाया है तुमने वो कभी नहीं बुझने देंगे।
जो फूल खिलाया है तुमने, वो कभी नहीं मुरझाने देंगे॥
सदा जलेगी यह मशाल जो तुमने हमें थमाई॥३॥

चले गए हो तुम गुरुवर पर यह विश्वास सदा रखना।
रहा काम हम पूर्ण करेंगे शक्ति बढ़ने की देते रहना॥
जहाँ कहीं भी हो गुरुवर, आशीष देना हमको हर्षाई॥२॥

कल की सुबह गुलाबी होगी, नयी चेतना जागेगी।
तेरी ममता से ही गुरुवर विषम तमिस्रा भागेगी॥
राम राज्य होगा यह नयी सदी होगी सुखदायी।

प्रेषक : संजु कुम्मट, संबलपुर

सयम पथ के महापथिक

श्रुत के ही विषय रह गये मेरे गुरुवर,
आखो का सौभाग्य कहा दर्शन का ?
सयम का महापथ तुझ बिन हो गया सूना,
दर्शन वचित क्यो रखा क्या किया गुनाह ?

सयमी परिवेश मे मैंने अपने आराध्य आचार्य भगवन् की दर्शन, सेवा, सन्निधि को नही पाया। क्षण-क्षण रीतते गए और द्रव्यत दूरी, दूरी ही बनी रही। दुर्दैव से कहू कि उस पल को श्रुतिगम्य करना पड़ा कि आचार्य देव का सथारा पूर्वक पण्डित मरण

विचित्र अनुभूतियों से अतर विचित्र दशापन्न हो गया। शतसहस्र चेतना प्रतिदिन आचार्य नानेश के दर्शनो से अपन को कृतार्थ बना रही है। मुझे वरदहस्त से अध्यात्म पुरुष आशीर्वाद दे गुरुवर वैश्विक वात्सल्य के विरूद से अलकृत हो और मै अमाप वर्षिणी धारा के अभिसिचन से वचित रह गयी। इससे बढ़कर और क्या अशुभ योग हो सकता है। विनम्र भाव से सदैव श्री चरणो की परिक्रमा करती रही। राम-रोम से समर्पण क सितार झकृत होते रहे। मगल ध्वनि अतर मे अनुगूजित होती रही। दिव्य भावो से आपकी सानिध्य स्मृति को विलुप्त नही होने दिया। सतत् स्मरण धारा में प्रवाहित मेरी चेतना इस दिव्यगति गमन से अत्यत आहत हो गयी। आशा की रश्मि निराशा के तम मे तिरोहित हो गयी।

कहा ढूढू गुरु नाना तुम्हे,
कहा देखू अब इस जहा में।
बस मुक्ति की मजिल मिल जाए
अभिलाषाए तेरी पनाह मे ॥

वदन वारम्वार

सरला अशोक

पूज्य गुरु गणेशीलाल के तुम शिष्य बने महान्।
हे! संयम पथ के सच्चे अनुगामी बारंबार करत तुम्हें प्रणाम।
त्याग धैर्य सहनशीलता की तुम बन गए अविस्मरणीय मिसाल।
जब तक रहेग सूरज चांद तब तक रहेगा तुम्हारा नाम।
समता का संदेश तुम्हारा पहुँचाएंगे हर घर हर द्वार।

समता सरोवर के राजहस

ओ समता सरोवर के राजहस, ओ अध्यात्म के अनुपम अवतस
सूना हो गया जहा तुझ बिन, तुम थे, नाना फूलो से सुवासित बसत ।

विविध तापो से तप्त शोकाकुल निराश आत्माओ को सुधावर्षिणी वाणी से अवर्णनीय उपकार करने वाला विश्व के पार्थिव बधनो को तोड़कर श्रमण सस्कृति का अटल राही अनत का राही बन गया । कर्त्तव्य पालन म प्राण की परवाह न करन वाले उस स्थितप्रज्ञ और स्वरूप मे स्थित महापुरुष का देह प्रेम तो न मालूम कब का छूट गया था किन्तु हमारी आशाओ और आकाक्षाओ को पूर्ण करने मे समर्थ और सक्षम हमारे भाग्य विधाता के छीन जाने के समाचारो को सुनते ही हृदय काप उठा । सुषुप्त हृदय की अधकारमय गुहा मे जीवन ज्योति का प्रकाश फैलाने वाला वह असाधारण मधुर वाणी का वचनामृत देने वाला वह भगवान क्या सचमुच नही रहा ? क्या उनकी दिव्य दह अमर नहीं हो सकती थी ? किन्तु इन प्रश्नो का समाधान कौन दे ?

आज से १४ वर्ष पूर्व की स्मृति चलचित्र की तरह सजीव हो उठी । पूज्य आचार्य श्री की आनन्दायिनी चरण सनिधि विछोह के दुख सत्य को स्वीकार करना पड़ रहा है । सन् १९८५ मे घाटकोपर (बम्बई) का वर्षावास सम्पन्न करके महावीर जयती पर्व पर सन् १९८६ के इन्दौर चातुर्मास हेतु पूना मे भगवन् की श्री मशा से छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र,गुजरात, म प्र, मे लगभग ११ १२ वर्षो तक विचरण होता रहा । बाद मे रामपुरा चातुर्मास सम्पन्न करके श्री चरणो मे पहुचन की तमन्ना सजाए चल रही थी कि अकस्मात् तीव्र असातावेदनीय ने इस देह पर अचूक आक्रमण कर दिया । औदारिक शरीर की इस रुग्णता ने मजबूर कर दिया ।

अन्तराय की सघन पर्तो के नीचे दर्शन के क्षण दब से गये, १४ वर्ष की अवधि पूर्णता पर थी मगर मन की भावनाए अपूर्ण रह गई, सपने अधूरे रह गए । किस पता था कि १४ वर्ष पूर्व के दर्शन हमारे अतिम दर्शन के रूप मे होंगे । वे सफल घटिकाए उस समय का मनोरम दृश्य और उन सुमधुर स्वरो से अब हमेशा हमेशा वचित रहना पड़ेगा ।

दुर्भाग्य एव प्रगाढ अन्तराय की वह कसक जिन्दगी भर खटकती रहेगी ऐसे निरभिमानी स्फटिक रत्न जैसे निर्मल हृदय वाले महापुरुष क अगणित उपकार युगों युगो तक उनकी उपस्थिति का अहसास कराते रहेंगे । यह अलौकिक महापुरुष इस हुक्म सघ उपवन के सरक्षक थे । इस बगिया के हर पुष्प, पत्तो पौधा, और लताओ के सवर्धन के लिए जिन्होने जीवन के रक्त से निरतर सिचन किया ।

समर्पण भावना से कार्य करते हुए अपने प्राणो की परवाह नही करने वाले इस महापुरुष ने लिया कुछ नही जीवन भर दिया ही दिया है । हम कुबेर को लुटाकर भी प्रतिदान म कुछ नही दे सकते । पूज्य की मधुर मुस्कान ने जहा कटकों को फूल बना दिया, और वज्र धैर्य ने विषमता भरे प्रसगो मे ममता के दीप जलाए । समत्व योग की साधना जीवन का अभिन्न अग बन गई थी । जहा सयम की कसौटी का प्रसग आया वहा धैर्य की कृपाण व स्थिरता क प्रतीक बनकर खड़े रहे । और जहा दूसरा की समस्या का प्रश्न आया वहाँ फूल बनकर कोमलता लुटाते रहे ।

आप श्री नाम से 'नाना नही थे अपितु नानाविध गुणो के कारण भारत भर मे सम्मान और श्रेष्ठता के पर्याय गुरु नानेश बनकर अलौकिक सूर्य की तरह चमकते रह ।

प्राणदायिनी ऊर्जा के महास्रोत की पावन परिधि मे हम सभी प्रसन्न पुलकित थे कि अचानक हमारा भाग्य रवि अस्त हो गया । शासन का महासूर्य अस्त होकर भी उदित है । जिनका आलोक सदियो तक कभी मद नही होगा ।

अत मे भरे हृदय मे साधना शिखर क आरोही को श्रद्धा नमन । शासन देव से प्रार्थना है कि हमारे भगवन् शीघ्र ही मोक्षगामी बन । हमे प्रसन्नता है कि आप श्री जी ने दूध से धुले जिस शुद्ध अन्त करण से इस हुक्म गुच्छ के उत्तराधिकारी के रूप मे नवम् पट्ट पर पूज्य श्री रामलालजी म सा को प्रतिष्ठित किया है, वे महापुरुष इस पद के सर्वथा योग्य हैं । हम सभी इस महापुरुष के निर्देशो मे आप श्री के आदर्शों को आगे बढ़ाते रहेंगे ।

जग को निहाल किया

महासती श्री सुशीला कवर जी म सा

ममता दर्शन दिया जग को निहाल किया गुरुवर नाना
दे गये संघ को राम सुहाना
भोली दुनियां न नहीं जाना ।
क्या कर रहे गुरुवर नाना ।
वा थे अंतर मगन, किया निज का जान गुरुवर १
समता नाद को जग में गुंजाया ।
विषमता को दूर भगाया ।
खिला हुक्म चमन हुआ नव सर्जन, गुरुवर २
वेदना ने जोर दिखाया ।
उस दह को खूब सताया ।
व्याधि तन में सही समाधि मन में रही गुरुवर ३
तेरी साधना थी निराली ।
खिल गई कितनों की किस्मत डाली।
नयन ज्योति मिली वचनशक्ति मिली गुरुवर ४
संथारा जीवन में धारा ।
अपने अतर को खूब निखारा ।
शुभ भाव में रमन किया देवलोक गमन, गुरुवर ५
तुम बन गये देवलोक वासी ।
तुम बिन छाई है यहां उदासी ।
राम दरबार को हुक्म सरकार को, देखने आना ६
जो भी संकट में तुझको सुमरे ।
उनकी बिगड़ी सारी सुधरे ।
नाना महर महान गाएं गुरु गुणगान गुरुवर ७
जो भी चरणों मे तेरे (नाना के) आया ।
वो आनंद सदा ही पाया ।
नहीं भूलेगा जग समता चांद का रंग गुरुवर ८

प्रेषक : राकेश चौपड़ा जोधपुर

❑ महसती श्री अर्पणा श्री जी म

प्राणो को गति देने वाले पूज्य गुरुदेव

वे हाथ कहा जो ऊर्जा देकर हमें जगा रहे थे ।
वे नयन कहा जो, वात्सल्य देकर ममता लुटा रहे थे ॥

बीसवी सदी के अन्तिम चरण का मर्मातक दृश्य, कलेजा काप रहा है हृदय रो रहा है, तृतीया कार्तिक बुधवार का दिन। हे भगवन ! अभी तो आपसे बहुत उम्मीदें थीं, आपके मूर्तिमन्त स्नेह से अनेक अनबुये प्रश्न समाधित होते। रोते-बिलखते कैसे हमें छोड़ गये ? लवण समुद्रवत अन्तर मे वेदना के तूफान उठ रहे हैं। समुद्री उफान को तीर्थंकर के अतिशय रोकने मे प्रभावी होते है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मन अन्तर्वेदना के उफान को पूज्य प्रवर का समत्व अतिशय रोकने मे प्रभावी हो सकता है। पूज्य प्रवर का समत्व चेतन हम सब मे सचेतन होगा तो यह तूफान अवश्य रुकेगा।

सचमुच, पूज्य प्रवर के लिए क्या कहे ? क्या श्रद्धा पुष्प समर्पित करे। वास्तविकता के आईने मे देख तो प श्री राम शर्मा आचार्य का यह कथन कि, ' सही अर्थों मे उन्होंने समता योगी, सन्त, सुधारक, शहीद की उपमा को अपने मे चरितार्थ किया।'' उनके अगणित गुणा के कुछ अश लेकर अपने जीवन मे लोक कल्याण हेतु प्रेरणा लें तो हम श्रद्धा पुष्प चढ़ाने की कुछ योग्यता प्राप्त कर सकेगे। तो आइये आदर्श के आईने मे झाके उनका जीवन -
समत्व योगी साधक पूज्य श्री नानेश ने समता को अपने श्वास श्वास एव प्राण-प्राण मे प्रतिष्ठित कर सही अर्थों में साधना की मिशाल हम सबके हाथो मे देकर समत्व योगी साधक की उक्ति को चरितार्थ किया है।
सुधारक पूज्य प्रवर ने लाखो दलित, पतित, शोपित वर्गों को व्यसनमुक्त बनाकर तिण्णाण-तारियाण के पद को सिद्ध कर दिया। वास्तविकता के परिपेक्ष्य मे उन्हे बीसवी सदी का अद्वितीय सुधारक कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा।
शहीद अपने आत्म तेज से उन्होंने जैनेत्तर के लिए सब कुछ समर्पित करके मै दर्द दीवाना, मेरा दर्द न जाने कोय'' के रहस्य को दुनिया के समक्ष उद्घाटित करके शहीद की शक्ति ससार के समक्ष समुपस्थित की तो सच्चे अर्थों मे अन्तर्मानस की श्रद्धाजलि के पुष्प समर्पित है-

ए मौत ! आखिर तुझसे भी नादानी हुई ।
फूल तूने वो चुना, जिससे गुलशन की वीरानी हुई ॥

पूज्य प्रवर आप जहा विराज रहे है, वही से शीघ्र कर्म क्षय कर व्याख्या प्रज्ञप्ति के अनुसार सूत्रानुसारेण अग्रिमभवे 'आचार्य पद पराकाष्ठा को सम्पन्न कर तृतीय भव शीघ्र मुक्ति का वरण करे। यही वीर प्रभु से पूज्य प्रवर के प्रति प्रार्थना है। नवम् पट्टधर के प्रति शुभ भावाजलि

''नवम् पाट पर आप हैं आये, २००९ जन्म हैं पाये,
नव त्रिक अक आचार्य कहाये, त्रिक-त्रिक-त्रिक नव निधि प्रकटाये''
आर्य रक्षित बने आचार्य श्री नानेश,
आर्य रक्षित सम आप है, पुष्यमित्र सम राम ॥

❑ महासती श्री चरित्रप्रभा जी म सा

हाय मौत ! गजब कर डाला

मौत भी गजब कर जाती है,
न गाती है न गुनगुनाती है।
मौत जब भी आती है चुपके से ही आती है,
परन्तु, हाय मौत ! गजब कर डाला, सोच न पाये पल भर भी,
जन-जन की आशाओ को कुचला दया न आई हम पर भी ॥

जाना तो सभी को है, यह जानते हुए भी दिल आज बुझा बुझा-सा है, सब कुछ सूना-सूना, उजड़ा-उजड़ा लग रहा है, क्योंकि गुरुदेव हमारे आधार थे, आस्था बिन्दु थे। जीवन के अन्तिम क्षणो तक उस सम्यक्त्व योगी साधक ने समता को रगो मे उतारा, उस सम्यक्त्व साधना की याद हमारे पास हैं। पूज्य गुरुदेव हस दृष्टिवत सार को ग्रहण करते असार को छोड़ देते। जिन्दगी मे सार तत्त्व समय की सदुपयोगिता को पहचानने वाले थे, फूल की सौरभवत् सम्पूर्ण ससार मे सम्यक्त्व की सौरभ फैलाकर चले गये। हे भगवन् आप जहा भी रहो, हमे विश्वास देना, ममत्व का आभास देना, कृपाभाव से न रहे जुदाई, ऐसी दिलासा देना। मन मे भव्य भावो से विहार करके हौसले बुलद का भास देना ताकि हम जन-जन को बता सके कि गुरुदेव हमारे साथ हैं।

अन्त मे पूज्य प्रवर क असीमित गुणो को शब्द सीमा मे बाध नही सकती एतदर्थ यह प्रार्थना करूगी कि हे भगवन् ! आप जहा भी हो समत्व की पराकाष्ठा को पूर्ण कर समत्व शिवालय मे शीघ्र विराजे, यही भावाजलि अर्पित करती हू।

नवम् पट्टधर के प्रति आपने शासन की ज्योति को अखण्ड प्रज्वलित करने हेतु शासन की बागडोर नवम् पट्टधर श्री रामलाल जी म सा को दी जिनके शासन सेवी बनकर आपकी आज्ञा मे सब कुछ समर्पित कर। आप श्री दीर्घायु बनकर प्रकाश स्तम्भ के समान युगों-युगों तक हमारे मार्ग को आलोकित करते रहें। आपके सानिध्य मे सयम यात्रा निर्मल बने, यही शुभकामना है।

कहाँ ढूढे हम आचार्य भगवन् को

सागर सूना एक सीप बिना, सीप सूना एक मोती बिना।
मन्दिर सूना एक मूर्ति बिना, दीप सूना एक बाती बिना।
आज यह हृदय हो गया सूना, आचार्य भगवन् के बिना ॥

नहीं सोचा था कि हुक्म शासन को दैदीप्यमान करने वाले एक दिव्य मशाल का अचानक ही अवसान हो जाएगा। ज्योंहि मध्य रात्रि मे यह दु खद समाचार मिला सुनते ही हृदय फट पड़ा। अरे ! अतर के आकाश मे चमकता चाद क्या अस्त हो गया ? विशाल वट की छाया के समान शान्ति प्रदान करने वाले गुरुदेव हमे निराधार छोड़कर चले गये। रत्न समान तेजस्वी, आचार्य भगवन् इस अवनि को अलविदा कहकर प्रस्थान कर गये। उनके जाने से जैन शासन की बहुत गहरी हानि हुई। आचार्य भगवन् तो गये परन्तु अपने गुणो की सुवास को छोड़कर गये।

पूज्य आचार्य भगवन् यदि मुझे न मिले होते तो मेरी यह जीवन नैया इस भीषण ससार अटवी मे भटकती रहती, ससार सागर मे डूबती नौका को बाहर निकालकर सयमी जीवन की अनमोल भेट देने वाले, मुरझाती जीवन बगिया को अमृतजल के सिंचन से नवपल्लवित करने वाले, अज्ञान के आलम मे अटके जीवन को ज्ञान का प्रकाश प्रदान करने वाले, मिथ्यात्व के महावन मे भटकती अबोध बाला को सही मार्ग बताने वाले, मोक्षमार्ग के सोपान पर चढ़ाने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी गुणनिधि पूज्य गुरुदेव का उपकार भला कैसे भूला जा सकता है ?

भले ही आज गुरुदेव सशरीर उपस्थित नही हैं, पर उनके गुणो की सुवास से तो वे अमर हैं। पूज्य गुरुदेव के दिखाये मार्ग पर आगे-आगे प्रगति करते रहे, उनके जीवन के अमूल्य गुणो के भडार से यत्किंचित गुणो को जीवन मे अपना लें। उनके द्वारा अर्पित सद्‌बोधो को जीवन मे जड़कर, मन मे मढकर, स्वभाव मे सजाकर, विभाव से दूर करें। जीवन का ताना-बाना बुनने के सद्‌भागी बनें। इसी अभिलाषा के साथ मै आचार्य भगवन् के प्रति श्रद्धानत हू।

धरा रो रही है आसमा रो रहा है।
आपकी याद मे हे गुरुवर, सारा जहा रो रहा है ॥

प्रेषक मणिलाल

❑ महासती मजूबाला जी म सा

हुक्म सघ के मान

जग मे जीवन श्रेष्ठ वही जो फूलो सा मुस्कराता है ।
समता सौरभ से जग के कण-कण को महकाता है ॥

वृक्ष की डाली पर जब फूल खिलता है तो वह चारो ओर आसपास के वातावरण में अपनी सौरभ को बिखेर देता है, कण कण को महका देता है। महापुरुषो का अवतरण, फूलो से अनत-अनत गुणा बेहतर होता है, विशिष्ट होता है महान् होता है। महापुरुष जब तक दुनिया मे मौजूद रहता है तब तक उनका व्यक्तित्व जनमानस को अपनी ओर प्रभावित करता ही है। तप सयम के सौरभ से जन-जन मे एक नवीन चेतना, नवस्तुति एव नवजीवन का सचार करता है। आचार्य श्री नानेश हुक्म सघ के उपवन के वह माली थे, जिसने हर पौधे, हर फूल, हर पत्ती को अपने जीवन के कण-कण से सीचा। वह कल्पवृक्ष जिसने इच्छित फल प्रदान किया, वह चितामणि जिसने जन-जन के दुख दर्द को हर लिया, वह छत्र जिसने जन-जन को छूने तक नही दिया। समता विभूति आचार्य श्री नानेश हिमालय से विराट, सागर से गभीर चन्द्र से उज्ज्वल एव सूर्य से तेजस्वी थे। उस गुरु की महिमा को शब्द की सीमा से बाधा भी नही जा सकता। वे इस धरती के सबसे ऊचे मान थे। उन्हे नापने का कोई पैमाना नही है हमारे पास। उन महापुरुषो के जीवन पर दृष्टि डालते ही हमारा मस्तक गर्व से ऊचा हो जाता है, और अन्तर्हृदय श्रद्धा से झुक जाता है। वे सयम साधना के ताप मे खूब तप निरतर तपते रहे निखरते रहे। निखरते-निखरते शुद्ध निर्मल समत्व योगी बन गए। विधि के कठोर विधान के सामने जिन शासन की चमकती हुई मणि का प्रकाश लुप्त हो गया। आज हमारे धैर्य का बाध टूट गया। आज आचार्य भगवन् भले ही चले गये हमे दिव्य आशीर्वाद से वचित कर गए किन्तु उन महापुरुषो का उज्ज्वलतम चरित्र यश सौरभ के साथ हमारे लिए प्रकाश पुज बन कर अमर है, और युगों-युगो तक अमर रहेगा। प्रभु वीर के शासन को उन्होने जिस भाति चमकाया वह इतिहास गगन मे नक्षत्र की भाति हमेशा चमकता रहेगा। इसलिए कहा गया है-

जब तक सूरज चाद रहेगा, नाना गुरु का नाम रहेगा ।
क्योकि इतिहास कायरो से नही महापुरुषो से बनता है ।
गुरुवर तेरी मधुर स्मृतिया युग-युग बोध जगाएगी,
दुख दर्द मे उलझे मन की उलझन को सुलझाएगी ।

अत मे यही कहना है हम महापुरुषो के बताए मार्ग पर चलकर श्रमण जीवन को समुज्ज्वल बनाए।

❑ महासती श्री कमल प्रभा जी म सा

मानवता के शृंगार

बीसवी सदी का अन्तिम चरण समस्त विश्व व हमारे लिए बड़ा ही आघातपूर्ण रहा क्योंकि सारा आध्यात्मिक चेतना के सवाहक, जन-जन के आस्था केन्द्र हुक्म सघ एव साधुमार्गी सघ की बगिया के बागवाँ, अष्टम पट्टधर, समता दर्शन की साक्षात प्रतिमूर्ति, महामहिम आचार्य भगवन् इस नश्वर काया को त्याग कर अपनी यथोचित पदवी का पा गये। यह समाचार प्राप्त होते ही हृदय को गहरा आघात लगा चारों तरफ गहरा सनाटा छा गया। मन म हाहाकार मच गया। ममान्तक वदना स हृदय विदीर्ण हा गया और आखें बरबस ही छलक पड़ीं। अनेक प्रश्न, अनबुझे प्रश्न, उदास तरल आखो मे तैरने लगे,वो महापुरुष क्या चले गये सारा ससार खाली हो गया।

जब हम भीलवाड़ा से विहार कर उदयपुर आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ सेवा म पहुचे, तब आचार्य भगवन् के श्री चरणो मे सद्शिक्षाओ का पाथेय पाया। उनकी मधुर स्मृतिया ज्यो की त्यो नव्य भव्य रूप म एक चलचित्र की भाति मानस पटल पर आकर हृदय एव अर्न्तमन को सुखद रूप म प्रसन्नता द रही थी। अचानक तभी ऐसा लगा मानो हसते खेलते मन पर बिजली गिर पड़ी। जिनक पावन दर्शनो की हर पल तमन्नाए एव आशाए थीं साधुमार्गी सघ के गगन मडल पर उस विश्व विभूति को अभी और चमकना था, वह महापुरुष दीर्घ साधनामय जीवन जी कर, तप, त्याग व सयम की ज्योति से जगमग हो आज हम सभी को छोड़कर उस अनत ज्योति मे लीन हो गया।

जब जरूरत थी हमे तुम्हारे सहारे की।
हमे बेसहारा छोड़कर तुम चले गये ॥

समता विभूति आचार्य भगवन् हमारी आस्था के केन्द्र बिन्दु थे, हमारे जीवन आधार थे उनके बिना सब वीरान सा सूना-सूना, उजड़ा-उजड़ा हो गया। जाना तो सभी को है, यह सनातन सत्य जानते हुए भी दिल आज बुझा-बुझा है, क्योंकि महापुरुष तो मोह माया के जजाल को तोड़ चले जाते है और हम सब क दिलो मे कशिश छोड़ जाते है।

जग कहता गुरुवर चले गए मन कहता गुरुवर गए नही।
जग भी सच्चा मन भी सच्चा, गुरुवर जाते पर मिटते नही ॥

महापुरुषों की यादो के रूप मे अब हमारे पास आचार्य भगवन के स्वरूप मे उनके पथ प्रदर्शक व नेक कार्य ही हैं।

आचार्य भगवन् की दृष्टि सदा हस दृष्टि रही है। सारयुक्त को ग्रहण करना असार को त्याग देना।

सादा जीवन उच्च विचारो के धनी आचार्य श्री जाति, परपरा, राष्ट्र का सन्मार्ग बताने वाले विश्व सत क रूप मे कहू तो अतिशयोक्ति न होगी। आचार्य भगवन् का लेखन, वक्तव्य, अध्ययन अध्यापन एव साहित्य की सपूर्ण विधाओ पर आधिपत्य आज भी सुशोभित है और सदा रहगा। जैसे फूल की विशेषता उसकी सुगध है दीपक की विशेषता उसका प्रकाश है, वैसे ही आचार्य भगवन् की विशेषता उनका साहित्य है। आचार्य भगवन् मे सहनशीलता, विनयशीलता, उदारता, प्रभु भक्ति गुरुभक्ति सघ भक्ति, राष्ट्र भक्ति मानव सेवा, प्राणीमात्र के प्रति

करुणा, दया के भाव आदि सर्वतोभावेन उपलब्ध थे ।

कलिकाल मे ऐसे महान् समत्वयोगी साधक का मिलना दुष्कर ही नही महा दुष्कर है । क्योंकि आचार्य भगवन् के जीवन मे अनेक सघर्ष आए । आचार्य भगवन् ने शिवशकर की भाति गरल पीकर समता की प्रतिमूर्ति बन सहन किया इसलिए कहा जाता है   नाना गुरु का है सदेश, समतामय हो सारा देश ।''

हुक्म सघ के सप्तम पट्टधर आचार्य श्री गणेश के धर्मरूपी चक्र को धारण कर देश के कोने-कोने मे विहार कर धर्म का शखनाद किया । यह उनकी श्रमशीलता और शासन के प्रति अपने कर्त्तव्य का बेजोड उदाहरण है ।

आचार्य भगवन् ने अपने शरीर की परवाह न करके प्रभुवीर की वाणी को जन-जन तक पहुचाने का जो अथक प्रयास किया, वह युगों-युगों तक अमर रहेगा ।

न हर समुद्र से मोती सदा निकलते हैं,
न हर मजार पर दीप सदा जलते हैं ।
जिनके खिलने से उपवन महक उठता है,
ऐसे पुष्प उपवन मे सदियो बाद खिलते हैं ॥

जैसे सुयोग्य सतान पिता का गौरव बढ़ाती है, वैसे ही सुयोग्य शिष्य गुरु गौरव मे हमेशा अधिक वृद्धि करते हैं । एसे ही वर्तमान आचार्य श्री रामेश हैं जो उनकी कृपा एव पुण्य निधि का साक्षात् फल है ।

हुक्म सघ के दीपावनहार, सघनायक, सघरूपी रथ के कुशल महारथी इस युग के महान सत आचार्य श्री नानेश थे ।जहा वे स्वय त्याग पथ के राही थे । वही सपूर्ण जैन वाङ्मय के साथ इतर धर्मों के भी प्रकाड ज्ञाता थे । आप श्री का आभा मण्डल प्रभावपूर्ण था । आजस्वी, तेजस्वी, मुखाकृति सहज म दूसरो को नतमस्तक करने म सक्षम थी । तभी कहा है-

यू तो दुनिया के समुदर मे कमी कभी होती नही ।
लाख जौहरी देख लो, इस आब का मोती नही ॥

आचार्य श्री को हमने देखा, व सरल, विनीत एव भद्रिक परिणामी के साथ वचनसिद्ध योगी थे । यह अनुभव की बात है, जैसे १० की तपस्या के दिन आचार्य भगवन ने फरमाया- सतीजी आप तो तपस्विनी बनने लग गई । उपवास से मासखमण की तपस्या होना, महापुरुषो की वचन सिद्धि का द्योतक है । आचार्य भगवन् फरमाया करते थे- 'सतिया जी मेरी सेवा क्या करती हो, युवाचार्य भगवन् की सेवा करिए ।'' मेरे मे और उनमे कोई फर्क नही है । यह बात महापुरुषो की सरलता एव वर्तमान आचार्य श्री के प्रति सुखद उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है । ऐसे महान योगी की चरण सेवा मे बैठकर ऐसा प्रतीत होता था मानो थके हुए पक्षी को कल्पतरु की ठडी सुहानी छाया मिली हा ।

ये नजरो की खुश नसीबी थी, दर्शन हुए करीब से ।
देखते ही लगा बस खुदा मिला खुश नसीब से ॥

मृदुभाषी, मितभाषी आचार्य भगवन् का एक ही विषय कि जीवनम्'' पर चार माह प्रवचन देना आपकी प्रखर एव विलक्षण प्रतिभा को दर्शाता है । किसी भी धर्म एव सप्रदाय का खडन न करके एकता सूत्र म बाधना आप श्री को प्राप्त मौलिक गुण था । हुक्म सघ के बगिया के उस कुशल बागवा की आत्मा की चिर शाति के लिए हम प्रार्थना करते हैं । आचार्य भगवन् की आत्मा जहा कही भी हा, चिर शाति को प्राप्त करे एव वहा स महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करे ।

हम सभी पर उनकी परोक्ष कृपा बनी रहे । चतुर्विध सघ आचार्य भगवन् के उपकारा को युगों-युगों तक भूल नही सकता ।

युग मनीषी आचार्य प्रवर के श्री चरणो मे हृदय की असीम आस्था श्रद्धा, भक्ति एव विश्वास के साथ श्रद्धाजलि ।

नींव के पत्थर

घड़ी का चमकता डायल, रेडियम लगे अक और लबी सुइया हमारी आखो को भले ही आकर्षित कर लेती है, किन्तु विशेषज्ञ की आखे इनमे से एक पर भी नही टिकती। वह देखता है भीतर छुपे नन्हे पुर्जों और छोटी सी स्प्रिंग को जो घडी को जीवन देती है। कारण महापुरुषो की दृष्टि एक्सरे मशीन की तरह अतरग होती हैं। आज समाज उभरे हुए व्यक्तित्व और प्रखर वाणी पर रीझता है किन्तु समाज रूपी यत्र मे प्राण भर देने वाले भीतरी पुर्जे दूसरे होते हैं उन्हे देखने के लिए विशेषज्ञ एव अतरग दृष्टि चाहिए। हमारे असीम आस्था के मसीहा श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश समाज मे रेडियम लगी हुई सुई बनकर नही नन्हे पुर्जे बनकर आए। आप श्री ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से जिस अनमोल हीरे को परखा एव तराशा ऐसे वर्तमान आचार्य भगवन का जीवन मदिर का कलश नहीं नीव का पत्थर बना। शिखर का पत्थर अपन म चमक एक आकर्षण भले ही रखे नीव के अनगढ पत्थर से महत्वपूर्ण नहीं हो सकता।

आचार्य भगवन् के अनन्त-अनन्त उपकार, मुझ जैसी अबोध साधिका को प्राप्त हुआ, इसलिए स्वर मुखरित होता है।

उपकार किया जो मुझ बाला पर कभी न भूला जायेगा।
चाहे उपानह कर दू तन का फिर भी चूक न पायेगा॥

ऐसे समत्वयोगी साधक के श्री चरणो म अपना सर्वस्व अर्पण कर दू ता भी उनके उपकारा स उऋण नहीं हा सकती हू। अनन्त-अनन्त आराध्य जब तक जिये समाज के लिए जिये। अपने जीवन की अतिम बूद तक वह सघ व समाज के लिए सवारते रहे।

गुरुदव श्री का जीवन अति सरस सरल एव माधुर्य से युक्त तथा तप, सयम और सुदीर्घ साधना की ज्योति स ज्योतित था। आचार्य भगवन् के मन मे किसी प्रकार का दुराग्रह नही था, सत्य को परखने की व उज्ज्वल भविष्य की पैनी दृष्टि थी। उन महापुरुषो के असीम गुणा को ससीम शब्दो मे अभिव्यक्त करना सूर्य का दीपक दिखाने व अथाह समुद्र को एक कटोरी से ढकने जैसा है क्योकि आप श्री जी के चरणो मे जो भी आया चाहे गृहस्थ हो साधक हो, मूर्ख हा विद्वान, आबाल वृद्ध हो सहज अपूर्व आत्मीयता प्राप्त होती थी। ऐसा लगता माना हम आनद और आत्मीयता क लहराते हुए सागर के पास बैठे हैं। वह प्रेम स्नेह वात्सल्य का छलकता कलश था जा बिखर कर चला गया।

वे समता साधक पार्थिव देह से हमारे बीच नही है किन्तु उनकी अविनश्वर कालजयी दिव्यात्मा हमार साथ है, व जहा पर भी हैं हम सब पर हजार-हजार हाथ हैं वे हम सब पर अमृत बरसा रहे हैं क्योंकि कहा गया है

आग मे तपा दो सोना मगर चमक जाती नही।
सिहनी मर जाती मगर घास को खाती नही॥"

आचार्य भगवन् के सद्गुणो की महक युगा युगा तक हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहगी क्योंकि जीवन को उज्ज्वल, समुज्ज्वल महोज्ज्वल बनाने के लिए हमे चतुर्विध सघ को आचार्य भगवन् के आम्नाय धम्मो की आज्ञा और निर्देशो को अपनाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कहा गया है 'होगा गुरु का जिधर इशारा उधर बढ़ेगा कदम हमारा यही भाव हृदयगम करना है।

❑ महासती श्री रश्मि श्री जी

मेरी नयन-निधि

महान् सगीतकारो के कठ से निःसृत रागिनी बद हो जाती है फिर भी उसके कर्णप्रिय स्वर वर्षों तक गुजते रहते है। स्वप्न प्रभात बेला मे तिरोहित हो जाते हैं किन्तु उनकी स्मृति वर्षों तक मानस को बैचेन किए रहती है। हाथ मे लगी हुई मेहदी थोड़े समय के बाद सूख जाती है, लकिन उसके निशान कइ दिनो तक सुन्दरता बनाए रखत हैं। गुलाब का फूल थोड़े ही समय के पश्चात मुरझाने लगता है लेकिन उसकी सुवास तथा मृदुता उसकी पखुड़ियों में स्थायी बनी रहती है।

ठीक वैसे ही मानवता के सजीव प्रहरी आचार्य श्री नानेश चाहे हम सभी स ओझल होकर अनत के गर्भ मे समा चुके हैं परन्तु आपकी अमर कृतिया, आपका सदेश, आपका प्रेरक आदशमय जीवन, चुनौती देता हुआ हम सभी को मार्गदर्शन दे रहा है।

हे अनत गरिमागुण से मण्डित आप श्री की जिन्दगी का हर क्षण आप श्री के अतस्तल मे छिपे हुए एक-एक गुण को प्रकट करने वाला था। अतीत की स्मृतिया मर मानस पट पर चलचित्र की तरह घूम रही है किस-किस प्रसग को उजागर करू ?

जिस प्रकार रेडियम का एक कण भी कीमती होता है। कहा जाता है कि उसकी एक कणी भी बहुत से रोग मिटा सकती है। जिसकी एक कणी भी ऐसी अमूल्य होती है उसको अगर उस रेडियम का पूरा पहाड़ मिल जाए तो कितनी प्रसन्नता होती है। ठीक वैसे ही जिस किसी ने भी आप श्री के जीवन सानिध्य का एक पल भी पाया वह जन्म जन्मान्तर के रोग को दूर करने वाला बना। जब मै छोटी थी तब मैंन सुना था कि कामधेनु कल्पवृक्ष व चितामणि रत्न ऐसे होते हैं, जिनसे सभी मनोकमनाए पूर्ण होती हैं। हर चिता गायब हा जाती है मैंने सोचा इन तीनो मे से जिसके पास यह एक भी होगा तो वह दुनिया का बहुत भाग्यशाली होगा। अगर मेरे पास हाता तो मै ये माग लती वो माग लेती इसी चितन ही चितन मे आचार्य श्री के दर्शन किए और वह अटूट खजाना मुझ प्राप्त हो गया। जा बिल्कुल अकिचन हो उसको ये तीनो मिल जाए तो उसको कितनी प्रसन्नता होगी।

आप श्री का महान् व्यक्तित्व प्राप्त कर मरी कल्पनाए कल्पनाए ही नही अपितु जीवन की उपलब्धि के रूप मे बदल गई। आप श्री का सानिध्य इस लोक व परलाक दोनो को सुधारने वाला बना। मैंने आप श्री क चरणा से जो चाहा सो पाया। इस प्रकार आप श्री की चरण शरण मे मुझ जैसी अनक आत्माआ का स्थान मिला।

शासन प्रभावना के लिए आपने देश के विभिन्न अचलो म हजारा मीलो की पदयात्राएँ करते हुए माग म समागत लाखो लोगो को सत्य अहिंसा, प्रेम, मानवता और भाईचार का पाठ पढ़ाकर मानवीय गुणा पर चलन का पुनीत सदेश दिया। आप श्री जी अपने शिष्य के काफिले के सग जिन गली, गलियारा मार्ग चौराहो से गुजरते वहा की धूल पवित्र आचरण युक्त चरण युगल के सस्पर्श से चदन की उपमा का धारण कर लेती और जहा यह चलता-फिरता तीर्थ चद दिनो के लिए भी पड़ाव डाल देता सच मानो वहा के वातावरण को देखकर एसा लगता मानो काई समवसरण ही लग रहा है। आप श्री का सम्पूर्ण जीवन सद्गुणो का महकता गुलदस्ता था। उन सद्गुणा मे स शताश को भी प्रकट करना मुझ जैसी अबोध के सामर्थ्य स परे है।

सुन्दर कमल की जड़ें कर्दम मे जमी रहती है, गुलाब के फूल की जीवन दायिनी डाली काटो से घिरी रहती है और शीतल चदन का वृक्ष सर्पों से लिपटा रहता है ठीक वैसे ही सघर्ष तथा विकटता के क्षणो मे भी आप श्री सदा प्रसन्न रहते थे, चाहे शारीरिक वेदना है, या मानसिक आप श्री के लिए तो आह मे विषमता नही वाह म प्रसन्नता नहीं। आह और वाह दोनो मे तटस्थ रहते थे। ऐसे युग पुरुष आचार्य श्री नानेश के श्री चरणो म भावाजलि।

वगिया के माली कहा गये ?

श्री लब्धि श्री जी म सा

हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर नानेश छोड हमें कहा गए
ये अखियां तुमको ढूंढ रही बगिया के माली कहां गए।

मेवाड़ी वीर गुरु नाना शृंगार न तुमको सिणगारा,
जन्म लिया जिस क्षण तुमने दांता में हुआ था उजियारा।
पोखरणा कुल के चंदा शुभ्र ज्योत्स्ना फैलाकर कहां गए १

क्रांतिकारी गणपति गुरु से संयम का बाना था पहना
विनय ज्ञानार्जन गुरु सेवा का पहना तुमने गुण गहना
समता की मधुरम बीन बजा जीने की कला सिखला गये २

अमृतमय तेरी सुधावाणी अब हमको कौन सुनायेगा
आत्मशांति की सद्‌शिक्षाएं अब हमको कौन बताएगा
हे भक्तों के भगवान हमें मझधार छोड़कर कहां गए ३

लाखों को जीवन बोध दिया, लाखों को राह दिखायी थी
लाखों के वन्दन पूर्ण किये लोगों ने शांति पायी थी
संघनिष्ठा समृद्धि की लगन जन २ के मन में जगा गए ४

तेरे दिव्य आदर्शों की झांकी हम राम गुरु में पायेंगे
तेरे पदचिन्हों पे चलकर हम आतमसिद्धि पायेंगे
तेरी दृष्टि संघ पर सदा रहे चाहे दिव्य लोक में समा गए ५

प्रेषक अंगूर बाला जैन

बहुआयामी व्यक्तित्व

इस विराट विश्व के अन्दर बहुत से मनुष्यो का जन्म भी होता है व मरण भी। जो अपने आपको बहुजन हिताय के पवित्र उद्देश्य के लिए समर्पित कर देते है, उन्ही की गौरव गाथा गायी जाती है। आचार्य श्री नानेश का जीवन बहु आयामी, बहु यशस्वी, प्रतिभा सम्पन्न था, उनके जीवन के हर क्षेत्र मे दया, सहिष्णुता, विशालता, सरलता की असख्य धारा प्रवाहित होती थी। अमीर से अमीर व गरीब से गरीब व्यक्ति कोई भी आप श्री के चरणो मे पहुच जाता तो ऐसा महसूस करता कि गुरुदेव की असीम कृपा मेरे पर ही है। जैसे चन्द्रमा को देखकर व्यक्ति यही सोचता है कि चन्द्रमा मेरे साथ-साथ चल रहा है।

आचार्य श्री नानेश का जीवन गुड़ के समान सर्वोपयोगी व सार्वजनिक था। गुड़ का महत्व मिठाई से भी ज्यादा होता है। मिठाई तो अमीर लोग ही खरीद सकते हैं पर गरीब नही। गुड़ राजघरानो मे भी जाता है, सेठ साहूकारो के यहा पर भी और गरीब के यहा पर भी ठीक वैसे ही आचार्य भगवन् का जीवन भी वसुधैव कुटुम्बकम् की उदार भावना को लिए हुए था। आचार्य भगवन् के नाम म भी ऐसा जादू था कि नाम लेने मात्र से सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। एक बार हम बीकानेर से उदयपुर चातुर्मास प्रवास पर जा रहे थे, बीच मे रास्ता भूल गए, गर्मी का मौसम चलते-चलते रात्रि हो गई घोर निशा न पगडडी दिखाई दे न कोई रास्ता कहा जाए क्या करे, कुछ समझ में नही आ रहा था, उसी समय गुरुदेव को पुकारा गया भगवन् अब तो रास्ता बता दो, ज्योंहि नाम लिया और सामने एक व्यक्ति दिखाई दिया और उसने हमे रास्ता बता दिया। इस प्रकार आप श्री का समग्र जीवन मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। आप श्री ने अपने जीवन को आध्यात्किता की ओर उन्मुख करते हुए अपने ज्ञान प्रदीप की शिखा से जन जन के मानवीय गुणो को आलोकित किया। अपने अध्यात्म पूर्ण जीवन से समता दर्शन की प्रमुख देन विश्व को देकर विश्व की प्रसुप्त जनता को जागृत किया। ऐसे महान् आराध्य प्रवर आज हमारे बीच नही है पर उनके गुणा की खुशबू आज भी महक रही है। हम श्रद्धा की अगरबत्ती जलाकर त्याग तप का नैवेद्य चढ़ाकर आत्मगुणो की आरती कर आपकी अमूल्य शिक्षा का पान कर हम अपने जीवन को आगे बढ़ायें।

है मानवता के मसीहा मेरे आराध्य देव,
आपने ही बताया मुझे परमात्मा का भव्य द्वार।
आपने ही दी मुझे आत्म स्वरूप की सच्ची समझ,
आपने ही समझाई मुझे कषायो की भयकरता।
आपने ही लगाया मेरे दुर्गति का ताला,
ससार की याद न आ जाए इसलिए,
आपने ही बहाया ज्ञान व वात्सल्य का सुखद झरना।
इसलिए श्रद्धाविनत हो जाता मेरा जीवन आपके शरणा॥

-प्रपक -कु मोनाली खिवसरा, करही

जैन जगत् के भास्कर

जिन घड़ियो की प्रतीक्षा नहीं की जाती है, कभी कभी वे अनचाही घड़िया भी सामने आ खड़ी होती है। कल तक जिन्हे सुनते थे, जिन्हे देखकर रोम रोम खुशियों से झूम जाता था, जिनके इगित, आकार और चेष्टा हमारे आलम्बन थ, व सघ के छत्रपति जैन जगत के आलोकमान भास्कर, मा भारती के अनुपम लाल, शृगार सती के अनुपम वाल आचाय श्री नानेश का आज हमारे बीच न देखकर न पाकर हृदय उद्वेलित हुए विना नही रहता।

जाएण हीर माणम्मि चैश्यम्मि मणोरम ।
दुहिया अशरणा अत्ता ए ए कदति मो तगा ।

एक महावृक्ष महावात क योग से गिर गया उस समय बेचारे अशरण पक्षीगण क्रदन करते हैं, यही स्थिति आज जैन शासन और सघ की है। महावत महाकाल जिसे आचार्य प्रवर ने ललकारा था, जो स्वय उनसे भयभीत हो गया था, जो दूर खड़ा पास आने की हिम्मत नही कर रहा था आखिर दबे पाव आकर उस महापुरुष को उसने हमसे सदैव के लिए छीन लिया।

पिछले तीन चार महीने से उनकी समाधिमरण की साधना चल रही थी। वे क्षण-क्षण आत्म साधना की उस सर्वोच्च दशा की ओर बढ़ रहे थे पर हम लोग उनकी इस महालीला को शायद जल्दी नही समझ पाए इसलिए हम अपन प्रयत्न और ढग से चल रह थे। वे निरतर मृत्युजय दशा की ओर बढ़ रह थे, वे स्वय कभी कभी शेरो शायरी म यों कहते थे

मरने से मुकर नही, जब भय अकब्बर।
बेहतर यही है खुशी से मरना सीखो ॥

वे कहते थे-

मरते मरते कह गया, लुकमान सा दाना हकीम।
दर हकीकत मौत की, यारो दवा कुछ भी नही ॥

बस इनके भावो को आप समझ ही गये होंगे। वो जीवन सूत्र ही बना गए और यही कारण था कि वे जीवन की सध्या वला म उस अतिम साधना को भी परवान चढ़ा गये।

<u>जाज्वल्यमान जीवन</u> कल तक जिन महापुरुषो को हम-अपने बीच पा रहे थे, जिन्हे देखकर मन भरता ही नहीं था, आज वे हमारे बीच से चले ही गय। एक शायर ने कहा है-

कल तक तो कहते थे कि बिस्तर से उठा जाता नही,
आज दुनिया से चले जाने की ताकत आ गई ॥

आज हमारी यही दशा है। बाहर महोत्सव है, पर भीतर का हाल कहने लायक नही है। ऐसी दशा क्यो है ? कारण यह है कि जिस महापुरुष ने सब कुछ दे दिया जीवन समर्पित कर दिया। हमारे पास क्या है जो उनके

ऋण को चुका सके ।

जग हित जिन सर्वस्व दान कर, तुम तो हुए अशेप ।
क्या देकर प्रतिदान करू मै, पास नही लवलेश ॥

अरे, जिसने उस महापुरुष का दर्शन पाया, सानिध्य पाया, ज्ञान पाया, उस व्यक्ति का तो भाग्य भी दूसरो के लिए ईर्ष्या का कारण बन जाता है । एक मारवाड़ी कवि ने कहा है -

सो सज्जन अरू मित्र लख, बघु सुबघु अनेक,
ज्या देख्या ही दु ख टले, सो लाखन मे एक ।

सागर सी गहराई पर्वत सी ऊचाई आप सच्चे प्रभावी प्रवचनकार थे । विशिष्ट त्याग प्रधान जीवन जीने वाले महापुरुषा की वाणी ही प्रवचन है । आपकी वाणी मे सहज मधुरता थी । बातो की लड़ी भापा की कड़ी एव तर्कों की झड़ी का सुमेल ऐसा होता कि श्रोता आपकी वाणी सुन झूम उठता था । किस समय क्या बोलना, कितना बोलना, और कैसे बोलना, इस बात का आपको पूरा पूरा ज्ञान था । अत जो कोई आपके सम्पर्क मे आता आपका बने बिना नही रह सकता, चाहे जैन हो या अजैन ।

इस प्रकार मै आपकी कौन सी विशेपता पर प्रकाश डालू, लेखनी से आपके गुणो को अकित करना सभव ही नही । क्या कभी विराट समुद्र को नन्ही सी अजलि में भरा जा सकता है ?

गुरु जीवन रूपी ट्रेन का स्टेशन है, जीवन नौका का नाविक है, जीवन दीपक की ज्योति है, प्रकाश पुज है, गुरु हमारे जीवन के निर्माता हैं ।

तराजू की चोटी की तरह देव और धर्म के बीच गुरु है, चोटी मे कसर होने पर तोल की गड़बड़ी हो जाती है, गुरु की प्रामाणिकता समाप्त होने पर चतुर्विध सघ की व्यवस्था ही खत्म हा जाती है, पर हमे तो जो गुरु मिले थे, वे सच्चे अनुशास्ता थे । उन्होने चतुर्विध सघ मे जीवन निर्माण के लिए तिल तिल जलकर अपने को खपाया । वे जिये तो स्व एव सघहित के लिए और स्व एव सघ हित मे ही मृत्युजय बनकर चतुर्विध सघ को धन्य कर गये ।

आलोक जो जीवन की सध्या मे और भी निखर उठा रूस को अपनी वैज्ञानिक शक्ति पर गर्व है, तो अमेरिका के लोगो का अपन वैभव पर । अग्रेज प्रजा का अपनी जल शक्ति पर गर्व है, तो फ्राम अपनी विलासिता तथा चमक दमक पर फूला नही समाता है । परन्तु हम भारतवासियो को सबसे अधिक गर्व है अपनी सत परपरा पर । सत भारतीय सस्कृति के प्राण व आत्मा कहे जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही है । भ ऋपभदव से लगातार आज तक अपनी इस पवित्र भूमि मे अनेक सत पुरुप पैदा हुए । इसी सत परम्परा मे जैन समाज के सत रत्न हैं - आचार्य श्री नानालाल जी म सा ।

अप्रमत्त मोक्ष लक्षी जैसे दिशासूचक यत्र कही भी रहे, उसका झुकाव सदा ध्रुव तारे की ओर रहता है, जैसे नदिया किधर भी बहे अन्तत उनका बहाव समुद्र की ओर रहता है । वैसे ही हमारे आचार्य प्रवर कहीं भी कैसी भी परिस्थिति मे रहें, सदा उनका लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का रहा ।

शरीर की अन्तिम स्थिति जान, देख, अनुभव करके उन्होंने स्वय ही सथार का निर्णय ले लिया । अपने पाप दोपो की सलेखना (लेखा जोखा और पश्चाताप आलोचना) की सभी आहारो का त्याग किया, पूर १२ घटे सतत आत्म साधनारत, अर्थात् मौन शात, शरीरादि स परे मनातीत वचनातीत, परम-आत्मानन्द म लीन रहे और नश्वर देह को त्याग दिया । जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई । एसी आत्मा ज्ञान, ध्यान, समाधि मे लीन रही ऐसी आत्मा को शत-शत वन्दन और भावपूर्ण श्रद्धा अर्पित है ।

अत्यत दयालु और परोपकारी मैंने अपने जीवन मे किसी महात्मा मे अगर परमात्मा स्वरूप देखा है तो वे हैं परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा । जिन्होंने प्रतियागिता व प्रतिद्वद्विता के इस प्रवाह मे प्रसिद्धि से दूर रखकर अपना कार्य सिद्ध कर लिया । वैस उनका जीवन जन जन की कल्याण भावनाओ को लकर समर्पित था । कोई भी दुखी अगर अटल श्रद्धा और प्रयल भावना से उनके निकट गया, कभी खाली हाथ नहीं

लौटा। हर सत यही कहते हैं कि आचार्य भगवन् की मुप पर असीम कृपा थी। हर श्रावक यही कहता कि मुझ गुरुदेव ने बचाया। प्रत्येक व्यक्ति उनक जीवन से, परोपकार वृत्ति से आत्म सयम व साधना से प्रभावित हुए विना नहीं रहा। इसके साथ यह भी कहना गलत नही हागा कि कुतर्क और विवादो को लेकर जा उनके सामने आया वह जरूर खाली हाथ गया।

तेरे दरबार की दाता, निराली शान है देखी,
कि रहमत तेरी गलियों के ही, चक्कर काटते देखी।
फैलाया जिसने कर, दाता तेरे दरबार के आगे
तुझे देते नही देखा, झोली भरी देखी॥

ऐसे परम पूज्य आचार्य श्री के चरणो मे श्रद्धा युक्त भावान्जलि समर्पित करती हुई यही कामना करती हूं कि मेरी साधना, मेरी आराधना मेरी उपासना को उनकी सत्य साधना से ऐसी शक्ति मिले कि मै अपने सदली जीवन को शुद्ध, प्रबुद्ध एव सबुद्ध बनाते हुए मुक्ति मग की ओर अग्रसर हो सकू।

प्रस्तोता मणिलाल घोटा

समर्पित है श्रद्धा के फूल

साध्वी रिद्धि प्रभाजी म

१ समता सागर के
गज हंस आचार्य थे
नानेश गुरु महाराज
जिनकी महिमा गा रहा
चतुर्विध संघ समाज॥

२ उनकी करणी का नहीं
कोई भी था पार
उनके पावन नाम पर
दुनिया है बलिहार॥

३ विश्ववंद्य नानेश रहे
देख सामने कष्ट
होने दिया न आपने
समता साहस नष्ट॥

४ श्री जिनवाणी के सिवा
भाया न कुछ और
जैनागम को सामने
रखते थे हर तौर॥

५. निद्रा लेते अल्प थे
और अल्प आहार
गुप्त तपस्वी आपश्री जी
करते रहे अपार॥

६ वाणी भी थी आपकी
ऐसी अमृत धार
मंत्रमुग्ध से सब खिंचे
आते थे नरनार॥

७ चारों तीर्थों को दिया
ऐसा था कुछ बोध
फटके उनके पास न
ईर्ष्या बैर विरोध॥

८ क्या बतलाऊं आपश्री का
भारी पुण्य प्रताप
सकल जैन संघ पर आपकी
बहुत बड़ी थी छाप॥

९ जिनशासन प्रद्योतक
आचार्यश्री को
हम सकें कभी न भूल
भेंट कर उनको हम सभी
मन की श्रद्धा के फूल॥

❑ महासती तेजप्रभा जी म सा

छाप अमिट रहेगी

सीख लिया है जिसने मरना, जीने का अधिकार उसी को ।
काटो के पथ पर हँस-हँस खेले श्रद्धा का उपहार उसी को ॥

इस परिवर्तनशील ससार मे अनेक जीव आते है और अपना रोब-राब, रग-राग, वैभव आदि भोग कर अत मे मृत्यु के मुह मे चले जाते हैं। लेकिन जन्म लेना उन्ही महापुरुषो का सार्थक होता है जो सद्गुणो की सुवास ससार मे प्रसरित कर अपने नाम को रोशन कर जाते हैं। शास्त्र वचनानुसार जीवियस्स मरणस्समय विप्पुमुक्का' मृत्यु के मुह म पड़े हुए व्यक्ति को मृत्यु नहीं आए, यह बहुत असभव कार्य है किन्तु मृत्यु का महोत्सव मनाना महापुरुष ही जानते हैं। महापुरुष चले जाते हैं पर अमिट छाप ससार मे छोड़ जाते हैं।

हम भी समत्व योगी गुरुदेव के जीवन से समतामय जीवन जीना सीख लेते हैं तो अवश्य हम भव-भव के रोगो से मुक्त हो सकते हैं।

अत मे आराध्य भगवन् की आत्मा सुखों मे विराजे एव महाविदेह क्षेत्र से सिद्ध बुद्ध, मुक्त हो शाश्वत सुखो को प्राप्त करे।

हम श्रद्धा की तुच्छ भेट ले द्वार तुम्हारे आए हैं।
और नही है कुछ भी गुरुवर श्रद्धा सुमन चढाते हैं ॥

गुणो के सागर

महासती श्री सुबोधप्रभा जी

संयम के १४ वर्ष में एक बार
झलक दिखाकर,
कहां चला गया तू नाना
अब कहां से लाऊँ तुझे
यश अपयश निंदा प्रशंसा की,
तुला पर कोई तोल न पाया तुझे
अपने पराये के बंधन में
कोई बांध न पाया तुझे
राजनीति क जंजाल में
कोई फंसा न पाया तुझे

सुख दु ख का भंवर कभी,
डूबा न पाया तुझे,
तू दिव्य दिव्यतर दिव्यतम
तू अलौकिक अनुत्तर अनुपम
जब भी मैंने तुझे
प्रम भक्ति म पाया
ऋजुता से पाया
समर्पण म पाया
धन्य धन्य हा मैन
अपना भाग्य नं ारा।

☐ महासती श्री वसुमति जी म सा

एकोअह बहुस्याम

आध्यात्मिक जगत का एक महान् अद्‌भुत व्यक्तित्व पुञ्ज महापुरुष ' जो नाम से नाना, काम से खजाना ' के अवतरण स पिता मोड़ी और माता शृगारा ही क्या सम्पूर्ण विश्व निहाल हो गया। नाना ने नाना प्रकार की विशुद्ध कलाए दुनिया को जीने के लिए बताईं। द्वितीया का चन्द्र कलाएँ बढ़ाते बढ़ाते पूर्णिमा का शत सहस्र सौम्य किरणें फैलाने वाला अनन्तानन्त नभागन मे अवतरित हो जाता है।

जहा से उडुवई चदे, णक्खत्त परिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एव हवइ बहुस्सुए ॥

आप श्री जी ने आध्यात्मिक जगत क आचार्य पद की गौरव गरिमा, महिमा का गुरुतर भार अपने सशक्त कधा पर शातक्राति के जन्मदाता स्वर्गीय आचार्य श्री गणेश ' से जिस रूप मे पाया उस रूप मे बखूबी शान से सर्वोत्तम सुमेरू की ऊचाइया तक पहुचाया।

आप श्री जी क अखड समता नेतृत्व म अनेकानेक मुमुक्षात्माओ ने नव ज्ञान ज्योति पाई। उनमे एक 'मै भी हू ' जा आचार्य भगवन् के सौम्यतम दर्श भी नही पा सकी। तब साक्षात् अलौकिक सन्निधि कहा ? मन की मुराद मन मे ही रह गई किन्तु आप का इतना उपकार है कि जिसको मै लेखनी या शब्दो मे अभिव्यक्ति नही कर सकती।

अनेकानेक प्रसगो पर आप श्री जी ने मेरी डुबती नैया को तारा है। एक प्रसग बहुत जबरदस्त है कि हमारा चातुर्मास भदेसर था और पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास कानोड़ था। मेरे सिर का दर्द बहुत खतरनाक होता था। इस प्रसग पर डॉक्टरीय इलाज चल रहे थे। यहा तक कि दर्द उपशमन के लिए डॉक्टर लोगो ने मेरी आखो की भौहो मे इन्जक्शन लगाया। पर हुआ क्या जैसे ही मेरे इन्जेक्शन लगे वैसे ही स्थिति बदलने लगी। थोड़ी देर मे चेहरा फूलकर २०-२५ किलो जितना बड़ा बन गया। और शरीर सारा नील सा हो गया। मुझे कुछ भी भान नहीं था। यह सारी स्थिति तीन दिन तक चली ऐसे समाचार पूज्य गुरुदेव को किसी ने दिये या नही, मालूम नहीं।

हमारी समझ के अनुसार तो पूज्य गुरुदेव ने अपने विश्रुत विशुद्ध ज्ञान स ही जान लिया होगा, ऐसा आत्म विश्वास है। पूज्य गुरुदव की परम कृपा हुई और अनमाल भाव वचनामृत क तीन दोहे छ पक्तियो मे पत्र के माध्यम स लिखवाये। वा पत्र सतिया ने मुझ ' २१'' बार सुनाया। सुनाते सुनाते ही बेडौल स्थिति मे सुधार आ गया और उपचार लग गया।

मै तो करबद्ध हो सानुनय प्रार्थना करती हू कि आप श्री जी जहा भी विराजमान हों, हम पर वरदहस्त का छत्र रखना और आप श्री जी ने जा महान् प्रदीप प्रज्वलित किया है उसकी भव्य ज्योति म हम अविराम आत्मारान का दिव्य आनन्द पाती रहें।

मै तुच्छ बुद्धि क्या बताऊ ? ये महान् नाना का लाल अभी भी निःसकोच सबकी आस्था का अनन्य केन्द्र है और भविष्य मे भी।

निश्चित हमे राम मे नाना मिलेंगे,
यही हमारे लिए सर्वोत्तम साधना श्रेय है।

पुरुषोत्तम राम श्रीलका जा रहे थे। उस समय पुल बनाने का कार्य तीव्र गति से चला। उस पुण्य कर्म के महत्व को समझने वाली एक लघुकाय गिलहरी सोचने लगी मैं क्यू पीछे रहू, वह अपनी लघुकाया को सागर मे भिगोती और बाहर आकर धूल लगाती एव उस पुल मे डालती।

श्रीराम के पूछने पर गिलहरी ने कहा कि पुरुषोत्तम श्रीराम सत्य निष्ठ हैं उनकी कुछ सेवा मै भी करके पुण्य उपार्जन कर लू।

ठीक वैसे ही हमे भी शुभकर्म करने का सुअवसर मिले। जिससे हमारा जीवन भव से तिर जाए।

भव-भव मे कभी न भुला पाऊँ

साध्वी श्री लब्धि श्री जी म सा

ओ समता के सागर जिनशासन दिव्य दिवाकर
तेरी भव्य साधना की पुनीत रश्मियां पाकर
मोह कलिमल से आवेष्टित लाखों जीवों ने
विकसाया जीवन सरोवर खुशियों के कमल खिलाकर।१।

संघर्षों में सीखा था तुमने सदा मुस्कराना
दृढ़ संकल्प था शीघ्र आगे कदम बढ़ाना।
कठिन क्या महाकठिन है तेरे व्यक्तित्व को
वाणी का परिधान पहनाना
क्योंकि नाम धाम गुणों के मुकाम थे तुम नाना।२।

नानेश तेरे जीवन की क्या गुण गाथा गाऊँ
तेरे अनन्त उपकारों को इस जन्म में तो क्या
भवोभव में कभी न भूला पाऊँ
किया था तुमने इस जग की सुख शांति के लिए
तन मन जीवन का बलिदान॥३॥

बलिहारी जाऊं तो कैसे जाऊँ
श्रद्धांजलि की अवसर यही भावना भाऊँ
तेरा सुखद सानिध्य सदैव मिलता रहे
जब तक मैं अपनी शाश्वत मंजिल न पा जाऊँ॥ ४॥

सत जीवन का भूषण

जिनका जीवन सदा समता की रसधार रहा,
जिनका जीवन सदा साधना का आधार रहा
जिसने जीना सीखा सिखाया सभी को जीना
जो अतिम सासों तक सघ का आधार रहा ।

महापुरुषो की पुनीत स्मृति तो प्रतिपल बनी रहती है क्योकि वे इस लोक से प्रयाण कर जाते हैं । वह अमिट स्मृति रेखा कभी भी धूमिल नहीं होती है, निरतर प्रकाशमान रहती है । यही कारण है कि मेवाड़ की महिमामयी पुण्य धरा पर यह अध्यात्म पुष्प विकसित हुआ उसी पुनीत धरा पर आपश्री ने दीक्षा युवाचार्य पद आचार्य पद लिया तथा स्वर्गधाम पहुँचे । हुक्म वाटिका का वह महकता सुवासित दिव्य सुमन काल कवलित हो गया । सद्गुणो का दिव्य पराग विश्व म फैलाकर अस्ताचल म विश्राम के लिए चला गया ।

क्रूर काल की कराल आधी स असमय मे ही वह पुष्प टूटकर धराशायी हो गया । समता विभूति आचार्य श्री नानेश इस देह देवल को सूना करके इस लाक स प्रयाण कर गये ।

क्षमा, करुणा, दया उनक अतर जीवन के भूषण थ । वाणी मे सहज आकर्षण था । माधुर्य था । जीवन के कण कण मे सत्य, अहिसा की ज्याति प्रज्ज्वलित थी । जीवन उस स्वर्ण कलश के समान था जिसमे सद्गुणो की दिव्य सुधा भरी हुई थी । उनक अतर म निहित थी, सघ, समाज एव राष्ट्र के कल्याण के अभ्युदय की मगल भावनाएँ । आज वह दिव्य आत्मा इस लाक से प्रयाण कर गयी है । उनक महान मगलमय उपदेश मानव को दिशा बोध देत रहेग ।

महिमा मडित ज्योति पुरुष करुणा के तुम सागर हो ,
लाखो जन के तारणहारे, नाना ज्ञान सुधाकर हो,
अवनितल के दिव्य दिवाकर, सत रत्न हो गुरुराज,
सुमनाजलि अर्पित तुमको साधु सघ के निर्मल ताज ।

❑ महासती श्री सुमन प्रभा जी म सा

कलियुग के कल्पवृक्ष

तप सयम की साधना और मधुर व्यवहार
सचमुच आदर्श था पावन शुद्ध आचार,
हुक्म सघ की शान थे , जाने सकल जहान,
महिमा गरिमा क्या कहें, नानेश गुरु महान ।

आचार्य श्री नानेश कलियुग के कल्पवृक्ष थे। प्राय लोग सतो की समता की तुलना कल्पवृक्ष से करते है। किंतु आचार्य श्री नानेश उस कल्पवृक्ष स भी महान थे। कल्पवृक्ष के पास पहुँच कर व्यक्ति जो मागता है उसकी इच्छा पूर्ण करता है पर, समता विभूति आचार्य श्री नानेश को तो हजारो कोस दूर रहने वाला भक्त यदि श्रद्धा के साथ उनका नामस्मरण कर लेता है तो उसकी आशा फलीभूत हो जाती थी। लाखो भक्तो की मनोकामना पूर्ण की। कल्पवृक्ष तो केवल भौतिक सपदाए ही प्रदान करता है किंतु आचार्य भगवन् ने भौतिक सपदाओ से उपराम हो आध्यात्मिक सपदाओ से लोगो को निहाल किया। वे पापो, परितापो और सतापा का नष्ट कर आत्म शाति प्रदान करते थे। अत कलियुग के साक्षात् कल्पवृक्ष थे।

उन्होंने अपनी झोली को ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूपी रत्नो से भर रखी थी तथा अपने शिष्यो की झोलिया भी सयम, ज्ञान तथा दृढ़ता के असीमित भडार से भर दी थी। श्रमण जीवन के तीन लक्ष्य बताये है- सयम साधना, ज्ञान आराधना एव गुरु सेवा। आचार्य भगवन् का जीवन तो एक पाठशाला था। जिसकी ज्ञान सरिता मे निरन्तर अवगाहन होता था। मानवीय चतना के उर्ध्वमुखी सोपाना पर आरोहण करते हुए आपश्री ने जहाँ समाज को ज्ञान दिया सयम साधना दी वहाँ एक अमूल्य हीरा भी हमे प्रदान किया। वर्तमान आचार्य श्री रामेश के रूप मे जिसको उन्होंने स्वय तराशा, सवारा एव सभाला। यह जैन साधुमार्गी सघ का अहोभाग्य है कि वे इतनी बड़ी देन हमे दे गये। इसके लिए सदैव हम आपके ऋणी रहेंगे। सघ आपक ऋण से कभी उऋण नही हा सकता है। ऐसे आचार्य श्री लाखो भक्तो की इच्छाओ को पूर्ण करने वाले हमे छोड़कर चले गये। उस रिक्तता को पूर्णता म परिवर्तित करने मे सक्षम आचार्य श्री रामेश हैं। उनश्री के प्रति हम सर्वतोभावेन समर्पित होकर नानेश भगवन् के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

भूल न सकेगे तेरी यादे जब तक,
नभ मे चाँद सितारे ॥

तीर्थकर सूर्य–चद्र की तरह आचार्य दीपक की तरह

काम-समाप्त हो जाता है पर कामनाएँ समाप्त नही होतीं,
कार्य समाप्त हो जाता है पर कल्पनाएँ समाप्त नही होतीं,
नाद समाप्त हो जाता है पर झणकार समाप्त नही होती,
व्यक्ति समाप्त हो जाता है पर व्यक्तित्व समाप्त नही होता ।

मै उस महान् समता विभूति को क्या समर्पित करू ? उद्यान मे अनेक पुष्प होते हैं पर सभी के आकर्षण का केन्द्र गुलाब होता है । उसे तोड़ना चाहें तो कांटे चुभते हैं । विरल विभूति का जीवन बाल्यकाल से काटो के बीच रहा । बाल्यकाल मे लगभग ४ वर्ष की उम्र म पिता का साया उठ गया । सारे परिवार का उत्तरदायित्व आपश्री के नाजुक कधा पर आया, जिस आपश्री ने सहर्ष वहन किया । एक ही प्रवचन से आत्मा जागृत बनी । उन महापुरुष का जीवन काली मिट्टीवत् व हृदय नवनीत सा कोमल था । हमारी स्थिति रेत व चट्टानवत् है । आचार्य श्री ने यौवन की देहली पर पैर रखते ही भागों को ठुकरा दिया । जहाँ आज के युवार्जन भोगों के अदर आसक्त बन कल्पनाओ के महल खड़ करते है वहाँ इस महात्यागी ने योग को सहर्ष अपनाया ।

योग को अपनाकर ही नहीं रहे किंतु सयम लकर कठोर साधना कर गुरु के प्रति तन मन से अपना जीवन सर्वस्व समर्पण कर दिया । तभी गुरु ने आशीर्वाद रूप अपना सारा दायित्व इनके सशक्त कधों पर डाला ।

आचार्य पद पाते ही इनका सघर्ष शुरू हुआ जो जीवन के प्रत्येक पहलू को छूता रहा । आचार्य बनते ही अति अल्प अवधि म सैंकड़ों को दीक्षा देकर इस शासन को गौरवान्वित किया । शरीर को शरीर नहीं गिना एव सारा जीवन सघ व शासन की सुरक्षा के लिए बलिदान करने हेतु तत्पर बने ।

इस समता की महाविभूति ने परीषहो को समता के साथ सहन करते हुए वीर प्रभु की अतिम देशना को साकार कर दिखाया ।

बाल्यकाल मे ही ट्रेन को देखकर उनके मन मे ख्याल आया कि इस ट्रेन के सचालन कर्ता इजनवत् बनू । उस बालक की कल्पना को सुन कोई भी उस समय हँसी कर सकता था । जब उन्होंने यह कल्पना की तब सोचा भी नहीं होगा कि मै चतुर्विध सघ की ट्रेन को चलाने वाला चालक बनूगा ।

स्थानाग सूत्र के चौथे ठाणे के चतुर्थ उद्देशक में चार प्रकार के आचार्य का वर्णन मिलता है

१ श्वपाक करण्डक समान- चाण्डाल चर्मकार आदि के करण्डक (पेटी) मे चमड़े को छीलने काटने आदि के उपकरणा और चमड़ क टुकड़ा आदि के रखे रहने स वह असार या निकृष्ट कोटि का माना जाता है उसी प्रकार जो आचार्य केवल ६ काया प्रज्ञापक गाथादिरूप अल्पसूत्र का धारक और विशिष्ट क्रियाओ से रहित है वह आचार्य श्वपाक करण्डक के समान है ।

२ वेश्या करण्डक जैसे वेश्या का करण्डक लाख भरी सोने के दिखाऊ आभूषणो से भरा होता है वह श्वपाक स अच्छा है । वैसे ही आचार्य अल्पश्रुत हाने पर भी अपने रूप, वचन चातुर्य से जनता को आकर्षित करता है ।

३ गृहपतिकरण्डक समान जैसे गृहपति या सम्पन्न गृहस्थ का करण्डक सोने - चाँदी आदि के आभूषणो से भरा है। वैसे ही जो आचार्य स्व पर के मत के ज्ञाता चारित्र सम्पन्न होते है वे गृहपति के करण्डक के समान कहे गये है।

४ राजकरण्डक जैसे राजा के करण्डक मे बहुमूल्य मणि, माणक, हीरा-पन्ना, जवाहरात आदि - रत्नो से भरे होते है। उसी प्रकार जो आचार्य अपने पद के योग्य सर्वगुणो से सम्पन्न होते है उन्हे राजकरण्डक कहते है। ऐसे राजकरण्डकवत् विश्व वदनीय आचार्य श्री नानेश थे।

इसम से प्रथम के दो करण्डकवत् आचार्य असार व त्यागनेवत् हैं। अगर किसी ने इनका आश्रय ले भी लिया तो वह पत्थर की नौका मे बैठ ससार-सागर से तिरनेवत् है। पश्चात् के दो आचार्यों का आश्रय लेकर लकड़ी की नौका मे बैठ ससार सागर से तिरनेवत् हैं।

आचारागसूत्र मे तीर्थंकर व आचार्य दोना का वर्णन आता है। तीर्थंकर को शास्त्रो में सूर्य की उपमा क्यों दी ? एक सूर्य और एक चन्द्र अपने जैसा दूसरे सूर्य व चद्र पैदा नही करता वैसे ही एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर को पैदा नही करता। किंतु आचार्य को दीपक की उपमा दी। जैसे एक दीपक अपने जैसे अनेक दीपक प्रज्जवलित करता है वैसे ही एक आचार्य अपने जैसा दूसरा आचार्य सघ को देकर जाता है। वैसे ही आचार्य श्री ने अपने पीछे उत्तराधिकारी के रूप मे सघ को दूसरा दीपक दिया।

ऐसा ज्योतिर्धर ज्योतिर्मय महामनीषी दिव्यात्मा को श्रद्धायुक्त भावसुमन समर्पित।

छोड़ चले क्यो गुरुवर नाना

महासती जय श्रीजी म

छोड़ चले क्यों गुरुवर नाना
कौन सिखाए अब जीना
पंचम आरा सुखी बना था, नाना गुरु की कृपा से।

कलयुग में सतयुग आया नाना गुरु के चरण तले
विषमता का दुख छाया ईर्ष्या तृष्णा छांव तले
आके तुमने भू मण्डल पे दुनिया का दुख दूर किया १

वीर प्रभु की समता देखी गौतम स्वामी की लब्धि
सुदर्शन सी दृढ़ता देखी मा की ममता प्यारी
नाना कहकर गुरुवर तुमने सबका मन जीत लिया २

मन में बसी है प्यारी सूरत वाणी गूंजे कानों में
शिक्षा तेरी बैचेन बनाती याद दिलाती क्षण क्षण में
आगे पीछे देख के चलना कौन कहेगा गुरुवर नाना ३

युग पुरुष थे नाना तुम ता राम बनाया अपना जैसा
पंडित मरण और आसन देखा वीर प्रभु की झलक मिली
धर्मीचन्द जी ने आके सुनाया आंखों से निकली ज्योति किरण ४

गुरुदेव की जादुई नजर

आज आँख के सामने बार-बार वही दृश्य उभर कर आ रहा है, जब मेरी अनत आस्था के केन्द्र पूज्य गुरुदेव चातुर्मासार्थ भीनासर म विराज रहे थे। मै भी वैराग्य अवस्था मे वहीं पर थी मन म उथल-पुथल मची थी कि दीक्षा लूँ या नही ? कई विचार आते और चले जाते पर निर्णय नही हो पा रहा था। कारण था- विहार म पैरो के अदर होने वाले लगभग दो-दो इच के बड़े-बड़े छाले जो कि २-४ कि मी चलने पर ही हो जाते थे ज्यादा से ज्यादा खीचतान कर चलूँ तो भी ५-६ कि मी । उसके बाद तो एक-एक कदम रखना भी असह्य हो जाता था। एक बार छाले हुए तो फिर ५ ७ दिन तक रेस्ट ही रेस्ट बिल्कुल भी चला नही जाता। कई इलाज भी किये, पर कोई फर्क नही। वैराग्य जीवन मे तो फिर भी चप्पल पहनकर समस्या से निपट लेती पर दीक्षा के बाद कैसे क्या होगा ? मैंने अपनी मन स्थिति कई बार महासतियाँ जी के सामने रखी वे भी बार बार समझाते रहे तू चिता मतकर, दीक्षा के बाद तेरे से जितना चला जाएगा उतना चलेंगे। मन सोचता - सयमी जीवन मे ४-५ कि मी के विहार ही होंगे, ऐसा कैसे सभव है ? अनुकूल गाँव आदि न हो तो ज्यादा भी चलना पड़ता है। एक दिन दोपहर म ज्ञान चर्चा के पश्चात् महासतियाँ जी के साथ गुरुदेव के कमरे मे भी गई। गुरुदेव उस समय अकेले ही विराज रहे थे सतियाँ जी ने वदना करके खड़े-खड़े सुखशाति आदि पूछी। उसी वक्त मैंने भी अपनी उलझन गुरुदेव के चरणो मे रखी। भगवन् ने पूछा - तुम्हारी भावना मे तो दृढ़ता है ? सयम तो लेना है ? मन मे कोई अन्य विचार तो नही ? मैंने कहाँ नहीं भगवन् । सयम तो लेना ही है, समस्या हल हो या न हो पर मन मे विचार आ जाता है कि मेरे कारण सभी म सा को परेशानी होगी। आदि । भगवन् ने कहा विचार मे दृढ़ता है तो कोई बात नही। भगवन् ने नजर उठाई एव मेरे पैरो की तरफ निर्निमेष दृष्टि से कुछ क्षणो तक देखते रहे, फिर कहा मगल पाठ सुन लो, मैंने श्रद्धा पूर्वक मागलिक सुनी व पुन महासतियाजी के साथ अपने स्थान पर लौट आई। सयोग एसा बना कि वहाँ से चातुर्मास उठने से पहले ही मुझे रतलाम घर पर आना पड़ा। शेषकाल मे होली पर युवाचार्य भगवन् का चातुर्मास भी खुल गया, मेरी दीक्षा की सभावना भी बनी। युवाचार्य भगवन् व महासतियाजी म सा चातुर्मासार्थ रतलाम पधारे तो मै जावरा नामली तक भी अगवानी के लिए नहीं गई, यह सोचकर कि विहार मे साथ चलना पड़ेगा और मेरे पैर मे तो छाले हो जाते है। पारिवारिक जनो को पता चलेगा तो वे दीक्षा मे शायद विलब कर देंगे यथासमय रतलाम चातुर्मास म ही युवाचार्य भगवन् के मुखारविंद से मेरी दीक्षा सम्पन्न हुई। चातुर्मास उठने के बाद प्रथम विहार सैलाना की तरफ हुआ, मेरे मन म हलचल हो रही थी कि आज क्या पता कैसे विहार होगा ? क्योंकि गुरुदेव के भीनासर चातुर्मास के पूर्व मैंने विहार किया। उसके बाद एक डेढ वर्ष के पीरियड म मैंने ३ ४ कि मी भी बिना चप्पल के पैदल चलकर नही देखा था। पर सैलाना की ओर विहार करते हुए उस समय मुझे बड़ी खुशी हुई कि जब हम धामनाद गाँव जो रतलाम से करीब ८-९ कि मी दूर पड़ता है पहुचने पर मेरे पैर म बड़ा तो क्या छोटा सा भी छाला नही था। हल्की हल्की सी जलन जरूर महसूस हुई बाकी कोई पीड़ा नही। उसके बाद दूसरे दिन विहार किया यह भी आराम से हुआ। दीक्षा लिये हुए अभी तक लगभग दो वर्ष पूरे हो गये और

इस बीच १० १५-२० व २५ कि मी के विहार भी करने का प्रसग बना पर पैरो मे एक भी छाला आज तक नही हुआ यह सब गुरु देव की कृपा का चमत्कार है । उन अनत आराध्य गुरुदेव की परम कल्याणी नजरो का । उनकी नजरो मे ही वह जादू था, जो मेरे जीवन मे साक्षात् घटित हुआ है ।

ऐसे अनत-अनत उपकारी आराध्य भगवन् हमारे बीच नही रहे तो उनकी यह उपकृति मुझे रह-रह कर याद आ रही है । परन्तु वर्तमान आचार्य श्री रामेश की अलौकिक छबि को निहारते हुए मुझे लगता है कि यह भी है एक वैसा ही आसरा, जहाँ दुखी अपना दुख मिटा पायेगे । स्व गुरुदेव अपने उत्तराधिकारी की प्रतीक चादर के साथ ही अपनी पतित पावनी ऊर्जा भी इन्हे सौप कर ही गये हैं । अत इनकी छत्र-छाया मे श्री सघ निश्चित रहेगा ।

❑ महासती महिमा श्री जी म सा

उत्कृष्ट सयमी साधक

स्व आचार्य श्री नानेश ससार के उच्चकोटि के साधको मे से एक थे । वे ससार की विरल विभूतिया मे से थे । स्व आचार्य श्री नानेश ने अपनी आत्मा को बलवान व हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए लगातार ६१ वर्षों तक, बिना प्रमाद किये सयमीय जीवन की उत्कृष्ट साधना की, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की निरतर अभिवृद्धि की ।

आचार्य भगवन् को इतनी वेदना के होने पर भी सथारे के साथ महाप्रयाण करना- उनकी उत्कृष्ट सयमीय साधना की सफलता, साधना की सजगता का ही परिणाम है, वरना जिसको ऐसी बीमारी हो, वेदना हो उसे एकाएक सथारा आ नही सकता । सथारा विरले साधको को ही आता है । जिसकी किडनी खराब हो वह व्यक्ति अचानक चला जाता है किन्तु आचार्य भगवन् अपनी सयमीय साधना मे ऐसी बीमारी के होते हुए भी अत्यत सजग सावधान थे । वे अतिम समय तक परमात्म-साधना मे तल्लीन बने हुए थे । मेरी भी यही तमन्ना है कि मै अपनी सयमीय साधना मे सजग रहती हुई अतिम समय मे सलेखना सथारा को अगीकार करूँ ।

आज आचार्य भगवन् की पार्थिव देह हमारे बीच मे नही है किन्तु उनके द्वारा दी गई शिक्षाओ को हम अपने जीवन मे उतार कर अपने जीवन का उत्तरोतर विकास कर सके, यही कामना है ।

समता मूर्ति गुरुदेव

आचार्य भगवन् का जीवन ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप से परिपूर्ण कुभ कलश की भाति था। पूज्य आचार्य भगवन् के विषय मे जितना कहा जाय, सोचा जाय, गुणगान किया जाय, लिखा जाय उतना ही कम है। क्योंकि महापुरुषो के जीवन मे एक दो नही अनेक गुण होते हैं। उनके जीवन का हर पहलू शिक्षाप्रद होता है। आचार्य भगवन् का जीवन चाहे बचपन से, चाहे जवानी से, चाहे सयमावस्था से, चाहे वृद्धावस्था से देखें जीवन का हर मोड़ अपने मन को झकझोर देता है। अगर उनके जीवन के अनेक गुणो म से एक समता गुण की सौरभ अपना ले तो भी जीवन धन्य हो जायेगा। इतना ही नही जिन्होंने उन महापुरुष, उन समता मूर्ति के दर्शन कर लिये, उनका नाम स्मरण कर लिया उनका जीवन भी कृत्य- कृत्य हो गया। उनकी मझधार मे डोलती नैया तिर गई।

आचार्य भगवन् बेसहारो के सहारा थे। उनकी कृपा वर्षा हर पल उनके भक्ता पर होती रहती थी मगर अब भगवन् के दर्शन चाहे हम चर्मचक्षु से करने मे समर्थ नही है किन्तु अगर हम सच्चे दिल से भक्ति करेंगे, उनके इगितानुसार चलेंगे तो हम आज भी आचार्य भगवन् को अपने नजदीक पायेंगे। आचार्य भगवन् देह से हमारे बीच मे नही रहे पर गुणो से सदैव वे अमर रहेंगे।

बहे नयनन अश्रुधार

महासती श्री सुमुक्ति श्री जी

नयन् अश्रुधार बहे पूछे सारे नरनार क्यों हमको छोड़ चले
करें दर्शन की पुकार रहे जनर नयना निहार क्यों हमको।

तेरे नाम के आगे गुरु, जग सारा झुकता था
हर कदम सफल होता, हर संकट रूकता था
मेरी नैया के खिरतार, अब नाव पड़ी मझधार क्यों।

तेरी वाणी से विभुवर एक झरना बहता था
समता दर्शन दकर दर्दे गम को हरता था
जन जन नयनों के हार ओ कलयुग के अवतार क्यों हमको।

तेरे बिन जग सारा बंजर सा लगता है
कोई कली नहीं खिलती हर तारा कहता है
न है रौनक न है बहार, ओ खुशियों के आधार क्यों हमको।

क्यो हुए हमसे विदा

आचार्य श्री नानेश एक विरल विभूति थे ।

दाता गाँव मे जन्मे गुरुवर , नाना नाम पाया था,
समता रस से सुरभित वो तरूवर, माँ शृगार का जाया था ,
जन्म-मृत्यु के चक्कर मिटाने, शुभ अवसर जब आया था,
भवसागर से तिरने के लिए, तब मिला गणेश का साया था ॥

ऐस ही जन-जन के प्रिय, सभी के आस्था के केन्द्र परम पूज्य गुरुदेव का जन्म जब इस वसुन्धरा पर हुआ तो वह भी धन्यता का अनुभव करने लगी । क्योंकि ऐसे तो करोड़ो जीव इस धरा पर जन्म लेते है पर विरले ही होते है जिन्हे सदा-सदा के लिए याद रखा जाता है । हमारे आचार्य श्री का जीवन सहज जीवन था अर्थात् बाहर भीतर एक । आपश्री मे सत्य और प्रेम की महक भरी हुई थी । आप मृदुभाषी शालीन, कुशल व्यवहारी व उत्कृष्ट आचार के धनी थे । आपश्री का जीवन गुणो की महक से ओतप्रोत था, हर व्यक्ति आपश्री की स्नेहिल दृष्टि का स्पर्श पाकर इतनी अधिक प्रसन्नता का अनुभव करता था कि एसा लगता मानो उसे सारी सम्पन्नता प्राप्त हो गई है । वह शाति और आनन्द का अनुभव करता था । कहते है- पदहि सर्वत्र गुणे निधीयते ' अर्थात् गुण सर्वत्र अपना प्रभाव जमा लेते है । वैसे ही आपश्री के गुणो से आकृष्ट होकर, आपके पावन जीवन को देखकर हर व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नही रह सकता था । वास्तव मे आपका व्यक्तित्व शब्दो मे कम व आचरण मे ज्यादा पलकता था, ऐसी विरल विभूति का जिसे सानिध्य मिलेगा तो वह व्यक्ति अपने भाग्य की सराहना किए बिना नही रह सकता । उनसे भी अधिक मैं बहुत पुण्यशाली हूँ कि आपश्री का सानिध्य मिला और जीवन को सजाने का एक सुनहरा अवसर मिला ।

आप श्री के सान्निध्य मे ही मेरा पहला चातुर्मास हुआ । जहाँ मुझ निकटता से आपश्री के गुणो का आस्वादन करने का अवसर मिला, सचमुच गुरुदेव के जीवन मे कोमलता करुणा समता आदि अनेक गुण मुझे देखने को मिले,तब मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि वास्तव मे साधना के उच्च शिखर पर, उत्थान के मार्ग पर हर कोई नही पहुँच सकता ।

आचार्य भगवन् का जितना भी गुण-कीर्तन किया जाए, उतना ही कम है । मैंने जब यह सुना कि आचार्य भगवन् परम ज्योति मे लीन हा गए, गुरुदेव नही रहे । बार-बार गुरुदेव के उपकारो की स्मृति आती तो मन कह उठता नाना, तुम जैसी विभूति को हम अब कहाँ खोजे और कैसे इस मन को तृप्त करे । मेरे आराध्य अस्तित्व रूप मे नही है किन्तु व्यक्तित्व के रूप मे हमारे सामने विद्यमान है । ओर वह व्यक्ति जिसने अपने जीवन का एक एक क्षण परमार्थ म अर्पित कर दिया, वह नाना तो नाना गुणो मे आज भी विद्यमान होकर हमे निरतर जीवन को सफ्ल बनाने की शक्ति प्रदान कर रहे है । गुरुदेव आपका वरद् हस्त हम सभी के ऊपर बना रहे ताकि हम आपश्री के जीवन से प्रेरणा लेकर गुणो की सौरभ से महक उठें । आपश्री के गुणो का वर्णन मेरी यह जिह्वा करने मे असमर्थ है । हमे भी ऐसी चाहना है कि हम भी सद्गुणो से, सद्कर्मों से जीवन को उच्च बनाकर साधना के शिखर पर पहुँचें । आपकी कृपादृष्टि हम पर पड़ती रहे और हम आपश्री की कृपा से जीवन को उच्च बनाकर साधना के शिखर पर पहुँचे । हमे आपश्री

की कृपा से जीवन को सजाने के लिए आचार्य श्री रामलाल जी म सा का आधार व साया मिला है। उस छाँव तले अतर मे रही हुई ज्ञान की ज्योति को प्रकट करते हुए सयम पथ पर अविचल रूप से बढ़ते रहे।

❑ महासती रत्ना श्री शान्ता कवर जी म सा

क्षीर समुद्र-सा जीवन

ओ दिव्यालोक मे जाने वाले आचार्य श्री नानेश,
कैसे भूल सकेंगे तुम्हारी साधना स्मृति।
दिल थामकर, अश्रु रोककर हृदय मे,
आँखो मे तैर रही है तेरी सौम्य आकृति॥

आचार्य श्री नानेश का व्यक्तित्व और कृतित्व मेरू पर्वत से अधिक ऊँचा और सागर से भी अधिक गहरा था। इस महान् आचार्य श्री के गुण गरिमा का वर्णन कैसे किया जा सकता हैं। शब्दो के बाट से जीवन तोला नही जा सकता है।

उनके गुणो को किन शब्दो मे आबद्ध करू। उनका हृदय मक्खन से भी अधिक मुलायम था और वाणी मिश्री से भी अधिक मधुर थी। उनके जीवन का कण-कण हीरे की तरह चमकदार था। मोती की तरह उनमे आब थी और माधुर्य से लबालब भरा हुआ क्षीर समुद्र सा उनका जीवन था। कवियो ने सत हृदय की तुलना नवनीत से की है। नवनीत मुलायम होता है और गर्मी से पिघल जाता है पर आचार्य भगवन् का हृदय तो उससे भी चढ़कर था। किसी भी दीन-दुःखी को देखकर आचार्य श्री का हृदय दया से द्रवित हो उठता था। रोते हुए उनके चरणो मे आता पर लौटते समय हसते हुए जाता था। आपकी तरह हमारा जीवन भी बने। यही उनके चरणो मे भावभीनी श्रद्धार्चना।

क्यो हुए हमसे विदा

आचार्य श्री नानेश एक विरल विभूति थे ।

दाता गाँव मे जन्मे गुरुवर , नाना नाम पाया था,
समता रस से सुरभित वो तरूवर, माँ शृगार का जाया था ,
जन्म-मृत्यु के चक्कर मिटाने, शुभ अवसर जब आया था,
भवसागर से तिरने के लिए, तब मिला गणेश का साया था ॥

ऐसे ही जन-जन के प्रिय, सभी के आस्था के केन्द्र परम पूज्य गुरुदेव का जन्म जब इस वसुन्धरा पर हुआ तो वह भी धन्यता का अनुभव करने लगी। क्योंकि ऐसे तो करोड़ो जीव इस धरा पर जन्म लेते है पर विरले ही होत है जिन्हे सदा-सदा के लिए याद रखा जाता है। हमारे आचार्य श्री का जीवन सहज जीवन था अर्थात् बाहर भीतर एक। आपश्री मे सत्य और प्रेम की महक भरी हुई थी। आप मृदुभाषी, शालीन, कुशल व्यवहारी व उत्कृष्ट आचार के धनी थे। आपश्री का जीवन गुणो की महक से ओतप्रोत था हर व्यक्ति आपश्री की स्नेहिल दृष्टि का स्पर्श पाकर इतनी अधिक प्रसन्नता का अनुभव करता था कि ऐसा लगता मानो उसे सारी सम्पन्नता प्राप्त हो गई है। वह शाति और आनन्द का अनुभव करता था। कहते है- पदहि मर्वत्र गुणे निधीयते अर्थात् गुण सर्वत्र अपना प्रभाव जमा लेते है। वैसे ही आपश्री के गुणो से आकृष्ट होकर आपके पावन जीवन को देखकर हर व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नही रह सकता था। वास्तव मे आपका व्यक्तित्व शब्दो मे कम व आचरण मे ज्यादा झलकता था ऐसी विरल विभूति का जिसे सानिध्य मिलगा तो वह व्यक्ति अपने भाग्य की सराहना किए बिना नही रह सकता। उनसे भी अधिक मैं बहुत पुण्यशाली हूँ कि आपश्री का सानिध्य मिला और जीवन को सजाने का एक सुनहरा अवसर मिला।

आप श्री के सान्निध्य म ही मेरा पहला चातुर्मास हुआ। जहाँ मुझे निकटता से आपश्री के गुणो का आस्वादन करने का अवसर मिला, सचमुच गुरुदेव क जीवन मे कोमलता, करुणा समता आदि अनेक गुण मुझे देखने को मिले,तब मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि वास्तव मे साधना के उच्च शिखर पर, उत्थान के मार्ग पर हर कोई नहीं पहुँच सकता।

आचार्य भगवन् का जितना भी गुण-कीर्तन किया जाए, उतना ही कम है। मैंने जब यह सुना कि आचार्य भगवन् परम ज्योति मे लीन हो गए, गुरुदेव नही रहे। बार-बार गुरुदेव के उपकारो की स्मृति आती तो मन कह उठता नाना, तुम जैसी विभूति को हम अब कहाँ खोजे और कैसे इस मन को तृप्त करे। मेरे आराध्य अस्तित्व रूप मे नही है किन्तु व्यक्तित्व के रूप मे हमारे सामने विद्यमान है। अरे, वह व्यक्ति जिसने अपने जीवन का एक एक क्षण परमार्थ मे अर्पित कर दिया, वह नाना तो नाना गुणो मे आज भी विद्यमान होकर हमे निरतर जीवन को सफल बनाने की शक्ति प्रदान कर रहे है। गुरुदेव आपका वरद् हस्त हम सभी के ऊपर बना रहे ताकि हम आपश्री के जीवन से प्रेरणा लेकर गुणो की सौरभ से महक उठें। आपश्री के गुणो का वर्णन मेरी यह जिह्वा करने मे असमर्थ है। हम भी ऐसी चाहना है कि हम भी सद्गुणो से, सद्कर्मों से जीवन को उच्च बनाकर साधना के शिखर पर पहुँचें। आपकी कृपादृष्टि हम पर पड़ती रहे और हम आपश्री की कृपा से जीवन को उच्च बनाकर साधना के शिखर पर पहुँचे। हमे आपश्री

की कृपा से जीवन को सजाने के लिए आचार्य श्री रामलाल जी म सा का आधार व साया मिला है। उस छाँव तले अतर मे रही हुई ज्ञान की ज्योति को प्रकट करते हुए सयम पथ पर अविचल रूप से बढ़ते रहे।

❑ महासती रत्ना श्री शान्ता कवर जी म सा

क्षीर समुद्र-सा जीवन

ओ दिव्यालोक मे जाने वाले आचार्य श्री नानेश,
कैसे भूल सकेंगे तुम्हारी साधना स्मृति।
दिल थामकर, अश्रु रोककर हृदय मे,
आँखो मे तैर रही है तेरी सौम्य आकृति॥

आचार्य श्री नानेश का व्यक्तित्व और कृतित्व मेरू पर्वत से अधिक ऊँचा और सागर से भी अधिक गहरा था। इस महान् आचार्य श्री के गुण गरिमा का वर्णन कैसे किया जा सकता हैं। शब्दो के बाट से जीवन तोला नही जा सकता है।

उनके गुणो को किन शब्दो मे आबद्ध करू। उनका हृदय मक्खन स भी अधिक मुलायम था और वाणी मिश्री से भी अधिक मधुर थी। उनके जीवन का कण कण हीरे की तरह चमकदार था। मोती की तरह उनमे आब थी और माधुर्य से लबालब भरा हुआ क्षीर समुद्र सा उनका जीवन था। कवियो ने सत हृदय की तुलना नवनीत से की है। नवनीत मुलायम होता है और गर्मी से पिघल जाता है पर आचार्य भगवन् का हृदय तो उससे भी बढ़कर था। किसी भी दीन-दुःखी को देखकर आचार्य श्री का हृदय दया से द्रवित हो उठता था। रोते हुए उनके चरणो मे आता पर लौटते समय हसते हुए जाता था। आपकी तरह हमारा जीवन भी बने। यही उनके चरणो म भावभीनी श्रद्धार्चना।

ऐसे थे मेरे नाना गुरु

जिन नही पर जिन सरीख, केवली नही पर केवली सरीखे पूज्य आचार्य भगवन् का महाप्रयाण सुनकर मन मे उथल-पुथल मच गई। क्या सचमुच गुरुदेव हमे छोड़कर चले गए। मन को एकाएक विश्वास नही हुआ फिर भी मन को समझाया कि इतने दिन जो मै नाना और राम को अलग-अलग रूप मे देख रही थी लेकिन अब मै राम मे नाना को देखूँगी।

पूज्य आचार्य भगवन् ने जब से इस चतुर्विध सघ की बागड़ोर हाथ मे ली शासन दिन दुना रात चौगुना बढ़ता ही गया। इस हुक्म शासन को सीचने मे आपश्री ने खून -पसीना एक किया।

गुरुदेव ने स्वय की आत्मा के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति की पीड़ा को परखा। राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करने वाले पूज्य आचार्य भगवन् ने अनुकूल और प्रतिकूल कैसी भी विकट से विकट परिस्थिति आयी हो सदैव समता का ही परिचय दिया। यही कारण रहा कि इस सम्पूर्ण विश्व मे समता विभूति के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपश्री तो समता योगी थे ही लेकिन आपने जन-कल्याण हेतु गाँव-गाँव , डगर-डगर मे समता का बिगुल बजाया जिसका यह प्रतिफल रहा कि विषमता से ग्रसित मानव भी समता की राह पर चल पड़े।

समता के तीर चलाकर तूने,
विषमता को परास्त किया ।
हर मानव की पीड़ा को सुनकर ,
समता से जीना सिखलाया ।

समता के साथ साथ ओजस्वी तेजस्वी यशस्वी वर्चस्वी, मधुरता, सरलता, वात्सल्यता आदि अनेक गुणो से युक्त पूज्य गुरुदेव थे। जब भी हम गुरुदेव के पास जाते बड़े स्नेह से बात करते थे। मन एकदम गद्‌गद् हो जाता था। मेरे गुरुदेव की असीम स्नेहमयी वाणी की स्मृति रह रह कर मेरे मानस पटल पर उभर रही है क्योंकि मेरे गुरुदेव का व्यक्तित्व कुछ अनूठा ही था। मै किन गुणो की व्याख्या करूँ।

कैसे करूँ नाना तेरे गुणगान ।
नही है सक्षम मेरी जुबान ।
तेरी खूबी को जानता है सकल जहान् ।
कि तेरी जीवन था कितना महान् ।

महान् विभुतियो का आदर्श महान् और विराट होता है उसे शब्दो के माध्यम से व्यक्त नही कर सकते। आचार्य भगवन् का प्ररणास्पद जीवन युगा-युगा तक प्रेरणा देता रहेगा। इसी प्रेरणा के सहारे मै केवल ज्ञान को पाती हुई मोक्ष मजिल को प्राप्त कर सकूगी।

अत मे मै आपश्री के महान् उपकारो के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक होती हुई श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ।

❑ महासती श्री रौनक श्री जी म सा

अद्‌भुत एव निराला व्यक्तित्व

मानवता का मान बढ़ाकर मानव जीवन सफल किया,
जिन वाणी का मथन करके चितन का नवनीत दिया,
श्रमणो मे है श्रेष्ठ श्रमण जिनकी पावन प्रखर मति,
सरस्वती के वरद पुत्र है, काव्य कला म निपुण अति ॥

महापुरुष आचार्य नानेश का व्यक्तित्व बहुत ही अद्‌भुत और निराला था। समाज की सकीर्ण सीमाओ मे आबद्ध होकर भी सर्वतोमुखी विकास हेतु उन्होंने जन-मन मे अनत आस्था समुत्पन्न की। उनकी दिव्यता भव्यता और मानवता को निहार कर जन-जन के अतर्मानस मे अभिनव आलोक जगमगाने लगा था। उन्होंने समाज की विकृति को नष्ट कर सस्कृति की ओर बढ़ने के लिए सदा प्रेरणा दी थी। उन्होंने आचार और विचार मे अभिनव क्राति का शख फूका था। वे अध्यवसाय के धनी थे जिससे कटकाकीर्ण दुर्गम पथ भी फूल बन गया। ऐसे थे महापुरुष आचार्य श्री नानेश।

आप श्री की दार्शनिक मुख मुद्रा, चमकती दमकती हुई निश्चल स्मित रेखा दमकता हुआ भव्य ललाट निहार कर किसका हृदय श्रद्धा से नत नही होता था। जितना आपका बाह्य व्यक्तित्व नयनाभिराम था उससे भी अधिक मनोभिराम आभ्यतर व्यक्तित्व था। आपकी मजुल मुखाकृति पर निष्कपट विचारधारा की भव्य आभा सदा दमकती रहती थी। आपकी निर्मल आँखो के भीतर से सहज सरल, स्नेह, समता शालीनता के दर्शन होते थे। उनका सौरभ युक्त जीवन सदा भव्य आत्मा को सुरभित करता रहेगा। इसी मगल मनीषा के साथ आप श्री के चरणों मे भाव-भीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

छोड़ गये जो चमक सवाई, पीछे तेज सितारा,
गुरुवर की शिक्षाओ पर चलना, अब है काम हमारा ॥

तुम्ही हो मेरे गुरुवर नाना

साध्वी जय श्री जी

तुम्हीं हो मेरे गुरुवर नाना ।
तुम बिन जग मे कोई ने मेरा। टेर

तुम जो गुरुवर मुझे ना मिलते ।
सच्ची राह पर कैसे चलते ।
मेरी जिन्दगी तूने बनाई ।
संयम दाता तुम्हीं हमारा २

खुलते ही होठ रटत थे नाना।
जिह्वा भी गाती तेरा तराना ।
दर्शन की प्यासी अखियां थी मेरी
सावन बरसे नाम स तरा २

□ महासती जागृति श्री जी म सा

ऐसे थे मेरे नाना गुरु

जिन नही पर जिन सरीखे, केवली नही पर केवली सरीखे पूज्य आचार्य भगवन् का महाप्रयाण सुनकर मन म उथल-पुथल मच गई । क्या सचमुच गुरुदेव हमे छोड़कर चले गए । मन को एकाएक विश्वास नही हुआ फिर भी मन को समझाया कि इतने दिन जो मै नाना और राम को अलग-अलग रूप मे देख रही थी लेकिन अब मै राम मे नाना को देखूँगी ।

पूज्य आचार्य भगवन् ने जब से इस चतुर्विध सघ की बागडोर हाथ मे ली शासन दिन दुना रात चौगुना बढ़ता ही गया । इस हुकम शासन को सीचने मे आपश्री ने खून -पसीना एक किया।

गुरुदेव ने स्वय की आत्मा के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति की पीड़ा को परखा । राग द्वेष पर विजय प्राप्त करने वाले पूज्य आचार्य भगवन् ने अनुकूल और प्रतिकूल कैसी भी विकट से विकट परिस्थिति आयी हो सदैव समता का ही परिचय दिया । यही कारण रहा कि इस सम्पूर्ण विश्व मे समता विभूति के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपश्री तो समता योगी थे ही लेकिन आपने जन-कल्याण हेतु गाँव-गाँव डगर-डगर मे समता का बिगुल बजाया जिसका यह प्रतिफल रहा कि विषमता से ग्रसित मानव भी समता की राह पर चल पड़े ।

समता के तीर चलाकर तूने,
विषमता को परास्त किया ।
हर मानव की पीड़ा को सुनकर ,
समता से जीना सिखलाया ।

समता के साथ-साथ ओजस्वी , तेजस्वी, यशस्वी वर्चस्वी, मधुरता, सरलता, वात्सल्यता आदि अनेक गुणो से युक्त पूज्य गुरुदेव थे । जब भी हम गुरुदेव के पास जाते बड़े स्नेह से बात करते थे । मन एकदम गद्गद् हो जाता था । मेरे गुरुदेव की असीम स्नेहमयी वाणी की स्मृति रह रह कर मेरे मानस पटल पर उभर रही है क्योंकि मेरे गुरुदेव का व्यक्तित्व कुछ अनूठा ही था । मै किन गुणो की व्याख्या करूँ ।

कैसे करूँ नाना तेरे गुणगान ।
नही है सक्षम मेरी जुबान ।
तेरी खूबी को जानता है सकल जहान् ।
कि तेरा जीवन था कितना महान् ।

महान् विभुतिया का आदर्श महान् और विराट होता है उसे शब्दा के माध्यम से व्यक्त नही कर सकते । आचार्य भगवन् का प्ररणास्पद जीवन युगा-युगा तक प्ररणा देता रहगा । ईसी प्रेरणा के सहारे मै केवल ज्ञान को पाती हुई मोक्ष मजिल को प्राप्त कर सकूगी ।

अत मे मै आपश्री के महान् उपकारो के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक होती हुई श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ ।

❑ महासती श्री रौनक श्री जी म सा

अद्भुत एव निराला व्यक्तित्व

मानवता का मान बढ़ाकर मानव जीवन सफल किया,
जिन वाणी का मथन करके चितन का नवनीत दिया,
श्रमणो म है श्रेष्ठ श्रमण जिनकी पावन प्रखर मति,
सरस्वती के वरद पुत्र है काव्य कला मे निपुण अति ।।

महापुरुष आचार्य नानेश का व्यक्तित्व बहुत ही अद्भुत और निराला था । समाज की सकीर्ण सीमाओ मे आबद्ध होकर भी सर्वतोमुखी विकास हेतु उन्होंने जन-मन मे अनत आस्था समुत्पन्न की । उनकी दिव्यता, भव्यता और मानवता को निहार कर जन-जन के अतर्मानस मे अभिनव आलोक जगमगाने लगा था । उन्होंने समाज की विकृति को नष्ट कर सस्कृति की ओर बढ़ने के लिए सदा प्रेरणा दी थी । उन्होंने आचार और विचार मे अभिनव क्राति का शख फूका था । वे अध्यवसाय के धनी थे जिससे कटकाकीर्ण दुर्गम पथ भी फूल बन गया । ऐसे थे महापुरुष आचार्य श्री नानेश ।

आप श्री की दार्शनिक मुख मुद्रा चमकती दमकती हुई निश्चल स्मित रेखा, दमकता हुआ भव्य ललाट निहार कर किसका हृदय श्रद्धा से नत नही होता था । जितना आपका बाह्य व्यक्तित्व नयनाभिराम था उससे भी अधिक मनोभिराम आभ्यतर व्यक्तित्व था । आपकी मजुल मुखाकृति पर निष्कपट विचारधारा की भव्य आभा सदा दमकती रहती थी । आपकी निर्मल आँखो के भीतर से सहज सरल स्नेह समता शालीनता के दर्शन होते थे । उनका मौन युक्त जीवन सदा भव्य आत्मा को सुरभित करता रहेगा । इसी मगल मनीषा के साथ आप श्री के चरणों म भाव-भीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं ।

छोड़ गये जो चमक सवाई, पीछे तेज सितारा,
गुरुवर की शिक्षाओ पर चलना, अब है काम हमारा ।।

तुम्ही हो मेरे गुरुवर नाना

साध्वी जय श्री जी

तुम्हीं हो मेरे गुरुवर नाना ।
तुम बिन जग मे कोई ने मेरा । टेर.

तुम जो गुरुवर मुझे ना मिलते ।
सच्ची राह पर कैसे चलते ।
मेरी जिन्दगी तूने बनाई ।
संयम दाता तुम्हीं हमारा १

खुलते ही होठ रटते थ नाना।
जिह्वा भी गाती तेरा तराना ।
दर्शन की प्यासी अखियां था म[illegible]
नावन बरने नाम न त[illegible] २

वन्दना के स्वर

आगार

श्रद्धाजलि ।

-भवरलाल अभ्भाणी, चित्तौड़गढ

जाज्वल्यमान दीप स्तभ

आचार्य प्रवर का जीवन समता सहिष्णुता, सादगी और सेवा का जाज्वल्यमान दीप स्तम्भ था, जो युगो युगो तक अपने ज्ञान प्रकाश से ससार को आलोकित करता रहेगा। समूचा रत्नवश आचार्य प्रवर के प्रति हार्दिक श्रद्धाजलि व्यक्त करता है कि नई सयम व समता की साधना तथा सथारे के साथ मरण से उन्होंने अपने जीवन के लक्ष्य को बहुत नजदीक कर लिया।

-रतन सी० बाफना

पारस सम

जिन सतो की तुलना पारस से की जाती है और जिनके सस्पर्श से ही क्षुद्र व्यक्ति नर से नारायण व निम्न कोटि से उच्च श्रेणी का बनने लगता है। उनकी चिकित्सा सेवा करके मुये शुभाशीर्वाद प्राप्त करने का शुभ अवसर मिला। उन्होंने मुझ जैसी नाचीज को जो सेवा का अवसर प्रदान किया। उसके लिए मै उनका आभारी हू।

जिनके सम्पर्क से लाखो करोड़ो का शाति की अनुभूति हुई उन श्री चरणा मे मेरा बारम्बार प्रणाम है।

-डा० आलोक व्यास

एक और स्तम्भ ढहा

सघ-शास्ता श्री सुदर्शन जी महाराज और आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज के स्वर्गवास के बाद आचार्य श्री नानालालजी महाराज का स्वर्गवास, इतने इतने वज्रपात आज हमे सहने पड़ रहे है। लगता है जैन समाज का अमूल्य रत्न भडार खाली होता जा रहा है। उनके बारे मे कुछ भी लिखना आकाश को मुट्ठी मे भरने के सदृश है।

उनके त्याग में निर्मलता थी व्यवहार मे पवित्रता थी और वाणी मे अनुभूति की ललकार थी। आज एसी महान् आत्मा हमारे बीच से स्वर्गगमन कर गई है। हमारी सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि उनके जीवन मे प्रेरणा ले और उनके गुणो और शिक्षाओ को अपने जीवन मे उतारने की कोशिश करे।

-रोशनलाल जैन

युग प्रभावक आचार्य

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश साधुमार्गी जैन सघ के ही नहीं बल्कि स्थानकवासी समाज व पूरे जैन समाज के भी प्रभावक आचार्यों मे से एक थे। आप २०वीं शताब्दी के प्रभावक आचार्य थे। आपश्री के देवलोक होने पर जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। मै अपनी तरफ से व श्री मारवाड़ समता बालक-बालिका मडल बीकानेर की तरफ से भावभरी श्रद्धाजलि अर्पित करता हू तथा यह शुभकामना है कि आपश्री शीघ्र मोक्षगामी बने।

वर्तमान आचार्य श्री युग पुरुष १००८ श्री रामलालजी म सा २१वी शताब्दी के प्रभावक आचार्य होंगे।

-निर्मल छल्लाणी

वो दीप बुझ गया

वो दीप बुझ गया जिसके सानिध्य मे स्थानकवासी जैन समाज ही नही सारा विश्व प्रकाश से आलोकित हो रहा था। वो दीप था आचार्य श्री नानेश।

आचार्य श्री नानेश ने तीर्थंकरो द्वारा प्रतिपादित मूलभूत सिद्धान्तो को बिना खडित किये समता दर्शन व समीक्षण ध्यान द्वारा जबरदस्त आध्यात्मिक ज्योति फैलाई।

मुझे सन् १९९८ के जुलाई मास में अतिम बार उदयपुर मे आचार्य श्रीजी के दर्शनो का लाभ मिला। मै बहुत सौभाग्यशाली था कि अस्वस्थता के बावजुद गुरुदेव के दो व्याख्यान सुनने को मिले। दोना ही दिन एक विषय पर व्याख्यान सुनने का मौका मिला। यदि लक्ष्य सही है और लक्ष्य तक पहुचने का मार्ग सही है तो भय का त्याग कर आगे बढ़ो, सफलता अवश्य मिलेगी।

-रिखबचद बोथरा, अध्यक्ष

अ भा सा जैन समता युवा सघ, बगाईगाव

पूर्ण समर्पण

वर्तमान आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण समर्पित बन, स्वर्गीय पूज्य प्रवर के बाद उनके विशाल वट वृक्ष वत् व्यक्तित्व और कृतित्व जीवन और कर्म की सर्वग्राही परम्परा का निर्वहन करने की चुनौती और दायित्व अपने सबके सबल कधो पर आ गयी है । इस हुक्म सघ की परम्परा का सकल निर्वहन करके हम आचार्य श्री जी के प्रति एव आने वाली पीढी के प्रति न्याय कर सकेगे, एतदर्थ निर्णायक क्षण मे आचार्य श्री रामलालजी म सा के प्रति पूर्ण समर्पित बन आचार्य श्री नानेश द्वारा रखी हुई अमर नीव के ऊपर भावी जीवन का स्वर्णिम भवन निर्मित करने हेतु सकल्प करे ।

वीर प्रभु की पाट परम्परा मे होने वाले वीर निर्वाण सम्वत् ५८४ मे पूर्व के ज्ञाता जिन्होंने शास्त्र को चार अनुयोग से पृथक् किया, ऐसे प्रकाण्ड विद्वान, शास्त्रो के ज्ञाता आर्यरक्षित के कई शिष्य जो वाद-विद्या मे प्रवीण होते हुए भी उत्तराधिकारी के मनोनयन की बेला मे घी, तेल या चना के दृष्टात देकर, सर्वाधिक सार ग्रहण करने वाले चना घट के दृष्टात सम पुष्पमित्र को चयन किया अर्थात् उत्तराधिकारी रूप में घोषित किया । उस समय क्या कुछ प्रसग बना, इतिहास साक्षी है । चितन के क्षणो मे सुज्ञ पाठक चितन कर कि आचार्य श्री नानेश ने अपनी सूझ-बूझ व अन्तर्आत्मा की साक्षी से अपना उत्तराधिकार दृढसकल्पी, आचारनिष्ठ, हुक्म सघ की आचार क्रान्ति परम्परा को अक्षुण्ण बनाने मे परम्परा के प्रति पूर्ण समर्पित श्रद्धा, विनय, अनुशासन के अनुगामी वर्तमान आचार्य श्री रामेश को दिया ।

उन क्षणो मे जब कुछ विघटन की स्थिति बनी तब यह कहना अतिशयोक्ति युक्त नही होगा कि उस समय शकुन्तलाजी म सा आदि हम सब साध्वियो की क्या विचित्र स्थिति निर्मित हुई । हम पर क्या बीती ? एक तरफ परमपिता, मातृत्व-स्नेह वात्सल्य-प्रदाता पूज्य प्रवर के नाम के साथ हमारा नाम जोड़ने का सौभाग्य प्रदान करान वाल अनताराध्य आचार्य देव ! एक तरफ मातृवात्सल्य हृदया गुरुणी प्रवर क्या करे कि कर्त्तव्यविमूढवत् हम सबकी स्थिति बन गई । महाभारत का दृश्य घूम रहा है, नेत्रो के समक्ष एक भीष्म पितामह एव गुरु द्रोणाचार्य । मन म उथल-पुथल । कृष्ण बोधित अर्जुन वत् अन्तर आत्मा मे शासन सर्वोपरि लगा । इस आत्म साक्ष्य एव पूज्य उभय गुरुदेव के अनन्य आस्था विश्वास तले आश्वस्त बन शासन रहने हेतु निर्णय लिया ।

रहे हम आपके आपके ही रहेंगे ।
लोक देखकर हमे यही कहेंगे ॥

अन्त मे वर्तमान आचार्य प्रवर की ऊर्जा से हम सब युगो-युगो तक ऊर्जास्विल बने ।

हम सबकी यही भावना रहे एव पूज्य श्रीचरणो मे यही भाव अर्पणा रहे कि 'पूज्य नानेश ने चाहा वह कभी न भूले, उन्होंने नही चाहा वह कभी न चूने' ।

इतना भी हम यदि करके दिखाये तो श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी ।

-राजेन्द्र कुमार जैन, केसिगा

जीवन के उन्नायक

आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म सा ने हम धर्मपालो पर जो उपकार किया है वह हम कभी नहीं भूल सकते है ।

हमे नीच जाति से उठाकर ऊपर जाति के लागो के साथ बैठने का अवसर दिया है। हम अधर्म के मार्ग से हटाकर धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है । हमें दुर्व्यसनो से हटाकर व्यसन मुक्त जीवन जीन की कला सिखाई है। इसी से हम अधिक पैसा बचाकर अच्छा जीवन जीना सीख रहे है ।

नये आचार्य भगवन् को हमारा शत-शत वदन है । वे भी हम धर्मपाला का पूरा ध्यान रखेंगे, ऐसा विश्वास है । -रामचद्र धर्मपाल, सुरामा (रतलाम)

सादगी का निधन

आचार्य श्री नानालालजी महाराज ने गत कुछ वर्षों से अस्वस्थ हात हुए भी आगमोक्त साधु चया का

ऐसे थे आचाय श्री नानेश जा अपने सद्गुणो की सुवास स अनक आत्माआ का कल्याण कर हमारे बीच म चल गये।

वस्तुत समूचे जैन समाज ने एक एसा रत्न खो दिया है जिसने अपने दृढ़ सकल्प से भीड़ से अलग रहकर श्रमण सस्कृति की रक्षा की।

तुम स्वय शकर थे, तुम्हें अमृत की जरूरत न पड़ी।
तुम स्वय गौरव थे, तुम्हें हजारो की जरूरत न पड़ी॥
तू ताज बना सिरताज बना, चमका चाद सितारों से।
अमर रहेगा नानागुरुवर,गूजा जय जयकारो से॥

-अनिल बरखेड़ावाला, खाचरौद

उड़ीसावासी धन्य हुए

जिन शासन क दिव्य सितारे आचार्य भगवन् का दिव्यालोक कभी विखर नही सकता। जन मानस के अनमोल मोती जिन-शासन की दिव्य ज्योति का गुणानुवाद असभव है। लगभग ३४ वर्ष पहल आचार्य भगवन् १००८ श्री नानालालजी म सा ने उड़ीसा की पावन धरती का स्पर्श किया। उड़ीसावासी आप के दर्शन पाकर धन्य-धन्य हो गये। आपके उड़ीसा पधारने स खरियार रोड़ काटाभाजी, बगुमोण्डा, टिटलागढ़, केसिगा मे जो हरियाणा के रहने वाले थे। उन्होंने अपने आप को आचार्य भगवन् से समकित लेकर साधुमार्गी जैन श्रावक सघ के नाम से स्थापित किया।

-रामचद्र जैन

आत्मा नहीं मरती

सिर्फ जैन दर्शन ही नही प्राय सभी दर्शन और यहा तक कि वैज्ञानिक मानने लग गय है-आत्मा कभी मरती नही, वह कहीं न कहीं अवश्य रहती है। गर यह सत्य है तो हमारे परम आराध्य आचार्य भगवन् हम छोड़कर चले गये कैसे कहा जा सकता है? अत मै समझता हू कि वे आज भी हमारे पास हैं और भविष्य म भी हमार पास रहेंगे। उनका समतामय जीवन हमारी आखो से कभी ओझल हो नही सकेगा।

आत्मदृष्टि सर्वदा आपके दर्शन करती रहती है, करती रहेगी।

-भोमराज गुलगुलिया

विराट व्यक्तित्व के धनी

जननी जणे तो ऐड़ो जण का दाता का सूर।
नही तो रहिजे बाझड़ी मता गवाजे नूर।

ऐसे ही जिन शासन के मसीहा शूरवीर बालक नाना का माता शृगार की कुक्षि से छोट स गाव दाता मे जन्म हुआ। आप विराट प्रतिभा के धनी, स्पष्ट वक्ता निडर, दृढ़ प्रतिज्ञ सहृदय एव सदाशयता के भडार थे। आपका मुख मण्डल सूर्य के समान तेजस्वी चन्द्रमा के समान शीतलता प्रदान करने वाला था आपने अपने सयमी जीवन म, आडबर भौतिकवाद स हमेशा दूर रहते हुए शुद्ध सयम शुद्ध चरित्र की निर्मलता बहाई वह जैन जगत मे एक अनोखी मिसाल है। साधुता के नाम पर आपकी सयम साधना के अनेक आयाम रहे हैं। समता दर्शन, समीक्षण ध्यान धर्मपाल प्रवृत्ति व्यसनमुक्ति आदि आदि। उसके लिए समूचा जैन समाज, समूचा मानव समाज आपका युगा युगो तक आभारी रहगा।

आपने लगभग ८० वर्ष तक जिन शासन की सच्ची सेवा की है वो स्वर्णिम अक्षरो में युगो-युगा तक अकित रहेगी। आपके सयमित जीवन के प्रति अन्य सम्प्रदाय के धर्माचार्य साधु साध्वी भी नतमस्तक रहत थे। आप धर्मयाद्धा क रूप मे अडिग रहकर जिनवाणी का प्रचार-प्रसार करके भव्य जीवों को सन्मार्ग पर लात रहे।

आपकी ममस्पर्शी शैली स अभिसिंचित विन्ना की वर्चस्वी वाणी छवि का कोई कैस भूल सकता है? आपके जीवन काल के अन्तिम समय कई विपत्तिया आई पर भगवान महावीर क सच्चे सनानी न आगम क विपरीत कभी भी किसी भी परिस्थिति मे समझौता न करते हुए विशुद्ध आचार क्रिया चारित्रिक क्रिया के समर्थक बनकर

ऐसे थे आचार्य श्री नानेश जो अपने सद्गुणो की सुवास स अनेक आत्माओ का कल्याण कर हमारे बीच स चले गये।

वस्तुत समूचे जैन समाज ने एक ऐसा रत्न खो दिया है जिसने अपने दृढ सकल्प से भीड़ से अलग रहकर श्रमण सस्कृति की रक्षा की।

तुम स्वय शकर थे, तुम्हें अमृत की जरूरत न पड़ी।
तुम स्वय गौरव थे तुम्हें हजारो की जरूरत न पड़ी॥
तू ताज बना सिरताज बना, चमका चाद सितारों से।
अमर रहेगा नानागुरुवर,गूजा जय जयकारो से॥

-अनिल बरखेड़ावाला, खाचरौद

उड़ीसावासी धन्य हुए

जिन शासन के दिव्य सितारे आचार्य भगवन् का दिव्यालोक कभी बिखर नही सकता। जन मानस के अनमोल मोती जिन-शासन की दिव्य ज्योति का गुणानुवाद असभव है। लगभग ३४ वर्ष पहले आचार्य भगवन् १००८ श्री नानालालजी म सा ने उड़ीसा की पावन धरती का स्पर्श किया। उड़ीसावासी आप क दर्शन पाकर धन्य धन्य हो गये। आपके उड़ीसा पधारने से खरियार रोड़ काटाभाजी, बगुमोण्डा टिटलागढ़, केसिगा म जो हरियाणा के रहन वाले थे। उन्होंन अपने आप को आचार्य भगवन् से समकित लेकर साधुमार्गी जैन श्रावक सघ के नाम से स्थापित किया।

-रामचद्र जैन

आत्मा नहीं मरती

सिर्फ जैन दर्शन ही नही प्राय सभी दर्शन और यहा तक कि वैज्ञानिक मानने लग गये है आत्मा कभी मरती नही वह कही न कही अवश्य रहती है। गर यह सत्य है तो हमारे परम आराध्य आचार्य भगवन् हम छोड़कर चले गय कैसे कहा जा सकता है ? अत मै समझता हू कि वे आज भी हमारे पास हैं और भविष्य म भी हमारे पास रहेंग। उनका समतामय जीवन हमारी आखो से कभी ओझल हो नही सकेगा।

आत्मदृष्टि सर्वदा आपके दर्शन करती रहती है, करती रहेगी।

-भोमराज गुलगुलिया

विराट व्यक्तित्व के धनी

जननी जणे तो ऐड़ो जण का दाता का सूर।
नही तो रहिजे बाझड़ी मता गवाजे नूर।

ऐसे ही जिन शासन के मसीहा शूरवीर बालक नाना का माता शृगार की कुक्षि से छोटे से गाव दाता मे जन्म हुआ। आप विराट प्रतिभा के धनी स्पष्ट वक्ता निडर दृढ प्रतिज्ञ, सहृदय एव सदाशयता के भडार थ। आपका मुख मण्डल सूर्य के समान तेजस्वी चन्द्रमा के समान शीतलता प्रदान करने वाला था आपने अपने सयमी जीवन मे आडवर भौतिकवाद से हमेशा दूर रहते हुए शुद्ध सयम शुद्ध चरित्र की निर्मलता बहाई वह जैन जगत मे एक अनोखी मिसाल है। साधुता के नाम पर आपकी सयम साधना के अनेक आयाम रहे हैं। समता दर्शन, समीक्षण ध्यान, धर्मपाल प्रवृत्ति व्यसनमुक्ति आदि आदि। उसके लिए समूचा जैन समाज, समूचा मानव समाज आपका युगो-युगो तक आभारी रहेगा।

आपने लगभग ८० वर्ष तक जिन शासन की सच्ची सेवा की है वो स्वर्णिम अक्षरो में युगो-युगा तक अकित रहेगी। आपके सयमित जीवन के प्रति अन्य सम्प्रदाय के धर्माचार्य, साधु, साध्वी भी नतमस्तक होत थे। आप धर्मयोद्धा के रूप मे अडिग रहकर जिनवाणी का प्रचार-प्रसार करक भव्य जीवों को सन्मार्ग पर लात रहे।

आपकी मर्मस्पर्शी शैली से अभिसिचित विद्वता की वर्चस्वी वाग्मी छवि को कोई कैसे भूल सकता है ? आपके जीवन काल क अन्तिम समय कई विपत्तिया आई पर भगवान महावीर के सच्चे सेनानी न आगम के विपरीत कभी भी किसी भी परिस्थिति मे समझौता न करते हुए विशुद्ध आचार क्रिया चारित्रिक क्रिया के समर्थक बनकर

राजस्थानी के उपर्युक्त दोहे मे माँ को सबोधन करते हुए कवि कहता है -हे माता ! यदि तू जनम देती है तो ऐसे पुरुष को जन्म दे जो भक्त हो, जो स्वय के साथ मानव मात्र का भी तारनहार हो। इसी तरह या तो दानवीर या शूरवीर पुत्र को जन्म देना, नही तो बाझ ही रहना। अपना सौन्दर्य मत खोना।

वस्तुत आचार्य श्री जी एक महान उच्च कोटि के भक्त थे, विश्ववदनीय, समता-साधना मे तल्लीन साधक थे। आप उग्र सयमी, सरल हृदय महापुरुष थे। आपके विशाल ज्ञान व उच्च चारित्र का दर्शनार्थी पर ऐसा प्रभाव पड़ता था कि वह हमेशा के लिए आप श्री का भक्त बन जाता था।

आचार्य श्रीजी जहा विश्व शाति के लिए समता दर्शन का प्रचार कर विश्ववदनीय एव समता दर्शन प्रणेता बन, वही मानसिक तनाव को दूर करने के लिए समीक्षण ध्यान का प्रवर्तन कर समाज को नई जीवन शैली देकर समीक्षण ध्यान योगी कहलाये।

आचार्य भगवन् को मैंने बहुत निकट से देखा। उनके साथ कई पैदल यात्राए कीं। उस महान विभूति में यह गुण था कि वे छोटे से छोटे बच्चे को सम्मान देते थे तथा ऊची भाषा का प्रयोग कर सम्बोधन करते थे। हमारे परिवार के प्रति उनकी असीम कृपा थी। अनेक गुणो के धारी आचार्य भगवन् के दो गुणो का मय उदाहरण वर्णन कर रहा हू। एक तो आचार्य भगवन् शासन सेवा के प्रति सम्पूर्ण रूप से समर्पित थे, उसमे वे अपने स्वास्थ्य को भी गौण कर देते थे। दूसरा उनमें गभीरता गजब की थी। शासन सेवा का उदाहरण मै नीचे दे रहा हू।

१७ नवम्बर १९९० को आचाय भगवन् अठाणा से कनेरा पधार सयोग से दूसरे दिन हम भी (१८ ११ ९० को) सपरिवार ब्यावर स आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ रवाना हुए। अठाणा से कनेरा का रास्ता विकट था। पूरे रास्त बड़े बड़े पत्थर थे, हम कार मे बैठे हुए भी परेशानी महसूस कर रह थे। जैस तैस धीरे-धीरे कनरा पहुचे तथा आचार्य भगवन् क दर्शन किए। रात को मैंने आचाय भगवन् को कहा भगवन् क्या ऐसे रास्त आना जरूरी थी, हम कार मे होते हुए परेशानी महसूस कर रहे थे और आप ऐसे विकट रास्ते पधारे, तो भगवन् ने कहा- भाई यह तो शासन सेवा है, पूर्व मे मै इस गाव के आस-पास से निकला मगर इस गाव को फरस नही पाया फरसने की भावना से आ गया। (लगभग २० वर्ष बाद इस गाव म आचार्य श्री पधारे) यह सुनकर मेरी आखो से भावावग मे आसू आ गये ऐसी थी आचार्य भगवन् की शासन सेवा। अपने स्वास्थ्य को गौण कर ऐस कई विकट रास्ते पार किए।

आचार्य भगवन् मे गभीरता का गुण भी गजब का था। किस बात को किसको कहना, कब कहना, इसका व पूरा ध्यान रखते थे। १९८० का होली चातुर्मास सोजत रोड़ म था, कई सघो की विनती के साथ-साथ इधर राणावास सघ जोर लगा रहा था उधर उदयपुर सघ भी जोरदार विनती कर रहा था। आचार्य भगवन् असमजस में थे। निर्णय नही कर पा रह थे कि चातुर्मास कहा किया जाए। आखिर आचार्य भगवन् ने घोषणा की- यदि मारवाड़ मे रहा तो १९८० का चातुर्मास राणावास मे अथवा मेवाड़ की ओर निकल गया तो उदयपुर करने के भाव हैं। इसकी सूचना दानो सघो का चैत सुद १३ तक लिखित रूप मे भेज दी जाएगी। दोना सघ गमनागमन न कर। आचार्य भगवन् वहा स फिर सोजत सिटी पधारे। चैत सुद १३ क चार-पाच दिन पहले की बात है। आचार्य भगवन् ने पडित श्री लालचदजी मुणोत को बुलाया तथा उन्हे निर्देश दिया कि दो पत्र लिख देवे एक पत्र राणावास सघ का उनक यहा १९८० के चातुर्मास की स्वीकृति दी जाती है तथा एक पत्र उदयपुर सघ को उसमें राणावास को स्वीकृति दी गई ऐसा लिख दे तथा जब तक य दानो पत्र सघा का नहीं पहुच जाए तब तक चातुर्मास स्वीकृति विषयक चचा किसी से नहीं करें।

पडित साहब एक गभीर विश्वसनीय श्रावक थे। उन्होने आचार्य श्री की आज्ञानुसार दानो सघों का पत्र लिख दिए तथा किसी भी सत एव श्रावक का पत्र क बार म नहीं कहा। इधर पत्र भज दन क दो-तीन दिन बाद श्री

माणकचन्दजी बोहरा ब्यावर वाले साजत सिटी पहुचे, रास्ते मे ही एक परिचित श्रावक मिले। बोहराजी ने पूछा कि आचार्य भगवन् का चातुर्मास राणावास खुल गया क्या ? जबकि सतो को पता नही था। उस श्रावक ने कहा-राणावास। इतना सुनकर बोहराजी आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ स्थानक पहुचे ता उन्होंने बीच म सतो से कहा महाराज चातुर्मास राणावास खुल गया क्या ? जबकि सता को पता नही था। न ता आचार्य भगवन् ने और न ही पडितजी ने किसी का बताया। बाहराजी ने ऐसा सुनकर सत तुरन्त आचार्य भगवन् के पास पहुँच। उनसे पूछा-भगवन् क्या चातुर्मास राणावास खोल दिया है ? आचार्य भगवन् ने सतो से प्रश्न किया आपको किसने कहा तो सत बोले हम बोहराजी ने बताया। उसी समय बोहराजी से पूछा गया, आपको किसने कहा बाहराजी न उस श्रावक का नाम बताया। फिर उस श्रावक को बुलाया गया तथा पूछा गया भाई आपको किसने कहा। श्रावक ने कहा गुरुदेव मुझे तो किसी ने नही कहा, बस मुझे लग गया कि चातुर्मास तो राणावास ही होगा इसलिए मैंने कह दिया फिर आचार्य भगवन् मुस्करा दिए सभी को पता लग गया कि चातुर्मास राणावास खुल गया है। कहने का तात्पर्य यही है कि आचार्य भगवन् कितने गभीर थे। चातुर्मास स्वीकृति पत्र दोनो सघो के पास पहुचने से पूर्व किसी का भी नहीं बताने का अभिप्राय यही था कि पहले दोनो सघो को जानकारी होनी चाहिए, फिर अन्य को एसा सोचकर ही भगवन् ने इस बात को मन मे रखा। ऐसी गभीरता के कई उदाहरण हैं। एसे महान् आचार्य श्रीजी क गुणा के प्रति मै नतमस्तक हू तथा तहेदिल स एक बार फिर भगवन् के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करक परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि इस सदी के महानतम आचार्य श्रीजी की आत्मा को शाति प्रदान कर।

-मीठालाल लोढा ब्यावर

अद्भुत योगीराज

मेवाड़ की भक्ति व शक्ति की पूज्य धरा दाता गाव में जन्म गोरधन लाल जी से नानेश बने यह मेवाड़ के सपूत जिन्होंने पूरे विश्व को ज्ञान का प्रकाश दिया।

छुआछूत व भेदभाव के कारण धर्मान्तरण के समय म एक अद्भुत महात्मन् मेवाड़ मे उगा सूर्य आचार्य श्री नानश मालवा मे पधारे। एक भाई ने आकर कहा आपके उपदेश को सुनकर मेरा जन्म सफल हो गया। भगवन् आपसे निवेदन है कि पास के गाव मे सामूहिक भोज है। ५० गावो के लोग एकत्रित हो रहे है। यदि आपकी अमृतमय वाणी की वर्षा होती है तो जो हिन्दुत्व के रास्ते से भटकने की स्थिति म डोल रहे है व्यसनो मे लिप्त है व दिशा पा सकते हैं। आचार्य श्री नानेश ने उद्बोधन दिया। सभी का मासाहार व व्यसन स मुक्त रहने का उपदेश दिया और कहा आप भी समाज के वीतराग शासन के सम्माननीय श्रावक हैं। आपके प्रति कोई छुआ छूत भेदभाव उपेक्षा पूर्ण व्यवहार नहीं करेंगे व आप बलाई चमार रेगर क नाम स नही धर्मपाल के नाम से पहचाने जाओगे।

लाखो व्यक्ति मासाहार, शराब का त्याग कर धर्मपाल बने। इस अद्भुत योगी ने लाखो हिन्दुओ को ईसाई होने मे बचा लिया। हिन्दुत्व की धारा मे जोड़े रखा। हिन्दुत्व के रक्षक महान योगीराज को शत शत नमन।

-कन्हैयालाल बोरदिया, सयोजक,
समता जैन पाठशाला

ज्योति पुज युगाचार्य

क्रियोद्धारक महातपस्वी परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री हुक्मीचन्द जी म सा द्वारा सवर्धित परम्परा आज विराट वट वृक्ष का आकार लिए सघ म नये पुष्पो को फलित कर रही है। आचार्य प्रवर श्री शिवलालजी म सा, श्री उदय सागर जी म सा व श्री चौथमल जी म सा क तदनुरूप ही विराट व्यक्तित्व के धनी आचार्य प्रवर श्री श्रीलाल जी म सा हुए जिन्होंने सघ मे क्रान्ति का उद्घोष किया एव युगद्रष्टा ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य न समाज में व्याप्त कुरूढियों का उन्मूलन

करने मे अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए राष्ट्र मे क्रान्ति का सिहनाद करते हुए नित नूतन आयाम प्रस्तुत किये, जो आज भी जन जीवन के लिए प्रासगिक व प्रेरणादायी हैं। उन्ही के पट्टासीन शान्त क्रान्ति के अग्रदूत आचार्य प्रवर श्री गणेश जिन्होंने गणानाम् ईश गणेश की उक्ति का यथानुरूप से निर्वहन किया। वे श्रमण सघ के उपाचार्य के पद पर उपशोभित होते हुए भी सघ में व्याप्त शिथिलता को देखकर व परिवर्तन के अभाव में अपने महत्वपूर्ण सर्वोच्च पद का भी परित्याग करके उत्तराध्ययन सूत्र मे वर्णित गर्गाचार्य के अध्ययन को साक्षात् कर दिया। उन्ही के दिशा निर्देशन, सवर्धन में समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानेश हुए, जिन्होंने सघ मे नव चेतना का सचार करते हुए अभिनव आकार प्रदान किया। अपने आचार्यकाल में जो-जो क्रियान्विति की है वह जैन क्षितिज पर उद्भाषित भव्य विभा के रूप मे विद्यमान रहेगी।

-कमलचन्द लूणिया, बीकानेर-३३४००५

मेरे आराध्यदेव

जो इन्द्रियो को जीत कर, धर्माचरण मे लीन हैं।
उनके मरण का शोक क्या, वो मुक्त बन्धन हीन है॥

कवि के कथनानुसार महापुरुषो के मरण का शोक नही होता। उनका मरण तो महोत्सव हो जाता है। समता विभूति जिन शासन प्रद्योतक, समीण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक प्रात स्मरणीय परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा हुक्म सघ के आठवे आचार्य हुए, जिन्होंने लगभग ३७ वर्ष तक सघ का कुशल एव सफल नेतृत्व किया इनक शासन काल मे ३०० से अधिक मुमुक्षु आत्माओ ने भागवती दीक्षा अगीकार की। एक साथ २५ दीक्षाओ का कीर्तिमान भी उनक शासन की शान का उत्कृष्ट उदाहरण है।

आचार्य श्री के दर्शनो का सौभाग्य मुझे बचपन से ही मिलता रहा। मेरा पूरा परिवार आचार्य नानश के प्रति सदैव श्रद्धावनत रहा है। मेरे विशेष पुण्य कर्मो के प्रति फल स्वरूप आचार्य श्री का जब मेवाड़ सभाग म आगमन हुआ, उनका स्वास्थ्य ठीक नही रहता था। तब जयपुर, बीकानेर उदयपुर आदि के चिकित्सको के साथ मुझे भी नर्सिंग सेवाओ का लाभ प्राप्त हुआ। मुझ पर सदैव आचार्य श्री का विशेष आशीर्वाद रहा और गुरुकृपा से हर सकट पलभर मे टलता रहा। आपकी वाणी मे एक विशेष आकर्षण एव मृदुता थी जो उनके दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालु को अपना बना लेती थी।

-शातिलाल नलवाया, उदयपुर

स्नायविक तनाव के प्रभजक

आज का मानव जिस विषमता जन्य सघर्षो से गुजर रहा है सर्व विदित है पर्यावरण प्रदूषण से स्नायविक तनाव बढ़ रहा है तो पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय मानसिक तनाव भी भरपूर बढ़ रहा है। ऐसे मे एक युग पुरुष के अवतरण की अपेक्षा थी, जिसकी सपूर्ति के हेतु बने आचार्य नानेश जिन्होंने अपने सदेश द्वारा विचार क्राति का उद्घोष कर नव्य समाज सरचना की पृष्ठभूमि तैयार की।

वर्ण भेद व जातिवाद से पृथक रहकर सप्त व्यसन मुक्ति के अभियान द्वारा आपने अस्पृश्य जना को जैन धर्म के मौलिक सिद्धाता की जानकारी दी और उन्हे मानवता से जीने व समाज मे, शालीनता से सवर्धनशीलता का अधिकार दिया। उन्हे धर्मपाल से अभिसज्ञित किया।

आप श्री ने अपनी मर्यादा में रहकर समाज में व्याप्त कुरीतियो पर वैचारिक क्रान्ति की छैनी से प्रहार किया जिससे समाज स्वस्थ वातावरण में प्रगतिशील बना।

आप श्री ने अपने आध्यात्मिक उद्बोधन से समाज की दिशा व दशा म अभिनव रूपान्तरण किया जिससे व्यक्ति म नइ स्फुरणा, नया आलोक व नूतन जागृति का अन्तर्नाद अनुगुजित हाता रहा है।

आप श्री का प्रखर व्यक्तित्व व कृतित्व स्थानकवासी समाज के लिए ही प्रेरक नहीं अपितु सपूर्ण जैन समाज व जैनेतर समाज क लिए प्रेरणा पुज क रूप

में रहा।

आप श्री को लागा न पुराण पथी व सिद्धान्त वादी सज्ञा स अभिव्यक्त किया किन्तु आप श्री ने आगम सिद्धात से भिन्न दृष्टि कोणा को कभी भी स्थान नहीं दिया। हर क्षेत्र मे निकषोपल पर खरे उतरकर सघ को सतत गति प्रदान करत रह।

आचार्य देव सरल व स्पष्ट वक्ता सहज स्फूर्त तर्क प्रज्ञा क धनी तेजोमय व्यक्तित्व इस तीन सपुटी के समष्टि रूप रहे। महामहिम आचार्य देव भल ही पार्थिक देह स अविद्यमान है, किन्तु उनके द्वारा प्रदत्त ममता की दिव्य प्रतिपल प्रतिक्षण मार्ग प्रशस्त व पावन करती रहती है।

-नवीन कुमार कोठारी, बीकानेर

गुण रत्नाकर

मेरा यह परम सौभाग्य रहा कि मुझे पूज्य आचार्य श्री नानेश जी महाराज का समय-समय पर सानिध्य प्राप्त हुआ है। आचार्य श्री के देशनोक म अनुष्ठित चातुर्मास काल में सप्ताह मे प्राय दो बार उनक स्वास्थ्य परीक्षण हेतु मुझे उनके दर्शन प्राप्त होते थे। उसी बहाने उनसे प्रत्यक्ष वार्तालाप का अवसर भी मिल जाता था। उनक आध्यात्मिक जीवन के उच्चादर्शों स तो कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना रह ही नहीं सकता, उनकी दैनन्दिन जीवन क्रिया भी हम सभी के लिए अनुकरणीय है। समय के प्रति पाबन्दी, सयमित जीवन व्यवहार की मधुरता सर्वमगलकारी भावना आदि श्रेष्ठ गुणा ने मुझ अतिशय प्रभावित किया है। उनक नाखा तथा बीकानेर प्रवासो म भी मुझे यह सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मै अपनी क्षमतानुसार सश्रद्ध उनकी चिकित्सकीय सवा कर अपने आप को धन्य मानता हू।

-डॉ आर पी अग्रवाल,बीकानेर

श्रमण सस्कृति के सजग प्रहरी

साधुमार्ग की इस पवित्र पावन धरा का अक्षुण्ण रखन के लिए बड़े बड़े आचार्यों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। भगवान महावीर क बाद अनक बार आगमिक धरातल पर क्राति क प्रसग आये है, जिनका उद्देश्य श्रमण सस्कृति का जीवन्त बनाए रखने का रहा। एसी क्राति-धारा मे क्रियोद्धारक महान् आचार्य 1008 श्री हुक्मीचद जी म सा का नाम विशेष रूप म उभर कर सामन आया था। आचार्य प्रवर केवल तपस्वी अथवा सयमी ही नहीं थे, वरन् श्रमण सस्कृति के गहरे आगमिक अध्येता थे। तिराण तारयाण के आदर्श आचार्य प्रवर न योग्य मुमुक्षुआ का दीक्षित किया और जो देशव्रती बनना चाहत थे उन्ह देशव्रती बनाया। इस प्रकार सहज रूप से ही चतुर्विध सघ का प्रवर्तन हो गया।

फिर साधुमार्ग म क्रान्ति की धारा पश्चात्वर्ती आचार्यों से निरन्तर आग बढ़ी। हमें परम प्रसन्नता है कि अष्टम पट्टधर समता विभूति विद्वद् शिरोमणि, जिन शासन प्रद्योतक धर्मपाल प्रतिबोधक 1008 आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा का सानिध्य हमे प्राप्त हुआ। श्रद्धेय आचार्य प्रवर का व्यक्तित्व, कृतित्व अनूठा एव महनीय है। आपने रतलाम मे 25 एव बीकानेर मे 21 दीक्षाए देकर सैकड़ो वर्षों से अतीत के इतिहास को प्रत्यक्ष कर दिखाया है। एसी एक नही अनेक क्रान्तिया आचार्य प्रवर क सानिध्य मे हुई। आपके शिष्य शिष्या रूप साधु साध्वी वर्ग ने सम्यक् ज्ञान विज्ञान की शिक्षा म भी आश्चर्यजनक विकास किया है।

चतुर्विध सघ को आध्यात्मिक दृष्टि से सम्पन्न बनाकर ज्ञान दर्शन चरित्र को ध्यान मे रखकर इस कलियुग मे आचार्य प्रवर श्री नानेश न समतामयी ज्ञान रूपी गगा, छोट बड़ हर व्यक्ति के मन में बहादी थी। आचार्य प्रवर क जिसने भी दर्शन किए वह उनका भगत बन जाता था। ऐसा इसलिए होता था कि आपक चेहरे से सदैव समता शाति ही झलकती थी। आपका जितने ही गुणगान करें कम है।

आपके व्याख्याना के प्रभाव से सघ (समाज) द्वारा अनेक वृद्ध आश्रम/विद्यालय धार्मिक सस्थाए स्थापित की गई। आचार्य श्री नानेश समता विभूति

समिति नानेश नगर दाता में गरीबो के लिए नि शुल्क शिक्षण, आवास एव धार्मिक सस्कार प्रदान करने की व्यवस्था है ।

आचार्य प्रवर ने अनेक गैर जाति के भाई-बहिनो को जैन धर्म का उपदेश देकर धर्मपाल बनाया यह एक अप्रतिम उपलब्धि है ।

आचार्य प्रवर ने बीकानेर मे युवाचार्य पद के लिए मुनि श्री रामलालजी म सा को चुना एव समाज के सामने आपने अपने शिष्य की प्रशसा करते हुए कहा-मै चतुर्विध सघ को अनमोल हीरा दे रहा हू जो मरे बाद नवम पट्टधर रूप मे कोहिनूर हीरे की तरह सारे देश म चमक्ता रहेगा अनेक वर्षों तक चमकता रहेगा ।

-सुरेश पटवा, 63, वर्धमान नगर, इन्दौर

शताब्दी के विशिष्ट आचार्य

आचार्य श्री नानालाल जी म सा का महाप्रयाण जैन जगत की विरल विभूति सघ एव शासन के लिए ही नही बल्कि सपूर्ण विश्व के लिए आघात है । विश्व वदनीय आचार्य श्री नानेश मात्र जैन समाज के आचार्य ही नही बल्कि जन-जन के प्रेरक थे । जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र थे ।

अपने 61 वर्ष के सयमकाल मे अपनी कठोर आचार सहिता, साधु मर्यादा व अनुशासन का पालन करते हुए आप अपनी साधना के माध्यम से अध्यात्म के शिखर की ओर निरतर अग्रसर होते रहे । वही अपन शासन मे, सघ म साधु-साध्वी को उत्कृष्ट सयम जीवन की प्रेरणा देकर अनुशासित रखते हुए समता की निर्मल धारा को देश-विदेश मे प्रवाहित कर जन-जन मे जागरण उत्पन्न किया और चतुर्विध सघ क समन्वय का जा अनूठा दृष्टान्त प्रस्तुत किया वह अपने आप में पूज्य गुरुदेव को बेजोड़ शासन नायक के रूप म युगों-युगा तक स्मरण कराता रहेगा ।

-गुलाब चौपड़ा, पूर्व अध्यक्ष,
श्री अ भा साधु जैन समता बालक बालिका मडली

श्रमणोपासक से नाना को जाना

यद्यपि पूज्यश्री के प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य ता मुझ प्राप्त नही हुआ लेकिन श्रमणोपासक द्वारा उनके विचारो एव कार्यो की जानकारी बराबर मिलती रही । श्रद्धेय स्व आचार्य प्रवर उच्च कोटि की आत्मा थी । सस्कार निमाण एव व्यसनमुक्ति अभियान की प्ररणा द्वारा आपने जन जागृति का बिगुल बजाया । धर्मपाल प्रवृत्ति द्वारा निम्न दर्जे के लोगो को ऊपर उठाया। समता का सदेश देकर आपने महावीर वाणी को जन-जन तक पहुचाया ।

पूज्य श्री के स्वर्गगमन से शासन ने एक अमूल्य रत्न खोया है ।

भाव भरी वदना ।

-जे के सघवी
सपादक-शाश्वत धर्म

वात्सल्य वारिधि

समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म सा की वाणी मे जादुई असर था । जिन्हे वे प्ररणा प्रदान करत थे उसको सामने वाला सहर्ष अगीकार कर लेते था । सैंकड़ो हजारो भक्तो से वे सदा घिरे रहते थे । उनक व्यक्तित्व मे चुबकीय आकर्षण था । छोट बड़े सभी पर समान भाव रखते थ । मै लगभग ५-६ वर्ष से उनके चरणो मे निकट से रहा । छोटे से बालक पर भी व असीम वात्सल्य बरसाते थे । मुझे उनके सानिध्य मे रहते हुए जो आत्मीय वात्सल्य मिला वह वर्णनातीत है । व श्रद्धालुओ को वात्सल्य का प्रसाद प्रदान करते थे । इन सब को देखत हुए सिद्ध होता है कि आचार्य देव वात्सल्य के समुद्र थे जा समागत भक्ता का लुटाते रहत थे । ऐसे आस्था के अमर देवता आचार्य श्री नानश क महाप्रयाण स समूचा जैन समाज रिक्तता का अनुभव कर रहा है । -गणेश बैरागी

नाम छोटे गुण बड़े

आचार्य श्री नानालाल जी म का नाम छोटा था

जन्म स्थान दाता गाव भी छाटा सा परतु उनमे गुण बड़े थे । आचार्य भगवन् ने जा देन समाज का दी है वह अजर-अमर रहगी । शताब्दिया तक उन्हे याद किया जाएगा । उनम जा महान् गुण थे उनका वर्णन करना हमारी बुद्धि से पर है । आज विश्व मे अनेक समस्याए है समता दर्शन से उन सभी समस्याओ का हल खाजा जा सकता है ।

आचार्य भगवन् न अपने जीवन को कितना उपलब्धिपूर्ण बनाया कि आज वे जन जन की आस्था के केन्द्र बन गए । कितना आत्मबल था उनमें, कितने कष्ट आये पर विचलित नहीं हुए । वे कष्टो को साधारण मानकर सहज रूप से झेल लेते थ । जीवन क अन्तिम समय मे उन्होंने प्रगाढ़ समता का परिचय दिया । कितन कष्ट थे शरीर म पर उफ तक नही किया । दवाइ नहीं डॉक्टर नही मै अपनी साधना म ही लीन रहूगा कितनी महान साधना थी उनकी । उनकी दूसरी देन थी समीक्षण ध्यान । इसके द्वारा उन्होंने अपना जीवन तो सजोया ही साथ ही समाज के हम सभी भाई बहिनो का भी समझाया कि तुम अपने अन्तर को टटोलो उसम कहा कहा गदगी है, कहा-२ राग-द्वेष है कहा काम क्रोध है मान है माया है लाभ है इन सब दुष्प्रवृतिया को एक एक करके बाहर निकालो । जब तुम्हारी ये दुष्प्रवृतिया एक-एक करके कम होती जाएगी ता तुम्हारी आत्मा स्वच्छ बनती जाएगी । तुम प्रभु के निकट पहुच जाओगे । वे जब भी व्याख्यान देते यही कहते कि तुम अपने अन्तर मन को टटोलो, अन्तर को देखा । जैसे हम अपने शरीर व घर का झाड़-पाछ कर स्वच्छ करत है वैसे ही इस आत्मा की सफाई करो । प्रयत्न करते रहने स अवश्य यह एक दिन स्वच्छ बन जायगी और तुम प्रभु के निकट पहुच सकोगे। अपेक्षित है कि हम उनकी शिक्षाओ का आत्मसात् करे ।

-यशवन्त सरूपरिया उदयपुर

, दर्शन, चारित्र की प्रतिमूर्ति

श्री का सम्पूर्ण जीवन ही त्याग तप एव की सौरभ से आप्लावित था । आचार्य श्री की वाणी म आज हृदय म पवित्रता एव आचरण म उत्कर्ष था । आपका बाह्य जीवन जितना नयनाभिराम था उससे भी अनेक गुणा बढ़कर आपका अन्तर जीवन सौरभमय था । आपके जीवन म सागर सी गहराइ पर्वत सी ऊचाइ, चन्द्र सी शीतलता एव सूर्य की तेजस्विता थी । धर्म की महाप्राण सरलता, समता ता आपके जीवन म कूट कूट कर भरी थी । आपकी वाणी विचार एव भाव सरलता पूर्ण थे ।

आचार की दृढ़ता और विचार की उदारता आपक व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषताए थी । आचार्य श्री कहा करते थे कि आचार म मेरु पर्वत की तरह अडोल बने रहो और विचार मे गगा की पवित्रता लिए बहते चलो । सभी सम्प्रदाय के लोगा को आप में पूर्ण आस्था एव अगाध श्रद्धा भक्ति थी ।

आचार्य श्री नानेश सौम्य प्रशान्त एव उदात्त प्रकृति के महान सन्त थे । उन्होंने अपन जीवन काल मे अनेक विधाओ म सत्कर्म की धाराए प्रवाहित की । समता साधना के प्रचार मे तो उनका अपना एक विशिष्ट स्थान है जो चिरकाल तक भक्तगणो क हृदय म सुरक्षित रहेगा ।

इतिहास मर्मज्ञ ज्ञान और क्रिया क साकार रूप आचार्य श्री का देवलाक गमन जैन समाज क लिए अपूरणीय क्षति है। ऐसी दिव्यात्मा के चरणा म सादर नमन ।

-नेमनाथ जैन उपाध्यक्ष जैन कान्फ्रेन्स इन्दौर

छल कपट से दूर थे

हिमालय सा उच्च था उनका साधुता भरा जीवन
थे जिन शासन के नूर थे ।
आचार्य श्री नानेश छल-कपट से दूर थे ।
जीते जी किया सग्रह सयम का धन ।
जब चले तो पूर्णतया भरपूर थे ।

अचार्य श्री जी म [illegible] सत्यनिष्ठा और साधुता आदि गुणो के हिमालय उच्च व [illegible] थे । वे [illegible] सहज और मृदुभाषी थे । एक

विशाल धर्म सघ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर भी वे छोटे-वड़ धनी-गरीब सभी को पुण्यवान जैसे आदर पूर्वक मधुर सबोधनो से पुकारते थे।

स्वभाव मे अत्यत विनम्रता, वाणी मे मिश्री सी मधुरता और चेहरे पर हर समय प्रसन्नता। मुस्कान देखकर लगता था आचार्य श्री नानश अनुशास्ता ही नही श्रावक श्राविकाओ के माता-पिता हितचितक और कल्याणकारी भी थे। आज उन श्रद्धास्पद समताधारी का नाम स्मरण करते ही हृदय गद्‌गद् हो जाता है। युग-युगान्तर तक आपके सयम की महक इस चतुर्विध सघ मे गूजती रहेगी तथा वह आगे आने वाल मुमुक्षुओ को ज्ञान दर्शन एव चारित्र की अभिवृद्धि के लिए प्रेरित करती रहेगी।

-मनोहरलाल चण्डालिया सचिव,
आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट, नानेश नगर

सेवा सारल्य व सहजता की त्रिवेणी

आचार्य श्री नानेश ने अपना तन-मन समर्पित करते हुए पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलाल जी महाराज साहब की जो सेवा की, उनक प्रति जो अडिग आस्था का समर्पण भाव रखा उसी का यह प्रमाण है कि ३८ वर्ष के आचार्य काल मे ही उनकी कीर्ति चारो ओर फैल गई। जहा भी पधारे, हजारो की भीड़ उनके दर्शनो के लिए उमड़ पड़ती थी और लोग उनकी मुख मुद्रा देखकर/वाणी सुनकर धन्य-धन्य हो उठते।

आचार्य श्री नानेश क कपासन होली चातुर्मास के अवसर पर सत्सग का लाभ मिला। उनके प्रवचन सुनने व उनसे बातचीत करने का अवसर मिला। तब यह अनुभव हुआ कि इतने विशाल साधुमार्गी जैन सघ क अष्टम आचार्य ३५० से अधिक साधु-साध्वियो के सरक्षक अपने दैनदिन व्यवहार में कितने सरल व कितने मिलनसार हैं। कितनी नम्रता है। इनके जीवन मे और वाणी मे कितनी मधुरता है। कभी भी देखो, उनका मुख मडल प्रसन्नता से दमकता रहता था।

-मदन चण्डालिया, कपासन

मेरे श्रद्धा दीप

पूज्य गुरुदेव भौतिक रूप से हमारे बीच में नहीं रहे किन्तु साधक का महत्त्व तो अभौतिक होता है। वे अपनी समता साधना की ज्योति, सेवा और सद्भावना की सुरभि जो हमारे बीच छोड़ गये है वह अभौतिक है, स्मरणशील है। जब भी हम उनका ध्यान करे उन्हे अपने समीप विद्यमान पाते है। बालवय से ही पैतृक सस्कारो की बदौलत आचार्य श्री नानेश के प्रति हमारे दिलो में अटूट श्रद्धा थी। आराध्य के प्रति आस्था गहराती है तो उपलब्धियो के द्वार स्वत उद्‌घाटित होते चल जाते है और हमारे अनन्त-२ पुण्योदय से साधना सुनिष्ठ आराध्य हम मिले थे, जिनकी सौम्य छवि देखत हुए नयन तृप्त ही नही होते थे। जीवन के क्षणो मे जब कभी भी सकट के बादल घिरते हैं, आस्थाशील मानस सहज ही आराध्य की उपासना मे तल्लीन हो जाता है।

मेरी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य विगत कुछ वर्षो से अस्वस्थ चल रहा था। चिकित्सको से जाच करवाने पर पता चला कि उनके पित्ताशय में पथरी है जिसका इलाज सिर्फ आपरेशन द्वारा ही सभव है।

भोले के भगवान होते है की कहावत क अनुसार इस वर्ष श्री नाना-राम की कृपा से पू महाश्रमणी रत्ना शा प्र श्री इन्दुकवर जी म सा आदि ठाणा १४ का चार्तुमासिक सानिध्य प्राप्त हुआ। म सा श्री जी क स्वय के रग रग मे शासन व शासनेश के प्रति अपूर्व निष्ठा है। जिनके सद्‌सस्कारो व उपकारो से मेरी श्रद्धा का रग और गहराता गया। एक दिन रात में अचानक मेरी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य गड़बड़ होने लगा। रात म जब चिकित्सक को दिखाया तो उन्होंने कहा कि आपरेशन करवाना ही पड़ेगा अन्यथा मरीज की हालत और बिगड़ सकती है रातभर म फिर ये प्रोग्राम बना कि सवेरे जोधपुर ले जाकर ऑपरेशन करवा देंगे। जोधपुर जाने से पूर्व मै सपत्नीक म सा की सेवा म उपस्थित हुआ। म सा ने अपने वात्सल्य पूर्ण शब्दो म धैर्य बधाते हुए कहा तीर्थंकर भगवन्तो की स्तुति व गुरु नाम का स्मरण करते

मे रखना। मांगलिक सुनकर मै जोधपुर के लिए लिए रवाना हो गया एव रास्ते भर एव डॉ के सलाह अनुसार मानोग्राफी थियेटर म जाने तक मै सपत्नीक जय गुरु नाना, जय गुरु नाना के स्मरण म तन्मय था। विस्मय-कारी घटना घटी। चिकित्सकों ने रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा ऑपरेशन की जरूरत नही है जिसकी वजह यह थी कि सानोग्राफी म पथरी आई ही नहीं न जाने कहा चली गई। हृदय अपार खुशियां स भर गया। गुरु के नाम की महिमा ने बिना ऑपरेशन आरोग्य लाभ दे दिया। उस दिन से आज तक कोई भी तकलीफ महसूस नहीं हुई। आचार्य देव के हृदय में सदैव करुणा की धारा बहती थी यही कारण है श्रद्धा से अवगाहन करने वाला अपूर्व ताजगी स भर जाता था ऐसे आराध्य का साया हमारे ऊपर से उठ गया। अन्तर वदना स्मृति के क्षणों म व्यतीत कर देती है। आपका साधनापूत जीवन अंतिम श्वासो तक स्मृति मे उभरता रहेगा।

-सुभाष सेठिया पाली

तुमको माना था अपना खुदा

तुमको माना था अपना खुदा।
पर गुरुदेव तुम तो हो गए हमसे जुदा॥

भगवान महावीर ने कहा है घोरा मुहुत्ता अबल सरीरं। भारंड पक्खीव चर अपमत्ते। समय बलवान है और शरीर निर्बल है और यही हुआ जन-जन के श्रद्धेय आचार्य भगवन् के साथ। यद्यपि तन मे वदना का महाप्रकोप था पर उस वेदना आक्रांत काया मंदिर म भी सयम समता समीक्षण की दिव्य ज्योति अखंडरूप से जलती रही। चिकित्सकीय सुविधाएँ, भक्तो की भक्ति चतुर्विध सघ का अनुपम समर्पण उपस्थित थे परतु काल के समक्ष सभी असहाय बन देखते ही रह गये और यह समता विभूति जो जिन शासन की महान विभूति थी पुनीत निधि थी दिव्यलोक की यात्रा पर चल पड़ी। सम्पूर्ण मानव समाज के मर्मीहर रूप इस चिराग के गुल जाने से सभी विभाग वेदना से व्यथित हो उठे।

मानवता की सुवास से सुवासित महिमा मंडित आचार्य भगवन् का जीवन करुणा की सरिता प्रवाहित करता हुआ निरतर भारड पक्षी की तरह अप्रमत रहा।

अपने आदर्श चिह्न अंकित कर
प्रयाण कर गये उज्ज्वल दिशा मे
श्रद्धा समर्पणा के दीप जलाकर
आखो से ओझल हो गये
न जाने किस दिव्य दिशा मे॥

आप जहा भी पधारे हो हमे वहा से दिव्य शक्ति प्रदान करते रहे शासन की फुलवारी खिलाते रहें।

-सुन्दरलाल सिपची, गगापुर

आस्था के अमर देवता

आचार्य नानेश हुक्म सघ के अष्टम पट्टधर रूप मे जिन शासन प्रख्यात अनुशास्ता थे। सयम साधना के अनूठे सगम व श्रुत चारित्र रूप आराधना के मगलमय सेतु थे। नानेश यनाम समता और समता यनाम नानेश के युति पक्ष को उन्होंने सम्यक् चरितार्थ किया था। मै तो यह मानने को कतई तत्पर नहीं कि आचार्य नानेश हमारे बीच नहीं है। उनका सक्षम चयन समता सुशिष्य के रूप में नवादित नवम पट्टधर के समाधिकृत स्वरूप में आचार्य श्री राम है। इस महनीय अवदान पर हमें यथेष्ट गरिमा की अनुभूति गुलाम्य यथाचित अहोभावो म ही हो सकती है। इस अपेक्षाकृत महत्वाकाक्षाओ के अन्यथा पक्षा मे समादत या शब्दांकित नहीं किया जा सकता। सयम और साधना की तुला पर ही इस सद् सतुलित किया जा सकता है। युति रूप श्रुत व चारित्र का यह एक समहार्द है।

समता के अमर दवता ने हम समता के चतुर्आयाम दिए समता सिद्धात, समता जीवन समता आत्म दर्शन व समता परमात्म दर्शन। उनके पट्टधर आचार्य श्री राम ने समता समाज रचना म व्यसनमुक्ति जीवन मगल हेतु पच सूत्रो का आह्वान किया है

विनय, अनुशासन शुद्ध जिज्ञासावृत्ति, तत्त्व समीक्षण एव आत्म अन्वेषण। उपरोक्त नव सूत्र को

हृदयगम करते हुए जिन शासन की भव्य प्रभावना में ही सच्ची श्रद्धाजलि होगी ।

-सोहनलाल लूणिया, देशनोक

भारत की महान् विभूति

भारत कृषि और ऋषि प्रधान देश है । भारत वर्ष अनादि काल से आध्यात्मिक महापुरुषो को समय-समय पर जन्म देता रहा है, जिन्होंने विश्व मानवता को सन्मार्ग पर चलने का संदेश दिया है । ऐसे महापुरुषो एव ऋषि मुनियो की परम्परा मे आधुनिक काल मे जैनाचार्य स्व नानालालजी म सा का महत्वपूर्ण स्थान है ।

श्रमण भगवान् महावीर की वाणी का सही रूप से पालन कर आपने आत्म कल्याण पर विशेष जोर दिया । आप सत्य प्रिय थे और सदा सत्य पर हिमालय की तरह अटल रहे । अनेक बाधाए आई परतु आप चट्टान की तरह मार्ग पर डटे रहे । मानव मात्र के लिए आपने जो सेवा की उसे विस्मृत नही किया जा सकेगा । वास्तव मे आप एक युग पुरुष थे । विनय, विवेक, विनम्रता आप के रग रग मे समाहित थी ।

आप जैसे महायोगी को देखकर जन मानस के मन म सुखद आन्तरिक अनुभूति का सचार हो जाता था । आप एक मात्र ऐसे जैनाचार्य थे जिन्होंने सपूर्ण विश्व को समता का सदेश दिया ।

किसी भी आचार्य के लिए अपन उत्तराधिकारी का निस्पक्ष चयन करना बहुत बड़े महत्त्व की बात होती है । आपने बहुरत्ना वसुधरा देशाणे के सच्चे सपूत निर्मल प्रज्ञ निधि, शास्त्रज्ञ वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म सा को १७ वर्ष लगातार अपने पास रखकर इस पद के योग्य निर्मित कर अपने उत्तराधिकारी के रूप मे चयनित कर चतुर्विध सघ को एक अमूल्य रत्न सौपा । धन्य है ऐसे महान् आचार्य को जिनकी सूक्ष्म चेतना ने कोहिनूर के समान व्यक्तित्व का सृजन किया । हम देशनोकवासी गौरव का अनुभव करते है ।

आपने पूर्ण सजगता की स्थिति में सलेखना सथारा कर समाधि पूर्वक उदयपुर मे देहोत्सर्ग किया । ऐसे थे हुकम गच्छ के अष्टम पट्टधर समता सदेश वाहक आचार्य श्री नानेश ।

-धूड़चन्द बुच्चा, देशनोक

युग पुरुष आचार्य

मेवाड़ के कण कण म साहस, शौर्य और वीर रस का रक्त बिखरा हुआ है । जहा रानी कर्मवती जवाहर बाई, मीरा बाई, पन्ना धाय ने अपन प्राणो की परवाह किये बिना सहर्ष हसते-हसते बलिदान कर दिया । जहा बप्पा रावल, राणा सागा, राणा लाखा और महाराणा प्रताप ने देश प्रेम की ज्वाला प्रज्वलित की थी । उसी दाता गाव में जन्म लने वाली महान आत्मा के पिताश्री मोड़ीलालजी, माता शृगार बाई का क्या मालूम था कि वह एक दिन मेरा पुत्र लाखो का वदनीय बन जाएगा व एक दिन राष्ट्र धर्म को दीपाने वाला राष्ट्रीय सन्त बन जाएगा । इतिहास बनाने वाले कीर्ति पुरुष आचार्य श्री नानेश भौतिक शरीर से अवश्य ही चले गये है मगर ज्ञान, दशन, चारित्र तप त्याग की महक, विराट व्यक्तित्व की अपनी छाया छोड़ गये है ।

वे हमेशा सकटा मे अटल रह, मुसीबता मे दृढ़ रहे, दृढ़ सकल्पी बने इसी से इतिहास बनता गया । ऐसे आगमज्ञ तत्वदर्शी आचार्य श्री ने हिम्मत नही हारी सकटो से जूझते रहे । निरन्तर प्रगति पथ पर आग बढ़त गए । जन मानस को ज्ञान का निर्भीक चिन्तन प्रदान करवाते रहे ।

हिम्मत कीमत होय बिन हिम्मत कीमत नही ।
करे ना कोई आदर कोय, रद्द कागज ज्यू राजिया ॥

वे युग के महापुरुषा मे है जिनके पीछे लाखो व्यक्ति चलते है । साधु मर्यादाओ ने अपनी आन बान शान के साथ सात आचार्यो की कीर्ति गाथाओ को और गौरवान्वित किया । वे इतिहास के महान यशस्वी युग पुरुष बन गए जिनके दिल मे सदा दया, करुणा का झरना बहता था । अनेका के झगड़ मिटा दिए । उस महामना ने स्वय अगरबत्ती की तरह जलकर सुगन्ध ससार को प्रदान की । ऐसे युग पुरुष महान तपोधनी समता की विरल विभूति महात्मा को युगो-युगो तक आज का

गुरुदेव से प्रतिदिन दो ढाई घंटे बातें होती थीं । तब गुरुदेव ने स्व-कल्याण तथा सर्वजन हितार्थ कार्य करने के लिए प्रेरित किया और कहा -

जो बिना कहे करें देवता, कहने पर जो करे वह इंसान जो कहने पर भी न करे उसे क्या कह सकते है । आप जानते ही हैं । इसके बाद तो ऐसा महसूस होता था जैसे गुरुदेव के साथ जन्म जन्मांतर का रिश्ता है। सघ कार्य एवं अन्य अवसरों पर गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त करने के सैकड़ों बार अवसर प्राप्त हुए। ऐसी सौम्य सूरत, समता का साकार रूप जीवन पर्यन्त हृदय मे बसा रहेगा। असीम गुरु कृपा को देखिए जब वैराग्यवती राजमती डागा (विराट श्री जी म सा) की दीक्षा प्रसग से उदयपुर गया । उस वक्त गुरुदेव काफी अस्वस्थ थे । बावजूद इसके इन्होंने मुझसे सहजता एव सजगता से बातचीत की, गंगाशहर भीनासर सघ के बारे में पूछा धर्म ध्यान करने के लिए प्रेरणा दी ।

-नवरतनमल बोथरा, भीनासर

अद्भुत-व्यक्तित्व

महापुरुषों का व्यक्तित्व बहुत ही अद्भुत और निराला होता है । समाज की सीमाओ में आबद्ध होकर भी वे अपना सर्वतोमुखी विकास कर जन जन के मन में अनत श्रद्धा समुत्पन्न करते है । उनकी दिव्यता भव्यता और महानता को निहार कर जन-जन के अन्तर्मानस में अभिनव आलोक जगमगाने लगता है । वे समाज की विकृति को नष्ट कर सस्कृति की ओर बढने के लिए आगाह करते है । वे आचार और विचार में अभिनव क्रांति का शखनाद करते है। वे अध्यावसाय के धनी होते है, जिससे कटकाकीर्ण दुर्गम पथ भी सुमन की तरह सहज सुगम हो जाता है। पथ के शूल भी फूल बन जाते है । विपत्ति भी सपत्ति बन जाती है। उन्हीं महापुरुषो की पावन पक्ति में आते थे मेरे परमश्रद्धेय सद्गुरुवर्य अध्यात्मयोगी समता सरोवर के राज हस आचार्य श्री नानेश ।

-मुकेशकुमार श्रीश्रीमाल, पाली मारवाड़

इस शताब्दी के युग-पुरुष

आचार्य श्री नानेश स्थानकवासी ही नहीं वरन् समस्त जैन समाज के अति विशिष्ट आचार्य थे। समता की तो प्रतिमूर्ति थे। उनका जीवन ही उनका सदेश था।

आचार्य श्री नानेश के पावन दर्शन का सौभाग्य मुझे वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म सा (तत्कालीन पदवीय म्हाराजी) के वैराग्य काल से प्राप्त हुआ। तब से बराबर मैं सपर्क मे रहा।

अहमदाबाद चातुर्मास मे लगातार चार महीने पत्राचार के माध्यम से सेवा का अवसर प्राप्त हुआ मुझे। तब से मेरा हर क्षण हर लम्हा उनके आशीर्वाद की मधुर ज्योत्स्ना से रोशन रहता है।

उनके आशीर्वाद का ही साया था कि आज तक मेरी जिन्दगी में जब कभी भी मुसीबत बाहे पसारती उनके स्मरण मात्र से वह खुद ब खुद काफूर हो जाती थी। श्रद्धा और आभार का ही सैलाब है जो शब्द बनकर आज मेरी कलम से फूट पड़ा है।

-कमलकिशोर बोथरा, पहाड़ी धीरज, दिल्ली ७

अमृतमयी गगा सी पावनता रत्नाकर सम गाभीर्य

आचार्य श्री नानेश इस शताब्दी के महान् युग पुरुष, आध्यात्मिक योगी महामनीषी, समता के दिव्यमशाल शीतल सुधाकर, सयम सुमेरु, तेजस्विता मृदुता, क्षमा सिन्धु, ज्ञान-मधुकर के पर्याय मे जो प्रतिपल वदनीय एव अभिनदनीय है। अगाध भक्ति आप श्री जी के सरल सरस सद्गुणों को मुखरित करते हुए थकते नही है। आप श्री जी का अमिट प्रभाव जैन तक ही सीमित नही था अपितु आपने मालवा की पुण्य धरा पर ग्रामीण अचलों मे हजारो दलितो को व्यसनों से मुक्त कर उनका जीवन रूपान्तरित किया। विहार पर आपका पूर्ण आधिपत्य रहा। समग्र जैन समाज मे एक रिकार्ड है कि एक ही दिन एक ही स्थान रतलाम में २५ दीक्षाए और बीकानेर में २१ दीक्षाए आप श्री जी के

पावन सानिध्य मे सपन्न हुई।

आचार्य श्री नानेश सच्चे अर्थों मे साधुता के प्रतीक रहे। प्रवचनो के साथ सपूर्ण विश्व कल्याण हेतु तथा आतरिक मन की शाति हेतु अनेक सफल प्रयोग किए। अतिम समय तक रोम-रोम से समता का झरना प्रवाहित हो रहा था जो इस शताब्दी मे पूरे विश्व का सर्वश्रेष्ठ दृष्टात है।

-राजेन्द्र वराला, रतलाम

अप्रमत्त महासाधक

परमपूज्य आचार्य देव का व्यक्तित्व व कृतित्व जैन समाज के लिए ही नहीं अपितु समग्र समाज व मानव के लिए दीप्तिमन्त प्रेरणा दीप था। आपने समाज को नई दिशा प्रदान की। मर्यादा के भीतर रहते हुए समाज मे व्याप्त कुरीतियो, रिवाजों पर अपनी शाब्दिक छैनी से प्रहार कर नया स्वरूप प्रस्तुत किया।

परम आराध्य देव अप्रमत्त महासाधक अपने लक्ष्य को लक्ष्यीभूत हो, इन्हीं श्रद्धा सुमनो के साथ।

-नथमल तातेड़, बीकानेर

ऐसे थे हमारे आचार्य

आचार्य श्री नानेश के व्यक्तित्व मे सरस और सहज स्फूर्त वात्सल्यमय कोमल सुस्पष्ट वाणी की अभिव्यजना सहित छोटे बड़े सभी के प्रति नवनीत सी मृदुता एव कुसमु सी कोमलता झलकती थी। आधुनिक सदर्भ विज्ञान की चकाचौध से पराभूत जन चेतना मे विज्ञान दर्शन एव सस्कृति के समन्वय सूत्र प्रस्तुत कर जनजागृति करने मे आचार्य श्री नानेश अनुपम अग्रगामी सर्वाधिक सजग, सर्वतोभावेन लोकप्रिय थे। आचार्यदेव का आचार सदैव सौहार्द्र, स्नेह, सद्भाव समत्वयोग वाला था। उनका विराट व्यक्तित्व उस इन्द्र धनुष की तरह सुनहला और मोहक है जिसे अनेकानेक बार देखने पर भी नेत्र तृप्ति का अनुभव नही कर पाते है। साधुत्व की दृष्टि से वे साधना के उच्चशिखर का छूते थे तथा उनका आचरण वैचारिक एव व्यावहारिक मेरूवत् अचल, निष्कप एव अडोल था। स्वय क जीवन को सफल बनाना और दूसरो का जीवन निर्माण करना इन दोनो मे काफी अन्तर है। जगत में आत्मसाधना और आत्मध्यान करने वाले और उसी मे तल्लीन रहने वाले निवर्तक साधु पुरुष कम नही है लेकिन आचार नियमो का यथाविधि पालन करने के साथ-साथ जन समाज का जीवन निर्माण करना जन-जन को ज्ञान और चरित्र का/ शक्ति का दान देकर जैन बनाना और मानव समाज को सद्धर्म का मर्म शास्त्र रीति तथा विज्ञान नीति द्वारा युक्ति-प्रयुक्ति पूर्वक समझाकर धर्मनिष्ठ बनाना आदि धर्ममूलक सत्प्रवृतिया करने वाल साधु पुरुष विरले ही होते है। ऐसे विरले महापुरुषो मे आचार्य श्री नानेश थे। आचार्य श्री की व्याख्यान शैली अत्यन्त मधुर, अनुभूति पूर्ण, सरल, मार्मिक और आडम्बरो से रहित थी। वह हृदय तक पहुच करने वाली होती थी। उनका जीवन समग्रत समताभिमुख था। उनके याग और प्रयाग और ध्यान साधना तथा वैराग्यवाणी और कर्म आचार व्यवहार सबका आधार समत्व था। उनका साहित्य समताभिमुख था। त्यागमय श्रद्धा शब्द-शब्द म टपकती थी। उनकी वाणी मे समत्वघोष था। ध्यान समत्वग्रही था जीवन के अतल से व समत्व रस ग्रहण करते थे। वे समग्रत समत्व एव चेतनानुवर्ती न्याय के मूर्त स्वरूप थे। ऐसी महान विभूति का वर्णन जितना करें, उतना ही कम है। वह समतामय आत्मा, वह गौरवशाली प्रतिभा वह त्याग-तपस्या व तेज, वह सत्यप्रियता और वह मधुर वाणी अब कहा।

-कवरीलाल कोठारी, पद्मा देवी कोठारी, नागौर

कालजयी व्यक्तित्व के धनी

आचार्य नानेश जैसे महापुरुष ता शताब्दिया म एकाध ही पैदा हाते हैं। इस महात्मा का शरीर गज म मिल कर भल नामानिशा मिटा गया है परन्तु सद्साधना की सुवास दिग्दिगत म व्याप्त हा चुकी है। वह सत तो

कालजयी व्यक्तित्व का धनी बन चुका है। आचार्य नानेश की संघ विस्तार की प्रवृत्ति महावीर के शासन मे सदैव स्वर्णाक्षरो मे अंकित रहेगी। इनकी सादगी-साधना-चारित्र और मधुरवाणी की खुशबू शताब्दियों तक उनके सुशिष्यो-अनुयायियों के जीवन को महकाती रहेगी। इनकी राख के कण जिस स्थान का स्पर्श करेंगे वह सीमा भी कुंदन बन जाएगी। गुरुदेव का नाम इतिहास मे अमर हो गया है। उनकी कीर्ति पताका काल की सीमाएं लांघकर कालातीत बनेगी। वे कंधे धन्य है जिन पर सवार होकर गुरुदेव मरुधरा से विहार कर मेवाड़ अंचल में गुरु गणेश की समाधि के समीप आकर अपनी समाधि मे समा गये।

प्रत्येक दृष्टि मे उनका व्यक्तित्व आदर्श एवं मानवीय संवेदनाओ से ओतप्रोत रहा है। उनकी साधना का पारदर्शी आभामंडल अनेक के मांगलिक जीवन का दस्तावेज बन गया। जिस प्रकार एक दीपक की लौ हजारो दीपक को प्रकाशित कर सकती है वैसे ही नाना जैसे महापुरुष ज्ञान-दर्शन-चरित्र के गुणों से अपने हजारो अनुयायियों को दिशा निर्देश दे सकते है। उनके उपदेशो पर चल कर अनुपालना करते हुए अपना इह लोक एवं परलोक सुधार सकते है तथा समाज के पिछड़े वर्ग के बेरोजगार नवयुवको को प्रशिक्षण, रोजगार मे मदद करके, असहाय विधवा बहनो के लिए सहायता भूखे का भोजन, रोगी को दवा, निर्वस्त्र को वस्त्र देकर हम सब अपनी सक्षमता का सही उपयोग करे, यही आचार्य नानेश को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आपका जाज्वल्यमान व्यक्तित्व संत विनोबा को भी प्रभावित किए बिना नही रहा। मानवीय संवेदनाओ के परिप्रेक्ष्य मे हरिजन गिरिजन, बलाई जाति के व्यक्तियो के जन कल्याण संस्कार, व्यसन मुक्ति शाकाहार आदि पर आपने मौलिक चिंतन कर मार्ग प्रशस्त किया।

भूले भटके नवयुवको को महावीर का अमर संदेश देकर सदा सदा के लिए अपनत्व प्रदान किया। काम-क्रोध, माया, लोभ को सदा ना ना करते अपने नाना शब्द को सार्थक किया। अहम को त्यागने वाले और अहम का जनन वाले आचार्य नानालालजी म सा सदैव अमर रहेंगे। उनका कृतित्व एवं व्यक्तित्व हजारो साला तक समता के धरातल पर अपनी सदैव पहचान बनाए रखेगा। आपश्री के वचनो म अमृत और भावो म फूल खिले होते थे।

समता विभूति स्व आचार्य नानेश जीवन की व्यर्थता एवं सार्थकता दोनो को देख चुके थे। उन्होंने अन्तर मन के नयनो से अपने जीवन को पढ़ा है। उन्होंने अनुभव किया है स्वयं की आत्मा की आवाज से बढ़ कर कोई प्रेरणा नहीं है। यदि हम उनके जीवन को बारीकी से पढ़े तो नित नये ज्ञानवर्द्धक अध्याय पढ़ने को मिलेंगे। जब भी उनके भीतर के गाम्भीर्य मे गोता लगा कर अनुभव करेंगे तो एक पंक्ति मे अन्तर मौन एक सूत्र तैर कर आयेगा। वह संदेश उतना ही पवित्र होगा जितना पवित्र वेद का प्रवचन होता है।

आचार्य नानेश चिंतनशील जीवनद्रष्टा, अध्यात्म मनीषी थे। उनका दृष्टिकोण सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् और विचार सार्वभौम थे। गंभीर विषयों को भी व्यवहारिक और मधुर बना देते थे। मेवाड़ के दांता ग्राम म जन्म लेने वाले जैनाचार्य नानालाल जी महाराज समता एवं चारित्रिक उज्ज्वलता के पर्याय थे।

आपने समीक्षण ध्यान के प्रणेता एवं साहित्य सृजन के नाते अनेक ग्रंथो की रचना की जिसस उनका अमर साहित्य युगो युगो तक स्मरण किया जाता रहेगा।

-विजयसिंह सोदा विजय

रिक्तता की अनुभूति

ये आसमा, चांद सितारे पवन घटाएं, यह महकती प्रफुल्लित धरती, नदियों की यह चहचहाट, पक्षी की खनखनाहट, भवरो का गुंजन, सब अपनी जगह पर विद्यमान है, लेकिन फिर भी लगता है कि कुछ परिवर्तन है, कहीं रिक्तता है।

न जाने ऐसा क्या है कि इनकी हंसी की खनक इनका इठलाना इनका चलना समुद्र की गहराई म

पहाड़ो की कदराओ मे कही गुम हो गया है, पत्थर की दीवारा मे कही कैद हो गया है, किनकी कमी से ये खामोश, वीरान, निशब्द हैं ? वे हैं पूज्य गुरुदेव नाना।

जिनकी स्नेह की अमृतमय छाव म मैंने अपना अब तक का सफर तय किया, जिनसे श्रद्धा की अनुपम भेट मिली है मुझे। श्रद्धा के उस दीपक को, भक्ति की उस ज्योति को, स्नेह की उस निशानी को भूल पाना मुमकिन तो नही होगा, मेरी भावमय श्रद्धा सुमन।

-डॉ सुनील बोथरा, नोखा (बीकानेर)

आत्मबल व सेवा के आदर्श

आचार्य श्री की स्मरण शक्ति कुशाग्र थी व आत्म-बल बहुत तेज था। आपके आत्म बल को देखकर डॉक्टर हैरान होते थे कि इतनी अस्वस्थता के बाद भी आपका आत्मबल अनुपम था।

आपने फरमाया था कि सघ के लिए यदि उनका शरीर भी चला जाये तो कोई परवाह नही। आप श्री सतो की सेवा का पूरा ध्यान रखते थे। जब आपश्री बीकानेर हॉस्पिटल मे विराज रहे थे। श्रद्धेय श्री ज्ञान मुनि जी म सा को तीव्र बुखार आ गया था। डॉक्टर सा ने कहा दूध लेना है। आप श्री किसी को न कहकर दूध लेने खुद पधार गये। जब वापस पधारे तब पता चला आप श्री मे सेवा भावना कितनी थी। आपश्री का गुणगान जितना करें, कम है।

-सुन्दरलाल नाहर कलाईन (आसाम)

सपूर्ण भूमि के वजन से वजनी था वह दिन

प्रात स्मरणीय भारत माँ की गोद मे अनेक महापुरुष पैदा होते आये हैं। ऐसी वीर प्रसूता ऋषि मुनियो का तपवन, राम, गौतम एव महावीर की इस पवित्र भूमि भारत मे जो सच्चे सुपुत्र पैदा हुए है उनमे से परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब एक थे। आज से ८० वर्ष पूर्व शृगार माता की कोख मे जन्म लेने वाले एक नन्हे बालक की जो कि नाना के नाम से जाना गया आज पूरे भारत म ही नही वरन् विश्व मे आध्यात्मिक ज्योति चमक रही है।

२७ अक्टूबर ९९ का दिन आचार्य भगवन् श्री नानेश के महाप्रयाण का दिन था। वह दिन कैसा था ? उस दिन पत्थर हृदय व्यक्ति भी रो पड़ा ता जन साधारण की बात कुछ और ही थी। आचार्य श्री नानेश ने एक ऐसी ज्योति जलाई थी जो कभी विलीन नही हुई और उसका प्रकाश भी कभी कम नही हुआ। कभी अस्त न होने वाले सूर्य के समान आचार्य श्री जी की आध्यात्मिक ज्योति आज भी पूरे ससार मे चमक रही है। इस ज्योति का नाम है समता। समता सिद्धात उनके शब्दो मे ही नही वरन् उनके व्यवहार म भी दृष्टिगोचर होता था। उनकी कथनी ओर करनी म कोई अन्तर नही रहता था जो वह कहते थे वही वह करते थे। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मुझे देखने को मिला। आचार्य भगवन् जब रतलाम मे दूसरी बार चातुर्मास करने हेतु पधार रहे थे। उस वक्त मुझे उनके साथ विहार म पैदल चलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आचार्य गोधरा से विहार कर रहे थे। उस वक्त विहार करके अगले गाँव चचलाव रेल्वे स्टेशन पर ठहर गए थे। उस स्टेशन पर आहार के लिये गोचरी का अवसर आया चूकि गोधरा स रतलाम तक समता युवा सघ रतलाम ने आचार्य श्री के साथ विहार करने का निर्णय लिया था म भी उसी विहार चर्या म साथ म था। चचेलाव रेल्वे स्टेशन पर मात्र तीन घर मे थे। तीनो घर ही जैन साधुओ को आहार बहराने के नियम मे परिचित नही थे। मुनिराज का एक घर म प्रवेश हुआ उसी समय गृहस्थ ने बिजली का बटन दबाकर बत्ती चालू कर दी। दूसरे घर मे गए, वहाँ गोचरी लेने का कारण बताते हुए बाहर चल आए। दूसरे घर म गए वहाँ गोचरी लेने योग्य था परन्तु खाना नही बना था तीसरे और अतिम घर की जब बारी आइ तो वहाँ से थोड़ी सी उड़द की दाल एव मक्का की रोटी उस गृहस्थ न मुनिराज को दे दी। गोचरी लेकर सत मुनिराज अपने ठहरने के स्थान पर आ गए, जरा सोचिए पन्द्रह किलोमीटर चल कर आना

कालजयी व्यक्तित्व का धनी बन चुका है । आचार्य नानेश की संघ विस्तार की प्रवृत्ति महावीर के शासन मे सदैव स्वर्णाक्षरो मे अकित रहगी । इनकी सादगी-साधना-चारित्र और मधुरवाणी की खुशबू शताब्दियों तक उनके सुशिष्यो-अनुयायियो के जीवन को महकाती रहेगी । इनकी राख के कण जिस स्थान को स्पर्श करेंगे वह सीमा भी कुदन बन जाएगी । गुरुदेव का नाम इतिहास म अमर हो गया है । उनकी कीर्ति पताका, काल की सीमाए लाघकर कालातीत बनेंगी । वे कधे धन्य है जिन पर सवार होकर गुरुदेव मरूधरा से विहार कर मेवाड़ अचल में गुरु गणेश की समाधि के समीप आकर अपनी समाधि मे समा गये ।

प्रत्येक दृष्टि स उनका व्यक्तित्व आदर्श एव मानवीय सवेदनाओ से आतप्रोत रहा है । उनकी साधना का पारदर्शी आभामडल अनेक के मागलिक जीवन का दस्तावेज बन गया । जिस प्रकार एक दीपक की लौ हजारो दीपक को प्रकाशित कर सकती है वैसे ही नाना जैसे महापुरुष ज्ञान-दर्शन-चरित्र के गुणो से अपने हजारो अनुयायियो को दिशा निर्देश दे सकते है । उनके उपदेशो पर चल कर अनुपालना करते हुए अपना इह लोक एव परलोक सुधार सकते है तथा समाज के पिछड़े वर्ग के बेरोजगार नवयुवको को प्रशिक्षण, रोजगार मे मदद करके, असहाय विधवा बहना के लिए सहायता, भूखे को भोजन, रोगी को दवा, निर्वस्त्र का वस्त्र, देकर हम सब अपनी सक्षमता का सही उपयोग करे, यही आचार्य नानेश को सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

आपका जाज्वल्यमान व्यक्तित्व सत विनोबा को भी प्रभावित किए बिना नही रहा । मानवीय सवेदनाआ क परिपेक्ष्य म हरिजन, गिरिजन, बलाई जाति के व्यक्तियो के जन कल्याण सस्कार, व्यसन मुक्ति शाकाहार आदि पर आपने मौलिक चितन कर मार्ग प्रशस्त किया ।

भूले-भटके नवयुवको को महावीर का अमर संदेश देकर सदा सदा क लिय अपनत्व प्रदान किया । काम-क्रोध, माया, लोभ का सदा ना ना करत अपने नाना शब्द को सार्थक किया । अहम को त्यागने वाले और अर्हम का जपने वाले आचार्य नानालालजी म सा सदैव अमर रहेंगे । उनका कृतित्व एव व्यक्तित्व हजारों सालो तक समता के धरातल पर अपनी सदैव पहचान बनाए रखेगा । आपश्री के वचनो मे अमृत और भावो मे फूल खिले होते थे ।

समता विभूति स्व आचार्य नानेश जीवन की व्यर्थता एव सार्थकता दोना का देख चुके थे । उन्होंने अन्तर मन के नयनो से अपने जीवन को पढा है। उन्होन अनुभव किया है स्वय की आत्मा की आवाज से बढ़ कर कोई प्रेरणा नही है । यदि हम उनके जीवन को बारीकी से पढ़े तो नित नये ज्ञानवर्द्धक अध्याय पढ़ने को मिलेंगे । जब भी उनके भीतर के गाभीर्य मे गोता लगा कर अनुभव करेंगे तो एक पक्ति मे अन्तर मौन एक सूत्र तैर कर आयेगा । वह संदेश उतना ही पवित्र होगा जितना पवित्र वेद का प्रवचन हाता है ।

आचार्य नानश चितनशील, जीवनद्रष्टा,अध्यात्म मनीषी थे । उनका दृष्टिकोण सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम और विचार सार्वभौम थे । गभीर विषया का भी व्याव-हारिक और मधुर बना देते थे । मेवाड़ के दाता ग्राम मे जन्म लेने वाले जैनाचार्य नानालाल जी महाराज समता एव चारित्रिक उज्ज्वलता क पर्याय थे ।

आपने समीक्षण ध्यान के प्रणेता एव लेखक हाने के नाते अनेक ग्रथो की रचना की जिसस उनका अमर साहित्य युगो-युगो तक स्मरण किया जाता रहगा ।

-विजयसिह लोढा विजय

रिक्तता की अनुभूति

ये आसमा चाद, सितारे पवन, घटाए यह महकती प्रफुल्लित धरती, पक्षियो की यह चहचहाट पत्ता की खनखनाहट, भवरो का गुजन, सब अपनी जगह पर विद्यमान है, लेकिन फिर भी लगता है कि कुछ खालीपन है, कही रिक्तता है ।

न जाने एसा क्यो है कि इनकी हसी की खनक इनका इठलाना इनका चलना समुद्र की गहराई मे

पहाड़ो की कदराओ मे कही गुम हो गया है, पत्थर की दीवारा मे कही कैद हो गया है, किनकी कमी से ये खामोश, वीरान, निशब्द हैं ? वे हैं पूज्य गुरुदेव नाना।

जिनकी स्नेह की अमृतमय छाव म मैंने अपना अब तक का सफर तय किया, जिनसे श्रद्धा की अनुपम भेंट मिली है मुझे। श्रद्धा के उस दीपक को, भक्ति की उस ज्योति को, स्नेह की उस निशानी को भूल पाना मुमकिन तो नही होगा, मेरी भावमय श्रद्धा सुमन।

-डॉ सुनील बोथरा, नोखा (बीकानेर)

आत्मबल व सेवा के आदर्श

आचार्य श्री की स्मरण शक्ति कुशाग्र थी व आत्म बल बहुत तेज था। आपके आत्म-बल को देखकर डॉक्टर हैरान होते थे कि इतनी अस्वस्थता के बाद भी आपका आत्मबल अनुपम था।

आपने फरमाया था कि सघ के लिए यदि उनका शरीर भी चला जाये तो कोई परवाह नही। आप श्री सतो की सेवा का पूरा ध्यान रखते थे। जब आपश्री बीकानेर हॉस्पिटल मे विराज रहे थे। श्रद्धेय श्री ज्ञान मुनि जी म सा को तीव्र बुखार आ गया था। डॉक्टर सा ने कहा दूध लेना है। आप श्री किसी को न कहकर दूध लेने खुद पधार गये। जब वापस पधार तब पता चला आप श्री मे सेवा भावना कितनी थी। आपश्री का गुणगान जितना करें, कम है।

-सुन्दरलाल नाहर, कलईन (आसाम)

सपूर्ण भूमि के वजन से वजनी था वह दिन

प्रात स्मरणीय भारत माँ की गाद मे अनेक महापुरुष पैदा होते आये हैं। ऐसी वीर प्रसूता, ऋषि मुनियो का तपवन, राम, गौतम एव महावीर की इस पवित्र भूमि भारत मे जो सच्चे सुपुत्र पैदा हुए है उनमे से परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब एक थे। आज से ८० वर्ष पूर्व शृगार माता की कोख से जन्म लेने वाले एक नन्हे बालक की जो कि नाना के नाम से जाना गया आज पूरे भारत मे ही नही वरन् विश्व म आध्यात्मिक ज्योति चमक रही है।

२७ अक्टूबर ९९ का दिन आचार्य भगवन् श्री नानेश के महाप्रयाण का दिन था। वह दिन कैसा था ? उस दिन पत्थर हृदय व्यक्ति भी रो पड़ा तो जन साधारण की बात कुछ और ही थी। आचार्य श्री नानेश ने एक ऐसी ज्योति जलाइ थी जो कभी विलीन नही हुई और उसका प्रकाश भी कभी कम नहीं हुआ। कभी अस्त न होने वाले सूर्य के समान आचार्य श्री जी की आध्यात्मिक ज्योति आज भी पूरे ससार मे चमक रही है। इस ज्योति का नाम है समता। समता सिद्धात उनके शब्दो मे ही नहीं वरन् उनके व्यवहार म भी दृष्टिगोचर होता था। उनकी कथनी ओर करनी मे कोई अन्तर नहीं रहता था जो वह कहते थे वही वह करते थे। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मुझे देखने को मिला। आचार्य भगवन् जब रतलाम मे दूसरी बार चातुर्मास करने हेतु पधार रहे थे। उस वक्त मुझे उनके साथ विहार मे पैदल चलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आचार्य गोधरा से विहार कर रहे थे। उस वक्त विहार करके अगले गाँव चचेलाव रेल्वे स्टेशन पर ठहर गए थे। उस स्टेशन पर आहार के लिये गोचरी का अवसर आया चूंकि गोधरा से रतलाम तक समता युवा सघ रतलाम ने आचार्य श्री के साथ विहार करने का निर्णय लिया था मे भी उसी विहार चर्या म साथ म था। चचेलाव रेल्वे स्टेशन पर मात्र तीन घर मे थे। तीनों घर ही जैन साधुओ का आहार बहराने के नियम से परिचित नही थे। मुनिराज का एक घर मे प्रवेश हुआ उसी समय गृहस्थ ने बिजली का बटन दबाकर बत्ती चालू कर दी। दूसरे घर म गए, वहाँ गोचरी लेने का कारण बताते हुए बाहर चले आए। दूसरे घर म गए वहा गोचरी लेने योग्य था परन्तु खाना नहीं बना था तीसरा और अतिम घर की जब बारी आई तो वहाँ से थोड़ी सी उड़द की दाल एव मक्का की रोटी उस गृहस्थ ने मुनिराज को दे दी। गोचरी लेकर सत मुनिराज अपने ठहरने के स्थान पर आ गए, जरा सोचिए पन्द्रह किलोमीटर चल कर आना

एव जारों से भूख लग रही हो ओर उस वक्त अगर खाना नहीं मिलता है ऐसी स्थिति मे हम कैसे सब्र करेंगे। मक्की की मात्र तीन रोटी एव खाने वाले सात सत मुनिराज, आधी- आधी रोटी सभी सतों ने बाँटकर खाने की इच्छा प्रकट की। उस वक्त आचार्य श्री ने कहा आप छ सत मुनिराज आधी-आधी रोटी खा लो। आज मुझे भूख नही है। सत मुनिराज अदर बैठकर आहार कर रहे थे और मै बाहर बैठा था। आचार्य श्री छोटे सतों का कितना ध्यान रखते हैं? उनके प्रति वात्सल्य भाव देखते ही बनता था। वास्तव मे ऐसी स्थिति मे या विषम परिस्थिति मे धैर्य रखना समता सिद्धात का मूल स्वरूप है। ऐसी स्थिति मे जो मैंने देखा और सुना वह आज भी स्मरण आता है तो आँखो से अश्रुधारा बह निकलती है।

यही बात हमारे आचार्य श्री जी के व्यवहार मे देखने को मिली है। यही कारण है कि आज हम उन्हे समता विभूति कहते हैं। रतलाम चातुर्मास के दौरान हम सब बैठे हुए थे आचार्य श्री अपने नाम को कभी भी प्रचारित नहीं करवाते थे। उनकी अतर आत्मा से यह बात निकलती थी कि नाना बालक मडली नाम से कोई भी सस्था अथवा सघ नही हो। नाम को नही वरन् सिद्धात को प्रचारित करें। नाम तो आज है और कल नही परन्तु जैन सिद्धात का मूल स्वरूप समता है। हर क्षेत्र मे समता का ही आधार होना चाहिए। आचार्य श्री ने मात्र साधु भाषा मे सकेत दिया और नाना बालक मडली ने अपना नाम बदल कर समता बालक मडली कर लिया। ऐसे सत मुनिराज को भारत मे ही नही वरन् पूरे विश्व मे वदन करने की आवश्यकता है। वर्तमान आचार्य भगवन् श्री १००८ श्री रामलालजी महाराज साहब उनके बताये गये मार्ग पर चलकर इस शासन को बहुत दीपावेंगे एव सघ की खूब शान बढ़ायेंगे। वर्तमान आचार्य के प्रति मेरी हार्दिक शुभकामना है कि आप यशस्वी हों, आप दीर्घायु हों, युगों-युगों तक महावीर के बताये गये मार्ग पर चलकर हम सभी सघ निष्ठों को आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

-धीरजलाल भूणत राष्ट्रीय सयोजक
श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति

महामानव का महाप्रयाण

अब तो केवल स्मृतियो का कोष ही रह गया है और रह गया स्मृति पटल पर उनके पावन सानिध्य मे बिताई घड़ियो, घटनाओ का सजीव चित्रण। मानव की चेतना का विराट रूप जब समग्र लोक मे फैलता है तो मानवीय गुणो का आभा मडल अपने दिव्य आलोक मे पूजनीय, वदनीय अभिनदनीय बन जाता है, देह मदिर बन जाती है एव आत्मा परमात्मा का स्मरण कराने लगती है।

आचार्य भगवन् श्री नानेश का भव्य व्यक्तित्व अपने उस अलौकिक आभामडल से आज तक दैदीप्यमान होता रहा है। समता सिद्धात को केवल कहते नही वरन् उस सिद्धात को आत्म तत्त्व बनाकर पूरे जीवन मे उतार कर पल पल सजगता पूर्वक उसका पालन करते थे। यह केवल आचार्य नानेश जैसा व्यक्तित्व ही कर सकता था।

आपकी व्याख्यान की शैली मे मानो गागर मे सागर समाया रहता था। लड्डू की भाति आपके जीवन के किसी भी कोने को देखो ऐसा लगता था कि मिठास से आत्मा भर गई, तृप्त हो गई। मै तो अपने जीवन की उन्हीं घड़ियों को सार्थक एव श्रेष्ठ मानता हूँ जो उनके पास रहकर उनके सानिध्य मे गुजरी बाकी का जीवन तो व्यर्थ जा रहा है।

आप प्रकाश स्तभ हैं, जहाँ से आपके गुणो का प्रकाश निरतर प्रकाशित होता रहेगा उसी प्रकाश मे हम अज्ञानी मानव शायद अपनी राह पाकर लक्ष्य को प्राप्त कर लें और जीवन को सफल बना लें। हे समता सूर्य! आप प्रेम, करुणा, दया के भडार थे, हमें अपनी करुणा से वचित मत रखना हम बार-बार क्षमा प्रार्थी है। आप क्षमा करे।

-सुरेन्द्रकुमार धारीवाल, जावरा

THE GREAT SAINT ACHARYA NANESH

An incomparable sight of similarity
Acharya shree Nanesh was not only a saint

but also a national saint Actually saint is that who does not belong to any special group but truth.

Acharya shree uplifted not only his own soul but he uplifted the whole world Acharya shree s life was very great. He was a noble saint of the current age

He was adorable every moment for us He was a radiant star of shramanakash.

His life was a ornament with similar ity and sobrienty which is an illuminator today also to his reverents

He was the ocean of knowlege God of Philosophy reflected on his forehead. The mixture of his endless knowledge and char acter gave him a wonderful appearance

Actually he was trinity of GYAN DARSHAN and CHARITRA He was noble spirited and glorious YUGDRASHTA of this age. He was glittering both inside and outside He was the accumulation of power & Pity His every moment was aware of moderation

His life was an endless spring of benevalent blessing which is still flowing in all the followers with its inspiring fragrance

V Guddu Dhariwal

इस शताब्दी के महानायक

आचार्य गुरु भगवन् को चिर निद्रा मे सुला दिया। य अपने समाज के लिए ही नही अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिए अपूरणीय क्षति है।

शात, सौम्य, ममता व समता के नायक आचार्य नाना गुरुदेव आज हमार मध्य नही है पर उनकी अमृत वाणी, उनके द्वारा सुझाये गये व बतलाय गये रास्ते अवश्य विद्यमान हैं। यदि हम गुरुदेव के सुपावा पर सिफ अमल ही कर तो हमारे भव -भव का बेड़ा पार है।

मरी जिनशासन देव से प्रार्थना है कि गुरुदेव की आत्मा जहाँ कही भी हा अपने लक्ष्य को प्राप्त करक सव शास्वत सुखा का प्राप्त करे। -गणपत बुरड़, मद्रास

युग पुरुष

आचार्य श्री नानेश एक विशिष्ट आध्यात्मिक योगी थे, जिनका तप और त्याग देश-विदेश के जन-जन को आकर्षित किये बिना नहीं रहा। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक एव चमत्कारी था। सयम साधना, सघ उन्नयन, तपाराधना, योगध्यान आदि क्षेत्र मे अभूतपूर्व अवदान से आपने अपनी पृथक पहचान बनाई और विषमता पूर्ण विश्व को शाति हेतु समता दर्शन का अमोघ साधन दिया।

परम पूज्य आचार्य श्री जी की महिमा का वणन करना सूर्य का दीपक दिखाना है। गुरुदेव की वाणी स कितने ही लोगा को मार्गदर्शन मिला है, कितने ही भाइ-बहनो (३५०) ने ससार का त्याग किया है और आत्म-कल्याण की ओर अग्रसर हुए है। अनेक श्रावक-श्राविकाओ ने अपने जीवन को सस्कारित किया है। उनकी महिमा असीमित है और हमारी दृष्टि सीमित है। आप जैस महापुरुष के चमत्कार पूर्ण व्यक्तित्व को शत्-शत् वदन।

-गौतमचद श्रीश्रीमाल, ब्यावर

समता के सागर-वाणी के जादूगर

पूज्य श्री का जीवन अत्यन्त सरल था- आपश्री क विचार, उच्चार, आचार की एकरूपता अनुकरणीय थी। आप की वाणी म माधुर्य की सरिता विद्यमान थी। आप श्री हर समय प्रसन्न मुद्रा में रहते थे एव आपश्री का जीवन ससारी प्रपचो से बिल्कुल दूर था। आपक जीवन म क्षमा शाति सरलता हरसमय झलकती रहती थी।

आपने जिन शासन के सजग प्रहरी रहकर जिनवाणी का डका बजाया।

ऐसे समता क सागर, वाणी क जादूगर जिन शासन सिरताज, धर्म दिवाकर को हमारा कोटिश वदन। राठाकोट श्री सघ की ओर से हार्दिक श्रद्धाजलि।

-पेवरचद तातेड़ मत्री

लब्धि पुरुष अमर सत

सत हृदय नवनीत समाना की जगत प्रसिद्ध उक्ति को चरितार्थ करने वाले, हमारी अनन्त आस्था के श्रद्धा केन्द्र, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानेश को कहा खोजू ? कहा ढूढू ? गुरुदेव श्री जी का जीवन सचमुच में सद्गुणो का सग्रहालय रहा था। आप सच्चे महामनीषी थे।

गुरुदेव श्री जी की महान आत्मा को चिर-शाति मिले, इसी मगल भावना से उनके पावन श्री चरणो मे भाव वन्दन के साथ कोटि-कोटि वदन।

-आनदमल साड, मनोहरी देवी साड, देशनोक

व्यसनमुक्त जीवन के उद्घोषक

अहिंसा, अपरिग्रह, एव अनेकान्त के साथ ही आचार्य नानेश ने जन-जन के मन मे समता सदेश की सुरसरित प्रवाहित की। विषमता से समता की ओर लाने म प्रबल पुरुषार्थ किया। आचार्य नानश का सपूर्ण जीवन ही समतामय था। उन्होंने व्यसन-मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। आज के जन जीवन मे व्यसनो को बाढ़ आई हुई है। आज का मानव तनाव से मुक्त होने के लिए पान पराग, गुटखा, सिगरेट, शराब का सहारा ले रहा है। उससे अधिक तनाव पैदा हो रहा है। हम स्वर्गस्थ आत्मा की याद मे यह प्रतिज्ञा करे कि हम सब व्यसन मुक्त जीवन जीयेंगे।

-पी शातिलाल रवीवसरा, कोषाध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन सघ, बैगलोर

सूर्यास्त और चन्द्रोदय

आतरिक पीड़ा है कि जैन समाज के महान् आचार्य श्री नानेश जो सूर्य की तरह तेजस्वी रहते हुए अपनी दिव्य आभा से समाज का आलोकित कर रहे थे, वह पिछल कुछ दिनो से अस्ताचल की ओर अग्रसर होते हुए दि २७ अक्टूबर ९९ को पूर्ण विलीन हा गये। स्थानकवासी जैन समाज मे एक गहन अधकार व्याप्त हो गया है।

हमारी मान्यता के अनुसार केवल शरीर का नाश होता है, आत्मा तो अजर अमर है। इसलिए पार्थिव देह स भले ही वे हमारे बीच न रहे हो, लेकिन उनक ज्ञान, दर्शन और उज्ज्वल चारित्र की आभा आज भी इस लोक को प्रकाशित कर रही है। निश्चय ही वह सूर्य किसी अन्य दिव्य लोक मे उदित होकर अपनी आभा से उसे प्रकाशित कर रहा होगा।

यह भी सत्य है कि सूर्य के अस्त होते ही चन्द्रमा का प्रकाश उदीयमान होता है। चन्द्रमा भी सूर्य से ही प्रकाश प्राप्त करता है। उसी तरह आचार्य श्री नानेश के ज्ञान प्रकाश से आलोकित वर्तमान आचार्य श्री रामेश चन्द्रमा की तरह उदीयमान हुए हैं। शीतल चादनी की तरह शात मधुर लेकिन गाभीर्य इनका स्वभाव रहा है, जो प्रत्येक व्यक्ति मे आत्मीयता का सचार करता है।

आचार्य श्री नानेश ने श्रमण परम्परा के उच्च आदर्शों का जीवन पर्यन्त पालन किया है और यही अपेक्षा अपने शिष्यो से रखी है। भौतिक सुख सुविधाओं की वर्तमान दौड़ से दूर रहकर सत समुदाय क लिए यह उच्च चारित्रिक आदर्श उन्होंने उपस्थित किया है। श्रावक समाज के लिए समता दर्शन का वास्तविक स्वरूप उपस्थित करते हुए उसे आत्मसात् करने के लिए समीक्षण ध्यान का अनूठा मार्ग प्रदर्शित किया है। आज के इस तनाव पूर्ण वातावरण मे सच्चा सुख और आत्मिक शाति प्राप्त करने का यह अमूल्य साधन है।

हम विश्वास है कि वर्तमान आचार्य श्री रामेश पूर्वाचार्यों की श्रमण परम्पराओ का अबाध गति से निर्वहन करते हुए उच्च चारित्र का आदर्श समाज के सामने यथावत् विद्यमान रखेंगे। इसी के साथ अपन ज्ञान के आलोक स जन जन का उत्साहवर्धन एव मार्ग दर्शन करते रहेंगे। उनकी आभा विकसित होते हुए चन्द्र की तरह प्रतिदिन अधिक प्रकाश पुज की ओर अग्रसर हो इन्ही शुभकामनाओ के साथ कोटी नमन।

-मगनलाल मेहता, रतलाम

नाना से नानेश की यात्रा

हुक्मसघ के अष्टम पट्टधर आचार्य श्री नानेश का

जीवन अनेकानेक गुणो की सौरभ से आप्लावित था। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन मे जन कल्याण का स्तुत्य प्रयास किया। आचार्य श्री बचपन से ही विराट व्यक्तित्व के धारक थे, उन्होंने एक बार जब चलती रेल को देखा और चितन किया कि एक इजन गाड़ी के समस्त डिब्बो को खीच रहा है तो मै भी इजन के समान बनकर लोगों की जीवन की गाड़ी का ससार सागर मे भटकने के बजाय मोक्ष तक पहुचाने का प्रयास करू, अपनी स्वय की आत्मा को भी मोक्ष की मजिल तक पहुँचाने का प्रयास करू।

उसी बचपन की उम्र मे नेतृत्व करने की भावना जाग गई। स्कूली जीवन मे भी नेतृत्व की सहज प्रतिभा उभर कर आई। स्कूल मे जो भी दूसरे बच्चे पढ़ने आते उन बच्चों को सिखाने का प्रयास करते और कई बालक बिना पैसे और बहुत प्रेम से दी गई उस शिक्षा को बालक नानालाल से ग्रहण करते।

लेकिन जिन्हें सयम का व्यापार करना था तो उसे ससार के व्यापार से क्या लेना देना। मेवाड़ी मुनि श्री चौथमलजी म सा का प्रवचन सुना और विरक्ति आ गई और गुरु की खोज मे चल पड़े। शान्त क्रान्ति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य को गुरु बनाकर सयम अगीकार कर लिया। अपनी विनय सेवा और पैनी प्रज्ञा से गुरु के मन को जीत लिया। गुरु की दिन रात सेवा कर महान कर्म निर्जरा का प्रसग उपस्थित किया। गुरु आज्ञा की आराधना कर गुरु आज्ञा का हृदय से पालन कर गुरु के हृदय को जीतकर गुरु के हृदय मे बस गये। जिसके फलस्वरूप शान्त क्रान्ति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य ने उन्हे अपनी चादर देकर श्री साधुमार्गी जैन सघ के सत्ता सपन्न युवाचार्य का पद दे दिया फिर वे आचार्य बने।

आचार्य बनने के बाद आचार्य श्री नानेश ने बलाई जाति का उद्धार किया। उन्हे शाकाहारी बनाया। उन्हे धर्मपाल की सज्ञा दी।

विश्व शान्ति का अमोघ उपाय समता है। समता ही सब सुखो की जननी है, ऐसा उद्घोष करके आपने समता दर्शन का सिद्धात दिया और समता समाज रचना का नया आयाम दिया।

भौतिक चकाचौध के इस युग मे ३५० से अधिक भव्य आत्माओ को प्रभु महावीर के शासन मे दीक्षित कर कश्मीर से कन्या कुमारी तक भगवान महावीर का शासन फैलाया।

लाखो अनुयायियो को सम्यकत्व श्रावक व्रत दिलवा कर उन्हे सुससस्कारित बनाया। अपने साधु-साध्वियो को आगम का ज्ञान देकर उन्हे ज्ञानवान बनाने मे अथक सहयोग दिया तथा सघ की सुरक्षा के लिए कटु अघातो को भी सहन करते रहे।

हुक्म सघ की सुरक्षा मे चार चाद लगें, सघ मे शिथिलाचार प्रवेश न करे, अनुशासन के आधार पर भविष्य मे भी एक ही आचार्य की नेश्राय मे शिक्षा दीक्षा प्रायश्चित होता रहे, इसके लिए बीकानेर म आचार्य श्री नानेश ने मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को अपनी चारित्र की उज्ज्वल चादर ओढ़ाकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और कहा ये मेरे पट्टधर अपने जमाने म एक महान आचार्य बनेंगे। इसलिए आप सभी इनकी निश्रा मे रहकर तप सयम की आराधना करे। इस प्रकार प्रबल आत्मबल से भावी शासन नायक की नियुक्ति कर आपने सघ को एक अमूल्य रत्न दिया है।

-श्रेणिक कुमार नागदा

चन्द्रमा की शीतल छाया से सघ वचित हो गया

शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा की भाति उदय होकर पूर्णिमा की तरह सारे ससार को प्रकाश देने वाले आचार्य श्री नानेश निष्कलक अड़तीस वर्ष तक सघ का सचालन कर सघ की चादर भावी आचार्य श्री रामलाल जी म सा को सौप कर महाराणा प्रताप की भूमि को तीर्थधाम बनाकर सथारा सहित देवलोक पधारे गए।

आपने रतलाम म एक साथ पच्चीस भव्य जीवो को जैन भागवती दीक्षा प्रदान कर पिछले तीन सौ वर्षों के स्थानकवासी समाज के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा।

आपके शासन काल में लगभग चार सौ मुमुक्षु आत्माओ ने दीक्षा लेकर जिनशासन की महती प्रभावना की।

मै सन् १९५९ मे जन्म भूमि निम्बाज से कर्म भूमि के लिए दक्षिण मे बैंगलोर आया। मेरे पूज्य पिताश्री स्वय मुझे मावली जक्शन तक पहुँचाकर, बाद म उदयपुर मे विराजित पूज्य आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के दर्शनार्थ पधार गए। वहा पहुचकर गुरु गणेश के चरणो मे अर्ज किया कि आज बाबू गणेश दक्षिण भारत (दिशावर) गया है। उस महापुरुष की अनत कृपा थी तथा सहज ही बाल उठे कम से कम दर्शन व मागलिक तो देकर भेजना था, पिताश्री को बड़ी भूल महसूस हुई। लम्बे अन्तराल बाद सन् १९७१ मे आमेट मे मैंने पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के दर्शन किए, एक क्षण परिचय पाते ही बारह वर्ष पूर्व की बात सामने रखी- मै उसी दिन से चरणों मे समर्पित हो गया। जहा लाखो-लाख भक्त चरणो मे आते है, वहा मेरे जैसे नादान बालक को अपने चरणो मे जगह दी। यह कितना स्वर्णिम व दुर्लभ अवसर था मेरे लिए।

भोपालगढ़ मैत्री सम्बन्ध का सिलसिला भी निम्बाज मे विराजित पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा के चरणो मे जयपुर निवासी सुश्रावक श्रीमान गुमानमल जी चोरड़िया ने रखा। सन् १९९२ के पीपलिया चातुर्मास में पधारने पर ब्यावर से ही मै चरणों मे (सेवामें) रहा, निम्बाज पधारने की विनती करता रहा किन्तु मौसम की अनुकूलता नही होने से आप बर से सीधे पीपलिया पधार गये।

आपने उत्तराधिकारी के रूप मे आचार्य श्री रामलाल जी म सा, को नवम् पट्टधर पर प्रतिष्ठित किया जो सर्वथा इस पद के योग्य चारित्र निष्ठ एव आगम-मर्मज्ञ श्रमण हैं।

मै स्वर्गीय आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा को अपनी ओर से एव अ भा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ जाधपुर- बैंगलोर की ओर से हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता हू। आप शीघ्र सिद्ध बुद्ध और मुक्त बने।

-गणेशमल भण्डारी (निमाज), यशवन्तपुर
बैंगलोर-२ (कर्नाटक)

क्रांतिदृष्टा

स्थानकवासी सम्प्रदाय मे स्वर्गीय आचार्य श्री नानालालजी म सा को विशेष, आदर व श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। इसके कई कारण हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल मे ३०० के लगभग मुमुक्षु आत्माओ को सयमित जीवन जीने की दीक्षा का पाठ दिया। उन्होंने एक कुशल शिल्पकार की भाति अपनी शिष्य सम्पदा को आगम की वाणी का अमृतपान करवाकर साधना पथ पर आरूढ़ किया और जिसकी सौरभ समाज मे फैल रही है।

जिस समय हुक्म सघ के आठवे पाट पर वह आसीन हुए तब स्थितिया बेहद विकट थीं। स्वभाव से एकात प्रिय, कम बोलना और थोड़े लोगो से मेल मिलाप बाहर से दिखाई देने वाले य दो चार गुण उनकी कुल जमा पूजी थी। आचार्य पद पर आसीन होने के बाद पहला चातुर्मास रतलाम मे हुआ। आरभ का वह समय दुरुह जरूर था। उन्होंने समय की नजाकत को समय सधे कदमो से अपने आचार्यत्वकाल की सयमित किन्तु विराट जीवन यात्रा का श्री गणेश समाज के सबसे छोटे व्यक्ति को धर्मदेशना देकर की। बलाई समाज मे अहिंसा का प्रचार कर उन्हे शाकाहारी जीवन जीने के लिए सहज तैयार किया। उनके प्रयासो से लाख से अधिक परिवारो ने मासाहार व शराब छोड़कर अपन जीवन को धन्य किया। जात पात के बधनो को तोड़कर दलित व पतित लोगो का उद्धार किया।

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ ने उन्हे अपना लिया और धर्मपाल के रूप मे गले लगाया। आचार्य श्री के इस जीवन व्यवहार से धर्मपालो के जीवन में क्रान्ति आ गई। इसका प्रभाव धर्मपाला की आने वाली पीढ़िया तक में उभरने लगा है। छुआछूत को मिटान की बात तो कई बार हुई है पर उन्हे गले लगाने का समय आता है तब अच्छे अच्छे के छक्के छूट जाते है।

हरिजनो व गिरिजनो को गले लगाकर धर्मपाल प्रवृत्ति से जोड़ने के इस उपकार ने आचाय श्री को मानव स महामानव बना दिया है। तब से लगाकर निर्वाण तक आचार्य श्री नानेश की अहर्निश यात्रा न फिर रुकी ओर न थमी।

साधना का क्रम दिन-प्रतिदिन दिनकर की भाति प्रशस्त होता रहा। उसमे समीक्षण ध्यान विद्या और समता जीवन दर्शन जैसे आयाम प्रकट होकर प्रकाशित होते रहे जो आज समाज की अमूल्य धरोहर है और जिन पर शोध की आवश्यकता है।

साहित्य सृजन के क्षेत्र मे अनेक ग्रथो की रचना हुई है। उनमे जिण धम्मो का जिक्र करना समीचीन होगा। ग्रथ बेहद उपयोगी एव स्वयसिद्ध है। जिसका अनुभव सुविज्ञ पाठक मनन के बाद ही ठीक से कर पाएगे।

आचार्य श्री जी का जीवन सागर के समान धीर वीर और गहन गभीर रहा है और उसको समपन मे अनेक जन्मो की साधना और एकाग्रता की आवश्यकता है। हम केवल उसका एक छार पकड़ अपने जीवन म परिवर्तन की शुरूआत भर करे और देखें कि भला आगे होता क्या है।

आचार्य श्री ने अपने रहते युवाचार्य के रूप मे श्रीरामलाल जी म सा को अपने उत्तराधिकारी के रूप मे प्रतिष्ठापित किया। इसके पीछे दूरदृष्टि- गहन सोच विचार अनुभव व विश्वसनीयता प्रमुख है। सघ व शासन के हित में ही आचार्य श्री ने सघ को यह हीरा आचार्य के रूप मे दिया है।

नवमपट्ट पर आसीन नये आचार्य श्री रामलाल जी म सा के सामने रास्ता आसान नही है। वैसे उन्हे साधु-साध्वी श्रावक श्राविकाओ के रूप मे अकूत सपदा प्राप्त है। सभी सघो का सहयोग भी उन्हे मिला हुआ है। स्व आचार्य श्री के विश्वास पात्र भी वे ही रहे है, उन्हे सघ का सचालन करने का अनुभव है। उन पर गुरु नानेश की छत्र छाया है गुरु नानेश का विश्वास है आशीर्वाद है। उनके सामने सारे शूल-फूल बन उठेंगे।

-चद्रप्रकाश नागोरी

जैन जगत के दिव्य नक्षत्र

भारतीय सस्कृति मे ऋषि मुनियो एव सतो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, समय समय पर महामना युग पुरुषो ने जन्म लेकर इस धरा धाम को धन्य बनाया। मानव की सुप्त चेतना जागृत कर नया आलोक प्रदान किया। अध्यात्म जागरण के मगलमय सदेश वाहको ने समूचे जीवन को नई दृष्टि प्रदान की एव मार्ग दर्शन प्रदान किया।

श्रमण भगवान महावीर के शासन म अनेकानेक श्रेष्ठ परम्पराए विकसित हुई। उसी शृखला मे साधुमार्गी परम्परा में (युगदृष्टा) आचार्य प्रवर का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण माना गया है। सघ का उत्कर्ष या उपकर्ष आचार्य के व्यक्तित्व पर आश्रित है, आचार्य देव की अनुपस्थिति म सघ अनाथ माना जाता है। अत सुयोग्य सफल एव कुशल आचार्य देव की सदैव आवश्यकता रही है।

प्रभु महावीर के 81 वे पाट पर हमे एक ऐसे आचार्य देव का सजोग मिला जिससे यह सघ रूपी बगिया विकसित हुई। विषमता के इस युग म समता का दर्शन, दरिद्र नारायण का उद्धार, परिमार्जित, विशाल शिष्य मडल का सचालन धर्मव्यवस्था का सूत्रपात शिथिलाचार के विरुद्ध क्रान्ति पवित्र सयमयात्रा ओजस्वी वाणी का प्रवाह, शात स्वभाव परोपकार, तोड़ने के स्थान पर जोड़ने का सिद्धात, कथनी करनी की समन्वयात्मकता, अनुशासन आत्मबल अन्तर भावना पर विश्वास एव सुयोग्य उत्तराधिकारी का चयन आपकी जीवन यात्रा के महत्वपूर्ण चमत्कार एव विशेषता थी।

आपके सुशिष्य युवाचार्य से आचार्य श्री बन श्री रामलाल जी म सा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की तरह मर्यादा और परम्परा के समर्थ अनुपालक, निष्काम कर्म योगी और युग द्रष्टा हैं। मानव सेवा और बधुत्व का सदेश एव व्यसन मुक्ति एव सस्कार क्राति के नए आयामो की विवेचन रूप प्रभावी उपदेश आप सदैव सुनाते रहते है। आपका आकर्षक व्यक्तित्व ओजस्वी, तेजस्वी आकृति मधुर मुस्कान, सदा प्रसन्न आनन, वाणी का माधुर्य एव दृढ निश्चयता अपने स बड़ो के प्रति समर्पणा की भावना जिन शासन की वृद्धि मे सदैव सहायक होगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

-श्रीपाल बोथरा, दिल्ली-६

वज्रपात

आचार्य श्री नानेश का सन् १९६८ का चातुर्मास

कराने का लाभ अमरावती श्री सघ को मिला था जो कि उस समय के हिसाब से आज भी अविस्मरणीय कहलाता है। आप श्री के सानिध्य म स्व श्री ताराचद जी मुणोत की स्वागताध्यक्षता मे साधुमार्गी जैन सघ का अखिल भारतीय अधिवेशन आयाजित किया गया था। जिसमें सपूर्ण भारतवर्ष से लगभग ६-७ हजार महानुभावो ने भाग लिया था। इसमें सघ और समाज के हित की दृष्टि से कइ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित कर उन्हे कार्यान्वित करने का सकल्प किया। जिसम प्रमुख प्रस्ताव दहेज देना व लेना इस पर स्वय स्फूर्ति से बधन लगाया गया। कई युवको और पालकों की प्रतिज्ञा के लिए अनूठा एव अविस्मरणीय रहा है।

जैन समाज मे समय को देख कर उनके जैसा प्रतिभाशाली, शास्त्र सिद्धान्त तथा नियमवद्ध ज्वलत उपदश देने वाले महापुरुष महात्मा विरल ही होंगे और इसीलिए जैन समाज के ससार व्यवहार को धर्म की दृष्टि स सुधारने को तत्पर आप जैसे सत के देवलोक गमन से जैन समाज को बड़ी भारी क्षति हुई है।

हजारो परिवारो ने इनकी शरण में अपने आपको समर्पित कर मास मदिरा एव कुव्यसना का त्याग कर अपने जीवन को स्वर्णमय बनाया है। इन परिवारो को धर्मपाल की सज्ञा से सम्मानित किया गया है।

मैंने मेरे अपने जीवन मे अनेक सत सतियो का पवित्र दर्शन एव सत्सग किया है किन्तु आचार्य श्री नानेश मेरी उम्र मे विरले ही दिखे हैं, जिनका प्रताप जिनकी वाणी, जिनकी शासन रक्षा शैली, जिनका सद्उपदेश, जिनका तप एव तेज, जिनका उद्योत जिनका उत्साह, ये सव गुण एक साथ विरले ही महापुरुषो मे भाग्य से ही होते है।

एक कवि की भाषा मे अगर कहू तो अहिंसा समता इनके जीवन का मूलमत्र था और यह इनके जीवन मे तानेबाने की तरह फैल गया था। सत्य आप श्री का मुद्रालेख था। तप आप श्री का कवच था। ब्रह्मचर्य आपका सर्वस्व था। सहिष्णुता इनकी त्वचा थी। उत्साह जिनका ध्वज था। अखूट क्षमा बल जिनके हृदय पात्र या कमडल मे भरा था। सनातन योगी कुल के यह योग मालिक थे। राग द्वेष क दावानल स आप अलग थे। मेरे तेरे कि ममत्व भाव से परे थे। सभी मुमुक्षु जीवो के कल्याण के आप इच्छुक थे। इतना ही नही सब के कल्याण के उपदश म ये सदा मशगूल रहते थे। ऐसा जैन जगत का सपूर्ण भारत क एक वतमान महान धर्मगुरु धर्माचाय शासन क शृगार परापकारी समर्थ वक्ता, समर्थ क्रियापात्र, कर्त्तव्यनिष्ठ, गच्छाधिपति का महापरिनिवाण होने से हमन एक अनुपम, अमूल्य आचार्य खोया है। आप श्री की आत्मा का विनम्र श्रद्धाजलि।

फलक तूने इतना हसाया तो न था।
कि जिसके बदले यो रूलाने लगा॥

-अगरचद राजमल चौरड़िया, अमरावती

छात्र जीवन की वह स्मृति

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के आचार्य स्व नानालालजी महाराज के रायपुर प्रवेश पर तप के माध्यम से स्वागत करने का पहला अवसर महाविद्यालयीन छात्र जीवन मे प्राप्त हुआ। आचार्य श्री के स्वागत म चातुर्मास हेतु श्री रतनचद सुराना भवन छोटापारा मे पहल ही दिन लगातार पाच दिन के निराहार उपवास का प्रत्याख्यान लेने के लिए ज्यो ही आचार्य श्री से विनती की तो वे और प्रसन्न हो गए।

समतायोगी आचार्य श्री नानालालजी के चातुर्मास के समय की अनेक हस्तिया जो उस समय उनक दर्शन कर अपने को धन्य मानती थी वे अधिकाश लोग अभी नहीं है। उस समय उनके दर्शना का सौभाग्य महत लक्ष्मीनारायण दास, मूलचद देशलहरा प शारदाचरण तिवारी मौलाना हामिद अली, लक्ष्मीचद धाड़ीवाल आसकरन चोपड़ा भूरचन्द देशलहरा चपालाल सुराना केवलचद बैद, टीकमचद डागा मोतीलाल धाड़ीवाल मोहनलाल भसाली, लालचद लूकड़ भवरलाल बोथरा आसकरन कोचर भीखमचद बैद, अमरचद बैद साहनलाल सुराना चुनीलाल धामर सानराज सिगी आदि अनक व्यक्तियो को प्राप्त हुआ था। जिनके सहयोग स चातुर्मास का अपूर्व सफलता श्री प्राप्त हुई थी।

राजनादगाव में आचार्य नानालालजी महाराज के मुखारविन्द से आठ दीक्षा का एक साथ होना उनके छत्तीसगढ़ में आगमन की सफलता का द्योतक सिद्ध हुआ।

-ओमप्रकाश बरलोटा,सरक्षक
स्थानकवासी जैन युवक सघ रायपुर

A Tribute to a great saint

Achaarya Shree Nanesh has a record of long Sadhna for 60 years Such examples of glorious success in the field of spiritual attainment are very rare Pujya Gurudev was a source of spiritual rays to millions of his followers all over the country He had not only preached ideology of Bhagwan Mahavir but also practiced them without any exception He remained Acharya for 37 years and given long lasting solutions to the problems faced by the entire society in general and Jain Community in particular His Stress on Samata has unparalled example in the recent history of Jain Religion Which has proved most effective philosophy for achieving the ultimate supreme aim of the life

He was a great source of inspiration to me and I was highly motivated by his principle of Samata which led in forming of a Trust at his own holy birth place, DANTA, now known as Nanesh Nagar under the Nanesh Samta Vikas Trust I along with my two colleagues Shri R K Sipaniji and Shri U C Khivensaraji decided to start a fully residential higher secondary school based on Gurukul System which is now developed into a fully equipped school based on Jain Ideology in the remote traibal area for the benefit of tribals and poor people belonging to that area. The trust has now taken up a hospital project with the help of Shri Sohanlalji Sipani which will be commissioned soon The Trust is also planning to develop a Samata Sadhna Kendra for advance spiritual attainment by the followers of Acharya Shree Nanesh

It would be a real tribute to such a great saint, if we are able to take his message further to our country and international society for ultimate good of human kind This can only be done by having an Institute of Jainology to research on Jainisam as preached by Bhagwan Mahavir and practiced by Acharya Shree Nanesh I am sure all his followers would give a cool thinking to this proposal and organise such an institue to keep the remembrance of such a great spiritual leader of the country

I wish a great success to this special edition of Shramanopasak for Acharya Shree Nanesh which is the right step to pay our respect to Acharya Shree Nanesh for his spiritual blessings bestowed on all of us

H S Ranka Mumbai

स्वय तिरे औरो को तिराये

जगत मे जीवन और मृत्यु तथा मृत्यु और जीवन साथ-साथ घटित होते है, परन्तु महावीर के साधक का जीवन के साथ मृत्यु और अमृत घटित होता है क्योंकि यह साधक मृत्यु का नहीं अमृतत्व का उपासक होता है। वह अमृत को पीता है अनुभव करता है बाटता है उस अमृत की रसधार म स्वय उसका जीवन तो रसमय बनता ही है। साथ ही अनेक जीवन भी रसमय हो जाते है जैसे प्रात काल का समय हो पूर्व दिशा की ओर यदि दृष्टि

डालें तो बड़ा ही सुन्दर और लुभावना दृश्य सामने उपस्थित होता है। जिसे देखने वाला हर प्राणी एक नई स्फूर्ति का अनुभव करता है और सपूण विश्व मे एक नई चेतना का सचार होता है। मन प्रमुदित और आनन्दित हो जाता है तथा धीरे-धीरे उसका प्रकाश बढ़ता जाता है परन्तु जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता जाता है वह प्रकाश घटने लगता है और नन्हा सा प्रकाश पश्चिम में अस्त हो जाता है। अनन्त गहराइयो मे विलीन हो जाता है कितना छोटा सा जीवन है एक किरण का। परन्तु दूसरी ओर इसी ससार रूपी गगन मे कभी कभी ऐसा प्रकाश उदित होता है जो एक बार उदित होकर फिर घटित नहीं होता, यू तो देह सबको ही तजनी पड़ती है परन्तु इसके प्रकाश रूपी जीवन मे जो अच्छाइया और सद्‌गुण प्रगट होते है उनकी चमक ससार रूपी गगन मे फैलकर फिर सिमटती नही है, अपितु बढ़ती ही जाती है। अपने साथ-साथ दूसरे को भी अपने प्रकाश की किरण बना लते है। महान आत्मा गुरुदेव परम सेवाभावी सघ गौरव परम श्रद्धेय श्री आचार्य श्री नानालाल जी म सा का जीवन उस चमकते हुए सूर्य की भाति था जो खुद तो प्रकाशित होता ही है और दूसरे को भी प्रकाशवान करता है। इसी पुण्य आत्मा ने अपनी सेवा एव तप से जिन धर्म के उपासको को एक नई राह दी तथा लाखो का कल्याण किया जब मैंन गुरुदेव के दर्शन प्रथम बार राजनादगाव म प्र मे किया तब मुझे ऐसा लगा जैसे ज्ञान की गगा करुणा की भावना दोनो मिलकर बह रही हो। जैसे सूर्य अपने प्रकाश के साथ उदयमान हो रहा हो। ज्ञान की आखा मे श्रद्धा की ज्योति हो ऐसे व्यक्ति को शब्दों मे गुम्फित करना सभव नही है।

किसी कवि न कहा है-

महान है जो त्याग ससार, सयम धारे,
महान है वे जो मन केविषय विकार निवारे।
बन जाते है दुनिया की नजर मे बड़े उदय,
महान है वे जो स्वय तिरे औरो को तारे॥

-सुभाषचन्द्र बाड़िया

ऐ युग तू कैसे आभार व्यक्त करेगा ?

मध्य रात्रि फोन की घटी सिसक पड़ी। चौका। संदेश था सूरज अस्त। श्रद्धा सुमेरू नानेश निर्वाण पथ पर विहार कर गए। तन मन व मस्तिष्क सब कुछ अचेत था। तभी सानल ने हतप्रभ हो झझौड दिया। क्या हुआ ? परिवार को दुःखद समाचार दिया। गमगीन था पूरा कड़ावत परिवार ड्राइवरो को बुलवाया गाड़िया निकली। जिसने जो पहना ओढ़ा था, उसी से शीघ्र गुरु चरणा मे पहुचने की उत्कठा। गाड़िया अधेरे मे ही उदयपुर की ओर भाग रही थी सब निशब्द बैठे थे। मानस अतीत की वादियों में जा पहुचा। तीस बत्तीस वर्ष पहले आचार्य भगवन् का चातुर्मास मन्दसौर था, मेरी उम्र रही होगी ११ या १२ वर्ष की तब प्रथम दर्शन किए थे। वह स्थापना दिवस था। सौम्य मुस्कराती आखो से झरता अमिय। नन्हे मानस पर अकित हो गया। उम्र के साथ साथ अकन गहरा होता गया और गुरु श्रद्धा सुमेरू बन गए। वहा से आज तक जीवन के हर पल मे जब जब भी चित्त डावा-डोल हुआ मन घबराया तब तब जय गुरु नाना का जाप ही सम्बल बना और मै भीषण से भीषण ऊहापोह के भवर म भी सकुशल रहा।

दुकान के आवश्यक कार्य से बाहर जाना था। समय कम था दूरी ज्यादा थी। जर्जर सड़क बेभान भागती गाड़ी। गाड़ी मे मै और ड्राइवर। तारों भरी रात, उषा की लाली भी नहीं चमकी थी कि तेज भागती गाड़ी से आगे भागता टायर पुलिया पर दौड़ता नदी में गिर गया ड्राइवर बोला बचाना। मै बोला जय गुरु नाना। लहराती गाड़ी कोई मील के पत्थर पर टिक गयी। भीड़ जुटने लगी। तरह तरह की प्रतिक्रिया हाने लगी। मेरा तन मन नमित था वदित था जय गुरु नाना के जाप मे। ऐसी कृपा के एक नही अनेक प्रसग मेरे जीवन मे घटित हुए और वे पल मेरे गाव की गरिमा के ऐतिहासिक पृष्ठ बन गए। भगवन् आत्री विराज रहे थे, मन मे सकल्प हुआ गुरुदेव का रामपुरा लाना- समय कम मार्ग लम्बा गुरु का जाप ही इस सकल्प विकल्प के भवर से उबारेगा यह तय कर

बैठे। ग्रामीण मार्ग का सर्वे किया। दूरी सिकुड़ गई कुछ झूठ का सहारा लिया। जानते थे हमारी चालाकियो को फिर भी मेरे भगवन् आचार्य प्रवर मान गए। भक्त की भावना को भर देने की अद्‌भुत औदारता थी। आत्री से चपलाना और यहा रामपुरा। ग्रामीण क्षेत्र कटकाकीर्ण पाडडिया, छोटे-छोटे नुकीले पत्थर, तीखे शूल से भरे रास्ते पर हमारी आस्था के आधार बढ़ रहे थे। हम साथ चल रहे थे। नन्हे कोमल पद पकज जिन पर हम मस्तक रगड़ निहाल हो जाते है वे ही कोमल कमल चरण ककर और काटों से लहूलुहान हा रहे थे। हम पश्चाताप् से गलते, सकुचाते भगवान से निवेदन करते, कष्टो के लिए क्षमायाचना करते दो राहे पर लकड़ी से निशान बना गतिशील थे। एक लम्बा नुकीला काटा एड़ी म धस गया। दर्द असीम हुआ होगा, पर टीस तो दूर समता सुमेरू के चेहरे पर दर्द की झलक तक नही थी। साथ के मुनिराज ने लकड़ी की सुई मिटमटी से काफी मशक्कत के बाद निकाला पर उस काटे ने दो दिन का बुखार ता दिया ही। इस यात्रा म कष्ट तो घनेरे थे। पर उपकार भी बहुत हुआ।

भाग्य सराहू या पुण्यवानी वाचू कि आचार्य भगवन् की कृपा मेहर सदा प्राप्त हुई। राणावास के चार्तुमास मे स्वय के भी मुख से जीवन गाथा सुनी। हर चातुर्मास मे मुथे कुछ न कुछ मिला। ब्यावर के चातुर्मास मे २-२ घटे तक अकेले सेवा का अवसर मिला। श्रीमुख से मुझ नादान को इतिहास वर्तमान और भविष्य के कई सकेतो की जानकारी मिली। सयमी हृदय एव समता का सम्यक् आचरण, दया, करुणा विश्वास जिनवाणी म अनुपम रसीलापन सहज प्रत्यक्ष था।

उदयपुर आ गया था। गुरुदेव ने पूर्ण विश्राति पाई और आचार्य श्री रामेश का जप-तप की जय का आह्वान गूज रहा था। भक्तो की बाढ़ नानेश शिष्य रामेश के चरणो मे नमित थी। -अजीत कड़ावत

गुरु मुख से निकले वे शब्द

वर्ष १९७६-७७ मे आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर में विराजित थे। मुझे आचार्य प्रवर के दर्शनो के लिए कहा गया और जब मै वहा पहुचा तो एक सज्जन जो इस सघ के बड़े श्रावक भी है, मुथे मिले। वे बोले- डॉक्टर साहब क्या आप आचार्य श्री की आख की जाच यही पर कर लेंगे? मैने कहा- इसमे मनाही की तो बात ही क्या है। यह तो सेवा का मौका है जो भाग्य से ही मिलता है।

यह कहते हुए मै आचार्य प्रवर के दर्शन के लिए कमरे की ओर बढ़ा जहा वे विराजमान थे। मैंने उनकी आख देखी और आगे की जाच के बारे मे अपन मन म सोचते हुए आचार्य वर से निवेदन किया। आपकी आख की जाच तो यहा पर भी हो सकती है परतु मै यह कार्य यहा नही करूगा। आचार्य वर मेरी ओर विस्मित से देखते हुए बोले क्यो मरोटी जी ?

मैंने भी विनम्र मुस्कान के साथ कहा, आचार्यवर यही तो एक मौका है मेरे घर पर आपके पधारने का। भला मैं इससे वचित क्यो रहू।'

हमारे इस वार्तालाप के साथ ही आख की जाच के लिए आचार्य प्रवर का घर पर पधारना तय हो गया। समय रखा दोपहर के तीन बजे का। आचार्यवर साधु-श्रावको के साथ पधारे। कमर मे प्रवेश करने के साथ ही एक श्रावक बाले- डॉक्टर साहब पखा बन्द कर दो। मेरा उत्तर था- पखा तो पहले से ही चल रहा है। आचार्य वर क काना मे यह बात पड़ गई। सुनते ही तत्काल बाले- जो जैसी स्थिति में है वैसे ही रहन दो।

आख की जाच हो जाने के बाद उन श्रावकजी की ओर इगित करते हुए आचाय श्री न कहा डॉक्टर साहब को श्रावक ज्ञान भी अच्छा है। आचाय श्री के श्री मुख से मेरे लिए ऐसे शब्द निकलने से मेरा मन पुलकित हाना स्वाभाविक था। तब मरे मन म एक और बात भी उठी कि आचाय श्री नानालालजी कितन समदृष्टि है। मुथे भली-भाति मालूम था कि आचाय श्री को यह जानकारी है कि मै तेरापथी श्रावक हू। तब भी मेरे लिए ऐसे सारगर्भित उद्‌गार आचार्य श्री की समता के द्योतक है।

आचार्य श्री नानालालजी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि तभी होगी जब समूचे श्रावक समाज मे समदृष्टि और समता भाव जागृत होगा।

-डॉ जे एम जैन मरोटी, गगाशहर,

तागे का पक्का निकल गया

अभी सज्जनमल जी मूणत सपरिवार चागुटोला राजनादगाव दर्शन करके सकुशल लौटे। हल्का हल्का पीठ पसलियो मे कई दिनो से दर्द था मगर ख्याल नही किया वायु का उठाव समक्षा २७-९ को ब्लड प्रेशर बढ गया। इन्दौर ले गये, डॉक्टरो को दिखाया, जाच कराई कुछ डॉक्टर कहने लगे- नस डेमेज हो गई, हार्ट का आपरेशन कराना पड़ेगा। जय गुरु नाना का नाम रटने लगे, देखो फिर चमत्कार हुआ, आपरेशन टल गया, डॉक्टर ने बताया आपकी किस्मत बहुत बढिया है जो वेन (नस) डेमेज थी उसका खून दूसरी वेन म चला गया अगर नीचे पैर मे जाता तो लकवा, हार्ट में जाता तो अटेक, माईंड मे जाता तो ब्रेन हमेरेज हो जाता लेकिन गुरुदेव की कृपा से बच गये।

-सज्जनमल, सुभाषचद, ताराबाई, सुनिता मूणत

गुरु नानेश की चरण रज का चमत्कार

मेरी नानी जी श्रीमती जड़ाव बाई चौरड़िया के पाव रोगाक्रान्त थे। पाव हाथी के पाव जैसे मोट थे और भैस की चमड़ी जैसे कठिन स्पर्श वाले थे। इतनी खुजाल थी कि पूछा मत। नाखूनो से भी खुजाल नहीं मिटती थी। खुजालना ताब के सिक्को से पड़ता था। काफी उपचार कराया मगर कोई मतलब सिद्ध नही हुआ। १९९१ मे पीपल्याकला म श्रद्धेय आराध्य गुरु देव के पावन दर्शन किये। चलते चलते गुरुदेव के चरण तले की रज को उठाया। घर आकर उसकी पोटली बनाकर पाव पर फिराया। चद ही रोज मे पाव सामान्य हो गया। सूजन, खुजाल गायब। आराम व चैन की नीद आने लगी। जहा भी हो वही शीघ्र परमात्मपद का वरण करे।

-अजय भावना, चागाटोला

जय गुरु नाना मुख की वाणी

मद्रास घोर्वापेट ब्रिज पर एक्सीडेट हुआ, बस के नीचे दानो पैर आ गए एक पैर कुचला गया उसी समय बेहोश हो गया। पुलिस वाला आया। देखा बोला मर गया, सिर पर डालने कपड़ा लेने गया, इतने मे एक मुस्लिम आदमी ने आकर देखा। मेरी जेब से बटवा, गले से चैन एव घड़ी सब खोल दिया। कहीं पुलिस वाले न ले लेवें। बटवे मे फोन नम्बर था। जब घड़ी खोल रहा था बेहोश अवस्था मे मेरे मुह से आवाज निकली। होठ हिले, जय गुरु नाना इस प्रकार तीन आवाज सुनी जब कि मेरे होठ नहीं खुले। पुलिस कपड़ा लेकर आई। मुस्लिम बोला अरे यह तो जिन्दा है, उसके अन्दर से गुरु की आवाज आयी। तब तुरन्त हास्पिटल ल गये। मुस्लिम ने घर फोन किया। रात को ८ बज रही थी। पत्नी घर पर नही थी। शादी पर उटी गई हुई थी। बच्चे सुनते ही दौड़े आये। पहले हास्पिटल मे मना कर दिया, दूसरे हास्पिटल ले गये। सर का स्केन लिया, फिर भर्ती किया क्योंकि सिर से बहुत खून बह चुका था, खून चढ़ाया। चार आपरेशन हुए दो पाव मे एक हाथ म। फ्रेक्चर हुआ था। प्लास्टिक सर्जरी हुई। सवा महीने म ठीक हुआ। आशा ही नहीं थी कि इतना सुधार हो जाएगा। सभी आश्चर्य करते है। सब गुरु नाम का चमत्कार। मौत के मुख से निकला गत २९ ९-९९ को ही उदयपुर मे आराध्य देव के अन्तिम दर्शन किये। गुरु महिमा को कहने लिखने की मेरी क्षमता नही है।

-गौतम गुणवन्ती, विनोद,पिंकी, मद्रास

साँस-साँस मे रोम-रोम मे बसे हैं

बात उस समय की है जब हम अपनी मम्मी-पापा मासाजी-मासी जी और अपन परिवार क अन्य सदस्यो के साथ पू गुरुदेव क दर्शनार्थ जा रहे थे। हम और भी स्थानो मे सत सतियो के दर्शन करते हुए गुरुदेव की कृपा से सकुशल थे कि अचानक एक हादसा हुआ। हमारी गाड़ी एक पेड़ से जा टकराई और मेरा मौसेरा भाई रोड़ पर जा गिरा। इधर हम सभी जय गुरु नाना का स्मरण करने लगे

और उस तरफ गए जहा वह गिरा था । उसी समय उसके ऊपर से जीप चली गई हम उसके पास पहुचे तो उसे उठा कर लाये और गाड़ी मे बिठाया और देखा तो उसके पैर मे न ही खरोच थी और न ही शरीर मे कोई तकलीफ या दर्द । यह तो गुरुदेव की कृपा थी। चमत्कार का ही शुभ फल जो इतनी बड़ी दुर्घटना टल गयी। ऐसी दुर्घटना की घड़ी मे सकट मोचक उपकारी जीवन दान देने वाले गुरुदेव के ऋण से उऋण होना इस जीवन मे तो असभव लगता है।

उस महापुरुष का हमारा यही श्रद्धा सुमन समर्पित है कि वह दिव्यात्मा शीघ्र शिवपद वरे, हमे भी सम्यक् मार्ग दर्शन दे।

-विजय चौरड़िया, रूपल चौरड़िया

गुरुदेव की महती कृपा

जब-जब पूज्य आचार्य भगवन् के दर्शन हेतु जाने का काम पड़ता तब चातुर्मास स्थल पर पहुचकर दर्शन प्रवचन का लाभ लेता था। दर्शन का लाभ लेने के पश्चात् पूज्य आचार्य भगवन् स्वय ही फरमा देते कि दोपहर २ बजे धमतरी सघ के साथ बैठेंगे। दोपहर मे जब बैठते थे तब धार्मिक चर्चा प्रश्नोत्तर, त्याग-प्रत्याख्यान की बातें होती और हमारे साथ दर्शनार्थ जाने वाला हर व्यक्ति सीख के रूप मे कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर ही लौटता और हर श्रावक श्राविका पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर अपने को धन्य समझता और अपने जीवन में एक आत्मीय आनद की अनुभूति करता। यह सब गुरु दर्शन का चमत्कार है और गुरुदेव की महती कृपा का प्रतिफल है।

-दीपक बाफना नानेश रामेश सघ सदस्य, धमतरी

क्या गुरुदेव पीछे खड़े हैं

सवत् २०५१ का चातुर्मास नोखामडी था। प्रति रविवार बीकानेर सघ की बस आचार्य प्रवर व युवाचार्य प्रवर के दर्शनार्थ जाती थी। पूज्य माता-पिता के पुनीत सस्कारो के कारण बचपन से ही सन्त भगवन्तो के प्रति दृढ आस्था व विश्वास मुझमे प्रतिपल विद्यमान है। महामहिम आचार्य देव की असीम कृपा मुझ अकिचन प्राणि पर निरन्तर प्रवहमान रही। जिसके कारण आज भी महापुरुषो के दिव्य सस्कारो की जीवन में अमिट छाप विद्यमान है।

हुआ यू कि आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ नोखामडी पहुचा। उभय भगवन्तो के अमृतोपमय प्रवचन से लाभान्वित हो मागलिक आदि का श्रवण कर बस स्टैण्ड पहुचा। वही बीकानेर के कई आए हुए दर्शनार्थी भी थे उन्ही के साथ मै भी जोगा (जीपनुमा) बस मे बैठा और बीकानेर के लिए वह जोगा प्रस्थित हुई। हम लोग मात्र ११ कि मी पहुच पाये थे कि सामने से एक ट्रक लहराता हुआ आया और उसने जोगा को टक्कर मार दी। जोगा मे बैठे सभी लोग एकदम बिखर गये। किसी को कही चोट किसी का कही चोट आई परतु आचार्य भगवन् की सुखद मागलिक का प्रतिफल यह हुआ कि इतनी जोरदार भीड़न्त के बावजूद भी सामान्य रूप से मुझे चोट लगी व आखो के आगे अधेरा छा गया। मैंने गुरुदेव का स्मरण किया और शीघ्र ही सामान्य हो गया। बीकानेर से आई रोडवेज की बस के ड्राइवर व कडक्टर ने मानवता का उदाहरण पेश किया और शीघ्र ही बस के यात्रियो को उतार कर घायल हुए सभी लोगो को बस मे बिठाकर नोखामडी अस्पताल पहुचाया जिससे समय पर प्राथमिक उपचार सभव हुआ।

आज भी वह स्मृति उभरती है तो आचार्य प्रवर व युवाचार्य प्रवर के प्रति मानस श्रद्धा से नत अवनत हुए बिना नहीं रहता।

अष्ट सिद्धि सब निधि के दाता।
गुरुवर है भव्यो के त्राता॥

-कमलचन्द लूणिया

आचार्य नानेश के सस्मरण

आचार्य नानेश एक युगान्तरकारी आचार्य बनेंगे इसकी उस समय कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। गुदड़ी मे छिपे एम अनमोल रत्न का कोई विनरत्न जौहरी ही परख सकता है। गुरु की अभिलाषा को आपने पूरा किया। आज तक आपके पास ३०० से भी अधिक दीक्षाए हो चुकी है।

उदयपुर मे गणेशाचार्य के किडनी का आपरेशन होने के बाद स्वास्थ्य म सुधार आया और फिर अस्वस्थ हो गये। तब ? अनेक की यह राय हुई कि अब पूर्ण सथारा करा दिया जाय, पर आचार्य नानेश ने नाड़ी देखकर कहा कि अभी पूर्ण सयारा कराने की स्थिति नही है, तीन दिन अचेतन अवस्था मे सागरी सथारा चलता रहा, बाद मे चेतना आई उसके बाद करीब ३ वर्ष तक गणेशाचार्य जीवित रहे। यह सब आचार्य श्री नानेश की दीर्घदृष्टा का प्रतीक है।

जब आप विचरते हुए दाता पधारते तब आपकी ससार पक्षीय माता शृगार ने कहा, नानालाल जी महाराज, आप सब के पूज्य बने हुए है, प्रसन्नता की बात है लेकिन अभिमान मे मत आ जाना, सबको साथ लेकर चलना।

एक अन्य प्रसग पर माता शृगार ने गणेशाचार्य को निवेदन किया-अन्नदाता ए घणा भोला टाबर है, या पर अतरो बोझोमती नाको ? तब आचार्य श्री ने कहा नाना नी रया, मोटा वेइग्या है। नानेशाचार्य ने उपरोक्त वचनो को सार्थक कर दिखलाया। कौन जानता था कि शृगार मा का यह लाल शाहो का शाह बन जावेगा।

ऐसे गुरुवर नयनो के तारे, नाना गुरुवर प्राणो से प्यारे।

-माणकचन्द जैन, चेगलपेट

नाम-स्मरण-चमत्कार

एक बार मेरी धर्मपत्नी श्रीमती त्रिवेणी देवी बीकानेर से मद्रास अकेली आ रही थी। दिल्ली से मेरे सालाजी ने इनको तमिलनाडु एक्सप्रेस मे बैठा दिया। अचानक आमला से नागपुर के बीच इसी गाड़ी के १३ डिब्बे पटरी से उतर गये। इनका डिब्बा भी पलट गया। भयकर गड़गड़ाहट के साथ दिन मे भी रात का सन्नाटा छा गया। ऐसी स्थिति मे इनको जय गुरु नाना, जय गुरु नाना के नाम स्मरण के अलावा कुछ नहीं सूझा। स्मरण करती गई। अचानक जब होश आया तो जैसे किसी ने इनको साक्षात् बचा लिया। ऐसी है गुरु नाना की महिमा का चमत्कार।

ऐसे गौरवशाली आचार्य श्री नानेश को श वदन एव श्रद्धा सुमन अर्पित करते है।

-तोलाराम मिन्नी,

बैग मिला

आचार्य श्री का चार्तुमास नोखामडी थ राजनादगाव श्री सघ अध्यक्ष श्री दुलीचन्द जी पारख मागीलाल जी लोढा श्रीमती पारसबाई पारख श्री कचन वाई बैद, श्री जेठमल जी ओस्तवाल आदि श्रावक श्राविकाओ के साथ दर्शनार्थ इन्दौर पहुचा।

इन्दौर मे शासन प्रभाविका स्थविरा महाश्रमण रत्ना श्री इन्दर कुवर जी म सा श्री प्रेमलता जी म सा आदि ठा का चातुर्मास था। दर्शन प्रवचनान्तर रेल्वे स्टेशन पहुचे। अनायास ध्यान आया कि बैग जिसमे ४० रिटर्न टिकिट एव ५००० रुपये थे कही छूट गया।

चिन्तित हो स्टेशन मास्टर से निवेदन किया टिकिटो की फोटो स्टेट कापी दिखाई वो कहने लगे मुख्य स्टेशन दुर्ग जहा से टिकिट बनाये गये इन्क्वारी करेंगे। इस प्रक्रिया मे ३ दिन लगना स्वाभाविक है।

प्लेटफार्म पर सभी बैठे नानेश चालीसा तन्मयता से गाने लगे। गाड़ी छूटने मे १० मिनिट शेष थे। इतने मे ऑटो चालक हमारा बैग पकड़ सम्मुख आया। कहने लगा मुझे ऑटो चलाते इतना समय हो गया। कभी कभी प्राप्त वस्तु लौटाने की भावना नही बनी। इस बार दिल कचोटने लगा। जब बेग खोलना चाहा करन्ट सा लगा। जब तक बैग मालिक को न पहुचा दू चैन न पड़ेगा। गुरु स्मरण का चमत्कार आज भी हृदय पटल पर अकित है।

-पुखराज जैन, राजनादगाव

टोकरिया ऐसे कहलाया

आज से करीब २५ साल पूर्व की घटना मुझे याद आ रही है। श्रद्धेय आचार्य भगवन् बीकानेर विराज रह थे हमारे नोखा सघ के अग्रगण्य सुश्रावक श्री मूलचन्द जी पारख जो श्रद्धेय आचार्य भगवन् के प्रति अनन्य श्रद्धावान

थे, ने अपने सहयोगी श्रावकगणो से वार्ता करते हुए कहा कि क्या कर, करनीदान जी बोथरा (जो कि मेरे पिता श्री है) यहा नही है। अपने को आचार्य भगवन् के यहा बीकानेर जाकर नोखा चातुर्मास की विनती करनी है। दो-तीन बार उपाश्रय मे खड़े-खड़े कहा तभी मै वहा अपनी दादी मा के साथ दर्शनार्थ उपाश्रय मे पहुचा। पारख जी के बार-२ यह कहने पर कि विनती किससे करवाए तभी मै शीघ्र ही बोल पड़ा कि बोथरा जी के कौनसा टोकर लटका रहा है, अर्थात् बोथरा जी के विना क्या कोई विनती नही कर सकता। विनती ही तो गानी है इसे मै गा दूगा।

श्री पारख जी पहल तो मेरे मुह से निकली बात पर बहुत हसे फिर मुझे कहा कि अच्छा तुम यह विनती गाकर सुनाओ, मैने शायद बहुत अच्छे ढग से जैसे पारख जी चाह रहे थे वैसे ही सुनाया। इस पर पारख जी बहुत खुश हुए व मेरी दादी मा से बोले कि इसे तो हमारे साथ बीकानेर भेजना पड़ेगा और कहा कि यह बच्चा वास्तव मे विनती गाएगा और यही हुआ। श्री पारख जी ने बीकानेर जाकर श्रद्धेय आचार्य भगवन् के यहा नोखा मे चातुर्मास हेतु विनती की एव मेरे से भजन के रूप म विनती गवाई। श्रद्धेय आचार्य भगवन् बहुत प्रभावित हुए एव पारख जी ने सारी बात श्रद्धेय आचार्य भगवन् को बताई कि ये कह रहा है कि बोथरा के कौनसा टोकरिया लटक रहा है, अर्थात् क्या विनती बोथरा जी के बिना नही गाई जा सकती।

श्रद्धेय आचार्य भगवन् बड़ी विनोदपूर्ण मुद्रा म कह उठे-

वाह भई टोकरिया
वाह भई टोकरिया

यह उपनाम टोकरिया श्रद्धेय आचार्य भगवन् द्वारा कहा गया। जब भी मै दर्शनार्थ जाता सर्वप्रथम यह पूछते कि बोथरा जी का वो टोकरिया कहा है ? जब कभी पास बैठे श्रद्धालु पूछ लेते कि भगवन् यह टोकरिया क्या है तो आचार्य भगवन् सहज ही सारी पूर्व की कथा विनोद पूर्ण भाव मे कह देते और जब कभी भी मैं दर्शनार्थ जाता तो सन्त मुनिराज कहते कि भगवन् आपका वो टोकरिया आया है।

यह टोकरिया उपनाम उन्ही भगवन् की देन है। यह उपनाम सदियो-सदियो तक मेरी स्मृति पटल पर रहेगा। ऐसी महान विभूति आज हमारे बीच नही है। लेकिन उनके साथ गुजारे हर पल, हर क्षण की याद तो हमारे बीच है।

श्रद्धानत हू इनके प्रति मै जिनके स्नेह की अमृतमय छाव मे मैने अपना बचपन बसर किया, जिनके स्नेह रस स सुगधित अनुपम भेट मिली है मुझे जिनके आशीर्वाद का झरना आज भी वह रहा है। श्रद्धा के उस दीपक को भक्ति की उस ज्योति को, स्नेह की उस निशानी को भूल पाना मुमकिन नही होगा। इसी भावना के साथ भावमय श्रद्धा सुमन।

-विमल बोथरा

ऐसे थे मन-जीत आचार्य भगवन्

आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति के तत्वावधान मे गुरुदेव की जन्म भूमि दाता का धर्मस्थली एव तीर्थस्थली के साथ-साथ कर्मस्थली मे सुस्थापित करने का विचार बना, तब यह कार्यभार मुझे सौपा गया। इसे मै अपना सौभाग्य समझ कर पूर्ण मनोयोग से कार्य प्रारभ कर रहा था। दाता ग्राम मे प्राथमिक सुविधाओ का भी अभाव था तथा विश्वस्त व्यक्तिया के न मिलने तक व्यवस्था का भार दूसरो पर भी डालना मैने उचित नही समझा। इसी कारण हर कार्य के लिए बाहर जाना पड़ता था। सस्थान मे जीप उपलब्ध थी अत कुछ लोगा न समझा कि मै यहा न रहकर बाहर ही घूमता रहता हू। इसी बात की शिकायत हमारे दूसरे महानुभावो स भी य लोग करते रहते थे। एक तो जीप फिर उबड़ खाबड़ रास्ता पर सर्दी गर्मी, वर्षा की परवाह न कर दौड़ते रहना दूसरे पीठ म अत्यधिक यात्रा से दर्द होने क उपरान्त भी इस तरह की आलोचना स व्यथित होकर कार्य भार छोड़ने का विचार बना रहा था कि अचानक अगस्त ९४ को जीप एक्सीडेंट होने से लगभग दो माह अस्पताल म रहना पड़ा तथा एक वर्ष तक आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ भी नहीं जा सका। जब एक वर्ष के बाद मै दर्शनार्थ पहुचा तो आचार्य भगवन् ने फरमाया कि बहुत दिन बाद दया पाली है। मैने निवेदन

किया कि एक्सीडेंट की वजह से मै दर्शनार्थ उपस्थित नही हो सका तथा दो माह तक विद्यालय भी नहीं जा सका। तब गुरुदेव ने फरमाया कि अब याद आ गया। मैंने एक्सीडेंट की खबर सुनी थी आप स्कूल नहीं गये तब भी कोई बात नही आपका पराक्रम काम करता है। उत्साहवर्धक ये वाक्य सुनकर मै अत्यन्त भाव विभोर हो गया तथा अधिक उत्साह पूर्वक सस्था को व्यवस्थित करने लग गया। गुरुदेव के वे शब्द आज भी मुझे अति सान्त्वना देते है। यही कारण था कि उसके बाद भी ४ वर्ष तक सस्था मे सेवाए दे पाया। सस्था कैसी बनी यह समाज के समक्ष है।

-मनोहरलाल मेहता भू पू निदेशक एव सचिव
आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति, दाता

नाना नाम का चमत्कार

नाना नाम मे है महाशक्ति करते जो उनकी भक्ति।
बीच भवर से प्राणि तरे, जो नाना का ध्यान धरे॥

घटना ९ वर्ष पूर्व जुलाई १९९० की है। बारिस का समय था, परतु मौसम साफ था। मकान का निर्माण कार्य चल रहा था। मकान की छत नही डाली गई थी। खुला आसमान था। निर्माण सामग्री १०० बोरी सीमेन्ट व अन्य सामान वह भी मकान के अन्दर जमीन पर खुला रखा था शाम को ५ ६ बजे निर्माण कार्य बद हुआ। अचानक आधी रात को इन्द्रदेव की कृपा से आधी तूफान के साथ घमासान बारिस शुरू हो गई। बारिस इतनी तेजी से हो रही कि सड़को पर पानी घुटनो से ऊपर भर गया था। बारिस के साथ बिजली भी बन्द हो गई थी। जिस स्थान पर निर्माण कार्य चल रहा था उससे करीब आधा कि मी दूरी पर हम रह रहे थे। नीद खुली देखा घड़ी मे रात्रि के २ बज रहे थे। मेरे मन मे विचार आया कि अब क्या होगा सीमेन्ट खुले मे पड़ी है, पानी मे बह जाएगी। चाहकर भी निर्माण स्थल पर पहुच पाना असभव था। फिर भी रात्रि मे ही सच्चे मन से गुरु को याद किया तथा जय गुरु नाना नाम का सस्मरण किया। गुरु को सा खरी कहकर गुरु के ऊपर छोड़ दिया तथा रात्रि मे सो गया। सुबह ९ बजे कारीगर मजदूर के साथ निर्माण स्थल पर गये, बारिस चालू थी। पूरे मकान के अन्दर १-१ फीट पानी भरा था लेकिन यह गुरु नाना नाम का ही चमत्कार था कि जिस स्थान पर सीमन्ट की बोरिया पड़ी थीं उस स्थान पर जमीन सूखी थी तथा सीमन्ट पर एक बून्द भी पानी नही गिरा था। फिर मजदूरो स सीमेन्ट की बोरियो को उठवाकर पड़ौस के मकान के एक कमरे मे रखवाई। उस वक्त भी बारिस चालू थी परन्तु १०-१५ मिनट पश्चात् ही हमने देखा कि जिस स्थान पर पहल सीमन्ट रखी हुई थी वहा पर भी १-१ फीट पानी भर गया था।

-रखबचन्द नागोरी, खैरादीवास

गुरु भक्ति

बाल ब्रह्मचारी धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालालजी म सा आज से करीब ७ ८ साल पहले जेतारण से ४० कि मी दूर एक छोटे से गाव मे विराजमान थे। गगाशहर स आया हुआ एक परिवार शाम को उनके दर्शन करने गया। आचार्य श्री उन्हे देखकर बहुत खुश हुए व बातो मे लग गये। बीच बीच मे सन्त आकर उन्हें कहते आहार का समय निकला जा रहा है आप पहले आहार ले लीजिये। आचार्य श्री ने कहा कि य आये हुए है अत मै इनके साथ बात कर रहा हू उन सज्जन के मन म एक विचार आया कि मै कभी इनके दर्शन करने नही जाता फिर भी आचार्य श्री कि इतनी कृपा क्यो व उन्होंने आचार्य श्री से इसकी जिज्ञासा की। आचार्य श्री का उत्तर था कि मेरे पूर्व के दो आचार्यों ने इन परिवारो को विशेष भोलावन दी थी।

इसी साल नवम्बर मे इसी परिवार का एक सदस्य आचार्य श्री के दर्शन हेतु उदयपुर गया। पिछले कुछ महीनो से आचार्य श्री की स्मृति प्राय लोप हो गई थी उस परिवार के सदस्य को देखते ही आचार्य श्री ने उन्हे नजदीक बुलाया। पूछताछ की व मागलिक दी। यह सदस्य भी आचार्य श्री के इस व्यवहार से अवाक् रह गया पर वास्तव म आचार्य

श्री का अपने पूर्व आचार्यों की भोलावन शारीरिक अवस्था म भी याद थी। यह उनकी असीम गुरु भक्ति व गुरु श्रद्धा का ही उदाहरण है। पूर्व आचार्यों की भोलावन के बारे म खोज-बीन करने पर मालूम पड़ा कि आज से करीब ७० साल पूर्व आचार्य जवाहरलाल जी म सा भीनासर मे विराजमान थे। एक सम्प्रदाय के लोगो ने यह निश्चय किया कि एक पडित से शास्त्र चर्चा के समय इन आचार्य की मुहपति छीन लेनी है। पर इन परिवारो की गुरुभक्ति के आगे यह चाल सफल न हो सकी।

-रिघकरण बोथरा, कलकत्ता

अनूठी स्मृति

काफी समय से बहिन अनिता वैराग्य भाव मे रमण कर रही थी, उसकी प्रबल भावना के आगे परिवार वालो को झुकना पड़ा एव परिवार म दीक्षा लेने की चर्चा चली। दीक्षा पूर्व बहिन अनिता को आचार्य भगवन् के दर्शन हेतु बीकानेर ले गये, उस समय आचार्य भगवन् सेठिया कोटड़ी म विराजमान थे। दर्शन वन्दन कर स्वास्थ्य के बारे मे पूछा, आचार्य देव ने हमारी तरफ देखा और दूसरे ही क्षण फरमाने लगे भदेसर से मोदी परिवार ने दया पाली है। भगवन् ने आगे फरमाया परिवार मे गेहरीलाल जी, भैरूलाल जी आदि धर्म-ध्यान करते होंगे। परिवार के बुजुर्गों का नाम आचार्य भगवन् के मुह से सुनते ही हम अवाक् रह गये और मन मे आया इतनी वृद्धावस्था म सपीय अनुकूलता नही होते हुए भी इस महायोगी की गजब की स्मृति है। सेवा म निवेदन किया बहिन अनिता दीक्षा लेना चाहती है भगवन् ने फरमाया इतने वर्षों तक परीक्षा ली। आपको अब विश्वास हो गया हो तो धर्म कर्म म विलम्ब अच्छा नही है। यह सब सुनकर लगा आचार्य भगवन् की स्मृति कितनी गजब की है। एसे थे हमारे आराध्य देव नानेश। उनके पावन चरणो मे हमारा मोदी परिवार श्रद्धावनत रहेगा।

-राजकुमार मोदी, बानसेन

देव रूपी महापुरुष

मै अपनी वैराग्य भावना को लेकर आचार्य भगवन् क साथ विहार मे साथ-साथ रहता था। उस समय आचार्य भगवन् मेवाड़ को परसते हुए ब्यावर चातुर्मास हेतु पधार रहे थे। आचार्य भगवन् के तप तेज के दर्शन कर भावना और बलवती होती जा रही थी। आप श्री जी जहा पधारत वहा भक्तो का सैलाब उमड़ पड़ता था। विहार करते हुए आप श्री जी का टाटगढ़ पदार्पण हुआ। धर्म-ध्यान का ठाठ रहा। सायकाल प्रतिक्रमण के बाद थकान से मुझ जल्दी नीद आ गयी। आधी रात के करीब उठना पड़ा और मै अपने काम से निवृत्त होकर अपन स्थान पर आया और सोने लगा तो सहसा दृष्टि आचार्य भगवन् के पाटे पर चली गई। दृष्टि से जो कुछ देखा अवाक् रह गया। श्वास जहा की तहा रुक गई। समझ मे नहीं आया कि क्या किया जाय। आवाज तक नही निकाल पाया। आखें एक टक उसको देख रही थी। जहा गुरुदेव सोये थे उस आसन पर साक्षात् शेर बैठा था। करीब २-३ घटे तक उस आसन पर वह शेर बैठा रहा। पिछली रात के आगमन के आभास के साथ वह दीखना बन्द हो गया। जल्दी से उठा और आचार्य नानेश को आवाज देने लगा। आचार्य भगवन् को अपनी ध्यान मुद्रा म विराजित देख कर दग रह गया। मन म सोचने लगा जहा कुछ समय पूर्व शेर बैठा था वही पर आचार्य भगवन् को ध्यान रत देख कर सोचने लगा यह कोई महायोगी साधक है।

-मनोहरलाल मोदी, बानसेन

क्षेत्र को नया जीवन दिया

हमारे क्षेत्र का नया जीवन व चेतना प्रदान करने का श्रेय आचार्य श्री नानेश को ही है। आचार्य श्री नानेश की महती अनुकम्पा के कारण आज हम धार्मिक नैतिक व सामाजिक क्षेत्र मे उन्नति कर रहे है। आचार्य श्री नानेश का मारवन आगमन बार-बार हुआ। एक बार आचार्य भगवन् का मारवन आगमन हुआ तब किसी ने क्लेश से प्रेरित होकर मारवन पधारने का मार्ग बता दिया। वह मार्ग ककड़ पत्थर व काटो से भरा हुआ था। मगर सघ

था। आचार्य भगवन् इस मार्ग पर बढ़ गए। जब प्रमुख श्रावको व सतो को पता चला कि मार्ग ककरमय है तो उन्हे बहुत ही कष्ट हुआ। उन्होंने हमे डाटा और कहने लगे कि यह कैसा माग बताया है, पूरा काटो से भरा हुआ है। आचार्य श्री को कितना कष्ट होता है। हमने सभी श्रावको व अन्य सभी सन्तो से क्षमायाचना की। श्रावका की भावना भी कितनी महान थी उन्होंने आचार्य भगवन् के कष्टो पर अधिक ध्यान दिया। मगर आचार्य भगवन् की महानता देखिए कि इतना खराब मार्ग होने पर भी एक शब्द नही कहा वरन् मुस्कराते रहे। चेहरे पर वही आभा, वही चमक दिखाई दे रही थी। रूपपुरा पहुच कर आचार्य भगवन् ने विश्राम किया एव पुनः मोरवन क लिए प्रस्थान कर दिया। आचार्य भगवन् के मोरवन आगमन का उत्साह हर आत्मा मे था। छोटे-छोटे बालक भी छ सात कि मी तक आचार्य भगवन् के साथ पैदल चल रहे थे। इसका प्रमुख कारण था आचार्य श्री का आशीर्वाद व प्रेरणा। आचार्य भगवन् ने मोरवन के सभी युवको मे नवचेतना भर दी। सभी हर समय चैतन्य रहन लग। आचार्य श्री ने सभी मे साहस, धैर्य व शक्ति का सचार कर दिया। आचार्य श्री की कृपा व आशीष से आज भी पूरा सघ एक है। हर क्षेत्र मे अग्रणी है। यह सारी कृपा उस युग पुरुष की है, जैन समाज के साथ साथ पूरा मानव समाज आचार्य श्री के उपकारो का कीर्तन करते हुए कहता है कि

उपकार यह गुरुवर, हम भुला न सकेगे,
और चाहे तो भी यह कर्ज उतार न सकेगे।

-पकज, कमलेश पितलिया, मोरवन डेम

एक पत्र से चातुर्मास मिला

समता के मसीहा आचार्य श्री नानेश की कथनी व करनी में कितनी एकरूपता थी, इसका अनुभव हम नगरी सिहावा क्षेत्रवासियो को हुआ। गुरुदेव कहा करते थे, चातुर्मास के लिए आवागमन जरूरी नही है। श्री सघ का अगर एक पत्र भी आ जाए उसे उतना ही महत्त्व दिया जाएगा। १९८९ म नगरी जैन श्री सघ न चारित्र आत्माओ के चातुर्मास की पुरजोर विनती एक पत्र के माध्यम से गुरुदेव के श्री चरणो मे प्रस्तुत की। गुरुदेव ने महासती विदुषी श्री ताराकवर जी म सा आदि का चातुर्मास स्वीकृत कर दिया। घर बैठे ही श्री सघ को चातुर्मास स्वीकृति प्राप्ति होने से सघ व क्षेत्र खुशी से झूम उठा और गुरुदेव की कथनी करनी की एकता के प्रति नतमस्तक हो गया।

आपकी यादो के चिराग हमारे दिलो मे जलते रहेगे।
प्रण यही है हमारा, आपके पथ पर चलते रहेंगे॥

-महेश नाहटा, नगरी

ऐसे बना तब भगत मैं

बात उस समय की है जब आचार्य नानेश शासन मे महासती गुलाब कवरजी की शिष्या महासती विनय श्री जी म सा वैराग्य काल मे थे। उस समय हम तीनो भाई नास्तिक ही थे, तथा बहन की दीक्षा के नाम पर रही सही धर्म से रुचि भी घट रही थे। उस समय अचानक विनयश्री जी जो (उस समय सासारिक नाम विमला था) की तबीयत बिगड़ने लगी। नाड़ी की गति आप ही आप मद पड़ने लगी। उस समय देवी देवता भी घर पर आये उनका भी दाव नही चला। हमारे यहा अच्छे जानकार भी आये। वो भी कुछ नही कर सके। पूरा परिवार व घर मे जो मेहमान थे स्थिति देखकर सभी रोने लगे। उस समय भी विनय श्री जी घर मे आपस मे सभी को प्रेम से व मिल जुलकर रहने की समझाइश देते रहे। वे बोलते रहे कि मेरी दीक्षा होने की नही थी सो नही हो सकी। कोई बात नही। वैराग्य काल मे हमने विमला का तग भी बहुत बहुत किया। बचाने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था बाहरी बाधा जबरदस्त थी। अचानक ही मेरे मन मे आचार्य भगवन् श्री नानेश का ध्यान आया कि गुरुदेव अगर आपमें शक्ति होगी तो विमला को बचा लीजिए। मै उसकी दीक्षा मे बाधा नही डालूगा। दीक्षा दे दूगा। इन बातो को मैंने अपने मन मे ही रोते हुए सकल्प किया था। किसी को बताया नही था। उसके बाद अचानक कुछ ही देर मे तबियत सुधरने लगी व जिसमे उठने बैठने की शक्ति भी नही थी यह अचानक

ध्यान मुद्रा मे बैठकर नवकार का जाप करने लगी तथा उस समय उसके शरीर में मुझे ऐसा लगा कि कोई दैदीप्यमान शक्ति सफेद वस्त्र मे उसमे प्रवेश की व प्रबल शक्ति दी। उसी समय उस जानकार महोदय ने तुरन्त कहा की बाहरी बाधा दूर हो गयी व किसी ईश्वरी शक्ति ने प्रवेश कर तबियत मे सुधार की। उस दिन आचार्य नानेश के स्मरण मात्र से ही उनका प्रभाव देखकर मै चकित हो गया व उनका परम भक्त बन गया व विमला को दीक्षा की आज्ञा भी दे दी। हम तीनो भाई सत सतिया जी के दर्शन भी नही करते थे। यह बात उस समय वहा विचरण करने वाले सती सत-सतिया जी भी जानते थे।

-उत्तमचद साखला, छुईखदान

हमारा मुन्ना

हमारा मुन्ना दो साल का हो गया फिर भी न चलता था, न बोलता था। सारे परिवार वाले बड़े चिन्तित थे। सोच रहे थ कि क्या करे ? डॉक्टर को दिखाया मगर कोई काम नही बना। एक दिन बैठी मैंने मन ही मन सकल्प किया, आराध्य गुरुदेव का स्मरण किया। गुरुदेव आप ही हमारे तारक है, आपका ही सबल सहारा है। आप ही हमारी चिंताओ को दूर करने वाले है। अगर यह चलने बोलने लग जायेगा तो हम दपत्ति शीघ्र ही श्री चरणो मे पहुचेंगे। इसको (प्रतीक को) दर्शन करायेंगे। मन मे कल्पना ही चल रही थी, एकाग्रता से चितन चल रहा था। गुरुदेव के नाम का चमत्कार कि कुछ ही समय बाद हमारा मुन्ना चलने बोलने लग गया। हमारा जीवन, परिवार सुखमय बन गया। हम प्रतिवर्ष दर्शन लाभ लेते। जब भी दर्शन करते हमारे जीवन मे उन्नति होती रही। उसका (प्रतीक) कितना सौभाग्य प्रबल पुण्योदय, कल्पना भी नही थी। पूज्य पिताजी धर्मचन्दजी चोरड़िया आशा बाई चोरड़िया के साथ एक बार कहते ही चल पड़ा। उदयपुर दर्शनार्थ अतिम दर्शनो का सौभाग्य पाया। पार्थिव शरीर को धक्का देकर कहने लगा ऐसा क्यो कर दिया। गुरुदेव एसे क्या हो गये ? बोलते क्या नहीं, ऐसे क्यो बैठे है। समझ नहीं पाया कि वह दिव्य जीवन्त आत्मा प्रयाण कर गई। तब उसको बताया कि यह तो शरीर है। ऐसे अनन्त उपकारी गुरुदेव को भला कैसे भूलें ? स्वामी के साथ नाना का नाम जुड़ा हुआ है। उन गुरुदेव के प्रति हमारी श्रद्धा का अर्चन यही है कि वह आत्मा शीघ्र सिद्ध बने। हमको भी उस पथ का राही बनावे।

नवम पट्टधर आचार्य भगवन् को हमारी शुभ कामना। राम राज्य मे हमारी जीवन नैया को पार उतारे। आप महापुरुष सूर्य सम चमके, दमके गुलाब सम महके।

-प्रवीण चोरड़िया, सुषमा चोरड़िया, चागोटोला

लब्धिधारी

आचार्य नानेश का अपने विद्वान सन्तो के साथ देवगढ़ विराजना हुआ, उस अवसर पर देवगढ़ के ही एक श्रेष्ठी परिवार के मुखिया को दर्शन और मगल पाठ के लिए गुरुदेव के पास लेकर गया मैंने गुरुदेव से अनुनय विनय के साथ प्रार्थना की।

यह श्रावक आपका अनन्य भक्त है, कुछ ही दिनो मे इनके दो बच्चो की शादिया है साधनो की बहुत ही कमी है, उन्हे आशीर्वाद स्वरूप मगलपाठ फरमाने की कृपा करावे।

आचार्य भगवन् ने फरमाया हम तो साधु हैं, क्या कर सकते है ? फिर एकदम उस श्रावक की तरफ देखा कहा, प्रतिदिन २० लागस्स का ध्यान करना और मगलपाठ सुनाया।

कुछ ही दिनो बाद उस श्रावक के यहा दो बच्चो की शादिया आयोजित हुई बहुत ही शानदार शादियो की व्यवस्था हुई, यही नहीं पुराना कर्ज भी उतरा और उसके बाद भी धन की बचत रही इस प्रकार आचार्य भगवन् का यह अद्भुत चमत्कार और लब्धि आज भी जब स्मृति में आती है अत्यन्त श्रद्धा के साथ भावविभोर हो जाता हू। एसे स्वर्गस्थ आराध्य गुरुदेव को कोटि कोटि वन्दना।

-चन्दनमल जैन, देवगढ़ मदारिया

गुरु नाम स्मरण करने से सकट टला

मेरे परिवार के कुल ८ सदस्य ब्रह्मपुत्र मल रेलगाड़ी

मे सवार होकर आ रहे थे। १ अगस्त १९९९ रविवार देर रात २ बजे गैसल स्टेशन पर गाड़ी की अवध असम एक्सप्रेस से भयकर टक्कर हुई। डिब्बे मे धक्के लगने लगे और चारो तरफ चिल्लाने की आवाज आने लगी। नेत्र खुलते ही मेरे पारिवारिक सदस्यो ने जय गुरु नाना, जय गुरु राम नाम का उच्चारण किया। देखते ही देखते जैसे डिब्बे को किसी शक्ति ने रोक दिया और वह डिब्बा पटरी से उतरते-उतरते बच गया। मेरे आत्मज श्री राजकुमार व जमाता श्री रतनलाल मालू ने नीचे उतर कर देखा तो हृदय विदारक दृश्य था।

यह गुरुदेव की कृपा व उनके नाम स्मरण करने का चमत्कार ही कहा जाएगा कि इस भयकर रेल दुर्घटना मे मेरे परिवार के सभी आठो सदस्य मौत के मुह से बच गये और सकुशल देशनोक पहुच गये।

- लिखमीचन्द साड, देशनोक

पूरे परिवार पर चमत्कार

मेरी पौत्री सीमा पुत्री प्रकाश चन्द सुराणा देशनोक निवासी का मात्र सात वर्ष की आयु मे पूरा शरीर उबलते पानी से जल गया था। उसके पहने हुए कपड़े शरीर पर चिपक गये थे उसको तुरन्त कलकत्ता के बड़े अस्पताल मे उपचार हेतु ले गये डॉक्टरो के अथक प्रयास से भी उसको २ दिन तक होश नही आया तीसरे दिन डॉक्टरो ने बोला कि इसको होश नही आ रहा अब इसको ईश्वर ही बचा सकता है। उसी समय मेरी पुत्र वधू मजु सुराणा ने मन ही मन आचार्य भगवन् का स्मरण करके बोली 'हे भगवन् आप कृपा करें'। सीमा होश मे आकर ठीक हो जायेगी तो मै प्रतिवर्ष आपके दर्शन कराऊगी। लगभग आधा घटा में आचार्य भगवन् की कृपा से सीमा को होश आ गया और लगभग १५ दिन मे अस्पताल से छुट्टी मिल गयी तथा लगभग २ माह मे बिल्कुल ठीक हो गयी। आचार्य भगवन् उस समय जलगाव चातुर्मास हेतु विराज रहे थे। मेरे पुत्र प्रकाश ने सपरिवार आचार्य भगवन् के दर्शन करके सारी बात बतायी तो आचार्य भगवन् बोले मै क्या किसी को जिन्दगी दे सकता हू, आप सामायिक व धर्म ध्यान करे पूरा ध्यान करे। ऐसे महान युग पुरुष आचार्य भगवन् श्री नानेश को हमारा सपरिवार शत शत वदन। जिनेश्वर देव ऐसे महान आत्मा को उनके पथ पर चलते मोक्ष प्रदान करे। यही हम सबकी सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

- खेमचन्द सुराणा, भवरी देवी सुराणा

नानेश सदगुरु त नमामि

गुरु एक ऐसी शक्ति है, जो व्यक्ति के जीवन का निर्माण करती है और उस विकास की ओर ले जाती है। गुरु के बिना जीवन की सारी गतिविधियाँ लक्ष्यहीन हो जाती हैं। जीवन की डोरी गुरु के हाथ है। गुरु वही करेगे जो शिष्य के हित मे हो। कहा गया है कि -

तीन लोक नव खड, गुरु से बड़ा न कोय।
करता करे न कर सके गुरु करे सो होय॥

सारे जगत मे व्यक्ति गुरु के बिना कुछ कर नही पाता। गुरु की कृपा एव आशीर्वाद से ही सब कुछ करता है। इसलिये गुरु को जीवन का कर्ताधर्ता माना जाता है। गुरु के प्रति समर्पण भाव है तो गुरु की आज्ञा पालन मे तत्परता रहेगी ही। गुरु जो आज्ञा दे, उसे मान लेना चाहिए उसमे किसी प्रकार का सोच विचार तर्क वितर्क नही करना चाहिए।

जैनागमो मे कहा है कि 'गुरु आणाए धम्म, गुरु की आज्ञा मे चलना ही धर्म है और कहा है कि जो गुरु के समीप रहता है, उनकी आज्ञा का पालन करता है, उनकी भावनाओ को समझता है, उनके द्वारा किए गए इगिता इशारो को जानता है वह विनीत शिष्य आसानी से जीवन धर्म के गूढ़ रहस्यो को जानकर आत्म कल्याण करने मे समर्थ होता है।

अज्ञानरूपी अधकार को नष्ट करने के लिए, नेत्रो मे ज्ञान रूपी सुरमा (अजन) डालते हैं और नेत्रो को दिव्य ज्ञान ज्योति से भर देते हैं ऐसे नानेश गुरु को मै नमस्कार करती हूँ। परोपकारी गुरु के चरणो में पुन पुन वदन।

ओ काल बता तुझको क्यो तरस आया नही

किसी का सुख चैन तुझ को भाता नही,
मिला क्या, बता छीनकर तुझे इस हस्ती को,
कोई समझ पाता नही काल तेरी इस मस्ती को।

-मीनू गोखरु

दीप स्तम्भ

महामहिम श्री नानेशाचार्य उन महापुरुषो म से हैं जिन्होने अपने जीवन की अमर ज्योति जलाकर जैन सस्कृति के महान प्रकाश पुज से ससार को प्रकाशित कर दिया। आप जिधर भी गये उधर ज्ञान दीपक का प्रकाश फैलाते गय। जनता के बुझे हुए हृदय दीपको मे ज्ञान के प्रकाश का सचार करते गये और शास्त्रो के दीप सम आयरिया के सिद्धात को पूर्ण सत्य के रूप मे चमकाते गये।

किन्तु दीपक तथा आचार्य का महत्त्व अपने-सा प्रकाश दूसरो मे उतारने के लिये है। आचार्य श्री जी ने अपने महान व्यक्तित्व की छाया मे युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा आदि ऐसे महान सत तैयार किये हैं जो भविष्य म अधिकाधिक ऊर्ध्वगामी होते जावेंगे। आचार्य भगवन् की साधना-किरणो का प्रकाश नवोदित शासन सूर्य आचार्य श्री रामेश मे प्रतिबिम्बित होता रहेगा और यह हुक्म शासन उन श्री जी के कुशल नेतृत्व मे उन्नयन की दिशा मे अग्रसर होता रहेगा। प्रशातमना आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा श्री के चरणो मे अपनी श्रद्धा समर्पण पूर्वक अभिनदन करती हूँ।

-किरण देशलहरा, नहरपारा, रायपुर

मेरी आस्था के केन्द्र

गुरुदेव के नाम मे इतनी शक्ति है कि जब भी गुरुदेव का नाम लेते है सभी सकट टल जाते है।

मरने वाले मरते है, लेकिन फना होते नही।
ये हकीकत मे कभी, हमसे जुदा होते नही॥

पूज्य गुरुदेव हमारे समीप नही है किन्तु उनके गुण हमारे बीच कायम हैं। उन्हीं के बताए मार्ग पर हमे चलना है, यही हमारी सच्ची श्रद्धाजलि होगी। अत मै गुरुदेव के चरण कमलो मे श्रद्धा के अधखिले पुष्प समर्पित करती हूँ।

धरती अबर गूज उठे,
गुरुवर के जयनादो से।
प्रणाम उन्हे मै करती हूँ,
श्रद्धा के अनगिन हाथो से॥

-किरण देवी गुलगुलिया, बीकानेर

एक दिव्य मशाल

गुरुदेव की गुण गरिमा का गान करना मेरी कथनी और लेखनी की शक्ति सीमा से बाहर है। महापुरुषो के रास्ते पर चलना ही हमारा लक्ष्य बनना चाहिए। गुरुदेव तो अनन्त गुणो के भडार थे। स्वभाव से भी इतने भोले थे कि कई बार भक्तजन उनके भोलेपन पर समर्पित हो जाते थे। उनका ज्ञान विशाल था। आज भी गुरुदेव के सयम, ज्ञान, सेवा तप की सौरभ समस्त वातावरण को महका रही है। उनके चरणो मे भावाजलि अर्पित करती हूँ। ससार की सभी दिशाओ मे आपका यश फैल रहा है और वह दिनो दिन फैल तथा हर भक्त आपको याद करे एक मिशाल समझकर।

गए फूल गुलिस्ता से, बहारें चली गई,
सुन्दरता मिटी खुशबू और निखारे चली गई।
था जाम जिन्दगी का, भक्ति से लबालब
टूटे तार श्वासो के, झकारे चली गई॥

-कु रचना बैद, धमतरी

सब कुछ दिया तुम्हीं ने

हे अमृत वर्षी मेघ, तुम चारो ओर की तपिश को शान्त करते रहे हो, छोटी-छोटी सीपियो मे मोतियो को भरते रहे हो, मानवी धरा को सींच सींच कर हरा भरा करते रहे हो चदनादि महान वृक्षो को पल्लवित करते रहे हो। तुमने तो सागर से केवल खारा पानी ही लिया बदले मे विश्व को जीवन दान दिया। ससार मे तुम्हारे

कोई गुण गा सकता है । मन की सीप खाली थी और विचारो का क्षेत्र सूखा पड़ा था । ऐसे मे एक महामेघ ने मुझे बहुत कुछ दिया, बिना मागे बिना सोचे और बदले मे मुझसे कुछ लिया भी नही । वही महामेघ थे मेरे जीवन के आराध्य सर्वस्व पूज्य गुरुदेव श्रीनानेश । मै तो क्या कोई भी उनके गुणो का वर्णन नही कर सकता ।

- मोना गुलगुलिया, आसाम

हे महामानव ! आप अमर हैं

जीवन म आदर्श पुरुषो का सयोग बड़ा ही दुर्लभ है, जो जीवन की अनजान और अधेरी गलियो म भटकते हुए प्राणी को बाँह थामकर उबारते हैं । वरदहस्त एव कृपा-दृष्टि से आत्मा को कृत-कृत्य करते हैं । जिस तरह फूलो की सख्या का नहीं सुगध की सुदरता का महत्व है उसी तरह इस ससार के अनन्तानत प्राणी की नहीं चरित्र की सुगध से भरपूर आत्मा की चाह होती है । यू तो इस कालचक्र मे असख्य प्राणि आय हैं, गये हैं और अनेक बीच म ही फसे हैं । इस कालचक्र मे रहते हुए भी अपने जन्म-मरण को सार्थक और सीमित करने वाले विरले ही हैं । इन्ही कड़ियो के अधिकारी महानपुरुष धर्म की पावन गगा, जैन गगन के चद्र जैन शासन की ज्योति करुणा सागर, समता, सरलता के अक्षुण्ण भडार महान विभूति परम पूज्य आचार्य श्री 1008 श्री नानालाल जी म सा थे ।

योग शास्त्र मे वीतराग विषय चित्तम् द्वारा स्पष्ट किया गया है कि महापुरुषो के चितन मात्र से ही चित्तवृतियो का निरोध होकर परमात्मा की प्राप्ति होती है ।

वीर प्रभु से मेरी कामना है कि गुरुदेव आप प्रत्यक्ष तो नहीं पर परोक्ष रूप से निश्चित ही हमारे बीच विद्यमान रहेंगे और गुरुदेव की आत्मा उच्चकुल गात्र गति को प्राप्त कर शीघ्र ही स्वल्पभव म शाश्वत पद को वरेगी ।

-शारदा जैन, केसिगा

साधक व इलके पट्टधर

समय बड़ी रफ्तार से चलता है,
इतजार करना उसका काम नही ।
सलिला वेग से बहती है
उसे पथ ढूढने की फुरसत नही ।
रोक नही पाता कोई समय
की गति औ सलिला के वेग को ।
रोक ले शक्तिवान सलिला वेग,
पर सभव नही समय की गति को ॥

मेरी चाह थी कि जीवन नैया के तारक उभय भगवन्तो की सन्निधि मे ही सयम जीवन अगीकार करके परम पवित्र चरण कमलो की छत्र छाया म प्रथम रत्न की आराधना करू । बहुत कोशिश की किन्तु परिवार वालो की भावना थी अपने क्षेत्र मे दीक्षा कराने की । मै अपने महाप्रभुद्वय की अर्चना करने वाली अर्चनिका थी अत मैंने परिवार वालो से भी उनके पावन विचारो का आदर किया । मेरी भावना तीव्र व उत्कट हो रही थी कि ऐसा अनूठा सुनहरा सुखद-सुअवसर मिल जाये और मै इन महान लोकोत्तर गुरुभगवन्तो से सयम धन प्राप्त करूँ ।

पर विडम्बना है, इन कर्मों की, मेरे अरमानो के स्वप्न अधूरे के अधूरे ही रह गये । अब मै चाहे लाख उपाय करूँ, पर उन अद्भुत ब्रह्मयोगी परमोपकारी नानेश गुरु को कहाँ से लाऊँ । फिर भी अपने आप मे सतोष कर लेती हूँ कि मेरे बौद्धिक कल्पतरु गुरु नानेश ने एक ऐसी महान कला कृति को परम पिता परमेश्वर के रूप मे उत्तराधिकारी बनाया तदर्थ सभी आभारी हैं । मेरे ही नही, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सपने साकार होंगे नाना के अनोखे राम गुरु मे ।

मुमुक्षु निर्मला लोढा, पाचोरी

हुक्म सघीय गुलशन के अनमोल पुष्प

हम छोटे छोटे बच्चे थे आसाम की अनार्य सदृश्य भूमि पर जन्म भगिनी (समीक्षाना जी म सा) की दीक्षा से पहले मैंने गुरुदेव श्री के दर्शन भी नही किए थ

किन्तु नाना नाम मे कितना चमत्कार है यह मम्मी ने हम को प्रत्यक्ष अनुभव करवा दिया था । घर मे बड़े छोटे किसी को भी मस्तिष्क या पेट, पीठ मे कही भी दर्द होता मम्मी जय गुरु नाना नाम का स्टीकर या नाना गुरु की चरण रज लाकर मल देती । दर्द गायब हो जाता । पापा यही फरमाते थे कि गुरुदेव सभी रोग, शोक, दुख के हरणकर्त्ता हैं । इस अनुभूति के बाद मैंने गुरुदेव श्री के दर्शन किए-मुझे लगा मै एक गहन सागर, विराट ब्रह्माण्ड और अनन्त क्षितिज के सामने खड़ी हूँ ।

सघ के गुलशन मे खिला हुआ यह एक अनमोल पुष्प, जिसकी खुशबू से सम्पूर्ण सघ/समाज की बगिया महक उठी है । यह नाना, नाना ही नही है महावीर का स्याद्वाद और अनेकान्त है । हिमालय अपनी उत्तुग ऊँचाई क लिए प्रसिद्ध है पर उसमे गहराई का सर्वथा अभाव है,इसी प्रकार हिन्द महासागर अपनी अतल गहराई के लिए विख्यात है पर उसमे ऊचाई के लिए कोई स्थान नही । एक साथ ऊचाई और गहराई यदि देखना हो तो आचार्य श्री नानेश मे देखे । जहाँ उनमे आगमोक्त सम्यक् ज्ञान राशि की अथाह गहराई है वही चारित्रिक तप साधना की ऊर्ध्वगामिता भी है ।

स्वरूप मे आकर्षण, स्वभाव मे सरलता, दुख द्वन्द्व नाशिनी- अविनाशी वाणी का मधुर आस्वाद पाकर अपना सारा क्लेश मिटा लेता और अपने अतर को मोद-प्रमोद से भर लेता, ऐसे गुरु नाना कहाँ हैं ।

-मुमुक्षु ममता बोथरा, पथारकादी

समता की दिव्य ज्योति

27 10 99 रात को दो बजे अचानक आँख खुली - गली मे माईक की आवाज आई- अत्यत दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि समता विभूति आचार्य भगवन् का   बस सुनते ही अवाक् रह गई । एकाएक ऐसा लगा कि सारी दुनिया सूनी हो गई, जैसे हमारा सब कुछ चला गया ।

तभी दिल से एक आवाज उठी   गुरुवर की मात्र पार्थिव देह ही गई है शेष सब कुछ यहीं है । मेरे गुरुवर तो बच्चे - बच्चे के मुह से बोलेंगे   धर्मपालों की आँखो मे दिखाई देंगे । उनका अस्तित्व तो जन-जन मे है ।

मेरे गुरुवर चुप कहाँ है ? उनका ज्ञान बोल रहा है, ध्यान हमे शिक्षा दे रहा है, त्याग हम दिशा दे रहा है, गुरुवर की करनी दिखाई दे रही है, कथनी सुनाई द रही है   कहाँ गये है मेरे गुरुवर सब कुछ तो यही है, गुरुवर की सत्ता तो कण-कण म समाई हुई है ।

नानेश वाटिका मे आचार्य भगवन् के लगाये हुए सत- सती रूपी पौधो की हरी-भरी बगिया और सबसे बढ़कर युवाचार्य श्री राम जैस बागवाँ हमारे लिये छोड़ गये हैं जो सदा इस बगिया को सुरक्षित रखेंगे । इसमे नित-नई कलियाँ चटकेगी फूल खिलेंगे और उन फूलो की खुशबु दूर दूर तक फैलेगी व सारे वातावरण को सुरभित कर देगी । गुरुवर का सदेश- समतामय हो सारा देश' जब तक जन जन म रहेगा, तब तक समता विभूति की मशाल सदा-सदा के लिये प्रज्ज्वलित रहेगी ।

यह दिव्य मशाल कभी नही बुझेगी सदियो तक जलती रहेगी अविचल   अविराम   हमे राह दिखाती रहेगी, दूर-दूर तक हमे प्रकाश देती रहेगी ।

-अनिता डूगरवाल

सहज और सरल महासाधक

आचार्य श्री के आभा मण्डल से अमृत बरसता था । मुझे कई बार प्रत्यक्ष अनुभव हुए। दूसरे मासखमण की तपस्या मे अद्‌भुत शाति की अनुभूति हुई । माली सरिता कुसुमाकर ने जय गुरुनाना पार लगाना से प्रभावित होकर ही गुरु दर्शन का लाभ लिया ।

मुझे डाक्टरो ने जवाब दे दिया था, रात म सोते वक्त गुरुदेव का ध्यान करके सोयी थी । ध्यान म आचार्य श्री के दर्शन हुए । मै बिस्तर स उठ भी नही सकती थी किन्तु गुरुकृपा मे पूर्ण स्वस्थ हूँ । मेरा भानजा नर्वस सिस्टम की प्राब्लम स पीड़ित था 'जय गुरु नाना पार लगाना' के जाप मे पूर्ण स्वस्थ्य हुआ ।

आचार्य श्री नानेश त्याग और वैराग्य के साक्षात् प्रतिबिम्ब थे, अनुकूल और प्रतिकूल दोनो परिस्थितियो मे समभाव रखते थे। अखड साधना आपके जीवन की विशेषता थी। आप सहज और सरल महासाधक थे।

आचार्य श्री जी प्राणिमात्र के प्रति आत्मीय भावना रखते थे। आपके प्रवचनो मे आत्मज्ञान की निर्मल साधना मुखरित हाती थी। समन्वित प्रवचन आत्मलक्षी नैतिकता चरित्र निष्ठा, समता, राष्ट्रप्रेम और वैराग्य रस आधारित थे।

एसे युगपुरुष आचार्य भगवन् के अनुशासन की छत्र छाया मे शाश्वत सुख उपलब्ध हाता रहा। आचार्य श्री का रजत जयती वर्ष इन्दौर मे एक ऐतिहासिक चातुर्मास के रूप मे मनाया गया। उस समय वर्तमान आचार्य श्री रामेश न वात्सल्य भाव से पूछ लिया- इन्दौर मे इस वर्ष का कैसे मनाया जाए तो मैंने सहज भाव से कहा- मुनिप्रवर 25 मास खमण का प्रसग बन जाये तो बहुत ही अच्छा। लेकिन आचार्य श्री नानेश का अतिशय था कि 40-45 के करीब मास खमण हुए।

ऐसे महापुरुष का जीवनवृत इतना विराट है कि इसे शब्दो मे बाधना सागर को गागर म भरने सदृश है।

आचार्य श्री नानेश के स्वर्गारोहण के पश्चात् आचार्य पद पर पू आचार्य श्री रामेश प्रतिष्ठित हुए। आपके करुणामय उच्च विचार से युग युगा तक धर्म सदेश मिलता रहे, सत्प्रेरणा प्राप्त होती रह यही मेरी हार्दिक कामना है।

-सौ पुष्पा तातेड, इन्दौर

अब कौन राह दिखाएगा ?

वस्तुत ये वीतराग मार्ग व हमारे आचाय श्री नानेश न होते तो हमारी क्या दशा होती ? हम पुद्गल के सुखों की भीख मागते, भटकते और यह सुख हमे केवल मृगतृष्णावत नचाता रहता। हम आशा तृष्णा के चक्को मे पिसते रहते। कौन पूछता ? कौन सम्भालता ? कौन राह दिखाता ? पूज्य गुरुदेव का अनन्त उपकार जिन्होने इस उत्तम मार्ग पर चलना सिखाया। ऐसे महान उपकारी गुरुदेव को मेरा शत् शत् वदन

जिनका पुरुषार्थ प्रतिपल जागृत होकर वीतरागता प्राप्त करने मे लगा रहा, राग-द्वेष रूपी रेशम की उलझी गाठ खोलने म ही लगा रहा। जीवन मे समता, सहिष्णुता व वात्सल्य की त्रिवेणी का सगम था। उनके दर्शन मात्र स हर - आत्मा को सुख की अनुभूति होती दर्शन मात्र से आधि व्याधि से शान्ति मिलती, नाम मात्र से लोगो के दुःख दूर होते व श्रद्धा से सिर झुक जाता।

जिन्होंने देवो से वदनीय पूजनीय मुनिवेश को सदैव सुरक्षित रखा। पूज्य गुरुदेव जो इतनी वृद्धावस्था मे इस सघ का जयवन्त रखन के लिए मारवाड़ से मेवाड़ तक पद विचरण किया। जिनका आत्मबल अनुपमेय था, मात्र एक ही भावना थी कि प्रभु का यह सघ सुरक्षित रहे। आपन अपने तन की चिन्ता नही, सघ की चिन्ता रखी।

आचार्य श्री जी ने कभी इस श्वेत चद्दर पर मलिनता नही आने दी कुछ भी सहना पड़ा, कैसे भी रहना पड़ा वो सब कुछ सह व रहे। जिनके हृदय मे एक ही धटी बजती- यह शासन सदैव जयवन्त रह। सदैव शासन व सयम शील साधको की जय हो भले ही प्राण देना पड़े लेकिन इस शासन सघ मे आँच नही आने पाये। इस साधक ने अनेको को भव पार किया कर रहा है व करेगा।

-अजु साड देशनोक

सामाजिक क्रान्ति के सूत्रधार

आचाय श्री नानेश जैसे निपुण प्रज्ञासपन्न महापुरुष की सुसगत धमपाल बधुओ को सुलभ हुई जिससे उनकी जीवन दिशा ही बदल गई। वर्षों की सवा साधना के बाद आचार्य देव ने अपने आगमिक चितन एवं मथन से वैश्विक जनता को समता एव समीक्षण ध्यान का गहन व सरल मार्ग प्रशस्त किया और अपने गुरुदेव द्वारा प्रदत्त उत्तरदायित्व पर लेशमात्र भी आच नही आने दी। वीर प्रम्पित अछूतोद्धार क कार्य को प्रयमित करत हुए अपन आचार्यत्व के प्रथम चातुर्मास से ही

अपना महानतम अभियान प्रारम्भ किया। चातुर्मासोपरात व्यसन ग्रस्त मानव समूह के मध्य जाकर मर्मस्पर्शी बाते निर्भीकता से कहना और उनका जीवन परिर्वतन कर देना यकीनन नाना के अवतारी पुरुष होने का प्रमाण देता है। अन्यथा उपदश देन वाले दस हजार से भी अधिक साधु-साध्वी वर्तमान म मौजूद है क्यो नही सभी प्रतिबोधक बन जाते। "एकला चलो रे" की तर्ज पर उन्होंने ऐसी क्राति कर दिखाई कि जो लोग समाज से अलग-थलग पड़ गये थे। उन्हे नव सन्देश दिया। गुराड़िया ग्राम मे पद्रहवे तीर्थंकर धर्मनाथ प्रभु की प्रार्थना एव मगलाचरण कर सस्कारा युक्त जीवन जीना सीखाया। शराब, माँस म रचे पचे समाज को अवतारी युगपुरुष ने मार्मिक एव हृदय स्पर्शी प्रवचन द्वारा प्रतिबोधित किया। मानो इस हाड़-मास के पुतले मे विद्यमान आत्मा न वचन लब्धि धारण की हो, 70 गावो के हजारो व्यक्ति तत्क्षण व्यसनमुक्त बन गए। फिर यह सख्या लाखो मे पहुच गई। एसे *प्रभावी आचार्य भले ही आज हमारे बीच नही है मगर* उनकी कीर्ति विद्यमान है।

-श्रद्धा पारख,जलगाव

दिव्य ज्योति

जैन जगत के चमकते सितारे
पा तुमको खिले भाग्य हमारे।
युगो-युगो तक अमर मा शृगार के दुलारे
पावन चरणो मे कोटि-कोटि वदन हमारे॥

परन्तु इस ससार मे कुछ ऐसी महान आत्माएँ जन्म लेती हैं जो भौतिक देह की दृष्टि से तो मृत्यु को प्राप्त कर लेती है परन्तु आत्मपुरुषार्थ से अपने जीवन म सयम साधना के दीप जलाकर विश्व मे अलौकिक प्रकाश फैलाती है। उन ज्योतिर्मय किरणो के प्रकाश मे मानव उत्थान के मार्ग पर गति करता है प्रगति करता है। इसीलिए ऐसी महान आत्मा जन-जन क हृदय मे अमर बन जाती है, ऐसी ही विरल विभूति थे आचार्य श्री नानश।

उनकी सजीव स्मृतियाँ हमारे मनोजगत म विद्यमान है जो हमें अपने जीवन में सरलता, भद्रिकता सहजता, सहिष्णुता आदि सीखायेगी और युगो तक भव्य आत्माओ के पथ को आलोकित करती रहेंगी।

ऐसी परम आराध्य, दिव्य ज्योतिर्मय, शाश्वत पवित्र आत्मा को समस्त धीग परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाजलि।

-ललिता धीग, कानोड़

समता के सागर

जगती तल की पूर्ण प्रभूति तुमको नमन,
सहस्र सूर्यों की चमक तुमको नमन।

भारत मे मवाड़ अचल एक एसी धरती है जिसने समय-समय पर देश भक्तो एव सत साध्वियो को जन्म देकर देशभक्ति एव आध्यात्मिक जागृति पैदा करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। इसी पुण्य वसुधरा ने 80 वर्ष पूर्व एक ऐसे अनमोल रत्न को पैदा किया, जिसन दीर्घ अवधि तक हुक्मेश शासन को दीपाया।

समता सागर आचार्य श्रीनानेश की दिव्य ज्योति स्थूल रूप से अदृश्य हो गई, परन्तु उनका आलोक हमारा पथ प्रदर्शित करता रहेगा। उनका सौम्य मुख मडल आज भी हमारी आँखो के सामन घूम रहा है। आचार्य श्री नानेश का आकर्षक व्यक्तित्व असाधारण था। आपकी वाणी मे मधुरता, मृदुता और सहजता थी।

एक घटना जो मेरे ही परिवार मे घटी वह जिसके कारण मेरी उन पर अनन्त श्रद्धा उत्पन्न हुई, मेरे छाटी गठान थी। डॉक्टरो से चेकअप भी करवाया गया। सभी ने आपरेशन के लिए कहा। लेकिन छोटी हाने क कारण आपरेशन नही करवाया गया अनेक दवाइया दीं लेकिन कोई आराम नही हुआ। उन्ही दिनो आचार्य श्री का चातुर्मास कानोड़ म हुआ। आचार्य श्री की चरण रज की महत्ता को सुनकर मरी माता जी न श्रद्धा सहित नवकार मत्र गिनकर आचार्य श्री की चरण रज 2 4 मार तक गठान पर लगाई जिसस गठान नदारद हो गई। इससे हमार परिवार की श्रद्धा अत्यधिक बढ़ गई।

जैसे महासमुद्र को भुजाओ से पार करना असभव है वैसे ही आपके सभी गुणा का वर्णन करना असमव है। उस आलाकपूर्ण महान आत्मा को मै समस्त नागोरी परिवार की ओर से श्रद्धाजलि समर्पित करती हू एव नवम् पटधर के प्रति मगल शुभ मनोकामनाएँ।

-ममता नागोरी, कानोड़

सच्चा पाठ पढ़ा गए मुझ बाला को

पूज्य गुरुदेव सदैव छोटे बच्चो से विशेष बात करते थे। मै भी तीन माह पूर्व- उदयपुर पूज्य गुरुदव क दर्शन करने गई। मुये गुरुदेव न पूछा तुम्हारा नाम क्या ? तुम कहाँ रहती हो आदि ? फिर पूज्य गुरुदेव ने अपने मुखारविन्द से मुझे महामत्र नवकार का उच्चारण करवाया। जब मे मेरा मन पूज्य गुरुदेव के प्रति अटूट-श्रद्धा से नत मस्तक हो गया।

मै जब जब महामत्र का स्मरण करती हू तो पूज्य गुरुदेव की सौम्य छवि सामने आ जाती है। मेरे सोये मन को जागृत कर गए आचार्य प्रवर मुम छोटी सी बाला मे प्राण फूक गए।

-कु आशा साढ

गुरु नाना मुझे भा गए

मैंने कई आचार्यों व बड़ बड़े सतों के दर्शन किए, लेकिन मेरा मस्तिष्क श्रद्धा क साथ कही नही झुका। आचार्य श्री नानेश के दर्शन करते ही मेरा मस्तिष्क व मन वदन करने के लिए आतुर हो उठा। प्रथम दिव्य दर्शन प्राप्त हुए मुझे देवगढ की पूज्य धरा पर। उसके परचात् मै सदैव गुरुदेव के दर्शन करती रही लेकिन आज पूज्य गुरुदेव का देवलोक गमन सुनकर मन बड़ा ही व्यथित हो रहा है।

जिदगी मे अनेक ठोकरें खाई
जिधर गई उधर निराशा पाई।
प्रसन्नता की जिन्दगी तो तब जी,
जब नाना गुरु से पावन सगति पाई।

पूज्य गुरुदेव को हार्दिक श्रद्धाजलि देती हुई।
वर्तमान आचार्य प्रवर को बहुत बहुत बधाई।

-मनू बाफना (नेपाल)

समता की महान विभूति

पूज्य गुरुदेव समता की महान विभूति थे, उनके रग रग मे समता समाई हुई थी, उनकी अमृतमय वाणी से ही समता का दिग्दर्शन होता था। गुरुदेव विषम परिस्थिति मे भी समता से ही पेश आते थे।

रायपुर की घटना है जहाँ बैनर क लिए लोग आपस मे लड़ने लगे। जब गुरुदेव को ज्ञात हुआ तो उन्होंने पूछा-भाई क्या हुआ तो एक भाई ने कहा गुरुदेव हमे ज्ञात नही था कि ये परदा आपके नाम का है और आप एक पहुँचे हुए साधक हो अब हमारा क्या होगा ? हमारा मुस्लिम ईद का जुलूस निकल रहा था लेकिन परदा तो फाड़ दिया अब आपके भक्त हमारी गलती के कारण आगे बढ़ने नही देते।

इतने मे ही अमृतवाणी की वर्षा हुई। गुरुदेव ने कहा अर मै यहाँ भाई को भाई स गल लगाने आया हू। लड़ने झगड़ने के लिए नही। भोले मै इस परदे मे थोड़े ही हू। यह तो जड़ है चैतन्य की पूजा भक्ति की जाती है। मुस्लिम भाई नतमस्तक हो गए व भक्त बन गए।

इस प्रकार गुरुदेव के जीवन म समता रग रग मे भरी थी। एक नही अनेक उदाहरण गुरुदेव के जीवन म थे। मुझे पूज्य गुरुदेव का देशनोक के दौरान बहुत ही निकटता से सानिध्य प्राप्त होता रहा। गुरुदेव का एक ही कहना था कि बाई जी शुभकार्य मे विलम्ब न करो। मै उनके महान सकेत को समझकर भी उनके मुखारविन्द से दीक्षा सम्पन्न न करवा सकी। मेरा सौभाग्य नही था कि मेरी अपनी पुत्री की दीक्षा पूज्य प्रवर के हाथो स होती। मै इसका दान गुरुनाना को न दे सकी। मेरी जैसी कौन अभागन होगी ?

मेरी पूज्य गुरुग्व को हार्दिक श्रद्धाजलि। वर्तमान आचार्य श्री जी को बहुत बहुत बधाई। आप इस हुक्मशासन का गौरव बढ़ाए व मेरे कुल व देशनाक श्री सघ

का नाम रोशन करें, यही वीर प्रभु से मगल कामना है।

-श्रीमती कमला देवी साढ

(वर्तमान आचार्य प्रवर की सासारिक बहन)

बहुआयामी व्यक्तित्व

सौम्य सलोनी छबि देखकर,
सदा श्रद्धानत हो जाती।
भीगी पलको से अश्रु झरे,
गुरुवर याद तुम्हारी आती॥

आपने बाल्यावस्था मे ही भौतिकता की चकाचौध से दूर वीतरागता की शीतल छाँव मे अपना जीवन अर्पण कर दिया। आप मे आगमो के गूढ़ रहस्यो को जानने की हर क्षण जिज्ञासा बनी रहती और समय-समय पर अपनी हर जिज्ञासा को शात करते रहे। यही कारण है कि आप शास्त्रो के मर्मज्ञ विद्वान और गूढ़ व्याख्याता होने के साथ ही सर्जनात्मक क्षमता के धनी भी थे। सिद्धातो के प्रति गहरी निष्ठा होने स आप किसी भी कीमत पर कितने ही दबाव होने पर भी अपने सिद्धातो पर कोई समझौता नही करते। अपनी इसी दृढ़ सिद्धात निष्ठा के कारण आज के युग मे आपने सुविधावादी नवीनता के अधप्रवाह मे श्रमण सस्कृति को बहने से बचाया। साथ ही इसे आत्म-साधना से प्रकाशित किया तथा स्व और पर का कल्याण करने क लिए अपना सम्पूर्ण जीवन दाव पर लगा दिया।

आप अनत गुणो की खान थे। जिस तरह गगन मे तारो को गिन पाना दुस्साध्य है उसी तरह उनके गुणो को गिन पाना या उनका बखान करना बहुत ही कठिन काम है। वे तो स्वय एक सूर्य थे, जिन्होंने अपने जीवन की अतिम श्वासो तक इस सघ को प्रकाशित किया।

हम सभी मिलकर उनके गुणो को अपने जीवन मे अगीकार करेंगे और अविरल गति से अपने लक्ष्य की ओर आगे बढते रहेंगे तो यही हमारी अपने गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। अत मे मै जिनेश्वर देव से कामना करती हूँ कि हमारे नाना गुरु की लोक मे और परलोक मे भी सदा विजय हो।

-कुमारी सीमा सघवी, जावरा

सर्वतोमुखी व्यक्तित्व

मेवाड़ की पवित्र धरा दाता मे जेठ सुदी दूज वि स 1977 को जन्मा बालक नाना से नानेश बन गया। ऐसा उन्होने अपने शक्तिपुज अर्थात् आत्मशक्ति को पहचानकर किया। पाषाण युग से आज तक एक दिन भी ऐसा नही आया जब समाज ने शक्ति का महत्त्व नकारा हो, परतु आचार्य भगवन् नानेश ने शक्ति के उपयोग को लोक कल्याण के पक्ष मे देखने का प्रयत्न किया।

आचार्य श्री नानेश महान् कलाकार, धर्मनिष्ठ साहित्यकार, विपुल साहित्य के रचयिता, समतादर्शन प्रणेता, कर्तव्य और समता के सेतु व दलितो तथा पतितो के लिये प्रकाश पुज थे।

आचार्य की आगमिक मर्यादाओ का उन्होंने बड़े ठाठ के साथ निर्वाह किया था। भौतिक चकाचौध से वे कभी आकर्षित नही हुए। अपनी ख्याति के लिये व कभी आगे नही आये, पद प्रतिष्ठा और प्रशसा के लिए कभी कोई भाव नही लाये।

उन्होंने केवल समता सिद्धात दिया ही नही, वरन अपने व्यवहार मे अर्थात् इसे अपने जीवन मे सर्वप्रथम उतारा। उनका सम्पूर्ण जीवन समतामय था। समता उनके रोम-रोम मे व्याप्त थी। व वास्तविक अर्थों मे समत्व योगी थे। इसीलिये अप्रिय घटनाओ के असह्य मानसिक त्रास को समता भाव से सहन कर लिया। वे दया की अनूठी प्रतिमूर्ति थे। ससार मे उलझे हुए व पापकर्मों स जकड़े हुए प्राणियो को देखकर उनका हृदय दया व करुणा स आप्लावित हो जाता था। इसी का उदाहरण है व्यसन मुक्त समाज के लिए प्रयास करना, धर्मपाल बनाना।

छोटे-छोटे बच्चो के लिए उनके हृदय मे विशेष स्नेह व दया भाव था। उनके सम्पर्क म आने वाले प्रत्येक बच्चे से वे पूछते थे कि आपके मम्मी पापा मारते तो नही है तथा मम्मी-पापा को बच्चो को नही मारने की सौगध कराते थे। मै उनके व्यक्तित्व व गुणो की व्याख्या कहा तक करू वे कलियुग म भी भगवान महावीर थे।

नई रोशनी एक नई दिशा दी। व्यसन मुक्ति अभियान, ममता दर्शन समीक्षण ध्यान पद्धति आदि सूत्र देकर विश्व का अपने सयम साधनामय जीवन के 61 वर्षों तक महावीर की जिनवाणी से उपकृत किया। हजारो अछूतो को धर्मपाल बनाकर प्रभु महावीर द्वारा प्रस्थापित ऊँच नीच के भेदभाव, जातिगत वर्ग भेद को मिटाकर उन्हे अच्छा नागरिक तथा सस्कारी जीवन जीने की कला सिखाई।

आचार्य श्री के महाप्रयाण से एक युग समाप्त हो गया। उनका पार्थिव शरीर तो नही रहा पर उनकी गुणगाथा सदियो तक अमर रहेगी।

नई सहस्राब्दी के इस प्रथम चरण मे हम उनको उनके नवमे पाट पर विराजित आचार्य श्री रामलाल जी म सा के चरणो मे श्रद्धावनत नमन करते है।

-उपाध्यक्ष

श्री अ भा सा जैन महिला समिति, बीकानेर

प्राण जाहि पर गुरु भक्ति न जाहि

मौत भी गजब कहर ढाती है।
न गाती है, न गुनगुनाती है॥
मौत जब जब आती है।
चुपके से चली आती है॥
सामने कौन है यह भी नही देख पाती है,
और आराध्य को भी छीन ले जाती है।

सूरज अपनी तेज रोशनी से जग को आलोकित करता है किंतु जब बादल की घटा सूरज को घेर लेती है तो कुछ क्षण के लिए जग अधकार मे समा जाता है। बस हमारे आराध्य, हमारे सर्वस्व, जग को आलोकित करते रहे लेकिन मौत की इस बदली ने ऐसे महापुरुष को भी नहीं छोड़ा और हम अधकार की ओर धकेल दिया। उस कमी को पूरा कर पाना असभव है।

बादलो की ओट मे निकलने के पश्चात सूर्य अधिक तेज के साथ प्रकाशवान होता है। उसी तरह अष्टम पाट के पश्चात् हमारे नवम् पट्टधर का सूरज दिव्य होगा और रामगुरु अधकार मे डूबे जग को और अधिक प्रकाशवान करेंगे और यह हुकुम सघ पुन चमचमा उठेगा।

-माया लूनावत, दुर्ग

उपहार की सार्थकता को समझे

धर्म ही जिनका कर्म था, जीवन जिनकी पूजा।
नाना जैसा अद्भुत सत कहाँ मिलेगा दूजा॥

चौरासी लाख जीवयोनि मे मनुष्य गति मे जन्म लेने वाली आत्मा विशेष होती है पर विरली ही आत्मा इस गति को, इस मनुष्य जन्म का महत्व समझती है। वह विरल व्यक्तित्व (आत्मा) जीवन रथ पर सवार होकर अपनी मजिल तक पहुँचते - पहुँचते न जाने कितनी ही आत्माओ को अपनी अतिम मजिल तक पहुँचने का सरल मार्ग बताती है कितनी ही आत्माएँ उनके पथ का अनुसरण कर अपनी अतिम मजिल को पा लेती है। ऐसी आत्माओ को पाकर मजिल स्वय निहाल हो जाती है यानि स्वय मृत्यु एक महोत्सव मनाती है।

एसी ही एक महान आत्मा थी आचार्य श्री नानेश की। जिनके नाम स्मरण मात्र से एक सरल, सौम्य, स्नहिल शीतल काति युक्त सुनहरी दमकती आभा वाली एक आकृति एक मुख मडल एक सूरत हमारे सामने आती है। आप श्री का सलेखना सथारा सहित मजिल को पाना (महाप्रयाण) कुछ इस तरह था मानो कि मृत्यु ने आपश्री के स्वागत मे महोत्सव आयोजित किया हो।

अपने 81 वर्ष की जीवन यात्रा मे लगभग लाखो आत्माओ को मार्ग दर्शन दिया। एक लाख से भी अधिक व्यसनी बधुओ को व्यसन मुक्त (धर्मपाल) बनाकर धर्मपाल प्रतिबोधक कहलाय। भौतिकता की अधी दौड़ से ग्रस्त आत्माएँ आपश्री की छत्रछाया मे सयम साधना के आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर हुई। गद्दा विमुख व्यक्ति गद्दोन्मुख हुए।

प्रेम, दया करुणा के फूलो से जग को महकाया।
लाखो लोगो के जीवन मे अमृत रस बरसाया।

ऐसे महापुरुष के जीवन महासागर से किसी एक अनमोल मोती को निकाल कर दिखाना दुष्कर्म कार्य

है क्योंकि प्रथम तो कोई उसकी गहराई तक पहुँच ही नही पाता कदाचित किसी ने डुबकी लगाने का साहस भी किया तो वह यह नही जान पाता कि किस मोती को उठाना चाहिए। वहाँ तो हर मोती ही अनमोल है, पारसमणि है।

झुक जाता है शीश हमारा, कह उठता है मन,
परम पुनीत महान् आत्मा को कोटि-कोटि नमन।

टेलीफोन पर पूज्य गुरुदेव के संलेखना संथारा अंगीकार करने की खबर सुनते ही एक क्षण के लिए दिल दिमाग सर्वशून्य हो गया। अपने आराध्य की एक झलक मात्र पाने को मन अधीर हो उठा। प्रयत्न करने पर कुछ साथियों सहित निकल पड़ी उदयपुर।

अपने आराध्य के महाप्रयाण पर हजारों लोग क्षिति जल, पावक गगन समीरा पंच तत्त्व से बने शरीर को अपने कंधों पर (पालकी रूप में) गणेश छात्रावास ले गये जहाँ की भूमि इस पवित्र पंचतत्त्व को अपने में विलीन कर अपने आप को धन्य धन्य कह उठी। लाखों लोगों ने अपने अश्रुओं का अर्घ्य दिया। पर हमारी सच्ची-श्रद्धांजलि इस चतुर्विध संघ की श्रद्धांजलि उस महान पुरुष को यही होगी कि हर ओर से एक ही लय एक ही धुन एक ही नाद, एक ही आवाज हो बढ़ेगा हर कदम हमारा जिधर होगा गुरु राम का इशारा।

-शकुंतला दुधोड़िया, स्वास्तिक ट्रेडिंग, दिल्ली

मेरे सच्चे देव नानेश

भारत की पावन धरती को अनेक संतों ने अपनी तपश्चर्या से सुशोभित किया है ऐसे ही संत इतिहास के अभिन्न अंग हैं। भगवान महावीर स्वामी के तत्त्व दर्शन को अपने जीवन में चरितार्थ करने वाले, समता सरोवर के राजहंस ने कथनी और करनी की एकता अपने जीवन में अंतिम श्वास तक कायम रखी। वे थे हमारे परम देव आचार्य श्री नानेश जो इस औदारिक पिंड से हमारे बीच नहीं है पर उनकी कृतियाँ जब तक सूरज चाँद रहेगा तब तक चमकती रहेंगी। धन्य था उनका जीवन।

-सीमा हींगड़ (ब्यावर)

गुरुत्वाकर्षण

बचपन में बहुत वर्ष पूर्व पढ़ा था कि पृथ्वी की ओर प्रत्येक वस्तु आकर्षित होती है। कोई भी चीज चाहे वह भारी हो या हल्की कितने ही वेग से उसे आकाश में क्यों न उछाली जाये वह पुनः पृथ्वी की ओर खींची चली आती है। बताया गया था कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण की शक्ति है कि जिसकी वजह से वह वस्तु उसकी तरफ खींची चली आती है। इस गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के खोजकर्ता थे प्रसिद्ध वैज्ञानिक गेलीलियो। पृथ्वी की यह आकर्षण शक्ति प्रकृति जन्य होती है।

चुम्बक में वह शक्ति है कि वह लोहे को अपनी ओर खींच लेती है परन्तु उसमें वह शक्ति कृत्रिम रूप में उत्पन्न की जाती है। और उसकी यह शक्ति केवल लोहे को खींचने तक ही सीमित होती है। लेकिन अपनी इस युवा अवस्था में अब मैं चिंतन करती हूँ और इस गुरुत्वाकर्षण के शब्द और उसके अर्थ पर विचार करती हूँ तो बरबस ही आचार्य श्री नानेश का स्वरूप और उनकी आकर्षण शक्ति मेरी आँखों के सामने तैरने लगती है। निश्चित ही गुरुत्वाकर्षण शब्द की रचना गुरु के प्रति आकर्षण की अभिव्यक्ति स्वरूप ही की गई होगी। चिंतन के साथ ही मन में ये भाव पैदा होते हैं कि आचार्य श्री नानेश ने यह गुरुत्वाकर्षण की शक्ति कैसे प्राप्त की? तो मैं इस निर्णय पर पहुँचती हूँ कि यह उनके उच्च चारित्रिक आदर्श और त्याग तथा सम भाव की साधना का ही परिणाम है कि उनमें यह गुरुत्वाकर्षण की शक्ति प्राप्त हुई थी।

मैं कई बार मन में चिंतन करती हूँ कि क्या मन में बार बार यह इच्छा होती है कि गुरु के पास जाऊँ और उनके दर्शन करूँ और ऐसी क्या उनमें शक्ति थी कि एक बार उनके सामने जाने पर वहाँ से हटने का मन ही नहीं होता था। यह कथन मेरा ही अनुभव नहीं अपि

नइ रोशनी एक नई दिशा दी । व्यसन मुक्ति अभियान समता दर्शन , समीक्षण ध्यान पद्धति आदि सूत्र देकर विश्व का अपने सयम साधनामय जीवन के 61 वर्षों तक महावीर की जिनवाणी से उपकृत किया । हजारो अछूतो को धर्मपाल बनाकर प्रभु महावीर द्वारा प्रतिपादित ऊँच नीच के भेदभाव जातिगत वर्ण भेद को मिटाकर उन्हे अच्छे नागरिक तथा सस्कारी जीवन जीने की कला सिखाई ।

आचार्य श्री के महाप्रयाण से एक युग समाप्त हो गया । उनका पार्थिव शरीर तो नही रहा पर उनकी गुणगाथा सदियो तक अमर रहेगी ।

नइ सहस्राब्दी के इस प्रथम चरण म हम उनको उनके नवम पाट पर विराजित आचार्य श्री रामलाल जी म सा के चरणो मे श्रद्धावनत नमन करते है ।

-उपाध्यक्ष

श्री अ भा सा जैन महिला समिति, बीकानेर

प्राण जाहि पर गुरु भक्ति न जाहि

मौत भी गजब कहर ढाती है ।
न गाती है, न गुनगुनाती है ॥
मौत जब जब आती है ।
चुपके से चली आती है ॥
सामने कौन है यह भी नही देख पाती है,
और आराध्य को भी छीन ले जाती है ।

सूरज अपनी तेज रोशनी से जग को आलोकित करता है किंतु जब बादल की घटा सूरज को घेर लेती है तो कुछ क्षण के लिए जग अधकार म समा जाता है । बस हमारे आराध्य, हमारे सर्वस्व जग को आलोकित करते रहे लेकिन मौत की इस बदली ने ऐसे महापुरुष को भी नहीं छोड़ा और हम अधकार की ओर धकेल दिया । उस कमी को पूरा कर पाना असभव है ।

बादलो की ओट से निकलने के पश्चात सूर्य अधिक तेज के साथ प्रकाशवान होता है । उसी तरह अष्टम पाट के पश्चात् हमारे नवम् पट्टधर का सूरज दिव्य होगा और रामगुरु अधकार म डूबे जग को और अधिक प्रकाशवान करेंगे और यह हुकुम सघ पुन चमचमा उठेगा ।

-माया लूनावत, दुर्ग

उपहार की सार्थकता को समझे

धर्म ही जिनका कर्म था, जीवन जिनकी पूजा ।
नाना जैसा अद्भुत सत कहाँ मिलेगा दूजा ॥

चौरासी लाख जीवयोनि मे मनुष्य गति मे जन्म लेने वाली आत्मा विशेष होती है पर विरली ही आत्मा इस गति का, इस मनुष्य जन्म का महत्व समझती है । यह विरल व्यक्तित्व (आत्मा) जीवन रथ पर सवार होकर अपनी मजिल तक पहुँचते - पहुँचते न जाने कितनी ही आत्माओ को अपनी अतिम मजिल तक पहुँचने का सरल मार्ग बताती है कितनी ही आत्माएँ उनके पद का अनुसरण कर अपनी अतिम मजिल को पा लेती है । ऐसी आत्माओ को पाकर मजिल स्वय निहाल हो जाती है यानि स्वय मृत्यु एक महोत्सव मनाती है ।

ऐसी ही एक महान आत्मा थी आचार्य श्री नानेश की । जिनके नाम स्मरण मात्र से एक सरल सौम्य स्नेहिल शीतल काति युक्त सुनहरी दमकती आभा वाली एक आकृति, एक मुख मडल एक मूरत हमारे सामने आती है । आप श्री का सलेखना सथारा सहित मजिल को पाना (महाप्रयाण) कुछ इस तरह था मानो कि मृत्यु ने आपश्री के स्वागत म महोत्सव आयोजित किया है ।

अपने 81 वर्ष की जीवन यात्रा मे लगभग लाखो आत्माओ को मार्ग दर्शन दिया । एक लाख से भी अधिक व्यसनी बधुओ को व्यसन मुक्त (धर्मपाल) बनाकर धर्मपाल प्रतिबोधक कहलाये । भौतिकता की अधी दौड़ से ग्रस्त आत्माएँ आपश्री की छत्रछाया म सयम साधना के आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर हुई । श्रद्धा विमुख व्यक्ति श्रद्धोन्मुख हुए ।

प्रेम, दया, करुणा के फूलो से जग को महकाया ।
लाखो लोगो के जीवन मे अमृत रस बरसाया ।

एसे महापुरुष के जीवन महासागर से किसी एक अनमोल मोती को निकाल कर दिखाना दुष्कर कार्य

है क्योंकि प्रथम तो कोई उसकी गहराई तक पहुँच ही नही पाता कदाचित किसी न डुबकी लगान का साहस भी किया ता वह यह नहीं जान पाता कि किस मोती को उठाना चाहिए । वहाँ तो हर माती ही अनमोल है पारसमणि है ।

झुक जाता है शीश हमारा, कह उठता है मन,
परम पुनीत महान् आत्मा को कोटि-कोटि नमन ।

टेलीफोन पर पूज्य गुरुदेव के सलेखना सथारा अगीकार करन की खबर सुनते ही एक क्षण के लिए दिल -दिमाग सर्वशून्य हा गया । अपने आराध्य की एक यलक मात्र पाने का मन अधीर हो उठा । प्रयत्न करने पर कुछ साथिया सहित निकल पड़ी उदयपुर ।

अपने आराध्य के महाप्रयाण पर हजारो लोग क्षिति जल पावक, गगन, समीरा पच तत्त्व से यन शरीर का अपने कधो पर (पालकी रूप में) गणेश छात्रावास ल गये जहाँ की भूमि इस पवित्र पचतत्व का अपन मे विलीन कर अपने आप को धन्य धन्य कह उठी । लाखो लोगो ने अपने अश्रुओं का अर्घ्य दिया । पर हमारी सच्ची-श्रद्धाजलि इस चतुर्विध सघ की श्रद्धाजलि, उस महान पुरुष का यही होगी कि हर ओर से एक ही लय एक ही धुन एक ही नाद एक ही आवाज हो- बढ़ेगा हर कदम हमारा जिधर होगा गुरु राम का इशारा ।

-शकुतला दुघोड़िया, स्वास्तिक ट्रेडिग, दिल्ली

मेरे सच्चे देव नानेश

भारत की पावन धरती को अनक सता न अपनी तपश्चर्या स सुशाभित किया है एस ही सत इतिहास के अभिन्न अग हैं । भगवान महावीर स्वामी क तत्व दर्शन का अपने जीवन मे चरितार्थ करने वाले समता साधक के राजहस ने कथनी और करनी की एकता अपने जीवन मे अतिम श्वास तक कायम रखा । वे थे हमारे परम देव आचार्य श्री नानश, जो इस औदारिक पिंड स हमार बीच नहीं है पर उनकी कृतियाँ जब तक सूरज चाँद रहगा तब तक चमकती रहेंगी । धन्य था उनका जीवन ।

-सीमा हीगड़ (ब्यावर)

गुरुत्वाकर्षण

बचपन मे बहुत वर्ष पूर्व पढ़ा था कि पृथ्वी की ओर प्रत्यक वस्तु आकर्पित हाती है । कोइ भी चीज चाह वह भारी हो या हल्की कितने ही वेग स उस आकाश मे क्या न उछाली जाय वह पुन पृथ्वी की ओर खींची चली आती है । बताया गया था कि पृथ्वी म गुरुत्वाकर्षण की शक्ति है कि जिसकी वजह मे वह वस्तु उसकी तरफ खीची चली आती है । इस गुरुत्वाकपण के सिद्धात के खोजकता थे प्रसिद्ध वैज्ञानिक गलीलिया । पृथ्वी की यह आकर्षण शक्ति प्रकृति जन्य हाती है ।

चुम्बक मे वह शक्ति है कि वह लोहे का अपनी ओर खीच लेती है परन्तु उसम वह शक्ति कृत्रिम रप स उत्पन्न की जाती है । और उसकी यह शक्ति कवल लोह को खींचन तक ही सीमित हाती है । लेकिन अपनी इस युवा अवस्था मे अब मै चितन करती हूँ और इस गुरुत्वाकर्पण क शब्द और उसक अथ पर विचार करती हूँ तो बरबस ही आचार्य श्री नानेश का स्वरूप और उनकी आकर्षण शक्ति मरी आँखो क सामन तैरन लगती है । निश्चित ही गुरुत्वाकर्पण शब्द की रचना गुरु क प्रति आकर्षण की अभिव्यक्ति स्वरूप ही की गई होगी । चितन के साथ ही मन म ये भाव पैदा हात है कि आचार्य श्री नानेश ने यह गुरुत्वाकर्पण की शक्ति कैस प्राप्त की ? तो मै इस निणय पर पहुँचता हूँ कि यह उनक उच्च चारित्रिक आदश और त्याग तथा सम भाव की साधना का ही परिणाम है कि उनम यह गुरुत्वाकपण की शक्ति प्राप्त हुई थी ।

मै कई बार मन म चितन करती हूँ कि क्या मन म बार बार यह इच्छा होती है कि गुरु क पास जाऊँ और उनक दर्शन करूँ और एसी क्या उनम शक्ति थी कि एक बार उनके सामन जान पर वहाँ से हटन का हटन का मन ही नहीं हाता था । यह केवल मरा ही अनुभव की अभि

व्यक्ति नही है लेकिन मै जिससे भी सुनती हूँ, जिसकी ओर भी देखती हूँ तो पाती हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति की यही भावना होती थी। अनुभव होता था कि जैसे यह अद्भुत किरण उनकी ओर से प्रवहमान होकर मेरे तन मन को आलोकित कर रही है।

इन महान गुरु के प्रति देश विदेश के हजारो भक्त आकर्षित थे और दूर-दूर से दर्शनार्थ आते थे और प्रत्येक बार एक नई शक्ति लेकर लौटते थे। आचार्य श्री नानेश जैन समाज की एक विरल विभूति थे। ऐसे उच्च चरित्रवान प्रभु महावीर के सिद्धातो के प्रति अनुशासित सत आज विरले ही दृष्टिगोचर होते है। ऐसे महान गुरु को मेरा शत्-शत् वदन। उनकी अप्रत्यक्ष शक्ति मुझे सदैव आलोकित करती रहे, यह मगल कामना।

- प्रेम पिरोदिया, महामत्री
श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति

दैदीप्यमान नक्षत्र

आचार्य श्री नानेश के स्वास्थ्य के प्रति मन चिन्ता मग्न था ही कि एक हृदय विदारक धक्का लगा। 27 अक्टूबर की रात समता दर्शन प्रणेता, आगम ज्ञाता आचार्य श्री नानेश हमारे बीच नही रहे। हम इतने दूर थे कि आचार्य भगवन् के अतिम दर्शन नहीं कर पाये। उस दिन श्री गदमल जी आस्तवाल का चौविहार तेला था वैसे ही हम उदयपुर आये। वर्तमान आचार्य श्री राम का दर्शन कर चौविहार पाच का प्रत्याख्यान किया। यह करने पर भी उपवास किये। श्री आस्तवाल जी को पता भी नही चला कि ट्रेन मे कैसी तपस्या हुई। कई प्रसगो पर आचार्य भगवन् के नाम से मेरे परिवार जनो के सकट दूर हुए है। ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र की प्रेरणा आज भी हम ... एव परोपकारी बनाये हुए है। ऐसे आचार्य भगवन् को हमारी आत्मीय श्रद्धाजली अर्पित है एव वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म सा के उज्ज्वल भविष्य की कामना है।

-रत्ना ओस्तवाल, पूर्व मत्री
अ भा सा जैन महिला समिति, राजनादगाव

जगत मे अनूठे ही थे और रहेगे

बहुमुखी प्रतिभा के धनी युवाचार्य श्री नानेश ने सयम साधना एव तपाराधना से अपनी पृथक पहचान बनाई। सघर्ष, विषमता तनाव की भौतिकवादी सस्कृति मे जी रहे विश्व को समता दर्शन का सूत्र दिया। इसी प्रकार भय एव कुठा से जीवन जीने वाले मानव को आपने समीक्षण ध्यान का ऐसा उपहार दिया, जिससे वह आत्म साक्षात्कार कर शुद्ध स्वभावी आत्मा से जुड सकता है। तपोमय जीवन शौर्य व तेज इतना प्रबल था कि उनके दर्शन व नाम स्मरण से हजारो चिताऐं दूर हो जाती तथा आशाऐं पूर्ण हो जाती थीं।

भीनासर मे अक्टूबर 95 मे गुरुदेव का पदार्पण हुआ। मेरे सासूजी की गुरुदर्शन की प्रबल इच्छा थी। वे चलने मे असमर्थ होने के कारण व्हील चेयर पर जवाहर विद्यापीठ गयी तथा गुरुदेव का दर्शन देने की प्रार्थना की। गुरुदेव की सरलता कि उन्होंने व्हील चेयर के पास आकर पूज्य मासूजी को दर्शन दिये व मागलिक फरमाया।

आचार्य श्री नानेश को सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम गुरु के बताये मार्ग पर चल एव उनके सिद्धातो को जीवन मे उतारे। मै मगलकामना करती हूँ कि वर्तमान आचार्य प्रवर शासन को अधिकाधिक दैदीप्यमान करे तथा हम भी उनके प्रति उतनी ही श्रद्धा रखे।

-कुसुमलता बैद 19 रैट्टो रोड चैन्नई

नयन दर्श बिन अभागे रहे

महापुरुषो का जीवन सुगध प्रदान करने वाला फूल आलोक प्रदान करने वाला दीपक एव जहर को पीकर अमृत प्रदान करने वाले शकर की तरह होता है।

जिस तरह समुद्री यात्री को तूफान का सामना करना पड़ता है उसी तरह सयमी जीवन मे भी अनेक कष्टो का सामना करना पड़ता है परन्तु सहनशील व्यक्ति उन सभी कष्टो को हस कर सहन कर लेता है। सब पूर्व भी मै इस महायोगी के विषय मे सुनती थी अत्यन्त ...

के साथ आँखो मे पानी आ जाता एव मन उस शुभ-दिन की कल्पना करने लगता । गुरुदेव की कृपा से मेरी अतराय बेड़ी टूटेगी एव शीघ्र ही मुझे गुरुदेव क दर्शन, सेवा का अकसर प्राप्त होगा लेकिन न कर पायी । परन्तु पूज्य गुरुदेव ने अपनी दूरदर्शिता अपनी पैनी दृष्टि स विरासत मे एक ऐसे अनमोल रत्न का दिया है,जिनम गुरुदव क सभी गुण विद्यमान है ।

हम अनक श्रद्धाजलि देते है पर सच्ची श्रद्धाजलि तब होगी जब हम उनके बनाये उत्तराधिकारी पर उतनी ही श्रद्धा निष्ठा और समर्पण भाव लायेंगे एव उनक बताये उपदेश को जीवन मे उतारेंगे और अत मे यह मगल कामना व हार्दिक भावना है कि मेरे जीवन मे भी आप श्री के गुणो की छाया सदैव बनी रहे । इन्ही शुभ भावनाओ के साथ देवलाक मे विराजित आत्मा के लिए अपने श्रद्धा सुमन भेंट करती हुई वीर प्रभु से मगल प्रार्थना करती हूँ कि गुरुदेव की आत्मा को उच्च व शाश्वत मोक्ष गति प्राप्त हा ।

-कविता जैन, केसिगा

समत्व भाव मे रमण करने वाले

आचार्य श्री का जीवन अनुपम था । आप श्री ज्ञान दर्शन चारित्र के सच्चे आराधक थे । आप श्री जी की देह का कण कण और जीवन का क्षण-क्षण जन जन के कल्याण के लिए समर्पित था ।

आपकी समीक्षण ध्यान मौन साधना ही निराली थी । कभी कोई क्षण समता से खाली नहीं रहता था । आचार्य श्री राम जिन-शासन के ताज है उनकी सयम-साधना पर हम सबको बहुत नाज है । युग युग तक आपश्री का यह शासन अमर रहे । सदा मिले छत्र छाया आपकी यही अतर की आवाज है ।

-वनिता, सुनीता प्रियका, हर्षिता श्री श्रीमाल, ब्यावर

गुरु का नाम चमत्कार भरा

स्वाध्याय शिविर म मै प्रथम बार गई । १२ दिन स्कूल मे पढ़ाई नहीं हा पाइ दि घर पर कोर पूरा कि । त्रैमासिक परीक्षा देने बैठी । प्रश्न पेपर को देखकर घबरा गई । एक भी प्रश्न का उत्तर याद नहीं आ रहा था एकाएक गुरुदव नानश का नाम याद आया । नाम स्मरण के बाद पुन प्रश्न पत्र देखा और उत्तर लिखती गई। सारा प्रश्न पत्र हल हो गया । तब से मन मे गुरुदर्शन की अभिलाषा जागृत हुई और सौभाग्य से गुरु दर्शन करने का अवसर आया ।

अतिम अवस्था म दर्शन हुए। वह अतिम दर्शन मेरे जीवन की आधार भूमि बनी । फिर विशाल जनमेदिनी को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ । विश्वास हुआ । वास्तव मे आचार्य भगवन् की साधना अद्भुत थी । अध्यात्म योगी पुरुष थे । लाखो भक्तो क नैन अश्रुपूर्ण देखकर अपने आप को हत भागी समझ रही थी काश मै बड़ी हाती ता पहले दर्शन कर लती । गुरु की पावन आज पूर्ण मूरत मर दिलो दिमाग पर बस गई है । जिसे मै भुला नही सकती । मेरा सौभाग्य है कि मेरा मानव जन्म सफल हुआ । ऐस महापुरुष के अतिम दर्शन कीर्ति शष स्मृतिया का देखकर मै धन्य हो गई । उन्ही गुरु नानश के पट्टधर हुक्मगच्छ क नवम पट्टधर आचार्य रामलाल जी म सा का सादर नमन करती हू ।

मेरी मम्मी लताबाई काकरिया न भी गुरुदव की स्मृति मे स्थानक में प्रवेश क साथ मुख वस्त्रिका बाधना साधु या साध्वी के सामने खुले मुह नही बोलन का प्रण किया ।

-कुमारी पायल

चमत्कार

घटना उस समय की है जब गुरुदव रायपुर विराजे थे । घर पर गाचरी हतु पधारे उसी समय मर दवरजी की ४ वर्षीय बाई पद्मा दूसरी मजिल से गिर कर बेहाश हा गई । उसी समय गुरुदेव ने मगलिक फरमाया और आश्चर्य अचेत बाला तत्काल खड़ी हा गई ।

-श्रीमती भवरी देवी मुथा, रायपुर

अहमदाबाद स मुबई क मार्ग पर कार दुघटना म हम गुरुनाना के स्मरण से सपरिवार बच गए । अनावश्यक पुलिस केस वापस हो गया ।

-श्रीमती अर्चना कुलदीप बरडिया, चेन्नई-७९

दोहा त्यागमूर्ति ने कर दिया, औषधि का परित्याग।
राग रहित नाना गुरु कैसा यह वैराग॥
मोहपाश जिन्हें बांध ना पाया, त्याग दी जिसने जग की माया।
औषधि त्याग भी कर दीना है, कहकर के नश्वर यह काया॥
धन्य 'उदयपुर' धन धन नाना, इस नगर से है सम्बन्ध पुराना।
आया है 'राजेन्द्र' मनाने, गुरुवर हमें ना यूं लौटाना॥
संयमधारी को मना, कैसे दें हम ज्ञान।
हम सब अनुयायी तेरे, आप गुरु भगवान॥

आचार्यप्रवर नाना हमें प्राणों से प्यारे हैं।
अपने गुरुवर नाना, आगम उजियारे हैं॥
आगम से जो पाया आगम को दान दिया।
इस अडिग तपस्वी ने सबका कल्याण किया।
हुए धर्मपाल जो भी वो भाई हमारे हैं॥
गुरुदेव के चरणों से अविरल बरसे चन्दन।
चलो चलो करें मिलकर श्री चरणों का वन्दन।
गुरुचरणों की सेवा, भव पार उतारे हैं॥
शासन का अनुशासन आजन्म निभाना है।
गुरु के आदर्शों को जग में फैलाना है।
अपने गुरु नाना के, सिद्धान्त ही न्यारे हैं॥
'राजेन्द्र' मोक्ष चाहो तो साधक बन जाओ।
आराध्य ये साचा है आराधक बन जाओ।
ये प्रेम की मूरत हैं दीनों के सहारे हैं॥

(तर्ज सेनानी)

नाना गुरुवर आचार्यप्रवर, आगम की अमिट निशानी है।
गुरु धर्मपाल प्रतिबोधक हैं जिनकी अमृतमय वाणी है॥
दांता की भूमि धन्य हुई जहां इस दाता ने जन्म लिया।
मेवाड़ उदयपुर साक्षी है जहां ज्ञान का भानु उदय किया॥
पितु मोड़ीलालजी धन्य हुए, जिनके आंगन ये पुष्प खिला।
माता शृंगार की कोख धन्य, जिनको ऐसा शृंगार मिला॥
गुरु जिनके गणेशीलाल रहे जिनसे आगम का ज्ञान लिया।
उस आगम पुष्प ने आजीवन, केवल आगम का दान दिया॥
गुरुवर अखण्ड ब्रह्मचारी हैं सम्यक् चारित्र के धारी हैं।
चूड़ामणि हैं चारित्ररत्न ये तीर्थंकर अवतारी हैं॥
समता दर्शन के प्रणेता हैं समता जिनका आभूषण है।
समताधारी ये युगमानव ये कुलमणि हैं कुलभूषण हैं॥
जो पिछड़ गई थी जातजाति उनको नया पंथ दिखाते हैं।
जो इनकी शरण में आते हैं, वो धर्मपाल कहलाते हैं॥
पंचम आचार्य की वो वाणी अष्टम पाट के बारे में।
देदीप्यमान सूरज होगा नाना जग के अंधियारे में॥
अष्टम आचार्य वो नाना हैं अष्टम की महिमा भारी है।
पूजा के आगे द्रव्यों की तरह वो संयमधारी हैं॥
नाना ये केवल नाम से हैं कभी किसी को ना नहीं कहते हैं।
अपने आचार विचारों से जन जन के संकट हरते हैं॥
ये हुक्मगच्छ उजियारे हैं इनका हर कुसुम खिलता है।
'राजेन्द्र' त्यागमय साधु ने पग पग पर हमें संभाला है॥
चलो त्यागमूर्ति गुरुवर के चरणों में शीश नवाएंगे।
उनके आदर्शों पर चलकर हम धर्मपाल कहलाएंगे॥

-राजेन्द्र जैन कलकत्ता

वन्दना के स्वर
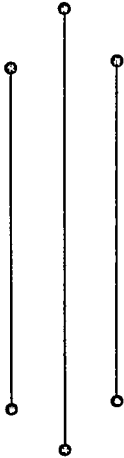
सांघा

ने किया। अत मे उपस्थित समुदाय द्वारा 4 लोगस्स का कायोत्सर्ग किया गया। -रामचद्र श्रीमाल

कुन्नूर पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक के समाचार से शोक सतप्त पूज्य गुरुदेव के अनन्य भक्तो ने अपने-अपने प्रतिष्ठान बद कर दिए एव रात्रि 8 बजे श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सोसायटी के प्रागण 'जैन स्थानक भवन' मे शोक सभा का आयोजन, स्थानीय सघ के अध्यक्ष अनोपचद जी बायरा की अध्यक्षता मे किया गया। सघ के मत्री श्री धर्मचद जी बाफणा ने उपस्थित जन समुदाय को चार-चार लोगस्स का ध्यान करने की प्रेरणा दी। श्री मागीलाल जी आलीपार श्री सुदर्शनलाल जी पिपाड़ा श्रीमती पानकवर बाई कोठारी जयचद बाफणा, जम्बूकुमार बाफणा ने अपने भाव अभिव्यक्त किये। पूज्य गुरुदेव के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए अनेक उदाहरण पेश किये गये।

-जम्बूकुमार बाफणा, शाखा सयोजक

सेलम श्रमण सघीय आचार्य सम्राट पू श्री शिवमुनि जी म सा की सुशिष्याए शासन चद्रिका बा ब्र श्री कौशल्या कुमारी जी म सा ठाणा 5 के सान्निध्य मे आचार्य सम्राट श्री नानालालजी म सा की श्रद्धाजलि सभा का आयोजन सेलम श्री सघ ने किया। जिसमे मत्री श्री दिनेशजी पीचा महावीरजी पीचा सौ सुदर बाई पीचा ने अपने गुरुदेव स्व श्री नानालाल जी म सा के गुणानुवाद भावपूर्ण शब्दो मे कर उनके जीवन के सस्मरण देते हुए भजन द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित की।

पू श्री सुलक्षणप्रभा जी म सा ने समता विभूति आचार्य नानेश की स्मृति सभा मे सुन्दर प्रकाश डाला एव उनसे प्रसूत ज्ञान सुमनो की अमर सुगध से समाज लाभान्वित हो ऐसी सच्ची श्रद्धाजलि का आह्वान किया।

तत्वचितिका पू सुदर्शन प्रभा जी म सा ने कहा कि आचार्य श्री नानालाल जी म सा उत्कृष्ट समीक्षण ध्यान योगी सतरत्न थे।

ज्ञानसाधिका पू स्नेहप्रभाजी म सा ने श्रावक प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा सभी महापुरुष सामायिक साधना से तिरे है। श्रावको मे भी समत्व साधना अनिवार्य है। पूज्य गुरुणी श्री कौशल्या कुमारी जी म सा ने फरमाया कि इन छह महिना मे हमारे स्थानकवासी सघ के तीन तीन दिग्गज आचार्यो का स्वर्ग गमन हृदय को व्यथित कर रहा है। आचार्य श्री नानेश भी उसी पथ पर चले गये। यह स्थानकवासी समाज की महनीय क्षति भविष्य मे अपूरणीय है।

सेलम सघ के अध्यक्ष श्री मनुभाई महता ने पू आचार्य श्री नानेश के स्वर्गारोहण पर हार्दिक वेदना व्यक्त की।

-भोपालचद पीचा

बैंगलोर चातुर्मासार्थ अत्र विराजित पूज्य श्री जसराज जी म सा आदि ठाणा 3 के सान्निध्य मे श्री साधुमार्गी जैन सघ के आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा को श्रद्धाजलि अर्पित की गई एव गुणानुवाद के साथ 4 (चार) लोगस्स के कायोत्सर्ग द्वारा सामूहिक श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये।

पूज्य श्री जसराजजी म सा ने स्वर्गस्थ आचार्य प्रवर के जीवन पर सक्षिप्त प्रकाश डालते हुए अपने श्रद्धा-प्रसून अर्पित किये। इसी कड़ी मे सघ अध्यक्ष श्री पारसमलजी बागरचा, मत्री श्री ज्ञानराजजी महता एव सहमत्री श्री चतनप्रकाश जी डूगरवाल ने भी अपनी ओर से आचार्य प्रवर को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की एव उनकी आत्मा की चिर शान्ति हेतु मगल मनीषा की अभिव्यक्ति प्रकट की। - शातिलाल बोहरा

टोंक परम आराध्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा के महाप्रयाण का समाचार प्राप्त होते ही सघ मे शोक व्याप्त हो गया और श्रावक-श्राविकाए श्रीमाल स्थानक भवन मे एकत्रित हो गये। अत्र विराजित महासतिया जी श्री पूर्णिमा श्री जी म सा ठाणा 4 के सान्निध्य मे शोक सभा का आयोजन किया गया। महासतियां जी म सा ने इस अवसर पर आचार्य भगवान के वैराग्य काल से आचार्य पद प्राप्त होने एव अब तक के जीवन की अनेक घटनाओ पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा प्रर्दशित समतामय सस्कार के स्वप्न को पूरा करने का आह्वान किया।

वरिष्ठ श्रावक सर्वश्री जसकरण जी नागा सौभाग मल लोढा अजीत कुमार मनय उमरावमल जैन ने आचार्य

भगवन् के जीवन की चारित्रिक विशिष्टताओ पर प्रकाश डाला। अन्त मे सघ मत्री श्री उम्मेदसिह मेहता ने पू आचार्य भगवन् के निधन को जैन जगत व राष्ट्र की अपूरणीय क्षति बताया। -उमरावमल जैन

दल्लीराजहरा -प पू आचार्य श्री नानालाल जी म सा के महानिर्वाण का समाचार ज्ञात होते ही सपूर्ण जैन समुदाय मे शोक की लहर छा गई। स्थानकवासी सप्रदाय के सभी साधर्मिक बन्धुओ ने अपना व्यवसाय बन्द रखा। अनक भाई-बहनो ने दया उपवास, एकासना किया।

शोक सभा मे आचार्य श्री के जीवन परिचय का उल्लेख करते हुए आचार्य श्री द्वारा जिन शासन की सेवा एव उनके द्वारा मानव समाज के लिए किये गए अनेक अनुकरणीय कार्यों पर अनेक वक्ताओ ने प्रकाश डाला।

-मोहनलाल गुणधर

महामत्री श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन सघ

धमतरी शोक सतप्त धमतरी नगर मे दिनाक 28 10 99 को सपूर्ण जैन समाज की दुकाने बद रखी गई एव स्वर्गीय जमनालाल जैन स्थानक भवन मे 12 घटे का अखड नवकार मत्र का जाप रखा गया।

दिनाक 29 10 99 को प्रात 9 30 बजे स्थानक भवन म श्रद्धाजलि का कार्यक्रम रखा गया। जिसमे मधुर व्याख्यानी विदुषी श्री विमलेश कवर जी म सा आदि ठाणा 3 ने आचार्य श्री जी के जीवन के बारे मे बहुत ही सरल ढग से प्रकाश डाला। आचाय श्री नानालाल जी म सा का जीवन परिचय सघ सदस्य दीपक बाफना द्वारा दिया गया। सघ क सरक्षक रानीदान गोलछा सचिव खेमचद गोलछा, मूर्तिपूजक सघ के सचिव शेरमल खजाचा, दिगम्बर जैन पचायत के प्रमुख चदुलाल जैन एव समता युवा सघ के कमलेश काटडिया समता बालिका मण्डल से कु पूजा ललवानी आदि सभी ने आचार्य श्री जी के सयमी जीवन पर प्रकाश डाला एव भावाजलि अर्पित की।

श्रद्धाजलि कायक्रम म समता, भजारा नदिनी आदि श्री सघ के भाई बहिन ने भी उपस्थित होकर श्रद्धाजलि अर्पित की। शाम 4 बजे कुष्ठ आश्रम रुनी बरीच म भिक्षुक भोजन का कार्यक्रम सघ सदस्यो के सहयोग से सपादित हुआ। -महेश दिनेश कोटड़िया

महिदपुर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ द्वारा श्रमण सघीय प्रवर्तक श्री उमेश मुनि जी म सा की आज्ञानुवर्ती महासती श्री शाताकुवरजी म सा आदि ठाणा 3 के सान्निध्य म आचार्य श्री नानालालजी म सा को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ के अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्रजी चण्डालिया, पूर्व अध्यक्ष श्री धनसुखलालजी काठारी, वरिष्ठ श्रावक श्री बाबूलालजी मेहता, श्री आनदीलाल जी लोढ़ा, सचिव श्री बसीलालजी बूरड़, श्री जवाहरजी बूरड़ एव श्री सुगनमलजी बूरड़ तथा महिला मण्डल की ओर से श्रीमती किरण बाई बुरड़ ने आचार्य श्री नानालालजी म सा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए गुणानुवाद किये एव श्रद्धा सुमन अर्पित किये। कार्यक्रम का सचालन सघ सचिव श्री बसीलाल बुरड़ द्वारा किया गया।

अत म श्रावक श्री बाबूलालजी महता द्वारा नवकार मत्र एव चार लोगस्स का काउसग्ग करवाया गया।

-सघ सचिव, बसीलाल बुरड़

जयपुर लाल भवन चौड़ा रास्ता मे वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक जयपुर सघ द्वारा आयोजित गुणानुवाद सभा म साध्वी श्री रतन कवर जी म सा न कहा कि महापुरुषो के जीवन से शिक्षा ग्रहण कर हम अपना जीवन सुधारना चाहिये। सघ मत्री श्री उमरावमल चौरड़िया न इस अवसर पर कहा कि आचार्य श्री नानेश भारत क आध्यात्मिक गगन के उज्ज्वल नक्षत्र थे। श्री नानेश का नाम कोटि कोटि जन के हृदय म तथा इतिहास क पृष्ठो पर सदैव अकित रहेगा।

डा मर्जीव भानावत ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि समता विभूति आचार्य भगवन् ने मानव को तनावमुक्त करने के लिए समीक्षण ध्यान साधना विधि की अनुपम औषधि दी है। त्यागमूर्ति श्री गुमानमल जी चौरड़िया ने कहा कि आचार्य भगवन् ने अपने जीवन काल म [illegible] का पू [illegible] करत हुए सस्कृति [illegible]

कर चतुर्विध सघ का धर्म प्रकाश से देदीप्यमान किया है।

ज्ञानमत्री श्री मोहनलालजी मूथा, सहमत्री श्री उत्तमचद डागा श्री चैनसिंह बरला, श्री सुरेन्द्र पारख, श्री हीराचन्दजी हीरावत श्री विनोद सेठ श्री पुखराज चौरड़िया श्रीमती निर्मला जी चौरड़िया, श्री राजकुमार जी बुरड़ एव महिला समिति ने भी आचार्य श्री के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए अपनी भावाजलि प्रकट की।

-उमरावमल चौरड़िया, सघमत्री

रायगज "परम श्रद्धेय धर्मपाल प्रतिबोधक महापुरुष का पार्थिव देह अब हमारे बीच नहीं रहा पर उनके ज्ञान की किरणे सारे विश्व में व्याप्त है। मवाड़ी मेवे की खुशबू चारों ओर महक रही है।" यह कथन है महिला समिति की पूर्व मत्री श्रीमती धनकवर काकरिया का।

श्री जैन सभा रायगज की ओर से श्रद्धाजलि अर्पित की गई थी। सर्वप्रथम श्री महावीर चन्द जी काकरिया ने गुरुदेव का परिचय दिया। फिर तेरापथी व बाईस सम्प्रदाय के सभी उपस्थित महानुभावो ने अपने भाव व्यक्त किये। चार लोगस्स का ध्यान तथा नवकार मत्र के जाप द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

-श्रीमती धनकवर बाई काकरिया

कूचबिहार साधुमार्गी, तेरापथी व मदिर मार्गी सभी जैनियो ने जाप इत्यादि के विभिन्न कार्यक्रम रखे। रात 7 बजे स्थानीय जैन मदिर मे श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया। तेरापथ महिला मण्डल की श्रीमती सरोज देवी सेठिया के सभा सचालन मे तेरापथ महिला मण्डल की मत्राणी श्रीमती तारा देवी चोरड़िया, स्थानीय श्री सघ के मत्री श्री गणेशमल जी सुराणा, शाखा सयोजक श्री इन्दरचन्द जी बुच्चा, श्री जैन मदिर के मत्री श्री राजेन्द्र बैद तेरापथ युवक परिषद के श्री कमल मसाली व ज्ञानशाला के सयोजक श्री धर्मचद जी मसाली, तेरापथ सभा के श्री महालचद जी बैद श्रीमती सुशीला देवी भूरा व श्रीमती मजू देवी भूरा ने गद्य पद्य द्वारा गुरुदेव को श्रद्धाजलि अर्पित की।

-इन्दरचद बुच्चा, शाखा सयोजक

बड़ौत किसी अन्य कार्य से दिल्ली जाने पर ज्ञात हुआ कि आचार्य देव नही रहे। आचार्य श्री चले गये, एक युगपुरुष, कालजयी व्यक्तित्व चला गया। आचार्य श्री के आकस्मिक देहावसान से एक इतिहास पुरुष तथा एक युग का अत हो गया।

अ भा श्वे स्था जैन कान्फ्रेन्स उ प्र युवा शाखा की आपातकालीन विशिष्ट बैठक मे आचार्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। आचार्य देव पूज्य श्री नानालाल जी म सा के आकस्मिक देहत्याग से जो शून्यता आई उसकी पूर्ति निकट भविष्य मे सभव नहीं। उ.प्र स्थानकवासी समाज का युवा वर्ग उनके चरणो म अपना श्रद्धाजलि अर्पित करता है तथा हार्दिक शोक प्रकट करता है।

उ.प्र युवा कान्फ्रेन्स तथा व्यक्तिगत रूप से आचार्य श्री के चरणो म मेरी मौन श्रद्धाजलि अर्पित है।

-अमित राय जैन

अध्यक्ष उ प्र युवा कांफ्रेंस

मडी बड़ौत हमारे सघ के प्राणाधार, धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति आचार्य भगवत श्री नानालाल जी म सा स्वर्गगमन कर गये। पूज्य आचार्य देव का व्यक्तित्व तथा कृतित्व सम्पूर्ण मानवता के लिए महद् अवदान रूप था। समाज को आदेश निर्देशो म व्यवधान उत्पन्न होना तो स्वाभाविक है परन्तु उनके विद्वान शिष्य रत्न युवाचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा से सम्पूर्ण समाज आशान्वित है। मै मडी बड़ौत श्री सघ की ओर से आचार्य देव को श्रद्धासुमन समर्पित करता हूँ। सुरेशचन्द्र जैन

जोधपुर परमाराध्य आचार्य श्री नानेश को सर्वप्रथम अत्र विराजित महासती मण्डल की ओर से गद्य एव पद्य मे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए महासती श्री सुशीलाकुवर जी म सा ने आराध्य देव के गुणो का जीवन म उतारने को ही सच्ची श्रद्धाजलि बताया। श्रावकवर्ग मे वैराग्यवती सुश्री जया छाजेड़ रमेशचद बैद, मदनलाल जी साखला, श्री मोहन जी मेहता आदि ने अपने भाव प्रकट करते हुए भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए चार लोगस्स द्वारा ध्यान किया गया। - रमेशचंद बैद

हागकाग आचार्य श्री नानेश एक ऐसी कड़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जिसमे सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब, बहुश्रुत प श्री समर्थमल जी महाराज साहब आचार्य सम्राट श्री आनन्द ऋषि जी महाराज साहब आदि महापुरुष थे। आचार्य श्री के देहावसान से एक स्वर्णिम युग का पटाक्षेप हो गया है।

श्री जैन रत्न युवक हागकाग शाखा के सभी सदस्यगण आचार्य श्री के प्रति हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए यही कामना करते हैं कि आचार्य श्री नानेश के पट्टधर तत्वचिन्तक श्री राममुनि जी महाराज साहब क नेतृत्व मे यह सघ उत्तरोत्तर वृद्धि करे। विरासत से स्थापित साम्प्रदायिक सौहार्द्र अक्षुण्ण रहे।

-राजेन्द्र डागा

मत्री, जैन रत्न युवक सघ हागकाग

गोरवन जिन शासन के दमकते हुए नक्षत्र के अस्त हो जाने पर भाव विह्वल जैन श्री सघ, नवचेतना युवासघ एव बालक-बालिका मण्डली द्वारा सामूहिक रूप से आयोजित सभा मे सभी ने चार-चार लोगस्स का काऊसग्ग किया नवकार मत्र का जाप किया एव आचार्य श्री की आतम शाति के लिए प्रभु से प्रार्थना की। अनेक व्यक्तियो ने भाव व्यक्त करते हुए सघ मे आस्था व्यक्त की तथा आचार्य भगवन के बताए मार्ग का अनुसरण करने की शपथ ली। सघ अध्यक्ष श्री माणकलाल जैन, अशोक जैन, अभय जैन, रिखब जैन, सुजानमल जैन विमल जैन, मनोज जैन, पकज जैन सहित सभी व्यक्तिया, महिलाआ एव बालको ने श्रद्धाजलि अर्पित की।

-अनोखीलाल मोगरा

रतलाम : समता विभूति आचार्य नानालालजी म सा के देवलोकगमन होने पर स्थानीय सागोद रोड स्थित समता शिक्षा निकेतन के प्राचार्य श्री निरमल सेठिया शिक्षक परिवार एव विद्यार्थियो द्वारा श्रद्धाजलि दी गई। श्रद्धाजलि सभा मे सस्था अध्यक्ष श्री विजयकुमार जी कटारिया एव सचिव श्री सुरालाल जी मालवीय भी उपस्थित थे। प्राचार्य श्री सेठिया ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला एव कहा कि यह सस्था आचार्य श्री की प्रेरणा स्वरूप स्थापित की गई है। जहा म सा के आचार-विचार और सस्कारो का पूर्णत अमल किया जाता है। - सिरेमल सेठिया

बदरपुर (आसाम) अनन्त पुण्यवानी अनोखे गुरु भगवन की शरण मिली, और उनका वृहद साया हम पर से उठ चला है, यह असहनीय सा प्रतीत हो रहा है। गत 28 अक्टूबर को लगातार सभी घरो मे जाप जारी रहा और साय सात बजे श्रद्धाजलि सभा के लिए सभी श्री आसकरण जी दफ्तरी के यहा एकत्रित हुए। सामूहिक जाप के पश्चात् सामूहिक ध्यान किया गया। श्री रूपचद जी साड ने परम आराध्य गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। सभी ने त्याग प्रत्याख्यान किए। गुरुदेव की आत्मा जहा भी है उत्तरोत्तर मोक्ष की ओर अग्रसर हो यह मगल मनीषा है। -शोभा दफ्तरी

रावटी पूज्य श्री नानालाल जी म सा के पडित मरण के समाचार जानकर जैसे पहाड़ टूट गया, तूफान आ गया हो। सारे रावटी मे शोक की लहर छा गई। शोक स्वरूप सघ की सभी दुकाने बद रही। स्कूल भी बद रही।

गुरुदेव के चरित्र का गुणगान करते हुये चार चार लोगस्स का ध्यान किया गया।

शहादा अत्र विराजित आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सुशिष्य शासन गौरव मुनि श्री ताराचद जी म सा आदि ठाणा 3 एवम् मरुधर ज्योति प्रखर वक्ता साध्वी श्री मणिप्रभा जी म सा ठाणा 6 के सान्निध्य मे समता विभूति पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा को हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

प्रखरवक्ता श्री मणिप्रभाश्री जी ने आचार्य श्री नानेश को सभी वर्गों के लिए अनुकरणीय बताकर उनके बताये हुए रास्ते पर चलने का आह्वान जनमानस को कर उनका गुणानुवाद किया। मुनि श्री ताराचद जी म सा ने कहा आचार्य श्री नानेश धीर वीर गभीर साधक थे। आज हम सभी इस महान् आचार्य श्री को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते है। इस अवसर पर साधुमार्गी जैन सघ शहादा के अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी कार्[illegible]

स्थानकवासी सघ के मत्री श्री सुरेशजी छाजेड़, तेरापथी सभा के अध्यक्ष श्री जमनमल जी गेलड़ा, मूर्तिपूजक सघ के अध्यक्ष श्री तिलाकचद जी नाहटा ,श्री धीसालालजी कोटडिया ,समता प्रचार सघ के दिलीप जी ने अपने भाव व्यक्त कर श्रद्धाजलि दी।

श्रद्धेय आचार्य भगवन् के महाप्रयाण पर शहर के सारे प्रतिष्ठान बद रखे गये एव समता युवा सघ की ओर से गरीबो एव पीड़ितो का अन्नदान किया गया।

-सुभाष कोटडिया, बनेचद बोथरा

कलकत्ता : श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कलकत्ता के सभागार मे श्री कल्याणमल लादा की अध्यक्षता म आयोजित श्रद्धाजलि सभा में सर्वश्री रिखबदास भसाली, हरखचद कांकरिया, शातिलाल जैन, तनसुखराज डागा अभयसिह सुराणा, देवेन्द्र जैन, रितेश सेठिया, मदनरूपचद भडारी, जवाहरलाल करणावट, श्रीमती मजू भसाली श्रीमती किरण हीरावत, श्रीमती सूरज सेठिया, श्री मिश्रीलाल मरोठी, श्री चादमल अभाणी एव अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओ ने श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य श्री नानेश के बताये मार्ग पर चलना एव उपदेश पर अनुकरण करना ही सच्ची श्रद्धाजलि होगी। मगलाचरण श्री जवाहरलाल करनावट एव सभा का सचालन रिद्धकरण बोथरा ने किया। सभा के अध्यक्ष श्रीरिखबदास भसाली के मगलपाठ द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उक्त अवसर पर सभा मत्री श्री रिधकरण बोथरा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए स्वधर्मी भाइयो व बहनो से निवेदन किया कि जिनकी पूर्व मे इस सघ के प्रति निष्ठा थी आगे भी इसी परम्परा मे पूर्ण श्रद्धा रखेंगे। आचार्य श्री ने म प्र मे दलितोद्धारक कार्य के अन्तर्गत एक लाख से भी अधिक लोगो को सात कुव्यसन से मुक्ति दिलाकर धर्मपाल बनाया। इनके उन्नयन हेतु इस क्षेत्र म उनके लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार म सतत सहयोग हा यही सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

-रिधकरण बोथरा

मत्री श्री श्वेताम्बर सभा, कलकत्ता

हैदराबाद मानव समाज मे अतर चेतना का विकसित कर रचनात्मक कार्यों मे लगाने की भूमिका मे सत समाज का अपूर्व मार्गदान रहा है। जो कुछ भी शाति के सुकुन मिल रहे है यह उन्ही की कृपा का सुफल है। जिस दिन सत रूपी सपत्ति हमारे बीच नही रही तो उस भयकर स्थिति की कल्पना करे तो नरक से भी बदतर जीवन हो जायेगा। उक्त विचार राष्ट्र सत श्री कमल मुनि कमलेश ने काचीगुडा जैन स्थानक पर आयोजित सुप्रसिद्ध आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा की श्रद्धाजलि स्वरूप गुणानुवाद सभा मे विचार व्यक्त करते कहा।

अ भा साधुमार्गी सघ के पूर्व सहमत्री श्री शुभकरणजी काकरिया ने कहा कि हम सगठन, सादगी और समर्पण का सकल्प लेकर व्यसन मुक्त समाज का निर्माण कर सच्ची श्रद्धाजलि द। श्री सज्जनराज कोठारी ने दृढ शब्दों म कहा कि पर्वो की धाड़ाबदी समाप्त कर युवा पीढ़ी धर्म और समाज मे व्याप्त विषमताओ को दूर करने का सकल्प ले। श्री धर्मचद गेलड़ा सघ के मत्री श्री कातिलाल जी श्री माणकचद जी ग्रहाचा श्री कालू सिह चौहान, श्री धानमल जी पितलिया, श्री सदीप मेहता, श्रीमती सरस्वती बोथरा, श्रीमती वसुमति कांफ्रेस महिला शाखा की ओर स श्रीमती निर्मला मडल, वर्धमान जैन युवक मडल चदन बाला महिला मडल ने भी भावाजलि अर्पित की। श्री महेश मुनि जी ने मगलाचरण व श्री सोहन मुनि ने विचार रखे। अत मे चार लोगस्स का ध्यान किया। सचालन श्री सज्जन कोठारी ने किया।

दलकोला (प बगाल) : हृदय सम्राट गुरुदेव के सथारा प्रत्याख्यान करने के समाचार स व्यथित श्रावको म त्याग प्रत्याख्यान हुए। अगले दिन देवलोक गमन के समाचार म स्तब्ध एव शोकाकुल सघ ने व्यवसाय बद रखा। सामायिक श्री हनुमानमल जी, श्री रतनलाल जी सुराना के यहाँ दलकोला क सभी बाईस सप्रदाय के सैकड़ा सम्प्रदाय ने श्रद्धाजलि अर्पित की। लोगस्स का ध्यान नवकार मत्र का जाप आदि कार्य विकास सुराना ने सयोजित किया। श्री विजय सिह सुराणा गगाराम सुराना श्री केशरीचद दुगलिया, तेरापथ सभाध्यक्ष किशनराज, दलकोला तरचद

युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बाबूलाल बैद, सचिव श्री सुजानमल सेठिया एव महिलाओ ने गद्य पद्य के माध्यम से भाव व्यक्त किये। -पूरणमल बोथरा

राजनादगाव समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा के देवलोक गमन के समाचार से शोक सतप्त श्री देव आनद जैन शिक्षणसघ राजनादगाव द्वारा विद्यालय परिसर मे आयोजित भावाजलि व शोकसभा म प्राचार्य श्री एस पी शाह ने आचार्य श्री नानेश के त्यागमय जीवन का उल्लेख करत हुए समतामय समाज एव धर्मपाल समाज को आचार्य देव की महान दन बताया। सभा का प्रारभ श्रीमती चदनबाला जैन ने किया। ट्रस्टी श्री पीरदान जी काकरिया ने शोक प्रस्ताव का पाठ कर चार लोगस्स का ध्यान व नवकार मन्त्र का जाप करवाया। इस अवसर पर श्री दुलीचद जी पारख सघ उपाध्यक्ष श्री प्रकाशचद जी साखला, श्री मोहनलाल जी कवाड़ बालनिकेतन प्रधानध्यापिका श्रीमती मनोरमा शर्मा सहित समस्त शिक्षकवृन्द एव विद्यार्थी उपस्थित थे। -अशोक पारख, मैनेजर

लाडनू आचार्य श्री नानेश साधुमार्गी परम्परा के तेजस्वी व वर्चस्वी आचार्य थे। जैन परपरा मे आचार्यों की लबी शृखला मे अनेक प्रतिभा सपन्न एव समर्थ आचार्य हुए है जिनकी अति विशिष्ट प्रभावना इतिहास पृष्ठो मे अकित है। आचार्य श्री नानेश ने जैन शासन की उल्लेखनीय सेवा करते हुए अपने विविधमुखी अवदानो से साधुमार्गी सप्रदाय को समृद्ध किया है। आपके अनुशासन मे शिष्य सपदा की भी उल्लेखनीय अभिवृद्धि हुई है

आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन से जैन शासन की अपूरणीय क्षति हुई है। वे जैन एकता के पृष्ठ पोषक थे। तेरापथ सघ के नवमाधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी एव वर्तमानाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने जैन एकता के लिए जा प्रयास किये और कर रहे हैं, आचार्य श्री नानश न केवल मनसा वाचा सहभागी थ , वरन उ हाने यथासमय अपनी ओर स पूर प्रयास भी किये। आचार्य श्री के उत्तराधिकारी आचार्य श्री रामलालजी म सा के सक्षम नेतृत्व मे साधुमार्गी धर्म सघ जैन शासन की प्रभावना एव जैन एकता क लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। एसी मगलकामना करते हुए जैन विश्व भारती परिवार स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश की आत्मा निरतर उर्ध्वारोहण करती हुई शीघ्र चरम लक्ष्य का प्राप्त करें, ऐसी अभ्यर्थना करती है।

-बशीलाल बैद, उपमत्री जैन विश्व भारती

नानेश नगर आचार्य श्री की आत्मा का परमात्मा मे विलीन होने की सूचना प्राप्त होने से स्तब्ध जैन जगत अपने आपको सूना अनुभव करने लगा है। ग्रामदाता करुकड़ा आचार्य श्री के लौकिक जीवन स्थान रहे है। सस्थान परिवार ने शातिसभा मे एकत्रित होकर गुरु गुणानुवाद किया। श्री मोतीलाल गौड़ गृहपति एव श्री शातिलाल जी जारोली की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियो ने वातावरण को अश्रुपूरित कर दिया। 28 10 99 को सस्थान परिवार छात्रगण, दाता श्री सघ एव कृषक ग्रामीण जन पूज्य गुरुदेव के अतिम दर्शन कर नत मस्तक हुए। आचार्य श्री के परिजन श्री रतनलाल जी पोखरना, श्री रूपलाल जी पोखरना एव पोखरना परिवार ने मुखाग्नि दी। विद्यालय परिसर म अब भी इस अपूरणीय क्षति से सन्नाटा छाया हुआ है।

-शान्तिलाल जारोली
आचार्य श्री नानेश समता शिक्षा समिति

रतलाम परमपूज्य आचार्य भगवत समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक, शासन सूर्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन के समाचार से हम धर्मपाल जैन छात्रावास के सभी छात्र गृहपति एव सचालक मडल बहुत ही दुखी है एव अपने आप को असहाय पा रहे है।

आचार्य भगवत न धर्मपाल क्षेत्र म पधारकर हमारी जीवन धारा को, हमारे रहन सहन का और धार्मिक विचारों मे जो क्रातिकारी परिवतन किया उसके लिए पूरा समाज कभी भी उनके स्मरण स अलग नही हो सकता है। इस अवसर पर यही प्रार्थना करते है कि पूज्य आचार्द भगवत की आत्मा को शाति प्राप्त हो एव हम सभी को यह महान् वेदना समता पूर्वक वहन करन की शक्ति प्राप्त हो।

-सचालक मडल एव छात्र धर्मपाल जैन
छात्रावास दिलीप नगर, रतलाम

ब्यावर परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी महाराज साहिब ने भारत क कोने कोने म [illegible]

स्थानकवासी सघ के मत्री श्री सुरेशजी छाजेड़, तेरापथी सभा के अध्यक्ष श्री जसनमल जी गेलड़ा, मूर्तिपूजक सघ के अध्यक्ष श्री तिलोकचद जी नाहटा, श्री घीसालालजी कोटडिया, समता प्रचार सघ के दिलीप जी ने अपने भाव व्यक्त कर श्रद्धाजलि दी।

श्रद्धेय आचार्य भगवन् के महाप्रयाण पर शहर क सारे प्रतिष्ठान बद रखे गये एव समता युवा सघ की ओर से गरीबो एव पीड़ितो को अन्नदान किया गया।

-सुभाष कोटडिया, वनेचद बोथरा

कलकत्ता श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कलकता के सभागार मे प्रो कल्याणमल लोढ़ा की अध्यक्षता मे आयोजित श्रद्धाजलि सभा में सर्वश्री रिखबदास भसाली, हरखचद काकरिया, शातिलाल जैन, तनसुखराज डागा, अभयसिह सुराणा, देवेन्द्र जैन, रितेश सेठिया, मदनरूपचद भडारी, जवाहरलाल करणावट, श्रीमती मजू भसाली श्रीमती किरण हीरावत, श्रीमती सूरज सेठिया, श्री मिश्रीलाल मरोठी, श्री चादमल अभाणी एव अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओ ने श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य श्री नानेश के बताये मार्ग पर चलना एव उपदेश पर अनुकरण करना ही सच्ची श्रद्धाजलि होगी। मगलाचरण श्री जवाहरलाल करनावट एव सभा का सचालन रिद्धकरण बोथरा ने किया। सभा के अध्यक्ष श्रीरिखबदास भसाली के मगलपाठ द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उक्त अवसर पर सभा मत्री श्री रिधकरण बोथरा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए स्वधर्मी भाइया व बहना से निवेदन किया कि जिनकी पूर्व मे इस सघ के प्रति निष्ठा थी आगे भी इसी परम्परा मे पूर्ण श्रद्धा रखेगे। आचार्य श्री ने म.प्र म दलितोद्धारक कार्य के अन्तर्गत एक लाख से भी अधिक लोगो को सप्त कुव्यसन से मुक्ति दिलाकर धर्मपाल बनाया। इनके उन्नयन हेतु इस क्षेत्र मे उनके लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार मे सतत सहयोग हो, यही सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

-रिधकरण बोथरा

मत्री श्री श्वेताम्बर सभा, कलकत्ता

हैदराबाद 'मानव समाज मे अतर चेतना को विकसित कर रचनात्मक कार्यों मे लगाने की भूमिका मे सत समाज का अपूर्व योगदान रहा है। जो कुछ भी शाति के सुकुन मिल रहे है यह उन्ही की कृपा का सुफल है। जिस दिन सत रूपी सपत्ति हमारे बीच नही रही तो उस भयावह स्थिति की कल्पना करे तो नरक से भी बदतर जीवन हो जायेगा। उक्त विचार राष्ट्र सत श्री कमल मुनि कमलेश ने काचीगुडा जैन स्थानक पर आयोजित सुप्रसिद्ध आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा की श्रद्धाजलि स्वरूप गुणानुवाद सभा मे विचार व्यक्त करते कहा।

अ भा साधुमार्गी सघ क पूर्व सहमत्री श्री शुभकरणजी काकरिया ने कहा कि हम सगठन, सादगी और समर्पण का सकल्प लेकर व्यसन मुक्त समाज का निर्माण कर सच्ची श्रद्धाजलि द। श्री सज्जनराज कोठारी ने दृढ़ शब्दों मे कहा कि पर्वो की वाड़ाबदी समाप्त कर युवा पीढ़ी धर्म और समाज मे व्याप्त विषमताओ को दूर करने का सकल्प ले। श्री धर्मचद गेलेड़ा, सघ के मत्री श्री कातिलाल जी, श्री माणकचद जी ब्रह्मेचा, श्री कालू सिह चौहान, श्री थानमल जी पितलिया, श्री सदीप मेहता, श्रीमती सारस्वती पोखरना, श्रीमती वसुमति काग्रेस महिला शाखा की ओर से श्रीमती निर्मला मडल, ऋषभ जैन युवक मडल चदन बाला महिला मडल ने भी भावाजलि अर्पित की। श्री महेश मुनि जी ने मगलाचरण व श्री सोहन मुनि ने विचार रख। अत मे चार लोगस्स का ध्यान किया। सचालन श्री सज्जन कोठारी ने किया।

दलकोला (प बगाल) : हृदय सम्राट गुरुदेव के सथारा प्रत्याख्यान करने के समाचार से व्यथित श्रावको म त्याग प्रत्याख्यान हुए। अगले दिन दवलोक गमन के समाचार से स्तब्ध एव शोकाकुल सघ ने व्यवसाय बद रखा। सायकाल श्री हनुमानमल जी, श्री रतनलाल जी सुराना के यहाँ दलकोला के सभी बाईस सप्रदाय के सैकड़ो सदस्यो ने श्रद्धाजलि अर्पित की। लोगस्स का ध्यान नमस्कार मत्र का जाप आदि कार्य विकास सुराना ने सयोजित किया। श्री विजय सिह लुणावत, गगाराम सुराना श्री केशरीचद पुगलिया, तेरापथ सभाध्यक्ष किशनगज दलकोला तेरापथ

युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बाबूलाल बैद, सचिव श्री सुजानमल सेठिया एव महिलाओ ने गद्य पद्य के माध्यम से भाव व्यक्त किये। -पूरणमल बोथरा

राजनादगाव समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा के देवलोक गमन के समाचार से शोक सतप्त श्री देव आनद जैन शिक्षणसघ राजनादगाव द्वारा विद्यालय परिसर मे आयोजित भावाजलि व शोकसभा मे प्राचार्य श्री एस पी शाह ने आचार्य श्री नानेश के त्यागमय जीवन का उल्लेख करत हुए समतामय समाज एव धर्मपाल समाज को आचार्य देव की महान देन बताया। सभा का प्रारभ श्रीमती चदनबाला जैन ने किया। ट्रस्टी श्री पीरदान जी काकरिया ने शोक प्रस्ताव का पाठ कर चार लोगस्स का ध्यान व नवकार मत्र का जाप करवाया। इस अवसर पर श्री दुलीचद जी पारख सघ उपाध्यक्ष, श्री प्रकाशचद जी साखला श्री मोहनलाल जी कवाड़, बालनिकेतन प्रधानध्यापिका श्रीमती मनोरमा शर्मा सहित समस्त शिक्षकवृन्द एव विद्यार्थी उपस्थित थे। -अशोक पारख, मैनेजर

लाडनू आचार्य श्री नानेश साधुमार्गी परम्परा के तेजस्वी व वर्चस्वी आचार्य थे। जैन परपरा मे आचार्यों की लबी शृखला मे अनेक प्रतिभा सपन्न एव समर्थ आचार्य हुए है जिनकी अति विशिष्ट प्रभावना इतिहास पृष्ठो मे अकित है। आचार्य श्री नानेश ने जैन शासन की उल्लेखनीय सेवा करते हुए अपन विविधमुखी अवदानो से साधुमार्गी सप्रदाय को समृद्ध किया है। आपके अनुशासन मे शिष्य सपदा की भी उल्लेखनीय अभिवृद्धि हुई है

आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन से जैन शासन की अपूरणीय क्षति हुई है। वे जैन एकता क पृष्ठ पोषक थे। तेरापथ सघ के नवमाधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी एव वर्तमानाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने जैन एकता के लिए जो प्रयास किये और कर रहे हैं आचार्य श्री नानेश न कवल मनसा वाचा सहभागी थे वरन उन्होने यथासमय अपनी ओर स पूरे प्रयास भी किये। आचार्य श्री के उत्तराधिकारी आचार्य श्री रामलालजी म सा क सक्षम नेतृत्व म साधुमार्गी धर्म सघ जैन शासन की प्रभावना एव जैन एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। ऐसी मगलकामना करते हुए जैन विश्व भारती परिवार स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश की आत्मा निरतर उर्ध्वारोहण करती हुई शीघ्र चरम लक्ष्य का प्राप्त करें, ऐसी अभ्यर्थना करती है।

-बशीलाल बैद, उपमत्री जैन विश्व भारती

नानेश नगर आचार्य श्री की आत्मा का परमात्मा मे विलीन हाने की सूचना प्राप्त होने से स्तब्ध जैन जगत अपने आपको सूना अनुभव करने लगा है। ग्रामदाता करुकड़ा आचार्य श्री के लौकिक जीवन स्थान रहे है। सस्थान परिवार न शातिसभा मे एकत्रित होकर गुरु गुणानुवाद किया। श्री मोतीलाल गौड़ गृहपति एव श्री शातिलाल जी जारोली की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियो ने वातावरण को अश्रुपूरित कर दिया। 28 10 99 को सस्थान परिवार, छात्रगण, दाता श्री सघ एव कृषक ग्रामीण जन पूज्य गुरुदेव के अतिम दर्शन कर नत मस्तक हुए। आचार्य श्री के परिजन श्री रतनलाल जी पोखरना, श्री रूपलाल जी पोखरना एव पोखरना परिवार ने मुखाग्नि दी। विद्यालय परिसर मे अब भी इस अपूर्णीय क्षति से सन्नाटा छाया हुआ है।

-शान्तिलाल जारोली
आचार्य श्री नानेश समता शिक्षा समिति

रतलाम परमपूज्य आचार्य भगवत समता विभूति धर्मपाल प्रतिबोधक, शासन सूर्य श्री नानालाल जी म सा क देवलोक गमन के समाचार से हम धर्मपाल जैन छात्रावास क सभी छात्र गृहपति एव सचालक मडल बहुत ही दुखी है एव अपने आप को असहाय पा रहे है।

आचार्य भगवत ने धर्मपाल क्षेत्र मे पधारकर हमारी जीवन धारा का हमार रहन-सहन को और धार्मिक विचारों मे जो क्रातिकारी परिवर्तन किया उसके लिए पूरा समाज कभी भी उनके स्मरण स अलग नहीं हो सकता है। इस अवसर पर यही प्रार्थना करते है कि पूज्य आचार्य भगवत की आत्मा को शाति प्राप्त हो एव हम सभी को यह महान् वदना समता पूर्वक वहन करन की शक्ति प्राप्त हो।

-सचालक मडल एव छात्र धर्मपाल जैन
छात्रावास दिलीप नगर, रतलाम

ब्यावर परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी महाराज साहिब ने भारत क काने कोने म विस्तृत इस विस्तृत ...

का न केवल नेतृत्व एव सचालन ही किया, बल्कि अपनी साधना शक्ति, दूर दृष्टि एव जिन शासन की सुरक्षा के वास्ते भावी सघ नायक के रूप मे प्रशातमना, व्यसन मुक्ति अभियान के प्रणेता, तरूण- तपस्वी मुनि प्रवर श्री रामलाल जी महाराज साहिब को अपना उत्तराधिकारी चयनित कर हुक्म गच्छ के नवम् पट्टधर के रूप मे शासन के समक्ष उजागर किया है। आचार्य श्री के प्रति जैन मित्र मडल, ब्यावर (साधुमार्गीय जैन सघ) का प्रत्येक सदस्य नतमस्तक होकर अश्रुपूरित नेत्रो से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है एव जिन शासन देव से करबद्ध प्रार्थना करता है कि अपने लक्ष्य के अनुसार श्रद्धेय आचार्य भगवन् की आत्मा यथा शीघ्र शाश्वत सुख का वरण कर निराकार निरजन अवस्था को प्राप्त हो, ऐसी हमारी मगल कामना है।

-दौलतराज बूरड

अशोक नगर (शूले) बैंगलोर श्री महावीर भवन मे मधुर व्याख्यानी निरजना श्री जी म सा आदि ठाणा ५ के सान्निध्य मे समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा की दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि प्रदान करने हेतु आयोजित सभा मे साध्वी समुदाय की ओर से सन्मति शीला जी म सा , श्री विवेक शीला जी म सा श्री सयम प्रभा जी म सा , श्री वनिता श्री म सा , ने पूज्य आचार्य प्रवर का गुणानुवाद करते हुए पूज्यवर के जीवन के विशेष गुणो का चित्रण किया। सभा का सचालन करते हुए श्री मोहनलाल जी चौपड़ा ने कहा, युग पुरुष', 'युग दृष्टा आचार्य प्रवर ने विश्व म व्याप्त अनेक समस्याओ का हल समता दर्शन द्वारा प्रदान करते हुए दलित एव कुव्यसनो से ग्रसित समुदाय को बोध प्रदान कर सम्माननीय जीवन जीने की कला सिखाई।

अ भा श्वे स्थानक जैन कान्फ्रस की ओर से महामत्री श्री माणकचद जी कोठारी, श्री रत्न हितैषी सघ की ओर से श्री गणेशमल जी भडारी, कर्नाटक स्वाध्याय सघ के श्री प्रकाशचद जी पटवा, श्री जयमल सघ के श्री विमल चद जी धाड़ीवाल, श्री ज्ञानगच्छ सघ के श्री दलीचद जी चौरडिया, मरूधर सेवा सघ के श्री अमर चद जी गोदेचा श्री साधुमार्गी जैन सघ बेंगलौर के मत्री श्री सपतराज जी कटारिया जैन ज्ञान सघ के श्री अशोक जी नागोरी अशोकनगर (शूले) क सह मत्री श्री जम्बुकुमार जी मूथा, श्री साहनलाल जी सिपानी ममता युवा सघ के श्री मनसुखलाल जी कटारिया, श्री मीठालाल जी मुरडिया श्रीमती प्रेमलता सुराणा, श्रीमती शाति बाई कोचेटा, वापी गुजरात से मगला मूथा ने गद्य एव पद्य द्वारा श्री आचार्य प्रवर का गुणानुवाद किया। धर्म सघ समाज, देश, एव विश्व के लिए आप द्वारा किए गए योगदान की अपने-अपने शब्दो मे व्याख्या की एव समय-समय पर दर्शन एव सान्निध्य के अवसर पर प्राप्त मार्ग दर्शन को स्मरण किया। कुमारी रेखा चौपड़ा द्वारा गुरु की बिदाई गीत से पूरी सभा मे गम का माहौल उत्पन्न हुआ। जनसमूह ने स्वर मिलाकर पूज्यवर को श्रद्धाजलि अर्पित की।

अत मे चार लोगस्स का ध्यान भाई नवरतनमल जी भसाली द्वारा कराया और अत मे महासतिया जी के मगल पाठ से सभा विसर्जित हुई।

ब्यावर जन चेतना के जनक, अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ क आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब के गौरवपूर्ण देहत्याग के समाचारो से सपूर्ण देश स्तब्ध रह गया। स्वामी ब्रम्हानद सत्सग मडल ब्यावर श्री सनातन धर्म सत्सग सभा एव श्री रामस्नेही राम ट्रस्ट की ओर से हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए परम पिता से प्रार्थना करता हू कि दिवगत आत्मा को शाति प्रदान करे।

-रामप्रसाद मित्तल, सह मत्री

ब्यावर परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन से जैन-धर्म की अपूरणीय क्षति हुई है। हम एसोसिएशन के समस्त सदस्य आचार्य श्री के आनद धाम गमन पर हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करते है।

श्री अखिल भा सा जैन सघ नवम् पट्टधर आचार्य श्री रामलालजी म सा के शासन मे सघ के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करते है।

-सुशील मेहता

कार्यालय सचिव, स्माल सेविग एसोसिएशन

कवर्धा आचार्य श्री नानालाल जी म सा के सथारे सहित महाप्रयाण (देवलोक गमन) के समाचार प्राप्त हुए। समूचे

श्रीसघ मे शोक की लहर व्याप्त हो गई।

३०-१०-९९ को ज्ञानगच्छीय विदुषी तपस्विनी महासती श्री प्रवीण कुवर जी ठाणा ३ के सान्निध्य मे आचार्य श्री जी को चार लोगस्स के ध्यान से भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई। पूज्य महासती जी ने आचार्य श्री के गुणो का वर्णन किया।

पूर्व सघ अध्यक्ष श्री जेठमल चोरड़िया ने आचार्य श्री के वैराग्य का कारण एव धर्मपाल क्षेत्र मे की गई सेवाओ की विवेचना प्रस्तुत की। श्री निर्मलचद जी देशलहरा, श्री नेमीचद जी लुनिया (अध्यक्ष-सकल जैन श्री सघ), श्रीमती सुधा देशलहरा, श्री नेमीचद श्री श्रीमाल द्वारा भी अपने भाव व्यक्त किए गए। अनेक श्रावक श्राविकाओ ने व्रत पचक्खान ग्रहण कर वास्तविक श्रद्धाजलि अर्पित की। इस अवसर पर श्री देवराज श्री माल द्वारा पाच की तपस्या एव श्री प्रेमचद जी श्रीमाल द्वारा तेले की तपस्या भी ग्रहण की गई। सघ अध्यक्ष श्री पन्नालाल जी श्री श्रीमाल द्वारा चार लोगस्स का ध्यान कराया गया। -जेठमल चौरड़िया

सिकदराबाद श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ सिकदराबाद द्वारा स्थानक भवन मे ज्ञान गगोत्री पूज्य श्री प्रभाकवर जी म सा एव परमविदुषी श्री किरन सुधा जी म सा आदि ठाणा के नेश्राय मे भावभरी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की गई। पूज्य श्री प्रभाकवर जी म सा ने फरमाया कि आचार्य श्री नानालाल जी म सा एक महान आचार्य थे। सघ मत्री मीठालाल पाखरना ने बताया कि वे शिक्षा एव समाज सुधार के साथ आडम्बर दूर करने पर खूब जोर देते थे। वेदनाविहीन के सपादक श्री कन्हैयालाल जी सुराना ने बताया कि आपने जन-जन के मन मे जैन धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा पैदा की। सघ के अध्यक्ष श्री सपतराज जी डूगरवाल कार्याध्यक्ष श्री सज्जनराज जी कटारिया एव महामत्री श्री सपतराज जी कोठारी ने उनका गुणानुवाद कर भावभरी श्रद्धाजलि अर्पित की।

-मीठालाल पोखरना

मत्री, श्री व स्था जैन श्रावक सघ

कोटा आचार्य श्री नानेश ने भगवान महावीर की पावन वाणी के प्रचार प्रसार मे अभूतपूर्व योगदान दिया। आपका जीवन दर्पण के समान पारदर्शक उज्ज्वल एव ज्ञान, क्रिया का अनुपम सगम रहा है।

कोटा शहर के समस्त ओसवाल यह महसूस करते हैं कि जैन धर्म का चमकता सितारा अस्त हो गया है। पर आचार्य भगवन् के दिव्य सदेश से चतुर दिशाएँ गुजित होती रहेगी। -राजेन्द्रसिह मेहता

अध्यक्ष, श्री ओसवाल समाज

बूदी परम पूज्यनीय आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देहत्याग के समाचार सुनकर बूदी सघ मे शोक की लहर दौड़ गई। अत्र विराजित ज्ञानगच्छीय महासती पू श्री सुमनकवर जी म सा आदि ठाणा ५ को भी समाचार पाने पर गहरा आघात-सा लगा।

सभा में महासती श्री सुमनकवर जी म सा ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि

'आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने स्व पर उपकार कर जिनशासन की महती सेवा की।

तत्पश्चात् सघ मत्री श्री हेमत डागा ने इसे जिन-शासन की अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म सा भी अपने गुरुवर्य के समान सघ को व जिनशासन को खूब चमकाएगे।

तत्त्व चितक सघ अध्यक्ष श्री प्रेमचद जी कोठारी ने अपनी सवेदना प्रकट करते हुए कहा कि पच आचारा का पालन करने वाले एव कराने वाले को आचार्य कहा है। पूज्य श्री ने अपने जीवन मे इस ओर पूरा ख्याल रखा व समता सघ के नायक ने जीवन के अतिम समय तक भी समता बनाए रखी।

अत मे सभा मे उपस्थित जनो ने ४-४ लोगस्स का कायोत्सर्ग करके दिवगत आत्मा के प्रति अपनी सवेदना प्रकट की।

-प्रकाश डागी, सतवाणी भवन

कुचवास जिनशासन की दैदीप्यमान [illegible] परम आराध्य आचार्य श्री नानेश का दिनाक २७ अक्टूबर को सलेखना सथारा सहित देवलोकगमन के समाचार [illegible] कर सघ शोक सागर मे डूब गया। [illegible]

नागदा स्थानीय जवाहर मार्ग स्थानक में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए महासतियाजी विपुला श्री जी म सा ने फरमाया कि स्व आचार्य श्री ने आचार संहिता का पालन करते हुए अपने जीवन मे किसी भी प्रकार का दोष नही लगाया। इनके आदेशो का पालन करते हुए दृढ आस्थावान रह कर स्व आचार्य श्री का ऋण चुकाया जा सकता है। शासन दव से प्रार्थना है कि स्व आचार्य श्री जी को चिर शाति प्राप्त हो। श्री विजेता जी म सा ने एक गीतिका के माध्यम मे श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री सी के जैन, विलास पामेचा, दिलीप काठेड़ देवीलाल गुराडिया, चदनमल सघवी, श्रीमती दाखीबाई ओरा, श्रीमती हसा काठेड़, श्रीमती अमृतबाई मारू न स्व आचार्य श्री के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की। अत मे सभी ने लागस्स का ध्यान करके श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-निर्मल चपलोत

पिपलिया कला आज प्रात काल समता विभूति परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक होने के समाचार सुनकर प्रेम उद्योग समूह के समस्त कर्मचारियो म निस्तब्धता छा गई। तुरत कार्यालय एव कारखाने पूरे दिन के लिए बद करवा दिए। सभी कर्मचारी पी जी फोइल्स प्रागण मे उन्हे श्रद्धाजलि देने एकत्रित हो गए एव समस्त भारत मे स्थित प्रेम उद्योग समूह के सभी कार्यालय एव कारखाने बद करवा दिए।

इस अवसर पर सघ मत्री श्री राजेन्द्र कुमार सिघवी न आचार्य नानेश के जीवन एव पिपलिया कला में हुए उनके चार्तुमास के बारे मे उपस्थित कर्मचारियो को विस्तृत जानकारी दी।

आचार्य श्री के अहिंसक एव व्यसन मुक्त समाज की रचना के उपदेशों के अनुरूप सभी कर्मचारियो ने आज के दिन मास मदिरा का त्याग कर आचार्य गुरुदेव को श्रद्धाजलि अर्पित की।

दिवगत आत्मा की शाति हेतु सभी कर्मचारियो ने एक घंटे तक नवकार मत्र का जाप एव एक घंटे श्री शातिनाथ प्रभु का जाप किया।

-समस्त कर्मचारीगण, प्रेम उद्योग समूह

बगाईगाव- परम पूज्य गुरुदेव के सुख साता की मगल कामना हेतु विशेष कर पर्युषण महापर्व से ही विविध त्याग तपस्या की झड़ी हमारे बगाईगाव श्री सघ म लगी रही। हृदय विदारक समाचार जानने के बाद स्थानीय मूलचद जालान विवाह भवन मे एक स्मृति सभा श्री मदनलाल जी अग्रवाल के सभापतित्व मे हुई। जिसम जैन-अजैन सभी धर्मानुरागी भाई-बहन हुतात्मा के प्रति श्रद्धा-ज्ञापन हेतु सम्मिलित हुए। श्री बस्तीमल सुकलेचा, श्री जुगराम जी सचेती युवक परिषद के श्री रिखबचद जी बाथरा, तेरापथ धर्म सम्प्रदाय के श्री कन्हैयालाल जी बोथरा, श्री चम्पालाल जी दसवाल सभापति श्री मदनलाल जी अग्रवाल ने भाव व्यक्त किए। तत्पश्चात् चार लोगस्स का ध्यान किया और मेहता जी ने पू गुरुदेव की भाववाचक आज्ञा से सभी को मागलिक सुनाया और मौन भाव से सभी ने सभा विसर्जित की। उस दिन जाप का भी प्रसग बना।

-प्रकाशचद बेताला

बीकानेर परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब का देवलोकवास हो जाने का समाचार सुनकर हमे आघात पहुचा।

उदारमना आचार्य श्री के चरणो म मै बारम्बार वदन करता हू एव बीकानेर दिगबर समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए उनकी आत्मा की शाति के लिए भगवान महावीर से प्रार्थना करते हू कि भगवान आचार्य श्री को अपने समकक्ष स्थान प्रदान कर।

-डॉ मधु एस जैन

मत्री श्री दिगम्बर जैन प्रबध समिति ट्रस्ट

विल्लुपुरम् समता विभूति पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के सथारा का समाचार फिर स्वर्गवास का समाचार मिलते ही हमारे सघ मे हलचल मच गई। सुबह १० ३० बजे नवकार मत्र का जाप किया गया जिसमे भारी सख्या मे भाई बहनो ने भाग लिया।

रात को ८ बजे श्री जैन सघ की श्रद्धाजलि सभा अध्यक्ष श्रीमान रिखबचद जी बम्ब की अध्यक्षता मे हुई। श्री गौतमचद जी बम्ब, श्री ललित कुमार जी कातोला श्री इन्दरचद जी सुराणा, श्री चैनराज जी सुराणा तथा श्री जैन

महिला मडल की श्रीमती कमला बाई कातरेला ने पूज्य गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला एव श्रद्धाजलि अर्पित की। सघ के भाई-बहनो तथा बच्चो ने भारी सख्या मे उपस्थित होकर पूज्य गुरुदेव को श्रद्धाजलि अर्पित की। लोगस्स का ध्यान किया गया।

-ललितकुमार कातरेला, मत्री श्री जैन सघ

मदसौर सकल जैन समाज मदसौर द्वारा जैनाचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी महाराज साहब के देवलोकगमन पर एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन वरिष्ठ सुश्रावक श्री घासीलाल जी साखला की अध्यक्षता मे किया गया। राजेन्द्र जैन परिषद के अखिल भारतीय महामत्री सकल जैन समाज के सयोजक श्री सुरेन्द्र जी लोढ़ा ने मुख्य वक्ता के रूप मे श्रद्धासुमन अर्पित किये। सकल जैन समाज के कार्यवाहक अध्यक्ष अधिवक्ता श्री मनसुखलाल भानावत ने सकल सघ की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। महामत्री श्री महेन्द्र चोरडिया, श्री कातिलाल चौधरी, नगर पालिका के उपाध्यक्ष व गौशाला के महामत्री श्री राजेन्द्र अग्रवाल, महावीर जयती उत्सव समिति के महामत्री श्री पवन कुमार अजमेरा, श्री प्रकाश मारू शिक्षा शास्त्री श्री सजय पटवा, कर्मचारियो के नेता व गोपाल कृष्ण गौशाला के अध्यक्ष श्री महेश मिश्रा, श्री सूरजमलजी माडावत व जनकपुरा स्थानकवासी समाज के महामत्री श्री जवाहरलाल जैन, लायस क्लब के प्रमुख व सकल जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष चेनमल पामेचा, चार्टर्ड एकाउन्टेट एव समाज सेवी युवा कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र जैन, दशपुर दर्शन पत्र के सपादक व जनकपुरा स्थानकवासी सघ के अध्यक्ष श्री शोभागमल जैन, श्री साधुमार्गी जैन सघ के सरक्षक श्री सुरेन्द्र मेहता, श्री बाबूलाल जी नागोरी, साधुमार्गी जैन सघ की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती निर्मला पोरवाल, श्री कैलाश पाठक अनवर, श्री अशोक नलवाया, युवा समाज सेवी कार्यकर्ता श्री विकास चौधरी, कार्यक्रम के अध्यक्ष मूर्तिपूजक जैन समाज के अध्यक्ष श्री घासीलाल साखला, श्री कातिलाल रातड़िया, अशोक गोटावाला, चम्पालाल डूगरवाल, पार्षद पूरणमल कुकड़ा व नरेन्द्र मेहता ने गद्य पद्य के माध्यम से श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए नवम पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म सा के प्रति शुभकामनाए व्यक्त की। समता भवन मे सपन्न कार्यक्रम म ४ लोगस्स का ध्यान हुआ। सचालन व आभार प्रदर्शन अशोक जैन ने किया।

-अशोक जैन

अलवर साधुमार्गी सघ के अष्टम पट्टधर समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन पर श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सघ अलवर द्वारा आयोजित गुणानुवाद कार्यक्रम का प्रारभ करते हुए व स्व स्था जैन श्री सघ अध्यक्ष सुमति कुमार जैन ने कहा आचार्य श्री नानालाल जी म सा सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी सभी के थे।

मूर्ति पूजक जैन सघ के अध्यक्ष वयोवृद्ध श्री लक्ष्मी-चद जी पालावत, ओसवाल जैन शिक्षण सस्थान व समाज सेवी सस्था, महावीर इन्टरनेशनल के अध्यक्ष श्री गेदमल जी जैन, स्था जैन श्रावक सघ के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री गुलाबचद जी सचेती, श्री सौभाग चद जी सुराणा ने सभा को विशेष रूप से सबोधित किया और आचार्य श्री की कमी को एक अपूरणीय क्षति बताया।

-योगेश पालावत, सहमत्री
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ

जयपुर. परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण की वेदना से अभिभूत स्थानीय जवाहर नगर के श्री जैन श्वेताम्बर सघ की ओर से गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के एसोसिएट प्रोफेसर एव सघ मत्री डॉ सजीव भानावत ने आचार्य प्रवर के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डाला।

सी एस बरला ने कुव्यसन मुक्ति एव सस्कार निर्माण अभियान मे आचार्य श्री के योगदान की चर्चा की। श्री मोहनलाल मुथा एव श्री राजेन्द्र पटवा ने आचार्य श्री के जीवन के प्रेरणास्पद सस्मरण सुनाये। सघ अध्यक्ष श्री जयकुमार लोढ़ा तथा पूर्व अध्यक्ष उमरावचद सचेती ने आचार्य श्री को इस शताब्दी का महान सत बताया। वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ के सयुक्त मत्री श्री उत्तमचद डागा तथा श्री उत्तम चद चपलावत ने आधुनिक सदर्भ मे आचार्य नानेश के दर्शन की प्रासगिकता को

नागदा स्थानीय जवाहर मार्ग स्थानक में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए महासतियाजी विपुला श्री जी म सा ने फरमाया कि स्व आचार्य श्री न आचार सहिता का पालन करते हुए अपने जीवन मे किसी भी प्रकार का दोष नही लगाया। इनके आदेशो का पालन करते हुए दृढ आस्थावान रह कर स्व आचार्य श्री का ऋण चुकाया जा सकता है। शासन देव से प्रार्थना है कि स्व आचार्य श्री जी को चिर शाति प्राप्त हो। श्री विजेता जी म सा ने एक गीतिका के माध्यम से श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री सी के जैन, विलास पामेचा, दिलीप काठेड़ देवीलाल गुराडिया चदनमल सघवी, श्रीमती दाखीबाई ओरा, श्रीमती हसा काठेड़, श्रीमती अमृतबाई मारू ने स्व आचार्य श्री के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की। अत म सभी ने लोगस्स का ध्यान करके श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-निर्मल चपलोत

पिपलिया कला आज प्रात काल समता विभूति परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक होने के समाचार सुनकर प्रेम उद्योग समूह के समस्त कर्मचारियो मे निस्तब्धता छा गई। तुरत कार्यालय एव कारखाने पूरे दिन के लिए बद करवा दिए। सभी कर्मचारी पी जी फोइल्स प्रागण मे उन्हे श्रद्धाजलि दने एकत्रित हो गए एव समस्त भारत मे स्थित प्रेम उद्योग समूह के सभी कार्यालय एव कारखाने बद करवा दिए।

इस अवसर पर सघ मत्री श्री राजेन्द्र कुमार सिघवी ने आचार्य नानेश के जीवन एव पिपलिया कला में हुए उनके चातुर्मास के बारे मे उपस्थित कर्मचारियो को विस्तृत जानकारी दी।

आचार्य श्री के अहिंसक एव व्यसन मुक्त समाज की रचना के उपदेशो के अनुरूप सभी कर्मचारियो ने आज के दिन मास मदिरा का त्याग कर आचार्य गुरुदेव को श्रद्धाजलि अर्पित की।

दिवगत आत्मा की शाति हेतु सभी कर्मचारियो ने एक घंटे तक नवकार मत्र का जाप एव एक घंटे श्री शातिनाथ प्रभु का जाप किया।

-समस्त कर्मचारीगण, प्रेम उद्योग समूह

बगाईगाव- परम पूज्य गुरुदेव के सुख साता की मगल कामना हेतु विशेष कर पयुर्षण महापर्व से ही विविध त्याग तपस्या की झड़ी हमारे बगाईगाव श्री सघ मे लगी रही। हृदय विदारक समाचार जानने के बाद स्थानीय मूलचद जालान विवाह भवन मे एक स्मृति सभा श्री मदनलाल जी अग्रवाल के सभापतित्व मे हुई। जिसमे जैन अजैन सभी धर्मानुरागी भाई-बहन हुतात्मा के प्रति श्रद्धा-ज्ञापन हेतु सम्मिलित हुए। श्री बस्तीमल सुकलेचा, श्री जुगराम जी सचेती, युवक परिषद के श्री रिखबचद जी बोथरा, तेरापथ धर्म सम्प्रदाय के श्री कन्हैयालाल जी बोथरा, श्री चम्पालाल जी दसवाल, सभापति श्री मदनलाल जी अग्रवाल ने भाव व्यक्त किए। तत्पश्चात् चार लोगस्स 'का ध्यान किया और मेहता जी ने पू गुरुदेव की भाववाचक आज्ञा से सभी को मागलिक सुनाया और मौन भाव से सभी ने सभा विसर्जित की।उस दिन जाप का भी प्रसग बना।

-प्रकाशचद बेताला

बीकानेर परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब का देवलोकवास हो जाने का समाचार सुनकर हम आघात पहुचा।

उदारमना आचार्य श्री के चरणो मे मै बारम्बार वदन करता हू एव बीकानेर दिगबर समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए उनकी आत्मा की शाति के लिए भगवान महावीर से प्रार्थना करते हू कि भगवान आचार्य श्री को अपने समकक्ष स्थान प्रदान करे।

-डॉ मधु एस जैन

मत्री श्री दिगम्बर जैन प्रबध समिति ट्रस्ट

विल्लुपुरम् समता विभूति पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के सथारा का समाचार फिर स्वर्गवास' का समाचार मिलते ही हमारे सघ मे हलचल मच गई। सुबह १० ३० बजे नवकार मत्र का जाप किया गया, जिसमे भारी सख्या मे भाई-बहनो ने भाग लिया।

रात को ८ बजे श्री जैन सघ की श्रद्धाजलि सभा अध्यक्ष श्रीमान रिखबचद जी बम्ब की अध्यक्षता मे हुई। श्री गौतमचद जी बम्ब, श्री ललित कुमार जी कातरेला श्री इन्दरचद जी सुराणा, श्री चैनराज जी सुराणा तथा श्री जैन

महिला मडल की श्रीमती कमला बाई कातेला ने पूज्य गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला एव श्रद्धाजलि अर्पित की। सघ के भाई-बहनो तथा बच्चो ने भारी सख्या मे उपस्थित होकर पूज्य गुरुदेव को श्रद्धाजलि अर्पित की। लोगस्स का ध्यान किया गया।

-ललितकुमार कातरेला, मत्री श्री जैन सघ

मदसौर सकल जैन समाज मदसौर द्वारा जैनाचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी महाराज साहब के देवलोकगमन पर एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन वरिष्ठ सुश्रावक श्री घासीलाल जी साखला की अध्यक्षता मे किया गया। राजेन्द्र जैन परिषद के अखिल भारतीय महामत्री सकल जैन समाज के सयोजक श्री सुरेन्द्र जी लोढ़ा ने मुख्य वक्ता के रूप म श्रद्धासुमन अर्पित किये। सकल जैन समाज के कार्यवाहक अध्यक्ष अधिवक्ता श्री मनसुखलाल भानावत ने सकल सघ की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। महामत्री श्री महेन्द्र चोरडिया, श्री कातिलाल चौधरी, नगर पालिका के उपाध्यक्ष व गौशाला के महामत्री श्री राजेन्द्र अग्रवाल महावीर जयती उत्सव समिति के महामत्री श्री पवन कुमार अजमेरा, श्री प्रकाश मारू शिक्षा शास्त्री श्री सजय पटवा, कर्मचारियो के नेता व गोपाल कृष्ण गौशाला के अध्यक्ष श्री महेश मिश्रा, श्री सूरजमलजी माडावत व जनकपुरा स्थानकवासी समाज के महामत्री श्री जवाहरलाल जैन, लायस क्लब के प्रमुख व सकल जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष चेनमल पामेचा, चार्टर्ड एकाउन्टेट एव समाज सेवी युवा कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र जैन, दशपुर दर्शन पत्र के सपादक व जनकपुरा स्थानकवासी सघ के अध्यक्ष श्री शोभागमल जैन श्री साधुमार्गी जैन सघ के सरक्षक श्री सुरेन्द्र मेहता, श्री बाबूलाल जी नागोरी साधुमार्गी जैन सघ की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती निर्मला पोरवाल, श्री कैलाश पाठक अनवर, श्री अशोक नलवाया, युवा समाज सेवी कार्यकर्ता श्री विकास चौधरी, कार्यक्रम के अध्यक्ष मूर्तिपूजक जैन समाज के अध्यक्ष श्री घासीलाल साखला, श्री कातिलाल रातड़िया, अशोक गोटावाला चम्पालाल डूगरवाल, पार्षद पूरणमल कुकड़ा व नरेन्द्र मेहता ने गद्य पद्य के माध्यम से श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए नवम पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म सा के प्रति शुभकामनाए व्यक्त की। समता भवन मे सपन्न कार्यक्रम मे ४ लोगस्स का ध्यान हुआ। सचालन व आभार प्रदर्शन अशोक जैन ने किया।

-अशोक जैन

अलवर साधुमार्गी सघ के अष्टम पट्टधर समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन पर श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सघ, अलवर द्वारा आयोजित गुणानुवाद कार्यक्रम का प्रारभ करते हुए व श्व स्था जैन श्री सघ अध्यक्ष सुमति कुमार जैन ने कहा आचार्य श्री नानालाल जी म सा सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी सभी के थे।

मूर्ति पूजक जैन सघ के अध्यक्ष वयोवृद्ध श्री लक्ष्मी-चद जी पालावत, ओसवाल जैन शिक्षण सस्थान व समाज सेवी सस्था, महावीर इन्टरनेशनल के अध्यक्ष श्री गेदमल जी जैन, स्था जैन श्रावक सघ के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री गुलाबचद जी सचेती, श्री सौभाग चद जी सुराणा ने सभा को विशेष रूप स सबोधित किया और आचार्य श्री की कमी को एक अपूरणीय क्षति बताया।

-योगेश पालावत सहमत्री
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ

जयपुर. परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण की वेदना से अभिभूत स्थानीय जवाहर नगर के श्री जैन श्वताम्बर सघ की ओर से गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के एसोसिएट प्रोफेसर एव सघ मत्री डॉ सजीव भानावत ने आचार्य प्रवर के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डाला।

सी एस बरला ने कुव्यसन मुक्ति एव सस्कार निर्माण अभियान मे आचार्य श्री के योगदान की चर्चा की। श्री मोहनलाल मुथा एव श्री राजेन्द्र पटवा ने आचार्य श्री के जीवन के प्रेरणास्पद सस्मरण सुनाये। सघ अध्यक्ष श्री जयकुमार लोढ़ा तथा पूर्व अध्यक्ष उमरावचद सचेती ने आचार्य श्री को इस शताब्दी का महान सत बताया। वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ के सयुक्त मत्री श्री उत्तमचद डागा तथा श्री उत्तम चद चपलावत ने आधुनिक सदर्भ मे आचार्य नानेश के दर्शन की प्रासगिकता को

प्रतिपादन किया। श्री विनोद सेठ ने भी इस अवसर पर आचार्य श्री के बहुआयामी व्यक्तित्व की चर्चा की।

-डॉ सजीव भानावत, मत्री श्री जैन श्वेताम्बर सघ

जोधपुर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन पर जैन श्री सघ न हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की। जैन श्री सघ के सयोजक एव श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ के मचिव श्री मिट्ठूलाल डागा ने कहा कि उनके देवलोक गमन स समग्र जैन समाज को गहरा आघात लगा है। सघ की सह सयोजिका श्रीमती चचल कुमारी ने आचार्य श्री को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य श्री का दृढ मत था कि व्यक्ति को त्याग तपस्या क्रिया के प्रति दृढ रहना चाहिए तभी परपराए स्थिर रह सकती हैं। आचार्य श्री को हमारी विनम्र श्रद्धाजलि।

-हितैश जैन

कार्यालय सचिव जैन श्री सघ

रामपुरा सयोजक श्री शातिलाल जी सुराणा की अध्यक्षता मे स्वाध्याय सघ की बैठक मे उदयपुर मे विराजित आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा द्वारा मथारा ग्रहण कर कालधर्म प्राप्त होने पर हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

आचार्य श्री ने सुदीर्घ समय श्रमणपर्याय का पालन किया एव आचार्य पद पर आसीन होने के बाद करीब ३५० मोक्षार्थियो का सयम पथ पर आरूढ किया। करीब एक लाख व्यक्तियो को धर्मपाल जैन बनाया एव समता समाज के निर्माण का दुरूह कार्य सफलता पूर्वक किया। समीक्षण ध्यान द्वारा जैन समाज को एक नई दिशा प्रदान की। आचार्य श्री की आत्मा शाश्वत सुख शीघ्र प्राप्त करें महावीर प्रभु स प्रार्थना करते है।

-शातिलाल सुराना

सयोजक श्री श्वे स्था जैन स्वाध्याय सघ

इदौर समता विभूति आचार्य प्रवर पूज्य श्री नानालाल जी म सा के सथारे के साथ स्वर्गारोहण क समाचार ज्ञात होने पर श्री सुधर्म जैन आराधना भवन ग्रीनपार्क स्थानक मे विदुषी महासती पूज्य श्री इसुमतिजी म सा आदि ठाणा ५ का व्याख्यान बद रखा गया तथा गुणानुवाद सभा के माध्यम मे उनकी दीर्घ सयम पर्याय और उनके विशिष्ट गुणो का स्मरणकर चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धाजलि अर्पित की गई। सभा का सचालन प्रमुख सलाहकार श्री लखमीचद जी मडलिक ने किया।

-शातिलाल चद्रगोत्रिय

सचिव श्री स्थानकवासी सुधर्म जैन श्रावक सघ

जगदलपुर जैन जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र आचार्य श्री नानालाल जी म सा क सथारापूर्वक देवलोक गमन का समाचार सुनकर सभी स्तब्ध रह गए। समता युवा सघ एव महिला मडल जगदलपुर ने २८ अक्टूबर को प्रात से सध्या तक महामत्र नवकार का जाप करवाया। सभी गुरुभक्तो ने अपने-अपन प्रतिष्ठान बद रखे। जगदलपुर श्री सघ ने रात्रि ८ बजे सभा आयोजित की जिसमे पूज्य गुरुदेव का गुणानुवाद कर उन्हे श्रद्धा सुमन अर्पित किया। सभा के प्रारभ मे सतोष जैन ने स्व आचार्य श्री का जीवन परिचय प्रस्तुत किया।

श्री सघ क अध्यक्ष श्री प्रकाशचद जी लूनिया ने कहा, आचार्य श्री के देवलोक गमन से समस्त मानव जाति की जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय है। अ भा सा सघ के शाखा सयोजक श्री गौतमचद जी बैद श्री भवरलाल जी साखला, खीवराज जी सालेचा, पुखराज जी बाथरा सपतलाल जी बैद, रमेश चद जी बुरड़, किशोर जी पारख मदन दुग्गड़, राजकुमार कटारिया राजेश छाजेड़, श्रीमती प्यारी बाई नाहटा, श्रीमती मीना देवी बैद एव श्रीमती भारती लोढ़ा ने भी स्व आचार्य श्री को समूचे विश्व का मसीहा बताते हुए उनके गुणो का स्मरण किया। श्री रमेश बुरड़ ने इस अवसर पर पान पराग गुटखा पान मसाला त्याग कर नवयुवको म प्रेरणा का सचार किया। अत मे चार लोगस्स का ध्यान कर स्व आचार्य श्री को श्रद्धजलि दी गई।

-गौतमचद बैद

धमधा: आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के स्वर्गवास का समाचार सुनकर समस्त जैन समाज मे शोक की लहर छा गई। सभी ने अपने व्यवसाय बद कर सध्या एक शोक सभा का आयोजन किया जिसमे सघ के अध्यक्ष श्री जयरचद जी जैन की अध्यक्षता मे सभी ने अपने-अपने विचारो से

भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। श्री फकीरचद जी पारख, पारसमल जी खेमचद जी, ज्ञानचद, नदकुमार, अजीत बाबू, ज्ञानचद पारख, रेखचद जी छाजेड, श्रीमती रेशमबाई, लीली बाई, शाता देवी, पतासी देवी, विजया देवी, तारादेवी, किरण देवी, इन्दु पारख, शशिकाता और उर्वशी कुमारी ने भाव व्यक्त कर श्रद्धाजलि अर्पित की।

अत मे अध्यक्ष महोदय द्वारा चार लोगस्स का ध्यान कराकर आचार्य श्री को अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए आत्मा की चिरशाति व मोक्ष गामी होनेकी कामना की गई।

-पारसमल खेमचद छाजेड

देशनोक अत्र विराजित श्री सेवन्त मुनिजी म सा आदि ठाणा-३ के पावन सान्निध्य मे श्रद्धाजलि सभा का आयोजन हुआ। मुनित्रय ने आचार्य श्री नानेश के जीवन प्रसगो पर गद्य पद्य के रूप मे प्रकाश डालते हुए गुणानुवाद किया और उन्होंने दिवगत आचार्य श्री को भारत की महान् विभूति बताया। श्रावक श्राविका वर्ग मे सर्वश्री हुलासमल सुराणा, कविरत्न श्री सोहनदान चारण मानकचद लूणिया हीरालाल आचलिया, धनराज साड धूड़चद बुच्चा, सोहनलाल लूणिया, सुश्री चदना भूरा ने अपने भाव रखते हुए श्रद्धा सुम अर्पित किए। देशनोक सघ के अनेक पदाधिकारी गण व सैकड़ो भाई-बहिन दिनाक २८-१०-९९ को अन्तिम दर्शनार्थ उदयपुर पहुचे और अत्येष्टि में शामिल हुए। स्मृति सभा का सचालन धूड़चद बुच्चा ने किया। अन्त में मौन सहित चार लोगस्स का ध्यान करके दिवगत महान् आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-धूड़चद बुच्चा

कोयम्बदूर पूज्य आचार्य श्री को श्रद्धाजलि देने के लिए दिनाक २९-१०-९९ को श्रमण सघीय श्री रमेशमुनि जी म सा आदि ठाणा ५ एव श्रमणी पूज्य श्री मदनकवर जी म सा आदि ठाणा ३ के सानिध्य में स्थानक भवन मे एक गुणानुवाद सभा का आयोजन किया। पूज्य प्रवर्तक श्री एव पूज्य श्री सिद्धार्थ मुनि जी ने आचार्य श्री को श्रद्धाजलि अर्पित की। सघ की तरफ से उपाध्यक्ष श्री पारसमल जी सोलकी ने आचार्य श्री शीघ्र मोक्षगामी बने, ऐसी मगलकामना की। सघ के मत्री श्री घीसालालजी हिंगड ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला। अन्य अनेक वक्ताओ ने अपने-अपने विचारो द्वारा आचार्य श्री को श्रद्धाजलि अर्पित की। अन्त में चार लोगस्स के काउसग्ग के साथ सभा विसर्जित की गई।

-घीसूलाल हिगड़
मत्री श्री कोयम्बदूर स्थानकवासी जैन सघ

दिल्ली श्री जैन साधुमार्गी श्रावक सघ दिल्ली ने आचार्य श्री नानेश की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री प्रियलक्षणा जी महाराज के सानिध्य मे श्री श्वेताम्बर स्थानवासी जैन सभा के तत्वाधान म परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानेश को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पण की गई।

अखिल भारतवर्षीय जैन कान्फ्रेन्श दिल्ली के अध्यक्ष श्री जोगीराम जी जैन, श्री रिखबचद जी जैन, उपाध्यक्ष श्री साधुमार्गी जैन सघ दिल्ली श्री रोशनलाल जी जैन, अध्यक्ष श्री श्वेताम्बर स्थानक वासी जैन महासघ दिल्ली, चादनी चौक के अध्यक्ष मोतीलाल जी जैन, रजना मालू जैन, महासभा के महामत्री प्रोफेसर रतन जैन श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कोल्हापुर मार्ग के उपाध्यक्ष व जैन कान्फ्रेस दिल्ली शाखा के महामत्री कश्मीरीलाल जी जैन, श्री नेमीचद जी तातेड, श्री दिनेश जी जैन, श्री अजीत जैन, श्री बलवीर जी जैन, श्री सतीश जी जैन, श्री हरबश लाल जी ने अपने अपने विचार रखे। उन्होंने आचार्य श्री के सयमी जीवन की प्रशसा की। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के पूर्व अध्यक्ष श्री रिद्ध करण जी सिपानी भी इस अवसर पर दिल्ली मे मौजूद थे।

-कमलचन्द डागा

नदुरबार यहाँ विराजित श्रमण सघीय महासती जी श्री सत्यप्रभाजी आदि ठाणा ने आचार्य श्री के गुणगान करके चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धाजलि अर्पित की। दोपहर 3 बजे से 4 बजे तक श्री सघ द्वारा सामूहिक जाप के अत मे आचार्य भगवन के गुणगान कर लोगस्स का ध्यान करके श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

-अनिल के लोढा

जयपुर चारित्र चूड़ामणि, धर्मपाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म सा का दिनाँक 27 अक्टूबर 1999 को रात्रि को 10 40 बजे सथारे सलेखना के साथ महाप्रयाण हो गया। समता विभूति पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा हुक्मवश के पहले आचार्य हुए जिन्होने लगभग 37 वर्ष तक सघ का नेतृत्व किया। उन्होंने एक साथ पच्चीस दीक्षा रतलाम मे प्रदान कर नया इतिहास बनाया। आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने सुदीर्घ काल तक सयम साधना की शासन व्यवस्था का दायित्व सभाला और अतिम समय मे सथारा करके उस महापुरुष ने पडित मरण का वरण किया। शासन देव से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को चिर-शाति मिले।

-विमलचद डागा मत्री, सम्यग ज्ञान प्रचारक मडल

केकड़ी श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री नानालालजी म सा के स्वर्गवास के समाचार सुनकर शोक निमग्न सघ द्वारा शोक सभा आयोजित की गयी जिसमे श्री लालचद नाहटा, श्री ज्ञानचद सुराणा, श्री शातिलाल जी ने आचार्य श्री के जीवन, व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डाला एव लोगस्स का कायोत्सर्ग कर श्रद्धाजलि समर्पित की।

-लालचद नाहटा तरुण'

बादला शोक सतप्त सभा मे महासती श्री कौशल्या जी, अजलि जी, रश्मि जी, मधु जी म सा ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला और श्रद्धाजलि अर्पित कर चार-चार लोगस्स का ध्यान किया।

-महेशचद गेदालाल शाह

अलीगढ़ (टोंक) परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म सा के देवलोक गमन के दुखद प्रसग पर महासती श्री आदर्श प्रभा जी म सा आदि ठाणा 5 के सानिध्य मे स्थानक भवन मे शोक सभा का आयोजन रखा गया। जिसमे महासती जी म सा ने आचार्य भगवन् का गुणगान करते हुए फरमाया कि आचार्य देव इस युग की महान विभूति थे। अन्य वक्ताओं ने भी आचार्य श्री के गुणगान करते हुए आप श्री को महान विभूति बताया।

-गौतम चद जैन
अध्यक्ष समता युवा सघ

भायदर (मुबई) श्री साधुमार्गी जैन सघ मुबई द्वारा महासतियाँ जी के सानिध्य मे आयोजित स्मृति सभा में सह मत्री कुदन लाल जी नौलखा, समता युवा सघ के मत्री वीरेन्द्र जी अभाणी, जशवत सिसोदिया, चद्रप्रभा नदावत, उत्तमचद जी ओस्तवाल, महावीर जी सूर्या, थावरचद जी, मेवाड सघ के गणेशलाल जी मेहता, चदन बाला जैन, मुबई सघ के उपाध्यक्ष श्री उमराव सिह जी ओस्तवाल, सघ सरक्षक श्री सुदरलाल जी कोठारी आदि वक्ताओ ने भावभीनी श्रद्धाजलि दी। विदुषी श्री काता श्री जी ने गुरु बिन जीवन सुना निरुपित किया। समता युवा सघ द्वारा रक्तदान शिविर लगाया गया।

कोटा स्थानीय समता भवन मे आयोजित स्मृति सभा मे सर्वप्रथम महासती श्री मल्लीप्रभा जी म सा ने अपनी हृदय वेदना को शब्दो मे व्यक्त किया। महासती श्री सुप्रभाजी म सा एव श्री सत्य प्रभाजी म सा ने भावुक स्वरो मे अपने अनन्य आराध्य को भावनाजलि अर्पित की। महासती श्री प्रतिभाश्री जी म सा ने मर्मस्पर्शी भावव्यक्त करते हुए हृदय की वेदना व्यक्त की। तदनतर सघ मत्री शकरलालजी मालू, सुश्रावक श्री जवाहर जी साड, श्री दुलीचद जी भाई, स्वाध्यायी श्री रिखबचद जी पोरवाल, सघ उपाध्यक्ष श्री निहाल चद जी काकरिया, भूतपूर्व मत्री श्री मोहन लाल जी भदेवर श्री जगजीवन जी मूणोत आदि ने भाव व्यक्त करते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की। अत मे 4 लोगस्स के ध्यान के साथ सभा का विसर्जन किया गया।

-शकरलाल मालू

मदसौर समता मूर्ति आचार्य श्री नानालालजी म सा का दि 28 अक्टूबर 99 को उदयपुर मे देवलोक गमन होने पर महावीर भवन जाम्बूवाला स्था शहर मदसौर मे सादर श्रद्धाजलि अर्पित की गयी। शोक सभा मे पडित श्री उदय मुनि जी म सा , पडित श्री धर्म मुनि जी म सा , श्री सुरेन्द्र मुनि जी म सा ने आचार्य श्री के बहुमुखी प्रेरणादायी व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हे अपनी भावनाजलि अर्पित की। सभा म सघ के मत्री श्री चादमलजी मुरड़िया, श्री सागरमलजी कुदाल व श्री अरविद जी

सकलेचा ने भी आचार्य श्री को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-अध्यापक मानमल बम्बोडी

विराट नगर (नेपाल) परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालालजी महाराज के असामायिक देहावसान होने के समाचार से हम सभी विराट नगर (नेपाल) निवासी श्रावक स्तब्ध है। जैन धर्म के ओजस्वी व्याख्याता परम पूज्य आचार्य प्रवर का सम्पूर्ण जीवन जैन इतिहास की धरोहर है। आप महान क्रातिकारी युगदृष्टा महापुरुष थे। आपने अपने विशिष्ट ज्ञान से अल्पारम्भ-महारम्भ तथा समता जीवन दर्शन एव समीक्षण ध्यान की विशिष्ट विवेचना की। आप द्वारा निर्दिष्ट राह ही सदा हमारी चाह रही है। हम परम् पूज्य आचार्यप्रवर नानेश की पुण्यात्मा की आध्यात्मिक प्रगति की मगल कामना करते है।

-जितेन्द्र कुमार सेठिया, अध्यक्ष

नोखा सघ अध्यक्ष धर्मचद जी पारख की अध्यक्षता मे स्थानीय सघ के सैकड़ो भाई- बहनो ने श्रद्धाजलि सभा मे पूज्य आचार्य देव के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये। पूर्व महामत्री श्री किसनलालजी काकरिया, जैन आदर्श सेवा सस्थान के महामत्री श्री ईश्वरचद जी बैद, डॉ प्रेमसुख जी मरोटी, श्री राजाराम जी धारणिया, श्री किशनलाल जी सचेती श्री का ह महर्षि, श्री भवरी देवी दुगड़, श्रीमती अजू सुराना आदि ने अपने भाव व्यक्त किये।

-मोहनलाल पारख

भूपाल सागर (चित्तौड़गढ़) समता विभूति पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा का देवलोक गमन का अविश्वसनीय सदृश्य समाचार रात्रि को प्राप्त हुआ, मन को आघात लगा। स्थानीय सघ द्वारा अत्र विराजित ज्ञानगच्छीय महासती श्री कमलेश प्रभा जी म सा के सानिध्य मे श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया महासतिया ने आचार्य भगवन् के जीवन से प्रेरणा लेने एव उनको सभी का आचार्य बताया।

भूपालसागर साधुमार्गी जैन सघ गुरुदेव के देवलोकगमन पर हार्दिक सवेदना प्रकट करता है एव उनके बनाये हुए धर्म मार्ग पर चलने को तत्पर रहेगा।

-बसतीलाल बाफना

अक्कल कुआ परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म सा को अक्कल कुआ मे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गयी।

धर्मसभा मे समता युवा सघ के मत्री श्री धनेश बोहरा ने आचार्य श्री नानेश की जीवनी पर बोलते हुए आपके गुणो का विवेचन किया। आपने मालवा, मेवाड़ के करीब डेढ़ लाख अस्पृश्य (बलाई) जाति लोगो को जैन बनाकर उन्हे धर्मपाल नाम दिया। इसी से आप धर्मपाल प्रतिबोधक जाने जाते है। आपश्री के निर्वाण से पूरे समाज अपितु भारतीय समाज की अपूर्व क्षति हुई है, जो कभी पूरी नही हो सकती है। धर्मसभा मे समस्त जैन सघ के सैकड़ो सदस्य मौजूद थे। गुरुवार का पूरे समाज ने व्यवसाय प्रतिष्ठान बद रखे और श्रद्धाजलि अर्पित की।

गगापुर साधुमार्गी जैन सघ गगापुर द्वारा समता भवन मे आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण प्रसग पर आयोजित श्रद्धाजलि समारोह मे महासती श्री गगावती जी, श्री पुष्पलता जी, श्री सुमती श्री जी एव श्री हर्षिला जी ने आचार्य श्री नानेश का विश्व की विरल विभूति बताते हुए, उनक आदर्शों पर चलने का सकल्प दोहराया व उनके श्री चरणो मे श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आज के इस श्रद्धाजलि समारोह मे खचाखच भरे समता भवन मे जैन धर्मावलम्बियो क अतिरिक्त अन्य वर्ग के श्रद्धालुओं ने भी गुरु नानेश को श्रद्धासुमन अर्पित किये। जिनमे स्थानीय सिविल न्यायाधीश श्री पी सी पगारिया, चेतन प्रकाश जी डवानियाँ, भवरलाल जी दूबे, तेरापथ धर्मपथ धर्मसघ के अध्यक्ष लक्ष्मीलाल हिरण, गणपतलाल हिरण, भगवतीलाल नौलखा, देवेन्द्र हिरण, बाबूलाल सिघवी, कैलाश चद्र हिरण, स्थानीय सघ के अध्यक्ष मदनलाल पितलिया, महामत्री सुन्दरलाल सिघवी ने जैन जगत के ज्योति-पुज आचार्य नानेश के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपने भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण की सूचना मिलते ही कस्बे के सभी वर्गों के व्यापारियो ने अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान बद कर अतिम यात्रा मे उदयपुर जाकर भाग लिया। श्रद्धाजलि समारोह के दौरान आचार्य श्री के समता

दर्शन पर चर्चा मे भाग लेते हुए स्थानीय समता युवा सघ द्वारा श्री अम्बेश गुरु रैफरल चिकित्सालय म समता जल मदिर बनाकर आजीवन सचालन का निर्णय लिया गया।

-सुन्दरलाल सिघवी

भूपालगज परम पूज्य आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म सा सिद्ध - अरिहन्तों से नाता जोड़ते हुए सजग सथारा सहित नश्वर दह का परित्याग कर 27 अक्टूबर 99 को देवलोक सिधार गये।

इस दुखद बेला मे हमारे सघ के सदस्य भाई-बहन - बालवृन्द सभी ने अपने आराध्य देव को सजल नेत्रो से हार्दिक भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है एव श्री जिनेश्वर देव से प्रार्थना की है - कि आचार्य भगवन् की आत्मा को चिरशान्ति प्रदान करे। हम सभी की मगल कामना है कि आचार्य भगवन की आत्मा अतिशीघ्र सिद्धगति को प्राप्त करे।

-भगवतीलाल सेठिया

देवगढ़ मदारिया श्री साधुमार्गी जैन सघ के समता भवन मे आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी महाराज साहब के देवलोक गमन पर शोक सभा का आयोजन रखा गया। उसमे श्री धर्मचद जी देरासरिया, श्री चदनमल जी जैन, श्री भवरलाल जी श्री माल, श्री उत्तमचद जी सुखलेचा, श्री भवरलाल जी गाधी, श्री चद्रप्रकाश जी आच्छा वर्धमान स्थानक वासी सघ श्री मिश्रीलाल जी देशरला, श्री कोमलसिह जी मेहता आदि वक्ताओ न आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाश डालत हुए उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। सघ के उपाध्यक्ष श्री मिश्रीलाल पोखरना ने अपने उद्‌बोधन मे आचार्य प्रवर के देवलोक गमन से, श्री साधुमार्गी जैन सघ की ही नही पूरे जैन सघ के अपूरणीय क्षति हुई है। उसकी भरपाई कर विषमता को दूर करना ही आचार्य प्रवर के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। दिवगत आत्मा देवलोक मे मोक्ष की ओर प्रस्थान करे, यही अरिहत प्रभु से मगल कामना व्यक्त की। देवगढ़ के समस्त व्यापारी बन्धुओ ने अपना कारोबार बद रखा।

-मिश्रीलाल पोखरना

सवाईमाधोपुर परमपूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी महाराज के महाप्रयाण की सूचना प्राप्त होने पर स्तब्ध जैन समाज अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान बद कर स्थानीय समता भवन मे दिवगत आचार्य श्री को श्रद्धा सुमन अर्पित करने को इकट्ठा हुआ। सघो के प्रमुख वक्ताओ ने आचार्य श्री के जीवन की विशेषताओ पर प्रकाश डाला तथा उनके आदेशो को जीवन मे यथाशक्ति पालन करने का निश्चय किया। प्रमुख वक्ताओ मे श्री राधेश्याम जी, श्री सघ अध्यक्ष श्री रघुनाथदास जी, श्री सुबाहु कुमार जी तथा श्री पूनम चद जैन स्थानीय साधुमार्गी सघ अध्यक्ष ने आचार्य श्री के बहुआयामी प्रतिभाओ पर प्रकाश डाला। अत मे चार लागस्स का ध्यान करने के बाद सभा विसर्जित हुई। दूसरे दिन महावीर भवन मे उपाध्याय श्री मानमुनि जी के सानिध्य मे गुणानवाद सभा का आयोजन किया गया।

-पूनमचद जैन

सूरत : श्री मेवाड़ साजनान सघ भवन सूरत मे आचार्य श्री नानेश की गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। जिसमे सर्व प्रथम सघ मत्री श्री मदनलाल बोथरा ने आचार्य नानेश के विराट व्यक्तित्व की सक्षिप्त मे जानकारी दी।

सभा म श्री साधुमार्गी जैन सघ सूरत के पदाधिकारी व सदस्यो के अलावा श्री स्थानकवासी जैन सघ उधना, श्री स्थानकवासी जैन सघ मैस्तान श्री सुधर्मा स्वामी स्थानकवासी जैन सघ, श्री महावीर इटरनेशनल श्री श्रमण सघ स्थानकवासी जैन सघ आदि सघो के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। सूरत सघ सरक्षक श्री मागीलालजी नगावत सघ अध्यक्ष श्री प्रदीप जी गोलच्छा समता युवा सघ सूरत अध्यक्ष श्री सुभाषजी पारख महिला मडल मत्री श्रीमती रजनी बोथरा, महावीर इटरनेशनल सूरत के उपप्रमुख श्री स्वरूपजी बाफना सी ए, सुधर्मा स्थानकवासी जैन सघ सूरत के सघ सरक्षक व पूर्व मत्री श्री हीरालालजी तालेरा श्री स्थानकवासी जैन सघ मैस्तान के प्रमुख श्री नवीनभाई पारीख श्री रिखबचद जी चौपड़ा(इदौरवाले) श्री बच्छ राजजी सुराना, श्री हुलासजी सुराना, श्री मागीलालजी पिछोलिया श्री राकेश जी श्रीमाल, मुलाकीचदजी नाहटा श्री प्रकाशजी देरासरिया, श्री त्रिलोकचद जी घोखा

(राउरकेला), श्री मीठालाल जी दक, सूरत सघ उपाध्यक्ष श्री अजीत जी काकरिया, कोषाध्यक्ष श्री डालमचदजी लुणिया श्रीमती सोहनी सुराना आदि ने आचार्य श्री नानेश को अपने- अपने भावो से श्रद्धाजलि देते हुए गुणानुवाद किया एव पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म सा के प्रति पूर्ण श्रद्धा एव समर्पण को ही श्री नानेश की प्रति सच्ची श्रद्धाजलि बताया।

अत मे लोगस्स के पाठ के साथ मौन धारण करके श्रद्धाजलि दी गई तथा सभा के विसर्जन के बाद सघ सह-मत्री श्री हुलास जी सुराना की प्रेरणा से उपस्थित श्रद्धालुओ ने त्याग तपस्या की पर्ची लेकर प्रत्याखान सहित आचार्य श्री नानेश को श्रद्धाजलि दी ।

-मदनलाल बोथरा
मत्री , साधु जैन सघ

गगाशहर (भीनासार) श्री जैन जवाहर विद्यापीठ मे श्री विनय मुनि जी म सा व श्री अक्षय मुनि जी म सा के सत्सानिध्य में महाप्रतापी आचार्य श्री नानालाल जी म सा की स्मृति मे सभा रखी गई। सर्वप्रथम श्री अक्षय मुनि जी म सा ने आचार्य श्री नानेश के जीवन सदर्भ के बारे मे अपने भाव रखे। आचार्य देव आज हमारे बीच नही है पर उनके आदर्श हमारे बीच उपस्थित हैं। वे कम बोलते थे परन्तु उनका चरित्र निरतर बोलता रहता था। उनका जीवन उनकी वाणी, उनका शरीर साधना से सधे हुए थे।

श्री विनय मुनि जी म सा ने परम आराध्य देव के सदर्भ मे अपने भाव प्रकट करते हुए कहा जीवन के दो छोर हैं जन्म और मृत्यु। जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। महापुरुषो का जीवन अगरबत्ती की तरह होता है जिस प्रकार अगरबत्ती स्वय जलकर दूसरो को सुगधित करती है इसी प्रकार आचार्य भगवन ने दुनिया को अमूल्य चीजे दी है।

आचार्य देव ने हुक्मसघ के नव पाट पर आचार्य श्री रामलाल जी म सा का चयन किया है। हमे आचार्य श्री रामलाल जी म सा को पूर्ण समर्पणा के साथ सघ के विकास मे सहयोग करना है। महासती श्री सुमेधा जी म सा ने कविता मे अपने भाव प्रकट किये।

श्री साधुमार्गी जैन सघ गगाशहर भीनासर के मत्री श्री महेन्द्र जी मिन्नी, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ के मत्री श्री मेघराज जी बोथरा महिला समिति अध्यक्षा श्री किरण देवी बोथरा, पत्रकार प्रकाश पुगलिया विश्व भारती के अध्यक्ष खेमचद सेठिया, प्रो सुमेरमल जैन, समता भवन के सचिव श्री उदय जी नागोरी, वरिष्ठ श्रावक सुशील जी बच्छावत एव चचल जी बोथरा श्रमणोपासक सपादक श्री चपालाल जी डागा ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। तेरापथ महासभा के अध्यक्ष श्री भवरलाल डागा ने महाप्रज्ञ के सदेश का वाचन किया जिसमे आचार्य श्री नानेश को श्रद्धाजलि के भाव थे। तेरापथ महासभा के श्री सुपारसमल दुगड़, लूणकरण छाजेड़ व अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के कोषाध्यक्ष श्री जयचदलाल जी सुखाणी आदि वक्ताओ ने भी आचार्य श्री को श्रद्धाजलि दी तथा सभी ने आचार्य श्री रामलाल जी म सा के प्रति निष्ठा श्रद्धा व समर्पण रखने का सकल्प दोहराया।

-महेन्द्र मिन्नी

खाचरौद खाचरौद श्री सघ ने चातुर्मासार्थ विराजित परम विदुषी महासती श्री कुसुमलता जी म सा आदि ठाणा 4 के सानिध्य मे आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन के उपरात एक स्मृति सभा आयोजित की। स्मृति सभा मे श्री झमकलाल बरखेड़ा वाला, श्री सोहनलाल जी लहरी श्री अनिल दलाल, श्री जवाहरलाल कोठारी, श्री सुरेश नांदेचा श्री राजू कोठारी, श्री राजू चौरड़िया, श्रीमती बबीता भटेवरा एव श्रीमती चद्र बसत नांदेचा ने भाव व्यक्त किये, कार्यक्रम का सचालन श्री सुभाष दलाल ने किया।

स्मृति सभा के अत मे सभी सरलमना, भद्रिक महासतियाजी ने खाचरौद श्री सघ से मन को छू लेने वाली अपील की कि जिस प्रकार आपने आचार्य श्री नानेश को सहयोग दिया है उसी प्रकार वर्तमान आचार्य श्री रामेश को भी सहयोग प्रदान कर खाचरौद श्री सघ अपनी गौरवमयी परपरा को कायम रखे।

सभा के अत मे महासती श्री कुसुम लता जी म सा ने अपन प्रेरक उद्बोधन मे बताया कि मरण दो प्रकार का होता है बाल मरण व पडित मरण। आचार्य श्री नानेश

ने सलेखना सथारा कर सजग अवस्था मे रह कर पडित मरण को अगीकार किया है। इसके साथ ही आचार्य श्री नानेश के भव्य जीवन के विविध पहलुओ पर प्रकाश डाला। स्मृति सभा के अत मे 4-4 लोगस्स का ध्यान कर गुरुदेव को श्रद्धाजलि दी गई।

-सुभाष दलाल

आवरा समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म सा की स्मृति मे गुणानुवाद हेतु श्रद्धाजलि सभा का आयोजन स्थानीय समता भवन जवाहर पेठ मे महासती श्री पान कवर जी म सा आदि ठाणा 10 के सानिध्य मे हुआ। वर्द्धमान स्थानकवासी श्रावक सघ के सुजानमल जी कोचट्टा, त्रिस्तुतीक जैन सघ के प्रकाशचद जी काठेड़, दिगम्बर जैन सघ की ओर से पुखराजमलजी सेठी चद्रप्रभु दिगम्बर जैन सघ की ओर से हीरालाल जी गगवाल, सतीश जी कासलीवाल, स्थानीय श्री सघ के अध्यक्ष समरथमल जी काठेड़, उपाध्यक्ष मागीलाल जी मेहता, महामत्री अमृतलाल जी पगारिया, वैराग्यवती बहन प्रतिभा सुराणा प्रकाशचद्रजी श्री श्री माल, प्रकाशचद्र जी चोरड़िया, सीमा सघवी, श्रीमती राजकुमारी पगारिया, मनीषा पगारिया खुशबू पोखरना आदि ने भावपूर्ण अभिव्यक्ति की। महासती श्री पानकुवर जी म सा ने गुरुदेव के गुणो को उजागर करते हुए नवम् पट्टधर आ श्री रामलाल जी म सा के उन्नतिमय शासन की शुभकामनाएँ दीं। महासती श्री ललिता श्री जी म सा, महासती श्री अनुपमा श्री जी म सा आदि साध्वी मडल ने भावपूर्ण गीतिका के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्री सघ के वरिष्ठ श्री राजमल जी नाहर ने चार लोगस्स का ध्यान कराया।

विराट नगर (नेपाल) 28 10 99 को श्री जैन श्वेताम्बर साधुमार्गी सघ विराटनगर मे श्री इदरचद सेठिया की अध्यक्षता परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन पर दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक नमोकार महामत्र को जाप तथा शाम 7 बजे शोक सभा का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर बड़ी सख्या मे श्रावक श्राविका तथा बाल-बच्चे उपस्थित थे। श्रावक श्राविका ने आचार्य भगवान के जीवन पर प्रकाश डाला तथा गीतिका प्रस्तुत की। आचार्य प्रवर को विशिष्ट आगम ज्ञाता निरूपित करते हुए 4 लोगस्स का ध्यान किया एव भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

-सुरेन्द्रकुमार लुनिया

सीतामऊ समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन के समाचार से स्थानीय जैन समाज मे शोक छा गया। महाप्रयाण यात्रा के दिन सकल जैन समाज ने अपना व्यवसाय बद रखा। महावीर भवन मे शोक सभा आयोजित की गई तथा समाज के अध्यक्ष श्री सुजान मलजी बोहरा, प्रकाश चद्रजी पटवारी, सागर मलजी जैन, श्रीमती सुशीला जैन ने आचार्य श्री के दीर्घ सयमी जीवन पर प्रकाश डाला।

महासमुद खरतरगच्छाचार्य श्री महोदय सागर जी म सा की आज्ञानुवर्तिनी शा प्र श्री निपुणाश्री म सा की विदुषी शिष्या परम पूज्या साध्वी श्री मजुला श्री जी म सा के पावन सानिध्य मे श्रद्धाजलि सभा आयोजित की गई। विदुषी महासती जी ने आचार्य श्री नानेश के जीवन प्रसगो के बारे मे बताते हुए कहा कि हालाकि मै उनके बारे मे ज्यादा तो नही जानती मगर इतना जानती हूँ कि उन महापुरुष ने आज के इस विषमताओ से भरे दौर मे विश्व को समता का प्रकाश दिया है। आज उनका यूँ चले जाना एक बड़ी अपूरणीय क्षति है। गुरु भक्ति से ओतप्रोत श्री उत्तम चद जी कोटड़िया ने आचार्य श्री नानेश का पूरा जीवन परिचय देते हुए कविता के रूप मे अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि दी। श्री रमेश जी साखला, श्री अशोक जी चौरड़िया, श्री भीखमचद जी मालू, श्री धरमचद जी श्रीश्रीमाल, श्रीमती बबिता बरड़िया आदि ने गुरुदेव के जीवन सस्मरणो के बारे मे प्रकाश डालते हुए भावयुक्त श्रद्धाजलि दी। आस्था के भास्कर विश्व हितकर, समता दिनकर आचार्य श्री नानेश को अश्रुपूर्ण श्रद्धाजलि श्रीमती ज्ञानी पींचा ने दी।

आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण के समाचार सुनते ही सघ सदस्यो द्वारा १२ घंटे का नवकार मत्र का अखड जाप रखा गया।

-श्रीमती ज्ञानी पींचा
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्री सघ

उदयपुर स्थानकवासी जैन समाज के मूर्धन्य आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब के दिनाँक 27 10 99 को रात्रि मे 10 41 बजे सलेखना सथारा सहित देवलोक गमन पर महावीर जैन परिषद के सदस्यो ने उनको श्रद्धाजलि अर्पित की।

अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद नाहर ने बताया कि आचार्य श्री नानालालजी म सा एक राष्ट्रसत एव उच्च कोटि के विद्वान थे। वे स्थानकवासी जैन समाज के ही नही अपितु सम्पूर्ण मानव समाज के दैदीप्यमान सितारे थे। हम सभी उनके उपदेशो एव सिद्धातो को जीवन मे उतारे यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

अलीगढ (रामपुरा) महासती श्री आदर्श प्रभाजी म सा के पावन सानिध्य मे 29 10 99 को आचार्य पूज्य गुरुदेव की स्मृति सभा का समायोजन हुआ जिसमे सघ मत्री श्री भैरूलाल जी जैन, श्री गोपाललाल जी जैन, सरपच युवा श्री प्रजनलाल जी जैन, श्री गौतमचद जी जैन पटवारी, विदुषी महासती श्री आदर्श प्रभा जी म सा विदुषी महासती श्री गुणसुन्दरी जी म सा ने भाव विभोर हाते हुए भरे गले से आचार्य देव के गुण स्मरण करते हुए कहा कि चतुर्विध सघ से अमूल्य निधि छिन गई है।

ऐसे अनन्त आराध्य देव का आत्मा नश्वर शरीर को छोड़कर देवलोक गमन कर गया। उन्होंने अपने सघ की बागडोर ऐसे उत्कृष्ट साधना शील महापुरुष के सशक्त हाथो मे सौपी है जिनका जीवन धवल दूध की भाति पवित्र एव निर्मल है।

-रतनलाल जैन

रामपुरहाट (प बगाल) परमपूज्य, आचार्य श्री नानालालजी म सा का उदयपुर मे सथारा पूर्वक देवलोक गमन का समाचार मिलते ही रामपुरहाट सब डिवीजन के सभी मुकामो के साधुमार्गी जैन सघ के श्रावको ने अपने-अपने व्यवसाय प्रतिष्ठान बद कर दिये।

प बगाल के रामपुरहाट शहर के सभी जैन बधुओ ने उस दिन दिगवत आचार्य गुरुदेव के प्रति विभिन्न धार्मिक कृत्यो के द्वारा अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

-सुशील बाठिया

खैरागढ आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म सा के देवलोक गमन की खबर सुन खैरागढ, छुईखदान, मुढ़ीपार पाड़ादाह, अतरिया आदि के जैन समाज सभी ने अपना कारोबार बद रखा। स्थानक भवन मे नवकार - मत्र का जाप हुआ। शाम को सकल जैन समाज ने श्री वर्धमान जैन स्थानक भवन के तत्वाधान मे श्रद्धाजलि सभा की। जैन समाज के प्रमुख श्री अजय जी ओसवाल, श्री प्रेमचदजी मूणोत, श्री पन्नालाल जी गिड़िया, श्री प्रेमचद जी गिड़िया, श्री किशनजी छाजेड़, श्री नथमलजी कोटड़िया, श्री गुलाब छाजेड़, श्रीमती सरलादेवी साखला आदि ने अपने-अपन भावो से गुरुदेव को नमन कर श्रद्धाजलि दी। अत मे सभी जैन समाज के श्रावक एव श्राविकाओ ने 4-4 लोगस्स का ध्यान करके गुरुदेव को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। श्री गुलाब चोपड़ा ने जीवन चरित्र प्रस्तुत किया।

-गौतम चोपड़ा, शाखा सयोजक

झालावाड़ पूज्य जैनाचार्य नानालालजी म सा का उदयपुर मे सथारा सहित देवलोक गमन हो गया। श्रद्धाजलि सभा को यहाँ स्थानक मे सबोधित करते हुए महासती श्री अरविद कवर जी ने कहा कि - पूज्य आचार्य श्री हुक्म गच्छ के सूर्य थे। उनका दैदीप्यमान जीवन मुमुक्षु आत्माओ के लिए ज्योति पुज था।

झालावाड़ श्री सघ की ओर से श्रद्धाजलि अर्पित की गई और चार लोगस्स का ध्यान किया गया। नियमित व्याख्यान बद रखा गया। श्रद्धाजलि सभा मे पूज्य गुरुदेव का डॉ सुभाष जी महता ने गुणानुवाद किया।

-महेश डागा

बड़ीसादड़ी दि 29 10 को स्वर्गीय आचार्य प्रवर के गुणानुवाद करने समता भवन मे प्रात श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमे सकल सघ के आबाल वृद्ध श्रावक, श्राविकाओ ने भाग लिया। सभी के आँखें अश्रुपूरित थी। महासतिया जी श्री विमला कवर जी म सा, विचक्षणा श्री जी म सा आदि ठाणा ने स्वर्गीय आचार्य श्री के आदर्श त्यागमय जीवन के विविध प्रसगो को स्पष्ट करते हुए गुणानुवाद किये व आचार्य श्री जी के जीवन क कई अनुकरणीय प्रेरक प्रसग पर प्रकाश डाला।

संघ अध्यक्ष श्री रोशनलाल जी पामेचा, श्री लालचंदजी डागी व श्री राजमल जी कठालिया ने स्वर्गीय आचार्य प्रवर के आदर्श त्यागमय जीवन व अनुकरणीय प्रेरक प्रसंगो को स्पर्श करते हुए इन महान पुरुष के जीवन को सभी प्रकार से अनुकरणीय बताया। सभी ने मौन श्रद्धांजलि अर्पित की व स्वर्गस्थ महान् आत्मा को चिर शांति के लिए प्रभु से मौन प्रार्थना की।

-राजमल कठालिया

चेन्नई 29 10 99 को साहूकार पेठ के जैन भवन मे श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म सा के सानिध्य मे सभा हुई। मुनि श्री ने आपका इस युग का एक महान आचार्य निरुपित किया। स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री गोठी जी ने कहा कोटि - कोटि जनता के आप श्रद्धा केन्द्र थे। कांग्रेस के मंत्री श्री आर सी बोहरा ने कहा - आप मे गजब का आत्म बल था सम्पूर्ण जैन समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। श्री केसरी चंद सेठिया ने साधुमार्गीय जैन संघ की ओर से आपके चहुमुखी जीवन पर प्रकाश डाला। संघ मंत्री श्री रिखबचंद जी लोढ़ा ने संघ की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

टी-नगर श्रमणसंघीय सलाहकार मंत्री श्री सुमन मुनि जी के सानिध्य मे सभा हुई। स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री भीखम चंद जी गादिया , रिद्धकरण जी बेताला, मंत्री उत्तम चंद जी गोठी, डॉ भद्रेस जी, युवा संघ अध्यक्ष महावीर चंद जी मूथा, हुकमीचंद जी छल्लाणी आदि ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

धोबीपेठ डॉ महासती श्री धर्मशीला जी के सानिध्य मे धोबीपेठ स्थानक मे विदुषी महासती जी ने कहा - मेरा कई बार दर्शन करने का अवसर आया था। बोरीवली बम्बई, घाटकोपर आदि चर्तुमास मे दर्शन एवं वार्तालाप का लाभ मिला था। वे एक अत्यंत सरल हृदय, संयम साधना मे प्रबल तथा जैन समाज की एक महान विभूति थे। उनकी कीर्ति सदा अमर रहेगी। डॉ हीरालाल जी शास्त्री ने कहा- वे शास्त्रो के प्रकाड पंडित तथा अन्य धर्मों के ज्ञाता थे। स्थानीय संघ के मंत्री श्री सपत राज जी तालेरा, रतन लाल जी रांका, श्री तोला राम जी मिन्नी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

आलंदूर स्थानक श्री सुरेश मुनि जी शास्त्री म सा के सानिध्य मे सभा हुई। मुनि श्री ने अपने प्रेम संबंध तथा उनके संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष मांगीलाल जी कोठारी ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा उन महापुरुषो की सत्प्रेरणा से ही मैंने खद्दर धारण की। श्री उगमराजजी मूथा, श्री किशनराज जी धाड़ीवाल ने उनके जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला।

तंडियार पेठ समता भवन आचार्य महाप्राज्ञ श्री जी की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी साध्वी श्री रतन श्री जी (लाडनूं) के सानिध्य मे श्रद्धांजलि सभा हुई। साध्वी जी ने कहा- आचार्य श्री इस युग के एक महान आचार्य ही नही संयम, साधना, अनुशासन, सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार मे अद्वितीय थे। पूज्य गणीवर श्री तुलसी जी से आपका मिलन, भेंटवार्ता बड़े प्रेम और समन्वय की भावना से ओत प्रोत था। संवत्सरी एकता पर भी महत्वपूर्ण वार्तालाप हुआ था।

श्री तोलाराम जी मिन्नी ने गुरुदेव हमारे हो, जन जन के प्यारे हो, श्रीमती पद्मा बाई रांका ने 'मेवाड़ी सावरियो नानागुरु प्यारो लागे गीत प्रस्तुत किया। उनके स्वर मे स्वर मिलाते हुए विशाल भवन आचार्य श्री नानेश के गुणगान से गुंजायमान हो उठा। सर्वश्री महावीर चंदजी मूथा सुमतिजी कांकरिया, हुकमीचंद जी छल्लानी, श्री आनंदराम जी मांडोत, उगमराजजी मूथा श्रीमती चंद्रकला जी ने अपने-अपने विचार रखते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये। नवकारमंत्र का जाप तथा गरीबों को अन्नदान भी दिया गया।

श्री मूथा भवन मे भी विदुषी साध्वी श्री अजित कंवर जी के सानिध्य म सभा हुई इसके अतिरिक्त कई गांवो मे गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ।

-मंत्री, केशरीचंद सेठिया

मोरवन डेम बालक बालिका मंडली के प्रयास से प्रात 8 बजे शोक सभा एवं श्रद्धांजलि का आयोजन किया गया जिसमे महिला, युवा एवं बाल संघ ने भाग लिया। इस संयुक्त शोक सभा का संचालन बाल सलाहकार पंकज पितलिया ने किया। ध्यान, मौन व जाप का कार्यक्रम किया गया। तत्पश्चात् संघ अध्यक्ष श्री माणकलाल जी

जैन ने आचार्य भगवन के स्वर्गवास होने पर गहरा दुख व्यक्त किया। युवा रिखब जी जैन, मनोज मोगरा, अशोक जी जैन, रोशन जी पितलिया ने भी शोक व्यक्त किया। बाल-पीढ़ी की ओर से विमल पितलिया ने कहा कि आचार्य श्री नानेश ने अपने जीवन मे पूरे समाज व देश को अनेक चितन दिये। अभय जी सहलोत ने कहा कि आचार्य श्री नानेश उस नक्षत्र के समान थे जिसपर हम सभी को नाज है।

सभी ने आचार्य श्री को भावभीनी श्रद्धाजलि दी व अत मे आचार्य श्री रामलाल जी मसा के शासन मे पूर्ण आस्था व्यक्त की गई।

-पारसमल पितलिया

सरदारशहर श्री चदनमल जी बरड़िया ने गुरुदेव के गुणगान करते हुए उनके देवलोक गमन को सघ की अपूरणीय क्षति बताया। उन्होने गुरुदेव की सरदार शहर सघ पर रही असीम कृपा के बारे मे कई उदाहरण दिये। चुरु जिला अणुव्रत समिति की तरफ से श्री सम्पतमल जी सुराणा ने आचार्य श्री को अपने भाव सुमन अर्पित करते हुए उन्हे एक महान और सरल जैन आचार्य की उपमा दी। धर्मसघ के श्रावक श्री चदनमल जी चितालिया, श्री सोहनलाल सेठिया ने गुरुदेव के गुणगान करते हुए दिवगत आत्मा को परमात्म-पद प्राप्ति की मगल कामना की। स्थानीय श्री अ भा सा जैन सघ के अध्यक्ष श्री मगलमल जी बरड़िया ने गुरुदेव के भाव भरे गुणगान करते हुए कई विशेषताओ पर प्रकाश डाला। शाखा सयोजक विमल नाहटा ने चार लोगस्स का ध्यान कराया।

-विमल कुमार नाहटा

जोधपुर आचार्य नानेश के सथारा समाचार प्राप्त होते ही जोधपुर सघ उदयपुर के लिए प्रस्थान कर गया तथा आस-पास के सघों को सूचित किया। आचार्य श्री नानेश के स्वर्गवास समाचार प्राप्त होने पर सघ मे शोक की लहर दौड़ गई। अत्र विराजित पूज्य सुशीला कवरजी आदि ठाणा-6 ने भी व्याख्यान बद रखे। दूसरे दिन अनेक स्थानो पर उनका गुणानुवाद किया गया। सघ के अध्यक्ष, मत्री ने अपने भाव रखे। समता वाहिनी के पूर्व अध्यक्ष श्री सोहन मेहता, समता बालक मडली के अध्यक्ष राकेश चौपड़ा आदि ने कहा - समता युक्त व्यसन मुक्त समाज का निर्माण कर ही आचार्य श्री नानेश को सच्ची श्रद्धाजलि दी जा सकती है।

- मनीष जैन

फरीदाबाद (हरियाणा) आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के स्वर्गगमन का समाचार मिलने पर यहाँ विराजित श्रमण सघ के डॉ सुव्रत मुनि आदि ठाणा ने चार-चार लोगस्स व नवकार मत्र के ध्यान सहित श्रद्धाजलि अर्पित की। गुरुदेव का महाप्रयाण वस्तुत स्थानकवासी समाज की अपूरणीय क्षति है। यहाँ के एस एच जैन सभा के महासचिव श्री ए एस पटवा ने कहा कि वस्तुत वे दिव्य महापुरुष थे। जिन्होंने व्यसन मुक्त समाज का नारा दिया था। गुरुदेव के प्रति अटूट श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री केसरीचद जी धाड़ीवाल भी सभा मे उपस्थित थे।

-हनुमानमल आचलिया

दुर्ग (मध्यप्रदेश)

दिनाक 28 अक्टूबर को सम्पूर्ण बाजार बद रहा। अत्र चातुर्मासार्थ विराजित ज्ञान गच्छाधिपति तपस्वी राज श्री चपालाल जी म सा के सुशिष्य तरुण तपस्वी श्री धन्ना मुनि जी म सा आदि ठाणा 3 ने प्रार्थना व व्याख्यान बद रख स्वर्गस्थ आत्मा की शाति के लिए नवकार महामत्र का जाप कराया। मुनि श्री ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए आचार्य श्री के स्वर्गवास स जैन जगत की भारी क्षति बताया।

दिनाँक 28 अक्टूबर को दोपहर मे भारी सख्या मे श्रावक श्राविकाएँ राजनादगाँव मे चातुर्मासार्थ विराजित आचार्य श्री नानेश के सुशिष्य श्री धर्मेश मुनिजी म सा आदि ठाणा 3 व महासती जी सुप्रतिमा श्री जी म सा आदि ठाणा 3 के दर्शनार्थ व सवेदना प्रगट करने राजनाँदगाँव गये। सत एव सती वर्ग ने अत्यत अधीर होकर कहा इस शताब्दी के महान आचार्य के गौरवशाली इतिहास का एक सूर्य अस्त हो गया।

दिनाँक 28 के रात्रि 6 30 बजे जैन स्थानक भवन मे सघ अध्यक्ष श्री प्रवीण जी श्री श्रीमाल की अध्यक्षता मे श्रद्धाजलि सभा आयोजित की गई। जिसमे भारी सख्या मे

श्रावक एव श्राविकाओ ने भाग लिया। सघ अध्यक्ष श्री प्रवीण जी श्री श्रीमाल, श्री जैन श्वेताम्बर सघ क मत्री श्री पृथ्वीराज जी पारख, उपाध्यक्ष श्री मिश्रीलाल लोढ़ा, सघ के वरिष्ठ सदस्य श्री सिरमेलजी देशलहरा, हेमराज जी सोनी ईश्वरचद जी सचेती, जसगजजी पारख राजेन्द्र जी मरोठी, कचरमलजी बाफणा, सदीप जैन (मित्र), किशोर जी सराफ श्रीमती राखी देवी श्री श्रीमाल, कुमारी माया लूणावत ने स्वर्गस्थ आत्मा के जीवन पर प्रकाश डाला व अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

अत मे स्वर्गस्थ आत्मा की शाति क लिए चार लोगस्स का ध्यान कर सामूहिक श्रद्धाजलि अर्पित कर शोक प्रस्ताव पारित किया। जैन श्वेताम्बर सघ के अध्यक्ष श्री शकरलाल जी बाथरा ने मगलपाठ सुनाया।

-रानीदान बोथरा

राजनादगाँव चातुर्मास मे विराजित शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनि जी म सा , कविरत्न श्री गौतम मुनि जी म सा एव सेवाभावी श्री प्रशम मुनि जी म सा तथा व्याख्यान सुनने प्रतिदिन आने वाले धर्मप्रेमियो म गहन स्तब्धता छाई थी। 29 अक्टूबर को प्रात स्थानक भवन मे समता बालिका मडल की बालिकाओ द्वारा प्रस्तुत श्रद्धाजलि गीत 'तेरे बिना जग सूना नाना रे, तेरे बिना जग सूना के साथ श्रद्धाजलि का कार्यक्रम प्रारभ हुआ।

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सघ राजनादगाँव के श्री तिलोकचद जी बैद ने हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि हमे नानालाल जी म सा का आशीर्वाद सदैव मिलते रहेगा और हम उनसे प्ररणा ग्रहण करते रहेंगे।

तेरापथी महासभा की आर से सवेरा मकेत के सम्पादक वरिष्ठ पत्रकार शरद कोठारी जी ने आचार्य नानालाल जी म सा को एक ऐसा सत और धर्मोपदेशक बताया, जिन्होने सम्प्रदाय के दायरे से बाहर जाकर पूरे देश की चेतना व नैतिकता को प्रेरित किया।

चातुर्मास मे विराजित श्री धर्मेश मुनि जी म सा ने आचार्य प्रवर नानालाल जी म सा क सानिध्य मे बिताये पावन क्षणो का स्मरण करते हुए सजल नयन रुद्ध कठ से कहा कि उनके दर्शन की अतिम लालसा पूरी न होने पाने की वेदना उन्हे सता रही है, आचार्य श्री क दुःखद अवसान को व्यक्त करना कठिन है। अन्य सत एव सती वृन्द ने भी अपने भाव रखे।

श्रद्धाजलि अर्पित करने वालो मे रायपुर श्रावक सघ क सजय बैद ज्ञानचद जी टाटिया, दिगम्बर जैन पचायत के सुधीर जैन शशिकात अवस्थी श्रीमती चदनबाला लूनिया, गुजराती समाज की श्रीमती वीणा समता मच अध्यक्ष बालचद पारख, सचिव सतीश साखला एव अन्य सदस्यगण, रानीदान जी भसाली, जैन महिला मडल रायपुर की चचलदवी जी, लतिका बैन, राजेन्द्र गोलछा, जैन महिला मडल की श्रीमती सुदर बाइ, पीरचद जी काकरिया डॉ चद्रकुमार जैन, श्री सौभाग्यमल जी श्री खूबचदजी पारख मुगेली आदि प्रमुख रूप से थे।

अत मे 4 लोगस्स का ध्यान करके स्व आचार्य भगवन को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। 27 घटे तक नवकार मत्र का अखड जाप हुआ।

सभी सत एव सतियाँ जी म सा के तेला की तपश्चर्या थी एव अनेक धर्मप्रेमी बधुओ के भी विभिन्न त्याग तप आदि थे।

-राजेश गोलछा

नागौर स्वर्गस्थ होने के समाचार ज्ञात होने पर श्रद्धेय उपाध्याय प रत्न श्री मानचद जी म सा आदि सत-मुनिराजा एव महासती मण्डलो ने कायोत्सर्ग रूप चार चार लोगस्स का ध्यान किया। श्रावक श्राविकाओ ने समाचार सुनने के साथ लागस्स का ध्यान कर श्रद्धाजलि अर्पित की। दिनाँक 28 अक्टूबर को नागौर सवाइ माधोपुर पिपाड़ शहर, जयपुर, अजमेर रायचूर दही और हिण्डौन सभी चातुर्मास स्थलो पर प्रार्थना प्रवचन का प्रोग्राम स्थगित रखा गया और 29 अक्टूबर को गुणानुवाद सभाओ के माध्यम से आचार्य श्री नानेश के व्यक्तित्व कृतित्व पर विशद प्रकाश डाला।

आचार्य श्री नानेश क सथारा अगीकार करन क उक्त समाचार परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य जी श्री हीराचद्र

जी म सा की सेवा मे प्राप्त होते ही आचार्यप्रवर ने युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा , स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म सा की सेवा मे समाचार भिजवाये कि सथारा लीन समता विभूति आचार्य प्रवर पूज्य श्री नानालाल जी महाराज की ममाधि मे उत्तरोत्तर आतमरमण बढ़ता रहे, इसका अधिक-से अधिक लाभ लिया जाना चाहिये।

दिनाक 29 अक्टूबर को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचद्र जी म सा के सानिध्य मे नागौर मे, परम श्रद्धेय उपाध्याय प रत्न श्री मानचद्र जी म सा के सानिध्य म सवाईमाधोपुर मे तथा महासती मडलो के सानिध्य मे गुणानुवाद सभाओ के आयोजन किये गये।

नागौर मे गुणानुवाद सभा का शुभारम्भ तत्व चितक श्री प्रमोद मुनि जी म सा ने किया। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दो को उद्धृत करते हुए मुनि श्री ने कहा -

जो इन्द्रियो को जीतकर, धर्माचरण मे लीन है।
उनके मरण का शोक क्या, वो मुक्त बधनहीन हैं ॥

स्थानीय सघ मत्री श्री सुरेश जी ललवानी ने समता विभूति आचार्य श्री नानेश के प्रति गद्य- पद्य भावो मे अपनी ओर से एव नागौर श्री सघ की ओर से श्रद्धा समर्पित की। सुश्रावक श्री कवरलाल जी कोठारी और सुश्रावक सागरमल जी पीचा ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचद्र जी म सा ने समता विभूति धर्मपाल-प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालाल जी महाराज के व्यक्तित्व पर विशद प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य श्री नानेश आचारवान महापुरुष थे।

आचार्य श्री जी ने सुदीर्घ काल तक सयम-साधना की शासन व्यवस्था का दायित्व सभाला और जब शरीर साथ देने की स्थिति मे नही रहा तब सथारा करके उस महापुरुष ने पडित मरण का वरण किया। ऐसे महापुरुषो का ही स्मरण किया जाता है।

आचार्य प्रवर की प्रेरणा से कई श्रावक-श्राविकाओ ने आज के दिन रात्रि भोजन नही करने , ब्रह्मचर्य का पालन करने और कच्चे पानी का सेवन नही करने के सकल्प लेकर आचार्य श्री को श्रद्धाजलि अर्पित की।

नागौर की भाति सवाईमाधोपुर, जोधपुर, पीपाड़ सिटी, जयपुर, अजमेर, रायचूर, देई और हिण्डौन मे गुणानुवाद सभाओ के माध्यम से समता विभूति आचार्य श्री नानेश को श्रद्धा समर्पित की गई।

-गौतमचद औस्तवाल, सम्पादक मोक्षद्वार

भीण्डर 30 अक्टूबर को समता भवन मे सघ अध्यक्ष श्री मदनलालजी नदावत की अध्यक्षता मे आयोजित गुणानुवाद सभा मे श्री अनिल नागोरी श्यामलालजी बया अकिता बया सपना नागोरी, मोनिका, प्रियका सामोता, मिठूलाल जी नागोरी, चद्रप्रकाश जी मेहता महिला मडल रूपलालजी नदावत नक्षत्रलाल जी नागोरी, हीरालालजी नदावत , श्री शकरलालजी चव्हान ने गद्य पद्य के माध्यम से अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए गुरुदेव को राष्ट्र सत प्रेरणादायी एव मार्गदर्शक बताकर उनके योगदानो पर प्रकाश डाला। सभा का सचालन मत्री श्री श्यामलाल जी बया ने किया।

बम्बोरा हृदय विदारक समाचार सुनकर शोकाकुल साहित्यकार श्री दिलीप जी धीग ने इसे एक युग की समाप्ति बताया। पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेश जी धीग ने आचार्य श्री को यशस्वी युग पुरुष और महानप्रभावक आचार्य बताया। बबोरा सघ मे व्यवसाय बद रहा ।

-श्री नानेश जैन समता युवा सघ

मुकेरिया समता विभूति चारित्रचूड़ामणि आचार्य श्री नाना लाल जी म सा के समाधि पूर्वक महाप्रयाण के ममाचार श्रवण कर उपाध्याय श्री मुनि जी म सा के सानिध्य मे एक स्मृति सभा का आयोजन किया गया। जिसमे आचार्य श्री के विशेष गुणो पर प्रकाश डाला गया। प्रधान जी कोमल कुमार जी ने गुणानुवाद कर श्रद्धा सुमन समर्पित किय। अत मे 4 लोगस्स का कायोत्सर्ग कर मागलिक श्रवण कर सभा विसर्जित की गई।

-कीमतीलाल जैन

महामत्री, एस एस जैन सभा मुकेरिया (पजाब)

सीतामऊ समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन के समाचार से स्थानीय जैन समाज

सुश्रावक गुमानमल जी धाबक, चेतन साखला, श्री नसीबचद जी जैन ने अपने- अपने विचार प्रकट किये अत मे प्रत्येक जन ने एक-एक नियम के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया।

-चेतन साखला

तेजपुर (आसाम) परम पूज्य समता विभूति 1008 आ श्री नानालाल जी म सा के सथारे के साथ देवलोक गमन के समाचार प्राप्त होने से शोकाकुल जैन समाज द्वारा स्मृति सभा का आयोजन किया गया। विविध वक्ताओ ने आचार्य श्री नानेश के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए तेजपुर जैन समाज ने मगलकामना की कि आचार्य प्रवर की आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास करती हुई मोक्ष को प्राप्त करे।

आचार्य श्री रामलाल जी म सा के प्रति पूरे समाज की मगलकामना है कि आप स्वस्थ रहते हुए जैन शासन की सेवा करे एव आचार्य प्रवर के बतलाये मार्ग पर जनता को प्रतिबोधित करते हुए जिनशासन एव मानवता की सेवा करे।

-जैन युवक मडल

मनावर श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन पर जवाहर मार्ग स्थित महावीर भवन मे एक सभा आयोजन की गई। सभी महानुभावो मे सर्व श्री सौभाग्यमल जी बोरा, महेश जी बोरा, पारस रावका, राहुल खटोड, न पा अध्यक्ष श्री रमेशचद्र खटोड, ललित खटोड, पारस कासलीवाल, बालिका मडल एव महिला मडल की ओर से सुश्री बरखा धारा ने तथा चातुर्मास समिति अध्यक्ष सुशील खटोड़ ने श्रद्धासुमन अर्पित किये। अत मे पूज्य श्री सुशीलाश्री जी म सा , श्री कमल श्री जी म सा , श्री सिद्धमणिजी म सा , श्री अर्पिता श्री जी म सा आदि ने आचार्य श्री को अपनी ओर से श्रद्धाजलि दी तथा श्री सघ सरक्षक श्री मानकचद सालेचा ने चार लोगस्स का ध्यान करवाया। अत मे पूज्य म सा ने सभी को मगल पाठ सुनाया।

-सुशील खटोड़

नागपुर (पश्चिम) प नागपुर जैन समाज द्वारा काग्रेस नगर स्थित श्री घेवरचद जी झामड़ के निवास 'तपस्या म लब्धि विक्रम कृपा प्राप्त आचार्य श्रीमद् राजयशसूरीश्वर जी म सा के सानिध्य मे गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। आचार्य श्री ने आचार्य श्री नानालाल जी म सा को इस सदी का महान आचार्य निरूपित करते हुए कहा - वे सप्रदाय म रहते हुए भी सप्रदायवाद से अलग थे। इस प्रसग पर प नागपुर जैन समाज के अध्यक्ष श्री शातिलाल जी दोशी, तपागच्छ सघ के भोगी भाई दोशी, खेमचदजी चौरड़िया ने भी भाव व्यक्त किये।

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन ट्रस्ट सदर नागपुर द्वारा पडित रत्न पूज्य नवरत्न मुनि जी म सा के सानिध्य मे गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पूज्य म सा एव कई गणमान्य व्यक्तियो ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। सदर स्थानक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नवल चद जी पुगलिया, श्री वर्धमान स्थानक जैन श्रावक सघ के उपाध्यक्ष श्री शातिलाल जी मदानी, महामत्री श्री रमेश भाई शाह, पश्चिम नागपुर की ओर से श्री घेवर चद जी झामड़, ओसवाल पचायत के अध्यक्ष श्री पुखराज जी लूणावत, सदर सघ से डॉ सुनील पारख, राजेन्द्र प्रसाद बैद , सुभाष जी कोटेचा, प्रकाशजी चोरड़िया, राजीव चोपड़ा आदि ने भाव व्यक्त किये।

-राजेन्द्र प्रसाद बैद

चित्तौड़गढ़ मेवाड़ सिंहनी भारत कोकिला श्रमण सघीय महासतियाँ जी श्री यश कुवर जी के सानिध्य मे प्रवचन के समय श्रद्धाजलि सभा आयोजित हुई। महासतिया श्री यश कुवर जी म सा , मधुर व्याख्यानी श्री मैना कवर जी म सा ने पूज्य आचार्य श्री के जीवन पर व उनके अपार गुणो पर विस्तृत प्रकाश डाला। श्रद्धाजलि सभा मे श्री माधवलाल जी तरावत सागरमल चडालिया, चुन्नीलाल जी भड़कतिया, मोहनलाल जी पाखरना, हस्तीमल जी पोखरना, हस्तीमल जी चडालिया, श्री नारायण जी श्रीमाल हस्तीमल जी सुराना सोहनलाल जी पाखरना व श्रीमती लक्ष्मी बाई पोखरना ने आचार्य श्री के गुणो पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये। शाम को श्री

साधुमार्गी जैन श्रावक सघ की बैठक मे पूज्य आचार्य श्री की स्मृति मे शुभ कार्यों हेतु करीब 10000 रुपया सदस्यो द्वारा प्रदान किये जो गौशाला, कबूतर खाना, औषधालय, गरीबों को भोजन, फल, दवाइयो आदि मे खर्च किये गये।

आचार्य श्री की मौजूदगी मे ही युवाचार्य श्री द्वारा इस वर्ष को जप तप नियम के रूप मे घोषित किया गया था उसके लिए सपूर्ण समाज को अधिक से अधिक इस ओर *प्रवृत्ति करने की अपील की गई जो अनेक परिवारो मे प्रारभ* होकर एव सुचारु रूप से चल रही है।

-सागरमल चडालिया

खेतिया सकल जैन श्री सघ खेतिया द्वारा आचार्य श्री नानालाल जी म सा के देवलोक गमन होने पर स्थानक भवन मे लोगस्स के कायोत्सर्ग से श्रद्धाजलि दी गई। साथ ही उनकी आत्मा की शाति हेतु नवकार मत्र एव ॐ शाति का जाप करवाया गया। इस सभा मे अनेक वक्ताओ न अपने भाव रखे एव कहा कि आचार्य श्री जी का निधन *सम्पूर्ण समाज पर वज्राघात है।*

खेतिया सघ शत-शत वदन करता है। अखिल भारतीय साधु समता जैन बालक -बालिका मडल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोज बोहरा ने भी आचार्य श्री जी के जीवन आदर्शों एव कुशल नेतृत्व का गुणगान किया।

-मनोज कुमार एम बोहरा

गुवाहाटी रात्रि को लगभग 3 बजे आचार्य प्रवर के देहावासान का समाचार सुनते ही ऐसा लगा मानों समग्र साधुमार्गी समाज पर एक वज्रपात हुआ हो। सभी भाई-बहिन स्तब्ध थे। शायद नियति को यही मजूर था। सभी दुकाने व व्यापारिक प्रतिष्ठान सुबह से ही बद थे। अन्य धर्मावलम्बियो के भी काफी प्रतिष्ठान बद थे, दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक नमोकार मत्र का सामूहिक जाप श्री महावीर भवन मे रखा गया जिसमे 250 भाई-बहिनो ने भाग लिया।

रविवार दिनाँक 31 10 99 को प्रात से स्वर्गीय आचार्य भगवन की स्मृति मे श्री महावीर भवन के आदिनाथ प्रागण मे श्रद्धाजलि सभा का आयोजन रखा गया इसमे तेरापथ समाज की तरफ से गुवाहाटी मे विराजित साध्वीवर्या श्री कचन प्रभा जी अपनी साध्वी मडल के साथ पधारीं। अन्य सभी समाज के धार्मिक व सामाजिक भाइयो ने स्मृति सभा मे भाग लिया। सभी समाज के प्रतिनिधियो ने आचार्य प्रवर नानेश को अपने-अपने भावो से श्रद्धासुमन अपण किये।

-राजेन्द्र दस्सानी

ब्यावर स्व आचार्यदेव की स्मृति मे आयोजित गुणानुवाद सभा मे श्री सुयशा श्री जी म सा, महासती श्री स्वर्ण ज्योति जी म सा, श्री सरोजबाला जी म सा, श्री समता श्री जी म सा ने अपनी वियोग वेदना को शब्दाकित करने का प्रयास करते हुए आराध्य देव के शीघ्रातिशीघ्र शाश्वत सुख प्राप्ति की भावना व्यक्त की।

सेवाभावी श्री अनत मुनि जी म सा ने सस्मरणो के आईने मे झाकते हुए महासती श्री विद्यावती जी म सा के आज्ञा पत्र प्रसग से जागृत श्रद्धा एव वर्तमान आचार्य श्री के वचनो के प्रभाव से जागृत दीक्षा भावना का जिक्र किया। प्रज्ञा सपन्न श्री क्राति मुनि जी म सा ने वर्तमान घटनाक्रम को अकल्पनीय घटना निरूपित किया। तदनन्तर श्री भवरीलाल जी ओस्तवाल, मानमल जी बाबेल, धनराज जी कोठारी, लक्ष्मीचद जी राका, कालूराम जी नाहर, श्री दौलत जी बूरड, श्री गौतम जी चौधरी, श्री अमरचद जी सचेती, वनीता श्रीश्रीमाल, श्री उत्तम श्रीश्रीमाल आदि ने भी भाव व्यक्त किये।

-उत्तमचन्द श्री श्रीमाल

बालाघाट समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा के देवलोक गमन का समाचार सुनकर बालाघाट नगर मे शोक की लहर व्याप्त हो गई। जैन समाज के सभी प्रतिष्ठान पूर्णत बद रखे गए एव सुबह 9 बजे से रात्रि 8 बजे तक लगातार *ग्यारह घंटे का अखड नवकार मत्र का* जाप जैन स्थानक भवन मे सपन्न हुआ जिसमे भारी सख्या मे लोगो ने भाग लिया। रात्रि 8 बजे श्री वर्धमान स्थानकवासी *जैन श्रावक सघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सूरजमल जी बाघरेचा* की अध्यक्षता मे शोक सभा आयोजित की गई जिसमे विभिन्न वक्ताओ ने अपने विचार रखते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की।

सर्वप्रथम मूलचद चोरड़िया (छातरा वालो), महिला सघ की अध्यक्ष स्वाध्यायी श्रीमती काता चतुर मोहता सघ के पूर्व सचिव स्वाध्यायी श्री ताराचदजी लोढ़ा, श्रीमती तारादेवी काकरिया, डॉ शिखरचद बाघरचा कु कौशल्या धाड़ीवाल, नितिन घोका, कातिलाल बाघरेचा सजय कटारिया, सुभाष लोढा, सघ के मत्री भैरोदान पगारिया ने भाव व्यक्त कर श्रद्धाजलि अर्पित की।

अत मे 3 नवकार मत्र के ध्यान के साथ सभा विसजित हुई। इस अवसर पर गुरुभक्त गेदमल जितेद्रकुमार वैद्य ने समर्पण सस्था द्वारा सचालित भोजन योजना हेतु कायम मिति देने की घोषणा की एव दूसरे दिन सुबह जिला चिकित्सालय मे मरीजो को दूध बिस्किट एव भोजन वितरित किया। अनेक महानुभावो ने एकासने के तेल करने का निश्चय किया। सभा सचालन सुभाष लोढ़ा ने किया।

-सुभाष लोढ़ा

अजमेर जैन धर्म दिवाकर, चारित्र चूड़ामणि, धर्मपाल बाधक, जैन सस्कृति के रक्षक, सघ शिरोमणि, परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म सा के दिनाक २७ १० के महानिर्वाण पर अत्यन्त चिता व दु ख व्यक्त करते हुए चतुर्विध सघ ने श्रद्धेय आचार्य श्री के साथ हार्दिक सवेदना व्यक्त की है।

स्व आचार्य श्री ने अपने जीवनकाल मे सस्कृति की रक्षा एव मर्यादाओ का पूर्ण पालन करते हुए जिनशासन व सम्प्रदाय की जो अभूतपूर्व सेवा एव चतुर्विध सघ को धर्मप्रकाश से दैदीप्यमान किया है, उसे कभी नही भुलाया जा सकेगा। अपने जीवनकाल मे करीब ३५० से ज्यादा मुमुक्षु आत्माओ की दीक्षा, अपने आप मे एक अद्भुत योगदान किया है। कई अजैनो को धर्मबोध देकर हजारों धर्मपाल बनाये, अपने सम्पूर्ण जीवन को ही जिन्होंने शासन उद्योत मे लगाया, ऐसा महापुरुष इस युग में आप जैसा ज्ञानी का शायद ही कोई अन्य होगा।

ऐसे महान् उपकारी गुरुदेव के स्वर्गवास पर अजमेर का यह चतुर्विध सघ भारी चिन्तित है। आपके निर्वाण के समाचार आते ही व्याख्यान स्थगित रखा गया, बाजार बद रहा एव दिनाक २९ १० को प्रवचन सभा मे प्रवचन बद रखकर हार्दिक श्रद्धाजलि समर्पित करते हुए गुरु गुणगान किये गये।

-जीतमल चौपड़ा

मानद मत्री, श्री वर्धमान स्था जैन श्रावक सघ

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्

जैन जगत की महत् विभूति समता दर्शन प्रणता, धर्मपाल प्रतिबोधक, जिनशासन प्रद्योतक

स्व. आचार्य भगवन् पूज्य श्री १००८ श्री नानालालजी म सा

के श्री चरणों मे कोटिश वन्दन एव वर्तमान आचार्य प्रवर, शास्त्रज्ञ, प्रशातमना

पूज्य श्री १००८ श्री रामलालजी म.सा.

के श्री चरणो मे कोटिश वन्दन

घेवरचन्द केशरीचन्द गोलछा

नोखा	बंगाईगांव
दिल्ली	गुवाहाटी

विनयावनत

श्री केशरीचन्द -आशादेवी गोलछा

श्री निर्मलकुमार - सरोज देवी गोलछा

श्री पदमचन्द - सरोज

श्री राजेन्द्रकुमार-सरिता

श्री -

जैन जगत की महान् विभूति समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक, जिनशासन प्रद्योतक

स्व आचार्य भगवन् पूज्य श्री १००८ श्री नानालालजी म सा

के श्री चरणों मे कोटिश वन्दन एव वर्तमान आचार्य प्रवर, शास्त्रज्ञ, प्रशातमना

पूज्य श्री १००८ श्री रामलालजी म.सा.

के श्री चरणो मे कोटिश वन्दन

घेवरचन्द केशरीचन्द गोलछा

नोखा	बगाईगांव
दिल्ली	गुवाहाटी

- विनयावनत

श्री केशरीचन्द -आशादेवी गोलछा

श्री निर्मलकुमार - सरोज देवी गोलछा

श्री पदमचन्द - सरोज देवी गोलछा

श्री राजेन्द्रकुमार-सरिता देवी गोलछा

श्री रमेशकुमार - रचना देवी गोलछा

श्रेयास - महावीर गोलछा

जय गुरु नाना	जय महावीर	जय गुरु राम

अतिम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पाट को

सुशोभित करने वाले, विश्व शाति के मसीहा

आचार्यप्रवर श्री नानालालजी म.सा.

को हार्दिक श्रद्धाजलि और कोटि-कोटि वदन

सोहनलाल-जेठीदेवी सिपानी

❂ सुदरलाल शातिदेवी सिपानी ❂ मनोजकुमार सोनाली सिपानी ❂ सुनील सिपानी
❂ राजकुमार-कंचनदेवी सिपानी ❂ संजयकुमार अंजु सिपानी ❂ पुनीत सिपानी
❂ कमलचद-विमलादेवी सिपानी ❂ अनिलकुमार प्रिती सिपानी
❂ विमलचंद कुमुददेवी सिपानी ❂ धीरजकुमार-सीमा सिपानी

एवं समस्त परिवार (उदयरामसर)

सोहनलाल कमलचंद सिपानी

अभिनंदन, 862, ७वां क्रॉस, ३रा ब्लॉक, कोरमंगला, बैंगलोर 560034

दूरभाष 5537516 5537517

Abhinandan Pertopack Private Ltd

Mariswamappa Layout Dorasani Palya Opp Indian Institute of Mangagement Bannerghatta Road Bangalore 560076

SIPANI ENTERPRISES SIPANI FIBRES LTD

KLENE PAKS LTD

SIPANI GROUP OF INDUSTRIES

रे मन नाना नाम जप भगवद् रूप पहचान ।
राम नाम मे राम को सदा विराजित जान ॥

"समता"

प्राणी को प्राणी समझना उसकी आत्मा को अपनी आत्मा समझना
उस पर मैत्री भाव रखना और दीन दुखिया पर अनुकम्पा करना समता है। आचार्य श्री नानेश

समता विभूति जिन शासन प्रद्योतक धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य प्रवर श्री 1008 श्री नानालाल जी म सा
के श्रमणोपासक द्वारा श्रद्धाजलि स्मारिका प्रकाशन के अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव
को हम सभी सघ एव भाइयो व बहनो की तरफ से शत् शत् वदन नमन

श्री शातिलाल, अशोक, विजय, महेन्द्र मुकीम — शैलेन्द्र नगर, रायपुर (म प्र)
श्री अशोक, सुभाष, वर्धमान, प्रसन्न, सुशील सुराना एव सुराना परिवार — रायपुर (म प्र)
श्री हुक्मीचन्द, विजय, अजय, विनीत, विवेक, अक्षय, सुयश बोथरा — कवर्धा, रायपुर (म प्र)
श्री निर्मलचन्द, इन्द्रादेवी, मनीषा धाड़ीवाल — रायपुर (म प्र.)
श्री उत्तमचन्द किरणदेवी देशलहरा — रायपुर (म प्र.)
श्री ताराचन्द जी बरड़िया — रायपुर (म प्र)
नानेश नगर, नेचरल स्टेट — रायपुर (म प्र)
श्री तुलसीराम, गुलाबचन्द, मोहनलाल, रेखचन्द, पुरनलाल, राजेश, शान्तिलाल बाफना — रायपुर (म प्र.)
श्री ज्ञानचन्द जी मदनचन्द जी गोलछा — हलवाई लेन, रायपुर (म प्र)
श्री केवलचन्द जी विजयकुमार जी मूथा — रायपुर (म प्र.)

"समता"

समता से स्वय का हित है। समता से परिवार का हित है।
समता से समाज का हित है। समता से नगर का हित है।
समता से राष्ट्र का हित है। समता से विश्व का हित है।
समता से शान्ति है। समता से धर्म हे। समता से मोक्ष है।

– आचार्य श्री नानेश

- ▲ श्री शातिलालजी सजयकुमार धाड़ीवाल — रायपुर (म प्र)
- ▲ श्री विशनचन्दजी विजयकुमार आछा — रायपुर (म प्र)
- ▲ श्री मनोहरचन्द राजकुमार विजय ललित, सजय, मनोज चोपडा — रायपुर (म प्र)
- ▲ श्रीमती मग्गादेवी कमलचन्द सुरेन्द्र अशोक सिपानी — रायपुर (म प्र)
- ▲ आयुषी फायनेस — रायपुर (म प्र)
- ▲ श्रीमती जवेरबेन दामजी भाई सगोई परिवार — रायपुर (म प्र)
- ▲ श्रीमती शोभनाबेन रमणीकलाल घोलकिया — रायपुर (म प्र)
- ▲ श्री रतनचन्द राजेश कुमार साखला — धमतरी (म प्र)
- ▲ श्री देवराज गभीरमल साखला — नयापारा राजिम (म प्र)
- ▲ श्री साधुमार्गी जैन समता युवा सघ — रायपुर (म प्र)

अष्टम सूर्य अस्त हुआ, हम हुए बेसहारा, नवम् भानु उदित होकर, दिया हमें सहारा।
नाना गुरु का दिवाना था ये जग सारा, अब राम गुरु चरणों में, न्यौछावर सर्वस्व हमारा॥

स्वर्गीय आचार्य भगवन को शत्-शत् नमन एवम् भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

श्री मानकलाल जी अनिलकुमार जी देशलहरा	दुर्ग (म प्र)
श्री पृथ्वीराज जी प्रवीणकुमार जी पारख	दुर्ग (म प्र)
श्री ताराचन्द जी प्रेमचन्द जी काकरिया	दुर्ग (म प्र)
श्री भीखमचन्द जी अशोककुमार जी पारख	दुर्ग (म प्र)
श्री दिनेशकुमार जी दीपककुमार जी देशलहरा	दुर्ग (म प्र)
श्री चन्दनमल जी गौतमचन्द जी बोथरा	दुर्ग (म प्र)
श्री हुकमचन्द जी ज्ञानचन्द जी पारख	दुर्ग (म प्र)
श्री भंवरलाल जी सुन्दरलाल जी बोथरा	दुर्ग (म प्र)
श्री सिरेमल जी निर्मलचन्द जी देशलहरा	दुर्ग (म प्र)
श्री सजयकुमार जी सदीपकुमार जी देशलहरा	दुर्ग (म प्र)

अष्टम सूर्य अस्त हुआ, हम हुए बेसहारा, नवम् भानु उदित होकर, दिया हमे सहारा।
नाना गुरु का दिवाना था ये जग सारा अब राम गुरु चरणो मे, न्यौछावर सर्वस्व हमारा॥

स्वर्गीय आचार्य भगवन को शत्-शत् नमन एवम् भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

श्री प्रेमचन्द जी विजयकुमार जी पारख	दुर्ग (म प्र)
श्री सिरेमल जी पारसमल जी देशलहरा	दुर्ग (म प्र)
श्री पारसमल जी सहसमल जी सांखला	दुर्ग (म प्र)
श्री गौतमचन्द जी प्रभातकुमार जी सांखला	दुर्ग (म प्र)
श्री ज्ञानचन्द जी पूनमचन्द जी लुणावत	दुर्ग (म प्र)
श्री हरीशकुमार जी गौतमचंद जी श्रीश्रीमाल	दुर्ग (म प्र)
श्री दीपककुमार जी अरविन्दकुमार जी सुराना	दुर्ग (म प्र)
श्री जवरचन्द जी खेमचन्द सुभाषचन्द छाजेड	दुर्ग (म प्र)
श्री राणीदान जी हीरालाल जी बोथरा	दुर्ग (म प्र)
जैन मेडिकल स्टोर्स (प्रो श्री हंसराज जी चोरडिया)	दुर्ग (म प्र)

समता श्री सघ, दुर्ग (छत्तीसगढ)

सौजन्य गौतमचन्द बोथरा, दुर्ग

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धाजलि

मै ए सी बी सेठिया वॉच कम्पनी	बीकानेर
श्री इन्दरचन्द जी दूगड	बीकानेर
श्री सुरेन्द्रकुमार कुसुम सेठिया	बीकानेर
श्री सम्पतलाल शान्तिलाल बाठिया	बीकानेर
श्री भवरलाल नथमल जी तातेड	बीकानेर
श्री नवलचन्द जी भूरा	बीकानेर
श्री रामचन्द्र विमलचन्द जी श्रीश्रीमाल	बीकानेर
श्री जयचन्दलाल प्रदीपकुमार जी साड	बीकानेर
मै जैन फर्नीचर्स	बीकानेर
श्री केशरीचन्द महेन्द्रकुमार जी सेठिया	बीकानेर

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धांजलि

श्री मोतीलाल जी मालू	बीकानेर
श्री गुप्तदानी महानुभाव	बीकानेर
श्री विजयचन्द कमलचन्द जी पारख	बीकानेर
श्री हजारीमल भीखमचन्द जी पारख	बीकानेर
श्री आसकरण ललितकुमार जी बुच्चा	बीकानेर
श्री सुन्दरलाल जी बाठिया	बीकानेर
श्री भवरलाल जी बडेर	बीकानेर
श्री प्रदीपकुमार सुरेशकुमार जी डागा	बीकानेर
श्री सुशीलकुमार जी बच्छावत	बीकानेर
श्री चम्पालाल विजयचन्द जी पारख	बीकानेर
श्री सम्पतलाल मोतीलाल जी बाठिया	बीकानेर

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

सूक्ष्म निरीक्षण दूरदर्शिता का द्योतक है। वह इन्सान को आपत्तियों से बचा लेता है।

-आचार्य श्री नानेश

माणकलाल जी सांखला एण्ड फैमिली

रतनलाल जी   कवरलाल जी

शांतिलाल जी   मदनलाल जी

नवयुग सागर तीन बत्ती

वालकेश्वर मुम्बई (महाराष्ट्र)

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

समता मित्र मण्डल, देवरिया

कुन्दनमल		नवलखा
भवरलाल	मागीलाल	बोरदिया
केसरीमल	फतहलाल	सूर्या
अनिल	रखबलाल	सूर्या
लादुलाल	ख्यालीलाल	सूर्या
सुनिल	लक्ष्मीलाल	सूर्या
गणपतलाल	मागीलाल	सूर्या
मनोहर	महावीर	सूर्या
सागरमल	लालचद	कोठारी
दिनेश	पूनमचन्द	कोठारी

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

अभिमान की अवस्था जब अत्यन्त दृढीभूत बनती है,
तब उसे लचीला बनाने में कोई विरल व्यक्ति ही कामयाब हो सकता है।

-आचार्य श्री नानेश

SHRI PANNALAL CHORDIA

50-4 B, No 2
SUMER TOWER 108, SHETH MOTISHA LANE
BYCULLA, MUMBAI-4000010
Ph 2063128 (O), 3776330 (R)

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

वचन एक दर्पण है। चतुर पुरुष वचनो के अन्दर इन्सान का आन्तरिक प्रतिबिम्ब देख सकते है।

-आचार्य श्री नानेश

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

धृति सहित कृति कला का रूप ले लेती है,

जबकि धृति रहित कृति निर्जीव परिश्रम मात्र है।

-आचार्य श्री नानेश

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धाजलि

फल को देखने वाला आगे नही बढ सकता,
कर्त्तव्य को देखने वाला ही आगे बढ सकता है ।

-आचार्य श्री नानेश

श्री गणेशमल ढढ्ढा मेमोरियल ट्रस्ट

जयपुर (राजस्थान)

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धाजलि

मन-मन्दिर मे रोज झाड़ू लगाने की आदत बनायी जानी चाहिये,
जिससे ममता की गंदगी हटती जाए और समता की निर्मलता आती जाए।

-आचार्य श्री नानेश

श्री मूलचन्दजी मोहनलालजी पारख — *नोखा*

श्री झूमरमलजी बेताला — *नोखा*

श्री घेवरचदजी धनराजजी गोलछा — *नोखा*

श्री रानीरामजी फूसराजजी बैद — *नोखा*

श्री बच्छराजजी बालचदजी काकरिया — *नोखा*

श्री मोतीलालजी बस्तीमलजी काकरिया — *नोखा*

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धांजलि

<u>सूरत (गुजरात)</u>

श्री रिखबराज चौपड़ा
श्री मगेशकुमार श्यामसुखा
श्री रेखचन्द सुराणा
श्री शांतिलाल डागा
श्री सुगनचन्द बरलोटा
श्री उत्तमचन्द अरुणकुमार सेठिया
श्रीमती सिरिया देवी लुणिया
श्री पुष्पेन्द्र बुलिया
श्री मूलचन्द जैन
श्री मिट्ठालाल दक

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धाजलि

साधक को साधना के क्षेत्र में निरन्तर चलते रहना चाहिये।
कभी भी विराम की नहीं सोचना चाहिये।
विराम का चिन्तन साधक के गिराव (पतन का सूचक है।

-आचार्य श्री नानेश

श्री प्यारेलाल भण्डारी

D P Jain, R P Jain,
J D Jain, K R Jain,
S P Jain

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

जिह्वा स्वाद और शब्द की मूल होती है । ये दोनों शक्तियां अपने आप में बड़ी विशिष्ट हैं ।
इन शक्तियों के प्रवाह को यदि ठीक से समझ लिया जाए तो
इस संसार समुद्र की काफी जानकारी हो सकती है ।

-आचार्य श्री नानेश

****

हु शी ऊ चौ श्री ज ग नाना
राम चमकता भानु समाना

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धाजलि

भय और चिन्ता को सदा सर्वदा के लिए जीवन से निकाल ही देना चाहिये। ये जीवन की बहुत बड़ी शत्रु है। इन्ही से जीवन का अधिक हास होता है।

-आचार्य श्री नानेश

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

सूक्ष्म/सही दृष्टि का चिन्तन बड़ा विलक्षण होता है।

वह वस्तुस्थिति के पार पहुंचाने वाला होता है। इसके लिए चित्तवृत्ति में समत्व आना चाहिए।

-आचार्य श्री नानेश

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

जिस समय जैसा वेश हो, उस समय उसी के अनुरूप कार्य एव व्यवहार होना चाहिये
और जिस समय जैसा कार्य किया जाता हो, उस समय उसी कार्य में
मन, वचन और कार्य का एकाकार होना जरूरी है।

-आचार्य श्री नानेश

जैन जगत की महान् विभूति समता दशन प्रणेता, धमपाल प्रतिबोधक जिनशासन प्रद्योतक

स्व आचार्य भगवन् पूज्य श्री १००८ श्री नानालालजी म सा

के श्री चरणों मे कोटिश वन्दन एव वर्तमान आचार्य प्रवर शास्त्रज्ञ प्रशातमना

पूज्य श्री १००८ श्री रामलालजी म.सा.

एव मुनि मडल महासती वृन्द के श्री चरणो मे कोटिश वन्दन

रीखबचद, बिशनराज, प्रकाशचद, सज्जनराज पीतलिया

चदनमल, बछराज, श्रेणिकराज पीतलिया

किस्तुरचद, थानमल, बिलासचद पीतलिया

चदनमल, पारसमल, विजयराज पीतलिया

माणकचद, जुगराज, मनोहरलाल डागा

पुखराज, मागीलाल, विनोदकुमार पीतलिया

हीराचद, बसतराज, शातिलाल पीतलिया

खेमराज, विमलचद, कातिलाल, सुरेशचद, कुशलराज पीतलिया

मोहनलाल, विकासचद, महावीरचद पीतलिया

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धाजलि

भय और चिन्ता का सदा सर्वदा के लिए जीवन से निकाल ही देना चाहिये। ये जीवन की बहुत बड़ी शत्रु है। इन्हीं से जीवन का अधिक ह्रास होता है।

-आचार्य श्री नानेश

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

श्रीमती उमराव बाई सज्जनराज जी मूथा

मद्रास

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

मैसर्स पारसमल धनराज एण्ड को०

लाढ़मी मार्केट, ब्यावर

धनराज कोठारी

आचार्य श्री नानेश के समतामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

NATHMAL PRADEEP KUMAR GOLECHHA

702, AMBAR PALACE, NANPURA,
TIMALYAWAD, SURAT (GUJRAT)

आचार्य श्री नानेश के समतामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

INDERCHAND JAY KUMAR DAGA

602 SAGAR APARTMENT PARASWADEEP COMPLEX
KAILASH NAGAR SURAT (GUJRAT)

श्रद्धेय के श्रद्धेय मम् श्रद्धाप्राण केन्द्र आचार्य सम्राट
श्री नानालालजी म सा को हार्दिक श्रद्धांजलि

नाना तुम तो भवसागर तिरे अब तिन्नाण तारयाण
साजगर ... हमे भी शीघ्र तारना

-श्रद्धावनत-

लाभचंद जी रांका ग्रुप

लाला बाजार (आसाम)

श्री रामलाल पानमल तोलाराम पूरणमल मुन्नीलाल रूपलाल
माणकचंद, किशनलाल जेठमल रांका परिवार

आचार्य श्री नानेश के समतामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

लोग कहते हैं तुम महलोक को प्रस्थान कर गये हो
पर हम कहते हैं, तुम गये कहाँ हो
तुम तो हमारे अन्तर में बसे हो
अन्तर में छिपे हो तो फिर जा कैसे सकते हो

मैसर्स उदयचंद नथमल सिपानी

जानीगंज बाजार, पो सिलचर (आसाम)

Ph (O/R) 03842 46118 (R) 30909

श्री रूपलाल सूरज देवी सिपानी — श्री कमलकुमार मनोज देवी
श्री विमल कुमार पुनीता देवी — श्री ... कुमार मालती देवी
श्री राजेन्द्र कुमार-विजयश्री एवं सिपानी परिवार

आचार्य श्री नानेश के सथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धाजलि

हृदयेश को वन्दनाजलि

श्रद्धा प्रसूनों से भक्ति भावों से,
अर्पित करें हम, आत्मा के आचमन से,
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धांजलि
नानेश को हमारी भावभीनी वंदनाँजलि ।

शत्रु को हम मित्र माने जीव को हम पूज्य जानें
स्नेह शुचिता में नहाकर सुमन समता के खिलाकर
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धाजलि
नानेश को हमारी भावभीनी वदनाँजलि ।

है जो नाना के अभिराम बने वे जन-जन के राम
आदेश यह गुरुवर का लिये, हो समर्पित राम के
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धांजलि
नानेश को हमारी भावभीनी वन्दनाँजलि ।

नतमस्तक

कस्तूरी वाई, पुखराज-चाँददेवी, कन्हैया-इन्द्रा, सुशील-सरिता वैद
कुमारी निधि, नैना, अलका कीर्ति एव सुमति राज वैद ।
महेन्द्र-भँवरी एवं मनीष कोठारी, प्रकाश-मजू, दीपक, हसा भडारी
मागीलाल-पेम, सौरभ, नवनीत व मीमासा वाठिया ।

आचार्य श्री नानेश के समाधिमय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

समता विभूति, आराध्यदेव, परम पूज्य गुरुदेव

आचार्य श्री नानालालजी म सा के

सलेखना सथारे सहित महाप्रयाण होने पर एव

आत्म स्वरूपी बनने पर हार्दिक श्रद्धाजलि एव शत् शत् वन्दन

प्रात स्मरणीय, वर्तमान शासनेश, नानेश पट्टधर

प्रशान्तमना, आराध्य देव, पूज्य गुरुदेव

आचार्य श्री १००८ श्री रामलालजी म सा को

सविधि वन्दन एव शत् शत् नमन

विकास, अभिषेक
अभिलाषा, आयुषी
अकिता, आकांक्षा
फोन ०७४२० ३१५२८ ३१२२८

शोकिनलाल, सज्जनदेवी
सुरेशचन्द्र, पुष्पा देवी
आजीत नीलू देवी
अनील संगीता देवी

चैलावत परिवार जावद, जिला नीमच

आचार्य श्री नानेश के सथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धाजलि

CHHALANI POLYMERS

DEALERS IN PLASTIC RAW MATERIALS HDPE L D P P STYON PVC
HIPS BLOW LLDING R P GRANULES PURE & ALL VARIETY COLOURING

92/2 TIRUPALLI STREET, CHENNAI 600079
Ph (O) 5213882 (R) 5242652 Pager 9622 707079 Cell No 98400 53368

Prop Jugraj Chhalani Kamal Chhalani

CHHALANI PLASTIC INDUSTIRES

DEALERS IN WASTE PLASTIC SCRAPS GRINDINGS
MANUFACTURERES RE PROCEEDS GRANULES

Ph (F) 5956593 (R) 5950998

43, COCHAN BASIN ROAD, STANLY NAGAR, CHENNAI-600021

Prop M.L Chhalani J.K. Chhalani

महामनस्वी महायशस्वी समता साधक समीक्षण ध्यान योगी समता विभूति
आचार्य श्री १००८ नानालालजी म सा के देवलोक गमन पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं
कृतज्ञ है हम हुक्म संघ के नवम् पट्टधर एवं आपके उत्तराधिकारी
आचार्य प्रवर १००८ श्री रामलालजी म सा को पाकर
हे गुरुदेव पावन आप श्री के दर्शन हम वर्तमान आचार्य प्रवर १००८ श्री रामलालजी म सा में

शांति टेक्सटाईल एजेन्सी

हैड आ ६०/९, एम टी क्लॉथ मार्केट इन्दौर दूरभाष 0731-450263 4143345 412130
शाखा ५१६ गुडलक टेक्सटाईल्स मार्केट रिंग रोड सूरत (गुजरात) दूरभाष 0261-642252 651316

प्रमोद पी चौपड़ा एण्ड एसोसिएट्स (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स)

२०१, अशोका हेरिटेज ५५ पी वाय रोड इन्दौर (म प्र) दूरभाष 0731-434282 412962

श्रद्धावनत प्रेमराज चौपड़ा एवं परिवार नानेश छाया, शिक्षक नगर, इन्दौर

जय गुरु नाना *जय गुरु राम*

रतनलाल राहुल कुमार खिन्दावत
परिवार का श्रद्धा युक्त शत्-शत् नमन

स्टोन सन

३६ ए टी एस नवलखा इन्दौर-१
दूरभाष (O) 464176-83 (R) 542974
एजेन्ट ऐसोसियेट स्टोन प्रा लि कोटा
डीलर ग्रेनाइट मारबल कोटा

आचार्य श्री नानेश के सथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धाजलि

सुखानी राधाचन्दन चेरिटेबल ट्रस्ट
बीकानेर

चन्दनमल सुखानी
जयचन्दलाल सुखानी
सुन्दरलाल सुखानी
इन्द्रा देवी सुखानी
भंवरलाल कोठारी
धनराज बेताला
भंवरलाल बठेर

ट्र
स्ट
टी

आचार्य श्री नानेश के सथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धाजलि

S.N. ENTERPRISES

Auth. Dealer Bishma Pas Pam Race Jimi Apex Honeson Power Tube Montcarb Ar Gas King Mk Clutch Plate Shiv Shakti Brake Shoe

1633/33, NAIWALA, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005
Ph (O) 5753758 5769249 Res 7220289

जय नानेश　　　　　　　　　　　　　　जय महावीर　　　　　　　　　　　　　　जय रामेश

जिनशासन सरोवर के राजहस, महामना, आचार्य भगवन् श्री १००८

श्री नानालालजी म सा

के सथारामय महापयाण पर हार्दिक श्रद्धाजलि

प्रशान्तमना आगमज्ञ आचार्य भगवन्

श्री रामलालजी म सा

एव समस्त सत-सतीवृन्द के चरणकमलो मे कोटि-कोटि वन्दन

सुजानमल-गुणमाला, किशोर-नन्दा, दीपक-रेखा, सकेत, सहज, सरल एव समस्त कणवित परिवार (इन्दौर)

श्री पार्श्वनाथ इण्डस्ट्रीज

न 54, दूसरा मेन रोड, रामचन्द्रपुरम्, बैगलोर-560021

फोन दू 3355032 3402097 घर 3350565 3404769

जय नानेश　　　　　　　　　　　　　　जय महावीर　　　　　　　　　　　　　　जय रामेश

समता के सागर, दलितो के मसीहा, करीबन ३५० मुमुक्षुओ को मोक्ष मार्ग पर आरूढ करने वाले धर्म सारथी, आचार्य श्री १०००८

श्री नानालालजी म सा

के सथारा-सलेखनामय देवलोक गमन पर भावभीनी श्रद्धाजलि

आगम रहस्य के ज्ञाता, आचार्य

श्री रामलालजी म सा

और समग्र सत-सतीवृन्द को कोटिश वन्दन

श्री लच्छीराम चादमल रामलाल मागीलाल

हस्तीमल एव समस्त सुखलेचा परिवार

बैगलोर (देवगढ, छापली)

आचार्य श्री नानेश के समतामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

सेठिया वायर निटिंग इण्डस्ट्रीज

113, एन एस रोड, कलकत्ता फोन 2382811

सेठिया वायर निटिंग स्टोर

13 गाडाडन स्ट्रीट, बैंगलोर फोन 2227210

गणेशमल सेठिया

उदासर फोन 752614

आचार्य श्री नानेश के समतामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

चोरडिया परिवार, इन्दोर

अजय इन्जीनियरिंग कम्पनी

चोरड़िया ट्रेडर्स

95, जूना पीठा, इन्दौर-452005

आराध्य प्रवर १००८ आचार्य श्री नानेश की पावन यादों को अगणित वंदन

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

गुरुदेव के चरणो मे शत शत करू प्रणाम ।
दो श्रद्धा बुद्धि प्रभु अरु समता अभिराम ।।
मरुधरा की भूमि पे जनमे राम महान ।
वन्दन भक्ति से करे मिलकर सर्व जहान ।।

सूरजमल पींचा (दिल्ली)

पुरानी लेन, गगाशहर जि बीकानेर (राज)

पावनमाटी – पावन देश ।
अमर रहेगे – गुरु नानेश ।।

आराध्य चरण १००८ आचार्य श्री नानेश की पावन यादों में अगणित वंदन

भिखमचन्द सतीदान कोटड़िया
अध्यक्ष

मांगीलाल सतीदान कोटडिया
सदस्य

जसराज सतीदान कोटड़िया
सदस्य

रावलाल लालचन्द बोहरा
सदस्य

जसराज, लालचन्द, मिलापचन्द संतोषकुमार कोटडिया
सदस्य

साधुमार्गी जैन संघ, अक्कलकुवा (खानदेश-महाराष्ट्र)

'समता के मदिर की थी सबसे प्यारी मूरत।
भगवान नजर आते थे जब देखू उनकी सूरत॥
उन्हीं समतामूर्ति आचार्य श्री नानेश की पावन समृति को हजारो-हजारो वदन

सुनीलकुमार, राजेद्रकुमार बसीलाल खिवसरा

निर्मलकुमार, अतिमकुमार, दीपचन्द लोढा,

निलेशकुमार, महावीर कुमार, नेमीचन्द चोरड़िया

श्रीमती सुशीला देवी मोहनलाल बोहरा

मुकेशकुमार, सुभाचन्द, मदनलाल, जोगीलाल लुणावत

खेतिया जि. बडवानी (खानदेश)

"समतादर्शी दीन दयाल, वदू पूज्य नानालाल"
समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में विनम्र श्रद्धांजलि

नेनसुख प्रेमराज लूकड़	जलगाँव
चन्द्रप्रकाश रमेशचन्द साखला	जलगाँव
विनोदकुमार दिलीपकुमार मल्हारा	जलगाँव
अजीतकुमार महेशकुमार पुखराज मल्हारा	जलगाँव
श्रीमती लीलादेवी राणुलालजी बोहरा	जलगाँव

समता परिवार, जलगाँव (महाराष्ट्र)

जीवन के नाना खिवैया बचाते डूबती नैय्या
जो गाता इनका सवैया तिरजाती उसकी नैय्या
उन्हीं जीवन नैय्या के तारणहार समता विभूति आचार्य श्री नानेश
को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

विजयकुमार, कांतिलाल, शान्तिलाल लुणावत (खेतिया)
गौरवकुमार, राजेन्द्रकुमार, बाबूलाल टाटिया (खेतिया)
ललितकुमार, प्रकाशचन्द्र, प्रेमराज बोहरा (खेतिया)
मुकेशकुमार, जसराज, सुभागमल टाटिया (खेतिया)
सुनीलकुमार मगनलाल बाफना (वघाड़ी)
कांतिलाल छाजेड़ (दोंडाईचा)
रविन्द्र कोटड़िया (दोंडाईचा)

बहुत दिया और बहुत किया नाना गुरुवर चले गये।
आये थे गागर बनकर सागर बनकर चले गये॥
समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में विनम्र श्रद्धांजलि

छगनलाल रूपचन्द बाफना वघाडी
अध्यक्ष

मोहनलाल आर. मुणोत, जलगांव
उपाध्यक्ष

खुशालचन्द गुलाबचन्द ओस्तवाल, शिंदखेडा
उपाध्यक्ष

रमेशचन्द लूणकरण कोठिया दोंडाईचा
उपाध्यक्ष

शांतिलाल चंपालाल लुणावत खेतिया
महामंत्री

अमरचन्द आसकरण चोरडिया शहादा
कोषाध्यक्ष

सुभाष मनोहरलाल कोटडिया शहादा
संगठन मंत्री

खानदेश साधुमार्गी जैन संघ (महाराष्ट्र)

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धांजलि

श्री सुन्दरलाल जी राजकुमार जी सिंघवी

श्री नवरतन दक

श्री बुलाकीचन्द नाहटा

नरेन्द्र मुणोत

सुवालाल, भैरूलाल प्रकाशचन्द गांधी

सुभाषचन्द बोथरा

सूरत (गुजरात)

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धांजलि

श्री नवरतनमल शुभकरण सेठिया

श्री सुशील कुमार मुणोत

श्री रोशनलाल कोठारी

कन्हैयालाल हुड़पावत

श्री रोशनलाल सिंघवी

सूरत (गुजरात)

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

कानमल मदनलाल पारख	राजनांदगांव
रेखचन्द देवराज पारख	राजनांदगांव
मांगीलाल सुनीलकुमार पारख	राजनांदगांव
रतनलाल गणेशमल पारख	केसला
दुलीचन्द शिवचन्द पारख	राजनांदगांव

श्रमण संस्कृति के सजग प्रहरी युगप्रधान धर्मपाल प्रतिबोधक

आचार्य श्री १००८ श्री नानेश

की पावन स्मृति मे श्रद्धावनत शत शत वन्दन।

हुक्म गच्छ के नवम् पट्टधर

आचार्य श्री १००८ श्री रामलालजी म० सा०

के आचार्य पद पर पदासीन होने पर

शत शत वन्दन, अभिनन्दन।

श्रद्धावनत्

केशरीचन्द मोहनलाल एव समस्त सेठिया परिवार

चैन्नई

हुक्मेश संघ के अष्टमाचार्य-
समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक, जिनशासन प्रद्योतक,
विद्वद् शिरोमणि, समीक्षण ध्यान योगी, समता दर्शन प्रणेता,
चारित्र चूड़ामणि, बाल ब्रह्मचारी प्रात स्मरणीय,

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा.

की पावन स्मृति में भावपूर्ण
विनम्र श्रद्धांजलि -

विज्ञापन राशि - प्रत्येक १००० रुपये

आसाम

बदरपुर

अनोपचद दफ्तरी
धीरज मनोज राजेश दफ्तरी
भवरलाल सुरेन्द्र कुमार भूरा
आसकरण निर्मल कुमार दफ्तरी

कावूगज

लक्ष्मीपत बोथरा

लका

लूणकरण भूरा

गोलकगज

रामलाल बोथरा

सिलचर

गुलाबचद सिपानी

सोनाई

बी एल अखेचन्द सेठिया

कर्नाटक

बैंगलोर

मनुहारलाल सुरेशचद गाधी
सज्जनराज महेन्द्र कुमार चोपड़ा
मिट्ठालाल मोहनलाल दुधेड़िया
महता बाई धर्मपत्नी विरदीचद बाबेल

वर्षा केमिस्ट | लीलादेवी मागीलाल मालवी

दल्लीराजहरा

सोनराज प्रकाशचद बाठिया | अन्नराज सजय कुमार बाठिया

खैरागढ

घेवरचद अशोककुमार चोरड़िया | टीकमचद गौतम सालेचा
स्वरूपचद नवीनकुमार चोरड़िया | गौतमचद सदीपकुमार चौपडा
रेखचद गौतमचद साखला | मोहनलाल अमृतलाल साखला

धमतरी

रतनचद राजेशकुमार साखला

जावद

शातिलाल काठेड़

जगदलपुर

दीपचद विमलकुमार बोथरा | समता युवा सघ
मूलचन्द प्रकाशचद बोथरा | किशोरीलाल जैन
गौतमचद बैद | उत्तमचद पारसमल नाहर

नयापारा-राजिम

देवराज गभीरमल साखला

रतलाम

कन्हैयालाल आनदीलाल सुभाष मुरार | धीरजलाल मूणत
मगनलाल शातादेवी मेहता | चदनमल पटवा
कातिलाल सुशीलकुमार | सौभाग्यमल नेमचद कोठारी एड सस

वर्षा केमिस्ट

लीलादेवी मागीलाल मालवी

दल्लीराजहरा

सोनराज प्रकाशचद बाठिया

अन्नराज सजय कुमार बाठिया

खैरागढ

घेवरचद अशोककुमार चोरड़िया

स्वरूपचद नवीनकुमार चोरड़िया

रेखचद गौतमचद साखला

टीकमचद गौतम सालेचा

गौतमचद सदीपकुमार चौपडा

मोहनलाल अमृतलाल साखला

धमतरी

रतनचद राजेशकुमार साखला

जावद

शातिलाल काठेड़

जगदलपुर

दीपचद विमलकुमार बोथरा

मूलचन्द प्रकाशचद बोथरा

गौतमचद बैद

समता युवा सघ

किशोरीलाल जैन

उत्तमचद पारसमल नाहर

नयापारा-राजिम

देवराज गभीरमल साखला

रतलाम

कन्हैयालाल आनदीलाल सुभाष मुरार

मगनलाल शातादेवी मेहता

कातिलाल सुशीलकुमार

धीरजलाल मूणत

चदनमल पटवा

सौभाग्यमल नेमचद कोठारी एउ सस

पूनमचद मणिलाल घोटा

वैभानी गायर्स

चदनमल घोटा

श्रीमती लीलावती वामन्न माटात

हसराज पिरोदिया

रायपुर

नानेश नगर नचुरल स्टार

हुवमीचद विजयकुमार ग'रा

अशोक सुभाप वर्धमान

ताराचद वरडिया

कन्ता व न रमणीकलाल घोलकिया

निर्मलचद इन्दिरा देवी धाड़ीवाल

ममादेवी कमलचद सिपानी

ज्वेर वहन दानजी भाई सा ा

शातिलाल राजयकुमार धाड़ीवाल

मनोहरचद राजकुमार चौप ा

मानचद मदनचद गालछा

केवलचद विजयकुमार मू ा

तुलसीचद मोहनलाल वापना

राजनादगाव

गौतमचद सुराणा

मोहनलाल गौतमचद काार

रामनाल कवरलाल साखला

हरियाणा

हिसार

सत्य रातानी

पानीपत

M/s Pummy Textiles (P) Ltd

नेपाल

जनकपुर

विजयरान अ ोकमार स्ट ा

उड़ीसा

जैपुर

गौतमचद चेतनपकाश साखला

पश्चिम बगाल

कलकत्ता

सम्पतलाल गुलाबचद दुगड

सम्पतलाल सुभाषकुमार हीरावत

हावड़ा

राजेन्द्रकुमार शिवकुमार भूरा

सूरजमल मगनलाल छाजेड़

बाबूलाल मनोजकुमार अजयकुमार चंडालिया

नरेन्द्रकुमार अजयकुमार सिपानी

आसकरण पीचा

हस्तीमल प्रदीपकुमार बोथरा

मोतीलाल हड़मानदास सेठिया

उदयचद सेठिया

जयचदलाल अबीरचद

गुलाब देशवाल

राजेन्द्रकुमार गेलड़ा

जेठमल सुन्दरलाल सेठिया

सुरेन्द्रकुमार हसराज काकरिया

डालचद विजयकुमार मुणोत

तमिलनाडू

चैन्नई

नवरतनमल कमलकुमार पौदावत

लालचद देवराज राका

हरकचद राका

बाबूलाल पकज राका

मोतीलाल आनदकुमार चडालिया

मागीलाल सम्पतलाल सिघवी

ए मानिकचद जितेन्द्रकुमार चडालिया

तोलाराम मिन्नी

भवरलाल अशोककुमार काकरिया

सुमतिकुमार, प्रणीत आर्पित

चित्तौड़गढ

भवरलाल दल्लीचद साखला

अरावली टाईल्स प्रा लि

जैन ट्रेडर्स

मिश्रीलाल हसराज अम्भाणी

गौतम सोहन पोखरना

रगोली मार्बल प्रा लि

बसन्तीलाल चडालिया

छोटीसादड़ी

लक्ष्मीलाल रोशनलाल पामेचा

जयपुर

सजय टैक्सटाईलस

देशनोक

खेमचद प्रकाशचद सुराणा

निम्बाहेड़ा

मदनलाल अरूणकुमार मारू

सागरमल भरतकुमार चपलोत

कन्हैयालाल भरतकुमार राका

भवरलाल ललितकुमार डागी

नक्षत्रमल भवरलाल सोनी

रत्नेश कुमार सुरेशकुमार सहलोत

कानमल विनोदकुमार अभाणी

सागरमल पारसमल साड

चादमल सजयकुमार मारू

जीतमल रोशनलाल खेरोदिया

निकुम्भ

साधुमार्गी जैन सघ

नोखा

दुलीचद चोरड़िया

रूगलाल काकरिया

अमानमल मोहनलाल पारख

सम्पतलाल वैद

लिछमीराम डागा

हनुमानमल वैद

मूलचद धरनचद पारख	भवरलाल सुराणा
सुन्दरलाल पुगलिया	मोतीलाल ओझा
पन्नालाल करणीदान बोथरा	ईश्वरचद बैद
आसकरण भवरलाल पीचा	पारसमल बैद
जोरावरमल पीचा	भीरदीचद कन्हैयालाल कांकरिया
मोहनलाल भवरलाल दुगड़	जैन कृष्ण पाड़दस
भीखमचद प्रकाशचद पीचा	धनराज लुणावत
दुलासचद सुरेन्द्रकुमार हीरावत	श्रीमती भवरीदेवी दुगड़
चम्पालाल जठमल लुणावत (नोखागाव)	निर्मलमल कांकरिया
पूनराज मानमल सुराणा	पीरदान ताराचद पारख
मदनलाल सन्तोकचद आचालेया	उदयचद अशोककुमार नाग

किशनलाल सचेती

प्रतापगढ

सुरेन्द्रकुमार बोरदिया	पारसमल अशोककुमार मिण्ड
मन्नालाल शांतिलाल नारियाला	सुजाता छात्र गृह
केशरीमल हड़पावत एड सस	नानº मण्डारीया

हड़पावत किशनलाल कशरीमल

बीकानेर

त्रिमूर्ति फार्मेसी

बड़ीसादड़ी

हजा ट्रेडिंग कम्पनी

भदेसर

साधुमार्गी जैन श्रावक सघ	साधुमार्गी जैन सघ

भीनासर

नथमल राजकरण पुगलिया

रेवतमल तोलाराम सोनावत

भवरलाल इद्रचद बोथरा

डूगरमल सुरेन्द्रकुमार निर्मलचद मिन्नी

अगरचद बाबूलाल सेठिया

रिखबचद महन्द्रकुमार सोनावत

डालचद प्रदीपकुमार सोनावत

छगनमल अखेचन्द परिवार

पुखराज धरमचद राका

रूण्डेड़ा

रतनलाल उदयलाल कोठारी

सूरतगढ़

पूनमचद सुराणा

जिन महानुभावों, सस्थाओ एव व्यावसायिक प्रतिष्ठानों
ने अपने विज्ञापन देकर सहयोग प्रदान किया,
उन सबके पति हार्दिक आभार।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर

जय नानेश　　　　जय रामेश　　　　जय ज्ञानेश

श्री राजेश मुनि जी म. सा,
श्री वैभव श्री जी म. सा,
श्री विरल श्री जी म. सा
को शत् शत् वन्दन।

कमल, सरला व श्वेता बच्छावत
११/१ए, चौरंगी टैरेस, शाह निकेतन,
कलकत्ता-२०, दूरभाष-223-6977
e-mail princess1@vsnl com